याद की यात्रा

FROM 5 YEAR VYAKT MURLI

(2013 TO 2017)

Contents

YAD KI YATRA POINTS - HIGH IMPORTANCE 2

YAD KI YATRA POINTS – OTHER 799

YAD KI YATRA POINTS - HIGH IMPORTANCE

- अब तुम बच्चों की बुद्धि में पक्का निश्चय है और बाप के साथ लव भी है। शिवबाबा फरमान करते हैं तो खाते पीते मुझे याद करो। याद से विकर्म विनाश होंगे और ऊंच पद भी पायेंगे। कोई तो भल यहाँ बैठे हैं परन्तु बुद्धि बाहर भटक रही है। जैसे भक्ति मार्ग में होता है। माया का राज्य है ना। बुद्धि बाहर चली जाती है तो धारणा नहीं होती। मुश्किल कोई बाप के फरमान पर चलते हैं। बाप कहते हैं सिर पर पापों का बोझा बहुत है इसलिए रात को जागकर मुझे याद करो तो तुमको बहुत मदद मिलेगी। चलते-फिरते भी याद का अभ्यास करो। याद में रहकर भोजन बनाओ, इसमें बड़ी मेहनत है। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बच्चों को अभ्यास बहुत अच्छी रीति करना है। 24 घण्टे से 16 घण्टे तो फ्री हो। बाकी 8 घण्टे तो योग में जरूर रहना है। तुम हो कर्मयोगी। बाबा कहते हैं सब कुछ करते मेरे सिमरण में रहो। नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करो तो घर बैठे भी जबरदस्त कमाई कर सकते हो। बड़े-बड़े आदमी भी आयेंगे। परन्तु टू लेट। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो कहते हैं हम लक्ष्मी को अथवा नारायण को वरेंगे, फिर घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। ऐसे बहुत हैं जो कहते हैं शिवबाबा इनमें आते हैं, यह बात हमारी बुद्धि में नहीं बैठती है। कोई शक्ति है, कशिश है, परन्तु बच्चे बाप को समझते नहीं हैं क्योंकि शास्त्रों में ऐसी बातें नहीं हैं कि बाप आते हैं। गीता है सबसे ऊंचा शास्त्र।

- बाबा सब तरफ बच्चों को देखते हैं। कहाँ कोई झुटका तो नहीं खाते हैं। झुटका खाया, उबासी दी, बुद्धियोग गया, फिर वह वायुमण्डल को खराब कर देते हैं, क्योंकि बुद्धियोग बाहर भटकता है ना। तब बाबा हमेशा कहते हैं बादल ऐसे ले आओ, जो रिफ्रेश होकर जाए वर्षा करें। बाकी क्या आकर करेंगे। ले आने वाले पर भी रेसपान्सिबिल्टी है। कौन सी ब्राह्मणी सेन्सीबुल है जो

भरकर जाए वर्सा करे। ऐसे को लाना है। बाकी को लाने से फायदा ही क्या। सुनकर, धारणा कर फिर धारणा करानी है। मेहनत भी करनी है। जिस भण्डारी से खाते हैं, काल कंटक दूर हो जाते हैं। तो यहाँ वह आने चाहिए - जो योग में भी अच्छी रीति रह सकें। नहीं तो वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। इस समय और ही खबरदार रहना है। फोटो आदि निकालने की भी बात नहीं। जितना हो सके बाप की याद में रह योगदान देना है। आस-पास बड़ी शान्ति रहनी चाहिए। हॉस्पिटल हमेशा बाहर एकान्त में रहती है, जहाँ आवाज न हो। पेशेन्ट को शान्ति चाहिए। तुमको डायरेक्शन मिलता है - तो उस शान्ति में रहना है। बाप को याद करना, यह है रीयल शान्ति। बाकी है आर्टिफिशल। वह कहते हैं ना - दो मिनट डेड साइलेन्स। परन्तु वह दो मिनट बुद्धि पता नहीं कहाँ-कहाँ रहती है। एक को भी सच्ची शान्ति नहीं रहती। तुम डिटैच हो जायेंगे। हम आत्मा हैं, यह है अपने स्वधर्म में रहना। बाकी घुटका खाकर शान्त रहना, कोई रीयल शान्ति नहीं। कहते हैं तीन मिनट साइलेन्स, अशरीरी भव - ऐसे और कोई की ताकत नहीं जो कह सके। बाप के ही महावाक्य हैं - लाडले बच्चों, मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। नहीं तो पद भ्रष्ट भी होंगे और सजायें भी खानी पड़ेंगी। शिवबाबा के डायरेक्शन में चलने से ही कल्याण है। बाप को सदैव याद करना है। जितना हो सके मोस्ट स्वीट बाप को याद करना है। स्टूडेन्ट को अपने टीचर की इज्जत रखने के लिए बहुत ख्याल रखना होता है। बहुत स्टूडेन्ट पास नहीं हों तो टीचर को इज़ाफा नहीं मिलता है। यहाँ कृपा वा आशीर्वाद की बात नहीं रहती है। हर एक को अपने ऊपर कृपा वा आशीर्वाद करनी है। स्टूडेन्ट अपने ऊपर कृपा करते हैं, मेहनत करते हैं। यह भी पढ़ाई है। जितना योग लगायेंगे उतना विकर्माजीत बनेंगे, ऊंच पद पायेंगे। याद से एवर निरोगी बनेंगे। मनमनाभव। ऐसे कृष्ण थोड़ेही कह सकेंगे। यह निराकार बाप कहते हैं - विदेही बनो। यह है ईश्वरीय बेहद का परिवार। मां-बाप, भाई-बहिन हैं बस, और कोई सम्बन्ध नहीं। और सभी सम्बन्धों में चाचा, मामा, काका रहते हैं। यहाँ है ही भाई बहिन का सम्बन्ध। ऐसा कभी होता नहीं, सिवाए संगम के। जबकि हम मात-पिता से वर्सा लेते हैं। सुख घनेरे लेते हैं ना। रावण राज्य में हैं दु:ख घनेरे। रामराज्य में हैं सुख

घनेरे, जिसके लिए तुम पुरूषार्थ करते हो। जितना जो पुरूषार्थ करता है वह कल्प-कल्प के लिए सिद्ध हो जाता है। प्राप्ति बहुत भारी है। जो करोड़पति, पदमपति हैं, उनका सब पैसा मिट्टी में मिल जाना है। थोड़ी लड़ाई लगने दो तो देखना फिर क्या होता है। बाकी कहानी है - तुम बच्चों की। सच्ची कहानी सुनकर तुम बच्चे सचखण्ड के मालिक बनते हो। यह तो पक्का निश्चय है ना। निश्चय बिगर यहाँ कोई आ नहीं सकता। तुम बच्चों को कोई गफलत नहीं करनी चाहिए। बाप से पूरा वर्सा लेना है, जैसे मम्मा बाबा ले रहे हैं। अच्छा।

बाप कहते हैं - सिर्फ बाबा-बाबा मुख से नहीं कहना है। परन्तु बाबा को अन्दर में याद ऐसे करना है जो अन्त मती सो गति हो जाये। देह का भान छोड़ अपने को आत्मा समझो। जितना अपने को आत्मा समझेंगे, बाप को याद करेंगे उतने तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और कोई उपाय ही नहीं है। भगवानुवाच - तुम्हें सबको समझाना है कि यह जो तुम यज्ञ, तप, दान करते हो - इनसे मेरे से नहीं मिल सकते हो। अभी तुम तो एकदम पतित बन गये हो। एक भी मेरे पास नहीं आये हैं। नाटक में पिछाड़ी तक सब एक्टर्स को रहना है। जब नाटक पूरा होगा तब सबको वापिस जाना है। आत्मायें वृद्धि को पाती रहती हैं। बीच से निकल नहीं सकती। स्थापना करने वाले ही यहाँ बैठे हैं। 84 जन्म लेने हैं। झाड़ को जड़जड़ीभूत अवस्था को पाना है। यह बहुत अच्छी बातें हैं समझने की। बड़ा खबरदार भी रहना है कि माया कहाँ धोखा न दे।

यह कन्यायें, मातायें हैं जिनको सहन करना पड़ता है। परन्तु दिल साफ होनी चाहिए। बुद्धि का योग एक बाप से अच्छी रीति जुटा हुआ रहे तब अनेकों से टूट सकता है। पक्का निश्चय हो कि हमको एक बाप का बनना है। उनकी मत पर चलना है। बाबा ने समझाया है कि तुम अपने पति को भी समझाओ कि अब कृष्णपुरी स्थापन हो रही है। कंसपुरी के विनाश की तैयारी हो रही है। अगर कृष्णपुरी में चलना है तो विकारों को छोड़ना पड़ेगा।

- बाप ही तुम बच्चों को पवित्रता की शिक्षा देते हैं। अब जहाँ जाना है, उसको याद करना है। माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। युद्ध का मैदान है ना। तुम बाप के बनते हो, माया फिर अपना बनाती है। प्रभु और माया का नाटक है। बाबा का बनकर फिर आश्चर्यवत, सुनन्ती... भागन्ती हो जाते हैं। माया भी बड़ी पहलवान है। यह बुद्धियोग बल की युद्ध बाप के सिवाए कोई सिखला न सके। सर्व शक्तिमान् बाप से योग लगाने से ही ताकत मिलती है। तुम जानते हो अब पवित्र बन फिर वापिस घर जाना है। यहाँ पार्ट बजाने के लिए यह शरीर लिया है। हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। यह है पिछाड़ी का छोटा सा महान कल्याणकारी युग। तुम सब ज्ञान गंगायें ज्ञान सागर से निकली हो।

- याद में आवाज का विघ्न पड़ नहीं सकता। ज्ञान सुनने में शोर का विघ्न पड़ेगा। मनुष्य तो कहते हैं शान्ति करो, नहीं तो याद में विघ्न पड़ेगा। परन्तु योग में आवाज विघ्न नहीं डालता। विघ्न डालती है माया। बच्चों के साथ माया की युद्ध है। बच्चों को युद्ध के मैदान में हार नहीं खानी चाहिए। माया तो घूंसा लगाती रहती है। माया ने नाक पर घूंसा लगाया तो यह गिरा। फिर खड़े हुए फिर नाक पर लगाया तो यह गिरे। तो बाप कहते हैं यह माया काम क्रोध के घूंसे मारती है, इससे तुम्हें बहुत-बहुत सावधान रहना है। घूंसे नहीं खाने हैं।

- हमको भी जीवनमुक्ति में जाना है वाया मुक्ति। घड़ी-घड़ी परमधाम को याद करो। उन स्कूलों में 5-6 घण्टा पढ़ते हैं यहाँ इतना नहीं पढ़ सकते इसलिए कहा है कि एक घड़ी-आधी घड़ी.... इसमें अमृतवेला अच्छा है। स्नान भी अमृतवेले किया जाता है। एक बार मुरली सुनकर फिर यह प्वाइंट्स रिपीट करते रहो। टेप में मुरली भरी जाती है। भल तुम 15 दिन के बाद सुनेंगे तो भी सुनने से रिफ्रेश हो जायेंगे। कोई प्वाइंट्स ध्यान में नहीं होगी तो झट ख्याल में आ जायेगा।

मुरली के नोट्स अपने पास रखने अच्छे हैं, यह बारूद है ना। बहुत बच्चे तो नोट्स रखते हैं। जैसे बैरिस्टर, सर्जन लोग अपने पास भी बहुत किताब रखते हैं, जो बहुत किताब पढ़े होते हैं, वह अच्छी दवाई देते हैं। कोई तो अच्छी रीति नोट्स भी लेते हैं, कोई नोट्स भी नहीं ले सकते।

बाबा हमको पढ़ाने आये हैं अर्थात् पतितों को पावन बनाने आये हैं। हमको पतित से पावन बनाकर और फिर पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह बातें कोई भी जानते नहीं। यहाँ तुम बच्चे जानते हुए भी फिर कर्म करने में भूल जाते हो। याद में रहो तो विकर्म नहीं होगा। कर्मयोगी तो तुम हो ही। सन्यासियों का है कर्म सन्यास। सिर्फ ब्रह्म तत्व से योग लगाते हैं। परन्तु सारा दिन तो योग लगा नहीं सकते। ब्रह्म में जाने के लिए योग रखते हैं। समझते हैं ब्रह्म को याद करने से हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। परन्तु सारा दिन तो ब्रह्म को याद कर नहीं सकते और उस याद से विकर्म भी विनाश नहीं होते हैं। गाया हुआ है पतित-पावन।

बच्चे, बाप से पूछते हैं बाबा माला के दाने कौन बनेंगे? बच्चे, माला का दाना वही बनेंगे जो कर्मातीत अवस्था को पायेंगे। जिसको अन्त में कुछ भी याद न पड़े। कोई बहुत धनवान हैं, अनेक कारखाने आदि हैं... तो वह सब भूलना पड़े। तुम्हारे पास तो कुछ भी नहीं है। तुम जानते हो हम बाप के बच्चे हैं, भाई हैं। हमारा किसी में भी ममत्व नहीं है। मेरा-मेरा तो नहीं है ना! बस यह भाई है, यही कनेक्शन है और कोई कनेक्शन नहीं। इसे कहा जाता है रूहानी कनेक्शन। इतनी सारी आयु तो देह ही याद आई, आत्मा तो किसको याद ही नहीं आई। यह भी ड्रामा बना हुआ है, तो यह बातें बाप समझाते हैं और पावन बनने के लिए पुरुषार्थ कराते हैं। बाबा तुम बच्चों को टाइम तो देते हैं सिर्फ 8 घण्टा मुझे याद करो। वह है हद की सर्विस, यह है सारे वर्ल्ड की सर्विस। जरूर खायेंगे, पियेंगे, सोयेंगे, घूमेंगे.... सारा दिन तो कोई याद भी नहीं कर

सकते। तुम बरोबर अभी बेहद की सर्विस करते हो। जैसे बाप विचार सागर मंथन करते हैं, ऐसे तुम बच्चों को भी मंथन करना सिखलाते हैं, करन-करावनहार है ना, तो तुमको करके ही सिखलाते हैं। पुरुषार्थ करते-करते तुम्हारी विजयी माला बन जायेगी। सतयुग त्रेता में जो भी आते हैं वह विजयी होते हैं। फिर सब एक्टर्स इस नाटक में पार्ट बजाने के लिए नम्बरवार आते हैं। सब इकट्ठे तो नहीं आ जायेंगे। तुम सभी एक्टर्स के रहने का स्थान ब्रह्म लोक है, वहाँ से यहाँ आ करके शरीर लेते हो। यह सब बातें बहुत सहज हैं, जो तुम बच्चों को ही याद रहती हैं। तुम्हारा घर स्वीट होम, साइलेन्स होम है। दूसरा कोई भी अपने घर को नहीं जानता है। वह तो कह देते हैं हम लीन हो जायेंगे। आधाकल्प तुम सुखधाम में रहते हो, आधाकल्प दु:खधाम में रहते हो, इसको कहा जाता है दूरांदेशी, तुम्हारी बुद्धि अभी बहुत दूर-दूर जाती है - हम आत्मा स्वीट होम, ब्रह्माण्ड के रहने वाले हैं। बाप इस मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, क्योंकि वह नॉलेजफुल है, उनको झाड़ की नॉलेज है। तुम अभी शरीर का भान मिटाने के लिये अपने को आत्मा समझते हो। दूसरी कोई भी चीज़ याद न आये। पूरा आत्म-अभिमानी बन जाना है। मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, मेरे पास कुछ है ही नहीं जो आत्मा को याद पड़े। गाया जाता है अन्तकाल जो जो सिमरे, तो अगर कोई भी चीज़ होगी तो जरूर वह याद आयेगी। यह विचार करने की बात है। अगर कुछ भी है, कोई मित्र सम्बन्धी आदि भी हैं तो याद आयेगा जरूर। तुमने तो अपना सब कुछ शिवबाबा को दे दिया, फिर ऐसे नहीं समझो कि यह मेरी चीज़ है। जब बाबा को दे दिया फिर तुमको याद ही क्यों आये, तुम भूल जाओ। अगर वह याद पड़ता रहता है तो वो भी पिछाड़ी में नुकसान कर देगा। अभी तुमको यह सब नई-नई बातें मिलती हैं। पुरानी कोई भी चीज़ तुम्हारे पास नहीं है। जैसे पुरानी चीजें सब करनीघोर को दे देते हैं ना। ऐसे तुम भी अपना सब कुछ दे देते हो फिर याद नहीं आनी चाहिए। बस यही याद रहे कि मैं भाई (आत्मा) हूँ, बाबा का बच्चा हूँ, मेरे पास कुछ भी है ही नहीं। शरीर भी नहीं है। फिर नई दुनिया में सब नई चीज़ें मिलेंगी। वहाँ तो हीरे जवाहरात के महलों में जायेंगे। तो वह भविष्य की बात हुई। बाबा पूछते

हैं बच्चे तुम क्या बनेंगे, तो बच्चे कहते हैं बाबा हम तो नारायण बनेंगे। यह तो खुशी की बात हुई ना। परन्तु अभी जब कोई भी पुरानी चीज़ याद न आये तब माला का दाना बनेंगे। 108 की माला तो राजाई की है। मन्दिरों में फिर 16108 की भी माला रखी होती है। तो माला के दाने बहुत ही बनेंगे। जितना जल्दी आयेंगे उतना सुख पायेंगे। जो पीछे आते हैं उन्होंने इतना सुख नहीं पाया है, उनके लिए थोड़ा टाइम सुख है तो दु:ख भी कम ही पायेंगे।

- बच्चे जानते हैं देवी-देवता धर्म की स्थापना सतयुग के लिए हो रही है इसलिए बाप कहते हैं मुझे याद करो तो मेरे पास आ जायेंगे। यहाँ बैठे हो तो बैठकर टेप सुननी चाहिए या मुरली रिपीट करनी चाहिए या योग में बैठना चाहिए तो विकर्म विनाश हों। सारा दिन तो काम में रहते हो। वहाँ योग में मुश्किल रहते होंगे। इसमें माया विघ्न बहुत डालती है। माया ज्ञान से नहीं हटाती, योग से हटाती है। संकल्प-विकल्प योग में रहने नहीं देते। पढ़ाई में इतने विघ्न नहीं पड़ते हैं। हाँ अगर योग में नहीं होगा तो पढ़ाई की धारणा नहीं होगी। ज्ञान से योग सहज भी है। बूढ़ी मातायें जो कहती हैं हमारी बुद्धि में इतनी प्वाइंट्स नहीं बैठती हैं। तो बाबा कहते हैं अच्छा मेरी याद में रहो।

- हठयोग भी एक प्रकार की हिंसा है क्योंकि शरीर को कष्ट देते हैं, तकलीफ देते हैं। तुम्हारा यह है अहिंसक योग जो अति सहज है। चलते-फिरते बाप को याद करते रहो। हिंसक और अहिंसक को भी सिद्ध करना है। कई तो शरीर की तन्दरूस्ती के लिए क्रिया करते हैं। वह कोई फिर परमात्मा से नहीं मिलते, हठयोग को भी योग कह देते हैं। योगाश्रम है ना। यह है फिर सहज राजयोग। ईश्वर का सिखाया हुआ योग। तो यह बहुत अच्छी तरह से समझाना चाहिए। जिनका बुद्धियोग सारा दिन झरमुई, झगमुई में होगा वह क्या समझा सकेंगे। जिनकी बुद्धि में होगा कि सर्विस करनी है, वह करेंगे। 8 घण्टा धन्धा किया फिर यह कमाई करनी चाहिए। वह है जिस्मानी

कमाई, यह है रूहानी कमाई। तो इस कमाई में बहुत ध्यान देना चाहिए। योग में बहुत प्रैक्टिस करनी चाहिए। सुबह उठ बाप को बड़े प्यार से याद करना चाहिए। जिनको बाप एक दो नम्बर में रखते, वह भी याद नहीं करते हैं। भाषण तो बहुत अच्छा कर लेते हैं परन्तु याद में नहीं रहते। आत्मा तो याद से ही उड़ेगी, ज्ञान से थोड़ेही उड़ेगी। ध्यान में भी याद से ही जाते हैं। ज्ञान की तो इसमें कोई बात ही नहीं। ध्यान तो एक पाई पैसे की बात हो जाती है। कईयों को तो फट से कृष्ण का साक्षात्कार हो जाता है। कई बच्चियां लिखती हैं कि बाबा हमने आपको पहचाना है। वह ध्यान में ब्रह्मा को भी देखती हैं और प्रेरणा भी मिलती है। तो फिर उनको निश्चय हो जाता है। जिसने बाबा को कभी देखा भी नहीं है वह भी लिखती हैं हम बाबा को बहुत याद करते हैं। हम आपसे वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। आप तो जानते हैं हम याद करते हैं। जब कहती हैं आप... तो शिवबाबा ही याद आता है। तो बांधेली बच्चियां बहुत याद करती हैं, उतना सामने वाले भी याद नहीं करते। एक बात है याद की। फिर गांधी जी कहते थे कि रामराज्य हो। अभी तो रावणराज्य है। इस पर तुम समझा सकते हो। चढ़ती कला तो परमात्मा ही करा सकते हैं।

तुम बच्चों को बाप का डायरेक्शन मिला हुआ है कि बच्चे बाप को याद करो। बच्चे कहते हैं बाबा फुर्सत नहीं मिलती है। अब फुर्सत कहाँ चली जाती है? जरूर माया तुम्हारा समय ले लेती है। माया भी जबरदस्त तीखी है, जो तुमको बाप को याद करने की फुर्सत नहीं देती, तब तो कहते हो बाबा सारे दिन में आधा घण्टा, 20 मिनट याद में रहे, कोई मुश्किल ही सारे दिन में दो घण्टा बाप को याद करते होंगे। जो समझते हैं हम 2 घण्टा याद करते हैं, वह हाथ उठाओ। वह स्थूल याद , पुरानी याद तो चलती आती है। यह तो है इनकारपोरियल, इनको अपना ऑख, कान तो है नहीं। बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। अपने को आत्मा समझो। तो बाबा पूछ रहे हैं कि कितना घण्टा याद में रहते हो? बच्चे खेलने जाते हैं तो टीचर को याद करते हैं। घर में पढ़ते हैं तो भी टीचर याद रहता है। तो वह है स्थूल याद । इसमें है थोड़ी डिफीकल्टी,

तो बाबा पूछते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को 2 घण्टा जो याद कर सकते हैं, वह हाथ उठाओ। लज्जा नहीं करो, एक्यूरेट बताओ।

- तुम यहाँ बैठते हो, बाबा मुरली चलाते हैं तो बुद्धि दूसरे तरफ चली जाती है ना! इतना बुद्धि में धारण भी नहीं होता है। जैसे यहाँ सुबह में एक घण्टा बाबा समझाते हैं, तो क्या वह एक घण्टा बाबा को याद करते हो या बुद्धि बाहर में चली जाती है? बरोबर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बुद्धि कहाँ न कहाँ चली जाती है। सारा नहीं सुनते हैं। अगर सारा बैठ करके सुनें और नोट करते रहें तो बाबा कहेगा हाँ, इनका योग ठीक है। तो सुनते समय अटेन्शन देना है और प्वाइन्ट्स पूरा लिखना है। अगर लिंक टूटेगी तो प्वाइन्ट भूल जायेगी।

- जैसे कभी-कभी अच्छे मौत होते हैं तो देखने वाले कहते हैं कि यह तो जैसे जागता है, यह तो हर्षित है, ऐसे तो कोई कह नहीं सकेंगे कि यह मर गया है। आत्मा हर्षित होके जाती है ना, तो आत्मा में अगर हर्षितपना होगा तो चेहरे पर बाहर से दिखाई तो पड़ेगा ना! आत्मा कोई खत्म तो नहीं होती है, आत्मा शरीर छोड़ती है। तो बड़ी खुशी से यह शरीर हंसते हुए छोड़ देगी, इसको कहा जाता है - कर्मातीत अवस्था। वही इतना ऊंच गाये जाते हैं। तुम बच्चों को ऐसे ही जाना है, शरीर की कोई परवाह ही नहीं है, और दूसरी कोई चीज़ याद नहीं आवे, इसको कहेंगे सबसे मीठा, आपेही शरीर छोड़ना इसलिए सर्प का मिसाल भी देते हैं। सतयुग में ऐसे होता है जो खुशी से शरीर छोड़ते हैं। तो प्रैक्टिस यहाँ से होगी, पीछे वह प्रैक्टिस चलती रहेगी।

- यहाँ विकारों की ही बात है। पैसे की बात नहीं। हरिश्चन्द्र का मिसाल......धन दान में देकर वापिस नहीं लेना चाहिए। वास्तव में है विकारों की बात। विकार दान में देकर वापिस नहीं लेने

चाहिए। दिल अन्दर देखते रहो कि हमारी दिल बाबा से लगी हुई है, जिससे हमारा जन्म-जन्मान्तर का ग्रहण छूटा है। समय तो लगता है, एकदम तो नहीं छूटता। जो कर्मभोग रहा हुआ है उसकी निशानी है बीमारी। तूफान आते हैं, इसका कारण पूरा योग नहीं है। बाप कहते हैं और संग तोड़ मुझ एक संग जोड़ो। और सतसंगों में माशुक को जानते नहीं। यह भी नहीं जानते कि आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट नूंधा हुआ है। पहले हमारी बुद्धि में भी नहीं था तो औरों की बुद्धि में कैसे होगा! जो हम देवता घराने के थे, वह भी नहीं जानते थे।

बड़ा युक्ति से समझाना है क्योंकि रावणराज्य है ना। हम हैं राम की सम्प्रदाय। खुद न बनें तो दूसरों को क्या बनायेंगे इसलिए स्थापना में देरी पड़ती है। एक तो प्रेम से चलना है, दूसरा स्मृति में रहना है, स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। धन्धा तो करना ही है इसलिए सुबह का समय बहुत अच्छा है। कहते हैं ना सवेरे सोना... सवेरे उठना... इसलिए सवेरे-सवेरे उठ यहाँ आकर बैठो तो 5 मिनट भी याद ठहरेगी। फिर धीरे-धीरे आदत पड़ने से याद पक्की हो जायेगी। अच्छा खाना खाते हो तो देखो कि कितना समय बाबा की याद में खाया! अगर सारा समय याद किया तो वह भी बड़ी बहादुरी है। भोजन पर एक दो को इशारा देना है कि बाप को याद करो। एक-एक गिट्टी पर याद दिलाओ। हमारा है ही सहजयोग। अभी बुद्धि में ज्ञान आया है परमपिता परमात्मा को सर्व शक्तिमान् कहते हैं तो उनमें भला क्या शक्ति है। यह नहीं कि बाम्ब्स बनाने की शक्ति है। नहीं, उनको याद करने से विकर्म विनाश हो जाते हैं। यह शक्ति है ना। देखो है कितना भोला और शक्ति कितनी है। यथार्थ रीति याद करने में मेहनत है ना। तो मेहनत करनी चाहिए। सुबह का समय अच्छा होता है। भक्ति में भी सवेरे-सवेरे उठते हैं, ज्ञान में भी सवेरे का समय बहुत अच्छा है। बाप कहते हैं मैं कल्प में एक ही बार आता हूँ, तुमको साथ ले जाने के लिए तो बिल्कुल खुशी खुशी से जाना है। दु:खधाम से निकलना है। ऐसी स्मृति होगी तो डरेंगे नहीं। कितनी भी परीक्षायें आये तो भी स्मृति पक्की रहनी चाहिए। ऐसी अवस्था जमानी है। अब तुम

बच्चों को हम सो, सो हम का अर्थ भी समझाया है। हम सो परमात्मा नहीं, लेकिन परमात्मा का बच्चा हूँ। यह हो गया हम सो के चक्र का दर्शन। इस याद से ही खाद निकलेगी। खाद निकालने का समय ही है अमृतवेला। तो पास विद आनर बनने के लिए कृष्णपुरी का मालिक बनाने वाले बाप को याद करना है।

देवतायें कैसे बनें? इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर इस पढ़ाई से ही बने हैं। सारा मदार पढ़ाई और याद पर है। याद की यात्रा में रहने से फिर और बातें भूल जाती हैं। बाप समझाते रहते हैं बच्चे देह-अभिमान छोड़ो। कोई की खामियों को देखना नहीं हैं। फलाना ऐसा है, यह करता है, इन बातों से कोई फायदा नहीं, टाइम वेस्ट हो जाता है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में बहुत मेहनत है। विघ्न भी पड़ते हैं। पढ़ाई में तूफान नहीं आते, जितना याद में आते हैं। अपने को देखना है कि हम कहाँ तक बाप की याद में रहते हैं। कहाँ तक हमारा लव है। लव ऐसा होना चाहिए - बस बाप से ही चिटके रहें। वाह बाबा आप हमको कितना समझदार बनाते हो! ऊंच ते ऊंच आप हो फिर मनुष्य सृष्टि में भी आप हमको कितना ऊंच बनाते हो। ऐसे-ऐसे अन्दर में बाप की महिमा करनी है। बाबा आप तो कमाल करते हो। खुशी में गद-गद होना चाहिए। कहते हैं ना - खुशी जैसी खुराक नहीं, तो बाप के मिलने की भी खुशी होती है। इस पढ़ाई से हम यह बनेंगे। बहुत खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप, सुप्रीम बाप हमको पढ़ा रहे हैं। अमरनाथ बाबा यह सच्ची अमरकथा सुना रहे हैं, अमरपुरी में ले जाने के लिए। वह है अमरलोक। यह है नीचे मृत्युलोक। सीढ़ी है ना। अभी हम ऊपर जाते हैं फिर नम्बरवार आयेंगे। हमेशा समझो कि शिवबाबा सुनाते हैं, उनको ही याद करते रहो तो भी खुशी रहेगी। शिवबाबा इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं, यह है वन्डरफुल युगल। बाबा इनको कहते हैं “यू आर माई वाइफ”। तुम्हारे द्वारा मैं एडाप्ट करता हूँ। फिर माताओं को सम्भालने के लिए एडाप्ट किये हुए बच्चों से एक को मुकरर रखते हैं। यह ब्रह्मपुत्रा सबसे बड़ी नदी है। त्वमेव-माताश्च पिता इनको कहते हैं।

बाबा खुद कहते हैं - हम चलते-फिरते बहुत खुशी से बाप को याद करता हूँ। याद में कितना भी पैदल करो, कभी थकेंगे नहीं। जितना याद करेंगे उतना चमक आती जायेगी। खुशी में तीर्थों पर कितना दौड़-दौड़ कर ऊपर जाते हैं। वह तो है सब भक्ति मार्ग के धक्के। यह भी खेल है - भक्ति है रात। अब तुम्हारे लिए दिन होता है।

टॉवर आफ साइलेन्स और टॉवर आफ सुख। तुम बच्चे यहाँ बैठे हो तो तुम्हारी बुद्धि घर में जानी चाहिए। वह है शान्ति का टॉवर। ऊंच ते ऊंच को टॉवर कहा जाता है। तुम शान्ति के टॉवर हो। घर में जाने के लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। कैसे जाते हो? जो टॉवर में रहने वाला बाप है, वह शिक्षा देते हैं कि मुझे याद करो तो शान्ति के टॉवर में आ जायेंगे। उसको घर भी कहा जाता है, शान्तिधाम भी कहा जाता है। यह बातें समझाई जाती हैं। अपने शान्तिधाम, सुखधाम की याद में रहो। नहीं रह सकते हो तो गोया जंगल के कांटे हो, इसलिए दु:ख भासता है। अपने को शान्तिधाम के निवासी समझो। अपने घर को याद करना है ना। भूलना नहीं है। घर है ही बाप का। यह है ही दु:ख का घाट। यहाँ बैठे भी जिनको बाहर की बातें याद आती हैं तो ऐसे नहीं कहेंगे कि इनको अपना घर याद है इसलिए बाप रोज़ शिक्षा देते रहते हैं - घड़ी-घड़ी शान्तिधाम, सुखधाम को याद करो। गीता में भी बाप के महावाक्य हैं कि मुझे याद करो। भगवान क्या बनायेंगे? स्वर्ग का मालिक बनायेंगे और क्या! जब स्वर्ग का मालिक बनने बैठे हो तो घर के लिए, स्वर्ग के लिए जो बाप श्रीमत देते हैं - उस पर पूरा-पूरा चलना है। अभी तुमको बाप का परिचय है और सृष्टि चक्र का ज्ञान है। उसको ही तुम याद करते हो, परन्तु कइयों की बुद्धि कहाँ न कहाँ भटकती रहती है, याद नहीं करते हैं। अच्छा और कुछ भी न समझ सको तो आस्तिक बनकर बाप को तो बुद्धि में याद रखो। बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को तो जानते हो ना। उस झाड़ का आदि-मध्य-अन्त नहीं कहा जाता है। इस झाड़ का आदि-मध्य-अन्त है क्योंकि मध्य में रावण राज्य शुरू हो जाता है। कांटा बनना शुरू होता है। बगीचा, जंगल बनना शुरू

होता है। इस समय सारे झाड़ की जड़जड़ीभूत अवस्था हो गई है। सारा झाड़ सूखकर तमोप्रधान हो गया है। सारा सूखा हुआ झाड़ है, फिर कलम लगाना पड़े। इसका कलम लगता है, कलम न लगे तो प्रलय हो जाए। प्रलय अर्थात् सारी जलमई नहीं होती है। भारत रह जाता है - परन्तु जलमई नाम तो है ना।

पतित-पावन शिवबाबा के भण्डारे में जो आता है वह पावन बन जाता है, इसलिए इसको ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। इनकी बड़ी महिमा है। योग भी बड़ा अच्छा चाहिए। योग में रह भोजन बनाओ और खाओ तो तुम्हारी बहुत अच्छी उन्नति होगी। उस भोजन में बहुत ताकत आ जाती है। योग में रह तुम भोजन खाओ तो बहुत ताकत मिलेगी और तन्दरूस्त भी रहेंगे। बाबा खुद कहते हैं कि हम बाबा की याद में बैठे जैसेकि हम और बाबा खाते हैं, परन्तु फिर भी भूल जाता हूँ। एक बाप की याद में ही शरीर छूटे, कोई घुटका नहीं आये, ऐसी प्रैक्टिस करनी चाहिए। बाबा की याद में रहने से एक तो शान्ति रहेगी और हेल्दी बनेंगे। भोजन पवित्र हो जायेगा। अन्त का गायन है अतीन्द्रिय सुख गोपगोपि यों से पूछो। झाड़ में समझानी बहुत अच्छी है। त्रिमूर्ति और गोला भी जरूरी है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारा नाम बहुत बाला होता जायेगा।

आगे तुम्हारी अवस्था अच्छी थी, अब नम्बर नीचे चला गया है क्योंकि कायदे अनुसार श्रीमत पर नहीं चलते हो। अपनी मत पर चलते हो। कोई भी पूछ सकते हैं कि बाबा इस समय अगर हमारा शरीर छूट जाए तो क्या गति को पायेंगे? गीता में कुछ यह अक्षर हैं। आटे में नमक मिसल है ना। सब पुकारते रहते हैं - बाबा हमको रावण राज्य से छुड़ाओ, दु:ख हरो। सच्चा-सच्चा हरिद्वार यह हुआ ना। दु:ख हर्ता, परमपिता परमात्मा को ही हरी कहा जाता है, न कि श्रीकृष्ण को। परमपिता परमात्मा ही दु:ख हर्ता, सुख कर्ता है। तुम सुखधाम के मालिक बनते हो ना। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। उन्हों का है बाहुबल, शारीरिक बल, जो बुद्धि से

बाम्ब्स निकाले हैं। यहाँ सेना आदि की तो कोई बात नहीं। दुनिया में यह किसको पता ही नहीं कि योगबल से कैसे विश्व की बादशाही मिलती है। बाप ही आकर यह योग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं ज्ञान सागर हूँ। महिमा गाते हैं ना - ज्ञान का सागर, सुख का सागर, पवित्रता का सागर, ऐसे कभी नहीं कहेंगे - योग का सागर। नहीं, योग का सागर कहना रांग हो जाए। बाप ज्ञान का सागर, पतित-पावन है। जरूर ज्ञान की ही वर्षा करते होंगे। पहली बात बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो और किसको भी याद करना अज्ञान है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान बाप ही सुनाते हैं। योग के लिए भी शिक्षा देते हैं। और सब योग के लिए उल्टी शिक्षा देंगे। उनको जिस्मानी योग कहा जाता है, शरीर को ठीक रखने के लिए। यह है रूहानी योग। यह राजयोग की बात कहाँ भी है नहीं। सिवाए बाप के और कोई राजयोग सिखला न सके। जानते ही नहीं। तुम यह राजयोग सीखते-सीखते चले जायेंगे, जाकर राज्य करेंगे। राजयोग के कोई चित्र थोड़ेही हैं। तुम यह बनाते हो समझाने के लिए। सो भी कोई देखने से तो समझ न सकें। समझाना पड़े - यह ब्रह्मा राजयोग सीखकर जाए नारायण बनते हैं। यह बाजू में चित्र हैं। यह सब बातें धारण करना बुद्धि की बात है। इसमें टीचर क्या करेंगे? टीचर बुद्धि को कुछ कर नहीं सकते। कोई कहते हमारी बुद्धि को खोलो। बाबा क्या करे? तुम याद करते रहो और पूरा पढ़ो तो बुद्धि पूरा खुलेगी। बच्चों को पूरा सिखलाया जाता है। बाबा कहो, मम्मा कहो तो जरूर कहेगा तब तो सीखेगा ना। बिगर कहे सीखेगा कैसे? इसलिए बच्चों का मुख खुलवाया जाता है। मेहनत करनी है। बाप का परिचय देना है। वह है ऊंचे ते ऊंचा भगवान, सबका रचयिता। उनसे सबको स्वर्ग का वर्सा मिलता है। फिर रावण राज्य में वर्सा गंवाते-गंवाते नर्क बन जाता है। देवतायें पावन थे, फिर पतित बने। फिर पतित-पावन बाप आया है, कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और कोई उपाय है नहीं। योग अग्नि से ही विकारों रूपी खाद निकलेगी। याद करते-करते तुम पावन बन गले का हार बन जायेंगे। घड़ी-घड़ी बोलने की प्रैक्टिस करो सिर्फ कहना थोड़ेही है - बाबा मुख खुलता नहीं है। श्रीमत पर चल जितना याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो ताला बन्द हो जायेगा। तीर लगेगा नहीं।

खुशी का पारा चढ़ेगा नहीं। अपनी मत पर चलेंगे तो बाबा कहेंगे यह तो रावण मत पर हैं। बहुत देह-अभिमानी बच्चे हैं जो मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। जो मुरली ही नहीं पढ़ते वह क्या ज्ञान देंगे। अनेक प्रकार की नई-नई प्वाइंट्स निकलती रहती हैं। देही-अभिमानी बनने का पुरूषार्थ करना है। इस पुरानी देह को भी छोड़ देना है। यह तो मरा हुआ चोला है। ऐसे-ऐसे अपने से बातें करते रहना है। कोई की सर्विस छिप नहीं सकती। कोई खामी है तो वह भी छिपती नहीं है। माया बड़ी शैतान है। अनेक प्रकार के उल्टे काम कराती रहती है। कोई भूल हो जाए तो फौरन बाप से क्षमा मांगनी चाहिए। अन्दर बाहर बहुत साफ होना चाहिए। बहुतों में देह-अभिमान बहुत रहता है। बाबा ने समझाया है - कभी कोई से भी सर्विस नहीं लो। अपने हाथ से भोजन आदि बनाओ। रूहानी-जिस्मानी दोनों सर्विस करनी है। बाबा की याद में रह किसको दृष्टि देंगे तो भी बहुत मदद मिलेगी।

इस समय तुम्हारा सम्बन्ध सबसे छोटा है | सिर्फ़ के बाप से सर्व सम्बन्ध हैं | दूसरा कोई से भी तुम्हारा बुद्धि योग नहीं है, सिवाए एक के | सतयुग में फिर इससे जास्ती हैं | हीरे जैसा जन्म तुम्हारा अभी है | हाइएस्ट बाप बच्चों को एडाप्ट करते हैं | जीते जी गोद में जाना वर्सा पाने के लिये, सो अभी ही होता है | तुम ऐसे बाप की गोद में आये हो जिससे तुमको वर्सा मिलता है | तुम ब्राह्मणों से ऊँच कोई है नहीं | सबका योग एक के साथ है | तुम्हारा आपस में भी कोई सम्बन्ध नहीं | बहन-भाई का सम्बन्ध भी गिरा देता है | सम्बन्ध एक से होना चाहिये | यह है नई बात | पवित्र होकर वापिस जाना है | ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करने से तुम बहुत रौनक में आयेंगे | सतयुगी रौनक और कलियुगी रौनक में रात-दिन का फ़र्क है | भक्ति मार्ग के समय है ही रावण का राज्य | पिछाड़ी में साइन्स का घमण्ड भी कितना होता है | जैसे सतयुग से भेंट करते हैं |

- बाबा रोज़ समझाते हैं – इन आँखों से जो कुछ देखते हो, वह सब ख़त्म होने वाला है | तुम्हारा बुद्धियोग नई दुनिया में रहे और बेहद के सम्बन्धियों से बुद्धियोग रखना है | यह माशूक वन्डरफुल है | भक्ति में गाते हैं आप जब आयेंगे तो आपके बिगर हम किसको भी याद नहीं करेंगे | अब मैं आया हूँ, तो अब तुमको सब तरफ़ से बुद्धियोग हटाना पड़े ना | यह सब कुछ मिट्टी में मिल जाना है | तुम्हारा जैसे मिट्टी के साथ बुद्धियोग है | मेरे साथ बुद्धियोग होगा तो मालिक बन जायेंगे | बाप कितना समझदार बनाते हैं | मनुष्य नहीं जानते कि भक्ति क्या है और ज्ञान क्या है? अब तुमको ज्ञान मिला है तब तुम भक्ति को भी समझते हो |

- सन्यासियों के फ़ालोअर्स भी अपने-अपने घर में रहते हैं | कोई-कोई सच्चे फ़ालोअर्स होते हैं तो उनके साथ रहते हैं | बाकी कोई कहाँ, कोई कहाँ रहते हैं | तो यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं | इसको कहा जाता है ज्ञान की डांस | योग तो है साइलेन्स | ज्ञान की होती है डांस | योग में तो बिलकुल शान्त रहना होता है | डेड साइलेन्स कहते हैं ना | तीन मिनट डेड साइलेन्स | परन्तु उसका भी अर्थ कोई जानते नहीं | सन्यासी शान्ति के लिए जंगल में जाते हैं परन्तु वहाँ थोड़ेही शान्ति मिल सकती है | एक कहानी भी है रानी का हार गले में.........यह मिसाल है शान्ति के लिए |

- बाप के पास जो माल है वह मिलता रहेगा – ड्रामा अनुसार | यह बच्चों की बुद्धि में चलना चाहिए | भल कुछ काम काज करो, हाथ से भोजन बनाओ, बुद्धि शिवबाबा के पास हो | ब्रह्मा भोजन भी पवित्र चाहिए | ब्रह्मा भोजन सो ब्राह्मणों का भोजन | ब्राह्मण जितना योग में रह बनाते हैं, उतनी उस भोजन में ताक़त आती है |गायन है कि देवतायें भी ब्रह्मा भोजन की

बहुत महिमा करते हैं, जिससे हृदय शुद्ध होता है तो ब्राह्मण भी ऐसे होने चाहिए | अभी नहीं हैं | अभी अगर ऐसे बन जाएँ तो तुम्हारी बहुत वृद्धि हो जाए | परन्तु ड्रामा अनुसार धीरे-धीरे वृद्धि को पाना है | ऐसा भी ब्राह्मण निकलेगा जो कहेगा हम बाबा की याद में रह भोजन बनाते हैं | बाबा चैलेन्ज देते हैं ना | ऐसा ब्राह्मण हो जो योग में रह भोजन बनाये | भोजन पवित्र होना चाहिए | भोजन पर बहुत मदार है | बाहर में बच्चों को नहीं मिलता है इसलिए यहाँ आते हैं | बच्चे तो भोजन से भी रिफ्रेश होते हैं | योग वाले फिर ज्ञानी भी होते हैं इसलिए उन्हों को सर्विस पर भी भेज देते हैं | बहुत हो जायेंगे तो फिर यहाँ भी ऐसे ब्राह्मणों को रख देंगे | नहीं तो महारथियों में से भोजन पर भी होने चाहिए, जो योगयुक्त खाना बनें | देवतायें भी समझते हैं हम भी ब्रह्मा भोजन खाकर देवता बने हैं | तो रूचि से तुम्हारे साथ मिलने के लिए आते हैं | कैसे तुमसे मिलते हैं, यह भी ड्रामा में युक्ति है | सूक्ष्मवतन में वह और यह मिलते हैं | यह भी वन्डरफुल साक्षात्कार है | वन्डरफुल नॉलेज है ना |

यह है याद की यात्रा | सभी बच्चे इस यात्रा पर रहते हैं, सिर्फ़ तुम यहाँ नजदीक में हो | जो जो जहाँ भी हैं बाप को याद करते हैं, तो वह ऑटोमेटिकली नजदीक आ जाते हैं | जैसे चन्द्रमा के आगे कोई सितारे बहुत नजदीक होते हैं, कोई बहुत चमकते हैं | कोई नजदीक, कोई दूर भी होते हैं | देखने में आता है यह स्टार बहुत चमकता है | यह बहुत नजदीक है, यह तो चमकता नहीं है | तुम्हारा भी गायन है | तुम हो ज्ञान और योग के सितारे | ज्ञान सूर्य मिला है बच्चों को | बाप बच्चों को ही याद करते हैं | जो सर्विसएबुल बच्चे हैं | बाप है सर्वशक्तिमान् | उस बाप को ही याद करते हैं, तो याद से याद मिलती है | जहाँ-जहाँ ऐसे-ऐसे सर्विसएबुल बच्चे हैं तो ज्ञान सूर्य बाप भी उन्हों को याद करते हैं | बच्चे भी याद करते हैं | जो बच्चे याद नहीं करते उनको बाप भी याद नहीं करते | उनको बाप की याद भी नहीं पहुँचती है | याद से

याद ज़रूर मिलती है | बच्चों को भी याद करना है | बच्चे पूछते हैं – बाबा, आप हमको याद करते हैं? बाप कहते हैं क्यों नहीं | इस रीति बाप क्यों नहीं याद करते | जो जास्ती पवित्र हैं और बाप से बहुत प्यार है तो कशिश भी ऐसे करते हैं | हरेक अपने से पूछे कि हम कहाँ तक बाबा को याद करते हैं? एक की याद में रहने से फिर यह पुरानी दुनिया भूल जाती है | बाप को ही याद करते-करते जाकर मिलते हैं | अब मिलने का समय आया हुआ है | ड्रामा का राज़ भी बाप ने समझाया है | बाप आते हैं आकर बच्चों को अपना रूहानी बच्चा बनाते हैं | पतित से पावन कैसे बनो – सो सिखाते हैं | बाप तो एक ही है उनको ही सब याद करते हैं | परन्तु याद सबको नम्बरवार अपने-अपने पुरुषार्थ अनुसार मिलती है | जितना याद करेंगे कर्मेन्द्रियाँ चंचल नहीं होंगी | कर्मेन्द्रियाँ चंचल बहुत होती हैं ना, इसको ही माया कहा जाता है | कर्मेन्द्रियों से कुछ भी ख़राब कर्म न हो | यहाँ योगबल से कर्मेन्द्रियों को वश करना है | वो लोग तो दवाइयों से वश करते हैं | बच्चे कहते हैं – बाबा, यह क्यों नहीं वश होती हैं? बाप कहते हैं तुम जितना याद करेंगे उतना कर्मेन्द्रियाँ वश हो जायेंगी | इसको कहा जाता है कर्मातीत अवस्था | यह सिर्फ़ याद की यात्रा से ही होता है इसलिए भारत का प्राचीन राजयोग गाया हुआ है | सो तो भगवान् ही सिखलायेंगे | भगवान् सिखलाते हैं अपने बच्चों को | तुम्हें इन विकारी कर्मेन्द्रियों पर योगबल से जीत पाने का पुरुषार्थ करना है | सम्पूर्ण पिछाड़ी में होंगे | जब परिपक्व अवस्था होगी फिर कोई भी कर्मेन्द्रियाँ चंचलता नहीं करेंगी | अभी चंचलता बन्द होने से फिर 21 जन्म के लिए कोई भी कर्मेन्द्रिय धोख़ा नहीं देगी | 21 जन्म के लिए कर्मेन्द्रियाँ वश हो जाती हैं | सबसे मुख्य है काम | याद करते-करते कर्मेन्द्रियाँ वश होती जायेंगी | अभी कर्मेन्द्रियों को वश करने से आधाकल्प के लिए इनाम मिलता है | वश नहीं कर सकते हैं तो फिर पाप रह जाते हैं | तुम्हारे पाप योगबल से कटते जायेंगे | तुम पवित्र

होते जाते हो | यह है नम्बरवन सब्जेक्ट | बुलाते भी हैं पतित से पावन होने लिए | तो बाप ही आकर पावन बनाते हैं |

- पिछाड़ी में कोई भी चीज़ याद न आये, इसको कहा जाता है कर्मातीत अवस्था | यह देह भी विनाशी है, इससे भी ममत्व निकल जाए | पुराने सम्बन्ध में ममत्व नहीं रखना है | अब तो नये सम्बन्ध में जाना है | पुराना आसुरी सम्बन्ध स्त्री-पुरुष का कितना छी-छी है | बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो | अब वापिस जाना है | आत्मा-आत्मा समझते रहेंगे तो फिर शरीर का भान नहीं रहेगा | स्त्री-पुरुष की कशिश निकल जायेगी | लिखा हुआ भी है अन्तकाल जो स्त्री सिमरे, ऐसे चिन्तन में जो मरे....इसलिए कहते हैं अन्तकाल गंगा जल मुख में हो, कृष्ण की याद हो | भक्ति मार्ग में तो कृष्ण की याद रहती है | कृष्ण भगवानुवाच कह देते हैं | यहाँ तो बाप कहते हैं देह को भी याद नहीं करना है | अपने को आत्मा समझो और सब तरफ़ से दिल हटाते जाओ | सभी सम्बन्धों का प्यार एक में जैसे सैक्रीन हो जाता है | सबका मीठा और फिर सबका माशुक भी है | माशुक एक ही है | परन्तु भक्ति मार्ग में नाम कितने रख दिये हैं | भक्ति का विस्तार बहुत है |

- रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं क्योंकि यहाँ सम्मुख हैं | ऐसे नहीं कहेंगे कि सभी बच्चे अपने स्वधर्म में रहते हैं और बाप को याद करते हैं | कहाँ-कहाँ बुद्धि ज़रूर जाती होगी | वह तो हर एक अपने को समझ सकते हैं | मूल बात है सतोप्रधान बनने की | सो तो याद की यात्रा के सिवाए बन नहीं सकेंगे | भल बाबा सुबह में योग में बैठ बच्चों को खींचते हैं, कशिश करते हैं | नम्बरवार खींचते जाते हैं | याद में शान्ति में रहते हैं | दुनिया को भी

भूल जाते हैं | परन्तु सवाल है – सारे दिन में क्या करते? वह तो हुई सुबह में घण्टा आधा घण्टा याद की यात्रा, जिससे आत्मा पवित्र बनती है, आयु बढ़ती है | परन्तु सारे दिन में कितना याद करते हैं? कितना स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं? ऐसे नहीं, बाबा तो सब कुछ जानते हैं | अपने दिल से पूछना है कि हमने सारा दिन क्या किया? अभी तुम बच्चे चार्ट लिखते हो | कोई राईट लिखते हैं, कोई रांग लिखते हैं | समझेंगे हम तो शिवबाबा के ही साथ थे | शिवबाबा को ही याद करते थे परन्तु सचमुच याद में थे? बिल्कुल साइलेन्स में रहने से फिर यह दुनिया भी भूल जाती है | अपने को ठगना नहीं है कि हम तो शिवबाबा की याद में हैं | देह के सब धर्म भूल जाने चाहिए | हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनिया भुलाते हैं | बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है | बाप तो कशिश करते हैं | सभी आत्मायें बाप को याद करें और कोई याद न आये | परन्तु सचमुच याद आती है वा नहीं, वह तो खुद पोतामेल निकालें | कितना हम बाबा को याद करते हैं? जैसे आशिक-माशूक का मिसाल है | यह आशिक-माशूक रूहानी हैं | बातें ही न्यारी हैं, वह जिस्मानी, यह रूहानी | देखना है – हम कितना समय दैवी गुणों में रहे? कितना समय बाप की सेवा में रहे? फिर औरों को भी याद दिलानी है | आत्मा पर जो कट चढ़ी हुई है वह याद के बिगर तो उतरेगी नहीं | भक्ति में अनेकों को याद करते हो | यहाँ याद करना है एक को | हम आत्मा छोटी बिन्दी हैं | तो बाबा भी छोटी बिन्दी बहुत-बहुत सूक्ष्म है | और नॉलेज है बड़ी | श्री लक्ष्मी वा नारायण बनना, विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर नहीं है | बाप कहते हैं अपने को मिया-मिट्ठू समझ ठगी नहीं करना | अपने से पूछो – सारे दिन में हमने अपने को आत्मा समझ बाप को कितना याद किया, जो कट निकले? कितनों को आपसमान बनाया? यह पोतामेल हर एक को अपना रखना है | जो करेगा वह पायेगा, नहीं करेगा तो पछतायेगा | देखना है हमारा कैरेक्टर सारे

दिन में कैसा रहा? कोई को दुःख तो नहीं दिया या फ़ालतू बात तो नहीं की? चार्ट रखने से कैरेक्टर सुधरेगा | बाप ने रास्ता तो बताया है |

आशिक-माशूक एक-दो को याद करते हैं | याद करते ही वह सामने खड़ा हो जाता है | दो स्त्रियाँ (फीमेल) हैं तो भी साक्षात्कार हो सकता है, दोनों पुरुष (मेल) हैं तो भी साक्षात्कार हो सकता है | कोई-कोई मित्र भाई से भी बहुत तीखे होते हैं | मित्रों का आपस में इतना लव हो जाता है जो भाइयों से भी न हो | एक-दो को बहुत अच्छा प्यार से उठा लेते हैं | बाबा तो अनुभवी हैं ना | तो सवेरे में बाप जास्ती कशिश करता है | चुम्बक है, एवर प्योर, तो वह खींचता है | बाप तो बेहद का है ना | समझते हैं यह तो बहुत लवली बच्चे हैं | बहुत ज़ोर से कशिश करते हैं | परन्तु यह याद की यात्रा बहुत जरुरी है | कहाँ भी जाते हो, मुसाफ़िरी करते हो, उठते, बैठते, खाते याद कर सकते हो | आशिक-माशूक कहाँ भी याद करते हैं ना | यह भी ऐसे हैं | बाप को याद तो करना ही है, नहीं तो विकर्म कैसे विनाश होंगे | और कोई उपाय है नहीं | यह बहुत महीन है | तलवार की धार से चलना होता है | याद है तलवार की धार | घड़ी-घड़ी कहते हैं याद भूल जाती है | तलवार क्यों कहते हैं? क्योंकि इनसे पाप कटेंगे, तुम पावन बनेंगे | यह बहुत नाज़ुक है | जैसे वो लोग आग से पार करते हैं, तुम्हारा फिर बुद्धियोग चला जाता है बाप के पास | बाप आये हैं यहाँ, हमको वर्सा देते हैं | ऊपर में नहीं हैं, यहाँ आये हैं | कहते हैं साधारण तन में आता हूँ | तुम जानते हो बाप ऊपर से नीचे आया है | चैतन्य हीरा इस डिब्बी में बैठा है | सिर्फ़ इसमें ख़ुशी नहीं होना है कि हम बाबा के साथ बैठे हैं | यह तो बाबा जानते हैं, बहुत कशिश करते हैं | परन्तु यह तो हुआ आधा पौना घण्टा | बाकी सारा दिन वेस्ट गंवाया तो इसे क्या फायदा | बच्चों को अपने चार्ट का ओना रखना है | ऐसे नहीं, हम तो भाषण कर सकते हैं, चार्ट रखने की हमको क्या दरकार है! यह भूल नहीं

करनी है | महारथियों को भी चार्ट रखना है | महारथी बहुत नहीं हैं, गिने चुने हैं | बहुतों का नाम-रूप आदि में बहुत टाइम वेस्ट जाता है | मंज़िल बहुत ऊँची है | बाप सब कुछ समझा देते हैं, जो स्टूडेन्ट ऐसा न समझें कि बाबा ने फलानी प्वाइंट नहीं समझाई | यह है मुख्य – याद और सृष्टि चक्र की नॉलेज | इस सृष्टि चक्र के 84 जन्मों को तो कोई नहीं जानते – सिवाए तुम बच्चों के | वैराग्य भी तुमको आयेगा | तुम जानते हो अब इस मृत्युलोक में रहने का नहीं है | जाने से पहले पवित्र बनना है | दैवीगुण भी ज़रूर चाहिए | नम्बरवार माला में पिरोने हैं | फिर नम्बरवार राजधानी में आने हैं | फिर नम्बरवार तुम्हारी भी पूजा होती है | अनेक देवताओं की पूजा होती है | क्या-क्या नाम रखते हैं | चण्डिका देवी का भी मेला लगता है | जो रजिस्टर नहीं रखते, वह सुधरते नहीं हैं | तो कहा जाता है यह तो चण्डिका है | सुनते ही नहीं हैं, मानते ही नहीं | यह फिर है बेहद की बातें | पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो बाप कहेंगे कि यह तो बाप को भी मानने वाले नहीं हैं | पद कम हो जायेगा इसलिए बाप कहते हैं अपने पर बहुत नज़र रखनी है | बाबा सवेरे आकर कितनी मेहनत कराते हैं याद के यात्रा की | यह बहुत भारी मंज़िल है | नॉलेज को तो सस्ती सब्जेक्ट कहेंगे | 84 का चक्र याद करना बड़ी बात नहीं है | बाकी भारी माल है याद की यात्रा, जिसमें फेल भी बहुत होते हैं | तुम्हारी युद्ध भी इसमें है | तुम याद करते हो, माया पिछाड़ देती है | नॉलेज में युद्ध की बात नहीं | वह तो सोर्स ऑफ़ इनकम है | यह तो पवित्र बनना है, इसलिए ही बाप को बुलाते हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ | ऐसे नहीं कि आकर पढ़ाओ | कहेंगे पावन बनाओ | तो यह सब प्वाइन्ट बुद्धि में रखनी है | पूरा राजयोगी बनना है |

हर एक अपने को अच्छी रीति जान सकते हैं | अपने को देखो सारा दिन क्या किया? बाबा को कितना याद किया? यह भी बाबा ने कह दिया है कि गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए बाप को

याद करना है | बाबा ने नारद को भी कहा – अपनी शक्ल को देखो | यह भी एक दृष्टान्त है | तुम जो बच्चे हो, एक-एक को अपने को अच्छी रीति देखना है | जाँच करनी है कि जिस बाप द्वारा हम हीरे बनते हैं उनके साथ हमारा लव कहाँ तक है? और कोई तरफ़ वृत्ति तो नहीं जाती है? कहाँ तक मेरा दैवी स्वभाव है? स्वभाव भी मनुष्य को बहुत सताता है | हर एक को तीसरा नेत्र मिला है | उनसे अपनी जाँच करनी है | कहाँ तक मैं बाप की याद में रहता हूँ? कहाँ तक मेरी याद बाप को पहुँचती है? उनकी याद में यह रोमांच एकदम खड़े हो जाने चाहिए | परन्तु बाप ख़ुद कहते हैं माया के विघ्न ऐसे हैं जो ख़ुशी में आने नहीं देते हैं | बच्चे जानते हैं अभी हम सब पुरुषार्थी हैं | रिज़ल्ट तो पिछाड़ी में निकलनी है | अपनी जांच करनी है | फ्लो आदि अभी तुम निकाल सकते हो | एकदम प्योर डायमण्ड बनना है | अगर थोडा भी डिफेक्ट होगा तो समझ जायेंगे, हमारी वैल्यु भी कम होगी | रत्न हैं ना | बाप तो समझाते हैं – बच्चे एवर प्योर वैल्युबुल हीरा बनना चाहिए | पुरुषार्थ कराने लिए भिन्न-भिन्न प्रकार से बाप समझाते हैं |

रूहानी बाप रूहानी बच्चों से पूछते हैं - अपने को रूह या आत्मा समझ बैठे हो? क्योंकि बाप जानते हैं यह कुछ डिफीकल्ट है, इसमें ही मेहनत है। जो आत्म- अभिमानी होकर बैठे हैं उनको ही महावीर कहा जाता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना - उनको महावीर कहा जाता है। हमेशा अपने से पूछते रहो कि हम आत्म- अभिमानी हैं? याद से ही महावीर बनते हैं, गोया सुप्रीम बनते हैं। और जो भी धर्म वाले आते हैं वह इतने सुप्रीम नहीं बनते हैं। वह तो आते भी देर से हैं। तुम नम्बरवार सुप्रीम बनते हो। सुप्रीम अर्थात् शक्तिमान् वा महावीर। तो अन्दर में यह खुशी होती है कि हम आत्मा हैं। हम सब आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं। यह भी बाप जानते हैं कोई अपना चार्ट 25 परसेन्ट दिखाते हैं, कोई 100 परसेन्ट दिखाते हैं।

कोई कहते हैं 24 घण्टे में आधा घण्टा याद ठहरती हैं तो कितना परसेन्ट हुआ? अपनी बड़ी सम्भाल रखनी है। धीरे- धीरे महावीर बनना है। फट से नहीं बन सकते हैं, मेहनत है। वह जो ब्रह्म ज्ञानी, तत्व ज्ञानी है, ऐसे मत समझो वह अपने को कोई आत्मा समझते हैं। वह तो ब्रह्म घर को परमात्मा समझते हैं और स्वयं को कहते हैं अहम् ब्रह्मस्मि। अब घर से थोड़ेही योग लगाया जाता है। अभी तुम बच्चे अपने को आत्मा समझते हो। यह अपना चार्ट देखना है - 24 घण्टे में हम कितना समय अपने को आत्मा समझते हैं? अभी तुम बच्चे जानते हो हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं, ऑन गॉडली सर्विस। यही सबको बताना है कि बाप सिर्फ कहते हैं मनमनाभव अर्थात् अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। यह है तुम्हारी सर्विस। जितनी तुम सर्विस करेंगे उतना फल भी मिलेगा। यह बातें अच्छी रीति समझने की हैं। अच्छे- अच्छे महारथी बच्चे भी इस बात को पूरा समझते नहीं हैं। इसमें बडी मेहनत है। मेहनत बिगर फल थोड़ेही मिल सकता है। बाबा देखते हैं कोई चार्ट बनाकर भेज देते हैं, कोई से तो चार्ट लिखना पहुँचता ही नहीं है। ज्ञान का अहंकार है। याद में बैठने की मेहनत पहुँचती नहीं। बाप समझाते हैं मूल बात है ही याद की। अपने पर नज़र रखनी है कि हमारा चार्ट कैसा रहता है? वह नोट करना है। कई कहते हैं चार्ट लिखने की फुर्सत नहीं। मूल बात तो बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ अल्फ को याद करो। यहाँ जितना समय बैठते हो तो बीच-बीच में अपने दिल से पूछो कि हम कितना समय याद में बैठे? यहाँ जब बैठते हो तो तुमको याद में ही रहना है और चक्र फिराओ तो भी हर्जा नहीं। हमको बाबा के पास जरूर जाना है। पवित्र सतोप्रधान होकर जाना है। इस बात को अच्छी रीति समझना है। कई तो फट से भूल जाते हैं। सच्चा- सच्चा चार्ट अपना बताते नहीं हैं। ऐसे बहुत महारथी हैं। सच तो कभी नहीं बतायेंगे। आधाकल्प झूठ दुनिया चली है तो झूठ जैसे अन्दर जम गया है। इसमें भी जो साधारण हैं वह तो झट चार्ट लिखेंगे | बाप कहते हैं तुम पापों को भस्म कर पावन होंगे, याद की यात्रा से। सिर्फ ज्ञान से तो पावन नहीं होंगे। बाकी फायदा क्या। पुकारते भी हो पावन बनने के लिए। उसके लिए चाहिए याद। हर एक को सच्चाई से अपना चार्ट बताना चाहिए। यहाँ तुम पौना घण्टा बैठे हो

तो देखना है पौने घण्टे में हम कितना समय अपने को आत्मा समझ बाप की याद में थे? कइयों को तो सच बताने में लज्जा आती है। बाप को सच नहीं बताते। वह समाचार देंगे यह सर्विस की, इतनों को समझाया, यह किया। परन्तु याद की यात्रा का चार्ट नहीं लिखते। बाप कहते हैं याद की यात्रा में न रहने कारण ही तुम्हारा कोई को तीर नहीं लगता है। ज्ञान तलवार में जौहर नहीं भरता है। ज्ञान तो सुनाते हैं, बाकी योग का तीर लग जाए - वह बड़ा मुश्किल है। बाबा तो कहते हैं पौने घण्टे में 5 मिनट भी याद की यात्रा में नहीं बैठते होंगे। समझते ही नहीं हैं कि कैसे अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करें। कई तो कहते हैं हम निरन्तर याद में रहते हैं। बाबा कहते हैं यह अवस्था अभी हो नहीं सकती। अगर निरन्तर याद करते फिर तो कर्मातीत अवस्था आ जाए, ज्ञान की पराकाष्ठा हो जाए। थोड़ा ही किसको समझाने से बहुत तीर लग जाए। मेहनत है ना। विश्व का मालिक कोई ऐसे थोड़ेही बन जायेंगे। माया तुम्हारी बुद्धि का योग कहाँ का कहाँ ले जायेगी। मित्र- सम्बन्धी आदि याद आते रहेंगे। किसको विलायत जाना होगा तो सब मित्र-सम्बन्धी, स्टीमर, एरोप्लेन आदि ही याद आते रहेंगे। विलायत जाने की जो प्रैक्टिकल इच्छा है वह खींचती है। बुद्धि का योग बिल्कुल टूट जाता है। और कोई तरफ बुद्धि न जाए, इसमें बड़ी मेहनत की बात है। सिर्फ एक बाप की ही याद रहे। यह देह भी याद न आये। यह अवस्था तुम्हारी पिछाड़ी को होगी। दिन-प्रतिदिन जितना याद की यात्रा को बढ़ाते रहे, इसमें तुम्हारा ही कल्याण है। जितना याद में रहेंगे उतना तुम्हारी कमाई होगी। अगर शरीर छूट गया फिर यह कमाई तो कर नहीं सकेंगे। जाकर छोटा बच्चा बनेंगे। तो कमाई क्या कर सकेंगे। भल आत्मा यह संस्कार ले जायेगी परन्तु टीचर तो चाहिए ना जो फिर स्मृति दिलाये। बाप भी मति दिलाते हैं ना। बाप को याद करो-यह सिवाए तुम्हारे और कोई को पता नहीं है कि बाप की याद से ही पावन बनेंगे। वह तो गंगा स्नान को ही ऊंच मानते हैं इसलिए गंगा स्नान ही करते रहते हैं। बाबा तो इन सब बातों का अनुभवी है ना। इसने तो बहुत गुरू किये हैं। वह स्नान करने जाते हैं पानी का। यहाँ तुम्हारा स्नान होता है याद की यात्रा से। सिवाए बाप की याद के तुम्हारी आत्मा पावन बन ही नहीं सकती। इनका नाम ही है योग अर्थात् याद की यात्रा

। ज्ञान को स्नान नहीं समझना । योग का स्नान है । ज्ञान तो पढ़ाई है, योग का स्नान है, जिससे पाप कटते हैं । ज्ञान और योग दो चीजें हैं । याद से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं । बाप कहते हैं इस याद की यात्रा से ही तुम पावन बन सतोप्रधान बन जायेंगे । बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं-मीठे- मीठे बच्चों इन बातों को अच्छी रीति समझो । यह भूलो नहीं । याद की यात्रा से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप कटेंगे, बाकी ज्ञान तो है कमाई । याद और पढ़ाई दोनों अलग चीज हैं । ज्ञान और विज्ञान-ज्ञान माना पढ़ाई, विज्ञान माना योग अथवा याद । किसको ऊंच रखेंगे-ज्ञान या योग? याद की यात्रा बहुत बड़ी है । इसमें ही मेहनत है । स्वर्ग में तो सब जायेंगे । सतयुग है स्वर्ग, त्रेता है सेमी स्वर्ग । वहाँ तो इस पढ़ाई अनुसार जाकर विराजमान होंगे । बाकी मुख्य है योग की बात । प्रदर्शनी वा म्युजियम आदि में भी तुम ज्ञान समझाते हो । योग थोड़ेही समझा सकेंगे । सिर्फ इतना कहेंगे अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो । बाकी ज्ञान तो बहुत देते हो । बाप कहते हैं पहले-पहले बात ही यह बताओ कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो । इस ज्ञान देने के लिए ही तुम इतने चित्र आदि बनाते हो । योग के लिए कोई चित्र की दरकार नहीं है । चित्र सब ज्ञान की समझानी के लिए बनाये जाते हैं । अपने को आत्मा समझने से देह का अहंकार बिल्कुल टूट जाता है । ज्ञान में तो जरूर मुख चाहिए वर्णन करने के लिए । योग की तो एक ही बात है- अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है । पढ़ाई में तो देह की दरकार है । शरीर बिगर कैसे पढ़ेंगे वा पढ़ायेंगे ।पतित-पावन बाप है तो उनके साथ योग लगाना पड़े ना । परन्तु कोई जानते नहीं हैं । बाप खुद आकर सिखलाते हैं, मनुष्य- मनुष्य को कभी सिखला न सके । बाप ही कहते हैं मुझे याद करो, इसको कहा जाता है परमात्मा का ज्ञान । परमात्मा ही ज्ञान का सागर है । यह बड़ी समझने की बातें हैं । सबको यही बोलो कि बेहद के बाप को याद करो । वह बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं । वह समझते ही नहीं कि नई दुनिया स्थापन होनी है, जो भगवान को याद करें । ध्यान में भी नहीं है तो ख्याल करे ही क्यों । यह भी तुम जानते हो । परमपिता परमात्मा शिव भगवान एक ही है । कहते भी हैं ब्रह्मा देवताए नम : फिर पिछाड़ी में कहते हैं शिव परमात्माए नम: । वह बाप है ही ऊंच ते ऊंच ।

इस समय भी तुम जानते हो-बाबा गरीब निवाज हैं फिर मूँझते क्यों हो? भूल क्यों जाते हो? बाबा कहते हैं तुमको कोई तकलीफ नहीं करनी है। सिर्फ एक साजन को याद करना है। तुम सभी सजनियाँ हो तो साजन को याद करना पड़े। उस साजन को भोग लगाने के बिना खाने में लज्जा नहीं आती? वह साजन भी है, बाप भी है। कहते हैं मुझे तुम नहीं खिलायेंगे! तुमको तो हमें खिलाना चाहिए ना! देखो, बाबा युक्तियाँ बतलाते हैं। तुम बाप अथवा साजन मानते हो ना। जो खिलाता है, पहले तो उनको खिलाना चाहिए। बाबा कहते हमको भोग लगाकर, हमारी याद में खाओ। इसमें बड़ी मेहनत है। बाबा बार-बार समझाते हैं, बाबा को याद जरूर करना है। बाबा खुद भी बार-बार पुरूषार्थ करते रहते हैं। तुम कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है। तुम सीढ़ी चढ़ी ही नहीं हो। कन्या की तो साजन के साथ सगाई होती ही है। तो ऐसे साजन को याद कर भोजन खाना चाहिए। उनको हम याद करते हैं और वह हमारे पास आ जाते हैं। याद करेंगे तो भासना लेंगे। तो ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए बाबा के साथ। तुम्हारी यह प्रैक्टिस होगी रात को जागने से। अभ्यास पड़ जायेगा तो फिर दिन में भी याद रहेगी। भोजन पर भी याद करना चाहिए। साजन के साथ तुम्हारी सगाई हुई है। तुम्हीं से खाऊं..... यह पक्का प्रण करना है। जब याद करेंगे तभी तो वह खायेंगे ना। उनको तो भासना ही मिलनी है क्योंकि उनको अपना शरीर तो नहीं है। कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है, इनको जास्ती फैसल्टीज (सद्यलयतें) हैं। शिवबाबा हमारा सलोना साजन कितना मीठा है। आधाकल्प हमने आपको याद किया है, अभी आप आकर मिले हो! हम जो खाते हैं, आप भी खाओ। ऐसे नहीं, एक बार याद किया बस, फिर तुम खुद खाते जाओ। उनको खिलाना भूल जाओ। उनको भूलने से उनको मिलेगा नहीं। चीजें तो बहुत खाते हो, खिचड़ी खायेंगे, आम खायेंगे, मिठाई खायेंगे..... ऐसे थोड़ेही शुरू में याद किया, खलास फिर और चीजें वह कैसे खायेंगे। साजन नहीं खायेंगे तो माया बीच में खा जायेगी, उनको खाने नहीं देगी। हम देखते हैं माया खा जाती है तो वह बलवान बन जाती है और तुमको हराती रहती है। बाबा युक्तियाँ सब बतलाते हैं।

बाबा को याद करो तो बाप अथवा साजन बहुत राजी होगा। कहते हो बाबा तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊं। हम आपको याद कर खाते हैं। ज्ञान से जानते हैं आप तो भासना ही लेगे। यह तो लोन का शरीर है। याद करने से वह आते हैं। सारा मदार तुम्हारी याद पर है। इसको योग कहा जाता है। योग में मेहनत है। सन्यासी-उदासी ऐसे कभी नहीं कहेंगे। तुमको अगर पुरूषार्थ करना है तो बाबा की श्रीमत को नोट करो। पूरा पुरूषार्थ करो। बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं-कहते हैं जैसे कर्म मैं करता हूँ, तुम भी करो। वही कर्म मैं तुमको सिखलाता हूँ। बाबा को तो कर्म नहीं करना है। सतयुग में कर्म कूटते नहीं। बाबा बहुत सहज बातें बताते हैं। तुम्हीं से बैठूँ, सुनूँ, तुम्हीं से खाऊं...... यह तुम्हारा ही गायन है। साजन के रूप में वा बाप के रूप में याद करो। गाया हुआ है ना-विचार सागर मंथन कर ज्ञान की वाइंद्स निकालते हैं। इस प्रैक्टिस से विकर्म भी विनाश होंगे, तन्दुरूस्त भी बनेंगे।

अभी तुमको कितना सुख मिलता है तो बहुत लव होना चाहिए। हम बाप से प्यार से बातें करेंगे तो क्यों नहीं सुनेंगे। कनेक्शन है ना। रात को उठकर बाबा से बातें करनी चाहिए। बाबा अपना अनुभव बतलाते रहते हैं। मैं बहुत याद करता हूँ। बाबा की याद में आंसू भी आ जाते हैं। हम क्या थे, बाबा ने क्या बना दिया है - तत्त्वम। तुम भी वह बनते हो। योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपेही आँख खुल जायेगी। खटिया हिल जाएगी। बाबा बहुतों को उठाते हैं। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं। तुम यहाँ क्यों आये हो? कहते हो बाबा भविष्य में श्री नारायण को वरने की शिक्षा पाने आये हैं अथवा लक्ष्मी को वरने लिए यह इम्तहान पास कर रहे हो। कितना वन्डरफुल स्कूल है। कितनी वन्डरफुल बातें हैं। बड़े ते बड़ी युनिवर्सिटी हैं। परन्तु गॉडली युनिवर्सिटी नाम रखने नहीं देते हैं। एक दिन जरूर मानेंगे। आते रहेंगे। कहेंगे बरोबर कितनी बड़ी युनिवर्सिटी है। बाबा तो अपने नयनों पर बिठाकर तुमको पढ़ाते हैं। कहते हैं तुमको स्वर्ग में पहुँचा देंगे। तो ऐसे बाबा से कितनी बातें करनी चाहिए। फिर बाबा बहुत मदद करेंगे। जिनके गले घुटे हुए हैं, उनका ताला खोल देंगे। रात को याद करने से बहुत मजा

आयेगा। बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं। मैं कैसी बातें करता हूँ, अमृतवेले।बाप बच्चों को समझाते हैं खबरदार रहना। कुल को कलंकित नहीं करना। 5 विकार दान में दे फिर वापिस नहीं लेना |

- तुम बच्चे बाप की याद में रहते हो, बाबा का आह्वान नहीं करते। तुम बाप की याद में रह अपनी उन्नति कर रहे हो। बाप के डायरेक्शन पर चलने का भी शौक होना चाहिए। हम शिवबाबा को याद करके ही भोजन खायेंगे। गोया शिवबाबा के साथ खाते हैं। दफ्तर में भी कुछ न कुछ टाइम मिलता है। बाबा को लिखते हैं, कुर्सी पर बैठते हैं तो याद में बैठ जाते हैं। आफीसर आकर देखते हैं, वह बैठे-बैठे गुम हो जाते हैं अर्थात् अशरीरी हो जाते हैं। किसी की ऑख बन्द हो जाती है, किसकी खुली रहती है। कोई ऐसा बैठा होगा - कुछ भी जैसे देखेगा नहीं। जैसे गुम रहते हैं। ऐसे-ऐसे होता है। बाबा ने रस्सी खींच ली और मौज में बैठा है। उनसे पूछेंगे तुमको क्या हुआ? कहेंगे - हम तो बाप की याद में बैठे थे। बुद्धि में रहता है हमको जाना है बाबा के पास। बाप कहते हैं, सोल कान्सेस बनने से तुम हमारे पास आ जायेंगे। वहाँ पवित्र होने बिगर थोड़ेही जा सकेंगे। अब पवित्र बने कैसे? वह बाप ही बता सकते हैं। मनुष्य बता न सकें। तुमने कुछ न कुछ समझा हुआ होगा तो औरों का भी कल्याण करेंगे। तुमको कोई का कल्याण करने, बाप का परिचय देने का पुरूषार्थ जरूर करना है।

- बच्चे यह जानते हैं हमको यह पढ़ाई पढ़कर सूर्यवंशी महाराजा महारानी बनना है। दिल भी सबकी होती है ऊंच पद पाने की। सबका पुरूषार्थ चलता है। अच्छे पक्के भक्त जो होते हैं वह चित्र साथ में रखते हैं तो घड़ी-घड़ी उनकी याद रहेगी। बाबा भी कहते हैं त्रिमूर्ति का चित्र साथ में रख दो तो घड़ी-घड़ी याद आयेगी। बाप को याद करने से हम सूर्यवंशी घराने में आ जायेंगे। कमरे में त्रिमूर्ति का चित्र लगा हुआ होगा तो घड़ी-घड़ी नज़र सामने पड़ेगी। बाबा द्वारा हम इस

सूर्यवंशी घराने में जायेंगे। सवेरे उठते ही नज़र उस पर जायेगी। यह भी एक पुरूषार्थ है। बाबा राय देते हैं - अच्छे-अच्छे भगत बहुत पुरूषार्थ करते हैं। आंख खोलने से ही कृष्ण याद आ जाये, इसलिए चित्र सामने रख देते हैं। तुम्हारे लिए तो और ही सहज है। अगर सहज याद नहीं आती, माया हैरान करती है तो यह चित्र मदद करेंगे। शिवबाबा हमको ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी का मालिक बनाते हैं। हम बाबा से विश्व का मालिक बन रहे हैं। इस सिमरण में रहने से भी मदद बहुत मिलेगी। जो बच्चे समझते हैं याद घड़ी-घड़ी भूल जाती है तो बाबा राय देते हैं, चित्र सामने रख दो तो बाप भी और वर्सा भी याद आयेगा। परन्तु ब्रह्मा को याद नहीं करना है। सगाई करते हैं तो दलाल थोड़ेही याद आता है। तुम बाबा को अच्छी रीति याद करो तो बाबा भी तुमको याद करेगा। याद से याद मिलती है।

तुमको बाप से वर्सा मिलता है। बाप कहते हैं- मनमनाभव। बाप को याद करना है। पुरूषार्थ करने का अभी समय है। माया घड़ी-घड़ी तुम्हारा बुद्धियोग तोड़ देती है। अजुन तुम अडोल स्थिर कहाँ बने हो। कहते हैं बाबा माया के तूफान बहुत आते हैं। कोई तो सारे दिन में घण्टा आधा भी याद नहीं करते हैं। बाप कहते हैं- तुम कर्मयोगी हो। 8 घण्टा तो यह सेवा करेंगे। 8 घण्टा याद कर सको इतना पुरूषार्थ करना है। याद करते रहने से विकर्म विनाश होते जायेंगे, इसको ही योग अग्नि कहा जाता है। यह है मेहनत। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए सिर्फ याद करना है। यह भी बाबा बतलाते हैं कि जिन्होंने गृहस्थ छोड़ा है, बच्चे बने हैं, वह भी इतना याद नहीं करते हैं। घर में रहने वाले और ही जास्ती याद करते हैं। अर्जुन और भील का भी मिसाल देते हैं ना। मेहनत है बाप को याद करना और चक्र को समझना है। महाभारत लड़ाई भी जरूर लगेगी। सतयुग में थोड़ेही लगेगी। तो तुम बच्चों को अन्धों की लाठी भी बनना है। सबको रास्ता बताना है कि बाप को याद करो, चक्र को याद करो। स्वदर्शन चक्रधारी बनो।

- रेगुलर पढ़ने से ही नशा चढ़ेगा। बांधेली हो तो घर में रहते बाप को याद करती रहो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। घर में बैठे भी याद करना अच्छा है। परन्तु याद करना– यह बच्चों के लिए बड़ी मुश्किल बात हो गई है। बाप जिससे 21 जन्म का वर्सा मिलता है उनको याद नहीं करते। अच्छे-अच्छे भाषण करने वाले महारथी भी बाप को याद नहीं करते। न सवेरे उठ सकते हैं। उठते हैं तो बैठने से झुटके खाते हैं। याद करने के लिए सवेरे का ही टाइम अच्छा है। भक्ति मार्ग में भी सवेरे उठ याद में लग जाते हैं। उनकी तो उतरती कला है। यहाँ तो है ही चढ़ने की बात। माया कितने विघ्न डालती है। सवेरे उठकर बाप को याद नहीं करेंगे तो धारणा कैसे होगी, विकर्म विनाश कैसे होंगे। बाकी सिर्फ मुरली चलाना– वह तो छोटे बच्चे भी सीखकर समझाने लग पड़ते हैं। यह पढ़ाई बड़ों के लिए है। कितनी बड़ी युनिवर्सिटी है।

- मीठे बच्चे अब तुम्हारी रिटर्न जरनी है, जैसे सतयुग से त्रेता, द्वापर, कलियुग तक नीचे उतरते आये हो वैसे अब तुमको आइरन एज से ऊपर गोल्डन एज तक जाना है। जब सिलवर एज तक पहुंचेंगे तो फिर इन कर्मेन्द्रियों की चंचलता खत्म हो जायेगी इसलिए जितना बाप को याद करेंगे उतना तुम आत्माओं से रजो तमो की कट निकलती जायेगी और जितना कट निकलती जायेगी उतना बाप चुम्बक की तरफ कशिश बढ़ती जायेगी। कशिश नहीं होती है तो जरूर कट लगी हुई है, कट एकदम निकल प्योर सोना बन जाए, वह है अन्तिम कर्मातीत अवस्था। मूल बात मीठे बच्चों को बाप समझाते हैं देही-अभिमानी बनो। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल मामेकम् याद करो, पावन भी जरूर बनना है। कुमारी जब पवित्र है तो सब उनको माथा टेकते हैं, शादी करने से फिर पुजारी बन पड़ती है। सबके आगे माथा झुकाना पड़ता है। कन्या पहले पियर घर में होती है तो इतने जास्ती सम्बन्ध याद नहीं आते। शादी के बाद देह के सम्बन्ध भी बढ़ते जाते फिर पति बच्चों में मोह बढ़ता जाता। सासू-ससुर आदि सब याद आते रहेंगे। पहले तो सिर्फ माँ-बाप में ही मोह होता है। यहाँ तो फिर उन सब सम्बन्धों को भुलाना पड़ता है क्योंकि यह एक ही तुम्हारा सच्चा-सच्चा मात-पिता है ना। यह है ईश्वरीय सम्बन्ध। गाते भी हैं

त्वमेव माता च पिता त्वमेव.. यह मात पिता तो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं इसलिए बाप कहते हैं मुझ बेहद के बाप को निरन्तर याद करो और कोई भी देहधारी से ममत्व न रखो। यह बेहद का बाप जो तुमको स्वर्ग में ले जाते हैं, ऐसे मीठे बाप को बहुत प्यार से याद करते और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। इसी याद के बल से ही तुम्हारी आत्मा कंचन बन स्वर्ग की मालिक बन जायेगी। स्वर्ग का नाम सुनकर ही दिल खुश हो जाती है। जो निरन्तर याद करते और औरों को भी याद कराते रहेंगे वही ऊंच पद पायेंगे। यह पुरूषार्थ करते-करते अन्त में तुम्हारी वह अवस्था जम जायेगी। यह तो दुनिया भी पुरानी है, देह भी पुरानी है, देह सहित देह के सब सम्बन्ध भी पुराने हैं, उन सबसे बुद्धियोग हटाए एक बाप संग जोड़ना है, जो अन्तकाल भी उस एक बाप की ही याद रहे और कोई का सम्बन्ध याद होगा तो फिर अन्त में भी वह याद आ जायेगा और पद भ्रष्ट हो जायेगा। अन्तकाल जो बेहद बाप की याद में रहेंगे वही नर से नारायण बनेंगे। बाप की याद है तो फिर शिवालय दूर नहीं। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे बेहद के बाप पास आते ही हैं रिफ्रेश होने लिए क्योंकि बच्चे जानते हैं बेहद के बाप से बेहद विश्व की बादशाही मिलती है, यह कब भूलना नहीं चाहिए। वह सदैव याद रहे तो भी बच्चों को अपार खुशी रहे। यह बैज चलते-फिरते घड़ी-घड़ी देखते रहो, एकदम ह्दय से लगा दो। ओहो! भगवान की श्रीमत से हम यह बन रहे हैं। बस बैज को देख उनको प्यार करते रहो। बाबा, बाबा करते रहो तो सदैव स्मृति रहेगी। हम बाप द्वारा यह बनते हैं। मीठे बच्चों की बड़ी विशाल बुद्धि होनी चाहिए। सारा दिन सर्विस के ही ख्यालात चलते रहें। बाबा को तो वह बच्चे चाहिए जो सर्विस बिगर रह न सकें। तुम बच्चों को सारे विश्व पर घेराव डालना है अर्थात् पतित दुनिया को पावन बनाना है। सारे विश्व को दु:खधाम से सुखधाम बनाना है। टीचर को भी पढ़ाने में मजा आता है ना। तुम तो अब बहुत ऊंच टीचर बने हो। जितना अच्छा टीचर, वह बहुतों को आपसमान बनायेंगे। कभी थकेंगे नहीं। ईश्वरीय सर्विस में बहुत खुशी रहती है। बाप की मदद मिलती है। यह बड़ा बेहद का व्यापार भी है, व्यापारी लोग ही धनवान बनते हैं। वह इस ज्ञान मार्ग में भी जास्ती उछलते हैं। बाप भी बेहद का व्यापारी है ना। सौदा बड़ा फर्स्टक्लास है परन्तु इसमें बड़ा

साहस धारण करना पड़ता है। नये-नये बच्चे पुरानों से भी पुरूषार्थ में आगे जा सकते हैं। हर एक की इन्डीविज्युअल तकदीर है तो पुरूषार्थ भी हर एक को इन्डीविज्युअल करना है, अपनी पूरी चेकिंग करनी चाहिए। ऐसी चेकिंग करने वाले एकदम रात दिन पुरूषार्थ में लग जायेंगे, कहेंगे हम अपना टाइम वेस्ट क्यों करें। जितना हो सके टाइम सेफ करें। अपने से पक्का प्रण कर देते हैं, हम बाप को कभी नहीं भूलेंगे, स्कालरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। ऐसे बच्चों को फिर मदद भी मिलती है। ऐसे भी नये-नये पुरूषार्थी बच्चे तुम देखेंगे, साक्षात्कार करते रहेंगे। जैसे शुरू में हुआ वही फिर पिछाड़ी में देखेंगे, जितना नजदीक होते जायेंगे उतना खुशी में नाचते रहेंगे। उधर खूने नाहेक खेल भी चलता रहेगा। तुम बच्चों की ईश्वरीय रेस चल रही है, जितना आगे दौड़ते जायेंगे उतना नई दुनिया के नजारे भी नजदीक आते जायेंगे। खुशी बढ़ती जायेगी, जिनको नजारे नजदीक नहीं दिखाई पड़ते उनको खुशी भी नहीं होगी। अभी तो कलियुगी दुनिया से वैराग्य और सतयुगी नई दुनिया से बहुत प्यार होना चाहिए।

माया के कारण कोई खराब ख्यालात तो बुद्धि में नहीं आते हैं? कुदृष्टि तो नहीं रहती है? देखें, इनकी कुदृष्टि जाती है अथवा खराब ख्यालात आते हैं तो उनको झट सावधान करना चाहिए । उनसे मिल नहीं जाना चाहिए । उनको सावधान करना चाहिए-तुम्हारे में माया की प्रवेशता के कारण यह खराब ख्यालात आते हैं । योग में बैठ बाप की याद के बदले कोई की देह तरफ ख्याल जाता है तो समझना चाहिए यह माया का वार हो रहा है, मैं पाप कर रहा हूँ । इसमें तो बुद्धि बड़ी शुद्ध होनी चाहिए । हँसी- मजाक से भी बहुत नुकसान होता है इसलिए तुम्हारे मुख से सदैव शुद्ध वचन निकलने चाहिए, कुवचन नहीं । हँसी मजाक आदि भी नहीं । ऐसे नहीं कि हमने तो हँसी की.... वह भी नुकसानकारक हो जाती है । हंसी भी ऐसी नहीं करनी चाहिए जिसमें विकारों की वायु हो । बहुत खबरदार रहना है । तुमको मालूम है नांगे लोग हैं उनके ख्याल विकारों की तरफ नहीं जायेंगे । रहते भी अलग हैं । परन्तु कर्मेन्द्रियों की चलायमानी

सिवाए योग के कभी निकलती नहीं है। काम शत्रु ऐसा है जो किसको भी देखेंगे, योग में पूरा नहीं होंगे तो चलायमानी जरूर होगी। अपनी परीक्षा लेनी होती है। बाप की याद में ही रहो तो यह कोई भी प्रकार की बीमारी न रहे। योग में रहने से यह नहीं होता है। सतयुग में तो कोई भी प्रकार का गन्द नहीं होता है। वहॉ रावण की चंचलता ही नहीं जो चलायमानी हो। वहाँ तो योगी लाइफ रहती है। यहाँ भी अवस्था बड़ी पक्की चाहिए। योगबल से यह सब बीमारियाँ बन्द हो जाती हैं। इसमें बड़ी मेहनत है। राज्य लेना कोई मासी का घर नहीं। पुरूषार्थ तो करना है ना। ऐसे नहीं कि बस जो होगा भाग्य में सो मिलेगा। धारणा ही नहीं करते गोया पाई-पैसे के पद पाने लायक हैं। सब्जेक्टस तो बहुत होती हैं ना। कोई ड्राइंग में, कोई खेल में मार्क्स ले लेते हैं। वह है कॉमन सब्जेक्ट। वैसे ही यहाँ भी सब्जेक्ट्स हैं। कुछ न कुछ मिलेगा। बाकी बादशाही नहीं मिल सकेगी। वह तो सर्विस करेंगे तब बादशाही मिलेगी। उसके लिए बहुत मेहनत चाहिए। बहुतों की बुद्धि में बैठता ही नहीं है। जैसेकि खाना हजम ही नहीं होता। ऊँच पद पाने की हिम्मत नहीं, इसको भी बीमारी कहेंगे ना। तुम कोई भी बात देखते न देखो। रूहानी बाप की याद में रह औरों को रास्ता बताना है, अन्धी की लाठी बनना है। तुम तो रास्ता जानते हो। रचयिता और रचना का ज्ञान मुक्ति और जीवनमुक्ति तुम्हारी बुद्धि में फिरते रहते हैं, जो-जो महारथी हैं। बच्चों की अवस्था में भी रात-दिन का फर्क रहता है। कहाँ बहुत धनवान बन जाते, कहाँ बिल्कुल गरीब। राजाई पद में तो फर्क है ना। बाकी हाँ, वहाँ रावण न होने कारण दुःख नहीं होता है। बाकी सम्पत्ति में तो फर्क है। सम्पत्ति से सुख होता है।

जब तक बाप को न जानें, यह न समझें कि हमारी आत्मा बिन्दी समान है, शिवबाबा भी बिन्दी है, उनको याद करना है। ऐसे समझ जब याद करें तब विकर्म विनाश हों। बाकी यह देखने में आता है, ऐसा दिखता, वैसा दिखता..., इसको फिर माया का विघ्न कहा जाता है। अभी तो खुशी में हैं, हमको बाप मिला है। बाप कहते हैं कृष्ण का साक्षात्कार कर बहुत खुशी में डांस

आदि करते हैं परन्तु उनसे कोई सद्गति नहीं होती। यह साक्षात्कार तो अनायास ही हो जाता है। अगर अच्छी तरह से पढ़ेंगे नहीं तो प्रजा में चले जायेंगे। साक्षात्कार का भी फायदा तो मिलना है ना।

अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है, हम स्वर्गवासी बनते हैं यह याद रहे तो सदा हर्षितमुख रहेंगे। तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट तो ऊंच है ना। हम मनुष्य से देवता, स्वर्गवासी बनते हैं। यह भी तुम ब्राह्मण ही जानते हो कि स्वर्ग की स्थापना हो रही है। यह भी सदैव याद रहना चाहिए। परन्तु माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। तकदीर में नहीं है तो सुधरते नहीं। झूठ बोलने की आदत आधाकल्प से पड़ी हुई है, वह निकलती नहीं। झूठ को भी खजाना समझ रखते हैं, छोड़ते ही नहीं तो समझा जाता है इनकी तकदीर ऐसी है। बाप को याद नहीं करते। याद भी तब रहे जब पूरा ममत्व निकल जाये। सारी दुनिया से वैराग्य। मित्र-सम्बन्धियों आदि को देखते हुए जैसेकि देखते ही नहीं। जानते हैं यह सब नर्कवासी, कब्रिस्तानी हैं। यह सब खत्म हो जाने हैं। अब हमको वापिस घर जाना है इसलिए सुखधाम-शान्तिधाम को ही याद करते हैं। हम कल स्वर्गवासी थे, राज्य करते थे, वह गंवा दिया है फिर हम राज्य लेते हैं। बच्चे समझते हैं भक्ति मार्ग में कितना माथा टेकना, पैसे बरबाद करना होता है। चिल्लाते ही रहते, मिलता कुछ भी नहीं। आत्मा पुकारती है-बाबा आओ, सुखधाम ले चलो सो भी जब अन्त में बहुत दुःख होता है तब याद करते हैं।

तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम बेहद के बाप के बने हैं, जिससे अतीन्द्रिय सुख मिलता है ऐसे बाप को भूलना नहीं है। बाप की याद से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप दग्ध होते हैं। ऐसे न हो जो याद को छोड़ दो और पाप रह जाएं। फिर पद भी कम हो जायेगा। ऐसे बाप को तो अच्छी रीति याद करने का पुरूषार्थ करना चाहिए। जैसे सगाई होती है तो फिर एक-दो को याद करते

हैं। तुम्हारी भी सगाई हुई है फिर जब तुम कर्मातीत अवस्था को पाते हो तब विष्णुपुरी में जायेंगे। अभी शिवबाबा भी है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा भी है। दो इंजन मिली हैं - एक निराकारी, दूसरी साकारी।

- बाबा ने समझाया है भक्ति मार्ग में भल कोई देवता की भक्ति करते रहते हैं, फिर भी बुद्धि दुकान, धन्धे आदि तरफ भागती रहती है, क्योंकि उससे आमदनी होती है। बाबा अपना अनुभव भी सुनाते हैं कि जब बुद्धि इधर-उधर भागती थी तो अपने को चमाट मारता था-यह याद क्यों आते हैं? तो अब हम आत्माओं को एक बाप को ही याद करना हैं, परन्तु माया घड़ी-घड़ी भुला देती है, घूसा लगता है। माया बुद्धियोग तोड़ देती है। ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करनी चाहिए। बाप कहते हैं - अब अपना कल्याण करो तो दूसरों का भी कल्याण करो, सेंटर्स खोलो। ऐसे बहुत बच्चे बोलते हैं-बाबा, फलानी जगह सेंटर्स खोलूँ? बाप कहते हैं मैं तो दाता हूँ।

- बाप की नॉलेज और वर्सा यह दोनों स्मृति में रहे तो सदैव हर्षित रहेंगे। बाप की याद में रह फिर तुम किसको भी ज्ञान का तीर लगायेंगे तो अच्छा असर होगा। उसमें शक्ति आती जायेगी। याद की यात्रा से ही शक्ति मिलती है। अभी शक्ति गुम हो गई है क्योंकि आत्मा पतित तमोप्रधान हो गई है। अब मूल फिकरात यह रखनी है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें। मन्मनाभव का अर्थ भी यह है। गीता जो पढ़ते हैं उनसे पूछना चाहिए - मन्मनाभव का अर्थ क्या है? यह किसने कहा मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा?

बाबा कहते हैं चार्ट रखकर देखो-सारे दिन में हम कितना टाइम याद में रहते हैं? सारा दिन ऑफिस में काम करते याद में रहना है। कर्म तो करना ही है। यहाँ योग में बिठाकर कहते हैं बाप को याद करो। उस समय कर्म तो करते नहीं हो। तुमको तो कर्म करते याद करना है। नहीं तो बैठने की आदत पड़ जाती है। कर्म करते याद में रहेंगे तब कर्मयोगी सिद्ध होंगे। पार्ट तो जरूर बजाना है, इसमें ही माया विघ्न डालती है। सच्चाई से चार्ट भी कोई लिखते नहीं हैं। कोई-कोई लिखते हैं, आधा घण्टा, पौना घण्टा याद में रहे। सो भी सवेरे ही याद में बैठते होंगे। भक्ति मार्ग में भी सवेरे उठकर राम की माला बैठ जपते हैं। ऐसे भी नहीं, उस समय एक ही धुन में रहते हैं। नहीं, और भी बहुत संकल्प आते रहेंगे। तीव्र भक्तों की बुद्धि कुछ ठहरती हैं। यह तो है अजपाजाप। नई बात है ना।

अभी तुम बच्चे अच्छी रीति जानते हो कि हम पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जाते हैं तो पुरानी दुनिया से जरूर वैराग्य करना पड़े। इनसे क्या दिल लगानी है। तुमने प्रतिज्ञा की है - कोई भी देहधारी से दिल नहीं लगायेंगे। आत्मा कहती है हम एक बाप को ही याद करेंगे। अपनी देह को भी याद नहीं करेंगे। बाप देह सहित सबका सन्यास कराते हैं। फिर औरों की देह से हम लगाव क्यों रखे। कोई से लगाव होगा तो उनकी याद आती रहेगी। फिर ईश्वर याद आ न सके। प्रतिज्ञा तोड़ते हैं तो सजा भी बहुत खानी पड़ती है, पद भी भ्रष्ट हो जाता है इसलिए जितना हो सके बाप को ही याद करना है। माया तो बड़ी धोखेबाज है। कोई भी हालत में माया से अपने को बचाना है। देह- अभिमान की बहुत कड़ी बीमारी है। बाप कहते हैं अब देही-अभिमानी बनो। बाप को याद करो तो देह- अभिमान की बीमारी छूट जाए। सारा दिन देह-अभिमान में रहते हैं। बाप को याद बड़ा मुश्किल करते हैं। बाबा ने समझाया है हथ कार डे दिल यार डे। जैसे आशिक माशूक धन्धा आदि करते भी अपने माशूक को ही याद करते रहते। अब तुम आत्माओं को परमात्मा से प्रीत रखनी है तो उनको ही याद करना चाहिए ना। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है कि हमको देवी-देवता बनना है, उसके लिए पुरूषार्थ करना है। माया धोखा

तो जरूर देगी, अपने को उनसे छुड़ाना है। नहीं तो फँस मरेंगे फिर ग्लानि भी होगी, नुकसान भी बहुत होगा।

अपने को यथार्थ रीति आत्मा समझे और बाप को भी बिन्दी मिसल समझ याद करें, वह ज्ञान का सागर है, बीजरूप है..... ऐसा समझ बड़ा मुश्किल याद करते हैं। मोटे ख्यालात से नहीं, इसमें महीन बुद्धि से काम लेना होता है-हम आत्मा हैं, हमारा बाप आया हुआ है, वह बीजरूप नॉलेजफुल है। हमको नॉलेज सुना रहे हैं। धारणा भी मुझ छोटी-सी आत्मा में होती है। ऐसे बहुत हैं जो मोटी रीति सिर्फ कह देते हैं- आत्मा और परमात्मा.... लेकिन यथार्थ रीति बुद्धि में आता नहीं है। ना से तो मोटी रीति याद करना भी ठीक है। परन्तु वह यथार्थ याद जास्ती फलदायक है। वह इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। इसमें बड़ी मेहनत है। मैं आत्मा छोटी-सी बिन्दु हूँ, बाबा भी इतनी छोटी-सी बिन्दु हैं, उनमें सारा ज्ञान है, यह भी यहाँ तुम बैठे हो तो कुछ बुद्धि में आता है लेकिन चलते-फिरते वह चिंतन रहे, सो नहीं। भूल जाते हैं। सारा दिन वही चिंतन रहे-यह है सच्ची-सच्ची याद। कोई सच बताते नहीं हैं कि हम कैसे याद करते हैं। चार्ट भल भेजते हैं परन्तु यह नहीं लिखते कि ऐसे अपने को बिन्दी समझ और बाप को भी बिन्दी समझ याद करता हूँ। सच्चाई से पूरा लिखते नहीं हैं। भल बहुत अच्छी- अच्छी मुरली चलाते हैं परन्तु योग बहुत कम है। देह- अभिमान बहुत है, इस गुप्त बात को पूरा समझते नहीं, सिमरण नहीं करते हैं। याद से ही पावन बनना है। पहले तो कर्मातीत अवस्था चाहिए ना। वही ऊंच पद पा सकेंगे। बाकी मुरली बजाने वाले तो ढेर हैं। लेकिन बाबा जानते हैं योग में रह नहीं सकते। विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है। वह अल्पकाल के मर्तबे पाने के लिए भी कितना पढ़ते हैं। सोर्स ऑफ इनकम अब हुई है। आगे थोड़ेही बैरिस्टर आदि इतना कमाते थे। अभी कितनी कमाई हो गई है।बच्चों को अपने कल्याण के लिए एक तो अपने को आत्मा समझ यथार्थ रीति बाप को याद करना है और त्रिमूर्ति शिव का परिचय औरों को भी देना है। सिर्फ शिव कहने से समझेंगे नहीं। त्रिमूर्ति तो जरूर चाहिए। मुख्य है ही दो चित्र त्रिमूर्ति

और झाड़। सीढ़ी से भी झाड़ में जास्ती नॉलेज है। यह चित्र तो सबके पास होने चाहिए। एक तरफ त्रिमूर्ति गोला, दूसरे तरफ झाड़।

अब बाप कहते हैं इस दु:खधाम को देखते हुए भी भूल जाओ। बस, अभी तो हमको शान्तिधाम में जाना है। यह आत्मा कहती है, आत्मा रियलाइज करती है। आत्मा को स्मृति आई है कि मैं आत्मा हूँ। बाप कहते हैं मैं जो हूँ जैसा हूँ..... और तो कोई समझ न सके। तुमको ही समझाया है - मैं बिन्दी हूँ। तुम्हें यह घड़ी-घड़ी बुद्धि में रहना चाहिए कि हमने 84 का चक्र कैसे लगाया है। इसमें बाप भी याद आयेगा, घर भी याद आयेगा, चक्र भी याद आयेगा। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी को तुम ही जानते हो। ऊंच ते ऊंच भगवान है सब आत्माओं का बाप। बाबा कहने से एकदम खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। अतीन्द्रिय सुख तुम्हारी अन्तिम अवस्था का गाया हुआ है। जब इम्तहान के दिन नजदीक आते हैं, उस समय सब साक्षात्कार होते हैं। अतीन्द्रिय सुख भी बच्चों को नम्बरवार है। कोई तो बाप की याद में बड़ी खुशी में रहते हैं। तुम बच्चों को सारा दिन यही फीलिंग रहे कि ओहो बाबा, आपने हमें क्या से क्या बना दिया! आपसे कितना न हमें सुख मिलता है...... बाप को याद करते प्रेम के आंसू आ जाते। कमाल है, आप आकरके हमको दु :ख से छुड़ाते हो, विषय सागर से क्षीरसागर में ले चलते हो, सारा दिन यही फीलिंग रहनी चाहिए। बाप जिस समय तुमको याद दिलाते हैं तो तुम कितने गदगद होते हो। शिवबाबा हमको राजयोग सिखला रहे हैं। बरोबर शिवरात्रि भी मनाई जाती है। परन्तु मनुष्यों ने शिवबाबा के बदले श्रीकृष्ण का नाम गीता में दे दिया है। यह बड़े ते बड़ी एकज भूल है। नम्बरवन गीता में ही भूल कर दी है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है।

बाप को पहचान जाएं तो मिलने बिगर रह न सके, एकदम नशा चढ़ जाए। जिन्हे नशा चढ़ा हुआ होगा उन्हें अन्दर में बहुत खुशी रहेगी। उनकी बुद्धि मित्र-सम्बन्धियों में भटकेगी नहीं।

परन्तु बहुतों की भटकती रहती है। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है और बाप की याद में रहना है। है बहुत सहज। जितना हो सके बाप को याद करते रहो। जैसे ऑफिस से छुटटी लेते हैं, वैसे धन्धे से छुटटी पाकर एक-दो दिन याद की यात्रा में बैठ जाओ। घड़ी- घड़ी याद में बैठने के लिए अच्छा सारा दिन व्रत रख लेता हूँ-बाप को याद करने का। कितना जमा हो जायेगा। विकर्म भी विनाश होंगे। बाप की याद से ही सतोप्रधान बनना है। सारा दिन पूरा योग तो किसका लग भी न सके। माया विघ्न जरूर डालती है फिर भी पुरूषार्थ करते-करते विजय पा लेंगे। बस, आज का सारा दिन बगीचे में बैठ बाप को याद करता हूँ। खाने पर भी बस याद में बैठ जाता हूँ। यह है मेहनत। हमको पावन जरूर बनना है। मेहनत करनी है, औरों को भी रास्ता बताना है। बैज तो बहुत अच्छी चीज़ है। रास्ते में आपस में भी बात करते रहेंगे तो बहुत आकर सुनेंगे। बाप कहते हैं मुझे याद करो, बस मैसेज मिल गया तो हम रेसपॉन्सिबिलिटी से छूट गये।

बाप ने बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ, बाप जो हैं, जैसा है, उसको उसी रूप में याद करते हो। परन्तु ऐसी बुद्धि उनकी होगी जो पूरा योगयुक्त होंगे, जिनकी बाप से प्रीत बुद्धि होगी। सब तो नहीं हैं ना। एक दो के नाम-रूप में लटक पड़ते हैं। बाप कहते हैं प्रीत तो मेरे साथ लगाओ ना। माया ऐसी है जो प्रीत रखने नहीं देती है। माया भी देखती है हमारा ग्राहक जाता है तो एकदम नाक-कान से पकड़ लेती है। फिर जब धोखा खाते हैं तब समझते हैं माया से धोखा खाया। मायाजीत, जगतजीत बन नहीं सकेंगे, ऊँच पद पा नहीं सकेंगे, इसमें ही मेहनत है। श्रीमत कहती है मामेकम् याद करो तो तुम्हारी जो पतित बुद्धि है वह पावन बन जायेगी। परन्तु कइयों को बड़ा मुश्किल लगता है। इसमें सब्जेक्ट एक ही है अलफ और बे। बस, दो अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं! बाबा कहे अलफ को याद करो फिर अपनी देह को, दूसरे की देह को याद करते रहते हैं। बाबा कहते हैं देह को देखते हुए

तुम मुझे याद करो। आत्मा को अब तीसरा नेत्र मिला है मुझे देखने-समझने का, उससे काम लो। तुम बच्चे अभी त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनते हो। परन्तु त्रिकालदर्शी भी नम्बरवार हैं। नॉलेज धारण करना कोई मुश्किल नहीं है। बहुत ही अच्छा समझते हैं परन्तु योगबल कम है, देही- अभिमानी-पना बहुत कम है। थोड़ी बात में क्रोध, गुस्सा आ जाता है, गिरते रहते हैं। उठते हैं, गिरते हैं। आज उठे कल फिर गिर पड़ते हैं। देह- अभिमान मुख्य है फिर और विकार लोभ, मोह आदि में फंस पड़ते हैं। देह में भी मोह रहता है ना। माताओं में मोह जास्ती होता है। अब बाप उससे छुड़ाते हैं। तुमको बेहद का बाप मिला है फिर मोह क्यों रखते हो? उस समय शक्ल बातचीत ही बन्दर मिसल हो जाती है। बाप कहते हैं-नष्टोमोहा बन जाओ, निरन्तर मुझे याद करो। पापों का बोझा सिर पर बहुत है, वह कैसे उतरे? परन्तु माया ऐसी है, याद करने नहीं देगी। भल कितना भी माथा मारो घड़ी-घड़ी बुद्धि को उड़ा देती है। कितनी कोशिश करते हैं हम मोस्ट बिलवेड बाबा की ही महिमा करते रहें। बाबा, बस आपके पास आये कि आये, परन्तु फिर भूल जाते हैं। बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह नम्बरवन में जाने वाला भी पुरुषार्थी है ना। बच्चों की बुद्धि में यह याद रहना चाहिए कि हम गॉड फादरली स्टूडेंट हैं। इन मूसलों और नैचुरल कैलेमिटीज से पुरानी दुनिया का विनाश हुआ था, सो अभी भी होगा। विनाश का समय जब होगा तो ड्रामा प्लैन अनुसार एक्ट में आ ही जायेंगे। ड्रामा विनाश जरूर करायेगा। रक्त की नदियाँ यहाँ बहेगी। सिविलवार में एक-दो को मार डालते हैं ना। तुम्हारे में भी थोड़े जानते हैं कि यह दुनिया बदल रही है। अब हम जाते हैं सुखधाम। तो सदैव ज्ञान के अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए। जितना याद में रहेंगे उतना सुख बढ़ता जायेगा। छी-छी देह से नष्टोमोहा होते जायेंगे। बाप सिर्फ कहते हैं अलफ को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी है। सेकण्ड में बादशाही, बादशाह को बच्चा हुआ तो गोया बच्चा बादशाह बना ना। तो बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो और चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती महाराजा बनेंगे, इसलिए गाया

जाता है सेकण्ड में जीवनमुक्ति, सेकण्ड में बेगर टू प्रिन्स। कितना अच्छा है। तो श्रीमत पर अच्छी रीति चलना चाहिए। कदम-कदम पर राय लेनी होती है।

ऐसा विश्व का मालिक बनाने वाले, पतित से पावन बनाने वाले बाप के साथ बहुत लव होना चाहिए। सवेरे-सवेरे उठने से ही पहले-पहले शिवबाबा से गुडमॉर्निंग करना चाहिए। गुडमॉर्निंग अर्थात् याद करेंगे तो बहुत खुशी में रहेंगे। बच्चों को अपने दिल से पूछना है हम सवेरे उठकर कितना बेहद के बाप को याद करते हैं? मनुष्य भक्ति भी सवेरे करते हैं ना! भक्ति कितना प्यार से करते हैं। परन्तु बाबा जानते हैं कई बच्चे दिल व जान, सिक व प्रेम से याद नहीं करते हैं। सवेरे उठ बाबा से गुडमॉर्निंग करे, ज्ञान के चिन्तन में रहे तो खुशी का पारा चढ़े। बाप से गुडमॉर्निंग नहीं करेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा। मुख्य है ही याद , इससे भविष्य के लिए तुम्हारी बहुत भारी कमाई होती है। कल्प- कल्पान्तर यह कमाई काम आयेगी। बड़ा धैर्य, गम्भीरता, समझ से याद करना होता है। मोटे हिसाब में तो भल करके यह कह देते हैं कि हम बाबा को बहुत याद करते हैं परन्तु एक्यूरेट याद करने में मेहनत है। जो बाप को जास्ती याद करते हैं उनको करेन्ट जास्ती मिलती है क्योंकि याद से याद मिलती है। योग और ज्ञान दो चीजें हैं। योग की सबजेक्ट अलग है, बहुत भारी सबजेक्ट है। योग से ही आत्मा सतोप्रधान बनती है। याद बिना सतोप्रधान होना, असम्भव है। अच्छी रीति प्यार से बाप को याद करेंगे तो आटोमेटिकली करेंट मिलेगी, हेल्दी बन जायेंगे। करेन्ट से आयु भी बढ़ती है। बच्चे याद करते हैं तो बाबा भी सर्चलाइट देते हैं। बाप कितना बड़ा भारी खजाना तुम बच्चों को देते हैं।

सब याद करते हैं-शिवबाबा को, ब्रह्मा को भी नहीं। यह खुद कहते हैं शिवबाबा को याद करो, जिससे विकर्म विनाश होंगे, और कोई को भी याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। गीता में

भी कहा है मामेकम याद करो। कृष्ण तो कह न सके। वर्सा मिलता ही है निराकार बाप से। अपने को जब आत्मा समझे तब निराकार बाप को याद करें। मैं आत्मा हूँ, पहले यह पक्का निश्चय करना पड़े। मेरा बाप परमात्मा है, वह कहते हैं मुझे याद करो तो मैं तुमको वर्सा दूँगा। मैं सबको सुख देने वाला हूँ। मैं सभी आत्माओं को शान्तिधाम ले जाता हूँ। जिन्होंने कल्प पहले बाप से वर्सा लिया होगा वही आकर वर्सा लेंगे, ब्राह्मण बनेंगे। ब्राह्मणों में भी कुछ बच्चे पक्के हैं। मातेले भी बनेंगे, सौतेले भी बनेंगे। हम निराकार शिवबाबा की वंशावली हैं। तुम बच्चों को यह ज्ञान सिमरण कर अतीन्द्रिय सुख में रहना है। बहुत प्याइंटस हैं। परन्तु बाबा समझते हैं माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। तो यह याद रहना चाहिए कि शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। वह हैं ऊँच ते ऊँच। हमको अब वापस घर जाना है। कितनी सहज बातें हैं। सारा मदार है याद पर। हमको देवता बनना है। दैवी गुण भी धारण करने हैं। 5 विकार हैं भूत। काम का भूत, क्रोध का भूत, देह- अभिमान का भूत भी होता है। हाँ, कोई में जास्ती भूत होते हैं, कोई में कम। तुम ब्राह्मण बच्चों को पता है यह 5 बड़े भूत हैं। नम्बरवन है काम का भूत, सेकण्ड नम्बर है क्रोध का भूत। कोई रफढफ बोलता है तो बाप कहते हैं यह क्रोधी हैं। यह भूत निकल जाना चाहिए। परन्तु भूत निकलना बड़ा मुश्किल है। क्रोध एक-दो को दु :ख देता है। मोह में बहुतों को दु :ख नहीं होगा। जिसको मोह है उनको ही दु :ख होगा इसलिए बाप समझाते हैं इन भूतों को भगाओ।

बच्चों ने गीत सुना, इसका अर्थ भी अन्दर जानना चाहिए कि कितने पाप बचे हुए हैं, कितने पुण्य जमा हैं अर्थात् आत्मा को सतोप्रधान बनने में कितना समय है? अभी कितने तक पावन बने हैं-यह समझ तो सकते हैं ना? चार्ट में कोई लिखते हैं हम दो-तीन घण्टा याद में रहे, कोई लिखते हैं एक घण्टा। यह तो बहुत कम हुआ। कम याद करेंगे तो कम पाप कटेंगे। अभी तो पाप बहुत हैं ना, जो कटे नहीं हैं। आत्मा को ही प्राणी कहा जाता है। तो अब बाप कहते हैं-हे

आत्मा, अपने से पूछो इस हिसाब से कितने पाप कटे होंगे? चार्ट से मालूम पड़ता है-हम कितना पुण्य आत्मा बने हैं? यह तो बाप ने समझाया है, कर्मातीत अवस्था अन्त में होगी। याद करते-करते आदत पड़ जायेगी तो फिर ज्यादा पाप कटने लगेंगे। अपनी जांच करनी है हम कितना बाप की याद में रहते हैं? इसमें गप मारने की बात नहीं। यह तो अपनी जाँच करनी होती है। बाबा को अपना चार्ट लिखकर देंगे तो बाबा झट बतायेंगे कि यह चार्ट ठीक है वा नहीं? आसामी, चलन, सर्विस और खुशी को देख बाबा झट समझ जाते हैं कि इनका चार्ट कैसा हैं! घड़ी-घड़ी याद किनको रहती होगी? जो म्युजियम अथवा प्रदर्शनी की सर्विस में रहते हैं। म्युजियम में तो सारा दिन आना-जाना रहता हैं।

यह लक्ष्मी-नारायण भी भारत के ही मनुष्य थे। यह भी सब मनुष्य हैं। परन्तु यह शिवालय के रहने वाले हैं इसलिए सब नमस्ते करते हैं। परन्तु बच्चे पूरा समझाते नहीं हैं, अपना नशा चढ़ जाता है। डिफेक्ट तो बहुतो में हैं ना। जब पूरा योग हो तब विकर्म विनाश हों। विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है। बाबा देखते हैं, माया एकदम नाक से पकड़कर गटर में गिरा देती है। बाप की याद में तो बड़ी खुशी में प्रफुल्लित रहना चाहिए। सामने एम ऑब्जेक्ट खड़ी है, हम यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं। भूल जाने से खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ, बाहर में हम याद नहीं कर सकते हैं। याद में नहीं रहते हैं इसलिए कभी-कभी बाबा भी प्रोगाम भेज देते हैं परन्तु याद में बैठते थोड़ेही हैं, बुद्धि इधर-उधर भटकती रहती है। बाबा अपना मिसाल बताते हैं-नारायण का कितना पक्का भक्त था, जहाँ-तहाँ साथ में नारायण का चित्र रहता था। फिर भी पूजा के समय बुद्धि इधर- उधर भागती थी। इसमें भी ऐसा होता है। बाप कहते हैं चलते-फिरते बाप को याद करो परन्तु कई कहते हैं - बहन नेष्ठा करावे। नेष्ठा का तो कोई अर्थ ही नहीं है। बाबा हमेशा कहते हैं याद में रहो, कई बच्चे नेष्ठा में बैठे-बैठे ध्यान में चले जाते हैं। न ज्ञान, न याद रहती। या तो फिर झुटके खाने

लग पड़ते हैं, बहुतों को आदत पड़ गई है। यह तो अल्पकाल की शान्ति हो गई। गोया बाकी सारा दिन अशान्ति रहती है। चलते-फिरते बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा? आधाकल्प का बोझा है। इसमें ही बड़ी मेहनत है। अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। भल बाबा को बहुत बच्चे लिख भेजते हैं-इतना समय याद में रहा परन्तु याद रहती नहीं है। चार्ट को समझते ही नहीं हैं | बाबा बेहद का बाप है। पतित-पावन है तो खुशी में रहना चाहिए। ऐसे नहीं, हम तो शिवबाबा के हैं ना। ऐसे भी बहुत हैं, समझते हैं हम तो बाबा के हैं लेकिन याद बिल्कुल करते नहीं। अगर याद करते होते तो फिर पहले नम्बर में जाना चाहिए।

बच्चों को बहुत खबरदार होना है। अपनी मत पर कमेटियां आदि बनाना, उसमें कुछ रखा नहीं है। बाप से बुद्धियोग रखो-जिससे ही सतोप्रधान बनना है। बाप का बनकर और फिर बाप से योग नहीं लगाते, श्रीमत का उल्लंघन करते हैं तो एकदम गिर पड़ते हैं। कनेक्शन ही टूट पड़ता है। लिंक टूट पड़ता है। लिंक टूट जाए तो चेक करना चाहिए कि माया हमको इतना क्यों तंग करती है। कोशिश कर बाप के साथ लिंक जोड़नी चाहिए। नहीं तो बैटरी चार्ज कैसे होगी। विकर्म करने से बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। ऊंच चढ़ते-चढ़ते गिर पड़ते हैं। जानते हो ऐसे कई हैं। शुरू में कितने ढेर आकर बाबा के बने। भट्ठी में आये फिर आज कहाँ हैं? गिर पड़े क्योंकि पुरानी दुनिया याद आई। अभी बाप कहते हैं हम तुमको बेहद का वैराग्य दिला रहा हूँ। इस पुरानी पतित दुनिया से दिल नहीं लगानी है। दिल लगाओ स्वर्ग से, मेहनत है। अगर यह लक्ष्मी-नारायण बनना चाहते हो तो मेहनत करनी पड़े। बुद्धियोग एक बाप के साथ होना चाहिए। पुरानी दुनिया से वैराग्य। अच्छा, पुरानी दुनिया को भूल जाएं यह तो ठीक है। भला याद किसको करें? शान्तिधाम-सुखधाम को। जितना हो सके उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप को याद करो। बेहद सुख के स्वर्ग को याद करो। यह तो बिल्कुल सहज है। अगर इन दोनों आशाओं से उल्टा चलते

हैं तो पद भ्रष्ट हो पड़ते हैं। तुम यहाँ आये ही हो नर से नारायण बनने के लिए। सबको कहते हो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है क्योंकि रिटर्न जर्नी होती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट माना नर्क से स्वर्ग, फिर स्वर्ग से नर्क। यह चक्र फिरता ही रहता है। बाप ने कहा है यहाँ स्वदर्शन चक्रधारी होकर बैठो। इसी याद में रहो, हमने कितना बारी यह चक्र लगाया है। हम स्वदर्शन चक्रधारी हैं, अभी फिर से देवता बनते हैं। दुनिया में कोई भी इस राज़ को नहीं जानते हैं। यह ज्ञान देवताओं को तो सुनाना नहीं है। वह तो हैं ही पवित्र। उनमें ज्ञान है नहीं जो शंख बजायें। पवित्र भी हैं इसलिए उनको निशानी देने की दरकार ही नहीं। निशानी तब होती है जब दोनों इकट्ठे चतुर्भुज होते हैं। तुमको भी नहीं देते हैं क्योंकि तुम आज देवता कल फिर नीचे गिर जाते हो। माया गिराती है ना। बाप डीटी बनाते हैं, माया फिर डेविल बना देती है। अनेक प्रकार से माया परीक्षा लेती है। बाप जब समझाते हैं तब पता पड़ता है। सचमुच हमारी अवस्था गिरी हुई है। कितने बिचारे अपना सब कुछ शिवबाबा के खजाने में जमा कराए फिर भी कभी माया से हार खा लेते हैं। शिवबाबा के बन गये फिर भूल क्यों जाते, इसमें योग की यात्रा मुख्य है। योग से ही पवित्र बनना है। नॉलेज के साथ-साथ पवित्रता भी चाहिए। तुम बुलाते भी हो बाबा हमको आकर पावन बनाओ, जो हम स्वर्ग में जा सकें। याद की यात्रा है ही पावन बन ऊंच पद पाने के लिए। जो चले जाते हैं फिर भी कुछ न कुछ सुना है तो शिवालय में आयेंगे जरूर। फिर पद भल कैसा भी पायें परन्तु आते हैं जरूर। एक बार भी याद किया तो स्वर्ग में आ जायेंगे, बाकी ऊंच पद नहीं। स्वर्ग का नाम सुन खुश नहीं होना चाहिए। फेल होकर पाई पैसे का पद पा लेना, इसमें खुश नहीं होना चाहिए। भल स्वर्ग है परन्तु उसमें पद तो बहुत हैं ना। फीलिंग तो आती है ना-मैं नौकर हूँ, मेहतर हूँ। पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होगा-हम क्या बनेंगे, हमसे क्या विकर्म हुआ है जो ऐसी हालत हुई है? मैं महारानी क्यों नहीं बनी? कदम-कदम पर खबरदारी से चलने से तुम पदमपति बन सकते हो। खबरदारी नहीं तो पदमपति बन नहीं सकेंगे। मन्दिरों में देवताओं को पदमपति की निशानी दिखाते हैं। फ़र्क तो समझ सकते हैं ना। दर्जे का भी बहुत फ़र्क है। अभी भी देखो दर्जे कितने हैं। कितना ठाठ रहता है। है तो अल्पकाल का सुख। तो अब

बाप कहते हैं यह ऊंच पद पाना है, जिसके लिए सब हाथ उठाते हैं तो इतना पुरूषार्थ करना है। हाथ उठाने वाले भी खुद खत्म हो जाते हैं। कहेंगे यह देवता बनने वाले थे। पुरूषार्थ करते खत्म हो गये। हाथ उठाना सहज है। बहुतों को समझाना भी सहज है, महारथी समझाते भी गायब हो जाते हैं। औरों का कल्याण कर खुद अपना अकल्याण कर बैठते हैं, इसलिए बाप समझाते हैं खबरदार रहो। अन्तर्मुख हो बाप को याद करना है। किस प्रकार से? बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है, हम जा रहे हैं-अपने स्वीट होम में। यह सब ज्ञान अन्दर में होना चाहिए। बाप में ज्ञान और योग दोनों हैं। तुम्हारे में भी होना चाहिए। जानते हैं शिवबाबा पढ़ाते हैं तो ज्ञान भी हुआ, याद भी हुई। ज्ञान और योग दोनों इकट्ठा चलता है। ऐसे नहीं, योग में बैठे शिवबाबा को याद करते रहे, नॉलेज भूल जाए। बाप योग सिखाते हैं तो नॉलेज भूल जाती है क्या! सारी नॉलेज उनमें रहती है। तुम बच्चों में यह नॉलेज होनी चाहिए। पढ़ना चाहिए। जैसे कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे। मैं मुरली नहीं पढ़ूँगा तो और भी नहीं पढ़ेंगे। मैं जैसे दुर्गति को पाऊंगा तो और भी दुर्गति को पा लेंगे। मैं निमित्त बन जाऊंगा औरों को गिराने के। कई बच्चे मुरली नहीं पढ़ते हैं, मिथ्या अहंकार आ जाता है। माया झट वार कर लेती है। कदम-कदम पर श्रीमत चाहिए। नहीं तो कुछ न कुछ विकर्म बन जाते हैं। बहुत बच्चे भूलें करते हैं फिर सत्यानाश हो जाती है। गफलत होने से माया थप्पड़ लगाए वर्थ नाट ए पेनी बना देती है। इसमें बड़ी समझ चाहिए। अहंकार आने से माया बहुत विकर्म कराती है। जब कोई कमेटी आदि बनाते हो तो उसमें हेड एक-दो फीमेल जरूर होनी चाहिए, जिनकी राय पर काम हो। कलष तो लक्ष्मी पर रखा जाता है ना। गायन भी है अमृत पिलाती थी तो असुर भी बैठ पीते थे। फिर कहाँ यज्ञ में विघ्न डालते हैं, अनेक प्रकार के विघ्न डालने वाले हैं। सारा दिन बुद्धि में झरमुई झगमुई की बातें रहती हैं, यह बहुत खराब है। कोई भी बात है तो बाप को रिपोर्ट करो। सुधारने वाला तो एक ही बाप है। तुम अपने हाथ में लॉ नहीं उठाओ। तुम बाप की याद में रहो। सबको बाप का परिचय दो तब ऐसा बन सकेंगे। माया बहुत कड़ी है, किसको भी नहीं छोड़ती है। सदैव बाप को समाचार लिखना चाहिए। डायरेक्शन लेते रहना चाहिए। यूँ तो हर एक डायरेक्शन मिलते

ही रहते हैं। बच्चे समझते हैं बाबा ने तो आपेही इस बात पर समझा दिया तो अन्तर्यामी है। बाप कहते - नहीं, मैं तो नॉलेज पढ़ाता हूँ। इसमें अन्तर्यामी की तो बात ही नहीं। हाँ, यह जानते हैं कि यह सब मेरे बच्चे हैं। हर एक के अन्दर की आत्मा मेरे बच्चे हैं। बाकी ऐसे नहीं बाप सबमें विराजमान है। मनुष्य उल्टा समझ लेते हैं।

तुम्हारा सारा दिन यही ख्यालात चलता होगा कि हम आत्मा हैं। हमारी आत्मा जो बहुत पतित थी, सो अब पावन बनने के लिए पावन बाप को याद करती है। याद का अर्थ भी समझना है। आत्मा याद करती है अपने स्वीट बाप को। बाप खुद कहते हैं-बच्चे, मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान देवता बन जायेंगे। सारा मदार याद की यात्रा पर है। बाप जरूर पूछेंगे ना-बच्चे कितना समय याद करते हो? याद करने में ही माया की लड़ाई होती है। तुम खुद समझते हो यह यात्रा नहीं परन्तु जैसेकि लड़ाई है, इसमें विघ्न बहुत पड़ते हैं। याद की यात्रा में रहने में ही माया विघ्न डालती है अर्थात् याद भुला देती है। कहते भी हैं बाबा हमको आपकी याद में रहने में माया के तूफान बहुत लगते हैं। नम्बरवन तूफान है देह-अभिमान का। फिर है काम, क्रोध, लोभ, मोह.....। बच्चे कहते हैं बाबा हम बहुत कोशिश करते हैं याद में रहने में कोई विघ्न न आये परन्तु फिर भी तूफान लगते हैं। आज क्रोध का तूफान, आज लोभ का तूफान आया। आज हमारी अवस्था अच्छी रही, कोई भी तूफान नहीं आया। याद की यात्रा में सारा दिन रहे, बड़ी खुशी थी। बाबा को बहुत याद किया। याद में प्रेम के आंसू बहते रहते हैं। बाप की याद में रहने से तुम मीठे बन जायेंगे।

यहाँ इस रूहानी सर्विस में हड्डी आदि सब खलास कर देते हैं, फिर फरिश्ते बन जाते हैं। अभी तो हड्डी है ना। यह भी लिखा हुआ है– अपनी हड्डियां भी सर्विस में दे दी। गोया अपनी हड्डियां खलास करते हैं। स्थूलवतन से सूक्ष्मवतनवासी बनना है। यहाँ हम हड्डी देकर सूक्ष्म

बन जाते हैं। इस सर्विस में सब स्वाहा करना है। याद में रहते-रहते हम फरिश्ते बन जायेंगे। यह भी गाया हुआ है– मिरूआ मौत मलूका शिकार, मलूक फरिश्ते को कहा जाता है। तुम मनुष्य से फरिश्ते बनते हो। तुमको देवता नहीं कह सकते। यहाँ तो तुमको शरीर है ना। सूक्ष्मवतन का वर्णन अभी होता है। योग में रह फिर फरिश्ते बन जाते हैं। पिछाड़ी में तुम फरिश्ते बन जायेंगे। तुमको सब साक्षात्कार होगा और खुशी होगी। मनुष्य तो सब काल का शिकार हो जायेंगे। तुम्हारे में जो महावीर हैं वह तो अडोल रहेंगे। बाकी क्या-क्या होता रहेगा! विनाश की सीन तो होनी है ना। अर्जुन को विनाश का साक्षात्कार हुआ। एक अर्जुन की बात नहीं है। तुम बच्चों को विनाश और स्थापना का साक्षात्कार होता है।

- अभी जाना है घर तो बाप को भी याद करना है, जिससे पाप कटते हैं। परन्तु बच्चों से याद की मेहनत पहुँचती नहीं है क्योंकि अलबेलापन है। सवेरे उठते नहीं हैं। अगर उठते हैं तो मजा नहीं आता। नींद आने लगती है तो फिर सो जाते हैं। होपलेस हो जाते हैं। बाबा कहते हैं-बच्चे, यह युद्ध का मैदान है ना। इसमें होपलेस नहीं होना चाहिए। याद के बल से ही माया पर जीत पानी है। इसमें मेहनत करनी चाहिए। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे जो यथार्थ रीति याद नहीं करते, चार्ट रखने से घाटे-फायदे का पता पड़ जाता है। कहते हैं चार्ट ने तो मेरी अवस्था में कमाल कर दी है। ऐसे विरला कोई चार्ट रखता है। यह भी बड़ी मेहनत है। बहुत सेन्टर्स में झूठे भी जाकर बैठते हैं, विकर्म करते रहते हैं। बाप के डायरेक्शन पर अमल न करने से बहुत नुकसान कर देते हैं। बच्चों को पता थोड़ेही पड़ता है-निराकार कहते हैं वा साकार? बच्चों को बार-बार समझाया जाता है-हमेशा समझो शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं। तो तुम्हारी बुद्धि वहाँ लगी रहेगी।

- ज्ञान की बातें तो बहुत हैं ना इसलिए 7 रोज़ दिये जाते हैं। 7 रोज़ भट्ठी में रहना पड़े। परन्तु ऐसे भी नहीं यहाँ भट्ठी में रहना है। ऐसे तो फिर भट्ठी का बहाना कर बहुत ढेर आ जाएं। पढ़ाई सवेरे

और शाम को होती है। दोपहर में वायुमण्डल ठीक नहीं होता है। रात्रि का भी 10 से 12 तक बिल्कुल खराब टाइम है। यहाँ तुम बच्चों को भी मेहनत करनी है, याद में रह सतोप्रधान बनने की। वहाँ तो सारा दिन काम-धंधे में रहते हो। ऐसे भी बहुत होते हैं जो धंधा धोरी करते फिर पढ़ते भी हैं जास्ती अच्छी नौकरी करने के लिए। यहाँ भी तुम पढ़ते हो तो टीचर को याद करना पड़े जो पढ़ाते हैं। अच्छा, टीचर समझकर ही याद करो तो भी तीनों ही इकट्ठे याद आ जाते हैं- बाप, टीचर, गुरू, तुम्हारे लिए बहुत सहज है तो झट याद आने चाहिए। यह हमारा बाबा भी है, टीचर और गुरू भी है। ऊंच ते ऊंच बाप है जिससे हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। हम स्वर्ग में जरूर जायेंगे।

अब एक बाप की ही याद में रहना है। यहाँ तुमको फुर्सत अच्छी रहती है। सवेरे में स्नान आदि कर बाहर घूमने फिरने में बड़ा मज़ा आता है, अन्दर में यही याद रहे हम सब एक्टर्स हैं। यह भी अभी स्मृति आई है। बाबा ने हमको 84 के चक्र का राज़ बताया है। हम सतोप्रधान थे, यह बड़ी खुशी की बात है। मनुष्य घूमते-फिरते हैं, उनकी कुछ भी कमाई नहीं। तुम तो बहुत कमाई करते हो। बुद्धि में चक्र भी याद रहे फिर बाप को भी याद करते रहो। कमाई करने की युक्तियां बाबा बहुत अच्छी-अच्छी बताते हैं। जो बच्चे ज्ञान का विचार सागर मंथन नहीं करते हैं उनकी बुद्धि में माया खिट-खिट करती है। उन्हें ही माया तंग करती है। अन्दर में यह विचार करो हमने यह चक्र कैसे लगाया है। सतयुग में इतने जन्म लिए फिर नीचे उतरते आये। अब फिर सतोप्रधान बनना है। बाबा ने कहा है-मुझे याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। चलते-फिरते बुद्धि में याद रहे तो माया की खिट-खिट समाप्त हो जायेगी। तुम्हारा बहुत-बहुत फ़ायदा होगा। भल स्त्री-पुरूष साथ जाते हो। हर एक को अपनेसिर मेहनत करनी है, अपना ऊंच पद पाने। अकेले में जाने से तो बहुत ही मज़ा है। अपनी ही धुन में रहेंगे। दूसरा साथ में होगा तो भी बुद्धि इधर-उधर जायेगी। है बहुत सहज, बगीचे आदि तो सब जगह हैं, इन्जीनियर होगा तो उनका यही चिंतन

चलता रहेगा कि यहाँ पुल बनानी है, यह करना है। बुद्धि में प्लैन आ जाता है। तुम भी घर में बैठो फिर भी बुद्धि उस तरफ लगी रहे। यह आदत रखो तो तुम्हारे अन्दर यही चिन्तन चलता रहे। पढ़ना भी है, धंधा आदि भी करना है। बूढ़े, जवान, बच्चों आदि सबको पावन बनना है। आत्मा को हक है, बाप से वर्सा लेने का। बच्चों को भी छोटेपन में ही यह बीज पड़ जाए तो बहुत अच्छा। आध्यात्मिक विद्या और कोई सिखा न सके।

जैसे बाप से मिलने लिए तड़फते हैं, क्योंकि बाबा हमको स्वर्ग का रास्ता बताते हैं। ऐसे बाप को देखने लिए तड़फते हैं। समझते हैं ऐसे बाप के सम्मुख जाकर रोज़ मुरली सुनें। अभी तो समझते हो यहाँ कोई झंझट की बात नहीं रहती है। बाहर में रहने से तो सबसे तोड़ निभाना पड़ता है। नहीं तो खिटपिट हो जाए इसलिए सबको धीरज देते हैं। इसमें बड़ी गुप्त मेहनत है। याद की मेहनत कोई से पहुँचती नहीं। गुप्त याद में रहें तो बाप के डायरेक्शन पर भी चलें। देह-अभिमान के कारण बाप के डायरेक्शन पर चलते ही नहीं। कहता हूँ चार्ट बनाओ तो बहुत उन्नति होगी। यह किसने कहा? शिवबाबा ने। टीचर काम देते हैं तो करके आते हैं ना। यहाँ अच्छे-अच्छे बच्चों को भी माया करने नहीं देती। अच्छे-अच्छे बच्चों का चार्ट बाबा के पास आये तो बाबा बतायें देखो कैसे याद में रहते हो। समझते हैं हम आत्मायें आशिक, एक माशूक की हैं। वह जिस्मानी आशिक- माशूक तो अनेक प्रकार के होते हैं। तुम बहुत पुराने आशिक हो। अभी तुमको देही-अभिमानी बनना है। कुछ न कुछ सहन करना ही पड़ेगा। मिया मिट्ठू नहीं बनना है। बाबा ऐसे थोड़ेही कहते हड्डी दे दो। बाबा तो कहते हैं तन्दुरूस्ती अच्छी रखो तो सर्विस भी अच्छी रीति कर सकेंगे। बीमार होंगे तो पड़े रहेंगे। कोई-कोई हॉस्पिटल में भी समझाने की सर्विस करते हैं तो डॉक्टर लोग कहते हैं यह तो फ़रिश्ते हैं। चित्र साथ में ले जाते हैं। जो ऐसी-ऐसी सर्विस करते हैं उनको रहमदिल कहेंगे। सर्विस करते हैं तो कोई-कोई निकल पड़ते हैं। जितना-जितना याद बल में रहेंगे उतना मनुष्यों को तुम खीचेंगे, इसमें ही ताकत है। प्योरिटी फर्स्ट। कहा भी जाता है पहले प्योरिटी, पीस, पीछे प्रासपर्टी। याद के बल से ही तुम पवित्र

होते हो। फिर है ज्ञान बल। याद में कमजोर मत बनो। याद में ही विघ्न पड़ेंगे। याद में रहने से तुम पवित्र भी बनेंगे और दैवीगुण भी आयेंगे। बाप की महिमा तो जानते हो ना। बाप कितना सुख देते हैं। 21 जन्मों के लिए तुमको सुख के लायक बनाते हैं। कभी भी किसको दु:ख नहीं देना चाहिए।

तुम बाप को जितना याद करेंगे उतना पाप नाश होंगे। ऐसे नहीं कि बाप जानते हैं-यह बहुत याद करता है, यह कम याद करता है, यह तो अपना चार्ट खुद को ही देखना है। बाप ने कहा है याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाबा भी तुमसे ही पूछते हैं कि कितना याद करते हो? चलन से भी मालूम पड़ता है। सिवाए याद के पाप कट नहीं सकते। ऐसे नहीं, किसको ज्ञान सुनाते हो तो तुम्हारे वा उनके पाप कट जायेंगे। नहीं, जब खुद याद करें तब पाप कटें। मूल बात है पावन बनने की। बाप कहते हैं मेरे बने हो तो कोई पाप नहीं करो। नहीं तो बहुत ज़ोर से गिर पड़ेंगे। उम्मीद भी नहीं रखनी है कि हम अच्छा पद पा सकेंगे। प्रदर्शनी में बहुतों को समझाते हैं तो बस खुश हो जाते हैं, हमने बहुत सर्विस की। परन्तु बाप कहते हैं पहले तुम तो पावन बनो। बाप को याद करो। याद में बहुत फेल होते हैं। ज्ञान तो बहुत सहज है, सिर्फ 84 के चक्र को जानना है, उस पढ़ाई में कितने हिसाब-किताब पढ़ते हैं, मेहनत करते हैं। कमायेंगे क्या? पढ़ते-पढ़ते मर जाएं तो पढ़ाई खत्म। तुम बच्चे तो जितना याद में रहेंगे उतना धारणा होगी। पवित्र नहीं बनेंगे, पाप नहीं मिटायेंगे तो बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। ऐसे नहीं, हमारी याद तो बाबा को पहुँचती ही है। बाबा क्या करेंगे! तुम याद करेंगे तो तुम पावन बनेंगे, बाबा उसमें क्या करेंगे, क्या शाबास देंगे। बहुत बच्चे हैं जो कहते हैं हम तो सदैव बाप को याद करते ही रहते हैं, उनके बिगर हमारा है ही कौन? यह भी गपोड़ा मारते रहते हैं। याद में तो बड़ी मेहनत है। हम याद करते हैं वा नहीं, यह भी समझ नहीं सकते। अनजाने से कह देते हम तो याद करते ही हैं। मेहनत बिगर कोई विश्व का मालिक थोड़ेही बन सकते। ऊंच पद पा न सकें। याद का जौहर जब भरे तब सर्विस कर

सकें। फिर देखा जाए कितनी सर्विस कर प्रजा बनाई। हिसाब चाहिए ना। हम कितने को आपसमान बनाते हैं। प्रजा बनानी पड़े ना, तब राजाई पद पा सकते। वह तो अभी कुछ है नहीं। योग में रहें, जौहर भरे तब किसको पूरा तीर लगे। शास्त्रों में भी है ना-पिछाड़ी में भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य आदि को ज्ञान दिया। जब तुम्हारा पतितपना निकल सतोप्रधान तक आत्मा आ जाती है तब जौहर भरता है तो झट तीर लग जाता है। यह कभी ख्याल नहीं करो कि बाबा तो सब कुछ जानते हैं। बाबा को जानने की क्या दरकार है, जो करेंगे सो पायेंगे। बाबा साक्षी हो देखते रहते हैं। बाबा को लिखते हैं हमने फलानी जगह जाकर सर्विस की, बाबा पूछेंगे पहले तुम याद की यात्रा पर तत्पर हो? पहली बात ही यह है-और संग तोड़ एक बाप संग जोड़ो। देही-अभिमानी बनना पड़े। घर में रहते भी समझना है यह तो पुरानी दुनिया, पुरानी देह है। यह सब खलास होना है। हमारा काम है बाप और वर्से से। बाबा ऐसे नहीं कहते कि गृहस्थ व्यवहार में नहीं रहो, कोई से बात न करो। बाबा से पूछते हैं शादी पर जायें? बाबा कहेंगे भल जाओ। वहाँ भी जाकर सर्विस करो। बुद्धि का योग शिवबाबा से हो। जन्म-जन्मान्तर के विकर्म याद बल से ही भस्म होंगे। यहाँ भी अगर विकर्म करते हैं तो बहुत सज़ायें भोगनी पड़ें। पावन बनते-बनते विकार में गिरा तो मरा। एकदम पुर्जा-पुर्जा हो जाते। श्रीमत पर न चल बहुत नुकसान करते हैं। कदम-कदम पर श्रीमत चाहिए। ऐसे-ऐसे पाप करते हैं जो योग लग न सके। याद कर न सकें। कोई को जाकर कहेंगे-भगवान आया है, उनसे वर्सा लो, तो वह मानेंगे नहीं। तीर लगेगा नहीं। बाबा ने कहा है भक्तों को ज्ञान सुनाओ, व्यर्थ किसको न दो, नहीं तो और ही निंदा करायेंगे।

बच्चे कहते हैं बाबा तूफान बहुत आते हैं, हम भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं तुम किसको भूल जाते हो? बाप जो तुमको डबल सिरताज विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तुम कैसे भूलते हो! दूसरे किसको नहीं भूलते हो। स्त्री, बाल-बच्चे, चाचा, मामा, मित्र-सम्बन्धी आदि सब याद हैं। बाकी इस बात को तुम भूलते क्यों हो। तुम्हारी युद्ध इस याद में है, जितना हो सके याद

करना है। बच्चों को अपनी उन्नति के लिए सवेरे-सवेरे उठ बाप की याद में सैर करनी है। तुम छतों पर वा बाहर ठण्डी हवा में चले जाओ। यहाँ ही आकर बैठना कोई जरूरी नहीं है। बाहर भी जा सकते हो, सवेरे के टाइम कोई डर आदि की बात नहीं रहती है। बाहर में जाकर पैदल करो। आपस में यही बातें करते रहो, देखें कौन बाबा को जास्ती याद करते हैं, फिर बताना चाहिए कितना समय हमने याद किया। बाकी समय हमारी बुद्धि कहाँ-कहाँ गई। इसको कहा जाता है-एक-दो में उन्नति को पाना। नोट करो कितना समय बाप को याद किया। बाबा की जो प्रैक्टिस है वह बतलाते हैं। याद में तुम एक घण्टा पैदल करो तो भी टांगे थकेंगी नहीं। याद से तुम्हारे कितने पाप कट जायेंगे। चक्र को तो तुम जानते हो, रात-दिन तुमको अब यही बुद्धि में है कि हम अभी घर जाते हैं।

स्वर्ग और नर्क में तो बहुत फर्क है ना। कहाँ स्वर्ग, कहाँ यह नर्क! तुम खुशी में रहते हो, यह भी जानते हो बाप की याद भी पक्की ठहरेगी। हम आत्मा हैं-यही भूल जाते हैं तो फिर देह-अभिमान में आ जाते हैं। यहाँ बैठे हो तो भी कोशिश करके अपने को आत्मा निश्चय करो। तो बाप की याद भी रहेगी। देह में आने से फिर देह के सब सम्बन्ध याद आयेंगे। यह एक लॉ है। तुम गाते भी हो मेरा तो एक दूसरा न कोई। बाबा हम बलिहार जायेंगे। वह अभी समय है, एक को ही याद करना है। आंखों से भल किसको भी देखो, घूमो फिरो सिर्फ आत्मा को बाप को याद करना है। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है। परन्तु हाथों से काम करते, दिल बाप की याद में रहे, आत्मा को अपने माशूक को ही याद करना है। कोई की किसी सखी से प्रीत हो जाती है तो फिर उनकी याद ठहर जाती है। फिर वह रग टूटने में बड़ी मुश्किलात होती है। पूछते हैं बाबा यह क्या है! अरे, तुम नाम-रूप में क्यों फँसते हो। एक तो तुम देह-अभिमानी बनते हो और दूसरा फिर तुम्हारा कोई पास्ट का हिसाब-किताब है, वह धोखा देता है। बाप कहते हैं इन आंखों से जो कुछ देखते हो उनमें बुद्धि न जाये। तुम्हारी बुद्धि में यह रहे कि हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं।

ऐसे बहुत बच्चे हैं जो यहाँ बैठे भी बाप को कभी याद नहीं करते। कई तो यहाँ बैठे भी याद में नहीं रह सकते हैं। तो अपने को देखना चाहिए-हमने कितना शिवबाबा को याद किया? नहीं तो चार्ट में रोला पड़ जायेगा।

- भगवान कहते हैं - मीठे बच्चों, मुझे याद करो। अपने पास नोट करो, जब चाहे याद में बैठ जाओ। खाना खाकर चक्र लगाए 10-15 मिनट आकर बैठ जाओ याद में क्योंकि यहाँ कोई गोरखधन्धा तो है नहीं। फिर भी जो काम-काज छोड़कर आये हो वह कोई-कोई की बुद्धि में आता रहता है। बड़ी जबरदस्त मंजिल है, तब बाबा कहते हैं अपनी जांच करो। यह तुम्हारा मोस्ट वैल्युबुल टाइम है। भक्ति मार्ग में तुमने कितना टाइम वेस्ट किया है। दिन-प्रतिदिन गिरते ही रहते हो। कृष्ण का दीदार हुआ, बहुत खुशी हो जाती है। मिलता तो कुछ भी नहीं। बाप का वर्सा तो एक ही बार मिलता है, अब बाप कहते हैं मेरी याद में रहो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप मिट जाएं। स्वर्ग का पासपोर्ट उन्हीं बच्चों को मिलता है जो याद में रह अपने विकर्मों को विनाश कर कर्मातीत अवस्था को पाते हैं। नहीं तो बहुत सजा खानी पड़ती है। बाबा और भी राय देते हैं अपने ताज व तख्त का फोटो अपने पॉकेट में रख दो तो याद रहेगी। इनसे हम यह बनते हैं। जितना देखेंगे उतना याद करेंगे। फिर उसमें ही मोह लग जायेगा। हम यह बन रहे हैं-नर से नारायण, चित्र देखकर खुशी होगी। शिवबाबा याद आयेगा। यह सब पुरूषार्थ की युक्तियां हैं।

- यह भी बाबा जानते हैं तुम सारा दिन इस याद में रह नहीं सकेंगे, इम्पॉसिबुल है इसलिए चार्ट रखो, देखो हम कहाँ तक याद में रह सकते हैं? देह का अभिमान होगा तो याद कैसे रह सकेगी! पापों का बोझा सिर पर बहुत है इसलिए बाबा कहते हैं याद में रहो। त्रिमूर्ति का चित्र पॉकेट में

डाल दो, परन्तु तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। अल्फ को याद करने से बे आदि सब याद आ जाता है। बैज तो सदा लगा रहे।

तुमको अपने कर्म को स्वच्छ बनाने का है। स्वच्छता (पवित्रता) क्या है, वह बैठ करके स्पष्ट समझाते हैं कि तुम मेरी याद के बिना पवित्र बन ही नहीं सकते हो। भले तुम कोई देवता को याद करो। किसी के भी योग से तुम पवित्र नहीं बनोंगे। पापों को दग्ध करने का बल मेरे पास है इसलिए बाप कहते हैं जब तक मेरे से कनेक्शन नहीं है तब तक पावन नहीं बन सकते। जैसे बत्तियों का कनेक्शन मेन पॉवर हाउस से है ना। अगर वहाँ से कनेक्शन न हो तो बत्ती में लाइट नहीं होगी। वह बल नहीं आयेगा। इसी तरह से तुम्हारा कनेक्शन मेरे से हो, मैं हूँ मेन पॉवर हाउस तो उससे कनेक्शन चाहिए ना। अगर उससे कनेक्शन नहीं होगा तो तुमको ताकत नहीं मिलेगी और ताकत नहीं मिलेगी तो पाप दग्ध नहीं होंगे। पाप दग्ध नहीं होंगे तो तुम आगे नहीं बढ़ सकेंगे। तब कहते हैं एक मेरे से योग लगा। मेरे बिना तुम्हारी गति सदगति नहीं हो सकती।

ब्रदर्स को आपस में कभी लून-पानी नहीं होना चाहिए। यहाँ तो बाप से भी लून-पानी होते हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे लून-पानी हो जाते हैं। माया कितनी जबरदस्त है। जो अच्छे- अच्छे बच्चे हैं वह बाप को याद तो पड़ते हैं। बाप का कितना लव है बच्चों पर। बाप को तो सिवाए बच्चों के और कोई है नहीं जिसको याद करें। तुम्हारे लिए तो बहुत हैं। तुम्हारी बुद्धि इधर-उधर जाती है। धन्धे आदि में भी बुद्धि जाती है। हमारे लिए तो कोई धन्धा आदि भी नहीं है। तुम अनेक बच्चों के अनेक धन्धे हैं। हमारा तो एक ही धन्धा है। हम आये ही हैं बच्चों को स्वर्ग का वारिस बनाने। बेहद के बाप की प्रापर्टी सिर्फ तुम बच्चे हो। गॉड फादर है ना। सभी आत्मायें उनकी प्रापर्टी हैं। माया ने छी-छी बना दिया है। अब गुल-गुल बनाते हैं बाप। बाप कहते हैं मेरे तो तुम ही हो। तुम्हारे ऊपर हमारा मोह भी है। चिट्ठी नहीं लिखते हो तो ओना हो जाता है। अच्छे-अच्छे बच्चों

की चिट्ठी नहीं आती है। अच्छे-अच्छे बच्चों को एकदम माया खत्म कर देती है। जरूर देह-अभिमान है।

बाप से पूरा वर्सा लेने में ही माया गफ़लत कराती है। परन्तु तुम्हें उस फन्दे में नहीं फँसना है। माया से ही लड़ाई होती है। बहुत बड़े-बड़े तूफान आयेंगे। उसमें भी वारिसों पर जास्ती माया वार करेगी। रूसतम से रूसतम हो लड़ेगी। जैसे वैद्य दवाई देते हैं तो बीमारी सारी बाहर निकल आती है। यहाँ भी मेरे बनेंगे तो फिर सबकी याद आने लग पड़ेगी। तूफान आयेंगे, इसमें लाइन क्लीयर चाहिए। हम पहले पवित्र थे फिर आधाकल्प अपवित्र बनें। अब फिर वापिस जाना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। जितना याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। याद करते-करते तुम घर चले जायेंगे, इसमें बिल्कुल अन्तर्मुखता चाहिए। नॉलेज भी आत्मा में धारण होती है ना। आत्मा ही पढ़ती है। आत्मा का ज्ञान भी परमात्मा बाप ही आकर देते हैं।

यहाँ सब आत्मायें पतित हैं। पापों के दाग लगे हुए हैं इसलिए पाप आत्मा कहा जाता है। अब पाप निकले कैसे? जब कोई चीज पर स्याही वा तेल गिर जाता है तो ब्लॉटिंग पेपर (सोख्ता) रखते हैं। वह सारा चूस लेता है। अब सभी मनुष्य याद करते हैं एक को क्योंकि वही ब्लॉटिंग पेपर है, पतित-पावन है। सिवाए उस एक के और कोई ब्लॉटिंग पेपर है नहीं। वह तो जन्म जन्म गंगा स्नान करते और ही पतित हुए हैं। पतितों को पावन करने वाला एक ही शिवबाबा ब्लॉटिंग पेपर है। है भी छोटे ते छोटी एक बिन्दी। सबका पाप नष्ट करते हैं। किस युक्ति से? सिर्फ कहते हैं मुझ ब्लॉटिंग पेपर को याद करो। मैं तो चैतन्य हूँ ना। तुमको और कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। तुम भी आत्मा बिन्दी, बाप भी बिन्दी है। कहते हैं – सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारे सब पाप मिट जायेंगे। अब हर एक अपनी दिल से पूछे कि याद से कितने पाप मिटे हैं? और कितने हमने

किये हैं? बाकी कितने पाप रहे हैं? यह मालूम पड़े कैसे? दूसरे को भी रास्ता बताते रहो कि एक ब्लॉटिंग पेपर को याद करो। सबको यह राय देना तो अच्छा है ना, यह भी वण्डर है, जिनको राय देते हैं वह तो बाप को याद करने में लग जाते हैं, और राय देने वाले खुद याद नहीं करते हैं इसलिए पाप कटते नहीं हैं। पतित-पावन तो एक को ही कहा जाता है। अनेक पाप लगे हुए हैं। काम का पाप, देह-अभिमान का तो पहले नम्बर पाप है, जो सबसे खराब है। अब बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो। जितना मामेकम् याद करोगे तो जो तुम्हारे में खाद पड़ी है, वह भस्म होगी। याद करना है। औरों को भी यह रास्ता बताना है। जितना औरों को समझायेंगे तो तुम्हारा भी भला होगा। इस धन्धे में ही लग जाओ। औरों को भी यह समझाना है कि बाप को याद करो तो पुण्य आत्मा बन जायेंगे। तुम्हारा काम है दूसरों को भी यह बताना कि पतितपावन एक है। भल तुम ज्ञान नदियाँ अनेक हो लेकिन तुम सबको कहते हो कि एक को याद करो। वह एक ही पतितपावन है। उनकी बहुत महिमा है। ज्ञान का सागर भी वह है। उस एक बाप को याद करना, देही-अभिमानी हो रहना – यह एक ही बात डिफीकल्ट है। बाप सिर्फ तुम्हारे लिए नहीं कहते, बल्कि बाबा के ध्यान में तो सभी सेन्टर्स के बच्चे हैं। बाप तो सब बच्चों को देखते हैं ना। जहाँ अच्छे सर्विसएबुल बच्चे रहते हैं, शिवबाबा की फुलवाड़ी है ना। जो अच्छी फुलवाड़ी होगी उनको ही बाबा याद करेंगे। साहूकार आदमी को 4-5 बच्चे होंगे तो जो बड़ा बच्चा होगा उनको याद करेंगे। फूलों की वैरायटी होती है ना। तो बाबा भी अपने बड़े बगीचों को याद करते हैं। कोई को भी यह रास्ता बताना सहज है, शिवबाबा को याद करो। वही पतित-पावन है। खुद कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे पाप भस्म होंगे। कितना फर्स्टक्लास ब्लॉटिंग पेपर है सारी दुनिया के लिए। सभी उनको याद करते हैं। कोई को भी यह रास्ता बताना सहज है, शिवबाबा को याद करो। बाप ने युक्ति बताई है कि मुझे याद करने से तुम्हारे पर जो देह-अभिमान के दाग हैं वह मिट जायेंगे। मेहनत है देही– अभिमानी बनने की। बाबा को कोई सच बताते नहीं हैं। कोई-कोई चार्ट लिख भेजते हैं फिर थक जाते हैं। बड़ी मंजिल है। माया नशा एकदम तोड़ डालती है तो फिर लिखना भी छोड़ देते हैं। आधाकल्प का देह-अभिमान है, वह छूटता नहीं है।

बाप कहते हैं सिर्फ यही धंधा करते रहो। बाप को याद करो और दूसरों को कराओ। बस सबसे ऊंच धन्धा है यह। जो खुद याद नही करते वह यह धंधा करेंगे ही नहीं। बाप की याद – यह है योग अग्नि, जिससे पाप भस्म होंगे इसलिए पूछा जाता है कहाँ तक पाप भस्म हुए हैं? जितना बाप को याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। हर एक की दिल को जान सकते हैं। दूसरे को भी उनकी सर्विस से जान सकते हैं। दूसरों को रास्ता बताते हैं – बाबा को याद करो। वह पतितपावन है। यहाँ यह तो है पतित तमोप्रधान दुनिया। सभी आत्मायें और शरीर तमोप्रधान हैं। अभी वापिस जाना है। वहाँ सभी आत्मायें पवित्र रहती हैं। जब पवित्र बनें तब घर जायें। दूसरों को भी यही रास्ता दिखाना चाहिए। बाप युक्ति तो बहुत सहज बताते हैं। शिवबाबा को याद करो। यही ब्लॉटिंग पेपर रखो तो सब पाप चूस जायेंगे। तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। मूल बड़ी बात है पावन बनना।

एक तो मुझे याद करो और जो ज्ञान मैं सुनाता हूँ वह धारण करो और कराओ। बस यही धन्धा करो। अच्छा बाबा जो हुक्म। राजाओं के आगे जो रहते हैं वह ऐसे कहते हैं – "जो हुक्म"। वह राजायें हुक्म करते थे। यह शिवबाबा का हुक्म है। घड़ी-घड़ी कहना चाहिए – "जो हुक्म शिवबाबा"। तो तुमको खुशी भी रहेगी। समझेंगे शिवबाबा हुक्म देते हैं। याद रहेगी शिवबाबा की तो बुद्धि का ताला खुल जायेगा। शिवबाबा कहते हैं यह प्रैक्टिस पड़ जानी चाहिए तो बेड़ा पार हो जाए। परन्तु यही डिफीकल्टी है। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। ऐसे क्यों कहना चाहिए कि माया भुलाती है। हम भूल जाते हैं इसलिए उल्टे काम होते रहते हैं। बहुत बच्चियाँ हैं, ज्ञान तो बहुत अच्छा देती हैं परन्तु योग नहीं, जिससे विकर्म विनाश हों। ऐसे बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे हैं, योग बिल्कुल नहीं है।

य इन मम्मा बाबा से तो कुछ भी नहीं मिलता। बेहद के बाप से ही सब कुछ मिलता है। वह एक है। मम्मा बाबा कहा जाता है शरीरधारी को। निराकार को तो शरीर है नहीं। तो बाप कहते हैं कि

साकार का भी मुरीद मत बनो। मामेकम् याद करो। यह बाबा भी मुझे याद करते हैं। चित्रों में दिखाते हैं राम, कृष्ण, ब्रह्मा आदि सब उनको याद करते हैं। ऐसे है नहीं। वहाँ तो कोई याद करते नहीं हैं। उनको प्रालब्ध मिल गई। उनको याद करने की क्या दरकार है। हम पतित बने हैं, हमको ही पावन बनने के लिए याद करना है। महिमा एक की ही है। उनके सदके इनका मान है। तुमको कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। देहधारी से उनका परिचय मिलता है लेकिन याद उनको करना है। बाबा भी देहधारी है, सब परिचय देते हैं। परन्तु बहुत ऐसे भी बेसमझ बच्चे हैं जो कहते हैं हम तो डायरेक्ट शिवबाबा की प्रेरणा से ज्ञान ले सकते हैं। अगर ऐसा होता तो फिर इस रथ में उनको आने की क्या दरकार पड़ी है। ऐसे भी हैं जो समझते हैं इस साकार से हमारा क्या काम। बाप कहते हैं मनमनाभव। उनको याद करो परन्तु थ्रू तो इनके कहते हैं ना। फिर नम्बरवार रिगार्ड रखना होता है। रिगार्ड वही रखेंगे जो नम्बरवार गद्दी पर बैठने वाले होंगे। मम्मा बाबा पहले बैठेंगे राजगद्दी पर। फिर उनको फॉलो करना है। बहुत प्रजा बनानी पड़े।

बाप सभी बच्चों को पहले-पहले तो यहाँ बैठ करके लक्ष्य में टिकने के लिए दृष्टि देते हैं कि जैसे मैं शिवबाबा की याद में बैठा हूँ, तुम भी शिवबाबा की याद में बैठो। प्रश्न उठता है कि जो सामने बैठे हैं नेष्ठा कराने के लिए, वह सारा समय शिवबाबा की याद में रहते हैं? जो औरों को भी कशिश हो। याद में रहने से बहुत शान्ति में रहेंगे। अशरीरी हो शिवबाबा की याद में रहेंगे तो औरों को भी शान्ति में ले जायेंगे क्योंकि टीचर होकर बैठते हो ना। अगर टीचर ही ठीक रीति याद में नहीं होंगे तो दूसरे रह नहीं सकेंगे। पहले तो यह ख्याल करना है कि मैं जो उस माशूक बाबा का आशिक हूँ, उसकी याद में बैठा हूँ? हर एक ऐसे अपने से पूछे। अगर बुद्धि और तरफ चली जाती है, देह-अभिमान में आ जाते हैं तो गोया वह सर्विस नहीं, डिससर्विस करने बैठे हैं। यह बात समझ की है ना। कुछ सर्विस तो की नहीं, ऐसे ही बैठे हैं तो नुकसान ही करेंगे। टीचर का ही बुद्धियोग भटकता होगा तो वह मदद क्या करेंगे।

तुम ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने हो, शिवबाबा का बनकर उनसे वर्सा लेने। बाबा कहते हैं हे आत्मायें मामेकम् याद करो। टीचर बन बैठते हो तो और ही अच्छी तरह उस अवस्था में बैठो। यूँ तो हर एक को बाप को याद करना है। स्टूडेन्ट अपनी अवस्था को समझ सकते हैं। जानते हैं कि हम पास होंगे वा नहीं। टीचर भी जानते हैं। अगर प्राइवेट टीचर रखते हैं, वह भी जानते हैं। उस पढ़ाई में तो कोई खास टीचर रखने चाहें तो रख सकते हैं। यहाँ अगर कोई कहते हमको निष्ठा (योग) में बिठाओ तो बाप की याद में बैठना है। बाप का फरमान ही है मामेकम् याद करो। तुम आशिक हो, चलते-फिरते अपने माशूक को याद करो। सन्यासी ब्रह्म को याद करते हैं। समझते हैं कि हम जाकर ब्रह्म में लीन होंगे। जो अधिक याद करते होंगे उनकी अवस्था अच्छी होगी। हर एक में कोई न कोई खूबी तो रहती हैं ना। कहते हैं कि याद की यात्रा में रहो। खुद को भी याद में रहना है। बाबा के पास कोई तो सच्चे भी हैं, कोई झूठे भी हैं। खुद निरन्तर याद में रहें, बड़ा मुश्किल है। कोई तो बाप से बिल्कुल सच्चे रहते हैं। यह बाबा भी अपना अनुभव तुम बच्चों को बताते हैं कि थोड़ा समय याद में रहता हूँ फिर भूल जाता हूँ क्योंकि इसके ऊपर तो बहुत बोझ है। कितने ढेर बच्चे हैं। तुम बच्चों को यह भी पता नहीं पड़ता है कि यह मुरली शिवबाबा ने चलाई वा ब्रह्मा चलाते हैं क्योंकि दोनों इकट्ठे हैं ना। यह कहते हैं कि मैं भी शिवबाबा को याद करता हूँ। यह बाबा भी बच्चों को नेष्ठा कराते हैं। यह बैठते हैं तो देखते हो सन्नाटा अच्छा हो जाता है। बहुतों को खींचते हैं। बाप है ना। कहते हैं बच्चे याद की यात्रा में रहो। खुद को भी रहना है, सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। याद में नहीं रहेंगे तो अन्त में फेल हो पड़ेंगे। बाबा मम्मा का तो ऊंच पद है, बाकी तो अभी माला बनी नहीं है। एक भी दाना बना हुआ कम्पलीट नहीं है। आगे माला बनाते थे बच्चों को लिफ्ट देने लिए। परन्तु देखा गया कि माया ने बहुतों को खत्म कर दिया। सारा मदार सर्विस पर है। तो जो सामने नेष्ठा कराने बैठते हैं उनको समझना है कि मैं सच्चा टीचर होकर बैठूँ। नहीं तो बोलना चाहिए कि हमारी बुद्धि यहाँ वहाँ चली जाती है। मैं यहाँ बैठने के लायक नहीं हूँ। स्वयं बताना चाहिए। ऐसे नहीं कि आपेही

कोई भी आकर बैठे। कोई हैं जो मुख से मुरली नहीं चलाते, परन्तु याद में रहते हैं। लेकिन यहाँ तो दोनों में तीखा जाना चाहिए। साजन बहुत लवली है, उनको तो बहुत याद करना चाहिए। मेहनत है इसमें। बाकी प्रजा बनना तो सहज है। दास दासियाँ बनना बड़ी बात नहीं है। ज्ञान नहीं उठा सकते हैं। जैसे देखो यज्ञ की भण्डारी है, सबको बहुत खुश करती है, किसको दु:ख नहीं देती, सब महिमा करते हैं। तो वाह, शिवबाबा की भण्डारी तो नम्बरवन है। बहुतों की दिल को खुश करती है। बाबा भी बच्चों की दिल को खुश करते आये हैं। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो और यह चक्र बुद्धि में रखो। अब हर एक को अपना कल्याण करना है। हड्डी सर्विस करनी चाहिए। समझते हैं कि बादशाही लेनी तो मुश्किल है। बाप कहते हैं कि ऐसा समझना कमजोरी है। बाप और वर्से को याद करना तो बहुत सहज है। बच्चों में हिम्मत नहीं आती है राजाई लेने की, तो कायर हो बैठ जाते हैं। न खुद लेते, न औरों को लेने देते। तो परिणाम क्या होगा? बाप समझाते हैं कि रात-दिन सर्विस करो। कांग्रेसियों ने भी मेहनत की। कितनी जफाकसी (खींचातान) की तब तो फॉरेनर्स से राज्य लिया। तुमको रावण से राज्य लेना है। वह तो सबका दुश्मन है।

मुख्य बात बाप ने याद के यात्रा की सिखलाई है। इसमें देह-अभिमान नहीं रहना चाहिए। अच्छा कोई मुरली नहीं सुना सकते तो याद की यात्रा पर रहो। यात्रा पर रहते मुरली चला सकते हैं। परन्तु यात्रा भूल जाते हैं तो भी हर्जा नहीं। मुरली चलाकर फिर यात्रा पर लग जाओ क्योंकि वह वाणी से परे वानप्रस्थ अवस्था है। मूल बात है देही-अभिमानी हो बाप को याद करते रहें और चक्र को याद करते रहें। किसी को दु:ख न दें। यही समझाते रहें बाप को याद करो। यह है यात्रा। मनुष्य जब मरते हैं तो कहते हैं - स्वर्ग पधारा। अज्ञान काल में कोई स्वर्ग को याद नहीं करते हैं। स्वर्ग को याद करना माना यहाँ से मरना। ऐसे तो कोई याद नहीं करते। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको वापिस जाना है। बाप कहते हैं - जितना तुम याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा, वर्सा याद रहेगा। जितना बाप को याद करेंगे उतना हर्षित भी रहेंगे। बाप को याद न

करने से मूँझते हैं। घुटका खाते रहते हैं। तुम इतना समय याद कर नहीं सकते। बाबा ने आशिक माशूक का मिसाल बताया है। वह भल धंधा करते हैं और वह भल चर्खा चलाती रहती तो भी उसके सामने माशूक आकर खड़ा हो जाता। आशिक माशूक को याद करते, माशूक फिर आशिक को याद करते। यहाँ तो सिर्फ तुमको एक बाप को याद करना है। बाप को तो तुमको याद नहीं करना है। बाप सबका माशूक है। तुम बच्चे लिखते हो कि बाबा आप हमको याद करते हो? अरे जो सबका माशूक है वह फिर तुम आशिकों को याद कैसे कर सकेंगे? हो नहीं सकता। वह है ही माशूक। आशिक बन नहीं सकता। तुमको ही याद करना है। तुम हर एक को आशिक बनना है, उस एक माशूक का। अगर वह आशिक बने तो कितने को याद करे। यह तो हो नहीं सकता। कहता है कि मेरे ऊपर पापों का बोझ थोड़ेही है जो किसको याद करूं। तुम्हारे ऊपर बोझा है। बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा नहीं उतरेगा। बाकी मुझे क्यों किसको याद करना पड़े। याद करना है तुम आत्माओं को। जितना याद करेंगे उतना पुण्य आत्मा बनेंगे, पाप कटते जायेंगे। बड़ी मंजिल है। देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। यह नॉलेज सारी तुमको मिल रही है।

कृष्ण को देखने बिगर याद नहीं कर सकते। सबकी बुद्धि में चित्र तो रहता है। तुमको कोई चित्र लगाने की दरकार नहीं है। तुम अपने को आत्मा समझते हो, तुम्हें अपना चित्र भी भूलना है। देह सहित सब संबंध भूल जाने हैं। बाप कहते हैं तुम हो आशिक, एक माशूक के। माशूक बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो तो विकर्म विनाश हो जाएं। ऐसी अवस्था रहे जो शरीर जिस समय छूटे तो समझें हम इस पुरानी दुनिया को छोड़ अब बाप के पास जाते हैं। 84 जन्म पूरे हुए अब जाना है। बाबा ने फरमान किया है मुझे याद करो। बस बाप और स्वीट होम को याद करो। बुद्धि में है कि मैं आत्मा बिगर शरीर थी फिर यहाँ पार्ट बजाने के लिए शरीर धारण किया है। पार्ट बजाते-बजाते पतित बन पड़े हैं। यह शरीर तो है पुरानी जुत्ती। आत्मा पवित्र हो रही है। शरीर पवित्र तो यहाँ मिल न सके। अब हम आत्मा जायेंगे वापिस घर।

टीचर तो स्टूडेंट को भी समझ सकते हैं ना। रोज पढ़ाते हैं, रजिस्टर उनके पास रहता है। पढ़ाई का और चलन का भी रजिस्टर रहता है। यहाँ भी ऐसे हैं, इसमें फिर मुख्य है योग की बात। योग अच्छा है तो चलन भी अच्छी रहेगी। पढ़ाई में फिर कहाँ अहंकार आ जाता है। इसमें सारी गुप्त मेहनत करनी है याद की इसलिए ही बहुतों की रिपोर्ट आती है कि बाबा हम योग में नहीं रह सकते। बाबा ने समझाया है योग अक्षर निकाल दो। बाप जिससे वर्सा मिलता है, उनको तुम याद नहीं कर सकते हो! वन्डर है। बाप कहते हैं-हे आत्मायें, तुम मुझ बाप को याद नहीं करते हो, मैं तुमको रास्ता बताने आया हूँ, तुम मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से पाप दग्ध हो जायेंगे। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितना धक्का खाने जाते हैं। कुम्भ के मेले में कितना ठण्डे पानी में जाकर स्नान करते हैं। कितनी तकलीफ सहन करते हैं। यहाँ तो कोई तकलीफ नहीं। जो फर्स्टक्लास बच्चे हैं वह एक माशूक के सच्चे-सच्चे आशिक बन याद करते रहेंगे। घूमने फिरने जाते हैं तो एकान्त में बगीचे में बैठकर याद करेंगे। झरमुई झगमुई आदि वार्तालाप में रहने से वायुमण्डल खराब होता है इसलिए जितना टाइम मिले बाप को याद करने की प्रैक्टिस करो। फर्स्टक्लास सच्चे माशूक के आशिक बनो। बाप कहते हैं देहधारी का फोटो नहीं रखो। सिर्फ एक शिवबाबा का फोटो रखो, जिसको याद करना है। अगर समझो सृष्टि चक्र को भी याद करते रहें तो त्रिमूर्ति और गोले का चित्र फर्स्टक्लास है, इसमें सारा ज्ञान है। स्वदर्शन चक्रधारी, तुम्हारा नाम अर्थ सहित है। नया कोई भी नाम सुने तो समझ न सके, यह तुम बच्चे ही समझते हो। तुम्हारे में भी कोई अच्छी रीति याद करते हैं। बहुत हैं जो याद करते ही नहीं। अपना खाना ही खराब कर देते हैं। पढ़ाई तो बड़ी सहज है। बाप कहते हैं साइलेन्स से तुमको साइंस पर विजय पानी है। साइलेन्स और साइंस राशि एक ही है। मिलेट्री में भी 3 मिनट साइलेन्स कराते हैं। मनुष्य भी चाहते हैं हमको शान्ति मिले। अभी तुम जानते हो शान्ति का स्थान तो है ही ब्रह्माण्ड।

घर में जाने से तुम भूल जाते हो। है बड़ी सहज बात और बाप जो सर्व का सुखदाता, शान्तिदाता है वह बच्चों को बैठ समझाते हैं। तुम कितने थोड़े हो। आहिस्ते- आहिस्ते वृद्धि को पाते जायेंगे। तुम्हारा बाप के साथ गुप्त लव है। कहाँ भी रहो, तुम्हारी बुद्धि में होगा-बाबा मधुबन में बैठे हैं। बाप कहते हैं हमको वहाँ (मूलवतन में) याद करो। तुम्हारा भी निवास स्थान वहाँ है तो जरूर बाप को याद करेंगे, जिसको कहते हैं तुम मात-पिता। वह बरोबर अब तुम्हारे पास आये हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको ले जाने के लिए आया हूँ।

तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। ब्राह्मण भोजन बनाते हैं इसलिए ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। जो पवित्र ब्राह्मण हैं, याद में रहकर बनाते हैं, सिवाए ब्राह्मणों के शिवबाबा की याद में कोई रह नहीं सकते। वह ब्राह्मण थोड़ेही शिवबाबा की याद में रहते हैं। शिवबाबा का भण्डारा यह है, जहाँ ब्राह्मण भोजन बनाते हैं। ब्राह्मण योग में रहते हैं। पवित्र तो हैं ही। बाकी है योग की बात। इसमें ही मेहनत लगती है। गपोड़ा चल न सके। ऐसे कोई कह न सके कि मैं सम्पूर्ण योग में हूँ वा 80 परसेन्ट योग में हूँ। कोई भी कह न सके। ज्ञान भी चाहिए। तुम बच्चों में योगी वह है जो अपनी दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दे। यह भी ताकत है। एकदम सन्नाटा हो जायेगा, जब तुम अशरीरी बन जाते हो फिर बाप की याद में रहते हो तो यही सच्ची याद है। फिर से यह प्रैक्टिस करनी है। जैसे तुम यहाँ याद में बैठते हो, यह प्रैक्टिस कराई जाती है। फिर भी सब कोई याद में रहते नहीं हैं। कहाँ-कहाँ बुद्धि भागती रहती है। तो वह फिर नुकसान कर लेते हैं। यहाँ संदली पर बिठाना उनको चाहिए जो समझें हम ड्रिल टीचर हैं। बाप की याद में सामने बैठे हैं। बुद्धियोग और कोई तरफ न जाये। सन्नाटा हो जायेगा। तुम अशरीरी बन जाते हो और बाप की याद में रहते हो। यह है सच्ची याद । सन्यासी भी शान्ति में बैठते हैं, वह किसकी याद में रहते हैं? वह कोई रीयल याद नहीं। कोई को फायदा नहीं दे सकेंगे। वह सृष्टि को शान्त नहीं कर

सकते। बाप को जानते ही नहीं। ब्रह्म को ही भगवान समझते रहते। वह तो है नहीं। अभी तुमको श्रीमत मिलती है - मामेकम् याद करो। तुम जानते हो हम 84 जन्म लेते हैं।

जो बच्चे अपना पूरा-पूरा पोतामेल बाप को भेज देते हैं बाबा उन्हें ही अपनी राय देते हैं। बच्चों को बताना चाहिए हम बाप को कैसे याद करते हैं? कब याद करते हैं? फिर बाप राय देंगे। बाबा समझ जायेंगे इनकी यह सर्विस है, इस अनुसार उनको कितनी फुर्सत रह सकती है? गवर्मेन्ट की नौकरी वालों को फुर्सत बहुत रहती है। काम थोड़ा हल्का हुआ, बाप को याद करते रहो। घूमते-फिरते भी बाप की याद रहे। बाबा टाइम भी देते हैं। अच्छा, रात को 9 बजे सो जाओ फिर 2-3 बजे उठकर याद करो। यहाँ आकर बैठ जाओ। परन्तु यह भी बैठने की आदत बाबा नहीं डालते हैं, याद तो चलते-फिरते कर सकते हो। यहाँ तो बच्चों को बहुत फुर्सत है। आगे तुम एकान्त में पहाड़ों पर जाकर बैठते थे। बाप को याद तो जरूर करना है। नहीं तो विकर्म विनाश कैसे होंगे। बाप को याद नहीं कर सकते हो तो जैसे बेबी से भी बेबी ठहरे ना। सारा मदार याद पर है। पतित-पावन बाप को याद करने की मेहनत है। नॉलेज तो बहुत सहज है। यह भी जानते हैं - यहाँ आकर समझेंगे भी वही जो कल्प पहले आये होंगे। बच्चों को डायरेक्शन मिलते रहते हैं। कोशिश यही करनी है हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बने। सिवाए बाप की याद के और कोई उपाय नहीं। बाबा को बता सकते हो, बाबा हमारा यह धन्धा होने के कारण अथवा यह कार्य होने कारण हम याद नहीं कर सकता हूँ। बाबा फट से राय देंगे-ऐसे नहीं, ऐसे करो। तुम्हारा सारा मदार याद पर है। अच्छे-अच्छे बच्चे ज्ञान तो बहुत अच्छा देते हैं, किसको खुश कर देते हैं परन्तु योग है नहीं। बाप को याद करना है। यह समझते हुए भी फिर भूल जाते हैं, इसमें ही मेहनत है। आदत पड़ जायेगी तो फिर एरोप्लेन या ट्रेन में बैठे रहेंगे तो भी अपनी धुन लगी रहेगी। अन्दर में खुशी होगी हम बाबा से भविष्य प्रिन्स-प्रिन्सेज बन रहे हैं। सुबह को उठकर ऐसे बाप की याद में बैठ जाओ। फिर थक जाते हो। अच्छा, याद में लेट जाओ। बाप युक्तियाँ

बतलाते हैं। चलते- फिरते याद नहीं कर सकते हो तो बाबा कहेंगे अच्छा रात को नेष्ठा में बैठो तो कुछ तुम्हारा जमा हो जाए। परन्तु यह जबरदस्ती एक जगह बैठना हठयोग हो जाता है। तुम्हारा तो है सहज मार्ग। रोटी खाते हो बाबा को याद करो। हम बाबा द्वारा विश्व का मालिक बन रहे हैं। अपने साथ बातें करते रहो, मैं इस पढ़ाई से यह बनता हूँ। पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन देना है। तुम्हारी सब्जेक्ट ही थोड़ी है।

- अभी बाकी थोड़े दिन हैं, हम विश्व की बादशाही ले रहे हैं, बाप से। यह बैठ याद करें तो भी खुशी का पारा चढ़े। सुबह को चिन्तन चलता है तो दिन को भी खुशी रहती है। अगर खुशी नहीं रहती तो जरूर बाप से प्रीत बुद्धि नहीं है। अमृतवेले एकान्त अच्छी होती है, जितना बाप को याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। इस पढ़ाई में ग्रहचारी बैठती है क्योंकि बाप को भूलते हैं। बाप से वर्सा लेना है तो मन्सा-वाचा-कर्मणा सर्विस करनी है। इस सर्विस में ही यह अन्तिम जन्म व्यतीत करना है। अगर और दुनियावी बातों में लग गये तो फिर यह सर्विस कब करेंगे! कल-कल करते मर जायेंगे। बाप आये ही हैं स्वर्ग में ले जाने के लिए। यहाँ तो लड़ाई में कितने मरते हैं, कितनों को दुःख होता होगा। वहाँ तो लड़ाई आदि होगी नहीं।

- तुम सतयुग में सुखी बन जाते हो। मैं भी जाकर विश्रामी होता हूँ– परमधाम में। तुम सिरकुल्हे चढ़ जाते हो। तुम्हारी शेर पर सवारी है। तुम जानते हो सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जो भी चलता है वह ड्रामा की नूँध है। तुम बच्चों को कितनी अच्छी नॉलेज है। अब सिर्फ बाप और वर्से को याद करो। बस। कागज, पेन्सिल आदि की कोई दरकार नहीं है। ब्रह्मा बाबा भी पढ़ते हैं, यह तो कुछ रखते ही नहीं हैं। सिर्फ बाप को याद करना है तो वर्सा मिलेगा। कितना सहज है। याद से तुम एवरहेल्दी बनेंगे। यह है धारणा की बात। लिखने से क्या फायदा होगा, यह तो सब विनाश हो जायेगा। परन्तु कोई याद रखने के लिए लिखते हैं। जैसे कोई बात याद करनी होती है तो गाँठ

बाँध देते हैं। तुम भी गाँठ बाँध लो, शिवबाबा और वर्से को याद करना है। यह तो बहुत सहज है– योग अर्थात् याद । कहते हैं– बाबा याद नहीं ठहरती। योग में कैसे बैठें? अरे लौकिक बाप की याद उठते-बैठते, चलते-फिरते रहती है, तुम भी सिर्फ याद करो। बस, बेड़ा पार है। अच्छा।

बाप बैठकर सब आत्माओं को समझाते हैं | शरीर भी याद पड़ता तो आत्मा भी याद पड़ती है | शरीर बिगर आत्मा को नहीं याद किया जा सकता | समझा जाता है यह आत्मा अच्छी है, यह बाह्यमुखी है, यह इस दुनिया का सैर आदि करना चाहती है | यह उस दुनिया को भूली हुई है | पहले उनका नाम-रूप सामने आता है | फ़लाने की आत्मा को याद किया जाता है | फ़लाने की आत्मा अच्छी सर्विस करती है, इनका बुद्धियोग बाबा के साथ है, इनमें यह यह गुण हैं | पहले शरीर को याद करने से फिर आत्मा याद आती है | पहले शरीर याद आयेगा क्योंकि शरीर बड़ी चीज़ है ना | फिर आत्मा जो सूक्ष्म बहुत छोटी है, वह याद आयेगी | इन बड़े शरीर की कोई महिमा नहीं की जाती है | महिमा आत्मा की ही की जाती है | इनकी आत्मा अच्छी सर्विस करती है | फ़लाने की आत्मा इनसे अच्छी है | पहले तो शरीर याद आता है | बाप को तो अनेक आत्माओं को याद करना पड़ता है | शरीर का नाम याद नहीं आता, सिर्फ़ रूप सामने आता है | फ़लाने की आत्मा कहने से शरीर ज़रूर याद करना पड़ता है | शरीर का नाम याद नहीं आता, सिर्फ़ रूप सामने आता है | फ़लाने की आत्मा कहने से शरीर ज़रूर याद पड़ता है | जैसे समझते हो इस दादा के शरीर में शिवबाबा आते हैं | जानते हैं इनके तन में बाबा है | शरीर ज़रूर याद पड़ेगा | पूछते हैं – हम कैसे याद करें? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें? बहुतों का प्रश्न उठता है | बाबा कहते है – याद तो आत्मा को ही करना है | परन्तु शरीर भी ज़रूर याद आता है | पहले शरीर फिर आत्मा | बाबा इनके शरीर में बैठा है तो ज़रूर शरीर याद आयेगा | फ़लाने शरीर वाली आत्मा में यह

गुण हैं | बाबा भी देखते रहते हैं – कौन मुझे याद करते हैं, किसमें बहुत गुण हैं, किस-किस फूल में खुशबू है? फूलों से सबका प्यार होता है | गुलदस्ता बनाते हैं | उसमें राजा, रानी, प्रजा भिन्न-भिन्न फूल-पत्ते आदि सब बनाते हैं | बाप की नज़र फूलों की तरफ़ जायेगी | कहेंगे, फ़लाने की आत्मा बड़ी अच्छी है | बड़ी सर्विस करती है | आत्म-अभिमान में रह बाप को याद करते रहते हैं | जहाँ सर्विस देखते हैं, वहाँ भागते हैं | फिर भी सवेरे उठकर याद में बैठते होंगे तो किसको याद करते होंगे? शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा? बाबा याद आता होगा ना | इसमें शिवबाबा है क्योंकि बाप तो अभी नीचे आ गया | मुरली चलाने नीचे आये हैं | इनका अपने घर में तो कोई काम नहीं होगा | वहाँ जाकर क्या करेंगे? इस तन में ही प्रवेश करते हैं | तो पहले ज़रूर शरीर याद आयेगा फिर आत्मा | फ़लाने शरीर में जो आत्मा है यह अनन्य अच्छी है | इनको सर्विस बिगर कुछ सूझता नहीं है | बहुत मीठी है | बाबा बैठे रहते हैं, सबको देखते रहते हैं | फलानी बच्ची बहुत अच्छी है, बहुत याद करती है | बांधेली बच्चियों को विकार के लिए कितनी मार मिलती है! कितना प्रेम से याद करती होंगी! जब बहुत याद करती हैं तो ख़ुशी के मारे प्रेम के आँसू भी आ जाते हैं | कभी-कभी वह आँसू गिर भी पड़ते हैं | बाबा को और धन्धा क्या है | सबको याद करते हैं | बहुत बच्चियाँ याद आती हैं | फ़लाने की आत्मा में दम नहीं है | बाप को याद नहीं करती | किसको सुख नहीं देती | यह अपना ही कल्याण नहीं करती | बाप तो यही जाँच करते रहेंगे | याद करना माना सकाश देना | आत्मा का कनेक्शन परमात्मा के साथ रहता है ना | एक दिन आयेगा जबकि बच्चे योग में बहुत रहेंगे | यह भी किसको याद करेंगे तो झट साक्षात्कार होगा | आत्मा तो है छोटी बिन्दी | साक्षात्कार करें तो भी कोई समझ न सकें फिर भी शरीर ही याद आता है | आत्मा है छोटी परन्तु याद करती है तो उनकी आत्मा पावन बनती जाती है | बगीचे में वैराइटी फूल होते हैं | बाबा भी देखते हैं यह बहुत अच्छा खुशबूदार फूल है, यह

इतना नहीं | तो पद भी कम होगा | बाबा के जो मददगार बनते हैं, वही ऊँच पद पाते हैं | वह भी जो बाप को याद करते रहते हैं | ब्राह्मण से ट्रान्सफर हो देवता बनते हैं | यह वर्णन भी संगम पर ही कर सकते हैं कि यह दैवी फूल है या आसुरी फूल है? फूल तो सब हैं परन्तु वैराइटी बहुत है | बाबा भी याद करते रहते हैं | टीचर अपने स्टूडेन्ट को याद करेंगे ना | यह कम पढ़ते हैं | दिल में तो समझेंगे ना | यह बाप भी है, टीचर भी है | बाप तो है ही | टीचरपने का जास्ती चलता है | टीचर को तो रोज़ पढ़ाना है | इस पढ़ाई की ताकत से वह पद पाते हैं | सुबह को तुम सब भाई बाप की याद में बैठते हो, वह सब्जेक्ट है याद की | फिर मुरली चलती है, वह है पढ़ाई की सब्जेक्ट | मुख्य है ही योग और पढ़ाई | उनको ज्ञान और विज्ञान भी कहा जाता है | यह ज्ञान-विज्ञान भवन है, जहाँ बाप आकर सिखलाते हैं | ज्ञान से सारे सृष्टि की नॉलेज मिल जाती है | विज्ञान माना तुम योग में रहते हो जिससे तुम पावन बन जाते हो | तुमको अर्थ का पता है | बाप बच्चों को देखते रहते हैं | देही-अभिमानी बनने से ही भूत निकलेंगे | ऐसे नहीं, सबके भूत फट से निकल जायेंगे | हिसाब-किताब जब चुक्तू हो फिर चलन अनुसार ही पद पायेंगे | क्लास ट्रान्सफर होते हैं | इस दुनिया का ट्रान्सफर नीचे हो रहा है और तुम्हारा ऊपर हो रहा है | कितना फ़र्क है |

बाप बैठ समझाते हैं-तुम अपने को आत्मा समझो। बाबा के बच्चे हैं, बाबा-बाबा करते रहो। मन में खुशी नहीं है, यह ' मन ' अक्षर निकाल दो। बाबा को याद नहीं करेंगे तो फिर खुशी कैसे होगी? अपने आपको न जानने के कारण ही दु :खी होते हैं। तुम ' मन' अक्षर क्यों कहते हो? अरे, तुमको बाप याद नहीं पड़ता! बाप को भूल जाते हो क्या! लौकिक बाप के लिए कभी कहते हो क्या-हमको याद नहीं पड़ता है? छोटे बच्चे को भी सिखलाया जाता है-यह माँ-

बाप है। यह बेहद का बाप कहते हैं-मुझे याद करो तो मैं तुमको स्वर्ग में ले जाऊंगा। सिर्फ बाबा का बनना है।

तुम बच्चे समझते हो यह दुखधाम है। अब सुखधाम स्थापन करने वाला बाबा आया हुआ है। युक्तियां रचनी है-हम बाप को कैसे याद करें? उनको इन आखों से नहीं देखा जाता। यह आत्मा कहती है-हमारा शिवबाबा बाप है। शिव का चित्र देखने से बड़ी खुशी होगी। तुम बच्चों का योग भी अव्यभिचारी चाहिए। शिव का चित्र रख घड़ी-घड़ी याद करते रहो। बाबा ने अपना मिसाल बताया था। लक्ष्मी-नारायण के चित्र से हमारा कितना प्यार था! फिर एक दिन ख्याल आया-लक्ष्मी दासी बन पांव दबा रही है। ऐसे तो ठीक नहीं है। तो आर्टिस्ट को कहा-इससे लक्ष्मी को तो मुक्त कर दो। बाकी नारायण का चित्र पॉकेट में पड़ा रहता था। एक पॉकेट में, एक मुरादी के बॉक्स में। घड़ी-घड़ी चित्र देखता रहता था। जैसे मस्त। परन्तु गुप्त करता था। कोई देखे नहीं। नहीं तो कहेंगे-यह क्या करता है? पहले कृष्ण से प्यार था फिर उनको छोड़ विष्णु से हो गया। जैसे भक्ति नौधा होती है। वैसे यह याद भी नौधा होनी चाहिए, इससे प्राप्ति बहुत भारी है। उनसे तो कुछ नहीं अल्पकाल के लिए थोड़ा सुख मिलता है। फिर दूसरे जन्म में मेहनत करनी पड़े। भक्ति में, धन्धे आदि में मेहनत लगती है। कमाओ, तब खाओ। बाबा तुमको इस एक जन्म में इतनी मेहनत कराते हैं जो 21 जन्म शलब्ध भोगते रहेंगे। कुछ मेहनत करने की दरकार नहीं रहेगी। 21 जन्म सदा सुखी रहेंगे। तो ऐसा बाप जो पुरुषार्थ करना सिखलाते हैं, उनको तो याद करना चाहिए ना। कहते हैं- थाँसों श्वास याद करो। गुरू लोग अपने शिष्यों को कहते हैं-माला फेरो। राम-राम करते रहो, बस। राम-राम जपते-जपते रोमांच खड़े हो जाते हैं। राम- राम की मस्ती में झूलते हैं। जैसे कि राम की पुरी में पहुँच गये हैं। तुमको तो बाबा कहते हैं-एक शिवबाबा की याद का अजपाजाप करो और कुछ याद न आये। परन्तु माया भी सामना करती है। भक्ति मार्ग में थोड़ेही माया सामना करती है। यह है माया और ईश्वर

के बच्चों की युद्ध। नाटक भी बनाते हैं- भगवान् ऐसे कहते हैं, माया ऐसे कहती है। अभी है संगमयुग। माया के उल्टे-सुल्टे संकल्प-विकल्प तो आते रहेंगे। तूफान ऐसा जोर से लगता है जो मनुष्य को भी उड़ाकर दूर फेक देता है। यह फिर माया रावण का तूफान है। उनसे बचने की युक्तियां तो बाबा बताते रहते हैं। तुम कहेंगे हमको परमपिता परमात्मा राजयोग सिखलाते हैं। यहाँ बाप आकर कहते हैं-देह सहित जो भी सम्बन्ध हैं उनको छोड़ो। इस पुरानी दुनिया का त्याग कर नई दुनिया को याद करो-सन्यासी ऐसे थोड़ेही कहेंगे। अब तो प्रैक्टिकल में पुरानी दुनिया का विनाश होना है, इसलिए सबका बुद्धि से त्याग कर एक बाप से बुद्धि लगानी है। तुम सगाई करते हो ना। देहधारी को याद किया तो सगाई कच्ची हो जायेगी।मैं फलाना हूँ, यह हूँ...। वह सब छोड़ अपने को आत्मा समझो। 84 जन्मों को तो तुम जान गये हो। अब खुशी से वापिस जाते हैं। हम आत्मायें एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। अपने को देही समझना है। हम आत्मा पहले-पहले गोरी थी। फिर 84 जन्म लिए। अब वापिस जाकर के फिर आए स्वर्ग मे राज्य करेंगे। यह स्वदर्शन चक्र फिराना कितना सहज है। शिव का चित्र तो पॉकेट में पड़ा रहे। बाबा आप आये हो, कितने मीठे हो, हमारे बाबा हो ना-ऐसी- ऐसी बातें करनी चाहिए। कृष्ण के साथ भक्ति मार्ग में ऐसी बातें करते थे ना। शिव का फर्स्ट क्लास लॉकेट सोने-चांदी का बनायेंगे। गरीबों को सोने का, साहूकारों को चांदी का देगे। बाबा ने मुख्य बात समझाई है कि सारा मदार है याद पर। याद कभी भूलनी नहीं चाहिए। लौकिक बच्चा थोड़ेही कभी कहेगा-मैं बाप को भूल जाता हूँ। सजनी कभी साजन को भूल जाती है क्या? इम्पासिबुल है। यह है तुम बच्चों के लिए मेहनत। निरन्तर याद के अभ्यास से ही विकर्म विनाश होंगे। नहीं तो फिर सजा खानी पड़ेगी। विजय माला में आ नहीं सकेंगे। कमाल है बाप की जो बुढ़ियों, गरीबों, गणिकाओं, अहिल्याओं, कुब्जाओं आदि को आकर अपना बनाते हैं। यूँ तो कोई चित्र की दरकार नहीं है। परन्तु माया भुला देती है, इसलिए चित्र रखा जाता है। बुद्धि में रहना चाहिए हम जाते हैं बाबा के पास। रास्ता देख लिया है मुक्ति-जीवनमुक्ति का।

तुम जानते हो बाबा इन द्वारा पढ़ा रहे हैं। जब तक यह नहीं समझा है तो क्या करेंगे? और ही वायुमण्डल को खराब कर देंगे। यहाँ तुम्हारे में भी ऐसे नहीं है कि सब शिवबाबा की याद में सुनते हैं और समझते हैं शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं। नहीं, शिवबाबा की पढ़ाई है.... यह कुछ भी समझते नहीं। बड़ा मुश्किल कोई यथार्थ रीति समझते हैं। पड़ाने वाला शिवबाबा है - यह याद हो और सारा दिन बुद्धि में रहे कि हम स्ट्रडेर हैं तो नम्बरवन चले जायें। परन्तु तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। बाबा कहते हैं मुझ पढ़ाने वाले को याद करो। मैं ही बाप, टीचर, गुरू हूँ। तीनों को इकरा याद करना है। लौकिक संबंध में तो बाप अलग, टीचर अलग, गुरू अलग होते हैं। यहाँ एक को ही याद करना है और है बहुत सहज। परन्तु माया याद रहने नहीं देती। घडी-घड़ी बुद्धियोग तोड़ देती है। तुम बच्चे आपस में बैठते होंगे। समझो, कोई मशीन चलाते हैं अथवा मक्खन निकालते हैं तो शिवबाबा को याद कर मशीन चलाते हैं? शिवबाबा की याद में बाबा के यज्ञ के लिए मक्खन निकाल रहा हूँ। कितनी खुशी की बात है। यह के लिए भोजन बनाता हूँ। खुशी होती है ना। परन्तु फिर घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं फिर पुरुषार्थ करना पड़े खुद का। एक-दो को याद कराने का पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए। फिर भी शिवबाबा को याद कर भोजन बनायेंगे तो ताकत भर जायेगी। तुम्हारी अवस्था बहुत अच्छी हो जाए परन्तु ऐसे होता नहीं है। ब्रह्मा भोजन की तो बहुत महिमा है, परन्तु जब आत्मा शिवबाबा की याद में रह बनाये। शक्तियों का ऐसा भण्डारा हो। याद में रह भोजन बनायें तब तो शक्ति मिले। वह भी शक्तियों की बुद्धि में नहीं आता है। नहीं तो पुरुषार्थ करें। बाबा को तो दिल होती है अपने हाथ से शिवबाबा को याद करते भोजन बनाऊं। प्रैक्टिस करनी है। देखें, याद ठहर सकती है? बाबा चैलेन्त देते हैं जो भी भण्डारे में हैं, कोशिश करो. । बाबा जानते हैं कि एक घाटा भी याद नहीं कर सकते। याद वाले ज्ञानवान हों तो डबल सर्विस में लग जाएं। जब तक कांटे को फूल न बनायें तो कुछ काम के नहीं हैं। राजाई के लायक वह बनते जो नर को नारायण बनाने की सर्विस करते। जितना तकदीर में है वह अपने पुरुषार्थ से तकदीर को पाते रहते हैं। बाप तो सबको कहते हैं जितना करेंगे, जो करेंगे, सो पायेंगे। अपने मोस्ट बिलवेड बाप को याद करना

है। याद की ही मेहनत है। बाबा भी बतलाते हैं मैं बहुत उपाय करता हूँ परन्तु हो नहीं सकता। बहुत मेहनत है। मेहनत करते-करते अन्त में कर्मातीत अवस्था होगी। फिर साक्षात्कार करते रहेंगे। माया नहीं आयेगी। यहाँ बैठे-बैठे सब दिव्य दृष्टि में देखते रहेंगे। अभी तो टेलीवीजन में देखते हैं। टेलीवीजन कोई दिव्य दृष्टि नहीं है। विनाश का साक्षात्कार, वैकुण्ठ का साक्षात्कार टेलीवीजन में नहीं देख सकेंगे। जितना-जितना योगी और ज्ञानी रहेंगे उनको तो वैकुण्ठ की राजधानी देखने में आती होगी। बिगर टेलीवीजन रखे तुम जर्मनी, लण्डन आदि देखते रहेंगे। टेलीवीजन से दिव्य चक्षु का साक्षात्कार वन्डरफुल है। सच्ची दिल से बाप की सर्विस में लगना है तब मजा है। अन्त में बुद्धि भी कहती है, बाबा बहुत खातिरी भी करेंगे। घुमाना, फिराना, बहलाना यह खातिरी है ना। ऐसा बनने के लिए भी लायक बनना चाहिए ना। लायक बनाने वाले को याद करने से ही लायक बनते जाते हैं। जितना याद करेंगे और स्वदर्शन चक्र फिरता रहेगा तो फायदा है। बीज को याद करने से झाड़ भी याद आयेगा। यह बातें सिवाए तुम्हारे कोई भी समझ न सके। इस याद और ज्ञान से हम इतना जमा करते हैं। वहाँ यह पता नहीं होगा कि यह कहाँ से वर्सा मिला है। यह थोड़ेही समझते हैं कि यह हमारे संगम की कमाई है। बादशाही मिल जाती है। तुम सदा सुखी रहते हो। बड़ी भारी मंजिल है। अभी तुम डिवाइन बनते हो। सारी दुनिया अपडिवाइन है। तुम मनुष्य से देवता डिवाइन बन रहे हो।

सत्य नारायण की कथा अथवा अमरनाथ की कथा भी यहाँ होती है। तुम जबकि सुबह को मेडीटेशन में बैठते हो तो किसको याद करते हो? भक्ति मार्ग में तो कोई किसको, कोई किसको याद करते हैं। उन सबकी साधना है अयथार्थ। सिखलाने वाला खिवैया वा बागवान तो कोई है नहीं। गुरू लोग भी मेडीटेशन सिखलातेहैं कि ऐसे-ऐसे करो। बहुत मयत्न करते हैं याद में रहने के लिये। योग साधना कहा जाता है। वह तो मनुष्य, मनुष्य को कराते हैं। अभी तुम जानते हो इस बगीचे का माली अथवा मालिक है परमपिता परमात्मा। कांटोंके जंगलका मालिक है रावण। माया रावण कांटोंका जंगल बनाती है। यह तुम्हारी बातें भी कोई-कोई

जानते हैं। भूल जाते हैं। माया भुला देती है। मेडीटेशनमें बैठने में भी माया बड़ा विघ्न डालती है। मेडीटेशन कैसे करो - यह भी बाप सिखलाते हैं। तुम तो कर्मयोगी हो। दिन मेंतो कर्म करना ही है। उसके लिये कोई बंधनन हीं है। दिन में कभी भी मेडीटेशन नहीं होती है। दिन में तो खाना-पीना, खेलना-कूदना, धन्धाधोरी करना होताहै। उसमें याद थोड़े-ही रह सकती है। कहते तो बहुत हैं कि हम सारा दिन याद में रहते हैं परन्तु है तो बड़ा मुश्किल। बाबा अनुभव बतलाते हैं। अमृतवेले का समय सतोगुणी होता है, उस समय याद करना सहज है। अमृतवेले का टाइम सबसे अच्छा है। दिन में तो लफड़े रहते हैं। हाँ, कर्म करते समय याद स्थाई रह सकती तो है बहुत अच्छा। परन्तु बाबा अपना अनुभव सुनते हैं - मैं कोशिश करता हूँ बाबा की याद में रह बात करुँ। अन्दर यह नशा रहता है - मैं स्वयं बाप प्रजापिता ब्रह्मा। मैं स्वयं मनुष्य सृष्टि का बाप हूँ - ऐसा समझने से नशा चढ़ता है। बाकी मैं आत्मा हूँ परमपिता परमात्मा बाप को याद कर बात करुँ, वह याद बड़ा मुश्किल रहती है। बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं ना। बाप सिखलाते भी हैं। यह तो जानते हैं हम बागवान हैं। बागवान तो जरूर बगीचा ही बनायेंगे। कांटों को थोड़ेही बनायेंगे। माली हमेशा बागवान होते हैं, फूल लगाते हैं। तो बाबा भी फूल लगाते हैं। फारेस्ट बनाने वाली है माया। उनकी मत पर चलने से मनुष्य कांटे बन जाते हैं। यह तो ज्ञान मिला है - बाबा बागवान है, खिवैया है, रहमदिल भी है, बीजरूप भी है। रात को जब बैठते हैं तो ख्याल चलता है - यह कितना बड़ा बगीचा है! पहले कितना छोटा था! तो योग के साथ-साथ ज्ञान भी चाहिए। मनुष्यों के पास ज्ञान तो कुछ भी नहीं है। अनेक प्रकार के योग लगातेहैं। किसी न किसी की याद में बैठते होंगे। ज्ञान की बात ही नहीं। काली माँ की याद में बैठे होंगे तो सिर्फ काली की शक्त ही सामने आयेगी। जगदम्बा को याद करते रहेंगे। वह है भक्तिमार्ग। न बापकी याद, न वर्से की याद रहती है। अभी तुम बच्चों में तो ज्ञान है। अमृतवेले इस मेडीटेशन में बैठने की आदत पड़ जाये तो बड़ा मजा आयेगा। बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं। ज्ञान में भी रमण करते रहते हैं। कितना बड़ा बगीचा है। पहले छोटा था। बीज भी याद आया, बगीचा भी याद आया। कैसे बगीचा बनताहै - बाबा में भी यह ज्ञान है, हमारे में

भी यह ज्ञानहै। सारा झाड़ू बुद्धि में आजाता है। अन्दर चलता रहता है, इसको मेडीटेशन कहा जाता है। बाप की भी खुशी, ज्ञान की भी खुशी रहती है। दोनों चीजें याद आती हैं। वह तत्व ज्ञानी ऐसे मेडीटेशन में नहीं बैठते हैं। उनको तो जरूर तत्व ही याद आयेगा। बस, तत्व में लीन हो जाना है। बाबा बीजरूप है - हमको यह नॉलेज है। रात को बैठने से अच्छे- अच्छे ख्यालात आयेंगे। समझ सकते हैं भक्तिमार्ग में क्या-क्या करते थे। कितने हठयोग आदि सिखलाते हैं। अभी तो समझ मिली है बाप को याद करने से उनकी सारी रचना (झाडू) याद आजाती है। हम 84 जन्मों का चक्र लगाकर आये हैं। अभी हम जाते हैं वापिस। यह ड़ामा का चक्र फिरता रहता है। ज्ञान धन को भी याद करते, धन देने वाले को भी याद करते हैं। जितना याद में रहेंगे उतना अवस्था परिपक्व होती जायेगी। तुम किसको भी समझा सकते हो - मेडीटेशन में हम कैसे बैठते हैं। मनुष्यों को तो अनेक प्रकार की मत मिलती है - फलाने को याद करो। यहाँ हम सब एक मत पर हैं, एक की ही याद में रहते हैं। छोटे, बड़े, बूढ़े - सबको एक ही मत मिलती है। मेडीटेशन में तो बैठना होता है ना। हम आत्मा सो परमात्मा तो हो नहीं सकते। आत्मा कहती है - हमने 84 जन्मपूरे किये, अब वापिस जाना है। परमात्मा ऐसे कहेंगे क्या? वह तो पुनर्जन्म में आते नहींहैं। तुम्हारे पास जब कोई आये तो उसे हाल में ले आओ। कोई अच्छे- अच्छे आदमी आते हैं, देखो, समझने की चाहना है तो यहाँ ले आओ, उन्हें समझाओ कि हम कैसे मेडीटेशन करते हैं। रात में भी मेडिटेशन करते हैं, दिन में भी करते हैं। हम याद करते हैं एक बाप को। बाप का फरमान है - मुझे याद करो और रचना के चक्र को याद करो। 84 जन्म भी गाये जाते हैं। जरूर पहले-पहले देवी-देवतायें थे। उन्हों के ही 84 जन्म भी गाये जाते हैं। यह चक्र का राज अच्छी रीति समझाना पड़े। हमको बाप और उनकी रचना का यह चक्र याद रहता है। बाप की याद और रचना के आदि-मध्य- अन्तका ज्ञान बुद्धि में है। हम सबकी एक ही मत है। हम हैं श्रीमत पर। वह पतित-पावन बाप ही आकर बेहद स्वर्ग का वर्सा देते हैं। तो बाप को जरूर याद करना पड़े ना। इस मेडीटेशन में बैठने से तुमको नशा अच्छा बढ़ेगा। अभी बाप को याद करो। तुम्हारा बाप तो है ना। भक्ति मार्ग में जन्म-जन्मान्तर याद करते आये हो। लौकिक

बाप तो हर जन्म में बदलता है फिर भी तुम निराकार बाप को जरूर याद करते हो क्यों कि यह है अविनाशी बाप।

माया भी कोई कम समर्थ नहीं है। अब उस पर जीत पानी है बाप की याद से। योग अक्षर नहीं बोलो। कई बच्चे कहते हैं योग में बिठाओ। लेकिन यह आदत पड जायेगी तो चलते-फिरते तुम याद नहीं कर सकेंगे। नयों को भी यह नहीं सिखाना है कि योग में बैठो। नये को तुम अपने सामने बिठाते हो तो वह नाम-रूप में फँस पड़ता है। अनुभव ऐसा कहता है, इसलिए मना की जाती है। माँ-बाप को एक जगह याद करना होता है क्या? तुम उठते-बैठते, सर्वि करते बाबा को याद करो। बाबा के जो लाल होंगे, वे रात को जागकर भी याद करते रहेंगे। ऐसा मोस्ट बिलवेड बाबा जिससे विश्व का मालिक बनते हैं, तो क्यों न उनको याद करेंगे। पारलौकिक बाप से अथाह सुख का वर्सा मिलता है। तुम अभी से पुरुषार्थ करते हो, मेहनत करते हो जो फिर जन्म- जन्मान्तर ईश्वरीय वर्सा तुम भोगते हो। बहुत सेटसे भी स्थापन करन्ती, फिर भागन्ती, गिरन्ती हो गये.. कोई सेन्टर स्थापन करके भी आहिस्ते- आहिस्ते गिर पड़ते हैं। वण्डरफुल माया है ना। माया झट नाक से पकड़ लेती है इसलिए बाप कहते हैं निरन्तर याद करो। समझो शिवबाबा समझाते हैं। इनसे मम्मा तीखी है। बाबा निराकार, निरहंकारी है। तुम बच्चों को भी समझना है, हम निराकारी आत्मा हैं, निरहंकारी बनना है तब ही वर्सा पायेंगे। देह- अभिमान नहीं आना चाहिए। बहुत मीठा बनना है। वहाँ माया होती नहीं। तो क्यों न बाप से वर्सा ले लेवें।

अवस्था अच्छी बनाने के लिए किस बात का बहुत-बहुत ध्यान रखना चाहिए? भोजन का। सेन्सीबुल बच्चे अपने हाथ से योग में रहकर भोजन बनायेंगे और खायेंगे। अगर कोई बाबा को याद कर, प्रेम से बैठ भोजन बनाये और खाये तो अवस्था बहुत अच्छी हो सकती है। बाबा

की याद मे भोजन बनायेंगे तो बाबा भी वासना लेंगे। सर्विसएल बच्चों को बहुत फुर्त बनना चाहिए। हर प्रकार की सेवा अपने हाथ से करनी है।

- आराम तो हराम है। टीचर ऐसा फुर्त होना चाहिए जो सेप्टर्स सम्भाले। इधर- उधर भागते रहे। 5 - 6 घण्टा नींद काफी है। बाकी मेहनत करनी चाहिए। अच्छे सेन्सीबुल बच्चे कोशिश कर भोजन भी अपने हाथ से बनायेंगे। बाबा को याद कर प्रेम से बैठ भोजन बनाये और खाये तो अवस्था बहुत अच्छी रहेगी। बाबा भी चाहते हैं अपने हाथ से बनावें। बाबा को याद कर बनायेंगे तो बाबा को भी वासना मिलेगी। बाप की याद से बहुत अच्छी उन्नति होगी। स्वदर्शन-चक फिराते रहो।

- श्रीमत कहती है - बच्चे, अन्तर्मुखी हो जाओ, बाहर से कुछ भी न बोलो। इस श्रीमत को पालन करेंगे तो सहज ही वाणी से परे जा सकेंगे। जितना याद करेंगे, स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे उतना कमाई जमा होती जायेगी। याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है। उस समय उठकर अन्तर्मुखी बन आत्म स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ।

- यह है युद्ध स्थल। बाप की याद तो कभी भी नहीं छोड़नी चाहिए। याद कम होने से बड़ा भारी नुकसान हो जाता है। बहुत बच्चों को माया ने जीत लिया। एकदम कच्चा खा गई। अजगर ने जैसे हप कर लिया। तुम महारथी बनते हो फिर माया गिराकर एकदम हप कर लेती है। अच्छे- अच्छे फर्स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरेक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे, आज वह है नहीं। क्या हुआ? कोई बात में संशय आ गया। बाबा समझाते हैं पिझयबुद्धि विजयन्ती, संशय बुद्धि विनशयन्ति। ऐसे फिर कितनी अधम-गति को पायेंगे। तुम यहाँ आते हो बाप से पूरा-पूरा वर्सा प्रिन्स- प्रिन्सेज का लेने।

सुप्रीम बाप कहते हैं मैं तुमको यात्रा पर ले जाता हूँ। फिर तुम मृत्युलोक में नहीं आयेंगे। बाप है सुप्रीम पण्डा। उनके बच्चे भी पण्डे ठहरे। तुम हो रूहानी पण्डे, रूहानी यात्रा कराने वाले। यह धारण करने की बातें हैं। बच्चे अच्छी रीति धारणा कर समझाते हैं। कोई फिर ऐसे भी हैं जिनका योग पूरा नहीं रहता है। भल ज्ञान की धारणा अच्छी रहती है। योग नहीं ठहरता है। ज्ञान में माया इंटरफियर नहीं करती है। योग में माया इंटरफियर करती है। जैसे रेडियो में स्पीच करते हैं तो लड़ाई जब लगती है तो एक दो का आवाज सुनने नहीं देते हैं। खिट-खिट करते हैं तो योग में माया भी इंटरफियर करती है।

बच्चों को अथाह ज्ञान धन का खजाना मिलता रहता तो अपार खुशी होनी चाहिए ना। जितना हृदय शुद्ध होगा तो औरों को भी शुद्ध बनायेंगे। योग की स्थिति से ही हृदय शुद्ध बनता है। तुम बच्चों को योगी बनने बनाने का शौक होना चाहिए। अगर देह में मोह है, देह- अभिमान रहता है तौ समझो हमारी अवस्था बहुत कच्ची है। देही- अभिमानी बच्चे ही सच्चा डायमण्ड बनते हैं इसलिए जितना हो सके देही- अभिमानी बनने का अभ्यास करो, । बाप को याद करो। बाबा अक्षर सबसे बहुत मीठा है। बाप बड़े प्यार से बच्चो को पलकों पर बिठाकर साथ ले जायेने। ऐसे बाप की याद के नशे में चकनाचूर होना चाहिए। बाप को याद करते- करते खुशी में ठण्डे ठार हो जाना चाहिए। जैसे बाप अपकारियों पर उपकार करते हैं - तुम भी फालो फादर करो। सुखदाई बनो। तुम बच्चे इस पढ़ाई से कितनी ऊंची कमाई करते हो। तुम पदमापदम पति बनते हो। तुमको तो खुशी है - यह पुराना शरीर छोड़ जाए नई दुनिया में प्रिन्स बनेंगे। तुम इस पुरानी दुनिया से ममत्व मिटाते रहो, इस देह को भी भूलते जाओ। हम आत्मा इन्डिपिडेंट हैं। बस एक बाप के सिवाए और किसी की याद न आये। जीते जी जैसेकि मौत की अवस्था मे रहना है। इस दुनिया से मर गये। कहते भी हैं ना - आप मुये मर गई दुनिया। शरीर के भान को उड़ाते रहो। एकान्त मे बैठ यह अभ्यास करो - बाबा बस अभी हम आपकी गोद में आये कि

आये। एक की याद में शरीर का अन्त हो - इसको कहा जाता है एकान्त। बाप मीठे बच्चों को समझाते हैं, बाप दु :ख हर्ता सुख कर्ता है तो बच्चों को भी सबको सुख देना है। बाप का राइट हैण्ड बनना है। ऐसे बच्चे ही बाप को प्रिय लगते हैं। शुभ कार्य में राइट हाथ को ही लगाते हैं। तो बाप कहते हर बात में राइटियस बनो, एक बाप को याद करो तो फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी! इस पुरानी दुनिया से ममत्व मिटा दो। यह तो कब्रिस्तान है। धन्धाधोरी बच्चों आदि के चिन्तन मे मरे तो मुफ्त अपनी बरबादी कर देंगे। शिवबाबा को याद करने से तुम बहुत आबाद होंगे। देह- अभिमान में आने से बरबादी हो जाती है। देही- अभिमानी बनने से आबादी होती है। धन की भी बहुत लालच नहीं रखनी चाहिए। उसी फिकरात में शिवबाबा को भी भूल जाते हैं। बाबा देखते हैं सब कुछ बाप को अर्पण कर फिर हमारी श्रीमत पर कहाँ तक चलते हैं। शुरू-शुरू में बाप ने भी ट्रस्टी हो दिखाया ना। सब कुछ ईश्वर अर्पण कर खुद ट्रस्टी बन गया।

बाबा हम आपकी याद में रहेगे। जितना टाइम निकाल सको उतना अच्छा है। जैसे गवर्मेन्त की सर्विस में भी 8 घण्टा रहते हैं ना। तो इसमें भी तो 8 घाटा रहो। सृष्टि को स्वर्ग बनाना कितनी भारी सर्विस है। सिर्फ बाप को याद करो और सुखधाम को याद करो। बस, 8 घण्टा सर्विस की तो पूरा वर्सा पाएंगे। ऐसे याद करते-करते तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। आठ घाटा तुम. इस सर्विस में दो। बाकी 16 घण्टा तुम फ्री हो। जितना हो सके घड़ी-घड़ी याद करो। याद तो कहाँ भी बैठे कर सकते हो। सबसे अच्छा टाइम तुमको सवेरे मिलेगा। अज्ञानी लोग 8 घाटा नींद करते हैं। तुम्हारी नींद आधी होनी चाहिए। 4 घाटा नींद बस। कर्मयोगी हो ना। रात को 10 बजे सो जाओ, 2 बजे उठो। शिवबाबा को यदि करो। 2 बजे नहीं उठ सकते तो 3 बजे उठो, 4 बजे उठो। वह फर्स्टक्लास समय है। एकदम शान्ति रहती है। सभी अशरीरी बन जाते हैं। उस समय सन्नाटा बहुत होता है, जैंसे कि मूलवतन हो जाता है। ऐसे लगता जैसे सब मरे पडे हैं। उस समय तुम बाबा को याद करेंगे तो फिर वह याद पक्की हो जायेगी।

अमृतवेले की याद अच्छा असर करती है। बाबा बहुत करके रात को जागते रहते हैं। स्थूल काम में आने से माथा भारी होता है। सूक्ष्म सर्विस में थकावट नहीं होती है। कमाई थोड़ेही थकायेगी। कमाई से तो खुशी होगी। तो सवेरे-सवेरे उठकर याद करने से बड़ी कमाई है।

जब तक यहाँ हैं तब तक पुराने शरीर को, पुरानी दुनिया को बुद्धि से भूलना है और योग में रहना है। तो इस योग अग्नि से पाप भस्म होंगे। इसमें मेहनत लगती है। पद भी तो जबरदस्त है। विश्व का मालिक बनना है। मनुष्य कहते हैं कि विथ का मालिक तो शिवबाबा है। परन्तु नहीं, विश्व का मालिक मनुष्य ही बनते हैं। पहला नम्बर जन्म और अभी का अन्तिम जन्म देखो कितना रात दिन का फर्क है। कोई को भी याद नहीं आ सकता, जब तक बाप आकर साक्षात्कार कराये। शान बुद्धि से भी साक्षात्कार होता है। जो सयाने बच्चे हैं, नित्य बाप को याद करते हैं, उन्हों को बहुत मजा आयेगा। यहाँ तुम सुनते हो सब नई बातें हैं। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते हैं। वह तो गपोडे लगाते रहते और दर-दर धक्के खाते रहते हैं। तुमको तो भटकने से छुड़ाया जाता है। बाप कहते हैं तुम आत्मा हो, मुझ बाप को याद करते रहो। बुद्धि में यही विचार रहे कि हम आत्माओ को बाबा के पास जाना है, यह सृष्टि जैसे हमारे लिए है नहीं। यह पुरानी सृष्टि तो खत्म हो जायेगी। फिर हम स्वर्ग मे आकर नये महल बनायेंगे। दिन-रात बुद्धि में यह चलना चाहिए। बाप अपना अनुभव सुनाते हैं। रात को सोता हूँ, तो यही ख्यालात चलते हैं। यह नाटक अब पूरा होता है, यह पुराना चोला छोड़ना है। हाँ विकर्मों का बोझा बहुत है, इसलिए निरन्तर बाबा को याद करना है। अपनी अवस्था को दर्पण मैं देखना है - हमारी बुद्धि सबसे हटी हुई है? धन्धे आदि में रहते हुए भी बुद्धि से काम ले सकते हो। बाबा के ऊपर कितना ओना है। कितने ढेर बच्चे हैं। उन्हों का ख्याल रखना पड़ता है। बच्चों को पनाह (शरण) देनी है। दु-खी तो बहुत हैं ना! हंगामे में कितने मरते हैं। यह समय बहुत खराब है। तो बच्चों को शरण देने के लिए यह मकान बन रहे हैं। यहाँ तौ सब अपने बच्चे ही रहते हैं। कोई

डर नहीं और फिर योगबल भी रहता है। बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है, जो बाप को अच्छी रीति याद करते हैं तो बाप उन्हों की रक्षा भी करता है। दुश्मन को भयंकर रूप दिखाकर भगा देते हैं। तुमको जब तक शरीर है, तब तक योग में रहना है। नहीं तो सजायें खानी पड़ेगी। बड़े आदमी का बच्चा सजा खाता है तो उनका काँध नीचे हो जाता है। तुमको भी काँध नीचे करना पड़ेगा। बच्चों के लिए तो और कड़ी सजायें हैं। कोई ऐसे भी हैं जो कहते अभी तो माया का सुख ले लेवें, जो होगा सो देखा जायेगा। बहुतों को इस पुरानी दुनिया के सुख मीठे लगते हैं।

आत्मा खुश होती है - बरोबर अब नाटक पूरा हुआ, अब बाबा आये हैं ले जाने। फिर हम सुखधाम में आयेगे। आधाकल्प पुजारी बन बाप को याद किया है। अब फिर पूज्य बनना है। तो खुशी में खग्गियां मारनी चाहिए। खुशी न होने से फिर रोते रहते। जो रोते हैं सो खोते हैं। हाँ, ऐसे सुख देने वाले बाप की याद में प्रेम के आसू आये तो वह माला के दाने हैं। बाप की श्रीमत से श्रेष्ठ बनेंगे। यह बाप भी कहते हैं कदम-कदम पर शिवबाबा की मत पर चलना है। श्रीमत ही श्रेष्ठ है। बड़ी ऊंची पढ़ाई है।

देह- अभिमानी का लव जुट न सके। तो देह- अभिमान छोड़ने में बड़ी मेहनत चाहिए। देही- अभिमानी बड़े हर्षित रहते हैं। देह- अभिमानी का चेहरा मुर्दों जैसा रहता है। तो पहली मुख्य बात है देही- अभिमानी बनना, तब बाप भी मदद करेगा। निर्विकारी तो बहुत रहते हैं परन्तु मैं आत्मा हूँ, बाप की याद रहे, यह घडी-घड़ी भूल जाता है। इसमें फेल हो जाते हैं। अशरीरी नहीं बनेंगे तो वापिस कैसे जायेगे? सर्विस का बहुत फुरना रहना चाहिए - जिससे बहुत मनुष्यों का कल्याण हो, देह- अभिमानी कहाँ भी जायेगा तो फेल हो आयेगा। देही- अभिमानी कुछ न कुछ तीर लगाकर आयेगा। महसूस करेंगे कि फलाने ने बात तो ठीक कही थी। योग जुट जाए तो सर्विस का फुरना भी हो। उसमें पहले-पहले तो अल्फ पर समझाना है।

यह ड्रामा कैसा वन्डरफुल बना हुआ है यह भी तुम अभी समझाते हो। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है इतना सिर्फ याद रहे तो भी पक्का हो जाता है कि हम सतयुग में जाने वाले हैं। अभी संगम पर हैं, फिर जाना है अपने घर इसलिए पावन तो जरूर बनना है। अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। ओहो! बेहद का बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बनेंगे। विश्व का मालिक बनेंगे। बाप कितना बच्चों को प्यार करते हैं। ऐसे नहीं कि सिर्फ टीचर के रूप में पढ़ाकर और घर चले जाते हैं। यह तो बाप भी है, टीचर भी है। तुमकी पढ़ाते भी है। याद की यात्रा भी सिखलाते हैं। ऐसा विश्व का मालिक बनाने वाले, पतित से पावन बनाने वाले बाप के साथ बहुत लव होना चाहिए। सवेरे-सवेरे उठने से ही पहले-पहले शिवबाबा से गुडमार्निंग करना चाहिए। तुम जितना प्यार से याद करेंगे उतना खुशी में रहेंगे। बच्चों को अपने दिल से पूछना है कि हम सवेरे उठकर कितना बेहद के बाप को याद करते हैं। मनुष्य भक्ति भी सवेरे करते हैं ना। भक्ति कितना प्यार से करते हैं। परन्तु बाबा जानते हैं कई बच्चे दिल व जान, सिक व प्रेम से याद नहीं करते हैं। सवेरे उठ बाबा से गुडमार्निंग करें, ज्ञान के चिन्तन में रहें तो खुशी का पारा चढे। बाप से गुडमार्निंग नहीं करेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा। मुख्य है ही याद। इससे तुम्हारे भविष्य के लिए बहुत भारी कमाई होती है, कल्प-कल्पान्तर यह कमाई काम आयेगी। बड़ा धैर्य, गम्भीरता, समझ से याद करना होता है। मोटे हिसाब में तो भल करके यह कह देते हैं कि हम बाबा को बहुत याद करते हैं परन्तु एक्यूरेट याद करने में मेहनत है। जो बाप को जास्ती याद करते हैं उनको करंट जास्ती मिलती है क्योंकि याद से याद मिलती है। योग और ज्ञान दो चीजें हैं। योग की सब्जेक्ट अलग है, बहुत भारी सबजेक्ट है। योग से ही आत्मा सतोप्रधान बनती है। याद बिना सतोप्रधान होना, असम्भव है। अच्छी रीति प्यार से बाप को याद करेंगे तो आटोमेटिक्सी करेन्ट मिलेगी, हेल्दी बन जायेगे। करेर से आयु भी बढ़ती है। बच्चे याद करते हैं तो बाबा भी सर्चलाइट देते हैं। बाप कितना बड़ा भारी खजाना तुम बच्चों को देते हैं। मीठे बच्चों को यह पक्का याद रखना है, शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं।

शिवबाबा पतित-पावन भी हैं । सद्गति दाता भी हैं । सद्गति माना स्वर्ग की राजाई देते हैं । बाबा कितना मीठा है । कितना प्यार से बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं । बाप दादा द्वारा हमको पढ़ाते हैं ।

- जैसे बाबा रात को बतला रहे थे - पता नहीं क्या होता है तो शिवबाबा को याद करना भूल जाता हूँ । ऐसे तो नहीं बाप जब प्रवेश करते हैं तब समझता हूँ बाबा आया है, याद रहती है । बाबा चला जाता है तो भूल जाता हूँ? प्वाइंट सुनाते हैं तो फील होता है - बेहद का बाप आकर सुनाते हैं । परन्तु मैं खुद ही भूल जाता हूँ । क्या मेरी याद से ही आता है? ऐसे कहें - मैं घडी-घडी याद करता हूँ । भल आवे इसमें तो सबका कल्याण है । याद ही मुख्य हो जाती है । आये, न आये, बाप को याद जरुर करना है ।

- शिवबाबा की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। याद नहीं किया तो भ्रष्टाचारी बनें। कितनी कड़ी बातें हैं, परन्तु बहुत बच्चों को यह भूल जाता है कि मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की गोद में बैठी हूँ। भूलने के कारण वह नशा और खुशी नहीं रहती है। बाबा को याद करने की आदत पड़ जाए तो देही-अभिमानी बन जावें। विलायत में बहुत बच्चियाँ हैं, सम्मुख नहीं हैं। परन्तु बाबा को याद करती हैं। बाबा को बहुत प्यार से याद करना है। जैसे सजनी साजन को कितना प्यार से याद करती है। चिट्ठी नहीं आती है तो सजनी बहुत हैरान हो जाती है। तुम सजनियों को तो धक्का खा-खा कर साजन मिला है तो याद अच्छी रहनी चाहिए। चलन भी बड़ी अच्छी चाहिए। आसुरी चलन वाले का गला ही घुट जाता है। बाबा चलन से ही समझ जाते हैं– यह याद नहीं करते हैं इसलिए धारणा नहीं होती है। सर्विस नहीं कर सकते हैं तो पद भी नहीं पा सकेंगे। पहले पहले तो बाप का बनना है। बी.के. बनना पड़े। बी.के. को जरूर शिवबाबा ही याद रहेगा क्योंकि दादे से वर्सा लेना है। याद में रहना बड़ी मेहनत है। ऐसे कोई

मत समझे भोग लगता है हम वह खाते हैं तो बुद्धियोग बाबा से लग जायेगा। नहीं, यह तो शुद्ध भोजन है। परन्तु वह मेहनत न करे तो कुछ भी नहीं हुआ। श्रेष्टाचारी याद से ही बनेंगे। पवित्रता फर्स्ट है। आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए योग का बल चाहिए, पानी में स्नान आदि करने से तो पावन बन नहीं सकते क्योंकि पतित आत्मा ही बनती है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे– जेवर झूठा है, सोना सच्चा है।

बाबा ने समझाया है माया के तूफान तो सभी को आयेंगे। बाबा से आकर पूछो। ज्ञान और योग का भी अनुभव पूछो। संकल्प जो विकल्प बन जाते हैं, उनका भी अनुभव पूछो। बाबा सबसे आगे हैं, तो इन तूफानों से पास जरूर होते हैं। हम बाबा को याद करते हैं। फिर भी माया कम नहीं है। जितना रूसतम उतना माया पूरा सामना करेगी, डरना नहीं है। लिखते हैं बाबा माया को बोलो कि तंग न करे। परन्तु माया तूफान तो मचायेगी, डरना नहीं है।

तुम हो स्टूडेन्ट। ऊंच ते ऊंच नॉलेजफुल बाप तुमको पढ़ाते हैं, तो नोट्स जरूर लेने चाहिए क्योंकि फिर रिवाइज कराना होता, औरों को समझाने में भी सहज होता है। नहीं तो माया ऐसी है जो बहुत प्वाइंट्स भुला देती है। इस समय तुम बच्चों की लड़ाई है माया रावण के साथ। जितना तुम शिवबाबा को याद करेंगे उतना माया भुलाने की कोशिश करेगी। ज्ञान की प्वाइंट भी भुलाने की कोशिश करेगी। कभी-कभी बहुत अच्छी प्वाइंट्स याद आयेंगी, फिर वहाँ की वहाँ गुम हो जायेंगी क्योंकि यह ज्ञान है नया। तुम यह जो ज्ञान और योग आदि के किताब बनाते हो, यह फिर से पढ़कर रिफ्रेश होने के लिए। बाकी टीचर के सिवाए तो कोई समझ नहीं सकेंगे। गीता का टीचर ही है श्रीमद् भगवान। वह है विश्व का रचयिता, स्वर्ग रचते हैं।

- कन्या जब एक बारी बालक को जान लेती है तो प्रीत जुट जाती है। पहचान नहीं तो प्रीत नहीं। तुम्हारें में भी नम्बरवार प्रीत है। निरन्तर याद की भी प्रीत चाहिए, परन्तु प्रीतम को भूल जाते हैं। यह बाबा (ब्रह्मा) कहते हैं मैं भी भूल जाता हूँ।

- मनुष्य तो सब पतित हैं। तुम भी पहले पतित थे, अब पतित-पावन आकर तुमको पावन बनने का ज्ञान दे रहे हैं। योग और ज्ञान। पहले तो बाप के साथ योग चाहिए। दुनिया में बाप अलग, टीचर अलग, गुरू अलग है। याद करना पड़ता है। फलाना टीचर हमको पढ़ाते हैं। तुम तीनों ही सम्बन्ध से एक को ही याद करते हो। तीनों का नाम एक ही शिव है। परमप्रिय परम पिता, परमप्रिय शिक्षक, परमप्रिय सतगुरू वह एक ही है। मनुष्य तो टीचर को अलग, गुरू को अलग, बाप को अलग याद करेंगे। उन्हों का नाम रूप अलग-अलग है। यहाँ तीनों का नाम रूप एक ही बुद्धि में आता है। रूप निराकार है, नाम शिव है। बुद्धि में एक ही याद आता है। शिवबाबा कहते हैं मैं आता हूँ तुम बच्चों को इस मृत्युलोक से ले जाने, जिसके आसार भी देख रहे हैं। बलवान बनने में माया बहुत सामना करती है, विघ्न डालती है। तुम बहुत चोट खाते हो। माया कभी जोर से थप्पड़ मारती हैं, कभी हल्का। जोर से ऐसा मारती है जो विकार में भी गिर पड़ते हैं। फिर वह असर बहुत समय चलता है। बुद्धि को जैसे ताला लग जाता है। अब बाबा कहते हैं माया भुलाने की बहुत कोशिश करेगी। परन्तु तुम भूलना नहीं जितना तुम मेरे को याद करेंगे तो वर्सा भी बुद्धि में आयेगा और ऊंच पद भी पायेंगे। ऐसा कोई बच्चा नहीं होगा, जिसको बाप का वर्सा याद न आये। वर्सा बच्चे से छिप नहीं सकता। तुम भी जानते हो कि हम विश्व की बादशाही ले सकते हैं, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सब एक जैसी राजधानी तो ले नहीं सकेंगे।

गुरूनानक ने परमपिता परमात्मा की महिमा की है। कहते हैं जप साहेब, सुखमनी.... बाप कहते हैं मुझे याद करो। जिसको आधाकल्प याद किया वह चीज़ अगर मिल जाए तो कितनी खुशी होनी चाहिए। परन्तु खुशी भी उनको होती है जो घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझते हैं। आत्मा समझने से बाप के साथ लव रहेगा। आत्मा को इस समय पता ही नहीं है कि हमारा बाप कौन है। बाप का बन बाप के आक्यूपेशन को न जाना तो उनको बुद्धू कहेंगे।

बाप ने कर्म करने की तो छुट्टी दी है। रात का अभ्यास दिन में काम आयेगा। रात को जागना है - 2 बजे के बाद; क्योंकि 9 से 12 बजे तक का टाइम बिल्कुल डर्टी है इसलिए विचार सागर मंथन सवेरे ही किया जाता है। हम आत्मा हैं बस अब बाबा के पास ही जाना है। एक चोला छोड़ दूसरा लेंगे। यह है अपने साथ बातें करने का ढंग। 84 जन्म पूरे हुए। बाकी कुछ दिन रहे हुए हैं। यह बेहद का ड्रामा है। ऐसे बुद्धि में रहने से देह का भान टूट जायेगा। बाप और वर्सा ही याद पड़ेगा।

अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो वर्सा पाने का। परन्तु माया भी बड़ी प्रबल है। बहुत धोखा देती है। झट कान से, नाक से पकड़ लेती है। भ्रष्टाचारी बन पड़ते हैं। काम का नशा आ जाता है। किसके नाम रूप के पीछे लट्टू हो जाते हैं, जैसे आशिक माशूक। बहुत धोखा खाते हैं। लोभी भी एकदम नाम बदनाम कर देते हैं। यह सब कुछ होता ही रहता है। बाप समझाते हैं बच्चे, योग में रहना है। अच्छे जो योगी होते हैं वह 4-5 दिन भोजन न भी खावें तो भी उनको परवाह नहीं रहती है। बहुत खुशी में रहते हैं। अवस्था ऐसी रहनी चाहिए। देखना है मेरे में किसी चीज़ का लोभ तो नहीं है! एम रखनी चाहिए कि हम फुल पास होकर दिखावें। कल्प-कल्पान्तर की बाजी है। उस पति को तो तुम कितना याद करती हो और यह पतियों का पति जो तुम्हें अमृत पिलाते, कौड़ी से हीरा बनाते हैं उनको याद नहीं करते। ऐसे बाप को तो कितना याद करना चाहिए! श्रीमत पर

पुरुषार्थ किया जाता है। कोई भी बात हो तो पूछना चाहिए बाबा मेरे में क्या अवगुण है! देह का भान तोड़ना है। जो पूरा बलि चढ़ते हैं, उनको 21 जन्मों का वर्सा मिलता है। पूरा बलि चढ़ने का मतलब है उसकी तरफ बुद्धि रहे। यह बच्चे आदि जो भी कुछ हैं, उनसे भी बुद्धि हट जानी चाहिए। बाबा कहते हैं उसके बदले में तुमको वहाँ सब कुछ नया मिलेगा। कहते हैं भगवान की कृपा से बच्चा मिला।

यह पुरानी दुनिया खत्म होने वाली है। मैं आया हूँ नई दुनिया स्थापन करने। तुम प्रतिज्ञा भी करते हो बाबा आप आयेंगे तो हम और संग तोड़ एक आपके संग जोड़ेंगे। मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। अब बाबा आये हैं कहते हैं, बच्चे देह सहित देह के सभी सम्बन्धों का त्याग कर मुझे याद करो। इसमें ही मेहनत है, कहते हैं - बाबा हम जानते हैं यह जो भी मित्र सम्बन्धी आदि हैं, यह सब मरे पड़े हैं। यह शरीर भी खत्म हो जायेगा, पुराना है। अब हम पुराना शरीर छोड़ नये में जायेंगे। पुराने शरीर से दिल हट जाती है। अभी हम गये कि गये। पुरानी दुनिया भस्म होनी है। बाप समझाते हैं सवेरे उठकर ऐसे-ऐसे ख्याल करो। अभी नाटक पूरा होता है, हमको वापिस जाना है। अब एक ही बाप की श्रीमत पर चलना है। अभी नई दुनिया में जाना है इसलिए जीते जी सबसे बुद्धियोग तोड़ एक से जोड़ना पड़े, इसमें बड़ा अभ्यास चाहिए। अभ्यास के लिए ही बाप कहते हैं सवेरे उठा। दिन में तो शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करना है। रात का अभ्यास वृद्धि को पाता है। जितना टाइम मिले बाबा को याद करो। बाबा की याद में तुम कितना भी पैदल करते जाओ, कभी थक नहीं सकते। योगबल की खुशी रहती है। याद का अभ्यास होगा तो कहाँ भी बैठे याद आ जायेगी। खाने पर भी याद में रहना है। फालतू वार्तालाप नहीं चलना चाहिए। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। अभी वापिस जाना है। सभी का सद्गति दाता, सबको श्रेष्टाचारी बनाने वाला, शान्तिदेश में ले जाने वाला एक ही बाप है। जन्म-जन्मान्तर तुमको बाप टीचर गुरू मिले परन्तु वह सब हैं जिस्मानी। कोई भी देही-अभिमानी बनना नहीं सिखलाते हैं। यह तो बेहद का बाप ज्ञान का सागर है। जो भी आत्मायें

हैं उनमें संस्कार भरे हुए हैं। फिर शरीर धारण करने से वह इमर्ज होते हैं। अभी तुमको सारे ड्रामा की नॉलेज है और तो सभी मनुष्य घोर अन्धियारे में हैं। गाया भी हुआ है ज्ञान अंजन सतगुरू दिया। तो ज्ञान अंजन देने वाला ज्ञान सूर्य बाप है। सतयुग को दिन, कलियुग को रात कहा जाता है। आत्माएं उस निराकारी बाप को याद करती हैं।

- माया आयेगी, तुम्हारा काम है माया को भगाना। जो शिवबाबा के सिवाए और कोई की याद न पड़े। एक घड़ी, आधी घड़ी... याद करने की भी प्रैक्टिस करो। फिर आखिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। अगर बुद्धि कहाँ भी लटकी हुई होगी तो सजायें खूब खायेंगे। जैसे काशी कलवट खाते हैं, उनको जीवघात कहा जाता है। आत्मा अपने जीव का घात करती है। बाकी आत्मा का घात होता नहीं। वह तो अमर है। यह सब धारण कर बाप की याद में रहना है, सबसे ममत्व मिटाना है। यह पुराना शरीर है, साक्षी होकर रहना पड़ता है। अब वापिस जाना है। यहाँ कोई मजा नहीं है। अर्थक्वेक में सब मर जायेंगे। मरने के पहले अपनी अवस्था अच्छी बनानी है।

- हमारी तो माया के साथ गुप्त युद्ध है, जिसको कोई भी जानते नहीं। हम अगर बाप को याद नहीं करेंगे तो माया का थप्पड़ लग जायेगा, तूफान आयेगा। बाप कहते हैं अभी तुम्हारा मुख है उस तरफ और पैर हैं इस तरफ। हमेशा याद करते रहना चाहिए नई दुनिया को। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना है। बाप कहते हैं निर्बन्धन हो रहने वालों से गृहस्थ व्यवहार में रहने वालों की अवस्था अच्छी है। सब तो एक जैसे नहीं हो सकते। नम्बरवार हैं। स्कूल में कोई एक जैसा नम्बर थोड़ेही लेते हैं। यह भी बेहद का स्कूल है। बाप सब सेन्टर वाले बच्चों का ख्याल रखते हैं, इनको कहेंगे विशालबुद्धि। विशालबुद्धि तब बनेंगे जब बाप को याद करेंगे। तुम बच्चों की अब विशालबुद्धि

बनी है। तुम मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन और यह सारा चक्र कैसे फिरता है - इसे जानते हो, इसको विशालबुद्धि वा बेहद की बुद्धि कहा जाता है।

बाबा कहते हैं मैंने 5 हजार वर्ष पहले भी कहा था - मामेकम् याद करो। गृहस्थ व्यवहार धन्धे आदि में रहते सिर्फ अपने को आत्मा समझो, अब हमको पावन बनना है। घर जाना है। पावन दुनिया का मालिक बनना है। अब हम आइरन एज से गोल्डन एज में कैसे जायें, यह चिंता लगी रहे। बाबा तो सहज युक्ति बतलाते हैं कि मामेकम् याद करो तो तुम पावन बनेंगे। गीता में दो बारी यह महावाक्य हैं कि मनमनाभव। हे बच्चे देह-अभिमान छोड़ो। बाप को याद करो। वह है अथॉरिटी। तुमको सभी शास्त्र का सार, सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नॉलेज समझाया है। तुम जितना मुझे याद करेंगे उतना तुम्हारी आत्मा पवित्र होती ज्येगी, और कोई उपाय नहीं। पत्थरबुद्धि को पारसबुद्धि बनना है। गंगा-स्नान से पावन नहीं बनेंगे। अगर बनते तो यहाँ होते ही नहीं। परन्तु आइरन एज में सबको आना ही है। तो पहले सवेरे-सवेरे इस ख्यालात में बैठना है। कहते हैं ना - राम सिमर प्रभात मोरे मन। आत्मा कहती है हे मेरी बुद्धि अब बाप को याद करो। बुद्धि का योग बाप से लगाना है। अब जितना जो लगायेंगे उतना पत्थर से पारसबुद्धि बनते जायेंगे। पारसबुद्धि बनाने वाला एक बाप ही है। कहते हैं कल्प-कल्प आकर संगम पर तुमको बनाता हूँ। सेकेण्ड की बात है ना। जैसे डाक्टर लोग ऐसी दवाईयां देते हैं जो फोड़ा अन्दर ही खत्म हो जाता है। बाप कहते हैं तुमको भी मुख से कुछ कहना नहीं है। हाथ पांव से भी कुछ करना नहीं है, सिर्फ बुद्धि से याद करना है। कल्प पहले भी तुमने याद किया था, जिससे विकर्म दग्ध हुए थे। ऐसे तुमको समझाया था, अब समझा रहा हूँ। अभी तुमको बाप की याद से पारसबुद्धि बनना है। तुम बच्चों को यह स्वदर्शन चक्र फिराना है, इसमें हिंसा की कोई बात नहीं। यह सब ज्ञान की बातें हैं। ज्ञान का शंख बजाना है और चक्र को याद करना है। यह है स्वदर्शन चक्र, उन्होंने फिर चर्खा रख दिया है। कमल फूल समान पवित्र भी तुम्हें यहाँ बनना

है। गदा भी ज्ञान की है, जिससे माया पर जीत पानी है। तो यह सब हैं तुम्हारे अलंकार। अब हमको बाप को याद कर पावन बनना है। माला का दाना बनना है। बाबा की याद से पवित्र बनेंगे, जितना पवित्र बनते और बनाते जायेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ता जायेगा। यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान औरों को देना अभी आत्मा में खाद पड़ी है वह निकलेगी - योग भट्ठी से, योग अग्नि से। इस ज्ञान और योग की समझानी का विनाश नहीं होता है। थोड़ा सुनने से भी प्रजा में आ जायेंगे।

- 84 जन्म ले फिर पतित बने हैं, उतरते आये हैं। अब हमको फिर श्रीमत पर चलना पड़े, तो फिर कोई पाप कर्म नहीं होंगे। पाप-आत्मा का अन्न अन्दर नहीं जायेगा। परहेज तो बताई जाती है ना, नहीं तो वह असर पड़ जाता है। परन्तु कहाँ-कहाँ सरकमस्टांश देखा जाता है। कर्मों का हिसाब-किताब है, अलग बनाने नहीं देते हैं। अच्छा बाप को याद करो, लाचारी है - बाबा को याद करके खाओ। भूलेंगे तो तुम्हारे पर उसका असर आ जायेगा। बाप को याद करने से नजदीक होते जायेंगे। अभी तो सम्मुख बैठे हो। बाप डायरेक्ट समझाते हैं, हे बच्चे, हे बच्चे कह बाप बात कर रहे हैं, तो बाप को याद करना है, फिर करो न करो तुम्हारी मर्जी। जो करेगा सो पायेगा जरूर। सीधी बात है।

- भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, भोजन आदि बनाओ। बच्चों की सम्भाल करो। अच्छा सवेरे तो टाइम है ना। कहा भी जाता है राम सिमर प्रभात मोरे मन। आत्मा में बुद्धि है। भक्ति भी सवेरे करते हैं। तुम भी सवेरे उठ बाप को याद करो, विकर्म विनाश करो। सारा किचड़ा निकल आत्मा कंचन बन जायेगी, फिर काया भी कंचन मिलेगी। याद की अग्नि से ही खाद निकलेगी और

कोई उपाय नहीं है। बच्चों को बहादुर बनना है, डरो मत। जिनका रक्षक खुद भगवान बाप बैठा है उनको किससे डरना है? तुम्हें कोई श्राप आदि क्या देंगे? कुछ भी नहीं। अच्छा!

अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम बेहद के निराकार बाप के सम्मुख बैठे हैं। यह बाबा भी कहते हैं कि हम उस बाबा के सम्मुख बैठे हैं। उनको याद करता हूँ। घड़ी-घड़ी याद करता हूँ। बाबा का बच्चा हूँ ना। तुमको तो इस साकार को छोड़ उनको याद करना है। हमारे लिए तो एक ही बाबा है। तुम्हारे लिए थोड़ी अटक पड़ती है, मुझे क्यों अटक पड़ेगी। तुम्हारी नजर इस पर जाती है, मेरी नजर किस पर जायेगी? मेरा तो डायरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन हो गया। तुमको शिवबाबा को याद करना पड़ता है। इस साकार को क्रास करना पड़ता है कि यह याद न पड़े, मेरे लिए तो एक शिवबाबा ही है। तुम्हारे सामने दो बैठे हैं। हमारे सामने तो सिर्फ एक ही है। मैं उनका बच्चा हूँ। फिर भी निरन्तर याद नहीं कर सकता हूँ क्योंकि बाबा कहते हैं - तुम कर्मयोगी हो। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र फिरता रहत् है। सतयुग त्रेता में इतने जन्म पास किये फिर इतने जन्म लेते-लेते 84 जन्मों का चक्र पूरा किया। हिसाब है ना। अब कलियुग का अन्त आ गया फिर आगे नया चक्र फिरेगा। हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर से रिपीट होती है। सतयुग में कौन थे, कहाँ पर राज्य करते थे। यह भी तुम जानते हो कि सारी विश्व पर देवतायें ही राज्य करते थे। अभी तो कहेंगे तुम हमारी हद में नहीं आओ, हमारा पानी न लो। बाबा तो बेहद का मालिक है। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह बाबा नहीं कहते। इन द्वारा निराकार बाबा तुम आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो तो तुम कभी रोगी वा बीमार नहीं होंगे। यहाँ तो बाप बच्चों को पैदा कर बड़ा करते हैं फिर अचानक अगर वह मर जाते हैं (शरीर छोड़ देते हैं) तो सब कितने दुःखी हो पड़ते हैं। फिर तो शरीर निर्वाह अर्थ खुद ही सर्विस करनी पड़े। यह तो है ही दुःखधाम। बाप तो तुम्हें कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। बाप और वर्से को याद करो। बच्चा जानता है कि बाप से हमको वर्सा मिलना है तो भी अपना धन्धाधोरी

जरूर सीखते हैं। वर्से के लिए बैठ तो नहीं जायेंगे। बाकी सिर्फ जो राजाई में जन्म लेते हैं वह वर्से के लिए बैठते हैं। बहुत दान-पुण्य करने से राजाई घर में जन्म मिलता है।

माया तुम्हारा बहुत सामना करती है। युद्ध के मैदान में तुमको बहुत हराती है। चलते-चलते कोई तूफान में आ जाते हैं, विकार में जाकर एकदम काला मुँह कर देते हैं। बाप कहते हैं अभी मैं तुम्हारा गोरा मुँह करता हूँ। तुम विकार में जाकर फिर काला मुँह मत करो। योग से अपनी अवस्था को शुद्ध बनाओ। शुद्ध होते-होते सारी खाद निकल जायेगी, इसलिए योग भट्ठी में रहना है। सोनार लोग इन बातों को तो अच्छी रीति समझेंगे। सोने की खाद निकलती है आग में डालने से। फिर सोने की सच्ची ढली बन जाती है। बाप कहते हैं जितना तुम मुझे याद करते रहेंगे उतना शुद्ध बनते जायेंगे। बाप तो श्रीमत देंगे और क्या करेंगे। कहते हैं बाबा कृपा करो। अब बाबा कृपा क्या करेंगे! बाप तो कहते हैं याद में रहो तो खाद निकल जायेगी। तो याद में रहना है वा कृपा आशीर्वाद मांगना है? इसमें तो हर एक को अपनी मेहनत करनी है।

बाप कहते हैं रूहानी बच्चे, इस यात्रा में थक मत जाओ। घड़ी-घड़ी बाप को भूलो मत। जितना याद में रहते हो उतना समय जैसे तुम भट्ठी में हो। याद नहीं करते हो तो भट्ठी में नहीं हो। फिर तुमसे और भी विकर्म बनते, एड होते जाते हैं, जिससे तुम काले बन जाते हो। मेहनत कर गोरे बन और फिर काले बनते हो तो गोया तुम वैसे 50 परसेन्ट काले थे, अभी फिर 100 परसेन्ट काले बन जाते हो। काम विकार ने ही तुमको काला किया है। वह है काम चिता, यह है ज्ञान चिता। मुख्य बात है काम की। घर में झगड़ा ही इस पर होता है। कुमारियों को भी समझाया जाता है कि अभी तुम पवित्र हो तो अच्छी हो ना। कुमारी को सब पांव पड़ते हैं क्योंकि पवित्र है। तुम सब ब्रह्माकुमारियां हो ना।

- अब बाप द्वारा तुम मनुष्य से देवता बन रहे हो। बेगुणी से गुणवान बन रहे हो। जानते हो बाप को याद करने और समझने से हम कोई भी पाप नहीं करेंगे। कोई तमोप्रधान चीज़ नहीं खायेंगे। मनुष्य तीर्थों पर जाते हैं तो कोई बैगन छोड़ आते हैं, कोई मास छोड़ आते हैं। यहाँ है 5 विकारों का दान क्योंकि देह-अभिमान सबसे बड़ा खराब है। घड़ी-घड़ी देह में ममत्व पड़ जाता है।

- बाप कहते हैं - बच्चे इस देह से ममत्व छोड़ो। देह का ममत्व नहीं छूटने से फिर और और देहधारियों से ममत्व लग जाता है। बाप कहते हैं बच्चे एक से प्रीत रखो, औरों के नाम रूप में मत फँसो। बाबा ने गीत का अर्थ भी समझाया है। बेहद के बाप से फिर से बेहद के स्वर्ग की बादशाही ले रहे हैं। इस बादशाही को कोई हमसे छीन नहीं सकता। वहाँ दूसरा कोई है ही नहीं। छीनेंगे कैसे? अभी तुम बच्चों को श्रीमत पर चलना है। न चलने से याद रखना कि ऊंच पद कभी पा नहीं सकेंगे। श्रीमत भी जरूर साकार द्वारा ही लेनी पड़े। प्रेरणा से तो मिल नहीं सकती। कइयों को तो घमण्ड आ जाता है कि हम तो शिवबाबा की प्रेरणा से लेते हैं। अगर प्रेरणा की बात हो तो भक्ति मार्ग में भी क्यों नही प्रेरणा देते थे कि मनमनाभव।

- बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, यह पढ़ाई भविष्य के लिए है। तुम नई दुनिया के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। तो बाप को कितना याद करना चाहिए। बहुत हैं जो एक दो के नाम रूप में फँसते हैं। तो उनको शिवबाबा कभी याद नहीं पड़ेगा। जिससे प्यार करेंगे वह याद आता रहेगा। वह यह सीढ़ी चढ़ न सके। नाम रूप में फँसने की भी एक बीमारी लग जाती है। बाबा वारनिंग देते हैं एक दो के नाम रूप में फँस अपना पद भ्रष्ट कर रहे हो। औरों का कल्याण भल हो जाए परन्तु तुम्हारा कुछ भी कल्याण नहीं होगा। अपना अकल्याण कर बैठते हैं। (पण्डित का मिसाल) ऐसे बहुत हैं जो नाम रूप में फँस मरते हैं।

- अभी आत्मा को पंख मिले हैं। आत्मा जो भारी है वह हल्की बन जाती है। देह का भान छूटने से तुम हल्के हो जायेंगे। बाप की याद में तुम कितना भी पैदल करते जायेंगे तो थकावट नहीं होगी। यह भी युक्तियां बतलाते हैं। शरीर का भान छूट जाने से हवा मिसल उड़ते रहेंगे। अच्छा!

- बाप कहते हैं बच्चे अपने को आत्मा समझो और स्वीट होम को याद करो। कर्म तो करना पड़ता है। पुरूषों को धन्धाधोरी, माताओं को घर सम्भालना पड़ता है। तुम भूल जाते हो इसलिए अमृतवेले का टाइम बहुत अच्छा है। उस समय याद करो, सबसे अच्छा समय है अमृतवेले का। जबकि दोनों फ्री हैं। यूँ तो शाम को भी समय मिलता है। परन्तु समझो उस समय कोई थके रहते हैं, अच्छा भल आराम करो। सवेरे उठकर याद करो। हम आत्माओं को बाप आये हैं ले जाने। अभी 84 जन्मों का पार्ट पूरा हुआ। ऐसे ख्यालात करने चाहिए। तुम्हारा सबसे अच्छा कमाई का समय सवेरे है। अभी की कमाई ही सतयुग में काम आती है। अभी तुम बाप से वर्सा पाते हो। वहाँ धन की कोई तकलीफ नहीं, कोई फिकरात नहीं। बाप तुम्हारी इतनी झोली भर देते हैं जो फिर कमाई के लिए फिकर नहीं रहता है। यहाँ मनुष्यों को कमाई की कितनी फिकरात रहती है। बाबा 21 जन्मों के लिए फिकरात से छुड़ा देते हैं। तो सवेरे-सवेरे उठकर ऐसे-ऐसे अपने से बातें करो। हम आत्मायें परमधाम की निवासी हैं, बाप के बच्चे हैं। पहले-पहले हम स्वर्ग में आते हैं। बाप से वर्सा लेते हैं। बाप कहते हैं 5 हजार वर्ष पहले तुम कितने मालामाल थे, भारत स्वर्ग था। अब तो नर्क दु:खधाम है। एक ही बाप सर्व का सद्गति दाता बनता है। एक दो को याद दिलानी चाहिए। सतयुग में सिर्फ भारत था, उसको स्वर्ग जीवनमुक्त कहा जाता है। नर्क को जीवनबंध कहा जाता है। पहले सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राज्य था फिर वैश्य, शूद्र वंशी राज्य हुआ है। आसुरी बुद्धि होने के कारण मनुष्य एक दो को दु:ख देते हैं। हर एक लौकिक बाप भी बच्चों का सर्वेन्ट बनते हैं। विकार में जाकर बच्चे पैदा करते हैं, उन्हों की सम्भाल करते हैं, फिर उन्हों

को नर्क में ढकेल देते हैं। जब वे विषय वैतरणी नदी में गोते खाने लगते हैं तो इसमें बाप खुश होते हैं।

- अभी फिर तुम पुरूषार्थ करते हो, फालो मम्मा बाबा को करना चाहिए। जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना गोरा बनेंगे। पतित से पावन बनने का पुरूषार्थ कितना सहज बाप सिखलाते हैं। बाप को और स्वीट होम को याद करते रहेंगे तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। यह टेव (आदत) डालनी है, सवेरे उठ याद करने की। फिर जब पक्के हो जायेंगे तो चलते फिरते याद रहेगी। हमको तो स्वीट होम और स्वीट राजधानी को ही याद करना है। पहले हम सतोप्रधान बनेंगे, फिर सतो रजो तमो में आयेंगे, इसमें कोई संशय उठ नहीं सकता। मूँझने की बात ही नहीं। पवित्र रहना ही है। देवताओं का भोजन भी कितना पवित्र होता है। तो हमको भी बहुत परहेज में रहना चाहिए। इसमें पूछने की बात भी नहीं रहती। बुद्धि समझती है - एक तो विकार सबसे खराब है। दूसरा-शराब, कबाब नहीं पीना है। बाकी लहसुन प्याज़ आदि की और पतित के भोजन की दिक्कत पड़ती है। बाप समझाते हैं पवित्र भोजन तो कहीं मिलेगा नहीं, सिवाए ब्राह्मणों के। बाप की याद में रहना पड़े। जितना तुम याद में रहेंगे तो पावन बन जायेंगे। बुद्धि से समझना होता है। हम अपने को किस युक्ति से बचाते रहें। बुद्धि से काम लेना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है, इसलिए लौकिक से भी रिश्ता रखना है। उन्हों का भी कल्याण करना है। उन्हों को भी यह बातें सुनानी हैं। बाप कहते हैं पवित्र बनो, नहीं तो सजायें बहुत खायेंगे और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। माला पास विद ऑनर की बनी हुई है। अभी सबके कयामत का समय है, सबके पापों का हिसाब-किताब चुक्तू होना है।

- बाबा ने समझाया है याद से ही विकर्म भस्म होंगे, इसमें ही मेहनत है। ज्ञान तो बड़ा सहज है। सारा ड्रामा और झाड़ बुद्धि में आ जाता है। बाकी स्वीट बाप, स्वीट राजधानी और स्वीट होम

को याद करना है। अभी नाटक पूरा होता है, घर जाना है। पुराना शरीर छोड़ सबको वापिस जाना है। यह पक्का रखना है। ऐसे याद करते-करते शरीर छूट जायेगा और तुम आत्मायें चली जायेंगी। बहुत सहज है। अभी तुम सम्मुख सुनते हो और बच्चे टेप से सुनेंगे। एक दिन टेलीवीज़न पर भी यह ज्ञान सुनेंगे वा देखेंगे जरूर। सब कुछ होगा। पिछाड़ी वालों के लिए तो और ही सहज हो जायेगा। हिम्मते बच्चे मददे बाप। यह भी प्रबन्ध हो जायेगा। सर्विस करने वाले भी अच्छे होंगे। तो बच्चों की उन्नति के लिए यह भी सब प्रबन्ध अच्छा हो जायेगा। वह भी जिसको चाहे ले सकते हैं। एक बाप को ही याद करना है। मुसलमान लोग भी सवेरे-सवेरे फेरी पहनते हैं और सबको जगाते हैं। उठकर अल्लाह को याद करो। यह समय सोने का नहीं है। वास्तव में यह अभी की बात है। अल्लाह को याद करो क्योंकि तुमको बहिश्त की बादशाही मिलती है। बहिश्त को फूलों का बगीचा कहा जाता है। वह तो ऐसे ही गाते हैं। तुम तो प्रैक्टिकल में बाप को याद करने से देवता बन रहे हो। यह सवेरे उठने का अभ्यास अच्छा है। सवेरे का वायुमण्डल बहुत अच्छा होता है। 12 बजे के बाद सवेरा शुरू होता है। प्रभात का टाइम 2-3 बजे को कहा जाता है। सवेरे उठ शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना चाहिए। अच्छा !

यह माया तूफान में ले आती है। ऐसी सजनियां जिनको श्रृंगार कर स्वर्ग की महारानी बनाते हैं, वह भी छोड़ देती हैं। फिर भी बाप कहते हैं जिनसे सगाई की उनको याद करना है। याद कोई फट से ठहरेगी नहीं। आधाकल्प नाम रूप में फँसते आये हो। अब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, बड़ा मुश्किल है। सतयुग में तुम आत्म-अभिमानी बनते हो परन्तु परमात्मा को नहीं जानते हो। परमात्मा को सिर्फ एक ही बार जानना होता है। यहाँ तुम देह-अभिमानी आधाकल्प बन जाते हो। यह भी नहीं समझते हो - आत्माओं को यह शरीर छोड़ दूसरा शरीर ले पार्ट बजाना है फिर रोने की दरकार नहीं। जब बाप द्वारा सुखधाम का वर्सा मिल रहा है तो क्यों न पूरा अटेन्शन दें। अच्छा!

तुम तो बेहद के नाटक को जान गये हो। सतयुग में प्रालब्ध जाकर पायेंगे। फिर यह नाटक भूल जायेगा। फिर समय पर यह ज्ञान मिलेगा। तो यह भी समझने की बातें हैं। कोई भी बात में प्रश्न-उत्तर करने की दरकार नहीं रहती। 7 रोज भट्ठी के लिए कहा जाता है। परन्तु 7 रोज बैठना भी बड़ा मुश्किल है। सुनने से ही घबरा जाते हैं। समझाया जाता है - यह क्यों कहा जाता है? क्योंकि आधाकल्प से तुम रोगी बने हो। 5 विकारों रूपी भूत लगे हुए हैं, अब उनसे तुम पीडित हो। तुमको युक्ति बतलायेंगे कि कैसे इस पीड़ा से छूट सकते हो। बाप को याद करना है, जिससे तुम्हारी पीड़ा हमेशा के लिए खत्म हो जायेगी। बाप का फरमान है कि 7 रोज भट्ठी में बैठना है। गीता भागवत का पाठ रखते हैं तो भी 7 रोज बिठाते हैं। यह भट्ठी है। सब तो नहीं बैठ सकते। कोई कहाँ, कोई कहाँ हैं। आगे चलकर बहुत वृद्धि को पायेंगे। यह सब है रूद्र ज्ञान यज्ञ की शाखायें। जैसे बाप के बहुत नाम रखे हैं, वैसे इस रूद्र ज्ञान यज्ञ के भी बहुत नाम रख दिये हैं। रूद्र कहा जाता है परमपिता परमात्मा को, सो तुम जानते हो। राजस्व अश्वमेध अर्थात् यह रथ इस यज्ञ में स्वाहा करना है।

तुम प्रदर्शनी में भी लिख दो कि हर एक मनुष्य में 5 भूतों की प्रवेशता है। कम से कम 7 रोज भट्ठी में रहें तब यह भूत सब भागें। उन्हों को ज्ञान और योग का धूप चाहिए। उनके सिवाए कभी मुक्ति जीवनमुक्ति पा नहीं सकेंगे। इस ज्ञान और योग का इन्जेक्शन एक ही सर्जन के पास है। अब यह ज्ञान आत्मा को मिल रहा है। आत्मा समझती है कि बाबा हमको समझा रहे हैं और कोई भाषा में ऐसे नहीं कहेंगे कि परमपिता परमात्मा हमको पढ़ा रहे हैं। भगवान खुद भी निराकार तो बच्चे भी निराकार। निराकार इस साकार द्वारा, साकारी बच्चों को ज्ञान दे रहे हैं। यह तुम अच्छी तरह जानते हो। परन्तु चलते-चलते कई बच्चे भूल जाते हैं। भूलने का भी पहला-पहला कारण है देह-अभिमान का भूत। उसको भगाने का अमृतवेले ही पुरूषार्थ करना है। अमृतवेले बाबा की याद अच्छी रहती है। कहते हैं– सिमर-सिमर सुख पाओ। अमृतवेले का ही

कायदा है। भगत लोग भी अमृतवेले ही सिमरण करते हैं। राम सिमर प्रभात मोरे मन... आत्मा बुद्धि को कहती है कि राम सिमरो। भक्तिमार्ग में तो ऐसे ही टोटके बनाते हैं। वह कोई रीयल्टी में नहीं है। समझते नहीं कि काम भी भूत है। तुम लिख सकते हो सबमें 5 भूत हैं। पहला नम्बर है देह-अभिमान। फिर सेकेण्ड नम्बर है काम महाशत्रु। आगे स्कूल में भी पढ़ाते थे कि तुम आत्मा हो यह शरीर 5 तत्वों का बना हुआ है। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है।

मूल बात है निरन्तर शिवबाबा को याद करते रहो। जो बाप की श्रीमत पर पूरी रीति चलते रहते हैं, उनकी याद भी वृद्धि को पाती रहेगी। जितना आज्ञाकारी, वफादार होकर रहेंगे, कहेंगे बाबा मैं आप पर बलिहार जाता हूँ। देह सहित सब कुछ भूल अकेला बनना है। इतना सन्यास करना पड़े। बहुत बच्चे हैं जो बिल्कुल बंधनमुक्त हैं। आते रहते हैं तो भी जैसे मोह के कीड़े। पति वा बच्चों के साथ मोह है तो शिवबाबा के साथ बुद्धियोग लगा न सकें। जब तक सच्ची दिल से साहेब पर बलिहार न जायें। गपोड़े तो भल लगावें परन्तु इसमें बलिहारी पूरी चाहिए। पूरा ट्रस्टी बनना है। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी पड़े।

धारणा नहीं होती तो कहेंगे डलहेड है। ऐसे बहुत सेन्टर्स हैं– जो आपेही क्लास चला सकते हैं। गॉड फादर कहते हैं– तेज बुद्धि स्टूडेन्ट बनो। सर्विसएबुल बच्चों को कितना याद करते हैं, बुलाते हैं। बाप भी ऐसे बच्चों को याद करते हैं। स्कूल में कोई तेज, कोई डल तो होते ही हैं। हैं तो सब बच्चे। परन्तु किन्हों के इतने पाप किये हुए हैं जो पुण्य आत्मा बन नहीं सकते हैं। घड़ी-घड़ी गिर पड़ते हैं। कितनी गुप्त खुशी रहनी चाहिए। अन्धों की लाठी तो सिर्फ बाबा ही है और कोई हो न सके। हे प्रभू अन्धों की लाठी तू ही है। यहाँ हर एक की इन्डीविज्युअल दवाई की जाती है। ज्ञान नैनहीन को अंधा कहा जाता है।

बाप कहते हैं– यह नॉलेज प्राय:लोप हो जाती है। यह जो इतने मन्दिर शास्त्र आदि बनें हैं, सब खत्म हो जाने हैं। भक्ति मार्ग की एक चीज भी नहीं रहती है। अभी बाप कहते हैं सिर्फ मुझ एक बाप को याद करो और सबसे ममत्व मिटाओ। पहले तुम स्वीटहोम जाकर फिर दिन में आयेंगे। तुम हो रूहानी यात्रा के ब्राह्मण, कितना समझने की बातें हैं। जितना बाप को याद करेंगे, पद भी उतना ऊंच पायेंगे। कमाई बहुत है। नहीं करेंगे तो भस्मीभूत हो जायेंगे। कुछ तो मेहनत करनी चाहिए ना। लौकिक बाप को उठते-बैठते चलते-फिरते याद करते हो ना! पारलौकिक बाप को क्यों भूल जाते हो, लज्जा नहीं आती है! लौकिक बाप को कभी भूलते हो क्या? पारलौकिक बाप जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है, उनको भूल जाते हो तो वर्सा भी भूल जायेगा फिर क्या पद पायेंगे। युक्ति से बतलाते रहते हैं। बस बाबा आया कि आया। हमको अब यह शरीर भी नहीं चाहिए। बड़ी मीठी नॉलेज है। देने वाला भी बड़ा मीठा है। आधाकल्प दु:ख में याद करते आये हो। बाबा हमको सभी दु:खों से छुड़ाओ। अब तुमको सभी दु:खों से छुड़ाते हैं। अगर हमारी मत पर चलेंगे तो। मैं तुम्हारा बाप हूँ ना फिर क्यों कहते हो कि बाबा हम भूल जाते हैं। तुम बच्चे हो ना। शान्तिधाम, सुखधाम जायेंगे ना। मुझ बाप को याद नहीं कर सकते हो। मैं तुम्हें डबल सिरताज बनाऊंगा। बच्चे कहते हैं हाँ बाबा याद करेंगे फिर कहते हो भूल गया। वन्डर है ना– इतना स्वर्ग का वर्सा मिलता है, तुम भूल जाते हो? अच्छा!

यह जो ब्रह्मा है– उसमें परमपिता परमात्मा ने प्रवेश किया है। यह कितनी बड़े से बड़ी आसामी हो गई। तुम बच्चों को इतने रूहाब में रहना है कि बाप हमको लेने आया है। कहते हैं मुझे याद करो। उस रिगार्ड से बहुत मुश्किल कोई देखते हैं। भगवान की कितनी महिमा है। वही सर्वशक्तिमान् है। दूसरे कोई की इतनी महिमा है नहीं। इतना रिगार्ड तुम बच्चों को रखना है। संगठन में तुम जब बैठते हो तो याद अच्छी रहती है फिर इधर उधर जाते हो तो वह याद रहना मुश्किल है। घड़ी-घड़ी अपने को देही-अभिमानी समझो तब बाप को याद कर सकेंगे। ऐसे बाप के साथ बड़ा रिगार्ड से चलना पड़े। परन्तु बाबा साधारण होने कारण वह रिगार्ड नहीं रहता।

समझते भी हैं कि बाबा कालों का काल है, यह शिवबाबा जिसको तुम बापदादा कहते हो यह सबको साथ ले जायेगा। बाबा को ऊंचे ते ऊंचा पार्ट मिला हुआ है, जिसको सारी दुनिया याद करती है। तुम बच्चे घड़ी-घड़ी याद करो तो अब हमको शान्तिधाम घर में जाना है। गवर्मेन्ट के सर्वेन्ट 8 घण्टे सर्विस करते हैं, तुमको भी 8 घण्टे तक यह याद की यात्रा बढ़ानी है। अन्त में तुम 8 घण्टा इस सर्विस में रहेंगे तब ही पूरा वर्सा लेंगे। सब तो नहीं कर सकेंगे। भल कोई जोर से पुरूषार्थ करते हो परन्तु फिर थक जाते हैं। मंजिल बड़ी भारी है। तुम बच्चे जानते हो कि बाप को सभी आत्माओं को ले जाना है। कभी-कभी इस ब्रह्मा को भी ख्याल आता है कि बस अब तो सबको वापिस ले जाना है। बाबा के संस्कार इनमें भरते रहते हैं। यह भी पुरुषार्थी है। अब खेल पूरा होता है, सबको वापिस जाना है, अगर यह भी कोई याद करे तो इनको कहा जाता है मनमनाभव। तुम बच्चे अब सम्मुख बैठे हो। सम्मुख सुनने से जैसे छप जाता है। घड़ी-घड़ी याद करते रहो अब वापिस जाना है। तुम्हारा अब मरने का डर निकल गया। मरने से कब हिचकना नहीं है। देही-अभिमानी बनना है। देही-अभिमानी सर्विस अच्छी कर सकेंगे। ज्ञानी तू आत्मा चाहिए। प्रदर्शनी में ध्यानी की सर्विस नहीं, ज्ञानी चाहिए। ज्ञानी तू आत्मा ही प्रिय लगती है। अच्छा!

बच्चों ने गीत का अर्थ तो सुना कि तुम बच्चे अब दिन में जाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। नई दुनिया में तो रोशनी ही रोशनी है। पुरानी दुनिया में अन्धियारा ही अन्धियारा है। यह है ब्रह्मा की घोर अन्धियारी रात। तुम अभी दिन में जा रहे हो। बाप बच्चों को कहते हैं यह बुद्धि का योग लगाते-लगाते थक नहीं जाना। जितना तुम योग लगाते हो उतना सोझरा होता है। आत्मा रूपी दीपक की ज्योत जो उझाई हुई है, वह आती जाती है। उस बिजली में तो फट से करेन्ट आ जाती है। परन्तु आत्मा में कम्पलीट रोशनी आने में टाइम लगता है। अन्त तक फुल आ जायेगी। योग लगाते रहना है, मोटर की बैटरी भी सारी रात भरती रहती है। वैसे यह भी मोटर है। इनसे अब घृत खत्म हो गया है अथवा पावर कम हो गई है। बाबा को तो पावरफुल सर्वशक्तिमान्

कहा जाता है ना। इस बैटरी में सिवाए बुद्धि योगबल के पावर आ नहीं सकती। सर्वशक्तिमान् बाप से ही योग लगाने से सारी बैटरी भरती है। बैटरी भरने के सिवाए नॉलेज भी धारण नहीं हो सकती। घड़ी-घड़ी बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्सा ले लो। मनमनाभव, कितनी सहज बात है। मनुष्य तो राम-राम का जाप करते रहते हैं और चाहते हैं रामराज्य हो। परन्तु ऐसे राम-राम जपने से रामराज्य थोड़ेही होगा। ऐसा राम-राम तो जन्म-जन्मान्तर बहुत करते आये, गंगा के कण्ठे पर बैठकर। यह तो कोई को पता ही नहीं तो रामराज्य किसको कहा जाता है। जरूर राम ही रामराज्य बनायेंगे।

कोई ने प्रश्न पूछा कि शिवबाबा जब यहाँ है तो फिर वहाँ मूलवतन में आत्मायें होंगी? जरूर। यहाँ वृद्धि होती रहती है, तो आत्मायें हैं ना। परन्तु पहली-पहली मूल बात है– बाप और वर्से को याद करना है। इन बातों से तुम्हारा क्या मतलब। तुम्हारे जब ज्ञान चक्षु खुल जायेंगे फिर कोई भी प्रश्न पूछने का रहेगा ही नहीं। बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्से को याद करो। सिर्फ मुक्ति पाने चाहते हो तो मनमनाभव। राजाई चाहते हो तो मध्या जी भव। तुम बच्चे जानते हो कि हमको पढ़ाने वाला कौन है? इस चैतन्य डिब्बी में चैतन्य हीरा बैठा है। वह सत बाबा भी है, परम आत्मा ही शरीर से बोलते हैं। बाबा कहते हैं मैं अभोक्ता हूँ। आत्मा तो वासना की मुरीद होती है। मैं तो मुरीद नहीं हूँ, मेरे साथ योग लगाने से तुम्हारे विकर्म दग्ध होंगे। समझाना है शिव जयन्ती मनाते हैं। शिव तो निराकार है। जैसे आत्मा की भी जयन्ती होती है। आत्मा शरीर में आकर प्रवेश करती है। शिव ही पतित-पावन है, जिसका ही आह्वान करते हैं कि आकर इस रावण के दु:खों से लिबरेट करो। इस समय 5 विकार सर्वव्यापी हैं। आधा-आधा हैं ना। जब रावण राज्य शुरू होता है तब और धर्म आते हैं। सबको अपना-अपना पार्ट बजाने आना है। मैं आता ही यहाँ हूँ। अब तुम बच्चे जानते हो इस चैतन्य डिब्बी में कौड़ी से हीरा बनाने वाला बाप बैठा हुआ है। वही सत-चित-आनंद स्वरूप है, ज्ञान का सागर है। तुम अभी जानते हो, बाप

याद दिलाते हैं तो याद करते हैं फिर भूल जाते हैं क्योंकि वह पोप आदि जो हैं, उनको तो चैतन्य शरीर है। नामीग्रामी है। उनकी कितनी महिमा होती है। यहाँ तो ये डिब्बी में छिपा हुआ हीरा है। कोई जानते ही नहीं कि वह एक ही बार आते हैं। बच्चे तो जानते हैं कि बाबा इनमें बैठा है। यह हमारा सत बाबा, सत टीचर भी है। यह पाठशाला है ना। तुम्हारे में भी कोई भूल जाते हैं। चलन से सब कुछ पता लग जाता है। कोई बच्चे तो थोड़ी परीक्षा लेने से फाँ हो जाते हैं। नहीं तो बच्चों का कहना है जो खिलाओ, चाहे मारो, चाहे प्यार करो। सपूत बच्चे तो आज्ञाकारी होते हैं। बाबा कहते हैं– बच्चे कभी भी रोना नहीं है। तुम्हारा इतना बड़ा बाप और साजन है, उनके बनकर फिर तुम रोते हो! मैं तुम्हारा बड़ा बाप बैठा हूँ। माया नाक से पकड़ती है तो तुम रोते हो। गायन भी है– अतीन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो। परन्तु माया भुला देती है। बाप पर कुर्बान जायें, बलिहार जायें, वह अन्दर याद रहे तो खुशी हो। तुम बच्चे अभी जानते हो बाबा सच्चा-सच्चा इन्द्र है। वो पानी की वर्षा बरसाने वाला इन्द्र नहीं। यह ज्ञान इन्द्र है। इन्द्र-धनुष निकलता है, उसमें रंग तो बहुत होते हैं परन्तु मुख्य 3 होते हैं। बाबा तुमको इस समय त्रिकालदर्शी बनाते हैं। त्रिकालदर्शी अर्थात् आदि मध्य अन्त को जानने वाला अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी। तीनों कालों को जानने वाला।

बच्चे पुकारते ही हैं मुक्ति अथवा जीवनमुक्ति का वर्सा लेने। तो जब यहाँ आते हो तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, हम आत्मा हैं। ऐसे नहीं कि हम परमात्मा हैं, नहीं। हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा के हम सब बच्चे ब्राह्मण ब्राह्मणियां हैं। तुम सब ब्रह्मा के बच्चे और शिवबाबा के पोत्रे ठहरे। सब याद करते हैं परमपिता परमात्मा को। ओ गाड फादर कहते हैं फिर उनको सर्वव्यापी कहेंगे तो वर्सा कहाँ से मिलेगा। भक्ति मार्ग में सब भगवान को याद करते हैं। भगवान है एक। तुम सब भगत हो। ब्राइड्स अनेक, ब्राइडग्रूम अथवा साजन एक है। वह बाप है बाकी सब बच्चे हैं तो और किसको भी याद न करो। बाप का फरमान है बच्चे, तुम्हें इस देह

को भी याद नहीं करना है। अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही कहती है हम दु:खी, भ्रष्टाचारी हैं। यहाँ दैवी राज्य तो नहीं है। 5 हजार वर्ष पहले भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, यथा राजा रानी तथा प्रजा सदा सुखी थे। अकाले मृत्यु नहीं होता था। बहुत थोड़े थे। यह भारतवासी सब भूल गये हैं कि हमारा भारत पहले-पहले हेविन था। कहते भी हैं हेविनली गॉड फादर। हेविन कोई मूलवतन को नहीं कहा जाता। यह याद रखना, हम आत्मा निराकारी दुनिया की रहवासी हैं और कोई देहधारी की याद न आये। देह-अहंकार छोड़ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यह जो कुम्भ का मेला कहते हैं, वह कोई सुहावने संगमयुग का मेला नहीं है। संगम कहा जाता है कलियुग की अन्त और सतयुग की आदि। कलियुग है ही पतित दुनिया। बाप बैठ समझाते हैं कि अब किसको भी याद न करो। हम आत्मा मोस्ट बिलवेड परमपिता परमामा की सन्तान हैं। ऐसे नहीं कि सब परमात्मा के रूप हैं। यह तो इम्पासिबुल है। यही एकज भूल है। बाप एक ही है बाकी सब हैं बच्चे। आत्मायें सब ब्रदर्स हैं। फिर जब शरीर में आते हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहेंगे ना। पहले-पहले हैं ब्राह्मण। भारत में विराट रूप भी दिखाते हैं। ब्राह्मण हैं चोटी, भगवान की ऊंचे ते ऊंची सन्तान। अभी तुम ईश्वरीय औलाद बने हो। शिवबाबा के पौत्रे और पौत्रियां, प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। शिवबाबा के बच्चे तो सभी आत्मायें हैं।

वास्तव में यह स्थूल बाणों की बात नहीं। कन्यायें, मातायें बाणों से क्या जानें। वास्तव में यह हैं ज्ञान बाण और इन्हों को ज्ञान देने वाला बरोबर परमपिता परमात्मा है। कितनी वन्डरफुल बातें हैं। परन्तु बच्चों को एक ही मुख्य बात घड़ी- घड़ी भूल जाती है। सबसे कड़े ते कड़ी भूल होती है जो देह-अभिमान में आकर अपने को आत्मा निश्चय नहीं करते। सच कोई नहीं बतलाते। सच तो कोई आधा घण्टा, घण्टा भी सारे दिन में मुश्किल याद में रह सकते हैं। कोई को समझ में भी नहीं आता कि योग किसको कहा जाता है। मंजिल भी बहुत ऊंची है। अपने को अशरीरी समझना है, जितना हो सके उतना पुरूषार्थ करना है, जो पिछाड़ी के समय कोई भी याद न

पड़े। कोई तत्व ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी अच्छे होते हैं तो गद्दी पर बैठे-बैठे समझते हैं हम तत्व में लीन हो जायेंगे। शरीर का भान नहीं रहता है। फिर जब उनका शरीर छूटता है तो आसपास सन्नाटा हो जाता है। समझते हैं कोई महान आत्मा ने शरीर छोड़ा है। तुम बच्चे याद में रहेंगे तो कितनी शान्ति फैलायेंगे। यह अनुभव उन्हों को होगा जो तुम्हारे कुल के होंगे। बाकी तो मच्छरों सदृश्य मरने वाले हैं। तुम्हारी प्रैक्टिस हो जायेगी अशरीरी होने की। यह प्रैक्टिस तुम यहाँ ही करते हो। वहाँ सतयुग में तो आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। यहाँ तो तुम जानते हो यह शरीर छोड़ बाबा के पास जाना है। परन्तु पिछाड़ी में कोई याद न आये। शरीर ही याद न रहे तो बाकी क्या रहा। मेहनत है इसमें। मेहनत करते-करते पिछाड़ी में पास होकर निकलते हो। पुरूषार्थ वालों का भी पता तो पड़ता है ना, उनका शो निकलता रहेगा। बांधेली गोपिकायें पत्र ऐसे लिखती हैं, जो कभी छुटेली भी नहीं लिखती। उन्हों को फुर्सत ही नहीं। बांधेलियां समझती हैं शिवबाबा ने इन हाथों का लोन लिया है तो शिवबाबा का पत्र आयेगा। ऐसा पत्र तो फिर 5 हजार वर्ष के बाद आयेगा। क्यों नहीं बाबा को पत्र रोज लिखें। नयनों से काजल निकालकर भी लिखें। ऐसे-ऐसे ख्यालात आयेंगे। और लिखती हैं बाबा मैं वही कल्प पहले वाली गोपिका हूँ। हम आपसे मिलेंगे भी जरूर, वर्सा भी जरूर लेंगे। योगबल है तो अपने को बंधन से छुड़ाती रहती हैं। फिर मोह भी किसमें न रहे। चतुराई से समझाना है। अपने को बचाना है, तोड़ निभाने के लिए बड़ी कोशिश करनी है। मातायें समझती हैं हम पति को भी साथ ले चलें। हमारा फर्ज है उन्हों को समझाना। पवित्रता तो बहुत अच्छी है। बाबा खुद कहते हैं काम महाशत्रु है, इनको जीतो। मुझे याद करो तो मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाऊंगा। ऐसी बच्चियां हैं जो पति को समझाकर ले आती हैं। बांधेलियों का भी पार्ट है। अबलाओं पर अत्याचार तो होते ही हैं। यह शास्त्रों में भी गायन है– कामेशु, क्रोधेशु... कोई नई बात नहीं है। तुमको तो 21 जन्मों का वर्सा मिलता है, इसलिए थोड़ा कुछ सहन तो करना ही पड़ता है। अच्छा।

हम जाकर विश्व के मालिक बनेंगे– दूसरे जन्म में। यहाँ जो पढ़ते हैं तो उससे इस जन्म में ही मिलता है। तुमको वह फिर याद आया, हम जाकर दैवी जन्म लेंगे फिर क्षत्रिय जन्म लेंगे। यह बुद्धि में टपकना चाहिए, तब खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। जो अच्छे पुरूषार्थी होंगे उनकी बुद्धि में ऐसी-ऐसी बातें चलती रहेंगी। बाबा ने समझाया है– कर्म तो करना ही है। फिर अपने याद के चार्ट को बढ़ाना है। रात का टाइम अच्छा है इसमें कोई थकावट नहीं होती है। सारा समय उस अवस्था में नहीं रह सकते फिर तूफान आते हैं तो थका भी देते हैं। न चाहते भी तूफान आ जाते हैं। वह थकावट करेंगे। बाकी बाप को याद करते रहेंगे। टापिक आदि निकालते रहेंगे तो उसमें माथा और ही भरपूर हो जायेगा। यह बाबा का अनुभव है। तूफान तो बहुत आयेंगे। जितना रूसतम बनेंगे उतना माया जास्ती पछाड़ेगी। यह एक लॉ है। बाप कहते हैं– माया बड़ी बलवान है क्योंकि उनका राज्य अभी जाना है तो खूब तूफान मचायेगी। उनसे डरना नहीं है।

बाबा पूछते हैं बच्चे, अभी स्वर्ग में चलेंगे? वारी जायेंगे? मैं आया हूँ– अब मुझे याद करो। जितना हो सके देहधारियों की याद कम करते जाओ। हां, तुम कर्मयोगी हो, दिन में भल सब कुछ करो परन्तु साथ-साथ ऐसी याद में रहो, जो अन्त में भी मेरी याद रहे। नहीं तो जिनके साथ लगन होगी वहाँ जन्म लेना पड़ेगा। गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप को याद करने में मेहनत लगती है। बाप कहते हैं रात को जागो। तुम्हारी तबियत खराब नहीं होगी। योग से तो और ही बल मिलेगा। स्वदर्शन चक्रधारी बन चक्र फिराओ। हे नींद को जीतने वाले लाडले बच्चे, जिसका रथ लिया है– उनको कहते हैं। तुम जानते हो राज-राजेश्वर भी यह बनते हैं तो नींद को जीतना है। दिन में तो सर्विस करनी है। बाकी कमाई रात को ही करनी है। भक्त लोग सुबह सवेरे उठते हैं। गुरू लोग उनको कहते हैं माला फेरनी है। धन्धे में तो नहीं फेर सकेंगे। कोई- कोई अन्दर पॉकेट में माला फेरते हैं। तो सवेरे उठ याद करना चाहिए। विचार सागर मंथन करना चाहिए। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। एवरहेल्दी बनना है तो एवर याद करना है तब अन्त मती सो गति हो जायेगी। बहुत भारी पद मिल जायेगा, इसमें धक्के खाने की बात नहीं। चुप रहना है और पढ़ना

है। बाकी जो कुछ पढ़ा है, उसे भूल जाना है। बच्चे अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। आत्मा ही शरीर द्वारा काम कराती है। करनकरावनहार आत्मा है। परमपिता परमात्मा भी आकर इन द्वारा काम करते हैं। आत्मा भी करती और कराती है। यह सब प्वाइंट्स अच्छी रीति धारण करें तब लायक बनें। जो समझकर फिर दूसरों को समझाते हैं– बाबा उन्हें लायक समझते हैं। स्वर्ग में ऊंच पद पाने के वह लायक हैं। जो समझाते ही नहीं, उनको न लायक समझेंगे– ऊंच पद पाने का। बाप तो कहते हैं लायक बनो, राजा-रानी बनने के लिए। उनको ही सपूत बच्चा कहेंगे। यह समझने की बातें हैं और कुछ करना नहीं है। सब बातों से बाबा छुड़ा देते हैं, सिर्फ एक बात याद करनी है। अन्त काल जो स्त्री सिमरे... जो सर्विसएबुल बच्चे होंगे वह बाबा की मुरली से झट कार्टून बनायेंगे। विचार सागर मंथन करेंगे। बच्चों को सर्विस करनी है। बाप की आशीर्वाद, सर्विसएबुल बच्चों पर रहती है। आशीर्वाद भी नम्बरवार होती है। यह बेहद का बाप सभी के प्रति कहते हैं– फालो मदर-फादर। यह तो शिवबाबा से नॉलेज लेते हैं। ब्रह्मा ऊंच पद पाते हैं तुम क्यों नही? अब फालो करेंगे तो कल्प-कल्पान्तर ऊंच पद पायेंगे। अभी फेल हुए तो कल्प कल्पान्तर फेल होंगे। अच्छा!

तुम जानते हो भविष्य में यह बनेंगे। गुरू नानक का एक्यूरेट चित्र जो था वह 5 हजार वर्ष बाद होगा। यह बातें तुम ही जानते हो। ऐसे बाप के साथ योग बड़ा अच्छा चाहिए और अव्यभिचारी योग चाहिए। कोई के नाम रूप से प्रीत लगी तो व्यभिचारी हो गये। शिवबाबा की भक्ति शुरू होती है तो पहले उनको अव्यभिचारी भक्ति कही जाती है। शिव को ही पूजते हैं। अभी फिर एक शिवबाबा की ही याद रहनी चाहिए। बाप कहते हैं ऐसा न हो कि अन्त में तुम्हारा बुद्धियोग व्यभिचारी हो जाए। कहाँ भी नाम रूप में फंसे हुए हो तो बुद्धि को निकालते जाओ। माया ऐसी है जो कब कहाँ, कब कहाँ धक्का खिलायेगी। कभी मित्र-सम्बन्धी याद आयेंगे। फट से योग लग जाए, यह हो नहीं सकता। बाबा कहते हैं अभी तो कोई कम्पलीट नहीं बने हैं। यह बहुत

बड़े ते बड़ी 21 जन्मों की लाटरी है, इसमें पुरूषार्थ बहुत अच्छा चाहिए। माया बड़ी प्रबल है, झट भुला देती है। यह भी ड्रामा में नूंध है इसलिए याद करने का पुरूषार्थ रात में करो। दिन में तो फुर्सत नहीं मिलती है, रात में पारलौकिक साजन को याद करो।

बच्चों ने गीत सुना। जब परमात्मा बाप आकर आत्माओं से मिलते हैं तो जीव-आत्मा को अपना जीवपना भूल जाता है। उसे निश्चय हो जाता है कि हम आत्मा शिवबाबा की सन्तान हैं। हम आत्माओं का बाप इस मुख द्वारा बोल रहे हैं। हम आत्मा इन कानों द्वारा सुन रहीं हैं। ऐसी अपनी आदत डालने की मेहनत करनी होती है। बाप कहते हैं मीठे बच्चे मामेकम् याद करो, अन्त में यही वशीकरण मन्त्र काम में आयेगा। इस याद की यात्रा से तुम अथाह सच्ची कमाई करते हो, जितना याद करेंगे उतना सतोप्रधान बनते जायेंगे और खुशी भी बढ़ती जायेगी, क्योंकि यह है आत्मा और परमात्मा का शुद्ध लव। तुम्हें ईश्वरीय आज्ञा मिली है मीठे बच्चे, अमृतवेले उठ बाप को बहुत प्यार से याद करो। बाबा आप कितने मीठे हो, आप हमें राजाओं का राजा, स्वर्ग का मालिक बनाते हो, हम आपकी श्रीमत पर जरूर चलेंगे। बाबा आपने तो कमाल किया है, 21 जन्मों के लिए स्वर्ग की बादशाही देते हो। हम तो आप पर बलिहार जाऊं। तो बलिहार जाना भी है, सिर्फ कहना नहीं है। जितना समय याद में रहेंगे तो उसका असर सारा दिन रहेगा। बच्चों को देही-अभिमानी बनना है और ईश्वरीय गुण धारण करने हैं। ईश्वरीय गुण धारण करना अर्थात् ईश्वर बाप के समान बनना। ईश्वरीय अधिकार अर्थात् ऊंच पद को पाना है। इस पुरानी दुनिया और पुरानी देह को भूल जाना है, इसमें नष्टोमोहा होना पड़े। मीठे बच्चे, तुम अपनी डिग्री खुद ही देख सकते हो, सारे दिन में हम कितना याद करते हैं! भोजन पर भी देखो हमने बाप की याद में रह हर्षितमुख हो भोजन खाया? माशूक को याद करने से कशिश बढ़ेगी, बहुत खुशी रहेगी और बहुत जमा होता जायेगा। याद में रहते-रहते इस पुरानी खाल को छोड़ जाए नई लेंगे। कांटे से फूल बन जायेंगे। जितना याद का अभ्यास होगा तो फिर

अन्त मती सो गति हो जायेगी। अन्त में शरीर छूटे तो भी बाबा की याद हो। वशीकरण मंत्र याद हो तब प्राण तन से निकलें। याद में रहने से जो भी किचड़ा है वह भस्म हो आत्मा पावन बनती जायेगी। अभी तुम बच्चों को निश्चय है कि हमको पढ़ाने वाला कौन है! इस चैतन्य डिब्बी में चैतन्य हीरा बैठा है, वही सत-चित- आनंद स्वरूप है। सत बाप तुम्हें सच्ची-सच्ची श्रीमत देते हैं। बाप के बने हो तो कदम-कदम श्रीमत पर चलना है। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। एवरहेल्दी बनना है तो एवर याद में रहना है, तब ही अन्त मती सो गति होगी। इसमें धक्के खाने की बात नहीं है। चुप रहना है और पढ़ना है, एक बाप को याद करना है। याद से ही तुम सारे विश्व को शान्ति का दान दे सकते हो। हर एक बच्चे को अपनी प्रजा भी बनानी है, वारिस भी बनाने हैं। मुरली कोई भी मिस नहीं करनी चाहिए। बाप बहुत प्यार से समझाते हैं मीठे बच्चे अपने पर रहम करो, कोई अवज्ञा न करो। देही-अभिमानी बनो। बाप की नजर सदैव उन बच्चों पर रहती है जो खुशबूदार फूल बने हैं। जो आत्म-अभिमानी बन बाप को याद करते और जहाँ सर्विस देखते वहाँ भागते रहते हैं। ऐसे सर्विसएबुल, आज्ञाकारी बच्चे ही बाप को प्यारे लगते हैं। बाप की दिल अन्दर बच्चों को सदा सुखी बनाने के लिए कितनी फर्स्टक्लास आश रहती है कि बच्चे लायक बन स्वर्ग के मालिक बनें। तुम बच्चे जानते हो इस पुरानी दुनिया नर्क में कोई सुख नहीं है। इसमें कोई से दिल लगाना गोया अपना ही नुकसान करना है। कोई भी चीज में आसक्ति नहीं रहनी चाहिए। समझना चाहिए यह पुरानी दुनिया, पुराना शरीर तो खत्म होने वाला है। देही-अभिमानी बच्चे ही इस पुरानी दुनिया और पुरानी देह से उपराम रहते हैं। उन्हों की बुद्धि में रहता हम यहाँ दो घड़ी के मेहमान हैं, यह तो पुरानी जुत्ती है। भल कितना भी इनको साबुन पाउडर आदि लगाओ फिर भी पुराना शरीर है, इसको छोड़ हमें नया लेना है। अभी तुम फकीर हो और भविष्य में फिर तुम अमीर बनते हो। फकीर से अमीर बनने के लिए बातें ही दो हैं– मनमनाभव, मध्याजी भव बस। बाप को याद करते-करते तुम स्वर्ग के अमीर बन जायेंगे। तुम बेहद बाप की गोदी में आये हो– फकीर से अमीर बनने के लिए। तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियों के पास सेन्टर्स पर मनुष्य आते हैं जीयदान लेने। किसको जीयदान देना बहुत बड़ा पुण्य है। यहाँ

आकर खुशनशीब बनते हैं, तो उन्हों के लिए सदैव दरवाजा खुला रहना चाहिए। ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए जहाँ बहुत मनुष्य आकर अपना सौभाग्य बनावें। जीवन हीरे जैसी बनावें। बड़े प्यार से एक-एक को सम्भालना पड़ता है, कहाँ विचारों के पाँव न खिसक जाएं। जितने जास्ती सेन्टर्स होंगे उतने जास्ती आकर जीयदान पायेंगे। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, वह बहुतों को जीयदान देते हैं। उन्हों को बाप भी याद करते हैं। देखता हूँ यह किस प्रकार का फूल है! इनमें क्या-क्या गुण हैं! बाप सब बच्चों की अवस्था को जानते हैं, नम्बरवार तो है ना। किसम-किसम के वैरायटी फूल हैं। जो खुशबूदार फूल हैं वह खींचते हैं। जो जैसा है ऐसी सर्चलाइट लेने की कोशिश करते हैं। खुशबूदार, गुणवान बच्चों को देख प्यार में खुशी में नयन गीले हो जाते है। उन्हें कुछ तकलीफ होती है तो बाप सर्चलाइट देते हैं। तुम बच्चों का बाप के साथ बहुत लव होना चाहिए। बाबा जो कहे बच्चे वह फौरन करके दिखा दें तब समझेंगे इनका बाप के साथ लव है। आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार हैं। बाप कितना प्यार से समझाते हैं। बाप बेहद का व्यापारी है, सौदा बड़ा फर्स्टक्लास है परन्तु इसमें साहस भी चाहिए। कई बच्चे चावल मुट्ठी ले आते हैं परन्तु ऐसा कभी नहीं समझना चाहिए कि हम बाबा को देते हैं। यह तो रिटर्न में सौगुणा लेते हैं। बाबा को थैंक्स देनी चाहिए, कहना चाहिए बाबा आप हमारे दो मुट्ठी चावल लेते हो आपका शुक्रिया जो आप हमें भविष्य में मालामाल कर देते हो, परन्तु इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।

सबके अन्दर 5 भूत प्रवेश हैं, इसलिए कहते हैं रावण सर्वव्यापी है। तुमने अभी भूतों का दान दिया ही नहीं, पुरानी दुनिया के देह सहित सब सम्बन्ध से बुद्धियोग निकाल एक बाप को याद करने में ही बड़ी मेहनत है। यह मेहनत रात को अच्छी रीति हो सकती है। अभी से प्रैक्टिस करेंगे तब याद कर सकेंगे, तो अमृतवेले का असर अच्छा चलेगा। सवेरे जागना पड़े। सवेरेसवेरे उठकर भक्ति मार्ग में माला फेरते हैं। कोई राम-राम जपते हैं, कोई क्या जपते हैं। अनेक मंत्र हैं। काशी

का पण्डित होगा तो कहेगा शिव-शिव कहो... सन्यासी आदि सब लोग भक्त हैं। साधू साधना करते हैं, घरबार छोड़ जंगल में जाते हैं। यह भी साधना है ना। हठयोग मार्ग भी ड्रामा में है। यह तो जानना चाहिए कि स्वर्ग का आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहाँ चला गया! देवताओं की पूजा करते हैं, परन्तु यह नहीं जानते– हम किस धर्म के हैं। हम भी पूजा लक्ष्मी-नारायण की करते थे, धर्म फिर हिन्दू कह देते थे।

- जितना देही-अभिमानी होंगे, अपने को आत्मा अशरीरी समझेंगे, बाबा को याद करेंगे तो धारणा होगी। देह- अभिमानी को धारणा नहीं होगी। योग से ही आत्मा के पाप दग्ध होते हैं। दिन में तो देह-अभिमान रहता है। तो देही- अभिमानी बनने की प्रैक्टिस कब करनी चाहिए? बाप कहते हैं नींद को जीतने वाला बनो। बाप कितनी अच्छी प्वाइंट्स समझाते हैं। परन्तु कई ऐसे भी बच्चे हैं जो मुरली सुनते ही नहीं। पढ़ाई तो मुख्य है। कैसे भी करके मुरली पढ़नी चाहिए। परन्तु ऐसे भी नहीं विकारों में गिरते रहें और मुरली मांगते रहें। जब तक गैरन्टी न करें मुरली नहीं भेजनी चाहिए।

- काम का भी सेमी नशा आता है। बच्चे लिखते हैं बाबा तूफान आते हैं। काम का तूफान कम नहीं है, बहुत प्रकार का नशा माथा गर्म कर देता है। प्यार भी देह का ऐसा होता है, जिसमें बुद्धि जाती है। योग पूरा न रहने से, अवस्था कच्ची होने से फिर उनका नुकसान बहुत होता है। बाबा के पास रिपोर्ट तो बहुत आती है। बड़े कड़े तूफान हैं। लोभ भी बहुत सताता है, जो बेकायदे चलन चलते हैं। जैसे वो सन्यासी लोग होते हैं, तुम भी सन्यासी हो। वह हैं हठयोगी, तुम हो राजयोगी। उनमें भी नम्बरवार होते हैं। कोई तो अपनी कुटिया में रहते हैं, भोजन वहाँ ही उनको पहुंचता है वा मंगा भी लेते हैं। विकारों का सन्यास करते हैं तो पवित्रता मनुष्यों को खींचती है। उनमें भी नम्बरवार होते हैं। इसमें भी ज्ञान-योग बल की ताकत चाहिए। जितना योग में रहेंगे तो

इन सब बातों की परवाह नहीं रहेगी। योग है तन्दरूस्ती की निशानी। भल पुराने विकर्मों की भोगना तो भोगनी पड़ती है फिर भी योग पर आधार रहता है। ऐसे नहीं फलानी चीज चाहिए ... सन्यासी लोग मांगते नहीं हैं। योग का बल रहता है। तत्व योगी में ताकत है। नांगे फकीर जो होते हैं वह तो दवाईयों से काम लेते हैं। वह हुआ आर्टीफिशल। तुम्हारा सारा मदार योग पर है। तुम्हारा योग बाप से है, तो इससे पद भी भारी मिलता है। तुम्हारे देवी-देवता धर्म में बहुत सुख है। उसके लिए तुमको श्रीमत मिलती है। उनको कोई ईश्वरीय मत नहीं मिलती। तुमको ईश्वर आकर मत देते हैं। कितना भारी वर्सा मिलता है, 21 जन्मों के लिए प्राप्ति है। परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते हैं। परन्तु बच्चे बाप को भी भूल जाते हैं। योग पूरा लगाते रहें तो यह लोभ, मोह आदि विकार सतायें नहीं। बहुतों को सताते हैं– यह चाहिए, यह चाहिए। पक्के सन्यासियों में यह नहीं होता है। एक खिड़की से जो मिला वह लिया। जिनका कर्मेन्द्रियों पर पूरा कन्ट्रोल रहता है वह फिर दूसरी चीज कभी नहीं लेंगे। कोई तो ले लेते हैं। यहाँ भी ऐसे हैं। वास्तव में ईश्वर के भण्डारे से जो कुछ कायदेसिर मिले उस पर चलना ठीक है। मनुष्यों को आश बहुत उठती है। आश पूरी न होने से सुस्त बन जाते हैं। यहाँ सबको ईमानदार, वफादार बनना है। सब आशायें मिटा देनी हैं। तुम बच्चों को बहुत श्रेष्ठाचारी बनना है। बाप तो हर रीति से पुरूषार्थ कराते हैं कि बच्चे नाम बाला करें। एक तो योग में रहना है और ज्ञान धारण कर औरों को कराना है। गंगाओं को बहना है, समझाना है सच्चा योग किसको कहा जाता है। भगवान है सबका बाप, कृष्ण तो गॉड फादर है नहीं। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो मैं शान्ति और सुख का वर्सा दूंगा। कितनी सहज बात है। किसको तीर नहीं लगता क्योंकि कुछ न कुछ खामियां हैं। सर्विस तो अथाह है। मनुष्यों को शमशान में फुर्सत रहती है। बच्चे समझदार हों, सर्विस का शौक हो, कोई विकार न हो तो जाकर समझा सकते हैं। तुम्हें समझाना है कि एक बाप को याद करो, जिससे ही फल अर्थात् वर्सा मिल सकता है। सन्यासी, हठयोगी, गुरू आदि क्या देते हैं। जो भी शिक्षा आदि देंगे अल्पकाल सुख की। बाकी तो सब दु:ख ही देते हैं और यह बाप तो सदा सुख का रास्ता बताते हैं। अब बाप कहते हैं– मुझे याद करो। विनाश सामने खड़ा है, मुझे याद करेंगे तो

स्वर्ग का मालिक बनेंगे। पवित्र तो रहना है। निमन्त्रण तो देना होता है। दिन प्रतिदिन प्वाइंट्स सहज कर दी जाती हैं। बड़े-बड़े शहरों में शमशान में बहुत आते हैं। शमशान में सर्विस बहुत हो सकती है। बच्चे कहते हैं हमको फुर्सत नहीं, अच्छा छुट्टी लेकर जाओ। सर्विस में बहुत फायदा है।

तुम जानते हो हमको इस दुनिया को पवित्र बनाना है। योग में रहकर शान्ति और सुख का दान देना है इसलिए बाबा कहते हैं रात्रि को उठकर योग में बैठो तो सृष्टि को दान दो। सवेरे-सवेरे अशरीरी होकर बैठते हो तो तुम भारत को, बल्कि सारी सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो। और फिर चक्र का ज्ञान सिमरण करने से तुम सुख का दान देते हो। सुख होता है धन से। तो सवेरे उठकर याद में बैठो। बाबा बस अब आपके पास आये कि आये। अब हमारे 84 जन्म पूरे हुए हैं। तो सवेरे उठकर बाप को याद कर, शान्ति और सुख का दान देना पड़े। योग और ज्ञान से हेल्थ और वेल्थ मिलेगी।

बाबा से नया कोई मिले तो कुछ समझ न सके क्योंकि यह वन्डर है, बापदादा कम्बाइन्ड है। बच्चों को भी घड़ी-घड़ी भूल जाता है– हम किससे बात करते हैं! बुद्धि में शिवबाबा ही याद आना चाहिए। हम शिवबाबा के पास जाते हैं। तुम इस बाबा को क्यों याद करते हो? शिवबाबा को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। समझो फोटो निकालते हैं तो भी बुद्धि शिवबाबा की तरफ रहे कि यह बापदादा दोनों हैं। शिवबाबा है तब तो यह दादा भी है। बापदादा के साथ फोटो निकालते हैं। शिवबाबा के पास इस दादा द्वारा मिलने आये हैं। यह हो गई पोस्ट ऑफिस। इन द्वारा शिवबाबा के डायरेक्शन लेने हैं। यह बड़ी बन्डरफुल बात है। भगवान को आना है तब जब दुनिया पुरानी होती है। द्वापर से लेकर दुनिया पतित होना शुरू होती है। अन्त में सारी दुनिया पतित हो जाती है। चित्रों पर समझाना है। सतयुग त्रेता को स्वर्ग, पैराडाइज कहा जाता है।

- तुम जानते हो यह है पुरानी दुनिया, इनको फारकती देनी है। अब तुम नई दुनिया के मालिक बन रहे हो। विनाश से पहले पुरानी दुनिया को फारकती देते हो। अगर फारकती नहीं देंगे तो नई दुनिया से योग भी नहीं लगेगा। रावणपुरी में 63 जन्म दुःख भोगते हैं। अब इसको फारकती दे दो। देह सहित जो कुछ भी है इन सभी को फारकती दो फिर तुम अकेली आत्मा बन मेरे पास आ जायेंगे। अच्छा।

- बाप कहते हैं जितना जो श्रीमत पर चलता है। नम्बरवन श्रीमत मिलती है सवेरे उठ सांई भोलानाथ बाबा को याद करो। बाप कहते हैं तुम आत्मा हो ना, शरीर धारण कर पार्ट बजाती हो। ऊपर में तुम आत्मायें रहती हो। अब जानते हो हमारा बाबा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। कल्प-कल्प के संगम पर एक ही बार शिवबाबा आते हैं। कल्प के बाद ही तुमको फिर यह निश्चय करना होता है कि मैं आत्मा हूँ। बाप को याद करना है। जिन्न का मिसाल देते हैं ना– कहता था मुझे काम दो नहीं तो खा जाऊंगा। बाप कहते हैं अगर मुझे याद नहीं करेंगे तो जिन्न रूपी माया खा जायेगी। ऐसे भी नहीं कि तुम सदैव याद करेंगे। अभी पुरुषार्थी हो। यह है सहज राजयोग और ज्ञान। हेल्थ और वेल्थ दोनों मिलती हैं। मनमनाभव, मध्याजी भव। बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्से को याद करो। बस फिर क्यों अपना टाइम वेस्ट करना चाहिए। आधाकल्प भक्ति मार्ग में टाइम वेस्ट गंवाया है। आधाकल्प ब्रह्मा का दिन, आधाकल्प ब्रह्मा की रात। उन्होंने फिर लम्बी चौड़ी आयु दे दी है। कलियुग की इतने हजार वर्ष, सतयुग की इतनी। फिर आधा-आधा हो न सके।

- तुम जानते हो जितना-जितना हम योग में रहते हैं उतना हमारी आत्मा दुःख से छूटती है। अबलाओं पर अत्याचार तो बहुत होते हैं। बहुत मार खाती हैं। अबलायें पुकारती हैं - अब हम

क्या करें। बाप फिर तसल्ली (धीरज) देते हैं। यह तो समझाया है तुम अपने को आत्मा समझो। यह देह हमारी नहीं है। हम मर चुके हैं। बाप के बन चुके हैं और कोई उपाय नहीं है। हम तो शिवबाबा के हैं। जो सच्चे बच्चे होते हैं उनकी अवस्था पक्की रहती है। जरा भी विकार की तरफ ख्याल नहीं जाता है। ऐसे बच्चे पर अगर कोई जबरदस्ती जुलुम करते हैं तो उसका पाप नहीं चढ़ता है। पुकारती हैं बाबा हम तो आपके हैं। शरीर तो जैसे मुर्दा है। ऐसे निश्चयबुद्धि वाले जो हैं वह भी बड़ा ऊंच पद पा लेते हैं। अगर सच्ची दिल है तो। ऐसे सच्ची दिल पर जरूर साहेब राज़ी होगा। यहाँ भी बच्चियाँ इतना याद नहीं करती हैं, जितना जो मार खाती हैं वह याद करती हैं। बाप के पास पुकार आती है, बंधन है। बाबा बंधन से छुड़ाओ। जो छूटे हुए बंधन-मुक्त हैं, वह भी इतना याद नहीं करते हैं जितना बांधेलियाँ याद करती हैं। शिवबाबा की याद से ही बेड़ा पार होता है। कोई कहते हैं बाबा हमको मुरली भी पढ़ने नहीं देते हैं। अरे तुम बाप को याद करती रहो। मुरली में भी रोज़ यही समझाया जाता है। मूल बात है याद का चार्ट रखो। हम बाबा को कितना समय याद करते हैं। यह मेहनत बहुतों से होती नहीं है। घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है, बांधेली बच्चियां तो मार खाते-खाते और ही जास्ती याद करती हैं। बलिहारी उन अबलाओं की है जो मार खाते भी याद करती हैं। बाबा कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करती रहो। जितना जास्ती मारेंगे तुम और ही नष्टोमोहा होती जायेंगी। मार भी अच्छा पद बना लेती है। बाबा को भी ऐसी-ऐसी बच्चियाँ याद पड़ती हैं। हाँ कोई बहुत अच्छे महारथी भी हैं जो बहुतों की सर्विस करते हैं, योगी बनाते हैं। योग की बहुत महिमा है। तुमको तो सब पर तरस खाना है।

बाबा बच्चों की कितनी सम्भाल करते हैं इसलिए तुम्हारा नाम शक्तियां रखा है। तुमसे और सब मनुष्य डरेंगे। काली से कितना डरते हैं। भयंकर रूप दिखाते हैं। यह भी साक्षात्कार हुआ है। कोई चोर सामने आता है तो काली का रूप देख भाग जाता है। कितनी सम्भाल, रक्षा भी करते हैं। किससे? रावण से। तुमको युक्तियां बतलाते रहते हैं। बाप को याद करते रहेंगे तो माया पास

आने का नाम भी नहीं लेगी इसलिए बाप समझाते हैं अपने पास चार्ट जरूर रखो। तुम्हारी भी रेस है। रेस भी जब होती है, तो उन्हों की रेख देख करने वाले भी होते हैं। कहाँ कोई गड़बड़ तो नहीं करते हैं। तुमको तो श्रीमत पर चलना है, इसलिए बाप कहते हैं मुझे याद करो। माया बहुत विकल्प लायेगी। समझेंगे आगे तो कभी ऐसे ख्याल भी नहीं आये। अभी बुढ़ा हो गया हूँ फिर भी ऐसे संकल्प क्यों आते हैं। स्वप्न भी बहुत आते रहेंगे। माया के तूफानों से डरना नहीं है। काम अग्नि से कभी जलना नहीं है। बाप ने समझाया है इस समय सब काम चिता पर बैठ जल मरे हैं।

भक्ति की बड़ी सामग्री है। वेद शास्त्र अथाह हैं। लिस्ट निकालो तो बड़ी लिस्ट हो जायेगी। सारी दुनिया में क्या-क्या कर रहे हैं। कितने मेले मलाखड़े आदि होते हैं। अब बाप कहते हैं बच्चे आधाकल्प भक्ति करते-करते थक गये हो। इस पढ़ाई में तो थकने की बात ही नहीं, इसमें तो और ही खुशी होती है क्योंकि यहाँ है कमाई। कमाई में कभी उबासी वा झुटके नहीं आने चाहिए। धारणा कच्ची है, नॉलेज की वैल्यु का पता नहीं है तो सुस्ती आती है। बाप की याद में बैठने से भी बहुत कमाई होती है। इसमें थकना नहीं है। विवेक कहता है तुमको अथक जरूर बनना है। पुरुषार्थ करते अथक अर्थात् कर्मातीत अवस्था को पाना है। अब जो पुरुषार्थ करेंगे। माला कितनी छोटी है। प्रजा तो बहुत बनती है। बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते हैं। कहते हैं फालो फादर मदर। हमको राजयोग सिखा रहे हैं। शरीर निर्वाह तो सबको करना ही है। परहेज के लिए यह समझाया जाता है। अपवित्र कोई वस्तु नहीं खानी है। बाकी घर में तो रहना ही है। सरेन्डर हो गया ना। बाबा यह सब कुछ आपका है। बाबा का सब कुछ समझकर चलते हैं तो वह जो खाते हैं सो यज्ञ का ही है। हम ट्रस्टी हैं।

देवताओं को ब्राह्मणों का भोजन अच्छा लगता है क्योंकि इस ब्राह्मणों के भोजन से देवता बनते हैं। तो ब्राह्मणों के भोजन का कितना महत्व है। उनका बहुत असर पड़ता है। तुम्हें पक्के

योगियों का भोजन मिले तो बुद्धि बहुत अच्छी हो जाए। सारा दिन शिवबाबा की याद में रहकर कोई स्वदर्शन चक्र फिराते भोजन बनाये, ऐसे योगी चाहिए। पवित्र तो बहुत होते हैं। विधवा माता अथवा कुमारियाँ भी पवित्र होती हैं। परन्तु योगिन भी हो। योगिन का भोजन मिले तो तुम्हारी बहुत उन्नति हो जाए। 5-7 ऐसे चाहिए। आगे चलकर तुम्हारी ऐसी अवस्था हो जायेगी। योग में बहुत मदद मिलेगी। ऐसे बच्चे हों जो योग में रहकर भोजन बनायें। अच्छा!

- बाप कहते हैं देहधारी को याद मत करो। ऊंच ते ऊंच एक बाप को ही याद करना है। कितना बड़ा फरमान है - बच्चे, मामेकम् याद करो। देहधारी को याद किया तो उनकी याद से पुनर्जन्म फिर लेने पड़ेंगे। तुम्हारी याद की यात्रा ठहर जायेगी। विकर्म विनाश नहीं होंगे। बहुत घाटा पड़ जायेगा। धन्धे में फायदा भी होता है, घाटा भी होता है। निराकार बाप को जादूगर, सौदागर भी कहते हैं। तुम जानते हो दिव्य दृष्टि की चाबी बाप के हाथ में है। अच्छा कुछ भी देखा, कृष्ण का दीदार किया, इससे फायदा क्या है? कुछ भी नहीं। यह तो ड्रामा चक्र को जानना पढ़ाई है ना। जितना बाप को याद करेंगे, चक्र को फिरायेंगे तो ऊंच पद पायेंगे।

- पुरुषार्थ कर सतयुग में आना है। जीवनमुक्त बनना है। जीवनबन्ध का त्याग करना है। स्वर्ग को याद करना है। याद कहो या योग कहो, बात एक ही है। योग को ही कहा जाता है कम्यूनियन (मिलाप) तुम्हारा योग है ही एक शिवबाबा से। दूसरे से कम्यूनियन है ही नहीं, सिवाए एक शिवबाबा के। तो उसको ही याद करो। बाबा आप कितने मीठे हो। न मन, न चित था, आपने तो कितनी कमाल की है जो हमको स्वर्ग की बादशाही देते हो। कोई भी हालत में बाप को याद करना है अथवा कम्यूनियन करना है। बाबा को याद करते हैं, बाबा से बोलते हैं। उनके साथ सभी का कम्यूनियन है। जब आफत आती है तब कहते हैं हे भगवान इनकी आयु बड़ी

करो, अर्जी हमारी मर्जी बाबा आपकी। तो यह कम्यूनियन हुआ ना। यह याद की यात्रा होती ही एक बार है जबकि बाप आकर सिखलाते हैं। और सब कम्यूनियन मनुष्य, मनुष्य को सिखलाते हैं। गुरू के पास जायेंगे, कृपा, क्षमा करो, यह आफत मिटाओ। अभी तुम बाबा के पास बैठे हो। बाबा को याद कर कह सकते हो, बाबा इस हालत में हम क्या करें। बाबा समझाते हैं बच्चे यह ड्रामा अनुसार दु:ख सुख होता है। तुम्हारा कम्यूनियन है ही बाप से।

तुम जगे हुए बच्चे बैठे हो फिर औरों को जगाना है। अज्ञान नींद से जगाना है। तुम जागे हो सो भी नम्बरवार क्योंकि घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। जगाने वाला कहते हैं सजनियां भूल न जाओ। यह याद का घृत है। मनुष्य मरते हैं तो दीवे में घृत डालते रहते हैं कि दीवा बुझ न जाये। बाप कहते हैं बच्चे याद करते रहो। यह याद करने के लिए, घृत डालने के लिए सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। सवेरे याद करेंगे तो वह याद बहुत समय कायम रहेगी। तुम्हारा दीवा बुझा हुआ है। अब याद से अपना दीवा जगाते हो। तुम्हारा दीवा जगता रहता है। सतयुग से त्रेता तक जगता रहेगा, इसको दीपमाला कहते हैं। रुद्र माला और दीप माला बात एक ही है। याद तो शिवबाबा को ही करना है ना। तुम असुल में रुद्र माला के मोती तो हो ना अर्थात् निर्वाणधाम में रहने वाले हो। उसे शिवबाबा का धाम, रूद्रधाम भी कह सकते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा के पास हमें जाना है। याद से दीपक जगता जायेगा। यह श्री अर्थात् श्रेष्ठ मत मिलती है। गाया हुआ भी है श्रीमत मिली थी, तो श्रेष्ठ सत्य धर्म की स्थापना हुई थी। अब तुम्हारा बड़ा झुण्ड है। नम्बरवार जितना जागते हैं उतना जगा सकते हैं। दीवे को जगाने के लिए सवेरे उठना पड़ता है। घृत डालना पड़ता है, इसमें कोई तकलीफ नहीं। बाप को याद करना यही घृत डालते रहना है। आत्मा पावन होती रहती है। आत्मा पहले पतित थी अर्थात् आत्मा की ज्योति बुझी हुई थी। अब बाप को याद करने से ज्योत जगेगी और विकर्म विनाश होते रहेंगे अर्थात् पावन बनते रहेंगे। अभी आत्मा पर अज्ञान का परछाया पड़ा हुआ है। बाप ही सबसे बड़ा सर्जन भी है। कोई स्थूल दवाई आदि डालने के लिए नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं मामेकम् याद करो। इस याद में सब दवाईयां आ

जाती हैं। याद से ही तन्दरूस्त बन जाते हैं भविष्य जन्म-जन्मान्तर के लिए। वो योग तो बहुत किसम-किसम के सिखलाते हैं, उससे बहुत पहलवान भी बनते हैं। मेहनत करते हैं।

वह मनुष्य सृष्टि का बीज रूप पतित-पावन है। दुनिया पतित है, उनको पतित से पावन बनाने वाला एक ही बाप है। जरूर संगम पर ही आता होगा। अब आये हैं, कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गीता में अक्षर हैं परन्तु कृष्ण का नाम लिखने से बुद्धि ठहरती नहीं हैं। तुम जानते हो यह ज्ञान है बहुत सहज, परन्तु विघ्न पड़ते रहते हैं। मित्र-सम्बन्धी आदि सब विघ्न डालेंगे। हम इनको इस तरफ खींचते हैं वह फिर उस तरफ खींचते हैं। बड़ी जंजीरें हैं। बाप समझाते हैं यह कैसे हो सकता है। शिवबाबा तो ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। कुछ तो किया होगा ना। स्वर्ग स्थापन करने वाला है। सिर्फ कहता हूँ मेरे को याद करो। कृष्ण तो कह न सके। समझाने के लिए बड़ी मेहनत चाहिए, थकना नहीं है। बहुतों से मेहनत पहुँचती नहीं है। बहाने बहुत लगाते हैं। बाबा कोई तकलीफ नहीं देते हैं। भल बच्चों को सम्भालो, भोजन बनाओ। सिर्फ शिवबाबा की याद में रहो। अच्छा दिन में टाइम नहीं मिलता है, अमृतवेले तो याद करो। कहते हैं राम सिमर प्रभात मोरे मन। आत्मा कहती है प्रभात में अपने बाप को याद करो। बाबा भी यही कहते हैं नींद भी टाइम पर करनी चाहिए। पूरा चार्ट रखना है। सवेरे उठ सकते हो। इस पर एक कहावत भी सिंधी में है - सवेरे सोना, सवेरे उठना... अभी तुम अक्लमंद बनते हो। सारा चक्र बुद्धि में है। तुम्हें कोई भी दु:ख नहीं मिल सकता। कितना तुम शाहों के शाह बन जाते हो। पैसे की कभी कोई तकलीफ नहीं होती और हेल्दी भी बनते हो। यह सब गुण अभी तुम शिवबाबा से पाते हो। बरोबर तुम हेल्दी वेल्दी और हैपी बनते हो। यह भी तुम जानते हो होली, दीपावली आदि यह सब अभी की बातें हैं, जो याद गार में आ जाती हैं। तो सवेरे उठकर बाप को याद करना बड़ा अच्छा है। याद को बढ़ाते रहो।

तुम किसको भी समझा सकते हो कि अल्लाह को याद करो, अल्लाह के घर जाने के लिए। वहाँ से ही तुम आये हो। अब बाप को याद करो। नन वट वन। नन्स को ही समझाना पड़े। तुमको याद करना है - गॉड को। क्राइस्ट ने भी उनको याद किया है। समझो ब्रह्मा चला जाता है तो भी तुमको याद तो शिवबाबा को करना है। शरीर तो छूटेगा ही। तुमको याद उनको करना है। शिवबाबा कहते हैं सिर्फ मुझे ही याद करो। किसी देहधारी को याद नहीं करना है। देही-अभिमानी बनना है। देहधारी तो सब मरे पड़े हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। दुनिया में तो एक दो को दु:खी करते रहते हैं। यहाँ हम एक बात कान में सुनाते हैं। है बहुत इजी। अल्फ और बे, बाप और बादशाही को याद करो। मनमनाभव का अर्थ ही यह है। बाकी तो सब है डिटेल। बाप कल्याणकारी है। बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है। बच्चों को भी सबूत देना है। आज हमने कितनों का कल्याण किया। कल्याण करने लिए घूमना पड़ता है। धर्म स्थापना अर्थ भी धक्का खाना पड़ता है। हम ऐसी यात्रा सिखलाते हैं जो कब दूसरी यात्रा करनी न पड़े, मनमनाभव। यात्रियों के पिछाड़ी लग जाना चाहिए। बड़ी शुरुड बुद्धि चाहिए। अच्छा।

पाठशाला में जो अच्छे स्टूडेन्ट होते हैं वह बहुत अच्छी रीति पढ़ते हैं। इम्तहान के दिनों में खास एकान्त में जाकर पढ़ते हैं कि कहाँ नापास न हो जाएं। नापास होने वाले धक्के खाते रहेंगे। बाप कहते हैं जितना हो सके एक बाप की याद में रहो। सजनी की साजन से सगाई हुई और बस छाप लगी। अच्छा-आज शादी की, कल पति मर गया। सारी आयु उसको याद करती रहेगी। अब वह तो पतित बनाने वाले हैं, बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तो ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए। माया तुम्हारा योग तोड़ने की बहुत कोशिश करेगी, परन्तु तुमको बहादुर रहना है। संकल्प बहुत तूफान लायेंगे। जो अज्ञान काल में भी नहीं आते थे, जैसे वैद्य लोग कहते हैं - इनसे डरना नहीं है। ऐसे नहीं डरकर जाए दूसरी दवाई करो। नहीं। बाबा भी कहते हैं - डरना नहीं है। मन्सा के तूफान बहुत आयेंगे लेकिन कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना। एक दो को ज्ञान सुनाकर कल्याण करना। बाबा बहुत समझाते हैं कि तुम अपनी मस्ती

में मस्त रहो। घर में गीता पाठशाला खोलो। चैरिटी बिगन्स एट होम। बच्चों को भी स्वर्ग का मालिक बनाओ। बाप स्त्री को, बच्चों को रचते हैं सुख के लिए। तुम भी जानते हो हम भविष्य के लिए कमाई करते हैं। तो क्यों नहीं स्त्री बच्चों आदि को भी करायें। उनको घड़ी-घड़ी बोलो धन्धा धोरी भल करो, सिर्फ बाप को याद करते रहो। यह प्रैक्टिस ऐसी पड़ जाए जो पिछाड़ी में विनाश के समय एक बाबा की ही याद रहे।

- मनुष्य तो चित्र देख याद करते हैं। बाबा तो कहते हैं चित्रों को देखना अब बंद करो। यह है भक्ति मार्ग। संगमयुग में तुम पारसबुद्धि बनते हो। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो, बुद्धियोग ऊपर में लटकाओ। जहाँ जाना है उनको ही याद करना है। एक बाप, दूसरा न कोई। वही सच्चा पातशाह है, सच सुनाने वाला। तो कोई भी चित्र का सिमरण नहीं करना है। यह जो शिव का चित्र है उनका भी ध्यान नहीं करना है, क्योंकि शिव तो ऐसा है नहीं। जैसे हम आत्मा भृकुटी के बीच में रहती है वैसे बाबा भी कहते हैं मैं थोड़ी जगह लेकर इस आत्मा के बाजू में बैठ जाता हूँ। रथी बन इनको बैठ ज्ञान देता हूँ। इनकी आत्मा में भी ज्ञान नहीं था। जैसे इनकी आत्मा रथी बोलती है शरीर द्वारा, वैसे मैं भी इन आरगन्स से बोलता हूँ।

- तुम वर्से को घड़ी-घड़ी याद करते हो ना। अब 84 के चक्र को याद करो। इस चक्र को याद करना माना सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को याद करना। जितना स्वदर्शन चक्र फिरता रहेगा, उतना समझो वह यात्रा पर तीखा जा रहा है। तुम जानते हो कि अब कांटों की दुनिया है। बाप कोई कष्ट नहीं देते। भल एरोप्लेन में जाओ, मोटरों में घूमों, फिरो। परन्तु खान-पान की जितना हो सके परहेज रखना है। भोजन पर दृष्टि देकर फिर खाना है, लेकिन बच्चे यह भूल जाते हैं। इसमें तो बाप को वा साजन को खुशी से याद करना है। साजन हम आपकी याद में आपके साथ भोजन खाते हैं। आपको अपना शरीर तो है नहीं। हम आपको याद कर खायेंगे और आप

भासना लेते रहना। ऐसे याद करते-करते आदत पड़ जायेगी और खुशी का पारा चढ़ता रहेगा। ज्ञान की धारणा भी होती जायेगी। कुछ खामी है तो धारणा भी कम होगी। उनका तीर जोर से नहीं लगेगा। बाप से योग माना देखते हुए भी यह समझना कि यह अच्छे-अच्छे महल भी मिट्टी में मिल जायेंगे। यह हमारी राजधानी में नहीं थे। अब तो हमारी राजधानी स्थापना हो रही है, उसमें यह कुछ नहीं होगा। नई दुनिया होगी। यह पुराने झाड़ आदि कुछ भी नहीं होंगे। वहाँ सब फर्स्टक्लास चीजें होंगी, इतने जानवर आदि यह सब खलास हो जायेंगे। वहाँ बीमारियां आदि भी कुछ नहीं होंगी।

जो नॉलेज बाप की बुद्धि में है वह तुम्हारे में भी रहनी चाहिए। मैं तुम आत्माओं को आप समान बनाता हूँ। जो सृष्टि चक्र की नॉलेज मेरे में है, वह तुम्हारी बुद्धि में भी है। बुद्धिवान चाहिए। बाबा के साथ योग भी हो और घड़ी-घड़ी विचार सागर मंथन होता रहे। तुम अब सम्मुख बैठे हो। समझते हो बाबा तो बिल्कुल सहज समझाते हैं। कहते भी हैं आत्मा परमात्मा... सतगुरू दलाल के रूप में पढ़ाते हैं। दलाल अथवा सौदा कराने वाले। बाप इन द्वारा आकर अपने साथ सौदा कराते हैं। तुम जानते हो दलाल को याद नहीं करना है। दलाल द्वारा हमारी सगाई होती है शिवबाबा से। तुम सब बीच वाले दलाल हो। कहते हैं परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? तुम सगाई कराने की युक्ति रचते हो। फिर प्रजापिता का नाम भी देते हो।

यह अनादि बना बनाया खेल है। उसमें फिर सतयुग होगा। भारत में ही होना है क्योंकि भारत ही अविनाशी खण्ड है। इसका विनाश नहीं होता है। यह भी समझाना पड़ता है। बाप का जन्म भी यहाँ होता है, उनका है दिव्य जन्म जो मनुष्यों सदृश्य नहीं है। बाप आये हैं निकालने। अभी तुम सिर्फ बाप और घर को याद करो। फिर तुम राजधानी में आ जायेगे। यह तो आसुरी राजस्थान है, बाप ले जाते हैं दैवी राजस्थान में। और कोई तकलीफ नहीं देते सिर्फ बाप और

वर्से को याद करना है। यह है अजपाजाप... मुख से कुछ भी कहना नहीं है। सूक्ष्म में भी कुछ कहना नहीं है। साइलेन्स में बाप को याद करना है, घर बैठे। बांधेलियां भी घर बैठे सुनती हैं। छुट्टी नहीं मिलती है। हाँ घर बैठे सिर्फ पवित्र रहने की कोशिश करो। बोलो, हमको स्वप्न में डायरेक्शन मिलते हैं पवित्र बनो। अभी मौत सामने खड़ा है। तुम अभी वानप्रस्थ अवस्था में हो। वानप्रस्थ में कभी विकार का ख्याल थोड़ेही होता है। अभी बाप सारी दुनिया के लिए कहते हैं, सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। सभी को वापस जाना है तो घर को याद करना है। फिर आना भी भारत में है। मुख तो घर की तरफ ही होगा ना। बच्चों को और कोई तकलीफ नहीं दी जाती है, बड़ा सहज है। घर में बैठ भल भोजन बनाओ, शिवबाबा की याद में। घर में भोजन बनाते हो तो पति याद रहता है ना। बाप कहते हैं यह तो पतियों का पति है। उनको याद करो जिससे 21 जन्मों के लिए वर्सा मिलता है। अच्छा कोई को छुट्टी नहीं मिलती है। वहाँ भी रह बाप और वर्से को याद करो। अपना तो तुम छुटकारा कर लो। बाप से पूरा वर्सा ले सकते हो। धीरे-धीरे तो छुटकारा मिलना ही है। हाँ रूद्र ज्ञान यज्ञ में विघ्न भी जरूर पड़ने हैं। आखरीन जब तुम्हारा प्रभाव निकलेगा तो तुम्हारे चरणों में माथा टेकते रहेंगे। विघ्न तो पड़ते ही रहेंगे। इसमें धैर्य धरना है, उतावला नहीं होना है। घर बैठे पति आदि म्ाित्र सम्बन्धियों को एक ही बात समझाओ कि बाप का फरमान है मुझे याद करो, वर्सा लो। कृष्ण तो हो नहीं सकता। बाप को ही याद करना है। बाप का ही परिचय देना है, जो सब जान जाएं कि हमारा बाबा शिवबाबा है। वह भी अभी याद अच्छी रह सकती है। थोड़े समय के लिए यह बन्धन मारपीट आदि है। आगे चल यह सब बन्द हो जायेंगे। कोई-कोई बीमारी होती है जो झट छूट जाती है। कोई वर्ष दो तक भी चलती है। इसमें भी उपाय यही है, बाबा को याद करते-करते बन्धन छूट जायेंगे इसलिए हर बात में धीरज चाहिए। बाप कहते हैं जितना तुम याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। बुद्धि टूटती जायेगी। यह विकर्मों के भी बन्धन हैं। विकार को ही नम्बरवन विकर्म कहा जाता है। अभी तुम विकर्माजीत बनते हो। विकर्माजीत याद से ही बना जाता है। सभी खाते खलास हो जायेंगे, फिर सुख का खाता शुरू होगा। व्यापारियों के लिए तो बहुत सहज है। समझते हैं कि पुराना

खाता खलास कर फिर नया शुरू करना है। याद करते रहेंगे तो जमा होता जायेगा। याद नहीं करेंगे तो जमा कैसे होगा? यह भी व्यापार है ना। बाप तो कोई तकलीफ नहीं देते हैं। धक्का आदि कुछ भी खाने का नहीं है। वो तो जन्म-जन्मान्तर खाते ही आये हैं। अभी सत्य बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। गॉड ही सत्य बतलाते हैं। बाकी तो सब है झूठ। कान्ट्रास्ट देखो– बाबा क्या समझाते हैं और मनुष्य क्या समझाते हैं। यह है ड्रामा। फिर भी ऐसे ही होगा।

- बच्चा बना माना वर्से का हकदार बना, परन्तु फिर वहाँ भी नम्बरवार मर्तबे तो हैं ना। ऊंच मर्तबा पाने के लिए पढ़ाई में पुरूषार्थ करना होता है। ऐसे नहीं फट से कर्मातीत अवस्था हो जायेगी। फिर तो शरीर भी छोड़ना पड़े। ऐसा लॉ नहीं है। माया से तो अच्छी रीति युद्ध करनी है। तुमको मालूम है, युद्ध 8-10-15 वर्ष भी चलती रहती है। तुम्हारी युद्ध तो माया से है। जब तक बाप है तुम्हारी युद्ध चलती ही रहती है। पिछाड़ी में रिजल्ट निकलेगी– किसने कितना माया को जीता! कितना कर्मातीत अवस्था को पहुँचे! बाप कहते हैं– जितना हो सके अपने घर को याद करो। वह है शान्तिधाम। वाणी से परे स्थान वह है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में खुशी है।

- स्वच्छता (पवित्रता) क्या है, वह बैठ करके स्पष्ट समझाते हैं कि तुम मेरी याद के बिना पवित्र बन ही नहीं सकते हो। भले तुम कोई देवता को याद करो। किसी के भी योग से तुम पवित्र नहीं बनोंगे। पापों को दग्ध करने का बल मेरे पास है इसलिए बाप कहते हैं जब तक मेरे से कनेक्शन नहीं है तब तक पावन नहीं बन सकते। जैसे बत्तियों का कनेक्शन मेन पॉवर हाउस से है ना। अगर वहाँ से कनेक्शन न हो तो बत्ती में लाइट नही होगी। वह बल नहीं आयेगा। इसी तरह से तुम्हारा कनेक्शन मेरे से हो, मैं हूँ मेन पॉवर हाउस तो उससे कनेक्शन चाहिए ना। अगर उससे कनेक्शन नहीं होगा तो तुमको ताकत नहीं मिलेगी और ताकत नहीं मिलेगी तो पाप दग्ध नहीं होंगे। पाप दग्ध नहीं होंगे तो तुम आगे नहीं बढ़ सकेंगे, तब कहते हैं एक मेरे से योग लगाओ। मेरे बिना तुम्हारी गति सद्गति नहीं हो सकती। अच्छा!

तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। हिसाब-किताब यहाँ से चुक्तू होता है। कर्म का भोग भोगकर छूटना है और बाप की याद में रहना है। वास्तव में बच्चों को याद करना एक बाप को ही है। देहधारी को याद किया तो वह टाइम वेस्ट हो जायेगा। ऐसा तो हो नहीं सकता कि कोई निरन्तर याद करे। ऐसी कोई चीज नहीं जिसे निरन्तर याद किया जाए। स्त्री पति को भी निरन्तर याद कर न सके। जरूर खाना बनायेगी, बच्चों की सम्भाल करेगी तो पति थोड़ेही याद आयेगा। यहाँ तो तुमको निरन्तर याद करने का अभ्यास करना है। ताकि पिछाड़ी में ऐसी अवस्था हो कि एक की ही याद रहे, बड़ा भारी इम्तहान है। 8 रत्नों की भी बड़ी महिमा है। किसको गृहचारी बैठती है तो 8 रत्नों की अंगूठी पहनते हैं। पिछाड़ी के समय एक बाप की ही याद रहे, वह भी बुद्धि की लाइन एकदम क्लीयर हो और किसकी भी याद न आये– तब माला का दाना बन सकेंगे। 9 रत्नों की महिमा बहुत भारी है। तो अब निरन्तर याद करने का अभ्यास करना है। अभी तो दो तीन घण्टा कोई मुश्किल याद करते हैं। जितना दुनिया में हंगामें बढ़ते जायेंगे उतना तुमको निश्चय होता जायेगा, पुरानी दुनिया से दिल टूटता जायेगा। मरेंगे तो बहुत, बुद्धि भी कहती है माया बहुत पुराना दुश्मन है। ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ दुश्मन न हों। तुम बच्चे अभी मलेच्छ से स्वच्छ बन रहे हो। तुमको ज्ञान है– मलेच्छ के हाथ का हम खा नहीं सकते। गाया हुआ भी है जैसा अन्न वैसा मन। जो खराब चीज खरीद करता है, जो बनाता है, जो खाता है– उन सबके ऊपर पाप पड़ जाता है। बाप तो सब बातें अच्छी रीति समझाते हैं। तुम बच्चे यहाँ से रिफ्रेश होकर जाते हो। सारा दिन बुद्धि में सृष्टि चक्र फिरता रहे और अपना घर याद रहे। यहाँ से तुम अपने लौकिक घर में जाते हो तो अवस्था में फर्क पड़ जाता है क्योंकि संग ऐसा हो जाता है। यहाँ बैठे भी कोई-कोई का बुद्धियोग बाहर चला जाता है, इसलिए पूरी धारणा नहीं कर सकते हैं।

तुम निश्चय करते हो हम बाबा के बच्चे हैं, ऐसे तो नहीं मैं चतुर्भुज हूँ, यह कहने से बन जायेंगे। बनाने वाला जरूर चाहिए। यह है नर से नारायण बनाने की नॉलेज, जो अच्छी रीति धारण कर और करायेंगे वही ऊंच पद पायेंगे। स्टूडेन्ट्स ऐसे कह न सकें कि हमको फुर्सत नहीं है पढ़ने की। फिर तो जाकर घर बैठो। पढ़ाई बिगर वर्सा मिल न सके। गॉड फादरली स्टूडेन्टस फिर कहते हैं– फुर्सत नहीं। बाप का बनकर फिर फारकती दे देते हैं तो बाप कहेंगे तुम तो महान मूर्ख हो। एक घड़ी आधी घड़ी.... तुमको फुर्सत नहीं है, अच्छा सुबह को सवेरे बैठ बाबा को याद करो। कोई आपदा सिर पर नहीं डालते हैं। सिर्फ सवेरे उठ बाप को याद करो और स्वदर्शन चक्र फिराओ। औरों का नहीं तो अपना कल्याण करो। रहमदिल बन जितना औरों का कल्याण करेंगे तो ऊंच पद पायेंगे। बड़ी जबरदस्त कमाई है। जिसके पास बहुत धन है वह कहते हैं फुर्सत नहीं। साहूकारों को वहाँ गरीब बनना है और गरीबों को साहूकार बनना है। सबसे जास्ती मातायें रोती हैं, उनको हँसाने वाला बनना है। निरन्तर याद की यात्रा पर रहना है। मधुबन में शान्ति है तो बहुत कमाई कर सकते हो। अच्छा!

अभी तो सारी दुनिया का त्याग करना है। देह सहित सब कुछ त्याग। वैराग्य आता है तो त्याग हो जाता है। बाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को हथेली पर बहिश्त देने आया हूँ। तुम जानते हो बाबा हमारा है, तो जरूर उनको याद करना पड़े। जैसे कन्या की सगाई होती या लगन जुटती है तो कभी नहीं कहेगी कि हम पति को याद नहीं करती, क्योंकि वह लाईफ का मेल हो जाता है। वैसे ही बाप और बच्चों का मेल होता है। परन्तु माया भुला देती है। बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्से को याद करो। इसमें मुक्ति जीवन-मुक्ति आ जाती है। फिर तुमसे यह भूल क्यों जाता है! इसमें है बुद्धि का काम, जबान से भी कुछ बोलना नहीं होता है और निश्चय करना है। हम जानते हैं, पवित्र रह पवित्र दुनिया का वर्सा लेंगे। इसमें समझने की बात है, बोलने की बात नहीं। हम बाबा के बने हैं। शिवबाबा पतितों को पावन बनाने वाला है। कहते हैं मुझे याद करते रहो। इसका अर्थ ही है मनमनाभव। उन्होंने फिर कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। पतित-पावन

तो एक ही है। सर्व का सद्गति दाता एक, एक को ही याद करना है। कहते हैं मुझ एक बाप को भूलने के कारण कितनों को याद करते रहते हो। अभी तुम मुझे याद करो तो विकर्माजीत राजा बन जायेंगे।

- बाबा घड़ी-घड़ी कहते रहते हैं तुम ऐसे समझो तो हमको अब अपने स्वीट होम में जाना है इसलिए बाप और घर याद पड़ता है। भक्ति मार्ग में भी आधाकल्प याद किया है। परन्तु वापिस कोई जा नहीं सकते। जानते ही नहीं तो जा कैसे सकेंगे। वह रूहानी राही बन कैसे सकते! तुम अब पूरे राही बने हो। जो जास्ती याद करते हैं उनके पाप कटते जाते हैं। यात्रा का भी ध्यान रखना है। पिछाड़ी में 8 घण्टा तुम्हारी यह सर्विस रहे तो भी बहुत अच्छा है। यह है शान्ति और पवित्रता के वायब्रेशन फैलाना। याद से विकर्म भी विनाश होंगे और पद भी ऊंचा मिलेगा इसलिए कहा जाता है– रात के राही थक मत जाना। कलियुग का अन्त माना ब्रह्मा की रात पूरी होना। सबको वापिस जरूर जाना है। रूहानी घर को याद करना है। रूह को अब जाना है। जिस्म का भान छोड़ना है, देही-अभिमानी बनना है। यह है याद की यात्रा।

- बाप आते ही हैं सबको गुल-गुल बनाकर ले जाने। प्योर तो सभी बनेंगे। पापों का बोझा सिर पर है तो हिसाब-किताब अन्त में चुक्तू कर जाना है, इसके लिए तुम याद में रहने की इतनी मेहनत करते हो, जो नहीं करते वह ऐसे ही थोड़ेही मुक्ति में जायेंगे। कयामत के समय खूब सजा खाकर फिर मुक्तिधाम में चले जायेंगे। आत्मा का तो स्वधर्म है साइलेन्स। हम अशरीरी हो बैठते हैं। इन कर्मेन्द्रियों से काम नहीं लेते हैं, चुप हो बैठ जाते हैं। परन्तु कब तक? आखरीन कर्म तो करना है ना। साधू सन्त आदि कोई को भी यह पता नहीं है कि आत्मा का स्वधर्म ही साइलेन्स है। सन्यासी लोग शान्ति को ढूँढने जाते हैं। बाबा कहते हैं शान्ति तो तुम्हारे गले का हार है। फिर हम जंगल में क्यों जायें! हम कर्मयोगी हैं। बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।

फिर स्वर्ग को याद करो, 63 जन्म भक्ति की घमसान ने हैरान कर दिया, अभी तुमको सब हंगामों से छुड़ा दिया है।

- कहते हैं सिमर-सिमर सुख पाओ अर्थात् एक को ही सिमरणा चाहिए फिर यह लोग सबको क्यों सिमरते हैं। बाप कहते हैं सबको नहीं सिमरो, सिर्फ मुझ एक को ही सिमरो। मुझ बाप को खूब याद करो, मुझे याद करते-करते तुम मेरे पास पहुँच जायेंगे। मैं डायरेक्शन देता हूँ तो गृहस्थ व्यवहार में रहकर सिर्फ मुझ बाप को याद करो। कितना सहज उपाय है। कहते हैं सिमर-सिमर सुख पाओ अर्थात् जीवनमुक्ति पद पाओ। कल-क्लेष सब तन से मिट जायेंगे। वहाँ तुम्हारे शरीर को कोई रोग नहीं रहता। अब बाप तुम बच्चों को सम्मुख सुना रहे हैं, तुम सुनकर औरों को सुनाते हो। सबसे अच्छा यह टेप रिकार्ड सुनाता है। जरा भी मिस नहीं करेंगे। बाकी एक्सप्रेशन्स (हाव-भाव) को तो नहीं देख सकेंगे। बुद्धि से समझेंगे कि बाबा ऐसे ऐसे समझाते होंगे। यह टेप मशीन तो खजाने की खान है। मनुष्य तो शास्त्रों का दान करते हैं। गीता छपाकर दान करते हैं। यह टेप कितनी वन्डरफुल चीज़ है।

- बाबा चढ़ती कला में ले जाते हैं। परन्तु किसकी बुद्धि में यह ज्ञान ठहरता नहीं है क्योंकि बुद्धि योग मेरे साथ नहीं है इसलिए गोल्डन एजड बर्तन बनता ही नहीं।

- सम्मुख सुनने और मुरली पढ़ने में रात दिन का फर्क है। आत्मा को अब पहचान मिली है, उसको ज्ञान के चक्षु कहा जाता है। कितनी विशाल बुद्धि चाहिए। छोटी स्टार मिसल आत्मा में कितना पार्ट भरा हुआ है। अब बाबा के पिछाड़ी हम भी भागेंगे। शरीर तो सबके खत्म होने हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को फिर रिपीट होना है। घरबार को छोड़ना नहीं है। सिर्फ ममत्व मिटाना है और पवित्र बनना है। किसको भी दु:ख नहीं दो। पहले ज्ञान का मंथन करो फिर

सबको प्रेम से ज्ञान सुनाओ। शिवबाबा तो विचार सागर मंथन नहीं करते। यह करते हैं बच्चों के लिए। फिर भी ऐसे समझो कि शिवबाबा समझाते हैं। इनको यह नहीं रहता है कि मैं सुनाता हूँ। शिवबाबा सुनाते हैं। इसे निरहंकारीपना कहा जाता है। याद एक शिवबाबा को करना है। बाप जो विचार सागर मंथन करते हैं, वह सुनाते हैं। अभी बच्चे भी फालो करें। जितना हो सके अपने साथ बातें करते रहो, रात्रि को जागकर भी ख्याल करना चाहिए। सोये हुए नहीं, उठकर बैठना चाहिए। हम आत्मा कितनी छोटी बिन्दी हैं। बाबा ने कितना ज्ञान समझाया है - कमाल है सुख देने वाले बाप की! बाप कहते हैं नींद को जीतने वाले बच्चे और सभी देह सहित देह के मित्र-सम्बन्धियों आदि को भूलना है। यह सब कुछ खत्म होना है। हमको बाबा से ही वर्सा लेना है और सबसे ममत्व मिटाकर गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है। शरीर छूटे तो कोई भी आसक्ति न रहे। अब सच्चा-सच्चा काशी कलवट भी खाना है। खुद काशीनाथ शिवबाबा कहते हैं हम, तुम सबको लेने आये हैं। काशी कलवट अब खाना ही पड़ेगा। नेचुरल कैलेमिटीज़ भी अभी आने वाली हैं। उस समय तुमको भी याद में रहना है। वह भी याद में रह कुएं में कूदते थे। परन्तु कुएं में कूदने से कुछ होता नहीं है। यहाँ तो तुमको ऐसा बनना है जो सज़ा न खानी पड़े। नहीं तो इतना पद पा नहीं सकेंगे। बाबा की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। साथ-साथ यह ज्ञान है कि हम फिर 84 का चक्र लगायेंगे। इस नॉलेज को धारण करने से हम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। कोई भी विकर्म नहीं करना है। कुछ भी पूछना हो तो बाबा से राय पूछ सकते हो। सर्जन तो मैं एक ही हूँ ना। चाहे सम्मुख पूछो, चाहे चिट्ठी में पूछो, बाबा रास्ता बतायेंगे। बाबा कितना छोटा स्टॉर है और महिमा कितनी भारी है। कर्तव्य किया है तब ही तो महिमा गाते हैं। ईश्वर ही सबके सद्गति दाता हैं, इनको भी ज्ञान देने वाला वह परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है।

इस मटेरियल जिस्मानी देह से ममत्व मिटाओ। एक बाबा को याद करो। सब कुछ खत्म होने की चीज़ है, अब हमको वापिस जाना है। बाबा को सर्विस में मदद करनी है। सच्चे-सच्चे

सैलवेशन आर्मी तुम हो, खुदाई खिदमतगार, विश्व का बेड़ा जो डूबा हुआ है, उनको तुम पार करते हो। तुम जानते हो यह चक्र कैसे फिरता है। सवेरे 3-4 बजे उठकर बैठ चिंतन करो तो बहुत खुशी रहेगी और पक्के हो जायेंगे। रिवाइज नहीं करेंगे तो माया भुला देगी। मंथन करो आज बाबा ने क्या समझाया! एकान्त में बैठ विचार सागर मंथन करना चाहिए। यहाँ भी एकान्त अच्छी है।

श्री लक्ष्मी-नारायण अथवा उसकी डिनायस्टी का वर्सा देने आया हूँ। उसके लिए तुम राजयोग सीख रहे हो। यह बातें भूलो मत। माया भुलायेगी, परमपिता परमात्मा से बेमुख करेगी। उनका धन्धा ही यह है। जब से उसका राज्य हुआ है, तुम बेमुख बनते आये हो। अब कोई काम के नहीं रहे। शक्ल भल मनुष्य की है परन्तु सीरत बिल्कुल बन्दर की है। अब तुम्हारी सूरत मनुष्य की, सीरत देवताओं की बना रहे हैं इसलिए बाबा कहते हैं बचपन भूल न जाओ, इसमें तकलीफ कोई भी नहीं है। जो निर्बन्धन हैं उनके तो अहो भाग्य कहेंगे। वह लौकिक मात-पिता तो हैं विकारों में डालने वाले और यह मात-पिता है स्वर्ग में ले जाने वाले। ज्ञान स्नान करा रहे हैं। आराम से बैठे हैं। हाँ, शरीर से काम भी लेना है। बेहद के बाप से वर्सा मिल रहा है और कोई की याद नहीं सताती। अगर कोई बन्धन है तो फिर याद सताती है। कोई सम्बन्धी याद आया, मित्र-दोस्त याद आया, बाइसकोप याद आया.. तुमको तो बाप कहते हैं और कोई को याद नहीं करो। यज्ञ की सेवा करो और बाप को याद करो तो 21 जन्म तुम कभी दु:ख नहीं पायेंगे। दु:ख के आंसू नहीं बहेंगे। ऐसे बेहद के माँ बाप को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। यज्ञ की सेवा करनी चाहिए। तुम हो यज्ञ के रक्षक। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा करनी है। यह यज्ञ मन-इच्छित फल देता है अर्थात् जीवनमुक्ति, स्वर्ग की राजाई देता है। तो ऐसे यज्ञ की कितनी सम्भाल करनी चाहिए। कितनी शान्ति रहनी चाहिए। जो कोई भी आवे तो समझे यहाँ तो सुख-शान्ति लगी

हुई है। यहाँ कुछ भी आवाज करना बिल्कुल पसन्द नहीं आता। रावण के राज्य से छूटकर आये हैं।

शरीर निर्वाह अर्थ तो सब कुछ करना ही है। परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना चाहिए। हाँ, बच्चों को सुधारने के लिए समझाना है, कोई न कोई युक्ति से हल्की सजा देनी है। रचना रची है तो रेसपान्सिबिल्टी भी है। उन्हों को भी सच्ची कमाई करानी है। छोटे-छोटे बच्चों को भी थोड़ा बहुत सिखलाना अच्छा है। शिवबाबा को याद करने से मदद मिलेगी। सच्चे दिल पर साहेब राज़ी होता है। सच्ची दिल वाले बच्चों को ही बाप का सहारा मिलता है। अब सारी दुनिया में कोई किसका सहारा नहीं। सहारा होता है सुख में ले जाने का। एक परमात्मा को ही याद करते हैं, वही आकर सबको शान्ति देते हैं। सतयुग में सब सुखी हैं। बाकी सब आत्मायें शान्ति देश में रहती हैं। सवेरे उठकर बाबा को याद करना है। वह टाइम बहुत अच्छा है। वायब्रेशन भी शुद्ध रहता है। जैसे आत्मा रात को थक जाती है तो कहती है मैं डिटेच हो जाती हूँ। तुम्हारा भी यहाँ होते हुए बुद्धियोग वहाँ लगा रहे। अमृतवेले उठकर याद करने से दिन में भी याद आयेगी। यह कमाई है। जितना याद करेंगे उतना विकर्माजीत बनेंगे, धारणा होगी। जो पवित्र बनते हैं, याद में रहते हैं वही सर्विस कर सकेंगे। डायरेक्शन पर चलते हैं तो बाबा राज़ी होते हैं। पहले सर्विस करनी है, सबको रास्ता बताना है। योग का रास्ता बताने के लिए भी ज्ञान देंगे ना! योग में रहने से विकर्म विनाश होंगे। साथ में चक्र को भी फिराना है। रूप बसन्त बनना है। फिर प्वाइंट्स भी आती रहेंगी।

ब्राह्मणों को तो जरूर धीरज़ ही होगा क्योंकि ब्राह्मणों की ही परमपिता परमात्मा के साथ प्रीत है - नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सबकी एक जैसी प्रीत नहीं है। जैसे बाबा मम्मा और बच्चे अपना-अपना अनुभव सुनाते हैं। अहम् आत्मा अपने लिए कहते हैं। बाबा फिर अहम् परमात्मा

कहेंगे। अहम् आत्मा कहती है मैं परमपिता परमात्मा को बहुत याद करती हूँ क्योंकि जानती हूँ - आधाकल्प हमने रावणराज्य में बहुत दु:ख देखा है। ऐसे भी नहीं शुरू से दु:ख होता है। नहीं। रावण राज्य में धीरे-धीरे दु:ख की वृद्धि होती है। कलायें कम होती जाती हैं। अहम् आत्मा को अब परमपिता परमात्मा बतलाते हैं कि पहले तुम अव्यभिचारी भक्ति में थे सिर्फ मुझे याद करते थे। फिर व्यभिचारी रजोगुणी भक्ति में आये। अभी तो तमोगुणी भक्ति हो गई है, जो आया उनको पूजते रहते हैं, इसको कहा जाता है भूत पूजा क्योंकि शरीर 5 तत्वों का बना हुआ है। यह फलाना स्वामी है सिर्फ 5 तत्वों के शरीर को देख कहते हैं। उन्हों के चरणों में गिरते हैं। यह है तमोप्रधान भक्ति। अभी हम आत्मा जानते हैं परमपिता परमात्मा फिर से आये हैं हमको अपना वर्सा देने इसलिए जितना हो सके उनको याद करते हैं। उनका फरमान है निरन्तर मुझे याद करो। देही-अभिमानी भव अथवा आत्म-अभिमानी भव। बाबा सुनाते हैं घड़ी-घड़ी बाप का शुक्रिया करता हूँ। बाबा आपने मुझे अन्धियारे से निकाला है। बाबा के साथ हमारी प्रीत है। और सबकी है विनाश काले विपरीत बुद्धि, वह पूरा वर्सा ले न सके। लौकिक बच्चों की बाप से प्रीत होती है। बाप की मत पर चलते हैं तो बाप भी राज़ी होते हैं। अगर बच्चा मत पर नहीं चलता, तो बाप राज़ी नहीं रहता, जो मत पर न चले वह कपूत ठहरा। तो बेहद का बाप भी कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म भस्म होते जायेंगे। मेरे बने हो तो कोई भी पाप कर्म, कर्मेन्द्रियों से नहीं करना। कभी श्रीमत का उल्लंघन नहीं करना। बाप तुम्हें पुजारी से पूज्य बना रहे हैं तो बाप का कितना शुक्रिया मानना चाहिए। उनकी मत पर नहीं चलेंगे तो जन्म-जन्मान्तर के लिए पद भ्रष्ट कर देंगे। भल हम यहाँ भ्रष्ट मूत पलीती को कहते हैं। परन्तु वहाँ कम पद को भ्रष्ट पद कहते हैं। बाप कहते हैं, अच्छी रीति प्रीत लगाओ। जैसे स्त्री पति को याद करती है वैसे तुम मुझे याद करो। मेरी श्रीमत पर चलो। मन्सा, वाचा, कर्मणा किसको दु:ख न दो। मन में भी किसी के लिए घृणा नहीं रखना। हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है।

लाडले बच्चे यह जानते हैं, हम आत्मायें आशिक हैं उस एक माशूक बाप की। बच्चे जानते हैं आशिक और माशूक का सम्बन्ध कितना तीखा होता है। वह जिस्मानी आशिक जो होते हैं वो जिस्म पर आशिक होते हैं, विकार के लिए नहीं। बच्चे जानते हैं जब कोई की शादी होती है तो वह भल स्त्री-पुरूष कहलाते हैं परन्तु वह भी आशिक माशूक हैं एक दो को पतित बनाने वाले। पहले से ही उनको पता है, जानते हैं विकारी बनेंगे। अभी तुम बच्चे आशिक बने हो एक माशूक के, जो सभी आत्माओं का माशूक है। सभी उस एक के आशिक हैं। सब भक्त आशिक हैं भगवान के। परन्तु भक्तों को भगवान का पता नहीं है। भगवान को न जानने कारण कुछ भी शक्ति आदि उनसे पा नहीं सकते। साधू-सन्त आदि पवित्र रहते हैं तो उनको कुछ न कुछ अल्पकाल के लिए मिलता है। तुम तो याद करते हो एक माशूक को। उससे बुद्धियोग लगाया जाता है। जो बाप भी है, शिक्षक भी है, पतित-पावन सर्वशक्तिमान् है। उस बाप से तुम योग लगाकर शक्ति लेते हो। तुम्हारा ज्ञान ही अलग है, शक्ति लेते हो माया पर जीत पाने लिए। ऐसा जो विश्व का मालिक बनाने वाला माशूक है, कितना मीठा है। जिन्होंने बाप को अपना बनाया है वह जानते हैं कितना अच्छा माशूक है, जिसको आधाकल्प से सब याद करते हैं। वह जिस्मानी आशिक माशूक तो एक जन्म के होते हैं। तुमने तो आधाकल्प याद किया है। अभी तुमने बाप को जाना है तो तुमको बहुत शक्ति मिल रही है। तुम श्रीमत पर चल स्वर्ग का श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मालिक बनते हो। आशिक बनती है आत्मा, कर्तव्य आत्मा करती है - कर्मेन्द्रियों से।

अभी तुम बच्चों को यह धुन लगी हुई है कि बाप से वर्सा लेना है। विष की लेन-देन के लिए जो हथियाला बांधते थे वह बाप ने आकर अब कैन्सिल किया है। कहते हैं इन सब बातों को छोड़ अब मेरे को याद करो। जिस्मानी आशिक को भी हर समय खाते-पीते, उठते-बैठते माशूक की याद रहती है ना। उनमें बुरी भावना नहीं होती है। विकार की बात नहीं। अभी तुम याद करते हो एक को। याद के पुरूषार्थ अनुसार तुम अपनी आयु बढ़ा सकते हो। समझो कोई ब्राह्मण

कहते हैं कि तुम्हारी आयु 50 वर्ष है, बाप कहते हैं तुम अभी योगबल से अपनी आयु बढ़ा सकते हो। जितना योग में जास्ती रहेंगे उतना आयु बढ़ेगी। फिर भविष्य जन्म-जन्मान्तर बड़ी आयु वाले ही बन जायेंगे। योग नहीं तो फिर सजा खानी पड़ती है, फिर पद भी कम हो पड़ता है। भल सुखी तो सब बनेंगे परन्तु योग और पढ़ाई से। फ़र्क सारा पद का रहता है ना। जितना पुरूषार्थ उतना ऊंच पद। धन तो नम्बरवार होगा ना। एक जैसे सब धनी हो न सकें। तो बाप समझाते हैं बच्चे जितना हो सके मेरी मत पर चलो। आधाकल्प तुम आसुरी मत पर चलते हो, जिससे तुम्हारी आयु कमती होती गई है। भल कितना भी बड़ा आदमी हो। आज जन्म लिया, कल मर गया। दान-पुण्य करने से बड़े घर में जन्म मिलता है ना।

मूत पलीती मनुष्यों को आकर पवित्र बनाते हैं। महिमा तो है ना। बाकी शास्त्र तो बहुत सुनते, पढ़ते आये हैं परन्तु उनसे कोई फल नहीं मिलता। अभी बाप आये हैं तो उनका सच्चा-सच्चा आशिक बनना चाहिए। बुद्धियोग और कहाँ भटकना नहीं चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में भल रहो परन्तु कमल फूल समान। भक्ति मार्ग में तो कोई हनूमान को, कोई गणेश को, कोई किसको पकड़ते आये हैं। परन्तु वह कोई भगवान तो नहीं हैं। भल शिवबाबा का नाम भी याद है, परन्तु समझते नहीं हैं। बाबा कहते हैं - पिछाड़ी में आने वाले बहुत आगे जा सकते हैं। देरी से आने वाले और ही दिन-रात योग में मस्त हो लग पड़ेंगे। इस याद से ही तुम सदैव के लिए निरोगी बनेंगे। अन्त तक तो पवित्र रहना ही है तब नई दुनिया के मालिक बन सकेंगे। कितनी भारी प्राप्ति है। तुम बाप को याद नहीं करते हो। बच्चा बनकर और बाप को याद न करे ऐसा तो कभी होता नहीं। बाप को भूल जायेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा? यह तो आमदनी है ना। साधू-सन्तों के पास तो प्राप्ति कुछ नहीं है। सिर्फ पवित्रता का बल है, ईश्वरीय बल नहीं है। ईश्वर को जानते ही नहीं तो बल मिले कैसे? बल तुमको मिला है। बाप खुद कहते हैं हम तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने आये हैं। तुम थोड़े समय के लिए पवित्र नहीं रह सकते हो? क्रोध है सेकेण्ड नम्बर भूत। बड़े ते

बड़ा भूत है काम का। सतयुग में भारत वाइसलेस था, कितना सुखी था। विशश बना है तो अब भारत का क्या हाल हो गया है! बाप फिर भारत को वाइसलेस बनाने आये हैं तो ऐसे बाप को याद करना तुम भूल जाते हो? माया फट से विकर्म करा देती है! बड़ी भारी मंजिल है। तुम ऐसे बाप की श्रीमत पर नहीं चलते हो! ऐसे बाप से प्यार नहीं है! कहते हैं भूल जाते हैं, अच्छा एक घड़ी, आधी घड़ी... कम से कम इतनी तो कोशिश करो जो अन्त में बाप ही याद रहे। यह अन्तकाल है ना। अन्तकाल जो नारायण सिमरे... मैं नारायण बनता हूँ। तुम भी बनते हो ना। बाप कहते हैं पूरे आशिक भी बनो ना। बाप तो दाता है। बाप को अपना बनायेंगे तो बाप राय अथवा मत देंगे।

आज भोग है। ब्राह्मणों को खिलाने की भी रसम पड़ी हुई है। बाकी ज्ञान का इससे तैलुक नहीं है। यहाँ तो है ज्ञान सागर और ज्ञान गंगाओं का मिलन। वहाँ फिर देवताओं और तुम ब्राह्मणों का मेला लगता है, इसमें मूंझने की बात नहीं। बाप कहते हैं देह सहित देह के सब सम्बन्धों से ममत्व मिटाते जाओ। मुझ एक को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ तुमको स्वर्ग में भेज दूंगा। रोज़ क्लास में पूछो - शिवबाबा के साथ प्रतिज्ञा करेंगे! शिवबाबा कहते हैं मेरी मत पर चलो। बाप की श्रीमत नामीग्रामी है। श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ मत। ब्रह्मा की मत भी गाई जाती है। ब्रह्मा से भी ब्रह्मा का बाप शिवबाबा ऊंच है ना। जब भोजन पर बैठते हो तो भी शिवबाबा को याद करो। मोस्ट बिलवेड बाप है। जैसेकि उनके साथ हम भोजन पा रहे हैं। इस याद से बहुत ताकत आयेगी। परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। भारत को अब शिवबाबा के श्रीमत की दरकार है, क्योंकि बाप ही सर्व का सद्गति दाता, पतित-पावन है ना। बाप और वर्से को याद करना है। माया विघ्न भी अनेक प्रकार के डालेगी, उनसे डरना नहीं है। ज्ञान तो बहुत सहज है। बाकी योग में रहना, एक से बुद्धियोग जोड़ना, इसमें ही मेहनत है। और जगह भटकने से तो एक शिवबाबा को याद करना अच्छा है ना। गीता पढ़ने की भी

बात नहीं। जबकि बाप खुद आये हैं। बाकी सब शास्त्र हुए बाल बच्चे, उनसे वर्सा मिल न सके। बेहद का वर्सा एक ही बेहद के बाप से मिलता है।

बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल जाओ। अब तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। जब तक यह बात बुद्धि में नहीं आई है तब तक समझेंगे नहीं। यह पुराना शरीर, पुरानी दुनिया है। यह देह तो खलास हो जानी है। कहावत भी है आप मुये मर गई दुनिया। यह पुरुषार्थ का थोड़ा सा संगम का समय है। बच्चे पूछते हैं बाबा यह ज्ञान कब तक चलेगा? जब तक भविष्य दैवी राजधानी स्थापन हो जाये तब तक सुनाते ही रहेंगे। इम्तिहान पूरा होगा फिर ट्रांसफर होंगे नई दुनिया में। जब तक शरीर को कुछ न कुछ होता रहता है। यह शारीरिक रोग भी कर्मभोग है। बाबा का यह शरीर कितना प्रिय है। तो भी खाँसी आदि होती है तो बाबा कहते हैं यह तुम्हारे आरगन्स पुराने हो गये हैं इसलिए तकलीफ होती है। इसमें बाबा मदद करे, यह उम्मींद नहीं रखनी चाहिए। देवाला निकला, बीमार हुआ बाप कहेंगे यह तुम्हारा ही हिसाब-किताब है। हाँ, फिर भी योग से आयु बढ़ेगी, तुमको ही फायदा है। अपनी मेहनत करो, कृपा नहीं मांगो। बाप की याद में कल्याण है। जितना हो सके योगबल से काम लो। गाते हैं ना - मुझे पलकों में छिपा लो.. प्रिय चीज़ को नूरे रत्न, प्राण प्यारी कहते हैं। यह बाप तो बहुत प्रिय है, परन्तु है गुप्त इसलिए लव पूरा ठहरता नहीं। नहीं तो उनके लिए लव ऐसा होना चाहिए जो बात मत पूछो। बच्चों को तो बाप पलकों में छिपा लेते हैं। पलकें कोई यह ऑखें नहीं, यह तो बुद्धि में याद रखना है कि यह ज्ञान हमको कौन दे रहे हैं? मोस्ट बिलवेड निराकार बाप, जिसकी ही महिमा है - पतित-पावन, ज्ञान का सागर, सुख का सागर, उनको फिर सर्वव्यापी कह देते हैं। तो फिर हर एक मनुष्य ज्ञान का सागर, सुख का सागर होना चाहिए।

अब बाप कहते हैं मेरे द्वारा तुम सब कुछ जान जाते हो। वह लोग साधना आदि करते हैं - परमात्मा से मिलने के लिए, अनेक प्रकार के हठयोग आदि सिखाते हैं। यहाँ तो बस एक बाप को याद करना है। मुख से शिव-शिव भी नहीं कहना है। यह बुद्धि की यात्रा है। जितना याद करेंगे उतना रूद्र माला का दाना बनेंगे, बाप के नजदीक आयेंगे। शिवबाबा के गले का हार बनना या रूद्र माला में नजदीक आना, उसकी है रेस। चार्ट रखना है तो अन्त मती सो गति हो जाए। देह भी याद न पड़े, ऐसी अवस्था चाहिए।

बाप कहते हैं अब तुमको हीरे जैसा जन्म मिला है। तो मेरे लाडले बच्चे, नींद को जीतने वाले बच्चे, कम से कम 8 घण्टे मेरी याद में रहो। अभी वह अवस्था आई नहीं है। चार्ट रखो हम सारे दिन में कितना समय याद की यात्रा पर चलते हैं। कहाँ खड़े तो नहीं हो जाते हैं। बाप को याद करने से वर्सा भी बुद्धि में रहेगा। प्रवृत्ति मार्ग है ना। नम्बरवन है बाप का स्थापन किया हुआ - स्वर्ग का देवी-देवता धर्म।

भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म है, न कि हिन्दू। यह बाप सारी बातें समझा रहे हैं। यह भी तुम बच्चों की बुद्धि में नम्बरवार बैठता है। बहुत बच्चे हैं जो शिवबाबा को हफ्ते में एक बार भी मुश्किल याद करते हैं। संग साथ न होने के कारण याद भूल जाती है। इसमें तो संग चाहिए ब्राह्मणों का। जो एक दो को सावधान करते रहें। शूद्रों का संग होगा तो कुछ असर जरूर पड़ेगा। बाप से पूरा वर्सा लेने के लिए फालो करना चाहिए। धन्धे-धोरी में रहते बाबा को सच लिखें कि बाबा हम व्यवहार में रहते, फैक्ट्री आदि में रहते कितना याद में रहे। अपना-अपना याद का चार्ट भेजना चाहिए तो बाबा भी समझे कि यह अच्छा पुरुषार्थी है। यहाँ तो कई बापदादा को पत्र भी नहीं लिखते हैं। बाबा समझते हैं कोई सतोप्रधान पुरूषार्थ करते हैं, कोई रजो, कोई तमो। तमो पुरुषार्थी जो होगा वह सूर्यवंशियों के पास आकर नौकरी करेगा। साहूकार प्रजा के

आगे जाकर नौकर बनेगा। इनसे भी कम पद उसका होता है जो बाप के बनकर आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती, फारकती देवन्ती...उनकी दुर्गति सबसे बुरी होती है। बाप का पूरा वर्सा लेना है तो पोतामेल भेजें तब बाबा रिजल्ट देंगे।

श्री लक्ष्मी को वरने की हिम्मत चाहिए। अपना मुँह आइने में देखना चाहिए– हम कहाँ तक लायक बने हैं! जहाँ तक जीना है तब तक नॉलेज लेते रहना है। जगत अम्बा के तुम हो बच्चे। जो मम्मा की महिमा सो तुम बच्चों की। जगत अम्बा फिर मुख्य हो जाती है। 16 हजार, 108 की भी माला है। रूद्र यज्ञ जब रचते हैं तो लाख सालिग्राम और एक शिव का चित्र बनाते हैं। माया बड़ी दुश्मन है। योग लगाने नहीं देती। बाबा कहते ऐसे कभी नहीं कहना है कि हमको योग में बिठाओ। एक जगह बैठ योग लगाने की आदत पड़ जायेगी, तो फिर चलते फिरते योग लगेगा नहीं। कहेंगे कि हम दीदी के पास जाकर योग में बैठेंगे। बाप तो कहते चलतेफिरते बाप और वर्से को याद करो। बस। वह गीता सुनाने वाले ऐसे कह न सकें। यह बाप ही कहते हैं– मामेकम् याद करो। स्वर्ग का भी तुमने साक्षात्कार किया है। बाबा अभी जास्ती कराते नहीं हैं, नहीं तो नये लोग समझते हैं जादू है। गीत था मम्मा की महिमा का। मम्मा तो यह (ब्रह्मा) भी है। परन्तु माताओं को सम्भालने के लिए जगत-अम्बा मुकरर है। ड्रामा में नूँध है। सभी से तीखी भी है। उनकी मुरली बड़ी रसीली है। तुम बच्चे जानते हो यह श्रीकृष्ण प्रिन्स से अब बेगर बन गये हैं। (श्रीकृष्ण के चित्र को देख) बताओ तुमने क्या कर्म किये जो स्वर्ग का प्रिन्स बने हो? जरूर आगे जन्म में राजयोग सीखा होगा। जरूर बाप ही स्वर्ग का रचयिता है, उसने सिखाया होगा।

बाप कहते हैं मुझ पारलौकिक बाप को याद करो और अपने को अशरीरी आत्मा समझो, नहीं तो मेरे पास कैसे आयेंगे। बाप कहते हैं यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है इसलिए मेरे साथ योग लगाने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। इसको योग अग्नि कहा जाता है। मनुष्य तो तन्दरूस्ती के लिए

अनेक प्रकार के योग सिखलाते हैं। अब पारलौकिक बाप कहते हैं मेरे से योग लगाओ और इस ज्ञान की धारणा करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और फिर मैं तुमको सतयुग, वैकुण्ठ की बादशाही दूंगा। तो मानना चाहिए ना। बाप कहते हैं हे नींद को जीतने वाले बच्चे, नींद को जीत कर बाप को याद करो क्योंकि तुमको मेरे पास मेरी निराकारी दुनिया में आना है। अगर कृष्ण होता तो कहता मेरे वैकुण्ठ में आना है। जो जहाँ का वासी होगा वहाँ की ही मंजिल दिखायेगा ना। निराकार बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो तो मेरी निराकारी दुनिया में आयेंगे, मेरे पास आने का यही एक ही रास्ता है। अभी तुम बच्चे हो मुख वंशावली। कुख वंशावली और मुख वंशावली अक्षर बिल्कुल सहज है।

पावन दुनिया कहा जाता है सतयुग को, पतित दुनिया कहा जाता है कलियुग को। यह भी मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। कितने मलीन बुद्धि हैं। हम भी समझते नहीं थे। तमोप्रधान बुद्धि होने से सब भूल जाते हैं। बाप कहते हैं तुम बिल्कुल बेसमझ बन पड़े हो। तुम कितने समझदार थे। तुम सो देवता सतोप्रधान थे। अब बेसमझ शूद्र, तमोप्रधान बन पड़े हो। तुमने स्वर्ग में कितने सुख पाये। तुम भारतवासियों का ऊंच ते ऊंच कुल था– देवी-देवताओं का। अब तुम कितने तुच्छ नर्कवासी बने हो। यह बाप ही आकर अपने बच्चों को कहते हैं। बच्चे फील करते हैं बरोबर हम सो पूज्य देवता थे फिर पुजारी बने। बाबा ने कितना समझदार बनाया था, अब फिर बना रहे हैं। यह बातें रात को चिंतन कर बहुत खुशी में आना चाहिए। अमृतवेले उठ कर बाबा को याद करो और यह चिंतन करो तो खुशी का पारा बहुत चढ़ेगा। कई बच्चे तो सारे दिन में एक सेकण्ड भी याद नहीं करते। भल यहाँ सुनते हैं परन्तु बुद्धियोग और तरफ है। निराकार परमात्मा किसको कहा जाता है, वह भी नहीं समझते हैं। स्कूल में कोई-कोई दो तीन बार भी नापास हो पड़ते हैं। आखिर पढ़ नहीं सकते हैं तो फिर स्कूल ही छोड़ देते हैं। यहाँ भी पढ़ाई समझ में नहीं आती तो छोड़ देते हैं। माया जोर से थप्पड़ लगा देती है। विकार का घूंसा लगा और सत्यानाश। माया ऐसी प्रबल है, बड़ी दुश्तर है। तुम्हारी बाक्सिंग कोई मनुष्य से नहीं है

परन्तु माया से है। हम माया पर जीत पाते हैं। इसके लिए तुम बच्चों को बहुत पुरूषार्थ करना चाहिए। जितना हो सके रात को जागकर विचार सागर मंथन करना चाहिए। प्रैक्टिस हो जायेगी। भगवानुवाच सभी बच्चों प्रति है, सिर्फ एक अर्जुन प्रति नहीं। सभी युद्ध के मैदान पर हैं। बाप सभी बच्चों को कहते हैं बच्चे रात को जागकर मोस्ट बिलवेड बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और ज्ञान की धारणा भी होगी। नहीं तो जरा भी धारणा होगी नहीं। अगर मेरी आज्ञा का उल्लंघन करेंगे, मेरे को याद नहीं करेंगे तो बहुत सजायें खानी पड़ेंगी। ईश्वरीय डायरेक्शन मिलते हैं ना। मैं तुम्हारा बहुत मीठा-मीठा बाप हूँ, मेरे को याद करने से तुम मेरे पास आ जायेंगे। सजा खाकर फिर आना-यह तो ठीक नहीं है। सीधा आने से इज्जत मिलेगी इसलिए मेरी आज्ञा का उल्लंघन मत करो। आज्ञा न मानने वाले को निंदक कहा जाता है। यह है सच्चा बाबा, सच्चा सतगुरू। तो उनकी आज्ञा माननी चाहिए ना। शिवबाबा तो बहुत मीठा है। आत्मा और शरीर दोनों को ही कंचन कर देते हैं। कंचन काया सिर्फ तन्दरूस्ती को नहीं कहा जाता है। आत्मा भी प्योर और शरीर भी प्योर, उसको कंचन काया कहा जाता है। देवताओं की कंचन काया थी। अभी तो सबकी किचड़े की काया है। 5 तत्व तमोप्रधान हैं तो उससे शरीर देखो कैसा बनता है। शक्लें देखो कैसी हैं। कृष्ण की तो बहुत महिमा है। ऐसा शरीर तो तुमको स्वर्ग में ही मिल सकता है। अभी तुम फिर सो ऐसा देवता बनते हो। तो मुख्य बात है रात को जागकर याद करेंगे तो प्रैक्टिस पड़ेगी। नींद को फिटाना चाहिए। प्रैक्टिस करने से सब कुछ होता है। धन्धा धोरी, रोटी बेलना, पकाना आदि सब प्रैक्टिस से सीखना होता है ना। बाप को याद करना भी सीखना है। जिसको सारा कल्प भूले हो, अब उस बाप को याद करना है। तो बाबा खुश होगा। नहीं तो कहेंगे यह वफादार, फरमानबरदार बच्चा नहीं है। फिर बहुत सजा खायेंगे। उनकी तकदीर में मार है। यहाँ कोई थोड़ा भी किसको गुस्सा करते हैं तो बिगड़ते हैं, वहाँ धर्मराज सजा देंगे फिर थोड़ेही कुछ कर सकेंगे। जैसे जेल में गवर्मेन्ट बहुत मुफ्त का काम कराती है, कोई बिगर मेहनत जेल भोगते हैं, कोई को मेहनत करनी पड़ती है। तो धर्मराज पुरी में भी जब धर्मराज सजा देंगे तो कुछ कर नहीं सकेंगे। अन्दर समझेंगे कि हमारा ही दोष है तब तो सजा मिली है।

यह भी फील करेंगे कि हमने बाप का फरमान नहीं माना है इसलिए सजा मिलती है इसलिए बाबा कहते हैं जितना हो सके मुझे याद करो। अच्छा। देखो, भारत में जितनी सबको छुट्टियां मिलती हैं उतनी और कहाँ नहीं मिलती। परन्तु यहाँ हमको एक सेकण्ड भी छुट्टी नहीं मिलती क्योंकि बाबा कहते हैं श्वांसों श्वांस याद में रहो। एक-एक श्वांस मोस्ट वैल्युबुल है। बच्चों को रात-दिन बाबा की सर्विस में रहना चाहिए। तुम आलमाइटी बाबा के ऊपर आशिक हो या उनके रथ पर? या दोनों पर? जरूर दोनों पर आशिक होना पड़े। बुद्धि में यह रहेगा कि वह इस रथ में है। उनके कारण तुम इस पर आशिक हुए हो। शिव के मन्दिर में भी बैल रखा हुआ है। वह भी पूजा जाता है। कितनी गुह्य बातें हैं जो रोज नहीं सुनते वह कोई न कोई बातें मिस कर देते हैं। रोज सुनने वाले कभी फेल नहीं होंगे। मैनर्स भी अच्छे रहेंगे। बाबा को याद करने में बहुत बड़ी प्राफिट (फायदा) है। फिर उनसे भी बड़ी प्राफिट बाबा की नॉलेज को याद करना। योग भी प्राफिट, ज्ञान भी प्राफिट। बाबा को याद करने से तो विकर्म विनाश होते हैं और पद भी ऊंच मिलता है। जहाँ बाबा रहते हैं वह है मुक्तिधाम, ब्रह्म लोक। लेकिन सबसे अच्छा है यह ब्राह्मणों का लोक। ब्राह्मण जनेऊ जरूर पहनते हैं, चोटी भी रखते हैं क्योंकि बाबा हम ब्राह्मणों को चोटी से पकड़ ले जाते हैं।

तुम बच्चों को भी आप समान बनाने चाहता हूँ क्योंकि अब तुमको मेरे पास आना है। देह-अभिमान छोड़ना है। टाइम लगता है। बहुत समय से देह-अभिमान में रहने का अभ्यास पड़ा हुआ है। अभी बाप कहते हैं इस देह को भी छोड़ो, मेरे समान बनो क्योंकि तुमको मेरा गेस्ट बनना है। मेरे पास वापिस आना है, इसलिए कहता हूँ कि पहले अपने को आत्मा निश्चय करो। यह मैं आत्माओं से ही बोलता हूँ। तुम बाप को याद करो तो वह दृष्टि खत्म हो जाये। मेहनत हैं इसमें। हम आत्माओं की सर्विस कर रहे हैं। आत्मा सुनती है आरगन्स द्वारा, मैं आत्मा तुमको बाबा का सन्देश दे रहा हूँ। आत्मा तो न अपने को मेल, न फीमेल कहेगी। मेल फीमेल शरीर से

नाम पड़ता है। वह तो है ही परम आत्मा। बाप कहते हैं हे आत्मायें सुनती हो? आत्मा कहती है हाँ सुनती हूँ। तुम अपने बाप को जानते हो, वह सभी आत्माओं का बाप है। जैसे तुम आत्मा हो वैसे ही मैं तुम्हारा बाप हूँ, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है, उनको अपना शरीर नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को अपना आकार है।

- तुम विश्व के मालिक बनते हो। कैसे गुप्त बैठे हो। सिर्फ बाप को याद करना है। माला आदि फेरने की कोई बात नहीं। बाप को याद करते तुम काम करो। बाबा आपके यज्ञ की सेवा स्थूल, सूक्ष्म दोनों हम कैसे इकट्ठे करते हैं। बाबा ने फरमान किया है ऐसे याद करो। नेचर-क्योर कराते हैं ना। तुम्हारी आत्मा क्योर होने से शरीर भी क्योर हो जायेगा। सिर्फ बाप की ही याद से तुम पतित से पावन बनते हो। पावन भी बनो और यज्ञ की सेवा भी करते रहो। सर्विस करने में बड़ी खुशी होगी। हमने इतना समय बाप की याद में रह अपने को निरोगी बनाया अथवा भारत को शान्ति का दान दिया। भारत को तुम शान्ति और सुख का दान देते हो श्रीमत पर। दुनिया में आश्रम तो ढेर हैं। परन्तु वहाँ कुछ भी है नहीं। उनको यह पता नहीं कि 21 पीढ़ी स्वर्ग का राज्य कैसे मिलता है। तुम अभी राजयोग की पढ़ाई करते हो। वो लोग भी कहते रहते हैं कि गॉड फादर आ गया है।

- भक्ति के बाद ही बाबा सारी दुनिया से वैराग्य दिलाते हैं क्योंकि इस पतित दुनिया का विनाश होना है इसलिए देह सहित देह के सभी सम्बन्धियों आदि को भूल जाओ। मुझ एक के साथ बुद्धियोग लगाओ। ऐसी प्रैक्टिस हो जो अन्त समय कोई भी याद न पड़े। इस पुरानी दुनिया का त्याग कराया जाता है। बेहद का सन्यास बेहद का बाप ही कराते हैं।

बाप कहते हैं देह सहित जो भी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं, उन सबको भूल जाओ। एक ही बाप को याद करो। मैं सन्यासी, उदासी हूँ, क्रिश्चियन हूँ... यह सब देह के धर्म हैं इनको छोड़ मामेकम् याद करो। निराकार आयेंगे तो जरूर शरीर में ना। कहते हैं मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता गाया भी जाता है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना, सूक्ष्मवतन है ही फरिश्तों की दुनिया। वहाँ हड्डी मांस नहीं होता है। वहाँ सूक्ष्म शरीर होता है सफेद-सफेद जैसे घोस्ट होते हैं ना। आत्मा, जिसको शरीर नहीं मिलता है, तो वह भटकती रहती है। छाया रूपी शरीर दिखाई पड़ता है, उनको पकड़ नहीं सकते हैं। अब बाप कहते हैं बच्चे याद करो तो याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गाया भी जाता है बहुत गई, थोड़ी रही.. अब बाकी थोड़ा समय है। जितना हो सके बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। गीता में कोई एक दो अक्षर राइट लिखे हैं। जैसे आटे में लून (नमक) कोई-कोई अक्षर सही हैं। पहले तो भगवान निराकार है यह मालूम होना चाहिए। वह निराकार भगवान फिर वाच कैसे करते हैं? कहते हैं साधारण ब्रह्मा तन में प्रवेश कर राजयोग सिखलाता हूँ। बच्चे मुझे याद करो। मैं आता ही हूँ एक धर्म की स्थापना कर बाकी सब धर्मो का विनाश कराने। अभी तो अनेक धर्म हैं। योग लगाते रहो अन्त तक। यह है ही योग की रेस। बाप को जितना जास्ती याद करते हैं, उतना दौड़ी लगाकर जाए रूद्र के गले का हार बनते हैं। फिर विष्णु के गले की माला बनेंगे। पहले रूद्र की माला फिर विष्णु की माला। पहले बाप सबको घर ले जाते हैं, जो जितना पुरूषार्थ करेंगे वही नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बन राज्य करते हैं। गोया यह आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापना हो रहा है। तुमको बाप राजयोग सिखला रहे हैं।

भक्ति मार्ग में मीरा को भल साक्षात्कार हुआ। परन्तु वह कोई विश्व की मालिक थोड़ेही बनी। तुमको तो बाबा कहते हैं जिन्न बनो। तुमको काम देता हूँ सिर्फ अल्फ, बे को याद करते रहो। अगर थक जायेंगे, याद नहीं करेंगे तो माया कच्चा खा जायेगी। एक कहानी भी है जिन्न खा

गया। बाबा भी कहते हैं तुम याद नहीं करेंगे तो माया कच्चा खा जायेगी। याद में बैठने से खुशी चढ़ती है। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। बाबा सामने बैठे हैं। तुम आत्मायें सुनती हो। मीठे लाड़ले बच्चे मैं तुमको मुक्तिधाम में ले चलने आया हूँ। भल वापिस जाने की कोशिश बहुत करते हैं, परन्तु कोई जा नहीं सकते।

- कहानी है ना– वहाँ ज्ञान परियाँ थीं, किसी पतित को ले आई तो उनका वायब्रेशन आता था। यहाँ सभा में किसी पतित को नहीं बिठाया जाता है। पवित्रता की प्रतिज्ञा करने बिगर बिठाया नहीं जाता, नहीं तो फिर ले आने वाले पर भी दोष पड़ जाता है। बाप तो जानते हैं फिर भी ले आते हैं तो शिक्षा दी जाती है। शिवबाबा को याद करने से आत्मा शुद्ध हो जाती है। वायुमण्डल में साइलेन्स हो जाती है।

- बाप कहते हैं अगर सूर्यवंशी बनना है तो पूरा पुरुषार्थ करो। मुझे याद करो और औरों को भी याद कराओ। जितना-जितना स्वदर्शन चक्रधारी बनेंगे और बनायेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। अभी देखो यह प्रेम बच्ची देहरादून में रहती है। इतने सब देहरादून निवासी स्वदर्शन चक्रधारी तो नहीं थे। यह कैसे बने? प्रेम बच्ची ने आप समान बनाया। ऐसे आप समान बनाते-बनाते दैवी झाड़ की वृद्धि होती है। अन्धों को सज्जा बनाने का पुरुषार्थ करना है ना। 8 घण्टा तो तुमको छूट है। शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि करना है। जहाँ भी जाओ कोशिश करके मुझे याद करो। जितना तुम बाबा को याद करते हो गोया तुम शान्ति का दान सारी सृष्टि को देते हो। योग से शान्ति का दान देना, कोई डिफीकल्ट नहीं है। हाँ कभी-कभी योग में बिठाया भी जाता है क्योंकि संगठन का बल इकट्ठा हो जाता है। बाबा ने समझाया है - शिवबाबा को याद कर उनको कहो - बाबा यह हमारे कुल वाले हैं, इन्हों की बुद्धि का ताला खोलो। यह भी याद करने की युक्ति है। अपनी प्रैक्टिस तो यह रखनी है, चलते-फिरते शिवबाबा की याद रहे। बाबा इन

पर दुआ करो। दुआ करने वाला रहमदिल तो एक ही बाबा है। हे भगवान इस पर रहम करो। भगवान को ही कहेंगे ना। वही मर्सीफुल, नॉलेजफुल, ब्लिसफुल हैं। पवित्रता में भी फुल है, प्यार में भी फुल है। तो ब्राह्मण कुल भूषणों का भी आपस में कितना प्यार होना चाहिए। किसको भी दु:ख नहीं देना है। वहाँ जानवर आदि भी किसको दु:ख नहीं देते हैं। तुम बच्चे घर में रहते भाई-भाई आपस में लड़ पड़ते हो थोड़ी बात में। वहाँ तो जानवर आदि भी नहीं लड़ते।

- सिर्फ बाप को और वर्से को याद करो और पवित्र भी जरूर बनना पड़े। परहेज भी रखनी पड़े। नहीं तो जैसा अन्न वैसा मन हो जाता है।

- अब बाप कहते हैं मैं इस तन में आया हूँ। वह तो छोटे शरीर में जाकर आत्मा प्रवेश करती है। घोस्ट छाया के मुआफिक आते हैं। यह भी वन्डर है। कैसे घूमते-फिरते रहते हैं, कौन बैठ पता निकाले! ड्रामा में आत्मा को शरीर न मिलने कारण भटकती है। छाया रूप ले लेती है। जैसे परछाई होती है। घोस्ट की परछाई नहीं पड़ती। आया गुम हो गया। इन बातों में अपने को नहीं जाना है। दरकार ही नहीं है। इस खोज में जायें तो शिवबाबा भूल जाये। बाबा का फरमान है - निराकार बाप को याद करो। अपनी और दूसरों की देह को भूलना है। सबका प्यारा है शिवबाबा। बाप कहते हैं और कोई बात में न जाकर बाप को याद करो। यह है याद की यात्रा। मनमनाभव का अर्थ भी यह है।

- लोभ रखना चाहिए - बेहद के बाप से वर्सा लेने का और कोई चीज़ का लोभ नहीं इसलिए ऐसी कोई चीज़ अपने पास नहीं रखनी चाहिए जो बुद्धि जाये। नहीं तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। देह सहित जो कुछ है सबसे बुद्धि निकालनी है। एक बाप को याद करना है। कोई मनुष्य बहुत फर्नीचर रखने वाला होगा तो मरने समय वह याद आता रहेगा। जिस वस्तु से जास्ती प्यार होगा

वह पिछाड़ी में याद जरूर आयेगी। बाप बच्चों को समझाते हैं कोई भी चीज़ लोभ के वश छिपाकर मत रखो। यज्ञ से हर चीज़ मिल सकती है। छिपाके कुछ रखा तो बुद्धि जरूर लटकेगी। बाबा का फरमान है - शिवबाबा का भण्डारा है - बच्चों को सब कुछ मिलना है। ऐसा भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि फलाने को साड़ी अच्छी पड़ी है, हम भी पहनें। अरे तुम बाप से राजाई का वर्सा लेने आई हो कि साड़ी का वर्सा लेने आई हो? जो अच्छी सर्विस करते हैं उन पर सब कुर्बान जाते हैं। बोलो, हम सिवाए शिव के भण्डारे से मिले हुए और कुछ पहन नहीं सकती। हम यज्ञ से ही लेंगी तो बाबा की याद रहेगी। शिवबाबा के भण्डारे से यह मिला। नहीं तो चोरी आदि की आदत पड़ जाती है। अरे यहाँ पीफाइज़ (त्याग) करेंगे तो वहाँ बहुत फर्स्टक्लास चीज़ें मिलेंगी। शिवबाबा कहाँ-कहाँ बच्चों की परीक्षा भी लेते हैं। देखें कितना देह-अभिमान है। तुम्हारा वायदा है - जो खिलायेंगे, जो पहनायेंगे... आदि। दिल में समझना चाहिए - यह शिवबाबा देते हैं। इतनी फर्स्टक्लास अवस्था होनी चाहिए। बाबा से पूरा वर्सा लेना है तो श्रीमत पर पूरा-पूरा पुरूषार्थ करो। बाबा की राय पर चलो। बाबा मम्मा कहते हो तो पूरा-पूरा फालो करो। सबको रास्ता बताओ। बाबा से वर्सा मिला था, अब फिर मिल रहा है। याद की यात्रा करते रहो। बाबा समझाते हैं - तुम जितना रूसतम बनेंगे उतना माया ज़ोर से आयेगी। तुम मूँझते क्यों हो? कोई-कोई बच्चे को बाबा लिखते हैं तुम तो बहुत अच्छी सर्विस करने वाले हो। माया के तूफान आयेंगे - क्या सारी आयु ब्रह्मचर्य में रहेंगे? बुढ़ापे में भी आकर चकरी लगेगी। शादी करें, यह करें। माया बूढ़े को भी जवान बना देगी। ऐसा फथकायेगी। तुम डरते क्यों हो? भल कितना भी तूफान आये, बाबा को याद करने से बच जायेंगे।

मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। जब तक यह अवस्था नहीं आयेगी तब तक तूफान आते रहेंगे। झोके खाते रहेंगे। बाप सारी आसुरी दुनिया का सन्यास कराते हैं क्योंकि यह सब भस्म होना है। वह ऐसे नहीं कहते सब भस्म होना है। तुम रहते सम्बन्धियों के बीच में हो परन्तु उनको देखते बुद्धि वहाँ लगी हुई है। मेरा कुछ है नहीं। तो काम क्रोध किससे होगा! यह युक्ति बहुत

अच्छी है, परन्तु जब बुद्धि में बैठे। इसको राजयोग कहा जाता है। तुम योग लगाते हो, राजाई लेते हो। वह है हठयोग। यह गुह्य प्वाइंट्स हैं। योगी तो दुनिया में बहुत हैं। परन्तु बाबा कहते हैं एक का भी मेरे से योग नहीं है। मेरे बदले मेरे निवास स्थान ब्रह्म तत्व से योग है। जैसे भारतवासी अपने निवास स्थान, हिन्दुस्तान को अपना धर्म समझ बैठे हैं। वैसे वह भी अपने को ब्रह्म का बच्चा समझते हैं। बच्चे भी नहीं कहते। बच्चा कहें तो फिर वर्सा चाहिए। वह तो कहते कि तत्व में लीन होंगे। बाबा को तो अनुभव है। बहुत सन्यासियों, गुरूओं से अनुभव किया। अर्जुन को भी दिखाते हैं बहुत गुरू थे।

- योग से तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। बाकी बादशाही के लिए नॉलेज चाहिए। दो सब्जेक्ट हैं। बाबा भी योग में रहने का पुरुषार्थ करते हैं तब कहते ना - न बिसरो न याद रहो।

- रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं, यह तो जरूर पक्का निश्चय हो गया होगा कि हम आत्मा हैं और परमात्मा बाप के बच्चे हैं, तो सभी ब्रदर्स ही हैं। ब्रदर्स को बाप ने डायरेक्शन दिया है कि मुझ पतित-पावन बाप को याद करो। तो याद करते हो या बुद्धि का योग कहाँ और जगह भटकता है? माया भटकायेगी जरूर, न चाहते हुए भी तुम्हारी बुद्धि कहाँ न कहाँ भागती रहेगी। बच्चों के अन्दर चलना चाहिए कि बाबा ने हमको सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया है, 84 जन्मों की कहानी पढ़ाई है। यह 84 का चक्र पूरा हुआ है। हम फिर से घर जाते हैं, अनेक बार हम याद की यात्रा से पवित्र बन करके घर गये हैं। तुम्हारी बुद्धि में आता है कि हम सब भाई-भाई हैं, इसमें जिस्म की कोई बात ही नहीं है। तुम जिस्म को याद नहीं करो। सिर्फ हम आत्मा हैं - हम ही पावन, सतोप्रधान थे, अब पतित बने हैं तो हीरे जैसा जीवन बनाने वाले बाप को खुशी से याद करना है, जिससे जंक निकल जाये। तो बाप समझाते हैं बच्चे पहले-पहले अपने

को आत्मा समझो, यह भी ज्ञान है फिर बाप को याद करो - यह है विज्ञान क्योंकि आत्मा को ज्ञान से परे विज्ञान में, शान्त घर में जाना है। आत्मा का स्वधर्म भी शान्त है और घर भी शान्त है। तो पहले हमको वहाँ पहुंचने का है। बाबा भी वहाँ से आये हुए हैं। परन्तु मनुष्यों को इन सब बातों का पता नहीं है।

- कैसे भारत का धन लूटा, यह सब ज्ञान है बुद्धि के लिए भोजन। परन्तु योग ठीक नहीं होगा तो सुनने समय खुश होगा परन्तु ठहरेगा नहीं, पवित्र नहीं होगा तो ठहरेगा नहीं। इसमें किसका वश नहीं। यह शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। वह तो सभी कण्ठ कर लेते हैं। यह तो पढ़ाई है 21 जन्मों के लिए। वहाँ भल बाप के तख्त पर बैठेंगे परन्तु वह भी यहाँ की कमाई की प्रालब्ध है। देवतायें एक दो को वर्सा नहीं देते, इसलिए बाप कहते हैं मुझे याद करो। मौत सामने खड़ा है। तुमको मम्मा बाबा को फालो करना है। वह सन्यासी के नाम मात्र फालोअर्स बनते हैं। वहाँ गॉड गाडेज का राज्य है। यथा राजा रानी भगवती भगवान तथा प्रजा, इसके लिए फादर पढ़ा रहे हैं। ऐसे नहीं आशीर्वाद करेंगे। उनका पढ़ाना ही ब्लैसिंग है। टीचर को कहेंगे क्या आशीर्वाद करो तो 100 मार्क्स मिल जायें। बाबा तो पढ़ाते हैं, यह पढ़ाई सबके लिए है। क्रिश्चियन हो, बौद्धी हो - कहते हैं सर्व धर्मानि... यह सब देह के धर्म हैं ना। कहते हैं इन सबको भूल अपने को आत्मा निश्चय करो। आत्मा तो सभी इमार्टल हैं। एक बाप के बच्चे हैं ना इसलिए कहते हैं जो देह के धर्म हैं मामा, काका छोड़ अपने को अकेला आत्मा निश्चय करो और मेरे को याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे और कोई रास्ता नहीं, इसको योग अग्नि कहते हैं।

- परमात्मा को कहते हैं गॉड फादर, दु:ख हर्ता सुख कर्ता। तो उनको कितना याद करना चाहिए। परन्तु ड्रामा अनुसार याद नहीं आता। यह गीत कितना अच्छा है। घर में 3-4 रिकार्ड जरूर हों।

यह रिकार्ड भी बाप की याद दिलाते हैं। ब्राह्मण ही जानते हैं कि नई दैवी दुनिया स्वराज्य अर्थात् आत्मा को अब राज्य मिल रहा है। लौकिक बाप द्वारा जो वर्सा मिलता है वह यह नहीं कहते कि परमात्मा द्वारा मिला है। तुम जानते हो बाप से राज्य लिया फिर गॅवाया।

बच्चों ने गीत सुना कि हमारे तीर्थ न्यारे हैं। हमारा तीर्थ बहुत दूर है इसलिए बच्चों को कहा जाता है दूरादेशी भव। दूरदेश में रहने वाले फिर कहते हैं विशालबुद्धि भव। सबकी बुद्धि इस समय तुच्छ है ना। माया ने तुच्छ बुद्धि बना दिया है। तो बच्चों की है दूरादेशी बुद्धि अर्थात् दूर के रहने वाले की याद और विशालबुद्धि अर्थात् सारे सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान बुद्धि में है। और सब हैं अल्पज्ञ बुद्धि अर्थात् अल्प बुद्धि, सिर्फ कहते हैं परमात्मा, परन्तु जानते नहीं। यहाँ कोई महात्मा नहीं है। यह तो बाप आकर दूरादेशी बनाते हैं, परन्तु दूरादेशी बच्चे कम हैं। भल ज्ञान बहुत है परन्तु दूरादेशी कम हैं अर्थात् बाप की याद में कम रहते हैं। बाकी साधू तो साधना करते हैं यथा राजारानी तथा प्रजा सारी दुनिया इस समय पतित है। भल महात्मा नाम डाल देते हैं परन्तु महान आत्मा कोई है नहीं। कई फिर कृष्ण को महात्मा कहते हैं। यह फिर भी राइट है क्योंकि वहाँ श्रेष्ठाचारी दुनिया है। यह तो है भ्रष्टाचारी दुनिया। यथा राजा रानी तथा प्रजा परन्तु इस समय राजा कोई है नहीं। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। बाप कहते हैं शास्त्र पढ़ने से तुम मेरे से मिल नहीं सकते और ना ही कोई मुक्ति में जा सकते हैं। जब तक मेरे द्वारा कोई मेरे को न जाने और जब तक कल्प के अन्त में मैं न आऊं। मनुष्य तो कृष्ण को याद करते हैं वह तो इस देश का है। दूरादेशी है नहीं। तो बाप को याद करना माना दूरादेशी बनना। मनमनाभव का अर्थ है दूरादेशी भव। जो बाप को जानते नहीं तो बाप से वर्सा कैसे मिले। अगर आये नहीं तो रास्ता कैसे मिले। बड़ी समझ की बात है। साजन से बड़ा प्यार चाहिए। कहते हैं एक तू जो मिला तो सब कुछ मिला। तो एक से ही सब कुछ प्राप्ति हो जाती है। ऐसे साजन से बहुत लव चाहिए।

यहाँ तुम बच्चों की अभी है एक मत। वहाँ एक घर में हैं अनेक मत। बाप गणेश को याद करेगा तो बच्चा हनूमान को, तो अनेक मत हुई ना। यहाँ बाप से बच्चों को वर्सा मिलता है। ऐसे तो किसको भी बाबा कह देते हैं। गाँधी भी बापू था ना - परन्तु सबका बाप नहीं था। यह है बेहद का बाप। बाप आकर जंजीरों से छुड़ाते हैं। भक्ति की भी जंजीरें हैं। यह समझते थोड़ेही है कि हम पतित हैं। पतितों को पावन बनाने वाला एक बाप है। तुम एक सत्य बाप को मानते हो। और सतसंग में जाओ तो कोई मना नहीं करेंगे। यहाँ तो बिल्कुल मना की जाती है। जब तक बाप को नहीं जाना है तब तक क्लास में नहीं बैठ सकते क्योंकि जब तक याद नहीं तब तक लायक नहीं। माया नालायक बना देती है। कहते हैं मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। यह सब गाते हैं। गोया सब पतित हैं। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी गाली देते हैं। उन्हों की जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि दिखाई पड़ती है। अगर यहाँ कोई बैठकर भी औरों को याद करता रहे तो वह व्यभिचारी याद हो गई ना। भल याद पूरी रीति ठहरती नहीं है क्योंकि माया बुद्धियोग तोड़ देती है। फिर भी बाप तुम्हें बुद्धियोग लगाना सिखलाते हैं। अन्त में तुम्हारी याद ठहर जायेगी। तब अन्त के लिए गायन है कि अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। यह संस्था इसलिए वृद्धि को नहीं पाती क्योंकि यहाँ के कायदे कड़े हैं। जब तक बाप को नहीं जाना है तब तक क्लास में बैठ नहीं सकते क्योंकि यहाँ अव्यभिचारी याद चाहिए। कोई सचखण्ड का मालिक नहीं बना सकता है। तुम सचखण्ड के मालिक बाप द्वारा बनते हो। अब तो झूठ खण्ड है, कहते हैं ना - झूठी काया, झूठी माया... आधाकल्प ऐसे ही चलता है। समझो बाप ज्ञान में आता है तो रचना को भी पावन बनाना पड़े। अगर बच्चे पवित्र नहीं बनें तो कपूत ठहरे। घर में अगर एक पवित्र बने, दूसरा न बनें तो झगड़ा हो पड़ता है इसलिए मनुष्यों का हृदय विदीरण होता है।

जैसे लौकिक माँ-बाप, दादा बच्चों की बुद्धि में याद पड़ते हैं। हूबहू तुम्हारी बुद्धि में भी ऐसे है। यह सिर्फ पारलौकिक है, वह है लौकिक। तुमको निश्चय है कि यह है शिवबाबा। हमारा बाप

है तो उनको याद करना चाहिए, परन्तु बच्चे भूल जाते हैं। टाइम बहुत वेस्ट करते हैं। वेस्ट टाइम नहीं करना चाहिए क्योंकि विकर्मों का बोझा सिर पर बहुत है। आत्मा में खाद पड़ गई है।

- बच्चे गरीब-निवाज़ बाप को जान चुके हैं और बाप की याद में बैठे रहते हैं। भल ऑखों से किसको भी देखें, कर्मेन्द्रियों से कर्म भी करें परन्तु गाया जाता है हाथों से कर्म करते रहो, दिल माशूक तरफ लगाते रहो। ब्राह्मण कुल भूषण जानते हैं और उनसे ही बाप बात करते हैं कि आधाकल्प तुमने बाप को याद किया। ड्रामा अनुसार अब तुमको बाप की स्मृति आई है कि सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। सारी दुनिया विस्मृति में है। बाप की रचना को और बाप के पतित से पावन बनाने वा सर्व की सद्गति करने के कर्तव्य को कोई भी नहीं जानते।

- जिस समय ओम् शान्ति कहते हैं तो उसका यथार्थ अर्थ है मैं आत्मा सालिग्राम उस ज्योति स्वरूप परमात्मा की संतान है हम भी वही पिता ज्योतिर्बिन्दू परमात्मा के मुआफिक आकार वाली हैं। बाकी हम सालिग्राम बच्चे हैं तो इन्हों को अपने ज्योति स्वरूप परमात्मा के साथ योग रखना है जिससे ही अपने को योग रखना और लाइट माइट का वर्सा लेना है। तभी तो गीता में स्वयं भगवान के महावाक्य है मुझ ज्योति स्वरूप आकारी रूप में स्थित हो जाओ, इसको ही अजपाजाप कहा जाता है। अजपाजाप माना कोई भी मंत्र जपने के सिवाए नेचुरल उस परमात्मा की याद में रहना, इसको ही पूर्ण योग कहते हैं, योग का मतलब है एक ही योगेश्वर परमात्मा की याद में रहना। तो जो आत्मायें उस परमात्मा की याद में रहती हैं, उन्हों को योगी अथवा योगिनियां कहा जाता है। जब उस योग अर्थात् याद में निरंतर रहें तब ही विकर्मों और पापों का बोझ नष्ट होता है और आत्मायें पवित्र बन जिससे फिर भविष्य जन्म देवताई प्रालब्ध पाते हैं। अब यह चाहिए नॉलेज तब ही योग पूरा लग सकता है तो अपने को आत्मा समझ परमात्मा की याद में रहना, यह है सच्चा ज्ञान।

- बाप ने कहा है "आत्म-अभिमानी भव।" तुम अपने को विचित्र समझते हो तो याद भी विचित्र परमात्मा को करते हो। बाप रचयिता है तो जरूर नई दुनिया ही रचते हैं। उसमें लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। लक्ष्मी-नारायण का चित्र भी बनाया है और लिखा हुआ है सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण... लक्ष्मी-नारायण महाराजा महारानी तो नशा रहता है कि हम बाप को याद कर यह बन रहे हैं। तो सदैव बाबा-बाबा कहते रहो और भविष्य पद को भी याद करो तो सतयुग में चले जायेंगे। जैसे एक मिसाल देते हैं - मैं भैंस हूँ, मैं भैंस हूँ... कहने से भैंस समझने लगा। परन्तु कहने से कोई बन नहीं जाता है।

- बाबा पूछते हैं कब से निश्चय हुआ? अगर निश्चय है तो ऐसे बाप को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। जब तक बाप न कहे कि पढ़कर पढ़ाओ। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। जैसे गरीब को लॉटरी मिलती है तो पागल भी हो जाते हैं। परन्तु यहाँ तो बच्चे धन्धे में जाकर भूल जाते हैं। तो बाबा समझते हैं इतनी बड़ी लॉटरी दी परन्तु पागल हो गये। तकदीर में नहीं है, तब कहा जाता है बख्तावर देखना हो तो यहाँ देखो, .. बाबा तो कहते हैं कल्प के बाद बाबा मिला है। बाबा-बाबा कहते रहो, सवेरे उठकर याद करो, जो प्यारी वस्तु होती है उन पर कुर्बान जाते हैं। हम भी बाबा पर कुर्बान जाते हैं। यह ज्ञान कस्तूरी है। हम हैं भारत का बेड़ा पार करने वाले। सत्य नारायण, अमरनाथ की कथा, तीजरी की कथा सुनाने वाले, सच्चे बाप के सच्चे ब्राह्मण बच्चे, तो अन्दर कोई खोट नहीं होनी चाहिए। खोट होगी तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।

- अब बाप कहते हैं बच्चे यह पढ़ाई पढ़ो। देवता बनना है तो यह पढ़ाई पढ़ना है। श्रीमत पर चलना है। पहले-पहले बाप कहते हैं अपने को सतोप्रधान बनाना है इसलिए मामेकम् याद करो। दैवीगुण भी धारण करने हैं। भाई-भाई समझ एक बाप को याद करो। बाप से यह वर्सा लेना है।

यह भी बुद्धि में है। लोग उनकी स्तुति करते फिर दूसरे तरफ उनकी ग्लानी भी करते क्योंकि जानते ही नहीं हैं। कहते हैं कुत्ते बिल्ली में है, सब परमात्मा के रूप हैं। जितना हो सके कोशिश करनी है बाप को याद करने की। भल आगे भी याद करते थे। परन्तु वह थी व्यभिचारी याद , बहुतों को याद करते थे। अब बाप कहते हैं अव्यभिचारी याद में रहो सिर्फ मामेकम् याद करो। भक्तिमार्ग में जिसको तुम याद करते आये हो - सब अभी तमोप्रधान हो गये हैं। आत्मा तमोप्रधान है तो खुद तमोप्रधान, तमोप्रधान को याद करते हैं। अब फिर सतोप्रधान बनना है। वहाँ भक्ति ही नहीं जो याद करना पड़े। बाप समझाते हैं बच्चे बस यही फुरना रखो कि हम सतोप्रधान कैसे बने?

तुम्हारी यह लाइफ मोस्ट वैल्युबुल है, इसमें कौड़ी से हीरे जैसा बनना है। है सारी बुद्धि की बात। तुम्हें बाबा की याद में रहना है। आजकल तो मौत के लिए अनेक बाम्ब्स बनाये हैं। मनुष्यों ने तो कोई गुनाह नहीं किया है। आगे तो लड़ाई हमेशा शहर से बाहर मैदान में होती थी फिर विजय पाकर शहर के अन्दर आते थे। आजकल तो जहाँ देखो वहाँ बाम्ब्स ठोक देते हैं। बच्चों को कहाँ भी आना-जाना है तो बाप की याद में रहकर औरों को याद कराना है। तुम्हारी तो ब्रान्चेज खुलती ही रहेंगी। दान क्या करना चाहिए, सो भी तुम बच्चे ही समझते हो। उत्तम से उत्तम दान है अविनाशी ज्ञान रत्नों का। घर-घर में तुम यह हॉस्पिटल खोल दो। तुम्हारे हॉस्पिटल में दवाई आदि कुछ भी नहीं है, सिर्फ बाप का परिचय देना है कि उठते-बैठते बाप को याद करो। ऐसे नहीं कि एक जगह बैठ जाना है। यह तो जब कोई याद नहीं करते हैं तो संगठन में बिठाया जाता है, संगठन में बल मिलेगा। संग तारे कुसंग बोरे। बाहर जाने से फिर भूल जाते हैं। बाप ने समझाया है, सवेरे उठ बाप को याद करो, याद का चार्ट रखो। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। बहुत जगह योग आश्रम हैं। वह सब हठयोग सिखाते हैं, उनसे कोई फायदा नहीं है। उसको हठयोग कहा जाता है। राजयोग मनुष्य, मनुष्यों को सिखला न सकें। विलायत में जाते हैं भारत

का प्राचीन योग सिखाने। परन्तु वह सब है ठगी। सर्वोत्तम सन्यास तो तुम्हारा है। तुम पुरानी दुनिया का सन्यास करते हो। यह बाप ही आकर सिखलाते हैं। बाप कहते हैं बुद्धि से पुरानी दुनिया का सन्यास करो। तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है। 5 विकारों का सन्यास करना है, फिर युक्ति मिलती है। अनेक जन्मों का सिर पर जो पाप है वा इस जन्म में जो पाप किये हैं वह कैसे छूटें? उसका प्रायश्चित कैसे हो? बाप कहते हैं कल्प-कल्प तुम बच्चों को मैं समझाता हूँ - बाप को याद करना है और चक्र भी घुमाना है। तुम्हारा स्वदर्शन चक्र फिरता रहता है। इस चक्र से तुम्हारे सब पाप नाश हो जाते हैं। स्वदर्शन चक्र की कितनी महिमा है। उन्होंने फिर दिखाया है श्रीकृष्ण ने स्वदर्शन चक्र चलाया, कितने मर गये। वह तो हैं सब दन्त कथायें। तुम बच्चों को अर्थ समझाया जाता है।

जितना-जितना रावण पर जीत पाते जायेंगे उतनी याद से शक्ति मिलती जायेगी। बच्चों को टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। बाबा कहते हैं कि बच्चे सर्विस करते-करते थक मत जाना। कोटों में कोई ही निकलते हैं। फिर भी माया का थप्पड़ लगने से फेल हो जाते हैं। माया भी सर्वशक्तिमान् है तो बाबा भी सर्वशक्तिमान् है। आधाकल्प तो माया भी जीत लेती है ना। तो बाप को याद करना है और श्रीमत लेते रहना है।

बाम्बस आदि गिरते हैं तो मकान, जायदाद आदि सब खत्म हो जाता है। शरीर भी खत्म हो जाते हैं। यह तुम देखेंगे - बड़ा भयानक सीन आने वाला है। उस समय ज्ञान में आ नहीं सकेंगे। अब यह भगवान बैठ समझाते हैं। बच्चे जानते हैं - हम आये हैं भगवान से पढ़ने। तुम कितने तकदीरवान हो। यह भी सबको निश्चय नहीं है, निश्चय हो तो भगवान से क्यों नहीं पढ़े। रात दिन बत्तियां जगाकर मर-झुरकर, भोजन न खाकर भी एकदम पढ़ने को लग पड़े। वाह यह तो 21 जन्मों की कमाई है। बहुत अच्छी रीति पढ़ने को लग जाये। पढ़ाई भी क्या है, मुख्य है ही बाप

को याद करना। बाबा को बहुत तरस आता है। बाबा जानते हैं बच्चे घूमने फिरने जाते हैं, एक भी बाप की याद में नहीं रहते। झरमुई झगमुई बहुत करते हैं। बच्चों को बहुत ओना रहना चाहिए। बस टाइम बहुत थोड़ा है। भारत कितना बड़ा है। बहुत सर्विस है। पहले अपनी जीवन तो सुधार लें। बाबा बहुत बार कहते हैं - बच्चे झरमुई झगमुई मत करो। यह बातें छोड़ दो, अपना जीवन सुधारो। सबको आपस में लड़ मरना है। ड्रामा की भावी ऐसी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में टाइम तो लगता है ना। अपनी दिल से पूछना है कि हम कितना समय याद करते हैं? सच्ची दिल से बहुत प्यार से युक्तियुक्त याद कोई 5 मिनट भी मुश्किल करते हैं। बहुत लव से याद किया जाता है। बिगर लव कभी किसको याद करते हैं क्या? बहुत हैं जो लाचारी हालत में याद करते हैं। लव से याद करना आता ही नहीं। सच्ची दिल पर साहेब राजी। देखो - बाबा एक ही आवाज करते हैं मनमनाभव अर्थात् याद करो तो तुम्हारे सब पाप कट जायेंगे। हम ही तुम्हारा दोस्त हूँ। बाकी तो सब हैं दुश्मन। तुम एक दो के भी दुश्मन हो। बहुत आपस में लड़ते झगड़ते हैं तो दोस्त कैसे ठहरे। बाप कहते हैं अगर आत्मा भाई-भाई समझो तो दुश्मनी सारी खत्म हो जाए। न नाक, न कान, न मुख है.. तो दुश्मनी किससे रखेंगे। शरीरों को देखो ही नहीं। तुम भी आत्मा, वह भी आत्मा तो दुश्मनी निकल जाती है। बहुत मेहनत है। बिगर मेहनत कुछ मिलता है क्या? उस पढ़ाई में भी कितना माथा मारते हैं। सहज भी है। बाप कहते हैं - सिमर सिमर सुख पाओ। यह तो जानते हो कि भक्ति मार्ग में सिमरसिमर दु:ख ही पाया है, जिसको सिमरते हैं - उनके आक्यूपेशन का पता नहीं। कितने को सिमरते हैं, हनूमान को सिमरो, गणेश को सिमरो...एक है सिमर-सिमर सुख पाओ, दूसरा है सिमर-सिमर दु:ख पाओ क्योंकि भक्ति रात है ना। शिवबाबा की रात थोड़ेही हो सकती। रात में धक्का खाया जाता है। पहले नम्बर में यह (ब्रह्मा) धक्का खाते हैं। उसके साथ तुम ब्राह्मण भी साथी हो। ब्राह्मणों का सारा कुल है, जो भी ब्राह्मण बनते हैं वह आकर सुख पाते हैं सिमरने से। तुम सबको कहते हो कि शिवबाबा को याद करो तो पाप कट जायेंगे। तुम एक बाप का सिमरण करते हो, मनुष्य तो अनेकों का सिमरण

करते-करते पाप आत्मा बन जाते हैं। सीढ़ी उतरते जाते हैं। अब तुम एक बाप को याद करो, अर्थ सहित। बाप कहते हैं मैं आया ही हूँ वर्सा देने, पावन बनाने। अर्थ है ना। शिवबाबा पतित-पावन है - यह किसको पता भी नहीं है। कोई आकर बतावे तो सही कि कैसे आकर पावन बनाते हैं। तुम्हारे पास यहाँ बैठे भी पूरी रीति जानते ही नहीं है। माया भुलाने वाली कोई कम नहीं है। तुम खुद कहते हो बाबा हम याद करते हैं, माया भुला देती है। बाबा कहते हैं अरे तुम बाबा को याद नहीं करेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा। बाप के सिवाए कोई वर्सा देगा! जितना बाप को याद करेंगे उतना वर्सा आटोमेटिकली मिलेगा। सीधा समझाते हैं - राजाई स्थापना हो रही है, इसमें सूर्यवंशी भी बनते हैं। कितने मनुष्यों के कान तक आवाज पहुंचाना है। बाबा कहते हैं बच्चे, मन्दिरों में जाओ, गली-गली में जाकर सर्विस करो। बाबा के भक्त सो देवताओं के भक्त, जैसे मन्दिरों वा सतसंगों में बैठे रहते हैं, बुद्धि कहाँ न कहाँ धन्धेधोरी, मित्र सम्बन्धियों आदि तरफ दौड़ती रहती, धारणा कुछ भी नहीं। यहाँ भी ऐसे हैं जो कुछ भी सुनते नहीं, झुटका खाते रहते हैं। बाप को देखते नहीं, अरे ऐसे बाप को तो कितना न अच्छी रीति देखना चाहिए। सामने टीचर बैठा है। बाप कहते हैं मैं इन कर्मेन्द्रियों द्वारा तुमको पढ़ाता हूँ। आत्मा पढ़ती है। बाप आत्माओं से बात करते हैं। आंख, कान, नाक आदि पढ़ते हैं क्या? पढ़ने वाली आत्मा है। दुनिया में यह किसको पता नहीं है क्योंकि देह-अभिमान है ना। आत्मा में ही सब संस्कार हैं। बाप कहते हैं आत्मा को देखो, कितनी मेहनत की बात है। मेहनत बिगर विश्व के मालिक थोड़ेही बनेंगे। मेहनत करेंगे तब विश्व के मालिक बनेंगे।

गरीब से साहूकार अभी तुम फिर बनते हो। पुरूषार्थ तुम बच्चों को करना है। युक्तियाँ रोज बतलाते हैं। जितना टाइम फुर्सत मिले यह याद की कमाई करनी है। ऐसे बहुत काम होते हैं जिनमें बुद्धि नहीं लगानी होती है। कोई- कोई में बुद्धि लगानी पड़ती है। तो जब फुर्सत मिलती है, घूमने फिरने जाते हो तो बाप की याद में रहो। यह कमाई बहुत करनी है। यह है सच्ची कमाई।

बाकी तो वह है अल्पकाल के लिए झूठी कमाई। यह शिक्षा तुम बच्चों को अभी ही मिलती है। तुम जानते हो कि हमको बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेना है, इसमें कोई भी तकलीफ नहीं है। घरबार भी नहीं छुड़ाते हैं। सिर्फ कहते हैं बच्चे विकार में नहीं जाना है। इस पर ही अक्सर करके झगड़ा चलता है। और सतसंगों में ऐसे झगड़े थोड़ेही होते हैं। वहाँ तो जो सुनाया वह सत-सत कहकर चले जाते हैं। झगड़ा यहाँ होता है। इस रूद्र ज्ञान यज्ञ में असुरों के विघ्न जरूर पड़ेंगे।

आत्माओं को स्वर्गवासी बनाओ। स्वर्ग की चाहना तो सब रखते हैं ना। कोई मरता है तो कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। उनसे पूछना चाहिए कि जब वह स्वर्ग में गया तो फिर नर्क में बुलाकर ब्राह्मण आदि क्यों खिलाते हो। फिर तो यह अज्ञान अन्धियारा हुआ। तुम यहाँ से सूक्ष्मवतन में ले जाकर खिलाते हो क्योंकि तुम जानते हो यह पवित्र भोजन है। वह जो मर जाते हैं उनको पवित्र भोजन थोड़ेही मिलता होगा। लिखते हैं बाबा फलाने का भोग लगाओ-तो उनको पवित्र भोजन मिले। गाया हुआ है देवतायें भी ब्रह्मा भोजन को पसन्द करते हैं। बरोबर तुम्हारी महफिल सूक्ष्मवतन में लगती है। ऐसे नहीं कि ध्यान कोई अच्छा है। नहीं, योग को ध्यान नहीं कहा जाता और ध्यान को योग नहीं कहा जाता। बाप कहते हैं मेरे साथ बुद्धियोग लगाओ तो विकर्म विनाश होंगे। वैकुण्ठ में जाकर रास-विलास करते हैं, वह कोई कमाई नहीं है। मुरली तो सुन नहीं सकते। यह भोग आदि तो एक रसम-रिवाज है ड्रामानुसार। मनुष्यों की रसम-रिवाज और संगमयुगी ब्राह्मणों की रसम-रिवाज में रात-दिन का फर्क है। यहाँ से जाकर सूक्ष्मवतन में खिलाते हैं। इन बातों को जब तक नये समझें नहीं तब तक संशय उठता है। हम कहेंगे ड्रामा अनुसार इसकी तकदीर में नहीं है तो संशय पड़ा और चला गया। फिकर की बात नहीं, इनकी तकदीर में नहीं था। पहली बात भूल जाते हैं कि हमको बाप से वर्सा लेना है। कोई बात में संशयबुद्धि बन पड़ते हैं। अरे हमारा काम है वर्से से। हम पढ़ाई फिर क्यों छोड़े। मुरली तो सुनना है ना। निराकार बाप तुमको डायरेक्शन कैसे सुनायेंगे, उनको मुख जरूर चाहिए। ब्रह्मा मुख से अथवा ब्रह्माकुमार कुमारियों से सुनना है। कोई बाहर में दूर चले जाते हैं। मुरली भी नहीं मिल

सकती है तो बाप कहते हैं कोई हर्जा नहीं है। तुम याद में रहो और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। यह बाप की श्रीमत मिली हुई है। कहाँ भी हो, तुम लड़ाई के मैदान में हो। बाप मिलेट्री वालों को भी समझाते हैं कि तुमको वह सर्विस तो करनी है, यह तो तुम्हारा धन्धा है। शहर की सम्भाल करना है। तुम पघार खाते हो, एग्रीमेंट की हुई है तो सम्भाल भी करनी है। बुद्धि में लक्ष्य तो बैठा हुआ है। बेहद का बाप स्वर्ग का रचयिता है, वह कहते हैं बच्चे तुम मेरी याद में रहो तो विकर्म विनाश होंगे। शिवबाबा की याद में रहकर खाओ तो कोई ऐसी चीज होगी वह पवित्र हो जायेगी। जितना हो सके परहेज भी रखनी है। लाचारी हालत में बाबा को याद करके खाओ। इसमें ही मेहनत है। ज्ञान को युद्ध नहीं कहा जाता, याद में ही युद्ध होती है। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। माया का थप्पड़ नहीं लगेगा। देह-अभिमानी नहीं बनेंगे। तुम अपने को आत्मा समझो। तुम शरीर को याद करते रहते हो, आत्मा को भूल गये हो। इसलिए पूछा जाता है-आत्मा का बाप कौन है, उनको जानते हो? उनका नाम रूप देश काल लिखो। उनमें भी वैरायटी लिखते हैं। कोई लिखते आत्मा का बाप हनूमान है, कोई क्या लिखते, कितना अज्ञान है। तो फिर समझाया जाता है-आत्मा तो है निराकार। तुम्हारा गुरू तो साकार है। निराकार का बाप साकार कैसे होगा। समझाने की प्रैक्टिस पर सारा मदार है और साथ में मैनर्स भी अच्छे चाहिए। बहुत अच्छे-अच्छे बोलने वाले हैं। दूसरे को तीर अच्छा लग जाता है। खुद में मैनर्स न होने कारण उन्नति होती नहीं। याद बहुत अच्छी चाहिए। कोई तो ज्ञान बहुत अच्छा सुनाते हैं, योग कुछ भी नहीं। ऐसे नहीं कि योग बिगर ज्ञान की धारणा नहीं हो सकती है। धारणा तो हो जाती है। समझो किसको हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं, वह तो झट बुद्धि में बैठ जायेगा। बाबा की याद का कुछ भी बुद्धि में नहीं होगा। मास-मदिरा भी खाते होंगे। यह तो एक कहानी है, वह याद पड़ना तो सहज है। हिस्ट्री-जॉग्राफी बुद्धि में आ जाती है। याद की बात ही नहीं। पवित्रता की भी बात नहीं। ऐसे भी बहुत हैं। शिवबाबा को याद नहीं करते तो विकर्म विनाश होते नहीं। और ही जास्ती विकर्म करते रहते हैं। इतना भी बुद्धि काम नहीं करती कि यह विकर्म है। फरमान न मानना, यह तो बड़ा पाप है। शिवबाबा का फरमान है ना-यह करो। उनका फरमान नहीं मानेंगे

तो बड़ा धोखा खायेंगे। बाकी हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाना तो बड़ा सहज है। बाबा ने समझाया है तुम स्कूलों में भी जाकर समझा सकते हो। यह तुम हद की हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ते हो। बेहद की तो तुम पढ़ते नहीं हो। लक्ष्मी-नारायण का राज्य बताओ कहाँ गया? सूर्यवंशी, चन्द्रंवशी डिनायस्टी जो चली वह फिर कहाँ गई? उन्हों का राज्य किसने छीना? किसने चढ़ाई की? तुम बच्चे ही जानते हो कि यह चक्र कैसे फिरता है। यह किसको भी समझाओ तो 7 रोज में बुद्धि में आ जायेगा। परन्तु मैनर्स नहीं। ऐसे नहीं कि विकार में जाने से हिस्ट्रीजॉ ग्राफी को भूल जायेंगे। सारी बात योग की मुख्य है। योग में ही माया धोखा देती है। तुमको सर्वगुण सम्पन्न... यहाँ ही बनना है। कई प्रतिज्ञा करके भी फिर ठहर नहीं सकते हैं। माया बड़ी प्रबल है ना। बाप को पूरा याद नहीं करते है तो विकर्म विनाश नहीं होते हैं और ही डबल विकर्म करते रहते हैं। उनको पता भी नहीं पड़ता और कहने से भी समझ नहीं सकते। तुम बच्चे जानते हो कि बाप गरीब निवाज, रहमदिल है। हम बच्चों को खास और सबको आम समझाते रहते हैं। इनपर्टाक्युलर (खास) हम सुखधाम में जाते हैं। इनजनरल (आम) मुक्तिधाम में जाते हैं। सतयुग में बरोबर इन लक्ष्मीनारा यण का ही राज्य था-फिर चन्द्रवंशी, उनके बाद इस्लामी, बौद्धी आदि आये हैं तो वह आदि सनातन धर्म गुम हो गया है। बड का झाड़ कलकत्ते में जाकर देखो, फाउन्डेशन है नहीं, सारा झाड़ खड़ा है। यह भी ऐसे है। अब फिर से स्थापना हो रही है।

बाप कहते हैं कि मीठे-मीठे बच्चे मुझ बाप को याद करो। भूलो नहीं। मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने आया हूँ। तुम नर्क के मालिक बनाने वालों को भूलते नहीं हो और मुझ बाप को भूल जाते हो? माया जरूर भुलायेगी। परन्तु तुम कोशिश करो याद में रहने की। आत्मा को बाप ज्ञान देते हैं। आत्मा का काम है बाप से वर्सा लेना। देह-अभिमान छोड़ना है। तुम बच्चों को पुरूषार्थ कराने वाला एक बाप है। यह पाठशाला है, इसमें दर्शन करने की बात नहीं रहती।

प्रिन्सीपाल का दर्शन करना होता है क्या? यह तो समझने की बात है। यह राजयोग की पाठशाला है, आकर समझो।

- कई बच्चे अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में मूँझते हैं। अरे तुम आत्मा हो ना। तुम्हारा बाप है शिव। जैसे आत्मा आरगन्स बिना कुछ भी कर नहीं सकती वैसे निराकार बाप को भी तो आरगन्स चाहिए ना। वह इनमें आकर समझाते हैं। आत्मा का रूप क्या है, परमात्मा का रूप क्या है! यह तो कहने मात्र कहते हैं - परमात्मा का रूप बिन्दी है।

- सतयुग त्रेता में 21 जन्म, द्वापर कलियुग में 63 जन्म क्यों होते हैं? क्योंकि पतित बनने से आयु कम हो जाती है। आधाकल्प आयु बड़ी होती है। अभी तुम योग सीखते हो। तुम बच्चे यहाँ योग वा याद सीखने के लिए नहीं आये हो। यहाँ तुम आते हो सम्मुख मुरली सुनने। मुरली तो बहुत प्यारी लगती है। योग तो तुम कहाँ भी बैठकर कर सकते हो। स्टूडेन्ट के इम्तहान का जब टाइम होता है तो कहाँ भी होंगे बुद्धि में इम्तहान की ही बातें घूमती रहेंगी। यहाँ तुम्हारी पढ़ाई और योग इकट्ठे हैं। पढ़ाने वाले को भी याद करना पड़े। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। भूल से कृष्ण का नाम डाल दिया है। सन्यासी आदि तो कृष्ण को याद करते नहीं हैं। बाकी किसने कहा मनमनाभव? तत्व वा ब्रह्म तो नहीं कह सकता। बाप इस मुख का आधार लेकर कहते हैं-बच्चे मामेकम् याद करो। कृष्ण कैसे कहेगा! कृष्ण की आत्मा किसमें प्रवेश हो कहे वह भी नही हो सकता। यह सब प्वाइंट्स बुद्धि में धारण करनी होताा है, फिर समझाना होता है। कांग्रेसी लोग कितना आवाज से बोलते थे। उन्हों का लीडर था-बापू जी। वह था जिस्मानी बापू जी। यह है फिर रूहानी बाप। सभी का बाप तो गांधी जी हो न सके।

- अब फिर भगवान आये हैं स्वर्ग की स्थापना करने। यह बातें बुद्धि में अच्छी रीति बैठ जाएं तो भी अहो सौभाग्य। माया ऐसी है जो बिल्कुल ही पुरूषार्थ करने नहीं देती। नाक से पकड़ घूंसा मार एकदम बेहोश कर देती है। बॉक्सिंग है ना। बाबा कहते हैं माया एक सेकेण्ड में गिरा देती है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति से सेकेण्ड में जीवनबंध बन पड़ते हैं। फारकती दे देते हैं, खलास। निश्चय हुआ-यह बादशाही लो। संशय हुआ खलास। बड़ा वन्डरफुल खेल है। बाबा कहते हैं अमृतवेले उठ विचार सागर मंथन करो और तो टाइम सारे दिन में मिलता नहीं है। रात को तो वायुमण्डल खराब रहता है। भक्ति भी सवेरे उठकर करते हैं। तुम बच्चों को मालूम है कि बाबा एक दो बजे उठकर मुरली लिखते थे, जो तुम पढ़कर फिर क्लास कराते थे। फिर बाबा बैठ सुनते थे कि देखें कैसे मुरली चलाते हैं। यह सब तो शिवबाबा का ही कमाल था। कितने अच्छे-अच्छे बच्चे थे, चले गये। आज हैं नहीं। माया ने एकदम श्रापित कर दिया। बाप तो वर्सा दे रहे हैं। तो बच्चों को पूरा पुरूषार्थ कर वर्सा लेना चाहिए। अच्छी रीति खुद भी समझते हैं। बाप भी समझते हैं। बाप का हाथ छोड़ देते हैं। सब कहेंगे तुमने बी.के. को छोड़ दिया है। तुमको तो निश्चय था ना कि हम बेहद का वर्सा पा रहे हैं फिर क्या हुआ जो मुरली भी नहीं सुनते हो। फिर तो बाप को भी नहीं याद करते होंगे। फिर वह याद आदि सब उड़ जाती है। ऐसी दुर्गति शल किसी बच्चे की न हो। बाप तो समझ सकते हैं ना - यह बच्चा बड़ा खराब हो गया है। अच्छे-अच्छे बच्चे भी संगदोष में खराब हो पड़ते हैं। बाबा कहते हैं कि फर्स्टक्लास बच्चे ही विजय माला के मणके बन सकते हैं। कई बच्चे लिखते हैं कि बाबा हम आपकी माला का मणका जरूर बनेंगे। बाबा तो कहते हैं तुम बनो - अहो सौभाग्य। बाप भी चलन से समझ जायेंगे।

- बाबा की याद में शरीर भी छूट जाए तो अच्छा है। सदैव तैयार रहना चाहिए। माया का वार अच्छे-अच्छे बच्चों पर भी हो जाता है। कोई तो ऐसे मूर्ख बन जाते हैं, कहते हैं कि हमारा तो डायरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन है। परन्तु ब्रह्मा के आगे तो जरूर आना पड़ेगा ना। अच्छा घर में भी जाकर बैठ जाओ फिर मुरली कैसे सुनेंगे! क्या करेंगे? कहते यह ब्रह्मा भी पुरुषार्थी है,

हम भी पुरुषार्थी हैं। पढ़ते तो सब शिवबाबा से हैं, परन्तु ब्रह्मा पास आयेंगे तब तो सुनेंगे ना। प्रेरणा से सुनकर दिखाओ तो मालूम पड़े। फिर कभी-कभी बाबा मुरली बंद भी कर देते हैं।

बच्चों ने ज्ञान सुना और बाबा कहा तो वर्सा मिलना ही है। एक तो बाप को दूसरा सृष्टि चक्र को याद करना है और तो कोई तकलीफ नहीं। बाप जानते हैं कि बच्चों ने भक्ति मार्ग में बहुत तकलीफ देखी है, अभी और क्या तकलीफ बच्चों को देवें। जितना भक्ति में मेहनत उतना यहाँ चुप रहना है। जितना योग में रहेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। कहते हैं ना - त्वमेव माताश्च पिता...दूसरे लौकिक माँ बाप, भाई, बन्धु इस समय सब दुःख देते हैं। यह फिर सबको सुख देते हैं, सदा सुखी बनाते हैं।

मुख्य है ही योग। बापदादा जिससे स्वर्ग की बादशाही का वर्सा मिलता है उनको याद भला क्यों नहीं करेंगे। सारा कल्प तो देहधारी को याद किया है। अब याद करना है - विदेही को, विचित्र को। जिनका कोई चित्र नहीं, उनको आना जरूर पड़ता है। गाया भी जाता है ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण देवता क्षत्रिय धर्म की स्थापना। यह तो सीधी बात है। ब्राह्मणों का दूसरा कोई है भी नहीं। तुम जानते हो शिवबाबा हमारा टीचर भी है, सतगुरू भी है। सतगुरू तो एक ही है।

मनुष्य जो ऊंचे धनवान होते हैं वह बड़ी रॉयल्टी से रहते हैं। अपनी पोजीशन का नशा रहता है। तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप की याद में रहना यही देही-अभिमानी अवस्था है, जिससे तुम्हारा बहुत फायदा है। तुम बच्चे जानते हो कि हम ईश्वरीय सन्तान, ब्रह्मा की सन्तान हैं। बाबा कहते हैं तुम मेरे बच्चे हो ही, अभी तुमको ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूँ। तुम्हें यह नशा रहना चाहिए - हम निराकारी और साकारी ऊंच ब्राह्मण कुल के हैं।

बाप ही कहते हैं मुझे याद करो तो मैं वर्सा दूँगा। बाबा बच्चों को समझाते रहते हैं कि मामेकम् याद करो और कोई भी नाम-रूप को याद नहीं करो। साकार मनुष्यों के फोटो आदि तो जन्म-जन्मान्तर इकट्ठे करते आये हो, उपासना करते आये हो। देवताओं आदि के चित्र रखना यह सब तुम्हारा छूट जाता है। भक्तिमार्ग में आत्मायें बाप को याद करती हैं। शरीर को तो तब याद करते जब देह-अभिमानी बनते हैं। बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। आत्मा ही पतित दु:खी बनी है। आत्मा कहती है मैं महाराजा था, अब रंक बन गया हूँ। तुमको अब स्मृति आई है, हम बाबा के बच्चे हैं। बाप से हमने वर्सा पाया था। अब बाप कहते हैं सबको बाप का परिचय दो। इन जैसा शुभ कार्य होता नहीं। इस शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। शरीर पर तो भरोसा नहीं है। न जवान पर न बूढ़े पर इसलिए जो कुछ करना है सो आज करना चाहिए। आजकल करते-करते काल खा जायेगा। बाप ने कितनी बड़ी हॉस्पिटल कम युनिवर्सिटी खोली है, जिससे हेल्थ वेल्थ हैपीनेस मिलती है।

बाप रूहानी सर्जन है, तुम उनके बच्चे कहलाते हो; तो तुम भी सर्जन ठहरे। जरूर आत्माओं को ज्ञान इन्जेक्शन लगाना पड़े। मनमनाभव। यह बड़े ते बड़ा इन्जेक्शन है। बाबा की याद से ही सब दु:ख दूर हो जाते हैं। योग से पुण्य आत्मा बन जाते हो। यह एक ही दवाई है योग की। बच्चा जन्मता है, बाप की गोद में जाता है और वर्से का मालिक बन जाता है। तुमको अभी पता है कि हम बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं याद से। याद में ही अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं, इसलिए याद को पक्का करते जाओ। सिर्फ 3 पैर पृथ्वी के लेकर यह हॉस्पिटल खोलो। यह 3 पैर हैं ना!

पुकारते भी हैं हे पतित-पावन, बच्चे जानते हैं कि अभी पुरूषोत्तम संगमयुग है। यह भी किसको अच्छी रीति याद रहता है, किसको याद नहीं रहता है। घड़ी-घड़ी भूल जाता है। परन्तु तुमको अगर संगमयुग याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ा रहे। बाप टीचर याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ा रहे। किसको बड़ा रोला (विघ्न) बीच में पड़ता, किसको थोड़ा पड़ता। पड़ता तो जरूर है। कई ऊपर जाकर फिर नीचे आ जाते हैं। कोई की अवस्था अच्छी होती है तो दिल पर चढ़ जाते हैं, फिर नीचे गिरते हैं तो की कमाई चट हो जाती है। जैसे दुनिया में कितना दान-पुण्य करते हैं इसलिए कि पुण्य आत्मा बनें। फिर अगर पुण्य करते-करते पाप कर्म करने लग पड़ते तो पाप आत्मा बन पड़ते हैं। तुम्हारा पुण्य है ही बाप को याद करने में। याद से ही तुम्हारी आत्मा पुण्य आत्मा बनती है। तो अगर बाप को ही भूल जायें, दूसरे का संग लग जाए तो बहुत पाप करने से जो कुछ पुण्य किया वह भी खत्म हो जाता है।

बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जायेंगे। विचार करो कि हम कितना याद करते हैं। जो पुराना हिसाब खत्म भी हो और नया जमा भी हो। कितना कोई जमा करते हैं, इसमें धन आदि की बात नहीं है। यह तो है कि पाप कैसे मिटे? मूल बात है ही पवित्र बनने की। ऐसे भी नहीं समझो कि बाबा को लिखकर देने से कोई जन्म-जन्मान्तर का खत्म हो जायेगा। पापों का बोझा जन्म-जन्मान्तर का बहुत है। वह सब नहीं कटते हैं। इस जन्म में जो किये हैं, उसकी हल्काई हो जाती है। बाकी तो मेहनत बहुत करनी पड़े। जितना याद में रहेंगे उतना पापों का बोझा हल्का होता जायेगा। कोई बच्चे बहुत मेहनत करते हैं, लाखों को रास्ता बताते हैं। 84 जन्म का चक्र समझाते हैं। जन्मों के हिसाब को तुम जानते हो। विचार करो कितना योगबल है, हमारा जन्म कब होगा? सतयुग आदि में हो सकेगा? जो बहुत पुरूषार्थ करेंगे वही सतयुग आदि में जन्म ले सकेंगे। वह कोई छिपा थोड़ेही रहेगा। ऐसे मत समझो कि सभी कोई सतयुग में आयेंगे। कोई तो पिछाड़ी में आकर थोड़ा बहुत ले लेते हैं। जो जास्ती

कमाई करते हैं वह जल्दी आते हैं। कम कमाई करते तो देरी से आते हैं इसलिए बाप को तो बहुत याद करना चाहिए और है भी बहुत सहज। जो अच्छी रीति याद करेंगे उनको ख़ुशी रहेगी। हम जल्दी नई दुनिया में आयेंगे। राजा बनना है तो प्रजा भी तो बनानी है ना। प्रजा ही नहीं बनायेंगे तो राजा कैसे बनेंगे। कोई सेन्टर खोलते हैं। उनकी कमाई भी बहुत होती है। फायदा होता है तो 2-3 सेन्टर भी खोलते हैं। सेन्टर तो बाबा भी खोलते रहते हैं। जो करते हैं उनका हिसाब उसमें आ जाता है। मिलकर तुम सब दु:ख का छप्पर उठाते हो ना! सबका कंधा मिलता है ना। तो हिसाब सबको मिलता है। जितना मेहनत करते हैं, उतना ऊंच पद मिलेगा। उनको ख़ुशी भी बहुत होगी। देखा जाता है - कितनों का उद्धार किया। सर्विस बहुत अच्छी करते रहते। जैसे मिसाल देते हैं मम्मा का। मम्मा ने बहुत अच्छी सर्विस की तो उनका कितना कल्याण हो गया। मूल बात है सर्विस करने की। योग की भी सर्विस है ना। डायरेक्शन मिलते रहते हैं। कैसे याद करना है। यह बिन्दी का राज़ भी बाबा ने अब समझाया है। अब आगे चल और भी सुनाते रहेंगे। दिन-प्रतिदिन उन्नति होती जायेगी। प्वाइंट्स निकलती रहती हैं, बहुत डिफीकल्ट भी नहीं है। सहज भी नहीं है। जो सर्विस में तत्पर हैं, वह झट प्वाइंट को पकड़ लेते हैं। जो सर्विस में नहीं रहते उनकी बुद्धि में कुछ भी नहीं बैठता। बिन्दी-बिन्दी कहते रहते परन्तु कैसे बिन्दी को याद करें, कैसे बिन्दी को देखें, है बहुत सहज बात। कोई बिन्दी को सामने रख थोड़ेही याद करना है। यह तो समझने की बात है। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। आत्मा का नाम, रूप, देश, काल कोई बता नहीं सकेगा। परमात्मा के लिए पूछते हैं - उनका नाम रूप देश काल क्या है? बेसमझ मनुष्य न आत्मा को जानते, न परमात्मा को जानते हैं। यहाँ भी हैं जो पूरी रीति नहीं जानते हैं सिर्फ बाबा-बाबा कहते रहते। नॉलेज कहाँ सीखते हैं। कुछ भी सर्विस करते नहीं। खाते रहते हैं। जैसे सन्यासियों के पास भी अवधूत होते हैं, जो करते कुछ भी नहीं, खाते रहते हैं। बाकी सन्यास धारण किया है, विकार से छूट गये वह भी कम बात नहीं। सन्यासियों का धर्म ही अलग है। यह ज्ञान है ही तुम बच्चों के लिए।

- जो इस कुल के होंगे वह निकल रहे हैं और निकलते रहेंगे | जैसे तुम निकले हो, वैसे और प्रजा भी बनती रहेगी | जो अच्छा पढ़ते वह अच्छा पद पाते हैं | मुख्य है ज्ञान-योग | योग के लिए भी ज्ञान चाहिए | फिर पॉवर हाउस के साथ योग चाहिए | योग से विकर्म विनाश होंगे और हेल्दी-वेल्दी बनेंगे | पास विद् ऑनर भी होंगे |

- तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो ना | तुम्हारी यहाँ बैठे-बैठे बहुत कमाई है | तुम्हारी दिन और रात कमाई ही कमाई है | तुम यहाँ आते ही हो सच्ची कमाई करने के लिये | सच्ची कमाई और कहाँ भी होती नहीं, जो साथ चले | तुमको और कोई धन्धा आदि तो यहाँ है नहीं | वायुमण्डल भी ऐसा है | तुम योगबल से वायुमण्डल को भी शुद्ध करते हो |

- बाबा को सर्विसएबुल बच्चे चाहिए | बाप तो सर्विस के लिए ही आते हैं | पतितों को पावन बनाते हैं | यह तुम जानते हो, दुनिया वाले नहीं जानते हैं क्योंकि अभी तुम बहुत थोड़े हो | जब तक योग नहीं होगा तब तक कशिश नहीं होगी | वह मेहनत बहुत थोड़े करते हैं | कोई न कोई बात में लटक पड़ते हैं | यह वह सतसंग नहीं है, जो सुना वह सत सत करते हैं | सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है एक गीता | गीता में ही राजयोग है | विश्व का मालिक तो बाप ही है | बच्चों को कहता रहता हूँ गीता से ही प्रभाव निकलेगा | परन्तु इतनी ताक़त भी हो ना | योगबल का जौहर अच्छा चाहिए, जिसमें बहुत कमज़ोर हैं | अभी थोडा टाइम है | कहते हैं मिठरा घुर त घुराय.....मुझे प्यार करो तो मैं भी करूँ | यह है आत्मा का लव | एक बाबा की याद में रहे, इस याद से ही विकर्म विनाश होंगे | कोई तो बिल्कुल याद नहीं करते हैं | बाप समझाते हैं – यहाँ भक्ति की बात नहीं | यह बाबा का रथ है, इनके द्वारा शिवबाबा पढ़ाते हैं |

शिवबाबा नहीं कहते हैं कि मेरे पाँव धोकर पियो | बाबा तो हाथ लगाने भी नहीं देते | यह तो पढ़ाई है | हाथ लगाने से क्या होगा | बाप तो है सबकी सद्गति करने वाला | कोटों में कोई ही यह बात समझते हैं | जो कल्प पहले वाले होंगे, वही समझेंगे | भोलानाथ बाप आकर भोली-भोली माताओं को ज्ञान दे उठाते हैं | बाबा बिल्कुल चढ़ा देते हैं – मुक्ति और जीवनमुक्ति में | बाप सिर्फ़ कहते हैं – विकारों को छोड़ो | इस पर ही हंगामा होता है | बाप समझाते हैं – अपने को देखो हमारे में क्या-क्या अवगुण हैं? व्यापारी लोग रोज़ अपना पोतामेल फ़ायदे-घाटे का निकालते हैं | तुम भी पोतामेल रखो कि कितना समय अति प्यारा बाबा, जो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको याद किया? देखेंगे, कम याद किया तो आपेही लज्जा आयेगी कि यह क्या ऐसे बाबा को हमने याद नहीं किया | हमारा बाबा सबसे वन्डरफुल है | स्वर्ग भी है सारी सृष्टि में सबसे वन्डरफुल | वे तो स्वर्ग को लाखों वर्ष कह देते हैं और तुम कहेंगे 5 हज़ार वर्ष |

बाबा ने देखा है कैसे साधू लोग अथवा कोई-कोई बाजोली खेलते-खेलते यात्रा पर जाते हैं | बड़ी कठिनाई उठाते हैं | अब इसमें कठिनाई की बात नहीं | यह है योगबल की बातें | क्या याद की यात्रा तुम बच्चों को कठिन लगती है? नाम तो बहुत सहज रखा है | कहाँ सुनकर डर न जायें | कहते हैं बाबा हम योग में रह नहीं सकते | बाबा फिर हल्का देते हैं | यह है बाप की याद | याद तो सब चीज़ों को किया जाता है | बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो | तुम बच्चे हो ना | यह तुम्हारा बाप भी है, माशूक भी है | सब आशिक उनको याद करते हैं, एक बाप अक्षर भी काफ़ी है | भक्ति मार्ग में तुम मित्र-सम्बन्धियों को याद करते, फिर भी हे प्रभू, हे ईश्वर ज़रूर कहते हो | सिर्फ़ पता नहीं कि वह क्या चीज़ है | आत्माओं का बाप तो परमात्मा है | इस शरीर का बाप तो देहधारी है | आत्माओं का बाप अशरीरी है | वह कभी पुनर्जन्म में

नहीं आते | और सभी पुनर्जन्म में आते हैं, इसलिये बाप को ही याद करते हैं | ज़रूर कभी सुख दिया है | उनको कहा जाता है दुःख हर्ता, सुख कर्ता, परन्तु उनके नाम, रूप, देश, काल को नहीं जानते हैं | जितने मनुष्य उतनी बातें | अनेक मत हो गई हैं |

- मुख्य है ही काम की बात | क्रोध अदि का इतना नहीं | कहाँ बुद्धि जाती है तो जरुर बाप को याद नहीं करते हैं | बाप की याद पक्की हो जायेगी तो फिर और कोई की तरफ़ बुद्धि नहीं जायेगी | बहुत ऊँची मंज़िल है | पवित्रता की बात सुनकर आग में जल मरते हैं | कहते हैं यह बात तो कभी कोई ने कही नहीं | कोई शास्त्र में है नहीं | बड़ा मुश्किल समझते हैं |

- अभी तुम समझते हो हम यह पुराना शरीर छोड़, जाकर दूसरा लेते हैं | कोई बड़ी बात है क्या! वह दुःख से मरते हैं | तुमको सुख से बाप की याद में जाना है | जितना मुझ बाप को याद करेंगे तो और सब भूल जायेंगे | कोई भी याद नहीं रहेगा | परन्तु यह अवस्था तब हो जब पक्का निश्चय हो | निश्चय नहीं तो याद भी ठहर नहीं सकती | नाम मात्र सिर्फ़ कहते हैं | निश्चय ही नहीं तो याद काहे को करेंगे | सबको एक जैसा निश्चय तो नहीं है ना | माया निश्चय से हटा देती है | जैसे के वैसे बन जाते हैं | पहले-पहले तो निश्चय चाहिए बाप में | संशय रहेगा क्या कि यह बाप नहीं है | बेहद का बाप ही ज्ञान देते हैं |

- बाबा प्रदर्शनी आदि देखते हैं तो ख्यालात चलते रहते हैं | तुम बच्चे घर जायेंगे तो फिर यह सब बातें भूल जायेंगे | परन्तु यह सब बुद्धि में याद रहना चाहिए | ऐसे नहीं, प्रदर्शनी से बाहर निकले और खेल ख़लास | अच्छे-अच्छे बच्चे जो पुरुषार्थी हैं, उनकी बुद्धि में टपकना चाहिए

| बाबा को टपकता रहता है ना | बुद्धि में सारा ज्ञान रहेगा तो बाबा की याद भी रहेगी | उन्नति को पाते रहेंगे | अगर सतोप्रधान नहीं बनेंगे तो फिर सतयुग में नहीं जायेंगे इसलिए अपने को याद की यात्रा में पक्का रखना है | तुम राजयोगी हो | तुमको बड़ी जटायें हैं | महिमा सारी तुम माताओं की है | जटायें भी नैचुरल हैं | राजयोगी और योगिन यह सच्चा-सच्चा तपस्या का रूप दिखाते हैं | यह सब समझने की बातें हैं | बाप कहते हैं देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो | बाकी सब देह के सम्बन्ध आदि भूल जाओ | एक बाप को याद करो | वह तुमको बहुत मालदार बनाते हैं | जीते जी मर जाओ | बाप आकर जीते जी मरना सिखलाते हैं | बाप कहते हैं मैं कालों का काल हूँ, तुमको ऐसा मरना सिखलाता हूँ जो कभी तुम्हारे दर पर काल न आ सके | वहाँ तो रावण राज्य ही नहीं | सतयुग में कभी काल खाता नहीं, उनको अमरपुरी कहा जाता है | बाबा तुमको अमरपुरी का मालिक बनाते हैं | यह है मृत्युलोक | वह है अमरपुरी | यह है राजयोग | तुम लिख दो प्राचीन भारत का राजयोग फिर से सिखाया जाता है | जो प्रदर्शनी आदि देखते हैं उन्हों को ख्याल करना चाहिए इसमें और क्या करें, जिससे मनुष्य एक्यूरेट समझें | इनमें प्रैक्टिकल बहुत अच्छी समझानी है | यथा राजा रानी तथा प्रजा तो इसमें आ ही जाते हैं | बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | मूल ज़ोर रखना चाहिए इस पर | विश्व में पवित्रता, सुख, शान्ति कैसे स्थापन हो रही है, आकर समझो | तुम अपने लिए ही करते हो | जितनी मेहनत करते हो उतना पद मिलता है | वह भी नम्बरवार | यह भी दिखाओ नम्बरवार कैसे-कैसे बनते हैं | प्रजा भी दिखाओ, तो साहूकार प्रजा, सेकण्ड ग्रेड, थर्ड ग्रेड प्रजा भी दिखाओ | ऐसा एक्यूरेट बनाओ जो अच्छी रीति समझा सको | मेहनत तो करनी ही है | समय बाकी थोड़ा है | ज्ञान है ही तुम्हारे लिए | तुम प्रदर्शनी में ऐसा समझाओ जो मनुष्य

समझें हमको एक बाप को ही याद करना है तब ही हम यह बन सकेंगे | नहीं तो फिर भक्ति मार्ग में आ जायेंगे |

- कमाई करने वाले को कभी उबासी नहीं आती है | झुटका नहीं आयेगा | कमाई से पेट भर गया फिर नींद नहीं आती | जैसे रेग्युलर हो जाते हैं | तुम भी बहुत भारी कमाई करते हो | उबासी देवाला निकालने वाले खाते हैं | जो अच्छी रीति समझते हैं, याद में रहते हैं उनको उबासी नहीं आयेगी | अगर मित्र-सम्बन्धी आदि याद आते हैं तो उबासी आती रहेगी | यह निशानियाँ हैं | स्वर्ग में तुमको उबासी आदि कभी आयेगी ही नहीं | बाप का वर्सा पा लिया तो वहाँ सोना, उठना, बैठना कायदेसिर चलता है | एक्यूरेट, आत्मा लीवर बन जाती है | अभी सलेन्डर बनी है, उनको लीवर बनाना है | कोई बना सकते हैं, कोई नहीं बना सकते हैं |

- बाप ही नॉलेजफुल है | बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो, बाप को याद करो | यह भी नॉलेज है | एक है योग की नॉलेज, दूसरा है 84 जन्म के चक्र की नॉलेज | दो नॉलेज हैं | फिर उसमें दैवीगुण ऑटोमेटिकली मर्ज हैं | बच्चे जानते हैं हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो दैवीगुण भी ज़रूर धारण करने हैं | अपनी जाँच करनी है | नोट करने से अपने ऊपर सावधान रहेंगे | अपनी जाँच रखेंगे तो कोई भूल नहीं होगी | बाप खुद कहते हैं – मामेकम् याद करो | यह भी बुद्धि में याद रहे की हम ब्राह्मण सो देवता थे फिर 84 का चक्र लगाया | अब फिर देवता बनने के लिए आये हैं | जब देवताओं की डिनायस्टी पूरी हो जाती है तो भक्ति मार्ग में भी बहुत प्रेम से उनको याद करते हैं | अब वह बाप तुमको यह पद पाने लिए युक्ति बताते हैं | याद भी बहुत सहज है | सिर्फ़ सोने का बर्तन चाहिए | जितना पुरुषाथ करेंगे उतनी प्वाइन्ट्स

इमर्ज होंगी | ज्ञान भी अच्छा सुनाते रहेंगे | समझेंगे जैसेकि बाबा हमारे में प्रवेश कर मुरली चला रहे हैं | बाबा भी बहुत मदद करते हैं | औरों का भी कल्याण करना है | वह भी ड्रामा में नूँध है | एक सेकण्ड न मिले दूसरे से | टाइम पास होता जाता है | इतने वर्ष, इतने मास कैसे पास होते हैं | शुरू से लेकर टाइम पास होता आया है | यह सेकेण्ड फिर 5 हज़ार वर्ष बाद रिपीट करेंगे | यह भी अच्छी रीति समझना है और बाप को याद करना है जिससे विकर्म विनाश हों | और कोई उपाय नहीं | इतना समय जो कुछ करते आये हो वह सब थी भक्ति | किसका बहुत हिसाब-किताब होगा तो जन्म भी ले सकते हैं | किसके बहुत पाप होंगे तो घड़ी-घड़ी एक जन्म ले फिर दूसरा, तीसरा जन्म लेते छोड़ते रहेंगे | गर्भ में गया, दुःख भोगा, फिर शरीर छोड़ दूसरा लिया | काशी कलवट मेन भी यह हालत होती है | पाप सिर पर बहुत हैं | योगबल तो है नहीं | काशी कलवट खाना – यह है अपने शरीर का घात करना | आत्मा भी समझती है यह घात करते हैं | कहते भी हैं – बाबा, आप आयेंगे तो हम आप पर बलिहार जायेंगे | बाकी भक्ति मार्ग में बलि चढ़ते हैं | वह भक्ति हो जाती है |

सुबह को बच्चों को बैठ ड्रिल कराते हैं | वास्तव में इसको ड्रिल भी नहीं कहा जाए | बाप सिर्फ़ कहते हैं – बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो | कितना सहज है | तुम आत्मा हो ना | कहाँ से आये हो? परमधाम से | ऐसे और कोई भी पूछेंगे नहीं | पारलौकिक बाप ही बच्चों से पूछते हैं – बच्चों, परमधाम से आये हो ना, इस शरीर में पार्ट बजाने | पार्ट बजाते-बजाते अब नाटक पूरा हुआ | आत्मा पतित बनी तो शरीर भी पतित बना है | सोने में ही अलाए पड़ती है फिर उनको गलाया जाता है | वह सन्यासी लोग ऐसे अर्थ कभी नहीं समझायेंगे | वो तो ईश्वर को जानते ही नहीं | बाप से योग रखो, यह मानते ही नहीं | बाप जो सिखलाते हैं वह और कोई सिखला न सके |

- तुम आत्मा कहाँ निवास करती हो? आत्मा भाई पूछता है, आत्मा कहाँ रहती है? तो कहते हैं – यहाँ, भ्रकुटी में | यह तो कॉमन बात है | एक बाप के सिवाए कुछ भी याद न आये | पिछाड़ी में तो शरीर भी ऐसे बाप की याद में छूटे – यह प्रैक्टिस करनी है |

- हर एक अपनी अवस्था को जानते हैं | अपनी ख़ुशी को जानते हैं | अतीन्द्रिय सुखमय जीवन हर एक को अपनी-अपनी भासती है | एक तो बाप को बहुत-बहुत याद करना है | याद करने से ही फिर रिटर्न होती है | तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए तुम बच्चों को बहुत सहज उपाय बताता हूँ – याद की यात्रा | हर एक अपनी दिल से पूछे हमारे याद का चार्ट ठीक है? और किसको आप समान भी बनाता हूँ? क्योंकि ज्ञान बुलबुल हो ना | कोई पैरेट्स हैं, कोई क्या हैं! तुमको कबूतर नहीं, पैरेट (तोता) बनना है | अपने अन्दर से पूछना बड़ा सहज है | कहाँ तक हमको बाबा याद है? कहाँ तक अतीन्द्रिय सुख में रहते हैं? मनुष्य से देवता बनना है ना | मनुष्य तो मनुष्य ही हैं | मेल अथवा फीमेल दोनों देखने में तो मनुष्य ही आते हैं | फिर तुम दैवीगुण धारण कर देवता बनते हो | तुम्हारे सिवाए और कोई देवता बनने वाले ही नहीं हैं | यहाँ आते ही हैं दैवी घराने का भाती बनने | वहाँ भी तुम दैवी घराने के भाती हो | वहाँ तुम्हारे में कोई राग-द्वेष का आवाज़ भी नहीं होगा | ऐसे दैवी परिवार का बनने के लिए खूब पुरुषार्थ करना है | पढ़ना भी कायदे अनुसार है, कभी मिस नहीं करना चाहिए | भल बीमार हो तो भी बुद्धि में शिवबाबा की याद हो | इसमें तो मुख चलाने की बात नहीं है | आत्मा जानती है, हम शिवबाबा के बच्चे हैं | बाबा हमको ले चलने के लिए आये हैं | यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए | भल कहाँ भी हो परन्तु बाप की याद में रहो | बाप आये ही हैं शान्तिधाम-सुखधाम में ले चलने | कितना सहज है | बहुत हैं जो जास्ती धारणा नहीं कर

सकते | अच्छा याद करो | यहाँ सब बच्चे बैठे हैं, इनमें भी नम्बरवार हैं | हाँ, बनना ज़रूर है | शिवबाबा को याद ज़रूर करते हैं | और संग तोड़ एक संग जोड़ने वाले तो सब होंगे | और कोई की याद नहीं रहती होगी | परन्तु इसमें पिछाड़ी तक पुरुषार्थ करना पड़ता है | मेहनत करनी है | अन्दर में सदैव एक शिवबाबा की ही याद रहे | कहाँ भी घूमने-फिरने जाते हो तो भी अन्दर में याद बाप की ही रहे | मुख चलाने की भी दरकार नहीं रहती | सहज पढ़ाई है | पढ़ाकर तुमको आप समान बनाते हैं | ऐसी अवस्था में ही तुम बच्चों को जाना है | जैसे सतोप्रधान अवस्था से आये हैं, उस अवस्था में फिर जाना है | यह कितना सहज है समझाने में | घर का कामकाज करते, चलते-फिरते अपने को फूल बनाना है | जांच करनी है हमारे में कोई गड़बड़ तो नहीं है? हीरे का दृष्टान्त भी बहुत अच्छा है, अपनी जाँच करने लिए | तुम ख़ुद ही मैग्नीफाय ग्लास हो | तो अपनी जाँच करनी है मेरे में देह-अभिमान रिंचक भी तो नहीं है? भल इस समय सब पुरुषार्थी हैं, परन्तु एम ऑब्जेक्ट तो सामने है ना | तुम्हें सबको पैगाम देना है | बाबा ने कहा था अख़बार में भल खर्चा हो, यह पैगाम सबको मिल जाए | बोलो, एक बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएँ और पवित्र बन जायेंगे | अभी कोई पवित्र नहीं हैं | बाप ने समझाया है पवित्र आत्मायें होती है हैं नई दुनिया में | यह पुरानी दुनिया अपवित्र है | एक भी पवित्र हो न सके | आत्मा जब पवित्र बन जाती है तो फिर पुराना शरीर छोड़ देती है | छोड़ना ही है | याद करते-करते तुम्हारी आत्मा एकदम पवित्र बन जायेगी | शान्तिधाम से हम एकदम पवित्र आत्मा आई फिर गर्भ महल में बैठी | फिर इतना पार्ट बजाया | अब चक्र पूरा किया फिर तुम आत्मायें जायेंगी अपने घर | वहाँ से फिर सुखधाम में आयेंगी | वहाँ गर्भ महल होता है | फिर भी पुरुषार्थ करना है ऊँच पद पाने के लिए, यह पढ़ाई है | अभी नर्क वेश्यालय विनाश हो शिवालय स्थापन हो रहा है | अब तो सबको वापिस जाना है |

तुम यहाँ बैठे-बैठे बाप को याद करते हो और विश्व के मालिक बन जाते हो | कैसे भी करके बाप को याद ज़रूर करना है | इसमें हठयोग करने वा आसन आदि लगाने की भी बात नहीं है | बाबा कोई भी तकलीफ़ नहीं देते हैं | कैसे भी बैठो सिर्फ़ तुम याद करो कि हम मोस्ट बिलवेड बच्चे हैं | तुमको बादशाही ऐसे मिलती है जैसे माखन से बाल | गाते भी हैं सेकण्ड में जीवनमुक्ति | कहाँ भी बैठो, घूमो फिरो, बाप को याद करो | पवित्र होने बिगर जायेंगे कैसे? नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी | जब धर्मराज के पास जायेंगे तब सबका हिसाब-किताब चुक्तू होगा | जितना पवित्र बनेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे | इम्प्योर रहेंगे तो सूखा रोटला खायेंगे | जितना बाप को याद करेंगे, पाप कटेंगे | इसमें खर्चे आदि की कोई बात नहीं | भल घर में बैठे रहो, बाप से भी मन्त्र ले लो | यह है माया को वश करने का मन्त्र – मनमनाभव | यह मन्त्र मिला फिर भल घर जाओ | मुख से कुछ बोलो नहीं | अल्फ़ और बे, बादशाही को याद करो | तुम समझते हो बाप को याद करने से हम सतोप्रधान बन जायेंगे, पाप कट जायेंगे | बाबा अपना अनुभव भी सुनाते हैं – भोजन पर बैठता हूँ, अच्छा, हम बाबा को याद कर खाते हैं, फिर झट भूल जाता है क्योंकि गाया जाता है जिनके मत्थे मामला.......कितना ख्याल करना पड़ता है – फलाने की आत्मा बहुत सर्विस करती है, उनको याद करना है | सर्विसएबुल बच्चों को बहुत प्यार करते हैं | तुमको भी कहते हैं इस शरीर में जो आत्मा विराजमान है, उनको याद करो | यहाँ तुम आते ही हो शिवबाबा के पास | बाप वहाँ से नीचे आये हैं | तुम सबको कहते भी हो – भगवान् आया है | परन्तु समझते नहीं | युक्ति से बताना पड़े | हद और बेहद के दो बाप हैं | अब बेहद का बाप राजाई दे रहे हैं | पुरानी दुनिया का विनाश भी सामने खड़ा है | एक धर्म की स्थापना, अनेक धर्मों का विनाश होता है | बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे | यह योग अग्नि है, जिससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे | यह तरीका बाप ने ही बताया है | तुम बच्चे जानते हो – बाप सबको गुल-गुल

बनाकर, नयनों पर बिठाए ले जाते हैं | कौन-से नयन? ज्ञान के | आत्माओं को ले जाते हैं | समझते हो जाना तो ज़रूर है, उनसे पहले क्यों न बाप से वर्सा तो ले लें | कमाई भी बहुत भारी है | बाप को भूलने से फिर घाटा भी बहुत है | पक्के व्यापारी बनो | बाप को याद करने से ही आत्मा पवित्र बनेंगी | फिर एक शरीर छोड़ दूसरा जाकर लेंगे | तो बाप कहते हैं – मीठे-मीठे बच्चों, देही-अभिमानी बनो | यह आदत पक्की डालनी पड़े | अपने को आत्मा समझ बाप से पढ़ते रहो तो बेड़ा पार हो जायेगा, शिवालय में चले जायेंगे | चन्द्रकान्त वेदान्त में भी यह कथा है | बोट (नाव) कैसे चलती है, बीच में उतरते हैं, कोई चीज़ में दिल लग जाती है | स्टीमर चला जाता है |

अभी तुमको नर से नारायण बनने का राजयोग सिखलाते हैं | यह भी कोई नई बात नहीं | बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प आकर समझाता हूँ | सिवाए योगबल के कोई पावन बन नहीं सकता | विकर्म विनाश हो न सके | पानी में स्नान करने से कोई पावन नहीं बनते | यह है योग अग्नि | पानी होता है आग को बुझाने वाला | आग होती है जलाने वाली | बाप ने समझाया है जो अपने को बच्चे समझते हैं तो इस जन्म में जो पाप आदि किये हैं, जबकि सम्मुख बाप आया है तो पाप कर्म बता देने चाहिए, तो हल्का हो जायेगा | इस जन्म में हल्के हो जायेंगे | फिर पुरुषार्थ करना है, जन्म-जन्मान्तर के पाप कर्म का बोझा जो सर पर है उसे उतारना है | बाप योग की बात समझाते हैं | योग से ही विकर्म विनाश होंगे | यह बातें तुम अभी सुनते हो | सतयुग में यह बातें कोई सुना न सके | यह सारा ड्रामा बना हुआ है | सेकण्ड बाई सेकण्ड यह सारा ड्रामा फिरता रहता है | एक सेकण्ड न मिले दूसरे से | सेकण्ड बाई सेकण्ड आयु भी कम होती जाती है | अभी तुम आयु को कम होने से ब्रेक देते हो और योग से आयु को बढ़ाते हो | अब तुम बच्चों को अपनी आयु को बड़ा बनाना है योगबल से | योग

के लिए बाबा बहुत ज़ोर देते हैं, परन्तु कई समझते नहीं | कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं | तब बाबा कहते हैं योग कोई और बात नहीं, यह है याद की यात्रा | बाप को याद करते-करते पाप कटते जायेंगे, अन्त मती सो गति हो जायेगी | इस पर एक मिसाल भी देते हैं – कोई ने किसको कहा तुम भैंस हो तो बस वह समझने लगा मैं तो भैंस हूँ | बोला, इस दरवाजे से निकलो | तो बोला मैं भैंस हूँ, कैसे निकलूँ! सचमुच जैसे भैंस बन गया | यह एक मिसाल बैठ बनाया है, बाकी कोई ऐसा है नहीं | यह कोई यथार्थ मिसाल नहीं है | हमेशा रियल बात पर मिसाल दिया जाता है |

- नॉलेज वा वर्सा लेने में टाइम नहीं लगता | टाइम लगता है पवित्र बनने में | मुख्य है याद की यात्रा | यहाँ तुम आते हो तो यहाँ अटेन्शन जास्ती होता है याद की यात्रा में | घर में जाने से इतना नहीं रहता | यहाँ सब नम्बरवार हैं | कोई तो यहाँ बैठे होंगे, बुद्धि में यही नशा होगा – हम बच्चे, वह बाप है | बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं | तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है | दिव्य दृष्टि दे रहे हैं, सर्विस कर रहे हैं | तो उस एक को ही याद करना चाहिए | और कोई तरफ़ बुद्धि जानी नहीं चाहिए | सन्देशी पूरी रिपोर्ट दे सकती है – किसकी बुद्धि बाहर भटकती है, कौन क्या करते हैं, किसको झुटका आता है, सब बता सकती है |

- जो सितारे अच्छे सर्विसएबुल हैं, उन्हों को ही देखता रहता हूँ | बाप का लव है ना | स्थापना में मदद करते हैं | हुबहू कल्प पहले मिसल यह राजधानी स्थापन हो रही है, अनेक बार हुई है | यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है | इसमें फ़िक्र की भी कोई बात नहीं रहती | बाबा के साथ हैं ना | तो संग का रंग लगता है | फ़िक्र कम होती जाती है | यह तो ड्रामा बना हुआ है

| बाप बच्चों के लिए स्वर्ग की राजधानी ले आये हैं | सिर्फ़ कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, पतित से पावन बनने के लिए बाप को याद करो | अब जाना है स्वीट होम, जिसके लिए ही तुम भक्ति मार्ग में माथा मारते हो | परन्तु एक भी जा नहीं सकते | अब बाप को याद करते रहो और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो | अल्फ़ और बे | बाप को याद करो और 84 का चक्र फिराओ | आत्मा को 84 के चक्र का गायन हुआ है | रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं | तुम जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार | सुबह को उठकर तुम बुद्धि में यही रखो – अब हमने 84 का चक्र पूरा किया है, अब वापिस जाना है इसलिए अब बाप को याद करना है तो तुम चक्रवर्ती बनेंगे | यह तो सहज है ना | परन्तु माया तुमको भुला देती है | माया के तूफ़ान हैं ना, वह दीपकों को हैरान कर देते हैं | माया बड़ी दुस्तर है, इतनी शक्ति है जो बच्चों को भुला देती है | वह ख़ुशी स्थाई नहीं रहती है | तुम बाप को याद करने बैठते हो, बैठे-बैठे बुद्धि और तरफ़ चली जाती है | यह सब हैं गुप्त बातें | कितनी भी कोशिश करेंगे परन्तु याद कर नहीं सकेंगे | फिर कोई की बुद्धि भटक-भटक कर स्थिर हो जाती है, कोई फट से स्थिर हो जाते हैं, कोई से तो कितना भी माथा मारो तो भी बुद्धि में ठहरता नहीं | इसको माया की युद्ध कहा जाता है | कर्म, अकर्म बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है

हर एक को अपने को देखना है कि मैं कहाँ तक याद करता हूँ? कोई के नाम-रूप में कहाँ तक फँसा हुआ हूँ? हमारे आत्मा की वृत्ति कहाँ-कहाँ तक जाती है? आत्मा ख़ुद जानती है, अपने को आत्मा ही समझना पड़े | हमारी वृत्ति एक शिवबाबा की तरफ़ जाती है या और कोई के नाम-रूप तरफ़ जाती है? जितना हो सके अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करना है और सब भूलते जाना है | अपनी दिल से पूछना है कि हमारी दिल सिवाए बाप के और कहाँ

भटकती तो नहीं है? कहीं धन्धे-धोरी में या घर-गृहस्थ, मित्र-सम्बन्धियों आदि तरफ़ बुद्धि जाती तो नहीं है? अन्तर्मुखी होकर जांच करनी है | जब यहाँ आकर बैठते हो तो अपनी जांच करनी है | यहाँ कोई न कोई सामने योग में बैठते हैं, वह भी शिवबाबा को ही याद करते होंगे | ऐसे नहीं, अपने बच्चों को याद करते होंगे | याद तो शिवबाबा को ही करना है | यहाँ बैठे ही शिवबाबा की याद में हो | फिर चाहे कोई आँखें खोलकर बैठे हैं वा आँखें बन्द कर बैठे हैं | यह तो बुद्धि से समझ की बात है | अपनी दिल से पूछना होता है – बाबा, क्या समझाते हैं | हमको तो याद करना है एक को | यहाँ जो बैठने वाले हैं, वह तो एक शिवबाबा की ही याद में होंगे | तुमको नहीं देखेंगे क्योंकि उनको तो कोई की भी अवस्था का पता ही नहीं है | हर एक का समाचार बाप के पास आता है | वह जानते हैं कौन-कौन बच्चे अच्छे हैं, जिनकी लाइन क्लीयर है | उनका और कहाँ भी बुद्धियोग नहीं जाता है | ऐसे भी होते हैं, कोई का बुद्धियोग जाता है | फिर मुरली सुनने से चेन्ज भी होते रहते हैं | फील करते हैं कि यह तो हमारी भूल है | हमारी दृष्टि-वृत्ति बरोबर रांग थी | अब उनको राईट करना है | रांग वृति को छोड़ देना है | यह बाप समझाते हैं, भाई-भाई को नहीं समझा सकते | बाप ही देखते हैं इनकी वृत्ति-दृष्टि कैसी है | बाप को ही सब दिल का हाल सुनाते हैं | शिवबाबा को बताते हैं तो दादा समझ जाते हैं | हर एक के सुनाने से, देखने से भी समझते हैं | जब तक सुने नहीं तब तक उनको क्या पता कि यह क्या करते हैं | एक्टिविटी से, सर्विस से समझ जाते हैं कि इनको बहुत देह-अभिमान है, इनको कम, इनकी एक्टिविटी ठीक नहीं है | कोई न कोई के नाम-रूप में फँसा रहता है | बाबा पूछते हैं, कोई की तरफ बुद्धि जाती है? कोई साफ़ बतलाते हैं, कोई कोई फिर नाम-रूप में फँसे हुए ऐसे हैं, जो बताते ही नहीं हैं | अपना ही नुकसान करते हैं | बाप को बतलाने से उनकी क्षमा होती है और फिर आगे के लिए भी सम्भाल करते हैं | बहुत हैं जो अपनी वृत्ति सच नहीं बताते, लज्जा आती है | जैसे कोई उल्टा काम करते हैं तो सर्जन

को बताते नहीं हैं, परन्तु छिपाने से बीमारी और ही वृद्धि को पायेगी | यहाँ भी ऐसे हैं | बाप को बताने से हल्के हो जाते हैं | नहीं तो वह अन्दर में रहने से भारी रहेंगे | बाप को सुनाने से फिर दुबारा ऐसे नहीं करेंगे | आगे के लिए अपने पर ख़बरदार भी रहेंगे | बाकी बतायेंगे ही नहीं तो वह वृद्धि को पाता रहेगा | बाप जानते हैं यह सर्विसएबुल बहुत हैं, क्वालिफिकेशन कैसी रहती हैं, सर्विस में भी कैसे रहते हैं? कोई के साथ लटके तो नहीं हैं? हर एक की जन्मपत्री को देखते हैं, फिर इतना उनसे लव रखते हैं | कशिश करते हैं | कोई तो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं | कभी भी कहाँ उन्हों का बुद्धियोग नहीं जाता | हाँ, पहले जाता था, अब ख़बरदार हैं | बताते हैं – बाबा, अब मैं ख़बरदार हूँ | आगे बहुत भूलें करते थे | समझते हैं देह-अभिमान में आने से भूलें ही होंगी | फिर पद तो भ्रष्ट हो जायेगा | भल किसको पता नहीं पड़ता है, परन्तु पद तो भ्रष्ट हो ही जायेगा | दिल की सफ़ाई इसमें बहुत चाहिए तब तो ऊँच पद पायेंगे | उनकी बुद्धि में बहुत सफ़ाई रहती है, जैसे इन लक्ष्मी-नारायण की आत्मा में सफ़ाई रहती है ना, तब तो ऊँच पद पाया है | कोई-कोई के लिए समझा जाता है इनकी नाम-रूप की तरफ़ वृत्ति है, देही-अभिमानी होकर नहीं रहते हैं, इस कारण पद भी कम होता गया है | राजा से लेकर रंक तक, नम्बरवार पद तो हैं ना | यह क्यों होता है? इसको भी समझना चाहिए | नम्बरवार तो ज़रूर बनते ही हैं | कलायें कम होती ही रहती हैं | जो 16 कला सम्पूर्ण हैं वह फिर 14 कला में आ जाते हैं | ऐसे थोड़ा-थोड़ा कम होते-होते कलायें उतरती तो ज़रूर हैं | 14 कला है तो भी अच्छा फिर वाम मार्ग में उतरते हैं तो विकारी बन जाते हैं, आयु ही कम हो जाती है | फिर रजो, तमोगुणी बनते जाते हैं | कम होते-होते पुराने होते जाते हैं | आत्मा शरीर से पुरानी होती जाती है | यह सारा ज्ञान अभी तुम बच्चों में है | कैसे 16 कला से नीचे उतरते-उतरते फिर मनुष्य बन जाते हैं | देवताओं की मत तो होती नहीं | बाप की मत मिली फिर 21 जन्म मत मिलने की दरकार ही नहीं रहती है | यह ईश्वरीय मत तुम्हारी 21 जन्म चलती है फिर

जब रावण राज्य होता है तो तुमको मत मिलती है रावण की | दिखाते भी हैं देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं | और धर्म वालों की ऐसी बात नहीं होती है | देवता जब वाम मार्ग में जाते हैं तब और धर्म वाले आते हैं |

आत्मा को ही प्योर बनना है | आत्मा ही पत्थरबुद्धि बनी है, एकदम क्लीयर कर बताओ | बाप ने ही सतयुगी डीटी गवर्मेन्ट स्थापन की थी, जिसको पैराडाइज़ कहते हैं | मनुष्य को देवता बाप ने ही बनाया | मनुष्य थे पतित, उनको पतित से पावन कैसे बनाया? बच्चों को कहा – मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे | यह बात तुम किसको भी सुनायेंगे तो अन्दर में लगेगा | अब पतित से पावन कैसे बनेंगे? ज़रूर बाप को याद करना होगा | और संग बुद्धि योग तोड़ एक संग जोड़ना है तब ही मनुष्य से देवता बन सकेंगे | ऐसे समझाना चाहिए | तुमने जो समझाया वह ड्रामा अनुसार बिल्कुल ठीक था | यह तो समझते हैं फिर भी दिन-प्रतिदिन प्वाइन्ट्स मिलती रहती हैं समझाने लिए | मूल बात है ही कि पतित से पावन कैसे बनें! बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ मामेकम् याद करो | इस पुरुषोत्तम संगमयुग को भी तुम बच्चे ही जानते हो | हम अभी ब्राह्मण बने हैं, प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान | बाप हमको पढ़ाते हैं | ब्राह्मण बनने बिगर हम देवता कैसे बनेंगे | यह ब्रह्मा भी पूरे 84 जन्म लेते हैं, फिर उनको ही पहला नम्बर लेना पड़ता है | बाप आकर प्रवेश करते हैं | तो मूल बात है ही एक – अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | देह-अभिमान में आने से कहाँ न कहाँ लटके रहते हैं |देही-अभिमानी तो सब बन न सकें | अपनी पूरी जांच करो – हम कहाँ देह-अभिमान में तो नहीं आते हैं? हमसे कोई विकर्म तो नहीं होता है? बेकायदे चलन तो नहीं होती है? बहुतों से होती है | वह अन्त में बहुत सज़ा के भागी बनेंगे | भल अभी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है | कर्मातीत अवस्था वाले के सब दुःख दूर हो जाते हैं | सज़ाओं से छूट जाते हैं |

ख्याल किया जाता है – नम्बरवार राजायें बनते हैं | ज़रूर किसका कम पुरुषार्थ रहता है, जिस कारण से सज़ा खानी पड़ती है | आत्मा ही गर्भ जेल में सज़ा भोगती है | आत्मा जब गर्भ में है तो कहती है हमको बाहर निकालो फिर हम पाप कर्म नहीं करेंगे | आत्मा ही सज़ा खाती है | आत्मा ही कर्म विकर्म करती है | यह शरीर कोई काम का नहीं है | तो मुख्य बात अपने को आत्मा समझना चाहिए |

सहज मिले सो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी | मांग कर कोई से लेते हो तो वह लाचारी काशी कलवट खाकर देते हैं, तो वह पानी हो जाता है | खींच लिया वह रक्त बराबर.......कई बहुत तंग करते हैं, कर्ज़ा उठाते हैं तो वह रक्त समान हो जाता है | कर्ज़ा लेने की कोई ऐसी दरकार नहीं है | दान देकर फिर वापिस लिया, उस पर भी हरिशचन्द्र का मिसाल है | ऐसा भी मत करो | हिस्सा रख दो, जो तुमको काम भी आये | बच्चों को पुरुषार्थ इतना करना है जो अन्त में बाप की ही याद हो और स्वदर्शन चक्र भी याद हो, तब प्राण तन से निकलें | तब ही चक्रवर्ती राजा बन सकेंगे | ऐसे नहीं, पिछाड़ी में याद कर सकेंगे, उस समय ऐसी अवस्था हो जायेगी | नहीं, अभी से पुरुषार्थ करते-करते उस अवस्था को अन्त तक ठीक बनाना है | ऐसा न हो कि पिछाड़ी में वृत्ति कहाँ और तरफ़ चली जाये | याद करने से ही पाप कटते रहेंगे |

तुम समझते हो बरोबर बाप ने ही वर्सा दिया था, जो अब दे रहे हैं फिर उसी अवस्था में आयेंगे, सो तो तुम बच्चे समझते हो | पहली मुख्य बात है पावन बनने के लिए बाप को याद करना | लौकिक बाप तो सबको याद है | पारलौकिक बाप को जानते ही नहीं हैं | अभी तुम समझते

हो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना सहज ते सहज भी है, डिफिकल्ट ते डिफिकल्ट भी है |

बाप अच्छी तरह जानते हैं कि कौन-कौन फूल बनने वाले हैं, वह तो बाप ख़ुद ही कहते हैं फूल आगे होने चाहिए | सरटेन है यह फूल बनने वाले हैं, बाबा नाम नहीं लेते हैं | नहीं तो और कहेंगे हम कांटे बनेंगे क्या! बाबा पूछते हैं नर से नारायण कौन बनेंगे तो सब हाथ उठाते हैं | यूँ तो ख़ुद समझते हैं जो जास्ती सर्विस करते हैं वो बाप को भी याद करते हैं | बाप से प्यार है तो याद भी उनकी रहेगी | एकरस तो कोई भी याद कर नहीं सकेंगे | याद नहीं कर सकते इसलिए प्यार नहीं | प्यारी चीज़ को तो बहुत याद किया जाता है | बच्चे प्यारे होते हैं तो माँ-बाप गोदी में उठा लेते हैं | छोटे बच्चे भी फूल हैं | जैसे तुम बच्चों की दिल होती है शिवबाबा के पास जायें, वैसे छोटे बच्चे भी खींचते हैं | झट बच्चे को उठाए गोद में बिठायेंगे, प्यार करेंगे |

तुम जानते हो हमारी माला बनती है | यह भी तुम बच्चों की ही बुद्धि में है और किसकी बुद्धि में नहीं है | रूद्र माला उठाकर फेरते रहते हैं | तुम भी फेरते थे ना | अनेक मन्त्र जपते थे | बाप कहते हैं यह भी भक्ति है | यहाँ तो एक को ही याद करना है और बाप ख़ास कहते हैं – मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, भक्ति मार्ग में देह-अभिमान के कारण तुम सबको याद करते थे, अब मामेकम् याद करो | एक बाप मिला है तो उठते-बैठते बाप को याद करो तो बहुत ख़ुशी होगी | बाप को याद करने से सारे विश्व की बादशाही मिलती है | जितना टाइम कम होता जायेगा उतना जल्दी-जल्दी याद करते रहेंगे | दिन-प्रतिदिन क़दम बढ़ाते रहेंगे | आत्मा कभी थकती नहीं है | शरीर से कोई पहाड़ आदि पर चढ़ेंगे तो थक जायेंगे | बाप को याद करने में तुमको

कोई थकावट नहीं होगी | ख़ुशी में रहेंगे | बाबा को याद कर आगे चलते जायेंगे | आधाकल्प बच्चों ने मेहनत की है – शान्तिधाम में जाने के लिए | एम ऑब्जेक्ट का कुछ भी पता नहीं है | तुम बच्चों को तो परिचय है | भक्ति मार्ग में जिसके लिए इतना सब कुछ किया वह कहते हैं अब मुझे याद करो | तुम ख्याल करो बाबा ठीक कहते हैं या नहीं? वह तो समझते हैं पानी से ही पावन हो जायेंगे |

बाप बच्चों से पूछते हैं कि आत्मा सुनती है या शरीर सुनता है? (आत्मा) आत्मा सुनेगी ज़रूर शरीर द्वारा | बच्चे लिखते भी ऐसे हैं फलाने की आत्मा बापदादा को याद करती है | फलाने की आत्मा आज फलानी जगह जाती है | यह जैसे आदत पड़ जाती है, हम आत्मा हैं क्योंकि बच्चों को आत्म-अभिमानी बनना है | जहाँ भी देखते हो, जानते हो आत्मा और शरीर है और इनमें हैं दो आत्मायें | एक को आत्मा और एक को परम आत्मा कहते हैं | परमात्मा ख़ुद कहते हैं मैं इस शरीर में, जिसमें इनकी आत्मा भी प्रवेश रहती है, मैं प्रवेश करता हूँ | शरीर बिगर तो आत्मा रह नहीं सकती | अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो | अपने को आत्मा समझेंगे तब बाप को याद करेंगे और पवित्र बन शान्तिधाम में जायेंगे और फिर दैवीगुण भी जितना धारण कर और करायेंगे, स्वदर्शन चक्रधारी बनकर और बनायेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे | इसमें कोई मूँझते हो तो पूछ सकते हो | यह तो ज़रूर है मैं आत्मा हूँ, बाप बच्चों को ही कहते हैं जो ब्राह्मण बने हैं | दूसरों को नहीं कहेंगे | बच्चे ही प्रिय लगते हैं | हर एक बाप को बच्चे प्रिय लगते हैं | दूसरे को भल बाहर से प्यार करेंगे परन्तु बुद्धि में है – यह हमारे बच्चे नहीं हैं | मैं बच्चों से ही बात करता हूँ क्योंकि बच्चों को ही पढ़ाना है | बाकी बाहर वालों को पढ़ाना तुम्हारा काम है | कोई तो झट समझ जाते हैं, कोई थोड़ा समझकर चले जायेंगे | फिर जब देखेंगे यहाँ तो बहुत वृद्धि हो रही है तब आयेंगे, देखें तो सही | तुम यही समझायेंगे कि

बाप सभी आत्माओं वा बच्चों को कहते हैं मुझे याद करो | सभी आत्माओं को पावन बाप ही बनाते हैं | वह कहते हैं मेरे सिवाए और कोई को याद न करो | मेरी अव्यभिचारी याद रखो तो तुम्हारी आत्मा पावन बन जायेगी | पतित-पावन मैं एक ही हूँ | मेरी याद से ही आत्मा पावन बनेगी इसलिए कहते हैं – बच्चों, मामेकम् याद करो | बाप ही पतित राज्य से पावन राज्य बनाते हैं, लिबरेट करते हैं | कहाँ ले जाते हैं? शान्तिधाम फिर सुखधाम |

तुम बच्चे जानते हो बाबा आया है हमें इस जंगल से ले जाते हैं | मंगलम् भगवान् विष्णु कहा जाता है ना | सबका मंगल करने वाला है, सबका कल्याण होता है | एक ही बाप है तो उनको याद करना है | हम क्यों नहीं किसका कल्याण कर सकते! ज़रूर कोई खामी है | बाप कहते हैं याद का जौहर नहीं है इसलिए वाणी में भी कशिश नहीं होती है | यह भी ड्रामा | अब फिर अच्छी तरह जौहर धारण करो | याद की यात्रा ही मुश्किल है | हम भाई को ज्ञान देते हैं | बाप का परिचय देते हैं | बाप से वर्सा पाना है | बाबा फील करते हैं, घड़ी-घड़ी भूल जाते होंगे | बाप तो सबको बच्चा समझते हैं, तब तो बच्चे-बच्चे कहते हैं | यह बाप तो सबका है, वन्डरफुल पार्ट है ना इनका | बहुत थोड़े बच्चे समझते हैं कि यह अक्षर किसके हैं | बाबा तो बच्चे-बच्चे ही कहेंगे | आया ही हूँ बच्चों को वर्सा देने | बाबा सब सुना देते हैं | बच्चों से काम मुझे लेना है ना | यह बहुत वन्डरफुल चटपटी नॉलेज है | यह नॉलेज अटपटी और खटपटी भी है | वैकुण्ठ का मालिक बनने के लिए नॉलेज भी ऐसी चाहिए ना | अच्छा, हरेक को बाप को याद करना है, दैवीगुण धारण करने हैं | मुख से कभी उल्टे-सुल्टे अक्षर नहीं बोलने हैं | प्यार से काम निकालना है |

- जैसे उस पढ़ाई में होता है, यह है बहुत सहज | सिर्फ़ एक गुप्त डिफिकल्टी है – तुम बाप को याद करते हो उसमें माया विघ्न डालती है क्योंकि माया रावण को हषद (ईर्ष्या) होता है | तुम राम को याद करते हो तो रावण को हषद होता है कि हमारा मुरीद राम को क्यों याद करता है! यह भी ड्रामा में पहले से ही नूँध है | नई बात नहीं | कल्प पहले जो पार्ट बजाया है वही बजायेंगे | अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो |

- गायन भी है ना – भीलनी के बेर खाये | विवेक भी कहता है दान हमेशा गरीबों को करना है, साहूकारों को नहीं | तुमको आगे चलकर यह सब कुछ करना है | इसमें योग का बल चाहिए, जिससे वह कशिश में आ जायें | योगबल कम है क्योंकि देह-अभिमान है | हर एक अपने दिल से पूछे – हमको कहाँ तक बाप की याद है? कहाँ हम फँसते तो नहीं हैं? ऐसी अवस्था चाहिए, जो किसको भी देखने से चलायमानी न हो | बाबा का फ़रमान है देह-अभिमानी मत बनो | सबको अपना भाई समझो | आत्मा जानती है हम भाई-भाई हैं | देह के सब धर्म छोड़ने हैं | अन्त में अगर कुछ भी याद पड़ा तो दण्ड पड़ जायेगा | इतनी अपनी अवस्था मज़बूत बनानी है और सर्विस भी करनी है |

- बाप कहते हैं तुम्हारी अवस्था ऐसी पक्की हो, जो शरीर छूटने समय अन्त में कोई भी याद न आये | यह तो क्लीयर है | मित्र-सम्बन्धी आदि सबको भूलना है | सम्बन्ध रखना ही है एक बाप से | अभी तुम हीरे बन रहे हो | यह जवाहरात की दुकान है | तुम हर एक जौहरी हो | यह बातें दूसरा कोई भी जानता नहीं | तुम बच्चे जानते हो – हर एक के दिल में है, हम विश्व के मालिक बन रहे हैं – पुरुषार्थ अनुसार | जिन्हों को ऊँचा पद मिला है, उन्हों ने ज़रूर पुरुषार्थ

किया है | हैं तो तुम्हारे में से ही ना | तुम बच्चों को ही इतना पुरुषार्थ करना है इसलिए बाबा एक-एक बच्चे को देखते रहते हैं | जैसे फूलों को देखा जाता है ना | यह कैसा खुशबूदार फूल है! यह कैसा है! इनमें बाकी क्या फ्लो है? क्योंकि तुम चैतन्य हो | चैतन्य हीरे जान सकते हैं ना – हमारे में क्या-क्या खामी है, जो बाप से बुद्धियोग तुड़ाए कहाँ न कहाँ भटकाते हैं | बाप तो कहते हैं – बच्चे, मामेकम् याद करो | दूसरा कोई याद न आये | गृहस्थ व्यवहार में रहते एक बाप को याद करना है | इन्हों की तो भट्ठी बननी थी, जो तैयार हो निकली सर्विस के लिए | देखते हैं पुराने-पुराने जो हैं वह अच्छी सर्विस कर रहे हैं | थोड़े नये भी एड होते जाते हैं | पुरानों की भट्ठी बननी थी | भल पुराने हैं तो भी खामियां हैं ज़रूर | हर एक अपने दिल में समझते हैं कि बाबा जो अवस्था बनाने लिए कहते हैं वह अभी बनी नहीं है | एम ऑब्जेक्ट तो बाप समझाते हैं | सबसे जास्ती खाद है देह-अभिमान की, तब ही देह की तरफ़ बुद्धि चली जाती है | देह में होते हुए देही-अभिमानी बनना है | इन आँखों से देखने वाली चीज़ कोई भी सामने न आये, ऐसी अवस्था जमानी है | हमारी बुद्धि में सिवाए एक बाप के और शान्तिधाम के, कोई भी वस्तु याद न आये | कुछ भी साथ नहीं ले जाना है | पहले पहले हम नए सम्बंध में आये | अभी है पुराना सम्बंध | पुराने सम्बंध की जरा भी याद न आए | गायन भी है अन्तकाल......यह अभी की बात है | गीत तो कलियुगी मनुष्यों ने बनाये हैं | परन्तु वह समझते थोड़ेही हैं | मूल बात बाबा समझाते हैं एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये | एक बाप की याद से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे और पवित्र हीरे बनेंगे | कोई-कोई पत्थर तो बहुत वैल्युबुल होते हैं | माणिक भी वैल्युबुल होते हैं | बाप अपने से भी बच्चों की वैल्यु ऊँच करते रहते हैं | अपनी जांच करनी होती है, बाप कहते हैं अन्तर्मुख हो अपने में देखो – हमारे में क्या खामी है? कहाँ तक देह-अभिमान है? बाबा पुरुषार्थ के लिए भिन्न-भिन्न युक्तियाँ समझाते रहते हैं | जितना हो सके एक की याद रहे | भल कितने भी प्यारे हों, खूबसूरत बच्चे बहुत

लवली हों, तो भी किसकी याद न आये | यहाँ की कोई भी चीज़ याद न आये | कोई-कोई बच्चे में बहुत मोह रहता है | बाप कहते हैं उन सबसे ममत्व मिटाए एक की याद रखो | एक लवली बाप से ही योग रखना है | उनसे सब कुछ मिल जाता है | योग से ही तुम लवली बनते हो | लवली आत्मा बनती है | बाप लवली प्योर है ना | आत्मा को लवली प्योर बनाने के लिए बाप कहते हैं – बच्चे, जितना मुझे याद करेंगे तुम अथाह लवली बनेंगे | तुम इतने लवली बनते हो जो तुम देवी-देवताओं की अब तक पूजा हो रही है | बहुत लवली बनते हो ना | आधाकल्प तुम राज्य करते हो और फिर आधाकल्प तुम ही पूजे जाते हो | तुम ख़ुद ही पुजारी बन अपने चित्रों को पूजते हो | तुम हो सबसे लवली बनने वाले, परन्तु जब लवली बाप को अच्छी रीति याद करेंगे तब ही लवली बनेंगे | सिवाए एक बाप के और कोई याद न आये | तो अपनी जांच करो कि बाप को बहुत लव से याद करते हैं? बाप की याद में प्रेम के आंसू आ जाएँ | बाबा मेरा तो आपके सिवाए दूसरा न कोई | और कोई की याद न आये, माया के तूफ़ान न आयें | तूफ़ान तो बहुत आते हैं ना | अपने ऊपर बहुत जाँच रखनी है | हमारा लव बाप के सिवाए और कोई तरफ़ तो नहीं जाता है? भल कितनी भी प्यारी चीज़ हो, तो भी एक बाप की ही याद आये | तुम सब एक माशूक के आशिक बनते हो | आशिक-माशूक जो होते हैं, एक बार एक-दो को देख लिया, बस! शादी आदि भी नहीं करते | रहते भी अलग हैं | परन्तु एक-दो की याद बुद्धि में रहती है | अभी तुम जानते हो हम सब आशिक हैं एक माशूक के | उस माशूक को तुम भक्ति मार्ग में भी बहुत याद करते थे | यहाँ भी तुम्हें बहुत याद करना है, जबकि वह सम्मुख है | बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारा बेडा पार हो, इसमें संशय की कोई बात नहीं है | भगवान् से मिलने के लिए सब भक्ति करते हैं |

बच्चे इतना समय यहाँ बैठे हैं | दिल में भी आता है कि हम जैसे शिवालय में बैठे हैं | शिवबाबा भी याद आ जाता है | स्वर्ग भी याद आ जाता है | याद से ही सुख मिलता है | यह भी बुद्धि में याद रहे, हम शिवालय में बैठे हैं तो भी ख़ुशी होगी | जाना तो आखरीन सभी को शिवालय में है | शान्तिधाम में कोई को बैठ नहीं जाना है | वास्तव में शान्तिधाम को भी शिवालय कहेंगे, सुखधाम को भी शिवालय कहेंगे | दोनों स्थापन करते हैं | तुम बच्चों को याद भी दोनों को करना है | वह शिवालय है शान्ति के लिए और वह शिवालय है सुख के लिए | यह है दुःखधाम | अभी तुम संगम पर बैठे हो | शान्तिधाम और सुखधाम के सिवाए और किसकी भी याद नहीं होनी चाहिए | भल कहाँ भी बैठे हो, धन्धे आदि में बैठे हो तो भी बुद्धि में दोनों शिवालय याद आने चाहिए | दुःखधाम भूल जाना है | बच्चे जानते हैं यह वेश्यालय, दुःखधाम अब ख़त्म हो जाना है |

यहाँ बैठे तुम बच्चों को झुटका आदि भी नहीं आना चाहिए | बहुतों की बुद्धि कहाँ-कहाँ और तरफ़ चली जाती है | माया के विघ्न पड़ते हैं | तुम बच्चों को बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं – बच्चे, मनमनाभव | भिन्न-भिन्न प्रकार की युक्तियाँ भी बतलाते हैं | यहाँ बैठे हो, बुद्धि में यह याद करो कि हम पहले शान्तिधाम, शिवालय में जायेंगे फिर सुखधाम में आयेंगे | ऐसा याद करने से पाप कटते जायेंगे | जितना तुम याद करते हो उतना कदम बढ़ाते हो | यहाँ और कोई ख्यालात में नहीं बैठना चाहिए | नहीं तो तुम औरों को नुकसान पहुँचाते हो | फ़ायदे के बदले और ही नुकसान करते हो | आगे जब बैठते थे तो समाने कोई को जाँच करने के लिए बिठाया जाता था – कौन झुटका खाते हैं, कौन आँखें बन्द कर बैठते हैं, तो बड़ा ख़बरदार रहते थे | बाप भी देखते थे इनका बुद्धियोग कहाँ भटकता है क्या या झुटका खाते हैं क्या? ऐसे भी बहुत आते हैं, जो कुछ भी समझते नहीं है | ब्राह्मणियाँ ले आती हैं | शिवबाबा के आगे बच्चे बड़े

अच्छे होने चाहिए, जो गफ़लत में नहीं रहें क्योंकि यह कोई ऑर्डनरी टीचर नहीं | बाप बैठ सिखलाते है | यहाँ बहुत सावधान होकर बैठना चाहिए | बाबा 15 मिनट शान्ति में बिठाते हैं | तुम तो घण्टा दो घण्टा बैठते हो | सब तो महारथी नहीं हैं | जो कच्चे हैं, उनको सावधान करना है | सावधान करने से सुज़ाग हो जायेंगे | जो याद में नहीं रहते, व्यर्थ ख्यालात चलाते हैं, वह जैसे विघ्न डालते हैं क्योंकि बुद्धि कहाँ न कहाँ भटकती है | महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे सब बैठे हैं |

तुम्हारे दिल में आता है, बाबा हर 5 हज़ार वर्ष बाद आकर हमें जगाते हैं | हमारा जो दीवा है, उसमें घृत बाकी थोडा जाकर रहा है इसलिए अब फिर ज्ञान घृत डाल दीप जगाते है | जब बाप को याद करते हैं तो आत्मा रूपी दीप प्रज्जवलित होता है | आत्मा में जो कट चढ़ी हुई है वह उतरेगी बाप की याद से, इसमें ही माया की लड़ाई चलती है | माया घड़ी-घड़ी भुला देती है और कट उतारने के बजाय चढ़ती जाती है | बल्कि जितना उतरी थी, उससे भी जास्ती चढ़ जाती है | बाप कहते हैं – बच्चे, मुझे याद करो तो कट उतर जायेगी | इसमें मेहनत है | शरीर की कशिश न हो | देही-अभिमानी बनो | हम आत्मा हैं, बाबा के पास शरीर सहित तो जा नहीं सकेंगे | शरीर से अलग होकर ही जाना है | आत्मा को देखने से कट उतरेगी, शरीर को देखने से कट चढ़ती है | कभी चढ़ती, कभी उतरती – यह चलता रहता है | कभी नीचे, कभी ऊपर – बड़ा नाज़ुक रास्ता है | यह होते-होते पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था को पाते हैं | मुख्य हर बात में आँखें ही धोखा देती हैं, इसलिए शरीर को न देखो | हमारी बुद्धि शान्तिधाम-सुखधाम में लटकी हुई है और दैवी गुण भी धारण करने हैं | भोजन भी शुद्ध खाना है |

यह 5 विकार अभी फुलफोर्स में हैं | ऐसे समय ही बाप आते हैं, जबकि विकार फुल फ़ोर्स में हैं | यह आँखें बड़ी क्रिमिनल हैं | मुख भी क्रिमिनल है | ज़ोर से बोलने से मनुष्य तप जाता है और घर को भी तपा देते हैं | काम और क्रोध यह दोनों बड़े दुश्मन हैं | क्रोध वाले याद कर न सकें | याद करने वाले सदैव शान्ति में रहेंगे | अपने दिल से पूछना है – हमारे में भूत तो नहीं हैं? मोह का भी, लोभ का भी भूत होता है | लोभ का भूत भी कम नहीं | यह सब भूत हैं क्योंकि रावण सेना है |

अभी तुम पूज्य बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो | अभी संगम पर हो | बाप भी भारत में आते हैं, शिवजयन्ती मनाते हैं | परन्तु वह कौन है, कैसे, कब आते, क्या करते हैं? यह नहीं जानते | तुम बच्चे भी अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो, जो नहीं जानते वह किसको समझा भी नहीं सकते फिर पद कम हो जाता है | स्कूल में पढ़ने वालों में कोई की चलन खराब होती है तो कोई की सदैव अच्छी चलन रहती है | कोई प्रेज़न्ट रहे, कोई अबसेन्ट | यहाँ प्रेज़न्ट वह है जो सदैव बाप को याद करते हैं, स्वदर्शन चक्र फिराते रहते हैं | बाप कहते हैं उठते-बैठते तुम अपने को स्वदर्शन चक्रधारी समझो | भूलते हो तो अबसेन्ट हो जाते हो, जब सदैव प्रेजेन्ट होंगे तब ही ऊँच पद पायेंगे, भूल जायेंगे तो कम पद पायेंगे | बाप जानते हैं अभी टाइम पड़ा है | ऊँच पद पाने वालों की बुद्धि में यह चक्र फिरता होगा | कहा जाता है शिवबाबा की याद हो, मुख में ज्ञान अमृत हो तब प्राण तन से निकलें | अगर कोई चीज़ से प्रीत होगी तो अन्तकाल में वह याद आती रहेगी | खाने का लोभ होगा तो मरने के समय वह चीज़ ही याद आती रहेगी, यह खाऊं | फिर पद भ्रष्ट हो पड़ेगा | बाप तो कहते हैं स्वदर्शन चक्रधारी होकर मरो, और कुछ भी याद न आये | बिगर कोई समबन्ध जैसे आत्मा आई है, वैसे जाना है | लोभ भी कम नहीं | लोभ है तो पिछाड़ी समय वही याद आता रहेगा, नहीं मिला तो उसी आश में मर जायेंगे |

इसलिए तुम बच्चों में लोभ आदि भी नहीं होना चाहिए | बाप समझाते तो बहुत हैं परन्तु समझने वाले कोई समझें | बाप की याद को एकदम सीने से लगा दो – बाबा, ओहो बाबा | बाबा-बाबा मुख से कहना भी नहीं है | अजपाजप चलता रहे | बाप की याद में, कर्मातीत अवस्था में शरीर छूटे तब ऊँच पद पा सकते हो |

- बाबा भी ब्रह्मा के तन में है, इसलिए उनको ब्राह्मण भी कहा जा सकता है | हम भी उनके बच्चे ब्राह्मण सो देवता बनते हैं | अब बाप बैठ याद की यात्रा सिखलाते हैं, इसमें हठयोग आदि की कोई बात नहीं | वह लोग हठयोग से ट्रांस आदि में जाते हैं | यह कोई बड़ाई नहीं है | ट्रांस की बड़ाई कुछ भी नहीं है | ट्रांस तो एक पाई पैसे का खेल है | तुम्हें ऐसे कभी किसी को नहीं कहना है कि हम ट्रांस में जाते हैं क्योंकि आजकल विलायत आदि में जहाँ-तहाँ ढेर के ढेर ट्रांस में जाते हैं | ट्रांस में जाने से न उनको कोई फ़ायदा है, न तुमको कोई फ़ायदा है | बाबा ने समझ दी है | ट्रांस में न तो याद की यात्रा है, न ज्ञान है | ध्यान अथवा ट्रांस वाला कभी कुछ भी ज्ञान नहीं सुनेगा, न कोई पाप भस्म होंगे | ट्रांस का महत्व कुछ भी नहीं है | बच्चे योग लगाते हैं, उनको कोई ट्रांस नहीं कहा जाता है | याद से ही विकर्म विनाश होंगे | ट्रांस में विकर्म विनाश नहीं होंगे | बाबा सावधान करते हैं कि बच्चे ट्रांस का शौक मत रखो |

- तुम्हारा झाड़ धीरे-धीरे बढ़ता है | सन्यासियों को सिर्फ कहना है कि बाप को याद करो | यह भी बाप ने समझाया है कि तुमको आँखें बन्द नहीं करनी हैं | आँखें बन्द होंगी तो बाप को कैसे देखेंगे | हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं | वह देखने में नहीं आता है, लेकिन यह ज्ञान बुद्धि में है | तुम बच्चे समझते हो परमपिता परमात्मा हमको पढ़ा रहे हैं – इस

शरीर के आधार से | ध्यान आदि की कोई बात ही नहीं | ध्यान में जाना कोई बड़ी बात नहीं है | यह भोग आदि की ड्रामा में सब नूँध है | सर्वेन्ट बन भोग लगाकर आते हो | जैसे सर्वेन्ट लोग बड़े आदमी को खिलाते हैं | तुम भी सर्वेन्ट हो, देवताओं को भोग लगाने जाते हो | वह हैं फ़रिश्ते | वहाँ मम्मा-बाबा को देखते हैं | वह सम्पूर्ण मूर्ति भी एम ऑब्जेक्ट है | उनको ऐसा फ़रिश्ता किसने बनाया? बाकी ध्यान में जाना तो कोई बड़ी बात नहीं है | जैसे यहाँ शिवबाबा तुमको पढ़ाते हैं, वैसे वहाँ भी शिवबाबा इन द्वारा कुछ समझायेंगे | सूक्ष्मवतन में क्या होता है, यह सिर्फ जानना होता है | बाकी ट्रांस आदि को कुछ भी महत्व नहीं देना है | कोई को ट्रांस दिखलाना – यह भी बचपन है | बाबा सबको सावधान करते हैं – ट्रांस में मत जाओ, इसमें भी कई बार माया प्रवेश हो जाती है |

जब पिता कहते हैं तो ज़रूर हम उसके पुत्र ठहरे, ऐसे नहीं वो पिता है तो हम भी पिता है | अगर आत्मा से परमात्मा कहें तो आत्मा को ही परमपिता भी कहें | परन्तु पिता और पुत्र के रिलेशन में पिता कहने में आता है | अगर हम सब भी पितायें हैं तो फिर पिता कहेगा कौन! ज़रूर पुत्र और पिता दो चीज़ हैं | पिता कहने का सम्बन्ध पुत्र से बनता है और पुत्र के सम्बन्ध में ही पिता का सम्बन्ध आता है | तो उनको कहा ही जाता है परम पिता परम आत्मा | अभी वह बाप बैठ करके समझाते हैं कि अभी तुम्हारी जो स्थिति है और जो पहले स्थिति थी, उसमें फ़र्क है | अभी मैं आया हूँ उसी फ़र्क को मिटाने के लिए | बाप समझ दे करके समझाते हैं कि तुम्हारी जो ओरिजिनल स्टेज थी, अभी उसी को पकड़ लो | कैसे पकड़ो, उसका ज्ञान भी दे रहे हैं तो बल भी दे रहे हैं | कहते हैं तुम मुझे याद करो तो श्रेष्ठ कर्म करने का बल आएगा, नहीं तो तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ नहीं रहेंगे | कई कहते हैं कि हम चाहते हैं कि अच्छा काम करे लेकिन पता नहीं फिर क्या होता है जो हमारा मन अच्छे तरफ़ लगता नहीं है, दूसरी तरफ़ लग जाता है क्योंकि आत्मा

में अच्छे कर्म करने का बल नहीं है | हमारी स्थिति तमोप्रधान होने के कारण तमो का प्रभाव अभी ज़ोर से है, जो हमको दबाता है इसलिए बुद्धि उसी तरफ़ जल्दी चली जाती है और अच्छे तरफ़ बुद्धि जाने में रुकावट आती है | तो बाप कहते हैं अभी मेरे से योग लगाओ और जो मैं समझ देता हूँ, उसी आधार से अपने पापों का जो बोझा है, बन्धन है, जो रुकावटें बन सामने आती हैं उससे अपना रास्ता साफ़ करते चलो | फिर श्रेष्ठ कर्म करते रहेंगे तो तुम्हारे में सतोप्रधानता की वह पॉवर आती जायेगी, उसी आधार से तुम फिर से उस स्थिति को प्राप्त करेंगे जो तुम्हारी असुल थी |

यह है ज्ञान | वह है भक्ति | तुम भी भक्ति करते-करते देह-अभिमानी बन जाते हो | अब बाप कहते हैं – बच्चे, आत्म-अभिमानी बनो | हम आत्माओं को बाप इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं | घड़ी-घड़ी याद रखो यह एक ही समय है जब आत्माओं का बाप परमपिता पढ़ाते हैं | बाकी तो सारे ड्रामा में कभी पार्ट नहीं है, सिवाए इस संगमयुग के इसलिए बाप फिर भी कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा निश्चय करो, बाप को याद करो | यह बड़ी ऊँची यात्रा है – चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस | विकार में गिरने से एकदम चकनाचूर हो जाते हैं | फिर भी स्वर्ग में तो आयेंगे, लेकिन पद बहुत कम होगा | यह राजाई स्थापन हो रही है | इसमें कम पद वाले भी चाहिए, सब थोड़ेही ज्ञान में चलते हैं | फिर तो बाबा को बहुत बच्चे मिलने चाहिए | अगर मिलते हैं तो भी थोड़े टाइम के लिए | तुम माताओं की बहुत महिमा है, वन्दे मातरम् भी गाया जाता है | जगत अम्बा का कितना बड़ा भारी मेला लगता है क्योंकि बहुत सर्विस की है | जो बहुत सर्विस करते हैं वह बड़ा राजा बनते हैं | देलवाड़ा मंदिर में तुम्हारा ही याद गार है | तुम बच्चियों को तो बहुत टाइम निकालना चाहिए | तुम भोजन आदि बनाती हो तो बहुत शुद्ध भोजन याद में बैठ बनाना चाहिए, जो किसको खिलायें तो उनका भी हृदय शुद्ध हो जाये |

ऐसे बहुत थोड़े हैं, जिनको ऐसा भोजन मिलता होगा | अपने से पूछो – हम शिवबाबा की याद में रहकर भोजन बनाते हैं, जो खाने से ही उनके ह्रदय पिघल जायें की याद घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है | बाबा कहते हैं भूलना भी ड्रामा में नूँध है क्योंकि तुम 16 कला तो अभी बने नहीं हो | सम्पूर्ण बनना जरुर है | पूर्णिमा के चन्द्रमा में कितना तेज होता है, फिर कम होते-होते लकीर जाकर रहती है | घोर अन्धियारा हो जाता है फिर घोर सोझरा | यह विकार आदि छोड़ बाप को याद करते रहेंगे तो तुम्हारी आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी | तुम चाहते हो महाराजा बनें परन्तु सब तो बन न सकें | पुरुषार्थ सबको करना है | कोई तो कुछ पुरुषार्थ नहीं करते इसलिए महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे कहा जाता है | महारथी थोड़े होते हैं | प्रजा वा लश्कर जितना होता है,उतने कमान्डर्स वा मेजर्स नहीं होते हैं | तुम्हारे में भी कमान्डर्स, मेजर्स, कैप्टन हैं | प्यादे भी हैं | तुम्हारी भी यह रूहानी सेना है ना | सारा मदार है याद की यात्रा पर | उनसे ही बल मिलेगा | तुम हो गुप्त वारियर्स | बाप को याद करने से विकर्मों का जो किचड़ा है वह भस्म हो जाता है | बाप कहते हैं धन्धाधोरी भल करो | बाप को याद करो | तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो, एक माशूक के | अब वह माशूक मिला है तो उनको याद करना है | आगे भल याद करते थे परन्तु विकर्म विनाश थोड़ेही होते थे | बाप ने बताया है तुमको यहाँ तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है | आत्मा को ही बनना है | आत्मा ही मेहनत कर रही है | इसी जन्म में तुम्हें जन्म-जन्मान्तर की मैल को उतारना है | यह है मृत्युलोक का अन्तिम जन्म फिर जाना है अमरलोक | आत्मा पावन बनने बिगर तो जा नहीं सकती | हिसाब-किताब सबका चुक्तू हो जाना है | फिर अगर सजायें खायेंगे तो पद कम हो जायेगा | जो सज़ा नहीं खाते हैं वह सिर्फ माला के 8 दाने कहे जाते हैं | 9 रत्नों की ही अंगूठी आदि बनती है | ऐसा बनना है तो बाप को याद करने की बहुत मेहनत करनी है |

बहुत खौफ़नाक़ दुनिया है | जो मनुष्य को नहीं करना चाहिए वह करते हैं | कितना खून, डाका आदि लगते हैं | क्या नहीं करते हैं | 100 परसेन्ट तमोप्रधान हैं | अभी तुम फिर 100 परसेन्ट सतोप्रधान बन रहे हो | उसके लिए युक्ति बताई है याद की यात्रा | याद से ही विकर्म विनाश होंगे, बाप से जाकर मिलेंगे | अब बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध छोड़ो | खुशबूदार फूल बनना है | फूल में खुशबू होती है | सब उठाकर खुशबू लेते हैं | अक के फूल को नहीं उठायेंगे | तो फूल बनने के लिए पुरुषार्थ करना है इसलिए बाबा भी फूल ले आते हैं, ऐसा बनना है | घर गृहस्थ में रहते एक बाप को याद करना है | तुम जानते हो यह देह के सम्बन्धी तो ख़लास हो जाने हैं | तुम यहाँ गुप्त कमाई कर रहे हो | तुमको शरीर छोड़ना है, कमाई करके और बहुत ख़ुशी से हर्षितमुख हो शरीर छोड़ना है | घूमते फिरते भी बाप की याद में रहो तो तुमको कभी थकावट नहीं होगी | बाप की याद में अशरीरी हो कितना भी चक्र लगाओ, भल यहाँ से नीचे आबूरोड तक चले जाओ तो भी थकावट नहीं होगी | पाप कट जायेंगे | हल्के हो जायेंगे | तुम बच्चों को कितना फ़ायदा होता है और कोई तो जान न सके | सारी दुनिया के मनुष्य पुकारते हैं पतित-पावन आकर पावन बनाओ | फिर उनको महात्मा कैसे कहेंगे | पतित को फिर माथा थोड़ेही टेका जाता है | माथा पावन के आगे झुकाया जाता है |

शिवबाबा हमको पढाते हैं। बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं चलते, फिरते, उठते बाप को याद करते रहो। इसमें अपने को थकाने की भी दरकार नहीं। बाबा देखते हैं- कभी-कभी बच्चे सवेरे-सवेरे आकर बैठते हैं तो जरूर थक जाते होंगे। यह तो सहज मार्ग है। हठ से नहीं बैठना है। भल चक्र लगाओ, घूमो फिरो, बहुत रुचि से बाप को याद करो। अन्दर से बाबा-बाबा की बहुत उछल आनी चाहिए। उछल उनको आयेगी जो हरदम बाप को याद करते रहेंगे। कुछ न कुछ और बातें जो बुद्धि में याद हैं, उनको निकालना चाहिए। बाप के साथ अति प्यार रहे, वह

अतीन्द्रिय सुख भासता रहे। जब तुम बाप की याद में लग जायेंगे तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। फिर तुम्हारी खुशी का पारावार नहीं रहेगा। इन सब बातों का वर्णन यहाँ होता है इसलिए गायन भी है- अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो, जिनको भगवान् बाप पढाते हैं।

बाप कहते है मामेकम याद करो, इसमें मूंझना नहीं है। बाप इस रथ में बैठे हैं, उनकी महिमा करते हैं -वह है निराकार। इन द्वारा तुमको घड़ी-घड़ी यह याद दिलाते हैं - तुम मनमनाभव हो रहो। गोया तुम सब पर उपकार करते हो। तुम खाना पकाने वालों को भी कहते हो - शिवबाबा को याद कर भोजन बनाओ तो खाने वालो की बुद्धि शुद्ध हो जायेगी। एक-दो को याद दिलाना है। हर एक कुछ न कुछ समय याद करते हैं। कोई आधा घण्टा बैठते हैं, कोई 10 मिनट बैठते हैं। अच्छा, 5 मिनट भी प्यार से बाप को याद किया तो राजधानी में आ जायेंगे। राजा-रानी हमेशा सबको प्यार करते हैं। तुम भी प्यार के सागर बनते हो, इसलिए सब पर प्यार रहता है। प्यार ही प्यार। बाप प्यार का सागर है तो बच्चों का भी जरूर ऐसा प्यार होगा, तब वहाँ भी ऐसा प्यार रहेगा। तुमसे कोई-कोई पूछते हैं भारत की क्या सेवा करते हो? बोलो, तुम चाहते हो भारत पावन हो, अब पतित है ना, तो हम श्रीमत पर भारत को पावन बनाते हैं। सबको कहते हैं बाप को याद करो तो पतित से पावन बन जायेंगे। यह हम रूहानी सेवा कर रहे हैं। भारत जो सिरताज था, पीस प्रासपर्टी थी वह फिर से बना रहे हैं, श्रीमत पर कल्प पहले मुआफिक, ड्रामा प्लैन अनुसार। यह अक्षर पूरे याद करो। मनुष्य चाहते भी हैं वर्ल्ड पीस हो। सो हम कर रहे हैं। भगवानुवाच-बाप हम बच्चों को समझाते रहते हैं मुझ बाप को याद करो। यह भी बाबा जानते हैं तुम कोई इतना याद थोड़ेही करते हो बाबा को। इसमे ही मेहनत है। याद से ही तुम्हारी कर्मातीत अवस्था आयेगी। तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। इनका अर्थ भी किसको बुद्धि में नहीं है। शास्त्रों में तो कितनी बातें लिख दी हैं। अब बाप कहते हैं जो कुछ

पढ़े हो वह सब भूल जाना है, अपने को आत्मा समझना है। वही साथ चलना है, और कुछ भी साथ नहीं चलेगा। यह बाप की पढ़ाई है, जो साथ चलनी है। उसके लिए कोशिश कर रहे हैं।

रचना के आदि-मध्य- अन्त का राज भी बच्चों की बुद्धि में है। जानते हैं बाप इस छी-छी दुनिया से हमको वापस ले जायेंगे। यह भी अन्दर में याद करने से मनमनाभव ही है। चलते-फिरते उठते-बैठते बुद्धि में यही याद रहे। वन्डरफुल चीज को याद करना होता है ना। तुम जानते हो अच्छी रीति पढ़ने से, याद करने से हम विश्व के मालिक बनते हैं। यह तो जरूर बुद्धि में चलना चाहिए। पहले बाप को याद करना पड़े। टीचर बाद में मिलता है। बच्चे जानते हैं हमारा बेहद का रूहानी बाप है। सहज याद दिलाने के लिए बाबा युक्तियां बताते हैं-मामेंकम याद करो। जिस याद से ही आधाकल्प के विकर्म विनाश होंगे। पावन बनने के लिए तुमने जन्म-जन्मान्तर भक्ति, जप, तप आदि बहुत किये हैं। मन्दिरों में जाते हैं, भक्ति करते हैं, समझते हैं हम परम्परा से करते आये हैं। शास्त्र कब से सुने हैं? कहेंगे परम्परा से। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। सतयुग में तो शास्त्र होते ही नहीं। तुम बच्चों को तो वन्डर खाना चाहिए। बाप बिगर कोई भी यह बातें समझा नहीं सकते। यह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। यह तो हमारा बाबा है। इनका कोई माँ-बाप है नहीं। कोई कह नहीं सकते कि शिवबाबा किसी का बच्चा है। यह बातें बुद्धि में घड़ी-घड़ी याद रहें-यही मनमनाभव है। टीचर पढ़ाते हैं परन्तु खुद कहाँ से पढ़ा नहीं है। इनको कोई ने पढ़ाया नहीं। वह नॉलेजफुल है, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, ज्ञान का सागर है। चैतन्य होने कारण सब कुछ सुनाते हैं। कहते हैं-बच्चों, मैं जिसमें प्रवेश हुआ हूँ इन द्वारा मैं तुमको आदि से लेकर इस समय तक सब राज समझाता हूँ। अन्त के लिए तो फिर पीछे कहेंगे। उस समय तुम भी समझ जायेंगे- अभी अन्त आता है। कर्मातीत अवस्था को भी नम्बरवार पहुँच जायेंगे। तुम आसार भी देखेंगे। पुरानी सृष्टि का विनाश तो होना ही है। यह अनेक बार देखा है और देखते रहेंगे। पढ़ते ऐसे हैं जैसे कल्प पहले पढ़े थे। राज्य लिया फिर

गँवाया फिर अब ले रहे हैं। बाप फिर से पढ़ा रहे हैं। कितना सहज है। तुम बच्चे समझते हो हम सच-सच विश्व के मालिक थे। फिर बाबा आकर हमको वह ज्ञान दे रहे हैं। बाबा राय देते हैं ऐसे-ऐसे अन्दर में चलना चाहिए।

मीठे-मीठे बच्चे कभी सम्मुख हैं, कभी दूर चले जाते हैं। सम्मुख फिर वही रहते हैं जो याद करते हैं क्योकि याद की यात्रा में ही सब कुछ समाया हुआ है। गाया जाता है ना - नजर से निहाल। आत्मा की नजर जाती है परमपिता में और कुछ भी उनको अच्छा नहीं लगता। उनको याद करने से विकर्म विनाश होते हैं। तो अपने पर कितनी खबरदारी रखनी चाहिए। याद न करने से माया समझ जाती है-इनका योग टूटा हुआ है तो अपनी तरफ खीचती है। कुछ न कुछ उल्टा कर्म करा देती है। ऐसे बाप की निन्दा कराते हैं। भक्ति मार्ग में गाते हैं-बाबा, मेरे तो एक आप दूसरा न कोई। तब बाप कहते हैं-बच्चे, मजिल बहुत ऊँची है। काम करते हुए बाप को याद करना-यह है ऊंच ते ऊंच मंजिल। इसमें प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए। नहीं तो निन्दक बन जाते हैं, उल्टा काम करने वाले। समझो कोई में क्रोध आया, आपस में लड़ते-झगड़ते हैं तो भी निन्दा कराई ना, इसमें बड़ी खबरदारी रखनी है। अपने गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए बुद्धि बाप से लगानी है। ऐसे नहीं कि कोई सम्पूर्ण हो गया है। नहीं। कोशिश ऐसी करनी चाहिए-हम देही- अभिमानी बनें। देह- अभिमान में आने से कुछ न कुछ उल्टा काम करते हैं तो गोया बाप की निन्दा कराते हैं। बाप कहते हैं ऐसे सतगुरू की निन्दा कराने वाले लक्ष्मी-नारायण बनने की ठौर पा न सके इसलिए पूरा पुरूषार्थ करते रहो, इससे तुम बहुत ही शीतल बन जायेंगे। पाँच विकारों की बातें सब निकल जायेंगी। बाप से बहुत ताकत मिल जायेगी। काम-काज भी करना है। बाप ऐसे नहीं कहते कि कर्म न करो। वहाँ तो तुम्हारे कर्म, अकर्म हो जायेंगे। कलियुग में जो कर्म होते हैं, वह विकर्म हो जाते हैं। अभी संगमयुग पर तुमको सीखना होता है। वहाँ सीखने की बात नहीं। यहाँ की शिक्षा ही वहाँ साथ चलेगी। बाप बच्चों को समझाते हैं- बाहरमुखता अच्छी नहीं है। अन्तर्मुखी भव। वह भी समय आयेगा जबकि तुम बच्चे

अन्तर्मुख हो जायेंगे। सिवाए बाप के और कुछ याद नहीं आयेगा। तुम आये भी ऐसे थे, कोई की याद नहीं थी। गर्भ से जब बाहर निकले तब पता पड़ा कि यह हमारे माँ-बाप हैं, यह फलाना है। तो फिर अब जाना भी ऐसे है। हम एक बाप के हैं और कोई उनके सिवाए बुद्धि में याद न आये। भल टाइम पड़ा है परन्तु पुरूषार्थ तो पूरी रीति करना है। शरीर पर तो कोई भरोसा नहीं। कोशिश करते रहना चाहिए, घर में भी बहुत शान्ति हो, क्लेश नहीं। नहीं तो सब कहेंगे इनमें कितनी अशान्ति है। तुम बच्चों को तो रहना है बिल्कुल शान्त। तुम शान्ति का वर्सा ले रहे हो ना। अभी तुम रहते हो काँटों के बीच में। फूलों के बीच में नहीं हो। काँटो के बीच रह फूल बनना है। काँटो का काँटा नहीं बनना है। जितना तुम बाप को याद करेंगे उतना शान्त रहेंगे। कोई उल्टा-सुल्टा बोले, तुम शान्ति में रहो। आत्मा है ही शान्त। आत्मा का स्वधर्म है शान्त। तुम जानते हो अभी हमको उस घर में जाना है। बाप भी है शान्ति का सागर। कहते हैं तुमको भी शान्ति का सागर बनना है। फालतू झरमुई-झगमुई बहुत नुकसान करती है। बाप डायरेक्शन देते हैं-ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए, इससे तुम बाप की निन्दा कराते हो। शान्ति में कोई निन्दा वा विकर्म होता नहीं। बाप को याद करते रहने से और ही विकर्म विनाश होंगे। अशान्त न खुद हो, न ओरों को करो। किसको दु :ख देने से आत्मा नाराज होती है। बहुत हैं जो रिपोर्ट लिखते हैं-बाबा, यह घर में आते हैं तो धमचक्र मचा देते हैं। बाबा लिखते हैं तुम अपने शान्ति स्वधर्म में रहो। हातमताई की कहानी भी है ना, उनको कहा तुम मुख में मुहलरा डाल दो तो आवाज निकलेगा ही नहीं। बोल नहीं सकेंगे।तुम बच्चों को शान्ति में रहना है। मनुष्य शान्ति के लिए बहुत धक्के खाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमारा मीठा बाबा शान्ति का सागर है। शान्ति कराते-कराते विश्व में शान्ति स्थापन करते हैं। अपने भविष्य मर्तबे को भी याद करो।

सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। समझानी कितनी अच्छी है। बाजोली है, अभी तुम ब्राह्मण हो फिर देवता बनेंगे। यह बातें तुम भूल जाते हो। बाजोली याद हो तो यह ज्ञान सारा याद रहे। ऐसे बाप को याद कर रात को सो जाना चाहिए। फिर भी कहते हैं बाबा भूल जाते हैं। माया

घड़ी-घडी भुला देती है। लड़ाई है तुम्हारी माया के साथ। फिर आधाकल्प तुम उन पर राज्य करते हो। बात तो सहज बताते हैं। नाम है ही सहज ज्ञान, सहज याद। बाप को सिर्फ याद करो, क्या तकलीफ देते हैं। भक्ति मार्ग में तो तुमने बहुत तकलीफ ली है। दीदार के लिए गला काटने को तैयार हो जाते हैं, काशी कलवट खाते हैं। हाँ, जो निश्चयबुद्धि होकर करते हैं उनके फिर विकर्म विनाश होते हैं। फिर नयेसिर शुरू होगा हिसाब- किताब। बाकी मेरे पास नहीं आते हैं। मेरी याद से विकर्म विनाश होते हैं, न कि जीवघात से। मेरे पास तो कोई आते नहीं। कितनी सहज बात है। यह बाजोली तो बूढ़ों को भी याद रहनी चाहिए, बच्चों को भी याद रहनी चाहिए।

बच्चों को अपने बाप और शान्तिधाम, सुखधाम की याद में बैठना है | आत्मा को, बाप को ही याद करना है, इस दुःखधाम को भूल जाना है | बाप और बच्चों का यह है मीठा सम्बन्ध | इतना मीठा सम्बन्ध और कोई बाप का होता ही नहीं | सम्बन्ध एक होता है बाप से फिर टीचर और गुरु से होता है | अभी यहाँ यह तीनों ही एक हैं | यह भी बुद्धि में याद रहे, ख़ुशी की बात है ना | एक ही बाप मिला हुआ है, जो बहुत सहज रास्ता बताते हैं | बाप को, शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो, इस दुःखधाम को भूल जाओ | घूमो-फिरो लेकिन बुद्धि में यही याद रहे | यहाँ तो कोई गोरख़धन्धा आदि नहीं है | घर में बैठे हैं | बाप सिर्फ़ 3 अक्षर याद करने को कहते हैं | वास्तव में है एक अक्षर – बाप को याद करो | बाप को याद करने से सुखधाम और शान्तिधाम दोनों वर्से याद आ जाते हैं | देने वाला तो बाप ही है | याद करने से ख़ुशी का पारा चढ़ेगा | तुम बच्चों की ख़ुशी तो नामीग्रामी है | बच्चों की बुद्धि में है – बाबा हमको घर में फिर वेलकम करेंगे, रिसीव करेंगे, परन्तु उनको, जो अच्छी रीति बाप की मत पर चलेंगे और कोई को याद नहीं करेंगे | देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़

मामेकम् याद करना है | भक्तिमार्ग में तो तुमने बहुत सेवा की है परन्तु जाने का रास्ता मिलता ही नहीं | अभी बाप कितना सहज रास्ता बताते हैं, सिर्फ़ यह याद करो – बाप, बाप भी है, शिक्षक भी है, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं, जो और कोई समझा न सके | बाप कहते हैं अब घर चलना है | फिर पहले-पहले सतयुग में आयेंगे | इस छी-छी दुनिया से अब जाना है | भल यहाँ बैठे हैं परन्तु यहाँ से अब गये कि गये | बाप भी खुश होते हैं, तुम बच्चों ने बाप को इनवाइट किया है बहुत समय से | अब फिर बाप को रिसीव किया है | बाप कहते हैं मैं तुमको गुल-गुल बनाकर फिर शान्तिधाम में रिसीव करूँगा | फिर तुम नम्बरवार चले जायेंगे | कितना सहज है | ऐसे बाप को भूलना नहीं है | बात तो बहुत मीठी और सीधी है | एक बात अल्फ़ को याद करो | भल डिटेल में समझाते हैं फिर पिछाड़ी में कहते हैं अल्फ़ को याद करो, दूसरा न कोई | तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो एक माशूक के | तुम गाते आये हो – बाबा आप आयेंगे तो हम आपके ही बनेंगे | अब वह आये हैं तो एक का ही बनना चाहिए | निश्चयबुद्धि विजयन्ती | विजय पायेंगे रावण पर | फिर जाना है रामराज्य में | जितना याद करेंगे उतना सूर्यवंशी में आयेंगे | नई दुनिया में आना है ना | महाराजा-महारानी बनना है | बाप नॉलेज देते हैं नर से नारायण बनने की, जिसको राजयोग कहा जाता है | बाकी भक्ति मार्ग के शास्त्र भी सबसे जास्ती तुमने पढ़े हैं | सबसे जास्ती भक्ति तुम बच्चों ने की है | अब बाप से आकर मिले हो | बाप रास्ता तो बहुत सहज और सीधा बताते हैं कि बाप को याद करो | बाबा बच्चे-बच्चे कह समझाते हैं | बाप बच्चों पर वारी जाते हैं | वारिस हैं तो वारी जाना पड़े | तुमने भी कहा था बाबा आप आयेंगे तो हम वारी जायेंगे | तन-मन-धन सहित कुर्बान जायेंगे | तुम एक बार कुर्बान जाते हो,बाबा 21 बार जायेंगे | बाप बच्चों को याद भी दिलाते हैं | समझ सकते हैं, सब बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपना-अपना भाग्य लेने आये हैं | बाप कहते हैं मीठे बच्चों, विश्व की बादशाही हमारी जागीर है | अब जितना

पुरुषार्थ तुम कर लो | जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे | नम्बरवन सो नम्बर लास्ट में है | नम्बरवन में फिर ज़रूर जायेंगे | सारा मदार पुरुषार्थ पर है | बाप बच्चों को घर ले जाने आये हैं | अब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो पाप कटते जायेंगे | वह है काम अग्नि, यह है योग अग्नि | काम अग्नि में जलते-जलते तुम काले हो गये हो | बिल्कुल ख़ाक हो पड़े हो | अब मैं आकर तुमको जगाता हूँ | तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बताता हूँ, बिल्कुल सिम्पुल | मैं आत्मा हूँ, इतना समय देह-अभिमान में रहने कारण तुम उल्टा लटक पड़े थे | अब देही-अभिमानी बना बाप को याद करो | घर जाना है, बाप लेने के लिए आया है | तुमने निमन्त्रण दिया और बाप आये हैं | पतितों को पावन बनाकर पण्डा बन ले जायेंगे सब आत्माओं को | आत्मा को ही यात्रा पर जाना है |

तुम जानते हो यह ज्ञान का एक-एक महावाक्य रत्न, हीरे हैं | बच्चों में समझाने की बहुत रिफाइननेस चाहिए | कोई अक्षर भूल से निकल जाए तो फट से राईट कर समझाना चाहिए | सबसे कड़ी भूल है बाप को भूलना | बाप फ़रमान करते हैं मामेकम् याद करो | यह भूलना नहीं चाहिए | बाप कहते हैं तुम बहुत पुराने आशिक हो | तुम सब आशिकों का एक माशूक है | वह तो एक-दो की शक्ल पर आशिक-माशूक होते हैं | यहाँ तो माशूक है एक | वह एक कितने आशिकों को याद करेंगे | अनेकों को एक याद करना तो सहज है, एक कैसे अनेकों को याद करेंगे! बाबा को कहते हैं बाबा हम आपको याद करते हैं | आप हमको याद करते हैं? अरे, याद तुमको करना है, पतित से पावन होने के लिए | मैं थोड़ेही पतित हूँ, जो याद करूँ | तुम्हारा काम है याद करना क्योंकि पावन बनना है | जो जितना याद करते हैं और अच्छी रीति सर्विस भी करते हैं, उनको धारणा होती है | याद की यात्रा बहुत डिफिकल्ट है, इसमें ही युद्ध चलती है | बाकी ऐसे नहीं कि 84 का चक्र तुम भूल जायेंगे | यह कान सोने

का बर्तन चाहिए | जितना तुम याद करेंगे उतनी धारणा अच्छी होगी, इसमें ताक़त रहेगी इसलिए कहते हैं याद का जौहर चाहिए | ज्ञान से कमाई है | याद से सर्व शक्तियां मिलती हैं नम्बरवार | तलवारों में नम्बरवार जौहर का फ़र्क होता है | वह तो हैं स्थूल बातें | मूल बात बाप एक ही कहते हैं – अल्फ़ को याद करो | दुनिया के विनाश के लिए यह एक एटॉमिक बाम जाकर रहेगा और कुछ नहीं, उसमें न सेना चाहिए न कैप्टन | आजकल तो ऐसा बनाया है, जो वहाँ बैठे-बैठे बाम छोड़ेंगे |

कई समझते हैं हम राधे जैसा बनें | कलष तो माताओं को मिलता है | गोया राधे के बहुत जन्मों के अन्त में उनको कलष मिलता है | यह राज़ भी बाप ही समझा सकते हैं और कोई मनुष्य मात्र जानते नहीं | तुम्हारे पास सेन्टर पर कितने आते हैं | कोई तो एक रोज़ आते फिर 4 रोज़ नहीं | तो पूछना चाहिए इतने रोज़ तुम क्या करते थे? बाप को याद करते थे? स्वदर्शन चक्र फिराते थे? जो बहुत देरी से आते हैं उनसे लिखकर भी पूछना चाहिए | कई बदली होकर जाते हैं फिर भी कोई सेन्टर का तो ज़रूर है, उनको मन्त्र मिला हुआ है – बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है | बाप ने तो बहुत सहज बात बताई है | अक्षर ही दो हैं – मनमनाभव, मुझे याद करो और वर्से को याद करो, इसमें सारा चक्र आ जाता है | भल कोई दुकानदार हो वा क्या भी हो, पढ़ाई के लिए बहाना देना अच्छा नहीं लगता है | नहीं आते हैं तो उनसे पूछना है, तुम कितना बाप को याद करते हो? स्वदर्शन चक्र फिराते हो? खाओ पियो, घूमो फिरो – उसकी कोई मना नहीं है | इसके लिए भी टाइम निकालो | औरों का भी कल्याण करना है | समझो कोई का कपड़े साफ़ करने का काम है, बहुत लोग आते हैं | भल मुसलमान है वा पारसी है, हिन्दू है, बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह जो तुम्हारा शरीर है, यह तो पुराना मैला वस्त्र है, बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह तो पुराना मैला वस्त्र है, आत्मा

भी तमोप्रधान है, उनको सतोप्रधान, स्वच्छ बनाना है | यह सारी दुनिया तमोप्रधान, पतित कलियुगी पुरानी है | तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए लक्ष्य है ना | अब करो न करो, समझो न समझो, तुम्हारी मर्ज़ी | तुम आत्मा हो ना | आत्मा ज़रूर पवित्र होनी चाहिए | अभी तो तुम्हारी आत्मा इम्प्योर हो गई है | आत्मा और शरीर दोनों मैले हैं | उनको साफ़ करने के लिए तुम बाप को याद करो तो गैरन्टी है तुम्हारी सोल एकदम 100 प्रतिशत पवित्र सोना बन जायेगी | फिर जेवर भी अच्छा बनेगा | मनो न मानो, तुम्हारी मर्ज़ी | यह भी कितनी सर्विस हुई |

अभी बाप जीते जी मरना सिखला रहे हैं। परवाने शमा पर फिदा हो जाते हैं। कोई उस पर आशिक हो जल जाते हैं, फिदा हो जाते हैं, कोई फिर फेरी पहन चले जाते हैं। यह भी बैटरी है ना, सबका बुद्धियोग उस एक से है। निराकार बाप से जैसे बैटरी लगी हुई है। इस आत्मा के तो बहुत नजदीक है तो बहुत सहज होता है। बाप को याद करने से तुम्हारी बैटरी चार्ज होती जाती है। तुम बच्चों को थोड़ी मुश्किलात होती है, इनको सहज है। फिर भी इनको पुरूषार्थ तो करना पड़ता है, जितना तुम बच्चों को करना पड़ता है। यह जितना नजदीक हैं, उतना फिर बोझा है बहुत। गायन भी है जिनके माथे मामला..... इनके ऊपर तो बहुत मामले हैं ना। बाप तो है ही सम्पूर्ण, इनको सम्पूर्ण बनना है, इनको सबकी देख-रेख बहुत करनी पड़ती है। भल दोनों इकट्ठे हैं तो भी ख्याल तो होता है ना। बच्चियों पर कितनी मार पड़ती है तो जैसे कि दुःख होता है। कर्मातीत अवस्था तो पिछाड़ी में होगी, तब तक ख्याल होता है। बच्चियों की चिट्ठी नहीं आती है तो भी ख्याल होता है-बीमार तो नहीं है? सर्विस का समाचार आने से बाप जरूर उनको याद करेंगे। बाबा इस तन से सर्विस करते हैं। कभी मुरली थोड़ी चलती है, यूँ तो भल

2 - 4 रोज मुरली न भी आये, तुम्हारे पास पॉइंट्स रहती हैं। तुमको भी अपनी डायरी देखनी चाहिए। बैज पर भी तुम अच्छा समझा सकते हो।

बाप तुम्हारी भक्ति मार्ग की सब थक दूर कर अथक बना देते हैं। जैसे रात को आत्मा थक जाती है तो शरीर से अलग हो जाती है, जिसको नींद कहा जाता है। सोता कौन है? आत्मा के साथ कर्मेन्द्रियाँ भी सो जाती है। तो रात को सोते समय भी बाप को याद कर ऐसे-ऐसे ख्यालात करते सो जाना चाहिए। हो सकता है पिछाड़ी में रात- दिन तुम नींद को जीतने वाले बन जाओ। फिर याद में ही रहेंगे, बहुत खुशी रहेगी। 84 के चक्र को फिराते रहेंगे। उबासी वा पिनकी (झुटका) आदि नहीं आयेगी। हे नींद को जीतने वाले बच्चों, कमाई में कभी भी नींद नहीं करना है। जब ज्ञान में मस्त हो जायेंगे तब तुम्हारी अवस्था वह रहेगी। यहाँ तुम थोड़ा टाइम बैठते हो तो कभी उबासी या झुटका नहीं आना चाहिए। और और तरफ अटेंशन जाने से फिर उबासी आयेगी।

पहली-पहली बात समझाते हैं तुमको पावन बनना है तो मामेकम् याद करो परन्तु माया घड़ी-घड़ी भुला देती है इसलिए बाप खबरदार करते हैं। यह याद में बिठाने की रस्म भी ड्रामा में है क्योंकि बहुत हैं जो सारा दिन याद नहीं करते हैं, एक मिनट भी याद नहीं करते हैं फिर याद दिलाने के लिए यहाँ बिठाते हैं। याद करने की युक्ति बतलाते हैं तो पक्का हो जाए। बाप की याद से ही हमको सतोप्रधान बनना है। सतोप्रधान बनने की बाप ने फर्स्टक्लास रीयल युक्ति बताई है। पतित-पावन तो एक ही है, वह आकर युक्ति बताते हैं। यहाँ तुम बच्चे शान्ति में तब बैठते हो जबकि बाप के साथ योग है। अगर बुद्धि का योग यहाँ-वहाँ गया तो शान्त में नहीं है, गोया अशान्त हैं। जितना समय यहाँ-वहाँ बुद्धियोग गया, वह निकल हुआ क्योंकि पाप तो कटते नहीं। दुनिया यह नहीं जानती किं पाप कैसे कटते हैं! यह बड़ी महीन बातें हैं। बाप ने

कहा है मेरी याद में बैठो, तो जब तक याद की तार जुटी हुई है, उतना समय सफलता है। जरा भी बुद्धि इधर-उधर गई तो वह टाइम वेस्ट हुआ, निष्फल हुआ। बाप का डायरेक्शन है ना कि बच्चे मुझे याद करो, अगर याद नहीं किया तो निष्फल हुआ। इससे क्या होगा? तुम जल्दी सतोप्रधान नहीं बनेंगे फिर तो आदत पड़ जायेगी। यह होता रहेगा। आत्मा इस जन्म के पाप तो जानती है। भल कोई कहते हैं हमको याद नहीं है, परन्तु बाबा कहते हैं 3 - 4 वर्ष से लेकर सब बातें याद रहती हैं। शुरू में इतने पाप नहीं होते हैं, जितने बाद में होते हैं। दिन-प्रतिदिन क्रिमिनल आई होती जाती है, त्रेता में दो कला कम होती हैं। चन्द्रमा की 2 कला कितने में कम होती हैं। धीरे- धीरे कम होती जाती हैं फिर 16 कला सम्पूर्ण भी चन्द्रमा को कहा जाता है, सूर्य को नहीं कहते। चन्द्रमा की है एक मास की बात, यह फिर है कल्प की बात। दिन-प्रतिदिन नीचे उतरते जाते हैं। फिर याद की यात्रा से ऊपर चढ़ सकते हैं। फिर तो दरकार नहीं जो हम याद करें और ऊपर चढ़े। सतयुग के बाद फिर उतरना है। सतयुग में भी याद करें तो नीचे उतरे ही नहीं। ड्रामा अनुसार उतरना ही है, तो याद ही नहीं करते हैं। उतरना भी जरूर है फिर याद करने का उपाय बाप ही बतलाते हैं क्योंकि ऊपर जाना है। संगम पर ही आकर बाप सिखलाते हैं किं अब चढ़ती कला शुरू होती है। हमको फिर अपने सुखधाम में जाना है। बाप कहते हैं अब सुखधाम में जाना है तो मुझे याद करो। याद से तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। तुम दुनिया से निराले हो, बैकुण्ठ दुनिया से बिल्कुल न्यारा है। बैकुण्ठ था, अब नहीं है। कल्प की आयु लम्बी कर देने के कारण भूल गये हैं। अभी तुम बच्चों को तो बैकुण्ठ बहुत नजदीक दिखाई देता है। बाकी थोड़ा टाइम है। याद की यात्रा में ही कमी है इसलिए समझते हैं अभी टाइम है। याद की यात्रा जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं है। तुम पैगाम पहुँचाते हो ड्रामा के प्लैन अनुसार, कोई को पैगाम नहीं देते हैं तो गोया सर्विस नहीं करते हैं। सारी दुनिया में पैगाम तो पहुँचाना है कि बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। गीता पढ़ने वाले जानते हैं, एक ही गीता शास्त्र है, जिसमें यह महावाक्य हैं। परन्तु उसमें कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है तो याद किसको करें। भल शिव की भक्ति करते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान नहीं जो श्रीमत पर चलें।

इस समय तुमको मिलती है ईश्वरीय मत, इनके पहले थी मानव मत। दोनों में रात-दिन का फर्क है।

पुरूषार्थ करना है ऊंच बनने का। तो सच्ची शान्ति बाप की याद में है, जरा भी बुद्धि इधर-उधर गई तो टाइम वेस्ट होगा। कमाई कम होगी। सतोप्रधान बन नहीं सकेंगे। यह भी समझाया है कि हाथों से काम करते रहो, दिल से बाप को याद करो। शरीर को तन्दरूस्त रखने के लिए घूमना फिरना, यह भी भल करो। परन्तु बुद्धि में बाप की याद रहे। अगर साथ में कोई हो तो झरमुई-झगमुई नहीं करनी है। यह तो हर एक की दिल गवाही देती है। बाबा समझा देते हैं ऐसी अवस्था में चक्कर लगाओ। पादरी लोग जाते हैं एकदम शान्त में, तुम लोग ज्ञान की बातें सारा समय तो नहीं करेंगे फिर जबान को शान्त में लाकर शिवबाबा की याद में रेस करनी चाहिए। जैसे खाने के समय बाबा कहते हैं - याद में बैठकर खाओ, अपना चार्ट देखो। बाबा अपना तो बताते हैं कि हम भूल जाते हैं। कोशिश करता हूँ, बाबा को कहता हूँ बाबा हम पूरा समय याद में रहूँगा। आप हमारी खाँसी बंद करो। शुगर कम करो। अपने साथ जो मेहनत करता हूँ, वह बताता हूँ। परन्तु मैं खुद ही भूल जाता हूँ तो खाँसी कम कैसे होगी। जो बातें बाबा के साथ करता हूँ, वह सच सुनाता हूँ। बाबा बच्चों को बता देते हैं, बच्चे बाप को नहीं सुनाते, लज्जा आती है। झाडू लगाओ, खाना बनाओ तो भी शिवबाबा की याद में बनाओ तो ताकत आयेगी। यह भी युक्ति चाहिए, इसमें तुम्हारा ही कल्याण होगा फिर तुम याद में बैठेंगे तो औरों को भी कशिश होगी। एक-दो को कशिश तो होती है ना। जितना तुम जास्ती याद में रहेंगे उतना सन्नाटा अच्छा हो जायेगा। एक-दो का प्रभाव ड्रामा अनुसार पड़ता है। याद की यात्रा तो बहुत कल्याणकारी है, इसमें झूठ बोलने की दरकार नहीं है। सच्चे बाप के बच्चे हैं तो सच्चा होकर चलना है। बच्चों को तो सब कुछ मिलता है। विश्व की बादशाही मिलती है तो फिर लोभ कर 10 - 20 साड़ियाँ आदि क्यों इकट्ठी करते हो। अगर बहुत चीजें इकट्ठी

करते रहेंगे तो मरने समय भी याद आयेगी इसलिए मिसाल देते हैं कि स्त्री ने उनको कहा लाठी भी छोड़ दो, नहीं तो यह भी याद आयेगी। कुछ भी याद नहीं रहना चाहिए।

बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो, शरीर को भूलना है। यह शरीर छोड़ना भी है बाप की याद में। मैं आत्मा बाबा के पास जा रहा हूँ। देह का अभिमान छोड़, पवित्र बनाने वाले बाप की याद में ही शरीर छोड़ना है। क्रिमिनल- आइज्ड होंगे तो अन्दर में जरूर खाता रहेगा। मंजिल बहुत भारी है। भल कोई भी अच्छे- अच्छे बच्चे हो तो भी कुछ न कुछ भूलें होती जरूर हैं क्योंकि माया है ना। कर्मातीत तो कोई भी हो नहीं सकता। कर्मातीत अवस्था को पिछाड़ी में पायेंगे तब सिविल- आइज्ड हो सकते हैं। फिर वह रूहानी ब्रदर्ली लव रहता है। रूहानी ब्रदर्ली लव बहुत अच्छा रहता है, फिर क्रिमिनल दृष्टि नहीं होती, तब ही ऊँच पद पा सकेंगे। बाबा एम ऑब्जेक्ट तो पूरी बतलाते हैं। बच्चे समझते हैं कि यह-यह हमारे में खामी है। रजिस्टर जब रखेंगे तब खामी का भी मालूम पड़ेगा। हो सकता है कोई रजिस्टर न रखने से भी सुधर सकता है। परन्तु जो कच्चे हैं उनको रजिस्टर जरूर रखना चाहिए। कच्चे तो बहुत हैं, कोई-कोई को तो लिखना ही नहीं आता है। अवस्था तुम्हारी ऐसी चाहिए जो और कोई की याद नहीं आये। हम आत्मा बिना शरीर के आई, अब अशरीरी बनकर जाना है। इस पर एक कहानी है-उसने कहा तुम लाठी भी न उठाओ, वह भी पिछाड़ी में याद आयेगी। कोई भी चीज़ में ममत्व नहीं रखना है। बहुतों का ममत्व पुरानी वस्तुओं में रहता है। कुछ भी याद न आये सिवाए बाप के। कितनी ऊंची मंजिल है। कहाँ ठिकरियाँ, कहाँ शिवबाबा की याद। मांगने की तमन्ना नहीं होनी चाहिए। हरेक को कम से कम 6 घण्टा सर्विस जरूर करनी चाहिए। वैसे तो गवर्मेन्ट की सर्विस 8 घण्टा होती है परन्तु पाण्डव गवर्मेन्ट की सर्विस कम से कम 5 - 6 घण्टा जरूर करो। विशश मनुष्य कभी बाबा को याद नहीं कर सकते हैं। सतयुग में है वाइसलेस वर्ल्ड। देवी-देवताओं की महिमा गाई जाती है-सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण .....तुम बच्चों की

अवस्था कितनी उपराम रहनी चाहिए। कोई भी छी-छी चीज में ममत्व नहीं रहना चाहिए। शरीर में भी ममत्व न रहे, इतना योगी बनना है। जब सच-सच ऐसे योगी होंगे तो वह जैसे फ्रेश (ताजा) रहेंगे। जितना तुम सतोप्रधान बनते जायेंगे, खुशी का पारा उतना चढ़ता जायेगा। 5 हजार वर्ष पहले भी ऐसी खुशी थी। सतयुग में भी वही खुशी होगी। यहाँ भी खुशी रहेगी फिर यही खुशी साथ में ले जायेंगे। अन्त मती सो गति कहा जाता है ना। अभी की मत है फिर गति सतयुग में होगी। यह बहुत विचार सागर मंथन करना होता है।

ऐसा मीठा बाबा, उनको भी फिर तुम भूल जाते हो! सबसे मीठा बाबा है ना। बाकी रावण राज्य में तुमको सब दु :ख ही देते हैं ना इसलिए बेहद के बाप को याद करते हैं। उनकी याद में प्रेम के आंसू बहाते हे साजन, कब आकर सजनियों से मिलेंगे? क्योंकि तुम सब हो भक्तियां। भक्तियों का पति हुआ भगवान्। भगवान् आकर भक्ति का फल देते हैं, रास्ता बताते हैं और समझाते हैं-यह 5 हजार वर्ष का खेल है। रचयिता और रचना के आदि-मध्य- अन्त को कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं। रूहानी बाप और रूहानी बच्चे ही जानते हैं।

नाम ही है पैराडाइज़। उनका बाप मालिक बनाते हैं। वह तो सिर्फ वन्डर्स दिखाते हैं, परन्तु तुमको तो बाप उसका मालिक बनाते हैं इसलिए अब बाप कहते हैं निरन्तर मुझे याद करो। सिमर- सिमर सुख पाओ, कलह कलेष मिटे सब तन के, जीवनमुक्ति पद पाओ। पवित्र बनने के लिए याद की यात्रा भी बहुत जरूरी है। मनमनाभव, तो फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। गति कहा जाता है शान्तिधाम को। सद्गति होती है यहाँ। सद्गति के अगेंस्ट होती है दुर्गति।

अभी तुम बाप को और रचना के आदि- मध्य- अन्त को जान गये हो। तुमको बाप का लव मिलता है। बाप नजर से निहाल कर देते हैं। सम्मुख आकर ही नॉलेज सुनायेंगे ना। इसमें प्रेरणा की तो कोई बात ही नहीं। बाप डायरेक्शन देते हैं, ऐसे याद करने से शक्ति मिलेगी। जैसे बैटरी चार्ज होती है ना। यह मोटर है, इसकी बैटरी डल हो गई है। अब सर्वशक्तिमान् बाप के साथ बुद्धि का योग लगाने से फिर तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। बैटरी चार्ज हो जायेगी। बाप ही आकर सबकी बैटरी चार्ज करते हैं। सर्वशक्तिमान् बाप ही है। यह मीठी-मीठी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। वह भक्ति के शास्त्र तो जन्म-जन्मान्तर पढ़ते आये हो। अब बाप सब धर्म वालों के लिए एक ही बात सुनाते हैं। कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेगे। अब याद करना तुम बच्चों का काम है, इसमें मूंझने की तो बात ही नहीं है। पतित-पावन एक बाप ही है। फिर पावन बन सब घर चले जायेंगे। सबके लिए यह नॉलेज है। यह है सहज राजयोग और सहज ज्ञान।

यह ज्ञान कितना अटपटा है। ऐसी गुह्य बातें कोई समझ थोड़ेही सकते हैं, इसमें चाहिए सोने का बर्तन। वह याद की यात्रा से ही बन सकता है। यहाँ बैठे भी यथार्थ याद थोड़ेही करते हैं। यह नहीं समझते कि हम छोटी आत्मा हैं, याद भी बुद्धि से करना है। यह बुद्धि में आता नहीं है। छोटी सी आत्मा वह हमारा बाप भी है, टीचर भी है, यह बुद्धि में आना भी असम्भव हो जाता है। बाबा-बाबा तो कहते हैं, दु :ख में सिमरण सब करते हैं। भगवानुवाच है ना-दु :ख में सब याद करते हैं, सुख में करे न कोई। दरकार ही नहीं याद करने की। यहाँ तो इतने दु :ख आफतें आदि आती है, याद करते हे भगवान् रहम करो, कृपा करो। अब भी बच्चे बनते हैं तो भी लिखते हैं-कृपा करो, शक्ति दो, रहम करो। बाबा लिखते हैं शक्ति आपेही योगबल से लो। अपने ऊपर कृपा रहम आपेही करो। अपने को आपेही राजतिलक दो। युक्ति बताता हूँ - कैसे दे सकते हो। टीचर पढ़ने की युक्ति बताते हैं। स्ट्रडेट का काम है पढ़ना, डायरेक्शन पर चलना

। टीचर कोई गुरू थोड़ेही है जो कृपा आशीर्वाद करे । जो अच्छे बच्चे होंगे वह दौड़ेंगे । हर एक स्वतन्त्र है, जितना दौड़ी लगानी है वह लगाये । याटू की यात्रा ही दौड़ी है ।

अभी तुम यहाँ पुरूषार्थी हो, सम्पूर्ण पवित्र नहीं । सम्पूर्ण पवित्र को फरिश्ता कहा जाता है । जो पवित्र नहीं उनको पतित ही कहेंगे । फरिश्ता बनने के बाद फिर देवता बनते हो । सूक्ष्मवतन में तुम सम्पूर्ण फरिश्ता देखते हो, उन्हों को फरिश्ता कहा जाता है | तो बाप समझाते हैं-बच्चे, एक अल्फ को ही याद करना है । अल्फ माना बाबा, उनको अल्लाह भी कहते हैं । बच्चे समझ गये हैं बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है । स्वर्ग कैसे रचते हैं? याद की यात्रा और ज्ञान से । भक्ति में ज्ञान होता नहीं । ज्ञान सिर्फ एक ही बाप देते हैं ब्राह्मणों को । ब्राह्मण चोटी हैं ना । अभी तुम ब्राह्मण हो फिर बाजोली खेलेंगे । तुम ऊंच ते ऊंच पुरूषोत्तम बनो । नई दुनिया कौन रचेगा? बाप ही रचेगा । यह भूलो मत । माया तुमको भुलाती है, उनका तो धन्धा ही यह है । ज्ञान में इतना इंटरफियर नहीं करती है, याद में ही करती है । आत्मा में बहुत किचड़ा भरा हुआ है, वह बाप की याद बिगर साफ हो न सके । योग अक्षर से बच्चे बहुत मूँझते हैं । कहते हैं बाबा हमारा योग नहीं लगता । वास्तव में योग अक्षर उन हठयोगियों का है । सन्यासी कहते हैं ब्रह्म से योग लगाना है । अब ब्रह्म तत्व तो बहुत बड़ा लम्बा- चौड़ा है, जैसे आकाश में स्टॉर्स देखने में आते हैं, वैसे वहाँ भी छोटे-छोटे स्टॉर मिसल आत्मायें हैं । वह है आसमान से पार, जहाँ सूर्य चांद की रोशनी नहीं । तो देखो कितने छोटे-छोटे रॉकेट तुम हो ।

अभी बेहद का बाप तुमको बेहद में ले जाते हैं, वह फिर बेहद के भक्ति के अज्ञान में ले जाते हैं । अब बाप तुम बच्चों को समझाते हैं- अपने को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो । फिर भी यहाँ से बाहर जाने से माया भुला देती है । जैसे गर्भ में पश्चाताप करते हैं-हम ऐसे नहीं

करेंगे, बाहर आने से भूल जाते हैं। यहाँ भी ऐसे हैं, बाहर जाने से ही भूल जाते हैं। यह भूल और अभुल का खेल है। अभी तुम बाप के एडाप्टेड बच्चे बने हो। शिवबाबा है ना।

पहले तो खुद की भी ऐसी अवस्था चाहिए, सिर्फ पण्डिताई नहीं चाहिए। ऐसी एक पण्डित की कथा है, बोला राम नाम कहने से पार हो जायेंगे यह इस समय की बात है। तुम बाप की याद में विषय सागर से क्षीरसागर में चले जाते हो। यहाँ तुम बच्चों की अवस्था बड़ी अच्छी चाहिए। योगबल नहीं है, क्रिमिनल आइज़ हैं तो उनका तीर लग नहीं सकता। आँखें सिविल चाहिए। बाप की याद में रह किसको ज्ञान देंगे तो तीर लग जायेगा। ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। नॉलेज से धन की कमाई होती है। ताकत है याद की। बहुत बच्चे तो बिल्कुल याद करते ही नहीं, जानते ही नहीं। बाप कहते हैं मनुष्यों को समझाना है कि यह है दु:खधाम, सतयुग है सुखधाम।

आत्मा निकल जाए तो फिर भल शरीर को कितना भी मारो, जैसे मिट्टी को मारते हो। तो बाप बार-बार समझाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह तो बाबा जानते हैं नम्बरवार धारणा करते हैं। कोई तो बिल्कुल जैसे बुद्धु हैं, कुछ नहीं समझते। ज्ञान तो बड़ा सहज है। अंधा, लूला, लंगड़ा भी समझ सकते हैं क्योंकि यह तो आत्मा को समझाया जाता है ना। आत्मा लूली लंगड़ी नहीं होती। शरीर होता है। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं, परन्तु भक्ति मार्ग की आदत आँख बन्द करके बैठने की पड़ी हुई है तो यहाँ भी आँखें बन्द कर बैठते हैं। जैसे मतवाले। बाप कहते हैं आँख बन्द न करो। सामने देखते हुए भी बुद्धि से बाप को याद करो तब ही विकर्म विनाश होंगे। कितना सहज है, फिर भी कहते बाबा हम याद नहीं कर सकते हैं। अरे, लौकिक बाप जिससे हद का वर्सा मिलता है, उनको तो मरने तक भी

याद करते, यह तो सब आत्माओं का बेहद का बाप है, उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। जिस बाप को बुलाते भी हैं ओ गॉड फादर, गाइड मी। वास्तव में यह कहना भी रांग है। बाप सिर्फ एक का तो गाइड नहीं है। वह तो बेहद का गाइड है। एक को थोड़ेही लिबरेट करेंगे। बाप कहते हैं मैं सबकी आकर सद्गति करता हूँ।

मीठे ते मीठा बेहद का बाप मीठे-मीठे बच्चों को बैठ समझाते हैं। यह तो समझते हो ना बहुत मीठा-मीठा बाप है। फिर शिक्षा देने वाला टीचर भी बहुत मीठा-मीठा है। यहाँ तुम जब बैठते हो तो यह याद होना चाहिए बहुत मीठा- मीठा बाबा है, उनसे स्वर्ग का वर्सा मिलना है। यहाँ तो वेश्यालय में बैठे हो। कितना मीठा बाप है। वह खुशी दिल में होनी चाहिए। बाप हमको आधाकल्प सुखधाम में ले जाने वाला है। दु :ख हरने वाला है। एक तो ऐसा बाबा है, फिर बाबा टीचर भी बनते हैं। हमको सारे सृष्टि चक्र का राज़ समझाते हैं, जो और कोई नहीं समझा सकते। यह चक्र कैसे फिरता है, 84 जन्म कैसे पास होते हैं-यह सारा चपटी में समझाते हैं। फिर साथ में भी ले जायेंगे। यहाँ तो रहना नहीं है। सभी आत्माओं को साथ ले जायेंगे। बाकी थोड़े रोज़ हैं। कहा जाता है बहुत गई थोड़ी रही...... । बाकी थोड़ा समय है इसलिए जल्दी-जल्दी मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा जो जमा है, वह खलास हो। भल माया की युद्ध चलती है। तुम मुझे याद करेंगे, वह याद करने से हटायेगी, यह भी बाबा बता देते हैं, इसलिए कभी विचार नहीं करना। कितने भी संकल्प, विकल्प, तूफान आयें, सारी रात संकल्पों में नीद फिट जाये तो भी डरना नहीं है। बहादुर रहना है। बाबा कह देते हैं यह आयेंगे जरूर। स्वप्न भी आयेंगे, इन सब बातों में डरना नहीं है। युद्ध का मैदान है ना। यह सब विनाश हो जाने हैं। तुम युद्ध करते हो माया को जीतने के लिए, बाकी इसमें कोई श्वास आदि बन्द नहीं करना है। आत्मा जब शरीर में होती है तो श्वास चलता है। इसमें श्वास आदि बन्द करने की भी कोशिश नहीं करनी है। हठयोग आदि में कितनी तकलीफ करते हैं। बाबा

को अनुभव है। थोड़ा- थोड़ा सीखते थे, परन्तु फुर्सत भी हो ना। जैसे आजकल तुमको कहते हैं ज्ञान तो अच्छा है परन्तु फुसर्त कहाँ, इतने कारखाने हैं, यह है.....। तुमको बाप कहते हैं-मीठे-मीठे बच्चों, एक तो बाप को याद करो और चक्र याद करो, बस। क्या यह डिफीकल्ट है?

बाप आये ही हैं घर ले चलने के लिए। किसको? आत्माओं को। तुम जितना बाप को याद करते हो, उतना तुम पवित्र बनते हो। पवित्र बनते जायेंगे तो फिर सजा भी नहीं खायेंगे। अगर सजायें खाई तो पद कम हो जायेगा इसलिए जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होते रहेंगे। बहुत बच्चे हैं जो याद कर नहीं सकते। तंग होकर छोड़ देते हैं, युद्ध करते नहीं हैं। ऐसे भी हैं। समझा जाता है राजधानी स्थापन होनी है। नापास भी बहुत होंगे। गरीब प्रजा भी चाहिए ना। भल वहाँ दुःख नहीं होता है, परन्तु गरीब और साहूकार तो हर हालत में होंगे। यह है कलियुग, यहाँ साहूकार वा गरीब दोनों दु :ख भोगते हैं। वहाँ दोनो सुखी रहते हैं। परन्तु गरीब साहूकार की भासना तो रहेगी। दु :ख का नाम नहीं होगा। बाकी नम्बरवार तो होते ही हैं। कोई रोग नहीं, आयु भी बड़ी होती है। इस दुःखधाम को भूल जाते हैं। सतयुग में तुमको दु :ख याद भी नहीं होगा। दु :खधाम और सुखधाम की याद अभी बाप दिलाते हैं। मनुष्य कहते हैं स्वर्ग था परन्तु कब था, कैसा था? कुछ नहीं जानते। लाखों वर्ष की बात तो कोई को भी याद आ न सके। बाप कहते हैं कल तुमको सुख था, कल फिर होगा। तो यहाँ बैठ फूलों को देखते हैं। यह अच्छा फूल है, यह इस प्रकार की मेहनत करते हैं। यह स्थेरियम नहीं है, यह पत्थरबुद्धि है। बाप को कोई बात की चिंता नहीं रहती। हाँ, समझते हैं बच्चे जल्दी पढ़कर साहूकार हो जाये, पढ़ाना भी है। बच्चे तो बने हैं परन्तु जल्दी पढ़कर होशियार हों और वह भी कहाँ तक पढ़ते और पढ़ाते हैं, कैसे फूल हैं - यह बाप बैठ देखते हैं क्योंकि यह है चैतन्य फूलों का बगीचा। फूलों को देखते भी कितनी खुशी होती है। बच्चे खुद भी समझते हैं बाबा स्वर्ग का वर्सा देते हैं। बाप को याद करते रहेंगे तो पाप कटते जायेंगे। नहीं तो सजा खाकर फिर पद पाएंगे।

उसको कहा जाता है-मानी और मोचरा। बाप को ऐसा याद करो जो जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायें। चक्र को जानना भी है। चक्र फिरता रहता, कब बन्द नहीं होता। जूं मिसल चलता रहता है, जूँ सबसे आहिस्ते चलती है। बाबा एक-एक को बैठ देखते हैं-यह बाबा को कितना याद करते हैं, कितना ज्ञान उठाया है, औरों को कितना समझाते हैं।

मैं आधाकल्प का माशक हूँ। तुम मुझे पुकारते आये हो-हे पतित-पावन आओ, आकर हम आत्माओं, आशिकों को पावन बनाओ। तो उनकी मत पर चलना चाहिए। मेहनत करनी चाहिए। बाबा ऐसे नहीं कहते कि तुम धन्धा आदि नहीं करो। नहीं, वह सब कुछ करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते, बाल बच्चों आदि को सम्भालते सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो क्योंकि मैं पतित-पावन हूँ। बच्चों की सम्भाल भल करो बाकी अभी और बच्चे पैदा नहीं करो। नहीं तो वह याद आते रहेंगे। इन सबके होते हुए भी इनको भूल जाना है। जो कुछ तुम देखते हो यह सब खत्म हो जाने वाले हैं। शरीर खत्म हो जायेगा। बाप की याद से आत्मा पवित्र बन जायेगी तो फिर शरीर भी नया मिलेगा। यह है बेहद का सन्यास।

साहूकार तो धन के पिछाड़ी मरते हैं। मुट्ठी में पैसे हैं, वह छूटते नहीं। रावण की जेल में पड़े रहेंगे। कोटों में कोई निकलेंगे जो सब चीज़ों से ममत्व निकाल बन्दर से देवता बन जायेंगे। जो भी साहूकार लोग बड़े-बड़े लखपति हैं, मुट्ठी में पैसे पकड़े हुए हैं, उनके पिछाड़ी प्राण हैं। सारा दिन महल, माड़ियां, बच्चे आदि ही याद आते रहेंगे। उनकी याद में ही मर जायेंगे। बाप कहते हैं कि पिछाड़ी में और कोई चीज याद न आये। सिर्फ मामेकम् याद करो तो जन्म जन्मान्तर के पाप नाश हो जायें। साहूकार के पैसे तो सब मिट्टी में मिल जाने हैं क्योंकि पाप के पैसे हैं ना। काम में नहीं आते। बाप कहते हैं हम गरीब निवाज, गरीबों को साहूकार, साहूकारों को गरीब बना देंगे। यह दुनिया बदलनी होती है ना। कितना पैसे का नशा रहता है-हमको इतना धन

माल है, एरोप्लेन हैं, मोटरे हैं, महल हैं........! फिर कितना भी माथा मारें कि बाप को याद करें, परन्तु याद ठहरेगी नहीं। लॉ नहीं कहता है, कोटों में कोई ही निकलेंगे। बाकी तो पैसा ही याद करते रहेंगे। बाप कहते हैं देह सहित जो कुछ देखते हो उन सबको भूल जाओ। इसमें ही अटक पड़े तो ऊँच पद पा नहीं सकोगे। बाबा पुरूषार्थ तो करायेंगे ना। तुम यहाँ आये हो नर से नारायण बनने। तो इसमें योग भी पूरा चाहिए। कोई भी चीज़, न धन, न बच्चे आदि कुछ भी याद न आये, सिवाए एक शिवबाबा के, तब तुम ऊँच ते ऊँच स्कॉलरशिप ले सकते हो, ऊँच प्राइज पा सकते हो। वो लोग विश्व में शान्ति की राय देते हैं तो पाई-पैसे का मैडल मिल जाता है। उसमें ही खुश हो जाते हैं। अभी तुमको क्या प्राइज मिलती है? तुम विश्व के मालिक बनते हो। ऐसे नहीं, हम 5 - 6 घण्टा याद में रहते हैं तो बस यह लक्ष्मी-नारायण बन जायेंगे। नहीं, बड़ी मेहनत करनी है। एक शिवबाबा की ही याद रहे और कुछ भी पिछाड़ी में याद न आये। तुम बहुत-बहुत बड़े देवता बन रहे हो।

तुम बच्चे अपने को देखते रहो कि हम सर्वगुण सम्पन्न बने हैं? हमारी चलन देवताओं मिसल है? देवताओं के राज्य में तो विश्व में शान्ति थी। अब फिर तुमको सिखलाने आया हूँ-विश्व में शान्ति कैसे स्थापन हो। तो तुमको भी शान्ति में रहना पड़े। शान्त होने की युक्ति बताता हूँ कि मेरे को याद करो तो तुम शान्त हो, शान्तिधाम में चले जायेंगे। कोई बच्चे तो शान्त रहकर औरों को भी शान्ति में रहना सिखलाते हैं। कोई अशान्ति कर देते हैं। खुद अशान्त रहते हैं तो औरों को भी अशान्त बना देते हैं। शान्ति का अर्थ नहीं समझते। यहाँ आते हैं शान्ति सीखने फिर यहाँ से जाते हैं तो अशान्त हो जाते हैं। अशान्ति होती ही है अपवित्रता से। यहाँ आकर प्रतिज्ञा करते हैं-बाबा, हम आपका ही हूँ।

तुम बच्चे यह मेला आदि करते हो तो कितनी प्रजा बनती है। तुम रूहानी सेना हो ना इसमें कमान्डर, मेजर आदि थोड़े होते हैं, प्रजा तो बहुत बनती है। जो अच्छी रीति समझाते हैं तो कुछ न कुछ अच्छा पद पाते हैं। उनमें भी फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड ग्रेड होती हैं। तुम शिक्षा देते रहते हो, कोई तो बिल्कुल आपसमान बन जाते हैं। कोई सबसे ऊपर भी जा सकते हैं। देखा जाता है एक-दो से ऊपर चले जाते हैं। नये-नये पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाये तो बहुत ऊंच चला जायेगा। सारा मदार है योग पर। नॉलेज तो बहुत सहज है, तुम फील करते होंगे। बाप की याद में विघ्न पड़ते हैं। बाप कहते हैं भोजन खाओ तो भी याद में। परन्तु कोई 2 मिनट, कोई 5 मिनट याद में रहते हैं। सारा समय याद में रहें, बडा मुश्किल है। माया कहाँ न कहाँ उड़ाय भुला देती है। सिवाए बाप के और कोई की याद नहीं रहेगी तब ही कर्मातीत अवस्था होगी। अगर कुछ भी अपना होगा तो वह याद जरूर पड़ेगा। कुछ भी याद न आये, यह बाबा मिसाल है, इनको क्या याद आयेगा? कोई बाल बच्चे, धन आदि है? सिर्फ तुम बच्चे ही याद आते हो। तुम तो जरूर बाप को याद पड़ेगे ही क्योंकि बाप आये हैं कल्याण करने के लिए। याद सबको करते हैं। परन्तु फिर भी बुद्धि फूलों तरफ ही चली जाती है। फूल अनेक प्रकार के होते हैं। कोई बिगर खुशबू भी होते हैं। बगीचा है ना। बाप को बागवान, माली भी कहते हैं। यह तो तुम जानते हो - मनुष्य क्रोध में आकर कितना लड़ते- झगड़ते हैं। बहुत देह अभिमान है। बाप समझाते हैं-कभी कोई क्रोध करे तो शान्त रहना चाहिए। क्रोध भूत है ना। भूत के आगे शान्ति से रेसपान्ड देना है।

तुम जानते हो हम ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण हैं। अगर कोई कहते हम तो शिवबाबा के बच्चे हैं, ब्रह्मा से हमारा कनेक्शन नहीं तो फिर देवता वह कैसे बनेंगे? ब्रह्मा के थ्रू ही बनेंगे ना। शिवबाबा ने तुमको कैसे, किस द्वारा कहा मुझे याद करो? ब्रह्मा द्वारा कहा ना। प्रजापिता ब्रह्मा के तो बच्चे हो ना। ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हो। हम ब्रह्मा के बच्चे हैं। तो जरूर

ब्रह्मा याद आयेगा। शिवबाबा ब्रह्मा तन से पढ़ाते हैं। ब्रह्मा बाबा हैं बीच में। ब्राह्मण बनने बिगर देवता कैसे बन सकेंगे। मैं जिस रथ में आता हूँ, उनको भी जानना चाहिए। ब्राह्मण बनना चाहिए। ब्रह्मा को बाबा नहीं कहें तो बच्चा ही कैसे ठहरा। ब्राह्मण अपने को नहीं समझते तो गोया शूद्र हैं। शूद्र से फट देवता बने मुश्किल हैं। ब्राह्मण बन शिवबाबा को याद करने बिगर देवता बन कैसे सकेंगे, इसमें मूँझने की भी दरकार नहीं। तो उद्घाटन करने वालों को भी समझाना है कि बाप द्वारा उद्घाटन हो चुका है। आपको भी बताते हैं कि सिर्फ बाप को याद करो तो पाप कट जायेंगे। वह बाप ही पतित-पावन है फिर तुम पावन बन देवता बन जायेंगे। बच्चे बहुत सर्विस कर सकते हैं। बोलो, हम बाप का पैगाम देते हैं। अब करो, न करो, तुम्हारी मर्जी। हम पैगाम देकर जाते हैं। और कोई भी रीति से पावन होना ही नहीं है। जब फुर्सत मिले, सर्विस करो। समय तो बहुत मिलता है।

बच्चे याद में बैठे थे इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ। बाप को याद करो, वह है आत्माओं का बाप, परमपिता, पतित-पावन। उस पतित-पावन को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं ना आप मुये मर गई दुनिया देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध आदि देखने में आते हैं, उनको याद नहीं करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे। तुम जन्म-जन्मान्तर की पाप आत्मायें हो ना। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्य आत्माओं की दुनिया। अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो? बाप की याद से ही जमा होंगे। आत्मा में मन-बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो भी मित्र-सम्बन्धी हैं, उन सबको भूलो। वह सब एक-दो को दु:ख देते हैं। एक पाप करते हैं जो काम कटारी चलाते हैं, दूसरा पाप फिर क्या करते हैं? जो बाप सर्व का सद्गति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात् स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उसे सर्वव्यापी कह देते हैं।

- हाहाकार के बाद फिर जय-जयकार हो जाती है। अभी है कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत आने की हैं, फिर उस समय तुम याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे क्योंकि हंगामा बहुत हो जायेगा इसलिए बाप कहते हैं अब याद की यात्रा को बढ़ाते जाओ तो पाप भस्म हो जाये और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरूषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। यह तो बहुत छोटा सा ब्राह्मणों का युग हैं। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है।

- रूहानी बाप के रूहानी बच्चे यह तो हर एक जानते होंगे कि बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है और सतगुरू भी है। बच्चे जानते हैं, जानते हुए भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। यहाँ जो बैठे हैं, वह जानते तो होंगे ना परन्तु भूल जाते हैं। दुनिया वाले तो बिल्कुल नहीं जानते। बाप कहते हैं सिर्फ यह तीन अक्षर भी याद रहे तो बहुत सर्विस कर सकते हैं। प्रदर्शनी अथवा म्युजियम में तुम्हारे पास बहुत आते हैं, घर में भी मित्र-सम्बन्धी आदि बहुत आते हैं। कोई भी आये तो समझाना चाहिए कि जिसको भगवान कहा जाता है वह बाबा भी है, टीचर भी है और सतगुरू भी है। यह याद हो तो भी ठीक, और कोई की याद न आये। और कोई को तो ऐसे कह न सकें। तुम बच्चे जानते हो हमारा बाबा बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। कितना सहज है। परन्तु कोई-कोई की तो ऐसी पत्थरबुद्धि है जो यह 3 अक्षर भी बुद्धि में धारण नहीं कर सकते, भूल जाते हैं। बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं क्योंकि बेहद का बाप हैं ना। बेहद का बाप है तो जरूर बेहद का वर्सा ही देंगे। बेहद का वर्सा है देवताओं के पास। इतना सिर्फ याद करें तो घर में भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। परन्तु यह भी भूल जाने के कारण किसको बता नहीं सकते। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं क्योंकि सारे कल्प के भूले हुए हैं। अब बाप बैठ समझाते हैं। वास्तव में यह ज्ञान बहुत सिम्पल है, बाकी याद की यात्रा से सम्पूर्ण बनना, इसमें मेहनत हैं। बाबा हमारा बाप भी है, शिक्षा भी देते हैं, वर्सा भी देते हैं, पवित्र भी बनाते हैं क्योंकि

पतित-पावन बाप है, सिर्फ कहते हैं कि सबको यही कहो कि मुझे याद करो। बाबा की सर्विस में जरा भी कदम नहीं उठा तो वह फिर पद्म कैसे पायेंगे! पद्मपति तो सर्विस से ही बन सकते हैं।

बाप बच्चों को कहते हैं सिर्फ यह विचार करो-बाबा, हमारा बाप भी है, शिक्षक और सतगुरू भी है। सबको ले जायेंगे। अक्षर ही दो हैं-मनमनाभव, इसमें सब आ जाता हैं, परन्तु यह भी भूल जाते हैं। पता नहीं बुद्धि में क्या-क्या याद रहता है। नहीं तो रोज लिखकर दो कि इतना समय हम किस अवस्था में बैठे थे? तुम बैठे हो बाप, टीचर, सतगुरू के सामने तो वही याद आना चाहिए ना। स्टूडेंट को टीचर ही याद आयेगा ना परन्तु यहाँ माया है ना। एकदम माथा ही मूड देती है। सारा राज्य-भाग्य ही ले लेती है। तुमको पता नहीं पड़ता है। आये तो थे वर्सा लेने परन्तु मिलता कुछ भी नहीं। ऐसे ही कहेंगे ना। भल स्वर्ग में तो चलेंगे परन्तु वह कोई बड़ी बात थोड़े ही है। यहाँ आये भल परन्तु पढ़े नहीं, फिर स्वर्ग में तो जायेंगे ना। यहाँ तो बैठे हैं ना। समझते हैं स्वर्ग में जाना हैं, फिर क्या भी बनें। वह तो पढ़ाई नहीं हुई ना। थोड़ा भी सुना तो उसका फल मिल जाता है। पढ़ाई से तो बड़ी स्कॉलरशिप मिलती है। बाप से ऊंच ते ऊंच पद पाना है तो पुरूषार्थ करना पड़े। पढ़ाई याद होगी तो 84 का चक्र भी याद आ जायेगा। यहाँ बैठने से सब याद आना चाहिए। परन्तु यह भी याद आता नहीं है। अगर याद आये तो किसको सुनाये भी। चित्र तो सबके पास हैं। शिव के चित्र पर तुम कोई को सुनायेंगे तो कभी गुस्सा नहीं करेंगे। बोलो, आओ तो हम आपको बतायें कि यह शिव बेहद का बाप है ना। इनके साथ आपका क्या सम्बन्ध है? ऐसे फालतू चित्र तो नहीं होगा। शिव के लिए जरूर कहेंगे यह भगवान हैं, भगवान तो निराकार ही होता है। उनको बाप कहा जाता है। वह शिक्षा भी देते हैं। तुम्हारी आत्मा शिक्षा लेती है। आत्मा ही सब कुछ करती है। टीचर भी आत्मा बनती है। बाप भी इस रथ पर आकर पढ़ाते हैं। सतयुग की स्थापना करते हैं। वहाँ कलियुग का नाम

निशान ही नहीं। मनुष्य कहाँ से आयेंगे। सर्विसएबुल बच्चों को सारा दिन ख्याल चलते रहते हैं। सर्विस नहीं करते तो समझा जाता है बुद्धि ही नहीं चलती। जैसे बुद्धू बैठे हैं। बाप को समझ नहीं सकते। पतित-पावन बाप को याद करने से ही वर्सा मिलेगा। याद करते-करते मरेंगे तो बाप की सब मिलकियत मिलेगी। बेहद के बाप की मिलकियत है स्वर्ग।

जन्म जन्मान्तर झूठ ही पढ़ते-सुनते रहते हैं इसलिए कहते हैं झूठी माया। सच्चे और झूठे संसार में कितना रात-दिन का फर्क हैं! झूठ बोलते-बोलते इनसालवेट बन पड़े हैं। तुम कितना युक्ति से समझाते हो, फिर भी कोटो में कोई की ही बुद्धि में बैठता है। यह ह बहुत सहज ज्ञान और सहज योग। बाप, टीचर, सतगुरू को याद करने से उनकी शिफ्तें भी बुद्धि में आ जायेंगी। अपनी जांच करनी चाहिए। हम सब बाबा को याद करते हैं वा और तरफ बुद्धि जाती है? तुम्हारी बुद्धि को अभी समझ मिलती है। कितनी मीठी-मीठी बातें बाप समझाते हैं। युक्तियाँ बताते हैं। तुम कोई को बैठकर समझायेंगे फिर तुम्हारे दुश्मन भी नहीं बनेंगे। शिवबाबा ही तुम्हारा बाप, टीचर, सतगुरू है, उनको याद करो। समझाने की युक्ति रचनी चाहिए। ब्रह्मा के चित्र पर बहुत पीछे पड़ते हैं। शिव का चित्र देख कभी उड़ायेंगे नहीं। अरे, यह तो आत्माओं का बाप है ना। तो बाप को याद करो, इनसे बहुतों को फायदा हो सकता है। इनको याद करने से तुम पतित से पावन बन जायेंगे। वह सबका बाप है। एक बाप के सिवाए कोई की याद नहीं आनी चाहिए और संग तोड़ एक संग जोड़ना है। यह है किसके कल्याण करने की युक्तियां। बाप को याद ही नहीं कर सकेंगे तो पावन कैसे बनेंगे। घर में भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। बहुत मित्र-सम्बन्धी आदि तुमको मिलेंगे। भिन्न-भिन्न युक्तियां रचो। बहुतों का कल्याण कर सकते हो। हट्टी तो एक ही है। और कोई हट्टी है नहीं, तो जायेंगे कहाँ?

बाबा कहते हैं, शरीर निर्वाह अर्थ कुछ भी करो, उसके लिए मना नहीं करते। बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। बाप और वर्सा याद रहे। बाप तो सारे विश्व का मालिक तुमको बना देते हैं। धरती आसमान सब अपने हो जाते हैं। कोई भी हद नहीं रहती। बच्चे जानते हैं हम ही मालिक थे। भारत अविनाशी खण्ड गाया हुआ है। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। हद के पढ़ाई की भी खुशी होती है ना। यह तो बेहद की पढ़ाई है। बेहद का बाप पढ़ाते हैं। ऐसे बाप को याद करना चाहिए। बच्चे तो समझ सकते हैं-वह जिस्मानी धंधा आदि क्या है, कुछ भी नहीं। हम बाप से क्या वर्सा पाते हैं। कितना रात-दिन का फर्क है। हम तो जिस्मानी धंधा आदि करते भी जाकर सिरताज बनेंगे। बाप आया है पढ़ाने तो बच्चों को खुशी होनी चाहिए। वह कामकाज भी करते रहना है। यह तो समझते हैं, यह पुरानी दुनिया है, इनके विनाश के लिए सब तैयारियाँ हो रही हैं। ऐसे-ऐसे काम करते हैं जो डर लगता है-कहाँ बड़ी लड़ाई न लग जाए।यह सब ड्रामा अनुसार होना ही है। ऐसा नहीं कि ईश्वर कराते हैं। ड्रामा में नूध है। आज नहीं तो कल विनाश जरूर होना है। अभी तुम पढ़ रहे हो। तुम्हारे लिए नई दुनिया जरूर चाहिए। यह सब बातें अन्दर सिमरण कर खुश होना चाहिए। बाबा ने यह रथ भी ले लिया, इनको तो कुछ भी है नहीं। सब कुछ छोड़ दिया। बेहद की बादशाही मिलती है तो फिर यह क्या करेंगे। बाबा का गीत भी बनाया हुआ है- अल्फ को अल्लाह मिला तो फिर यह गदाई क्या करेंगे। कम जास्ती दे एकदम खलास कर दिया। शरीर भी बाबा को दे दिया। ओह! हम तो विश्व के मालिक बनते हैं, अनेक बार मालिक बने हैं। कितना सहज है। तुम भल अपने घर में रहो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।

बाप समझाते हैं-मुझ अपने बाप को याद करो। तुमको शर्म नहीं आती तुम घड़ी-घड़ी मुझे भूल जाते हो। अरे, बाप का कहना नहीं मानते हो। बेहद का बाप कहते हैं यह जन्म निर्विकारी बनो तो 21 जन्म निर्विकारी बन पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। यह नहीं मानते हो। बच्चे-बच्चे कह बात करते हैं। बच्चे, तुम्हें लज्जा नहीं आती! बाप को याद नहीं करते हो! बाप के साथ

तुम्हारा प्यार नहीं है! कितना याद करते हो? बाबा एक घण्टा। अरे, निरन्तर याद करेंगे तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा सिर पर है। बाप सम्मुख समझाते हैं-तुमने बाप की कितनी ग्लानि की है।

अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में कोई तकलीफ नहीं है, घुटका नहीं खाना है। इसको कहा जाता है सहज याद। पहले-पहले अपने को आत्मा ही समझना है। आत्मा ही शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। संस्कार भी सब आत्मा में ही रहते हैं। आत्मा तो इन्डिपेन्डेट है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। यह नॉलेज अभी ही तुमको मिलती है, फिर नहीं मिलेगी। तुम्हारा यह शान्त में बैठना दुनिया नहीं जानती, इसको कहा जाता है नैचुरल शान्ति। हम आत्मा ऊपर से आई हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाने। हम आत्मा असुल वहाँ के रहने वाले हैं। यह बुद्धि में ज्ञान है। बाकी इसमें हठयोग की कोई बात नहीं, बिल्कुल सहज है। अभी हम आत्माओं को घर जाना है परन्तु पवित्र बनने बिगर जा नहीं सकते। पवित्र होने के लिए परमात्मा बाप को याद करना है। याद करते-करते पाप मिट जायेंगे। तकलीफ की तो कोई बात ही नहीं। तुम पैदल करने जाते हो तो बाप की याद में रहो। अभी ही याद से पवित्र बन सकते हो। वहाँ वह तो है पवित्र दुनिया। वहाँ उस पावन दुनिया में इस ज्ञान की कोई दरकार नहीं रहती क्योंकि वहाँ कोई विकर्म होता नहीं। यहाँ याद से विकर्म विनाश करने हैं। वहाँ तो तुम नैचुरल चलते हो, जैसे यहाँ चलते हो। फिर थोड़ा- थोड़ा नीचे उतरते हो। ऐसे नहीं कि वहाँ भी तुमको यह प्रैक्टिस करना है। प्रैक्टिस अभी ही करना है। बैटरी अब चार्ज करना है फिर आहिस्ते- आहिस्ते बैटरी डिस-चार्ज होना ही है। बैटरी चार्ज होने का ज्ञान अभी एक ही बार तुमको मिलता है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने में तुमको कितना समय लग जाता है! शुरू से लेकर कुछ न कुछ बैटरी कम होती जाती है। मूलवतन में तो हैं ही आत्मायें। शरीर तो है नहीं। तो नैचुरल उतरने अर्थात् बैटरी कम होने की बात ही नहीं। मोटर जब चलेगी तब तो बैटरी कम होती जायेगी। मोटर खड़ी होगी तो बैटरी थोड़ेही चालू होगी।

मोटर जब चले तब बैटरी चालू होगी। भल मोटर में बैटरी चार्ज होती रहती है लेकिन तुम्हारी बैटरी एक ही बार इस समय चार्ज होती है। तुम फिर जब यहाँ शरीर से कर्म करते हो फिर थोड़ी बैटरी कम होती जाती है। पहले तो समझाना है कि वह है सुप्रीम फादर, जिसको सब आत्मायें याद करती हैं। हे भगवान कहते हैं, वह बाप है, हम बच्चे हैं। यहाँ तुम बच्चों को समझाया जाता है, बैटरी कैसे चार्ज करनी है। भल घूमो फिरो, बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कोई भी बात न समझो तो पूछ सकते हो। है बिल्कुल सहज। 5 हजार वर्ष बाद हमारी बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। बाप आकर सबकी बैटरी चार्ज कर देते हैं। विनाश के समय सब ईश्वर को याद करते हैं। समझो बाढ़ हुई तो भी जो भक्त होंगे वह भगवान को ही याद करेंगे परन्तु उस समय भगवान की याद आ नहीं सकती। मित्र-सम्बन्धी, धन-दौलत ही याद आ जाता है। भल ' हे भगवान' कहते हैं परन्तु वह भी कहने मात्र। भगवान बाप है, हम उनके बच्चे हैं। यह तो जानते ही नहीं। उनको सर्वव्यापी का उल्टा ज्ञान मिलता है।

बाप कहते हैं - बच्चे, जितना तुम मुझे याद करेंगे उतना पाप कटते जायेंगे। सहज ते सहज भी है तो डिफीकल्ट भी है। बच्चे जब पुरूषार्थ करने लग पड़ते हैं तब समझते हैं माया की बड़ी युद्ध है। बाप कहते हैं सहज है परन्तु माया दीवा ही बुझा देती है। गुलबकावली की कहानी भी है ना। माया बिल्ली दीवा बुझा देती है। यहाँ सब माया के गुलाम हैं फिर तुम माया को गुलाम बनाते हो। सारी प्रकृति तुम्हारी अदब में रहती है। कोई तूफान नहीं, फैमन नहीं। प्रकृति को गुलाम बनाना है। वहाँ कभी भी माया का वार नहीं होगा। अभी तो कितना तंग करती है । गायन है ना मैं गुलाम तेरा.. वह फिर कहते तू गुलाम मेरा। बाप कहते हैं अब मैं तुमको गुलामपने से छुड़ाने आया हूँ। तुम मालिक बन जायेंगे, वह गुलाम बन जायेंगे। जरा भी चूँ-चाँ होगी नहीं। यह भी ड्रामा में नूंध है। तुम कहते हो-बाबा, माया बड़ा तंग करती है। सो क्यों नहीं करेगी। इसको कहा ही जाता है युद्ध का मैदान। माया को गुलाम बनाने लिए तुम कोशिश

करते हो तो माया भी पछाड़ती है। कितना तंग करती है। कितने को हराती है। कइयों को एकदम खा जाती है, हप कर लेती है। भल स्वर्ग का मालिक बनते हैं परन्तु माया तो खाती रहती है। उनके जैसे पेट में पड़े हैं। सिर्फ पुछड़ी निकली हैं बाकी सारा उनके अन्दर हैं, जिसको दुबन, दलदल भी कहते हैं। कितने बच्चे दुबन में पड़े हुए हैं। जरा भी याद नहीं कर सकते हैं! जैसे कछुए का, भ्रमरी का मिसाल है, ऐसे तुम भी कीड़ों को भूं-भूं कर क्या से क्या बना सकते हो। एकदम स्वर्ग का परीजादा। सन्यासी भल भ्रमरी का मिसाल देते हैं परन्तु वह कोई भूं-भूं कर बदलते थोड़ेही हैं। बदली होती हैं संगम पर।

- रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बाप को भी मजा आता है तुम बच्चों को पवित्र बनाने में इसलिए कहते हैं पतित-पावन बाप को याद करो। सर्व का सद्गति दाता वह एक ही बाप है, और कोई है नहीं। यह भी तुम अभी समझते हो कि अब घर जाना है जरूर। पुरूषार्थ ज्यादा करने के लिए बाप कहते हैं याद की यात्रा जरूरी है। याद से ही पावन बनेंगे फिर है पढ़ाई। पहले अल्फ बाप को याद करो, पीछे यह बादशाही, जिसके लिए तुमको डायरेक्शन देते हैं। सबको पावन बनना ही है, वहाँ पतित होते ही नहीं। जो अभी सतोप्रधान बनने का पुरूषार्थ करते हैं, वही पावन दुनिया के मालिक बनेंगे। मूल बात ही एक है। बाप को याद करने से सतोप्रधान बनना है। बाप कोई ज्यादा मेहनत नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझो। बार-बार कहते हैं पहले यह पाठ पक्का करो-हम देह नहीं, हम आत्मा हैं। बस। बड़े आदमी जास्ती नहीं पढ़ते हैं, दो अक्षर में ही सुना देते हैं। बड़े आदमी को तकलीफ नहीं दी जाती है।

- किसकी याद में बैठे हो? यह है प्यारे ते प्यारा सम्बन्ध एक के साथ, जो सबको दु:खों से छुड़ाने वाला है। बाप बच्चों को देखते हैं तो सब पाप कटते जाते हैं। आत्मा सतोप्रधान तरफ जा रही

है। दुःख तो अथाह है ना। गाते भी हैं-दुःख हर्ता, सुख कर्ता। अब बाप तुमको सच-सच सब दुःखों से छुड़ाने आये हैं। स्वर्ग में दुःख का नाम-निशान नहीं होता। ऐसे बाप को याद करना बहुत जरूरी है। बाप का बच्चों के प्रति प्यार होता है ना, यह तो तुम जानते हो बाप का किन-किन बच्चों पर प्यार है। बच्चों को समझाया है, अपने को आत्मा समझो, देह नहीं समझो। जो अच्छे रत्न हैं वह बाप को चलते-फिरते याद करते हैं, यह भी क्यों कहते हैं? क्योंकि तुम्हारा जन्म-जन्मान्तर से पापों का घड़ा भरा पड़ा है। तो इस याद की यात्रा से ही तुम पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बन जायेंगे। यह भी तुम बच्चे जानते हो कि यह पुराना तन है। दुःख आत्मा को ही मिलता है। शरीर को चोट लगने से आत्मा को दुःख फील होता है। आत्मा कहती है मैं रोगी, दुःखी हूँ। यह है दुःख की दुनिया। कहाँ भी जाओ दुःख ही दुःख है। सुखधाम में तो दुःख हो न सके। दुःख का नाम लिया तो गोया तुम दुःखधाम में हो | सुखधाम में तो जरा भी दुःख नहीं। समय भी बाकी थोड़ा है, इसमें पूरा पुरूषार्थ करना है बाप को याद करने का। जितना याद करते रहेंगे उतना सतोप्रधान बनते जायेंगे। पुरूषार्थ करके अवस्था ऐसी जमानी है जो तुमको पिछाड़ी में सिवाए एक बाप के कुछ याद न आये। एक गीत भी है- अन्तकाल जो स्त्री सिमरे यह अन्तकाल है ना। पुरानी दुनिया दुःखधाम का अन्त है। अभी तुम सुखधाम चलने का पुरूषार्थ करते हो। तुम शुद्र से ब्राह्मण बने हो। यह तो याद रहना चाहिए ना। शूद्र को है दुःख, हम दुःख से निकल फिर अब चोटी पर चढ़ रहे है तो एक बाप को याद करना है। मोस्ट बिलवेड बाप है। उनसे मीठी चीज कौन-सी होती है? आत्मा उस परमपिता परमात्मा को ही याद करती है ना। सब आत्माओं का बाप है, उनसे मीठी इस दुनिया में कोई चीज हो न सके। इतने सब ढेर बच्चे हैं, कितने में याद आते होंगे? सेकण्ड में। अच्छा, सारे सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है? वह भी तुम बच्चों की बुद्धि में अर्थ सहित है। जैसे कोई ड्रामा देखकर आते हैं। कोई पूछेंगे ड्रामा याद है? हाँ कहने से ही सारा बुद्धि में आ जाता है, शुरू से लेकर अन्त तक। बाकी वह वर्णन करके सुनाने में तो समय लगेगा। बाबा बेहद का बाबा है, उसको

याद करने से ही 21 जन्मों का सुख सामने आ जाता है। बाप से यह वर्सा मिलता है। सेकण्ड में बच्चों को बाप का वर्सा सामने आ जाता है। बच्चा पैदा हुआ, बाप जान जाते हैं वारिस ने जन्म लिया। सारी मिलकियत याद आ जायेगी। तुम भी अकेले अलग-अलग बच्चे हो, अलग-अलग वर्सा मिलता है ना। अलग-अलग याद करते हो। हम बेहद बाप के वारिस हैं। सतयुग में तो एक ही बच्चा होता है। वह सारी मिलकियत का वारिस ठहरा। बच्चों को बाप मिला और विश्व का मालिक बना, सेकेण्ड में। देरी नहीं लगती। बाप कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझो। फीमेल मत समझो। आत्मा तो बच्चा है ना। बाबा कहते हैं हमें सब बच्चे याद पड़ते है। आत्मायें सब भाई-भाई हैं। जो भी सब धर्म वाले आते हैं, वह कहते सब धर्म वाले भाई-भाई हैं। परन्तु समझते नहीं। अभी तुम समझते हो कि हम बाबा के मोस्ट बिलवेड बच्चे हैं। बाप से पूरा बेहद का वर्सा जरूर मिलेगा। कैसे लेंगे? वह भी तुम बच्चों को सेकण्ड में याद आ जाता है। हम सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने, अब फिर सतोप्रधान बनना है। तुम जानते हो बाबा से हमको स्वर्ग के सुख का वर्सा लेना है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। देह तो विनाशी है। आत्मा ही शरीर छोड़कर चली जाती है। फिर जाकर दूसरा नया शरीर गर्भ में लेती है। पुतला जब तैयार होता है तब आत्मा उसमें प्रवेश करती है। परन्तु वह तो है रावण के वश। विकारों के वश जेल में जाते हैं। वहाँ तो रावण होता ही नहीं, दुःख की बात ही नहीं। जब बूढ़े होते हैं तब मालूम पड़ता है- अभी यह शरीर छोड़ हम दूसरे शरीर में जाकर प्रवेश करेंगे। वहाँ तो डर की कोई बात नहीं रहती है। यहाँ तो कितना डरते हैं। वहाँ निडर होते हैं। बाप तुम बच्चों को अपार सुखो में ले जाते हैं। सतयुग में अपार सुख है, कलियुग में अपार दुःख है इसलिए इसे कहते ही हैं दुःखधाम। बाप तो कोई तकलीफ नहीं देते हैं। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, बच्चों को सम्भालो, सिर्फ बाप को याद करो। गुरू गोसाई सबको छोड़ो। मैं तो सब गुरूओं से बड़ा हूँ ना। वह सब मेरी रचना हैं। सिवाए मेरे और कोई को पतित-पावन नहीं कहेंगे। क्या ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को पतित-पावन कहेंगे? नहीं। देवताओं को भी नहीं कह सकते सिवाए मेरे। अभी तुम बच्चे गंगा को पतित-पावनी कहेंगे? यह पानी की

नदियाँ तो सदैव बहती हैं। गंगा, ब्रह्मपुत्रा आदि भी तो चली आती है। इनमें तो स्नान करते ही रहते हैं।

- बाप कहते है-बच्चे, मामेकम् याद करो तो पाप कटे। एक-दो को यही सावधानी देते रहो। घूमने-फिरने आपस में जाओ तो भी यह बातें करो। सारा झुण्ड तुम्हारा इस याद की अवस्था में चक्र लगाये तो तुम्हारे शान्ति का प्रभाव बहुत पड़ेगा। पादरी लोग भी बहुत साइलेन्स में जाते हैं, क्राइस्ट की याद में। कोई तरफ देखते भी नहीं हैं। तुम तो यहाँ बहुत याद में रह सकते हो, कोई गोरखधन्धा नहीं है। बहुत अच्छा वायुमण्डल है। बाहर में तो बहुत छी-छी वायुमण्डल रहता है इसलिए सन्यासियों के आश्रम भी बहुत दूर-दूर होते हैं। तुम्हारा तो है ही बेहद का सन्यास। पुरानी दुनिया अब गई की गई। यह कब्रिस्तान है फिर परिस्तान होना है। वहाँ हीरे-जवाहरों के महल बनेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण परिस्तान के मालिक थे ना।

- मूल है ही याद की यात्रा, सिर पर पापों का बोझा बहुत है, मुझे याद करो तो पाप भस्म हों। यह है रूहानी यात्रा। छोटे बच्चे को भी सिखलाओ कि शिवबाबा को याद करो। उनका भी हक है। यह नहीं समझेंगे कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। नहीं, सिर्फ शिवबाबा को याद करेंगे। मेहनत करने से उनका भी कल्याण हो सकता है।

- बाप बैठ समझाते हैं - सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक तुमने कितने पुनर्जन्म लिए हैं। यह ज्ञान तो सहज रीति बुद्धि में है ही। यह भी एक पढ़ाई है, रचना के आदि, मध्य, अन्त को समझना है। सो बाप के सिवाए और कोई समझा नहीं सकता। बाप कहते हैं इस ज्ञान से भी ऊंच बात है याद की यात्रा, जिसको योग कहा जाता है। योग अक्षर मशहूर है। परन्तु यह है

याद की यात्रा। जैसे मनुष्य यात्रा पर जाते हैं, कहेंगे हम फलाने तीर्थ यात्रा पर जाते हैं। श्रीनाथ या अमरनाथ जाते हैं तो वह याद रहता है। अभी तुम जानते हो रूहानी बाप तो बड़ी लम्बी यात्रा सिखलाते हैं कि मुझे याद करो। उन यात्राओं से तो फिर लौट आते हैं। यह वह यात्रा है जो मुक्तिधाम में जाकर निवास करना है। भल पार्ट में आना है परन्तु इस पुरानी दुनिया में नहीं। इस पुरानी दुनिया से तुमको वैराग्य है। यह तो छी-छी रावण राज्य है। तो मूल बात है याद की यात्रा। कई बच्चे यह भी समझते नहीं हैं कि कैसे याद करना है। कोई याद करते हैं वा नहीं करते हैं - यह देखने में तो कोई चीज़ नहीं आती है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करना है। देखने की तो चीज़ नहीं। न मालूम पड़ सकता है। यह उस अवस्था में कहाँ तक याद की यात्रा में कायम रहते हैं, यह तो खुद ही जानें। युक्ति तो बहुतों को बताते हैं। कल्याणकारी बाप ने समझाया है - अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो। भल अपनी सर्विस भी करते रहो। जैसे मिसाल - पहरे पर बच्चे हैं, चक्कर लगाते रहते हैं, इनको याद में रहना तो बड़ा सहज है। सिवाए बाप की याद के और कुछ याद नहीं आना चाहिए। बाबा मिसाल दे बताते हैं, उस याद की यात्रा में ही आयें, जायें। जैसे पादरी लोग जाते हैं, कितना साइलेन्स में जाते हैं। तो तुम बच्चों को भी बड़ा प्रेम से बाप और घर को याद करना है। यह मंजिल बड़ी भारी है। भक्त लोग भी यही पुरूषार्थ करते रहते हैं। परन्तु उनको यह पता नहीं है कि हमको वापिस जाना है। वह तो समझते हैं जब कलियुग पूरा होगा, तब जायेंगे। उनको भी ऐसे सिखलाने वाला तो कोई है नहीं। तुम बच्चों को तो सिखलाया जाता है। जैसे पहरा देते हो तो एकान्त में जितना बाप को याद करेंगे उतना अच्छा है। याद से पाप कटते हैं। जन्म जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। जो पहले सतोप्रधान बनते हैं, रामराज्य में भी पहले वह जाते हैं। तो उनको ही सबसे जास्ती याद की यात्रा में रहना है। कल्प-कल्प की बात है। तो इनको याद की यात्रा में रहने का अच्छा चांस है। यहाँ तो कोई लड़ाई-झगड़े की बात ही नहीं है। आते-जाते अथवा बैठते एक पंथ, दो कार्य-पहरा भी दो, बाप को भी याद करो। कर्म करते बाप को याद करते रहो। पहरे वाले को तो सबसे जास्ती फायदा है। चाहे दिन को, चाहे रात

को जो पहरा देते हैं, उन्हों के लिए बहुत फायदा है। अगर यह याद रहने की आदत पड़ जाए तो। बाप ने यह सर्विस बहुत अच्छी दी है, पहरा और याद की यात्रा। यह भी चांस मिलता है बाप की याद में रहने का। यह भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बताई जाती हैं - याद की यात्रा में रहने की। यहाँ तुम जितना याद में रह सकेंगे उतना बाहर धन्धे आदि में नहीं इसलिए मधुबन में आते हैं रिफ्रेश होने। एकान्त में जाकर एक पहाड़ी पर बैठ याद की यात्रा में रहें फिर एक जायें व 2-3 जायें। यहाँ चांस बहुत अच्छा है। यही मुख्य है बाप की याद। भारत का प्राचीन योग मशहूर भी बहुत है। अभी तुम समझते हो इस याद की यात्रा से पाप कटते हैं। हम सतोप्रधान बन जायेंगे। तो इसमें पुरूषार्थ बहुत अच्छा करना है, बहादुरी तो इसमें है जो काम करते बाप को याद कर दिखलाओ। कर्म तो करना ही है क्योंकि तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले। गृहस्थ व्यवहार में रहते धन्धा आदि करते बुद्धि में बाप की याद रहे, इसमें तुम्हारी बहुत-बहुत कमाई है। भल अभी कई बच्चों की बुद्धि में नहीं आता है। बाप कहते रहते हैं चार्ट रखो। थोड़ा बहुत कोई लिखते हैं। बाप युक्तियाँ तो बहुत बताते हैं। बच्चे चाहते हैं बाबा के पास जायें। यहाँ बहुत कमाई कर सकते हैं। एकान्त बहुत अच्छी है। बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जायें क्योंकि जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। विकार के लिए कितने झगड़े चलते हैं, विघ्न पड़ते हैं। कहते हैं बाबा हमको पवित्र रहने नहीं देते। बाप कहते हैं-बच्चे, तुम याद की यात्रा में रह जन्म-जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं, वह बोझा उतारो। घर बैठे शिवबाबा को याद करते रहो। याद तो कहाँ भी बैठ कर सकते हो। कहाँ भी रहते यह प्रैक्टिस करनी है। जो भी आये उनको भी पैगाम दो। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इनको ही योगबल कहा जाता है। बल माना ताकत, शक्ति। बाप को सर्वशक्तिमान् कहते हैं ना। तो वह शक्ति बाप से कैसे मिलेगी? बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। तुम नीचे उतरते-उतरते तमोप्रधान बन गये हो तो वह शक्ति बिल्कुल खत्म हो गई है। पाई की भी नहीं रही है। तुम्हारे में भी कोई हैं जो अच्छी रीति समझाते हैं, बाप को याद करते हैं। तो अपने से पूछना है हमारा चार्ट कैसा रहता है? बाप तो सब बच्चों को कहते हैं, याद की यात्रा मुख्य है। याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे

। भल कोई सावधान करने वाला भी नहीं हो तो भी बाप को याद कर सकते हो ना । भल विलायत में अकेले रहो, तो भी याद में रह सकते हो । समझो कोई शादी किया हुआ है, वो और कोई जगह है, तो उनको भी लिख सकते हो-तुम एक बात सिर्फ याद करो-बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे । विनाश सामने खड़ा है । बाप युक्तियाँ तो बहुत अच्छी समझाते रहते हैं फिर कोई करें, न करें, उनकी मर्जी । बच्चे भी समझते होंगे कि बाप राय तो बहुत अच्छी देते हैं । हमारा काम है मित्र-सम्बन्धी आदि जो भी मिलें, सबको पैगाम देना । दोस्त हो या कोई भी हो, सर्विस का शौक चाहिए । तुम्हारे पास चित्र तो हैं, बैज भी है । यह बड़ी अच्छी चीज़ है ।

माया विघ्न भी याद की यात्रा में ही डालती है । अपने दिल से पूछना है-इतना हमको शौक है, मेहनत करते हैं? ज्ञान तो कॉमन बात है । बाप बिगर 84 का चक्र कोई समझा न सकें । बाकी याद की यात्रा है मुख्य । पिछाड़ी में कोई भी याद न आये सिवाए एक बाप के । डायरेक्शन तो बाप पूरे देते रहते हैं । मुख्य बात है याद करने की । अब बाबा तुमको ऐसा रास्ता बताते हैं जो 21 जन्म कभी दु:ख का नाम नहीं रहेगा । बाप कहते हैं सिर्फ याद की यात्रा में रहो । जितना हो सके रात को बहुत अच्छा है । भल लेटे हुए याद करो । कोई को फिर नींद आ जाती है । बूढ़ा होगा, जास्ती बैठ नहीं सकेगा तो जरूर सो जायेगा । लेटे हुए बाप को याद करते रहेंगे । बड़ी खुशी अन्दर में होती रहेगी क्योंकि बहुत-बहुत कमाई है । यह तो समझते हैं-टाइम पड़ा है परन्तु मौत का कोई ठिकाना नहीं । तो बाप समझाते हैं मूल है याद की यात्रा । बाहर शहर में तो मुश्किल है । यहाँ आते हैं तो बड़ा अच्छा चांस मिलता है । कोई फिकरात की बात नहीं इसलिए यहाँ चार्ट बढ़ाते रहो । तुम्हारे कैरेक्टर्स भी इससे सुधरते जायेंगे । परन्तु माया बड़ी दुश्तर है । घर में रहने वाली को इतना कदर नहीं रहता है, जितना बाहर वालों को है । फिर भी इस समय गोपों की रिजल्ट अच्छी है ।

तुम बच्चे तो महान् भाग्यशाली हो, जो आकर साहेबजादे बने हो। बाप कितना ऊंच बनाते हैं। फिर भी तुम बाप को गाली देते हो, सो भी कच्ची गाली। इतने तमोप्रधान बने हो जो बात मत पूछो। इससे जास्ती और क्या सहन करेंगे। कहते हैं ना-जास्ती तंग करेंगे तो खत्म कर देंगे। तो यह बाप बैठ समझाते हैं। शास्त्रों में तो कहानियाँ लिख दी हैं। बाबा युक्ति तो बहुत सहज बताते हैं। कर्म करते हुए याद करो, इसमें बहुत-बहुत फायदा है। सवेरे आकर याद में बैठो। बहुत मज़ा आयेगा। परन्तु इतना शौक नहीं है। टीचर स्टूडेंट की चलन से समझ जाते हैं-यह फेल हो जायेंगे। बाप भी समझते हैं-यह फेल हो जायेंगे, सो भी कल्प-कल्पान्तर के लिए। भल भाषण में तो बहुत होशियार हैं, प्रदर्शनी भी समझा लेते हैं परन्तु याद है नहीं, इसमें फेल हो पड़ते हैं। यह भी जैसे डिसरिगार्ड करते हैं। अपना ही करते हैं, शिवबाबा का तो डिसरिगार्ड होता नहीं। ऐसे कोई कह न सकें कि हमको फुर्सत ही नहीं याद करने की। बाबा मानेंगे नहीं। स्नान पर भी याद कर सकते हो। भोजन करते समय बाप को याद करो, इसमें बहुत-बहुत कमाई है। कई बच्चे सिर्फ भाषण में नामीग्रामी हैं, योग है नहीं। वह अहंकार भी गिरा देता है।

बाप को याद ही नहीं करते हैं। कहते हैं-बाबा, घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बाप को घड़ी-घड़ी कहना पड़ता है याद दिलाने लिए। तुम भी एक-दो को यही समझाओ- अपने को आत्मा समझ परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाये, और कोई उपाय नहीं। शुरू और अन्त में यही बात कहते हैं। याद से ही सतोप्रधान बनना है। खुद ही लिखते हैं-बाबा, माया के तूफान भुला देते हैं। तो क्या बाप सावधान न करें, छोड़ दे? बाप जानते हैं नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार है। जब तक सतोपधान नहीं बने हैं, जा नहीं सकते हैं। लड़ाई का भी कनेक्शन है ना। लड़ाई

लगेगी ही तब, जब तुम नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सतोप्रधान बनेंगे। ज्ञान तो एक सेकण्ड का है। बेहद के बाप को पाया, अब उनसे बेहद का सुख तब मिलेगा जब पवित्र बनेंगे। पुरूषार्थ अच्छी रीति करना है। कई तो कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप को याद करने का अक्ल भी नहीं आता है। कभी यह पढ़ाई तो पढ़ी नहीं है। सारे चक्र में निराकार बाप से कोई पढ़ा नहीं है। तो यह नई बात है ना। बाप कहते हैं मैं तो हर 5 हजार वर्ष बाद आता हूँ - तुमको सतोप्रधान बनाने। जब तक सतोप्रधान नहीं बने हो तब तक यह पद पा नहीं सकेंगे। जैसे और पढ़ाई में फेल होते हैं वैसे इसमें भी फेल होते हैं। शिवबाबा को याद करने से क्या होगा, कुछ नहीं समझते। बाप है तो जरूर बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलना है। बाप एक ही बार समझाते हैं, जिससे तुम देवता बनते हो। तुम देवता बनेंगे फिर नम्बरवार सब आयेंगे पार्ट बजाने। इतनी सब बातें बुढ़ियों आदि की बुद्धि में बैठ न सकें। तो बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस, वही शिवबाबा सब आत्माओं का बाप है। शरीर का बाप तो हर एक का अपना- अपना है। शिवबाबा तो है निराकार, उनको याद करते-करते पवित्र बन शरीर छोड़ फिर बाप के पास जाकर पहुँचना है। बाप समझाते तो बहुत हैं परन्तु सब एकरस नहीं समझते हैं। माया भुला देती है। इनको युद्ध कहा जाता है। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। कितनी बातों की स्मृति देते हैं। मुख्य जो भूलें हुई है उनकी लिस्ट बनाओ। एक बाप सर्वव्यापी की।

बाप समझाते हैं जब तक विनाश नहीं हुआ है तब तक तुम कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकेंगे। भल कितना भी माथा मारो। सारा समय शिवबाबा को बैठ याद करो और कोई बात ही नहीं करो। बस बाबा लड़ाई से पहले मैं कर्मातीत अवस्था को पाकर दिखाऊंगा, ऐसा कोई निकले- ऐसा ड्रामा में हो नहीं सकता। पहले नम्बर में तो एक ही जाना है। यह भी कहते हैं हमको कितना माथा मारना पड़ता है। माया तो और ही रूसतम बनकर आती है। बाबा खुद कहते हैं मेरे तो बाजू में एकदम शिवबाबा बैठा है, तो भी मैं याद नहीं कर सकता हूँ, भूल जाता हूँ।

समझता हूँ मेरे साथ बाबा है। फिर मुझे भी तो याद करना पड़ता है, जैसे तुम करते हो। ऐसे नहीं, मैं तो साथ हूँ, इसमें ही खुश हो जाना है। नहीं, मुझे भी कहते हैं-निरन्तर याद करो। साथ वाले तुम रूसतम हो, तुमको तो और ही जास्ती तूफान आयेंगे। नहीं तो बच्चों को कैसे समझा सकेंगे। यह सब तूफान तो तुमसे पास होंगे। मैं उनके इतने नजदीक बैठे हुए भी कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकता हूँ तो फिर दूसरा कौन बनेगा। यह मंज़िल बहुत ऊंची है। ड्रामा अनुसार सब पुरूषार्थ करते रहते हैं। भल कोई ऐसी कोशिश करके दिखाये-बाबा, हम आपसे पहले कर्मातीत अवस्था को पाकर यह बनकर दिखाते हैं। हो नहीं सकता। यह ड्रामा बना बनाया है।

रूहानी बाप कहते हैं बच्चों को, यह भी बच्चा है ना। देहधारी सब बच्चे हैं। तो रूहानी बाप आत्माओं को कहते हैं, आत्मा ही मुख्य है। यह तो अच्छी रीति समझो। यहाँ जब सामने बैठते हो तो ऐसे नहीं शरीर से न्यारा हो गुम हो जाना है। शरीर से न्यारा हो गुम हो जाना, यह कोई याद के यात्रा की अवस्था नहीं है। यहाँ तो सुजाग हो बैठना है। चलते फिरते, उठते बैठते अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप ऐसे नहीं कहते यहाँ बैठे बेहोश हो जाओ। ऐसे बहुत बैठे-बैठे गुम हो जाते हैं। तुम्हें तो सुजाग होकर बैठना है और फिर पवित्र भी बनना है। पवित्रता बिगर धारणा नहीं होगी, किसका कल्याण नहीं कर सकेंगे, किसको कह नहीं सकेंगे। खुद पवित्र रहते नहीं और दूसरे को कहते हैं, वह तो पण्डित हो गया। मियाँ मिटठू भी नहीं बनना है, फिर वह दिल अन्दर खाता रहेगा। ऐसे मत समझो हम सुन्न में चले जाते हैं। आँखें बन्द हो जाती है, यह कोई याद की अवस्था नहीं है, इसमें चैतन्य अवस्था में रह बाप को याद करना है। नींद करना कोई याद करना नहीं है। बच्चों को कई पॉइंट्स समझाई जाती है। शास्त्रों में दिखाया गया है - सातवीं भूमिका में चले जाते हैं, उनको दुनिया का पता नहीं पड़ता है। तुमको तो दुनिया का पता है ना। यह छी-छी दुनिया है। बाप को कोई जानते नहीं हैं’। अगर

बाप को जानते तो सृष्टि चक्र को भी जान जाएं। बाप बतलाते हैं यह चक्र कैसे फिरता है। मनुष्य पुनर्जन्म कैसे लेते हैं। सतयुग में भल बड़ी आयु हो जाती तो भी बदसूरत नहीं होंगे। बाकी संन्यासियों का तो है हठयोग। आँखें बन्द करना, गुफाओं में बैठे-बैठे बेसूरत बन जाना... । तुमको तो बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते सुजाग रहना है। सुन्न में चले जाना, यह कोई अवस्था नहीं है। धन्धा आदि भी करना है, गृहस्थ व्यवहार भी सम्भालना है। सुन्न में नहीं जाना है। काम- काज करते बुद्धि से बाप को याद करना है। जरूर काम करेंगे, आँखें खोलकर करेंगे ना। धन्धा आदि सब कुछ करते रहो। बुद्धि योग बाप के साथ हो। इसमें गफलत नहीं करनी है। दुकान पर बैठे आँखें बन्द हो जायेगी तो कोई सामान ही ले जायेंगे और पता भी नहीं पड़ेगा। यह कोई अवस्था नहीं। हम देह से न्यारे हो जाते हैं, यह सब हठयोगियो की बातें हैं। रिद्धि सिद्धि वाले करते हैं। बाप तो अच्छी रीति बैठ समझाते हैं, इसमें आँखें नहीं बन्द करनी है।

बाप कहते हैं मित्र सम्बन्धियों को जो बैठ याद करते हो, वह सब भूल जाओ। एक बाप को याद करना है। सिवाए याद की यात्रा के पाप कट नहीं सकते। भोग ले जाते हैं, गुम हो जाते हैं सूक्ष्मवतन में। इसमें क्या होता है? जितना समय वहाँ हैं विकर्म विनाश हो न सकें। शिवबाबा को याद कर न सकें। न बाबा की वाणी सुन सकेंगें। तो घाटा पड़ जाता है। परन्तु यह ड्रामा में नूंध है इसलिए जाते हैं। फिर आकर मुरली सुनते हैं इसलिए बाबा कहते हैं जाओ, फौरन आओ, बैठो नहीं। खेलपाल करना बाबा ने बन्द कर दिया है। यह भी घूमना फिरना रुलना हुआ ना। भक्ति मार्ग में रुलना पिटना बहुत होता है क्योंकि अन्धियारा मार्ग है ना। मीरा ध्यान में वैकुण्ठ में चली जाती थी। वह योग व पढ़ाई थोड़े ही थी। क्या उसने सद्गति को पाया? स्वर्ग जाने लायक बनी? जन्म-जन्मान्तर के पाप कटे? बिल्कुल नहीं। जन्म-जन्मान्तर के पाप तो बाप की याद से ही कटते हैं। बाकी साक्षात्कार आदि से कोई फायदा नहीं होता। यह तो सिर्फ

भक्ति है। न याद है, न ज्ञान है। भक्ति मार्ग में यह सिखलाने वाला कोई होता ही नहीं तो सद्गति को भी पाते नहीं। भल कितना भी साक्षात्कार हो, शुरू में तो बच्चियाँ आपेही चली जाती थी। मम्मा-बाबा थोड़ेही ही जाते थे। यह तो शुरू में बाबा को सिर्फ स्थापना और विनाश का साक्षात्कार हुआ। पीछे तो कुछ नहीं हुआ। हम किसको भी भेजते नहीं हैं। हाँ, बिठाकर कह देते बाबा इनकी रस्सी खींचों। वह भी ड्रामा में होगा तो रस्सी खींचेंगे, नहीं तो नहीं। साक्षात्कार तो ढेर होते हैं। जैसे शुरू में बहुत साक्षात्कार करते थे, पिछाड़ी में भी बहुत साक्षात्कार करेंगे, मिरूआ मौत मलूका शिकार..... इतने ढेर मनुष्य हैं, वह सब शरीर छोड़ देंगे। शरीर सहित कोई सतयुग में वा शान्तिधाम में नहीं जायेंगे। कितने ढेर मनुष्य हैं, सब विनाश को प्राप्त करेंगे। बाकी एक आदि सनातन देवी- देवता धर्म की स्थापना हो रही है ब्रह्मा द्वारा। तुम बच्चियाँ गाँव-गाँव में जाकर कितनी सर्विस करती हो। यही कहती हो कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। संन्यासी तो राजयोग सिखलाना जानते नहीं। बाप बिगर राजयोग सिखलावे कौन? तुम बच्चों को बाप अभी राजयोग सिखला रहे हैं। फिर राजाई मिल जाती है। तुम अपार सुखों में रहते हो। वहाँ तो फिर याद करने की दरकार ही नहीं। रिंचक भी दु :ख नहीं होता है। आयु भी बड़ी, काया भी निरोगी होती है। यहाँ कितने दु :ख हैं। ऐसे तो नहीं बाप ने दु :ख के लिए खेल रचा है। यह तो खेल सुख-दुख, हार-जीत का आदि अनादि है। इन सब बातों को संन्यासी जानते ही नहीं तो समझा कैसे सकते। वह तो भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि पढ़ने वाले हैं। तुमको कहा जाता है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। वह संन्यासी फिर आत्मा समझ ब्रह्म को याद करते हैं।

बाप कहते हैं खाओ पिओ भल, सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो, और कोई उपाय नहीं। बाप कहते हैं तुम पदमापदम् भाग्यशाली बनते हो। कदम-कदम पर बाप को याद करते रहो तो पदम् इकट्ठे होंगे। इतनी कमाई बाप को याद करने से होती है। फिर ऐसे बाप को

याद करना तुम भूलते क्यों हो? जितना बाप को याद करेंगे, सर्विस करेंगे उतना ऊंच पद पाएंगे । अच्छे- अच्छे बच्चे चलते-चलते गिर पड़ते हैं । काला मुँह किया तो की कमाई चट हो जाती है । जबरदस्त लाटरी गँवा देते हैं ।

रूहानी बाप बच्चों से पूछते हैं, सबसे तो नहीं पूछ सकते । नलिनी बेटी से पूछते हैं कि यहाँ क्या कर रही हो? किसकी याद में बैठी हो? बाप की । सिर्फ बाप की याद में बैठी हो या और भी कुछ याद है? बाप की याद से तो विकर्म विनाश होंगे, और क्या याद करती हो? यह बुद्धि का काम है ना । हम आत्माओं को अपने घर जाना है तो घर को भी याद करना है । अच्छा, और क्या करना है? क्या घर में जाकर बैठ जाना है ? विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखाते हैं ना । उनका अर्थ भी बाप ने अब समझाया है । स्व अर्थात् आत्मा को दर्शन हुआ, 84 जन्मों के चक्र का । तो वह चक्र भी फिराना पड़े । तुम जानते हो हम 84 का चक्र लगाकर घर जायेंगे । फिर वहाँ से आयेंगे सतयुग में पार्ट बजाने । फिर 84 का चक्र लगायेंगे । तो यहाँ जब बैठते हो तो सिर्फ शान्ति में नहीं बैठना है । वर्सा भी याद करना है इसलिए यह चक्र है । बाप कहते हैं तुम लाइट हाउस भी हो, बोलता चलता लाइट हाउस हो । एक आँख में है शान्तिधाम, एक आँख में है सुखधाम । दोनों को याद करना पड़ता है । याद से तो पाप कटने हैं । घर को याद करने से घर में चले जायेंगे फिर चक्र को भी याद करना है । यह सारे चक्र की नॉलेज तुमको ही है । 84 का चक्र लगाया है । अब यह अन्तिम जन्म है मृत्युलोक में । नई दुनिया को कहा जाता है अमरलोक । अमर अर्थात् तुम सदैव जीते रहते हो । तुम कभी मरते नहीं हो । यहाँ तो बैठे-बैठे अचानक मृत्यु हो जाती है । बीमारियाँ होती हैं, वहाँ मरने का डर नहीं क्योंकि अमरलोक है । तुम बुढ़े होते हो तो भी ज्ञान है हम गर्भ महल में जाकर प्रवेश करेंगे । अभी जाते हैं गर्भ जेल में ।

रूहानी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अब तुम बच्चे 15 मिनट पहले आकर यहाँ बाप की याद में बैठते हो। अब यहाँ और तो कोई काम है नहीं। बाप की याद में ही आकर बैठते हो। भक्ति मार्ग में तो बाप का परिचय है नहीं। यहाँ बाप का परिचय मिला है और बाप कहते हैं मामेंकम याद करो। मैं तो सब बच्चों का बाप हूँ। बाप को याद करने से वर्सा तो ऑटोमेटिकली याद आना चाहिए। छोटे बच्चे तो नहीं हो ना। भल लिखते हैं हम 5 मास वा 2 मास के हैं परन्तु तुम्हारी कर्मेन्द्रियां तो बड़ी हैं। तो रूहानी बाप समझाते हैं, यहाँ बाप और वर्से की याद में बैठना है। जानते हो हम नर से नारायण बनने के पुरूषार्थ में तत्पर हैं वा स्वर्ग में जाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। तो यह बच्चों को नोट करना चाहिए-हमने यहाँ बैठे-बैठे कितना समय याद किया? लिखने से बाप समझ जायेंगे। ऐसे नहीं कि बाप को मालूम पड़ता है-हर एक कितना समय याद में रहते हैं? वह तो हर एक अपने चार्ट से समझ सकते हैं-बाप की याद थी या बुद्धि कहाँ और तरफ चली गई? यह भी बुद्धि में है अभी बाबा आयेंगे तो यह भी याद ठहरी ना। कितना समय याद किया, वह चार्ट में सच लिखेंगे। झूठ लिखने से तो और ही सौगुणा पाप चढ़ेगा और ही नुकसान हो जायेगा इसलिए सच लिखना है-जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। और यह भी जानते हो हम नजदीक आते जाते हैं। आखरीन जब याद पूरी हो जायेगी तो हम फिर बाबा के पास चले जायेंगे। फिर कोई तो झट नई दुनिया में आकर पार्ट बजायेंगे, कोई वहाँ ही बैठे रहेंगे। वहाँ कोई संकल्प तो आयेगा नहीं। वह है ही मुक्तिधाम, दु:ख-सुख से न्यारे। सुखधाम में जाने के लिए अब तुम पुरूषार्थ करते हो। जितना तुम याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। याद का चार्ट रखने से ज्ञान की धारणा भी अच्छी होगी। चार्ट रखने में तो फायदा ही है। बाबा जानते हैं याद में न रहने कारण लिखने में लज्जा आती है। बाबा क्या कहेंगे, मुरली में सुना देंगे। बाप कहते हैं इसमें लज्जा की क्या बात है। दिल अन्दर हर एक समझ सकते हैं-हम याद करते हैं वा नहीं? कल्याणकारी बाप तो समझाते हैं, नोट करेंगे तो कल्याण होगा। जब तक बाबा आये, उतना समय जो बैठे उसमें याद का चार्ट कितना रहा? फर्क देखना चाहिए। प्यारी चीज को तो बहुत याद किया जाता है। कुमार-

कुमारी की सगाई होती है तो दिल में एक-दो की याद ठहर जाती है। फिर शादी होने से पक्की हो जाती है। बिगर देखे समझ जाते हैं-हमारी सगाई हुई है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि शिवबाबा हमारा बेहद का बाप है। भल देखा नहीं है परन्तु बुद्धि से समझ सकते हो, वह बाप अगर नाम-रूप से न्यारा है तो फिर पूजा किसकी करते हो? याद क्यों करते हो? नाम-रूप से न्यारी बेअन्त तो कोई चीज होती नहीं। जरूर चीज को देखा जाता है तब वर्णन होता है। आकाश को भी देखते हैं ना। बेअन्त कह नहीं सकते। भक्ति मार्ग में भगवान को याद करते हैं - 'हे भगवान' तो बेअन्त थोड़ेही कहेंगे। ' हे भगवान' कहने से तो झट उनकी याद आती है तो जरूर कोई चीज़ है। आत्मा को भी जाना जाता है, देखा नहीं जाता।

शिवबाबा याद है? वर्सा याद है? मूल बात है यह। भक्ति मार्ग में कितना पैसा वेस्ट करते हैं। यहाँ तुम्हारी पाई भी वेस्ट नहीं होती है। तुम सर्विस करते हो सालवेन्ट बनने के लिए। भक्ति मार्ग में तो बहुत पैसे खर्च करते हैं, इनसालवेट बन पड़ते हैं। सब मिट्टी में मिल जाता है। कितना फर्क है! इस समय जो कुछ करते हैं वह ईश्वरीय सर्विस में शिवबाबा को देते हैं। शिवबाबा तो खाते नहीं हैं, खाते तुम हो। तुम ब्राह्मण बीच में ट्रस्टी हो। ब्रह्मा को नहीं देते हो। तुम शिवबाबा को देते हो। कहते हैं-बाबा, आपके लिए धोती-कमीज लाई है। बाबा कहते हैं-इनको देने से तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं होगा। जमा वह होता है जो तुम शिवबाबा को याद कर इनको देते हो। फिर यह तो समझते हो ब्राह्मण शिवबाबा के खजाने से ही पलते हैं। बाबा से पूछने की दरकार नहीं है कि क्या भेजूँ? यह तो लेंगे नहीं। तुम्हारा जमा ही नहीं होगा, अगर ब्रह्मा को याद किया तो। ब्रह्मा को तो लेना है शिवबाबा के खजाने से। तो शिवबाबा ही याद पड़ेगा। तुम्हारी चीज क्यों लेवें। बी. के. को देना भी रांग है। बाबा ने समझाया है तुम कोई से भी चीज़ लेकर पहनेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। कोई हल्की चीज़ है तो उनकी बात नहीं। अच्छी चीज तो और ही याद दिलायेगी-फलाने ने यह दिया है। उनका कुछ जमा तो होता नहीं। तो घाटा पड़ा ना। शिवबाबा कहते हैं मामेकम याद करो। मुझे कपड़े आदि की दरकार नहीं

। कपड़े आदि बच्चों को चाहिए। वह शिवबाबा के खजाने से पहनेंगे। मुझे तो अपना शरीर है नहीं। यह तो शिवबाबा के खजाने से लेने के हकदार है। सजाई के भी हकदार हैं।

बच्चे अभी यहाँ बैठकर क्या कर रहे हैं? चलते फिरते अथवा यहाँ बैठे-बैठे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर हैं, उन पापों का याद की यात्रा से विनाश करते हैं। यह तो आत्मा जानती है, हम जितना बाप को याद करेंगे उतना पाप कटते जायेंगे। बाप ने तो अच्छी रीति समझाया है- भल यहाँ बैठे हो तो भी जो श्रीमत पर चलने वाले हैं, उनको तो बाप की राय अच्छी ही लगेगी। बेहद बाप की राय मिलती है, बेहद पवित्र बनना है। तुम यहाँ आये हो बेहद पवित्र बनने के लिए, सो बनेंगे ही याद की यात्रा से। कई तो बिल्कुल याद कर नहीं सकते, कई समझते हैं हम याद की यात्रा से अपने पाप काट रहे हैं, गोया अपना कल्याण कर रहे हैं। बाहर वाले तो इन बातों को जानते नहीं। तुमको ही बाप मिला है, तुम रहते ही हो बाप के पास। जानते हो अभी हम ईश्वरीय सन्तान बने हैं, आगे आसुरी सन्तान थे। अब हमारा संग ईश्वरीय सन्तानों से है। गायन भी है ना-संग तारे कुसंग डुबोये। बच्चों को घड़ी-घड़ी यह भूल जाता है कि हम ईश्वरीय सन्तान हैं तो हमको ईश्वरीय मत पर ही चलना चाहिए, न कि अपनी मनमत पर। मनमत मनुष्य मत को कहा जाता है। मनुष्य मत आसुरी ही होती है। जो बच्चे अपना कल्याण चाहते हैं वह बाप को अच्छी रीति याद करते रहते हैं, सतोप्रधान बनने के लिए। सतोप्रधान की महिमा भी होती है। बरोबर जानते हैं हम सुखधाम के मालिक बनते हैं नम्बरवार। जितना-जितना श्रीमत पर चलते हैं, उतना ऊंच पद पाते हैं, जितना अपनी मत पर चलते तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। अपना कल्याण करने के लिए बाप के डायरेक्शन तो मिलते ही रहते हैं। बाप ने समझाया है यह भी पुरुषार्थ है, जो जितना याद करते हैं तो उनके भी पाप कटते हैं। याद की यात्रा बिगर तो पवित्र बन नहीं सकेंगे। उठते, बैठते, चलते यही ओना रखना है। तुम बच्चों को कितने वर्षों से शिक्षा मिली है तो भी समझते हैं हम बहुत दूर हैं। इतना बाप को याद नहीं कर सकते हैं।

सतोप्रधान बनने में तो बहुत टाइम लग जायेगा। इस बीच में शरीर छूट जाए तो कल्प-कल्पान्तर के लिए कम पद हो जायेगा। ईश्वर का बने हैं तो उनसे पूरा वर्सा लेने का पुरुषार्थ करना चाहिए। बुद्धि एक तरफ ही रहनी चाहिए। तुमको अब श्रीमत मिलती है। वह है ऊंच ते ऊंच भगवान। उनकी मत पर नहीं चलेंगे तो बहुत धोखा खायेंगे। चलते हो वा नहीं, वह तो तुम जानो और शिवबाबा जाने। तुमको पुरुषार्थ कराने वाला वह शिवबाबा है। देहधारी सब पुरुषार्थ करते हैं। यह भी देहधारी है, इनको शिवबाबा पुरुषार्थ कराते हैं। बच्चों को ही पुरुषार्थ करना है।

मीठे-मीठे बच्चे यह भी जानते हो - शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते। तुमको इतने वर्ष हुए हैं फिर भी ज्ञान की धारणा क्यों नहीं होती है। सोने के बर्तन में ही धारणा होगी। नये-नये बच्चे कितने सर्विसएबुल हो जाते हैं। फर्क देखो कितना है। पुराने-पुराने बच्चे इतना याद की यात्रा में नहीं रहते, जितना नये रहते हैं। कई अच्छे शिवबाबा के लाडले बच्चे आते हैं, कितनी सर्विस करते हैं। जैसेकि शिवबाबा के पिछाड़ी आत्मा को कुर्बान कर दिया है। कुर्बान करने से फिर सर्विस भी कितनी करते हैं। कितने प्रिय मीठे लगते हैं। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बनेंगे। बुलाया ही है कि मुझे आकर पावन बनाओ तो अब बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो। देह के सम्बन्ध सब त्याग करना पड़े। मित्र- सम्बन्धियों आदि की भी याद न रहे, सिवाए एक बाप के, तब ही ऊँच पद पा सकेंगे। याद नहीं करेंगे तो ऊँच पद पा नहीं सकेंगे। यह बापदादा भी समझ सकते हैं। तुम बच्चे भी जानते हो। नये-नये आते हैं, समझते हैं दिन-प्रतिदिन सुधरते जाते हैं। श्रीमत पर चलने से ही सुधरते हैं। क्रोध पर भी पुरुषार्थ करते-करते जीत पाते हैं। तो बाप भी समझाते हैं, खराबियों को निकालते रहो। क्रोध भी बड़ा खराब है। अपने अन्दर को भी जलाते हैं, दूसरे को भी जलाते हैं। वह भी निकलना चाहिए। बच्चे बाप की श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो पद कम हो जाता है, जन्म-जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर का घाटा पड़ जाता है। तुम बच्चे जानते हो कि वह है जिस्मानी पढ़ाई, यह है रूहानी पढ़ाई जो रूहानी बाप पढ़ाते हैं। हर प्रकार की

सम्भाल भी होती रहती है। कोई विकारी यहाँ अन्दर (मधुबन में) आ न सके। बीमारी आदि में भी विकारी मित्र-सम्बन्धी आयें, यह तो अच्छा नहीं। पसन्द भी हम न करें। नहीं तो अन्तकाल वह मित्र-सम्बन्धी ही याद पड़ेंगे। फिर वह ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं, कोई की भी याद न आये। ऐसे नहीं, हम बीमार हैं इसलिए मित्र-सम्बन्धी आदि आयें देखने के लिए। नहीं, उन्हों को बुलाना, कायदा नहीं। कायदेसिर चलने से ही सद्गति होती है। नहीं तो मुफ्त अपने को नुकसान पहुँचाते हैं। परन्तु तमोप्रधान बुद्धि यह समझते नहीं हैं। ईश्वर राय देते हैं तो भी सुधरते नहीं। बड़ा खबरदारी से चलना चाहिए। यह है होलीएस्ट ऑफ होली स्थान। पतित ठहर न सकें। मित्र-सम्बन्धी आदि याद होंगे तो मरने समय जरूर वह याद आयेंगे। देह- अभिमान में आने से अपने को ही नुकसान पहुँचाते हैं। सजा के निमित्त बन पड़ते हैं। श्रीमत पर न चलने से बड़ी दुर्गति हो जाती है। सर्विस लायक बन न सके। कितना भी माथा मारे परन्तु सर्विस लायक हो नहीं सकते। अवज्ञा की तो पत्थरबुद्धि बन जाते हैं। ऊपर चढ़ने बदले नीचे गिर जाते हैं। बाप तो कहेंगे बच्चों को आज्ञाकारी बनना चाहिए। नहीं तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। लौकिक बाप के पास भी 4 - 5 बच्चे होते हैं, परन्तु उनमें जो आज्ञाकारी होते हैं वही बच्चे प्रिय लगते हैं। जो आज्ञाकारी नहीं वह तो दुख ही देंगे। अभी तुम बच्चों को दोनों बाप बहुत बड़े मिले हैं, उनकी अवज्ञा नहीं करनी है। अवज्ञा करेंगे तो जन्म- जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर बहुत कम पद पायेंगे। पुरुषार्थ ऐसा करना है जो अन्त में एक ही शिवबाबा याद आये। बाप कहते हैं मैं जान सकता हूँ - हर एक क्या पुरुषार्थ करते हैं। कोई तो बहुत थोड़ा याद करते हैं, बाकी तो अपने मित्र-सम्बन्धियों को ही याद करते रहते हैं। वह इतना खुशी में नहीं रह सकते। ऊँच पद पा न सकें।

शिव भगवानुवाच। वह हुआ रूहानी बाप क्योंकि शिव तो सुप्रीम रूह है ना, आत्मा है ना। बाप तो रोज- रोज नई-नई बातें समझाते रहते हैं। गीता सुनाने वाले सन्यासी आदि बहुत हैं। वह बाप को याद कर न सकें। ' बाबा' अक्षर कभी उनके मुख से निकल न सके। यह अक्षर है

ही गृहस्थ मार्ग वालों के लिए। वह तो हैं निवृत्ति मार्ग वाले। वह ब्रह्म को ही याद करते हैं। मुख से कभी शिवबाबा नहीं कहेंगे। भल तुम जांच करो। समझो बड़े-बड़े विद्वान सन्यासी चिन्मियानंद आदि गीता सुनाते हैं, ऐसे नहीं कि वह गीता का भगवान कृष्ण को समझ उनसे योग लगा सकते हैं। नहीं। वह तो फिर भी ब्रह्म के साथ योग लगाने वाले ब्रह्म ज्ञानी वा तत्व ज्ञानी हैं।

बाप भी कहते हैं ओम् शान्ति, यह भी कहते हैं ओम् शान्ति। बच्चे भी कहते हैं ओम् शान्ति अर्थात् हम आत्मा शान्तिधाम की निवासी हैं। यहाँ अलग- अलग होकर बैठना है। अंग से अंग नहीं मिलना चाहिए क्योंकि हर एक की अवस्था में, योग में रात-दिन का फर्क है। कोई बहुत अच्छा याद करते हैं, कोई बिल्कुल याद नहीं करते। तो जो बिल्कुल याद नहीं करते - वह हैं पाप आत्मा, तमोप्रधान और जो याद करते हैं वह हो गये पुण्य आत्मा, सतोप्रधान। बहुत फर्क हो गया ना। घर में भल इकट्ठे रहते हैं परन्तु फर्क तो पड़ता है ना इसलिए ही तो भागवत में आसुरी नाम गाये हुए हैं। इस समय की ही बात है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं- यह हैं ईश्वरीय चरित्र, जो भक्ति मार्ग में गाते हैं।

वह है ईश्वरीय राज्य जो अब ईश्वर स्थापन कर रहे हैं। बच्चों को समझाते रहते हैं - शिवबाबा को याद करो तो स्वर्ग के मालिक बनो। स्वर्ग शिवबाबा ने स्थापन किया ना। तो शिवबाबा को और सुखधाम को याद करो। पहले-पहले शान्तिधाम को याद करो तो चक्र भी याद आयेगा। बच्चे भूल जाते हैं, इसलिए घड़ी- घड़ी याद कराना पड़ता है। हे मीठे-मीठे बच्चों, अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हों। प्रतिज्ञा करते हैं तुम याद करेंगे तो पापों से मुक्त करूँगा।

सबसे जास्ती गर्म हलुआ कौन खाते हैं? (ब्रह्मा) यह तो बिल्कुल उनके बाजू में बैठे हैं। झट सुनते हैं और धारण करते हैं फिर यही ऊंच पद पाते हैं। सूक्ष्मवतन में, वैकुण्ठ में इनका ही साक्षात्कार करते हैं। यहाँ भी उनको ही देखते हैं इन आखों से। बाप पढ़ाते तो सबको हैं। बाकी है याद की मेहनत। याद में रहना जैसे तुमको डिफीकल्ट लगता है, वैसे इनको भी। इसमें कोई कृपा की बात नहीं। बाप कहते हैं हमने लोन लिया है, उनका हिसाब-किताब दे देंगे। बाकी याद का पुरूषार्थ तो इनको भी करना है। समझता भी हूँ - बाजू में बैठा है। बाप को हम याद करते फिर भी भूल जाता हूँ। सबसे जास्ती मेहनत इनको करनी पड़ती है। युद्ध के मैदान में जो महारथी पहलवान होते हैं, जैसे हनूमान का मिसाल है, तो उनकी ही माया ने परीक्षा ली क्योंकि वह महावीर था। जितना जास्ती पहलवान उतना जास्ती माया परीक्षा लेती है। तूफान जास्ती आते हैं। बच्चे लिखते हैं - बाबा हमको यह-यह होता है। बाबा कहते हैं यह तो सब कुछ होगा। बाबा रोज़ समझाते हैं - खबरदार रहना। लिखते हैं - बाबा, माया बहुत तूफान लाती है। कोई-कोई देह- अभिमानी होते हैं तो बाबा को बतलाते नहीं है। तुम अभी बहुत अक्लमंद बनते हो।

बच्चों को सिर्फ एक की याद में नहीं बैठना है। तीन की याद में बैठना है। भल एक ही है परन्तु तुम जानते हो वह बाप भी है, शिक्षक भी है, सतगुरू भी है। हम सबको वापिस ले जाने आये हैं, यह नई बात तुम ही समझते हो। बच्चे जानते हैं वह जो भक्ति सिखाते हैं, शास्त्र सुनाते हैं, वह सब हैं मनुष्य। इनको तो मनुष्य नहीं कहेंगे ना। यह तो है निराकार, निराकार आत्माओं को बैठ पढ़ाते हैं। आत्मा शरीर द्वारा सुनती है। यह ज्ञान बुद्धि में होना चाहिए। अभी तुम बेहद के बाप की याद में बैठे हो। बेहद के बाप ने कहा है-रूहानी बच्चों, मुझे याद करो तो पाप कट जाएं। यहाँ शास्त्र आदि की कोई बात नहीं। जानते हो बाप हमको राजयोग सिखला रहे हैं। कितना भारी टीचर है, ऊंच ते ऊँच, तो पद भी ऊंच ते ऊंच प्राप्त कराते हैं। जब तुम सतोप्रधान

बन जायेंगे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तब फिर लड़ाई होगी। नैचुरल कैलेमिटीज़ भी होगी। याद भी जरूर करना है। बुद्धि में सारा ज्ञान भी होना चाहिए। सिर्फ एक ही बार पुरूषोत्तम संगमयुग पर बाप आकर समझाते हैं, नई दुनिया के लिए। छोटे बच्चे भी बाप को याद करते हैं। तुम तो समझदार हो, जानते हो बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे और बाप से ऊंच पद पाएंगे। यह भी जानते हो इन लक्ष्मी-नारायण ने नई दुनिया में जो पद पाया है वह शिवबाबा से ही पाया है। यह लक्ष्मी-नारायण ही फिर 84 का चक्र लगाकर अभी ब्रह्मा-सरस्वती बने हैं। यही फिर लक्ष्मी- नारायण बनेंगे।

भक्ति के संस्कार वाले पुरानी दुनिया में मनुष्यों के पास ही जन्म लेंगे। यह भी जरूर है। तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान का चक्र चलना चाहिए। साथ-साथ बाबा को भी याद करना है। बाबा हमारा बाप भी है। बाप को याद किया तो विकर्म विनाश होंगे। बाबा हमारा टीचर भी है तो पढ़ाई बुद्धि में आयेगी और सृष्टि चक्र का ज्ञान बुद्धि में है, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे।

बाप स्मृति दिलाते हैं-मीठे-मीठे बच्चे, मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे। अब कैसे याद करते हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है ? नहीं। बाबा तो यहाँ रथ में बैठे हैं। इस रथ का सबको मालूम पड़ता जाता है। यह है भाग्यशाली रथ। इनमें आया हुआ है। भक्तिमार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे परन्तु यह नहीं जानते थे कि याद से क्या होगा। अभी तुम बच्चों को बाप खुद इस रथ में बैठ श्रीमत देते हैं, इसलिए तुम बच्चे समझते हो बाबा यहाँ इस मृत्युलोक में पुरूषोत्तम संगमयुग पर हैं। तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं मामेकम याद करो, मैं इस रथ में रहकर तुमको यह नॉलेज दे रहा हूँ। अपनी भी पहचान देता हूँ, मैं यहाँ हूँ। आगे तो तुम समझते थे परमधाम में रहने वाला है। होकर गया है परन्तु कब, यह पता नहीं था। होकर तो सब गये हैं ना। जिनके भी चित्र हैं, अभी

वह कहाँ हैं, यह किसको पता नहीं है। जो जाते हैं वह फिर अपने समय पर आते हैं। भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते रहते हैं।

बच्चे कहते हैं-बाबा, याद कैसे करें? अरे, अपने को आत्मा तो समझते हो ना। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है तो उनका बाप भी इतना छोटा होगा। वह पुनर्जन्म में नहीं आता है। यह बुद्धि में ज्ञान है। बाप याद क्यों नहीं आयेगा। चलते-फिरते बाप को याद करो। अच्छा, बड़ा रूप ही समझो बाप का। परन्तु याद तो एक को करो ना, तो तुम्हारे पाप कट जाएं। और तो कोई उपाय है नहीं। जो समझते हैं वह कहते हैं बाबा आपकी याद से हम पावन बन पावन दुनिया, विश्व के मालिक बनते हैं तो हम क्यों नहीं याद करेंगे। एक-दो को भी याद दिलाना है तो पाप कट जाएं।

सन्यासी लोग भी जब कथा बैठ सुनाते हैं तो कोई झुटका खाते हैं या अटेंशन और तरफ रहता है तो अचानक उनसे पूछते हैं क्या सुनाया? बाप भी सबको देखते रहते हैं। कोई तवाई तो नहीं बैठे हैं। अच्छे शुरूड बच्चे जो होते हैं वह पढ़ाई में कभी उबासी आदि नहीं लेंगे। स्कूल में कभी कोई आंखें बन्द करके बैठे यह तो कायदा नहीं। कुछ भी ज्ञान को समझते नहीं। बाप को याद करना, उन्हों के लिए बड़ा मुश्किल है, फिर पाप कैसे कटें। शुरूड बुद्धि तो अच्छी रीति से धारण कर औरों को सुनाने का शौक रखते हैं। ज्ञान नहीं है तो बुद्धि मित्र-सम्बन्धियों के तरफ भटकती रहती है। यहाँ तो बाप कहते हैं और सब कुछ भूल जाना है। पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। बाबा ने सन्यासियों आदि को देखा हुआ है जो पक्के ब्रह्म ज्ञानी होते हैं, सवेरे ऐसे बैठे-बैठे ब्रह्म महतत्व को याद करते-करते शरीर छोड़ देते हैं। उनके शान्ति का प्रवाह बहुत होता है। अब वह ब्रह्म में लीन तो हो न सकें। फिर भी माता के गर्भ से जन्म लेना पड़ता है।

भल गृहस्थ व्यवहार में रहो। उसमें भी जितना हो सके उठते-बैठते यह पक्का करो, जैसे भक्त लोग सवेरे उठकर एकान्त में बैठ माला जपते हैं, तुम तो सारे दिन का हिसाब निकालते हो। फलाने समय इतनी याद रही, सारे दिन में इतना समय याद रही, टोटल निकालते हो। वह तो सवेरे उठकर माला फेरते हैं, भल कोई सच्चे भक्त नहीं होते हैं। कईयों की बुद्धि तो बाहर कहाँ-कहाँ भटकती रहती है। अभी तुम समझते हो भक्ति से फायदा कुछ भी नहीं मिलना है। यह तो है ज्ञान, जिससे बहुत फायदा होता है। अभी तुम्हारी है चढ़ती कला। बाप घड़ी-घड़ी कहते मनमनाभव। गीता में भी अक्षर है परन्तु उसका अर्थ कोई भी सुना नहीं सकेंगे। जवाब देने आयेगा नहीं। वास्तव में उसका अर्थ लिखा हुआ भी है अपने को आत्मा समझ, देह के सब धर्म छोड़ मामेकम याद करो। भगवानुवाच है ना। परन्तु उनकी बुद्धि में है कृष्ण भगवान। वह तो देहधारी पुनर्जन्म में आने वाला है ना। उनको भगवान कैसे कह सकते हैं।

स्त्री-पुरूष का आपस में कितना प्यार होता है, पति को कितना याद करती है। बेहद के बाप को तो सबसे जास्ती याद करना चाहिए। गायन भी है ना - प्यार करो चाहे ठुकराओ, हम हाथ कभी नहीं छोड़ेंगे। ऐसे नहीं, यहाँ आकर रहना है, वह तो फिर सन्यास हो गया। घरबार छोड़ यहाँ आकर रहें। तुमको तो कहा जाता है, गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनो। यह पहले तो भट्ठी बननी थी, जिससे इतने तैयार हो निकले, उनका भी बहुत अच्छा वृतान्त है। जो बाप का बनकर अन्दर (यज्ञ में) रहकर के रूहानी सर्विस नहीं करते वह जाकर दास-दासियां बनते हैं फिर पिछाड़ी में नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार ताज मिल जाता है। उन्हों का भी घराना होता है, प्रजा में नहीं आ सकते। कोई बाहर का आए अन्दर वाला नहीं बन सकता। वल्लभाचारी बाहर वालों को कभी अन्दर आने नहीं देते हैं। यह सब समझने की बातें हैं। ज्ञान है सेकण्ड का, फिर बाप को ज्ञान का सागर क्यों कहा जाता है? समझाते ही रहते हैं पिछाड़ी तक समझाते ही रहेंगे। जब राजधानी स्थापन हो जायेगी तुम कर्मातीत अवस्था में आ जाएंगे फिर ज्ञान पूरा हो

जायेगा। है सेकण्ड की बात। परन्तु फिर समझाना पड़ता है। हद के बाप से हद का वर्सा, बेहद का बाप विश्व का मालिक बना देते हैं। तुम सुखधाम में जायेंगे तो बाकी सब शान्तिधाम में चले जाएंगे। वहाँ तो है ही सुख ही सुख। यह तो खातिरी है - बाप आये हैं। हम नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं - राजयोग की पढ़ाई से।

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रोज-रोज सावधानी जरूर देनी होती है। कौन सी? सेफ्टी फर्स्ट। सेफ्टी क्या है? याद की यात्रा से तुम बहुत-बहुत सेफ रहते हो। मूल बात ही बच्चों के लिए यह है। बाप ने समझाया है-तुम बच्चे जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे उतनी खुशी भी रहेगी और मैंनर्स भी ठीक होंगे क्योंकि पावन भी बनना है। कैरेक्टर्स भी सुधारना है। अपनी जांच करनी है-मेंरा कैरेक्टर किसको दु :ख देने जैसा तो नहीं है! मुझे कोई देह- अभिमान तो नहीं आ जाता है? यह अच्छी रीति अपनी जाँच रखनी है। बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम बच्चे पढ़ते भी हो तो फिर पढ़ाते भी हो। बेहद का बाप सिर्फ पढ़ाते हैं। बाकी तो सब हैं देहधारी। इसमें सारी दुनिया आ जाती है। एक बाप ही विदेही है। वह तुम बच्चों को कहते हैं कि तुमको भी विदेही बनना है। मैं आया हूँ तुमको विदेही बनाने। पवित्र बनकर ही वहाँ जायेंगे। छी-छी को तो साथ ले नहीं जायेंगे इसलिए पहले-पहले मन्त्र ही यह देते हैं। माया को वश करने का यह मन्त्र है। पवित्र होने का यह मन्त्र है। इस मन्त्र में बहुत खूबियां भरी हुई हैं, इनसे ही पवित्र बनना है। मनुष्य से देवता बनना है। जरूर हम ही देवता थे इसलिए बाप कहते हैं- अपनी सेफ्टी चाहो, मजबूत महावीर बनना चाहो तो यह पुरूषार्थ करो। बाप तो शिक्षा देते रहेंगे। भल ड्रामा भी कहते रहेंगे। ड्रामा अनुसार बिल्कुल ठीक ही चल रहा है फिर आगे के लिए भी समझाते रहेंगे। याद की यात्रा में कमजोर नहीं बनना है। बाहर रहने वाली बांधेली गोपिकाएं जितना याद करती हैं, उतना सामने रहने वाले भी याद नहीं करते हैं क्योंकि उनको तड़फन होती है शिवबाबा से मिलने की। जो मिल जाते हैं उन्हों का पेट जैसेकि भर जाता है। जो बहुत याद करते हैं, वह ऊंच पद पा सकते हैं। देखा जाता है- अच्छे- अच्छे, बड़े-बड़े सेंटर्स सम्भालने

वाले मुख्य भी याद की यात्रा में कमजोर हैं। याद का जौहर बहुत अच्छा चाहिए। ज्ञान तलवार में याद का जौहर न होने कारण किसको तीर लगता ही नहीं, पूरा मरते नहीं। बच्चे कोशिश करते हैं ज्ञान का बाण लगाकर बाप का बनायें वा मरजीवा बनायें। परन्तु मरते नहीं, तो जरूर ज्ञान तलवार में गड़बड़ है। बाबा भल जानते हैं-ड्रामा बिल्कुल एक्यूरेट चल रहा है, परन्तु आगे के लिए तो समझाते रहेंगे ना। हरेक अपनी दिल से पूछो-हम कहाँ तक याद करते हैं? याद से ही बल आयेगा इसलिए कहा जाता है-ज्ञान तलवार में जौहर चाहिए। ज्ञान तो बहुत सहज रीति समझा सकते हैं।

ओम् शान्ति का अर्थ तो बाप ने अच्छी रीति समझाया है। जहाँ मिलेट्री खड़ी होती है वह फिर कहते हैं अटेंशन, उन लोगों का अटेंशन माना साइलेन्स। यहाँ भी तुमको बाप कहते हैं अटेंशन अर्थात् एक बाप की याद में रहो। मुख से बोलना होता है, नहीं तो वास्तव में बोलने से भी दूर होना चाहिए। अटेंशन, बाप की याद में हो? बाप का डायरेक्शन अथवा श्रीमत मिलती है, तुमने आत्मा को भी पहचाना है, बाप को भी पहचाना है तो बाप को याद करने बिगर तुम विकर्माजीत अथवा सतोप्रधान पवित्र नहीं बन सकते। मूल बात ही यह है, बाप कहते हैं मीठे-मीठे लाडले बच्चों! अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह हैं सब इस समय की बातें, जो फिर वह उस तरफ ले गये हैं। वह भी मिलेट्री है, तुम भी मिलेट्री हो। अन्डरग्राउण्ड मिलेट्री भी होती है ना। गुम हो जाते हैं। तुम भी अन्डरग्राउण्ड हो। तुम भी गुम हो जाते अर्थात् बाप की याद में लीन हो जाते हो। इसको कहा जाता है अन्डरग्राउण्ड। कोई पहचान न सके क्योंकि तुम गुप्त हो ना। तुम्हारी याद की यात्रा गुप्त है, सिर्फ बाप कहते हैं मुझे याद करो क्योंकि बाप जानते हैं याद से इन बिचारों का कल्याण होगा। अब तुमको बिचारा कहेंगे ना। स्वर्ग में बिचारे होते नहीं। बिचारे उनको कहा जाता है जो कहाँ बन्धन में फंसे रहते हैं। यह भी तुम

समझते हो, बाप ने समझाया है - तुमको लाइट हाउस भी कहा जाता है। बाप को भी लाइट हाउस कहा जाता है।

तुम जानते हो हम आत्मा हैं, हमारा धर्म ही शान्त है। फिर याद किसको करना है। अभी तुमको ज्ञान मिलता है। ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटते हैं। यह ज्ञान और कोई को नहीं है। मनुष्य यह थोड़ेही समझते हैं - हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं। हमको शरीर से डिटैच हो बैठना है। यहाँ तुमको वह बल मिलता है जिससे तुम अपने को आत्मा समझ बाप की याद में बैठ सकते हो। बाप समझाते हैं-कैसे अपने को आत्मा समझ डिटैच होकर बैठो।

बाप को याद करना है। याद से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप कटते हैं। याद ही नहीं करेंगे तो पाप भी नहीं कटेंगे। बाप को याद करना है, याद में आंखें कभी बन्द नहीं करनी है। सन्यासी लोग आंखें बन्दकर बैठते हैं। कोई-कोई तो स्त्री का मुंह नहीं देखते हैं। पट्टी बांधकर बैठते हैं। तुम जब यहाँ बैठते हो तो रचता और रचना के आदि-मध्य- अन्त का स्वदर्शन चक्र फिराना चाहिए। तुम लाइट हाउस हो ना। यह है दु :खधाम, एक आँख में दु :खधाम, दूसरी आँख में सुखधाम। उठते-बैठते अपने को लाइट हाउस समझो। बाबा भिन्न-भिन्न नमूने से बताते हैं। तुम अपनी भी सम्भाल करते हो। लाइट हाउस बनने से अपना कल्याण करते हो।

बाप बच्चों को समझाते हैं-यह तुम्हारा टाइम मोस्ट वैल्युबुल है, इसको तुम वेस्ट मत करो। अपने को श्रृंगारने की बहुत युक्तियां मिली हैं। मैं सबका उद्धार करने आता हूँ। मैं आया हूँ तुमको विश्व की बादशाही देने। तो अब मुझे याद करो, टाइम वेस्ट मत करो। काम-काज करते भी बाप को याद करते रहो। इतनी ढेर सब आत्मायें आशिक हैं एक परमपिता परमात्मा माशूक की। वह सब जिस्मानी कथायें आदि तो तुम बहुत सुनते हो। अब बाप कहते हैं वह सब भूल

जाओ। भक्ति मार्ग में तुमने मुझे याद किया और वायदा भी किया है, हम आपके ही बनेंगे। ढेर के ढेर आशिकों का एक माशूक। भक्ति मार्ग में कहते हैं - ब्रह्म में लीन होंगे, यह सब है फालतू बातें। एक भी मनुष्य मोक्ष को नहीं पा सकता है। यह तो अनादि ड्रामा है, इतने सब एक्टर्स हैं, इसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता है। बाप कहते हैं सिर्फ एक अल्फ को याद करो तो तुम्हारा यह श्रृंगार हो जायेगा। अभी तुम यह बन रहे हो। स्मृति में आता है - अनेक बार हमने यह श्रृंगार किया है। कल्प-कल्प बाबा आप आयेंगे, हम आपसे ही सुनेंगे। कितनी गुह्य-गुह्य प्याइंटस हैं। बाबा ने युक्ति बहुत अच्छी बताई है। वारी जाऊं, ऐसे बाप पर। आशिक-माशूक भी सब एक जैसे नहीं होते। यह तो सभी आत्माओं का एक ही माशक है। जिस्मानी कोई बात नहीं। परन्तु तुम्हें संगमयुग पर ही बाप से यह युक्ति मिलती है। कहाँ भी तुम जाओ, खाओ-पियो, घूमो फिरो, नौकरी करो, अपना श्रृंगार करते रहो। आत्मायें सब एक माशक की आशिक हैं। बस, उनको ही याद करते रहो। कोई-कोई बच्चे कहते हैं हम तो 24 घण्टे याद करते रहते हैं। परन्तु सदैव तो कोई कर नहीं सकते। बहुत में बहुत दो अढ़ाई घण्टे तक। जास्ती अगर लिखें तो बाबा मानता नहीं। दूसरे को स्मृति दिलाते नहीं तो कैसे समझे तुम याद करते हो? क्या कोई डिफीकल्ट बात है? कोई इसमें खर्चा है? कुछ भी नहीं। बस, बाबा को याद करते रहो तो तुम्हारे पाप कट जायें। दैवीगुण भी धारण करने हैं। पतित कोई शान्तिधाम वा सुखधाम में जा न सके। बाप बच्चों को कहते हैं अपने को आत्मा भाई- भाई समझो। 84 जन्मों का पार्ट अभी पूरा होता है। यह पुराना चोला छोड़ने का है। ड्रामा देखो कैसा बना हुआ है। तुम जानते हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। दुनिया में तो कोई कुछ भी नहीं समझते। हरेक अपने से पूछे कि हम बाप की मत पर चलते हैं? चलेंगे तो श्रृंगार भी अच्छा होगा। एक-दो को उल्टी बातें सुनाकर अथवा सुनकर अपना श्रृंगार भी बिगाड़ देते हैं तो दूसरे का भी बिगाड़ देते हैं। बच्चों को तो इसी धुन में लगा रहना है कि हम ऐसे श्रृंगारधारी कैसे बनें। बाकी तो जो कुछ है वह ठीक है। सिर्फ पेट के लिए रोटी आराम से मिले | वास्तव में पेट जास्ती नहीं खाता।

भल तुम सन्यासी हो परन्तु राजयोगी हो। न बहुत ऊंचा, न नीचा। खाओ भल परन्तु ज्यादा हिर न जाओ (आदत न पड़ जाए)। यही एक-दो को याद दिलाओ-शिवबाबा याद है? वर्सा याद है? विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? विचार करो - यहाँ बैठे-बैठे तुम्हारी क्या कमाई है! इस कमाई से अपार सुख मिलना है, सिर्फ याद की यात्रा से और कोई तकलीफ नहीं। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने धक्के खाते हैं। अभी बाप आये हैं श्रृंगारने। तो अपना अच्छी रीति ख्याल करो। भूलो मत। माया भुला देती है फिर टाइम बहुत वेस्ट करते हैं। तुम्हारा तो यह बहुत वैल्युबुल टाइम है। पढाई की मेहनत से मनुष्य क्या से क्या बन जाते हैं। बाबा तुमको और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं-मुझे याद करो। कोई भी किताब आदि उठाने की दरकार नहीं। बाबा कोई किताब उठाता है क्या? बाप कहते हैं मैं आकर इस प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूँ।

कई बच्चे लिखते हैं-बाबा, हमको खुशी नहीं रहती है, उल्लास नहीं रहता है। अरे, बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, ऐसे बाप को याद कर तुमको खुशी नहीं रहती है! तुम पूरा याद नहीं करते हो तब खुशी नहीं ठहरती है। पति को याद करते खुशी होती है, जो पतित बनाते हैं और बाप जो डबल सिरताज बनाते हैं, उनको याद करके खुशी नहीं होती है। बाप के बच्चे बने हो फिर भी कहते हो खुशी नहीं! पूरा ज्ञान बुद्धि में नहीं है। याद नहीं करते हो इसलिए माया धोखा देती है। बच्चों को कितना अच्छी रीति समझाते हैं। कल्प-कल्प समझाते हैं। आत्मायें जो पत्थरबुद्धि बन पड़ी हैं, उनको पारसबुद्धि बनाता हूँ। नॉलेजफुल बाप ही आकर नॉलेज देते हैं। वह हर बात में फुल है। प्योरिटी में फुल, प्यार में फुल। ज्ञान का सागर, सुख का सागर, प्यार का सागर है ना। ऐसे बाप से तुमको यह वर्सा मिलता है। ऐसा बनने के लिए ही तुम आते हो। बाकी वह सतसंग आदि तो सब हैं भक्ति मार्ग के। उनमें एम आब्जेक्ट कुछ भी है नहीं। इसको तो गीता पाठशाला कहा जाता है, वेद पाठशाला नहीं होती। गीता से नर से नारायण बनते हो

। जरूर बाप ही बनायेंगे ना । मनुष्य, मनुष्य को देवता बना न सकें । बाप बार-बार बच्चों को समझाते हैं-बच्चे, अपने को आत्मा समझो । तुम कोई देह थोड़ेही हो । आत्मा कहती है मैं एक देह छोड़ दूसरी लेती हूँ ।

बच्चों को योग सिखाया । और सब जगह सब आपेही सीखते हैं, सिखलाने वाला बाप नहीं होता । एक-दो को आपेही सिखलाते हैं । यहाँ तो बाप बैठ सिखलाते हैं बच्चों को । रात-दिन का फर्क है । वहाँ तो बहुत मित्र-सम्बन्धी आदि याद आते रहते हैं, इतना याद नहीं कर सकते हैं इसलिए देही- अभिमानी बहुत मुश्किल बनते हैं । यहाँ तो देही- अभिमानी तुमको बहुत जल्दी बनना चाहिए, परन्तु बहुत हैं जिनको कुछ भी पता नहीं है । शिवबाबा हमारी सर्विस कर रहे हैं, हमको कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो । जो बाप इसमें विराजमान हैं, यहाँ विराजमान हैं, उनको याद करना पड़ता है । बहुत बच्चे हैं जिनको यह निश्चय ही नहीं है कि शिवबाबा ब्रह्मा तन द्वारा हमको सिखला रहे हैं, जैसे और लोग कहते हैं, हम कैसे निश्चय करें, ऐसे यहाँ भी हैं । अगर पूरा निश्चय होता तो बहुत प्यार से बाप को याद करते- करते अपने में बल भरते, बहुत सर्विस करते क्योंकि सारे विश्व को पावन बनाना है ना । योग में भी कमी है तो ज्ञान में भी कमी है । सुनते तो हैं परन्तु धारणा नहीं होती है । धारणा अगर हो तो फिर औरों को भी धारणा करावें । बाबा ने समझाया था वे लोग कान्फ्रेंस आदि करते रहते हैं, विश्व में शान्ति चाहते हैं परन्तु विश्व में शान्ति कब थी, किस प्रकार हुई थी, वह कुछ भी नहीं जानते । किस प्रकार की शान्ति थी, वही चाहिए ना । यह तो तुम बच्चे ही जानते हो विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना अब हो रही है ।

भल अब तुम्हारी आत्मा पूरी कंचन नहीं बनी है परन्तु बाप का परिचय तो बुद्धि में है ना। कंचन होने की युक्ति बताते हैं। आत्मा में जो खाद पड़ी है वह निकले कैसे? उसके लिए याद की यात्रा है। इसको कहा जाता है युद्ध का मैदान। तुम हरेक इन्डिपेन्डेट युद्ध के मैदान में सिपाही हो। अब हरेक जितना चाहे उतना पुरूषार्थ करे। पुरूषार्थ करना तो स्टूडेंट का काम है। कहाँ भी जाओ, एक-दो को सावधान करते रहो-मनमनाभव। शिवबाबा याद है? एक-दो को यही इशारा देना है। बाप की पढ़ाई इशारा है तब तो बाप कहते हैं एक सेकण्ड में काया कंचन हो जाती है। विश्व का मालिक बना देता हूँ। बाप के बच्चे बने तो विश्व के मालिक बन गये। फिर विश्व में है बादशाही। उनमें ऊंच पद पाना-यह है पुरूषार्थ करना। बाकी सेकण्ड में जीवनमुक्ति। राइट तो है ना।

बाप घड़ी-घड़ी बच्चों का अटेंशन खिंचवाते हैं कि बाप की याद में बैठे हो? बुद्धि कोई और तरफ तो नहीं भागती है? बाप को बुलाते ही इसलिए हैं कि बाबा आकर हमें पावन बनाओ। पावन तो जरूर बनना है और नॉलेज तो तुम किसको भी समझा सकते हो। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, किसको भी तुम समझाओ तो झट समझ जायेंगे। भल पवित्र नहीं होगा तो भी नॉलेज तो पढ़ ही लेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। 84 का चक्र और हरेक युग की इतनी आयु है, इतने जन्म होते हैं। कितना सहज है। इनका कनेक्शन याद से नहीं है, यह तो है पढ़ाई। बाप तो यथार्थ बात समझाते हैं। बाकी है सतोप्रधान बनने की बात। वह होंगे याद से। अगर याद नहीं करेंगे तो बहुत छोटा पद पा लेंगे। इतना ऊँच पद पा नहीं सकेंगे इसलिए कहा जाता है अटेंशन। बुद्धि का योग बाप के साथ हो। इनको ही प्राचीन योग कहा जाता है। टीचर के साथ योग तो हरेक का होगा ही। मूल बात है याद की। याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बनना है और सतोप्रधान बन वापस घर जाना है। बाकी पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है। कोई बच्चा भी समझ सकते हैं। माया की युद्ध इस याद में ही चलती है। तुम बाप को याद करते हो और माया फिर अपनी तरफ खींचकर भुला देती है। ऐसे नहीं कहेंगे कि मेरे में तो शिवबाबा बैठा है, मैं

शिव हूँ। नहीं, मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा को याद करना है। ऐसे नहीं मेरे अन्दर शिव की प्रवेशता है। ऐसे हो नहीं सकता। बाप कहते हैं मैं कोई में जाता नहीं हूँ। हम इस रथ पर सवार होकर ही तुम बच्चों को समझाते हैं। हाँ, कोई डल बुद्धि बच्चे हैं और कोई अच्छा जिज्ञासू आ जाता है तो उनकी सर्विस अर्थ मैं प्रवेश कर दृष्टि दे सकता हूँ। सदैव नहीं बैठ सकता हूँ। बहु रूप धारण कर किसका भी कल्याण कर सकते हैं। बाकी ऐसे कोई नहीं कह सकते कि मेरे में शिवबाबा की प्रवेशता है, मुझे शिवबाबा यह कहते हैं।नहीं, शिवबाबा तो बच्चों को ही समझाते हैं। अब देवता बनने के लिए पवित्र जरूर बनना है। उसके लिए बाबा को याद करना है। अक्सर करके यही कहते हैं-बाबा, मेरे से यह भूल हुई जो हम देह- अभिमान में आ गया। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं पावन जरूर बनना है। कोई विकर्म न करो। तुमको सर्वगुण सम्पन्न यहाँ बनना है। पावन बनने से मुक्तिधाम में चले जायेंगे। और कोई प्रश्न पूछने की बात ही नहीं है। तुम अपने से बात करो, दूसरी आत्माओं का चिंतन नहीं करो। कहते हैं लड़ाई में दो करोड़ मरे। इतनी आत्मायें कहाँ गई? अरे, वह कहाँ भी गये, उसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुम क्यों टाइम वेस्ट करते हो? और कोई भी बात पूछने की दरकार नहीं। तुम्हारा काम है पावन बनकर पावन दुनिया का मालिक बनना। और बातों में जाने से मूंझ पड़ेंगे। कोई को पूरा उत्तर नहीं मिलता है तो मूंझ पड़ते हैं।

आजकल हिन्दी बहुत चलती है, ऐसे नहीं कि भाषा बदल सकती है। नहीं, संस्कृत भाषा आदि कोई देवताओं की तो है नहीं। हिन्दू धर्म की संस्कृत नहीं है। हिन्दी ही होनी चाहिए। फिर संस्कृत क्यों उठाते हैं? तो बाप समझाते हैं यहाँ जब बैठते हो तो बाप की याद में ही बैठना है, और कोई बातों में तुम जाओ ही नहीं। इतने मच्छर निकलते हैं, कहाँ जाते हैं? अर्थक्येक में ढेर के ढेर फट से मरते हैं, आत्मायें कहाँ जाती हैं? इसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुमको बाप ने श्रीमत दी है कि अपनी उन्नति के लिए पुरूषार्थ करो। औरों के चिंतन में मत जाओ। ऐसे तो

अनेक बातों का चिंतन हो जायेगा। बस, तुम मुझे याद करो, जिसके लिए बुलाया है उस युक्ति में चलो। तुम्हे बाप से वर्सा लेना है, और बातों में नहीं जाना है इसलिए बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं अटेंशन! कहाँ बुद्धि तो नहीं जाती। भगवान की श्रीमत तो माननी चाहिए ना। और कोई बात में फायदा नहीं। मुख्य बात है पावन बनने की। यह पक्का याद रखो-हमारा बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, प्रीसेप्टर भी है। यह जरूर दिल में याद रखना है-बाप, बाप भी है, हमको पढ़ाते हैं, योग सिखलाते हैं। टीचर पढ़ाते हैं तो बुद्धि का योग टीचर में और पढ़ाई में भी जाता है। यही बाप भी कहते हैं तुम बाप के तो बन ही गये हो। बच्चे तो हो ही, तब तो यहाँ बैठे हो। टीचर से पढ़ रहे हो। कहाँ भी रहते बाप के तो हो ही फिर पढ़ाई में अटेंशन देना है। शिवबाबा को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। यह नॉलेज और कोई दे न सके। मनुष्य तो घोर अन्धियारे में हैं ना। ज्ञान में देखो-कितनी ताकत है। ताकत कहाँ से मिलती है? बाप से ताकत मिलती है जिससे तुम पावन बनते हो। फिर पढ़ाई भी सिम्पुल है। उस पढ़ाई में तो बहुत मास लगते हैं। यहॉ तो 7 रोज का कोर्स है। उससे तुम सब कुछ समझ जायेंगे फिर उसमें है बुद्धि पर मदार। कोई जास्ती टाइम लगाते हैं, कोई कम। कोई तो 2 - 3 दिन में ही अच्छी रीति समझ जाते हैं। मूल बात है बाप को याद करना, पवित्र बनना। वही मुश्किलात होती है। बाकी पढ़ाई तो मोस्ट सिम्पुल है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। एक रोज के कोर्स में भी सब कुछ समझ सकते हो। हम आत्मा है, बेहद के बाप की सन्तान है तो जरूर हम विश्व के मालिक ठहरे। यह बुद्धि में आता है ना। देवता बनना है तो दैवीगुण भी धारण करने हैं, जिसको बुद्धि में आ गया वह फट से सब आदतें छोड़ देंगे। तुम कहो, न कहो, आपही छोड़ देंगे। उल्टा-सुल्टा खान-पान, शराब आदि खुद ही छोड़ देंगे। कहते हैं-वाह, हमको यह बनना है, 21 जन्मों के लिए राज्य मिलता है तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे। चटक जाना चाहिए। मुख्य बात है याद की यात्रा। बाकी 84 के चक्र की नॉलेज तो एक सेकेण्ड में मिल जाती है। देखने से ही समझ जाते हैं। नया झाड़ जरूर छोटा होगा। अभी तो कितना बड़ा झाड़ तमोप्रधान

बन गया है। कल फिर नया छोटा बन जायेगा। तुम जानते हो-यह ज्ञान कभी कहाँ से भी मिल नहीं सकता। यह पढ़ाई है, पहली मुख्य शिक्षा भी मिलती है कि बाप को याद करो। बाप पढ़ाते हैं, यह निश्चय करो। भगवानुवाच-मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके। टीचर पढ़ाते हैं तो जरूर टीचर को याद करेंगे ना। बेहद का बाप भी है, बाप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। परन्तु आत्मा कैसे पवित्र बनेगी-यह कोई भी बता नहीं सकते हैं। भल अपने को भगवान कहें वा कुछ भी कहें परन्तु पावन बना नहीं सकते। आजकल भगवान तो बहुत हो गये हैं। मनुष्य मुंझ पड़े हैं। कहते हैं अनेक धर्म निकलते हैं, क्या पता कौन-सा राइट है। भल तुम्हारी प्रदर्शनी वा म्यूजियम आदि का उद्घाटन करते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं। वास्तव में उद्घाटन तो हो ही गया है। पहले फाउन्डेशन पड़ता है, फिर जब मकान बनकर तैयार होता है तब उद्घाटन होता है। फाउन्डेशन लगाने के लिए भी बुलाया जाता है। तो यह भी बाप ने स्थापना कर दी है, बाकी नई दुनिया का उद्घाटन तो हो ही जाना है, उसमें किसके उद्घाटन करने की दरकार नहीं रहती। उद्घाटन तो स्वत ही हो जायेगा। यहाँ पढ़कर फिर हम नई दुनिया में चले जायेंगे।

तो बाप समझाते हैं - मीठे बच्चे, कभी भी मूँझो नहीं कि बाप को याद कैसे करें। अरे, तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो। वह हैं कुख की सन्तान, तुम हो एडाप्टेड बच्चे। एडाप्टेड बच्चों को जिस बाप से मिलकियत मिलती है, उनको भूल सकते हैं क्या? बेहद के बाप से बेहद की मिलकियत मिलती है तो उनको भूलना थोड़े ही चाहिए। लौकिक बच्चे बाप को भूलते हैं क्या। परन्तु यहाँ माया का आपोजीशन होता है। माया की युद्ध चलती है, सारी दुनिया कर्मक्षेत्र है। आत्मा इस शरीर में प्रवेश कर यहाँ कर्म करती है।

- अभी तुम जानते हो हमको सर्वशक्तिमान् बाप से ताकत मिलती है विश्व पर राज्य करने की। लॅव तो रहता है ना। देवतायें प्रैक्टिकल में नहीं हैं तो भी कितना लव रहता है। जब सम्मुख होंगे तो प्रजा का कितना लव होगा। याद की यात्रा से यह सब तुम ताकत ले रहे हो। यह बातें भूलो नहीं। याद करते- करते तुम बहुत ताकत वाले बन जाते हो। सर्वशक्तिमान् और कोई को नहीं कहा जाता। सबको शक्ति मिलती है, इस समय कोई में शक्ति नहीं है, सब तमोप्रधान हैं। फिर सभी आत्माओं को एक से ही शक्ति मिल जाती है फिर अपनी राजधानी में आकर अपना-अपना पार्ट बजाते हैं। अपना हिसाब-किताब चुक्तू कर फिर ऐसे ही नम्बरवार शक्तिमान बनते हैं। पहले नम्बर में हैं इन देवताओं में शक्ति।

- वह सबका सुप्रीम बाप भी है, टीचर, सतगुरू भी है। यह बातें भूलनी नहीं चाहिए। परन्तु बच्चे भूल जाते हैं क्योंकि नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन हो रही है। हर एक जैसे पुरूषार्थ करते हैं, वह झट स्थूल में भी मालूम पड़ जाता है-यह बाप को याद करते हैं वा नहीं? देही- अभिमानी बने हैं वा नहीं? यह नॉलेज में तीखा है, एक्टिविटी से समझा जाता है। बाप कोई को कुछ डायरेक्ट कहते नहीं हैं। फैल न हो जाएं। अफसोस में न पड़ जाएं कि यह बाबा ने क्या कहा, और सब क्या कहेंगे! बाप बतला सकते हैं कि फलाने- फलाने कैसी सर्विस करते हैं। सारा सर्विस पर मदार है। बाप भी आकर सर्विस करते हैं ना। बच्चों को ही बाप को याद करना है। याद की सबजेक्ट ही डिफीकल्ट है। बाप योग और नॉलेज सिखाते हैं। नॉलेज तो बहुत सहज है। बाकी याद में ही फेल होते हैं। देह- अभिमान आ जाता है। फिर यह चाहिए, यह अच्छी चीज़ चाहिए। ऐसे-ऐसे ख्यालात आते हैं।

- अभी तुम फर्क देख सकते हो - तुम क्या थे, क्या बनना है! तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अन्दर गन्द जो भरा हुआ है उसको निकालना है। लौकिक सम्बन्ध में भी कोई-कोई बहुत गन्दे

बच्चे होते हैं तो उनसे बाप भी तंग हो जाते हैं। कहते हैं ऐसा बच्चा तो न होता तो अच्छा था। फूलों के बगीचे की खुशबू होती है। परन्तु ड्रामा अनुसार किचड़ा भी है। अक को तो बिल्कुल देखने भी दिल नहीं होती। परन्तु बगीचे में जाने से नज़र तो सब पर पड़ेगी ना। आत्मा कहेगी यह फलाना फूल है। खुशबू भी अच्छे फूल की लेंगे ना। बाप भी देखते हैं इनकी आत्मा कितना याद की यात्रा में रहती है, कितना पवित्र बनी हैं और फिर औरों को भी आप समान बनाते हैं। ज्ञान सुनाते हैं! मूल बात ही है मनमनाभव। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पवित्र फूल बनो। यह लक्ष्मी-नारायण कितने पवित्र फूल थे। इनसे भी शिवबाबा बहुत सेक्रेड हैं। मनुष्यों को थोड़ेही पता है कि इन लक्ष्मी-नारायण को भी ऐसा शिवबावा ने बनाया है। तुम जानते हो इस पुरूषार्थ से यह बने हैं। राम ने कम पुरूषार्थ किया तो चन्द्रवंशी बनें। बाप समझाते तो बहुत हैं। एक तो याद की यात्रा में रहना है, जिससे गंद निकले, आत्मा पवित्र बनें। तुम्हारे पास म्यूजियम आदि में बहुत आते हैं। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक रखना है। सर्विस को छोड़ कभी नींद नहीं करनी होती है। सर्विस पर बड़ा एक्यूरेट रहना चाहिए। म्यूजियम में भी तुम लोग रेस्ट का टाइम छोड़ते हो। गला थक जाता है, भोजन आदि भी खाना है परन्तु अन्दर में दिन-रात उछल आनी चाहिए। कोई आये तो उनको रास्ता बतायें। भोजन के टाइम कोई आ जाते हैं तो पहले उनको अटेन्ड कर फिर भोजन खाना चाहिए। ऐसी सर्विस वाला हो। कोई-कोई को बड़ा देह- अभिमान आ जाता है, आराम-पसन्द, नवाब बन जाते हैं। बाप को समझानी तो देनी पड़े ना। यह नवाबी छोड़ो। फिर बाप साक्षात्कार भी करायेंगे-अपना पद देखो। देह- अभिमान का कुल्हाड़ा आपे ही अपने पांव पर लगाया है। बहुत बच्चे बाबा से भी रीस करते हैं। अरे, यह तो शिवबाबा का रथ है, इनकी सम्भाल करनी पड़ती हैं। यहाँ तो ऐसे हैं जो ढेर दवाइयाँ लेते रहते, डॉक्टरों की दवाई करते रहते। भल बाबा कहते हैं शरीर को तन्दुरुस्त रखना है परन्तु अपनी अवस्था को भी देखना है ना। तुम बाबा की याद में रहकर खाओ तो कभी कोई चीज़ नुकसान नहीं करेगी। याद से ताकत भर जायेगी। भोजन बड़ा शुद्ध हो जायेगा। परन्तु वह अवस्था है नहीं। बाबा तो कहते हैं ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन

उत्तम ते उत्तम है परन्तु वह तब जबकि याद में रहकर बनावें। याद में रह बनाने से उनको भी फायदा, खाने वाले को भी फायदा होगा।

रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बच्चे याद की यात्रा में बैठे हुए हो? अन्दर में यह ज्ञान हैं ना कि हम आत्मायें याद की यात्रा पर हैं। यात्रा अक्षर तो जरूर दिल में आना चाहिए। जैसे वह यात्रा करते हैं हरिद्वार, अमरनाथ जाने की। यात्रा पूरी की फिर लौट आते हैं। यहाँ फिर तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम जाते हैं शान्तिधाम। बाप ने आकर हाथ पकड़ा है। हाथ पकड़कर पार ले जाना होता है ना। कहते भी हैं हाथ पकड़ लो क्योंकि विषय सागर में पड़े हैं। अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो। अन्दर में यह आना चाहिए कि हम जा रहे हैं। इसमें मुख से कुछ बोलना भी नहीं है। अन्दर में सिर्फ याद रहे-बाबा आया हुआ है लेने लिए। याद की यात्रा पर जरूर रहना है। इस याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कटने हैं, तब ही फिर उस मंजिल पर पहुँचेंगे। कितना क्लीयर बाप समझाते हैं। जैसे छोटे बच्चों को पढ़ाया जाता है ना। सदैव बुद्धि में हो कि हम बाबा को याद करते जा रहे हैं। बाप का काम ही है पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाना। बच्चों को ले जाते हैं। आत्मा को ही यात्रा करनी है। हम आत्माओं को बाप को याद कर घर जाना है। घर पहुँचेंगे फिर बाप का काम पूरा हुआ। बाप आते ही हैं पतित से पावन बनाकर घर ले जाने। पढ़ाई तो यहाँ ही पढ़ते हैं। भल घूमो फिरो, कोई भी काम-काज करो, बुद्धि में यह याद रहे। योग अक्षर में यात्रा सिद्ध नहीं होती है। योग सन्यासियों का है। वह तो सब हैं मनुष्यों की मत। आधाकल्प तुम मनुष्य मत पर चले हो। आधाकल्प दैवी मत पर चले थे। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत।

निया नई से पुरानी होती है ना। तो बाप कहते हैं - मेहनत करो। यह भी जानते हैं माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। बाप समझाते हैं बुद्धि में सदैव यह याद रखो हम जा रहे हैं, हमारा इस पुरानी

दुनिया से लंगर उठा हुआ है। नईया उस पार जानी है। गाते हैं ना नईया हमारी पार ले जाओ। कब पार जानी है, वह जानते नहीं हैं। तो मुख्य है याद की यात्रा। बाप के साथ वर्सा भी याद आना चाहिए। बच्चे बालिग होते हैं तो बाप का वर्सा ही बुद्धि में रहता है। तुम तो बड़े हो ही। आत्मा झट जान लेती है, यह बात तो बरोबर है। बेहद के बाप का वर्सा है ही स्वर्ग। बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। बाप कहते हैं पवित्र जरूर बनना है। पवित्रता के कारण ही झगड़े होते है। वह तो बिल्कुल ही जैसे रौरव नर्क में पड़े हैं। और ही जास्ती विकारों में गिरने लग पड़ते हैं इसलिए बाप से प्रीत रख नहीं सकते हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि है ना। बाप आते ही हैं प्रीत बुद्धि बनाने। बहुत हैं जिनकी रिंचक भी प्रीत बुद्धि नहीं हैं। कभी बाप को याद भी नहीं करते हैं। शिवबाबा को जानते ही नहीं हैं, मानते ही नहीं हैं। माया का पूरा ग्रहण लगा हुआ है। याद की यात्रा बिल्कुल ही नहीं। बाप मेहनत तो कराते हैं, यह भी जानते हो सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी यहाँ स्थापन हो रही है। सतयुग-त्रेता में कोई भी धर्म स्थापन होते नहीं। राम कोई धर्म स्थापन नहीं करते। यह तो स्थापना करने वाले बाप द्वारा यह बनते हैं। और धर्म स्थापक और बाप के धर्म स्थापना में रात-दिन का फर्क है। बाप आते ही हैं संगम पर जब कि दुनिया को बदलना है।

शिवबाबा याद है? स्वर्ग की बादशाही याद है? यहाँ जब बैठते हो तो दिमाग में आना चाहिए- हम बेहद के बाप के बच्चे हैं और नित्य बाप को याद करते हैं। याद करने बिगर हम वर्सा ले नहीं सकते। काहे का वर्सा? पवित्रता का। तो उसके लिए ऐसा पुरूषार्थ करना चाहिए। कभी भी कोई विकार की बात हमारे आगे आ नहीं सकती। सिर्फ विकार की भी बात नहीं। एक भूत नहीं परन्तु कोई भी भूत आ नहीं सकता। ऐसा शुद्ध अहंकार रहना चाहिए। बहुत ऊंच ते ऊंच भगवान के हम बच्चे भी ऊंच ते ऊंच ठहरे ना।

- डिससर्विस करने वाले थोड़ेही दिल पर चढ़ते। बाप पहली-पहली मुख्य बात समझाते हैं अपने को आत्मा निश्चय करो तब बाप की याद ठहरेगी। देह- अभिमान होगा तो बाप की याद ठहरेगी नहीं। लौकिक सम्बन्धियों तरफ, धन्धे धोरी तरफ बुद्धि चली जायेगी। देही- अभिमानी होने से पारलौकिक बाप ही याद आयेगा। बाप को तो बहुत प्यार से याद करना चाहिए। अपने को आत्मा समझना-इसमें मेहनत है। एकान्त चाहिए। 7 रोज की भट्ठी का कोर्स बहुत कड़ा है। कोई की याद न आये। किसको पत्र भी नहीं लिख सकते। यह भट्ठी तुम्हारी शुरू की थी। यहाँ तो सबको रख नहीं सकते इसलिए कहा जाता है घर में रहकर प्रैक्टिस करो। भक्त लोग भी भक्ति के लिए अलग कोठी बना देते हैं। अन्दर कोठरी में बैठ माला सिमरते हैं, तो इस याद की यात्रा में भी एकान्त चाहिए। एक बाप को ही याद करना है। इसमें कुछ जबान चलाने की भी बात नहीं है। इस याद के अभ्यास में फुर्सत चाहिए।

- ब्रह्मा ने तुमको एडाप्ट किया है। हर एक बात अच्छी रीति समझने की है। बाप रोज-रोज बच्चों को समझाते हैं, कहते हैं बाबा याद नहीं रहती। बाप कहते हैं इसमें थोड़ा समय निकालना चाहिए। कोई- कोई ऐसे होते हैं जो बिल्कुल समय दे नहीं सकते। बुद्धि में काम बहुत रहता है। फिर याद की यात्रा कैसे हो। बाप समझाते हैं मूल बात ही यह है- अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम पावन बन जाएंगे। मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा का बच्चा हूँ-यह मनमनाभव हुआ ना। इसमें मेहनत चाहिए।

- तो बाप इतनी बाते समझाते हैं फिर भी कहते हैं - मेरे मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, अपने को आत्मा समझो। सिमर-सिमर सुख पाओ। यहाँ तो दु :खधाम है। बाप को और वर्से को याद करो। याद करते-करते अथाह सुख पाएंगे। कल-क्लेष, बीमारी आदि जो भी हैं सब छूट जायेंगे। तुम 21 जन्मों के लिए निरोगी बन जाते हो। कल-क्लेष मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पद पाओ।

गाते हैं परन्तु एक्ट में नहीं आते हैं। तुमको बाप प्रैक्टिकल में समझाते हैं-बाप को सिमरो तो तुम्हारी सब मनोकामनायें पूरी हो जायेगी, सुखी हो जाएंगे। मोचरा खाकर मानी टुकड़ खाना (सजा खाकर रोटी का टुकड़ा खाना) अच्छा नहीं हैं। सबको ताजी रोटी पसन्द आती है। आजकल तो तेल ही चलता है। वहाँ तो घी की नदियां बहती हैं। तो बच्चों को बाप का सिमरण करना है। बाबा ऐसे भी नहीं कहते यहाँ बैठकर बाप को याद करो। नहीं, चलते फिरते, घूमते शिवबाबा को याद करना है। नौकरी आदि भी करनी हैं। बाप की याद बुद्धि में रहनी चाहिए। लौकिक बाप के बच्चे नौकरी आदि करते हैं तो याद रहता ही है ना। कोई भी पूछेगा तो झट बताएंगे हम किसके बच्चे हैं। बुद्धि में बाप की प्रापर्टी भी याद रहती है। तुम भी बाप के बच्चे बने हो तो प्रापर्टी भी याद है। बाप को भी याद करना है और कोई से सम्बन्ध नहीं। आत्मा में ही सारा पार्ट नूँधा हुआ है जो इमर्ज होता है। इस ब्राह्मण कुल में तुम्हारा जो कल्प-कल्प पार्ट चला है वही इमर्ज होता रहता है। बाप समझाते है खाना बनाओ, मिठाई बनाओ, शिवबाबा को याद करते रहो। शिवबाबा को याद कर बनायेंगे तो मिठाई खाने वाले का भी कल्याण होगा। कहाँ साक्षात्कार भी हो सकता है। ब्रह्मा का भी साक्षात्कार हो सकता है। शुद्ध अन्न पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिव का साक्षात्कार कर सकते हैं। ब्रह्मा है यहाँ। ब्रह्माकुमार- कुमारियों का नाम तो होता है ना। बहुतों को साक्षात्कार होते रहेंगे क्योंकि बाप को याद करते हो ना। बाप युक्तियां तो बहुत ही बताते हैं। वह मुख से राम-राम बोलते हैं, तुमको मुख से कुछ बोलना नहीं है। जैसे वह लोग समझते हैं गुरूनानक को भोग लगा रहे हैं, तुम भी समझते हो हम शिवबाबा को भोग लगाने के लिए बनाते हैं। शिवबाबा को याद करते बनायेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोजन में ताकत हो जाती है इसलिए बाबा भोजन बनाने वालों को भी कहते हैं शिवबाबा को याद कर बनाते हो? लिखा हुआ भी है शिवबाबा याद है? याद में रहकर बनाएंगे तो खाने वालों को भी ताकत मिलेगी, हृदय शुद्ध होगा। ब्रह्मा भोजन का गायन भी है ना। ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन देवतायें भी पसन्द करते हैं। यह भी शास्त्रों में है। ब्राह्मणों का भोजन बनाया हुआ खाने से बुद्धि शुद्ध हो जाती है,

ताकत रहती है। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। ब्रह्मा भोजन का जिनको कदर रहता है, थाली धोकर भी पी लेते हैं। बहुत ऊंच समझते हैं। भोजन बिगर तो रह न सके। फैमन में भोजन बिगर मर जाते हैं। आत्मा ही भोजन खाती है, इन आरगन्स द्वारा स्वाद वह लेती है, अच्छा-बुरा आत्मा ने कहा ना। यह बहुत स्वादिष्ट है, ताकत वाला है। आगे चल जैसे तुम उन्नति को पाते रहेंगे वैसे भोजन भी तुमको ऐसा मिलता रहेगा, इसलिए बच्चों को कहते हैं शिवबाबा को याद कर भोजन बनाओ। बाप जो समझाते हैं उसको अमल में लाना चाहिए ना।

अपवित्रता से व्यभिचारी बनते हैं और आयु भी कम होती है। बल भी कम हो जाता है। सतयुग में पवित्र होने कारण अव्यभिचारी हैं। बल भी जास्ती रहता है। बल बिगर सजाई कैसे प्राप्त की? जरूर बाप से उन्होंने आर्शीवाद ली होगी। बाप है सर्वशक्तिमान्। आर्शीवाद कैसे ली होगी? बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो जिन्होंने जास्ती याद किया होगा उन्होंने ही आर्शीवाद ली होगी। आर्शीवाद कोई मांगने की चीज नहीं है। यह तो मेहनत करने की चीज़ है। जितना जास्ती याद करेंगे उतना जास्ती आर्शीवाद मिलेगी अर्थात् ऊंच पद मिलेगा। याद ही नहीं करेंगे तो आर्शीवाद भी नहीं मिलेगी। लौकिक बाप बच्चों को कभी यह नहीं कहते हैं कि मुझे याद करो। वह छोटेपन से आपेही मम्मा-बाबा करते रहते हैं। आरगन्स छोटे हैं, बड़े बच्चे कब ऐसे बाबा-बाबा, मम्मा-मम्मा नहीं कहेंगे। उन्हों की बुद्धि में रहता है - यह हमारे माँ-बाप हैं, जिनसे यह वर्सा मिलना है। कहने की वा याद करने की बात नहीं रहती है। यहाँ तो बाप कहते हैं मुझे और वर्से को याद करो। हद के सम्बन्ध को छोड़ अब बेहद के सम्बन्ध को याद करना है। सब मनुष्य चाहते हैं हमारी गति हो। गति कहा जाता है मुक्तिधाम को। सद्गति कहा जाता है फिर से सुखधाम में आने को। कोई भी पहले आयेगा तो जरूर सुख ही पायेगा। बाप सुख के लिए ही आते हैं।

बेहद के बाप को कोई भी जानते नहीं। बाप को भूलना - यह भी ड्रामा में नूँध है। बेहद का बाप ऊंच ते ऊंच है, वह कोई हद का वर्सा तो नहीं देगा ना। लौकिक बाप होते भी बेहद के बाप को सब याद करते हैं। सतयुग में उनको कोई याद नहीं करते क्योंकि बेहद सुख का वर्सा मिला हुआ है। अभी तुम बाप को याद करते हो। आत्मा ही याद करती है फिर आत्मायें अपने को और अपने बाप को, ड्रामा को भूल जाती हैं। माया का परछाया पड़ जाता है। सतोप्रधान बुद्धि को फिर तमोप्रधान जरूर होना है। कोई कहते हैं कोशिश बहुत करते हैं परन्तु याद ठहरती नहीं है। इसमें बाप अथवा टीचर क्या करे, कोई पढ़ेंगे नहीं तो टीचर क्या करे। टीचर आर्शीवाद करे फिर सब पास हो जायें। पढ़ाई का फर्क तो बहुत रहता है। यह है बिल्कुल नई पढ़ाई। यहाँ तुम्हारे पास अक्सर करके गरीब दु:खी ही आयेंगे साहूकार नहीं आयेंगे। दु:खी हैं तब आते हैं। साहूकार समझते हैं हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। तकदीर में नहीं है, जिनकी तकदीर में है, उनको झट निश्चय बैठ जाता है। निश्चय और संशय में देरी नहीं लगती है। माया झट भुला देती है। टाइम तो लगता है ना। इसमें मूँझने की दरकार नहीं है। अपने ऊपर रहम करना है। श्रीमत तो मिलती रहती है। कितना सहज बाप कहते हैं सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो।

तुम जानते हो हम जाते हैं शिवबाबा के पास। दुनिया के मनुष्य तो समझते हैं शिव ऊपर में रहते हैं। वह जब याद करते हैं तो आंख खोलकर नहीं बैठते। वह आंख बन्द कर ध्यान में बैठते हैं। शिवलिंग जो देखा हुआ होता है। भल शिव के मन्दिर में जायेंगे तो भी शिव को याद करेंगे तो ऊपर में देखेंगे वा मन्दिर याद आयेगा। कई फिर आंखें बन्द कर बैठते हैं। समझते हैं दृष्टि कहाँ भी नाम-रूप में अगर जायेगी तो हमारी साधना टूट जायेगी। अभी तुम बच्चे जानते हो हम भल शिवबाबा को याद करते थे। कोई कृष्ण को याद करते, कोई राम को याद करते, कोई अपने गुरू को याद करते, गुरू का भी छोटा लॉकेट बनाकर पहनते हैं। गीता का भी इतना छोटा लॉकेट बनाकर पहनते हैं। भक्ति मार्ग में तो सब ऐसे ही हैं। घर बैठे भी याद करते हैं। याद में यात्रा करने भी जाते हैं। चित्र तो घर में रखकर पूजा कर सकते हैं परन्तु यह भी भक्ति

की रस्म पड़ी हुई है। जन्म-जन्मान्तर यात्राओं पर जाते हैं। चारों धाम की यात्रा करते हैं। चार धाम क्यों कहते हैं? वेस्ट, ईस्ट, नार्थ, साउथ... चारों का चक्र लगाते हैं। भक्ति मार्ग जब शुरू होता है तो पहले एक की भक्ति की जाती है, उसको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति। सतोप्रधान थे, अभी तो इस समय हैं तमोप्रधान। भक्ति भी व्यभिचारी, अनेकों को याद करते रहते हैं। तमोप्रधान 5 तत्वों का बना हुआ शरीर, उनको भी पूजते हैं। तो गोया तमोप्रधान भूतों की पूजा करते हैं, परन्तु इन बातों को कोई समझते थोड़ेही हैं। भल यहाँ बैठे हैं परन्तु बुद्धियोग कहाँ भटकता रहता है। यहाँ तो तुम बच्चों को आंख बन्द कर शिवबाबा को याद नहीं करना है। जानते हो बाप बहुत- बहुत दूरदेश का रहने वाला है। वह आकर बच्चों को श्रीमत देते हैं। श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ देवता बनेंगे।

यह लड़ाई जो अब लगती है वह फिर 5 हजार वर्ष के बाद लगेगी। यह सब बातें बुढ़ियायें तो समझ न सकें। यह फिर ब्राह्मणियां का काम है उन्हों को समझाना। उनके लिए तो एक अक्षर ही काफी है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम आत्मा परमधाम में रहने वाली हो। फिर यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाती हो। आत्मा यहाँ दु :ख और सुख का पार्ट बजाती है। मूल बात बाप कहते हैं - मुझे याद करो और सुखधाम को याद करो। बाप को याद करने से पाप कट जायेंगे और फिर स्वर्ग में आ जाएंगे। अब जितना जो याद करेंगे उतना पाप कटेंगे। बुढ़ियायें तो हिरी हुई हैं, सतसंगो में जाकर कथा सुनती हैं। उन्हों को फिर घड़ी-घड़ी बाप की याद दिलानी है। स्कूल में तो पढ़ाई होती, कथा नहीं सुनी जाती। भक्तिमार्ग में तो तुमने ढेर कथायें सुनी हैं परन्तु उनसे कुछ भी फायदा नहीं होता है। छी-छी दुनिया से नई दुनिया में तो जा न सकें। मनुष्य न तो रचयिता बाप को, न रचना को जानते हैं।

तुम हो नई दुनिया स्वर्ग बनाने वाले। तुम बहुत अच्छे कारीगर हो। अपने लिए स्वर्ग बना रहे हो। कितने बड़े अच्छे कारीगर हो, याद की यात्रा से नई दुनिया स्वर्ग बनाते हो। थोड़ा भी याद करो तो स्वर्ग में आ जाएंगे। तुम गुप्त वेष में अपना स्वर्ग बना रहे हो। जानते हो हम इस शरीर को छोड़ फिर जाकर स्वर्ग में निवास करेंगे तो ऐसे बेहद के बाप को भूलना नहीं चाहिए। अभी तुम स्वर्ग में जाने के लिए पढ़ रहे हो। अपनी राजधानी स्थापन करने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। यह रावण की राजधानी खलास हो जानी है। तो अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। हमने यह स्वर्ग तो अनेक बार बनाया है, राजाई ली फिर गँवाई है। यह भी याद करो तो बहुत अच्छा। हम स्वर्ग के मालिक थे, बाप ने हमको ऐसा बनाया था। बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म होंगे। कितना सहज रीति तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। पुरानी दुनिया के विनाश के लिए कितनी चीजें निकलती रहती हैं। कुदरती आपदायें, मूसल (मिसाइल्स) आदि द्वारा सारी पुरानी दुनिया खत्म होगी। अब बाप आये हैं तुमको श्रेष्ठ मत देने, श्रेष्ठ स्वर्ग की स्थापना करने। अनेक बार तुमने यह स्थापना की है तो बुद्धि में याद रखना चाहिए। अनेक बार राज्य लिया फिर गँवाया है। यह बुद्धि में चलता रहे और एक-दो को भी यह बातें सुनाओ। दुनियावी बातों में समय नहीं गँवाना चाहिए। बाप को याद करो, स्वदर्शन चक्रधारी बनो। यहाँ बच्चों को अच्छी रीति सुनकर फिर बहुत उगारना है, सिमरण करना है, बाबा ने क्या सुनाया। शिवबाबा और वर्से को तो जरूर याद करना चाहिए। बाप हथेली पर बहिश्त ले आये हैं, पवित्र भी बनना हैं। पवित्र नहीं बनेंगे तो सजा खानी पड़ेगी। पद भी बहुत छोटा पा लेंगे। स्वर्ग में ऊँच पद पाना है तो अच्छी रीति धारणा करो। बाप रास्ता तो बहुत सहज बताते हैं।

तुम आते ही हो यह लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए। स्टूडेंट टीचर से योग रखते हैं क्योंकि समझते हैं इन द्वारा हम पढ़कर फलाना बनेंगे। यहाँ तुम योग लगाते हो परमपिता परमात्मा शिव से, जो तुम्हे देवता बनाते हैं। कहते हैं मुझ अपने बाप को याद करो, जिसके तुम सालिग्राम

बच्चे हो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो वही नॉलेजफुल हैं। बाप तुम्हें सच्ची गीता सुनाते हैं परन्तु खुद पढ़ा हुआ नहीं है। कहते हैं मैं किसका बच्चा नहीं, कोई से पढ़ा हुआ नहीं हूँ। मेरा कोई गुरू नहीं। मैं फिर तुम बच्चों का बाप, टीचर, गुरू हूँ।

अब रूहानी यात्रा को तो बच्चे अच्छी तरह से समझते हैं। कोई भी हठयोग की यात्रा होती नहीं। यह है याद। याद के लिए कोई भी तकलीफ की बात नहीं है। बाप को याद करना-इसमें कोई तकलीफ नहीं है। यह क्लास है इसलिए सिर्फ कायदेसिर बैठना होता है। तुम बाप के बच्चे बने हो, बच्चों की पालना हो रही है। कौन-सी पालना? अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना मिल रहा है। बाप को याद करने में कोई तकलीफ नहीं है। सिर्फ माया बुद्धि का योग तोड़ देती है। बाकी बैठो भल कैसे भी, उनसे कोई याद का तैलुक नहीं। बहुत बच्चे हठयोग से 3 - 4 घण्टे बैठते हैं। सारी रात भी बैठ जाते हैं। आगे तुम्हारी तो थी भट्ठी, वह बात और थी, वहाँ तुमको धन्धाधोरी तो था नहीं इसलिए यह सिखाया जाता था। अब बाप कहते हैं तुम गृहस्थ व्यवहार में रहो। धन्धाधोरी भी भल करो। कुछ भी काम काज करते बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं कि अभी निरन्तर तुम याद कर सकते हो। नहीं। इस अवस्था में टाइम लगता है। अभी निरन्तर याद ठहर जाए फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाए। बाप समझाते हैं-बच्चे, ड्रामा के प्लैन अनुसार अब बाकी थोड़ा समय है। सारा हिसाब भी बुद्धि में रहता है। कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत ही था। उनको स्वर्ग कहा जाता था। अभी उन्हों के 2 हजार वर्ष पूरे होते हैं, 5000 वर्ष का हिसाब हो जाता है।

अपने से पूछो इतनी अथाह खुशी है? बाप को इतना याद करते हैं? चक्र की भी सारी नॉलेज बुद्धि में है, तो इतनी खुशी रहनी चाहिए। बाप कहते हैं मुझे याद करो और बिल्कुल खुशी में रहो। तुमको पढ़ाने वाला देखो कौन है! जब सबको मालूम पड़ेगा तो सबका मुँह ही फीका हो

जायेगा। परन्तु अभी उन्हों के समझने में थोड़ी देरी है। अभी देवता धर्म के इतने मेम्बर्स तो बने नहीं हैं। सारी राजाई स्थापन हुई नहीं है। कितने ढेर मनुष्यों को बाप का पैगाम देना है! बेहद का बाप फिर से हमको स्वर्ग की बादशाही दे रहे हैं। तुम भी उस बाप को याद करो। बेहद का बाप तो जरूर बेहद का सुख देंगे ना। बच्चों के अन्दर में तो अथाह ज्ञान की खुशी होनी चाहिए और जितना बाप को याद करते रहेंगे तो आत्मा पवित्र बनती जायेगी।

सारी पढ़ाई का तन्त इसमें है। बैजेस तो बहुत अच्छे- अच्छे ढेर बनाने चाहिए जो किसको सौगात भी दे सके। कोई को भी समझाना तो बहुत सहज है। सिर्फ शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा से ही वर्सा मिलता है तो बाप और बाप का वर्सा स्वर्ग की बादशाही, कृष्णपुरी को याद करो। तुम बी. के. की अथाह महिमा निकलने वाली है। परन्तु एक्टिविटी देखते हैं तो जैसे एकदम बेसमझी की। कोई रिगार्ड ही नहीं, पूरी पहचान नहीं। बुद्धि बाहर भटकती रहती है। बाप को याद करें तो मदद भी मिले। बाप को याद करते नहीं तो गोया वह पतित हैं। तुम बनते हो पावन। जो बाप को याद नहीं करते हैं तो उन्हों की बुद्धि जरूर कहाँ न कहाँ भटकती रहती है। तो उनके साथ अंग- अंग से नहीं मिलना चाहिए क्योंकि याद में न रहने के कारण वह वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। पवित्र और अपवित्र इकट्ठे हो न सके इसलिए बाप पुरानी सृष्टि को खलास कर देते हैं। दिन-प्रतिदिन कायदे भी सख्त निकलते जायेंगे। बाप को याद नहीं करते हैं तो फायदे के बदले और ही नुकसान करते हैं। पवित्रता का सारा मदार याद पर है। एक जगह बैठने की बात नहीं है। यहाँ इकट्ठा बैठने से तो अलग- अलग पहाड़ी पर जाकर बैठे वह अच्छा है। जो याद नहीं करते हैं वह हैं पतित। उनका तो संग भी नहीं करना चाहिए। चलन से भी मालूम पडता है। याद बिगर पावन तो बन न सके। हर एक के ऊपर पापों का बोझा बहुत है-जन्म-जन्मान्तर का। वह बिगर याद की यात्रा निकले कैसे। वह गोया पतित ही हैं।

बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों के लिए सारी पतित दुनिया को खलास कर देता हूँ। उनका संग भी न हो। परन्तु इतनी भी बुद्धि नहीं कि किसके साथ संग करना चाहिए। तुम्हारा प्यार पावन का पावन के साथ होना चाहिए। यह भी बुद्धि चाहिए ना। स्वीट बाप और स्वीट राजधानी के सिवाए और कोई याद न आये। इतना सब त्याग करना कोई मासी का घर नहीं है। बाप को तो बच्चों पर अथाह प्यार है। बच्चे पावन बन जाओ तो तुम पावन दुनिया के मालिक बन जायेंगे। हम तुम्हारे लिए पावन दुनिया की स्थापना कर रहे हैं।

तुम सतयुग में खुशी में डास करते हो। यहाँ की कोई भी वस्तु से दिल नहीं लगानी है। इनको तो देखते हुए देखना नहीं है, आखें खुली होते हुए भी जैसे कि नींद हो, परन्तु वह हिम्मत, वह अवस्था चाहिए। यह तो निश्चय है कि यह पुरानी दुनिया होगी ही नहीं। इतना खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। चुटकी काटनी चाहिए- अरे, हम शिवबाबा को याद करेंगे तो विश्व की बादशाही मिलेगी। हठयोग से भी बैठना नहीं है। खाते-पीते, काम करते बाप को याद करो। यह भी जानते हो राजधानी स्थापन हो रही है। बाप थोड़ेही कहेंगे दासी बने। बाप तो कहेंगे पुरूषार्थ करो पावन बनने का। बाप पावन बनाने का पुरूषार्थ कराते हैं तुम फिर पतित बनते हो, कितने झूठ पाप करते हो। हमेशा शिवबाबा को याद करो तो पाप सब स्वाहा हो जायें। यह बाबा का यज्ञ है ना। बड़ा भारी यज्ञ है। वह लोग यज्ञ रचते हैं-लाखों रूपया खर्च करते हैं। यहाँ तो तुम जानते हो सारी दुनिया इसमें स्वाहा हो जानी है। बाहर से आवाज होगा, भारत में भी फैलेगा। एक तो बाप के साथ बुद्धि का योग हो तो पाप कटें और फिर ऊँच पद भी मिले। बाप का तो फर्ज है बच्चों को पुरूषार्थ कराना। लौकिक बाप तो बच्चों की सेवा करते हैं, सेवा लेते भी हैं। यह बाप तो कहते हैं मैं तुम बच्चों को 21 जन्मों का वर्सा देता हूँ, तो ऐसे बाप को याद जरूर करना है, जिससे पाप कट जाएं। बाकी पानी से थोड़ेही पाप कटते हैं। पानी तो जहाँ-तहाँ है। विलायत में भी नदियाँ हैं तो क्या यहाँ की नदियाँ पावन बनाने वाली,

विलायत की नदियाँ पतित बनाने वाली हैं क्या? कुछ भी मनुष्यों में समझ नहीं है। बाप को तो तरस पड़ता है ना। बाप समझाते हैं - बच्चे, गफलत मत करो। बाप इतना गुल-गुल बनाते हैं तो मेहनत करनी चाहिए ना। अपने पर रहम करना है।

हर एक अपने अन्दर से पूछे हम कहाँ तक बाप को याद करते हैं? कहाँ तक सतोप्रधान बने हैं? क्या पुरूषार्थ कर रहे हैं? सतोप्रधान तब बनेंगे जब पिछाड़ी में अन्त आयेगा। उसका भी साक्षात्कार होता रहेगा। कोई जो कुछ करता है सो अपने लिए ही करता है। बाप भी कोई मेहर नहीं करते हैं। बाबा मेंहर करते हैं जो बच्चों को डायरेक्यान देते हैं, उनके ही कल्याण अर्थ।बाप तो है ही कल्याणकारी। कई बच्चे उल्टे ज्ञान में आ जाते हैं। बाबा फील करते हैं-देह-अभिमानी मगरूर होते हैं। देही- अभिमानी बड़े शान्त रहेंगे। उनको कभी उल्टे-सुल्टे ख्याल नहीं आते हैं। बाप तो हर प्रकार से पुरूषार्थ कराते रहते हैं। माया भी बड़ी जबरदस्त है अच्छे-अच्छे बच्चों पर भी वार कर लेती है, इसलिए ब्राह्मणों की माला नहीं बन सकती। आज बहुत अच्छी रीति याद करते हैं, कल देह अहंकार में ऐसे आ जाते हैं जैसे सांड़े (गिरगिट)। सांड़े को अहंकार बहुत होता है। इसमें एक कहावत भी है-सुरमण्डल के साज से देह- अभिमानी सांड़े क्या जाने। देह- अभिमान बहुत खोटा है। बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। शिवबाबा तो कहते हैं आई एम मोस्ट ओबीडियंट सर्वेंट। ऐसे नहीं, अपने को कहना सर्वेंट और नवाबी चलाते रहे। बाप कहते हैं-मीठे-मीठे बच्चों, सतोप्रधान जरूर बनना है। यह तो बहुत सहज है, इसमें कोई चूँ-चाँ नहीं। मुख से कुछ बोलना नहीं है। कहाँ भी जाओ, अन्दर में याद करना है। ऐसे नहीं, यहाँ बैठते हैं तो बाबा मदद करते हैं। बाप तो आये ही हैं मदद करने। बाप को तो यह ख्याल रहता है-बच्चे, कहाँ कोई गफलत न करे। माया यहाँ ही घूसा मार देती है। देह- अभिमान बहुत-बहुत खराब है। देह- अभिमान में आने से बिल्कुल ही पट में आकर पड़े हैं। बाबा कहते हैं यहाँ आकर बैठते हो तो भी मोस्ट बिलवेड बाप को याद करो। बाप कहते हैं मैं ही पतित-पावन हूँ,

मेरे को याद करने से, इस योग अग्नि से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे। बच्चों की अभी वह अवस्था आई नहीं है, जो कोई को भी अच्छी रीति समझा सके। ज्ञान तलवार में भी योग का जौहर चाहिए। नहीं तो तलवार कोई काम की नहीं रहती। मूल बात है ही याद की यात्रा। बहुत बच्चे उल्टे-सुल्टे धन्धे में लगे रहते हैं। याद की यात्रा और पढ़ाई करते नहीं इसलिए इसमें टाइम नहीं मिलता | बाप कहते हैं ऐसी मेहनत नहीं करो जो धन्धे धोरी के पिछाड़ी अपना पद गंवा दो। अपना भविष्य तो बनाना है ना। परन्तु सतोप्रधान बनना है। इसमें ही बहुत मेहनत है। बहुत बड़े-बड़े म्युजियम आदि सम्भालने वाले हैं परन्तु याद की यात्रा में नहीं रहते। बाबा ने समझाया है याद की यात्रा में गरीब, बांधेलियां ज्यादा रहती हैं। घड़ी-घड़ी शिवबाबा को याद करते रहते हैं। शिवबाबा हमारे यह बन्धन खलास करो। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं, यह भी गायन है। तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। सच्चे-सच्चे स्टूडेंट बनो। अच्छे स्टूडेंट जो होते हैं वह एकान्त में बगीचे में जाकर पढ़ते हैं। तुमको भी बाप कहते हैं भल कहाँ भी चक्र लगाने जाओ अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करो। याद की यात्रा का शौक रखो। उस धन कमाने की भेंट में यह अविनाशी धन तो बहुत-बहुत ऊंचा है। वह विनाशी धन तो फिर भी खाक हो जाना हैं। बाबा जानते हैं-बच्चे सर्विस पूरी नहीं करते, याद में मुश्किल रहते हैं। सच्ची सर्विस जो करनी चाहिए वह नहीं करते। बाकी स्थूल सर्विस में ध्यान चला जाता है। भल ड्रामा अनुसार होता है परन्तु बाप फिर भी पुरूषार्थ तो करायेंगे ना। बाप कहते हैं कोई भी काम करो-कपड़े सिलते हो, बाप को याद करो। याद में ही माया विघ्न डालती है। बाबा ने समझाया है रूसतम से माया भी रूसतम होकर लड़ती है। बाबा अपना भी बतलाते हैं। मैं रूसतम हूँ, जानता हूँ मैं कोर टू प्रिन्स बनने वाला हूँ तो भी माया सामना करती है। माया किसको भी छोड़ती नहीं है। पहलवानों से तो और ही लड़ती हैं। कई बच्चे अपने देह के अहंकार में बहुत रहते हैं। बाप कितना निरहंकारी रहते हैं। कहते हैं मैं भी तुम बच्चों को नमस्ते करने वाला सर्वेंट हूँ। वह तो अपने को बहुत ऊंच समझते हैं। यह देह- अहंकार सब तोड़ना है। बहुतों में अहंकार का भूत बैठा हुआ है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। यहाँ तो

बहुत अच्छा चांस है। घूमने-फिरने का भी अच्छा है। फुर्सत भी है, भल चक्र लगाओ फिर एक-दो से पूछो कितना समय याद में रहे, और कोई तरफ बुद्धि तो नहीं गई? यह आपस में सेमीनार करना चाहिए। भल फीमेल अलग, मेल अलग हो। फीमेल आगे हो, मेल पिछाड़ी में हो क्योंकि माताओं की सम्भाल करनी है इसलिए माताओं को आगे रखना है। बहुत अच्छी एकान्त है। सन्यासी भी एकान्त में चले जाते हैं। सतोप्रधान सन्यासी जो थे वह बहुत निडर रहते थे। जानवर आदि कोई से डरते नहीं थे। उस नशे में रहते थे। अभी तमोप्रधान बन पड़े हैं। हर एक धर्म जो स्थापन होता है, पहले सतोप्रधान होता है फिर रजो तमो में आते हैं। सन्यासी जो सतोप्रधान थे वह ब्रह्म की मस्ती में मस्त रहते थे। उनमें बड़ी कशिश होती थी। जंगल में भोजन मिलता था। दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान होने से ताकत कम होती जाती है। तो बाबा राय देते हैं - यहाँ बच्चों को अपनी उन्नति के चांस बहुत अच्छे हैं। यहाँ तुम आते ही हो कमाई करने के लिए। बाबा से सिर्फ मिलने से कमाई थोड़ेही होगी। बाप को याद करेंगे तो कमाई होगी। ऐसे मत समझो बाबा आशीर्वाद करेंगे, कुछ भी नहीं। वह साधू लोग आदि आशीर्वाद करते हैं, लेकिन तुमको नीचे गिरना ही है। अब बाप कहते हैं-जिन्न बनकर अपना बुद्धियोग ऊपर लगाओ। जिन्न की कहानी है ना। बोला हमको काम दो। बाप भी कहते हैं-तुमको डायरेक्शन देता हूँ, याद में रहो तो बेड़ा पार हो जायेगा। तुम्हें सतोप्रधान जरूर बनना है। माया कितना भी माथा मारे हम तो श्रेष्ठ बाप को जरूर याद करेंगे। ऐसे अन्दर में बाप की महिमा करते बाप को याद करते रहो। कोई भी मनुष्य को याद न करो। भक्ति मार्ग की जो रस्म हैं वह ज्ञान मार्ग में हो नहीं सकती। बाप शिक्षा देते हैं याद की यात्रा में तीखा जाना है। मूल बात यह हैं। सतोप्रधान बनना है। बाप के डायरेक्यान मिलते हैं-घूमने फिरने जाते हो तो भी याद में रहो। तो घर भी याद रहेगा, राजाई भी याद रहेगी। ऐसे नहीं, याद में बैठे-बैठे गिर पड़ना है। वह तो फिर हठयोग हो जाता है। यह तो सीधी बात है- अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। कई बच्चे बैठे-बैठे गिर पड़ते हैं इसलिए बाबा तो कहते हैं चलते-फिरते, खाते-पीते याद में रहो। ऐसे नहीं, बैठे-बैठे बेहोश हो जाओ। इनसे कोई तुम्हारे पाप नहीं कटेंगे। यह भी माया के बहुत विघ्न

पडते हैं। यह भोग आदि की भी रस्म-रिवाज है, बाकी इनमें कुछ है नहीं। इनमें माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। यह न ज्ञान है, न योग है। साक्षात्कार की कोई दरकार नहीं। बहुतों को साक्षात्कार हुए, वह आज हैं नहीं। माया बड़ी प्रबल है। साक्षात्कार की कभी आश भी नहीं रखनी चाहिए। इसमें तो बाप को याद करना है-सतोप्रधान बनने के लिए। ड्रामा को भी जानते हो, यह अनादि ड्रामा बना हुआ है जो रिपीट होता रहता है, इसे भी समझना है और बाप जो डायरेक्शन देते हैं उस पर भी चलना है। बच्चे जानते हैं-हम फिर से आये हैं राजयोग सीखने। भारत की ही बात है। यही तमोप्रधान बना है फिर इनको ही सतोप्रधान बनना है। बाप भी भारत में ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। यह बड़ा वन्डरफुल खेल है। अब बाप कहते हैं-मीठे-मीठे रूहानी बच्चे, अपने को आत्मा समझो।

तुम क्यों माथा मारते हो-यह करें, वह करें। ड्रामा में नूँध है-जिन्होंने बीज बोया है, वह अभी भी बोयेंगे। यज्ञ का तुम चिंतन नहीं करो। अपना कल्याण करो। अपने को मदद करो। भगवान को तुम मदद करते हो क्या? भगवान से तो तुम लेते हो या देते हो? यह ख्याल भी नहीं आना चाहिए। बाबा तो कहते हैं-लाडले बच्चों, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। अभी तुम संगमयुग पर खड़े हो। संगम पर ही तुम दोनों तरफ देख सकते हो। यहाँ कितने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे। सारा दिन संगम पर खड़े रहना चाहिए। बाबा हमको क्या से क्या बनाते हैं! बाप का पार्ट कितना वंडरफुल है। घूमो फिरो याद की यात्रा में रहो। बहुत बच्चे टाइम वेस्ट करते हैं। याद की यात्रा से ही बेड़ा पार होना है। कल्प पहले भी बच्चों को ऐसे समझाया था। ड्रामा रिपीट होता रहता है। उठते-बैठते सारा कल्प वृक्ष बुद्धि में याद रहे, यह है पढ़ाई। बाकी धन्धा आदि तो भल करो। पढ़ाई के लिए टाइम निकालना चाहिए। स्वीट बाप और स्वर्ग को याद करो | जितना याद करेंगे तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। बस बाबा, अब आपके पास आये कि आये। बाप की याद में फिर श्वांस भी सुखेला

हो जायेगा। ब्रह्म ज्ञानियों के श्वांस भी सुखाले (सुख वाले) हो जाते हैं। ब्रह्म की ही याद में रहते हैं, परन्तु ब्रह्म लोक में कोई जाता नहीं है। आपेही शरीर छोड़ दें - यह हो सकता है। कई फास्ट (उपवास) रखकर शरीर छोड देते हैं, वह दु :खी होकर मरते हैं। बाप तो कहते हैं खाओ पियो बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। मरना तो है ना।

- भल बुद्धि इधर-उधर भागती है तो भी कोशिश करो हम ऐसे बेहद के बाप को क्यों नहीं याद करते हैं जिस याद से ही ऊंच पद मिलता है। कम से कम स्वर्ग में तो जाते हैं। परन्तु स्वर्ग में ऊंच पद पाना है। आगे मीरा के लिए कहा जाता था उसने लोकलाज कुल की मर्यादा छोड़ी। यहाँ तो तुमको सारे विकारी कुल की मर्यादा छोड़नी हैं। बुद्धि से सबका सन्यास करना है। इस विकारी दुनिया का कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। विकर्म करने वाले बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। वह अपनी ही तकदीर को खराब करते हैं। ऐसा कोई बाप थोड़ेही होगा जो बच्चों को किसको तंग करता हुआ पसन्द करेगा वा न पड़ता पसन्द करेगा। तुम बच्चे जानते हो वहाँ ऐसे कोई बच्चे होते नहीं। नाम ही है देवी-देवता। कितना पवित्र नाम है। अपनी जांच करनी है-हमारे में दैवीगुण हैं? सहनशील भी बनना होता है। बुद्धियोग की बात है। यह लड़ाई तो बहुत मीठी है। बाप को याद करने में कोई लड़ाई की बात नहीं है। बाकी हाँ, इसमें माया विघ्न डालती है। उनसे सम्भाल करनी होती है। माया पर विजय तो तुमको ही पानी है। तुम जानते हो कल्प-कल्प हम जो कुछ करते आये हैं, बिल्कुल एक्यूरेट वही पुरूषार्थ चलता है जो कल्प-कल्प चलता आया है। तुम जानते हो अभी हम पदमापदम भाग्यशाली बनते हैं फिर सतयुग में अथाह सुखी रहते हैं।

- तुम बच्चों को याद की यात्रा में बहुत रहना है। यहाँ तुमको मदद अच्छी मिलेगी। एक-दो का बल मिलता है ना। तुम थोड़े बच्चों की ही ताकत काम करती हैं। गोवर्धन पहाड़ दिखाते हैं

ना, अंगुली पर उठाया। तुम गोप-गोपियां हो ना। सतयुगी देवी-देवताओं को गोप-गोपियां नहीं कहा जाता है। अंगुली तुम देते हो। आइरन एज को गोल्डन एज वा नर्क को स्वर्ग बनाने के लिए तुम एक बाप के साथ बुद्धि का योग लगाते हो। योग से ही पवित्र होना है। इन बातों को भूलना नहीं है। यह ताकत तुमको यहाँ मिलती हैं। बाहर में तो आसुरी मनुष्यों का संग रहता है। वहाँ याद में रहना बड़ा मुश्किल है। इतना अडोल वहाँ तुम रह नहीं सकेंगे। संगठन चाहिए ना। यहाँ सब एकरस इकट्ठे बैठते हैं तो मदद मिलेगी। यहाँ धन्धा आदि कुछ भी नहीं रहता है। बुद्धि कहाँ जायेगी! बाहर में रहने से धन्धा घर आदि खींचेगा जरूर। यहाँ तो कुछ है नहीं। यहाँ का वायुमण्डल अच्छा शुद्ध रहता है। ड्रामा अनुसार कितना दूर पहाड़ी पर आकर तुम बैठे हो। याद गार भी सामने एक्यूरेट खड़ा है। ऊपर में स्वर्ग दिखाया है। नहीं तो कहाँ बनावे। तो बाबा कहते हैं यहाँ आकर बैठते हो तो अपनी जांच रखो-हम बाप की याद में बैठते हैं? स्वदर्शन चक्र भी फिरता रहे।

स्प्रीचुअल नॉलेज, इसमें कोई भी किताब आदि की दरकार नहीं। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। पावन बनना है। बाप को याद करते- करते अन्त मती सो गति हो जायेगी। यह है याद की यात्रा। यात्रा अक्षर अच्छा है। वह है जिस्मानी यात्रायें, यह है रूहानी। उसमें तो पैदल जाना पड़ता है, हाथ-पांव चलाते हैं, इसमें कुछ नहीं। सिर्फ याद करना है। भल कहाँ भी घूमो फिरो, उठो बैठो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। डिफीकल्ट बात नहीं है, सिर्फ याद करना है। यह तो रीयल्टी है ना। आगे तुम उल्टे चल रहे थे। अपने को आत्मा के बदले शरीर समझना, इसको कहा जाता है उल्टा लटकना। अपने को आत्मा समझना - यह है सुल्टा। अल्लाह जब आते हैं तब आकर पावन बनाते हैं। अल्लाह की पावन दुनिया है, रावण की पतित दुनिया है। देह- अभिमान में सभी उल्टे हो गये हैं। अब एक ही बार देही- अभिमानी बनना है। तो तुम अल्लाह के बच्चे हो। अल्लाह हूँ, नहीं कहेंगे।

अंगुली से हमेशा ऊपर की तरफ ईशारा करते हैं, तो सिद्ध होता है अल्लाह वह है। तो यहाँ जरूर दूसरी चीज है। हम उस अल्लाह बाप का बच्चा हूँ। हम भाई- भाई हैं। अल्लाह हूँ, कहने से फिर उल्टा हो जायेगा कि हम सब बाप हैं। परन्तु नहीं, बाप एक है। उनको याद करना है। अल्लाह एवर प्योर है। अल्लाह खुद बैठ पढ़ाते हैं। थोड़ी-सी बात में मनुष्य कितना मूँझते हैं। शिव जयन्ती भी मनाते हैं ना।

बाप समझाते हैं इस समय जो भी मनुष्यमात्र हैं सब दोजक में हैं। यह सब समझने की बातें हैं कि आत्मा कितनी छोटी है। इतनी छोटी आत्मा में सारी नॉलेज ठहरती नहीं है या भुला देते हो? विश्व की सर्व आत्माओं का बाप तुम्हारे सम्मुख बैठ तुमको पढ़ा रहे हैं | सारा दिन बुद्धि में यह याद रहता है कि बरोबर बाबा हमारे साथ यहाँ हैं? कितना समय बैठता है? घण्टा, आधा घण्टा या सारा दिन? यह दिमाग में रखने की भी ताकत चाहिए। ईश्वर परमपिता परमात्मा तुमको पढ़ाते हैं। बाहर में जब अपने घरों में रहते हो तो वहाँ साथ नहीं है। यहाँ प्रैक्टिकल में तुम्हारे साथ हैं।

सतयुग में यह कभी कोई की ग्लानि थोड़ेही करते हैं। वहाँ ग्लानि के छी-छी ख्यालात वाले होंगे ही नहीं। बाप तो बच्चों को कितना जोर से उठाते हैं। तुम बाप को याद करो तो पाप कट जाएंगे। तुम हाथ उठाते हो परन्तु तुम्हारी ऐसी चलन है? बाप बैठ पढ़ाते हैं, यह दिमाग में जोर से बैठता है? बाबा जानते हैं बहुतों का नशा सोडावाटर हो जाता है। सबको इतनी खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। जब बुद्धि में बैठे तब नशा चढ़े। विश्व का मालिक बनाने के लिए बाप ही पढ़ाते हैं।

तुम बच्चों को याद है- अभी हम जाते हैं सुखधाम। जैसे कोई भी विलायत में जाते है तो 8-10 वर्ष जाकर रहते है ना। फिर आते हैं भारत में। भारत तो गरीब है। विलायत वालों को यहाँ सुख नहीं आयेगा। वैसे तुम बच्चों को भी यहाँ सुख नहीं है। तुम जानते हो हम बहुत ऊँची पढ़ाई पढ़ रहे हैं, जिससे हम स्वर्ग के मालिक देवता बनते है। वहाँ कितने सुख होंगे। उस सुख को सभी याद करते है। यह गाँव (कलियुग) तो याद भी नहीं आ सकता, इनमें तो अथाह दु:ख हैं। इस रावण राज्य, पतित दुनिया में आज अपरमअपार दुःख है कल फिर अपरमअपार सुख होंगे। हम योगबल से अथाह सुख वाली दुनिया स्थापन कर रहे हैं। यह राजयोग है ना। बाप खुद कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। तो ऐसा बनाने वाले टीचर को याद करना चाहिए ना। टीचर बिगर बैरिस्टर, इंजीनियर आदि थोड़ेही बन सकते हैं। यह फिर है नई बात। आत्माओं को योग लगाना है परमात्मा बाप के साथ, जिससे ही बहुत समय अलग रहे हैं। बहुकाल क्या? वह भी बाप आपेही समझाते रहते हैं। मनुष्य तो लाखों वर्ष आयु कह देते हैं। बाप कहते हैं-नहीं, यह तो हर 5 हजार वर्ष बाद तुम जो पहले-पहले बिछुड़े हो वही आकर बाप से मिलते हो। तुमको ही पुरूषार्थ करना है। मीठे-मीठे बच्चों को कोई तकलीफ नहीं देते हैं, सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझो। जीव आत्मा है ना। आत्मा अविनाशी है, जीव विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है, आत्मा कभी पुरानी नहीं होती है। वन्डर है ना। पढ़ाने वाला भी वन्डरफुल, पढ़ाई भी वन्डरफुल है। किसको भी याद नहीं, भूल जाती है। आगे जन्म में क्या पढ़ते थे, किसको याद है क्या? इस जन्म में तुम पढते हो, रिजल्ट नई दुनिया में मिलती है। यह सिर्फ तुम बच्चों को पता है। यह याद रहना चाहिए- अभी यह पुरूषोत्तम संगमयुग है, हम नई दुनिया में जाने वाले हैं। यह याद रहे तो भी तुमको बाप की याद रहेगी। याद के लिए बाप अनेक उपाय बताते हैं। बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। तीनों रूप में याद करो। कितनी युक्तियाँ दे रहे हैं याद करने की। परन्तु माया भुला देती है। बाप जो नई दुनिया स्थापन करते हैं, बाप ने ही बताया है यह पुरूषोत्तम संगमयुग है, यह याद

करो फिर भी याद क्यों नहीं कर सकते हो! युक्तियाँ बतलाते हैं याद की। फिर साथ-साथ कहते भी हैं माया बड़ी दुश्तर है। घडी-घड़ी तुमको भुलायेगी और देह- अभिमानी बना देगी इसलिए जितना हो सके याद करते रहो। उठते-बैठते, चलते-फिरते देह के बदले अपने को देही समझो। यह है मेहनत। नॉलेज तो बहुत सहज है। सब बच्चे कहते हैं याद ठहरती नहीं। तुम बाप को याद करते हो, माया फिर अपनी तरफ खींच लेती है। इस पर ही यह खेल बना हुआ है। तुम भी समझते हो हमारा बुद्धियोग जो बाप के साथ और पढाई की सबजेक्ट में होना चाहिए, वह नहीं है, भूल जाते हैं। परन्तु तुम्हें भूलना नहीं चाहिए। वास्तव में इन चित्रों की भी दरकार नहीं है। परन्तु पढ़ाने समय कुछ तो आगे चाहिए ना।

सहज राजयोग सिखलाने बाप आये हैं। कितना अटेन्शन रहता है। तुम भी अटेन्शन रखते हो कि स्वर्ग स्थापन हो जाए। आत्मा को याद तो आता है ना। बाप कहते हैं यह नॉलेज जो मैं अभी तुमको देता हूँ फिर मैं ही आकर दूँगा। यह नई दुनिया के लिए नया ज्ञान है। यह ज्ञान बुद्धि में रहने से खुशी बहुत होती है। बाकी थोडा टाइम है। अब चलना है। एक तरफ खुशी होती है दूसरे तरफ फिर फील भी होता है। अरे, ऐसा मीठा बाबा हम फिर कल्प बाद देखेगे। बाप ही बच्चों को इतना सुख देते हैं ना। बाप आते ही हैं - शान्तिधाम-सुखधाम में ले जाने। तुम शान्तिधाम-सुखधाम को याद करो तो बाप भी याद आयेगा। इस दुःखधाम को भूल जाओ। बेहद का बाप बेहद की बात सुनाते हैं। पुरानी दुनिया से तुम्हारा ममत्व निकलता जायेगा तो खुशी भी होगी। तुम रिटर्न में फिर सुखधाम में जाते हो। सतोप्रधान बनते जायेंगे। कल्प- कल्प जो बने हैं वही बनेंगे और उनकी ही खुशी होगी फिर यह पुराना शरीर छोड देंगे। फिर नया शरीर लेकर सतोप्रधान दुनिया में आयेंगे। यह नॉलेज खलास हो जायेगी। बातें तो बहुत सहज हैं। रात को सोने समय ऐसे-ऐसे सिमरण करो तो भी खुशी रहेगी। हम यह बन रहे हैं। सारे दिन में हमने कोई शैतानी तो नहीं की? 5 विकारों से कोई विकार ने हमको सताया तो नहीं? लोभ तो नहीं आया? अपने ऊपर जाँच रखनी है।

रूहानी बच्चों को बाप ने समझाया है, यहाँ तुम बच्चों को इस ख्याल से जरूर बैठना होता है, यह बाबा भी है, टीचर और सतगुरू भी है। और यह भी महसूस करते हो-बाबा को याद करते-करते पवित्र बन, पवित्रधाम में जाकर पहुँचेंगे। बाप ने समझाया है कि पवित्रधाम से ही तुम नीचे उतरते हो। उसका नाम ही है पवित्रधाम। सतोप्रधान से फिर सतो, रजो, तमो..... अभी तुम समझते हो कि हम नीचे गिरे हुए हैं अर्थात् वेश्यालय में हैं। भल तुम संगमयुग पर हो, परन्तु ज्ञान से तुम जानते हो कि हमने किनारा किया हुआ है फिर भी अगर हम शिवबाबा की याद में रहते हैं तो शिवालय दूर नहीं। शिवबाबा को याद नहीं करते तो शिवालय बहुत दूर है। सजायें खानी पड़ती हैं तो बहुत दूर हो जाता है। तो बाप बच्चों को कोई जास्ती तकलीफ नहीं देते हैं। एक तो बार-बार कहते हैं मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र बनना है। यह आँख भी बड़ा धोखा देती हैं, इनसे बहुत सम्भालकर चलना होता है। बाप ने समझाया है कि ध्यान और योग बिल्कुल अलग है। योग अर्थात् याद। आँखें खुली होते भी तुम याद कर सकते हो। ध्यान को कोई योग नहीं कहा जाता। भोग भी ले जाते हैं तो डायरेक्शन अनुसार ही जाना है। इसमें माया भी बहुत आती है। माया ऐसी है जो एकदम नाक में दम कर देती है। जैसे बाप बलवान है, वैसे माया भी बड़ी बलवान है। इतनी बलवान है जो सारी दुनिया को वेश्यालय में धकेल दिया है इसलिए इसमें बहुत खबरदारी रखनी होती है। बाप की कायदे अनुसार याद चाहिए। बेकायदे कोई काम किया तो एकदम गिरा देती है। ध्यान आदि की कभी कोई इच्छा नहीं रखनी है। इच्छा मात्रम् अविद्या बाप तुम्हारी सब मनोकामनायें बिगर मांगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चले तो। अगर बाप की आज्ञा न मान उल्टा रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग के बदले नर्क में ही गिर जाएं। गायन भी है गज को ग्राह ने खाया। बहुतों को ज्ञान देने वाले, भोग लगाने वाले आज हैं कहाँ, क्योंकि बेकायदे चलन के कारण पूरे मायावी बन जाते हैं। डीटी बनते-बनते डेविल बन जाते हैं। बाप जानतेहैं कि बहुत अच्छे पुरुषार्थी जो देवता बनने वाले थे वह असुर बन असुरों के साथ रहते हैं। ट्रेटर हो जाते हैं। बाप का बनकर फिर माया के बन

जाते, उन्हें ट्रेटर कहा जाता है। अपने ऊपर नजर रखनी होती है। श्रीमत का उल्लंघन किया तो यह गिरे। पता भी नहीं पडेगा। बाप तो बच्चों को सावधान करते हैं कि कोई ऐसी चलन न चलो जो रसातल में पहुँच जाओ।

बाबा घड़ी-घड़ी बच्चों को सावधान करते रहते हैं। अपनी मत पर कमेटियाँ आदि बनाना इसमें कुछ रखा नहीं है। आपस में मिलकर झरमुई-झगमुई करना, यह ऐसा करता था, फलाना ऐसा करता था... सारा दिन यही करते रहते हैं। बाप से बुद्धियोग लगाने से ही सतोप्रधान बनेंगे। बाप का बने और बाप से योग नहीं तो घड़ी-घड़ी गिरते रहेंगे। कनेक्शन ही टूट पडता है। लिंक टूट जाए तो घबराना नहीं चाहिए। माया हमें इतना तंग क्यों करती है। कोशिश कर बाप के साथ लिंक जोडनी चाहिए। नहीं तो बैटरी चार्ज कैसे होगी। विकर्म होने से बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। शुरू में कितने ढेर के ढेर बाबा के आकर बने। भट्ठी में आये फिर आज कहाँ हैं। गिर पड़े क्योंकि पुरानी दुनिया याद आई। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको बेहद का वैराग्य दिलाता हूँ, इस पुरानी दुनिया से दिल नहीं लगाओ। दिल स्वर्ग से लगानी है। अगर ऐसा लक्ष्मी-नारायण बनना है तो मेहनत करनी पड़े। बुद्धियोग एक बाप के साथ होना चाहिए। पुरानी दुनिया से वैराग्य। सुखधाम और शान्तिधाम को याद करो। जितना हो सके उठते, बैठते, चलते, फिरते बाप को याद करो। यह तो बिल्कुल ही सहज है। तुम यहाँ आये ही हो नर से नारायण बनने के लिए। सबको कहना है कि अब तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है क्योंकि रिटर्न जर्नी होती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट माना नर्क से स्वर्ग, फिर स्वर्ग से नर्क। यह चक्र फिरता ही रहता है।

बाप कहते हैं मुझ एक अपने बाप को याद करो। जिसमें मैंने प्रवेश किया है, इनकी आत्मा में तो जरा भी यह नॉलेज नहीं थी। तुम्हारी बुद्धि अब नई दुनिया में जानी चाहिए। उठते-बैठते

यही बुद्धि में रहे कि हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं। बाप हमको पढ़ाते हैं। स्टूडेंट को यह याद रहना चाहिए फिर भी वह याद नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार रहती है। बाप भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार याद -प्यार देते हैं। अच्छा पढ़ने वाले को टीचर जरूर प्यार जास्ती करेंगे। कितना अन्तर पड़ जाता है। अब बाप तो समझाते रहते हैं। बच्चों को धारणा करनी है। एक बाप के सिवाए और कोई तरफ बुद्धि न जाए। बाप को याद नहीं करेंगे तो पाप कैसे कटेंगे। माया घड़ी-घड़ी तुम्हारा बुद्धियोग तोड़ देगी। माया बहुत धोखा देती है। बाबा मिसाल देते हैं भक्ति मार्ग में हम लक्ष्मी की बहुत पूजा करते थे। चित्र में देखा लक्ष्मी पांव दबा रही है तो उसे मुक्त करा दिया। उनकी याद में बैठते जब बुद्धि इधर-उधर जाती थी तो अपने को थप्पड़ मारते थे-बुद्धि और तरफ क्यों जाती है? आखरीन विनाश भी देखा, स्थापना भी देखी। साक्षात्कार की आश पूरी हुई, समझा अब यह नई दुनिया आती है, हम यह बनेंगे। बाकी यह पुरानी दुनिया तो विनाश हो जायेगी। पक्का निश्चय हो गया।

बाप पहले बच्चों को कहते हैं यह भूल तो नहीं जाते हो-हम बाप के आगे, टीचर के आगे और सतगुरू के आगे बैठे हुए हैं। बाबा नहीं समझते कि सब कोई इस याद में बैठे हैं। फिर भी बाप का फर्ज है समझाना। यह है अर्थ सहित याद करना। हमारा बाबा बेहद का बाप भी है, टीचर भी है और बराबर हमारा सतगुरू भी है जो बच्चों को साथ में ले जायेगा। बाप आये ही हैं बच्चों का श्रृंगार करने। पवित्रता से श्रृंगार करते आते हैं। धन भी अथाह देते हैं। धन देते ही हैं नई दुनिया के लिए, जहाँ तुमको जाना है। यह बच्चों को याद करना हैं। बच्चे गफलत करते हैं जो भूल जाते हैं। वह जो पूरी खुशी होनी चाहिए वह कम हो जाती है। ऐसा बाप तो कभी मिलता ही नहीं। तुम जानते हो हम बाबा के बच्चे जरूर हैं। वह हमको पढ़ाते हैं इसलिए टीचर भी जरूर है। हमारी पढ़ाई है ही नई दुनिया अमरपुरी के लिए। अभी हम संगमयुग पर बैठे हैं। यह याद तो जरूर बच्चों को होनी चाहिए। पक्का-पक्का याद करना है। यह भी जानते हो इस समय कंसपुरी आसुरी दुनिया में हैं। समझो कोई को साक्षात्कार होता है परन्तु साक्षात्कार से

कोई कृष्णपुरी, उनकी डिनायस्टी में नहीं जा सकेंगे। जा तब सकेंगे जब बाप, टीचर, गुरू तीनों को ही याद करते रहेंगे। यह आत्माओं से बात की जाती है। आत्मा ही कहती है हाँ बाबा। बाबा आप तो सच कहते हो। आप बाप भी हो, पढ़ाने वाले टीचर भी हो। सुप्रीम आत्मा पढ़ाती है। लौकिक पढ़ाई भी आत्मा ही शरीर के साथ पढ़ाती है। परन्तु वह आत्मा भी पतित तो शरीर भी पतित है। दुनिया के मनुष्यों को यह पता नहीं है कि हम नर्कवासी हैं।

वहाँ नैचुरल ब्युटी होती है। तो बाप भी सब समझाकर फिर कहते हैं-बच्चे, बाप को याद करो। बाप, बाप भी है, टीचर, सतगुरू भी है। तीनों रूप में याद करो तो तीनों वर्से मिलेंगे। पिछाड़ी वाले तीनों रूप में याद कर नहीं सकेंगे। फिर मुक्ति में चले जायेंगे। बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन आदि में जो कुछ देखते हो यह तो सब हैं साक्षात्कार की बातें। बाकी हिस्ट्री-जॉग्राफी सारी यहाँ की है। बाप हैं ऊंच ते ऊंच तो पढ़ाई भी ऊंच ते ऊंच है। मर्तबा भी ऊंच है। हिस्ट्री, जाँग्राफी तो झट जान जाते हैं। बाकी याद की यात्रा में युद्ध चलती है। इसमें तुम हारते हो तो नॉलेज में भी तुम हारते हो। हारकर भागन्ती हो जाते हैं तो नॉलेज में भी भागन्ती हो जाते हैं। फिर जैसा था वैसा बन जाते हैं और ही उनसे भी बदतर। बाप के आगे चलन से देह- अभिमान झट प्रसिद्ध हो जाता है।

यहाँ बैठे तुम बच्चे बाप को याद तो जरूर करते हो पावन बनने के लिए। अपने दिल से पूछो सच- सच हम बाप की याद में बैठे थे या माया रावण बुद्धि को और तरफ ले गयी। बाप ने कहा है मामेकम याद करो तो पाप कटे। अब अपने से पूछना है हम बाबा की याद में रहे या बुद्धि कहाँ चली गई? स्मृति रहनी चाहिए-कितना समय हम बाबा की याद में रहे? कितना समय हमारी बुद्धि कहॉ-कहाँ गई? अपनी अवस्था को देखो। जितना टाइम बाप को याद करेंगे, उससे ही पावन बनेंगे। जमा और ना का भी पोतामेल रखना है। आदत होगी तो याद

भी रहेगा। लिखते रहेंगे। डायरी तो सबके पॉकेट में रहती ही है। जो भी व्यापार वाले होते हैं, उन्हों की है हद की डायरी। तुम्हारी है बेहद की डायरी। तो तुमको अपना चार्ट नोट करना है। बाप का फरमान है- धन्धा आदि सब कुछ करो परन्तु कुछ समय निकाल मेरे को याद करो। अपने पोतामेल को देख फायदा बढ़ाते जाओ। घाटा न डालो। तुम्हारी युद्ध तो है ना 1 सेकण्ड में फायदा, सेकण्ड में घाटा। झट मालूम पड़ता है, हमने फायदा किया या घाटा? तुम व्यापारी हो ना। कोई विरला यह व्यापार करे। स्मृति से है फायदा, विस्मृति से है घाटा। यह अपनी जांच करनी है, जिनको ऊंच पद पाना है उनको तो ओना रहता है-देखे, हम कितना समय विस्मृति में रहे? यह तो तुम बच्चे जानते हो हम सब आत्माओं का बाप पतित-पावन है। हम असुल आत्मायें हैं। अपने घर से यहाँ आये हैं, यह शरीर लेकर पार्ट बजाते हैं। शरीर विनाशी है, आत्मा अविनाशी है। संस्कार भी आत्मा में रहते हैं। बाबा पूछते हैं-हे आत्मा याद करो, इस जन्म के छोटेपन में कोई उल्टा काम तो नहीं किया है? याद करो। 3 - 4 वर्ष से लेकर याद तो रहती है, हमने छोटेपन में कैसे बिताया है, क्या-क्या किया है? कोई भी बात दिल अन्दर खाती तो नहीं है? याद करो। सतयुग में पाप कर्म होते ही नहीं तो पूछने की बात नहीं रहती। यहाँ तो पाप होते ही हैं। मनुष्य जिसको पुण्य का काम समझते हैं वह भी पाप ही है। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। तुम्हारी लेन-देन भी हैं पाप आत्माओं से। पुण्य आत्मा यहाँ हैं ही नहीं।

बाप तुमको राज्य- भाग्य देते हैं। दाता हैं ना। वह कुछ लेता नहीं है। तुम्हारी पढ़ाई की यह हैं प्राइज। ऐसी प्राइज तो और कोई दे न सके। तो ऐसे बाप को प्यार से क्यों नहीं याद करते हैं। लौकिक बाप को तो सारा जन्म याद करते हो। पारलौकिक को क्यों नहीं याद करते हो। बाप ने बताया है युद्ध का मैदान हैं, टाइम लगता है पावन बनने में। इतना ही समय लगता है जब तक लड़ाई पूरी हो। ऐसे नहीं जो शुरू में आये हैं वह पूरे पावन होंगे। बाबा कहते हैं माया की

लड़ाई बड़ी जोर से चलती है। अच्छे- अच्छे को भी माया जीत लेती है। इतनी तो बलवान है। जो गिरते हैं वह फिर मुरली भी कहाँ से सुनें।

आत्मा और जीव दो का खेल है। निराकार आत्मा अविनाशी है और साकार शरीर विनाशी है, इनका खेल है। अब बाप कहते हैं देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल जाओ। गृहस्थ व्यवहार में रहते अपने को ऐसा समझो कि हमको अब वापिस जाना है। पतित तो जा न सके इसलिए मामेकम याद करो तो सताप्रधान बन जायेंगे। बाप के पास दवाई है ना। यह भी बताता हूँ, माया विघ्न जरूर डालेगी। तुम रावण के ग्राहक हो ना। उनकी ग्राहकी चली जायेगी तो जरूर फथकेंगे। तो बाप समझाते हैं यह तो पढ़ाई है। कोई दवाई नहीं है। दवाई यह है याद की यात्रा। एक ही दवाई से तुम्हारे सब दु :ख दूर हो जायेंगे, अगर मेरे को निरन्तर याद करने का पुरूषार्थ करेंगे तो। भक्ति मार्ग में ऐसे बहुत हैं जिनका मुख चलता ही रहता है। कोई न कोई मन्त्र राम नाम जपते रहते हैं, उनको गुरू का मन्त्र मिला हुआ है। इतना बार तुमको रोज जपना है। उनको कहते हैं राम के नाम की माला जपना। इसको ही राम नाम का दान कहते हैं। ऐसी बहुत संस्थायें बनी हुई हैं। राम-राम जपते रहेंगे तो झगड़ा आदि कोई करेंगे नहीं, बिजी रहेंगे। कोई कुछ कहेगा भी तो भी रेसपॉन्स नहीं देंगे। बहुत थोड़े ऐसा करते हैं। यहाँ फिर बाप समझाते हैं राम-राम कोई मुख से कहना नहीं है। यह तो अजपाजाप है सिर्फ बाप को याद करते रहो। बाप कहते हैं मैं कोई राम नहीं हूँ। राम तो त्रेता का था, जिसकी राजाई थी, उनको तो जपना नहीं है। अब बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में यह सब सिमरण करते, पूजा करते तुम सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हो क्योंकि वह सब हैं अनराइटियस। राइटियस तो एक ही बाप है। वह तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं। यह कैसे भूल- भुलैया का खेल है। जिस बाप से इतना बेहद का वर्सा मिलता है उनको याद करें तो चेहरा ही उनका चमकता रहे। खुशी में चेहरा खिल जाता है। मुख पर मुस्कराहट आ जाती है। तुम जानते हो बाप को याद करने से हम यह बनेंगे। आधाकल्प के लिए हमारे सब दु :ख दूर हो जायेंगे। ऐसे नहीं, बाबा कुछ कृपा कर देंगे। नहीं,

यह समझना है-हम बाप को जितना याद करेंगे उतना सतोप्रधान बन जायेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक कितने हर्षितमुख हैं। ऐसा बनना है। बेहद के बाप को याद कर अन्दर में खुशी होती है फिर से हम विश्व का मालिक बनेंगे। यह आत्मा की खुशी के संस्कार ही फिर साथ चलेंगे। फिर थोड़ा- थोड़ा कम होता जायेगा। इस समय माया तुमको फथकायेगी भी बहुत। माया कोशिश करेगी-तुम्हारी याद को भुलाने की। सदैव ऐसे हर्षित मुख रह नहीं सकेंगे। जरूर कोई समय घुटका खायेंगे। मनुष्य जब बीमार पड़ते हैं तो उनको कहते भी होंगे शिवबाबा को याद करो परन्तु शिवबाबा है कौन, यह किसको पता नहीं तो क्या समझ याद करें? क्यों याद करें? तुम बच्चे तो जानते हो बाप को याद करने से हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। देवी-देवता सतोप्रधान हैं ना, उनको कहा ही जाता है डीटी वर्ल्ड। मनुष्यों की दुनिया नहीं कहा जाता। मनुष्य नाम होता नहीं। फलाना देवता। वह है ही डीटी वर्ल्ड, यह है ह्युमन वर्ल्ड। यह सब समझने की बातें हैं। बाप ही समझाते हैं बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर। बाप अनेक प्रकार की समझानी देते रहते हैं। फिर भी पिछाड़ी में महामन्त्र देते हैं-बाप को याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जायेंगे और तुम्हारे सब दु :ख दूर हो जायेंगे। कल्प पहले भी तुम देवी-देवता बने थे। तुम्हारी सीरत देवताओं जैसी थी। वहाँ कोई भी उल्टा-सुल्टा बोलते नहीं थे। ऐसा कोई काम ही नहीं होता। वह है ही डीटी वर्ल्ड। यह है ह्युमन वर्ल्ड। फर्क है ना। यह बाप बैठ समझाते हैं। मनुष्य तो समझते हैं डीटी वर्ल्ड को लाखों वर्ष हो गये। यहाँ तो कोई को देवता कह नहीं सकते। देवतायें तो स्वच्छ थे। महान् आत्मा देवी-देवता को कहा जाता है।

यह तो तुम बच्चों के लिए मकान बन रहे हैं, आकरके बाबा से मिलकर ही जाना है। सदैव तो रहना नहीं है। पैसे की क्या दरकार रहेगी। कोई लश्कर वा तोपे आदि तो नहीं चाहिए। तुम विश्व के मालिक बनते हो। अभी युद्ध के मैदान में हो, तुम और कुछ भी नहीं करते हो सिवाए बाप को याद करने के। बाप ने फरमान किया है मुझे याद करो तो इतनी शक्ति मिलेगी। यह

तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। बाप है सर्वशक्तिमान्। तुम उनके बनते हो, सारा मदार याद की यात्रा पर है। यहाँ तुम सुनते हो फिर उस पर मंथन चलता है। जैसे गाय खाना खाकर फिर उगारती है, मुख चलता ही रहता है। तुम बच्चों को भी कहते हैं ज्ञान की बातों पर खूब विचार करो। बाबा से हम क्या पूछे। बाप तो कहते हैं मनमनाभव, जिससे ही तुम सतोप्रधान बनते हो। यह एम ऑबजेक्ट सामने है।

तुम जानते हो - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न बनना है। यह ऑटोमेटिकली अन्दर में आना चाहिए। कोई की ग्लानि वा पाप कर्म आदि कुछ भी न हो। कोई भी तुमको उल्टा कर्म नहीं करना चाहिए। नम्बरवन हैं यह देवी-देवतायें। पुरूषार्थ से ऊँच पद पाया है ना। उन्हों के लिए गाया जाता है अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म। किसको मारना यह हिंसा हुई ना। बाप समझाते हैं तो फिर बच्चों को अन्तर्मुख हो अपने को देखना है-हम कैसे बने हैं? बाबा को हम याद करते हैं? कितना समय हम याद करते हैं? इतनी दिल लग जाए जो यह याद कभी भूले ही नहीं। अब बेहद का बाप कहते हैं तुम आत्मायें मेरी सन्तान हो। सो भी तुम अनादि सन्तान हो। वह जो आशिक-माशूक होते हैं उन्हों की है जिस्मानी याद। जैसे साक्षात्कार होता है फिर गुम हो जाते हैं वैसे वह भी सामने आ जाते हैं। उस खुशी में ही खाते पीते याद करते रहते हैं। तुम्हारी इस याद में तो बहुत बल है। एक बाप को ही याद करते रहेंगे। और तुमको फिर अपना भविष्य याद आयेगा। विनाश का साक्षात्कार भी होगा। आगे चल जल्दी-जल्दी विनाश का साक्षात्कार होगा। फिर तुम कह सकेंगे कि अभी विनाश होना है। बाप को याद करो। बाबा ने यह सब कुछ छोड़ दिया ना। कुछ भी पिछाड़ी में याद न आये। अभी तो हम अपनी राजधानी में चले। नई दुनिया में जरूर जाना है। योगबल से सब पापों को भस्म करना है, इसमें ही बड़ी मेहनत करनी है। घड़ी-घड़ी बाप को भूल जाते हैं क्योंकि यह बड़ी महीन चीज है। मिसाल जो देते हैं सर्प का, भ्रमरी का, वह सब इस समय के हैं। भ्रमरी कमाल करती है ना। उनसे तुम्हारी कमाल जास्ती है। बाबा लिखते हैं ना-ज्ञान की भूँ- भूँ करते रहो। आखरीन जाग पड़ेंगे। जायेंगे

कहाँ । तुम्हारे पास ही आते जायेंगे । एड होते जायेंगे । तुम्हारा नामाचार होता जायेगा । अभी तो तुम थोड़े हो ना ।

पुरूषार्थ बहुत करना है । बाप ने समझाया है-तुम रोज मुसाफिरी करते हो, यात्रा करते रहते हो । यह जो गायन है अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो-यह पिछाड़ी की बात है । अभी तो नम्बरवार है । कोई तो अन्दर में खुशी के गीत गाते रहते हैं- ओहो! परमपिता परमात्मा हमको मिला है, उनसे हम वर्सा लेते हैं । उनके पास कोई कम्पलेन हो न सके । कोई ने कुछ कहा तो भी सुना- अनसुना कर अपनी मस्ती में मस्त रहना चाहिए । कोई भी बीमारी वा दुःख आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो । यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है फिर तो तुम 21 जन्म फूल बनते हो । वहाँ दु :ख की बात ही नहीं होगी । गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं । फिर सुस्ती आदि सब उड़ जाती है, इसमें तो यह है सच्ची खुशी, वह है झूठी । धन मिला, जेवर मिला तो खुश होंगे । यह है बेहद की बात । तुमको तो अथाह खुशी में रहना चाहिए । जानते हो हम 21 जन्मों के लिए सदा सुखी रहेंगे । इसी स्मृति में रहो-हम क्या बनते हैं । बाबा कहने से ही दु :ख दूर हो जाने चाहिए । यह तो 21 जन्मों की खुशी है । अब बाकी थोड़े दिन हैं । हम जाते हैं अपने सुखधाम । फिर और कुछ भी याद न रहे । यह बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं । कितने समाचार आते हैं, खिट-खिट चलती है । बाबा को कोई बात का दु :ख थोड़ेही होता है । सुना, अच्छा यह भावी । यह तो कुछ भी नहीं है, हम तो कारून के खजाने वाले बनते हैं । अपने से बात करने से ही खुशी होती है । बड़ा शान्त में रहते हैं, उनका चेहरा भी बहुत खुशनुम : रहेगा ।

रूहानी विचित्र बाप बैठ विचित्र बच्चों को समझाते हैं अर्थात् दूरदेश का रहने वाला जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है । बहुत-बहुत दूरदेश से आकर इस शरीर द्वारा तुमको पढ़ाते हैं

। अब जो पढ़ते हैं वह पढ़ाने वाले के साथ योग तो ऑटोमेटिकली रखते हैं। कहना नहीं पड़ता है कि हे बच्चों, टीचर से योग रखो वा उनको याद करो। नहीं, यहाँ बाप कहते हैं-हे रूहानी बच्चों, यह तुम्हारा बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है, इनके साथ योग रखो अर्थात् बाप को याद करो। यह है विचित्र बाबा। तुम घड़ी-घड़ी इनको भूल जाते हो इसलिए कहना पड़ता है। पढ़ाने वाले को याद करने से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे। यह लॉ नहीं कहता जो टीचर कहे मेरे को देखो, इसमें तो बड़ा फायदा है। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। इस याद के बल से ही तुम्हारे पाप कटने हैं, इसको कहा जाता है याद की यात्रा। अब रूहानी विचित्र बाप बच्चों को देखते हैं। बच्चे भी अपने को आत्मा समझ विचित्र बाप को ही याद करते हैं। तुम तो घड़ी-घड़ी शरीर में आते हो। मैं तो सारा कल्प शरीर में आता नहीं हूँ सिर्फ इस संगमयुग पर ही बहुत दूरदेश से आता हूँ - तुम बच्चों को पढ़ाने। यह अच्छी रीति याद करना है। बाबा हमारा बाप, टीचर और सतगुरू है। विचित्र है। उनको अपना शरीर नहीं है, फिर आते कैसे हैं? कहते हैं मुझे प्रकृति का, मुख का आधार लेना पड़ता है। बच्चों यह याद रखना है कि हमको विचित्र बाप पढ़ाते हैं। बाप को याद नहीं करेंगे तो पाप भस्म कैसे होंगे। यह बातें भी सिर्फ अभी संगमयुग पर ही सुनते हो। बाप आते देखो कहाँ हैं! पुराने रावण राज्य में। कहते हैं मेरी तकदीर में पावन शरीर मिलना है नहीं। पतितों को पावन बनाने कैसे आऊं। हमको पतित दुनिया में ही आकर सबको पावन बनाना पड़ता है। तो ऐसे टीचर का कदर भी रखना चाहिए ना। बहुत हैं जो कदर जानते ही नहीं। यह भी ड्रामा में होना ही है। राजधानी में तो सब चाहिए ना-नम्बरवार। तो सब प्रकार के यहॉ ही बनते हैं। कम दर्जा पाने वाले का यह हाल होगा। न पढ़ेंगे, न बाप की याद में रहेंगे। यह बहुत ही विचित्र बाप है ना, इनकी चलन भी अलौकिक है। इनका पार्ट और कोई को मिल न सके। यह बाप आकर तुमको कितनी ऊंच पढ़ाई पढ़ाते हैं, तो उसका कदर भी रखना चाहिए। उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए। परन्तु माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। माया इतनी जबरदस्त है जो अच्छे- अच्छे बच्चों को गिरा देती है। बाप कितना धनवान बनाते है परन्तु माया एकदम माथा मूड़ लेती है। माया से बचना है तो बाप को जरूर

याद करना पड़े। बहुत अच्छे बच्चे हैं जो बाप का बनकर फिर माया के बन जाते हैं, बात मत पूछो, पक्के ट्रेटर बन जाते हैं। माया एकदम नाक से पकड़ लेती है। अक्षर भी है ना-गज को ग्राह ने खाया। परन्तु उसका अर्थ कोई नहीं समझते हैं। बाप हर बात अच्छी रीति समझाते हैं। कई बच्चे समझते भी हैं परन्तु नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार | कोई को तो जरा भी धारणा नहीं होती। बहुत ऊंची पढ़ाई है ना। तो उनकी धारणा कर नहीं सकते। बाप कहेंगे इनकी तकदीर में राज्य- भाग्य नहीं है। कोई अक के फूल हैं, कोई खूशबूदार फूल हैं। वैराइटी बगीचा है ना। ऐसे भी तो चाहिए ना। राजधानी में तुमको नौकर-चाकर भी मिलेंगे। नहीं तो नौकर-चाकर कैसे मिलेंगे। राजाई यहाँ ही बनती है। नौकर, चाकर, चण्डाल आदि सब मिलेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। वन्डर है। बाप तुमको इतना ऊंच बनाते हैं तो ऐसे बाप को याद करते प्रेम के आंसू बहने चाहिए।

माया बड़ी दुश्तर है। समझा जाता है उनकी तकदीर में इतना ऊंच पद नहीं है तो सर्जन से छिपाते हैं। छिपाने से बीमारी छूटेगी नहीं। जितना छिपायेंगे उतना गिरते ही रहेंगे। भूत तो सबमें हैं ना। जब तक कर्मातीत अवस्था नहीं बनी, तब तक क्रिमिनल आई भी छोड़ती नहीं है। सबसे बड़ा दुश्मन है काम। कई गिर पड़ते हैं। बाबा तो बार- बार समझाते हैं शिवबाबा के सिवाए कोई देहधारी को याद नहीं करना है। कई तो ऐसे पक्के हैं, जो कभी किसकी याद भी नहीं आयेगी। पवित्रता स्त्री होती है ना, उनकी कुबुद्धि नहीं होती है।

रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझा रहे हैं। यहाँ बैठ तुम क्या करते हो? ऐसे नहीं, सिर्फ शान्ति में बैठे हो। अर्थ सहित ज्ञानमय अवस्था में बैठे हो। तुम बच्चों को ज्ञान है-बाप को हम क्यों याद करते हैं। बाप हमको बहुत बड़ी आयु देते हैं। बाप को याद करने से हमारे पाप कट जायेंगे। हम सच्चा सोना सतोप्रधान बन जायेंगे। तुम्हारा कितना श्रृंगार होता है। तुम्हारी आयु

बड़ी हो जायेगी। आत्मा कंचन हो जायेगी। अब आत्मा में खाद पड़ी हुई है। याद की यात्रा से वह सब खाद जो रजो-तमो की पड़ी है वह सब निकल जायेगी। इतना तुमको फायदा होता है। फिर आयु बड़ी हो जायेगी। तुम स्वर्ग के निवासी बन जायेंगे और बहुत धनवान बनेंगे। तुम पद्मापद्म भाग्यशाली बन जायेंगे इसलिए बाप कहते हैं मनमनाभव, मामेकम याद करो। कोई देहधारी के लिए नहीं कहते।

विश्व का मालिक बनना है तो कुछ मेहनत भी करनी पड़े ना। अब तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों तमोप्रधान हैं। खाद पड़ गई है। इस खाद को भस्म करने के लिए बाप कहते हैं मुझे याद करो। तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो, लज्जा नहीं आती है। याद नहीं करेंगे तो माया के भूत तुमको हप कर लेंगे। तुम कितना छी-छी बन गये हो, रावण राज्य में एक भी ऐसा नहीं जो विकार से पैदा न हुआ हो। वहाँ इस विकार का नाम नहीं, रावण ही नहीं। रावण राज्य होता ही है द्वापर से।

अब हम आत्माओं को पावन बन बाप के पास जाना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो सुनने से ही उनको कशिश होगी। जितना तुम देही- अभिमानी होंगे उतना तुम्हारे में कशिश आयेगी। अभी इतना इस देह आदि से, पुरानी दुनिया से पूरा वैराग्य नहीं आया है। यह तो जानते हो यह पुराना चोला छोड़ना है, इनमें क्या ममत्व रखना है। शरीर होते शरीर में कोई ममत्व नहीं होना चाहिए। अन्दर में यही तात रहे - अब हम आत्माएं पावन बनकर अपने घर जायें। फिर यह भी दिल होती हैं - ऐसे बाबा को कैसे छोड़े? ऐसा बाबा तो फिर कभी मिलेगा नहीं। तो ऐसे-ऐसे ख्याल करने से बाप भी याद आयेगा, घर भी याद आयेगा। अब हम घर जाते हैं। 84 जन्म पूरे हुए। भल दिन में अपना धंधा आदि करो। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना ही है। उसमें रहते हुए भी तुम बुद्धि में यह रखो कि यह तो सब कुछ खत्म हो जाना है। अभी

हमको वापिस अपने घर जाना है। बाप ने कहा है - गृहस्थ व्यवहार में भी जरूर रहना हैं। नहीं तो कहाँ जायेंगे? धन्धा आदि करो, बुद्धि में यह याद रहे। यह तो सब कुछ विनाश होने का है। पहले हम घर जायेंगे फिर सुखधाम में आएंगे। जो भी टाइम मिले अपने से बातें करनी चाहिए। बहुत टाइम है, 8 घण्टा धन्धा आदि करो। 8 घण्टा आराम भी करो। बाकी 8 घण्टा यह बाप से रूहरिहान कर फिर जाकर रूहानी सर्विस करनी है। जितना भी समय मिले शिवबाबा के मन्दिर में, लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जाकर सर्विस करो। मन्दिर तो तुमको बहुत मिलेंगे। तुम कहाँ भी जाएंगे तो शिव का मन्दिर जरूर होगा। तुम बच्चों के लिए मुख्य है याद की यात्रा। याद में अच्छी रीति रहेंगे तो तुम जो भी मांगो मिल सकता है। प्रकृति दासी बन जाती है। उनकी शक्ल आदि भी ऐसी खींचने वाली रहती है, कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। सन्यासियों में भी कोई-कोई पक्के रहते हैं। बस ऐसे निश्चय से बैठते - हम ब्रह्म में जाकर लीन होंगे। इस निश्चय में बहुत पक्के रहते हैं। उन्हों का अभ्यास होता है, हम इस शरीर को छोड़ जाते हैं। परन्तु वह तो हैं रांग रास्ते पर। बड़ी मेहनत करते हैं ब्रह्म में लीन होने के लिए। भक्ति में दीदार के लिए कितनी मेहनत करते हैं। जीवन भी दे देते हैं। आत्मघात नहीं होता है, जीवघात होता है। आत्मा तो है ही, वह जाकर दूसरा जीवन अर्थात् शरीर लेती है।

तुम बच्चे अभी याद की यात्रा से सारी सृष्टि को सद्गति में पहुँचाते हो। जगतगुरू एक शिवबाबा हैं जो तुमको भी श्रीमत देते हैं। तुम जानते हो हर 5 हजार वर्ष बाद हमको यह श्रीमत मिली है। चक्र फिरता रहता है। आज पुरानी दुनिया है, कल नई दुनिया होगी। इस चक्र को समझना भी बहुत सहज है। परन्तु यह भी याद रहे जो कोई को समझा सकें। यह भी भूल जाते हैं। कोई गिरते हैं तो फिर ज्ञान आदि सारा खत्म हो जाता है। कला-काया माया ले लेती है। सब कला निकाल कला रहित कर देती है। विकार में ऐसे फँस जाते हैं, बात मत पूछो। अभी तुमको सारा चक्र याद है। तुम जन्म जन्मान्तर वेश्यालय में रहे हो, हजारों पाप करते आये हो। सबके आगे

कहते हो-जन्म-जन्म के हम पापी हैं। हम ही पहले पुण्य आत्मा थे, फिर पाप आत्मा बने। अब फिर पुण्य आत्मा बनते हैं। यह तुम बच्चों को नॉलेज मिल रही है।

अब यह भी पावन बनने का पुरूषार्थ करते हैं, खबरदार भी बहुत रहना होता है। बाप तो जानते हैं ना। यह बाबा का बच्चा बहुत नजदीक है। यह तो बाप से जुदा कभी हो नहीं सकता। ख्याल भी नहीं आ सकता कि छोड़कर जाऊं। एकदम हमारे बाजू में बैठा है। मेरा तो बाबा है ना। मेरे घर में बैठा हैं। बाबा जानते हैं हँसी कुड़ी भी करते हैं। बाबा आज हमको स्नान तो कराओ, भोजन तो खिलाओ। मैं छोटा बच्चा हूँ, बहुत प्रकार से बाबा को याद करता हूँ। तुम बच्चों को समझाता हूँ- ऐसे-ऐसे याद करो। बाबा आप तो बहुत मीठे हो। एकदम हमको विश्व का मालिक बना देते हो। यह बात और किसकी बुद्धि में हो न सके। बाप सबको रिफ्रेश करते रहते हैं। सब पुरूषार्थ तो करते हैं, परन्तु चलन भी ऐसी हो ना। भूल हो जाए तो झट लिखना चाहिए -बाबा, हमसे यह भूल हो जाती है। कोई-कोई लिखते भी हैं-बाबा हमसे यह भूल हुई माफ करना। हमारा बच्चा बनकर फिर भूल करने से सौ गुना वृद्धि हो जाती है। माया से हारते हैं तो फिर वही के वही बन जाते हैं। बहुत हारते हैं। यह बड़ी बॉक्सिंग है। राम और रावण की लड़ाई है। दिखाते भी हैं बन्दर सेना ली। यह सब बच्चों का खेल बना हुआ है। जैसे छोटे बच्चे बेसमझ होते हैं ना। बाप भी कहते हैं यह तो इन्हों की पाई-पैसे की बुद्धि है। कहते हैं हर एक ईश्वर का रूप है। तो हर एक ईश्वर बन क्रियेट भी करते हैं, पालना करते हैं फिर विनाश भी कर देते। अब ईश्वर कोई का विनाश थोड़ेही करते हैं। यह तो कितनी अज्ञानता है इसलिए कहा जाता है गुडियों की पूजा करते रहते हैं। वन्डर है।

मनुष्य मत को आसुरी मत कहा जाता है। यथा राजा-रानी तथा प्रजा। सब ऐसे बन जाते हैं। इनको कहा ही जाता है डेविल वर्ल्ड। सब एक-दो को गाली देते रहते हैं। तो बाप समझाते हैं-

बच्चे, जब बैठते हो तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अज्ञान में थे तो परमात्मा को ऊपर में समझते थे। अभी तो जानते हो बाप यहाँ आया हुआ है तो तुम ऊपर में नहीं समझते हो। तुमने बाप को यहाँ बुलाया है, इस तन में। तुम जब अपने- अपने सेंटर्स पर बैठते हो तो समझेंगे शिवबाबा मधुबन में इनके तन में है। भक्ति मार्ग में तो परमात्मा को ऊपर में मानते थे। हे भगवान..... अभी तुम बाप को कहाँ याद करते हो? क्या बैठकर करते हो? तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में हैं तो जरूर यहाँ याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहाँ आया हुआ है - पुरूषोत्तम संगमयुग पर। बाप कहते हैं तुमको इतना ऊँच बनाने मैं यहाँ आया हूँ। तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे। भक्त ऊपर में याद करेंगे। तुम भल विलायत में होंगे तो भी कहेंगे ब्रह्मा के तन में शिवबाबा हैं। तन तो जरूर चाहिए ना। कहाँ भी तुम बैठे होंगे तो जरूर यहाँ याद करेंगे। ब्रह्मा के तन में ही याद करना पड़े। कई बुद्धिहीन ब्रह्मा को नहीं मानते हैं। बाबा ऐसे नहीं कहते ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा। बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो इसलिए तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है, इनकी अपनी आत्मा है। शिवबाबा को तो अपना शरीर नहीं है। बाप ने कहा है मैं इस प्रकृति का आधार लेता हूँ। बाप बैठ सारे ब्रह्माण्ड और सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का राज समझाते हैं और कोई ब्रह्माण्ड को जानते ही नहीं।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों से रूहानी बाप पूछते हैं यहाँ तुम बैठे हो, किसकी याद में बैठे हो? (बाप, शिक्षक, सतगुरू की) सभी इन तीनों की याद में बैठे हो? हर एक अपने से पूछे यह सिर्फ यहाँ बैठे याद है या चलते- फिरते याद रहती है? क्योंकि यह है वन्डरफुल बात। और कोई आत्मा को कभी ऐसे नहीं कहा जाता। भल यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक हैं परन्तु उनकी आत्मा को कभी ऐसे नहीं कहेंगे कि यह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। बल्कि सारी दुनिया में जो भी जीव आत्मायें हैं, कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कहेंगे। तुम बच्चे ही ऐसे

याद करते हो। अन्दर में आता है यह बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। सो भी सुप्रीम। तीनों को याद करते हो या एक को? भल वह एक है परन्तु तीनों गुणों से याद करते हो। शिवबाबा हमारा बाप भी है, टीचर और सतगुरू भी है। यह एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी कहा जाता है। जब बैठे हो अथवा चलते फिरते हो तो यह याद रहना चाहिए। बाबा पूछते हैं ऐसे याद करते हो कि यह हमारा बाप, टीचर, सतगुरू भी है। ऐसा कोई भी देहधारी हो नहीं सकता। देहधारी नम्बरवन है कृष्ण, उनको बाप, टीचर, सतगुरू कह नहीं सकते, यह बिल्कुल वन्डरफुल बात है। तो सच बताना चाहिए तीनों रूप में याद करते हो? भोजन पर बैठते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद करते हो या तीनों बुद्धि में आते हैं? और तो कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कह सकते। यह है वन्डरफुल बात। विचित्र महिमा है बाप की। तो बाप को याद भी ऐसे करना है। तो बुद्धि एकदम उस तरफ चली जायेगी जो ऐसा वन्डरफुल है। बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं फिर सारे चक्र का भी नॉलेज देते हैं। ऐसे यह युग है, इतने-इतने वर्ष के हैं जो फिरते रहते हैं। यह ज्ञान भी वह रचयिता बाप ही देते हैं। तो उनको याद करने में बहुत मदद मिलेगी। बाप, टीचर, गुरू वह एक ही है। इतनी ऊँच आत्मा और कोई हो नहीं सकती। परन्तु माया ऐसे बाप की याद भी भुला देती है तो टीचर और गुरू को भी भूल जाते हैं। यह हर एक को अपने- अपने दिल से लगाना चाहिए। बाबा हमको ऐसा विश्व का मालिक बनायेंगे। बेहद के बाप का वर्सा जरूर बेहद का ही है। साथ-साथ यह महिमा भी बुद्धि में आये, चलते-फिरते तीनों ही याद आयें। इस एक आत्मा की तीनों ही सर्विस इकट्ठी हैं इसलिए उनको सुप्रीम कहा जाता है।

5 हजार वर्ष पहले भी गीता के भगवान ने कहा था लाडले बच्चे। अगर कृष्ण कहेंगे तो दूसरे धर्म वाले कोई सुन न सकें। भगवान कहेंगे तो सभी को लगेगा-गॉड फादर हेविन स्थापन करते हैं जिसमें फिर हम जाकर चक्रवर्ती राजा बनेंगे। इसमें कोई खर्चे आदि की बात नहीं है सिर्फ सृष्टि के आदि-मध्य- अन्त को जानना है। तुम बच्चों को विचार सागर मंथन करना है। कर्म

करते दिन-रात ऐसे पुरूषार्थ करते रहो। विचार सागर मंथन नहीं करेंगे या बाप को याद नहीं करेंगे, सिर्फ कर्म करते रहेंगे तो रात को भी वही ख्यालात चलते रहेंगे। मकान बनाने वाले को मकान का ही ख्याल चलेगा। भल विचार सागर मंथन करने की रेसपॉन्सिबिलिटी इन पर है परन्तु कहते हैं कलष लक्ष्मी को दिया तो तुम लक्ष्मी बनती हो ना।

बच्चों से बाप पूछते हैं, आत्माओं से परमात्मा पूछते हैं-यह तो जानते हो कि हम परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। बाबा को अपना रथ नहीं है, यह तो निश्चय है ना? इस भ्रकुटी के बीच में बाप का निवास स्थान है। बाप ने खुद कहा है-मैं इनकी भ्रकुटी के बीच में बैठता हूँ। इनका शरीर लोन पर लेता हूँ। आत्मा भ्रकुटी के बीच में बैठती है तो बाप भी यहाँ ही आकर बैठते हैं। ब्रह्मा भी है तो शिवबाबा भी है। अगर यह ब्रह्मा नहीं होता तो शिवबाबा भी नहीं होता। अगर कोई कहे कि हम तो शिवबाबा को ही याद करते हैं, ब्रह्मा को नहीं, परन्तु शिवबाबा बोलेंगे कैसे? ऊपर में तो सदैव शिवबाबा को याद करते आये। अभी तुम बच्चों को पता है हम बाप के पास यहाँ बैठे हैं। ऐसे तो नहीं समझेंगे कि शिवबाबा ऊपर में हैं। जैसे भक्तिमार्ग में कहते थे शिवबाबा ऊपर में है, उनकी प्रतिमा यहाँ पूजी जाती हैं। यह बातें बहुत समझने की हैं। जानते हो बाप ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल है तो कहाँ से नॉलेज सुनाते हैं? ब्रह्मा के तन से सुनाते हैं। कई कहते हैं हम ब्रह्मा को नहीं मानते, परन्तु शिवबाबा कहते हैं मैं इस मुख द्वारा ही तुम्हें कहता हूँ, मुझे याद करो। यह समझ की बात है ना। ब्रह्मा तो खुद कहते हैं-शिवबाबा को याद करो। यह कहाँ कहते मुझे याद करो? इनके द्वारा शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह मन्त्र मैं इनके मुख से देता हूँ। ब्रह्मा नहीं होता तो मैं मन्त्र कैसे देता? ब्रह्मा नहीं होता तो तुम शिवबाबा से कैसे मिलते? कैसे मेरे पास बैठते? अच्छे- अच्छे महारथियों को भी ऐसे-ऐसे ख्यालात आ जाते हैं जो माया मेरे से मुख मोड़ देती है। कहते हैं हम ब्रह्मा को नहीं मानते तो उनकी क्या गति होगी? माया कितनी बड़ी जबरदस्त है जो एकदम मुँह ही फिरा देती

है। अभी तुम्हारा मुँह शिवबाबा ने सामने किया है। तुम सम्मुख बैठे हो। फिर जो ऐसे समझते हैं ब्रह्मा तो कुछ नहीं, तो उनकी क्या गति होगी? दुर्गति को पा लेते हैं। मनुष्य तो पुकारते हैं- ओ गॉड फादर! फिर गॉड फादर सुनता है क्या? कहते हैं- ओ लिबरेटर आओ। क्या वहाँ से ही लिबरेट करेंगे? कल्प-कल्प के पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आते हैं। जिसमें आते हैं उनको ही उड़ा दें तो क्या कहेंगे? माया में इतना बल है जो नम्बरवन वर्थ नाट ए पेनी बना देती है। ऐसे-ऐसे भी कोई-कोई सेंटर्स पर हैं, तब तो बाप कहते हैं खबरदार रहना। भल बाबा के सुनाये हुए ज्ञान को दूसरों को सुनाते भी रहते हैं परन्तु जैसे पण्डित मिसल। जैसे बाबा पण्डित की कहानी सुनाते हैं. इस समय तुम बाप की याद से विषय सागर को पार कर क्षीरसागर में जाते हो ना! भक्ति मार्ग में ढेर कथायें बना दी हैं। पण्डित औरों को कहता था राम नाम कहने से पार हो जाएंगे, लेकिन खुद बिल्कुल चट खाते में था। खुद विकारों में जाते रहना और दूसरों को कहना निर्विकारी बनो। उनका क्या असर होगा? यहाँ भी कहाँ-कहाँ सुनाने वालों से सुनने वाले तीखे चले जाते हैं। जो बहुतों की सेवा करते हैं वह जरूर सबको प्यारे लगते हैं। पण्डित झूठा निकल पड़ा तो उसे कौन प्यार करेगा? फिर प्यार उन पर चला जायेगा जो प्रैक्टिकल में याद करते हैं। अच्छे- अच्छे महारथियों को भी माया हप कर जाती है।

बाप समझाते हैं तुम बच्चे सुख-शान्ति के टॉवर हो। तुम बहुत रॉयल हो। तुमसे रॉयल इस समय कोई होता नहीं। बेहद के बाप के बच्चे हो तो कितना मीठा होकर चलना चाहिए। किसको दु:ख नहीं देना है। नहीं तो वह अन्त में याद आयेगा। फिर सजायें खानी होंगी। बाप कहते हैं अभी तो घर चलना है। सूक्ष्मवतन में बच्चों को ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है इसलिए तुम भी ऐसे सूक्ष्मवतनवासी बनो। मूवी की प्रेक्टिस करनी है बहुत कम बोलना है, मीठा बोलना है। ऐसा पुरुषार्थ करते- करते तुम शान्ति के टॉवर बन जायेंगे। तुमका सिखलाने वाला बाप है। फिर तुम्हें औरों को सिखलाना है। भक्ति मार्ग टॉकी मार्ग है। अभी तुमको बनना है साइलेन्स।

अनेक जन्मों के पाप तो वर्णन नहीं कर सकते हो। इस जन्म का वर्णन कर सकते हैं। वह सुनाने से भी हल्का हो जायेगा। सर्जन के आगे बीमारी सुनानी है-फलाने को मारा, चोरी की., इस सुनाने में लज्जा नहीं आती है, विकार की बात सुनाने में लज्जा आती है। सर्जन से लज्जा करेंगे तो बीमारी छूटेगी कैसे? फिर अन्दर दिल को खाती रहेगी, बाप को याद कर नहीं सकेंगे। सच सुनायेंगे तो याद कर सकेंगे। बाप कहते हैं मैं सर्जन तुम्हारी कितनी दवाई करता हूँ। तुम्हारी काया सदैव कंचन रहेगी। सर्जन को बताने से हल्का हो जाता है। कोई-कोई आपेही लिख देते हैं-बाबा हमने जन्म-जन्मान्तर पाप किये हैं। पाप आत्माओं की दुनिया में पापात्मा ही बने हैं। अब बाप कहते हैं बच्चे, तुम्हें पाप आत्माओं से लेन-देन नहीं करनी है। सच्चा सतगुरू, अकालमूर्त है बाप, वह कभी पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। उन्होंने अकाल तख्त नाम रखा है परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। बाप ने समझाया है आत्मा का यह तख्त है। शोभता भी यहाँ हैं, तिलक भी यहाँ (भ्रकुटी में) देते हैं ना। असुल में तिलक एकदम बिन्दी मिसल देते थे। अभी तुमको अपने को आपेही तिलक देना है। बाप को याद करते रहो। जो बहुत सर्विस करेंगे तो बड़ा महाराजा बनेंगे। नई दुनिया में, पुरानी दुनिया की पढ़ाई थोड़ेही पढ़ना है। तो इतनी ऊँच पढ़ाई पर फिर अटेंशन देना चाहिए। यहाँ बैठते हैं तो भी कोई का बुद्धियोग अच्छा रहता है, कोई का कहाँ-कहाँ चला जाता है। कोई 10 मिनट लिखते हैं, कोई 15 मिनट लिखते हैं। जिसका चार्ट अच्छा होगा उनको नशा चढ़ेगा-बाबा इतना समय हम आपकी याद में रहे। 15 मिनट से जास्ती तो कोई लिख नहीं सकते। बुद्धि इधर-उधर भागती हैं। अगर सब एकरस हो जाए तो फिर कर्मातीत अवस्था हो जाए। बाप कितनी मीठी-मीठी लवली बातें सुनाते हैं। ऐसे तो कोई गुरू ने नहीं सिखाया। गुरू से सिर्फ एक थोड़ेही सीखेगा। गुरू से तो हजारों सीखें ना। सतगुरू से तुम कितने सीखते हो। यह है माया को वश करने का मन। माया 5 विकारों को कहा जाता है। अच्छा, फिर भी बाप कहते हैं बाप को याद करो तो पावन बन जायेंगे। चक्र को याद करो, दैवीगुण धारण करो। बहुतों को आप समान बनाओ। गॉड फादर

के तुम स्टूडेंट हो। कल्प पहले भी बने थे फिर अब भी वही एम आब्जेक्ट है। यह है सत्य नर से नारायण बनने की कथा।

अभी तुमको बाप समझाते हैं तुम सब भाई- भाई हो। बस, और सब सम्बन्ध कैन्सल करते हैं। भाई- भाई समझेंगे तो एक बाप को याद करेंगे। बाप भी कहते हैं-बच्चों, मुझ एक बाप को याद करो। कितना बड़ा बेहद का बाप है। वह बड़ा बाबा तुमको बेहद का वर्सा देने आये हैं। घडी-घड़ी कहते हैं मनमनाभव। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, यह बात भूलो मत। देह- अभिमान में आने से ही भूल जाते हैं। पहले-पहले तो अपने को आत्मा समझना है- हम आत्मा सालिग्राम हैं और एक बाप को ही याद करना है। बाप ने समझाया है मैं पतित-पावन हूँ, मुझे याद करने से तुम्हारी बैटरी जो खाली हो गई है वह भरपूर हो जायेगी, तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। पानी की गंगा में तो जन्म-जन्मान्तर घुटका खाया है लेकिन पावन बन नहीं सके। पानी कैसे पतित-पावन हो सकता है? ज्ञान से ही सद्गति होती है। इस समय है ही पाप आत्माओं की झूठी दुनिया। लेन-देन भी पाप आत्माओं से ही होती है। मन्सा-वाचा-कर्मणा पाप आत्मा ही बनते हैं। अभी तुम बच्चों को समझ मिली हैं।

बाप ज्ञान देखो कैसे सहज रीति देते हैं। यहाँ बैठे भी बाप को याद करो, बाजोली याद करो तो भी मन्मनाभव ही है। बाप ही यह सारा ज्ञान देने वाला है। तुम कहेंगे हम बेहद के बाप पास जाते हैं। बाप हमको शान्तिधाम-सुखधाम ले जाने का रास्ता बताते हैं। यहाँ बैठे घर को याद करना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, घर को याद करना है और नई दुनिया को याद करना है। यह पुरानी दुनिया तो खत्म होनी ही है। आगे चलकर तुम वैकुण्ठ को भी बहुत याद करेंगे। घड़ी-घडी वैकुण्ठ में जाते रहेंगे। शुरू में बच्चियाँ घड़ी-घड़ी आपस में बैठ वैकुण्ठ में चली जाती थी। यह देखकर बड़े- बड़े घर वाले अपने बच्चों को भेज देते थे। नाम

ही रखा था ओम निवास। कितने ढेर बच्चे आये फिर हंगामा हुआ। बच्चों को पढ़ाते थे। आपेही ध्यान में चले जाते थे। अभी यह ध्यान-दीदार का पार्ट बंद कर दिया है। यहाँ भी कब्रिस्तान बना देते थे। सबको सुला देते थे, कहते थे अब शिवबाबा को याद करो, ध्यान में चले जाते थे। अब तुम बच्चे भी जादूगर हो। किसको भी देखेंगे और वह झट ध्यान में चले जायेंगे। यह जादू कितना अच्छा है। नौधा भक्ति में तो जब एकदम प्राण देने तैयार होते हैं तब उनको दीदार होता है। यहाँ तो बाप खुद आये हैं, तुम बच्चों को पढ़ाकर ऊंच पद प्राप्त कराते हैं। आगे चल तुम बच्चे बहुत साक्षात्कार करते रहेंगे। बाप से अभी भी कोई पूछे तो बता सकते हैं कौन गुलाब का फूल है, कौन चम्पा का फूल है।

- बाप समझाते हैं बच्चों की बुद्धि में यह जरूर होगा कि बाबा बाप भी है, टीचर और सुप्रीम गुरू भी है। इस याद में जरूर होंगे। यह याद कभी कोई सिखला न सके। कल्प-कल्प बाप ही आकर सिखलाते हैं। वह ज्ञान सागर पतित-पावन है। यह अभी समझाया जाता है जबकि ज्ञान का तीसरा नेत्र दिव्य बुद्धि मिली है। बच्चे भल समझते तो होंगे परन्तु बाप को ही भूल जाते हैं तो टीचर-गुरू फिर कैसे याद आयेगा। माया बहुत ही प्रबल है जो बाप के तीनों रूपों को ही भुला देती है। कहते हैं हम हार खा गये। यूँ तो कदम-कदम में पदम है परन्तु हार खाने से पदम कैसे होंगे? देवताओं को ही पदम की निशानी देते हैं। यह ईश्वर की पढ़ाई है। ऐसे मनुष्य की पढ़ाई कभी हो न सके।

- छोटे बच्चे भी ज्ञान और योग का व्यापार कर सकते हैं। शान्तिधाम और सुखधाम-बस, बुद्धि में उनको याद करना है। वो लोग राम-राम कहते हैं। यहाँ चुप होकर याद करना है, बोलना कुछ नहीं है। शिवपुरी, विष्णुपुरी बहुत सहज बात है। स्वीट होम, स्वीट राजधानी याद है। वह देते हैं स्थूल मन्त्र, यह है सूक्ष्म मन्त्र। अति सूक्ष्म याद है। सिर्फ इस याद करने से हम स्वर्ग के

मालिक बन जाते हैं। जपना कुछ भी नहीं है सिर्फ याद करना है। आवाज कुछ नहीं करना पड़ता। गुप्त बाबा से गुप्त वर्सा चुप रहने से, अन्तर्मुख होने से हम पाते हैं। इसी ही याद में रहते शरीर छूट जाए तो बहुत अच्छा है। कोई तकलीफ नहीं, जिनको याद नहीं ठहरती वह अपना अभ्यास करे। सभी को कहो बाबा ने कहा है मुझे याद करो तो अन्त मती सो गति। याद से विकर्म विनाश होंगे और मैं स्वर्ग में भेज दूँगा। बुद्धियोग शिवबाबा से लगाना बहुत सहज है। परहेज भी सारी यहाँ ही करनी है। सतोप्रधान बनते हैं तो सभी सात्विक होने चाहिए-चलन सात्विक, बोलना सात्विक। यह है अपने साथ बातें करना। साथी से प्यार से बोलना है। गीत में भी है ना-पियु-पियु बोल सदा अनमोल। तुम हो रूप-बसन्त। आत्मा रूप बनती है। ज्ञान का सागर बाप है तो जरूर आकर ज्ञान ही सुनाएंगे। कहते हैं मैं एक ही बार आकर शरीर धारण करता हूँ। यह कम जादूगरी नहीं है! बाबा भी रूप-बसन्त है। परन्तु निराकार तो बोल नहीं सकता इसलिए शरीर लिया है | परन्तु वह पुनर्जन्म में नहीं आता है। आत्मायें तो पुनर्जन्म में आती हैं।

- बच्चों को यह सहज ज्ञान और सहज योग सिखलाता हूँ, योग लगवाता हूँ। कहा है ना योग लगवाने वाले, झोली भरने वाले, मर्ज मिटाने वाले। गीता का भी पूरा अर्थ समझाते हैं। योग सिखलाता हूँ और सिखलवाता भी हूँ। बच्चे योग सीखकर फिर ओरों को सिखलाते हैं ना। कहते हैं योग से हमारी ज्योत जगाने वाले... ऐसे गीत भी कोई घर में बैठकर सुने तो सारा ही ज्ञान बुद्धि में चक्र लगायेगा। बाप की याद से वर्से का भी नशा चढ़ेगा। सिर्फ परमात्मा वा भगवान कहने से मुख मीठा नहीं होता। बाबा माना ही वर्सा।

- तुमने यह 84 का पार्ट कितनी बार बजाया होगा! तुम्हारी बैटरी कितनी बार चार्ज और डिस्चार्ज हुई है! जब जानते हो हमारी बैटरी डिस्चार्ज है तो फिर चार्ज करने में देरी क्यों करनी चाहिए?

परन्तु माया बैटरी चार्ज करने नहीं देती। माया बैटरी चार्ज करना तुमको भुला देती है। घड़ी-घड़ी बैटरी डिस्चार्ज करा देती है। कोशिश करते हो बाप को याद करने की परन्तु कर नहीं सकते हो। तुम्हारे में जो बैटरी चार्ज कर सतोप्रधान तक नजदीक आते हैं, उनसे भी कभी-कभी माया गफलत कराए बैटरी डिस्चार्ज कर देती है। यह पिछाड़ी तक होता रहेगा। फिर जब लड़ाई का अन्त होता है तो सब खत्म हो जाते हैं फिर जिसकी जितनी बैटरी चार्ज हुई होगी उस अनुसार पद पायेंगे। सभी आत्मायें बाप के बच्चे हैं, बाप ही आकर सबकी बैटरी चार्ज कराते हैं। खेल कैसा वन्डरफुल बना हुआ है। बाप के साथ योग लगाने से घड़ी-घड़ी हट जाते हैं तो कितना नुकसान होता है। न हटें उसके लिए पुरूषार्थ कराया जाता है।

तुम बच्चे जानते हो यह ड्रामा कैसे फिरता है। इसके आदि-मध्य- अन्त का राज बाप ही समझाते हैं। कोई अच्छी रीति पढ़ते हैं, कोई कम पढ़ते हैं। पढ़ते तो सब हैं ना। सारी दुनिया भी पढ़ेगी अर्थात् बाप को याद करेगी। बाप को याद करना - यह भी पढ़ाई है ना। उस बाप को सब याद करते हैं, वह सर्व का सद्गति दाता, सबको सुख देने वाला है।

शिवबाबा को अपना बनाया है, एडाप्ट करते हैं ना। यह हमारा बाप टीचर सतगुरू है। हम उनको अपना बनाते हैं, उनकी पूरी मिलकियत लेने। जो बच्चे बन गये हैं वह घराने में जरूर आते हैं। परन्तु फिर उसमें पद कितने हैं। कितने दास-दासियां हैं। एक-दो पर हुक्म चलाते हैं। दासियों में भी नम्बरवार बनते हैं। रॉयल घराने में बाहर के दास-दासियां तो नहीं आयेंगे ना जो बाप के बने हैं, उनको बनना है। ऐसे-ऐसे बच्चे हैं जिनमें पाई का भी अक्ल नहीं हैं। बाबा ऐसे तो कहते नहीं कि मम्मा को याद करो वा मेरे रथ को याद करो। बाप कहते हैं मामेकम याद करो। देह के सब बन्धन छोड़ अपने को आत्मा समझो। बाप समझाते हैं कि प्रीत रखनी है तो एक से रखो तब बेड़ा पार होगा। बाप के डायरेक्शन पर चलो। मोहजीत राजा की कथा भी है

ना! पहले नम्बर में हैं बच्चे, बच्चा तो मिलकियत का मालिक बनेगा। स्त्री तो हाफ पार्टनर है, बच्चा तो फुल मालिक बन जाता है। तो बुद्धि उस तरफ जाती है, बाबा को फुल मालिक बनायेंगे तो यह सब कुछ तुमको दे देंगे। लेन-देन की बात ही नहीं। यह तो समझ की बात है। भल तुम सुनते हो फिर दूसरे दिन सब भूल जाता है। बुद्धि में रहेगा तो दूसरों को भी समझा सकता। बाप को याद करने से तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह तो बहुत सहज है, मुख चलाते रहो। एम आब्जेक्ट बताते रहो। विशालबुद्धि तो झट समझेंगे। अन्त में यह चित्र आदि ही काम आयेंगे। इसमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। लक्ष्मी-नारायण और राधे-कृष्ण का आपस में क्या सम्बन्ध है? यह कोई नहीं जानते। लक्ष्मी-नारायण तो जरूर पहले प्रिन्स होंगे। बेगर टू प्रिन्स है ना! बेगर टू किंग नहीं कहा जाता। प्रिन्स के बाद ही किंग बनते हैं। यह तो बहुत ही सहज है परन्तु माया कोई को पकड़ लेती है, किसकी निंदा करना, ग्लानि करना - यह तो बहुतों की आदत है। और तो कोई काम है ही नहीं। बाप को कभी याद नहीं करेंगे। एक-दो की ग्लानि का धन्धा ही करते हैं। यह है माया का पाठ। बाप का पाठ तो बिल्कुल ही सीधा है। पिछाड़ी में यह सन्यासी आदि जागेंगे, कहेंगे कि ज्ञान है तो इन बी.के. में हैं। कुमार-कुमारियां तो पवित्र होते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं। हमारे में कोई खराब ख्याल भी नहीं आना चाहिए। बहुतों को अभी भी खराब ख्यालात आते हैं, फिर इसकी सजा भी बहुत कड़ी है। बाप समझाते तो बहुत हैं। अगर कुछ चाल तुम्हारी फिर खराब देखी तो यहाँ रह नहीं सकेंगे। थोड़ी सजा भी देनी होती है, तुम लायक नहीं हो। बाप को ठगते हो। तुम बाप को याद कर नहीं सकेंगे। अवस्था सारी गिर जाती है। अवस्था गिरना ही सजा है। श्रीमत पर न चलने से अपना पद भ्रष्ट कर देते हैं। बाप के डायरेक्शन पर न चलने से और ही भूत की प्रवेशता होती है। बाबा को तो कभी-कभी ख्याल आता है, कही बहुत बड़ी कड़ी सजायें अभी ही शुरू न हो जायें। सजायें भी बहुत गुप्त होती हैं ना। कहीं कड़ी पीड़ा न आये। बहुत गिरते हैं, सजा खाते हैं। बाप तो सब ईशारे में समझाते रहते हैं। अपनी तकदीर को लकीर बहुत लगाते हैं इसलिए बाप खबरदार

करते रहते हैं, अभी गफलत करने का समय नहीं है, अपने को सुधारो। अन्त घड़ी आने में कोई देरी नहीं है।

बच्चे सिर्फ याद की यात्रा में ही नहीं बैठे हैं। बच्चों को यह फ़खुर है कि हम श्रीमत पर अपना परिस्तान स्थापन कर रहे हैं। इतना उमंग, खुशी रहनी चाहिए। कीचड़पट्टी आदि की सब वाह्यात बातें निकल जानी चाहिए। बेहद के बाप को देखते ही हुल्लास में आना चाहिए। जितना-जितना तुम याद की यात्रा में रहेंगे उतना इम्प्रूवमेंट आती जायेगी। बाप कहते हैं बच्चों के लिए रूहानी युनिवर्सिटी होनी चाहिए। तुम्हारी है ही वर्ल्ड स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। तो वह युनिवर्सिटी कहाँ हैं? युनिवर्सिटी खास स्थापन की जाती है। उसके साथ बड़ी रॉयल हॉस्टल चाहिए। तुम्हारे कितने रॉयल ख्यालात होने चाहिए। बाप को तो रात-दिन यही ख्यालात रहते हैं-कैसे बच्चों को पढ़ाकर ऊँच इम्तहान में पास कराये? जिससे फिर यह विश्व के मालिक बनने वाले हैं। असुल में तुम्हारी आत्मा शुद्ध सतोप्रधान थी तो शरीर भी कितना सतोप्रधान सुन्दर था। राजाई भी कितनी ऊँच थी। तुम्हारा हद के संसार की किचड़पट्टी की बातों में टाइम बहुत वेस्ट होता है। तुम स्टूडेंट के अन्दर किचड़पट्टी के ख्यालात नहीं होने चाहिए। कमेटियाँ आदि तो बहुत अच्छी- अच्छी बनाते हैं। परन्तु योगबल है नहीं। गपोड़ा बहुत मारते हैं-हम यह करेंगे, यह करेंगे। माया भी कहती है हम इनको नाक-कान से पकड़ेंगे। बाप के साथ लव ही नहीं है। कहा जाता है ना - नर चाहत कुछ और.... तो माया भी कुछ करने नहीं देती है। माया बहुत ठगने वाली है, कान ही काट लेती है। बाप कितना बच्चों को ऊंच बनाते हैं, डायरेक्शन देते हैं - यह-यह करो। बाबा बड़ी रॉयल-रॉयल बच्चियाँ भेज देते हैं। कोई-कोई कहते हैं बाबा हम ट्रेनिंग लिए जावे? तो बाबा कहते हैं बच्चे, पहले तुम अपनी कमियों को तो निकालो। अपने को देखो हमारे में कितने अवगुण हैं? अच्छे- अच्छे महारथियों को भी माया एकदम लून-पानी कर देती है। ऐसे खारे बच्चे हैं जो बाप को कभी याद भी नहीं करते हैं। ज्ञान का ' ग ' भी नहीं

जानते। बाहर का शो बहुत है। इसमें तो बड़ा अन्तर्मुख रहना चाहिए, परन्तु कइयों की तो ऐसी चलन होती है जैसे अनपढ़ जट लोग होते हैं, थोड़े-से पैसे हैं तो उसका नशा चढ़ जाता है। यह नहीं समझते कि अरे, हम तो कंगाल हैं। माया समझने नहीं देती है। माया बड़ी जबरदस्त है। बाबा थोड़ी महिमा करते हैं तो उसमें बड़ा खुश हो जाते हैं।

यह तो बच्चों को समझाया गया है, किसी मनुष्य को वा देवताओं को भगवान नहीं कहा जा सकता। यहाँ जब बैठते हैं तो बुद्धि में यह रहता है कि हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। यह भी याद सदा किसको रहती नहीं हैं। अपने को सचमुच ब्राह्मण समझते हैं, ऐसा भी नहीं है। ब्राह्मण बच्चों को फिर दैवीगुण भी धारण करने हैं। हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं, हम शिवबाबा द्वारा पुरूषोत्तम बन रहे हैं। यह याद भी सबको नहीं रहती। घड़ी-घड़ी यह भूल जाते हैं कि हम पुरूषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। यह बुद्धि में याद रहे तो भी अहो सौभाग्य। हमेशा नम्बरवार तो होते ही हैं। सब अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार पुरुषार्थी हैं। अभी तुम संगमयुगी हो। पुरूषोत्तम बनने वाले हो। जानते हो हम पुरूषोत्तम तब बनेंगे जब अब्बा को यानी मोस्ट बिलवेड बाप को याद करेंगे। याद से ही पाप नाश होंगे। अगर कोई पाप करता है तो उसका सौ गुणा हिसाब चढ़ जाता है। आगे जो पाप करते थे तो उसका 10 परसेन्ट चढ़ता था। अभी तो 100 परसेन्ट चढ़ता है क्योंकि ईश्वर की गोद में आकर फिर पाप करते हैं ना। तुम बच्चे जानते हो बाप हमको पढ़ाते हैं पुरूषोत्तम सो देवता बनाने। यह याद जिनको स्थाई रहती है वह अलौकिक सर्विस भी बहुत करते रहेंगे। सदैव हार्षितमुख बनने के लिए औरों को भी रास्ता बताना है। भल कहाँ भी जाते हो, बुद्धि में यह याद रहे कि हम संगमयुग पर हैं। यह है पुरूषोत्तम संगमयुग। वह पुरूषोत्तम मास या वर्ष कहते हैं। तुम कहते हो हम पुरूषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। यह अच्छी रीति बुद्धि में धारण करना है-अभी हम पुरूषोत्तम बनने की यात्रा पर हैं। यह याद रहे तो भी मनमनाभव ही हो गया। तुम पुरूषोत्तम बन रहे हो, पुरूषार्थ अनुसार और कर्मों अनुसार। दैवीगुण भी चाहिए और श्रीमत पर चलना पड़े। अपनी मत पर तो सब मनुष्य चलते हैं। वह है ही रावण मत। ऐसे

भी नहीं, तुम सब कोई श्रीमत पर चलते हो। बहुत हैं जो रावण मत पर भी चलते हैं। श्रीमत पर कोई कितना परसेन्ट चलते, कोई कितना। कोई तो 2 परसेन्ट भी चलते होंगे। भल यहाँ बैठे हैं तो भी शिवबाबा की याद में नहीं रहते। कहाँ न कहाँ बुद्धियोग भटकता होगा। रोज अपने को देखना है आज कोई पाप का काम तो नहीं किया? किसी को दु:ख तो नहीं दिया? अपने ऊपर बहुत सम्भाल करनी होती है क्योंकि धर्मराज भी खड़ा है ना। अभी का समय है ही हिसाब-किताब चुक्तू करने लिए। सजायें भी खानी पड़े। बच्चे जानते हैं हम जन्म-जन्मान्तर के पापी हैं।

सबके शरीर और यह पुरानी दुनिया विनाश होती है। यह राज अभी तुम्हारी बुद्धि में है - नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। हम किसके सम्मुख बैठे हैं, वह भी कई समझते नहीं। कम से कम पद पाने वाले हैं। ड्रामा अनुसार कर ही क्या सकते हैं, तकदीर में नहीं है। अभी तो बच्चों को सर्विस करनी है, बाप को याद करना है। तुम संगमयुगी ब्राह्मण हो, तुम्हें बाप समान ज्ञान का सागर, सुख का सागर बनना है। बनाने वाला बाप मिला है ना। देवताओं की महिमा गाई जाती है सर्वगुण सम्पन्न....... अभी तो इन गुणों वाला कोई है नहीं। अपने से सदैव पूछते रहो-हम ऊंच पद पाने के लायक कहाँ तक बने हैं? संगमयुग को अच्छी रीति याद करो। हम संगमयुगी ब्राह्मण पुरूषोत्तम बनने वाले हैं। श्रीकृष्ण पुरूषोत्तम है ना, नई दुनिया का। बच्चे जानते हैं हम बाबा के सम्मुख बैठे हैं, तो और ही जास्ती पढ़ना चाहिए। पढ़ाना भी है। पढ़ाते नहीं तो सिद्ध होता है पढ़ते नहीं। बुद्धि में बैठता नहीं है। 5 प्रतिशत भी नहीं बैठता। यह भी याद नहीं रहता है कि हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। बुद्धि में बाप की याद रहे और चक्र फिरता रहे, समझानी तो बहुत सहज है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है। वह है सबसे बड़ा बाप। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। हम सो पूज्य, हम सो पुजारी, यह मन्त्र है बहुत अच्छा। उन्होंने फिर आत्मा सो परमात्मा कह दिया है, जो कुछ बोलते हैं बिल्कुल रांग। हम पवित्र थे, 84 जन्म चक्र लगाकर अब ऐसे बने हैं। अब हम जाते हैं वापिस। आज यहाँ,

कल घर जायेंगे। हम बेहद बाप के घर में जाते हैं। यह बेहद का नाटक है जो अभी रिपीट होना है। बाप कहते हैं देह सहित देह के सब धर्म भूल अपने को आत्मा समझो। अभी हम इस शरीर को छोड़ घर जाते हैं, यह पक्का याद कर लो, हम आत्मा हैं-यह भी याद रहे और अपना घर भी याद रहे तो बुद्धि से सारी दुनिया का सन्यास हो गया। शरीर का भी सन्यास, तो सबका सन्यास। वह हठयोगी कोई सारे सृष्टि का सन्यास थोड़ेही करते हैं, उनका है अधूरा। तुमको तो सारी दुनिया का त्याग करना है, अपने को देह समझते हैं तो फिर काम भी ऐसे ही करते हैं। देह-अभिमानी बनने से चोरी चकारी, झूठ बोलना, पाप करना........ यह सब आदतें पड़ जाती हैं। आवाज से बोलने की भी आदत पड़ जाती है, फिर कहते हमारा आवाज ही ऐसा है। दिन में 25-30 पाप भी कर लेते हैं। झूठ बोलना भी पाप हुआ ना। आदत पड़ जाती है।

तुम बच्चों को देही-अभिमानी हो बैठना चाहिए। मैं आत्मा इस शरीर में विराजमान हूँ। शिवबाबा हमको समझाते हैं, यह बुद्धि में अच्छी तरह याद रहना चाहिए। मुझ आत्मा का कनेक्शन है परमात्मा के साथ। परमात्मा आकर इस शरीर द्वारा सुनाते हैं, यह दलाल हो गया। तुमको समझाने वाला वह है। इनको भी वर्सा वह देते हैं। तो बुद्धि उस तरफ जानी चाहिए। समझो बाप के 5-7 बच्चे हैं, उन्हों का बुद्धियोग बाप तरफ रहेगा ना क्योंकि बाप से वर्सा मिलना है। भाई से वर्सा नहीं मिलता। वर्सा हमेशा बाप से मिलता है। आत्मा को आत्मा से वर्सा नहीं मिलता। तुम जानते हो आत्मा के रूप में हम सब भाई-भाई हैं। हम सब आत्माओं का कनेक्शन एक परमपिता परमात्मा के साथ है। वह कहते हैं मामेकम् याद करो। मुझ एक के साथ ही प्रीत रखो। रचना के साथ मत रखो। देही-अभिमानी बनो। मेरे सिवाए और कोई देहधारी को याद करते हो, तो इसको कहा जाता है देह-अभिमान। भल यह देहधारी तुम्हारे सामने है परन्तु तुम इनको नहीं देखो। बुद्धि में याद उनकी रहनी चाहिए। वह तो सिर्फ कहने मात्र भाई-भाई कह देते हैं, अभी तुम जानते हो हम आत्मा हैं परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं।

रावण राज्य में सब मूढ़मती हो जाते हैं। देह-अभिमान है ना। तुच्छ बुद्धि बन गये हैं। बाप कहते हैं मूढ़मती जो होंगे वह देह को याद करते रहेंगे, देह से प्यार रखेंगे। स्वच्छ बुद्धि जो होंगे वह तो अपने को आत्मा समझ परमात्मा को याद कर परमात्मा से सुनते रहेंगे, इसमें ही मेहनत है। यह तो बाप का रथ है। बहुतों का इनसे प्यार हो जाता है। जैसे हुसैन का घोड़ा, उनको कितना सजाते हैं। अब महिमा तो हुसैन की है ना। घोड़े की तो नहीं। जरूर मनुष्य के तन में हुसैन की आत्मा आई होगी ना। वह इन बातों को नहीं समझते।

पहले सतोप्रधान पवित्र होते हैं फिर उतरते-उतरते काम चिता पर बैठ काले हो जाते हैं। अब बाप आया है सभी आत्माओं को पवित्र बनाने। बाप को याद करने से ही तुम पावन बन जायेंगे। तो याद करना है एक को। देहधारी से प्रीत नहीं रखनी है। बुद्धि में यह रहे कि हम एक बाप के हैं, वही सब कुछ है। इन आंखों से देखने वाले जो भी हैं, वह सब विनाश हो जायेंगे। यह आंखे भी खत्म हो जायेंगी। मुझे याद करने से ही पावन बनेंगे और कोई को याद किया तो सतोप्रधान बन नहीं सकेंगे। पाप कटेंगे नहीं तो कहेंगे विनाश काले विपरीत बुद्धि विनशन्ती। मनुष्य तो बहुत अन्धश्रद्धा में हैं। देहधारियों में ही मोह रखते हैं। अब तुमको देही-अभिमानी बनना है। एक में ही मोह रखना है। दूसरे कोई में मोह है तो गोया बाप से विपरीत बुद्धि हैं। बाप कितना समझाते हैं मुझ बाप को ही याद करो, इसमें ही मेहनत है। तुम कहते भी हो हम पतितों को आकर पावन बनाओ। बाप ही पावन बनाते हैं। तुम बच्चों को 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही समझाते हैं। वह तो सहज है ना। बाकी याद की ही डिफीकल्ट ते डिफीकल्ट सब्जेक्ट है। बाप के साथ योग रखने में कोई भी होशियार नहीं हैं। जो बच्चे याद में होशियार नहीं वह जैसे पण्डित हैं। ज्ञान में भल कितने भी होशियार हों, याद में नहीं रहते तो वह पण्डित हैं। बाबा पण्डित की एक कहानी सुनाते हैं ना। जिसको सुनाया वह तो परमात्मा को याद कर पार हो गया। पण्डित

का दृष्टान्त भी तुम्हारे लिए है। बाप को तुम याद करो तो पार हो जायेंगे। सिर्फ मुरली में तीखे होंगे तो पार जा नहीं सकेंगे। याद के सिवाए विकर्म विनाश नहीं होंगे। यह सब दृष्टान्त बनाये हैं। बाप बैठ यथार्थ रीति समझाते हैं। उनको निश्चय बैठ गया। एक ही बात पकड़ ली कि परमात्मा को याद करने से पार हो जायेंगे। सिर्फ ज्ञान होगा, योग नहीं तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। ऐसे बहुत हैं, याद में नहीं रहते, मूल बात है ही याद की। बहुत अच्छी-अच्छी सार्विस करने वाले हैं, परन्तु बुद्धियोग ठीक नहीं होगा तो फँस पड़ेंगे। योग वाला कभी देह-अभिमान में नहीं फँसेगा, अशुद्ध संकल्प नहीं आयेंगे। याद में कच्चा होगा तो तूफान आयेंगे। योग से कर्मेन्द्रियाँ एकदम वश हो जाती हैं। बाप राइट और रांग को समझने की बुद्धि भी देते हैं। औरों की देह तरफ बुद्धि जाने से विपरीत बुद्धि विनशन्ती हो जायेंगे। ज्ञान अलग है, योग अलग है। योग से हेल्थ, ज्ञान से वेल्थ मिलती है। योग से शरीर की आयु बढ़ती है, आत्मा तो बड़ी-छोटी होती नहीं। आत्मा कहेगी मेरे शरीर की आयु बड़ी होती है। अभी आयु छोटी है फिर आधाकल्प के लिए शरीर की आयु बड़ी हो जायेगी। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। आत्मा पवित्र बनती है, सारा मदार आत्मा को पवित्र बनाने पर है। पवित्र नहीं बनेंगे तो पद भी नहीं पायेंगे।

माया चार्ट रखने में बच्चों को सुस्त बना देती है। बच्चों को याद की यात्रा का चार्ट बहुत शौक से रखना चाहिए। देखना चाहिए कि हम बाप को याद करते हैं या और कोई मित्र-सम्बन्धी आदि तरफ बुद्धि जाती है। सारे दिन में याद किसकी रही अथवा प्रीत किसके साथ रही, कितना टाइम वेस्ट किया? अपना चार्ट रखना चाहिए। परन्तु कोई में ताकत नहीं है जो चार्ट रेग्युलर रख सके। कोई विरला रख सकते हैं। माया पूरा चार्ट रखने नहीं देती है। एकदम सुस्त बना देती है। चुस्ती निकल जाती है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं तो सभी आशिकों का माशूक हूँ। तो माशूक को याद करना चाहिए ना। माशूक बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प याद किया है, अब मैं कहता हूँ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएं। ऐसा बाप जो सुख देने वाला है,

कितना याद करना चाहिए। और तो सब दु:ख देने वाले हैं। वह कोई काम आने वाले नहीं हैं। अन्त समय एक परमात्मा बाप ही काम आता है। अन्त का समय एक हद का होता है, एक बेहद का होता है।

तुमको पहले-पहले शूद्र से ब्राह्मण, ब्राह्मण से देवता बनाता हूँ। यह तुम्हारा अमूल्य हीरे जैसा जन्म कहा जाता है। भल कर्म भोग तो होता ही है। तो अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करते रहो। यह प्रैक्टिस होगी तब ही विकर्म विनाश होंगे। देहधारी समझा तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। आत्मा ब्राह्मण नहीं है, शरीर साथ है तब ही ब्राह्मण फिर देवता. . . शूद्र आदि बनते हैं। तो अब बाप को याद करने की मेहनत है। सहजयोग भी है। बाप कहते हैं सहज ते सहज भी है। कोई-कोई को फिर डिफीकल्ट भी बहुत भासता है। घड़ी-घड़ी देह-अभिमान में आकर बाप को भूल जाते हैं। टाइम तो लगता है ना देही-अभिमानी बनने में। ऐसे हो नहीं सकता कि अभी तुम एकरस हो जाओ और बाप की याद स्थाई ठहर जाए। नहीं। कर्मातीत अवस्था को पा लें फिर तो शरीर भी रह न सके। पवित्र आत्मा हल्की हो एकदम शरीर को छोड़ दे। पवित्र आत्मा के साथ अपवित्र शरीर रह न सके। ऐसे नहीं कि यह दादा कोई पार पहुँच गया है। यह भी कहते हैं - याद की बड़ी मेहनत है। देह-अभिमान में आने से उल्टा-सुल्टा बोलना, लड़ना, झगड़ना आदि चलता है। हम सब आत्मायें भाई-भाई हैं फिर आत्मा को कुछ नहीं होगा। देह-अभिमान से ही रोला हुआ है। अब तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनना है। जैसे देवतायें क्षीरखण्ड हैं ऐसे तुम्हें भी आपस में बहुत खीरखण्ड होकर रहना चाहिए। तुम्हें कभी लून-पानी नहीं होना है। जो देह-अभिमानी मनुष्य हैं वह उल्टा-सुल्टा बोलते, लड़ते-झगड़ते हैं। तुम बच्चों में वह आदत नहीं हो सकती। यहाँ तो तुमको देवता बनने के लिए दैवीगुण धारण करने हैं। कर्मातीत अवस्था को पाना है। जानते हो यह शरीर, यह दुनिया पुरानी तमोप्रधान है। पुरानी चीज से, पुराने संबंध से नफरत करनी पड़ती है। देह-अभिमान की बातों को छोड़ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है तो पाप विनाश होंगे। बहुत बच्चे याद में फेल होते हैं।

ज्ञान समझाने में बड़े तीखे जाते हैं परन्तु याद की मेहनत बहुत बड़ी है। बड़ा इम्तहान है। आधाकल्प के पुराने भक्त ही समझ सकते हैं। भक्ति में जो पीछे आये हैं वह इतना समझ नहीं सकेंगे।

यह भी तुम बच्चे जानते हो, कैसे आकर प्रवेश कर और करके दिखाते हैं। गोया खुद कहते हैं तुम भी ऐसे करो। एक तो अच्छी रीति पढ़ो। बाप को याद करो, दैवीगुण धारण करो। जैसे इनकी आत्मा कहती है। यह भी कहते हैं मैं बाबा को याद करता हूँ। बाबा भी जैसे साथ में है। तुम्हारी बुद्धि में है हम नई दुनिया के मालिक बनने वाले हैं। तो चाल-चलन, खान-पान आदि सब बदलना है। विकारों को छोड़ना है। सुधरना तो है। जैसे-जैसे सुधरेंगे फिर शरीर छोड़ेंगे तो ऊंच कुल में जन्म लेंगे। नम्बरवार कुल के भी होते हैं।

बाप उन पुरुषार्थी बच्चों की बहुत-बहुत महिमा करते हैं जो याद की यात्रा में तीखी दौड़ी लगाने वाले हैं। मुख्य है याद की बात। इससे पुराने हिसाब-किताब चुक्तू होते हैं। कोई-कोई बच्चे बाबा को लिखते हैं-बाबा हम इतने घण्टे रोज याद करता हूँ तो बाबा भी समझते हैं यह बहुत पुरुषार्थी है। पुरूषार्थ तो करना है ना इसलिए बाप कहते हैं आपस में कभी भी लड़ना- झगड़ना नहीं चाहिए। यह तो जानवरों का काम है। लड़ना-झगड़ना यह है देह-अभिमान। बाप का नाम बदनाम कर देंगे। बाप के लिए ही कहा जाता है सतगुरू का निंदक ठौर न पाये। साधुओं ने फिर अपने लिए कह दिया है। तो मातायें उनसे बहुत डरती हैं कि कोई श्राप न मिल जाए। अभी तुम जानते हो हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। सच्ची-सच्ची अमरकथा सुन रहे हैं। कहते हो हम इस पाठशाला में आते हैं श्री लक्ष्मी-नारायण का पद पाने लिए और कहाँ ऐसे कहते नहीं। अभी हम जाते हैं अपने घर। इसमें याद का पुरूषार्थ ही मुख्य है। आधाकल्प याद नहीं किया है। अब एक ही जन्म में याद करना है। यह है मेहनत। याद करना है, दैवीगुण धारण करना है, कोई पाप कर्म किया तो सौ गुणा दण्ड पड़ जायेगा। पुरूषार्थ करना है, अपनी उन्नति करनी है। आत्मा ही

शरीर द्वारा पढ़कर बैरिस्टर वा सर्जन आदि बनती है ना। यह लक्ष्मी-नारायण पद तो बहुत ऊंचा है ना। आगे चल तुमको साक्षात्कार बहुत होंगे। तुम हो सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी। कल्प पहले भी यह ज्ञान तुमको सुनाया था। फिर तुमको सुनाते हैं। तुम सुनकर पद पाते हो। फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। बाकी यह शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के।

बहुत दु:ख के बाद फिर सुख होगा। यह है खूने नाहेक खेल। नेचुरल कैलेमिटीज भी होंगी। इससे पहले बाप से पूरा वर्सा तो लेना चाहिए। भल घूमो फिरो, सिर्फ बाप को याद करते रहो तो पावन बन जायेंगे। बाकी आफतें बहुत आयेंगी। बहुत हाय-हाय करते रहेंगे। तुम बच्चों को अभी ऐसी प्रैक्टिस करनी है जो अन्त में एक शिवबाबा ही याद रहे। उसकी याद में ही रहकर शरीर छोड़ें और कोई मित्र-सम्बन्धी आदि याद न आये। यह प्रैक्टिस करनी है। बाप को ही याद करना है और नारायण बनना है। यह प्रैक्टिस बहुत करनी पड़े। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। और कोई की याद आई तो नापास हुआ। जो पास होते हैं वही विजय माला में पिरोये जायेंगे। अपने से पूछना चाहिए बाप को कितना याद करते हैं? कुछ भी हाथ में होगा तो वह अन्तकाल याद आयेगा। हाथ में नहीं होगा तो याद भी नहीं आयेगा। बाप कहते हैं हमारे पास तो कुछ भी नहीं है। यह हमारी चीज नहीं है। उस नॉलेज के बदले यह लो तो 21 जन्म के लिए वर्सा मिल जायेगा। नहीं तो स्वर्ग की बादशाही गँवा देंगे। तुम यहाँ आते ही हो बाप से वर्सा लेने। पावन तो जरूर बनना पड़े। नहीं तो सजा खाकर हिसाब-किताब चुक्तू कर जायेंगे। पद कुछ नहीं मिलेगा। श्रीमत पर चलेंगे तो कृष्ण को गोद में लेंगे। कहते हैं ना कृष्ण जैसा पति मिले वा बच्चा मिले। कोई तो अच्छी रीति समझते हैं, कोई तो फिर उल्टा-सुल्टा बोल देते हैं।

पावन दुनिया में मनुष्य भी पावन, पतित दुनिया में मनुष्य भी पतित रहते हैं। यह है ही रावण राज्य। यथा राजा- रानी तथा प्रजा। यह सारा ज्ञान है बुद्धि से समझने का। इस समय सभी की

बाप से है विपरीत बुद्धि। तुम बच्चे तो बाप को याद करते हो। अन्दर में बाप के लिए प्यार है। आत्मा में बाप के लिए प्यार है, रिगार्ड है क्योंकि बाप को जानते हैं। यहाँ तुम सम्मुख हो। शिवबाबा से सुन रहे हो। वह मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, आनंद का सागर है। गीता ज्ञान दाता परमपिता त्रिमूर्ति शिव परमात्मा वाच।

अभी तुम बच्चों की बुद्धि में बाप के साथ योग रखने से रोशनी आ गई है। बाप कहते हैं जितना याद में रहेंगे उतना लाइट बढ़ती जायेगी। याद से आत्मा पवित्र बनती है। लाइट बढ़ती जाती है। याद ही नहीं करेंगे तो लाइट मिलेगी नहीं। याद से लाइट वृद्धि को पायेगी। याद नहीं किया और कोई विकर्म कर लिया तो लाइट कम हो जायेगी। तुम पुरूषार्थ करते हो सतोप्रधान बनने का। यह बड़ी समझने की बातें हैं। याद से ही तुम्हारी आत्मा पवित्र होती जायेगी।

अभी तुम बच्चे जानते हो बाप हमको हेवन ले जाने के लिए ऐसा गुणवान बनाते हैं। मुख्य फुरना ही यह रखना है कि हम सतोप्रधान कैसे बनें? बाप ने बताया है मामेकम् याद करो। चलते फिरते काम करते बुद्धि में यह याद रहे। आशिक- माशुक भी कर्म तो करते हैं ना। भक्ति में भी कर्म तो करते हैं ना। बुद्धि में उनकी याद रहती है। याद करने के लिए माला फेरते हैं। बाप भी घड़ी- घड़ी कहते हैं मुझ बाप को याद करो। सर्वव्यापी कह देते तो फिर याद किसको करेंगे? बाप समझाते हैं तुम कितने नास्तिक बन गये हो। बाप को ही नहीं जानते हो। कहते भी हो ओ गॉड फादर। परन्तु वह है कौन, यह ज़रा भी पता नहीं है। आत्मा कहती है ओ गॉड फादर।

बहुत करके मातायें ही लिखती हैं-बाबा हमको यह बहुत तंग करते हैं, हम क्या करें? अरे, तुम कोई जानवर थोड़ेही हो जो जबरदस्ती करेंगे। अन्दर में दिल है तब पूछती हो क्या करूँ! इसमें

तो पूछने की भी बात नहीं है। आत्मा अपना मित्र है, अपना ही शत्रु है। जो चाहे सो करे। पूछना माना दिल है। मुख्य बात है याद की। याद से ही तुम पावन बनते हो। यह लक्ष्मी-नारायण नम्बरवन पावन हैं ना। मम्मा कितनी सर्विस करती थी। ऐसा तो कोई कह न सके हम मम्मा से भी होशियार हैं। मम्मा ज्ञान में सबसे तीखी थी। योग की कमी बहुतों में है। याद में रह नहीं सकते हैं। याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे! लॉ कहता है पिछाड़ी में याद में ही शरीर छोड़ना है। शिवबाबा की याद में ही प्राण तन से निकलें। एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये। कहाँ भी आसक्ति न हो। यह प्रैक्टिस करनी होती है, हम अशरीरी आये थे फिर अशरीरी होकर जाना है। बच्चों को बार-बार समझाते रहते हैं। बहुत मीठा बनना है। दैवीगुण भी होने चाहिए। देह-अभिमान का भूत होता है ना। अपने पर बहुत ध्यान रखना है। बहुत प्यार से चलना है। बाप को याद करो और चक्र को याद करो। चक्र का राज़ किसको समझाया तो भी वन्डर खायेंगे। 84 जन्मों की ही किसको याद नहीं रहती है तो 84 लाख फिर कैसे कोई याद कर सके? ख्याल में भी आ न सके, इस चक्र को ही बुद्धि में याद रखो तो भी अहो सौभाग्य। अभी यह नाटक पूरा होता है। पुरानी दुनिया से वैराग्य होना चाहिए, बुद्धियोग शान्तिधाम-सुखधाम में रहे। गीता में भी है मनमनाभव। कोई भी गीतापाठी मनमनाभव का अर्थ नहीं जानते हैं। तुम बच्चे जानते हो-भगवानुवाच, देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। किसने कहा? कृष्ण भगवान थोड़ेही है। कोई फिर कहते हम तो शास्त्रों को ही मानते हैं। भल भगवान आये तो भी नहीं मानेंगे। बरोबर शास्त्र पढ़ते रहते हैं। भगवान आये हैं राजयोग सिखला रहे हैं, स्थापना हो रही है, यह शास्त्र आदि सब हैं ही भक्तिमार्ग के। भगवान का निश्चय हो तो वर्सा लेने लग पड़े, फिर भक्ति भी उड़ जाए। परन्तु जब निश्चय हो ना।

कोई- कोई बच्चे बाप के सामने बैठे ध्यान में चले जाते हैं, यह भी टाइम वेस्ट हुआ ना। कमाई तो नहीं हुई। बाप तो कहते हैं याद में रहो, जिससे विकर्म विनाश हों। ध्यान में जाने से बुद्धि में

बाप की याद नहीं रहती है। इन सब बातों में बहुत घोटाला है। तुमको तो आंखे बन्द भी नहीं करनी है। याद में बैठना है ना। आंखें खोलने से डरना नहीं चाहिए। आंखे खुली हों। बुद्धि में माशुक ही याद हो। आंखे बन्द करके बैठना, यह कायदा नहीं। बाप कहते हैं याद में बैठो। ऐसे थोड़ेही कहते हैं आंखे बन्द करो। आंख बन्द कर, कांध ऐसे नीचे कर बैठेंगे तो बाबा कैसे देखेंगे। आंखे कभी बन्द नहीं करनी चाहिए। आंखे बन्द हो जाती है तो कुछ दाल में काला होगा, और कोई को याद करते होंगे। बाप तो कहते हैं और कोई मित्र- सम्बन्धियों आदि को याद किया तो तुम सच्चे आशिक नहीं ठहरे। सच्चा आशिक बनेंगे तब ही ऊंच पद पायेंगे। मेहनत सारी याद में है। देह- अभिमान में बाप को भूलते हैं, फिर धक्के खाते रहते हैं और बहुत मीठा भी बनना चाहिए। वातावरण भी मीठा हो, कोई आवाज़ नहीं। कोई भी आये तो देखे- बात कितनी मीठी करते हैं। बहुत साइलेन्स होनी चाहिए। कुछ भी लड़ना- झगड़ना नहीं। नहीं तो जैसे बाप, टीचर, गुरू तीनों की निंदा कराते हैं। वह फिर पद भी बहुत कम पायेंगे। बच्चों को अब समझ तो मिली है। बाप कहते हैं हम तुमको पढ़ाते हैं ऊंच पद पाने। पढ़कर फिर औरों को पढ़ाना है। खुद भी समझ सकते हैं, हम तो कोई को सुनाते नहीं हैं तो क्या पद पायेंगे! प्रजा नहीं बनायेंगे तो क्या बनेंगे! योग नहीं, ज्ञान नहीं तो फिर जरूर पढ़े हुए के आगे भरी ढोनी पड़ेगी। अपने को देखना चाहिए इस समय नापास हुए, कम पद पाया तो कल्प- कल्पान्तर कम पद हो जायेगा। बाप का काम है समझाना, नहीं समझेंगे तो अपना पद भ्रष्ट करेंगे। कैसे किसको समझाना चाहिए- वह भी बाबा समझाते रहते हैं। जितना थोड़ा और आहिस्ते बोलेंगे उतना अच्छा है। बाबा सर्विस करने वालों की महिमा भी करते हैं ना। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं तो बाबा की दिल पर चढ़ते हैं। सर्विस से ही तो दिल पर चढ़ेंगे ना। याद की यात्रा भी जरूर चाहिए तब ही सतोप्रधान बनेंगे। सजा जास्ती खायेंगे तो पद कम हो जायेगा। पाप भस्म नहीं होते हैं तो सजा बहुत खानी पड़ती है, पद भी कम हो जाता है। उसको घाटा कहा जाता है। यह भी व्यापार है ना। घाटे में नहीं जाना चाहिए। दैवीगुण धारण करो। ऊंच बनना चाहिए। बाबा उन्नति के लिए

किस्म- किस्म की बातें सुनाते हैं, अब जो करेंगे सो पायेंगे। तुमको परिस्तानी बनना है, गुण भी ऐसे धारण करने हैं।

बाबा समझाते हैं - बच्चों पर माया का वार होता रहता है, अभी तक कर्मातीत अवस्था को कोई ने पाया नहीं हैं। पुरुषार्थ करते- करते अन्त में तुम एक बाबा की याद में सदैव हर्षित रहेंगे। कोई मुरझाइस नहीं आयेगी। अभी तो सिर पर पापों का बोझा बहुत है। वह याद से ही उतरेगा। बाप ने पुरुषार्थ की युक्तियां बतलाई हैं। याद से ही पाप कटते हैं। बहुत बुद्धू हैं जो याद में न रहने कारण फिर नाम- रूप आदि में फँस पड़ते हैं। हर्षितमुख हो किसको ज्ञान समझायें, वह भी मुश्किल हैं। आज किसको समझाया, कल फिर घुटका आने से खुशी गुम हो जाती है। समझना चाहिए यह माया का वार होता है। इसलिए पुरुषार्थ कर बाप को याद करना है। बाकी रोना, पीटना वा बेहाल नहीं होना है। समझना चाहिए माया पादर (जूता) मारती है इसलिए पुरुषार्थ कर बाप को याद करना है। बाप की याद से बहुत खुशी रहेगी। मुख से झट वाणी निकलेगी। पतित- पावन बाप कहते हैं कि मुझे याद करो। मनुष्य तो एक भी नहीं जिसको रचता बाप का परिचय हो। मनुष्य होकर और बाप को न जानें तो जानवर से भी बदतर हुआ। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है तो बाप को याद कैसे करें! यही बड़ी भूल है, जो तुमको समझानी है। गीता का भगवान शिवबाबा है, वही वर्सा देते हैं। मुक्ति- जीवनमुक्ति दाता वह है, और धर्म वालों की बुद्धि में बैठता नहीं। वह तो हिसाब- किताब चुक्तू कर वापिस चले जायेंगे। पिछाड़ी में थोड़ा परिचय मिला फिर भी जायेंगे अपने धर्म में। तुमको बाप समझाते हैं तुम देवता थे, अभी फिर बाप को याद करने से तुम देवता बन जायेंगे। विकर्म विनाश हो जायेंगे। फिर भी उल्टे- सुल्टे धन्धे कर लेते हैं। बाबा को लिखते हैं आज हमारी अवस्था मुरझाई हुई है, बाप को याद नहीं किया। याद नहीं करेंगे तो जरूर मुरझायेंगे। यह है ही मुर्दों की दुनिया। सभी मरे पड़े हैं। तुम बाप के बने हो तो बाप का फरमान है- मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएं। यह शरीर तो पुराना तमोप्रधान है। पिछाड़ी तक कुछ न कुछ होता रहेगा। जब तक बाप की याद में

रह कर्मातीत अवस्था को पायें, तब तक माया हिलाती रहेगी, किसको भी छोड़ेगी नहीं। जांच करते रहना चाहिए कि माया कैसे धक्का खिलाती है। भगवान हमको पढ़ाते हैं, यह भूलना क्यों चाहिए। आत्मा कहती है- हमारा प्राणों से प्यारा वह बाप ही है। ऐसे बाप को फिर तुम भूलते क्यों हो! बाप धन देते हैं, दान करने के लिए। प्रदर्शनी- मेले में तुम बहुतों को दान कर सकते हो। आपेही शौक से भागना चाहिए। अभी तो बाबा को ताकीद करनी पड़ती है, (उमंग दिलाना पड़ता है) जाकर समझाओ। उसमें भी अच्छा समझा हुआ चाहिए। देह- अभिमानी का तीर लगेगा नहीं। तलवारें भी अनेक प्रकार की होती हैं ना। तुम्हारी भी योग की तलवार बड़ी तीखी चाहिए। सर्विस का हुल्लास चाहिए। बहुतों का जाकर कल्याण करें। बाप को याद करने की ऐसी प्रैक्टिस हो जाए जो पिछाड़ी में सिवाए बाप के और कोई याद न पड़े, तब ही तुम राजाई पद पायेंगे। अन्तकाल जो अल़फ को सिमरे और फिर नारायण को सिमरे। बाप और नारायण (वर्सा) ही याद करना है। परन्तु माया कम नहीं है। कच्चे तो एकदम ढेर हो पड़ते हैं। उल्टे कर्मों का खाता तब बनता है जब किसी के नाम रूप में फँस पड़ते हैं। एक- दो को प्राइवेट चिट्ठियाँ लिखते हैं। देहधारियों से प्रीत हो जाती है तो उल्टे कर्मों का खाता बन जाता है। बाबा के पास समाचार आते हैं। उल्टा- सुल्टा काम कर फिर कहते हैं बाबा हो गया! अरे, खाता उल्टा तो हो गया ना! यह शरीर तो पलीत है, उनको तुम याद क्यों करते हो। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सदैव खुशी रहे। आज खुशी में हैं, कल फिर मुर्दे बन पड़ते हैं। जन्म- जन्मान्तर नाम- रूप में फँसते आते हैं ना। स्वर्ग में यह बीमारी नाम- रूप की होती नहीं। वहाँ तो मोहजीत कुटुम्ब होता है। जानते हैं हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। वह है ही आत्म- अभिमानी दुनिया। यहाँ है देह- अभिमानी दुनिया। फिर आधा कल्प तुम देही- अभिमानी बन जाते हो। अब बाप कहते हैं देह- अभिमान छोड़ो। देही- अभिमानी होने से बहुत मीठे शीतल हो जायेंगे। ऐसे बहुत थोड़े हैं, पुरुषार्थ कराते रहते हैं कि बाप की याद न भूलो। बाप फरमान करते हैं मुझे याद करो, चार्ट रखो। परन्तु माया चार्ट भी रखने नहीं देती है। ऐसे मीठे बाप को तो कितना याद करना चाहिए। यह तो पतियों का पति, बापों का बाप है ना। बाप को याद कर और फिर दूसरों को भी

आपसमान बनाने का पुरुषार्थ करना है, इसमें दिलचस्पी बहुत अच्छी रखनी चाहिए। सर्विसएबुल बच्चों को तो बाप नौकरी से छुड़ा देते हैं। सरकमस्टांश देख कहेंगे अब इस धन्धे में लग जाओ। एम ऑब्जेक्ट तो सामने खड़ी है। भक्ति मार्ग में भी चित्रों के आगे याद में बैठते हैं ना। तुमको तो सिर्फ आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करना है। विचित्र बन विचित्र बाप को याद करना है। यह मेहनत है। विश्व का मालिक बनना, कोई मासी का घर नहीं है। बाप कहते हैं- मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ, तुमको बनाता हूँ। कितना माथा मारना पड़ता है। सपूत बच्चों को तो आपेही ओना लगा रहेगा, छुट्टी लेकर भी सर्विस में लग जाना चाहिए। कई बच्चों को बन्धन भी है, मोह भी रहता है। बाप कहते हैं तुम्हारी सब बीमारियाँ बाहर निकलेंगी। तुम बाप को याद करते रहो। माया तुमको हटाने की कोशिश करती है। याद ही मुख्य है, रचता और रचना के आदि- मध्य- अन्त का ज्ञान मिला, बाकी और क्या चाहिए। भाग्यवान बच्चे सबको सुख देने का पुरुषार्थ करते हैं, मन्सा, वाचा, कर्मणा किसी को दुःख नहीं देते हैं, शीतल होकर चलते हैं तो भाग्य बनता जाता है। अगर कोई नहीं समझते हैं तो समझा जाता इनके भाग्य में नहीं है। जिनके भाग्य में है वह अच्छी रीति सुनते हैं। अनुभव भी सुनाते हैं ना- क्या- क्या करते थे। अब मालूम पड़ा है, जो कुछ किया उससे दुर्गति ही हुई। सद्गति को तब पायें जब बाप को याद करें। बहुत मुश्किल कोई घण्टा, आधा घण्टा याद करते होंगे। नहीं तो घुटका खाते रहते हैं। बाप कहते हैं आधाकल्प घुटका खाया अब बाप मिला है, स्टूडेन्ट लाइफ है तो खुशी होनी चाहिए ना। परन्तु बाप को घड़ी- घड़ी भूल जाते हैं।

बाप कहते हैं तुम कर्मयोगी हो। वह धन्धा आदि तो करना ही है। नींद भी कम करना अच्छा है। याद से कमाई होगी, खुशी भी रहेगी। याद में बैठना जरूरी है। दिन में तो फुर्सत नहीं मिलती है इसलिए रात को समय निकालना चाहिए। याद से बहुत खुशी रहेगी। किसको बंधन है तो कह सकते हैं हमको तो बाप से वर्सा लेना है, इसमें कोई रोक नहीं सकता। सिर्फ गवर्मेन्ट को जाए

समझाओ कि विनाश सामने खड़ा है, बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। और यह अन्तिम जन्म तो पवित्र रहना है इसलिए हम पवित्र बनते हैं। परन्तु कहेंगे वह जिनको ज्ञान की मस्ती होगी। ऐसे नहीं कि यहाँ आकर फिर देहधारी को याद करते रहें। देह- अभिमान में आकर लड़ना- झगड़ना जैसे क्रोध का भूत हो जाता है। बाबा क्रोध करने वाले की तरफ कभी देखते भी नहीं। सर्विस करने वालों से प्यार होता है। देह- अभिमान की चलन दिखाई पड़ती है। गुल- गुल तब बनेंगे जब बाप को याद करेंगे। मूल बात है यह। एक- दो को देखते बाप को याद करना है। सर्विस में तो हड्डियाँ देनी चाहिए। ब्राह्मणों को आपस में क्षीरखण्ड होना चाहिए। लूनपानी नहीं होना चाहिए। समझ न होने के कारण एक- दो से ऩफरत, बाप से भी ऩफरत लाते रहते हैं। ऐसे क्या पद पायेंगे! तुमको साक्षात्कार होंगे फिर उस समय स्मृति आयेगी- यह हमने ग़फलत की। बाप फिर कह देते हैं तकदीर में नहीं है तो क्या कर सकते हैं।

जो बच्चे ज्ञानी तू आत्मा के साथ साथ योगी नहीं बनते हैं, उनमें देह अभिमान का अंश जरूर होगा। योग के बिगर समझाना कोई काम का नहीं। फिर देह अभिमान में आकर किसी न किसी को तंग करते रहेंगे। बच्चे भाषण अच्छा करते हैं तो समझते हैं हम ज्ञानी तू आत्मा हैं। बाप कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा तो हो परन्तु योग कम है, योग पर पुरुषार्थ बहुत कम है। बाप कितना समझाते हैं चार्ट रखो। मुख्य है ही योग की बात। बच्चों में ज्ञान के समझाने का शौक तो है लेकिन योग नहीं है। तो योग बिगर विकर्म विनाश नहीं होंगे फिर पद क्या पायेंगे! योग में तो बहुत बच्चे फेल हैं। समझते हैं हम 100 प्रतिशत हैं। परन्तु बाबा कहते 2 प्रतिशत हैं। बाबा खुद बतलाते हैं भोजन खाते समय याद में रहता हूँ, फिर भूल जाता हूँ। स्नान करता हूँ तो भी बाबा को याद करता हूँ। भल उनका बच्चा हूँ फिर भी याद भूल जाती है। समझते हो यह तो नम्बरवन में जाने वाला है, जरूर ज्ञान और योग ठीक होगा। फिर भी बाबा कहते हैं योग में बहुत मेहनत है। ट्रायल करके देखो फिर अनुभव सुनाओ। समझो दर्जी कपड़ा सिलाई करते हैं तो देखना चाहिए बाबा की याद में रहता हूँ। बहुत मीठा माशुक है। उनको जितना याद करेंगे तो हमारे विकर्म विनाश

होंगे, हम सतोप्रधान बन जायेंगे। अपने को देखें हम कितना समय याद में रहता हूँ। बाबा को रिजल्ट बतानी चाहिए। याद में रहने से ही कल्याण होगा। बाकी जास्ती समझाने से कल्याण नहीं होगा। समझते कुछ नहीं हैं। अल्फ बिगर काम कैसे चलेगा? एक अल्फ का पता नहीं बाकी तो बिन्दी, बिन्दी हो जाती। अल्फ के साथ बिन्दी देने से फायदा होता है। योग नहीं तो सारा दिन टाइम वेस्ट करते रहते। बाप को तो तरस पड़ता है, यह क्या पद पायेंगे। तकदीर में नहीं है तो बाप भी क्या करें। बाप तो घड़ी घड़ी समझाते हैं दैवीगुण अच्छे रखो, बाप की याद में रहो। याद बहुत जरूरी है। याद से लॅव होगा तब ही श्रीमत पर चल सकेंगे। प्रजा तो ढेर बननी है। तुम यहाँ आये ही हो यह लक्ष्मी नारायण बनने, इसमें मेहनत है। भल स्वर्ग में जायेंगे परन्तु सजायें खाकर फिर पिछाड़ी में आकर पद पायेंगे थोड़ा सा। बाबा तो सब बच्चों को जानते हैं ना। जो बच्चे योग में कच्चे हैं वह देह अभिमान में आकर रूसते और लड़ते झगड़ते रहेंगे। जो पक्के योगी हैं उनकी चलन बड़ी रॉयल शानदार होगी, बहुत थोड़ा बोलेंगे। यज्ञ सर्विस में भी रुचि रहेगी। यज्ञ सर्विस में हड्डियाँ भी चली जाएं। ऐसे ऐसे कोई हैं भी। परन्तु बाबा कहते याद में जास्ती रहो तो बाप से लॅव होगा और खुशी में रहेंगे।

यह बेहद का ड्रामा है, चक्र फिरता रहता है। जैसे रिकार्ड फिरता रहता है ना। हमारी आत्मा में भी ऐसे रिकार्ड भरा हुआ है। छोटी आत्मा में इतना सारा पार्ट भरा हुआ है, इनको ही कुदरत कहा जाता है। देखने में तो कुछ भी नहीं आता है। यह समझ की बातें हैं। मोटी बुद्धि वाले समझ न सके। इनमें हम जो बोलते जाते हैं, टाइम पास होता जाता फिर 5 हज़ार वर्ष बाद रिपीट होगा। ऐसी समझ कोई के पास नहीं। जो महारथी होंगे वह घड़ी घड़ी इन बातों पर ध्यान देकर समझाते रहेंगे इसलिए बाबा कहते हैं पहले पहले तो गांठ बांधो बाप के याद की। बाप कहते हैं मुझे याद करो। आत्मा को अब घर जाना है। देह के सब सम्बन्ध छोड़ देने हैं। जितना हो सके बाप को याद करते रहो। यह पुरुषार्थ है गुप्त। बाबा राय देते हैं, परिचय भी बाप का ही दो। याद

कम करते हैं तो परिचय भी कम देते हैं। पहले तो बाप का परिचय बुद्धि में बैठे। बोलो, अब लिखो बरोबर वह हमारा बाप है। देह सहित सब कुछ छोड़ एक बाप को याद करना है। याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। मुक्तिधाम, जीवनमुक्तिधाम में तो दुःख दर्द होता ही नहीं। दिन प्रतिदिन अच्छी बातें समझाई जाती हैं। आपस में भी यही बातें करो। लायक भी बनना चाहिए ना। ब्राह्मण होकर और बाप की रूहानी सेवा न करे तो क्या काम का। पढ़ाई को तो अच्छी रीति धारण करना चाहिए ना। बाबा जानते हैं बहुत हैं जिनको एक अक्षर भी धारण नहीं होता है। यथार्थ रीति बाप को याद करते नहीं हैं। राजा रानी का पद पाने में मेहनत है। जो मेहनत करेंगे वही ऊंच पद पायेंगे। मेहनत करे तब राजाई में जा सकते। नम्बरवन को ही स्कॉलरशिप मिलती है। यह लक्ष्मी नारायण स्कॉलरशिप लिये हुए हैं।

कल्याण तो सारी दुनिया का होना है। परन्तु नम्बरवार हैं। तुम यहाँ बाप के पास पढ़ने के लिए आये हो। तुम्हारे में भी वह स्टूडेन्ट अच्छे हैं जो पढ़ाई पर ध्यान देते हैं। कोई तो बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं। ऐसे भी बहुत समझते हैं जो भाग्य में होगा। पढ़ाई की एम ही नहीं है। तो बच्चों को याद का चार्ट रखना है। हमको अब वापिस घर जाना है। ज्ञान तो यहाँ ही छोड़ जायेंगे। ज्ञान का पार्ट पूरा हो जाता है। आत्मा इतनी छोटी, उनमें कितना पार्ट है, वन्डर है ना। यह सारा अविनाशी ड्रामा है। ऐसे ऐसे भी तुम अन्तर्मुखी हो अपने से बातें करते रहो तो तुमको बहुत खुशी हो कि बाप आकर ऐसी बातें सुनाते हैं कि आत्मा कब विनाश नहीं होगी। ड्रामा में एक एक मनुष्य का, एक एक चीज़ का पार्ट नूँधा हुआ है। इनको बेअन्त भी नहीं कहेंगे। अन्त तो पाया है परन्तु यह है अनादि। कितनी चीजें हैं। इनको कुदरत कहें! ईश्वर की कुदरत भी नहीं कह सकते। वह कहते हैं हमारा भी इसमें पार्ट है।

बाप का बनने से माया और ही अच्छी खातिरी करती है। रूसतम से रूसतम होकर लड़ती है। देह अभिमान आ जाता है। शिवबाबा से भी मुँह फेर लेते हैं। बाबा को याद करना ही छोड़ देते।

अरे, खाने की फुर्सत है और ऐसा बाबा जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको याद करने की फुर्सत नहीं। अच्छे अच्छे बच्चे शिवबाबा को भूल देह अभिमान में आ जाते हैं। नहीं तो ऐसा बाप जो जीयदान देते हैं, उनको याद करके पत्र तो लिखें। परन्तु यहाँ बात मत पूछो। माया एकदम नाक से पकड़ उड़ा देती है। कदम कदम श्रीमत पर चलें तो कदम में पदम हैं। तुम अनगिनत धनवान बनते हो।

मनुष्य बिल्कुल नर्क में पड़े हैं रात दिन चिंताओं में पड़े रहते हैं। ज्ञान मार्ग में जो आप समान बनाने की सेवा नहीं कर सकते हैं, तेरे मेरे की चिंताओं में रहते हैं वह बीमार रोगी हैं। बाप के सिवाए और किसी को याद किया तो व्यभिचारी हुए ना। बाप कहते हैं और कोई की मत सुनो, मेरे से ही सुनो। मुझे याद करो। देवताओं को याद करें तो भी बेहतर है, मनुष्य को याद करने से कोई फायदा नहीं। यहाँ तो बाप कहते हैं तुम सिर भी क्यों झुकाते हो! तुम इस बाबा के पास भी जब आते हो तो शिवबाबा को याद करके आओ। शिवबाबा को याद नहीं करते हो तो गोया पाप करते हो। बाबा कहते पहले तो पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो। शिवबाबा को याद करो। बहुत परहेज है। बहुत मुश्किल कोई समझते हैं। इतनी बुद्धि नहीं है। बाप से कैसे चलना है, इसमें तो बड़ी मेहनत चाहिए। माला का दाना बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है। मुख्य है बाप को याद करना। तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो। बाप की सर्विस, बाप की याद कितनी चाहिए। बाबा रोज़ कहते हैं पोतामेल निकालो। जिन बच्चों को अपना कल्याण करने का ख्याल रहता है वह हर प्रकार से पूरी पूरी परहेज़ करते रहेंगे। उनका खान पान बड़ा सात्विक होगा।

लिखते हैं कि आज हमारा बुद्धियोग फलाने के नाम रूप में गया, आज यह पाप कर्म हुए। ऐसा सच लिखने वाला कोटों में कोई ही है। बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ मुझे बिल्कुल नहीं

जानते। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करें तब कुछ बुद्धि में बैठे। बाप कहते हैं भल अच्छे अच्छे बच्चे हैं, बहुत अच्छा ज्ञान सुनाते हैं, योग कुछ नहीं। पहचान पूरी है नहीं, समझ नहीं सकते इसलिए किसको समझा नहीं सकते। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र रचता और रचना को बिल्कुल जानते नहीं तो गोया कुछ भी नहीं जानते। यह भी ड्रामा में नूँध है। फिर भी होगा।

- अब बाप आत्माओं को कहते हैं मामेकम् याद करो। यह भी समझ से याद करना है। ऐसे ही शिव शिव तो बहुत कहते रहते हैं। छोटे बच्चे भी कह देते परन्तु बुद्धि में समझ कुछ नहीं। अनुभव से नहीं कहते कि वह बिन्दी है। हम भी इतनी छोटी बिन्दी हैं। ऐसे समझ से याद करना है। पहले तो मैं आत्मा हूँ यह पक्का करो फिर बाप का परिचय बुद्धि में अच्छी रीति धारण करो। अन्तर्मुखी बच्चे ही अच्छी रीति समझ सकते हैं कि हम आत्मा बिन्दी हैं। हमारी आत्मा को अभी नॉलेज मिल रही है कि हमारे में 84 जन्मों का पार्ट कैसे भरा हुआ है, फिर कैसे आत्मा सतोप्रधान बनती है। यह सब बड़ी अन्तर्मुख हो समझने की बातें हैं। इसमें ही टाइम लगता है।

- देह अभिमान में आकर कुछ न कुछ कह देते हैं। यज्ञ से तो बड़े ऑनेस्ट चाहिए। अभी तो बहुत अलबेले हैं। खान, पान, वातावरण कुछ सुधारा नहीं है। अभी तो बहुत टाइम चाहिए। सर्विसएबुल बच्चों को ही बाबा याद करते हैं, पद भी वही पा सकेंगे। ऐसे ही अपने को सिर्फ खुश करना, वह तो चना चबाना है। इसमें बड़ी अन्तर्मुखता चाहिए। समझाने की भी युक्ति चाहिए। प्रदर्शनी में कोई समझते थोड़ेही हैं। सिर्फ कह देते कि आपकी बातें ठीक हैं।

- बच्चों को अपना घर और अपनी राजधानी याद है? यहाँ जब बैठते हो तो बाहर के घरघाट, धन्धे धोरी आदि के ख्यालात नहीं आने चाहिए। बस अपना घर ही याद आना है। अब इस

पुरानी दुनिया से नई दुनिया में रिटर्न है, यह पुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी है। सब स्वाहा हो जायेगा आग में। जो कुछ इन ऑखों से देखते हो, मित्र सम्बन्धी आदि यह सब खत्म हो जाना है। यह ज्ञान बाप ही रूहों को समझाते हैं। बच्चों, अब वापिस अपने घर चलना है। नाटक पूरा होता है। यह है ही 5 हज़ार वर्ष का चक्र।

बाप कहते हैं ड्रामा से कोई निकल जाए, दूसरा कोई एड हो जाए यह हो नहीं सकता। इतना सारा ज्ञान सबकी बुद्धि में रह नहीं सकता। सारा दिन ऐसे ज्ञान में रमण करना है। एक घड़ी आधी घड़ी....... यह याद करो फिर उनको बढ़ाते जाओ। 8 घण्टा भल स्थूल सर्विस करो, आराम भी करो, इस रूहानी गवर्नमेन्ट की सर्विस में भी टाइम दो। तुम अपनी ही सर्विस करते हो, यह है मुख्य बात। याद की यात्रा में रहो, बाकी ज्ञान से ऊंच पद पाना है। याद का अपना पूरा चार्ट रखो। ज्ञान तो सहज है। जैसे बाप की बुद्धि में है कि मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ, इनके आदि मध्य अन्त को जानता हूँ। हम भी बाबा के बच्चे हैं।

“हे शिवबाबा” कहना यह पुकार का शब्द है। तुमको हे शब्द नहीं कहना है। बाप को याद करना है। चिल्लाया तो गोया भक्ति का अंश आ गया। हे भगवान कहना भी भक्ति की आदत है। बाबा ने थोड़ेही कहा है हे भगवान कहकर याद करो। अन्तर्मुख हो मुझे याद करो। सिमरण भी नहीं करना है। सिमरण भी भक्ति मार्ग का अक्षर है। तुमको बाप का परिचय मिला, अब बाप की श्रीमत पर चलो। ऐसे बाप को याद करो जैसे लौकिक बच्चे देहधारी बाप को याद करते हैं। खुद भी देह अभिमान में हैं तो याद भी देहधारी बाप को करते हैं। पारलौकिक बाप तो है ही देही अभिमानी। इसमें आते हैं तो भी देह अभिमानी नहीं होते।

तुम बच्चों को अपनी आत्म-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए बहुत प्रैक्टिस करनी है - मैं आत्मा हूँ, अपने भाई (आत्मा) को बाप का सन्देश सुनाता हूँ, हमारा भाई इन आरगन्स द्वारा सुनता है, ऐसी अवस्था जमाओ। बाप को याद करते रहो तो विकर्म विनाश होते रहेंगे। खुद को भी आत्मा समझो, उनको भी आत्मा समझो तब पक्की आदत हो जाये, यह है गुप्त मेहनत। अन्तर्मुख हो इस अवस्था को पक्का करना है। जितना समय निकाल सको उतना इसमें लगाओ। 8 घण्टा तो धंधा आदि भल करो। नींद भी करो। बाकी इसमें लगाओ। 8 घण्टा तक पहुँचना है, तब तुमको बहुत खुशी रहेगी। पतित- पावन बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। ज्ञान तुमको अभी ही संगम पर मिलता है। महिमा सारी इस संगमयुग की है, जबकि बाप बैठ तुमको ज्ञान समझाते हैं। इसमें स्थूल कोई बात नहीं। यह जो तुम लिखते हो वह सब खत्म हो जायेगा। नोट भी इसलिए करते हैं तो प्वाइंट्स नोट होने से याद रहेगी। कोई की बुद्धि तीखी होती है तो बुद्धि में याद रहती है। नम्बरवार तो हैं ना। मुख्य बात, बाप को याद करना है और सृष्टि चक्र को याद करना है। कोई विकर्म नहीं करना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। पवित्र जरूर बनना है। कई गन्दे ख्यालात वाले बच्चे समझते हैं-हमको यह फलानी बहुत अच्छी लगती है, इनसे हम गन्धर्वी विवाह कर लें। परन्तु यह गन्धर्वी विवाह तो तब कराते हैं जबकि मित्र- सम्बन्धी आदि बहुत तंग करते हैं, तो उनको बचाने लिए। ऐसे थोड़ेही सब कहेंगे हम गन्धर्वी विवाह करेंगे। वह कभी रह नहीं सकेंगे। पहले दिन ही जाकर गटर में पड़ेंगे।

यह किसने कहा? बेहद के बाप ने कहा हे आत्मायें। प्राणी माना आत्मा। कहते हैं ना-आत्मा निकल गई यानी प्राण निकल गये। अब बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं हे आत्मायें याद करो, सिर्फ इस जन्म को नहीं देखना है परन्तु जबसे तुम तमोप्रधान बने हो, तो सीढ़ी नीचे उतरते पतित बने हो। तो जरूर पाप किये होंगे। अब समझ की बात है। कितना जन्म-जन्मान्तर का पाप सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े। अपने को देखना है हमारा योग कितना लगता है!

बाप के साथ जितना योग अच्छा लगेगा उतना विकर्म विनाश होंगे। बाबा ने कहा है मेरे को याद करो तो गैरन्टी है तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अपनी दिल अन्दर हर एक देखे हमारा बाप के साथ कितना योग रहता है? जितना हम योग लगायेंगे, पवित्र बनेंगे, पाप कटते जायेंगे, योग बढ़ता जायेगा। पवित्र नहीं बनेंगे तो योग भी लगेगा नहीं। ऐसे भी कई हैं जो सारे दिन में 15 मिनट भी याद में नहीं रहते हैं। अपने से पूछना चाहिए-मेरी दिल शिवबाबा से है या देहधारी से? कर्म सम्बन्धियों आदि से है? माया तूफान में तो बच्चों को ही लायेगी ना! खुद भी समझ सकते हैं मेरी अवस्था कैसी है? शिवबाबा से दिल लगती है या कोई देहधारी से है? कर्म सम्बन्धियों आदि से है तो समझना चाहिए हमारे विकर्म बहुत हैं। जो माया खड्डे में डाल देती है। स्टूडेन्ट अन्दर में समझ सकते हैं, हम पास होंगे या नहीं? अच्छी रीति पढ़ते हैं या नहीं? नम्बरवार तो होते हैं ना। आत्मा को अपना कल्याण करना है। बाप डायरेक्शन देते हैं, अगर तुम पुण्य आत्मा बन ऊंच पद पाना चाहते हो तो उसमें पवित्रता है फर्स्ट। आये भी पवित्र फिर जाना भी पवित्र बनकर है, पतित कभी ऊंच पद पा न सकें। सदैव अपनी दिल से पूछना चाहिए-हम कितना बाप को याद करते हैं, हम क्या करते हैं? यह तो जरूर है पिछाड़ी में बैठे हुए स्टूडेन्ट की दिल खाती है। पुरुषार्थ करते हैं ऊंच पद पाने के लिये। परन्तु चलन भी चाहिए ना। बाप को याद कर अपने सिर से पापों का बोझा उतारना है। पापों का बोझा सिवाए याद के हम उतार ही नहीं सकते। तो कितना बाप के साथ योग होना चाहिए। ऊंच ते ऊंच बाप आकर कहते हैं मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। टाइम नजदीक आता जाता है। शरीर पर भरोसा नहीं है। अचानक ही कैसे-कैसे एक्सीडेंट हो जाते हैं। अकाले मृत्यु की तो फुल सीजन है। तो हर एक को अपनी जांच कर अपना कल्याण करना है। सारे दिन का पोतामेल देखना चाहिए-योग और चलन का। हमने सारे दिन में कितने पाप किये? मन्सा, वाचा में पहले आते हैं फिर कर्मणा में आते हैं। अब बच्चों को राइटियस बुद्धि मिली है कि हमको अच्छे काम करने हैं। किसको धोखा तो नहीं दिया? फालतू झूठ तो नहीं बोला? डिस सर्विस तो नहीं की? कोई किसी के नाम- रूप में फँसते हैं तो यज्ञ पिता की निंदा कराते हैं।

बाप कहते हैं किसको भी दुःख न दो। एक बाप की याद में रहो। यह बहुत जबरदस्त फिकरात मिली हुई है। अगर हम याद में नहीं रह सकते हैं तो क्या गति होगी! इस समय ग़फलत में रहेंगे तो पिछाड़ी को बहुत पछताना पड़ेगा। यह भी समझते हैं जो हल्का पद पाने वाले हैं, वह हल्का पद ही पायेंगे। बुद्धि से समझ सकते हैं हमको क्या करना है। सबको यही मत्र देना है कि बाप को याद करो। लक्ष्य तो बच्चों को मिला है। इन बातों को दुनिया वाले समझ नहीं सकते। पहली- पहली मुख्य बात है ही बाप को याद करने की। रचयिता और रचना की नॉलेज तो मिल गई। रोज़-रोज़ कोई न कोई नई- नई प्वाइंट्स भी समझाने के लिए दी जाती हैं। जैसे विराट रूप का चित्र है, इस पर भी तुम समझा सकते हो। कैसे वर्णों में आते हैं-यह भी सीढ़ी के बाजू में रखने का चित्र है। सारा दिन बुद्धि में यही चिन्तन रहे कि कैसे किसको समझाऊं? सर्विस करने से भी बाप की याद रहेगी। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। अपना भी कल्याण करना है। बाप ने समझाया है तुम्हारे पर 63 जन्मों के पाप हैं। पाप करते-करते सतोप्रधान से तमोप्रधान बन पड़े हो। अब मेरा बनकर फिर कोई पाप कर्म नहीं करो। झूठ, शैतानी, घर फिटाना, सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करना-यह धूतीपना बड़ा नुकसानकारक है। बाप से योग ही तुड़ा देता है, तो कितना पाप हो गया। गवर्मेन्ट के भी धूते होते हैं, गवर्मेन्ट की बात किसी दुश्मन को सुनाए बड़ा नुकसान करते हैं।

बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो, बाप को याद करो। बस अब तो हम गये। आधाकल्प के रोग से हम छूटते हैं। वहाँ तो है ही निरोगी काया। भक्ति कितनी अच्छी लगती है। ज्ञान से 3 कोस दूर भागते हैं। अरे, पावन बनना तो अच्छा है, अब पावन दुनिया की स्थापना, पतित दुनिया का विनाश होना है। परन्तु बिल्कुल सुनते नहीं। बाप का डायरेक्शन है-हियर नो ईविल....... माया फिर कहती है हियर नो बाबा की बातें। माया का डायरेक्शन है शिवबाबा

का ज्ञान मत सुनो। ऐसा जोर से माया चमाट मारती है जो बुद्धि में ठहरता नहीं। बाप को याद कर ही नहीं सकते। मित्र सम्बन्धी, देहधारी याद आ जाते हैं। बाबा की आज्ञा नहीं मानते। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और फिर नाफरमानबरदार बन कहते हैं हमको फलाने की याद आती है। याद आयेगी तो गिर पड़ेंगे। इन बातों से तो ऩफरत आनी चाहिए। यह बिल्कुल ही छी-छी दुनिया है। हमारे लिए तो नया स्वर्ग स्थापन हो रहा है। तुम बच्चों को बाप का और सृष्टि चक्र का परिचय मिला है तो उस पढ़ाई में ही लग जाना चाहिए। बाप कहते हैं अपने अन्दर को देखो। नारद का भी मिसाल है ना। तो बाप भी कहते हैं-अपने को देखो, हम बाप को याद करते हैं? याद से ही पाप भस्म होंगे। कोई भी हालत में याद शिवबाबा को करना है, और कोई से लव नहीं रखना है। अन्त में शिवबाबा की याद हो तब प्राण तन से निकलें। शिवबाबा की याद हो और स्वदर्शन चक्र का ज्ञान हो। स्वदर्शन चक्रधारी कौन है, यह भी किसको पता थोड़ेही है। ब्राह्मणों को भी यह नॉलेज किसने दी? ब्राह्मणों को यह स्वदर्शन चक्रधारी कौन बनाते हैं? परमपिता परमात्मा बिन्दी।

शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं। करनकरावनहार है ना। तुम भी सीखो, सिखलाओ। बाप पढ़ाते हैं फिर कहते हैं औरों को भी पढ़ाओ। तो शिवबाबा ही तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। कहते हैं मुझे सृष्टि चक्र का नॉलेज है तब तो सुनाता हूँ। तो 84 जन्म कैसे लेते हो-यह 84 जन्मों की कहानी बुद्धि में रहनी चाहिए। यह बुद्धि में रहे तो भी चक्रवर्ती राजा बन सकते हैं। यह है ज्ञान। बाकी योग से ही पाप कटते हैं। सारे दिन का पोतामेल निकालो। याद ही नहीं करेंगे तो पोतामेल भी क्या निकालेंगे! सारे दिन में क्या-क्या किया-यह तो याद रहता है ना। ऐसे भी मनुष्य हैं, अपना पोतामेल निकालते हैं-कितने शास्त्र पढ़े, कितना पुण्य किया? तुम तो कहेंगे-कितना समय याद किया? कितना खुशी में आकर बाप का परिचय दिया?

- बाप द्वारा जो प्वाइंट्स मिली हैं, उनका घड़ी-घड़ी मंथन करो। जो ज्ञान मिला है उसे बुद्धि में याद रखो, रोज़ मुरली पढ़ो। वह भी बहुत अच्छा है। मुरली में जो प्वाइंट्स हैं उनको घड़ी-घड़ी मंथन करना चाहिए। यहाँ रहने वालों से भी बाहर विलायत में रहने वाले जास्ती याद में रहते हैं। कितनी बांधेलियाँ हैं, बाबा को कभी देखा भी नहीं है, याद कितना करती हैं, नशा चढ़ा रहता है। घर बैठे साक्षात्कार होता है या अनायास सुनते-सुनते निश्चय हो जाता है।

- तुम बच्चों में भी जिनको ऊंच मर्तबा लेना है वह जास्ती याद में रहने का पुरूषार्थ करते हैं और समाचार भी लिखते हैं कि बाबा हम इतना समय याद में रहता हूँ। कई तो पूरा समाचार लज्जा के मारे देते नहीं। समझते हैं बाबा क्या कहेंगे। परन्तु मालूम तो पड़ता है ना। स्कूल में टीचर स्टूडेन्ट्स को कहेंगे ना कि तुम अगर पढ़ेंगे नहीं तो फेल हो जायेंगे। लौकिक माँ-बाप भी बच्चे की पढ़ाई से समझ जाते हैं, यह तो बहुत बड़ा स्कूल है। यहाँ तो नम्बरवार बिठाया नहीं जाता है। बुद्धि से समझा जाता है, नम्बरवार तो होते ही हैं ना।

- आजकल तो नई-नई इन्वेन्शन भी निकालते रहते हैं। मकान बनाने की साइन्स का भी ज़ोर है, सब कुछ तैयार मिलता है, झट फ्लैट तैयार। बहुत जल्दी-जल्दी बनते हैं तो यह सब वहाँ काम में तो आते हैं ना। यह सब साथ चलने हैं। संस्कार तो रहते हैं ना। यह साइंस के संस्कार भी चलेंगे। तो अब बाप बच्चों को समझाते रहते हैं, पावन बनना है तो बाप को याद करो। बाप भी गुडॅमार्निंग कर फिर शिक्षा देते हैं। बच्चे बाप की याद में बैठे हो? चलते फिरते बाप को याद करो क्योंकि जन्म-जन्मान्तर का सिर पर बोझा है। सीढ़ी उतरते-उतरते 84 जन्म लेते हैं। अभी फिर एक जन्म में चढ़ती कला होती है। जितना बाप को याद करते रहेंगे उतना खुशी भी होगी, ताकत मिलेगी। बहुत बच्चे हैं जिनको आगे नम्बर में रखा जाता है परन्तु याद में बिल्कुल रहते नहीं हैं। भल ज्ञान में तीखे हैं परन्तु याद की यात्रा है नहीं। बाप तो बच्चों की महिमा करते हैं।

यह भी नम्बरवन में है तो जरूर मेहनत भी करते होंगे ना। तुम हमेशा समझो कि शिवबाबा समझाते हैं तो बुद्धियोग वहाँ लगा रहेगा। यह भी सीखता तो होगा ना। फिर भी कहते हैं बाबा को याद करो। किसको भी समझाने के लिए चित्र हैं। भगवान कहा ही जाता है निराकार को। वह आकर शरीर धारण करते हैं। एक भगवान के बच्चे सब आत्मायें भाई-भाई हैं। अभी इस शरीर में विराजमान हैं। सभी अकालमूर्त हैं।

- रूहानी बच्चों को यह तो अब निश्चय है कि हमको आत्म-अभिमानी बनना है और बाप को याद करना है। माया रूपी रावण जो है वह श्रापित, दुःखी बना देता है। श्राप अक्षर ही दुःख का है, वर्सा अक्षर सुख का है। जो बच्चे व़फादार, फरमानबरदार हैं, वह अच्छी रीति जानते हैं। जो नाफरमानबरदार है, वह बच्चा है नहीं। भल अपने को कुछ भी समझें परन्तु बाप की दिल पर चढ़ नहीं सकते, वर्सा पा नहीं सकते। जो माया के कहने पर चलते और बाप को याद भी नहीं करते, किसको समझा नहीं सकते। गोया अपने को आपेही श्रापित करते हैं। बच्चे जानते हैं माया बड़ी जबरदस्त है। अगर बेहद के बाप की भी नहीं मानते हैं तो गोया माया की मानते हैं। माया के वश हो जाते हैं। कहावत है ना-प्रभू की आज्ञा सिर माथे। तो बाप कहते हैं बच्चे, पुरुषार्थ कर बाप को याद करो तो माया की गोद से निकल प्रभू की गोद में आ जायेंगे। बाप तो बुद्धिवानों का बुद्धिवान है। बाप की नहीं मानेंगे तो बुद्धि को ताला लग जायेगा। ताला खोलने वाला एक ही बाप है। श्रीमत पर नहीं चलते तो उनका क्या हाल होगा। माया की मत पर कुछ भी पद पा नहीं सकेंगे। भल सुनते हैं परन्तु धारणा नहीं कर सकते हैं, न करा सकते तो उसका क्या हाल होगा! बाप तो गरीब निवाज़ हैं।

- तुम बच्चों को चित्रों पर समझाने की भी बहुत अच्छी प्रैक्टिस करनी है। बाप सब सेन्टर्स के बच्चों को समझाते रहते हैं, नम्बरवार तो हैं ना। कई बच्चे राजाई पद पाने का पुरुषार्थ नहीं

करते तो प्रजा में क्या जाकर बनेंगे! सर्विस नहीं करते, अपने पर तरस नहीं आता है कि हम क्या बनेंगे फिर समझा जाता है ड्रामा में इनका पार्ट इतना है। अपना कल्याण करने के लिए ज्ञान के साथ-साथ योग भी हो। योग में नहीं रहते तो कुछ भी कल्याण नहीं होता। योग बिगर पावन बन नहीं सकते। ज्ञान तो बहुत सहज है परन्तु अपना कल्याण भी करना है। योग में न रहने से कुछ भी कल्याण होता नहीं। योग बिगर पावन कैसे बनेंगे? ज्ञान अलग चीज़ है, योग अलग चीज़ है। योग में बहुत कच्चे हैं। याद करने का अक्ल ही नहीं आता। तो याद बिगर विकर्म कैसे विनाश हों। फिर सजा बहुत खानी पड़ती है, बहुत पछताना पड़ता है। वह स्थूल कमाई नहीं करते तो कोई सजा नहीं खाते हैं, इसमें तो पापों का बोझा सिर पर है, उसकी बहुत सजा खानी पड़े। बच्चे बनकर और बेअदब होते हैं तो बहुत सजा मिल जाती है। बाप तो कहते हैं-अपने पर रहम करो, योग में रहो। नहीं तो मुफ्त अपना घात करते हैं। जैसे कोई ऊपर से गिरता है, मरा नहीं तो हॉस्पिटल में पड़ा रहेगा, चिल्लाता रहेगा। नाहेक अपने को धक्का दिया, मरा नहीं, बाकी क्या काम का रहा। यहाँ भी ऐसे है। चढ़ना है बहुत ऊंचा। श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो गिर पड़ते हैं। आगे चल हर एक अपने पद को देख लेंगे कि हम क्या बनते हैं? जो सर्विसएबुल, आज्ञाकारी होंगे, वही ऊंच पद पायेंगे। नहीं तो दास-दासी आदि जाकर बनेंगे।

बाप कहते हैं कभी कुदृष्टि नहीं रहनी चाहिए। सर्विस नही करते, बाप को याद नहीं करते तो जरूर कुछ न कुछ गन्दगी है। जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनका नाम भी बाला होता है। थोड़ा भी संकल्प आये, कुदृष्टि जाये तो समझना चाहिए माया का वार होता है। एकदम छोड़ देना चाहिए। नहीं तो वृद्धि को पाए नुकसान कर देंगे। बाप को याद करेंगे तो बचते रहेंगे। बाबा सब बच्चों को सावधान करते हैं-खबरदार रहो, कहाँ अपने कुल का नाम बदनाम नहीं करो। कोई गन्धर्वी विवाह कर इकट्ठे रहते हैं तो कितना नाम बाला करते हैं, कोई फिर गन्दे बन पड़ते हैं। यहाँ तुम आये हो अपनी सद्गति करने, न कि बुरी गति करने। बुरे ते बुरा है काम, फिर क्रोध।

आते हैं बाप से वर्सा लेने लिए परन्तु माया वार कर श्राप दे देती है तो एकदम गिर पड़ते हैं। गोया अपने को श्राप दे देते हैं। तो बाप समझाते हैं बड़ी सम्भाल रखनी है, कोई ऐसा आये तो उनको एकदम रवाना कर देना चाहिए। दिखाते भी हैं ना-अमृत पीने आये फिर बाहर जाकर असुर बन गन्द किया। वह फिर यह ज्ञान सुना न सकें। ताला बंद हो जाता है। बाप कहते हैं अपनी सर्विस पर ही तत्पर रहना चाहिए। बाप की याद में रहते-रहते पिछाड़ी को चले जाना है घर। गीत भी है ना-रात के राही थक मत जाना....... आत्मा को घर जाना है। आत्मा ही राही है। आत्मा को रोज़ समझाया जाता है अब तुम शान्तिधाम जाने के राही हो। तो अब बाप को, घर को और वर्से को याद करते रहो। अपने को देखना है माया कहाँ धोखा तो नहीं देती है? मैं अपने बाप को याद करता हूँ?

बच्चे, तुम्हें अपने को पूरा सम्भालना है। कभी आवेश आदि न आये, योगयुक्त पक्का चाहिए। बाप ने समझाया है वास्तव में तुम सब वानप्रस्थी हो, वाणी से परे अवस्था वाले। वानप्रस्थी अर्थात् वाणी से परे घर को और बाप को याद करने वाले। इसके सिवाए और कोई तमन्ना नहीं। हमको अच्छे कपड़े चाहिए, यह सब हैं छी-छी तमन्नायें। देह-अभिमान वाले सर्विस कर नहीं सकेंगे। देही-अभिमानी बनना पड़े। भगवान के बच्चों को तो माइट चाहिए। वह है योग की। बाबा तो सभी बच्चों को जान सकते हैं ना। बाबा झट बता देंगे, यह-यह खामियां निकालो।

बाप ने भी अनपढ़ों को आकर उठाया है। आजकल फीमेल को आगे रखते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं की सगाई परमात्मा के साथ हुई है। तुम बड़े खुश होते हो-हम तो विष्णुपुरी के मालिक जाकर बनेंगे। कन्या का बिगर देखे भी बुद्धियोग लग जाता है ना। यह भी आत्मा जानती है-यह आत्मा और परमात्मा की सगाई वन्डरफुल है। एक बाप को ही याद करना पड़े।

वह तो कहेंगे गुरू को याद करो, फलाना मत्र याद करो। यह तो बाप ही सब कुछ है। इन द्वारा आकर सगाई कराते हैं। कहते हैं मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, मेरे से वर्सा मिलता है। कन्या की सगाई होती है तो फिर भूलती नहीं है। तुम फिर भूल क्यों जाते हो? कर्मातीत अवस्था को पाने में टाइम लगता है। कर्मातीत अवस्था को पाकर वापिस तो कोई जा न सके। जब साजन पहले चले फिर बरात जाये। शंकर की बात नहीं, शिव की बरात है। एक है साजन बाकी सब हैं सजनियां। तो यह है शिवबाबा की बरात।

भक्ति मार्ग में भी गॉड फादर को याद करते हैं कि हमारे दु:ख हरो सुख दो। तो तुम बच्चों की बुद्धि में भी स्मृति रहनी चाहिए। स्कूल में स्टूडेन्ट्स की बुद्धि में नॉलेज रहती है, न कि घर बार। स्टूडेन्ट लाइफ में धंधे-धोरी की बात रहती नहीं। स्टडी ही याद रहती है। यहाँ तो फिर कर्म करते, गृहस्थ व्यवहार में रहते, बाप कहते हैं यह स्टडी करो। ऐसे नहीं कहते कि सन्यासियों के मुआफिक घरबार छोड़ो। यह है ही राजयोग। यह प्रवृत्ति मार्ग है। सन्यासियों को भी तुम कह सकते हो कि तुम्हारा है हठयोग। तुम घरबार छोड़ते हो, यहाँ वह बात नहीं है। यह दुनिया ही कैसी गंदी है। क्या लगा पड़ा है! गरीब आदि कैसे रहे पड़े हैं। देखने से ही नफरत आती है। बाहर से जो विजीटर आदि आते हैं उन्हों को तो अच्छे- अच्छे स्थान दिखाते हैं, गरीब आदि कैसे गंद में रहे पड़े हैं, वह थोड़ेही दिखाते हैं। यह तो है ही नर्क परन्तु उनमें भी फर्क तो बहुत है ना। साहूकार लोग कहाँ रहते हैं, गरीब कहाँ रहते हैं, कर्मों का हिसाब है ना। सतयुग में ऐसी गन्दगी हो नहीं सकती। वहाँ भी फर्क तो रहता है ना। कोई सोने के महल बनायेंगे, कोई चांदी के, कोई ईटों के। यहाँ तो कितने खण्ड हैं। एक यूरोप खण्ड ही कितना बड़ा है। वहाँ तो सिर्फ हम ही होंगे। यह भी बुद्धि में रहे तो हर्षितमुख अवस्था हो। स्टूडेन्ट की बुद्धि में स्टडी ही याद रहती है-बाप और वर्सा। यह तो समझाया है बाकी थोड़ा समय है। वह तो कह देते लाखों- हजारों वर्ष। यहाँ तो बात ही 5 हजार वर्ष की है। तुम बच्चे समझ सकते हो अभी हमारे राजधानी की स्थापना

हो रही है। बाकी सारी दुनिया खत्म होनी है। यह पढ़ाई है ना। बुद्धि में यह याद रहे हम स्टूडेन्ट हैं, हमको भगवान पढ़ाते हैं। तो भी कितनी खुशी रहे। यह क्यों भूल जाता है! माया बड़ी प्रबल है, वह भुला देती है। स्कूल में सब स्टूडेन्ट्स पढ़ रहे हैं। सभी जानते हैं कि हमको भगवान पढ़ाते हैं, वहाँ तो अनेक प्रकार की विद्या पढ़ाई जाती है। अनेक टीचर्स होते हैं। यहाँ तो एक ही टीचर है, एक ही स्टडी है। बाकी नायब टीचर्स तो जरूर चाहिए।

- यहाँ तुम बच्चे जब बाप के सम्मुख बैठते हो तो बुद्धि में याद रहे कि बाबा आया हुआ है-हमको सृष्टि चक्र का राज बता रहे हैं। अभी नाटक पूरा होता है, अब हमको जाना है। यह बुद्धि में रखना कितना सहज है परन्तु यह भी याद कर नहीं सकते। अभी चक्र पूरा होता है, अब हमको जाना है फिर नई दुनिया में आकर पार्ट बजाना है, फिर हमारे बाद फलाने- फलाने आयेंगे। तुम जानते हो यह चक्र सारा कैसे फिरता है। दुनिया वृद्धि को कैसे पाती है। नई से पुरानी फिर पुरानी से नई होती है। तो यहाँ जब आकर बैठते हो तो इन बातों में रमण करना चाहिए। शान्तिधाम, सुखधाम को याद करते रहो। दिल से पूछो हमको क्या याद पड़ता है। अगर बाप की याद नहीं है तो जरूर बुद्धि कहाँ भटकती है। विकर्म भी विनाश नहीं होंगे, पद भी कम हो जायेगा। अच्छा, बाप की याद नहीं ठहरती तो चक्र का सिमरण करो तो भी खुशी चढ़े। परन्तु श्रीमत पर नहीं चलते, सर्विस नहीं करते तो बापदादा की दिल पर भी नहीं चढ़ सकते। सर्विस नहीं करते तो बहुतों को तंग करते रहते हैं। कोई तो बहुतों को आपसमान बनाए और बाप के पास ले आते हैं। तो बाबा देखकर खुश होते हैं। अच्छा!

- सतयुग, त्रेता पास्ट हो गया फिर द्वापर, कलियुग, यह भी पास्ट हुआ। अभी है संगमयुग। नई दुनिया में जाने के लिए पढ़ना है। हर एक का हक है पढ़ना। बाबा हम नौकरी करते हैं। अच्छा

एक हफ्ता ज्ञान ले फिर चले जाना, मुरली मिलती रहेगी। पहले 7 रोज भट्ठी में जरूर रहना है। भल 7 रोज आयेंगे परन्तु सबकी बुद्धि एक जैसी नहीं रहेगी। 7 रोज भट्ठी माना कोई की भी याद न आये। कोई से पत्र व्यवहार आदि भी न हो।

- स्वीट होम को याद करते-करते तुम आत्मायें स्वीटहोम में चली जायेंगी। यह है बुद्धि की प्रैक्टिस। यह बाप बैठ सब राज समझाते हैं। तुम जानते हो अभी हम आत्माओं को जाना है घर। यह पुराना चोला पुरानी दुनिया है, नाटक पूरा हुआ माना 84 जन्म पार्ट बजाया। यह भी समझाया है कि सब 84 जन्म नहीं लेते हैं। जो आते ही बाद में हैं और धर्म में, जरूर उनके कम जन्म होगे। इस्लामी से बौद्धियों का कम। क्रिश्चियन के उनसे कम। गुरूनानक के सिक्ख लोग आये ही अभी हैं। गुरूनानक को 500 वर्ष हुआ तो वह थोड़ेही 84 जन्म लेंगे। हिसाब किया जाता है। 5 हजार वर्ष में इतने जन्म, तो 500 वर्ष में कितने जन्म हुए होंगे? 12-13 जन्म। क्राइस्ट के 2 हजार वर्ष होंगे तो उनके कितने जन्म होंगे। आधा से भी कम हो जायेंगे। हिसाब है ना। इसमें कोई कितने, कोई कितने एक्यूरेट नहीं कह सकते। इन बातों में डिबेट करने में जास्ती टाइम वेस्ट नहीं करना है। तुम्हारा काम है बाप को याद करना। फालतू बातों में बुद्धि नहीं जानी चाहिए। बाप से योग लगाना, चक्र को जानना है। बाकी पाप नष्ट होंगे याद से। इसमें ही मेहनत है इसलिए भारत का प्राचीन योग कहते हैं, जो बाप ही सिखाते हैं। सतयुग, त्रेता में तो योग की बात ही नहीं। फिर भक्ति मार्ग में हठयोग शुरू होता है। यह है सहज राजयोग। बाप कहते हैं– मुझे याद करने से पावन बनेंगे। मूल बात याद की है। कोई भी पाप नहीं करना है।

- बच्चों ने गीत की दो लाइन सुनी। जो पिया के साथ है, अब पिया कौन है! यह दुनिया नहीं जानती। भल ढेर बच्चे हैं, उनमें भी बहुत हैं जो नहीं जानते हैं कि किस प्रकार से बाप को याद

करना चाहिए। वह याद करने नहीं आता। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे अपने को आत्मा समझो, हम बिन्दी हैं। बाप, ज्ञान का सागर है, उनको ही याद करना है। याद करने की ऐसी प्रैक्टिस पड़ जाए जो निरन्तर याद ठहर जाये। पिछाड़ी में यही याद रहे कि हम आत्मा हैं, शरीर तो है परन्तु यह ज्ञान बुद्धि में रखना है कि हम आत्मा हैं। बाप का डायरेक्शन मिला हुआ है मैं जो हूँ, उस रूप में कोई विरला याद करते हैं। देह-अभिमान में बच्चे बहुत आ जाते हैं। यह झाड़ बहुत धीरे-धीरे बढ़ना है। अभी थोड़ा टाइम है फिर भी पुरूषार्थ करने में हर्जा नहीं है। तुम बड़े-बड़े लोगों को समझाते हो, परन्तु वे कुछ भी समझते थोड़ेही हैं। बच्चों में भी कई इस नॉलेज को समझते नहीं हैं। बाप की याद नहीं तो वह अवस्था नहीं।

बाप जानते हैं निश्चय किसको कहा जाता है। अभी तो कोई 1-2 परसेन्ट भी मुश्किल बाप को याद करते हैं। भल यहाँ बैठे हैं, बाप के साथ वह लव नहीं रहता। इसमें लव चाहिए, तकदीर चाहिए। बाप से लव हो तो समझें, हमको कदम-कदम श्रीमत पर चलना है। हम विश्व के मालिक बनते हैं। आधाकल्प का देह-अभिमान बैठा हुआ है सो अब देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत लगती है। अपने को आत्मा समझ मोस्ट बिलवेड बाप को याद करना मासी का घर नहीं है। उनके चेहरे में ही रौनक आ जाए। कन्या शादी करती है, जेवर आदि पहनती है तो चेहरे में एकदम खुशी आ जाती है। परन्तु यहाँ तो साजन को याद ही नहीं करते तो वह शक्ल मुरझाई हुई रहती है। बात मत पूछो। कन्या शादी करती है तो चेहरा खुशनुम: हो जाता है। कोई की तो शादी के बाद भी शक्ल मुर्दे जैसी रहती है। किसम-किसम के होते हैं। कोई तो दूसरे घर में जाकर मूँझ पड़ती हैं। तो यहाँ भी ऐसे है। बाप को याद करने की मेहनत है। यह गायन अन्त का है कि अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। अपने को गोप-गोपी समझना और निरन्तर बाप को याद करना, वह अवस्था होनी है। बाप का परिचय सबको देना है। बाप आया हुआ है वो वर्सा दे रहे हैं। इसमें सारी नॉलेज आ जाती है।

बाप जानते हैं यह आत्मा मुझे याद ही नहीं करती है। देह-अभिमान में आकर बहुत पाप करते हैं तो पाप का घड़ा सौगुणा भर जाता है। औरों को रास्ता बताने के बदले खुद ही भूल जाते हैं। और ही जास्ती दुर्गति को पा लेते हैं। बड़ी ऊंची मंजिल है। चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस, गिरे तो चकनाचूर। यह राजाई स्थापन हो रही है। इसमें फर्क देखो कितना पड़ जाता है। कोई तो पढ़कर आसमान में चढ़ जाते हैं, कोई पट में पड़ जाते हैं। बुद्धि डल होती है तो पढ़ नहीं सकते हैं। कोई-कोई कहते हैं बाबा हम किसको समझा नहीं सकते हैं। कहता हूँ अच्छा सिर्फ अपने को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो तो मैं तुमको सुख दूँगा। परन्तु याद ही नहीं करते हैं। याद करें तो औरों को याद दिलाते रहें। बाप को याद करें तो पाप नष्ट हो जायें। उनकी याद बिगर तुम सुखधाम में जा नहीं सकते हो। 21 जन्मों का वर्सा निराकार बाप से मिल सकता है। बाकी तो सब अल्पकाल का सुख देने वाले हैं। कोई को रिद्धि-सिद्धि से बच्चा मिल गया वा आशीर्वाद से लॉटरी मिल गई तो बस विश्वास बैठ जाता है। कोई को 2-4 करोड़ फायदा हो जायेगा बस बहुत महिमा करेंगे। परन्तु वह तो है अल्पकाल के लिए। 21 जन्मों के लिए हेल्थ वेल्थ तो मिल नहीं सकती ना। परन्तु मनुष्य नहीं जानते हैं। दोष भी नहीं दे सकते हैं। अल्पकाल के सुख में ही खुश हो जाते हैं। बाप तुम बच्चों को राजयोग सिखलाकर स्वर्ग की बादशाही देते हैं। कितना सहज है। कोई तो बिल्कुल समझा नहीं सकते। कोई समझते भी हैं परन्तु योग पूरा न होने के कारण कोई को तीर नहीं लगता है। देह-अभिमान में आने से कुछ न कुछ पाप होते रहते हैं। योग ही मुख्य है। तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। प्राचीन योग भगवान ने सिखाया था, न कि श्रीकृष्ण ने। याद की यात्रा बड़ी अच्छी है। तुम ड्रामा देखकर आओ तो बुद्धि में सारा सामने आ जायेगा। कोई को बताने में टाइम लगेगा। यह भी ऐसे है। बीज और झाड़। यह चक्र बड़ा क्लीयर है। शान्तिधाम, सुखधाम, दु:खधाम.... सेकण्ड का काम है ना। परन्तु याद भी रहे ना। मुख्य बात है बाप का परिचय। बाप कहते हैं– मेरे को याद करने से तुम सब कुछ जान जायेंगे। अच्छा। शिवबाबा तुम बच्चों को याद करते हैं, ब्रह्मा बाबा याद नहीं करते हैं। शिवबाबा

जानते हैं हमारे सपूत बच्चे कौन-कौन हैं। सर्विसएबुल सपूत बच्चों को तो याद करते हैं। यह थोड़ेही किसको याद करेंगे। इनकी आत्मा को तो डायरेक्शन है मामेकम् याद करो। अच्छा।

बच्चे जब पैदा होते हैं तो अपने साथ कर्मों अनुसार तकदीर ले आते हैं। कोई साहूकार पास, कोई गरीब के पास जन्म लेते हैं। बाप भी समझते हैं कि वारिस आया है। जैसे-जैसे दान पुण्य किया है, उस अनुसार जन्म मिलता है। अब तुम मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों को कल्प बाद फिर से बाप ने आकर समझाया है। बच्चे भी जानते हैं कि हम अपनी तकदीर ले आये हैं। स्वर्ग की बादशाही की तकदीर ले आये हैं, जिन्होंने अच्छी तरह से जाना है और बाप को याद कर रहे हैं। याद के साथ तकदीर का कनेक्शन है। जन्म लिया है– तो बाप की याद भी होनी चाहिए। जितना याद करेंगे उतनी तकदीर ऊंची रहेगी। कितनी सहज बात है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल जाती है। तुम आये हो सुखधाम की तकदीर प्राप्त करने। अभी हर एक पुरूषार्थ कर रहे हैं। हर एक अपने को देख रहे हैं कि हम कैसे पुरूषार्थ कर रहे हैं। जैसे मम्मा बाबा और सर्विसएबुल बच्चे पुरूषार्थ करते हैं उनको फॉलो करना चाहिए। सबको बाप का परिचय देना चाहिए। । अब बाप को याद करना है। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है। घरबार भी सम्भालना है। कोई निर्बन्धन हैं तो वह अच्छी सर्विस कर सकते हैं। बाल-बच्चे कोई नहीं तो उनको सर्विस करने का अच्छा चांस है। स्त्री को पति वा बच्चों का बंधन होता है। अगर बच्चे नहीं हैं तो बन्धनमुक्त ठहरे ना। वह जैसे वानप्रस्थी हो गये। फिर मुक्तिधाम में जाने के लिए संग चाहिए।

तुम बच्चों की बुद्धि में सारे झाड़ का ज्ञान रहता है। आत्माओं का झाड़ भी है, जीव आत्माओं का भी झाड़ है। बच्चे जानते हैं कि हम यह पुराना शरीर छोड़कर घर जा रहे हैं। “मैं आत्मा” इस शरीर से अलग हूँ– यह समझना गोया जीते जी मरना। आप मुये मर गई दुनिया। मित्र, सम्बन्धी आदि सबको छोड़ दिया। पहले पूरी शिक्षा लेकर, मर्तबे के अधिकारी बन फिर जाना है। बाप

को याद करना तो बहुत सहज है। भल कोई बीमार हो, उनको भी कहते रहना चाहिए कि शिवबाबा को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। जो पक्के योगी हैं उनके लिए जल्दी मरना (शरीर छोड़ना) भी अच्छा नहीं है क्योंकि वह योग में रहकर रूहानी सेवा करते हैं। मर जायेंगे तो सेवा कर नहीं सकेंगे। सेवा करने से अपना ऊंच पद बनाते रहेंगे और भाई- बहिनों की सेवा भी होगी। वह भी बाप से वर्सा पा लेंगे। हम आपस में भाई-भाई हैं, एक बाप के बच्चे हैं। बाप कहते हैं -मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। आगे भी ऐसे कहा था। किसको भी समझा सकते हो, बहन जी अथवा भाई जी, तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बन गई है। जो सतोप्रधान थी अब फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन सतोप्रधान दुनिया में चलना है। आत्मा को सतोप्रधान बनाना है याद की यात्रा से। याद का पूरा चार्ट रखना चाहिए। ज्ञान का चार्ट नहीं रख सकेंगे। बाप तो ज्ञान देते रहते हैं। जाँच रखनी है कि हमारे ऊपर जो विकर्मों का बोझा है, वह कैसे उतरे इसलिए याद का चार्ट रखा जाता है। हमने कितना घण्टा याद किया? मूलवतन को भी याद करते हैं फिर नई दुनिया को भी याद करते हैं। उथल-पुथल होनी है। उसकी भी तैयारी हो रही है। बॉम्ब्स आदि भी बनते जायेंगे। एक तरफ कहते हैं कि हम ऐसे- ऐसे मौत के लिए सामान बना रहे हैं। दूसरी तरफ कहते मौत का सामान नहीं बनाओ। समुद्र के नीचे भी मारने का सामान रखा है, ऊपर आकर बॉम्ब्स छोड़ फिर समुद्र में चले जायेंगे। ऐसी-ऐसी चीजे बनाते रहते हैं। यह अपने ही विनाश के लिए कर रहे हैं। मौत सामने खड़ा है। इतने बड़े-बड़े महल बना रहे हैं। तुम जानते हो यह सब मिट्टी में मिल जायेंगे।

भविष्य में जो ऊंच पद पाने वाले होंगे, उनमें यहाँ ही कशिश होगी क्योंकि आत्मा पवित्र बन जाती है। तुम्हारे में जास्ती कशिश उनमें है जो खास याद की यात्रा में रहते हैं। यात्रा में पवित्रता जरूर रहती है। पवित्रता में ही कशिश है। पवित्रता की कशिश फिर पढ़ाई में भी कशिश ले आती है। यह तुमको अभी पता पड़ा है। तुम उनके (लक्ष्मी नारायण के) आक्यूपेशन को जानते हो। उन्होंने भी कितना बाप को याद किया होगा। यह जो उन्होंने इतनी राजाई पाई है, वह जरूर

राजयोग से ही पाई है। इस समय तुम यह पद पाने के लिए आये हो। बाप बैठ तुमको राजयोग सिखाते हैं। यह तो पक्का निश्चय कर यहाँ आये हो ना। बाप भी वही है, पढ़ाने वाला भी वही है। साथ भी वही ले जाने वाला है। तो यह गुण सदैव रहने चाहिए। सदैव हर्षित मुख रहो। सदैव हर्षित तब रहेंगे जब बाप अल्फ की याद में रहेंगे। तब बे की भी याद रहेगी और इससे रमणीक भी बहुत होंगे। तुम बच्चे जानते हो– हम यहाँ रमणीक बन फिर भविष्य में ऐसा रमणीक बनेंगे। यहाँ की पढ़ाई ही अमरपुरी में ले जाती है।

गाया भी जाता है अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के बच्चों से पूछो। तुमको अब लॉटरी मिलती है। कोई चीज मिल जाती है, उसकी इतनी खुशी नहीं होती है। जब गरीब से साहूकार बन जाते हैं तो खुशी होती है। तुम भी जानते हो जितना हम पुरूषार्थ करेंगे उतना बाप से राजधानी का वर्सा लेंगे। जो जितना पुरूषार्थ करेगा उतना पायेगा। मुख्य बात बाप कहते हैं बच्चे अपने मोस्ट बिलवेड बाप को याद करो। वह सब का बीलवेड बाप है। वही आकर सबको सुख शान्ति देते हैं।

सुनार, बैरिस्टर आदि सब है। सबको रावण की जेल से छुड़ाते हैं। शिवबाबा कितना बड़ा बैरिस्टर है। तो ऐसे बाप को क्यों भूलना चाहिए। क्यों कहते हैं, बाबा हम भूल जाते हैं। माया के बहुत तूफान आते हैं। बाबा कहते हैं यह तो होगा। कुछ तो मेहनत करनी पड़े। यह है माया से लड़ाई। तुम पाण्डवों की कोई कौरवों से लड़ाई नहीं है। पाण्डव कैसे लड़ाई करेंगे। फिर तो हिंसक हो जायेगी। बाप कभी हिंसा नहीं सिखाते हैं। कुछ भी समझ नहीं सकते हैं। वास्तव में हमारी कोई लड़ाई है नहीं। बाबा सिर्फ युक्ति बताते हैं कि मुझे याद करो, माया का वार नहीं होगा। इस पर भी एक कहानी है, पूछा– पहले सुख चाहिए वा दु:ख? तो बोला सुख। दु:ख हो न सके सतयुग में। तुम जानते हो– इस समय सभी सीतायें रावण की शोक वाटिका में हैं। यह

सारी दुनिया सागर के बीच में लंका है। अभी सब रावण की जेल में पड़े हैं। सर्व की सद्गति करने के लिए बाप आये हैं। सब शोक वाटिका में हैं। स्वर्ग में है सुख, नर्क में है दु:ख। इसको शोक वाटिका कहेंगे। वह है अशोक, स्वर्ग। बहुत बड़ा अन्तर है। तुम बच्चों को कोशिश कर बाप को याद करना चाहिए तो खुशी का पारा चढ़ेगा। बाप की राय पर नहीं चलेंगे तो सौतेले ठहरे। फिर प्रजा में चले जायेंगे। मातेले होंगे तो राजधानी में आ जायेंगे। राजधानी में आना चाहते हो तो श्रीमत पर चलना पड़े। कृष्ण की मत नहीं मिलती है। मत हैं ही दो। अभी तुम श्रीमत लेते हो फिर सतयुग में उसका फल भोगते हो। फिर द्वापर में रावण की मत मिलती है।

84 जन्म भी तुम ही लेते हो। जो पहले-पहले आते हैं, वही पूरे 84 जन्म लेते हैं। योग से ही खाद निकलती है, योग में ही मेहनत है। भल कई बच्चे ज्ञान में तीखे हैं परन्तु योग में कच्चे हैं। बांधेलियाँ योग में छुटेलियों से भी अच्छी हैं। वह तो शिवबाबा से मिलने के लिए रात-दिन तड़फती हैं। तुम मिले हो। तुमको कहा जाता है याद करो तो तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। तुमको तूफान बहुत आते हैं। वह याद में तड़फती हैं। तुम तड़फते नहीं हो। उन्हों का घर बैठे भी ऊंच पद हो जाता है। तुम बच्चे जानते हो– बाबा की याद में रहने से हमको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। जैसे बच्चा गर्भ से निकलने के लिए तड़फता है। वैसे बांधेलियाँ तडपते-तड़पते पुकारती हैं, शिवबाबा इस बन्धन से निकालो। दिन-रात याद करती हैं। तुमको बाप मिला है तो तुम अलबेले बन पड़े हो। हम बाबा के बच्चे हैं। हम यह शरीर छोड़ जाए प्रिन्स बनेंगे, यह अन्दर स्थाई खुशी रहनी चाहिए। परन्तु माया याद रखने नहीं देती। याद से खुशी में बहुत रहेंगे। याद नहीं करेंगे तो घुटका खाते रहेंगे। आधाकल्प तुमने रावण राज्य में दु:ख देखा है। अकाले मृत्यु होता आया है। दु:ख तो है ही है। भल कितना भी साहूकार हो, दु:ख तो होता है। अकाले मृत्यु हो जाती है। सतयुग में ऐसे अकाले नहीं मरते, कभी बीमार नहीं होंगे। समय पर बैठे बैठे आपेही एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं।

तुम्हें गृहस्थ व्यवहार में, प्रवृत्ति में रहते भी कमल पुष्प समान बनना है। बाप कहते हैं मीठे बच्चे घर गृहस्थ को भी सम्भालो, शरीर निर्वाह अर्थ कामकाज भी करो। साथ-साथ यह पढ़ाई भी पढ़ते रहो। गायन भी है हथ कार डे दिल यार दे। कामकाज करते एक माशूक बाप को याद करना है। तुम आधाकल्प के आशिक हो। नौंधा भक्ति में भी देखो कृष्ण आदि को कितना प्रेम से याद करते हैं। वह है नौंधा भक्ति, अटल भक्ति। कृष्ण की अटल याद रहती है परन्तु उससे कोई को मुक्ति नहीं मिलती। यह फिर है निरन्तर याद करने का ज्ञान। बाप कहते हैं मुझ पतित-पावन बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप नाश हो जायेंगे, परन्तु माया भी बड़ी पहलवान है। किसको छोड़ती नहीं है। माया से बार-बार हार खाने से तो कांध नीचे कर पश्चाताप करना चाहिए। बाप मीठे बच्चों को श्रेष्ठ मत देते ही हैं श्रेष्ठ बनने के लिए। बाबा देखते हैं इतनी मेहनत बच्चे करते नहीं इसलिए बाप को तरस पड़ता है। अगर यह अभ्यास अभी नहीं करेंगे तो फिर सजायें बहुत खानी पड़ेंगी और कल्प-कल्प पाई-पैसे का पद पाते रहेंगे।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे बेहद के बाप पास आते ही हैं रिफ्रेश होने के लिए क्योंकि बच्चे जानते हैं बेहद के बाप से बेहद विश्व की बादशाही मिलती है। यह कभी भूलना नहीं चाहिए। वह सदैव याद रहे तो भी बच्चों को अपार खुशी रहे। यह बैज चलते-फिरते घड़ी-घड़ी देखते रहो– एकदम हृदय से लगा दो। ओहो! भगवान की श्रीमत से हम यह बन रहे हैं। बस बैज को देख उनको प्यार करते रहो। बाबा, बाबा करते रहो तो सदैव स्मृति रहेगी। हम बाप द्वारा यह बनते हैं। बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। मीठे बच्चों की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। सारा दिन सर्विस के ही ख्यालात चलते रहें। बाबा को तो वह बच्चे चाहिए जो सर्विस बिगर रह न सकें। तुम बच्चों को सारे विश्व पर घेराव डालना है अर्थात् पतित दुनिया को पावन बनाना है। सारे विश्व को दु:खधाम से सुखधाम बनाना है। टीचर को भी पढ़ाने में मजा आता है ना।

स्कालरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। ऐसे बच्चों को फिर मदद भी मिलती है। ऐसे भी नये-नये पुरुषार्थी बच्चे तुम देखेंगे। साक्षात्कार करते रहेंगे। जैसे शुरू में हुआ वही फिर पिछाड़ी में देखेंगे। जितना नजदीक होते जायेंगे उतना खुशी में नाचते रहेंगे। उधर खूनेनाहेक खेल भी चलता रहेगा। तुम बच्चों की ईश्वरीय रेस चल रही है, जितना आगे दौड़ते जायेंगे उतना नई दुनिया के नजारे भी नजदीक आते जायेंगे, खुशी बढ़ती जायेगी। जिनको नजारे नजदीक नहीं दिखाई पड़ते उनको खुशी भी नहीं होगी। अभी तो कलियुगी दुनिया से वैराग्य और सतयुगी नई दुनिया से बहुत प्यार होना चाहिए। शिवबाबा याद रहेगा तो स्वर्ग का वर्सा भी याद रहेगा। स्वर्ग का वर्सा याद रहेगा तो शिवबाबा भी याद रहेगा। तुम बच्चे जानते हो अभी हम स्वर्ग तरफ जा रहे हैं, पाँव नर्क तरफ हैं, सिर स्वर्ग तरफ है। अभी तो छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। बाबा को सदैव यह नशा रहता है ओहो! हम जाकर यह बाल कृष्ण बनूँगा, जिसके लिए इनएडवान्स सौगातें भी भेजते रहते हैं। जिन्हों को पूरा निश्चय है वही गोपिकायें सौगातें भेजती हैं, उन्हें अतीन्द्रिय सुख की भासना आती है। हम ही अमरलोक में देवता बनेंगे। कल्प पहले भी हम ही बने थे फिर हमने 84 पुनर्जन्म लिए हैं। यह बाजोली याद रहे तो भी अहो सौभाग्य– सदैव अथाह खुशी में रहो, बहुत बड़ी लाटरी मिल रही है। 5000 वर्ष पहले भी हमने राज्यभाग्य पाया था फिर कल पायेंगे। ड्रामा में नूँध है। जैसे कल्प पहले जन्म लिया था वैसे ही लेंगे, वही हमारे माँ-बाप होंगे। जो कृष्ण का बाप था वही फिर बनेगा। ऐसे-ऐसे जो सारा दिन विचार करते रहेंगे तो वो बहुत रमणीकता में रहेंगे। विचार सागर मंथन नहीं करते तो गोया अनहेल्दी हैं। गऊ भोजन खाती है तो सारा दिन उगारती रहती है, मुख चलता ही रहता है। मुख न चले तो समझा जाता है बीमार है, यह भी ऐसे है। बेहद के बाप और दादा दोनों का मीठे-मीठे बच्चों से बहुत लव है, कितना प्यार से पढ़ाते हैं। काले से गोरा बनाते हैं। तो बच्चों को भी खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। पारा चढ़ेगा याद की यात्रा से। बाप कल्प-कल्प बहुत प्यार से लवली सर्विस करते हैं। 5 तत्वों सहित सबको पावन बनाते हैं। कितनी बड़ी बेहद की सेवा है। बाप बहुत प्यार से बच्चों को शिक्षा भी देते रहते क्योंकि बच्चों को सुधारना बाप वा टीचर का ही काम है। बाप की है

श्रीमत, जिससे ही श्रेष्ठ बनेंगे। जितना प्यार से याद करेंगे उतना श्रेष्ठ बनेंगे। यह भी चार्ट में लिखना चाहिए हम श्रीमत पर चलते हैं वा अपनी मत पर चलते हैं? श्रीमत पर चलने से ही तुम एक्यूरेट बनेंगे।

बाप तो देने आये हैं, लेने वाले लेते-लेते थक जाते हैं। मैं आता ही हूँ देने लिए और तुम ठण्डे पड़ जाते हो लेने में। बच्चे कहते हैं, बाबा माया के तूफान आते हैं। हाँ, पद भी बहुत ऊंचा पाना है। स्वर्ग के मालिक बनते हो। यह कम बात है क्या! तो मेहनत करनी है। श्रीमत पर चलते रहो। वक्खर जो मिलता है वह फिर औरों को भी देना पड़े। दान करना पड़े। पवित्र बनना है तो 5 विकारों का दान जरूर देना है। मेहनत करनी है। बाप को याद करना है, तब ही कट उतरेगी। मुख्य है याद । प्रतिज्ञा भल करो कि बाबा हम विकार में कभी नहीं जायेंगे, किसी पर क्रोध नहीं करेंगे। परन्तु याद में जरूर रहना है। नहीं तो इतने पाप कैसे विनाश होंगे। बाकी नॉलेज तो बड़ी सहज है। 84 जन्म का चक्र कैसे लगाया है, यह किसको भी तुम समझा सकते हो। बाकी याद की यात्रा में मेहनत है। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। क्या ज्ञान देते हैं? मनमनाभव अर्थात् मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम गाते भी थे कि आप जब आयेंगे तो और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे। तुम पर बलिहार जायेंगे। तेरे सिवाए और कोई को याद नहीं करेंगे। प्रतिज्ञा की है फिर भूल क्यों जाते हो? कहते भी हैं हथ कार डे दिल यार डे...कर्मयोगी तो तुम हो। धन्धा आदि करते बुद्धियोग बाप से लगाना है। माशूक बाप खुद कहते हैं, तुम आशिकों ने आधाकल्प याद किया है। अब मैं आया हूँ, मुझे याद करो। यह याद ही घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, इसमें ही मेहनत है। कर्मातीत अवस्था हो जाए तो फिर यह शरीर ही छोड़ना पड़े। जब राजधानी स्थापन हो जायेगी तब तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे। अभी तो सभी पुरुषार्थी हैं। सबसे जास्ती मम्मा-बाबा याद करते हैं। सूक्ष्मवतन में भी वे देखने में आते हैं।

बाप कहते हैं यह खुद ही नारायण की पूजा करने वाला था, ट्रेन में भी मुसाफिरी करते, गीता पढ़ते थे। मनुष्य समझेंगे, यह तो बड़ा धर्मात्मा है। अभी वह सब बातें भूलते जाते हैं। फिर भी इसने गीता आदि पढ़ी है ना। बाबा कहते हैं मैं यह सब जानता हूँ। अभी तुम यह विचार करो कि हम किसके आगे बैठे हैं, जिससे विश्व के मालिक बनते हो फिर उनको घड़ी-घड़ी भूल क्यों जाते हो? बाप कहते हैं तुमको 16 घण्टा फ्री देता हूँ, बाकी अपनी सर्विस करो। अपनी सर्विस करते हो गोया विश्व की सर्विस करते हो। इतना पुरूषार्थ करो जो कर्म करते कम से कम 8 घण्टा बाप को याद करो। अभी सारे दिन में 8 घण्टा याद कर नहीं सकते। वह अवस्था जब होगी तब समझेंगे यह बहुत सर्विस करते हैं। ऐसे मत समझो हम बहुत सर्विस करते हैं। भाषण बहुत फर्स्टक्लास करते हैं परन्तु योग बिल्कुल नहीं है। योग की यात्रा ही मुख्य है। बाप कहते हैं सिर पर विकर्मों का बोझ बहुत है इसलिए सवेरे उठकर बाप को याद करो। 2 से 5 तक है फर्स्टक्लास वायुमण्डल। आत्मा रात को आत्म-अभिमानी बन जाती है, जिसको नींद कहा जाता है इसलिए बाप कहते हैं जितना हो सके बाप को याद करो। अब बाप कहते हैं, मनमनाभव। यह है चढ़ती कला का मन्त्र।

परमात्मा बाप द्वारा मैं आत्मा पढ़ रही हूँ। बाप कहते हैं, मामेकम् याद करो। तुम गोल्डन एज में सतोप्रधान थे फिर तुम्हारे में अलाए पड़ी है। खाद पड़ते-पड़ते तुम पावन से पतित बन पड़े हो। अब फिर पावन बनना है इसलिए कहते हैं - हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ, तो बाप राय देते हैं हे पतित आत्मा मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे से खाद निकलेगी और तुम पावन बन जायेंगे। उनको प्राचीन योग कहा जाता है। इस याद अर्थात् योग अग्नि से खाद भस्म होगी। मूल बात है - पतित से पावन बनना। साधू-सन्त आदि सब पतित हैं। पावन बनने का उपाय बाप ही बताते हैं - मामेकम् याद करो। यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। खाते-पीते, चलते-फिरते मामेकम् याद करो क्योंकि तुम सब आत्माओं का (आशिकों का) माशूक,

मैं हूँ। तुमको हमने पावन बनाया था फिर पतित बने हो। सभी भक्तियां आशिक हैं। माशूक कहते हैं कर्म भी भल करो। बुद्धि से मुझे याद करते रहो तो विकर्म विनाश होंगे। यह मेहनत है। तो बाप को याद करना चाहिए ना, वर्सा पाने के लिए। जो जास्ती याद करेंगे उनको वर्सा भी जास्ती मिलेगा। यह है याद की यात्रा। जो जास्ती याद करेंगे वही पावन बन आकर मेरे गले का हार बनेंगे।

- मनुष्य बैरिस्टरी पढ़ते हैं फिर बैरिस्टर बन कमाते हैं। यह कितनी बड़ी कमाई है, इनको दुनिया वाले नहीं जानते। तुम जानते हो सच्चा बाबा हमको सच्ची कमाई करा रहे हैं। इनका कभी देवाला निकल न सवे। अभी तुम सच की कमाई करते हो। वह फिर 21 जन्म साथ रहती है। वह कमाई साथ नहीं देती। यह साथ देने वाली है तो ऐसी कमाई को साथ देना चाहिए। यह बातें तुम्हारे सिवाए और कोई की बुद्धि में नहीं हैं। तुम्हारे में भी घड़ी-घड़ी कोई भूल जाते हैं। बाप और वर्से को भूलना नहीं चाहिए। बस, बात एक ही है। बाप को याद करो। जिस बाप से 21 जन्म का वर्सा मिलता है, 21 जन्म निरोगी काया रहती है। बुढ़ापे तक अकाले मृत्यु नहीं होती। बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप की याद है मुख्य, इसमें ही माया विघ्न डालती है। तूफान लाती है। अनेक प्रकार के तूफान आते हैं। तुम कहेंगे - बाप को याद करूँ, परन्तु कर नहीं सकेंगे। याद में ही बहुत फेल होते हैं। योग की बहुतों में कमी है। जितना हो सके, योग में मजबूत होना चाहिए। बाकी बीज और झाड़ का ज्ञान कोई बड़ी बात नहीं है।

- बाप कहते हैं मुझे याद करो। मुझे याद करने से, मुझे जानने से तुम सब कुछ जान जायेंगे। याद में ही सब कुछ भरा हुआ है। स्वीट बाबा, शिवबाबा को याद करना है। ऊंच ते ऊंच है भगवान। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ वह है। ऊंचे से ऊंच वर्सा देते हैं 21 जन्म के लिए। सदा सुखी अमर बनाते हैं। तुम

अमरपुरी का मालिक बनते हो। तो ऐसे बाप को बहुत याद करना चाहिए। बाप को याद नहीं करेंगे तो और सब कुछ याद आ जायेगा। अच्छा।

तुम बच्चे सुबह को जब यहाँ बैठते हो तो याद में बैठना होता है। नहीं तो माया के तूफान आयेंगे। धन्धे-धोरी तरफ बुद्धियोग जायेगा। यह सब बाहर की पंचायत है ना। जैसे मकड़ी कितने जाल निकालती है। सारा हप भी कर लेती है। देह का कितना प्रपंच है। काका, चाचा, मामा, गुरू गोसांई...कितनी जाल दिखाई पड़ती है। वह सारी हप करनी है देह सहित। अकेला देही बनना है। मनुष्य शरीर छोड़ते हैं - तो सब कुछ भूल जाते हैं। आप मुये मर गई दुनिया। यह तो बुद्धि में ज्ञान है कि यह दुनिया खत्म होनी है। बाप समझाते हैं - जिसका मुख नहीं खुलता है तो सिर्फ याद करो। जैसे यह (ब्रह्मा) बाप को याद करता है। कन्या, पति को याद करती है क्योंकि पति, परमेश्वर हो जाता है इसलिए बाप से बुद्धि निकल पति में चली जाती है। यह तो पतियों का पति है, ब्राइडग्रूम है ना। तुम सब हो ब्राइड्स, भगवान की सब भक्ति करते हैं। सब भक्तियाँ रावण के पहरे में कैद हैं तो बाप को जरूर तरस पड़ेगा ना। बाप रहमदिल है, उनको ही रहमदिल कहा जाता है। इस समय गुरू तो बहुत प्रकार के हैं। जो कुछ शिक्षा देते हैं, उनको गुरू कह देते हैं।

बाप ही लिबरेटर, गाइड है जो वापस ले जायेंगे, मच्छरों सदृश्य मरेंगे। यह भी जानते हैं, सब एकरस याद में नहीं बैठते हैं। कोई का एक्यूरेट योग रहता है, कोई का आधा घण्टा, कोई का 15 मिनट। कोई तो एक मिनट भी याद में नहीं रहते हैं। कोई कहते हम सारा समय बाप की याद में रहते हैं, तो जरूर उनका चेहरा खुशनुम: चमकता रहेगा। अतीन्द्रिय सुख ऐसे बच्चों को रहता है। कहाँ भी बुद्धि भटकती नहीं है। वह सुख फील करते होंगे। बुद्धि भी कहती है एक माशूक की याद में बैठा रहे तो कितनी कट उतर जाये। फिर आदत पड़ जायेगी। याद की यात्रा

से तुम एवरहेल्दी, एवरवेल्दी बनते हो। चक्र भी याद आ जाता है। सिर्फ याद में रहने की मेहनत है। बुद्धि में चक्र भी फिरता रहेगा।

यह साकार बाबा भी भोला है ना। कोई दुपट्टा नहीं, कोई तिलक आदि नहीं। बल्कि साधारण बाबा तो बाबा ही है। बच्चे जानते हैं - कितनी यह सारी नॉलेज शिवबाबा ही देते हैं और कोई की ताकत नहीं जो दे सके। दिन-प्रतिदिन बच्चों की लगन बढ़ती जाती है। जितना बाप को याद करेंगे उतना लव बढ़ेगा। बिलवेड मोस्ट बाप है ना। न सिर्फ अभी परन्तु भक्ति मार्ग में भी तुम बिलवेड मोस्ट समझते थे। कहते थे - बाबा जब आप आयेंगे तो और सबसे लव छोड़कर एक बाप के साथ लव रखेंगे। तुम अभी जानते भी हो, परन्तु माया इतना लव करने नहीं देती है। माया चाहती नहीं कि यह मुझे छोड़ बाप को याद करें। वह चाहती है कि देह-अभिमानी हो मुझे लव करें। यही माया चाहती है इसलिए कितना विघ्न डालती है। तुमको विघ्नों को पार करना है। बच्चों को कुछ तो मेहनत करनी चाहिए ना। पुरूषार्थ से ही तुम अपनी प्रालब्ध पाते हो। बच्चे जानते हैं, ऊंच पद पाने के लिए कितना पुरूषार्थ करना है।

बाबा कहते हैं मनमनाभव। बाबा को याद करते रहो। वह मोस्ट बिलवेड, सब सम्बन्धों की सैक्रीन है। वह सब सम्बन्धी हैं विकारी। उनसे दु:ख मिलता है। बाबा तुमको सबका एवजा दे देते हैं। सब सम्बन्धों का लव देते हैं, कितना सुख देते हैं। और कोई इतना सुख नहीं दे सकते। कोई देते हैं तो अल्पकाल के लिए। जिसको ही सन्यासी काग-विष्टा के समान सुख कहते हैं। दु:खधाम में तो जरूर दु:ख ही होगा। तुम बच्चे जानते हो हमने यह अनेक बार पार्ट बजाया है। परन्तु हम ऊंच पद कैसे पायें, उनका फिक्र रहना चाहिए। बहुत पुरूषार्थ करना है कि हम वहाँ फेल न हो जायें। अच्छे नम्बर से पास होंगे तो ऊंच पद पायेंगे और उनको खुशी भी होगी। सब एक समान हो न सके, जितना योग होगा। बहुत गोपिकायें हैं जो कभी मिली भी नहीं हैं। बाप

से मिलने लिए तड़पती हैं। साधू-सन्यासियों के पास तड़पने की बात नहीं रहती है। यहाँ तो शिवबाबा से मिलने के लिए आते हैं। वण्डरफुल बात है ना। घर में बैठकर याद करते हैं, शिवबाबा हम आपके बच्चे हैं। आत्मा को स्मृति आती है। तुम बच्चे जानते हो हम शिवबाबा से कल्प-कल्प वर्सा लेते हैं। वही बाप, कल्प के बाद आया हुआ है।

अभी तुम बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। स्वर्ग में सिर्फ भारत ही था और कोई खण्ड नहीं था। तो छोटी न्यु इन्डिया में अपना स्वर्ग दिखायें। जैसे द्वारिका नाम नहीं, लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी का राज्य लिखना चाहिए। बुद्धि भी कहती है सतयुग में पहले डीटी डिनायस्टी का राज्य होगा। उनके गाँव होंगे, छोटे-छोटे इलाके होंगे। यह भी विचार सागर मंथन करना है। साथ-साथ शिवबाबा से बुद्धि का योग भी लगाना है। हम याद से ही बादशाही लेते हैं। याद से ही कट उतरनी है, इसमें ही सारी मेहनत है। कइयों की बुद्धि बाहर में धक्का खाती रहती है, यहाँ बैठे भी सारा समय याद में नहीं रह सकते हैं, बुद्धि और तरफ चली जायेगी। भक्ति मार्ग में भी ऐसे होता है। श्रीकृष्ण की भक्ति करते-करते बुद्धि और तरफ चली जाती है। नौधा भक्ति वाले दीदार के लिए बहुत मेहनत करते हैं। कितने घण्टे बैठ जाते हैं कि कृष्ण के सिवाए और कोई याद न आये, बहुत मेहनत है। इसमें 8 की और फिर 16108 की माला होती है। वह तो लाखों की माला भी दिखाते हैं। लेकिन ज्ञान मार्ग की माला बहुत कीमती है। भक्ति मार्ग की सस्ती है क्योंकि इसमें रूहानी मेहनत है। कृष्ण को देखो खुश हो डांस करते हैं। भक्ति और ज्ञान में रात दिन का फर्क है, उसमें यह नहीं समझाया जाता है कि कृष्ण को याद करने से कट निकलेगी। यहाँ तो समझाया जाता है कि जितना बाप को याद करेंगे उतना पाप नाश होंगे।

सब पुरूषार्थ कर रहे हैं। कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं है। कुछ न कुछ कर्मेन्द्रियों से हो जाता है। कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने में बीच में विघ्न जरूर पड़ेंगे। बाप ने समझाया है - पुरूषार्थ करते-करते अन्त में जाकर कर्मतीत अवस्था होती है फिर तो इस शरीर को रहना नहीं है, इसलिए टाइम लगता है। विघ्न कुछ न कुछ पड़ते हैं। कहाँ माया हरा भी देती है। बाक्सिंग है ना। चाहते हैं बाबा की याद में रहें, परन्तु रह नहीं सकते। थोड़ा बहुत टाइम जो पड़ा हुआ है, धीरे-धीरे वह अवस्था धारण करनी है। कोई जन्मते ही राजा तो नहीं होता है। छोटा बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होगा ना, इसमें भी टाइम लगता है। अब तो बाकी थोड़ा समय रहा है। सारा मदार पुरूषार्थ के ऊपर है। अटेन्शन देना है, हम कैसे भी करके बाप से वर्सा लेंगे जरूर। माया का सामना जरूर करेंगे इसलिए प्रतिज्ञा करते हैं। माया भी कम नहीं है। हल्के से हल्के रूप में भी आती है। रूस्तम के सामने अच्छा जोर मारती है।

बाप कहते हैं अपनी अवस्था को जमाते रहो। कल्प-कल्प की बाजी है। देखा जा रहा है - कल्प पहले मुवाफिक हर एक का पुरूषार्थ चल रहा है। जो कुछ होता है - हम कह देते कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। फिर खुशी भी रहती है, शान्ति भी रहती है। बाप कहते हैं कर्म करते हुए बाप को याद करो। बुद्धि का योग वहाँ लटका रहे तो बहुत कल्याण होगा, जो करेगा सो पायेगा। अच्छा करेगा अच्छा पायेगा। माया की मत पर सब बुरा ही करते आये हैं। अब मिलती है श्रीमत। भला करो तो भला हो। हर एक अपने लिए मेहनत करते हैं। जैसा करेंगे वैसा पायेंगे। क्यों न हम योग लगाते सर्विस करते रहें। योग से आयु बढ़ेगी। याद की यात्रा से निरोगी बनना है तो क्यों न हम बाबा की याद में रहें! यथार्थ बात है तो क्यों न हम कोशिश करें। ज्ञान तो बिल्कुल सहज है। छोटे बच्चे भी समझ जाते हैं और समझाते हैं। परन्तु वह योगी तो नहीं ठहरे ना। यह तो पक्का कराना है कि बाप को याद करो। जो समझते हैं, घड़ी-घड़ी भूल जाता है तो चित्र रख दें, तो भी अच्छा है। सवेरे चित्र को देखते ही याद आ जाता है। शिवबाबा से हम

विष्णुपुरी का वर्सा ले रहे हैं। यह त्रिमूर्ति का चित्र ही मुख्य है, जिसका अर्थ तो तुमने अभी समझा है। दुनिया में ऐसे त्रिमूर्ति का चित्र और कोई के पास है नहीं। यह तो बिल्कुल सहज है। हम लिखें वा न लिखें। यह तो सभी जानते हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना। अच्छा।

नारायण फिर कभी लक्ष्मी बनते हैं। कोई-कोई गीत बहुत अच्छे हैं। माया के घुटके आने पर गीत सुनने से हर्षितपना आ जायेगा। जैसे तैरना सीखना होता है तो पहले घुटके आते हैं फिर उनको पकड़ लेते हैं। यहाँ भी माया के घुटके बहुत खाते हैं। तैरने वाले तो बहुत होते हैं। उन्हों की भी रेस होती है तो तुम्हारी भी रेस होती है-उस पार जाने की। मामेकम् याद करना है। याद नहीं करते तो घुटका खाते हैं। बाप कहते हैं-याद की यात्रा से ही बेड़ा पार होगा। तुम उस पार चले जायेंगे। तारू (तैराक) कोई बहुत तीखे होते हैं, कोई कम। यहाँ भी ऐसे हैं। बाबा के पास चार्ट भेज देते हैं। बाबा जांच करते हैं। याद के चार्ट को यह राइट रीति समझते हैं या रांग समझते हैं। कोई-कोई दिखाते हैं-हम सारे दिन में 5 घण्टा याद में रहा। हम विश्वास नहीं करते, जरूर भूल हुई है। कोई समझते हैं हम जितना समय यहाँ पढ़ते हैं उतना समय तो चार्ट ठीक रहता है। परन्तु नहीं। बहुत हैं यहाँ बैठे हुए भी, सुनते हुए भी बुद्धि बाहर में कहाँ-कहाँ चली जाती है। पूरा सुनते भी नहीं हैं। भक्ति मार्ग में ऐसे-ऐसे होता है।

यह भी बच्चे जानते हैं - विनाश भी आने का है जरूर, तैयारियाँ हो रही हैं। नैचुरल कैलेमिटीज की भी ड्रामा में नूँध है। कोई कितना भी माथा मारे, तुम्हारी राजधानी तो स्थापन होनी ही है। कोई की भी ताकत नहीं जो इसमें कुछ कर सके। बाकी अवस्थायें तो नीचे-ऊपर होंगी ही। यह है बहुत बड़ी कमाई। कभी तुम बहुत खुशी में अच्छे ख्यालात में रहेंगे, कभी ठण्डे पड़ जायेंगे। यात्रा में भी नीचे-ऊपर होते हैं, इसमें भी ऐसे होता है। कभी तो सुबह को उठ बाप को याद करने से बहुत खुशी होती है ओहो! बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। वण्डर है। सभी आत्माओं का बाप

भगवान हमको पढ़ा रहे हैं। उन्होंने फिर कृष्ण को भगवान समझ लिया है। सारी दुनिया में गीता का मान बहुत है क्योंकि भगवानुवाच है ना। परन्तु यह किसको पता नहीं है कि भगवान किसको कहा जाता है। भल कितनी भी पोजीशन वाले बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित आदि हैं, कहते भी हैं गॉड फादर को याद करते हैं परन्तु वह कब आया, क्या आकर किया यह सब भूल गये हैं। बाप सब बातें समझाते रहते हैं। ड्रामा में यह सब नूँध है। यह रावणराज्य फिर भी होगा और हमको आना पड़ेगा। रावण ही तुमको अज्ञान के घोर अन्धियारे में सुला देते हैं। ज्ञान तो सिर्फ एक ज्ञान सागर ही बतलाते हैं जिससे सद्गति होती है।

हमको भगवान पढ़ाते हैं। बस खुशी में ठण्डेठार हो जाना चाहिए। बाप की याद से सब घोटाले निकल जाते हैं। बाबा हमारा बाप भी है, हमको पढ़ाते भी हैं फिर हमको साथ भी ले जायेंगे। अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप से ऐसी बातें करनी हैं। बाबा हमको अभी मालूम पड़ा है, ब्रह्मा और विष्णु का भी मालूम पड़ा है। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। अब विष्णु दिखाते हैं क्षीरसागर में। ब्रह्मा को सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं।

रूहानी बच्चों को फिर भी रूहानी बाप रोज़-रोज़ समझाते हैं कि जितना हो सके देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो क्योंकि तुम जानते हो हम उस बेहद के बाप से बेहद सुख की तकदीर बनाने आये हैं। तो जरूर बाप को याद करना पड़े। पवित्र सतोप्रधान बनने बिगर सतोप्रधान तकदीर बना नहीं सकते। यह तो अच्छी रीति याद करो। मूल बात है ही एक। यह तो अपने पास लिख दो। बांह पर नाम लिखते हैं ना। तुम भी लिख दो-हम आत्मा हैं, बेहद के बाप से हम वर्सा ले रहे हैं क्योंकि माया भुला देती है इसलिए लिखा हुआ होगा तो घड़ी-घड़ी याद रहेगी। मनुष्य ओम् का वा कृष्ण आदि का चित्र भी लगाते हैं याद के लिए। यह तो है नये ते नई याद । यह सिर्फ बेहद का बाप ही समझाते हैं। इस समझने से तुम

सौभाग्यशाली तो क्या पदम भाग्यशाली बनते हो। बाप को न जानने कारण, याद न करने कारण कंगाल बन गये हैं। एक ही बाप है जो सदैव के लिए जीवन को सुखी बनाने आये हैं। भल याद भी करते हैं परन्तु जानते बिल्कुल नहीं हैं। विलायत वाले भी सर्वव्यापी कहना भारतवासियों से सीखे हैं। भारत गिरा है, तो सब गिरे हैं। भारत ही रेसपान्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने।

मुख्य है ही याद की यात्रा। इसमें माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं। भल कोई याद के चार्ट में 50-60 परसेन्ट भी लिखते हैं परन्तु समझते नहीं हैं कि याद की यात्रा किसको कहा जाता है। पूछते रहते हैं-इस बात को याद कहें? बड़ा मुश्किल है। तुम यहाँ 10-15 मिनट बैठते हो, उनमें भी जांच करो-याद में अच्छी रीति रहते हैं? बहुत हैं जो याद में रह नहीं सकते फिर वह वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। बहुत हैं जो याद में न रहने से विघ्न डालते हैं। सारा दिन बुद्धि बाहर भटकती रहती है। सो यहाँ थोड़ेही शान्त होगी, इसलिए याद का चार्ट भी रखते नहीं। झूठा लिखने से तो और ही दण्ड पड़े। बहुत बच्चे भूलें करते हैं, छिपाते हैं। सच बताते नहीं। बाप कहे और सच न बताये तो कितना दोष हो जाता। कितना भी बड़ा गन्दा काम किया होगा तो भी सच बताने में लज्जा आयेगी। अक्सर करके सब झूठ बतायेंगे। झूठी माया, झूठी काया...... है ना। एकदम देह-अभिमान में आ जाते हैं। सच सुनाना तो अच्छा ही है और भी सीखेंगे। यहाँ सच बताना है। नॉलेज के साथ-साथ याद की यात्रा भी जरूरी है क्योंकि याद की यात्रा से ही अपना और विश्व का कल्याण होना है। नॉलेज समझाने के लिए बहुत सहज है। याद में ही मेहनत है। बाकी बीज से झाड़ कैसे निकलता है, वह तो सबको मालूम रहता है। बुद्धि में 84 का चक्र है, बीज और झाड़ की नॉलेज होगी ना। बाप तो सत्य है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। उनमें नॉलेज है समझाने के लिए।

अभी तुम इस पढ़ाई से पटरानी बन रहे हो, इसमें पवित्रता भी मुख्य चाहिए। अपने आपको देखना है कि याद का चार्ट ठीक है? बाबा के पास कोई का 5 घण्टे का, कोई का 2-3 घण्टे का भी चार्ट आता है। कोई तो लिखते ही नहीं हैं। बहुत कम याद करते हैं। सबकी यात्रा एकरस हो न सके। अजुन ढेर बच्चे वृद्धि को पायेंगे। हर एक को अपना चार्ट देखना है-मैं कहाँ तक पद पा सकूँगा? कहाँ तक खुशी है? हमको सदैव खुशी क्यों नहीं होनी चाहिए। जबकि ऊंच ते ऊंच बाप के बने हैं। ड्रामा अनुसार तुमने भक्ति बहुत की है। भक्तों को फल देने के लिए ही बाप आया है। रावण राज्य में तो विकर्म होते ही हैं। तुम पुरूषार्थ करते हो - सतोप्रधान दुनिया में जाने का। जो पूरा पुरूषार्थ नहीं करेंगे तो सतो में आयेंगे। सब थोड़ेही इतना ज्ञान लेंगे।

मुरली तो सबको मिलती है। अक्षर नहीं जानते हैं तो सीखना चाहिए ना-अपनी उन्नति के लिए पुरूषार्थ करना चाहिए। अपना भी और दूसरों का भी कल्याण करना है। यह बाप (ब्रह्मा बाबा) भी सुना सकते हैं ना, परन्तु बच्चों का बुद्धियोग शिवबाबा तरफ रहे इसलिए कहते हैं हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं। शिवबाबा को ही याद करो। शिवबाबा परमधाम से आये हैं, मुरली सुना रहे हैं। यह ब्रह्मा तो परमधाम से नहीं आकर सुनाते हैं। समझो शिवबाबा इस तन में आकर हमको मुरली सुना रहे हैं। यह बुद्धि में याद होना चाहिए। यथार्थ रीति यह बुद्धि में रहे तो भी याद की यात्रा रहेगी ना। परन्तु यहाँ बैठे भी बहुतों का बुद्धियोग इधर-उधर चला जाता है। यहाँ तुम यात्रा पर अच्छी रीति रह सकते हो। नहीं तो गांव याद आयेगा। घरबार याद आयेगा। बुद्धि में यह याद रहता है-शिवबाबा हमको इसमें बैठ पढ़ाते हैं। हम शिवबाबा की याद में मुरली सुन रहे थे फिर बुद्धियोग कहाँ भाग गया। ऐसे बहुतों का बुद्धियोग चला जाता है। यहाँ तुम यात्रा पर अच्छी रीति रह सकते हो। समझते हो शिवबाबा परमधाम से आये हैं। बाहर गांवड़ों आदि में रहने से यह ख्याल नहीं रहता है। कोई-कोई समझते हैं शिवबाबा की मुरली इन कानों से सुन रहे हैं फिर सुनाने वाले का नाम-रूप याद न रहे। यह ज्ञान सारा अन्दर का है। अन्दर में ख्याल रहे शिवबाबा की मुरली हम सुनते हैं। ऐसे नहीं, फलानी बहन सुना रही है। शिवबाबा की मुरली

सुन रहे हैं। यह भी याद में रहने की युक्तियां हैं। ऐसे नहीं कि जितना समय हम मुरली सुनते हैं, याद में हैं। नहीं, बाबा कहते हैं-बहुतों की बुद्धि कहाँ-कहाँ बाहर में चली जाती है। खेतीबाड़ी आदि याद आती रहेगी। बुद्धि योग कहाँ बाहर भटकना नहीं चाहिए। शिवबाबा को याद करने में कोई तकलीफ थोड़ेही है। परन्तु माया याद करने नहीं देती है। सारा समय शिवबाबा की याद रह नहीं सकती, और-और ख्यालात आ जाते हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार है ना। जो बहुत नज़दीक वाले होंगे उनकी बुद्धि में अच्छी रीति बैठेगा। सब थोड़ेही 8 की माला में आ सकेंगे। ज्ञान, योग, दैवीगुण यह सब अपने में देखना है। हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है? माया के वश कोई विकर्म तो नहीं होता है? कोई-कोई बहुत लालची बन जाते हैं। लालच का भी भूत होता है। तो माया की प्रवेशता ऐसी होती है जो भूख-भूख करते रहते हैं-खाऊं-खाऊं पेट में बलाऊं....... कोई में खाने की बहुत आसक्ति होती है। खाना भी कायदे अनुसार होना चाहिए। ढेर बच्चे हैं। अब बहुत बच्चे बनने वाले हैं। कितने ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ बनेंगे। बच्चों को भी कहता हूँ-तुम ब्राह्मण बन बैठो। माताओं को आगे रखा जाता है। शिव शक्ति भारत माताओं की जय।

प्यार का सागर अपने बच्चों को भी ऐसा प्यार का सागर बनाते हैं। बच्चों की एम ऑब्जेक्ट ही है कि हम ऐसे लक्ष्मी-नारायण बनें। इनको सब कितना प्यार करते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा हमको इन जैसा मीठा बनाते हैं। मीठा यहाँ ही बनना है और बनेंगे याद से। भारत का योग गाया हुआ है, यह है याद । इस याद से ही तुम इन जैसे विश्व के मालिक बनते हो। यही बच्चों को मेहनत करनी है। तुम इस घमण्ड में मत आओ कि हमको ज्ञान बहुत है। मूल बात है याद । याद ही प्यार देती है। बहुत मीठे, बहुत प्यारे बनने चाहते हो, ऊंच पद पाना चाहते हो तो मेहनत करो। नहीं तो बहुत पछतायेंगे क्योंकि बहुत बच्चे हैं जिनसे याद में रहना पहुँचता नहीं है, थक जाते हैं तो छोड़ देते हैं। एक तो देही-अभिमानी बनने के लिए बहुत प्रयत्न करो। नहीं तो बहुत कम पद पा लेंगे। इतना स्वीट कभी नहीं होंगे। बहुत थोड़े बच्चे हैं जो खींचते हैं क्योंकि याद में

रहते हैं। सिर्फ बाप की याद चाहिए। जितना याद करेंगे उतना बहुत स्वीट बनेंगे। इन लक्ष्मी-नारायण ने भी अगले जन्म में बहुत याद किया है। याद से स्वीट बने हैं। बाप कहते हैं बहुत मीठा तब बनेंगे जब समझेंगे कि हम आत्मा हैं। आत्मा समझ बाप को याद करने में बहुत मज़ा है। जितना याद करेंगे उतना सतोप्रधान, 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।

माला का दाना बनना है तो पुरूषार्थ करना पड़े। माला तो बहुत बड़ी है। 8 की भी है, 108 की भी है, फिर 16108 की भी है। बाप खुद कहते हैं बहुत-बहुत मेहनत करो। अपने को आत्मा समझो। सच बतलाते नहीं हैं। अच्छे-अच्छे जो अपने को समझते हैं, उनसे भी विकर्म हो जाते हैं। भल ज्ञानी तू आत्मा हैं। समझानी अच्छी है परन्तु योग है नहीं, दिल पर नहीं चढ़ते। याद में ही नहीं रहते तो दिल पर भी नहीं चढ़ते। याद से ही याद मिलेगी ना। शुरू में फट से वारी गये। अब वारी जाना मासी का घर नहीं। मूल बात है याद , तब ही खुशी का पारा चढ़ेगा। जितनी कलायें कम होती गई हैं उतना दु:ख बढ़ता गया है। अब फिर जितनी कलायें बढ़ेगी उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होंगे। जास्ती याद करने वालों को क्या पद मिलता है। बहुत पिछाड़ी में साक्षात्कार होगा। जब विनाश होगा तब तुम स्वर्ग के साक्षात्कार के हलवे खायेंगे। बाबा बार- बार समझाते हैं-याद को बढ़ाओ। किसको थोड़ा समझाया-इसमें बाबा खुश नहीं होते। एक पण्डित की भी कथा है ना। बोला राम-राम कहने से सागर पार हो जायेंगे। यह दिखाते हैं-निश्चय में ही विजय है। बाप में संशय आने से विनशन्ती हो जाते हैं। बाप की याद से ही पाप कटते हैं, रात-दिन कोशिश करनी चाहिए। फिर कर्मेन्द्रियों की चंचलता बन्द हो जायेगी। इसमें बहुत मेहनत है। बहुत हैं जिनकी याद का चार्ट है नहीं। गोया फाउन्डेशन है नहीं। जितना हो सके कैसे भी याद करना है तब ही सतोप्रधान, 16 कला बनेंगे। पवित्रता के साथ याद की यात्रा भी चाहिए। पवित्र रहने से ही याद में रह सकेंगे। यह प्वाइंट अच्छी रीति धारण करो। बाप कितना निरहंकारी है। आगे चल तुम्हारे चरणों में सब

झुकेंगे। कहेंगे बरोबर यह मातायें स्वर्ग का द्वार खोलती हैं। याद का जौहर अभी कम है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में ही मेहनत है। अच्छा!

- बाबा ने समझाया है, बाबा के सम्मुख आते हो तो पहले यह याद करना है कि हम ईश्वर बाप के सम्मुख जाते हैं। शिवबाबा तो निराकार है। उनके सम्मुख हम कैसे जायें। तो उस बाप को याद कर फिर बाप के सम्मुख आना है। तुम जानते हो वह इसमें बैठा हुआ है। यह शरीर तो पतित है। शिवबाबा की याद में न रह कोई काम करते हो तो पाप लग जाता है। हम शिवबाबा के पास जाते हैं। फिर दूसरे जन्म में दूसरे सम्बन्धी होंगे। वहाँ देवताओं की गोद में जायेंगे। यह ईश्वरीय गोद एक ही बार मिलती है। मुख से कहते हैं बाबा हम आपका हो चुका। बहुत हैं जिन्होंने कभी देखा भी नहीं है। बाहर में रहते हैं, लिखते हैं शिवबाबा हम आपकी गोद के बच्चे हो चुके हैं।

- यहाँ हर एक को बिठाया जाता है कि अशरीरी हो बाप की याद में बैठो और साथ-साथ यह जो सृष्टि चक्र है उनको भी याद करो। मनुष्य 84 के चक्र को समझते नहीं हैं। समझेंगे ही नहीं। जो 84 का चक्र लगाते हैं वही समझने आयेंगे। तुमको यही याद करना चाहिए, इनको स्वदर्शन चक्र कहा जाता है, जिससे आसुरी ख्यालात खत्म हो जायेंगे। ऐसे नहीं कि कोई असुर बैठे हैं जिनका गला कट जायेगा। मनुष्य स्वदर्शन चक्र का भी अर्थ नहीं समझते हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों को यहाँ मिलता है। कमल फूल समान गृहस्थ व्यवहार में रह पवित्र बनो। भगवानुवाच है ना। यह एक जन्म पवित्र बनने से भविष्य 21 जन्म तुम पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे।

बाप कहते हैं माया तुमको कितना भी हिलाये परन्तु तुम स्थिर रहो। रावण, हनूमान, अंगद आदि यह सब दृष्टान्त बना दिये हैं, जिनका अर्थ तुम बच्चे जानते हो। भ्रमरी का भी दृष्टान्त है। भ्रमरी और ब्राह्मणी राशि मिलती है। तुम विष्टा के कीड़ों को ज्ञान-योग की भूँ-भूँ कर पतित से पावन बनाते हो। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कछुए का भी दृष्टान्त है। इन्द्रियों को समेटकर अन्तर्मुख हो बैठ जाते हैं। तुमको भी बाप कहते हैं भल कर्म करो फिर अन्तर्मुख हो जाओ। जैसेकि यह सृष्टि है नहीं। चुरपुर बन्द हो जाती है। भक्ति मार्ग में बाहरमुखी बन पड़ते हैं। गीत गाना, यह करना, कितना हंगामा, कितना खर्चा होता है। कितने मेले लगते हैं। बाप कहते हैं यह सब छोड़ अन्तर्मुख हो जाओ। जैसेकि यह सृष्टि है नहीं। अपने को देखो हम लायक बने हैं? कोई विकार तो नहीं सताता है? हम बाप को याद करते हैं? बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं, ऐसे बाप को दिन-रात याद करना चाहिए। हम आत्मा हैं, हमारा वह बाप है। अन्दर में यह चलता रहे - हम अब नई दुनिया के फूल बन रहे हैं। अक का वा टांगर का फूल नहीं बनना है। हमको तो एकदम किंग ऑफ फ्लावर बिल्कुल खुशबूदार बनना है। कोई बदबू न रहे। बुरे ख्यालात निकल जाने चाहिए। माया के तूफान गिराने के लिए बहुत आयेंगे। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है। ऐसे-ऐसे अपने को पक्का करना है। अपने को सुधारना है। कोई भी देहधारी को मुझे याद नहीं करना है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो, शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी भल करो। उनसे भी टाइम निकाल सकते हो। भोजन खाने समय भी बाप की महिमा करते रहो। बाबा को याद कर खाने से भोजन भी पवित्र हो जाता है। जब बाप को निरन्तर याद करेंगे तब याद से ही बहुत जन्मों के पाप कटेंगे और तुम सतोप्रधान बनेंगे। देखना है कितना सच्चा सोना बना हूँ? आज कितना घण्टा याद में रहा? कल 3 घण्टा याद में रहा, आज 2 घण्टा रहा-यह तो आज घाटा हो गया। उतरना और चढ़ना होता रहेगा। यात्रा पर जाते हैं तो कहाँ ऊंचे, कहाँ नीचे होते हैं। तुम्हारी अवस्था भी नीचे-ऊपर होती रहेगी। अपना खाता देखना है। मुख्य है याद की यात्रा।

- हम आत्मा सतोप्रधान थी, अब तमोप्रधान बनी हूँ। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कितना सहज है फिर भी भूल जाते हैं। जितना समय बैठो अपने को आत्मा समझो। मैं आत्मा बाबा का बच्चा हूँ। बाप को याद करने से स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। बाप को याद करने से आधाकल्प के पाप भस्म हो जायेंगे। कितना सहज युक्ति बतलाते हैं। सब बच्चे सुन रहे हैं। यह बाबा खुद भी प्रैक्टिस करते हैं तब तो सिखाते हैं ना। मैं बाबा का रथ हूँ, बाबा मुझे खिलाते हैं। तुम बच्चे भी ऐसे समझो। शिवबाबा को याद करते रहो तो कितना फायदा हो जाए। परन्तु भूल जाते हैं। बहुत सहज है। धन्धे में कोई ग्राहक नहीं है तो याद में बैठ जाओ। मैं आत्मा हूँ, बाबा को याद करना है। बीमारी में भी याद कर सकते हो। बांधेली हो तो वहाँ बैठ तुम याद करती रहो तो 10-20 वर्ष वालों से भी ऊंच पद पा सकती हो।

- तुम बच्चे जानते हो परमपिता परमात्मा बिन्दी है, वह हमको पढ़ाते हैं। हम आत्मायें पढ़ रही हैं। यह भूलना नहीं चाहिए। हम आत्मा को जो नॉलेज मिलती है, फिर हम दूसरी आत्माओं को देते हैं। यह याद तब ठहरेगी जब अपने को आत्मा समझ बाप की याद में रहेंगे। याद में बहुत कच्चे हैं, झट देह-अभिमान आ जाता है। देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है। हम आत्मा इनको सौदा देते हैं। हम आत्मा व्यापार करते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में ही फायदा है। आत्मा को ज्ञान है हम यात्रा पर हैं। कर्म तो करना ही है। बच्चों आदि को भी सम्भालना है। धंधा धोरी भी करना है। धन्धे आदि में याद रहे हम आत्मा हैं, यह बड़ा मुश्किल है। बाप कहते हैं कोई भी उल्टा काम कभी नहीं करना। सबसे बड़ा पाप है विकार का। वही बड़ा तंग करने वाला है। अभी तुम बच्चे पावन बनने की प्रतिज्ञा करते हो। उसका ही याद गार यह राखी बंधन है। ईश्वर तुम्हारा बाप कहते हैं मीठे बच्चे विकार में नहीं जाओ। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं, वह मुझे याद करने से ही भस्म होंगे। कल्प पहले भी तुमको शिक्षा दी थी। बाप गैरन्टी तब करते हैं जब तुम यह गैरन्टी करते हो कि बाबा हम आपको याद करते रहेंगे। इतना याद करते रहो जो शरीर का भान न रहे। सन्यासियों में भी कोई-कोई तीखे बहुत

पक्के ब्रह्म ज्ञानी होते हैं, वह भी ऐसे बैठे-बैठे शरीर छोड़ते हैं। यहाँ तुमको तो बाप समझाते हैं, पावन बनकर जाना है। वह तो अपनी मत पर चलते हैं। ऐसे नहीं कि वह शरीर छोड़कर कोई मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाते हैं। नहीं।

ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। तुम जानते हो-शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको याद की यात्रा सिखला रहे हैं। बाबा को याद करो, योग अक्षर डिफीकल्ट लगता है। याद अक्षर बहुत सहज है। बाबा अक्षर बहुत लवली है। तुमको खुद ही लज्जा आयेगी-हम आत्मायें बाप को याद नहीं कर सकती हैं, जिनसे विश्व की बादशाही मिलती है! आपेही लज्जा आयेगी। बाप भी कहेंगे तुम तो बेसमझ हो, बाप को याद नहीं कर सकते हो तो वर्सा कैसे पायेंगे! विकर्म विनाश कैसे होंगे! तुम आत्मा हो मैं तुम्हारा परमपिता परमात्मा अविनाशी हूँ ना। तुम चाहते हो हम पावन बन सुखधाम में जायें तो श्रीमत पर चलो। मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे! अच्छा!

मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। इनकी आत्मा जानती है-बाबा मेरे साथ इकट्ठा बैठा हुआ है तो भी घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। इस दादा की आत्मा कहती है मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे नहीं कि मेरे साथ बैठा है तो याद अच्छी रहती है। नहीं। एकदम इकट्ठा है। जानता हूँ मेरे पास है। इस शरीर का जैसे वह मालिक है। फिर भी भूल जाता हूँ। बाबा को यह (शरीर) मकान दिया है रहने के लिए। बाकी एक कोने में मैं बैठा हूँ। बड़ा आदमी हुआ ना। विचार करता हूँ, बाजू में मालिक बैठा है। यह रथ उनका है। वह इनकी सम्भाल करते हैं। मुझे शिवबाबा खिलाते भी हैं। मैं उनका रथ हूँ। कुछ तो खातिरी करेंगे। इस खुशी में खाता हूँ। दो-चार मिनट बाद भूल जाता हूँ, तब समझता हूँ बच्चों को कितनी मेहनत होगी इसलिए बाबा समझाते रहते हैं-जितना हो सके बाप को याद करो। बहुत-बहुत फायदा है। यहाँ तो थोड़ी बात में तंग हो पड़ते हैं फिर पढ़ाई

को छोड़ देते हैं। बाबा-बाबा कह फारकती दे देते हैं। बाप को अपना बनावन्ती, ज्ञान सुनावन्ती, पशन्ती, दिव्य दृष्टि से स्वर्ग देखन्ती, रास करन्ती, अहो मम माया मुझे फारकती देवन्ती, भागन्ती। जो विश्व का मालिक बनाते उनको फारकती दे देते हैं। बड़े-बड़े नामीग्रामी भी फारकती दे देते हैं।

बाप कहते हैं मैं भी पार्टधारी हूँ। आगे की बातें पहले से ही जानता होता तो बहुत कुछ बतलाता। बाबा अन्तर्यामी होता तो पहले से बताता। बाप कहते हैं - नहीं, ड्रामा में जो होता है, उनको साक्षी हो देखते चलो और साथ-साथ याद की यात्रा में मस्त रहो। इसमें ही फेल होते हैं। ज्ञान कभी कम-जास्ती नहीं होता। याद की यात्रा ही कभी कम, कभी जास्ती होती है। ज्ञान तो जो मिला है सो है ही। याद की यात्रा में कभी उमंग रहता है, कभी ढीला। नीचे-ऊपर यात्रा होती है। ज्ञान में तुम सीढ़ी नहीं चढ़ते। ज्ञान को यात्रा नहीं कहा जाता। यात्रा है याद की। बाप कहते हैं याद में रहने से तुम सेफ्टी में रहेंगे। देह-अभिमान में आने से तुम बहुत धोखा खाते हो। विकर्म कर देते हो। काम महाशत्रु है, उनमें फेल हो पड़ते हैं। क्रोध आदि की बाबा इतनी बात नहीं करते। ज्ञान से या तो है सेकण्ड में जीवनमुक्ति या तो फिर कहते सागर को स्याही बनाओ तो भी पूरा नहीं हो। या तो सिर्फ कहते हैं अल्फ को याद करो। याद करना किसको कहा जाता, यह थोड़ेही जानते हैं। कहते हैं कलियुग से हमको सतयुग में ले चलो। पुरानी दुनिया में है दु:ख। देखते हो बरसात में कितने मकान गिरते रहते हैं, कितने डूब जाते हैं। बरसात आदि यह नैचुरल कैलेमिटीज भी होंगी।

भारतवासियों को यह पता नहीं है कि हमारा धर्म क्या है। तुमको बाप द्वारा पता पड़ा है कि हमारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म है। बाप आकर फिर तुमको उस धर्म में ट्रांसफर करते हैं। तुम जानते हो हमारा धर्म कितना सुख देने वाला है। तुमको कोई से लड़ाई आदि नहीं करनी है।

तुमको तो अपने स्वधर्म में टिकना है और बाप को याद करना है, इसमें भी टाइम लगता है। ऐसे नहीं कि सिर्फ कहने से टिक जाते हैं। अन्दर में यह स्मृति रहनी चाहिए-मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। हम आत्मा अभी तमोप्रधान पतित बनी हैं। हम आत्मा जब शान्तिधाम में थी तो पवित्र थी, फिर पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बनी हैं। अभी फिर पवित्र बन हमको वापिस घर जाना है। बाप से वर्सा लेने लिए अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। तुमको नशा चढ़ेगा हम ईश्वर की सन्तान हैं। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होते हैं। कितना सहज है - याद से हम पवित्र बन फिर शान्तिधाम में चले जायेंगे।

तुम बच्चों को अभी विहंग मार्ग की सेवा का तमाशा दिखाना चाहिए। चींटी मार्ग की सर्विस तो चलती आ रही है। लेकिन ऐसा तमाशा दिखाओ जो बहुतों का कल्याण हो जाए। बाबा ने यह कल्प पहले भी समझाया था, अब भी समझाते हैं। बहुतों की बुद्धि कहाँ न कहाँ फँसी हुई है। उमंग नहीं। झट देह- अभिमान आ जाता है। देह-अभिमान ने ही सत्यानाश की है। अब बाप सत्या ऊंच करने की कितनी सहज बात बताते हैं। बाप को याद करो तो शक्ति आये। नहीं तो शक्ति आती नहीं। भल सेन्टर सम्भालते हैं, परन्तु नशा नहीं क्योंकि देह- अभिमान है। देही-अभिमानी बनें तो नशा चढ़े। हम किस बाप के बच्चे हैं। बाप कहते हैं जितना तुम देही-अभिमानी होंगे उतना बल आयेगा। आधाकल्प का देह-अभिमान का नशा है तो देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत लगती है। ऐसे नहीं बाबा ज्ञान का सागर है, हमने भी ज्ञान उठाया है, बहुतों को समझाते हैं परन्तु याद का जौहर भी चाहिए। ज्ञान की तलवार है। याद की फिर यात्रा है। दोनों अलग चीज़ हैं। ज्ञान में याद की यात्रा का जौहर चाहिए। वह नहीं है तो काठ की तलवार हो जाती है। सिक्ख लोग तलवार का कितना मान रखते हैं। वह तो हिंसक थी, जिससे लड़ाई की। वास्तव में गुरू लोग लड़ाई थोड़ेही कर सकते हैं। गुरू तो अहिंसक चाहिए ना। लड़ाई से थोड़ेही सद्गति होती है। तुम्हारी तो है योग की बात। याद के बल बिगर ज्ञान तलवार काम नहीं करेगी। क्रिमिनल आई बड़ा नुकसान करने वाली है। आत्मा कानों से सुनती है, बाप

कहते हैं तुम याद में मस्त रहो तो सर्विस बढ़ती जायेगी। कभी-कभी कहते हैं बाबा सम्बन्धी सुनते नहीं हैं। बाबा कहते हैं याद की यात्रा में कच्चे हो इसलिए ज्ञान तलवार काम नहीं करती है। याद की मेहनत करो। यह है गुप्त मेहनत। मुरली चलाना तो प्रत्यक्ष है। याद ही गुप्त मेहनत है, जिससे शक्ति मिलती है। ज्ञान से शक्ति नहीं मिलती। तुम पतित से पावन याद के बल से बनते हो। कमाई का ही पुरूषार्थ करना है। बच्चों को याद जब एकरस रहती है, अवस्था अच्छी है तो बहुत खुशी रहती है और जब याद ठीक नहीं, किसी बात में घुटका खाते हैं तो खुशी गायब हो जाती है। क्या स्टूडेन्ट को टीचर याद नहीं पड़ता होगा। यहाँ तो घर में रहते, सब कुछ करते टीचर को याद करना है। इस टीचर से तो बहुत-बहुत ऊंच पद मिलता है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। टीचर की याद रहे तो भी बाप और गुरू याद जरूर आयेंगे। कितने प्रकार से समझाते रहते हैं। परन्तु घर में फिर धन-दौलत, बाल-बच्चे आदि देख भूल जाते हैं। समझाते तो बहुत हैं। तुमको रूहानी सर्विस करनी है। बाप की याद ही है ऊंच ते ऊंच सेवा। मन्सा-वाचा-कर्मणा बुद्धि में बाप की याद रहे। मुख से भी ज्ञान की बातें सुनाओ। किसको दु:ख नहीं देना है। कोई अकर्तव्य नहीं करना है। पहली बात अल्फ न समझने से और कुछ भी समझेंगे नहीं। पहले अल्फ पक्का कराओ तब तक आगे बढ़ना नहीं चाहिए। शिवबाबा राजयोग सिखलाकर विश्व का मालिक बनाते हैं। इस छी-छी दुनिया में माया का शो बहुत है। कितना फैशन हो गया है। छी-छी दुनिया से नफ़रत आनी चाहिए। एक बाप को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। पवित्र बन जायेंगे। टाइम वेस्ट नहीं करो। अच्छी रीति धारणा करो। माया दुश्मन बहुतों का अक्ल चट कर देती है। कमान्डर गफ़लत करते हैं तो उनको डिसमिस भी करते हैं। खुद कमान्डर को भी लज्जा आती है फिर रिजाइन भी कर देते हैं। यहाँ भी ऐसे होता है। अच्छे-अच्छे कमान्डर्स कभी फाँ हो जाते हैं। अच्छा!

नाटक अगर समझें तो नाटक के आदि-मध्य-अन्त का भी ज्ञान हो। तुम बच्चे जानते हो बाप भी कितना साधारण है। माया बिल्कुल ही भुला देती है। नाक से पकड़ा, यह भुलाया। अभी-

अभी याद में हैं, बहुत हर्षित रहते हैं। ओहो! हम वण्डर ऑफ वर्ल्ड स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं, फिर भूल जाते हैं तो मुरझा पड़ते हैं। ऐसा मुरझा जाते हैं जो भील भी ऐसा मुरझाया हुआ न हो। ज़रा भी जैसेकि समझते ही नहीं कि हम स्वर्ग में जाने वाले हैं। हमको बेहद का बाप पढ़ा रहे हैं। जैसे एकदम मुर्दे बन जाते हैं। वह खुशी, नशा नहीं रहता। अभी वण्डर ऑफ वर्ल्ड की स्थापना हो रही है। वण्डर ऑफ वर्ल्ड का श्रीकृष्ण है प्रिन्स। यह भी तुम जानते हो। कृष्ण जन्माष्टमी पर भी जो ज्ञान में होशियार हैं वह समझाते होंगे।

अब बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों– अपने घर शान्तिधाम को याद करो, सुखधाम को याद करो। दु:खधाम के बन्धन को भूलते जाओ। ऐसे और कोई कह न सके। न वह जा सकते हैं। सबका बाप अथवा मालिक एक ही परमपिता परमात्मा है, वह सब आशिकों का एक ही माशूक है। वह जिस्मानी आशिक माशूक एक-दो को याद करते हैं, बुद्धि में चित्र आ जाता है। फिर एक-दो को याद करते रहेंगे। खाना खाते रहेंगे, याद करते रहेंगे। वह तो हैं एक जन्म के आशिक माशूक। तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो, एक माशूक के। तुमको और कुछ भी नहीं करना है, सिर्फ एक बाप को याद करना है। उन आशिक माशूक के सामने चित्र आ जाता है। बस उनको देखते-देखते काम भी ठहर जाता फिर उनका चेहरा गुम हो जाता है और काम करने लग पड़ते हैं। इसमें तो ऐसे नहीं है। आत्मा भी बिन्दी, परमात्मा भी बिन्दी है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, इसमें ही मेहनत है, कोई भी ऐसी प्रैक्टिस करते नही हैं। आत्मा का ज्ञान मिला अर्थात् आत्मा को रियलाइज किया, बाकी रहा परमात्मा। वह भी तुम जानते हो। बाबा आकर यहाँ (भ्रकुटी में) बैठते हैं। इनकी जगह भी यहाँ है। आत्मा कहाँ से भी चली जाती है, मालूम नहीं पड़ता है। उनका मुख्य स्थान भ्रकुटी है। बाप कहते हैं- मैं भी बिन्दी हूँ, इसमें आकर बैठा हूँ। तुमको पता भी नहीं पड़ता है। बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं, तुमको जो सुनाते हैं वह हम भी सुनते हैं।

- बाप तो कल्याणकारी है ना। कहते हैं इस योग से ही तुम्हारे सब दु:ख 21 जन्म के लिए दूर होने हैं। बच्चियाँ घर में भी समझाती रहें कि अब सब दु:ख दूर करने वाले बेहद के बाप को याद करने से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। पवित्र तो जरूर रहना पड़े। मूल बात है पवित्रता की। जितना-जितना याद में जास्ती रहेंगे तो इन्द्रियाँ भी शान्त हो जायेंगी। जब तक योग की सिद्धि पूरी नहीं होती है तो इन्द्रियाँ भी शान्त नहीं होती हैं। हर एक अपनी जांच करे– काम विकार मुझे कोई धोखा तो नहीं देता? कोई चंचलता नहीं होनी चाहिए, अगर मैं पक्का योगी हूँ तो। यह जैसे कि वानप्रस्थ अवस्था है– बाप को ही याद करते रहना है।

- बाप सब बच्चों को समझाते हैं। जब तुम अच्छे योगी बनेंगे, कहाँ भी आंख नहीं डूबेगी तो फिर तुम्हारी इन्द्रियाँ शान्त हो जायेंगी। मुख्य हैं यह जो सबको धोखा देती हैं। योग में अच्छी रीति अवस्था जम जायेगी तो फिर महसूस होगा– हम जैसे जवानी में ही वानप्रस्थ अवस्था में आ गये हैं। बाप कहते हैं- काम महाशत्रु है। तो अपनी जांच करते रहो। जितना याद में रहेंगे उतना कर्मेन्द्रियाँ शान्त हो जायेंगी और बहुत मीठा स्वभाव बन जायेगा। फील होगा मैं पहले कितना कड़ुवा था, अब कितना मीठा बन गया हूँ। बाबा प्रेम का सागर है ना तो बच्चों को भी बनना है। तो बाबा कहते हैं सबके साथ प्यार की दृष्टि रहे। अगर किसको दु:ख देंगे तो दु:खी होकर मरेंगे इसलिए बहुत मीठा बनना है। बाबा कहते हैं मैं रूप-बसन्त हूँ ना। बाबा से कितने अमूल्य ज्ञान रत्न मिलते हैं, जिससे तुम झोली भरते हो।

- शिवबाबा हमको यह लक्ष्मी-नारायण बनाते हैं। इस समय तुम बन रहे हो। स्वर्ग का रचयिता है ही शिवबाबा। सतयुग में तो नहीं वर्सा देंगे। इस अन्तिम जन्म में शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम यह बनेंगे। और सब बातें छोड़कर बस सर्विस और सर्विस। बाप को याद करते हो–

यह भी बड़ी सर्विस करते हो। तत्व आदि सब पावन बन जाते हैं। योग की महिमा बहुत भारी है। दुनिया में योग आश्रम तो बहुत हैं परन्तु वह सब हैं जिस्मानी हठयोग, तुम्हारा यह है राजयोग, जिससे तुम्हारा बेड़ा पार हो जाता है। उन अनेक प्रकार के हठयोग आदि से सीढ़ी उतरते आये हो। मूल बात है याद की। देखना है हमारा मन कहाँ विकार तरफ तो नहीं जाता है? विकारी को ही पतित कहा जाता है अर्थात् कौड़ी मिसल। विकार में गिरने से अपना ही नुकसान कर देंगे। जो करेगा सो पायेगा। बाप देखे वा न देखे। अपने को चेक करना है– हम बाप की सर्विस करते हैं! हमारे में कोई अवगुण तो नहीं हैं! अगर है तो निकाल देना चाहिए।

बच्चे जानते हैं कि जोजो समय पास होता जाता है, हूबहू ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्थायें तो कब ऊपर, कब नीचे, यह चलता रहेगा। बाबा भी साक्षी होकर देखता है। कभी-कभी बच्चों पर ग्रहचारी बैठती है तो उनको मिटाने के लिए प्रयत्न कराते हैं। बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं कि बाप को याद करो। लेकिन देह-अभिमान में आ जाते हैं इसलिए ठोकरें खाते हैं, इसमें देही- अभिमानी बनना पड़े। परन्तु बच्चों में देह-अभिमान बहुत है। तुम देही-अभिमानी बनो तो बाप की याद रहे फिर सर्विस की उन्नति भी होती रहेगी। जिनको ऊंच पद पाना है, वह सदैव सर्विस में लगे रहेंगे। तकदीर में अगर नहीं है तो तदबीर भी नहीं करेंगे। खुद कहते हैं कि बाबा हमको धारणा नहीं होती है। बुद्धि में नहीं बैठता। धारणा अगर नहीं होती तो खुशी भी नहीं रहती है। जिनको धारणा होती है तो खुशी भी रहती है। समझते हैं कि शिवबाबा आया हुआ है।

स्वर्ग के द्वार खुलते हैं तो नर्क तरफ लात है। तुम्हारा भी मुँह है स्वर्ग तरफ, यह तो बिल्कुल एक्यूरेट बात है। जानते हो अभी हमको घर जाना है तो घर को ही याद करना पड़े। पुरानी दुनिया को भूलना पड़े, इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। पुरानी दुनिया को छोड़ हम बाबा के

पास जाते हैं। याद की यात्रा से ही जायेंगे। मुख्य है ही याद की बात। याद तो सब करते हैं ना। अभी बाप यथार्थ बात आकर समझाते हैं कि मुझे याद करो। यह है अव्यभिचारी याद सो भी अर्थ सहित। तुम जानते हो शिवबाबा भी बिन्दी है। अपने को भी आत्मा बिन्दी समझें, बाप को भी बिन्दी समझें। नई बात देख भूल जाते हैं। अपने को आत्मा समझ फिर बाप को और अपने घर को याद करना है। अच्छा बिन्दी छोटी लगती है, घर तो बड़ा है ना। घर को याद करो। बाबा भी वहाँ रहते हैं। हम तुम वहाँ जायेंगे जहाँ बाबा रहते हैं। बिन्दी याद नहीं पड़ती है, अच्छा घर तो याद पड़ता है ना, वह है शान्तिधाम और वह है सुखधाम। यह है दु:खधाम। अभी तुम नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार पढ़ रहे हो फिर सुखधाम में आ जायेंगे। बाप के बच्चे हैं तो जरूर स्वर्ग की बादशाही चाहिए। कल्प पहले भी शिवबाबा आया था, स्वर्ग की बादशाही दी थी। तुम भूल गये हो। बाप कहते हैं-अभी फिर आया हूँ, तुमको देने। कितने बार तुमने राजाई ली और गँवाई है। अनगिनत बार वर्सा लिया है फिर भी ऐसे बाप को भूल क्यों जाते हो! माया के तूफान से बहुत लड़ाई होती है इसलिए नाटक भी दिखाते हैं– माया उस तरफ खींचती है, प्रभू इस तरफ खींचते हैं। ज्ञान में विघ्न नहीं पड़ते, याद में विघ्न पड़ते हैं, इसमंश ही मेहनत है। अब बाप कहते हैं– महारथी बनो। इस पुरानी दुनिया को तो आग लगनी है। इस यज्ञ में सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है तो महावीर भी बनना है। तुम बच्चों को अखण्ड, अटल, अडोल राज्य पाना है। तुम्हारा बुद्धियोग बाप के साथ ऐसा रहे जो भल कितना भी तूफान आये, माया कुछ कर न सके। यह है तुम्हारी पिछाड़ी की अवस्था। जब ट्रांसफर होना होता है, जैसे स्कूल में इम्तिहान पिछाड़ी को होते हैं।

बाप कहते हैं सारा ड्रामा ही 5 हजार वर्ष का है इसलिए कहा जाता है आज भारत क्या है, कल का भारत क्या था। लाखों वर्ष की तो किसको स्मृति रह न सके। तुम बच्चों को अब स्मृति मिली है। जानते हो 5 हजार वर्ष की बात है। बाबा कहते योग में बैठो। अपने को आत्मा समझ

बाप को याद करो। यह ज्ञान हुआ ना। वह तो हैं हठयोगी। टाँग-टाँग पर चढ़ाकर बैठते हैं। क्या-क्या करते हैं। तुम मातायें तो ऐसे कर नहीं सकती। बैठ भी न सको। कितने ढेर चित्र भक्ति मार्ग के हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चे यह कुछ करने की तुमको दरकार नहीं है। स्कूल में स्टूडेन्ट कायदेसिर तो बैठते हैं। बाप वह भी नहीं कहते। जैसे चाहो वैसे बैठो। बैठकर थक जाओ तो अच्छा लेट जाओ। बाबा कोई बात में मना नहीं करते हैं। यह तो बिल्कुल सहज समझने की बात है, इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं। भल कितना भी बीमार हो, हो सकता है सुनते-सुनते शिवबाबा की याद में रहते-रहते प्राण तन से निकल जाएं। गाया जाता है ना– गंगा जल मुख में हो... तब प्राण तन से निकले। वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। वास्तव में हैं यह ज्ञान् अमृत की बातें। तुम जानते हो सचमुच ऐसे ही प्राण तन से निकलने हैं।

मुख्य बात है बाप को याद करना, स्वदर्शन चक्रधारी बनना। बीज को याद करने से सारा झाड़ बुद्धि में आ जायेगा। बाप समझाते हैं अभी सबको तमोप्रधान भी जरूर बनना है तब तो बाप आकर सतोप्रधान बनाये। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। कहते हैं भल तुम बच्चे सर्विस भी अपनी करते हो सिर्फ एक बात याद रखो– बाप को याद करो। सतोप्रधान बनने का और कोई रास्ता बता न सके। सर्व का रूहानी सर्जन एक ही है। वही आकर आत्माओं को इन्जेक्शन लगाते हैं क्योंकि आत्मा ही तमोप्रधान बनी है। बाप को अविनाशी सर्जन कहा जाता है। आत्मा अविनाशी है, परमात्मा बाप भी अविनाशी है। अभी आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनी है, उनको इन्जेक्शन चाहिए। बाप कहते हैं बच्चे अपने को आत्मा निश्चय करो और अपने बाप को याद करो। बुद्धियोग ऊपर में लगाओ तो स्वीट होम में चले जायेंगे। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हमें अपने स्वीट साइलेन्स होम में जाना है।

राम को बाण क्यों दिये हैं! यह भी पता नही। यह समझाने के लिए देना पड़ता है। नहीं तो मनुष्य समझेंगे– बाण चलाना यह तो हिंसक चित्र है। जैसे देवियों को भी हिंसक बाण आदि हथियार

दे देते हैं। समझाया जाता है इस समय सब क्षत्रिय युद्ध के मैदान में हैं। परन्तु तुम्हारी युद्ध है माया के साथ। याद में पूरा न रहने के कारण माया रावण को जीत नहीं सकते। कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकते। तुम्हारी यह है युद्ध स्थल। युद्ध में स्थिर रहने वाले का नाम युद्धिष्ठिर रखा है। ऐसे-ऐसे नाम बैठ बनाये हैं। युद्धिष्ठिर और धृतराष्ट्र दिखाते हैं। वह पाण्डवों का था, वह कौरवों का। यह सब कहानियाँ बैठ बनाई हैं। ऐसे नाम हैं नहीं।

भारत शुरू में क्या था, तुम कैसे मालिक बने, इसमें बुद्धि बड़ी पवित्र चाहिए। तुम्हारी बुद्धि को अब नॉलेज मिल रही है। शेरणी का दूध सोने के बर्तन में... इसमें गोल्डन एजेड बुद्धि चाहिए। बाप को याद करने से तुम्हारी बुद्धि गोल्डन एज बन जायेगी। याद नहीं करते हैं तो आइरन एजेड बन पड़ते हैं। घड़ी-घड़ी बाप को भूल जाते हैं। इस मेहनत में टाइम लगता है कल्प पहले मुआफक, जो ब्राह्मण कुल के हैं वह आते जायेंगे। सैपलिंग लगता जायेगा। कल्प पहले मुआफक तुम सैपलिंग लगा रहे हो– मनुष्य को देवता बनाने का। यह है देवता धर्म का सैपलिंग। वह मनुष्य तो जंगल का ही सैपलिंग लगाते हैं, जंगल को बढ़ाने लिए।

गाते भी हैं ना– चलो वृन्दावन भजो राधे-गोविन्द... वृन्दावन की बात है। अयोध्या के लिए नहीं कहेंगे। श्रीकृष्ण के ऊपर सबका बहुत प्यार रहता है। कृष्ण को बहुत प्यार से याद करते हैं। कृष्ण को देखते हैं तो कहते हैं इन जैसा पति मिले, इन जैसा बच्चा मिले, इन जैसा भाई मिले। सेन्सीबुल बच्चे अथवा बच्चियाँ जो होते हैं वह कृष्ण की मूर्ति सामने रखते हैं कि इन जैसा बच्चा मिले। कृष्ण के प्यार में बहुत रहते हैं ना। सब चाहते हैं कृष्णपुरी। अभी तो है कंसपुरी, रावण की पुरी। कृष्णपुरी का बहुत महत्व है। कृष्ण को सब याद करते हैं। तब बाप कहते हैं तुम इतना समय याद करते आये हो। अब कृष्णपुरी में जाने का पुरूषार्थ करो, इनके घराने में तो जाओ। सूर्यवंशी 8 घराने हैं तो इतना पुरूषार्थ करो जो राजाई में आकर राजकुमार से झूलो।

यह समझ की बात है ना। बाप कहते हैं- बच्चे जितना हो सके मनमनाभव रहो। याद में न रहने से गिर पड़ते हैं। ज्ञान कब गिराता नहीं। याद में नहीं रहते तो गिर पड़ते हैं। इस पर ही अल्लाह अवलदीन, हातमताई के नाटक भी बने हुए हैं। याद में रहने के लिए ही मुख में मुहलरा डाल देते थे। किसको क्रोध आता है तो बोल पड़ते हैं इसलिए कहते हैं मुख में कुछ डाल दो। बात नहीं करें तो क्रोध आयेगा नहीं। बाप कहते हैं- कभी भी कोई पर क्रोध नहीं करो। परन्तु इन बातों को पूरा न समझकर शास्त्रों में कुछ न कुछ डाल दिया है।

अभी तुम बच्चे अपनी अवस्था खुद भी जान सकते हो। आत्मा जितना बाप को याद करेगी उतना खुशी होगी। अपनी जांच रखनी है। बच्चे भी एक दो की अवस्था को, अपनी अवस्था को जान सकते हैं। देखना है हमारा कोई शरीर में भान तो नहीं है! देह-अभिमान है तो समझो हम बहुत कच्चे हैं। बाबा से बहुत दूर हैं। बाप फरमान करते हैं बच्चे तुम्हें अब हीरे जैसा बनना है। बाप देही-अभिमानी बनाते हैं। बाप को देह- अभिमान होता नहीं। देह-अभिमान होता है बच्चों को। बाप की याद से तुम देही-अभिमानी बनेंगे। अपनी जांच करते रहो, हम कितना समय याद करते हैं। जितना याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा और अपने को लायक बनायेंगे। ऐसे भी मत समझना कि कोई बच्चे कर्मातीत अवस्था को पहुँच गये हैं। नहीं, रेस चल रही है। रेस जब पूरी होगी तब फाइनल रिजल्ट होगी। फिर विनाश भी शुरू हो जायेगा। तब तक यह रिहर्सल होती रहेगी जब तक कर्मातीत अवस्था आ जाए। हम किसी की बुराई नहीं कर सकते। अन्त में ही सबका पता पड़ेगा।

गाया जाता है फिकर से फारिग स्वामी... तुम जानते हो फिकर से फारिग होने के लिए अभी हम इतना पुरूषार्थ करते हैं। फिर 21 जन्म लिए कोई फिकरात नहीं रहेगी। बाबा को याद करने से तुम बहुत अडोल रहेंगे। रामायण की कथा भी तुम्हारे पर है। तुम ही महावीर बनते हो। आत्मा

कहती है हमको रावण हिला नहीं सकता। वह अवस्था पिछाड़ी को आयेगी। अभी तो कोई भी हिल जायेंगे। फिकरात रहेगी। जब विश्व में लड़ाई लगेगी तब समझेंगे अब टाइम आ गया है। जितना बाप को याद करने का पुरूषार्थ करेंगे उतना फायदा होगा। पुरूषार्थ करने का अभी ही समय है। फिर तो विनाश की धूमधाम होगी। अभी तो शरीर में भी मोह रहता है ना। बाबा खुद कहते हैं शरीर की सम्भाल रखो। अन्तिम शरीर है, इसमें ही पुरूषार्थ कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। जीते रहेंगे, बाप को याद करते रहेंगे। बाप समझाते हैं बच्चे जीते रहो। जितना जियेंगे उतना बाप को याद कर ऊंच वर्सा लेंगे। अभी तुम्हारी कमाई होती रहती है। शरीर को निरोगी तन्दरूस्त रखो, गफलत नहीं करनी है। खान-पान की सम्भाल रखेंगे तो कुछ नहीं होगा। एकरस चलन से शरीर भी तन्दरूस्त रहेगा। यह अमूल्य तन है। इसमें पुरूषार्थ कर देवी-देवता बनते हो तो बलिहारी इस समय की है। खुशी रहनी चाहिए। जितना बाप और वर्से को याद करेंगे उतना नारायणी नशा चढ़ा रहेगा। बाप की याद से ही तुम ऊंच ते ऊंच पद पायेंगे। देखना है हम कितना खुशी में, कितना फखुर में रहते हैं। गरीबों को तो और ही खुशी रहनी चाहिए। साहूकारों को तो धन का फिकर रहता है। अभी बाप को याद करना है। भक्ति का अक्षर कोई नहीं बोलना है। हाय राम– यह भी भक्ति का अक्षर है। ऐसे कोई पुकार नहीं करनी है। इसमें कुछ भी उच्चारण करने की बात नहीं। ओम् शान्ति भी घड़ी-घड़ी नहीं कहना है। शान्ति माना अहम् आत्मा शान्त स्वरूप हैं। सो तो हैं ही। इसमें बोलने की बात नहीं रहती। दूसरे कोई मनुष्य को कहेंगे ओम् शान्ति, वह तो अर्थ जरा भी नहीं समझेंगे। वो लोग तो ओम् की बड़ी-बड़ी महिमा करते हैं। तुम तो अर्थ समझते हो फिर ओम् शान्ति कहना भी फालतू है। हाँ एक दो से ऐसे पूछ सकते हो– शिवबाबा की याद में हो? जैसे हम भी बच्ची से पूछता हूँ यह किसका श्रृंगार करती हो? बोलती है शिवबाबा के रथ का। यह शिवबाबा का रथ है ना। जैसे हुसैन का रथ होता है ना। घोड़े को श्रृंगार करते हैं। घोड़े का अर्थ नहीं समझते हैं। धर्म स्थापन करने वाले जो आते हैं उनकी आत्मायें पवित्र होती हैं। पुरानी पतित आत्मा धर्म स्थापन कर न सके। तुम धर्म स्थापन नहीं करते हो, शिवबाबा तुम्हारे द्वारा करते हैं। तुमको पवित्र बनाते हैं। वो लोग भक्ति मार्ग में बहुत श्रृंगार आदि करते हैं। यहाँ श्रृंगार पसन्द नहीं करते। बाप कितना निरहंकारी है।

शादी के पहले कन्या फटा हुआ कपड़ा पहनती है, जिसको वनवाह कहते हैं। तुम्हारे पास भी अभी क्या है? कुछ भी नहीं। यह तो ठिक्कर-भित्तर है। यहाँ तुमको कोई भी जेवर आदि पहनने की दरकार नहीं। परन्तु कहते हैं गृहस्थ में रहना है, शादी आदि में जाना पड़ता है तो जेवर आदि भी भल पहनो। मना नहीं है। नहीं तो कहेंगे विधवा, जेवर नहीं पहनती है। नाम बदनाम होगा तब बाबा कहते हैं नाम बदनाम नहीं करना है। कुछ भी पहनो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। जाओ भल कहाँ भी, यह मन्त्र याद रखो। यह परीक्षा लो हम याद में रहते हैं। यहाँ हम जाते हैं– बाबा के डायरेक्शन से। उनके साथ भी तोड़ निभाना है। परन्तु हथ कार डे दिल यार डे...तो समझेंगे यह मजबूत हैं। जेवर आदि पहन शादी पर भल जाओ, इकट्ठे रहो लेकिन महावीर बनना है। सन्यासियों का भी दिखाते हैं ना– गुरू ने वेश्या पास भेज दिया, सर्प के पास भेज दिया। जो बहादुरी से पास हो दिखाते हैं उनको महावीर कहा जाता है। बाप की याद में रहेंगे तो फिर कोई कर्मेन्द्रियों से चंचलता नहीं होगी। बाप को भूले तो कर्मेन्द्रियां चंचल होगी। विश्व के तुम मालिक बनते हो, यह कम बात है क्या! सन्यासी इन बातों को बिल्कुल नहीं जानते। शास्त्रों में भल कुछ बातें हैं परन्तु खण्डन कर दिया है। भगवानुवाच– मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। जब तक जीते रहेंगे– ज्ञान-अमृत पीते रहेंगे, सुनते रहेंगे। राजधानी स्थापन हो जायेगी। बच्चों को घड़ी-घड़ी शिक्षा दी जाती है– एक बाप को याद करो, दैवी लक्षण सीखो। कोई भी विकर्म न हो। यह तो असुरों का काम है। तुम अभी देवता बनते हो तो दैवीगुण धारण करने हैं। सबसे बड़ा है काम का कांटा। आदत पड़ी हुई है तो घड़ी- घड़ी गिर पड़ते हैं, माया चमाट मार फाँ कर देती है। तब गाया जाता है– आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती... अभी तुम एक बाप के बने हो। कहते भी हो यह सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ है। तो तुम ट्रस्टी बन जाते हो। यह सब उनका है, हमको उनकी श्रीमत पर चलना है।

बाप आकर दु:ख की पुरानी दुनिया से लिबरेट करते हैं। यह पुरानी दुनिया बदलनी जरूर है। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन होता है। तुम समझते हो बरोबर हम सतयुग के मालिक बनेंगे, तो हम क्यों न आत्मा निश्चय कर और बाप को याद करें। कुछ तो मेहनत करनी होगी। राजाई पाना कोई सहज थोड़ेही है, बाप को याद करना है। यह माया का वन्डर है जो घड़ी-घड़ी तुमको भुला देती है। इसके लिए उपाय रचना चाहिए। ऐसे नहीं मेरा बनने से याद जम जायेगी। बाकी पुरूषार्थ क्या करेंगे। नहीं, जब तक जीना है पुरूषार्थ करना है। ज्ञान अमृत पीते रहना है। यह भी समझते हो हमारा यह अन्तिम जन्म है। इस शरीर का भान छोड़ देही-अभिमानी बनना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है, पुरूषार्थ जरूर करना है। सिर्फ अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करो। त्वमेव माताश्च पिता... यह सब है भक्ति मार्ग की महिमा। तुमको सिर्फ एक अल्फ को याद करना है। एक ही मैं सैक्रीन हूँ, तुम भी और सब बातें छोड़ बहुत मीठी सैक्रीन हो जाओ। अभी तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है, उनको सतोप्रधान बनाने लिए याद की यात्रा में रहो। सबको यही बताओ बाप से सुख का वर्सा लो। सुख होता ही है सतयुग में। सुखधाम स्थापन करने वाला बाप है, बाप को याद करना है बहुत सहज, परन्तु माया का आपोजीशन बहुत है इसलिए कोशिश कर मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति गाया जाता है। इस ड्रामा में हर एक को अपना पार्ट रिपीट करना है। इस ड्रामा के अन्दर सबसे जास्ती हमारा पार्ट है। सुख भी सबसे जास्ती हमको मिलेगा। बाप कहते हैं- तुम्हारा देवी-देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है। और बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे– हिसाब-किताब चुक्तू कर। जास्ती विस्तार में हम क्यों जाएं। बाप आते ही हैं सबको वापिस ले जाने। मच्छरों सदृष्य सबको ले जाते हैं। शरीर खत्म हो जायेंगे। बाकी आत्मा जो अविनाशी है वह हिसाब-किताब चुक्तू कर चली जायेगी। ऐसे नहीं कि आत्मा आग में पड़ने से पवित्र होगी। आत्मा को याद रूपी योग से ही पवित्र होना है। योग की अग्नि है यह। उन्होंने फिर नाटक बैठ बनाये हैं– सीता आग से पार हुई। आग से कोई एक को थोड़ेही पार होना है। बाप समझाते हैं– तुम सब सीतायें इस समय पतित हो, रावण के राज्य में हो। अब एक बाप की याद से तुमको

पावन बनना है। राम एक ही है। अग्नि अक्षर सुनने से समझते हैं, आग से पार हुई। कहाँ योग अग्नि, कहाँ वह। आत्मा परमात्मा से योग रखने से पतित से पावन होगी। रात-दिन का फर्क है। आत्मायें सब सीतायें हैं। रावण की जेल में शोक वाटिका में हैं। यहाँ का सुख तो काग विष्टा मिसल है।

बाप को सदैव याद करते रहेंगे तो बहुत हर्षित रहेंगे। देह-अभिमान में आने से ही वह खुशी गायब हो जाती है। देही-अभिमानी बनते हो तो बाप को याद करते हो। देह- अभिमान में आने से बाप को भूल दु:ख उठाते हो। जितना बाप को याद करेंगे, उतना बेहद के बाप से सुख उठायेंगे। यहाँ तुम आये ही हो ऐसा लक्ष्मी-नारायण बनने। राजा-रानी और प्रजा का नौकर-चाकर, बहुत फर्क है ना। अभी का पुरूषार्थ फिर कल्प-कल्पान्तर के लिए कायम हो जाता है। पिछाड़ी में सबको साक्षात्कार होगा– हमने कितना पुरूषार्थ किया है। अब भी बाप कहते हैं अपनी अवस्था को देखते रहो। मीठे ते मीठे बाबा, जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है, उनको हम कितना याद करते हैं। तुम्हारा सारा मदार है ही याद पर। जितना याद करेंगे उतना खुशी भी रहेगी। समझेंगे बस अब नजदीक आकर पहुँचे हैं। कोई थक भी जाते हैं, पता नहीं मंजिल कितना दूर है, पहुँचे तो मेहनत भी सफल हो। दुनिया को यह भी पता नहीं कि भगवान किसको कहा जाता है। कहते भी हैं हे भगवान फिर कह देते ठिक्कर भित्तर में है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम बाप के बन चुके हैं। अब बाप की ही मत पर चलना है। भल विलायत में हो वहाँ रहते भी सिर्फ बाप को याद करना है। तुमको श्रीमत तो मिली है। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान सिवाए बाप की याद के हो नहीं सकती। तुम कहते हो– बाबा हम आपसे पूरा वर्सा लेंगे। जैसे हमारा बाबा वर्सा लेते हैं, हम भी पुरूषार्थ कर उनकी गद्दी पर जरूर बैठेंगे। मम्मा बाबा राज-राजेश्वर, राज-राजेश्वरी बनते हैं, तो हम भी बनेंगे। इम्तहान तो सबके लिए एक ही है। तुमको बहुत थोड़ा सिखाया जाता है, सिर्फ बाप को याद करो। इसको कहा जाता है सहज राजयोग

बल। तुम समझते हो योग से बहुत बल मिलता है। हम कोई विकर्म करेंगे तो सजा बहुत खायेंगे, पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। याद में ही माया विघ्न डालती है। तुम जानते हो हम पावन दुनिया में जा रहे हैं।

बाम्ब्स भी तैयार हो गये हैं। अभी बाप हमको फरमान करते हैं कि मुझे याद करो, नहीं तो पिछाड़ी में बहुत रोना पड़ेगा। इम्तिहान में नापास होते हैं तो जाकर डूब मरते हैं गुस्से में। यहाँ गुस्से की तो बात नहीं। पिछाड़ी में तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। क्या-क्या हम बनेंगे– वह भी पता पड़ जायेगा। बाप का काम है पुरूषार्थ कराना। कहते हैं बच्चे कर्म करते हुए याद करना भूल जाते हो वा फुर्सत नहीं मिलती है तो अच्छा बैठो। याद में बैठकर बाप को याद करो। आपस में तुम मिलते हो तो भी यह कोशिश करो कि हम बाबा को याद करें। मिलकर बैठने से तुम याद अच्छा करेंगे, मदद मिलेगी। मूल बात है बाप को याद करना। यहाँ आओ वा न आओ। कोई विलायत जाते हैं फिर आ तो सकेंगे नहीं। वहाँ भी सिर्फ एक बात याद रखो। बाप की याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। बाप कहते हैं सिर्फ एक बात याद रखो– बाप को याद करो। बाप कहते हैं- मनमनाभव। मुझे याद करो तो विश्व का मालिक बनेंगे। मूल बात हो जाती है याद की। कहाँ भी जाने आदि की बात नहीं। घर में रहो सिर्फ बाप को याद करते रहो। पवित्र नहीं बनेंगे तो याद कर नहीं सकेंगे। ऐसे थोड़ेही है कि सब आकर क्लास में पढ़ेंगे। मन्त्र लिया फिर भल कहाँ भी चले जाओ। सतोप्रधान बनने का रास्ता बाप ने बतलाया है। यूँ तो सेन्टर पर आने से नई-नई प्वाइंट सुनते रहेंगे। अगर किसी कारण से नहीं आ सकते हैं, बरसात पड़ती है अथवा करफ्यु लगता है, कोई बाहर नहीं निकल सकते फिर क्या करेंगे। बाप कहते हैं हर्जा नहीं है। कहाँ भी रहते तुम याद में रहो। चलते-फिरते याद करो। औरों को यही कहो कि बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे और देवता बन जायेंगे। अक्षर ही दो हैं। बाप कहते हैं- यह बचपन भूल न जाना। आज हंसते हो कल रोना पड़ेगा– अगर बाप को भुलाया तो। बाप से वर्सा पूरा लेना चाहिए। ऐसे बहुत हैं कहते हैं स्वर्ग में तो जायेंगे ना फिर जो तकदीर में होगा।

उनको कोई पुरूषार्थ करना नहीं कहेंगे। मनुष्य पुरूषार्थ करते ही हैं ऊंच मर्तबा पाने के लिए। अब जबकि बाप के पास ऊंच मर्तबा मिलता है तो गफलत क्यों करनी चाहिए। स्कूल में जो नहीं पढ़ेंगे तो पढ़े-लिखे के आगे भरी ढोनी पड़ेगी। बाप को पूरा याद नहीं करेंगे तो प्रजा के भी नौकर चाकर जाए बनेंगे। इसमें खुश थोड़ेही होना चाहिए। तो बाप समझाते हैं– मीठे-मीठे बच्चों सम्मुख रिफ्रेश होकर जाते हो। कई बांधेलियां हैं, हर्जा नहीं, घर बैठे बाप को याद करती रहो। तुमको कितना सहज समझाते हैं, मौत सामने खड़ा है, अचानक ही लड़ाई शुरू हो जायेगी। एक-दो को कहते हैं थोड़ा भी गड़बड़ किया तो हम ऐसा करेंगे। पहले से ही कह देते हैं, बाम्ब्स की मगरूरी बहुत है। बाप कहते हैं-बच्चे अजुन योगबल में होशियार हुए नहीं हैं, ऐसा न हो लड़ाई लग जाए। परन्तु ड्रामा अनुसार ऐसा होगा ही नहीं। बच्चों ने पूरा वर्सा लिया नहीं है इसलिए निश्चय होता है, यह लड़ाई करके लगेगी भी, तो भी बन्द हो जायेगी क्योंकि अभी राजधानी स्थापन नहीं हुई है। टाइम चाहिए। पुरूषार्थ कराते रहते हैं, पता नहीं किसी भी समय कुछ भी हो सकता है। बस गिर पड़ती है, एरोप्लेन, ट्रेन गिर पड़ती, मौत कितना सहज खड़ा है। धरती भी हिलती रहती है। सबसे जास्ती काम अर्थक्वेक को करना है। लेकिन विनाश होने के पहले बाप से पूरा वर्सा लेना है इसलिए बहुत प्रेम से बाप को याद करना है। बाबा आपके बिगर हमारा दूसरा कोई नहीं। सिर्फ बाप को ही याद करते रहो। कितना सहज रीति जैसे छोटे-छोटे बच्चों को समझाते हैं और कोई तकलीफ नहीं देता हूँ, सिर्फ याद करो। और काम चिता पर बैठ जो तुम जल मरे हो, सो अब ज्ञान चिता पर बैठ पवित्र बनो। तुमसे पूछते हैं आपका उद्देश्य क्या है? बोलो, जो सबका बाप है वह कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। सर्व का सद्गति दाता एक बाप है। अब बाप कहते हैं-सिर्फ मुझे याद करो तो कट उतर जायेगी। यह इतना पैगाम तो दे सकते हो ना। खुद याद करेंगे तब दूसरे को याद करा सकेंगे। दूसरे को रूचि से कहेंगे। नहीं तो दिल से नहीं निकलेगा। बाप कहते हैं- कहाँ भी हो जितना हो सके सिर्फ याद करो। भल थोड़ी खान-पान की तकलीफ आदि होती है। रहना तो घर में ही है। घर में रहते बाप को याद करो, जो मिले

उनको यही शिक्षा दो– मौत सामने खड़ा है। बाप कहते हैं-तुम सब तमोप्रधान पतित बन पड़े हो, अब मुझे याद करो और पवित्र बनो। आत्मा ही पतित बनी है, सतयुग में होती है पावन आत्मा। बाप की याद से ही आत्मा पावन बनेगी और कोई उपाय नहीं है।

अब तुम्हारा बाप है निराकार, जिससे वर्सा ले रहे हो– विश्व की बादशाही का। कितना तुम साहूकार बनते हो। यहाँ एक ही बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। सो भी घूमो, फिरो, खाओ पियो, सिर्फ बाप को याद करो। साहूकार जरूर अच्छी रीति खायेंगे। वह तो अपनी कमाई का फल खाते हैं। मालपुड़ा खाओ या रोटी खाओ। याद करो बाप को। भल कुछ भी खाओ। पैसा तब किसके लिए है। बाबा कोई मना नहीं करते हैं। सिर्फ बाप से योग लगाना है। इस राजाई स्थापन करने में खर्चा नहीं है। उस लड़ाई आदि में कितना खर्चा होता है। एरोप्लेन पर कितना खर्चा होता है। गिरते हैं तो एकदम खत्म हो जाते हैं। कितना नुकसान हो जाता है। तो बाप कहते हैं चलते फिरते बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। अब चलें वतन की ओर। घर जाकर फिर आए राजाई करेंगे। तुम एक्टर्स हो ना। वह बाइसकोप तो दो अढ़ाई घण्टा चलते हैं। यह बेहद का नाटक 5 हजार वर्ष चलता है, इनको मनुष्य ही जान सकते। यह दुनिया है कांटों का जंगल। बड़े ते बड़ा काँटा है विकार का, जो आदि मध्य अन्त दु:ख देते हैं। दूसरे नम्बर का काँटा है क्रोध। उनकी निशानी यह महाभारत लड़ाई देखो। कोई बात में गुस्सा आया तो झट बाम्बस शुरू कर देंगे। अभी तो ऐसे-ऐसे बाम्बस बनाये हैं जो बात मत तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। यह है साइलेन्स बल, इसमें कुछ तुमको बोलना नहीं है। याद के बल से तुम बाबा से विश्व की बादशाही लेते हो। फर्क देखो कितना है।

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप धीरज देते हैं। जैसे लौकिक बाप भी धैर्य देते हैं ना। कोई बीमार होता है तो उनको आथत देते हैं। तुम्हारी बीमारी के दु:ख के दिन बदलकर सुख के

दिन आयेंगे। वह हद का बाप हद का धैर्य देते हैं। अब यह तो है बेहद का बाप। बच्चों को बेहद का धैर्य दे रहे हैं। बच्चे अभी तुम्हारे सुख के दिन आ रहे हैं। बाकी यह थोड़े दिन हैं। अब तुम बाप की याद में रह औरों को भी सिखलाओ। तुम भी शिव शक्तियाँ हो ना। शिवबाबा की शक्ति सेना फिर से प्रकट हुई है। यह (गोप) भी आत्मायें हैं। यह सब शिव से शक्ति लेते हैं। तुम भी शक्ति लेते हो। बाप ने समझाया है इसमें कृपा वा आशीर्वाद की कोई बात नहीं है। याद में रह शक्ति लेते जाओ। याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम शक्तिवान बनते जायेंगे। शिव की शक्ति सेना इतनी सर्वशक्तिवान थी जो पुरानी दुनिया को पलट नया बना दिया। तुम जानते हो योगबल से हम इस पुरानी दुनिया को पलटाते हैं। अंगुली से भी मनुष्य ऐसा इशारा करते हैं कि अल्लाह को, गॉड को याद करो। बच्चे अभी समझते हैं– बाप की याद से यह पत्थरों के पहाड़ अर्थात् दुनिया बदल जायेगी। अभी हम परिस्तान स्थापन कर रहे हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं– प्रदर्शनी पर खूब सर्विस करो, मेहनत करो जो समय मिले उसमें बैठकर सीखो। है बहुत सहज। बच्चों को हर प्रकार की शिक्षा मिलती रहती है। हर एक के कर्मो का हिसाब है।

सन्यासी लोग पवित्र बनते हैं तो उनकी मान्यता होती है। परन्तु वह हैं हठ योगी, वह राजयोग सिखला न सकें। वह सन्यासी, हम गृहस्थी, फिर हम अपने को फालोअर्स कैसे कहला सकते। बाप तो कहते हैं बच्चों को पूरा फालो करना है– मनमनाभव। मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे और मेरे साथ चलेंगे। मैं तो एवर पावन हूँ। मनुष्य पतित बनाते हैं, बाप आकर पावन बनाते हैं। वह पवित्रता, शान्ति, सुख का सागर है। तुमको भी ऐसा बना रहे हैं। तुम योगबल से आत्मा को पवित्र बनाते हो। जानते हो हमको फर्स्टक्लास शरीर मिलेगा। मनुष्य को देवता प्रैक्टिकल में बनाना है। ऐसे थोड़ेही सिर्फ देवताई कपड़ा आदि पहन लिया, अपने पर पूरा ध्यान देना है। देह-अभिमान न आये। बाबा हम तो आपसे वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। तुम भी कहते हो हम भारत को श्रेष्ठाचारी बनाकर ही छोड़ेंगे। निश्चय वाले ही कहते हैं ना। कोई तो कहते हैं

इतने थोड़े समय में कैसे होगा। वास्तव में कभी भी यह संशय नहीं लाना चाहिए। संशय में आने से फिर सर्विस में ढीले हो पड़ते हैं। टाइम बहुत थोड़ा है। जितना हो सके पुरूषार्थ खूब करना चाहिए। थोड़ा लड़ाई आदि का कहाँ हंगामा होगा तो फिर देखना कितनी मेहनत करने लग पड़ते हैं। समझते हैं ना– हम याद में पूरा नहीं रहते हैं फिर उस समय कशमकशा तो कर नहीं सकेंगे। उस समय तो बहुत आफतें आदि रहती हैं इसलिए बाप कहते हैं जितना हो सके गैलप करते जाओ। यह आत्माओं की रेस है। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। निशाने पर जाकर अर्थात् बाप के घर जाकर फिर चले आना है नई दुनिया में। बड़ी फाइन रेस है। बाप कहते हैं- मेरे को टच कर अर्थात् मूलवतन में जाकर फिर आना है। पहले-पहले वह आयेंगे जो योगयुक्त होंगे। चाहते हैं हम मुक्तिधाम में जायें। तो बाप कहते हैं मुझे याद करो तो चले जायेंगे। मुक्तिधाम तो सबको पसन्द है फिर आयेंगे पार्ट बजाने। मोक्ष किसको मिलता नहीं। ईश्वरीय हिस्ट्री-जॉग्राफी में मोक्ष का अक्षर है नहीं। एक सेकेण्ड में तुमको जीवनमुक्ति मिलती है, बाकी सब मुक्त हो जायेंगे। रावण राज्य से मुक्त होना ही है, जो पुरूषार्थ करेगा वही ऊंच पद पायेगा। बच्चों को बड़ा मीठा बनना है।

शरीर निर्वाह के लिए कर्म भी करना है, जैसे भक्ति में भी कोई-कोई बहुत नौधा भक्ति करते हैं। नियम से रोज़ जाकर दर्शन करते हैं। देहधारियों के पास जाना, वह सब है जिस्मानी यात्रा। भक्ति मार्ग में कितने धक्के खाने पड़ते हैं। यहाँ कुछ भी धक्का नहीं खाना है। आते हैं तो समझाने के लिए बिठाया जाता है। बाकी याद के लिए कोई एक जगह बैठ नहीं जाना है। भक्ति मार्ग में कोई कृष्ण का भक्त होता है तो ऐसे नहीं चलते-फिरते कृष्ण को याद नहीं कर सकते इसलिए जो पढ़े लिखे मनुष्य होते हैं, कहते हैं कृष्ण का चित्र घर में रखा है फिर तुम मन्दिरों में क्यों जाते हो। कृष्ण के चित्रों की पूजा तुम कहाँ भी करो। अच्छा, चित्र न रखो, याद करते रहो। एक बार चीज़ देखी तो फिर वह याद रहती है। तुमको भी यही कहते हैं, शिवबाबा को तुम घर बैठे याद नहीं कर सकते हो? यह तो है नई बात। शिवबाबा को कोई भी जानते नहीं। नाम, रूप, देश,

काल को जानते ही नहीं, कह देते सर्वव्यापी है। आत्मा को परमात्मा तो नहीं कहा जाता है। आत्मा को बाप की याद आती है। परन्तु बाप को जानते नहीं तो समझाना पड़े 7 रोज। फिर रेज़गारी प्वाइंट्स भी समझाई जाती हैं। बाप ज्ञान का सागर है ना। कितने समय से सुनते आये हो क्योंकि नॉलेज है ना। समझते हो हमको मनुष्य से देवता बनने की नॉलेज मिलती है। बाप कहते हैं तुमको नई-नई गुह्य बातें सुनाते हैं। मुरली तुमको नहीं मिलती है तो तुम कितना चिल्लाते हो। बाप कहते हैं तुम बाप को तो याद करो। मुरली पढ़ते हो फिर भी भूल जाते हो। पहले-पहले तो यह याद करना है - मैं आत्मा हूँ, इतनी छोटी बिन्दी हूँ। आत्मा को भी जानना है। कहते हैं इनकी आत्मा निकल दूसरे में प्रवेश किया। हम आत्मा ही जन्म लेते-लेते अब पतित, अपवित्र बने हैं। पहले तुम पवित्र गृहस्थ धर्म के थे। लक्ष्मी-नारायण दोनों पवित्र थे। फिर दोनों ही अपवित्र बने, फिर दोनों पवित्र होते हैं तो क्या अपवित्र से पवित्र बनें? या पवित्र जन्म लिया? बाप बैठ समझाते हैं, कैसे तुम पवित्र थे। फिर वाम मार्ग में जाने से अपवित्र बने हो।

तो बाप कहते हैं पहले अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो - यही है याद की यात्रा। बस यही बाप का मैसेज देना है। तीक-तीक करने की दरकार नहीं, मनमनाभव। देह के सब सम्बन्ध छोड़, पुरानी दुनिया में सबका बुद्धि से त्याग करना है क्योंकि अब वापिस जाना है, अशरीरी बनना है। यहाँ बाबा याद दिलाते हैं फिर सारे दिन में बिल्कुल याद भी नहीं करते, श्रीमत पर नहीं चलते हैं। बुद्धि में बैठता नहीं है। बाप कहते हैं नई दुनिया में जाना है तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाबा ने हमको राज्य-भाग्य दिया, हमने फिर ऐसे गंवाया, 84 जन्म लिए। लाखों वर्ष की बात नहीं, बहुत बच्चे अल्फ को न जानने कारण फिर बहुत प्रश्न पूछते रहते हैं। बाप कहते हैं पहले मामेकम् याद करो तो पाप कट जायें और दैवीगुण धारण करो तो देवता बन जायेंगे और कुछ पूछने की दरकार नहीं। अल्फ न समझ बे ते की तीक-तीक करने

से खुद भी मूंझ जाते हैं फिर तंग हो पड़ते हैं। बाप कहते हैं पहले अल्फ को जानने से सब कुछ जान जायेंगे। कोई कहते हैं एक-दो घण्टे याद रहती है! क्या लौकिक बाप से तुम एक-दो घण्टा प्रीत रखते हो? सारा दिन बाबा-बाबा करते रहते हो। यहाँ भल बाबा-बाबा कहते हैं परन्तु हड्डी प्रीत थोड़ेही है। बार-बार कहते हैं शिवबाबा को याद करते रहो। सच-सच याद करना है। चालाकी चल न सके। बहुत हैं जो कहते हैं हम तो शिवबाबा को बहुत याद करते हैं फिर वह तो उड़ने लग पड़े। बाबा बस हम तो जाते हैं सर्विस पर बहुतों का कल्याण करने। जितना बहुतों को पैगाम देंगे उतना याद में रहेंगे। बहुत बच्चियाँ कहती हैं बन्धन है। अरे, बन्धन तो सारी दुनिया को है, बन्धन को युक्ति से काटना है। युक्तियाँ बहुत हैं, समझो कल मर पड़ते हैं फिर बच्चे कौन सम्भालेंगे? जरूर कोई न कोई सम्भालने वाले निकल पड़ेंगे। अज्ञान काल में तो दूसरी शादी कर लेते हैं। इस समय तो शादी भी मुसीबत है। किसको थोड़ा पैसा देकर बोलो बच्चों का सम्भालो। तुम्हारा यह मरजीवा जन्म है ना। जीते जी मर गये फिर पीछे कौन सम्भालेगा? तो जरूर नर्स रखनी पड़े। पैसे से क्या नहीं हो सकता है।

बाप भी चैतन्य आत्मा है। जब चाबी पूरी हो जाती है तो फिर बाप नयेसिर युक्ति बताते हैं कि मुझे याद करो तो फिर चाबी लग जायेगी अर्थात् आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेगी। जैसे मोटर से पेट्रोल खत्म होने पर फिर भरा जाता है ना। अभी तुम्हारी आत्मा समझती है - हमारे में पेट्रोल कैसे भरेगा! बैटरी खाली होती है फिर उनमें पावर भरी जाती है ना। बैटरी खाली होती है तो लाइट खत्म हो जाती है। अब तुम्हारी आत्मा रूपी बैटरी भरती है। जितना याद करेंगे उतना पावर भरती जायेगी। इतना 84 जन्मों का चक्र लगाए बैटरी खाली हो गई है। सतो, रजो, तमो में आई है। अब फिर बाप आया है चाबी देने अथवा बैटरी को भरने। पावर नहीं है तो मनुष्य कैसे बन जाते हैं। तो अब याद से ही बैटरी को भरना है, इनको हयुमन बैटरी कहें। बाप कहते हैं मेरे साथ योग लगाओ। यह ज्ञान एक ही बाप देते हैं। सद्गति दाता वह एक ही बाप है। कहाँ भी बैठे बाप को याद करना है। भल सामने ब्राह्मणी न हो तो भी तुम याद में बैठ सकते

हो। मालूम है बाप की याद से ही हमारे विकर्म विनाश होंगे। तो उस याद में बैठ जाना है। कोई को बिठाने की दरकार नहीं है। खाते-पीते, स्नान आदि करते बाप को याद करो। थोड़ा टाइम दूसरा कोई सामने बैठ जाते हैं। ऐसे नहीं कि वह मदद करते हैं तुमको, नहीं। हर एक को अपने को ही मदद करनी है। ईश्वर ने तो मत दी है कि ऐसे-ऐसे करो तो तुम्हारी दैवी बुद्धि बन जायेगी। यह टैम्पटेशन दी जाती है। श्रीमत तो सबको देते रहते हैं। इतना जरूर है किसकी बुद्धि ठण्डी है, किसकी तेज है। पावन के साथ योग नहीं लगता तो बैटरी चार्ज नहीं होती। बाप की श्रीमत नहीं मानते हैं। योग लगता ही नहीं। तुम अभी फील करते हो हमारी बैटरी भरती जाती है। तमोप्रधान से सतोप्रधान तो जरूर बनना है। इस समय तुमको परमात्मा की श्रीमत मिल रही है। यह दुनिया बिल्कुल नहीं समझती। बाप कहते हैं मेरी इस मत से तुम देवता बन जाते हो, इससे ऊंच चीज़ कोई होती नहीं। वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुमको पुरूषोत्तम बनाने के लिए बाप संगम पर ही आते हैं, जिनका फिर याद गार भक्ति मार्ग में मनाते हैं, दशहरा भी मनाते हैं ना। जब बाप आता है तो दशहरा होता है। 5 हज़ार वर्ष बाद हर बात रिपीट होती है।

- बाप को प्यार भी करना होता है क्योंकि यह है बहुत प्यारे ते प्यारी वस्तु। प्यार का सागर भी है, एकरस प्यार हो न सके। कोई याद करते हैं, कोई नहीं करते हैं। किसको समझाने का भी नशा रहता है ना। यह बड़ा टैम्पटेशन है।

- यह आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। सिर्फ बाप को याद करना और कराना है। तुम सबको कहते हो और जो भी रचना है उनको छोड़ो। रचना से कभी वर्सा मिल न सके। रचयिता बाप को ही याद करना है। और किसकी याद न आये। बाप का बनकर, ज्ञान में आकर फिर अगर कोई ऐसा काम करते हैं तो उसका बोझा सिर पर बहुत चढ़ता है। बाप पावन बनाने आते हैं और फिर ऐसा कुछ काम करते हैं तो और ही

पतित बन पड़ते हैं इसलिए बाबा कहते हैं ऐसा कोई काम नहीं करो जो घाटा पड़ जाए। बाप की ग्लानि होती है ना। ऐसा कर्म नहीं करो जो विकर्म जास्ती हो जाएं। परहेज भी रखनी है। दवाई में भी परहेज रखी जाती है। डॉक्टर कहे यह खटाई आदि नहीं खाना है तो मानना चाहिए। कर्मेन्द्रियों को वश करना पड़ता है। अगर छिपाकर खाते रहेंगे तो फिर दवाई का असर नहीं होगा। इसको कहा जाता है आसक्ति। बाप भी शिक्षा देते हैं - यह नहीं करो। सर्जन है ना। लिखते हैं बाबा मन में संकल्प बहुत आते हैं। खबरदार रहना है। गन्दे स्वप्न, मन्सा में संकल्प आदि बहुत आयेंगे, इनसे डरना नहीं है, सतयुग-त्रेता में यह बातें होती नहीं। तुम जितना आगे नज़दीक होते जायेंगे, सिलवर एज तक पहुँचेंगे तब कर्मेन्द्रियों की चंचलता बन्द हो जायेगी। कर्मेन्द्रियाँ वश हो जायेंगी। सतयुग-त्रेता में वश थी ना। जब उस त्रेता की अवस्था तक आओ तब वश होंगी। फिर सतयुग की अवस्था में आयेंगे तो सतोप्रधान बन जायेंगे फिर सब कर्मेन्द्रियाँ पूरी वश हो जायेंगी। कर्मेन्द्रियाँ वश थी ना। नई बात थोड़ेही है। आज कर्मेन्द्रियों के वश हैं, कल फिर पुरूषार्थ कर कर्मेन्द्रियों को वश कर लेते हैं। वह तो 84 जन्मों में उतरते आये हैं। अभी रिटर्न जरनी है, सबको सतोप्रधान अवस्था में जाना है। अपना चार्ट देखना है - हमने कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं। बाप को याद करते-करते आइरन एज से सिलवर एज तक पहुँच जायेंगे तो कर्मेन्द्रियाँ वश हो जायेंगी। फिर तुमको महसूस होगा - अभी कोई तूफान नहीं आते हैं। वह भी अवस्था आयेगी। फिर गोल्डन एज में चले जायेंगे। मेहनत कर पावन बनने से खुशी का पारा भी चढ़ेगा। जो भी आते हैं उनको समझाना है - कैसे तुमने 84 जन्म लिए हैं? जिसने 84 जन्म लिए हैं, वही समझेंगे। कहेंगे अब बाप को याद कर मालिक बनना है। 84 जन्म नहीं समझते हो तो शायद राजाई के मालिक नहीं बने होंगे। हम तो हिम्मत दिलाते हैं, अच्छी बात सुनाते हैं। तुम नीचे गिर पड़ते हो। जिसने 84 जन्म लिए होंगे उनको झट स्मृति आयेगी। बाप कहते हैं तुम शान्तिधाम में पवित्र तो थे ना। अब फिर तुमको शान्तिधाम, सुखधाम में जाने का रास्ता बताते हैं।

- बाप कहते हैं इन आंखों से जो कुछ तुम देखते हो, उनको भूलो। अपने शान्तिधाम को याद करो। आत्मा को अपने बाप को याद करना है, इसको ही अव्यभिचारी योग कहा जाता है। ज्ञान भी एक से ही सुनना है। वह है अव्यभिचारी ज्ञान। याद भी एक को करो। मेरा तो एक, दूसरा न कोई। जब तक अपने को आत्मा निश्चय नहीं करेंगे तब तक एक की याद आयेगी नहीं। आत्मा कहती है मैं तो एक बाबा की ही बनूंगी। मुझे जाना है बाबा के पास। यह शरीर तो पुराना जड़जड़ीभूत है, इनमें भी ममत्व नहीं रखना है। यह ज्ञान की बात है। ऐसे नहीं कि शरीर की सम्भाल नहीं करनी है। अन्दर में समझना है - यह पुरानी खाल है, इनको तो अब छोड़ना है। तुम्हारा है बेहद का सन्यास। वह तो जंगल में चले जाते हैं। तुमको घर में रहते याद में रहना है। याद में रहते-रहते तुम भी शरीर छोड़ सकते हो। कहाँ भी हो तुम बाप को याद करो। याद में रहेंगे, स्वदर्शन चक्रधारी बनेंगे तो कहाँ भी रहते तुम ऊंच पद पा लेंगे। जितना इन्डीविज्युअल मेहनत करेंगे उतना पद पायेंगे। घर में रहते भी याद की यात्रा में रहना है। अभी फाइनल रिजल्ट में थोड़ा टाइम पड़ा है। फिर नई दुनिया भी तैयार चाहिए ना। अभी कर्मातीत अवस्था हो जाए तो सूक्ष्मवतन में रहना पड़े। सूक्ष्मवतन में रहकर भी फिर जन्म लेना पड़ता है। आगे चलकर तुमको सब साक्षात्कार होगा।

- बाबा तो कहते हैं कि अगर खुशियों की बात पूछनी हो तो गोप-गोपियों से (मेरे बच्चों से) पूछो क्योंकि बाप बहुत सहज रास्ता बता रहे हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए, अपने धन्धेधोरी का कर्तव्य करते हुए कमल फूल के समान रहो और मुझे याद करो। जैसे आशिक-माशूक होते हैं ना, वह भी धन्धाधोरी करते एक-दो को याद करते रहते हैं। उनको साक्षात्कार भी होते हैं जैसे लैला-मजनू, हीरा-रांझा, वो विकार के लिए एक-दो के आशिक नहीं होते हैं। उनका प्यार गाया हुआ है। उसमें एक-दो के आशिक होते हैं। लेकिन यहाँ वह बात नहीं है। यहाँ तो तुम जन्म-

जन्मान्तर उस माशूक के आशिक ही रहे हो। वह माशूक तुम्हारा आशिक नहीं है। तुम उनको बुलाते हो यहाँ आने के लिए, हे भगवान नयन हीन को आकरके राह बताओ। तुमने आधाकल्प बुलाया है। जब दुःख ज्यादा होता है तो जास्ती बुलाते हैं। जास्ती दुःख में जास्ती सिमरण करने वाले भी होते हैं। देखो, अभी कितने याद करने वाले ढेर के ढेर हैं। गाया हुआ है ना– दुःख में सिमरण सब करें...... जितना देरी होती जाती है, उतना तमोप्रधान ज्यादा होते जाते हैं। तो तुम चढ़ रहे हो, वह और ही उतर रहे हैं क्योंकि जब तक विनाश हो तब तक तमोप्रधानता वृद्धि को पाती रहती है। दिन-प्रतिदिन माया भी तमोप्रधान, वृद्धि को पाती जाती है। इस समय बाप भी सर्वशक्तिमान् है, तो माया भी फिर सर्वशक्तिमान् इस समय में है। वह भी जबरदस्त है।

- बाप तो कहते हैं तुमको ज्ञान अमृत पिलाता हूँ, तुम फिर विष क्यों खाते हो? रक्षाबंधन भी इस समय का याद गार है ना। बाप सबको कहते हैं प्रतिज्ञा करो, पवित्र बनने की, यह अन्तिम जन्म है। पवित्र बनेंगे, योग में रहेंगे तो पाप कट जायेंगे। अपनी दिल से पूछना है, हम याद में रहते हैं वा नहीं? बच्चे को याद कर खुश होते हैं ना। स्त्री-पुरुष को याद कर खुश होती है ना। यह कौन है? भगवानुवाच, निराकार। बाप कहते हैं मैं इनके (श्रीकृष्ण के) 84 वें जन्म बाद फिर से स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। अभी झाड़ छोटा है। माया के तूफान बहुत लगते हैं। यह सब बड़ी गुप्त बातें हैं। बाप तो कहते हैं बच्चे याद की यात्रा में रहो और पवित्र रहो। यहाँ ही पूरी राजधानी स्थापन हो जानी है। गीता में लड़ाई दिखाते हैं। पाण्डव पहाड़ों में गल मरे। बस रिजल्ट कुछ नहीं।

- काम चिता पर बैठने से सांवरे बन गये, फिर उनको गांव का छोरा भी कहा जाता है। बरोबर था ना। कृष्ण तो हो न सके। इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में बाप प्रवेश कर गोरा बनाते हैं। अभी

तुमको एक बाप को ही याद करना है। बाबा आप कितने मीठे हैं, कितना मीठा वर्सा आप देते हैं। हमको मनुष्य से देवता, मन्दिर लायक बनाते हो। ऐसे-ऐसे अपने से बातें करनी हैं। मुख से कुछ बोलना नहीं है। भक्ति मार्ग में आप माशूक को कितना याद करते आये हैं। अभी आप आकर मिले हो, बाबा आप तो सबसे मीठे हो। आपको हम क्यों नहीं याद करेंगे। आपको प्रेम का, शान्ति का सागर कहा जाता है, आप ही वर्सा देते हो, बाकी प्रेरणा से कुछ भी मिलता नहीं है। बाप तो सम्मुख आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। यह पाठशाला है ना। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह राजयोग है। अभी तुम मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को जान गये हो। इतनी छोटी आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। है भी बना-बनाया। इनको कहा जाता है अनादि-अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा। ड्रामा फिरता रहता है, इसमें संशय की कोई बात नहीं।

हर 5 हज़ार वर्ष बाद मुझे आना पड़ता है। ड्रामा में मैं बंधायमान हूँ। आकर तुम बच्चों को बहुत सहज याद की यात्रा बताता हूँ। अन्त मति सो गति... वह इस समय के लिए ही कहा गया है। यह अन्तकाल है ना। बाप युक्ति बताते हैं– मामेकम् याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। बच्चे भी समझते हैं हम नई दुनिया के मालिक बनेंगे। बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं नथिंग न्यु। एक जिन्न की कहानी सुनाते हैं ना– उसने कहा काम दो, तो कहा सीढ़ी उतरो और चढ़ो। बाप भी कहते हैं यह खेल भी उतरने और चढने का है। पतित से पावन, पावन से पतित बनना है। यह कोई डिफीकल्ट बात नहीं है। है बहुत सहज, परन्तु युद्ध कौन सी है, यह न समझने के कारण शास्त्रों में लड़ाई की बात लिख दी है। वास्तव में माया रावण पर जीत पाना तो बहुत बड़ी लड़ाई है। बच्चे देखते हैं हम घड़ी-घड़ी बाप को याद करते हैं, फिर याद टूट जाती है। माया दीवा बुझा देती है। इस पर गुलबकावली की भी कहानी है। बच्चे जीत पाते हैं। बहुत अच्छे चलते हैं फिर माया आकर दीवा बुझा देती है। बच्चे भी कहते हैं बाबा माया के तूफान तो बहुत आते हैं। तूफान भी अनेक प्रकार के बच्चों के पास आते हैं। कभी-कभी तो ऐसा तूफान ज़ोर से आता है

जो 8-10 वर्ष के पुराने अच्छे-अच्छे झाड़ भी गिर पड़ते हैं। बच्चे जानते हैं, वर्णन भी करते हैं। अच्छे-अच्छे माला के दाने थे। आज हैं ही नहीं। यह भी मिसाल है, गज़ को ग्राह ने खाया। यह है माया का तूफान।

यह भी बच्चे जानते हैं– बाप है बहुत साधारण। अनन्य, अच्छे-अच्छे बच्चे भी पूरा समझते नहीं हैं। भूल जाते हैं कि इनमें शिवबाबा आते हैं। कोई भी डायरेक्शन देते हैं तो समझते नहीं कि यह शिवबाबा का डायरेक्शन है। शिवबाबा को सारा दिन जैसे भूले हुए हैं। पूरा न समझने कारण वह काम नहीं करते। माया याद करने नहीं देती। स्थाई वह याद ठहरती नहीं। मेहनत करते-करते पिछाड़ी में आखिर वह अवस्था होनी जरूर है। ऐसा कोई भी नहीं जो इस समय कर्मातीत अवस्था को पा ले। बाप जो है, जैसा है उनको जानने में बड़ी बुद्धि चाहिए।

बाप कहते हैं-तुमको पवित्र बनाकर साथ ले चलेंगे। जो पवित्र नहीं बनेंगे वह तो सजा खायेंगे। इसमें मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्र रहना है। मन्सा भी बड़ी अच्छी चाहिए। इतनी मेहनत करनी है जो पिछाड़ी में मन्सा में कोई व्यर्थ ख्याल न आये। एक बाप के सिवाए कोई भी याद न आये। बाप समझाते हैं अभी मन्सा तक तो आयेंगे जब तक कर्मातीत अवस्था हो। हनुमान मिसल अडोल बनो, उसमें ही तो बड़ी मेहनत चाहिए। जो आज्ञाकारी, वफादार, सपूत बच्चे होते हैं बाप का प्यार भी उन पर जास्ती रहता है। 5 विकारों पर जीत न पाने वाले इतने प्यारे लग न सकें। तुम बच्चे जानते हो हम कल्प-कल्प बाप से यह वर्सा लेते हैं तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। यह भी जानते हो स्थापना तो जरूर होनी है। यह पुरानी दुनिया कब्रदाखिल होनी है जरूर।

तुम जानते हो-हम अपनी राजाई स्थापन कर रहे हैं। तुम सबको रास्ता बताते हो। बाप कहते हैं-मामेकम् याद करो। बाप की याद में रह औरों को भी यह समझाना है - देही-अभिमानी बनो। देह अभिमान छोड़ो। ऐसे नहीं कि तुम्हारे में सब देही-अभिमानी बने हैं। नहीं, बनने का है। तुम पुरूषार्थ करते हो औरों को भी कराते हो। याद करने की कोशिश करते हैं फिर भूल जाते हैं। पुरूषार्थ यही करना है। मूल बात है बाप को याद करना। बच्चों को कितना समझाते हैं। नॉलेज बहुत अच्छी मिलती है। मूल बात है पवित्र रहना। बाप पावन बनाने आये हैं तो फिर पतित नहीं बनना है, याद से ही तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। यह भूलना नहीं है। माया इसमें ही विघ्न डाल भुला देती है। रात-दिन यह तात रहे हम बाप को याद कर सतोप्रधान बनें। याद ऐसी पक्की होनी चाहिए जो पिछाड़ी में सिवाए एक बाप के और कोई भी याद न पड़े। प्रदर्शनी में भी पहले-पहले यह समझाना चाहिए यह है सबका बाप ऊंच ते ऊंच भगवान। सबका बाप पतित-पावन सद्गति दाता यह है। यही स्वर्ग का रचयिता है।

बच्चों को पहले अपने को समझना चाहिए कि मैं हूँ कौन, व्हाट एम आई। ``मैं'' शरीर को नहीं कहते, मैं कहते हैं आत्मा को। मैं आत्मा कहाँ से आया हूँ? किसकी सन्तान हूँ? आत्मा को जब यह मालूम पड़ जाए कि मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ तब अपने बाप को याद करने से खुशी आ जाए। बच्चे को खुशी तब आती है जब बाप के आक्यूपेशन को जानता है। जब तक छोटा है, बाप के आक्यूपेशन को नहीं जानता तब तक इतनी खुशी नहीं रहती। जैसे बड़ा होता जाता, बाप के आक्यूपेशन का पता पड़ता जाता तो वो नशा, वह खुशी चढ़ती जाती है। तो पहले उनके आक्यूपेशन को जानना है कि हमारा बाबा कौन है? वह कहाँ रहता है? अगर कहें आत्मा उसमें मर्ज हो जायेगी तो आत्मा विनाशी हो गई तो खुशी किसको आयेगी।

यह माता भी है तो पिता भी है। उसने इसमें प्रवेश किया है। तब ब्रह्मा को खुद कहते हैं तुम हमारा बच्चा भी हो, वन्नी (पत्नी) भी हो। बरोबर बाप इन द्वारा एडाप्ट करते हैं। तो यह माता भी हो जाती है। फिर भी बाप कहते हैं, तुमको याद मुझे करना है। ब्रह्मा को याद नहीं करना है। मनुष्य तो दुनिया में बहुत लॉकेट पहनते हैं। यह तो बाप है। बाप कहते हैं बच्चे तुम्हें अपना भी सब कुछ भूल जाना है, देह सहित देह के जो भी सम्बन्धी हैं, सबको भूल परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाओ। तुम बच्चों को फरमान है मुझ बाप को याद करो। मैं इनमें प्रवेश होकर तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, इसमें प्रेरणा की कोई बात नहीं है। प्रेरणा से बाबा काम नहीं करता है। यह ड्रामा अनुसार सब कुछ होना ही है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। बाकी किसी देहधारी को याद करने से टाइम वेस्ट हो जाता है। दूसरे के साथ बुद्धियोग लगाते हो तो गोया बाप से नाफरमानबरदार बनते हो। बाप को याद करने में मेहनत है, इसमें ही भूल होती है। बाप कहते हैं तुम हो आशिक। चलते-फिरते मुझ माशूक को याद करने का पुरूषार्थ करो। गीत में भी भगवानुवाच है– मामेकम् याद करो। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह कौन कहते हैं? शिवबाबा या श्रीकृष्ण? किसको याद करना है? श्रीकृष्ण तो संगम पर हो न सके। हाँ, कृष्ण की आत्मा जरूर है। वह भी सीखकर औरों को सिखाते हैं। यह है मुख्य पहला नम्बर प्रिन्स। इनके साथ और भी तो हैं ना, राधे भी साथ में है। परन्तु फर्स्ट प्रिन्स यह है।

सिर्फ भारत खण्ड ही होगा। सो भी छोटा होगा। बाकी सब चले जायेंगे परमधाम में। बाकी टाइम कितना बचा है, यह कुछ भी नहीं होगा। तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। तुम्हारे लिए पुरानी दुनिया के विनाश की पहले से ही नूँध है। इस छी-छी दुनिया में तुम बाकी थोड़े रोज हो। फिर अपनी नई दुनिया में चले जायेंगे। यह सिर्फ तुम याद करते रहो तो भी खुशी में रहेंगे। तुम्हारी बुद्धि में है यह सब खलास होने का है। यह सब इतने खण्ड रहेंगे नहीं। प्राचीन भारत

खण्ड ही रहेगा। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो। काम आदि करते रहो, बुद्धि में बाबा की याद रहे। तुमको यह मनुष्य से देवता बनने का कोर्स उठाना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते, नौकरी करते बाप को और चक्र को याद करो। एकान्त में बैठकर विचार सागर मंथन करो। कुदरती आपदायें आयेंगी जिससे सारी दुनिया खत्म हो जायेगी। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य रहते हैं। वहाँ कैनाल्स आदि की दरकार नहीं। यहाँ तो कितने कैनाल्स खोदते हैं।

देह-अभिमान मुर्दा बना देता है। बाप कहते हैं देही- अभिमानी बनो। सवेरे उठ शिवबाबा को याद करो। वह भी नहीं करते। अच्छे-अच्छे महारथी योग में बहुत कम रहते हैं। ज्ञान तो छोटे बच्चे भी समझा सकते हैं। परन्तु तोते मुआिफक हो जाता है। इसमें तो योग में रहे, धारणा भी हो तब खुशी चढ़े। योग बिगर विकर्म विनाश हो न सकें। याद किया जाता है पवित्र चीज को, तो उनके साथ लव भी बहुत होना चाहिए। घड़ी-घड़ी समझाया जाता है– मनमनाभव। आधाकल्प देह-अभिमानी रहे तो देही-अभिमानी रहना मुश्किल लगता है। बहुत मेहनत लगती है। कितने वर्ष लग जाते हैं देही-अभिमानी अवस्था बनाने में। अपने को छोटी आत्मा समझ और बाप को भी बिन्दी समझ याद करे, इसमें मेहनत है। जो सच्चे होंगे वह अन्दर फील करते होंगे कि हम कितना याद करते हैं। यह प्रैक्टिस बहुत डिफीकल्ट है। 21 जन्मों के लिए स्वर्ग की बादशाही पाना कोई कम बात है क्या! तुम समझते हो हम छोटी आत्मा उसमें 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। आत्मा ही मुख्य एक्टर बनती है। आत्मा ही सब कुछ बनती है। परन्तु देह-अभिमान के कारण आत्म-अभिमान गुम हो गया है। सबसे मुख्य प्रैक्टिस यही करनी है। यही भारत का प्राचीन योग भी मशहूर है। यही गीता है। सिर्फ उसमें नाम निराकार के बदले देहधारी देवता का लिख दिया है। बाप कहते हैं– जिसने बहुत भक्ति शुरू से लेकर अन्त तक की है, वही नम्बरवन ऊपर जायेंगे। तुमने भी बहुत भक्ति की है तो तुम बच्चों को भी कितनी खुशी रहनी चाहिए कि हमको बाप मिला है। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं, हम इस पढ़ाई से विश्व का मालिक बनते हैं। अब बाबा की मत पर तो जरूर चलना चाहिए। बाप जो डायरेक्शन देते

हैं अगर कुछ उल्टा भी हो गया तो आपेही सुल्टा बना देंगे। राय देंगे तो फिर जिम्मेवार भी हैं। घड़ी-घड़ी शिवबाबा याद पड़ता रहेगा इसलिए यह बाबा भी सदैव कहते हैं कि तुमको शिवबाबा सुनाते हैं। हम भी सुनते हैं तो ये डायरेक्शन देने वाला शिवबाबा है। हम उनके डायरेक्शन पर चलते हैं। तुम भी उनको याद करते हो। यह भी उनको याद करते हैं। देह का अभिमान छोड़ दो। तुम कोई जौहरी दादा के पास थोड़ेही आये हो। तुम तो शिवबाबा के पास आये हो। ज्ञान-सागर तो वह है ना! तुम आये हो शिवबाबा से ज्ञान अमृत पीने। अभी भी ज्ञान अमृत पीते रहते हो। रोज-रोज ज्ञान सागर बाबा सुनाते रहते हैं। उनको ही याद करना है। बाप ऐसे नहीं कहते कि भक्ति छोड़ो। जब ज्ञान की पराकाष्ठा आयेगी तो आपेही समझेंगे कि यह भक्ति और यह ज्ञान है। आधाकल्प तुमने भक्ति की है। वापिस तो कोई गया नहीं। ले जाने वाला तो एक ही बाप है। अच्छा।

रूहानी बच्चों प्रति बाप बैठ समझाते हैं। अगर शिव भगवानुवाच कहें तो भी शिव नाम के मनुष्य बहुत हैं इसलिए यह कहना पड़े कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों प्रति पहले-पहले याद - प्यार दे रहे हैं। प्रात: को पहले-पहले गुडमार्निंग किया जाता है। तुमने भी गुडमार्निंग सुना। सवेरे-सवेरे कौन आकर गुडमार्निंग करते हैं। बाप आते ही हैं सवेरे। यह है बेहद का सवेरा और रात, जिसको कोई मनुष्य मात्र नहीं जानते। बच्चों में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हैं। भल बच्चे बने हैं परन्तु सवेरे उठकरके बाप को याद नहीं करते। सवेरे उठकरके पहले-पहले शिवबाबा से गुडमार्निंग करें अर्थात् याद करें तो बहुत खुशी भी रहे। परन्तु बहुत बच्चे हैं जो सवेरे उठकर बाबा को बिल्कुल याद नहीं करते। भक्ति मार्ग में भी मनुष्य सवेरे उठकर भक्ति करते, पूजा करते, माला फेरते, मन्त्र जपते। वह साकार की भक्ति करते हैं। मूर्ति सामने आ जाती है। शिव का जो पुजारी होगा उनको भी जो बड़ा शिवालिंग बनाते हैं वह मूर्ति याद आ जायेगी। वह है रांग। अब तो तुम बच्चों को अपने को आत्मा निश्चय करना है और सवेरे उठकर बाबा से बातें करनी हैं। बाबा गुडमार्निंग। परन्तु बाबा जानते हैं– यह टेव (आदत) किसको भी नहीं पड़ी हुई है। बाप कहते हैं– बच्चे तुम्हारे सिर पर आधाकल्प का बोझा है, वह उतरता ही

नहीं है क्योंकि याद नहीं करते। कोई-कोई के तो और ही पाप बढ़ते जाते हैं। जैसे चूहा फूँक देता और काटता भी है। माया भी चूहे मिसल काटती रहती है। सिर के बाल काट देती है, पता भी नहीं पड़ता। भल कोई अपने को ज्ञानी समझते हैं परन्तु बाबा अच्छी रीति जानते हैं कि याद में बिल्कुल कच्चे हैं। अपनी दिल से पूछना है कि हम सवेरे उठकर बाप को याद करते हैं। बेहद का बाप तुमको बेहद के सवेरे में आकर मिला है। सन्यासी भी उठकर ब्रह्म को याद करेंगे। मनुष्य उठते ही मित्र-सम्बन्धी, दोस्तों आदि को याद करेंगे। कोई भगत होगा तो अपने देवताओं को याद करेंगे। पाप आत्मायें, पाप आत्माओं से गुडमार्निंग करेंगी अथवा याद करेंगी। याद करना होता है सवेरे। भक्ति भी सवेरे में करते हैं। परन्तु भगवान की भक्ति कोई भी करते नहीं क्योंकि भगवान को जानते ही नहीं। भल कहते हैं कि भक्ति का फल देने वाला भगवान है। ओ गाड फादर भी वहते हैं। यह आत्मा कहती है– परन्तु परमात्मा को कोई भी यथार्थ नहीं जानते। जब भगवान खुद आकर अपना परिचय दे तब यह जान सकें। नहीं तो सब नेती-नेती कहते हैं अर्थात् हम नहीं जानते। तो परमात्मा इस समय ही आकर बतलाते हैं– मैं कौन हूँ? परन्तु बच्चों में भी बहुत हैं, बड़े-बड़े महारथी सेन्टर सम्भालने वाले बाप को पूरा नहीं जानते। उस लव से बाप को याद नहीं करते। सवेरे उठकरके प्यार से गुडमार्निंग करना, ज्ञान के चिंतन में रहना, यह भी नहीं करते। याद करें तो खुशी का पारा चढ़े। परन्तु माया चढ़ने नहीं देती। अगर बाप से कहाँ बेअदबी की तो माया एकदम बुद्धियोग तोड़ डालती है। फिर वाह्यात, फालतू बातों में बुद्धि लगी रहती है। स्वर्ग का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है। प्रजा बनना तो सहज है। तुम आगे चलकर देखेंगे– 30-40 वर्ष वाले भी टूट पड़ेंगे। माया एकदम उड़ा देगी। राजाई पद पा नहीं सकेंगे। पहले से ही मर जायेंगे तो फिर राजाई कहाँ से मिलेगी। यह राज बाबा खोलते नहीं हैं। माया भी देखती है मैं आधाकल्प राज्य करने वाली, यह मेरे ऊपर जीत पाते हैं। फिर शिवबाबा को एकदम भूल जाते हैं। कहाँ-कहाँ इनके (ब्रह्मा बाबा के) भी नाम-रूप में फँस पड़ते हैं। शिवबाबा को याद नहीं करते। जिनमें क्रोध, लोभ, मोह का भूत होगा वह क्या बाबा को याद करेंगे। नाम-रूप में इतना फँसते हैं बात मत पूछो। देह-अभिमान में लटक पड़ते हैं।

शिवबाबा कहते हैं घर गृहस्थ में रहकर माशूक को याद करते रहो, तब कर्मातीत अवस्था बने। मूल बात है याद की, इसी में मेहनत है। याद बिगर सतोप्रधान बन नहीं सकते, न ऊंच पद पा सकेंगे। बुद्धियोग और तरफ भटकता रहेगा। कोई बच्चे तो बहुत दिल व जान, सिक व प्रेम से बाप को याद करते हैं। बाबा से गुडमार्निंग करके कहना चाहिए बाबा हम आपकी याद में रहते हैं क्योंकि सिर पर पापों का बोझा बहुत है। अगर बाबा की याद में नहीं रहेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा। आधाकल्प देह-अभिमान रहा है तो जाता नहीं। देवतायें वहाँ आत्माभिमानी रहते हैं। भल परमात्मा को नहीं जानते। यह तो समझते हैं हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। रचयिता को अगर जानें तो रचना, बाप की जायदाद को भी जानें। वहाँ यह नॉलेज रहती नहीं। बाप कहते हैं यह नॉलेज मैं तुमको देता हूँ। फिर यह ज्ञान प्राय:लोप हो जाता है। यह ज्ञान फिर परम्परा चलने का नहीं है। न आत्मा को, न परमात्मा को जानते हैं। अभी तुम जानते हो सब आत्माओं को कैसे अपना- अपना पार्ट मिला हुआ है। अच्छे ते अच्छे पार्टधारी तुम हो। इस समय तुम इस विश्व को अपनी बादशाही बनाते हो। हीरो एण्ड हीरोइन पार्ट तुम्हारा है। मूल बात है बाप को याद करने की। बाबा जानते हैं प्रदर्शनी में बहुत हैं जो सर्विस अच्छी करते हैं। परन्तु याद में बहुत कमजोर हैं। अक्ल नहीं है कि कैसे सवेरे उठकर बाबा से गुडमार्निंग करनी चाहिए। भल टॉपिक्स पर ख्यालात चलाते हैं। वह तो कॉमन है। टॉपिक्स तो रोज-रोज नई निकाल समझा सकते हैं। परन्तु मुख्य बात है बाप को लव से याद करना, तो पाप कट जाएं। बाबा जानते हैं बच्चों की ऐसी अवस्था अभी नहीं है। बाबा नाम नहीं सुनाते हैं। अगर बाबा नाम सुनावें तो जो पैसे की अवस्था है सो गिरकर पाई की बन जाये। इस ज्ञान में समझ चाहिए। ऐसे नहीं कोई कहे कि तुम पीला दिखाई पड़ते हो, बीमार हो, तो यह सुनने से ही बुखार चढ़ जाए। ऐसा कच्चा नहीं बनना है। हिम्मत चाहिए। सर्विसएबुल बच्चे थोड़ेही टूट सकते हैं। वह तो फखुर में रहते हैं। धन्धाधोरी करते बाबा की याद रखनी है। बाबा से गुडमार्निंग करते रहना चाहिए। बड़ी भारी मंजिल है। राजाई पद पाना है तो मेहनत भी करनी है। जो कल्प पहले बने हैं उन्हों को आगे चलकर मालूम पड़ता जायेगा। छिपा कोई नहीं रहेगा। स्कूल में टीचर स्टूडेन्ट को जानते हैं और रजिस्टर भी रखते हैं। उनसे भी पता पड़ जाता है। उसमें मुख्य सब्जेक्ट होती है

भाषा की। यहाँ मुख्य सब्जेक्ट है याद की। नॉलेज तो सहज है। बच्चे भी समझा सकते हैं। छोटेपन में बुद्धि तीखी होती है– धारणा करने की। बुढ़िया इतना नहीं समझा सकती हैं।

तुम बच्चों को यह फुरना रखना है कि हमें सतोप्रधान बनना है। माया फथकाती (तड़फाती) तो बहुत है। एकदम नाम-रूप में फँस पड़ते हैं। शिवबाबा को याद ही नहीं करते। बाबा बार-बार समझाते हैं हमेशा यह समझो कि यह शिवबाबा हमको समझा रहे हैं। यह ब्रह्मा कुछ नहीं बोलता। फिर भी शिवबाबा को भूल कर नाम-रूप को याद करते रहते हैं। वह फिर क्या पद पायेंगे! पहले तो श्रीमत पर चलना है। शिवबाबा कहते हैं भूतों को भगाओ। देह-अभिमान को भगाओ। हम आत्मा हैं और बहुत मीठा बनना है। बाबा कहते हैं– देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलते जाओ। मुझे याद करो। हथ कार डे दिल यार डे.. मैं पुराना माशूक हूँ। ऐसे कोई और को समझाने आयेगा ही नहीं। बाप ही इस समय तुमको आकर रूहानी आशिक बनाते हैं। अब तुम्हारी आत्मा जानती है कि हमारा माशूक शिवबाबा है। उनसे स्वर्ग का वर्सा पाना है। ऐसे शिवबाबा को सवेरे-सवेरे उठकर गुडमार्निंग करो, याद करो। जितना याद करेंगे उतना पाप कटते जायेंगे। देह- अभिमान टूटता जायेगा। ऐसा अभ्यास करते-करते वह अवस्था जम जायेगी। याद में बैठे होंगे, ग्राहक आयेगा उस तरफ ख्याल नहीं जायेगा। फिर उनको भी बतायेंगे हम याद में बैठे थे। बड़ा मजा आ रहा है। ग्राहक को सौदा दिया फिर बाबा की याद में। तुमको कर्मातीत बनने का पुरूषार्थ करना है। बाबा बहुत युक्तियां बतलाते हैं। इनके (ब्रह्मा के) लिए कहते हैं– इनके ऊपर तो बहुत मामले हैं। तुमको फुर्सत जास्ती मिलती है– याद करने की। बाबा मिसाल बताते हैं– भोजन पर शिवबाबा को याद करके बैठते हैं कि हम दोनों इकट्ठे खाते हैं फिर भूल जाता हूँ। सबसे जास्ती झंझट बाप के ऊपर रहते हैं। बाप के साथ बहुत लव रहना चाहिए। रात्रि 12 बजे के बाद ए.एम. शुरू होता है। रात्रि को जल्दी सो जाओ– फिर जल्दी उठकर याद करो। उठने से ही कहो -"बाबा गुडमार्निंग"। और कोई तरफ बुद्धि न जाये बाबा तो हर एक बच्चे को जानते हैं। तुम्हारी भविष्य के लिए बड़ी भारी कमाई है। कल्प-कल्पान्तर यह

कमाई काम में आयेगी। कोई भी भूत नहीं आना चाहिए। क्रोध भी कम नहीं है, मोह भी खराब है। जितना हो सके बाबा की याद में बैठ पावन बनना है। जैसे बाबा ज्ञान का सागर है, बच्चों को भी बनना है। परन्तु सागर तो एक होता है ना। बाकी सब नदियां कहेंगे। क्रोध है सेकेण्ड नम्बर दुश्मन। बड़ा नुकसान कर देते हैं। एक दो का जी जलाते हैं। लोभी भी एक दो का जी जलाते हैं। मोह का भूत तो सत्यानाश कर देते हैं। मोह के कारण शिवबाबा की याद भूल अपने बच्चों को याद करते रहेंगे। नष्टोमोहा वाले अडोल अवस्था में रहते हैं। अच्छा।

16 कला सम्पूर्ण, तो सम्पूर्ण सुख भी होगा। कलियुग में है 16 कला अपूर्ण तो फिर दु:ख भी होता है। इस सारी दुनिया को माया रूपी ग्रहण लग जाता है इसलिए अब बाप कहते हैं तुम्हारे में जो देह-अभिमान है, पहले-पहले उनको छोड़ो। यह देह-अभिमान तुमको बहुत दु:ख देता है। आत्म-अभिमानी रहो तो बाप को भी याद कर सकेंगे। देह-अभिमान में रहने से बाप को याद नहीं कर सकते। यह आधाकल्प का देह-अभिमान है। इस अन्तिम जन्म में देही-अभिमानी बनने से एक तो पापों का बोझा खत्म होगा और फिर 16 कला सम्पूर्ण सतोप्रधान बनेंगे। बहुत देह-अभिमान की बात को भी समझते नहीं हैं। मनुष्य को दु:खी करता ही है देह-अभिमान। पीछे हैं और विकार। देही-अभिमानी बनने से यह सब विकार छूटते जायेंगे। नहीं तो छूटना मुश्किल है। देह-अभिमान की प्रैक्टिस पक्की हो गई है तो अपने को देही-अभिमानी (आत्मा) समझते ही नहीं। इसमें सब विकार दान देना पड़े। पहले-पहले देह-अभिमान को छोड़ना है। काम, क्रोध आदि सब पीछे आते हैं। तुम्हारा बाप वह है। देह-अभिमान के कारण लौकिक बाप को ही बाप समझते आये हैं। अब मुख्य बात है कि हम पावन कैसे बनें। पतित दुनिया में हैं ही सब पतित; पावन कोई हो नहीं सकते। एक बाप ही सबको पावन बनाकर खुशी-खुशी से वापिस ले जाते हैं। अब तुम बच्चों को तो योग का चिंतन लगा हुआ है। जीते जी मरना है। देह-अभिमान तोड़ना माना मरना। हम आत्मा बाबा को याद कर पतित से पावन बन जायें। यह पावन बनने की युक्ति बाबा ने ही समझाई थी। अब फिर से समझा रहे हैं। कल्प-कल्प फिर भी समझायेंगे। दुनिया

भर में और कोई भी समझा नहीं सकते। मूल बात है शिव को याद करने की। सो भी जब यहाँ आकर बी.के. द्वारा सुनें क्योंकि दादे का वर्सा मिलना है। तो बाप जरूर चाहिए जिस द्वारा मिलें। डायरेक्शन तो जरूर लेने हैं साकार द्वारा। बहुत बच्चे हैं जो समझते हैं हम शिवबाबा से योग लगायें, ब्रह्मा को छोड़ दें। परन्तु शिवबाबा से सुनेंगे कैसे? कहते हैं हमारा ब्रह्मा बाबा के साथ कोई कनेक्शन नहीं है। अच्छा तुम अपने को आत्मा समझो शिवबाबा को याद करो। घर जाकर बैठो। परन्तु यह जो नॉलेज मिलती है सृष्टि चक्र की, वह कैसे सुनेंगे। यह समझने बिना सिर्फ याद कैसे कर सकेंगे। ज्ञान तो इन द्वारा ही लेना पड़ेगा ना। फिर कभी भी ज्ञान तो मिल नहीं सकता। रोज नई-नई बातें बाप द्वारा ही मिलती हैं। बिना ब्रह्मा और ब्रह्माकुमारियों के कैसे समझ सकेंगे। यह सब सीखना पड़े। बाप कहते हैं जो घर बैठकर पुरूषार्थ करे कर्मातीत अवस्था को पाने का, तो हो सकता है मुक्ति में जाये। जीवनमुक्ति में जा न सकें। ज्ञान धन धारण कर और दान करेंगे तो धनवान बनेंगे। नहीं तो एवरवेल्दी कैसे बनेंगे। मुरली का भी आधार जरूर लेना पड़े। पढ़ाई तो पढ़नी है ना। ऐसे बहुत आयेंगे सिर्फ लक्ष्य लेकर जायेंगे मुक्ति में। तुम सब मनुष्य मात्र को समझाते हो कि तुम सिर्फ बाप को याद करो तो सतोप्रधान पवित्र बन जायेंगे। फिर जब ज्ञान धन लें तब सतयुग में साहूकार बनें। नहीं तो मुक्ति में जाकर फिर भक्ति मार्ग के समय आकर भक्ति करेंगे। किसका कल्याण कर नहीं सकेंगे क्योंकि मनुष्य को देवता बनने के लिए ज्ञान जरूर चाहिए। ज्ञान सुनकर फिर सुनाना भी है। प्रदर्शनी में देखो कितना माथा मारते हैं। फिर भी किसकी बुद्धि में बैठता नहीं है। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है।

राम अक्षर कहने से लोग मूँझते हैं इसलिए बेहद का बाप कहना ठीक है। बाप अक्षर बहुत मीठा है। बाप ही वर्सा याद दिलाते हैं। एक बाप के सिवाए और सब कुछ भूल जाना है। हम आत्मायें बाप से वर्सा ले रही हैं। बाप आकर तुमको आत्म-अभिमानी बनाते हैं। हम आत्मा हैं। आत्मा कितनी छोटी महीन है। उसमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। यह मोटी बुद्धि वाले मनुष्य नहीं जानते हैं। न समझा सकते हैं। बाबा से वर्सा ले रहे हैं, कितना सहज है। परन्तु माया भुला देती

है इसलिए बच्चों को मेहनत करनी पड़ती है। इसमें कोई हथियार, बारूद की बात नहीं। न कोई ड्रिल आदि सीखनी है, न कोई शास्त्र आदि उठाना है। सिर्फ बाबा को याद करना है। बाप जो सुनाते हैं वह धारण करना है। हम अपना राज्यभाग्य ले रहे हैं। जैसे नाटक में एक्टर पार्ट बजाकर फिर कपड़े बदली कर अपने घर जाते हैं, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी है कि अब नाटक पूरा होने वाला है। अब अशरीरी बनकर घर जाना है। हम हर 5 हजार वर्ष के बाद पार्ट बजाते हैं। आधाकल्प राज्य करते, आधाकल्प गुलाम बन जाते। बच्चों को कोई जास्ती तकलीफ नहीं देते हैं। बुद्धि में सिर्फ याद रहनी चाहिए। पुरूषार्थ कर जितना हो सके यह भूलना नहीं चाहिए। अब नाटक पूरा होता है। बाकी थोड़ा समय है, हमको जाना है। ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करते-करते तुम पावन बन वापिस चले जायेंगे। हर एक बच्चा जान सकता है कि मैं बाबा को कितना याद करता हूँ। चाहे कोई चार्ट लिखे या न लिखे। परन्तु बुद्धि में तो रहता है ना। तो सारे दिन में हमने क्या-क्या किया? जैसे व्यापारी लोग अपनी मुरादी सम्भालते हैं, रात्रि को। यह भी व्यापार है। रात्रि को सोने के समय जांच करते हैं सारे दिन में बाप को कितना याद किया? कितनों को बाप का परिचय दिया? जो होशियार होते हैं उनका धन्धा अच्छा चलता है। बुद्धू होगा तो धन्धा भी ऐसे ही चलेगा। यह तो अपनी कमाई करनी है। बाप सिर्फ कहते हैं– मुझे याद करो, चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे। इसमें टू मच आशायें नहीं होनी चाहिए। गांव में रहने वालों को आशायें कम रहती हैं, साहूकारों को बहुत होती हैं। वह अपनी गरीबी में ही खुश रहते हैं। रोटला खाने पर हिर जाते हैं (सूखी रोटी खाने की आदत पड़ जाती है)। साहूकारों में इच्छायें बहुत होती हैं।

तुम बच्चे जानते हो अब कौड़ी से हीरे जैसा वा बेगर से प्रिन्स, इनसालवेन्ट से 100 प्रतिशत सालवेन्ट बन रहे हैं। यह तुम्हारा मनुष्य तन बहुत वैल्युबुल है जबकि बाप के बच्चे बने हो। और मनुष्यों का वैल्युबुल नहीं है। तुम बच्चों को इस समय अपना श्वाँस व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए।

कैसे सफल करना चाहिए सो तो बाप समझाते हैं। श्वाँसों श्वाँस याद करो बाप को। मनुष्य भक्ति मार्ग में तो अनेक प्रकार के सिमरण करते हैं। वह है अनेकों की व्यभिचारी याद। तुम बच्चे एक के सिवाए और किसी को याद नहीं करते हो। समझते हो हमारा श्वाँस व्यर्थ न जाये। श्वाँसों श्वाँस कोशिश कर बाबा को याद करना है। ऐसे डायरेक्शन मिलते हैं। इसमें कोई जाप आदि नहीं करना है। हमारा स्वधर्म ही है आवाज से परे रहना। इस शरीर द्वारा हम पार्ट बजाते हैं। आत्मा असुल शान्तिधाम की रहने वाली है। यह भी हमारे सिवाए कोई कह न सके कि हम असुल शान्तिधाम के रहने वाले हैं। कोई पूछे तुम कहाँ के रहने वाले हो तो तुम कहेंगे हम आत्मा तो शान्तिधाम की रहने वाली हैं। बाकी यहाँ के लिए पूछते हो तो यहाँ हम फलानी जगह रहने वाले हैं। शान्तिधाम से यहाँ आकर शरीर लेकर पार्ट बजाना ही है। अभी यह है इस मृत्युलोक का अन्तिम जन्म, इसमें श्वाँस व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। वो लोग बहुत फास्ट (व्रत) रखते हैं। उनको कहना है क्यों तुम टाइम वेस्ट करते हो, इससे ऊंचे ते ऊंचे बाप को याद करो। यह भी तुम जैसे जीवघात करते हो। आत्म-घात नहीं कहेंगे क्योंकि आत्मा का घात कभी नहीं होता। कहा जाता है जीवघाती, महापापी। इस समय अपने शरीर को तकलीफ देना– यह भी तो महापाप है। तुम कह सकते हो कि इस समय तुम महान पुण्य आत्मा बन सकते हो, इस पुरूषार्थ से। उन्हों को तो यह पता नहीं है कि बाप यहाँ आया हुआ है। यह बापदादा है ना। शिवबाबा ब्रह्मा दादा।

सर्व का सद्गति दाता तो एक ही बाप है। बाकी सब हैं भक्ति मार्ग के गुरू। गुरू तो बहुत हो गये हैं ना। स्त्री का पति भी गुरू है। कथा सुनाने वाले को भी गुरू कहते हैं। यह सब समझने की बातें हैं। बच्चों का माथा बहुत विशाल होना चाहिए सर्विस के लिए। बाप को याद कर रावण पर विजय पानी है। श्वाँस व्यर्थ नहीं गँवाना है। जो समय बरबाद करते रहते हैं उनको बेसमझ कहा जाता है। बाप कहेंगे– किसका जीवन हीरे जैसा बनाने तुम सर्विस नहीं करते हो! कितना वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जा करते हो। कुछ भी समझते नहीं, इसलिए पत्थरबुद्धि कहा जाता है। इसमें सारी योग की बात है। बाप को याद करो और वर्सा ले लो। यह अर्थ कभी कोई समझ

न सके। वह तो ब्रह्म को याद करते हैं। बाप कहते हैं– मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। ब्रह्म कोई पतित-पावन है क्या? पतित-पावन तो परमपिता परमात्मा है। ब्रह्म कैसे हो सकता। बिचारे बहुत भूले हुए हैं। बाप बच्चों को फिर भी कहते हैं बच्चे टाइम वेस्ट नहीं करो। बाबा को याद करो। बाबा जानते हैं कई बच्चे दिन-रात बहुत टाइम वेस्ट करते हैं। सारा दिन कुछ भी पुरूषार्थ नहीं करते हैं। बाबा अपना मिसाल भी बताते हैं। भोजन पर बैठते हैं तो भी बाबा को याद करते हैं। हम दोनों इकट्ठे खाते हैं। शरीर में दो आत्मायें हैं ना। याद करते-करते फिर भूल जाता हूँ। और-और ख्यालात आ जाते हैं। इनके ऊपर जवाबदारी बहुत हैं। बहुत ही ख्यालात आते हैं इसलिए बाबा कहते हैं तुम जास्ती याद में रह सकते हो, इनको तो मेहनत करनी पड़ती है। हमेशा समझो शिवबाबा समझाते हैं। उनको याद करो, ब्रह्मा को याद करने से शिवबाबा भूल जायेगा। बच्चों को पहले तो अपना ही कल्याण करना है, फिर दूसरे का। कई तो ऐसे हैं दूसरों का कल्याण करते रहते हैं, अपना करते नहीं हैं। औरों को आप समान बनाते खुद फिर गुम हो जाते हैं। वन्डर है ना। यह भी तुम समझते हो। तुम अनुभव भी सुनाते हो और कोई सतसंग आदि में थोड़ेही समझाते हैं। यहाँ भी नम्बरवार धारणा होती है। यह नॉलेज बुद्धि में धारण की जाती है। गाते हैं भर दो झोली। यह नॉलेज तो बुद्धि में भरी जायेगी वा झोली में? पारसबुद्धि और पत्थरबुद्धि गाया जाता है।

तुम बच्चों को अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है जिससे तुम सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जान गये हो। यह है ज्ञान की सैक्रीन। सैक्रीन का एक बूंद भी कितना मीठा होता है। ज्ञान का भी एक ही अक्षर है मनमनाभव। यह अक्षर सभी से कितना मीठा है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो। बाप शान्तिधाम और सुखधाम का रास्ता बता रहे हैं। बाप आये हैं बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देने। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। कहते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। जो सदैव खुशीमौज में रहते हैं उनके लिए वह जैसे खुराक होती है। 21 जन्म मौज में रहने की यह जबरदस्त खुराक है। यह खुराक सदैव एक दो को खिलाते रहो। एक दो

की जबरदस्त खातिरी यह करनी है। ऐसी खातिरी और कोई मनुष्य, मनुष्य की कर न सके। तुम बच्चे श्रीमत पर सभी की रूहानी खातिरी करते हो।

गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहो। धन्धा-धोरी आदि करते भी मुझे याद करते रहो। जैसे आशिक और माशुक होते हैं। वह तो एक दो को याद करते रहते हैं। वह उनका आशुक, वह उनका माशुक ओता है। यहाँ यह बात नहीं है, यहाँ तो तुम सभी एक माशुक के जन्म्-जन्मान्तर से आशुक हो रहते हो। बाप कभी तुम्हारा आशिक नहीं बनता। तुम उस माशुक से मिलने के लिए याद करते आये हो। जब दु:ख जास्ती होता है तो जास्ती सुमिरण करते हैं। गायन भी है दु:ख में सुमिरण सब करें, सुख में करे न कोय। इस समय बाप भी सर्वशक्तिवान है, तो दिन-प्रतिदिन माया भी सर्वशक्तिवान, तमोप्रधान होती जाती है इसलिए अब बाप कहते हैं मीठे बच्चे देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो और साथ-साथ दैवीगुण भी धारण करो तो तुम ऐसे (लक्ष्मी-नारायण) बन जायेंगे। इस पढ़ाई में मुख्य बात है ही याद की। ऊंच ते ऊंच बाप को बहुत प्यार, स्नेह से याद करना चाहिए। वह ऊंच ते ऊंच बाप ही नई दुनिया स्थापन करने वाला है। बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाने, इसलिए अब मुझे याद करो तो तुम्हारे अनेक जन्मों के पाप कट जायें। पतित-पावन बाप कहते हैं तुम बहुत पतित बन गये हो इसलिए अब तुम मुझे याद करो तो तुम पावन बन और पावन दुनिया का मालिक बन जायेंगे। पतित-पावन बाप को ही बुलाते हैं ना। अब बाप आये हैं, तो जरूर पावन बनना पड़े। बाप दु:खहर्ता, सुखकर्ता है। बरोबर सतयुग में पावन दुनिया थी तो सभी सुखी थे। अब बाप फिर से कहते हैं बच्चे शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते रहो। अभी है संगमयुग। खिवैया तुमको इस पार से उस पार ले जाते हैं। नईया कोई एक नहीं, सारी दुनिया जैसे एक बड़ा जहाज है, उनको पार ले जाते हैं। तुम मीठे बच्चों को कितनी खुशियाँ होनी चाहिए। तुम्हारे लिए तो सदैव खुशी ही खुशी है। बेहद का बाप हमको

पढ़ा रहे हैं। वाह! यह तो कब न सुना, न पढ़ा। भगवानुवाच मैं तुम रूहानी बच्चों को राजयोग सिखा रहा हूँ, तो पूरी रीति सीखना चाहिए। धारणा करनी चाहिए। पूरी रीति पढ़ना चाहिए। पढ़ाई में नम्बरवार तो सदैव होते ही हैं।

आत्मा कब छोटी बड़ी नहीं होती है, शरीर छोटा बड़ा होता है। जो भी आत्मायें हैं उन सभी का तख्त यह भृकुटी का बीच है। शरीर तो सभी के भिन्न-भिन्न होते हैं। किसका अकाल तख्त पुरूष का है, किसका अकाल तख्त स्त्री का है। किसका अकाल तख्त बच्चे का है। बाप बैठ बच्चों को रूहानी ड्रिल सिखलाते हैं। जब कोई से बात करो तो पहले अपने को आत्मा समझो। हम आत्मा फलाने भाई से बात करते हैं। बाप का पैगाम देते हैं कि शिवबाबा को याद करो। याद से ही जंक उतरनी है। सोने में जब अलाय पड़ती है तो सोने की वैल्यु ही कम हो जाती है। तुम आत्माओं में भी जंक पड़ने से तुम वैल्युलेस हो गये हो। अब फिर पावन बनना है। तुम आत्माओं को अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। उस नेत्र से अपने भाईयों को देखो। भाई- भाई को देखने से कर्मेन्द्रियाँ कब चंचल नहीं होंगी। राज-भाग लेना है, विश्व का मालिक बनना है तो यह मेहनत करो। भाई- भाई समझ सभी को ज्ञान दो। तो फिर यह टेव पक्की हो जायेगी। सच्चे-सच्चे ब्रदर्स तुम सभी हो। बाप भी ऊपर से आये हैं, तुम भी आये हो। बाप बच्चों सहित सर्विस कर रहे हैं।

जो पिया के साथ हैं– भाई और बहनें, वह एक दो को मदद करते हैं। और कोई सेन्टर में तो ऐसे होता नहीं है। यहाँ ही कायदा है। जब तक बापदादा आये तब तक एक दो को बाप से बुद्धियोग लगाने मदद करने योग में बैठते हैं। खुद भी याद में बैठते हैं और दूसरों को भी इशारे से याद में बिठाते हैं। हम भी याद में बैठे हैं, तुम भी शिवबाबा की याद में बैठो। बच्चे जानते हैं शिवबाबा को याद करने से हमारे विकर्म भस्म होंगे। यह एक दो को मदद करनी है। जो सामने बैठते हैं

उनको भी वह समय याद में रहना ही है। ऐसे नहीं स्टूडेन्ट को कहे बाप की याद में बैठो और टीचर की बुद्धि इधर उधर सम्बन्धियों आदि तरफ दौड़ती रहे। यह तो शोभता नहीं। टीचर के ऊपर दोष पड़ जाए इसलिए पहले तो खुद को ऐसी अवस्था में बिठाना है। हम बाबा को याद करते हैं– विकर्म विनाश करने के लिए। इसमें बोलने की भी दरकार नहीं रहती। बुद्धि समझती है– बाहर में रहने वालों को तो गोरखधन्धा, मित्र-सम्बन्धियों, गुरू-गोसाई आदि का लफड़ा रहता है। बुद्धि जाती होगी। यहाँ तुमको तो कोई गोरखधन्धा नहीं है। तुम जास्ती याद कर सकते हो, जितना हो सके शिवबाबा को याद करना चाहिए। अगर मित्र-सम्बन्धी आदि याद आये, कहाँ बुद्धि गई तो दण्ड पड़ जायेगा। योग में न रहने से फिर वायुमण्डल को बिगाड़ देते हैं। सब तो ऐसे नहीं हैं जो बाप की याद में रहते हैं। कभी कोई सच नहीं बताते हैं कि हमारा बुद्धियोग नहीं लगा, फलाना-फलाना याद आया। सच्चे बच्चे बाबा को झट आकर सुनाते हैं कि हमारे से यह पाप हुआ। फलाने पर गुस्सा किया, उनको मारा। बहुत बच्चे तो सच कभी बताते नहीं। फिर और ही पक्की प्रैक्टिस हो जाती है। विकर्म जास्ती होते रहते हैं। आगे मम्मा कचहरी कराती थी। पूछती थी कोई ने विकर्म तो नहीं किया। यह तो बाबा समझाते हैं, सच न बताने से और ही दण्ड पड़ता है। फायदे के बदले नुकसान हो जाता है।

शिव भगवानुवाच कि योग अग्नि से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और सतोप्रधान बन जायेंगे इसलिए बच्चे याद की यात्रा को भूलो मत। अपनी दिल से पूछो कि हम प्रदर्शनी में ज्ञान तो बहुत अच्छा समझाते हैं परन्तु याद की यात्रा में रहते हैं? याद में फेल हैं इसलिए वह अवस्था, वह खुशी कायम नहीं रहती। इस सब्जेक्ट में बच्चों को अभ्यास बढ़ाना चाहिए। चित्र भी ऐसे शोभनिक बनाने चाहिए जो कोई भी आकर पढ़ने से ही नॉलेज समझ जाए। अच्छी चीज होगी तो देखने बहुत आयेंगे।

अभी तुम बच्चों को देही- अभिमानी बहुत बनना है। यही मेहनत है। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। खास याद करना होता है, ऐसे नहीं कि मैं तो शिवबाबा का बच्चा हूँ ना फिर याद क्या करें। नहीं, याद करना है अपने को स्टूडेंट समझकर। हम आत्माओं को शिवबाबा पढ़ा रहे हैं, यह भी भूल जाते हैं। शिवबाबा एक ही टीचर है जो सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज सुनाते हैं, यह भी याद नहीं रहता है। हर एक बच्चे को अपने दिल से पूछना है कि कितना समय बाप की याद ठहरती है? जास्ती टाइम तो बाहरमुखता में ही जाता है। यह याद ही मुख्य है। इस भारत के योग की ही बहुत महिमा है। परन्तु योग कौन सिखलाते हैं-यह किसको पता नहीं है। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। अब कृष्ण को याद करने से तो एक भी पाप नहीं कटेगा क्योंकि वह तो शरीरधारी है। पांच तत्वों का बना हुआ है। उनको याद किया तो गोया मिट्टी को याद किया, 5 तत्वों को याद किया। शिवबाबा तो अशरीरी है इसलिए कहते हैं अशरीरी बनो, मुझ बाप को याद करो। कहते भी हो-हे पतित-पावन, वह तो एक हुआ ना। युक्ति से पूछना चाहिए-गीता का भगवान कौन? भगवान रचयिता तो एक होता है।

सतोप्रधान तत्वों से यह शरीर भी सतोप्रधान होते हैं। वहाँ के फल भी बहुत बड़े-बड़े स्वादिष्ट होते हैं। नाम ही है स्वर्ग। तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से ही विकार छूटेंगे। देह- अभिमान आने से विकार की चेष्टा होती है। योगी कभी विकार में नहीं जायेंगे। ज्ञान बल तो है, परन्तु योगी नहीं होगा तो गिर पड़ेगा। जैसे पूछा जाता है-पुरूषार्थ बड़ा या प्रालब्ध? तो कहते हैं पुरूषार्थ बड़ा। वैसे इसमें कहेंगे योग बड़ा। योग से ही पतित से पावन बनते हैं।

बाप कहते हैं मैं तुमको स्वच्छ बुद्धि बनाता हूँ। ज्ञान घृत डालता हूँ। है यह भी समझाने की बात। ज्ञान और योग दोनों अलग चीज हैं। योग को ज्ञान नहीं कहेंगे | कोई समझते हैं भगवान ने आकर यह भी ज्ञान दिया ना कि मुझे याद करो। परन्तु इसे ज्ञान नहीं कहेंगे। यह तो बाप और बच्चे हैं। बच्चे जानते हैं कि यह हमारा बाबा है, इसमें ज्ञान की बात नहीं कहेंगे। ज्ञान तो विस्तार है। यह तो सिर्फ याद है। बाप कहते हैं मुझे याद करो, बस। यह तो कॉमन बात है। इनको ज्ञान नहीं कहा जाता। बच्चे ने जन्म लिया सो तो जरूर बाप को याद करेगा ना। ज्ञान का विस्तार है। बाप कहते हैं मुझे याद करो-यह ज्ञान नहीं हुआ। तुम खुद जानते हो, हम आत्मा हैं, हमारा बाप परम आत्मा, परमात्मा है। इसे ज्ञान कहेंगे क्या? बाप को पुकारते हैं। ज्ञान तो है नॉलेज, जैसे कोई एम.ए. पढ़ते हैं, कोई बी .ए. पढ़ते हैं, कितनी ढेर किताब पढ़नी होती हैं। अब बाप तो कहते हैं तुम हमारे बच्चे हो ना, मैं तुम्हारा बाप हूँ। मेरे से ही योग लगाओ अर्थात् याद करो। इसको ज्ञान नहीं कहेंगे। तुम बच्चे तो हो ही। तुम आत्मायें कब विनाश को नहीं पाती हो। कोई मर जाते हैं तो उनकी आत्मा को बुलाते हैं, अब वह शरीर तो खत्म हो गया। आत्मा भोजन कैसे खायेगी? भोजन तो फिर भी ब्राह्मण खायेंगे। परन्तु यह सब है भक्ति मार्ग की रस्म। ऐसे नहीं कि हमारे कहने से वह भक्ति मार्ग बन्द हो जायेगा। वह तो चलता ही आता है। आत्मा तो एक शरीर छोड़ जाए दूसरा लेती है।

बच्चों की बुद्धि में ज्ञान और योग का कॉन्ट्रास्ट स्पष्ट होना चाहिए। बाप जो कहते हैं मुझे याद करो, यह ज्ञान नहीं है। यह तो बाप डायरेक्शन देते हैं, इनको योग कहा जाता। ज्ञान है सृष्टि चक्र कैसे फिरता है-उसकी नॉलेज। योग अर्थात् याद। बच्चों का फर्ज है बाप को याद करना। वह है लौकिक, यह है पारलौकिक। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो ज्ञान अलग चीज हो गई। बच्चे को कहना पड़ता है क्या कि बाप को याद करो। लौकिक बाप तो जन्मते ही याद रहता है। यहाँ बाप की याद दिलानी पड़ती है। इसमें मेहनत लगती है। अपने को आत्मा समझ

बाप को याद करो - यह बहुत मेहनत का काम है। तब बाबा कहते हैं योग में ठहर नहीं सकते हैं। बच्चे लिखते हें-बाबा याद भूल जाती है। ऐसे नहीं कहते कि ज्ञान भूल जाता है। ज्ञान तो बहुत सहज है। याद को ज्ञान नहीं कहा जाता, इसमें माया के तूफान बहुत आते हैं। भल ज्ञान में कोई बहुत तीखें हैं, मुरली बहुत अच्छी चलाते हैं परन्तु बाबा पूछते हैं-याद का चार्ट निकालो, कितना समय याद करते हो? बाबा को याद का चार्ट यथार्थ रीति बनाकर दिखाओ। याद की ही मुख्य बात है। पतित ही पुकारते हैं कि आकर पावन बनाओ। मुख्य है पावन बनने की बात। इसमें ही माया के विघ्न पड़ते हैं। शिव भगवानुवाच-याद में सब बहुत कच्चे हैं। अच्छे- अच्छे बच्चे जो मुरली तो बहुत अच्छी चलाते हैं परन्तु याद में बिल्कुल कमजोर हैं। योग से ही विकर्म विनाश होते हैं। योग से ही कर्मेन्द्रियाँ बिल्कुल शान्त हो सकती हैं। एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये, कोई देह भी याद न आये। आत्मा जानती है यह सारी दुनिया खलास होनी है, अब हम जाते हैं अपने घर। फिर आयेंगे राजधानी में। यह सदैव बुद्धि में रहना चाहिए। ज्ञान जो मिलता है वह आत्मा में रहना चाहिए। बाप तो है योगेश्वर, जो याद सिखलाते हैं। वास्तव में ईश्वर को योगेश्वर नहीं कहेंगे। तुम योगेश्वर हो। ईश्वर बाप कहते हैं मुझे याद करो। यह याद सिखलाने वाला ईश्वर बाप है। वह निराकार बाप शरीर द्वारा सुनाते हैं। बच्चे भी शरीर द्वारा सुनते हैं। कई तो योग में बहुत कच्चे हैं। बिल्कुल याद करते ही नहीं। जो भी जन्म-जन्मान्तर के पाप हैं सबकी सजा खायेंगे। यहाँ आकर जो पाप करते हैं वह तो और ही सौगुणा सजा खायेंगे। ज्ञान की तिक-तिक तो बहुत करते हैं, योग बिल्कुल ही नहीं है जिस कारण पाप भस्म नहीं होते, कच्चे ही रह जाते हैं इसलिए सच्ची-सच्ची माला 8 की बनी है। 9 रत्न गाये जाते हैं। 108 रत्न कब सुने हैं? 108 रत्नों की कोई चीज नहीं बनाते हैं। बहुत हैं जो इन बातों को पूरा समझते नहीं हैं। याद को ज्ञान नहीं कहा जाता। ज्ञान सृष्टि चक्र को कहा जाता है। शास्त्रों में ज्ञान नहीं है, वह शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। बाप खुद कहते हैं मैं इनसे नहीं मिलता। साधुओं आदि सबका उद्धार करने मैं आता हूँ। वह समझते हैं ब्रह्म में लीन होना है। फिर मिसाल देते हैं पानी के बुदबुदे का। अभी तुम ऐसे नहीं कहते। तुम तो जानते हो हम आत्मायें बाप के बच्चे

हैं। "मामेकम् याद करो" यह अक्षर भी कहते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। भल कह देते हम आत्मा हैं परन्तु आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है-यह ज्ञान बिल्कुल नहीं। यह बाप ही आकर सुनाते हैं। अभी तुम जानते हो हम आत्माओं का घर वह है। वहाँ सारा सिजरा है। हर एक आत्मा को अपना- अपना पार्ट मिला हुआ है। सुख कौन देते हैं, दुःख कौन देते हैं-यह भी किसको पता नहीं है।

यह भी गीता पाठशाला है, कोई तो कुछ भी मार्क्स लेने लायक नहीं। मैं आत्मा बिन्दी हूँ, बाप भी बिन्दी है, ऐसे उनको याद करना है। जो इस बात को समझते भी नहीं हैं, वह क्या पद पायेंगे! याद में न रहने से बहुत घाटा पड़ जाता है। याद का बल बहुत कमाल करता है, कर्मेन्द्रियाँ बिल्कुल शान्त, शीतल हो जाती हैं। ज्ञान से शान्त नहीं होंगी, योग के बल से शान्त होंगी। भारतवासी पुकारते हैं कि आकर हमको वह गीता का ज्ञान सुनाओ, अब कौन आयेगा? कृष्ण की आत्मा तो यहाँ है। कोई सिंहासन पर थोड़ेही बैठते हैं, जिसको बुलाते हैं। अगर कोई कहे हम क्राइस्ट की आत्मा को याद करते हैं। अरे वह तो यहाँ ही है, उनको क्या पता कि क्राइस्ट की सोल यहाँ ही है, वापिस जा नहीं सकती। लक्ष्मी-नारायण, पहले नम्बर वालों को ही पूरे 84 जन्म लेने हैं तो और फिर वापिस जा कैसे सकते।

देवी-देवता धर्म कब, किसने स्थापन किया- भारतवासियों को कुछ भी पता नहीं है। तो बाप ने समझाया है-ज्ञान में भल कितने भी अच्छे हैं परन्तु योग में कई बच्चे नापास हैं। योग नहीं तो विकर्म विनाश नहीं होंगे, ऊंच पद नहीं पायेंगे। जो योग में मस्त हैं वही ऊंच पद पायेंगे। उनकी कर्मेन्द्रियाँ बिल्कुल शीतल हो जाती हैं। देह सहित सब कुछ भूल देही- अभिमानी बन जाते हैं। हम अशरीरी हैं अब जाते हैं घर। उठते-बैठते समझो- अब यह शरीर तो छोड़ना है। हमने पार्ट

बजाया, अब जाते हैं घर। ज्ञान तो मिला है, जैसे बाप में ज्ञान है, उनको तो किसको याद नहीं करना है। याद तो तुम बच्चों को करना है। बाप को ज्ञान का सागर कहा जाता है। योग का सागर तो नहीं कहेंगे ना। चक्र का नॉलेज सुनाते हैं और अपना भी परिचय देते हैं। याद को ज्ञान नहीं कहा जाता। याद तो बच्चे को आपेही आ जाती है। याद तो करना ही है, नहीं तो वर्सा कैसे मिलेगा? बाप है तो वर्सा जरूर मिलता है। बाकी है नॉलेज। हम 84 जन्म कैसे लेते हैं, तमोप्रधान से सतोप्रधान, सतोप्रधान से तमोप्रधान कैसे बनते हैं, यह बाप समझाते हैं। अब सतोप्रधान बनना है बाप की याद से। तुम रूहानी बच्चे रूहानी बाप के पास आये हो, उनको शरीर का आधार तो चाहिए ना। कहते हैं मैं बूढ़े तन में प्रवेश करता हूँ। है भी वानप्रस्थ अवस्था। अब बाप आते हैं तब सारे सृष्टि का कल्याण होता है। यह है भाग्यशाली रथ, इनसे कितनी सर्विस होती है। तो इस शरीर का भान छोड़ने के लिए याद चाहिए। इसमें ज्ञान की बात नहीं। जास्ती याद सिखलानी है। ज्ञान तो सहज है। छोटा बच्चा भी सुना दे। बाकी याद में ही मेहनत है। एक की याद रहे, इसको कहा जाता है अव्यभिचारी याद। किसके शरीर को याद करना - वह है व्यभिचारी याद। याद से सबको भूल अशरीरी बनना है।

तो बाप समझाते हैं याद की यात्रा बड़ी पक्की चाहिए। ज्ञान तो बड़ा सहज है। देही- अभिमानी बनने में ही मेहनत है। बाप कहते हैं किसकी भी देह याद न आये, यह है भूतों की याद , भूत पूजा। मैं तो अशरीरी हूँ, तुमको याद करना है मुझे। इन आँखों से देखते हुए बुद्धि से बाप को याद करो। बाप के डायरेक्शन पर चलो तो धर्मराज की सजाओं से छूट जायेंगे। पावन बनेंगे तो सजायें खत्म हो जायेंगी, बड़ी भारी मंजिल है। प्रजा बनना तो बहुत सहज है, उसमें भी साहूकार प्रजा, गरीब प्रजा कौन-कौन बन सकते हैं, सब समझाते हैं। पिछाड़ी में तुम्हारे बुद्धि का योग रहना चाहिए बाप और घर से। जैसे एक्टर्स का नाटक में पार्ट पूरा होता है तो बुद्धि घर में चली जाती है। यह है बेहद की बात। वह होती है हद की आमदनी, यह है बेहद की आमदनी

। अच्छे एक्टर्स की आमदनी भी बहुत होती है ना । तो बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते बुद्धियोग वहाँ लगाना है । वह आशिक-माशूक होते हैं एक-दो के । यहाँ तो सब आशिक हैं एक माशूक के । उनको ही सब याद करते हैं । वंडरफुल मुसाफिर है ना । इस समय आये हैं सब दुखों से छुड़ाकर सद्गति में ले जाने लिए । उनको कहा जाता है सच्चा-सच्चा माशूक । वह एक-दो के शरीर पर आशिक होते हैं, विकार की बात नहीं । उसको कहेंगे देह- अभिमान का योग । वह भूतों की याद हो गई । मनुष्य को याद करना माना 5 भूतों को, प्रकृति को याद करना । बाप कहते हैं प्रकृति को भूल मुझे याद करो । मेहनत है ना और फिर दैवीगुण भी चाहिए । कोई से बदला लेना, यह भी आसुरी गुण हैं । एक बाप को याद करना हैं तो विकर्म विनाश हों, और कोई रास्ता नहीं हैं । योगबल से तुम विश्व पर राज्य करते हो । आत्मा कहती है, अब मुझे घर जाना है, यह पुरानी दुनिया है, यह है बेहद का सन्यास । गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है और चक्र को समझने से चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे ।

अब रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं । बच्चे जानते हैं रूहानी बाप इस रथ द्वारा हमको समझा रहे हैं । अब जबकि बच्चे हैं तो बाप को वा किसी बहन वा भाई को कहना कि मुझे बाबा को याद करना सिखलाओ, यह रांग हो जाता है । तुम कोई छोटी बच्चियां तो नहीं हो ना । यह तो जानते हो मुख्य है रूह । वह तो है अविनाशी । शरीर है विनाशी । बड़ा तो रूह हुआ ना । अज्ञानकाल में यह ज्ञान किसको नहीं रहता है कि हम आत्मा हैं, शरीर द्वारा बोलते हैं । देह- अभिमान में आकर ही बोलते हैं-मैं यह करता हूँ । अभी तुम देही- अभिमानी बने हो । जानते हो आत्मा कहती है मैं इस शरीर द्वारा बोलती हूँ, कर्म करती हूँ । आत्मा मेल है । बाप समझाते हैं-यह बोल बहुत करके सुने जाते हैं, कहते हैं हमको योग में बिठाओ । सामने एक बैठते हैं, इस ख्याल से कि हम भी बाबा की याद में बैठें, यह भी बैठें । अब पाठशाला कोई इसके लिए नहीं है । पाठशाला तो पढ़ाई के लिए है । बाकी ऐसे नहीं, यहाँ बैठकर सिर्फ तुम्हें

याद करना है। बाप ने तो समझाया है चलते फिरते, उठते बैठते बाप को याद करो, इसके लिए खास बैठने की भी दरकार नहीं। जैसे कोई कहते हैं राम-राम कहो, क्या बिगर राम-राम कहे याद नहीं कर सकते हैं? याद तो चलते फिरते कर सकते हैं। तुमको तो कर्म करते बाप को याद करना है। आशिक माशूक कोई खास बैठकर एक- दो को याद नहीं करते हैं। काम काज धन्धा आदि सब करना है, सब कुछ करते अपने माशक को याद करते रहो। ऐसे नहीं कि उनको याद करने के लिए खास कहाँ जाकर बैठना है।

सभी आत्माओं को बाप का डायरेक्शन है-गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। बाल ब्रह्मचारी बनो तो फिर पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे। इतने जन्म जो पाप किये हैं, अब मुझे याद करने से पाप भस्म हो जायेंगे। मूलवतन में पवित्र आत्मायें ही रहती हैं। पतित कोई जा नहीं सकते हैं। बुद्धि में यह तो याद रखना ही है-बाबा हमको पढ़ाते हैं। स्टूडेंट ऐसे कहेंगे क्या कि हमको टीचर की याद सिखलाओ। याद सिखलाने की क्या दरकार है। यहाँ (संदली पर) कोई न बैठे तो भी हर्जा नहीं है। अपने बाप को याद करना है। तुम सारा दिन धन्धे धोरी आदि में रहते हो तो भूल जाते हो, इसलिए यहाँ बिठाया जाता है। यह 10 - 15 मिनट भी याद करें। तुम बच्चों को तो काम काज करते याद में रहने की आदत डालनी है। आधाकल्प बाद माशूक मिलता है। अब कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा से खाद निकल जायेगी और तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। तो क्यों नहीं याद करना चाहिए। स्त्री का जब हथियाला बांधते हैं तो उनको कहते हैं पति तुम्हारा गुरू ईश्वर सब कुछ है। परन्तु वह तो फिर भी मित्र, सम्बन्धी, गुरू आदि बहुतों को याद करती है। वह तो देहधारी की याद हो गई। यह तो पतियों का पति है, उनको याद करना है। कोई कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ। परन्तु इससे क्या होगा। 10 मिनट यहाँ बैठते हैं तो भी ऐसे मत समझो कि कोई एकरस हो बैठते हैं। भक्ति मार्ग में किसकी पूजा करने बैठते हैं तो बुद्धि बहुत भटकती रहती है। नौधा भक्ति करने वालों को यही तात लगी रहती है कि हमको साक्षात्कार हो। वह आश लगाकर

बैठे रहते हैं। एक की लगन में लवलीन हो जाते हैं, तब साक्षात्कार होता है। उनको कहा जाता है नौंधा भक्त। वह भक्ति ऐसी है जैसे आशिक-माशूक। खाते पीते बुद्धि में याद रहती है। उनमें विकार की बात नहीं होती, शरीर पर प्यार हो जाता है। एक-दो को देखने बिगर रह नहीं सकते ।

अब तुम बच्चों को बाप ने समझाया हैं - मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। कैसे तुमने 84 जन्म लिए हैं। बीज को याद करने से सारा झाड़ याद आ जाता है। यह वैराइटी धर्मों का झाड़ है ना। यह सिर्फ तुम्हारी बुद्धि में ही है कि भारत गोल्डन एज में था, अब आइरन एज में है। यह अंग्रेजी अक्षर अच्छे हैं, इनका अर्थ अच्छा निकलता है। आत्मा सच्चा सोना होती है फिर उनमें खाद पड़ती है। अभी बिल्कुल झूठी हो गई है, इनको कहा जाता है आइरन एजेड । आत्मायें आइरन एजेड होने से जेवर भी ऐसा हो गया है। अभी बाप कहते हैं मैं पतित-पावन हूँ, मामेकम् याद करो। तुम मुझे बुलाते हो हे पतित-पावन आओ। मैं कल्प-कल्प आकर तुमको यह युक्ति बतलाता हूँ। मन्मनाभव, मध्याजी भव अर्थात् स्वर्ग के मालिक बनो। कोई कहते हैं हमको योग में बहुत मजा आता है, ज्ञान में इतना मजा नहीं। बस, योग करके यह भागेंगे। योग ही अच्छा लगता है, कहते हैं हमको तो शान्ति चाहिए। अच्छा, बाप को तो कहाँ भी बैठ याद करो। याद करते-करते तुम शान्तिधाम में चले जायेंगे। इसमें योग सिखलाने की बात ही नहीं है। बाप को याद करना है। ऐसे बहुत हैं जो सेंटर्स पर जाकर आधा पीना घण्टा बैठते हैं, कहते हैं हमको नेष्ठा कराओ या तो कहेंगे बाबा ने प्रोग्राम दिया है नेष्ठा का। यहाँ बाबा कहते हैं चलते फिरते याद में रहो। ना से तो बैठना अच्छा है। बाबा मना नहीं करते हैं, भल सारी रात बैठो, परन्तु ऐसी आदत थोड़ेही डालनी है कि बस रात को ही याद करना है। आदत यह डालनी है कि काम काज करते याद करना है। इसमें बड़ी मेहनत है। बुद्धि घड़ी-घड़ी और तरफ भाग जाती है। भक्ति मार्ग में भी बुद्धि भाग जाती है फिर अपने को चुटकी काटते हैं।

सच्चे भक्त जो होते हैं उनकी बात करते हैं। तो यहाँ भी अपने साथ ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए। बाबा को क्यों नहीं याद किया? याद नहीं करेंगे तो विश्व के मालिक कैसे बनेंगे? आशिक-माशूक तो नाम-रूप में फंसे रहते हैं। यहाँ तो तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हो। हम आत्मा इस शरीर से अलग हैं। शरीर में आने से कर्म करना होता है। बहुत ऐसे भी हैं जो कहते हैं हम दीदार करें। अब दीदार क्या करेंगे। वह तो बिन्दी है ना। अच्छा, कोई कहते हैं कृष्ण का दीदार करें। कृष्ण का तो चित्र भी है ना। जो जड़ है सो फिर चैतन्य में देखेंगे इससे फायदा क्या हुआ? साक्षात्कार से थोड़ेही फायदा होगा। तुम बाप को याद करो तो आत्मा पवित्र हो। नारायण का साक्षात्कार होने से नारायण थोड़ेही बन जायेंगे।

तुम जानते हो हम नई दुनिया में जाकर यह बनेंगे। नई दुनिया स्थापन होती है महाभारत लड़ाई के बाद। बच्चों को अब नॉलेज मिली है। वह भी नम्बरवार धारण करते हैं। योग में भी नम्बरवार रहते हैं। यह भी जांच रखनी चाहिए-हम कितना याद में रहते हैं? बाप कहते हैं यह अभी तुम्हारा पुरूषार्थ भविष्य 21 जन्मों के लिए हो जायेगा। अभी फेल हुए तो कल्प-कल्पान्तर फेल होते रहेंगे, ऊँच पद नहीं पा सकेंगे। पुरूषार्थ करना चाहिए ऊँच पद पाने का। ऐसे भी कई सेंटर्स पर आते हैं जो विकार में जाते रहते हैं और फिर सेंटर्स पर आते रहते हैं। समझते हैं ईश्वर तो सब देखता है, जानता है। अब बाप को क्या पड़ी है जो यह बैठ देखेगा। तुम झूठ बोलेंगे, विकर्म करेंगे तो अपना ही नुकसान करेंगे। यह तो तुम भी समझते हो, काला मुँह करता हूँ तो ऊंच पद पा नहीं सकूँगा। सो बाप ने जाना तो भी बात तो एक ही हुई। उनको क्या दरकार पड़ी है। अपनी दिल खानी चाहिए-मैं ऐसा कर्म करने से दुर्गति को पाऊंगा। बाबा क्यों बतावे? हाँ, ड्रामा में है तो बतलाते भी हैं। बाबा से छिपाना गोया अपनी सत्यानाश करना है। पावन बनने के लिए बाप को याद करना है, तुमको यही फुरना रहना चाहिए कि हम अच्छी

रीति पढ़कर ऊंच पद पावें। कोई मरा वा जिया, उनका फुरना नहीं। फुरना (फिक्र) रखना है कि बाप से वर्सा कैसे लेवें? तो किसको भी थोड़े में समझाना है।

भगवानुवाच - अब यह तो रूहानी बच्चे समझते हैं कि भगवान् कौन है। भारत में कोई भी यथार्थ रीति जानते नहीं। कहते भी हैं-मैं जो हूँ, जैसा हूँ मुझे यथार्थ रीति कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हैं। भल यहाँ रहते हैं परन्तु यथार्थ रीति से नहीं जानते। यथार्थ रीति जानकर और बाप को याद करना, यह बड़ी मुश्किलात है। भल बच्चे कहते हैं कि बहुत सहज है परन्तु मैं जो हूँ, मुझे निरन्तर बाप को याद करना है, बुद्धि में यह युक्ति रहती है। मैं आत्मा बहुत छोटा हूँ। हमारा बाबा भी बिन्दी छोटा है। आधाकल्प तो भगवान का कोई नाम भी नहीं लेते हैं। दु:ख में ही याद करते हैं-हे भगवान। अब भगवान कौन हैं, यह तो कोई मनुष्य समझते नहीं। अब मनुष्यों को कैसे समझायें-इस पर विचार सागर मंथन चलना चाहिए। नाम भी लिखा हुआ है-प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय।

हमको हेविन का मालिक बनाने के लिए पुरूषार्थ कराते हैं उनकी शक्ल बड़ी फर्स्टक्लास खुशनुम : रहती है। बाप आते भी हैं बच्चों को पुरूषार्थ कराने, प्रालब्ध के लिए। यह भी तुम जानते हो, दुनिया में थोड़ेही कोई जानते हैं। हेविन का मालिक बनाने भगवान पुरूषार्थ कराते हैं तो खुशी होनी चाहिए। शक्ल बड़ी फर्स्टक्लास, खुशनुम होनी चाहिए। बाप की याद से तुम सदैव हर्षित रहेंगे। बाप को भूलने से ही मुरझाइस आती है। बाप और वर्से को याद करने से खुशनुम : हो जाते हैं। हर एक की सर्विस से समझा जाता है। बाप को बच्चों की खुशबू तो आती है ना। सपूत बच्चों से खुशबू आती है, कपूत से बदबू आती है। बगीचे में खुशबूदार फूल को ही उठाने के लिए दिल होगी। अक को कौन उठायेंगे! बाप को यथार्थ रीति याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। अच्छा!

अभी तुम बच्चे नवयुग को याद करते हो। दुनिया में कोई को भी नवयुग का मालूम नहीं है। वह तो समझते हैं नवयुग 40 हजार वर्ष बाद आयेगा। सतयुग नवयुग है, यह तो बड़ा क्लीयर है। तो बाबा राय देते हैं ऐसे-ऐसे अच्छे गीत भी सुनकर रिफ्रेश होंगे और किसको समझायेंगे भी। यह सब युक्तियां हैं। इनका अर्थ भी सिर्फ तुम ही समझ सकते हो। बहुत अच्छे- अच्छे गीत हैं अपने को रिफ्रेश करने के लिए। यह गीत बहुत मदद करते हैं। अर्थ करना चाहिए तो मुख भी खुल जायेगा, खुशी भी होगी। बाकी जो जास्ती धारणा नहीं कर सकते हैं उनके लिए बाप कहते हैं घर बैठे बाप को याद करते रहो। गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ यह मन्त्र याद रखो- बाप को याद करो और पवित्र बनो। आगे पुरूष लोग पत्नी को कहते थे भगवान को तो घर में भी याद कर सकते हैं फिर मन्दिरों आदि में भटकने की क्या दरकार है? हम तुमको घर में मूर्ति दे देते हैं, यहाँ बैठ याद करो, धक्का खाने क्यों जाती हो? ऐसे बहुत पुरूष लोग स्त्रियों को जाने नहीं देते थे। चीज तो एक ही है, पूजा करना है और याद करना है। जबकि एक बार देख लिया फिर तो ऐसे भी याद कर सकते हैं।

तुम अभी समझते हो बेहद के बाप से तो बेहद का वर्सा मिलता है तो उस बाप की श्रीमत पर चलना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। लेबर्स को भी शिक्षा देनी चाहिए तो उन्हों का भी कुछ कल्याण हो जाए। परन्तु खुद ही याद नहीं कर सकते तो औरों को क्या याद दिलायेंगे। रावण एकदम पतित बना देते हैं फिर बाप आकर परिस्तानी बनाते हैं। वन्डर है ना। कोई की भी बुद्धि में यह बातें नहीं हैं। यह लक्ष्मी-नारायण कितना ऊंच परिस्तानी से फिर कितना पतित बन जाते हैं इसलिए ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात गाई हुई है। शिव के मन्दिर में तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो। दर- दर भटकना छोड़ दो। यह ज्ञान है ही शान्ति का। बाप को याद करने से तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। बस यही मंत्र देते रहो। कोई से भी

पैसा नहीं लेना चाहिए, जब तक पक्का न हो जाए। बोलो प्रतिज्ञा करो कि हम पवित्र रहेंगे, तब हम तुम्हारे हाथ का खा सकते हैं, कुछ भी ले सकते हैं। भारत में मन्दिर तो बहुत ढेर हैं। फॉरेनर्स आदि जो भी आयें उनको यह सन्देश तुम दे सकते हो कि बाप को याद करो।

बाप ही आकर सारे वर्ल्ड के आदि-मध्य- अन्त का नॉलेज बताते हैं। कहते हैं मैं हूँ बड़े ते बड़ा गेस्ट, परन्तु गुप्त। यह भी सिर्फ तुम ही जानते हो। परन्तु जानते हुए भी फिर भूल जाते हो | उनका कितना रिगार्ड रखना चाहिए, उन्हें याद करना चाहिए। आत्मा भी निराकार, परमात्मा भी निराकार, इसमें फोटो की भी बात नहीं। तुमको तो आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है, देह- अभिमान छोड़ना है। तुम्हें सदैव अविनाशी चीज़ को देखना चाहिए। तुम विनाशी देह को क्यों देखते हो! देही- अभिमानी बनो, इसमें ही मेहनत है। जितना याद में रहेंगे उतना कर्मातीत अवस्था को पाए ऊंच पद पायेंगे। बाप बहुत ही सहज योग अर्थात् याद सिखलाते हैं। योग तो अनेक प्रकार के हैं। याद अक्षर ही यथार्थ है। परमात्मा बाप को याद करने में ही मेहनत है। कोई विरला सच बताते हैं कि हम इतना समय याद में रहा। याद करते ही नहीं हैं तो सुनाने में लज्जा आती है। लिखते हैं सारे दिन में एक घण्टा याद में रहे, तो लज्जा आनी चाहिए ना। ऐसा बाप जिसको दिन-रात याद करना चाहिए और हम सिर्फ एक घण्टा याद करते हैं! इसमें बड़ी गुप्त मेहनत है। बाप को बुलाते हैं तो दूर से आने वाला गेस्ट हुआ ना। बाप कहते हैं मैं नई दुनिया का गेस्ट नहीं बनता हूँ। आता ही पुरानी दुनिया में हूँ। नई दुनिया की स्थापना आकर करता हूँ। यह पुरानी दुनिया है, यह भी कोई यथार्थ नहीं जानते हैं। नई दुनिया की आयु ही नहीं जानते।

दुनिया में यह भी किसकी बुद्धि में नहीं आता कि हमारे राज्य में यह कोई भी थे नहीं। एक ही धर्म, एक ही राज्य था, तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जिनकी बुद्धि में अच्छी रीति बैठता है। अगर

धारणा हो तो वह नशा सदैव चढ़ा रहे। नशा कोई को बहुत मुश्किल चढ़ा रहता है। मित्र-सम्बन्धी आदि सब तरफ से याद निकालकर एक बेहद की खुशी में ठहर जाए, बड़ी कमाल है। हाँ, यह भी अन्त में होगा। पिछाड़ी में ही कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं। शरीर से भी भान टूट जाता है। बस अभी हम जाते हैं, यह जैसे कॉमन हो जायेगा। जैसे नाटक वाले पार्ट बजाए फिर जाते हैं घर। यह देह रूपी कपड़ा तो तुमको यहाँ ही छोड़ना है।

बाप कहते हैं-सारी दुनिया दुर्गति को पाई हुई है। फिर हम ही आकर सबको सद्गति देते हैं। अगर सर्वव्यापी है तो क्या सब भगवान ही भगवान है? एक तरफ कहते ऑल ब्रदर्स, फिर कह देते ऑल फादर्स, समझते नहीं हैं। अब तुम बच्चों को बेहद का बाप कहते हैं, बच्चे, मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम्हें इस दादा को वा मम्मा को भी याद नहीं करना है। बाप तो कहते हैं कि न मम्मा, न बाबा, कोई की महिमा कुछ भी नहीं। शिवबाबा न होता तो यह ब्रह्मा भी क्या करता? इनको याद करने से क्या होगा! हाँ, तुम जानते हो इन द्वारा हम बाप से वर्सा ले रहे हैं, इनसे नहीं। यह भी उनसे वर्सा लेते हैं, तो याद उनको करना है। यह तो बीच में दलाल है। बच्चे और बच्ची की सगाई होती है, तब याद तो एक-दूसरे को करेंगे ना। शादी कराने वाला तो बीच में दलाल ठहरा। इन द्वारा बाप तुम आत्माओं की सगाई अपने साथ कराते हैं इसलिए गायन भी है सतगुरू मिला दलाल के रूप में। सतगुरू कोई दलाल नहीं है। सतगुरू तो निराकार है। भल गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु, कहते हैं परन्तु वह कोई गुरू हैं नहीं। सतगुरू एक बाप ही है जो सर्व की सद्गति करते हैं। बाप ने तुमको सिखाया है तब तुम औरों को भी रास्ता बताते हो और सबको कहते हो कि देखते हुए भी नहीं देखो। बुद्धि शिवबाबा से लगी रहे। इन आँखों से जो कुछ देखते हो कब्रदाखिल होना है। याद एक बाप को करना है, न कि इनको। बुद्धि कहती है इनसे थोड़ेही वर्सा मिलेगा। वर्सा तो बाप से मिलना है। जाना भी बाप के पास है। स्टूडेंट, स्टूडेंट को थोड़ेही याद करेंगे। स्टूडेंट तो टीचर को याद करेंगे ना।

स्कूल में जो तीखे बच्चे होते हैं वह फिर औरों को भी उठाने की कोशिश करते हैं। बाप भी कहते हैं एक-दो को ऊँचा उठाने की कोशिश करो परन्तु तकदीर में नहीं है तो पुरूषार्थ भी नहीं करते हैं। थोड़े में ही राजी हो जाते हैं। समझाना चाहिए प्रदर्शनी में बहुत आते हैं, बहुतों को समझाने से उन्नति बहुत होती है। निमन्त्रण देकर मंगाते हैं। तो बड़े-बड़े समझदार आदमी आते हैं।

बाप ने डायरेक्शन दिया ना-कुछ भी सुनो नहीं। बोलो अभी हम ज्ञान सागर के बच्चे बने हैं तो भक्ति को क्यों याद करें! हम एक भगवान को ही याद करते हैं। बाप ने कहा है भक्तिमार्ग को भूल जाओ। मैं तुमको सहज बात सुनाता हूँ कि मुझ बीज को याद करो तो झाड़ सारा बुद्धि में आ ही जायेगा। तुम्हारी मुख्य है गीता। गीता में ही भगवान की समझानी है। अब यह है नई बातें। नई बात पर हमेशा ज्यादा ध्यान दिया जाता है। है भी बड़ी सिम्पुल बात। सबसे बड़ी बात है याद करने की। घड़ी-घड़ी कहना पड़ता है-मन्मनाभव। बाप को याद करो, यही बहुत गुह्य बातें हैं, इसमें ही विघ्न पड़ते हैं। बहुत बच्चे हैं जो सारे दिन में दो मिनट भी याद नहीं करते। बाप का बनते भी अच्छा कर्म नहीं करते तो याद भी नहीं करते, विकर्म करते रहते हैं। बुद्धि में बैठता ही नहीं हैं तो कहेंगे यह बाप की आज्ञा का निरादर है, पढ़ नहीं सकेंगे, वह ताकत नहीं मिलती। जिस्मानी पढ़ाई से भी बल मिलता है ना। पढ़ाई है सोर्स ऑफ इनकम। शरीर निर्वाह होता है सो भी अल्पकाल के लिए। कई पढ़ते-पढ़ते मर जाते हैं तो वह पढ़ाई थोड़ेही साथ ले जायेंगे।

महिमा भी उनकी ही गाते हैं-सर्वगुण सम्पन्न...... तो अभी तुमको ऐसा बनना है। तुम बच्चों को अपनी इस लाइफ से कभी तंग नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह हीरे जैसा जन्म गाया हुआ है। इनकी सम्भाल भी करनी होती है। तन्दुरूस्त होंगे तो नॉलेज सुनते रहेंगे। बीमारी में भी सुन

सकते हैं। बाप को याद कर सकते हैं। यहाँ जितना दिन जियेंगे सुखी रहेंगे। कमाई होती रहेगी, हिसाब-किताब चुक्तू होता रहेगा। बच्चे कहते हैं-बाबा सतयुग कब आयेगा? यह बहुत गन्दी दुनिया है। बाप कहते हैं- अरे, पहले कर्मातीत अवस्था तो बनाओ। जितना हो सके पुरूषार्थ करते रहो। बच्चों को सिखलाना चाहिए कि शिवबाबा को याद करो, यह है अव्यभिचारी याद। एक शिव की भक्ति करना, वह है अव्यभिचारी भक्ति, सतोप्रधान भक्ति। फिर देवी-देवताओं को याद करना, वह है सतो भक्ति। बाप कहते हैं उठते-बैठते मुझ बाप को याद करो। बच्चे ही बुलाते हैं- हे पतित-पावन, हे लिबरेटर, हे गाइड.....यह आत्मा ने कहा ना।

- अभी तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है तो बेहद के बाप को याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे और फिर पावन बन पावन दुनिया में चले जायेंगे। कोई तकलीफ की बात नहीं है। जितना समय मिले बाप को याद करो तो पक्की टेव पड़ जायेगी। बाप की याद में तुम देहली तक पैदल जाओ तो भी थकावट नहीं होगी। सच्ची याद होगी तो देह का भान टूट जायेगा, फिर थकावट हो नहीं सकती। पिछाड़ी में आने वाले और ही याद में तीखे जायेंगे।

- अपनी सद्गति के लिए श्रीमत पर चलना है। टीचर की मत पर स्टूडेंट न चले तो कोई काम के नहीं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तो सब हैं। अगर कोई कहते हैं कि हम यह नहीं कर सकेंगे तो बाकी क्या सीखेंगे! सीखकर होशियार होना चाहिए, जो कोई भी कहे यह समझाते तो बहुत अच्छा हैं परन्तु आत्मा जीते जी मरकर एक बाप की बनें, और कोई याद न आये, देह-अभिमान छूट जाये-यह है ऊंची मंजिल। सब कुछ भूलना है। पूरी देही-अभिमानी अवस्था बन जाये-यह बड़ी मंजिल है। वहाँ आत्मायें हैं ही अशरीरी फिर यहाँ आकर देह धारण करती हैं। अब फिर यहाँ इस देह में होते हुए अपने को अशरीरी समझना है। यह मेहनत बड़ी भारी है। अपने को आत्मा समझ कर्मातीत अवस्था में रहना है। सर्प को भी अक्ल है ना-पुरानी खाल छोड़ देते हैं।

तो तुमको देह-अभिमान से कितना निकलना है। मूलवतन में तो तुम हो ही देही-अभिमानी। यहाँ देह में होते अपने को आत्मा समझना है। देह-अभिमान टूट जाना चाहिए। कितना भारी इम्तहान है। भगवान को खुद आकर पढ़ाना पड़ता है। ऐसे और कोई कह न सके कि देह के सब सम्बन्ध छोड़ मेरा बनो, अपने को निराकार आत्मा समझो। कोई भी चीज का भान न रहे। माया एक-दो की देह में बहुत फँसाती है इसलिए बाबा कहते हैं इस साकार को भी याद नहीं करना है। बाबा कहते तुमको तो अपनी देह को भी भूलना है, एक बाप को याद करना है। इसमें बहुत मेहनत है। माया अच्छे-अच्छे बच्चों को भी नाम-रूप में लटका देती है। यह आदत बड़ी खराब है। शरीर को याद करना-यह तो भूतों की याद हो गई। हम कहते हैं एक शिवबाबा को याद करो। तुम फिर 5 भूतों को याद करते रहते हो। देह से बिल्कुल लगाव नहीं होना चाहिए। ब्राह्मणी से भी सीखना है, न कि उनके नाम-रूप में लटकना है। देही-अभिमानी बनने में ही मेंहनत है। बाबा के पास भल चार्ट बहुत बच्चे भेज देते हैं परन्तु बाबा उस पर विश्वास नहीं करता है। कोई तो कहते हैं हम शिवबाबा के सिवाए और किसको याद नहीं करते हैं, परन्तु बाबा जानते हैं - पाई भी याद नहीं करते हैं। याद की तो बड़ी मेंहनत है। कहाँ न कहाँ फँस पड़ते हैं। देहधारी को याद करना, यह तो 5 भूतों की याद है। इनको भूत पूजा कहा जाता है। भूत को याद करते हैं। यहाँ तो तुमको एक शिवबाबा को याद करना है। पूजा की तो बात नहीं। भक्ति का नाम-निशान गुम हो जाता है फिर चित्रों को क्या याद करना है। वह भी मिट्टी के बने हुए हैं। बाप कहते हैं यह भी सब ड्रामा में नूँध है। अब फिर तुमको पुजारी से पूज्य बनाता हूँ। कोई भी शरीर को याद नहीं करना है, सिवाए एक बाप के। आत्मा जब पावन बन जायेगी तो फिर शरीर भी पावन मिलेगा। अभी तो यह शरीर पावन नहीं है। पहले आत्मा जब सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आती है तो शरीर भी उस अनुसार मिलता है। अभी तुम्हारी आत्मा पावन बनती जायेगी लेकिन शरीर अभी पावन नहीं होगा। यह समझने की बातें है। यह पॉइंट्स भी उनकी बुद्धि में बैठेगी जो अच्छी रीति समझकर समझाते रहते हैं। सतोप्रधान आत्मा को बनना है। बाप को याद करने की ही बड़ी मेहनत है। कइयों को तो जरा भी याद नहीं रहती है। पास विद् ऑनर बनने के लिए बुद्धियोग

थोड़ा भी कहीं न भटके। एक बाप की ही याद रहे। परन्तु बच्चों का बुद्धियोग भटकता रहता है। जितना बहुतों को आप समान बनायेंगे उतना ही पद मिलेगा। देह को याद करने वाले कभी ऊंच पद पा न सकें। यहाँ तो पास विद् ऑनर होना है। मेहनत बिगर यह पद कैसे मिलेगा! देह को याद करने वाले कोई पुरूषार्थ नहीं कर सकते। बाप कहते हैं पुरूषार्थ करने वाले को फालो करो। यह भी पुरूषार्थी है ना।

अब आत्माओं को बाप कहते हैं मुझे याद करो। आत्मा कहती है हमको परमात्मा ने ज्ञान दिया है जो फिर हम भाईयों को देते हैं। अपने को आत्मा समझकर बाप को कितना समय याद किया, इस चार्ट रखने में बड़ी विशालबुद्धि चाहिए। देही- अभिमानी हो बाप को याद करना पड़े तब विकर्म विनाश हों। नॉलेज तो बड़ी सहज है, बाकी आत्मा समझ बाप को याद करते अपनी उन्नति करनी है। यह चार्ट कोई बिरले रखते हैं। देही- अभिमानी हो बाप की याद में रहने से कभी किसको दु :ख नहीं देंगे। बाप आते ही हैं सुख देने तो बच्चों को भी सबको सुख देना है। कभी किसको दुःख नहीं देना है। बाप की याद से सब भूत भागेंगे बड़ी गुप्त मेहनत है ।

सब आत्माओं को सदा सुखी बनाने वाला, खुश करने वाला एक ही बाप है। यह भी सिर्फ तुम ही जानते हो। दुनिया में तो मनुष्य कुछ नहीं जानते। तुच्छ बुद्धि हैं। हम ब्राह्मण ही शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। तुम भी यह घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। याद है बड़ी सहज। योग अक्षर सन्यासियों ने रखा है। तुम तो बाप को याद करते हो। योग कॉमन अक्षर है। इनको योग आश्रम भी नहीं कहेंगे, बच्चे और बाप बैठे हैं। बच्चों का फर्ज है– बेहद के बाप को याद करना। हम ब्राह्मण हैं, डाडे से वर्सा ले रहे हैं ब्रह्मा द्वारा इसलिए शिवबाबा कहते हैं जितना हो सके याद करते रहो। चित्र भी भल रखो तो याद रहेगी। हम ब्राह्मण हैं, बाप से वर्सा लेते हैं। ब्राह्मण कभी अपनी

जाति को भूलते हैं क्या? तुम शूद्रों के संग में आने से ब्राह्मणपना भूल जाते हो। ब्राह्मण तो देवताओं से भी ऊंच हैं क्योंकि तुम ब्राह्मण नॉलेजफुल हो। भगवान को जानी जाननहार कहते हैं ना। उसका भी अर्थ नहीं जानते। ऐसे नहीं कि सबके दिलों में क्या है वह बैठ देखते हैं। नहीं, उनको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज है। वह बीजरूप है। झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। तो ऐसे बाप को बहुत याद करना है। इनकी आत्मा भी उस बाप को याद करती है। वह बाप कहते हैं यह ब्रह्मा भी मुझे याद करेंगे तब यह पद पायेंगे। तुम भी याद करेंगे तब पद पायेंगे। पहले-पहले तुम अशरीरी आये थे फिर अशरीरी बनकर वापिस जाना है। और सब तुमको दुःख देने वाले हैं, उनको क्यों याद करेंगे। जबकि मैं तुमको मिला हूँ, मैं तुमको नई दुनिया में ले चलने आया हूँ। वहाँ कोई दुःख नहीं। वह है दैवी संबंध। यहाँ पहले-पहले दुःख होता है स्त्री-पुरूष के सम्बन्ध में क्योंकि विकारी बनते हैं। तुमको अब मैं उस दुनिया का लायक बनाता हूँ, जहाँ विकार की बात नहीं रहती। यह काम महाशत्रु गाया हुआ है जो आदि-मध्य-अन्त दुःख देता है। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि यह आदि-मध्य-अन्त दुःख देता है, नहीं। काम को जीतना है। वही आदि-मध्य-अन्त दुःख देता है। पतित बनाता है। पतित अक्षर विकार पर लगता है। इस दुश्मन पर जीत पानी है। तुम जानते हो हम स्वर्ग के देवी-देवता बन रहे हैं। जब तक यह निश्चय नहीं तो कुछ पा नहीं सकेंगे।

हमारे पुत्र, पोत्रे खायेंगे। बाप कहते हैं कुछ भी खायेंगे नहीं। यह दुनिया ही खत्म होने वाली है। बाकी थोड़ा समय है। विघ्न बहुत पड़ेंगे। आपस में लड़ेंगे। पिछाड़ी में ऐसे लड़ेंगे जो खून की नदियाँ बहेंगी। तुम्हारी तो कोई से लड़ाई नहीं है। तुम योगबल में रहते हो। तुम याद में रहेंगे तो कोई भी तुम्हारे सामने बुरे विचार से आयेंगे तो उनको भयंकर साक्षात्कार हो जायेगा और झट भाग जायेंगे। तुम शिवबाबा को याद करेंगे और वे भाग जायेंगे। जो पक्के बच्चे हैं, पुरूषार्थ में रहते हैं कि मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। बाप समझाते हैं कि हथ कार डे...बच्चों को घर को भी सम्भालना है। परन्तु तुम आत्मायें बाप को याद करो तो पापों का बोझा भी उतर

जायेगा। सिर्फ मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे, परन्तु नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। फिर तुम सब यह शरीर छोड़ेंगे, बाबा सभी आत्माओं को मच्छरों सदृश्य ले जायेंगे। बाकी सारी दुनिया को सजायें खानी हैं। भारत में बाकी थोड़े जाकर रहेंगे। उसके लिए यह महाभारत लड़ाई है। यहाँ तो बहुत वृद्धि होगी। प्रदर्शनी, प्रोजेक्टर आदि द्वारा कितने सुनते हैं। वह प्रजा बनती जाती है। राजा तो एक होता है बाकी होती है प्रजा। वज़ीर भी प्रजा की लाइन में आ जाता है। ढेर प्रजा होती है। एक राजा की लाखों के अन्दाज में प्रजा होती है। तो राजा रानी को मेहनत करनी पड़े ना।

- बाप कहते हैं जितना योग लगायेंगे उतना आयु बढती रहेगी। तुम ईश्वर से योग लगाकर योगेश्वर बनते हो। मनुष्य तो हैं भोगेश्वर। कहा भी जाता है विकारी, मूत पलीती कपड़ धोए...... बाप कहते हैं मुझे धोबी भी कहते हैं। मैं सब आत्माओं को आकर साफ करता हूँ फिर शरीर भी नया शुद्ध मिलेगा। बाप कहते हैं मैं सेकेण्ड में सारी दुनिया के कपड़े साफ कर लेता हूँ। सिर्फ मनमनाभव होने से आत्मा और शरीर पवित्र बन जायेंगे। छू मत्र है ना। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। कितना सहज उपाय है। बाप को याद करो तो पावन बन जायेंगे। चलते फिरते सिर्फ बाप को याद करो, और कोई जरा भी तकलीफ तुमको नहीं देता हूँ। सिर्फ याद करना है। अभी तुम्हारी एक-एक सेकेण्ड में चढती कला होती है।

- चित्रों पर अच्छी रीति समझाना होता है। यह भी ड्रामा अनुसार चित्र आदि सब निकाले हैं। बच्चे समझते हैं जो समय पास होता है, हूबहू ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्थायें भी कभी नीचे, कभी ऊपर होती रहेंगी। बड़ी समझने की बातें हैं। कभी-कभी ग्रहचारी आकर बैठती है तो उनको मिटाने के लिए कितने प्रयत्न करते हैं। बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं– बच्चे, तुम देह-अभिमान में आते हो इसलिए टक्कर होता है। इसमें देही-अभिमानी बनना पड़े। बच्चों मे देह-

अभिमान बहुत है। तुम देही-अभिमानी बनो तो बाप की याद रहेगी और सर्विस में उन्नति करते रहेंगे। ऊंच पद जिनको पाना है वह सदैव सर्विस में लगे रहेंगे। तकदीर में नहीं है तो फिर तदबीर भी नहीं होगी। खुद कहते हैं बाबा हमको धारणा नहीं होती। बुद्धि में नहीं बैठता, जिनको धारणा होती है तो खुशी भी बहुत होती है।

यहाँ तुम बच्चे बैठे हो तुम जानते हो अभी बेहद का बापदादा आया कि आया। यह अवस्था जो तुम्हारी यहाँ रहती है, वह बाहर सेन्टर पर तो रह न सके। यहाँ तुम समझेंगे बापदादा आया कि आया। बाहर सेन्टर पर समझेंगे बाबा की बजाई हुई मुरली आई कि आई। यहाँ और वहाँ में बहुत फ़र्क रहता है क्योंकि यहाँ बेहद के बापदादा के सम्मुख तुम बैठे हो। वहाँ तो सम्मुख नहीं हो। चाहते हैं सम्मुख जाकर मुरली सुनें। यहाँ बच्चों की बुद्धि में आया– बाबा आया कि आया। जैसे और सतसंग होते हैं, वहाँ वो समझेंगे फलाना स्वामी आयेगा। परन्तु यह ख्यालात भी सबकी एकरस नहीं होगी। कइयों का बुद्धियोग तो और तरफ भटकता रहता है। कोई को पति याद आयेगा, कोई को सम्बन्धी याद आयेंगे। बुद्धियोग एक गुरू के साथ भी टिकता नहीं है। कोई बिरला होगा जो स्वामी की याद में बैठा होगा। यहाँ भी ऐसे है। ऐसे नहीं सब शिवबाबा की याद में रहते हैं। बुद्धि कहाँ न कहाँ दौड़ती रहती हैं। मित्र-सम्बन्धी आदि याद आयेंगे। सारा समय एक ही शिवबाबा की याद में रहें फिर तो अहो सौभाग्य। स्थाई याद में कोई विरला रहते हैं। यहाँ बाप के सम्मुख रहने से तो बहुत खुशी होनी चाहिए। अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के गोप गोपियों से पूछो, यह यहाँ का गाया हुआ है। यहाँ तुम बाप की याद में बैठे हो, जानते हो अभी हम ईश्वर की गोद में हैं फिर दैवी गोद में होंगे। भल कोई की बुद्धि में सर्विस के ख्यालात भी चलते हैं। इस चित्र में यह करेक्शन करें, यह लिखें। परन्तु अच्छे बच्चे जो होंगे वह समझेंगे अभी तो बाप से सुनना है। और कोई संकल्प आने नहीं देंगे। बाप ज्ञान रत्नों से झोली भरने आये हैं, तो बाप से ही बुद्धि का योग लगाना है।

अभी तुम बच्चे जानते हो हम बाप के बन चुके हैं। अब बाप की ही मत पर चलना है। भल विलायत में हो, वहाँ रहते भी सिर्फ बाप को याद करना है। तुमको श्रीमत मिलती है। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान सिवाए याद के हो न सके। तुम कहते हो बाबा हम आपसे पूरा वर्सा लेंगे। जैसे हमारे मम्मा बाबा वर्सा लेते हैं, हम भी पुरुषार्थ कर उनकी गद्दी पर जरूर बैठेंगे। मम्मा बाबा, राज-राजेश्वरी बनते हैं तो हम भी बनेंगे। इम्तहान तो सबके लिए एक ही है। तुमको बहुत थोड़ा सिखाया जाता है सिर्फ बाप को याद करो। इसको कहा जाता है सहज राजयोग बल। तुम समझते हो योग से बहुत बल मिलता है। समझते हैं हम कोई विकर्म करेंगे तो सज़ा बहुत खायेंगे। पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे। याद में ही माया विघ्न डालती है, गाया जाता है सतगुरू का निंदक ठौर न पाये।

अभी बाप हमको फरमान करते हैं कि मुझे याद करो। नहीं तो पिछाड़ी में बहुत रोना पड़ेगा। राज-विद्या के इम्तहान में कोई नापास होते हैं तो जाकर डूब मरते हैं गुस्से में। यहाँ गुस्से की तो बात नहीं। पिछाड़ी में तुमको साक्षात्कार बहुत होंगे। क्या-क्या हम बनेंगे वह भी पता पड़ जायेगा। बाप का काम है पुरुषार्थ कराना। बच्चे कहते हैं बाबा हम कर्म करते हुए याद करना भूल जाते हैं, कोई फिर कहते हैं याद करने की फुर्सत नहीं मिलती है, तो बाबा कहेंगे अच्छा समय निकालकर याद में बैठो। बाप को याद करो। आपस में जब मिलते हो तो भी यही कोशिश करो, हम बाबा को याद करें। मिलकर बैठने से तुम याद अच्छा करेंगे, मदद मिलेगी। मूल बात है बाप को याद करना। कोई विलायत जाते हैं, वहाँ भी सिर्फ एक बात याद रखो। बाप की याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। बाप कहते हैं सिर्फ एक बात याद करो– बाप को याद करो। योगबल से सब पाप भस्म हो जायेंगे। बाप कहते हैं मनमनाभव। मुझे याद करो तो विश्व का मालिक बनेंगे। मूल बात हो जाती है याद की। कहाँ भी जाने की बात नहीं। घर में रहो, सिर्फ बाप को याद करो। पवित्र नहीं बनेंगे तो याद नहीं कर सकेंगे। ऐसे थोड़ेही है सब आकर क्लास में पढ़ेंगे। मंत्र लिया फिर भल कहाँ भी चले जाओ। सतोप्रधान बनने का रास्ता

तो बाप ने बतलाया ही है। यूँ तो सेन्टर पर आने से नई-नई प्वाइंट्स सुनते रहेंगे। अगर किसी कारण से नहीं आ सकते हैं, बरसात पड़ती है, करफ्यू लगता है, कोई बाहर नहीं निकल सकते फिर क्या करेंगे? बाप कहते हैं कोई हर्जा नहीं है। ऐसे नहीं है कि शिव के मन्दिर में लोटी चढानी ही पड़ेगी। कहाँ भी रहते तुम याद में रहो। चलते फिरते याद करो, औरों को भी यही कहो कि बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे और देवता बन जायेंगे। अक्षर ही दो हैं– बाप रचता से ही वर्सा लेना है। रचता एक ही है। वह कितना सहज रास्ता बताते हैं। बाप को याद करने का मंत्र मिल गया। बाप कहते हैं यह बचपन भूल नहीं जाना। आज हंसते हो कल रोना पड़ेगा, अगर बाप को भुलाया तो। बाप से वर्सा पूरा लेना चाहिए। ऐसे बहुत हैं, कहते हैं स्वर्ग में तो जायेंगे ना, जो तकदीर में होगा.. उनको कोई पुरुषार्थी नहीं कहेंगे। मनुष्य पुरुषार्थ करते ही हैं ऊंच मर्तबा पाने लिए। अब जबकि बाप से ऊंच मर्तबा मिलता है तो ग़फलत क्यों करनी चाहिए। स्कूल में जो नहीं पढ़ेंगे तो पढ़े के आगे भरी ढोनी पड़ेगी। बाप को पूरा याद नहीं करेंगे तो प्रजा में नौकर-चाकर जाकर बनेंगे, इसमें खुश थोड़ेही होना चाहिए। बच्चे सम्मुख रिफ्रेश होकर जाते हैं। कई बांधेलियाँ हैं, हर्जा नहीं, घर बैठे बाप को याद करती रहो। कितना समझाते हैं मौत सामने खड़ा है, अचानक ही लड़ाई शुरू हो जायेगी। देखने में आता है लड़ाई जैसेकि छिड़ी कि छिड़ी। रेडियों से भी सारा मालूम पड़ जाता है। कहते हैं थोड़ा भी गड़बड़ किया तो हम ऐसा करेंगे। पहले से ही कह देते हैं। बॉम्ब्स की मगरूरी बहुत है। बाप भी कहते हैं बच्चे अजुन योगबल में तो होशियार हुए नहीं हैं। लड़ाई लग जाए, ऐसे ड्रामा अनुसार होगा ही नहीं। बच्चों ने पूरा वर्सा ही नहीं लिया है। अभी पूरी राजधानी स्थापन हुई नहीं है। थोड़ा टाइम चाहिए। पुरुषार्थ कराते रहते हैं। पता नहीं किस समय भी कुछ हो जाये, एरोप्लेन, ट्रेन गिर पड़ती। मौत कितना सहज खड़ा है। धरती हिलती रहती है। सबसे जास्ती काम करना है अर्थक्वेक को। यह हिले तब तो सारे मकान आदि गिरें। मौत होने के पहले बाप से पूरा वर्सा लेना है इसलिए बहुत प्रेम से बाप को याद करना है। बाबा आपके बिगर हमारा दूसरा कोई नहीं। सिर्फ बाप को याद करते रहो। कितना सहज रीति जैसे छोटे-छोटे बच्चों को बैठ समझाते हैं। और कोई तकलीफ

नहीं देता हूँ, सिर्फ याद करो और काम चिता पर बैठ जो तुम जल मरे हो अब ज्ञान चिता पर बैठ पवित्र बनो। तुमसे पूछते हैं आपका उद्देश्य क्या है? बोलो, शिवबाबा जो सबका बाप है वह कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। कलियुग में सब तमोप्रधान हैं। सर्व का सद्गति दाता एक बाप है।

अब बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो तो कट उतर जायेगी। यह इतना पैगाम तो दे सकते हो ना। खुद याद करेंगे तब दूसरे को याद करा सकेंगे। खुद याद करते होंगे तो दूसरे को रूचि से कहेंगे, नहीं तो दिल से नहीं निकलेगा। बाप समझाते हैं कहाँ भी हो जितना हो सके, सिर्फ याद करो। जो मिले उनको यही शिक्षा दो– मौत सामने खड़ा है। बाप कहते हैं तुम सब तमोप्रधान पतित बन पड़े हो। अब मुझे याद करो, पवित्र बनो। आत्मा ही पतित बनी है। सतयुग में होती है पावन आत्मा। बाप कहते हैं याद से ही आत्मा पावन बनेगी, और कोई उपाय नहीं है। यह पैगाम सबको देते जाओ तो भी बहुतों का कल्याण करेंगे और कोई तकलीफ नहीं देते। सब आत्माओं को पावन बनाने वाला पतित-पावन बाप ही है। सबसे उत्तम से उत्तम पुरुष बनाने वाला है बाप। जो पूज्य थे वही फिर पुजारी बने हैं। रावण राज्य में हम पुजारी बने हैं, रामराज्य में पूज्य थे। अब रावण राज्य का अन्त है, हम पुजारी से फिर पूज्य बनते हैं– बाप को याद करने से। औरों को भी रास्ता बताना है, बुढ़ियों को भी सर्विस करनी चाहिए। मित्र-सम्बन्धियों को भी सन्देश दो। सतसंग, मन्दिर आदि भी अनेक प्रकार के हैं। तुम्हारा तो है एक प्रकार। सिर्फ बाप का परिचय देना है। शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम स्वर्ग का मालिक बनेंगे। निराकार शिवबाबा सर्व का सद्गति दाता बाबा आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यह तो सहज है ना समझाना। बुढ़िया भी सर्विस कर सकती हैं। मूल बात ही यह है। शादी मुरादी पर कहाँ भी जाओ, कान में यह बात सुनाओ। गीता का भगवान कहते हैं मुझे याद करो। इस बात को सभी पसन्द करेंगे। जास्ती बोलने की दरकार

ही नहीं है। सिर्फ बाप का पैगाम देना है कि बाप कहते हैं मुझे याद करो। अच्छा, ऐसे समझो भगवान प्रेरणा करते हैं। स्वप्न में साक्षात्कार होते हैं। आवाज़ सुनने में आता है कि बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। तुम खुद भी सिर्फ यह चिंतन करते रहो तो बेड़ा पार हो जायेगा। हम प्रैक्टिकल में बेहद के बाप के बने हैं और बाप से 21 जन्मों का वर्सा ले रहे हैं तो खुशी रहनी चाहिए। बाप को भूलने से ही तकलीफ होती है। बाप कितना सहज बतलाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। सब समझेंगे इन्हों को रास्ता तो बरोबर राइट मिला है। यह रास्ता कभी कोई बता न सके। अगर वह कहें शिवबाबा को याद करो तो फिर साधुओं आदि के पास कौन जायेंगे। समय ऐसा होगा जो तुम घर से बाहर भी नहीं निकल सकेंगे। बाप को याद करते-करते शरीर छोड़ देंगे। अन्तकाल जो शिवबाबा सिमरे...... सो फिर नारायण योनि वल-वल उतरे, लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी में आयेंगे ना। घड़ी-घड़ी राजाई पद पायेंगे। बस सिर्फ बाप को याद करो और प्यार करो। याद बिगर प्यार कैसे करेंगे। सुख मिलता है तब प्यार किया जाता है। दुःख देने वाले को प्यार नहीं किया जाता। बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ इसलिए मुझे प्यार करो। बाप की मत पर चलना चाहिए ना। अच्छा!

भागवत आदि भी 7 दिन रखते हैं। यहाँ भी समझ में आता है– कम से कम 7 दिन के सिवाए कोई समझ नहीं सकेंगे। कोई-कोई तो अच्छा समझ लेते हैं। कोई-कोई तो 7 रोज समझकर भी कुछ नहीं समझते। बुद्धि में बैठता नहीं। कह देते हैं हम तो 7 रोज़ आया। हमारी बुद्धि में कुछ बैठता नहीं। ऊंच पद पाना नहीं होगा तो बुद्धि में बैठेगा नहीं। अच्छा फिर भी उनका कल्याण तो हुआ ना। प्रजा तो ऐसे ही बनती है। बाकी राज्य-भाग्य लेना उसमें तो गुप्त मेहनत है। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होते हैं। अब करो न करो परन्तु बाप का डायरेक्शन यह है। प्यारी वस्तु को तो याद किया जाता है ना। भक्ति मार्ग में भी गाते हैं हे पतित-पावन आओ। अब वह मिला है, कहते हैं मुझे याद करो तो कट उतर जायेगी। बादशाही सहज थोड़ेही मिल सकती।

कुछ तो मेहनत होगी ना। याद में ही मेहनत है। मुख्य है ही याद की यात्रा। बहुत याद करने वाले कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं। पूरा याद न करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। योगबल से ही विकर्माजीत बनना है। आगे भी योगबल से ही विकर्मों को जीता है। लक्ष्मी-नारायण इतने पवित्र कैसे बनें जबकि कलियुग अन्त में कोई भी पवित्र नहीं हैं। इसमें तो साफ है, यह गीता के ज्ञान का एपीसोड रिपीट हो रहा है। शिव भगवानुवाच भूलें तो होती रहती हैं ना। बाप ही आकर अभुल बनाते हैं। भारत के जो भी शास्त्र हैं वो सब हैं भक्ति मार्ग के। बाप कहते हैं मैंने जो कहा था वह किसको भी पता नहीं है। जिन्हों को कहा था उन्होंने पद पाया।

बाप आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। राजयोग है ही सतयुग का। वह देवी-देवता धर्म अब प्रायःलोप है। चित्र भी बने हैं। बाप कहते हैं कल्प पहले मुआफिक जो विघ्न पड़ने होंगे वह पड़ेंगे। पहले थोड़ेही पता पड़ता है। फिर समझा जाता है कल्प पहले ऐसे हुआ होगा। यह बना बनाया ड्रामा है। ड्रामा में हम बांधे हुए हैं। याद की यात्रा को भूल नहीं जाना चाहिए, इनको परीक्षा कहा जाता है। याद की यात्रा में ठहर नहीं सकते हैं, थक जाते हैं। गीत है ना– रात के राही...... इसका अर्थ कोई समझ न सके। यह है याद की यात्रा। जिससे रात पूरी हो दिन आ जायेगा। आधाकल्प पूरा हो फिर सुख शुरू होगा। बाप ने ही मनमनाभव का अर्थ भी समझाया है। सिर्फ गीता में कृष्ण का नाम डालने से वह ताकत नहीं रही है। अब कल्याण तो सबका होना है। गोया हम सब मनुष्य मात्र का कल्याण कर रहे हैं। भारत खास और दुनिया आम। सबका श्रीमत पर हम कल्याण कर रहे हैं। कल्याणकारी जो बनेंगे तो वर्सा भी उनको मिलेगा। याद की यात्रा के सिवाए कल्याण हो न सके।

कृष्ण का डांस करना, मुरली बजाना– वह सब भक्ति मार्ग का है। बाकी ज्ञान की मुरली तो शिवबाबा ही बजाते हैं। तुम्हारे पास अच्छे-अच्छे गीत बनाने वाले आयेंगे। गीत अक्सर करके पुरूष ही बनाते हैं। तुमको ज्ञान के गीत ही गाने चाहिए जिससे शिवबाबा की याद आये। बाप

कहते हैं मुझ अल्फ को याद करो। शिव को कहते हैं बिन्दु। व्यापारी लोग बिन्दु लिखेंगे तो कहेंगे शिव। एक के आगे बिन्दु लिखो तो 10 हो जायेगा फिर बिन्दु लिखो तो 100 हो जाता। फिर बिन्दी लिखो तो 1000 हो जायेगा। तो तुमको भी शिव को याद करना है। जितना शिव को याद करेंगे बिन्दी-बिन्दी लगती जायेगी। तुम आधाकल्प के लिए साहूकार बन जाते हो। वहाँ गरीब होता ही नहीं। सब सुखी रहते हैं। दु:ख का नाम नहीं। बाप की याद से विकर्म विनाश होते जायेंगे। तुम बहुत धनवान बनेंगे। इसको कहा जाता है सच्चे बाप द्वारा सच्ची कमाई। यही साथ चलेगी। मनुष्य सब खाली हाथ जाते हैं। तुमको भरतू हाथ जाना है। बाप को याद करना है। बाप ने समझाया है प्योरिटी होगी तो पीस, प्रासपर्टी मिलेगी। तुम आत्मा पहले प्योर थी फिर इमप्योर बनी हो।

बाप कहते हैं भल तुम बच्चे अपनी सर्विस भी करते रहो सिर्फ एक बात याद रखो– बाप को याद करो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का रास्ता और कोई बता नहीं सकता। सर्व का रूहानी सर्जन एक ही है। वही आकर आत्माओं को इन्जेक्शन लगाते हैं क्योंकि आत्मा ही तमोप्रधान बनी है। बाप को अविनाशी सर्जन कहा जाता है। अभी आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनी है, इनको इन्जेक्शन चाहिए। बाप कहते हैं– बच्चे, अपने को आत्मा निश्चय करो और अपने बाप को याद करो। बुद्धियोग ऊपर में लगाओ। जीते जी फाँसी पर लटक जाओ अर्थात् बुद्धियोग स्वीट होम में लगाओ। हमको स्वीट साइलेन्स होम में जाना है। निर्वाणधाम को स्वीट होम कहा जाता है।

माया बड़ी प्रबल है, तुमको रजिस्टर रखने नहीं देती है। माया के फँदे में तो पूरे फँसे हुए हो। माया की जेल से तुम निकल नहीं सकते हो। सच बताते नहीं हो। तो बाप कहते हैं एक्यूरेट याद का चार्ट रखो। सुबह को उठ बाबा को याद करो। बाप की ही महिमा करो। बाबा, आप हमको

विश्व का मालिक बनाते हो तो हम आपकी महिमा करेंगे। भक्ति मार्ग में कितनी महिमा गाते हैं, उनको तो कुछ भी पता नहीं। देवताओं की महिमा है नहीं। महिमा है तुम ब्राह्मणों की। सबको सद्गति देने वाला भी एक बाप है। वह क्रियेटर भी है, डायरेक्टर भी है। सर्विस भी करते हैं और बच्चों को समझाते भी हैं। इस सीढ़ी का राज सिवाए बाप के कोई समझा न सके। शिवबाबा ही ब्रह्मा द्वारा समझाते हैं। यह भी इनसे समझकर फिर तुमको समझाते हैं। मूल बड़ा टीचर, बड़ा सर्जन तो बाप ही है। उनको ही याद करना है। ऐसे नहीं कहते कि ब्राह्मणी को याद करो। याद तो एक की रखनी है। कभी भी किसी के साथ मोह नहीं रखना है। एक बाप से ही शिक्षा लेनी है। निर्मोही भी बनना है। इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य। यह तो खत्म हुई पड़ी है। इसमें लव वा आसक्ति कुछ भी नहीं। कितने बड़े-बड़े मकान आदि बनाते रहते हैं। उन्हों को यह भी पता नहीं कि यह पुरानी दुनिया बाकी कितना समय है। तुम बच्चे अब जगे हो औरों को भी जगाते हो। बाप आत्माओं को ही जगाते हैं, घड़ी-घड़ी कहते हैं अपने को आत्मा समझो। शरीर समझते हो तो जैसे सोये पड़े हो। अपने को आत्मा समझो और बाप को भी याद करो। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित मिलता है। आत्मा पावन तो शरीर भी पावन मिलता है। बाप समझाते हैं तुम ही इस देवी-देवता घराने के थे। फिर तुम ही बन जायेंगे। कितना सहज है। ऐसे बेहद के बाप को हम क्यों नहीं याद करेंगे। सुबह उठकर भी बाप को याद करो। बाबा आपकी तो कमाल है, आप हमको कितना ऊंच देवीदेवता बनाकर फिर निर्वाणधाम में बैठ जाते हो। इतना ऊंच तो कोई बना न सके। आप कितना सहज कर बतलाते हो। बाप कहते हैं-जितना टाइम मिले, कामकाज करते हुए भी बाप को याद कर सकते हो। याद ही तुम्हारा बेड़ा पार करने वाली है अर्थात् कलियुग से उस पार शिवालय में ले जाने वाली है। शिवालय को भी याद करना है, शिवबाबा का स्थापन किया हुआ स्वर्ग-तो दोनों की याद आती है। शिवबाबा को याद करने से हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह पढ़ाई है ही नई दुनिया के लिए। बाप भी नई दुनिया स्थापन करने आते हैं। जरूर बाप आकर कोई तो कर्तव्य करेंगे ना। तुम देखते भी हो मैं पार्ट बजा रहा हूँ, ड्रामा के प्लैन अनुसार। तुम बच्चों को 5 हजार वर्ष पहले

वाली याद की यात्रा और आदि-मध्य-अन्त का राज बताता हूँ। तुम जानते हो हर 5 हजार वर्ष के बाद बाबा हमारे सम्मुख आता है। आत्मा ही बोलती है, शरीर नहीं बोलेगा। बाप बच्चों को शिक्षा देते हैं-आत्मा को ही प्योर बनाना है। आत्मा को एक बार ही प्योर होना होता है। बाबा कहते हैं मैंने अनेक बार तुमको पढ़ाया फिर भी पढ़ाऊंगा। ऐसे कोई सन्यासी कह न सके। बाप ही कहते हैं-बच्चे, मैं ड्रामा के प्लैन अनुसार पढ़ाने आया हूँ।

बच्चे जानते हैं पुरानी दुनिया खत्म होनी ही है। फिर हम अपने घर चले जायेंगे। अभी 84 का चक्र पूरा हुआ है। सब इकट्ठे चले जायेंगे। तुम्हारे में भी थोड़े हैं जिनको घड़ी-घड़ी याद रहती है। ड्रामा अनुसार चुस्त और सुस्त दोनों ही प्रकार के स्टूडेंट हैं। चुस्त स्टूडेंट अच्छी मार्क्स से पास हो जाते हैं। सुस्त जो होगा उनका तो सारा दिन लड़ना-झगड़ना ही होता रहता है। बाप को याद नहीं करते। सारा दिन मित्र-सम्बन्धी ही बहुत याद आते रहते हैं। यहाँ तो सब कुछ भूल जाना होता है। हम आत्मा हैं, यह शरीर रूपी दुम लटका हुआ है। हम कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे फिर यह दुम छूट जायेगा। यही फिक्र है, कर्मातीत अवस्था हो जाये तो यह शरीर खत्म हो जाये। हम श्याम से सुन्दर बन जाये। मेहनत तो करनी है ना

ज्ञान तो बच्चों में है। समझाना है सतयुग था, अब कलियुग पुरानी दुनिया है। गीत में भी कहते हैं पुरानी दुनिया में कोई सार नहीं है, इनसे दिल नहीं लगानी है। नहीं तो सजा मिल जायेगी। बाप की याद से सजायें कटती जायेंगी। ऐसा न हो बाप की याद टूट जाये फिर सजा खानी पड़े और पुरानी दुनिया में चले जायें। ऐसे तो ढेर गये हैं, जिनको बाप याद भी नहीं है। पुरानी दुनिया से दिल लग गई, जमाना बहुत खराब है। कोई से दिल लगाई तो सजा बहुत मिलेगी। बच्चों को ज्ञान सुनना है। भक्ति मार्ग के गीत भी नहीं सुनने हैं। अभी तुम हो संगम पर। माया छोड़ती कोई को भी नहीं है। देह- अभिमान के बाद ही कोई न कोई भूल होती है। कोई सेमी काम वश

हो जाते हैं, कोई क्रोध वश। मन्सा में तूफान बहुत आते हैं - प्यार करें, ये करें..... । कोई के शरीर से दिल नहीं लगानी है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो तो शरीर का भान न रहे। नहीं तो बाप की आज्ञा का उल्लंघन हो जाता है। देह- अहंकार से नुकसान बहुत होता है इसलिए देह सहित सब-कुछ भूल जाना है। सिर्फ बाप को और घर को याद करना है। आत्माओं को बाप समझाते हैं, शरीर से काम करते मुझे याद करो तो विकर्म भस्म हो जायेंगे। रास्ता तो बहुत सहज है। यह भी समझते हैं तुमसे भूलें होती रहती हैं। परन्तु ऐसा न हो- भूलों में फँसते ही जाओ। एक बारी भूल हुई फिर वह भूल नहीं करनी चाहिए। अपना कान पकड़ना चाहिए, फिर यह भूल नहीं होगी। पुरुषार्थ करना चाहिए। अगर घड़ी- घड़ी भूल होती है तो समझना चाहिए हमारा बहुत नुकसान होगा। भूल करते-करते तो दुर्गति को पाया है ना। कितनी बड़ी सीढ़ी उतरकर क्या बने हैं! आगे तो यह ज्ञान नहीं था। अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ज्ञान में सब प्रवीण हो गये हैं। जितना हो सके अनुर्मखी भी रहना है, मुख से कुछ कहना नहीं है। जो ज्ञान में प्रवीण बच्चे हैं, वह कभी पुरानी दुनिया से दिल नहीं लगायेंगे। उनकी बुद्धि में रहेगा हम तो रावण राज्य का विनाश करना चाहते है। यह शरीर भी पुराना रावण सम्प्रदाय का है तो हम रावण सम्प्रदाय को क्यों याद करें? एक राम को याद करें। सच्चे पिताव्रता बने ना।

जीते जी बलि चढ़ना, वारी जाना वास्तव में अभी की बात है। भक्ति मार्ग में वह फिर कितना जीवघात आदि करते हैं। यहाँ जीवघात की बात नहीं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो, बाप से योग लगाओ, देह- अभिमान में नहीं आओ। उठते-बैठते बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना है। 100 परसेन्ट पास तो कोई हुआ नहीं है। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। भूलें होती हैं, उस पर सावधानी नहीं मिलेगी तो भूलें छोड़ेंगे कैसे? माया किसको भी छोड़ती नहीं है। कहते हैं बाबा हम माया से हार जाते हैं, पुरुषार्थ करते भी हैं फिर पता नहीं क्या होता है। हमसे इतनी कड़ी भूलें पता नहीं कैसे हो जाती हैं। समझते भी हैं ब्राह्मण कुल में इससे हमारा नाम बदनाम

होता है। फिर भी माया का ऐसा वार होता है जो समझ में नहीं आता। देह- अभिमान में आने से जैसे बेसमझ बन जाते हैं। बेसमझी के काम होते हैं तो ग्लानि भी होती, वर्सा भी कम हो जाता। ऐसे बहुत भूलें करते हैं। माया ऐसा जोर से थप्पड़ लगा देती है जो खुद तो हार खाते हैं और फिर गुस्से में आकर किसको थपड़ वा जूता आदि मारने लग पड़ते हैं फिर पश्चाताप भी करते हैं। बाबा कहते हैं कि अब तो बहुत मेहनत करनी पड़े। अपना भी नुकसान किया तो दूसरे का भी नुकसान किया, कितना घाटा हो गया। राहू का ग्रहण बैठ गया। अब बाप कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। राहू का ग्रहण बैठता है तो फिर वह टाइम लेता है। सीढ़ी चढ़कर फिर उतरना मुश्किल होता है। मनुष्य को शराब की आदत पडती है तो फिर वह छोड़ने में कितनी मुश्किलात होती है। सबसे बड़ी भूल है - काला मुंह करना। घड़ी-घड़ी शरीर याद आता है। फिर बच्चे आदि होते हैं तो उनकी ही याद बनी रहती है। वह फिर दूसरों को ज्ञान क्या देंगे। उनका कोई सुनेंगे भी नहीं। हम तो अभी सबको भूलने की कोशिश कर एक को याद करते हैं। इसमें सम्भाल बहुत करनी पड़ती है। माया बड़ी तीखी है। सारा दिन शिवबाबा को याद करने का ही ख्याल रहना चाहिए। अब नाटक पूरा होता है, हमको जाना है। यह शरीर भी खत्म हो जाना है। जितना बाप को याद करेंगे तो देह- अभिमान टूटता जायेगा और कोई की भी याद नहीं होगी। कितनी बड़ी मंजिल है, सिवाए एक बाप के और कोई के साथ दिल नहीं लगानी है। नहीं तो जरूर वह सामने आयेंगे। वैर जरूर लेंगे। बहुत ऊँची मंजिल है। कहना तो बड़ा सहज है, लाखों में कोई एक दाना निकलता है। कोई स्कॉलरशिप भी लेते हैं ना। जो अच्छी मेहनत करेंगे, जरूर स्कॉलरशिप लेंगे। साक्षी हो देखना है, कैसे सर्विस करता हूँ? बहुत बच्चे चाहते हैं जिस्मानी सर्विस छोड़ इसमें लग जावें। परन्तु बाबा सरकमस्टांश भी देखते हैं। अकेला है, कोई सम्बन्धी नहीं है तो हर्जा नहीं। फिर भी कहते हैं नौकरी भी करो और यह सेवा भी करो। नौकरी में भी बहुतों के साथ मुलाकात होगी।

बाप और वर्से को याद करो तो स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। शिव जयन्ती मनाते हैं। परन्तु शिवबाबा ने क्या किया? जरूर स्वर्ग का वर्सा दिया होगा। उसको 5 हजार वर्ष हुए। स्वर्ग से नर्क, नर्क से स्वर्ग बनेगा।बाप समझाते हैं-बच्चे, योगयुक्त बनो तो तुम्हें हर बात अच्छी तरह समझ में आयेगी। परनु योग ठीक नहीं है, बाप की याद नहीं रहती तो कुछ समझ नहीं सकते। विकर्म भी विनाश नहीं हो पाते। योगयुक्त न होने से इतनी सद्गति भी नहीं होती हैं, पाप रह जाते हैं। फिर पद भी कम हो जाता है। बहुत हैं, योग कुछ भी नहीं है, नाम-रूप में फँसे रहते हैं, उनकी ही याद आती रहेगी तो विकर्म विनाश कैसे होंगे? बाप कहते हैं देही- अभिमानी बनो।

हम आत्माओं का बाप है परमात्मा। वह तुम आत्माओं को कहते हैं मामेकम याद करो तो विकर्म विनाश हो। यह है मुख्य बात। डल बुद्धि वाले बड़ी बातें समझ न सके। इसलिए गीता में भी है-मन्मनाभव। सभी लिखते हैं-बाबा, याद की यात्रा बहुत डिफीकल्ट है। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। कोई न कोई प्याइंट पर हारते हैं। यह बॉक्सिंग है-माया और ईश्वर के बच्चों की। इसका किसको भी पता नहीं है। बाबा ने समझाया है-माया पर जीत पाकर कर्मातीत अवस्था में जाना है। पहले-पहले तुम आये हो कर्म सम्बन्ध में। उसमें आते- आते फिर आधाकल्प बाद तुम कर्म बन्धन में आ गये हो। पहले-पहले तुम पवित्र आत्मा थी। कर्मबन्धन न सुख का, न दु :ख का था, फिर सुख के संबंध में आये। यह भी अभी तुम समझते हो-हम सम्बन्ध में थे, अभी दु :ख में हैं फिर जरूर सुख में होंगे। नई दुनिया जब थी तो मालिक थे, पवित्र थे, अभी पुरानी दुनिया में पतित हो पड़े हैं। फिर हम सो देवता बनते हैं, तो यह याद करना पड़े ना।

- इस समय बाप समझाते हैं, आत्मा के पंख टूटे हुए हैं तो उड़ नहीं सकती। बाप आकर ज्ञान और योग के पंख देते हैं। योगबल से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे, पुण्य आत्मा बन जायेंगे। पहले-पहले तो मेहनत भी करनी चाहिए, इसलिए बाप कहते हैं मामेकम याद करो, चार्ट रखो। जिनका चार्ट अच्छा होगा, वह लिखेंगे और उनको खुशी होगी। अभी सभी मेहनत करते हैं, चार्ट नहीं लिखते तो योग का जौहर नहीं भरता। चार्ट लिखने में फायदा है बहुत। चार्ट के साथ प्याइंटस भी चाहिए। चार्ट में तो दोनों लिखेंगे-सर्विस कितनी की और याद कितना किया? पुरूषार्थ ऐसा करना है जो पिछाड़ी में कोई भी चीज़ याद न आये। अपने को आत्मा समझ पुण्य आत्मा बन जायें-यह मेहनत करनी है।

- यह है ज्ञान की सैक्रीन। सैक्रीन की एक बूंद भी कितनी मीठी होती है। ज्ञान का एक ही अक्षर है मन्मनाभव। यह अक्षर कितना मीठा है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप शान्तिधाम और सुखधाम का रास्ता बता रहे हैं। बाप आये हैं बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देने। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। कहते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। जो सदैव खुश-मौज में रहते हैं उनके लिए यह जैसे खुराक होती है। 21 जन्म मौज में रहने की यह जबरदस्त खुराक है। यह खुराक सदैव एक दो को खिलाते रहो। यह है एक दो की जबरदस्त खातिरी। ऐसी खातिरी और कोई मनुष्य, मनुष्य की कर न सके।

- बेहद के बापदादा दोनों का मीठे-मीठे बच्चों में बहुत रूहानी लव है। बच्चों को कितना लव से पढ़ाते हैं और क्या से क्या बनाते हैं! तो बच्चों को कितना खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। खुशी का पारा तब चढ़ेगा जब बाप को निरन्तर याद करते रहेंगे। बाप कल्प-कल्प बहुत प्यार से बच्चों को पावन बनाने की सेवा करते हैं। 5 तत्वों सहित सबको पावन बनाते हैं। कौड़ी से हीरे जैसा बनाते हैं। कितनी बड़ी बेहद की सेवा है। बाप बच्चों को बहुत प्यार से शिक्षा भी

देते रहते हैं क्योंकि बच्चों को सुधारना बाप वा टीचर का ही काम है। बाप की श्रीमत से ही तुम श्रेष्ठ बनते हो। यह भी बच्चों को चार्ट में देखना चाहिए कि हम श्रीमत पर चलते हैं वा अपनी मनमत पर? श्रीमत से ही तुम एक्यूरेट बनेंगे। जितनी बाप से प्रीत बुद्धि होगी उतनी गुप्त खुशी से भरपूर रहेंगे। अपनी दिल से पूछना है हमको इतनी कापारी खुशी है? अव्यभिचारी याद है? कोई तमन्ना तो नहीं है? एक बाप की याद है? स्वदर्शन चक्र फिरता रहे तब प्राण तन से निकले। एक शिवबाबा दूसरा न कोई। यही अन्तिम मन्त्र है।

- दिन-प्रतिदिन जितनी आफतें आती रहेंगी तो मनुष्यों को भी वैराग्य आयेगा और बाप को याद करने लग पड़ेंगे-हम आत्मा अविनाशी हैं, अपने अविनाशी बाप को याद करें। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप उतर जाये। अपने को आत्मा समझ और बाप से पूरा लव रखना है। देह- अभिमान में न आओ। हाँ, बाहर का प्यार भल बच्चों आदि से रखो। परन्तु आत्मा का सच्चा प्यार रूहानी बाप से हो। उनकी याद से ही विकर्म विनाश होंगे। मित्र-सम्बन्धियों, बच्चों आदि को देखते हुए भी बुद्धि बाप की याद में लटकी रहे। तुम बच्चे जैसे याद की फाँसी पर लटके हुए हो। आत्मा को अपने बाप परमात्मा को ही याद करना हैं। बुद्धि ऊपर लटकी रहे। बाप का घर भी ऊपर हैं ना। मूलवतन, सूक्ष्मवतन और यह हैं स्थूलवतन। अब फिर वापिस जाना हैं।

- बाप कहते हैं तुम स्वर्ग में सुखी बन जाते हो तो मैं विश्राम में बैठ जाता हूँ। हमारा कोई पार्ट नहीं। इस समय इतनी सर्विस करता हूँ ना। यह नॉलेज इतनी वन्डरफुल है, तुम्हारे सिवाए जरा भी कोई नहीं जानते हैं। बाप की याद में रहने बिगर धारणा भी नहीं होगी। खान-पान आदि का भी फर्क पड़ने से धारणा में फर्क पड़ जाता है, इसमें प्योरिटी बड़ी अच्छी चाहिए। बाप को याद करना बहुत सहज है। बाप को याद करना है और वर्सा पाना है इसलिए बाबा ने कहा था

तुम अपने पास भी चित्र रख दो । योग का और वर्से का चित्र बनाओ तो नशा रहेगा । हम ब्राह्मण सो देवता बन रहे हैं । फिर हम देवता सो क्षत्रिय बनेंगे । ब्राह्मण हैं पुरुषोत्तम संगमयुगी । तुम पुरुषोत्तम बनते हो ना । मनुष्यों को यह बातें बुद्धि में बिठाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है । दिन-प्रतिदिन जितना नॉलेज को समझते जाते हैं तो खुशी भी बढ़ेगी ।

यह ड्रामा कैसा वन्डरफुल बना हुआ है यह भी तुम अभी समझाते हो । यह पुरुषोत्तम संगमयुग है इतना सिर्फ याद रहे तो भी पक्का हो जाता है कि हम सतयुग में जाने वाले हैं । अभी संगम पर है फिर जाना है अपने घर इसलिए पावन तो जरूर बनना है । अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए । ओहो! बेहद का बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बनेंगे । विश्व का मालिक बनेंगे । बाप कितना बच्चों को प्यार करते हैं । ऐसे नहीं कि सिर्फ टीचर के रूप में पढ़ाकर और घर चले जाते हैं । यह तो बाप भी टीचर भी है । तुमको पढ़ाते भी हैं । याद की यात्रा भी सिखलाते हैं ।

मीठे बच्चों को यह पक्का याद रखना है, शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं । शिवबाबा पतित-पावन भी है । सद्गति दाता भी है । सद्गति माना स्वर्ग की राजाई देते हैं । बाबा कितना मीठा है । कितना प्यार से बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं । बाप, दादा द्वारा हमको पढ़ाते हैं । बाबा कितना मीठा है । कितना प्यार करते हैं । कोई तकलीफ नहीं देते । सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो और चक्र को याद करो । बाप की याद में दिल एकदम ठर जानी चाहिए । एक बाप की ही याद सतानी चाहिए क्योंकि बाप से वर्सा कितना भारी मिलता है । अपने को देखना चाहिए हमारा बाप के साथ कितना लव है? कहाँ तक हमारे में दैवीगुण हैं! क्योंकि तुम बच्चे अब कांटों से फूल बन रहे हो । जितना-जितना योग में रहेंगे उतना कांटों से फूल, सतोप्रधान बनते जायेंगे । फूल बन गये फिर यहाँ रह नहीं सकेंगे । फूलों का बगीचा है ही स्वर्ग । जो बहुत कांटों को फूल बनाते हैं उन्हें ही

सच्चा खुशबूदार फूल कहेंगे। कभी किसको काँटा नहीं लगायेंगे। क्रोध भी बड़ा काँटा है, बहुतों को दुःख देते हैं।

मीठे बच्चे जानते हैं पारलौकिक बाप से हमको अविनाशी वर्सा मिलता है। जो सच्चे-सच्चे बच्चे हैं, जिनका बापदादा से पूरा लव है उनको बड़ी खुशी रहेगी। हम विश्व का मालिक बनते हैं। हाँ पुरुषार्थ से ही विश्व का मालिक बना जाता है, सिर्फ कहने से नहीं। जो अनन्य बच्चे हैं उन्हों को सदैव यह याद रहेगा कि हम अपने लिए फिर से वही सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चे जितना तुम बहुतों का कल्याण करेंगे उतना ही तुमको उजूरा मिलेगा। बहुतों को रास्ता बतायेंगे तो बहुतों की आशीर्वाद मिलेगी। ज्ञान रत्नों से झोली भरकर फिर दान करना है। ज्ञान सागर तुमको रत्नों की थालियाँ भर- भर कर देते हैं। जो फिर दान करते हैं वही सबको प्यारे लगते हैं। बच्चों के अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। सेन्सीबुल बच्चे जो होंगे वह तो कहेंगे हम बाबा से पूरा ही वर्सा लेंगे, एकदम चटक पड़ेंगे। बाप से बहुत लव रहेगा क्योंकि जानते हैं प्राण देने वाला बाप मिला है। नॉलेज का वरदान ऐसा देते हैं जिससे हम क्या से क्या बन जाते हैं। इनसालवेट से सालवेन्ट बन जाते हैं, इतना भण्डारा भरपूर कर देते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना लव रहेगा, कशिश होगी। सुई साफ होती है तो चकमक (चुम्बक) तरफ खैच जाती है ना। बाप की याद से कट निकलती जायेगी। एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये। जैसे स्त्री का पति के साथ कितना लव होता है। तुम्हारी भी सगाई हुई है ना। सगाई की खुशी कम होती है क्या? शिवबाबा कहते हैं मीठे बच्चे तुम्हारी हमारे साथ सगाई है, ब्रह्मा के साथ सगाई नहीं है। सगाई पक्की हो गई फिर तो उनकी ही याद सतानी चाहिए |

मीठे-मीठे बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं जब कोई सभा में भाषण करते हो वा किसको समझाते हो तो घड़ी-घड़ी बोलो अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो। इस याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम पावन बन जायेंगे। घड़ी-घड़ी यह याद करना है। परन्तु यह भी तुम तभी कह सकेंगे जब खुद याद में होंगे। इस बात की बच्चों में बहुत कमजोरी है। अन्दरूनी तुम बच्चों को खुशी होगी, याद में रहेंगे तब दूसरों को समझाने का असर होगा। तुम्हारा बोलना जास्ती नहीं होना चाहिए। आत्म- अभिमानी हो थोड़ा भी समझायेंगे तो तीर भी लगेगा। बाप कहते हैं बच्चे बीती सो बीती। अब पहले अपने को सुधारो। खुद याद करेंगे नहीं, दूसरों को कहते रहेंगे, यह ठगी चल न सके। अन्दर दिल जरूर खाती होगी। बाप के साथ पूरा लव नहीं है तो श्रीमत पर चलते नहीं हैं। बेहद के बाप जैसी शिक्षा तो और कोई दे न सके। बाप कहते हैं मीठे बच्चे इस पुरानी दुनिया को अब भूल जाओ। पिछाड़ी में तो यह सब भूल ही जाना है। बुद्धि लग जाती है अपने शान्तिधाम और सुखधाम में। बाप को याद करते-करते बाप के पास चले जाना है। पतित आत्मा तो जा न सके। वह है ही पावन आत्माओं का घर। यह शरीर 5 तत्वों से बना हुआ है।

इस दुनिया में अपना बैग बैगेज तैयार कर पहले से ही भेज दिया है। साथ में तो चल न सके। बाकी आत्माओं को जाना है। शरीर को भी यहाँ छोड़ दिया है। बाबा ने नये शरीर का साक्षात्कार करा दिया है। हीरे जवाहरों के महल मिल जायेंगे। ऐसे सुखधाम में जाने लिए कितनी मेहनत करनी चाहिए। थकना नहीं चाहिए। दिनरात बहुत कमाई करनी है इसलिए बाबा कहते हैं नींद को जीतने वाले बच्चे मामेकम् याद करो और विचार सागर मंथन करो। ड्रामा के राज को बुद्धि में रखने से बुद्धि एकदम शीतल हो जाती है। जो महारथी बच्चे होंगे वह कब हिलेंगे नहीं। शिवबाबा को याद करेंगे तो वह सम्भाल भी करेंगे।

बाप तुम बच्चों को दुःख से छुड़ाकर शान्ति का दान देते हैं। तुमको भी शान्ति का दान देना है। तुम्हारी यह बेहद की शान्ति अर्थात् योगबल दूसरो को भी एकदम शान्त कर देगे। झट मालूम पड़ जायेगा, यह हमारे घर का है वा नहीं। आत्मा को झट कशिश होगी यह हमारा बाबा है। नब्ज भी देखनी होती है। बाप की याद में रह फिर देखो यह आत्मा हमारे कुल की है। अगर होगी तो एकदम शान्त हो जायेगी। जो इस कुल के होंगे उन्हों को ही इन बातों में रस बैठेगा। बच्चे याद करते हैं तो बाप भी प्यार करते हैं। आत्मा को प्यार किया जाता है। यह भी जानते हैं जिन्होंने बहुत भक्ति की है वह ही जास्ती पढ़ेंगे। उनके चेहरे से मालूम पड़ता जायेगा कि बाप में कितना लव है। आत्मा बाप को देखती है। बाप हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। बाप भी समझते हैं हम इतनी छोटी बिन्दी आत्मा को पढ़ाता हूँ। आगे चल तुम्हारी यह अवस्था हो जायेगी। समझेंगे हम भाई- भाई को पढ़ाते हैं। शक्ल बहन की होते भी दृष्टि आत्मा तरफ जाए। शरीर पर दृष्टि बिल्कुल न जाये, इसमें बड़ी मेहनत है। यह बड़ी महीन बातें हैं। बड़ी ऊँच पढ़ाई है। वजन करो तो इस पढ़ाई का तरफ बहुत भारी हो जायेगा।

जो बाप को पूरा याद नहीं करते हैं उनसे अवगुण निकलते नहीं हैं। अपने को आत्मा निश्चय नहीं करते हैं। मनुष्य तो न आत्मा को, न परमात्मा को जानते हैं। सर्वव्यापी का ज्ञान भी भारतवासियों ने फैलाया है। तुम्हारे में भी जो सर्विसएबुल बच्चे हैं वह समझते हैं, बाकी सब इतना नहीं समझते हैं। अगर बाप की पूरी पहचान बच्चों को हो तो बाप को याद करें, अपने में दैवीगुण धारण करें।

हर एक चित्र पर शिव भगवानुवाच लिखा हुआ हो। इससे घड़ी-घड़ी शिवबाबा याद आयेगा। ज्ञान भी देते रहेंगे। म्युजियम अथवा प्रदर्शनी की सर्विस में ज्ञान और योग दोनों इकट्ठे चलते हैं। याद में रहने से नशा चढ़ेगा। तुम पावन बन सारे विश्व को पावन बनाते हो। जब तुम पावन

बनते हो तो जरूर सृष्टि भी पावन चाहिए। पिछाड़ी में कयामत का समय होने के कारण सबका हिसाब-किताब चुक्तू हो जाता है। तुम्हारे लिए हमको नई सृष्टि का उद्घाटन करना पड़ता है। फिर ब्रान्चेज खोलते रहते हैं। पवित्र बनाने के लिए नई दुनिया सतयुग का फाउन्डेशन तो बाप बिगर कोई डाल न सके। तो ऐसे बाप को याद भी करना चाहिए।

बाबा समझाते हैं भल किचन (भण्डारे) में काम करते हैं, यह मैडल लगा रहे। कोई को भी समझाते रहें-यह बाबा है, बाबा-बाबा कहने से बुद्धियोग जुड़ जायेगा। जो खुद याद में होंगे वह औरों को भी बाप की याद दिलाते रहेंगे। बाप तो तदबीर कराते हैं परन्तु तकदीर में नहीं है तो ध्यान ही नहीं देते हैं। धारणा तो होनी चाहिए ना। अलफ और बे याद करना है। हमारा बाबा आकर स्वर्ग स्थापन करते हैं। रावण नर्क स्थापन करते हैं।

तुम बच्चे एक-दो को शिवबाबा की याद दिलाते रहो - यह सबसे बड़ी सेवा है, इससे पतित से पावन बन जायेंगे। और कोई उपाय नहीं सिवाए याद के। पतित-पावन शिवबाबा मूलवतन में रहते हैं, वह निराकारी शिवपुरी हो गई, जहाँ आत्माएं रहती हैं। पढ़ाई में तो 3 रोज में होशियार हो जायेंगे। परन्तु पतित से पावन होने में मेहनत है। याद से ही पाप कटने हैं। बाप को याद करना है-इसमें ही माया विघ्न डालती है। तूफान आया, यह गिरा। काम तो महाशत्रु है। एकदम हडगुड टूट पड़ते हैं। फिर खड़ा होने में 2 - 3 वर्ष चाहिए। तो भी इतना नहीं उठ सकते। बड़ा भारी दण्ड पड़ जाता है। एकदम चकनाचूर हो जाते हैं फिर ऊँच पद पा न सकें। इसमें दूसरों को समझाने वाले अगर गिरते हैं तो सत्यानाश हो जाती है। राहू की दशा बैठ जाती है। ऊपर से जोर से मनुष्य गिरते हैं तो फिर बचने की उम्मींद नहीं रहती है, या तो लूला-लंगड़ा बन जाते हैं या तो खत्म हो जाते हैं। तो विकार में गिरने वाले की भी यह हालत हो जाती है। बाप कहते हैं यह क्या, मैं आया हूँ पावन बनाने, तुम फिर यह धन्धा करते हो! बड़ी जबरदस्त चोट खाते

हैं। भल ज्ञान सुनाते रहते परन्तु वह दर्जा नहीं मिल सकता। अन्दर खाता रहेगा-मैंने बड़ी भारी अवज्ञा की है। यह है बड़े ते बड़ी अवज्ञा। काम विकार में गिरने का बड़ा दण्ड मिल जाता है। घर में अगर बच्चा गंदा काम करता है तो फिर सारी आयु भी वह असर पड़ जाता है। मरने समय भी पाप याद आता रहेगा। बच्चों को देह- अभिमान में आकर कोई भी उल्टा कार्य नहीं करना चाहिए। बहुत गन्दे काम करते रहते हैं। न बतलाने से और ही सौ गुणा हो जाता है, विकर्मों की वृद्धि होती जाती है।

तुम मीठे-मीठे बच्चे सारे ड्रामा को जान गये हो। बाबा ने कितना सहज रीति बताया है कि यह अनादि, अविनाशी ड्रामा है। इसमें जीतते हैं और फिर हारते हैं। अब चक्र पूरा हुआ, हमको अब घर जाना है। बाप का फरमान मिला है मुझ बाप को याद करो। यह ड्रामा की नॉलेज एक ही बाप देते हैं। नाटक कभी लाखों वर्ष का थोड़ेही होता है। कोई को याद भी न रहे। 5 हजार वर्ष का चक्र है जो सारा तुम्हारी बुद्धि में है। कितना अच्छा हार और जीत का खेल है। सवेरे उठकर ऐसे-ऐसे ख्याल चलने चाहिए। हमको बाबा रावण पर जीत पहनाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें सवेरे-सवेरे उठ अपने साथ करनी चाहिए तो आदत पड़ जायेगी। इस बेहद के नाटक को कोई नहीं जानते हैं। एक्टर होकर आदि-मध्य- अन्त को नहीं जानते हैं। अभी हम बाबा द्वारा लायक बन रहे हैं।

भगवान तुमको पढ़ा रहे हैं, तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। भगवान पढ़ाकर हमको भगवान भगवती बनाते हैं, ओहो! ऐसे बाप को जितना याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे। ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करने की आदत डालनी चाहिए। दादा हमको इस बाप द्वारा वर्सा दे रहे हैं।

- बाबा ने समझाया है - ध्यान और योग बिल्कुल अलग है। योग अर्थात् याद । आंखें खुली होते याद कर सकते हो। ध्यान को योग नहीं कहा जाता। ध्यान में जाते हैं तो उनको न ज्ञान, न योग कहा जाता। ध्यान में जाने वालों पर माया भी बहुत वार करती है, इसलिए इसमें बहुत खबरदार रहना होता है। बाप की कायदे अनुसार याद चाहिए। कायदे के विरूद्ध कोई काम किया तो एकदम माया गिरा देगी। ध्यान की तो कभी इच्छा भी नहीं रखनी है, इच्छा मात्रम् अविद्या। तुम्हें कोई भी इच्छा नहीं रखनी है। बाप तुम्हारी सब कामनायें बिगर मांगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चलते हो तो। अगर बाप की आज्ञा का उल्लंघन कर उल्टा रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग में जाने के बदले नर्क में गिर जायें।

- नॉलेज कौन लेते हैं? आत्मा। आत्मा अविनाशी है। मोह भी रखना चाहिए अविनाशी चीज़ में, न कि विनाशी चीज़ में। इतना समय तुम विनाशी शरीर में मोह रखते आये हो। अभी समझते हो-हम आत्मा हैं, शरीर का भान छोड़ना है। कोई-कोई बच्चे लिखते भी हैं मुझ आत्मा ने यह काम किया। मुझ आत्मा ने आज यह भाषण किया। मुझ आत्मा ने आज बहुत बाबा को याद किया। वह है सुप्रीम आत्मा, नॉलेजफुल। तुम बच्चों को कितनी नॉलेज देते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन को तुम जानते हो। मनुष्यों की बुद्धि में तो कुछ भी नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में है रचता कौन है? इस मनुष्य सृष्टि का क्रियेटर गाया जाता है, तो जरूर कर्तव्य में आते हैं।

- तुम समझते हो बरोबर हम सतयुग के मालिक थे। फिर 84 जन्मों के बाद ऐसे बने हैं। अब फिर बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तो हम क्यों न अपने को आत्मा निश्चय करं। और बाप को याद करें। कुछ तो मेहनत करनी होगी ना। राजाई पाना कोई सहज थोड़ेही है। बाप को याद करना है। यह माया का वण्डर है जो घड़ी-घड़ी तुमको भुला देती है। उसके लिए उपाय रचना चाहिए। ऐसे नहीं, मेरा बनने से याद जम जायेगी। बाकी पुरूषार्थ क्या

करेंगे! नहीं। जब तक जीना है पुरूषार्थ करना है। ज्ञान अमृत पीते रहना है। यह भी समझते हो हमारा यह अन्तिम जन्म है। इस शरीर का भान छोड़ देही-अभिमानी बनना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। पुरूषार्थ जरूर करना है। सिर्फ अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करो। त्वमेव माताश्च पिता..... यह सब है भक्ति मार्ग की महिमा। तुमको सिर्फ एक अल्फ को याद करना है। एक ही मीठी सैक्रीन है। और सब बातें छोड़ एक सैक्रीन (बाप) को याद करो। अभी तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है, उनको सतोप्रधान बनाने के लिए याद की यात्रा में रहो। सबको यही बताओ बाप से सुख का वर्सा लो। सुख होता ही है सतयुग में। सुखधाम स्थापन करने वाला बाबा है। बाप को याद करना है बहुत सहज। परन्तु माया का आपोजीशन बहुत है इसलिए कोशिश कर मुझ बाप को याद करो तो खाद निकल जायेगी। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गाया जाता है। हम आत्मा रूहानी बाप के बच्चे हैं। वहाँ के रहने वाले हैं। फिर हमको अपना पार्ट रिपीट करना है। इस ड्रामा के अन्दर सबसे जास्ती हमारा पार्ट है। सुख भी सबसे जास्ती हमको मिलेगा। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं। यह सारी ड्रामा में नूँध है। शरीर खत्म हो जायेंगे। आत्मा जो अविनाशी है वह हिसाब-किताब चुक्तू कर चली जायेगी। ऐसे नहीं कि आत्मा आग में पड़ने से पवित्र होगी। आत्मा को याद रूपी योग अग्नि से ही पवित्र होना है। योग की अग्नि है यह। उन्होंने फिर नाटक बैठ बनाये हैं। सीता आग से पार हुई। आग से कोई थोड़ेही पावन होना है। बाप समझाते हैं तुम सब सीतायें इस समय पतित हो। रावण के राज्य में हो। अब एक बाप की याद से तुमको पावन बनना है। राम एक ही है। अग्नि अक्षर सुनने से समझते हैं-आग से पार हुई। कहाँ योग अग्नि, कहाँ वह। आत्मा परमपिता परमात्मा से योग रखने से ही पतित से पावन होगी। रात-दिन का फ़र्क है। हेल में सब सीतायें रावण की जेल में शोक वाटिका में हैं। यहाँ का सुख तो काग विष्टा के समान है। भेंट की जाती है। स्वर्ग के सुख तो अथाह हैं।

तुम बच्चों का राज्य था। तुम पवित्र देवी-देवतायें थे, तुम्हारा कुल वा डिनायस्टी है, वह सब निर्विकारी थे। कौन निर्विकारी थे? आत्मायें। अब फिर तुम निर्विकारी बन रहे हो। जैसेकि

सर्वशक्तिमान् बाप को याद कर उनसे शक्ति ले रहे हो। बाप ने समझाया है आत्मा ही 84 का पार्ट बजाती है। उनमें जो सतोप्रधान ताकत थी वह फिर दिन-प्रतिदिन कम होती जाती है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना है। जैसे बैटरी की ताकत कम होती जाती है तो मोटर खड़ी हो जाती है। बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। आत्मा की बैटरी फुल डिस्चार्ज नहीं होती है, कुछ न कुछ ताकत रहती है। जैसे कोई मरता है तो दीपक जलाते हैं, उसमें घृत डालते रहते हैं कि ज्योति बुझ न जाए। बैटरी की ताकत कम होती है तो फिर चार्ज करने रखते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो-तुम्हारी आत्मा सर्वशक्तिमान् थी, अब फिर तुम सर्वशक्तिमान् बाप से अपना बुद्धियोग लगाते हो। तो बाबा की शक्ति हमारे में आ जाए क्योंकि शक्ति कम हो गई है। थोड़ी जरूर रहती है। एकदम खत्म हो जाए तो फिर शरीर न रहे। आत्मा बाप को याद करते-करते बिल्कुल प्योर हो जाती है। सतयुग में तुम्हारी बैटरी फुल चार्ज होती है फिर थोड़ी- थोड़ी कम होती जाती है। त्रेता तक मीटर कम होता है, जिसको कला कहा जाता है। फिर कहेंगे आत्मा जो सतोप्रधान थी वह सतो बनी, ताकत कम हो जाती है। तुम समझते हो हम मनुष्य से देवता बन जाते हैं सतयुग में। अब बाप कहते हैं-मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। अभी तुम तमोप्रधान बन गये हो तो ताकत का देवाला निकल गया है। फिर बाप को याद करने से पूरी ताकत आयेगी, क्योंकि तुम जानते हो देह सहित देह के जो भी सब सम्बन्ध हैं, वह सब खत्म हो जाने हैं फिर तुमको बेहद का राज्य मिलता है। बाप भी बेहद का है तो वर्सा भी बेहद का देते हैं। अभी तुम पतित हो, तुम्हारी ताकत बिल्कुल कम होती गई है। हे बच्चों-अब तुम मुझे याद करो, मैं ऑलमाइटी हूँ, मेरे द्वारा ऑलमाइटी राज्य मिलता है। सतयुग में देवी-देवता सारे विश्व के मालिक थे, पवित्र थे, दैवी गुणवान थे। अभी वह दैवीगुण नहीं हैं। सबकी बैटरी पूरी डिस्चार्ज होने लगी है। फिर अब बैटरी भरती है। सिवाए परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाने के बैटरी चार्ज नहीं हो सकती। वह बाप ही एवर प्योर है। यहाँ सब हैं इमप्योर। जब प्योर रहते हैं तो बैटरी चार्ज रहती है। तो अब बाप समझाते हैं एक को ही याद करना है। ऊंच ते ऊंच है भगवान। बाकी सब हैं रचना। रचना से रचना को कभी वर्सा नहीं मिलता है। क्रियेटर तो एक

ही है। वह है बेहद का बाप। बाकी तो सब हैं हद के। बेहद के बाप को याद करने से बेहद की बादशाही मिलती है। तो बच्चों को दिल अन्दर समझना चाहिए-हमारे लिए बाबा नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार स्वर्ग की स्थापना हो रही है। तुम जानते हो-सतयुग आने वाला है। सतयुग में होता ही है सदा सुख। वह कैसे मिलता है? बाप बैठ समझाते हैं मामेकम् याद करो। मैं एवरप्योर हूँ। मैं कभी मनुष्य तन नहीं लेता हूँ। न दैवी तन, न मनुष्य तन लेता हूँ अर्थात् मैं जन्म-मरण में नहीं आता हूँ। सिर्फ तुम बच्चों को स्वर्ग की बादशाही देने लिए, जब यह 60 वर्ष की वानप्रस्थ अवस्था में होता है तब इनके तन में आता हूँ। यही पूरा सतोप्रधान से तमोप्रधान बना है। नम्बरवन ऊंच ते ऊंच भगवान फिर हैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, जिसका साक्षात्कार होता है। सूक्ष्मवतन बीच का है ना। जहाँ शरीर नहीं हो सकते। सूक्ष्म शरीर सिर्फ दिव्य दृष्टि से देखा जाता है। मनुष्य सृष्टि तो यहाँ है। बाकी वह तो सिर्फ साक्षात्कार के लिए फरिश्ते हैं। तुम बच्चे भी अन्त में जब बिल्कुल पवित्र हो जाते हो तो तुम्हारा भी साक्षात्कार होता है। ऐसे फरिश्ते बन फिर सतयुग में यहाँ ही आकर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह ब्रह्मा कोई विष्णु को याद नहीं करते हैं। यह भी शिवबाबा को याद करते हैं और यह विष्णु बनते हैं। तो यह समझना चाहिए ना। इन्होंने राज्य कैसे पाया! लड़ाई आदि तो कुछ भी होती नहीं। देवतायें हिंसा कैसे करेंगे!

बाप ज्ञान का सागर है। ज्ञान कहाँ से सुनाते हैं? क्या ऊपर से सुनाते हैं? यहाँ नीचे आया है। ब्रह्मा तन से सुनाते हैं। कई कहते हैं हम ब्रह्मा को नहीं मानते। परन्तु शिवबाबा खुद कहते हैं ब्रह्मा तन द्वारा कि मुझे याद करो। यह समझ की बात है ना। लेकिन माया बड़ी जबरदस्त है। एकदम मुँह फिराकर पिछाड़ी कर देती है। अब तुम्हारा कांध शिवबाबा ने सामने किया है। सम्मुख बैठे हो फिर जो ऐसे समझते हैं ब्रह्मा तो कुछ नहीं, उनकी क्या गति होगी! दुर्गति को पा लेते हैं। कुछ भी ज्ञान नहीं। मनुष्य पुकारते भी हैं ओ गाड फादर।फिर वह गाड फादर सुनता है क्या? उनको कहते हैं ना लिबरेटर आओ या वहाँ बैठे लिबरेट करेंगे? कल्प-कल्प पुरूषोत्तम

संगमयुग पर ही बाप आते हैं, जिसमें आते हैं उनको ही अगर उड़ा दें तो क्या कहेंगे! नम्बरवन तमोप्रधान। निश्चय होते हुए भी माया एकदम मुँह फेर देती है। इतना उसमें बल है जो एकदम वर्थ नाट ए पेनी बना देती है। ऐसे भी कोई न कोई सेन्टर्स पर हैं इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहना। भल किसको सुनाते भी रहें सुनी हुई बातें, परन्तु वह जैसे पंडित मिसल हो जाते। जैसे बाबा पंडित की कहानी बताते हैं ना। उसने कहा राम-राम कहने से सागर पार हो जायेंगे। यह भी एक कहानी बनाई हुई है। इस समय तुम बाप की याद से विषय सागर से क्षीरसागर में जाते हो ना। उन्होंने भक्तिमार्ग में ढेर कथायें बना दी हैं। ऐसी बातें तो होती नहीं। यह एक कहानी बनी हुई है। पंडित औरों को कहता था, खुद बिल्कुल चट खाते में। खुद विकारों में जाते रहना और दूसरों को कहना निर्विकारी बनो, उनका क्या असर होगा। ऐसे भी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं- खुद निश्चय में नहीं, दूसरों को सुनाते रहते हैं इसलिए कहाँ-कहाँ सुनाने वाले से भी सुनने वाले तीखे चले जाते हैं। जो बहुतों की सेवा करते हैं वह जरूर प्यारे तो लगते हैं ना। पंडित झूठा निकल पड़े तो उनको कौन प्यार करेंगे! फिर प्यार उन पर चला जायेगा जो प्रैक्टिकल में याद करते हैं। अच्छे-अच्छे महारथियों को भी माया हप कर लेती है। बहुत हप हो गये। बाबा भी समझाते हैं अभी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है। एक तरफ लड़ाई होगी, दूसरे तरफ कर्मातीत अवस्था होगी। पूरा कनेक्शन है। फिर लड़ाई पूरी हो जाने से ट्रांसफर हो जायेंगे। पहले रूद्र माला बनती है। यह बातें और कोई नहीं जानते। तुम समझते हो विनाश सामने खड़ा है। अब तुम हो मैनारिटी, वह है मैजारिटी।

बच्चों में नष्टोमोहा बनने की भी हिम्मत चाहिए। फट से नष्टोमोहा हो जाना है। बेहद का बाप मिला है तो उनसे पूरा वर्सा लेना है। बाबा ने बच्चों को समझाया है– चार्ट रखो। बाबा को याद करने समय बाबा से क्या-क्या बातें की। कितनी बाबा की महिमा की। भोजन पर कितना समय याद किया! अपनी अवस्था को ऊंच बनाना बहुत जरूरी है। नष्टोमोहा तो जरूर बनना पड़े। बाप के बने हो तो उनकी सेवा में लग जाओ। अपनी जांच करो मेरा दैवी स्वभाव है? मनुष्य

को स्वभाव बहुत सताता है। हरेक को अपना तीसरा नेत्र मिला है तो उससे जांच करनी है कि मेरी याद बाबा तक पहुँचती है? जो भी डिफेक्ट हैं उनको निकाल प्युअर डाइमन्ड बनना है। थोड़ा भी डिफेक्ट होगा तो वैल्यु कम हो जायेगी इसलिए मेहनत कर अपने को वैल्युबुल हीरा बनाना है। बाप फिर भी बच्चों को कहते हैं– मामेकम् याद करो। याद में दिल ही भर जानी चाहिए। बाप की याद सतानी चाहिए। बाबा-बाबा आप हमको क्या से क्या बना रहे हो। और तो कोई जानते ही नहीं कि तुम क्या बन रहे हो। तो ऐसे बाप को बहुत-बहुत लव से याद करना है। याद में ही सब कुछ समाया हुआ है।

तुम बच्चों को निश्चय है बिलवेड मोस्ट बाबा है। कहते भी हैं स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट। अब स्वीट कौन है? लौकिक सम्बन्ध में पहले है फादर, जो जन्म देते हैं। फिर टीचर। वह अच्छा होता है। उससे पढकर मर्तबा पाते हो। नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इनकम कहा जाता है। ज्ञान है नॉलेज। योग है याद । तो बेहद का बाप जिसने तुमको स्वर्ग का मालिक बनाया था, उनको तुम अभी भूल गये हो। शिवबाबा कैसे आया किसको पता नहीं। चित्रों में भी क्लीयर दिखाया है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना शिवबाबा कराते हैं। कृष्ण कैसे राजयोग सिखायेगा? राजयोग सिखलाते ही हैं सतयुग के लिए। तो जरूर संगम पर बाप ने ही सिखाया होगा।

बाप समझाते हैं बच्चों की बुद्धि में जरूर होगा कि बाबा– बाप भी है, टीचर भी है, सुप्रीम गुरू भी है, इसी याद में जरूर होंगे। यह याद कभी कोई सिखला भी नहीं सकते। बाप ही कल्प-कल्प आकर सिखलाते हैं। वही ज्ञान सागर पतित-पावन भी है। वह बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। यह अब समझा जाता है , जबकि ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। बच्चे भल समझते तो होंगे परन्तु बाप को ही भूल जाते हैं तो टीचर गुरू फिर कैसे याद आयेगा। माया बहुत ही प्रबल है जो तीन रूप में महिमा होते हुए भी तीनों को भुला देती है, इतनी सर्वशक्तिमान् है।

बच्चे भी लिखते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। माया ऐसी प्रबल है। ड्रामा अनुसार है बहुत सहज। बच्चे समझते हैं ऐसा कभी कोई हो नहीं सकता। वही बाप टीचर सतगुरू है– सच-सच, इसमें गपोड़े आदि की कोई बात नहीं। अन्दर में समझना चाहिए ना! परन्तु माया भुला देती है।

अभी तुम पुरूषार्थ कर रहे हो ऐसा (लक्ष्मी-नारायण) बनने का। जानते हो इस पुरूषार्थ में बहुत फेल होते हैं। पढते फिर भी इतने हैं जितने कल्प पहले पास हुए थे। वास्तव में ज्ञान है भी बहुत सहज परन्तु माया भुला देती है। बाप कहते हैं अपना चार्ट लिखो परन्तु लिख नहीं पाते हैं। कहाँ तक बैठ लिखें। अगर लिखते भी हैं तो जांच करते हैं– दो घण्टा याद में रहे? फिर वह भी उन्हों को मालूम पड़ता है, जो बाप की श्रीमत को अमल में लाते हैं। बाप तो समझेंगे इन बिचारों को लज्जा आती होगी। नहीं तो श्रीमत अमल में लानी चाहिए। परन्तु दो परसेन्ट मुश्किल चार्ट लिखते हैं। बच्चों को श्रीमत का इतना रिगार्ड नहीं है। मुरली मिलते हुए भी पढते नहीं हैं। दिल में लगता जरूर होगा– बाबा कहते तो सच हैं, हम मुरली ही नहीं पढते तो बाकी औरों को समझायेंगे क्या?

यह भी जानते हैं जाना तो सभी को है। सभी चले जाने वाले हैं। बाकी आत्मा जाकर रहेगी। सारी दुनिया ही खत्म होनी है। इसमें निडर रहना होता है। पुरुषार्थ करना है निडर हो रहने का। शरीर आदि का कोई भी भान न आवे। उसी अवस्था में जाना है। बाप आप समान बनाते हैं, तुम बच्चे भी आप समान बनाते रहते हो। एक बाप की ही याद रहे ऐसा पुरुषार्थ करना है। अभी टाइम पड़ा है। यह रिहर्सल तीखी करनी पड़े। प्रैक्टिस नहीं होगी तो खड़े हो जायेंगे। टांगे थिरकने लग पड़ेगी और हार्ट फेल अचानक होता रहेगा। तमोप्रधान शरीर को हार्टफेल होने में देरी थोड़ेही लगती है। जितना अशरीरी होते जायेंगे, बाप को याद करते रहेंगे उतना नज़दीक आते जायेंगे। योग वाले ही निडर रहेंगे। योग से शक्ति मिलती है, ज्ञान से धन मिलता है। बच्चों को

चाहिए शक्ति। तो शक्ति पाने लिये बाप को याद करते रहो। बाबा है अविनाशी सर्जन। वह कब पेशेन्ट बन न सके। अभी बाप कहते हैं तुम अपनी अविनाशी दवाई करते रहो। हम ऐसी संजीवनी बूटी देते हैं जो कब कोई बीमार न पड़े। सिर्फ पतितपावन बाप को याद करते रहो तो पावन बन जायेंगे। देवतायें सदैव निरोगी पावन हैं ना। बच्चों को यह तो निश्चय हो गया है हम कल्प कल्प वर्सा लेते हैं।

रावण राज्य शुरू होने से फिर यह सब शुरू होते हैं। बेहद का यज्ञ एक ही बार होता है, इनमें यह सारी पुरानी सृष्टि स्वाहा हो जाती है। यह है बेहद का रूद्र ज्ञान यज्ञ। इसमें मुख्य है ज्ञान और योग की बात। योग अर्थात् याद । याद अक्षर बहुत मीठा है। योग अक्षर कॉमन हो गया है। योग का अर्थ कोई नहीं समझते हैं। तुम समझा सकते हो– योग अर्थात् बाप को याद करना है। बाबा आप तो हमको वर्सा देते हैं बेहद का। आत्मा बात करती है– बाबा, आप फिर से आये हो। हम तो आपको भूल गये थे। आपने हमको बादशाही दी थी। अब फिर आकर मिले हो। आपकी श्रीमत पर हम जरूर चलेंगे। ऐसे-ऐसे अन्दर में अपने साथ बातें करनी होती हैं। बाबा, आप तो हमें बहुत अच्छा रास्ता बताते हो। हम कल्प-कल्प भूल जाते हैं। अभी बाप फिर अभुल बनाते हैं इसलिए अब बाप को ही याद करना है। याद से ही वर्सा मिलेगा। मैं जब सम्मुख आता हूँ तब तुमको समझाता हूँ। तब तक गाते रहते हैं– तुम दुःख हर्ता सुख कर्ता हो। महिमा गाते हैं परन्तु न आत्मा को, न परमात्मा को जानते हैं। अभी तुम समझते हो– इतनी छोटी बिन्दी में अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है। यह भी बाप समझाते हैं। उनको कहा जाता है परमपिता परमात्मा अर्थात् परम आत्मा। बाकी कोई बड़ा हजारों सूर्य मिसल नहीं हूँ। हम तो टीचर मिसल पढाते रहते हैं। कितने ढेर बच्चे हैं। यह क्लास तो देखो कितना वण्डरफुल है। कौन-कौन इसमें पढते हैं? अबलायें, कुब्जायें, साधू भी एक दिन आकर बैठेंगे। बुढ़ियायें, छोटे बच्चे आदि सब बैठे हैं। ऐसा स्कूल कभी देखा। यहाँ है याद की मेहनत। यह याद ही टाइम लेती है। याद का पुरुषार्थ करना यह भी ज्ञान है ना। याद के लिए भी ज्ञान। चक्र समझाने के लिए भी ज्ञान। नेचुरल सच्चा-

सच्चा नेचरक्युअर इसको कहा जाता है। तुम्हारी आत्मा बिल्कुल प्योर हो जाती है। वह होती है शरीर की क्युअर। यह है आत्मा की क्युअर। आत्मा में ही खाद पड़ती है। सच्चे सोने का सच्चा जेवर होता है। अभी यहाँ बच्चे जानते हैं शिवबाबा सम्मुख आया हुआ है। बच्चों को बाप को जरूर याद करना है। हमको अब वापिस जाना है। इस पार से उस पार जाना है। बाप को, वर्से को और घर को भी याद करो। वह है स्वीट साइलेन्स होम। दुःख होता है अशान्ति से, सुख होता है शान्ति से। सतयुग में सुख-शान्ति-सम्पत्ति सब कुछ है। वहाँ लड़ाई-झगड़े की बात ही नहीं। बच्चों को यही फुरना होना चाहिए– हमको सतोप्रधान, सच्चा सोना बनना है तब ही ऊंच पद पायेंगे। यह रूहानी भोजन मिलता है, उसको फिर उगारना चाहिए। आज कौनसी, कौनसी मुख्य प्वाइंट्स सुनी! यह भी समझाया यात्रायें दो होती हैं–रूहानी और जिस्मानी। यह रूहानी यात्रा ही काम आयेगी। भगवानुवाच– मनमनाभव।

तुम कह सकते हो हम आपको समझाते हैं इन लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य कैसे मिला? गीता में भी भगवानुवाच है ना। मैं तुमको राजयोग सिखाकर राजाओं का राजा बनाता हूँ। स्वर्गवासी तो तुम बनते हो ना। तो बच्चों को कितना नशा रहना चाहिए– हम यह बनते हैं! भल अपना चित्र और राजाई का चित्र भी यहाँ साथ में निकालो। नीचे तुम्हारा चित्र, ऊपर में राजाई का चित्र हो। इसमें खर्चा तो नहीं है ना। राजाई पोशाक तो झट बन सकती है। तो घड़ी-घड़ी याद रहेगा– हम सो देवता बन रहे हैं। ऊपर में भल शिवबाबा भी हो। यह भी चित्र निकालने होंगे। तुम मनुष्य से देवता बनते हो। यह शरीर छोड़ हम जाए देवता बनेंगे क्योंकि अभी हम यह राजयोग सीख रहे हैं। तो यह फोटो भी मदद करेंगे। ऊपर में शिव फिर राजाई चित्र। नीचे तुम्हारा साधारण चित्र। शिवबाबा से राजयोग सीख हम सो देवता डबल सिरताज बन रहे हैं। चित्र रखा होगा कोई भी पूछेंगे तो हम बतला सकेंगे– हमको सिखलाने वाला यह शिवबाबा है। चित्र देखने से बच्चों को नशा चढ़ेगा। भल दुकान में भी यह चित्र रख दो। भक्ति मार्ग में बाबा नारायण का चित्र रखता था। पॉकेट में भी रहता था। तुम भी अपना फोटो रख दो तो याद

रहेगा– हम सो देवी-देवता बन रहे हैं। बाप को याद करने का उपाय ढूंढना चाहिए। बाप को भूल जाने से ही गिरते हैं। विकार में गिरेगा तो फिर शर्म आयेगी। अभी तो हम ये देवता बन नहीं सकेंगे। हार्ट फेल हो जायेगी। अभी हम देवता कैसे बनेंगे? बाबा कहते हैं विकार में गिरने वाले का फोटो निकाल दो। बोलो तुम स्वर्ग में चलने लायक नहीं हो, तुम्हारा पासपोर्ट खलास।

तुम यह खुशखबरी सबको सुना सकते हो, छपा भी सकते हो, ब्युटीफुल कार्ड पर। विश्व में शान्ति आज से 5 हज़ार वर्ष पहले थी, जब नई दुनिया नया भारत था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अब फिर से विश्व में शान्ति स्थापन हो रही है। यह बातें सिमरण करने से भी तुम बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो बाप को याद करने से ही हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। सारा मदार तुम बच्चों के पुरूषार्थ पर है। बाबा ने समझाया है जो भी टाइम मिले बाबा की याद में रहो। सवेरे में स्नान कर फिर एकान्त में चक्र लगाओ या बैठ जाओ। यहाँ तो कमाई ही कमाई करनी है। एवर हेल्दी और सदा पावन बनने के लिए ही याद है।

बाप आते ही हैं शान्ति का वरदान देने। कहते हैं मुझे याद करो तो तमोप्रधान बनने कारण जो आत्मा अशान्त हो पड़ी है वह याद से सतोप्रधान शान्त बन जायेगी। परन्तु बच्चों से याद की मेहनत पहुँचती ही नहीं है, याद में न रहने के कारण ही फिर माया के तूफान आते हैं। याद में रहकर पूरा पावन नहीं बनेंगे तो सजा खानी पड़ेगी। पद भी भ्रष्ट होगा। ऐसे नहीं समझना चाहिए स्वर्ग में तो जायेंगे ना। अरे, मार खाकर पाई पैसे का सुख पाना यह कोई अच्छा है क्या। मनुष्य ऊंच पद पाने के लिए कितना पुरूषार्थ करते हैं। ऐसे नहीं कि जो मिला सो अच्छा है। ऐसा कोई नहीं होगा जो पुरूषार्थ नहीं करेगा। भीख मांगने वाले फकीर लोग भी अपने पास पैसे इकट्ठे करते हैं। पैसे के तो सभी भूखे होते हैं। पैसे से हर बात का सुख होता है। तुम बच्चे जानते हो हम बाबा से अथाह धन लेते हैं। पुरूषार्थ कम करेंगे तो धन भी कम मिलेगा। बाप धन देते हैं ना।

कहते भी हैं-धन है तो अमेरिका आदि का चक्र लगाओ। तुम जितना बाप को याद करेंगे और सर्विस करेंगे उतना सुख पायेंगे। बाप हर बात में पुरूषार्थ कराते, ऊंच बनाते हैं। समझते हैं बच्चे नाम बाला करेंगे हमारे कुल का। तुम बच्चों को भी ईश्वरीय कुल का, बाप का नाम बाला करना है। यह सत बाप, सत टीचर, सतगुरू ठहरा। ऊंच ते ऊंच बाप ऊंच ते ऊंच सच्चा सतगुरू भी ठहरा। यह भी समझाया है कि गुरू एक ही होता है, दूसरा न कोई। सर्व का सद्गति दाता एक। यह भी तुम जानते हो। अभी तुम पारसबुद्धि बन रहे हो। पारसपुरी के पारसनाथ राजा-रानी बनते हो। कितनी सहज बात है।

- बाप रोज़-रोज़ बच्चों को समझाते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप की याद में बैठो। आज उसमें एड करते हैं-सिर्फ बाप नहीं दूसरा भी समझना है। मुख्य बात ही यह है-परमपिता परमात्मा शिव, उनको गॉड फादर भी कहते हैं, ज्ञान सागर भी है। ज्ञान सागर होने कारण टीचर भी है, राजयोग सिखलाते हैं। यह समझाने से समझेंगे कि सत्य बाप इन्हों को पढ़ा रहे हैं। प्रैक्टिकल बात यह सुनाते हैं। वह सबका बाप भी है, टीचर भी है, सद्गति दाता भी है और फिर उनको नॉलेजफुल कहा जाता है। बाप, टीचर, पतित-पावन, ज्ञान सागर है।

- मनुष्यों में मोह भी बहुत होता है, मरे हुए की भी याद रहती है। बुद्धि में आता है यह मेरे बच्चे हैं। पति अथवा बच्चा मरे तो उनको याद करते रहते। स्त्री 12 मास तक तो अच्छी रीति याद करती है, मुँह ढक कर रोती रहती है। ऐसे मुँह ढक कर अगर तुम बाप को याद करो दिन-रात तो बेडा ही पार हो जाए। बाप कहते हैं-जैसे पति को तुम याद करती रहती हो ऐसे मेरे को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाएं। बाप युक्तियां बतलाते हैं ऐसे-ऐसे करो।

पोतामेल देखते हैं आज इतना खर्चा हुआ, इतना फायदा हुआ, बैलेन्स रोज़ निकालते हैं। कोई मास-मास निकालते हैं। यहाँ तो यह बहुत जरूरी है, बाप ने बार-बार समझाया है। बाप कहते हैं तुम बच्चे सौभाग्यशाली, हजार भाग्यशाली, करोड़ भाग्यशाली, पदम, अरब, खरब भाग्यशाली हो। जो बच्चे अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं, वह जरूर अच्छी तरह से बाप को याद करते रहेंगे। वही गुलाब के फूल बनेंगे। यह तो नटशेल में समझाना होता है। बनना तो खुशबूदार फूल है। मुख्य है याद की बात। सन्यासियों ने योग अक्षर कह दिया है। लौकिक बाप ऐसे नहीं कहेंगे कि मुझे याद करो या पूछे कि मुझे याद करते हो? बाप बच्चे को, बच्चा बाप को याद है ही। यह तो लॉ है। यहाँ पूछना पड़ता है क्योंकि माया भुला देती है। यहाँ आते हैं, समझते हैं हम बाप के पास जाते हैं तो बाप की याद रहनी चाहिए इसलिए बाबा चित्र भी बनाते हैं तो वह भी साथ में हो। पहले-पहले हमेशा बाप की महिमा शुरू करो। यह हमारा बाबा है, यूँ तो सबका बाप है। सर्व का सद्गति दाता, ज्ञान का सागर नॉलेजफुल है। बाबा हमको सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं, जिससे हम त्रिकालदर्शी बन जाते हैं। त्रिकालदर्शी इस सृष्टि पर कोई मनुष्य हो नहीं सकता। बाप कहते हैं यह लक्ष्मी-नारायण भी त्रिकालदर्शी नहीं हैं। यह त्रिकालदर्शी बन क्या करेंगे! तुम बनते हो और बनाते हो। इन लक्ष्मी-नारायण में ज्ञान होता तो परम्परा चलता। बीच में तो विनाश हो जाता है इसलिए परम्परा तो चल न सके। तो बच्चों को इस पढ़ाई का अच्छी रीति सिमरण करना है। तुम्हारी भी ऊंच ते ऊंच पढ़ाई संगम पर ही होती है। तुम याद नहीं करते हो, देह-अभिमान में आ जाते हो तो माया थप्पड़ मार देती है। 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे तब विनाश की भी तैयारी होगी।

टीचर शब्क (लेसन) देते हैं घर में पढ़ने के लिए, जिसको होम वर्क कहते हैं। बाप भी तुमको घर के लिए पढ़ाई देते हैं। दिन में भल धंधा आदि भी करो, शरीर निर्वाह तो करना ही है। अमृतवेले तो सबको फुर्सत रहती है। सवेरे-सवेरे दो तीन बजे का टाइम बहुत अच्छा है। उस

समय उठकर बाप को प्यार से याद करो। बाकी इन विकारों ने ही तुम्हें आदि-मध्य-अन्त दु:खी किया है। रावण को जलाते हैं परन्तु इसका भी अर्थ कुछ नहीं जानते। बस सिर्फ परमपरा से रावण को जलाने की रसम चली आई है। ड्रामा अनुसार यह भी नूँध है। रावण को मारते आये हैं परन्तु रावण मरता ही नहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो यह रावण को जलाना बन्द कब होगा

बच्चे आत्म-अभिमानी होकर बैठे हो? 84 का चक्र बुद्धि में है अर्थात् अपने वैराइटी जन्मों का ज्ञान है। विराट रूप का भी चित्र है ना। इसका ज्ञान भी बच्चों में है कि कैसे हम 84 जन्म लेते हैं। मूलवतन से पहले-पहले देवी- देवता धर्म में आते हैं। यह ज्ञान बुद्धि में है, इसमें चित्र की कोई दरकार नहीं। हमको कोई चित्र आदि याद नहीं करना है। अन्त में याद सिर्फ यह रहेगा कि हम आत्मा हैं, मूलवतन की रहने वाली हैं, यहाँ हमारा पार्ट है। यह भूलना नहीं चाहिए। यह मनुष्य सृष्टि के चक्र की ही बातें हैं और बहुत सिम्पुल हैं। इसमें चित्रों की बिल्कुल दरकार नहीं क्योंकि यह चित्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग की चीज़ें। ज्ञान मार्ग में तो है पढ़ाई। पढ़ाई में चित्रों की दरकार नहीं। इन चित्रों को सिर्फ करेक्ट किया गया है।

यह सूक्ष्मवतन की जो रमत-गमत है, यह भी टाइम पास करने के लिए है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो टाइम पास करने के लिए यह खेलपाल हैं। कर्मातीत अवस्था आ जायेगी, बस। तुमको यही याद रहेगा कि हम आत्मा ने अब 84 जन्म पूरे किये, अब हम जाते हैं घर। फिर आकर सतोप्रधान दुनिया में सतोप्रधान पार्ट बजायेंगे। यह ज्ञान बुद्धि में लिया हुआ है, इसमें चित्रों आदि की दरकार नहीं। जैसे बैरिस्टर कितना पढ़ते हैं, बैरिस्टर बन गये, बस जो पाठ पढ़े वह खलास। रिजल्ट निकली प्रालब्ध की। तुम भी पढ़कर फिर जाए राजाई करेंगे। वहाँ नॉलेज की दरकार नहीं। इन चित्रों में भी रांग-राइट क्या है, यह अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। बाप बैठ समझाते हैं, लक्ष्मी-नारायण कौन हैं? यह विष्णु क्या है? विष्णु के चित्र में मनुष्य मूँझ जाते हैं।

- तुम बच्चे हो सच्चे-सच्चे खुदाई खिदमतगार। बाबा सच्चा खुदाई खिदमतगार उसे कहते हैं जो कम से कम 8 घण्टा आत्म-अभिमानी रहने का पुरूषार्थ करते हैं। कोई कर्म-बन्धन न रहे तब खिदमतगार बन सकते हो और कर्मातीत अवस्था हो सकती है। नर से नारायण बनना है तो कर्मातीत अवस्था जरूर चाहिए। कर्मबन्धन होगा तो सज़ा खानी पड़ेगी। बच्चे खुद समझते हैं- याद की मेहनत बड़ी कड़ी है। युक्ति बहुत सहज है, सिर्फ बाप को याद करना है। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। योग के लिए ही नॉलेज है, जो बाप आकर सिखलाते हैं। कृष्ण कोई योग थोड़ेही सिखलाते हैं। कृष्ण को फिर स्वदर्शन चक्र दे दिया है। वह भी चित्र कितना रांग है। अभी तुमको कोई चित्र आदि भी याद नहीं करना है। सब कुछ भूलो। कोई में बुद्धि न जाए, लाइन क्लीयर चाहिए। यह है पढ़ाई का समय। दुनिया को भूल अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है, तब ही पाप नाश होंगे। बाप कहते हैं पहले-पहले तुम अशरीरी आये थे, फिर तुमको जाना है। तुम आलराउन्डर हो। वह होते हैं हद के एक्टर्स, तुम हो बेहद के। अभी तुम समझते हो हमने अनेक बार पार्ट बजाया है। तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। उनका जब समय आयेगा तब वह आयेंगे। नम्बरवार जैसे-जैसे आये हैं, ऐसे ही फिर जायेंगे। हम और धर्म का क्या वर्णन करेंगे। तुमको सिर्फ एक बाप की ही याद रहनी है। चित्र आदि यह सब भूलकर एक बाप को याद करना है। ब्रह्मा-विष्णु- शंकर को भी नहीं, सिर्फ एक को।

- तुम जिसको रास्ता बताते हो कोई तो अच्छी रीति चल पड़ते हैं, कोई धारणा कर नहीं सकते, कितने हैं जो सुनते भी रहते फिर बाहर में जाते हैं तो वहाँ के वहाँ रह जाते, वह खुशी नहीं, पढ़ाई नहीं, योग नहीं। बाबा कितना समझाते हैं, चार्ट रखो। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। हम बाबा को कितना याद करते हैं, चार्ट देखना चाहिए। भारत के प्राचीन योग की बहुत महिमा है। तो बाप समझाते हैं-कोई भी बात नहीं समझो तो बाबा से पूछो। आगे तुम कुछ भी नहीं जानते थे।

बाबा कहते हैं यह है कांटों का जंगल। काम महाशत्रु है। यह अक्षर खुद गीता के हैं। गीता पढ़ते थे परन्तु समझते थोड़ेही थे। बाबा ने सारी आयु गीता पढ़ी। समझते थे-गीता का महात्म बहुत अच्छा है। भक्ति मार्ग में गीता का कितना मान है। गीता बड़ी भी होती है, छोटी भी होती है।

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप बैठ समझाते हैं और याद की युक्तियाँ भी बता रहे हैं। बच्चे बैठे हैं, बच्चों के अन्दर में है शिव भोले बाबा आये हैं। समझो आधा घण्टा शान्त में बैठ जाते हैं, बोलते नहीं हैं तो तुम्हारे अन्दर आत्मा कहेगी कि शिवबाबा कुछ बोले। जानते हो शिवबाबा विराजमान है, परन्तु बोलते नहीं हैं। यह भी तुम्हारी याद की यात्रा है ना। बुद्धि में शिवबाबा ही याद है। अन्दर में समझते हो बाबा कुछ बोले, ज्ञान रत्न देवे। बाप आते ही हैं तुम बच्चों को ज्ञान रत्न देने। वह ज्ञान का सागर है ना। कहेंगे-बच्चे, देही-अभिमानी हो रहो। बाप को याद करो। यह ज्ञान हुआ। बाप कहते हैं इस ड्रामा के चक्र को, सीढ़ी को और बाप को याद करो - यह ज्ञान हुआ। बाबा जो कुछ समझायेंगे उसको ज्ञान कहेंगे। याद की यात्रा भी समझाते रहते हैं। यह सब है ज्ञान रत्न। याद की बात जो समझाते हैं, यह रत्न बहुत अच्छे हैं। बाप कहते हैं अपने 84 जन्मों को याद करो। तुम पवित्र आये थे फिर पवित्र होकर ही जाना है। कर्मातीत अवस्था में जाना है और बाप से पूरा वर्सा लेना है। वह तब मिलेगा, जब आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी याद के बल से। यह अक्षर बहुत वैल्युबुल है, नोट करने चाहिए। आत्मा में ही धारणा होती है। यह शरीर तो आरगन्स हैं जो विनाश हो जाते हैं। संस्कार अच्छे वा बुरे आत्मा में भरे जाते हैं।

बाप ही कहते हैं मामेकम् याद करो। कृष्ण कैसे कहेंगे। वह तो देहधारी है ना। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। कोई देहधारी को याद न करो। अभी तुम

समझते हो तो फिर समझाना है। ब्रह्माकुमार- कुमारियों बिगर और कोई स्वर्ग का मालिक बन न सके। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। तुमको बाप कितना समझाते हैं। आत्मा जो अपवित्र बनी है वह सिवाए याद के पवित्र बन नहीं सकती। याद में नहीं रहेंगे तो खाद रह जायेगी। पवित्र बन नहीं सकेंगे फिर सज़ायें खानी पड़ेंगी। सारी दुनिया की मनुष्य आत्माओं को पवित्र बन वापिस जाना है। शरीर तो नहीं जायेगा। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझना कितना मुश्किल रहता है। धन्धे आदि में वह अवस्था थोड़ेही रहती है। बाप कहते को याद करो। धंधा आदि करते यही मेहनत करो कि मैं आत्मा हैं अच्छा अपने को आत्मा नहीं समझते हो तो शिवबाबा याद करो। धंधा आदि करते यही मेहनत करो कि मैं आत्मा इस शरीर से काम करती हूँ। मैं आत्मा ही शिवबाबा को याद करती हूँ। आत्मा ही पहले-पहले पवित्र थी, अब फिर पवित्र बनना है। यह है मेहनत। इसमें बड़ी जबरदस्त कमाई है। यहाँ कितने भी साहूकार हैं, अरब-खरब हैं परन्तु वह सुख नहीं है। सबके सिर पर दुःख हैं। बड़े-बड़े राजायें, प्रेजीडेन्ट आदि आज हैं, कल उनको मार देते। विलायत में क्या-क्या होता रहता है। साहूकारों पर, राजाओं पर तो मुसीबत है। यहाँ भी जो राजायें थे वह प्रजा बन गये हैं। राजाओं पर फिर प्रजा का राज्य हो गया है। ड्रामा में ऐसे नूँध है। पिछाड़ी में ही यह हाल होता है।

तुम पवित्र राजायें बनते हो, फिर बिगर लाइट वाले अपवित्र राजायें पवित्र राजाओं के मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं। अभी तुम पढ़ रहे हो। स्टूडेन्ट टीचर को क्यों भूलते हैं! कहते हैं बाबा माया भुला देती है। दोष फिर माया पर रख देते हैं। अरे, याद तो तुमको करना है। मुख्य टीचर एक ही है, बाकी और सब हैं नायब टीचर्स। बाप को भूल जाते हो, अच्छा टीचर को याद करो। तुमको 3 चांस दिये जाते हैं। एक भूले तो दूसरे को याद करो। अच्छा।

❁ अभी हम बेहद के बाप के बच्चे बने हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। यह तो घड़ी-घड़ी पक्का कर देना चाहिए। परन्तु माया आपोजीशन में है तो वह खुशी भी उड़ जाती है। बाप को याद करते रहेंगे तो नशा रहेगा-बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। फिर माया भुला देती है तो फिर कुछ न कुछ विकर्म हो जाता है। तुम बच्चों को स्मृति आई है - हमने 84 जन्म लिये हैं, और कोई 84 जन्म नहीं लेते हैं। यह भी समझना है-जितना हम याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे और फिर आप-समान भी बनाना है, प्रजा बनानी है। चैरिटी बिगन्स एट होम।

❁ कहाँ बच्चे कहते हैं हम शादी नहीं करेंगे तो माँ-बाप कितने अत्याचार करते हैं। बाप कहते हैं जब ज्ञान यज्ञ रचता हूँ तो अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं। तीन पैर पृथ्वी के भी नहीं देते। तुम सिर्फ बाप की मत पर याद कर पवित्र बनते हो, और कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। जैसे तुम आत्मायें इस शरीर में अवतरित हो वैसे बाप भी अवतरित हैं। यह खेल है। जो श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो समझा जाता है इनकी तकदीर इतनी ऊंच नहीं है। तकदीर वाले सवेरे-सवेरे उठकर याद करेंगे, बाबा से बातें करेंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। खुशी का पारा भी चढ़ेगा। जो पास विद् ऑनर होते हैं वही राजाई के लायक बन सकते हैं। सिर्फ एक लक्ष्मी-नारायण नहीं राज्य करते हैं। डिनायस्टी है। अब बाप कहते हैं तुम कितना स्वच्छ बुद्धि बनते हो। इनको कहा जाता है सतसंग। सतसंग एक ही होता है। जो बाप सच्ची-सच्ची नॉलेज दे सचखण्ड का मालिक बनाते हैं। कल्प के संगम पर ही सत का संग मिलता है। स्वर्ग में कोई भी प्रकार का सतसंग होता नहीं।

❁ बाबा बच्चों को उन्नति के लिए युक्ति बताते हैं-बच्चे, अपनी उन्नति करनी है तो सवेरे-सवेरे स्नान आदि कर एकान्त में जाकर चक्र लगाओ वा बैठ जाओ। तन्दुरूस्ती के लिए पैदल करना भी अच्छा है। बाबा भी याद पड़ेगा और ड्रामा का राज़ भी बुद्धि में रहेगा, कितनी कमाई है।

यह है सच्ची कमाई, वह कमाई पूरी हुई फिर इस कमाई का चिंतन करो। डिफीकल्ट कुछ भी नहीं है। बाबा का देखा हुआ है सारी जीवन कहानी लिखते हैं-आज इतने बजे उठा, फिर यह किया...... समझते हैं पिछाड़ी वाले पढ़कर सीखेंगे। बड़े-बड़े मनुष्यों की बायोग्राफी पढ़ते हैं ना। बच्चों के लिए लिखते हैं फिर बच्चे भी घर में ऐसे अच्छे स्वभाव के होते हैं। अभी तुम बच्चों को पुरूषार्थ कर सतोप्रधान बनना है।

बाप कहते हैं-तुम बच्चों को अथाह अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए। पढ़ाने वाले को भी याद करना है, भगवान हमारा टीचर है, टीचर को तो सब याद करते हैं। यहाँ रहने वाले बच्चों के लिए तो बहुत सहज है। यहाँ कोई बन्धन तो है नहीं। बिल्कुल ही बन्धनमुक्त हैं। शुरू में भट्ठी बनी तो बन्धनमुक्त हो गये। ओना फुरना सिर्फ सर्विस का ही है। सर्विस कैसे बढ़ायें? बाबा बहुत समझाते रहते हैं। बाबा के पास आते हैं, मास डेढ़ बहुत उमंग रहता है फिर देखो ठण्डे पड़ जाते हैं।

बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको हम याद नहीं कर सकते हैं! माया का आपोजीशन बहुत है इसलिए बाबा कहते हैं-चार्ट रखो और सर्विस का ख्याल करो तो बहुत खुशी होगी। कितनी भी अच्छी मुरली चलाते हैं परन्तु योग है नहीं। बाप से सच्चा बनना भी बड़ा मुश्किल है। अगर समझते हैं हम बहुत तीखे हैं तो बाबा को याद कर चार्ट भेजें तो बाबा समझेंगे कहाँ तक सच है या झूठ? अच्छा, बच्चों को समझाया - सेल्समैन बनना है, अविनाशी ज्ञान रत्नों का। अच्छा!

- बाप बच्चों को समझाते हैं जब यहाँ बैठते हो तो ऐसे भी नहीं कि सिर्फ शिवबाबा की याद में रहना है। वह हो जायेगी सिर्फ शान्ति फिर सुख भी चाहिए। तुमको शान्ति में रहना है और स्वदर्शन चक्रधारी बन राजाई को भी याद करना है। तुम पुरूषार्थ करते ही हो नर से नारायण अथवा मनुष्य से देवता बनने के लिए।

- अभी तो तुम पूज्य देवता बनने के लिए पढ़ते हो। फिर सतयुग में तुम देवता बनेंगे। यह सब बातें सिवाए बाप के कोई समझा न सके। तकदीर में नहीं है तो संशय उठता है-शिवबाबा कैसे आकर पढ़ायेंगे! मैं नहीं मानता। मानते नहीं तो फिर शिवबाबा को याद भी कैसे करेंगे। विकर्म विनाश हो नहीं सकेंगे। यह सारी नम्बरवार राजधानी स्थापन हो रही है। दास-दासियाँ भी तो चाहिए ना। राजाओं को दासियाँ भी दहेज में मिलती हैं। यहाँ ही इतनी दासियाँ रखते हैं तो सतयुग में कितनी होंगी। ऐसा थोड़ेही ढीला पुरूषार्थ करना चाहिए जो दास-दासी जाकर बनें। बाबा से पूछ सकते हो-बाबा अभी मर जायें तो क्या पद मिलेगा? बाबा झट बता देंगे। अपना पोतामेल आपेही देखो। अन्त में नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जानी है। यह है सच्ची कमाई। उस कमाई में रात-दिन कितना बिजी रहते हैं। सट्टे वाले जो होते हैं वह एक हाथ से खाना खाते हैं, दूसरे हाथ से फोन पर कारोबार चलाते रहते हैं। अब बताओ ऐसे आदमी ज्ञान में चल सकेंगे? कहते हैं हमको फुर्सत कहाँ। अरे, सच्ची राजाई मिलती है। बाप को सिर्फ याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। अष्ट देवता आदि को भी याद करते हैं ना। उनकी याद से तो कुछ भी मिलता नहीं। बाबा बार-बार हर एक बात पर समझाते रहते हैं। जो फिर ऐसे कोई न कहे कि फलानी बात पर तो समझाया नहीं। तुम बच्चों को पैगाम भी सबको देना है। एरोप्लेन से भी पर्चे गिराने लिए कोशिश करनी चाहिए। उसमें लिखो शिवबाबा ऐसे कहते हैं। ब्रह्मा भी शिवबाबा का बच्चा है। प्रजापिता है तो वह भी बाप, यह भी बाप। शिवबाबा कहने से भी बहुत बच्चों को प्रेम के आंसू आ जाते हैं। कभी देखा भी नहीं है। लिखते हैं बाबा कब आकर आपसे मिलेंगे, बाबा बन्धन से छुड़ाओ। बहुतों को बाबा का, फिर प्रिन्स का भी साक्षात्कार होता है। आगे चल

बहुतों को साक्षात्कार होंगे फिर भी पुरूषार्थ तो करना पड़े। मनुष्य को मरने समय भी कहते हैं भगवान को याद करो। तुम भी देखेंगे पिछाड़ी में खूब पुरूषार्थ करेंगे। याद करने लगेंगे।

बाप कहते हैं मैं आत्माओं को समझाता हूँ। गाया भी जाता है, आत्माओं और परमात्मा का मेला लगता है, इसमें कोई आवाज़ आदि नहीं करनी है। यह तो पढ़ाई है। दूर-दूर से आते हैं बाबा के पास। निश्चय बुद्धि जो होंगे उनको जोर से कशिश होगी आगे चलकर। अभी इतनी कशिश कोई को होती नहीं है क्योंकि याद नहीं करते हैं। मुसाफिरी से जब लौटते हैं, घर के नजदीक आते हैं तो मकान याद आयेगा, बच्चे याद आयेंगे, घर पहुँचते ही खुशी में आकर मिलेंगे। खुशी बढ़ती जायेगी। पहले-पहले स्त्री याद आयेगी फिर बाल-बच्चे आदि याद आयेंगे। तुमको याद आयेगा कि हम घर जाते हैं वहाँ बाप और बच्चे ही होते हैं। डबल खुशी होती है। शान्तिधाम घर जायेंगे फिर आयेंगे राजधानी में। बस याद ही करना है, बाप कहते हैं मनमनाभव। अपने को आत्मा समझ बाप और वर्से को याद करो। बाबा तुम बच्चों को गुल-गुल बनाकर, नयनों पर बिठाकर साथ ले जाते हैं। ज़रा भी तकलीफ नहीं। जैसे मच्छरों का झुण्ड जाता है ना। तुम आत्मायें भी ऐसे जायेंगी बाप के साथ। पावन बनने के लिए तुम बाप को याद करते हो, घर को नहीं।

जो विश्व का मालिक बनने वाले बच्चे हैं, उनके ख्यालात बहुत ऊंचे और चलन बड़ी रॉयल होगी। भोजन भी बहुत कम, जास्ती हबच नहीं होनी चाहिए। याद में रहने वाले का भोजन भी बहुत सूक्ष्म होगा। बहुतों की खाने में भी बुद्धि चली जाती है। तुम बच्चों को तो खुशी है विश्व का मालिक बनने की। कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। ऐसी खुशी में सदैव रहो तो खान-पान भी बहुत थोड़ा हो जाए। बहुत खाने से भारी हो जाते हैं फिर झुटका आदि खाते हैं। फिर

कहते बाबा नींद आती है। भोजन सदैव एकरस होना चाहिए। ऐसे नहीं कि अच्छा भोजन है तो बहुत खाना चाहिए। अच्छा!

- मीठे-मीठे बच्चे आत्म-अभिमानी होकर बैठे हो? बच्चे समझते हैं आधाकल्प हम देह-अभिमानी रहे हैं। अब देही-अभिमानी हो रहने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। बाप आकर समझाते हैं अपने को आत्मा समझकर बैठो तब ही बाप याद आयेगा। नहीं तो भूल जायेंगे। याद नहीं करेंगे तो यात्रा कैसे कर सकेंगे! पाप कैसे कटेंगे! घाटा पड़ जायेगा। यह तो घड़ी-घड़ी याद करो। यह है मुख्य बात। बाकी तो बाप अनेक प्रकार की युक्तियां बतलाते हैं। रांग क्या है, राइट क्या है - वह भी समझाया है। बाप तो ज्ञान का सागर है। भक्ति को भी जानते हैं। बच्चों को भक्ति में क्या-क्या करना पड़ता है। समझाते हैं यह यज्ञ तप आदि करना, यह सब है भक्ति मार्ग। भल बाप की महिमा करते हैं, परन्तु उल्टी।

- पढ़ाई बिल्कुल सहज है। बाकी याद में अच्छे-अच्छे महारथी भी फेल हैं। याद का जौहर नहीं होगा तो ज्ञान तलवार चलेगी नहीं। बहुत याद करें तब जौहर आये। भल बन्धन में भी हैं फिर भी याद करते रहते तो बहुत फायदा है। कभी बाबा को देखा भी नहीं है, याद में ही प्राण छोड़ देते हैं तो भी बहुत अच्छा पद पा सकते हैं, क्योंकि याद बहुत करते हैं। बाप की याद में प्यार के आंसू बहाते हैं, वह आंसू मोती बन जाते हैं। अच्छा!

- बाप कहते हैं-जो भी देह के सम्बन्ध हैं वह सब छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो। निश्चय आत्मिक बुद्धि बनो। जितना जास्ती याद करेंगे तो ब्रहस्पति की दशा होगी। जांच करो हम शिवबाबा को कितना याद करते हैं! याद से ही कट निकलती जायेगी और तुमको खुशी होगी।

तुम महसूस कर सकते हो, हम आत्मा कितना बाप को याद करते हैं। अगर कम याद करेंगे तो कट भी कम निकलेगी। खुशी भी कम रहेगी। पद भी कम पायेंगे। आत्मा ही सतो रजो तमो बनती है। इस समय का ही गायन है– गोप गोपियों के अतीन्द्रिय सुख का। और कुछ भी याद नहीं पड़ता है सिवाए बाप के, तब ही खुशी का पारा चढ़ेगा। हमारे ऊपर ब्रहस्पति की दशा अथवा सतगुरू की दशा है। फिर कभी खुशी गुम हो जाती है तो कहते हैं ब्रहस्पति की दशा बदल राहू की बैठी है। कोई बहुत साहूकार होते हैं, कोई सट्टा लगाया यह देवाला निकला।

तुम समझते हो हम श्रीकृष्ण की राजधानी में थे, स्वर्ग में तो थे ना। फिर हम चन्द्रवंशी बने। अब फिर सूर्यवंशी बनने के लिए श्रीमत पर चल पावन बन पावन दुनिया के मालिक बनेंगे। हर एक अपनी अवस्था को देख सकते हो। अगर हम इस समय शरीर छोड़ दें तो किस गति को पायेंगे। हर एक समझ सकते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतने विकर्म विनाश होंगे। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो बहुत कम याद करते हैं इसलिए बाबा कहते हैं अपना कल्याण चाहते हो तो अपने पास नोटबुक रखो। चार्ट नोट करो। हम सारे दिन में कितना समय याद में रहे। मनुष्य तो सारी जीवन की भी हिस्ट्री लिखते हैं। तुमको तो सिर्फ याद का चार्ट लिखना है, अपनी ही उन्नति है। बाबा को याद नहीं करेंगे तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। विकर्म विनाश ही नहीं होंगे तो ऊंच पद कैसे पायेंगे। फिर सजायें खानी पड़ेगी। मोचरा जो नहीं खायेंगे तो पद अच्छा मिलेगा। मोचरा खाकर फिर कुछ थोड़ा बहुत पद पाना वह क्या काम का। धर्मराज का मोचरा न खायें, बेइज्जती न हो– यह पुरूषार्थ करना है। तुम देखते हो शिवबाबा बैठा रहता है फिर धर्मराज भी है। तुमको सब साक्षात्कार कराते हैं। तुमने यह-यह किया था, याद है? अब खाओ सजा। फिर उसी समय सजायें उतनी ही खाते हैं, जितनी जन्म-जन्मान्तर खाते हैं। पिछाड़ी में थोड़ा रोटी टुक्कड़ मिला, उससे क्या फायदा। मोचरा तो नहीं खाना चाहिए। अपनी अवस्था की जांच

करनी है। जैसे पोतामेल निकालते हैं। कोई 6 मास का, कोई 12 मास का। कोई तो रोज का भी निकालते हैं।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना और जो योगयुक्त सर्विसएबुल बच्चे हैं, वह इसका अर्थ झट समझ लेते हैं। हम रात के राही अर्थात् ब्राह्मणों की अब रात पूरी हुई है। भक्ति मार्ग को रात कहा जाता है। आधाकल्प रात का पूरा होता है। हद का भी दिन और रात है। यह फिर ब्राह्मणों का आधाकल्प दिन और आधाकल्प रात होती है। इस समय जबकि बाप आते हैं तो अन्धियारा है। प्रभात होने का पहला पूर है, सवेरा हो रहा है। बच्चे जानते हैं अब बाप कहते हैं, मीठे-मीठे बच्चे याद की यात्रा में थक नहीं जाना। जैसे जिस्मानी यात्रा होती है। आगे पैदल जाते थे। बहुत धीरे-धीरे, बीचबी च में मंजिल बनी रहती है। मालूम रहता है, हमको फलानी-फलानी मंजिल पर ठहरना है। आगे बहुत श्रधा से पैदल जाते थे, उसमें बड़ी मेहनत है। अब यह तो बहुत सहज है। इसको कहा जाता है सहज याद वा योग। सिर्फ बाप को याद करना है, थकने का मतलब ही है देह-अभिमानी बनना। हाँ इसमें कोई शक्य नहीं, माया के विघ्न पड़ेंगे। परन्तु इसमें थक नहीं जाना है। थक जाने से देह-अभिमान आ जाता है। बाप कहते हैं-बच्चे शरीर निर्वाह के लिए काम तो करना है, उसके लिए छुट्टी है। 8 घण्टा शरीर निर्वाह, 8 घण्टा आराम, बाकी 8 घण्टा इसमें दो। अभी तो पूरा 8 घण्टा कोई देते नहीं। अन्त में 8 घण्टा तक रहेंगे। चार्ट को बढ़ाते रहो। यहाँ जब आकर बैठते हो तो याद दिलाई जाती है, जिसको तुम नेष्ठा कहते हो। बाबा की याद में आकर बैठते हो। इसका मतलब यह नहीं कि सिर्फ यहाँ आकर याद में बैठना है। ऐसे बहुत हैं– समझते हैं 5-10 मिनट योग करके उठें। परन्तु बाप तो कहते हैं धन्धाधोरी करते, कहाँ आते जाते हो तो भी तुम योग में रहो। कहाँ गंगा स्नान आदि करने जाते हैं तो राम-राम जपते हैं ना। यहाँ तुमको कुछ सिमरना नहीं है, सिर्फ बाप को याद करना है। यह बाप बच्चों से ही बात कर रहे हैं। तुम्हारा कल्याण ही है याद की यात्रा में, इसमें थकना नहीं है। इसमें तूफान

बहुत आयेंगे। तूफान कोई मिट्टी आदि के नहीं। माया के तूफान आने से बुद्धि का योग टूट जाता है। फिर देह- अभिमान में आने से धन्धाधोरी बच्चे याद आ जाते हैं। बाप कहते हैं-अब तो यह धन्धाधोरी आदि सब खलास हो जाने हैं। तुम्हारे बच्चे वारिस बनने ही नहीं हैं। सब खत्म हो जाने हैं। अभी तो वारिस बेहद के बाप के खड़े हैं। हद का वर्सा मुर्दाबाद होना है। साहूकार लोग समझते हैं अब बच्चा बड़ा होगा, शादी करेगा फिर यह होगा। बाप कहते हैं-अभी इतना टाइम नहीं है इसलिए दुनिया से बिल्कुल मोह हटा दो। यह तो कब्रिस्तान है। धन्धाधोरी बच्चों आदि के चिंतन में मरेंगे तो मुफ्त अपनी बरबादी कर देंगे। शिवबाबा को याद करेंगे तो आबादी बहुत होगी। देह-अभिमान में आने से बरबादी होती है। देही- अभिमानी बनने में आबादी होती है। जितना याद करेंगे उतना भविष्य 21 जन्म वर्सा पायेंगे। याद नहीं करेंगे तो बहुत घाटा पड़ जायेगा। वह फिर कल्प-कल्पान्तर के लिए हो जायेगा। इतनी बड़ी घाटे की बात है। ख्याल करना चाहिए– हम पूरा वर्सा कैसे पायें। धन की भी बहुत लालच नहीं रखनी चाहिए। टूमच में नहीं जाना चाहिए। कोई देवाला मारते हैं तो बहुत फिकरात हो जाती है।शिवबाबा को बिल्कुल भूल जाते हैं। फिर दोष रखते कि ज्ञान में आये हैं तब देवाला मारा है। बीमार हो पड़े हैं। यह कभी नहीं समझना चाहिए। बीमारी आदि होती है, यह तो कर्मभोग है। अच्छा है विकर्म विनाश हो जायेंगे। धर्मराज के डन्डे खाने से तो बीमारी अच्छी है ना। कर्मभोग चुक्तू करना है। यह तो महारोगी शरीर है। कितनी सम्भाल की जाती है। चलते-चलते खड़े हो जाते हैं। हार्टफेल हो जाते हैं। ऐसी पुरानी दुनिया को तो बुद्धि से एकदम भूल जाना चाहिए। बच्चे देखते हैं बाप नया घर बना रहे हैं तो पुराने से एकदम दिल हट जाती है। कहते हैं बाबा जल्दी से मकान बनाओ। पुराने मकान में तकलीफ बहुत है। तुम भी जानते हो– यह पुरानी दुनिया तो बहुत गन्दी है। तुम्हारा यह है बेहद का सन्यास। वह सन्यास करते हैं घरबार का। उसको हद का सन्यास कहा जाता है। तुम सन्यास करते हो– विकारों का। बाप कहते हैं-देह सहित देह के जो भी तुम्हारे सम्बन्ध हैं, सबको तोड़ मामेकम् याद करो। यह दुनिया जो इन आंखों से देखते हो, इनको भूल जाओ। अभी तुम्हारी बुद्धि जानती है, हम स्वर्ग की राजधानी के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। यह सब कब्रिस्तान हो जाना है, इससे प्यार नहीं रखना है। आजकल मनुष्यों के पास

पैसे बहुत हैं तो विकार भी तेज हो गये हैं। काम विकार कितना तेज है। काम बिगर रह नहीं सकते। 4-5 वर्ष पवित्र रह फिर लिखते हैं बाबा आज इनको भूत लगा, काला मुँह कर दिया। कितना धक्का खाया।

शरीर निर्वाह अर्थ भी कर्म तुमको जरूर करना है। हाँ जो सर्विसएबुल बच्चे हैं-पाण्डव, वह तो गवर्मेन्ट से पालना ले सकते हैं। उनकी सारी सम्भाल हमको करनी पड़े। अवस्था बच्चों की ऐसी होनी चाहिए, बाबा की याद में इस दुनिया का सब कुछ भुलाना है। याद की यात्रा में जो पक्का मस्त रहेगा उनकी अवस्था भी बहुत मजबूत होगी। जैसेकि शिवबाबा की याद में रह तुम शरीर छोड़ते हो। सन्यासी ब्रह्म की याद में शरीर छोड़ते हैं तो भी वायुमण्डल में बिल्कुल सन्नाटा हो जाता है। बाबा को अनुभव है। मनुष्य मरते हैं तो घर में सन्नाटा हो जाता है ना, इसमें भी ऐसे होता है। पिछाड़ी में जैसेकि सब कुछ भूल जाते हैं। अब हमको वापिस घर जाना है। देह-अभिमान छूटता जाता है। पिछाड़ी में शरीर खुशी से छोड़ना चाहिए, हर्षितमुख। बस। हम कहाँ जा रहे हैं, ऐसी अवस्था जब होगी तब विजय माला में पिरोने लायक बनेंगे। तुम्हारे में शान्ति की करेन्ट है। कोई भी आते हैं तो कहते हैं– यहाँ शान्ति बहुत है। यह है रीयल शान्ति। आत्मा शरीर से डिटैच हो जाती है। तुम जानते हो– हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं। हम अपने स्वधर्म में बैठ जाते हैं। कर्म के बिना तो कोई मनुष्य रह नहीं सकते। वो लोग हठयोग से क्याक् या नहीं करते हैं। तुम अब समझते हो हमारा स्वधर्म ही शान्ति है। यहाँ हम आये हैं पार्ट बजाने। अब वापिस घर जाना है। बाप कहते हैं-मुझे याद करो और घर को भी याद करो। बाप को याद करने से वर्सा मिलेगा। बाप कहते हैं- मुझे भी घर में याद करो। यहाँ तो मैं टैम्प्रेरी आता हूँ। तुम्हारी बुद्धि शान्तिधाम में टिकनी चाहिए– बाबा की याद में। घर का भी वर्सा लेना है ना। वह है आत्माओं का घर। यह है जीव-आत्माओं का घर। अपने घर को भी नहीं भूलो। बाप को भी नहीं भूलो। बाप को याद करने से ही पवित्र बन घर चले जायेंगे। ज्ञान को धारण करने से फिर राजाई करने आयेंगे नई दुनिया में। जितना हो सके औरों को रास्ता बताते जाओ। आलवेज सी

फादर। तुम जानते हो बाप ने क्या किया! सब कुछ माताओं को दे दिया। उसने ही डायरेक्शन दिया कि सब कुछ माताओं की सर्विस में लगाओ। एक को देख दूसरों ने फालो किया। स्वाहा हो गये। परन्तु फिर जब टिक भी सकें ना।

- बाप का बनने से वह शिक्षा देते हैं, तुम्हारी बुद्धि में अब सारा ज्ञान है। 84 का चक्र भी तुमको समझाया जाता है। जो 84 जन्म लेने वाले नहीं होंगे वह समझेंगे नहीं। तुम समझते हो बरोबर हम 84 का चक्र लगाकर अब वापिस जाते हैं। बाप कहते हैं- तुम आत्मा अशरीरी आई थी फिर अशरीरी होकर वापिस जाना है। तुम पवित्र आत्मायें होकर जाती हो। पवित्र बनने के लिए तुम पुरूषार्थ कर रहे हो। योगबल अर्थात् याद बल से तुम पवित्र बन जायेंगे। योग अक्षर शास्त्रों का है। राइट अक्षर है याद । स्त्री को पति की अथवा पुरूष को पत्नी की याद रहती है ना। योग का अर्थ ही है याद । बाप भी कहते हैं- मामेकम् याद करो और संग बुद्धियोग तोड़ मुझ अपने बाप के साथ बुद्धि योग जोड़ो। याद करो। जितना याद करेंगे उतना तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।

- योगियों की आयु बड़ी रहती है। भोगी की आयु छोटी होती है। ईश्वर ने बच्चों को पवित्र बनाए योग सिखाकर देवता बनाया है, इनको कहा जाता है योगी। योगी अथवा ऋषि पवित्र होते हैं। तुमको समझाया है– तुम हो राजऋषि। राजयोग सीख रहे हो, राजाई पद पाने के लिए। इस समय बाप को याद करना है, यहाँ कोई उल्टी आश नहीं रखनी है कि बच्चा पैदा हो। फिर भी विकार में जाना पड़े ना, काम कटारी चलानी पड़े। देह-अभिमानी काम कटारी चलाते हैं। देही-अभिमानी काम कटारी नहीं चलाते हैं। बाप समझाते हैं पवित्र बनो। आत्माओं से बात करते हैं, अब यह काम कटारी नहीं चलाओ। पवित्र बनो तो तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जायेंगे। तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बेहद का बाप कहते हैं– मामेकम् याद करो तो बेहद का वर्सा मिलेगा। प्रोजेक्टर, प्रदर्शनी में पहले यह समझाओ। इस पुरूषार्थ से तुम यह बनेंगे। अब है

संगम। कलियुग से सतयुग बनना है। तुम भारतवासी सतोप्रधान थे, अब तमोप्रधान बने हो। अब बाप कहते हैं– मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अक्षर ही दो हैं। अल्फ को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी। इस याद से खुशी में रहेंगे, इस छी-छी दुनिया में कोई भी प्रकार की आश नहीं रखो। यहाँ तुम पुरूषार्थ करते हो– जीते जी मरने के लिए। वह तो मरने के बाद कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तुम सबको कहते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए बाप को याद करते हैं। उससे बेहद का सुख मिलता है। बाप को याद करने से तुम कब रोयेंगे, पीटेंगे नहीं। तूफान माया के आते हैं, उसका ख्याल नहीं करो। माया के तूफान तो आयेंगे। यह है युद्ध। संकल्प-विकल्प आते हैं, तो मुफ्त में टाइम जाता है। तूफान तो पास हो जायेगा, सदैव थोड़ेही रहेगा। सवेरे उठकर बाप को याद करना है, बाप से वर्सा लेना है। यह धुन अन्दर लगी रहे। बाप और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ बाप को याद करना है। और सबको भूल जाओ, यह सब मरे हुए हैं। आपस में यही बातें करते रहो। बाबा अब तो सिर्फ आपको ही याद करेंगे। आप से स्वर्ग का वर्सा लेंगे। टाइम रख दो– हम 3-4 बजे जरूर उठकर बाप को याद करेंगे। चक्र भी याद रखना है। बाप ने हमें रचता और रचना की नॉलेज दी है। हम इस मनुष्य सृष्टि झाड़ को जानते हैं। हम 21 जन्म कैसे लेते हैं-यह बुद्धि में है। अभी फिर हम जाते हैं, स्वर्ग में फिर से आकर पार्ट बजायेंगे। हम आत्मा हैं, आत्मा को ही राज्य मिलता है। बाप को याद करने से वर्से के हकदार बन जाते हैं। यह राजयोग है। बाप को याद करते हैं। बेहद के बाप द्वारा अनेक बार विश्व के मालिक बने हैं, फिर नर्कवासी बने हैं। अब फिर स्वर्गवासी बनते हैं– एक बाबा की याद से। बाप की याद से ही पाप भस्म हो जायेंगे इसलिए इसको योग अग्नि कहा जाता है। तुम ब्राह्मण हो राजऋषि, ऋषि हमेशा पवित्र होते हैं, बाप को याद करते और राजाई का वर्सा लेते हैं। अब थोड़ेही विकार के लिए आश रखनी है। यह छी-छी आश है। अब तो पारलौकिक बाप से वर्सा लेना है। बीमार होते भी याद कर सकते हो। बाप को भी बच्चे प्यारे होते हैं। बाबा को कितने बच्चों को पत्र आदि लिखने पड़ते हैं। शिवबाबा लिखवाते हैं। तुम भी पत्र लिखते हो– शिवबाबा केयरआफ ब्रह्मा। हम सब शिवबाबा के बच्चे ब्रदर्स हैं। रूहानी बाप आकर हमको

पावन बनाते हैं, इसलिए कहा जाता है– पतित-पावन। सभी आत्माओं को पावन बनाते हैं। कोई को भी छोड़ता नहीं हूँ, प्रकृति भी पावन बनती है। तुम जानते हो सतयुग में प्रकृति भी पावन रहेगी। अभी शरीर भी पतित है तब तो गंगा में शरीर धोने जाते हैं, लेकिन आत्मा तो पावन होती नहीं। वह तो होगी– योग अग्नि से। अच्छा!

इन लक्ष्मी-नारायण जैसा साहूकार कोई होगा? अल्लाह अवलदीन की भी स्टोरी बनाते हैं। ठका करने से कुबेर का खजाना निकल गया। बहुत किसमकिसम के नाटक बनाते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है– यह शरीर छोड़ स्वर्ग में जायेंगे। हमको कारून का खजाना मिलेगा। बाप कहते हैं- मुझे याद करने से माया एकदम भाग जायेगी। बाप को याद नहीं करते तो माया फिर तंग करती है। कहते हैं बाबा हमको माया के तूफान बहुत आते हैं। अच्छा बाप को बहुत प्यार से याद करो तो तूफान उड़ जायेंगे। बाकी नाटक आदि बैठ बनाये हैं। बात है कुछ भी नहीं। बाप कितना सहज बताते हैं– सिर्फ बाप को याद करो तो तुम्हारे में जो अलाए है वह निकल जायेगी और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। आत्मा जो पवित्र सच्चा सोना थी, वह अब झूठी बन गई है फिर सच्ची बनेगी– इस याद अग्नि से। आग में डालने बिगर सोना पवित्र हो न सके। इसको भी योग अग्नि कहते हैं। है याद की बात। वो लोग तो अनेक प्रकार के हठयोग सिखलाते हैं। तुमको तो बाप कहते हैं- उठते बैठते याद करो। आसन आदि कहाँ तक तुम लगायेंगे। यह तो चलते फिरते काम करते याद में रहना है। भल बीमार हो तो यहाँ लेटकर भी बाप को याद कर सकते हो। शिवबाबा को याद करो और चक्र फिराओ, बस। उन्होंने फिर लिखा है गंगा का तट हो, अमृत मुख में हो। गंगा के किनारे तो गंगाजल ही मिलता है, इसलिए मनुष्य हरिद्वार में जाकर बैठते हैं। बाप तो कहते हैं तुम कहाँ भी बैठो, भल बीमार हो सिर्फ बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो तब प्राण तन से निकलें। यह प्रैक्टिस करनी पड़े। उस भक्ति मार्ग की बातों में और इस ज्ञान मार्ग की बातों में कितना रात दिन का फर्क है। बाप की याद से तुम स्वर्ग के

मालिक बन जायेंगे। वह तो लड़ाई वालों को कहते हैं– जो युद्ध के मैदान में मरेगा वह स्वर्ग में जायेगा। वास्तव में युद्ध यही है। उन्होंने कौरवों, पाण्डवों का लश्कर दिखाया है।

तुमको कहते हैं तुम भारत की क्या सेवा करते हो? बोलो हम हैं रूहानी सेवाधारी। स्वर्ग का उद्घाटन करा रहे हैं, स्थापना करा रहे हैं। शिवबाबा है करनकरावनहार, जो करा रहे हैं। वह करता भी है। मुरली कौन चलाता है? तो कर्म करता है! तुमको भी सिखलाते हैं कि ऐसे चलाओ। महामन्त्र देते हैं मनमनाभव। कर्म सिखलाया ना। फिर तुमको कहते हैं औरों को सिखलाओ, इसलिए करनकरावनहार कहा जाता है। तुम बच्चे भी यही शिक्षा देते हो। बाप को याद करो और वर्से को याद करो। यही तुम बच्चों को पैगाम पहुँचाना है। ऐसे नहीं दूसरे को पैगाम दे और खुद याद में न रहे फिर क्या होगा। दूसरे पुरूषार्थ कर ऊंच चढ़ जायेंगे, मैसेज देने वाले रह जायेंगे। याद का पुरूषार्थ न करने से इतना ऊंच पद नहीं पाते हैं। दूसरे याद की यात्रा से पावन बन जाते हैं। जैसे बाबा बांधेलियों का मिसाल देते हैं। वह याद में जास्ती रहती हैं, बिगर देखे भी पत्र लिखती हैं। बाबा हम आपके हो चुके हैं, हम पवित्र जरूर रहेंगे। तुम बच्चों की है बाप से प्रीत बुद्धि। तुम्हारी ही माला बनी हुई है। विष्णु की माला और रूद्राक्ष की माला में ऊपर है मेरू। माला उठाते ही पहले फूल और दो दाने हाथ में आते हैं, उनको नमस्कार करते हैं। फिर है माला। तुम भारत को स्वर्ग बना रहे हो तो यह माला तुम्हारा ही याद गार है। बाप ने यह गीता ज्ञान यज्ञ रचा है, इनमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होगी। बाप है मोस्ट बिलवेड फादर। तुमको भविष्य के लिए सदा सुख का वर्सा देते हैं– 21 जन्म के लिए। जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया है वह जरूर आयेंगे, ड्रामा प्लैन अनुसार। बाप कहते हैं बच्चे सुखधाम चलना है तो पवित्र बन्ना है। मेरे को याद करो, मांगना कुछ भी नहीं है कि कृपा करो वा मदद करो। नहीं। हम तो सबको मदद करते हैं। पुरूषार्थ तो तुमको करना है। आशीर्वाद की बात नहीं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। याद करना तुम्हारा काम है। डायरेक्शन देना– यही कृपा है। बाकी तो भल खाओ,

पियो, घूमो, फिरो... तुम्हें पवित्र भोजन ही खाना है। हम देवी-देवता बनते हैं, वहाँ प्याज आदि थोड़ेही होगा। यह सब यहाँ छोड़ना है। यह चीजें वहाँ होती नहीं। बीज ही नहीं है। जैसे सतयुग में बीमारी आदि होती नहीं। अभी देखो कितनी बीमारियां निकली हैं। वहाँ तमोगुणी कोई चीज होती नहीं। हर चीज सतोप्रधान। यहाँ देखो मनुष्य क्या-क्या खाते हैं। अब बाप बच्चों को कहते हैं– मुझे याद करो और संग तोड़ मुझ संग जोड़ो तो तुम पावन बन जायेंगे। अच्छा!

बाबा कहते हैं- मुझे याद करो अर्थात् अशरीरी बनो अर्थात् डेड साइलेन्स। जैसे मनुष्य मरते हैं तो डेड साइलेन्स हो जाती है। कहते हैं इनका शरीर शान्त हो गया। शरीर और आत्मा अलग हो गई, खत्म हो गया। यहाँ भी तुम बच्चे जब बैठते हो तो इसको डेड साइलेन्स कहा जाता है। जीते जी अशरीरी बन जाओ। अपने को आत्मा समझो, बाप को याद करो। तुम जानते हो यह सच्ची शान्ति है। वो लोग शान्ति को नहीं जानते। डेड साइलेन्स का अर्थ तो जानते ही नहीं। डेड साइलेन्स क्यों कहते हैं? याद दिलाते हैं- वह मर गया, शान्त हो गया। तुम भी मर जाओ, तुम भी शान्त हो जाओ। बड़े-बड़े लोग गांधी की समाधि पर जाते हैं। वहाँ जाकर कहेंगे डेड साइलेन्स अर्थात् शान्ति में बैठो। तुमको भी मालूम है हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं, दुनिया को पता ही नहीं। हम अपने स्वरूप में टिक जाते हैं, हमारा स्वधर्म है शान्त।

बच्चे भी समझते हैं, बाप भी समझते हैं कि बच्चे (योग कराने वाले) यहाँ क्या कर रहे हैं! याद के यात्रा की ड्रिल करा रहे हैं। मुख से कुछ भी कहने का नहीं है। किसकी याद है? परमपिता परमात्मा शिवबाबा की। उनकी याद में रहने से हमारे जो भी विकर्म हैं, वह भस्म हो जायेंगे और विकर्माजीत बन जायेंगे, जितना जो याद की ड्रिल में रहेंगे। यह आत्मा की ड्रिल है, शरीर की नहीं। भारत में जो भी ड्रिल सिखाते हैं, वह सब हैं जिस्मानी, यह है रूहानी ड्रिल। इस रूहानी ड्रिल को तुम बच्चों के सिवाए कोई जानते ही नहीं। रूहानी ड्रिल का इशारा गीता में है जरूर।

भगवानुवाच अथवा भगवान के बच्चों का भी वाच है। तुम अभी भगवान शिवबाबा के बच्चे बने हो ना। बच्चों को फरमान मिला है– मामेकम् याद करो। बाप भी ड्रिल सिखलाते हैं। बच्चे भी यही ड्रिल सिखलाते हैं। कल्प पहले भी बाप ने यही कहा था कि मुझ बाप को याद करो। इसमें घड़ी-घड़ी कहने की दरकार नहीं है, परन्तु कहना पड़ता है। यहाँ बैठे कोई अपने मित्र-सम्बन्धियों, धन्धे आदि को याद करते रहते हैं तो वायुमण्डल में विघ्न डालते हैं। बाप कहते हैं- जैसे यहाँ तुम याद में बैठे हो ऐसे ही चलते फिरते, कर्म करते हुए याद में रहना है। जैसे आशिक माशुक एक दो को याद करते हैं। उन्हों की याद है जिस्मानी। तुम्हारी है रूहानी याद । आत्मायें भक्ति मार्ग में भी आशिक होती हैं परमपिता परमात्मा माशुक की। परन्तु माशुक को जानते नहीं हैं, न अपनी आत्मा को जानते हैं। माशुक बाप आया हुआ है। भक्ति मार्ग से लेकर आत्मायें आशिक बनी हैं। यह है ही आत्माओं और परमात्मा की बात। बाप बच्चों को सम्मुख कहते हैं– तुम आशिक मुझ माशुक को याद करते हो कि बाबा आओ। हमको आकर दु:ख से लिबरेट करो और अपने साथ शान्तिधाम में ले चलो। तुम जानते हो अब इस दु:खधाम, मृत्युलोक का विनाश होना है। अमरलोक जिंदाबाद, मृत्युलोक मुर्दाबाद। तुम अभी ब्राह्मण बच्चे बने हो, तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार हैं।

माया के तूफान तो बहुत आयेंगे। बेहद की बक्सिंग हैं। हर एक की 5 विकारों के साथ युद्ध चलती है। हम चाहते हैं बाबा को निरन्तर याद करें। माया हमारा योग उड़ा देती है। एक खेल भी दिखाते हैं– परमात्मा अपनी तरफ खींचते हैं, माया अपनी तरफ। ऐसा एक नाटक बनाया है। बाइसकोप का फैशन अभी निकला है। तुमको ड्रामा अनुसार बाइसकोप पर ही समझाना था। नाटक में तो बदली-सदली होती है। यह तो अनादि अविनाशी ड्रामा बना बनाया है।

सुई पर जंक चढ़ी हुई होती है तो चुम्बक इतना खींचता नहीं है। जिनका पूरा योग होगा उनको झट कशिश होगी, भाग आयेंगे। जितनी कट उतरती जायेगी, उतनी कशिश होगी। हम चुम्बक से मिलें। गीत है चाहे मारो, चाहे कुछ भी करो... हम दर से कभी नहीं निकलेंगे। परन्तु वह अवस्था तो पिछाड़ी में होगी। कट निकली हुई होगी तो वह अवस्था होगी। बाप कहते हैं- हे आत्मायें मनमनाभव, रहो भल अपने गृहस्थ व्यवहार में। ऐसे नहीं कि यहाँ भागकर आए बैठ जाना है। सागर पास बादलों को आना है– रिफ्रेश होने। फिर सर्विस पर जाना है। बन्धन जब खलास हो तो सर्विस पर जा सकें। माँ-बाप को अपने बच्चों को सम्भालना है। बाप की याद में रहना है। पवित्र बनना है।

लंका और द्वारिका के लिए कहते हैं– समुद्र के नीचे चली गई। अभी तो है नहीं। सोने के महल आदि सब थे ना। जब मन्दिरों आदि में हीरे-जवाहरात लगा सकते हैं, तो वहाँ क्या नहीं होगा! कितनी तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। बाबा फिर से आया हुआ है। कहते हैं बाप को याद करो। याद एक को ही करना है, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। परन्तु वह भूल जाते हैं और देहधारी की याद आ जाती है। देहधारी की याद से तो कुछ भी फायदा नहीं। बाप कहते हैं- मामेकम् याद करो। किसी भी देहधारी को याद नहीं करो। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना.... एक बाप की याद से ही कमाई है। हम शिवबाबा के बच्चे हैं, उनसे वर्सा लेना है। इस समय बाप को याद नहीं किया तो फिर बहुत पछताना पड़ेगा, रोना पड़ेगा। विश्व के मालिक बनने वालों को रोने की क्या दरकार है। तुम बाप को भूलते हो तब ही माया थप्पड़ लगाती है इसलिए बाबा बार-बार समझाते हैं कि बाप को और वर्से को याद करो। अमरनाथ ने अमरपुरी में एक पार्वती को तो बैठ अमरकथा नहीं सुनाई होगी। जरूर बहुत होंगे। जो भी मनुष्य मात्र हैं सबको बाप समझाते हैं कि अब पतित मत बनो, यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। वहाँ स्वर्ग में कोई विकार नहीं होते।

बाप समझाते हैं- पहले, बाप को याद करो। नहीं तो माया एकदम थप्पड़ मार देगी। छुईमुई का एक झाड़ होता है। हाथ लगाओ तो मुरझा जाये। तुम्हारा भी ऐसा ही हाल होता है, बाप को याद नहीं किया और खलास। गीत में भी सुना– बचपन के दिन भुला नहीं देना। बाप को भूले तो कहाँ न कहाँ चोट लग जयेगी। बाप कहते हैं- तुम हमारे बच्चे हो ना। यह शरीर तो विष से पैदा हुआ है। वह इनके लौकिक माँ-बाप हैं। यह तो है पारलौकिक बाप और इनको फिर अलौकिक बाप कहा जाता है। यह हद का था, फिर बेहद का बन गया। अभी देखो यह लौकिक बच्ची (निर्मलशान्ता) बैठी है। यह लौकिक भी है, अलौकिक भी है, पारलौकिक भी है। बाकी शिवबाबा के तो भाई-बहिन है नहीं। न लौकिक, न अलौकिक, न पारलौकिक। कितना फर्क है। एक बाप का बनना मासी का घर नहीं है। ऐसे बाप से सम्बन्ध जोड़ना है, टाइम लगता है। शिवबाबा की याद में रहना बड़ी मेहनत है। कई 50 वर्ष से रहने वाले भी सारा दिन शिवबाबा को याद भी नहीं करते, ऐसे भी हैं। और सबको भूल एक को याद करना बहुत-बहुत मेहनत है। कोई 1 परसेन्ट याद करते हैं, कोई 2 परसेन्ट, कोई 1/2 परसेन्ट भी मुश्किल याद करते हैं। यह बड़ी भारी मंजिल है। तो बाप समझाते हैं-बचपन को नहीं भूलना। बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। तुम जानते हो हम जीते जी मरकर बाप के आकर बने हैं– नई दुनिया में जाने के लिए। तो तुम्हें स्थाई खुशी रहनी चाहिए, ओहो! हम डबल सिरताज बनेंगे! मनुष्य थोड़ेही जानते हैं कि सतयुग में इन देवताओं को 16 कला सम्पूर्ण और 14 कला सम्पूर्ण क्यों कहते हैं? कुछ भी नहीं जानते हैं।

कोई भी आये उनको रास्ता बतायें जो बेड़ा पार हो जाए। तुम्हारे पास बहुत भारी धन है। कोई भी भिखारी आये वा लखपति आये तो तुम उनको भी बहुत रत्न दे सकते हो। बाबा यहाँ नशा चढ़ाता है फिर सोडावाटर हो जाता है। बाबा तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भर देते हैं।

परन्तु नम्बरवार हैं। किसकी तकदीर में है तो पूरी रीति धारण कर लेते हैं। बाबा कहते हैं-कोशिश कर तुम निरन्तर याद में रहो। ऐसे नहीं कि सेन्टर में जाकर एक जगह बैठना है। नहीं, चलते-फिरते जो भी समय मिले बाप को याद करते रहना है। हथ कार डे, दिल अर्थात् बुद्धि का योग बाप के साथ हो। बाप की याद से तुम्हारा बहुत कल्याण होगा। 21 जन्म के लिए तुम साहूकार बन जाते हो। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। भारत स्वर्ग था। अब नर्क है।

यह फुरना चाहिए कि मुझ आत्मा को बाप को जरूर याद करना है तब पावन बन सकते हैं। मेहनत जो कुछ है, वह यही है, जो मेहनत बच्चों से पहुँचती नहीं है। माया बहुत हैरान करती है। एक बाप की याद भुला देती है, दूसरे की याद आ जाती है। बाप अथवा साजन को याद नहीं करते हैं। ऐसे साजन को तो कम से कम 8 घण्टा याद करने की सर्विस देनी है अर्थात् साजन को मदद देनी है– याद करने की। अथवा बच्चों को बाप को याद करना चाहिए– यह है बहुत बड़ी मेहनत। गीता में भी है मनमनाभव। बाप को याद करते रहो। उठते-बैठते, चलते-फिरते एक बाप को ही याद करते रहो और कुछ नहीं। पिछाड़ी को यह याद ही काम आयेगी। अपने को आत्मा अशरीरी समझो, अब हमको वापिस जाना है। यह मेहनत बहुत करनी है। सवेरे स्नान आदि करके फिर एकान्त में ऊपर छत पर वा हाल में आकर बैठ जाओ। जितना एकान्त हो उतना अच्छा है। हमेशा यही ख्याल करो कि हमको बाप को याद करना है। बाप से पूरा वर्सा लेना है। यह मेहनत हर 5 हजार वर्ष बाद तुमको करनी पड़ती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग– कहाँ भी तुमको यह मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। इस संगम पर ही तुमको बाप कहते हैं कि मुझे याद करो, बस। यही वेला है जब बाप कहते हैं मुझे याद करो। बाप आते भी संगम पर हैं और कभी बाप आते ही नहीं। तुम भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हो। बहुत बच्चे बाप को भूल जाते हैं इसलिए बहुत धोखा खाते हैं, रावण बहुत धोखेबाज है। आधाकल्प का यही दुश्मन है इसलिए बाप कहते हैं रोज सवेरे उठकर यह विचार सागर मंथन करो और यही चार्ट

रखो– कितना समय हमने बाप को याद किया! कितनी जंक उतरी होगी! सारा मदार याद के ऊपर है। बच्चों को पूरी कोशिश करनी है, अपना पूरा वर्सा पाने लिए। नर से नारायण बनना है। यह है सच्ची सत्य नारायण की कथा। भक्त लोग पूर्णमासी के दिन सत्य नारायण की कथा करते हैं। अभी तुम जानते हो 16 कला सम्पूर्ण बनना है। वह बनेंगे सत्य बाप को याद करने से। बाप है श्रीमत देने वाला। बाप कहते हैं गृहस्थ में रहो, धन्धा-धोरी आदि कुछ भी करो। बाप को याद जरूर करना है और पावन बनना है। बस। याद नहीं करेंगे तो रावण से कहाँ न कहाँ धोखा खाते रहेंगे इसलिए मूल बात समझाते हैं याद की। शिवबाबा को याद करना है। देह सहित देह के जो भी सम्बन्धी हैं उनको भूल अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप बार-बार समझाते हैं– अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। नहीं तो फिर अन्त में बहुत-बहुत पछतायेंगे। बहुत धोखा खायेंगे। कोई ऐसा जोर से थप्पड़ लगेगा जो माया एकदम काला मुँह करा देगी। बाप आये हैं गोरा मुँह बनाने। इस समय सब एक दो का काला मुँह करते रहते हैं। गोरा बनाने वाला एक ही बाप है, जिसकी याद से तुम गोरे स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह है ही पतित दुनिया। बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। बाकी तुम्हारे धन्धे-धोरी आदि से बाबा का कोई सम्बन्ध नहीं है। शरीर निर्वाह अर्थ तुमको जो करना है सो करो। बाप तो सिर्फ कहते हैं मनमनाभव। तुम कहते भी हो हम कैसे पावन दुनिया का मालिक बनें। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। बस। और कोई उपाय पावन बनने का है नहीं। कितना भी दान-पुण्य आदि करें, कितनी भी मेहनत करें। चाहे आग से आते जाते रहें, कुछ भी काम नहीं आ सकता– सिवाए एक बाप की याद के। बहुत सिम्पल बात है, इसको कहा जाता है– सहज योग। अपने से पूछो हम अपने मीठे-मीठे बाप को सारे दिन में कितना याद करते हैं! नींद में तो कोई पाप नहीं होते हैं। अशरीरी हो जाते हैं। बाकी दिन में बहुत पाप होते रहते हैं और पुराने पाप भी बहुत हैं। मेहनत करनी है याद की। यहाँ आते हो तो यह मेहनत करनी है। बाहर के वाह्यात संकल्पों को उड़ा दो। नहीं तो वायुमण्डल बड़ा खराब कर देते हैं। घर के, खेती-बाड़ी के ख्यालात चलते रहते हैं। कभी बच्चे याद पड़ेंगे, कभी गुरू की याद आयेगी। संकल्प चलते रहेंगे तो वायुमण्डल को

खराब कर देंगे। मेहनत नहीं करने वाले विघ्न डालते हैं। यह इतनी महीन बातें हैं। तुम भी अभी जानते हो– फिर कभी नहीं जानेंगे। बाप अभी ही वर्सा देते हैं फिर आधाकल्प के लिए निश्चिंत हो जाते हैं। लौकिक बाप के फुरने (ख्यालात) और बेहद बाप के फुरने में कितना अन्तर है। बाप कहते हैं कि भक्ति मार्ग में मुझे कितना फुरना रहता है। भगत कितना घड़ी-घड़ी याद करते हैं। सतयुग में कोई भी याद नहीं करते। बाप कहते हैं कि तुमको इतना सुख देता हूँ जो तुमको मुझे वहाँ याद करने की दरकार ही नहीं रहेगी। हम जानते हैं हमारे बच्चे सुखधाम, शान्तिधाम में बैठे हैं। दूसरा कोई मनुष्य समझ न सके। ऐसे बाप में निश्चयबुद्धि होने में माया विघ्न डालती है। बाप कहते हैं कि सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारे में जो अलाए पड़ गई है, चांदी, तांबा, लोहा...वह निकल जायेगी। गोल्डन एज से सिलवर में आने से भी दो कला कम होती हैं। यह बातें तुम सुनते और समझते हो। जो सच्चा ब्राह्मण होगा उनको अच्छी रीति बुद्धि में बैठेगा, नहीं तो बैठेगा नहीं। याद टिकेगी नहीं। सारा मदार बाप को याद करने पर है। बार-बार कहते हैं बच्चे बाप को याद करो। यह बाबा भी कहेंगे शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा खुद भी कहेंगे मुझ बाप को याद करो। आत्माओं को कहते हैं हे बच्चों। वह निराकार परमात्मा भी आत्माओं को कहेंगे। मूल बात ही यह है। कोई भी आये तो उनको पहले-पहले बोलो कि अल्फ को याद करो और कोई तीक-तीक नहीं करनी है। सिर्फ बोलो– अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यही अन्दर घोटना है। हम आत्मा हैं, गाते भी हैं ना तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक देत रघुवीर...तिलक कोई स्थूल थोड़ेही है। तुम समझते हो कि तिलक वास्तव में इस समय का याद गार है। तुम याद करते रहते हो गोया राजाई का तिलक देते हो। तुमको राजाई का तिलक मिलेगा, डबल सिरताज बनेंगे। राजाई का तिलक मिलेगा अर्थात् स्वर्ग के महाराजा, महारानी बनेंगे। बाप कितना सहज बताते हैं। बस सिर्फ यह याद करो– हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। हमको बाप से वर्सा लेना है।

यह घुड़दौड़ है। सभी नम्बरवन तो नहीं जायेंगे। यह ह्यूमन रेस है। तुम चाहते हो हम जल्दी शिवबाबा के गले में पिरो जाएं तो उनको याद करना पड़े। सारा मदार याद पर है। माया विघ्न ऐसा डालती है जो एकदम रेस से निकाल देती है। तुम्हारी ह्युमन रेस है। आत्मा कहती है हम बहुत दु:खी हुए हैं। शरीर लेते-लेते बहुत तंग हुए हैं। कहते हैं अब जायें बाबा के पास। बाबा ने युक्ति तो बतलाई है। कहते हैं बाबा हम आपकी याद में ही रहेंगे। जितना टाइम निकाल सको उतना अच्छा है। गवर्मेन्ट की सर्विस में भी 8 घण्टा देते हो, ऐसे याद में भी 8 घण्टे तो रहो। सृष्टि को स्वर्ग बनाना यह कितनी भारी सर्विस है। सिर्फ बाप को याद करो और सुखधाम को याद करो। बस, यह 8 घण्टा सर्विस करेंगे तो तुम पूरा वर्सा पायेंगे। ऐसे-ऐसे याद करते-करते तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। 8 घण्टा इस सर्विस में दो बाकी 16 घण्टा तुम फ्री हो। जितना हो सके तुम घड़ी-घड़ी याद करो। याद तो कहाँ भी बैठ कर सकते हो। सबसे अच्छा टाइम तुमको सवेरे मिलेगा। सिन्धी में कहावत भी है सवेरे सोना, सवेरे उठना...वही मनुष्य बड़ा गुणवान है। यह गायन भी अभी का है। बाप कहते हैं रात को जल्दी सो जाओ और फिर सवेरे-सवेरे उठो। अज्ञानी लोग 8 घण्टा नींद करते हैं, तुम्हारी नींद आधी होनी चाहिए। 4-5 घण्टा नींद बस। तुम कर्मयोगी हो ना। रात को 10 बजे सो जाओ 2 बजे उठो। शिवबाबा को याद करने से तुम्हारी कमाई बहुत है। तुमको हेल्थ वेल्थ दोनों ही मिलेगी। अच्छा 2 बजे नहीं तो 3 बजे उठो, 4 बजे उठो। फर्स्टक्लास समय वह है। शान्ति रहती है, सब अशरीरी बन जाते हैं। उस समय सन्नाटा बहुत होता है। अमृतवेले की याद अच्छा असर करती है। बाबा बहुत करके रात को जागते रहते हैं। सूक्ष्म सर्विस में थकावट नहीं होती। कमाई से तो खुशी होगी। तुम बच्चे सवेरे उठ अपनी अविनाशी कमाई करते रहो।

अभी तुम बच्चे बाप के साथ योग लगाते हो। तुम देखते हो बाबा मैले कपड़ों को सटका लगाते हैं। कोई तो फट जाते हैं, कोई टूट पड़ते हैं। कोई तो बहुत मैले, अजामिल जैसे पापी हैं, जो

बिल्कुल धारणा नहीं होती है। बाप कितनी अच्छी बातें समझाते हैं। मीठे लाडले बच्चे- मुझ मोस्ट बिलवेड बाप को याद करो। मोस्ट बिलवेड सुखधाम को याद करो। यह भी तुम अब जानते हो। दुनिया में कोई को पता नहीं।

कई बच्चे बाबा से आकर पूछते हैं- बाबा अवस्था को कैसे जमायें, कोई तूफान न लगे। इसका रास्ता तो बताते ही रहते हैं, बाप को याद करो। तूफान तो लगेंगे। बॉक्सिंग में ऐसा कभी देखा जो कोई एक ही थप्पड़ खाता रहे। जरूर दोनों में ही हिम्मत होगी। 5 थप्पड़ अगर एक लगायेगा तो 10 दूसरा लगाता होगा। यह भी बॉक्सिंग है। बाप को याद करते रहेंगे तो माया भागती जायेगी परन्तु फट से तो नहीं होगा। माया से कुश्ती लड़नी है। ऐसे मत समझो माया थप्पड़ नहीं मारेगी। भल कोई भी हो, बड़ी बॉक्सिंग है। बहुत डर जाते हैं, माया एकदम नाक में दम कर देती है। युद्धस्थल है ना। बुद्धियोग लगाने में माया बड़े विघ्न डालती है। मेहनत सारी योग में है। भल बाबा कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय है। परन्तु ऐसे नहीं सिर्फ ज्ञान देने वाले प्रिय हैं। पहले तो योग पूरा चाहिए। बाप को याद करना है। माया के विघ्नों से डरना नहीं है। विश्व का मालिक बनते हो ना। सब बनेंगे? 16108 की माला तो बहुत बड़ी है। अन्त में आकर पूरी होगी। त्रेता अन्त तक कितने प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हैं, कुछ तो निशानियाँ हैं ना। 8 की भी निशानी है। 108 की भी निशानी है। यह बिल्कुल राइट है। त्रेता अन्त में इतने 16108 प्रिन्स-प्रिन्सेज होते हैं। शुरू में तो नहीं होंगे। पहले थोड़े होते हैं फिर वृद्धि होती जाती है। वह सब बनते यहाँ हैं। चांस बहुत अच्छा है परन्तु मेहनत बहुत है। गीत में भी कहते हैं, कभी नहीं छोड़ूँगा, मर जाऊंगा...। बाबा यह तन-मन-धन सब आपका है। हम अशरीरी बन आपको याद करते हैं। बुद्धियोग आपसे लगायेंगे। बाबा फिर कहते हैं यह सब तुम बच्चों के लिए ही है। बच्चे कहते हैं- हमारा सब कुछ आपका है। कहते हैं ना, यह सब भगवान ने दिया है! अब बाप कहते है- यह सब खत्म हो जाना है। तुम्हारे पास क्या है? यह शरीर भी खत्म हो जायेगा। अब मैं फिर

तुमको बदली कर देता हूँ। सिर्फ एक्सचेंज करते हैं ना। तो बाप कहते हैं- बच्चे अशरीरी बनो। मुझे याद करो। बुद्धि से सब कुछ सरेन्डर करो। राजा हरिश्चन्द्र की कथा है ना।

बाप बार-बार कहते हैं- देह- अभिमान छोड़ तुम आत्म-अभिमानी बनो और आरगन्स द्वारा शिक्षा धारण करो। भल इस बाबा को चलते-फिरते देखते हो परन्तु याद शिवबाबा को करो। ऐसे ही समझो शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं। ब्रह्मा है नहीं। भल इनका रूप इन आंखों से दिखाई पड़ता है। तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा की तरफ जानी चाहिए। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं। हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है। वह इन द्वारा पढ़ाते हैं। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर वह है। याद उनको करना है। कभी भी जिस्म को याद नहीं करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है। बच्चे याद करते हैं फिर से आकर ज्ञान-योग सिखाओ, परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखा न सके। बच्चों की बुद्धि में है वही बैठ गीता का ज्ञान सुनाते हैं फिर यह नॉलेज प्राय:लोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं।

हमेशा ऐसे समझो हम शिवबाबा के हैं। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा, इस ब्रह्मा द्वारा हमेशा शिक्षा देते हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मजा आता रहेगा। ऐसा गॉड फादर कौन? वह फादर भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। कई बाप बच्चों को पढ़ाते भी हैं तो वह जरूर कहेंगे हमारा यह फादर, टीचर है परन्तु वह फादर गुरू भी हो, ऐसे नहीं होते हैं। हाँ टीचर हो सकता है। फादर को गुरू कभी नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर टीचर भी था, पढ़ाते थे। वह है हद का फादर टीचर। यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो सौभाग्य। गॉड फादर पढ़ाते हैं, कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाबा है। मीठी चीज को याद किया जाता है। जैसे आशिक-माशूक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस एक दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा बाप

के साथ योग। आत्मा कहती है बाबा कितना ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। इस पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर हमको कितना ऊंच बनाते हैं। गायन भी हैं- मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। सेकेण्ड में बैकुण्ठ में जाते हैं। सेकेण्ड में मनुष्य से देवता बन पड़ते हैं। यह है एम आब्जेक्ट। उसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए। गुरू नानक ने भी कहा है ना मूत पलीती कपड़ धोए... लक्ष्य सोप है ना। बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र, तुम्हारी आत्मा और शरीर कितना शुद्ध बनाता हूँ। तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह सारा कार्य शिवबाबा का है, उनको ही याद करो। इनसे मीठा वह है। आत्मा को कहते हैं तुमको इन आंखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा इनके द्वारा तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं ।

पावन भी सिर्फ एक जन्म के लिए नहीं, जन्म-जन्मान्तर के लिए बनना है। तुम्हारे में भी जो ज्ञानवान हैं वे तीखे होते हैं। ड्रामा अनुसार वह नूँध है। तुम्हारे में भी महावीरपना चाहिए। वह आयेगा बाप की याद में रहने से। बाप बहुत अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। जैसे बाबा कहते हैं कि सवेरे उठकर याद करो। वह समय बहुत सुन्दर है याद करने का, जिसको प्रभात कहा जाता है। भक्ति मार्ग में भी कहते हैं राम सिमर प्रभात मोरे मन। बाप भी कहते हैं सवेरे उठ बाप को याद करो तो बड़ा मजा आयेगा। बाप की याद में बैठ यही ख्याल करना चाहिए कि कैसे किसको समझायें? अमृतवेले का वायुमण्डल बड़ा शुद्ध रहता है। दिन में तो गोरखधन्धा रहता है। रात को 12 बजे तक तो विकारी वायुमण्डल रहता है। साधू-सन्त, भक्त आदि सब भक्ति भी प्रभात को करते हैं। यूँ तो याद दिन में भी कर सकते हैं। धन्धे में भल रहे, बुद्धि का योग, जिस देवता का पुजारी होगा उनके पास होगा। परन्तु ऐसा किसका रहता नहीं है। भक्ति मार्ग में सिर्फ दर्शन के लिए मेहनत करते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। उनको भी भक्ति करते-करते तमोप्रधान बनना ही है। भक्ति मार्ग में भी शिव पर बलि चढ़ाते हैं, जिसको काशी कलवट कहते

हैं। शिव को याद करते-करते कुएं में कूद पड़ते हैं। शिव के ऊपर बलि चढ़ाते हैं। वह है भक्ति मार्ग की बलि। यह है ज्ञान मार्ग की बलि। वह भी मुश्किल, यह भी मुश्किल। भक्ति मार्ग में इससे कुछ फायदा नहीं। यह जैसे आत्मा अपने शरीर का घात करती है। यह कोई ज्ञान नहीं है। वह भी कह देते आत्मा सो परमात्मा।

एक्सीडेंट आदि तो ढेर के ढेर होते रहते हैं। फिर किसकी रक्षा करते हैं क्या? यह तो ड्रामा में नूँध है। ऐसा ही ड्रामा में पार्ट है। जो ड्रामा को नहीं जानते वह देह को याद कर आंसू बहाते हैं। वह कभी शिवबाबा को याद नहीं कर सकते क्योंकि शिवबाबा से प्यार नहीं है। सच्ची प्रीत नहीं है। बाप के साथ तो पूरी प्रीत होनी चाहिए। शिवबाबा के साथ प्रीत बुद्धि तुम कल्प-कल्प बनते हो। देवताओं की बाप के साथ प्रीत बुद्धि थी, ऐसे नहीं कहेंगे। उन्होंने इस प्रीत से वह पद पाया है। वहाँ तो मालूम भी नहीं रहेगा-सारे कल्प में तुमको शिवबाबा का पता भी नहीं रहता है जो प्रीत रख सको। अभी बाप ने अपना परिचय दिया है। अब बाप कहते हैं कि और संग तोड़ मुझ एक साथ जोड़ो। यह विनाश काल तो जरूर है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। तुम अभी समझते हो हमको तो बाप से पूरा वर्सा लेना है। याद बिगर सतोप्रधान नहीं बन सकेंगे। सर्जन बन अपने रोग को देखना है। श्रीमत पर देखना है कि हमारी बाप के साथ कितनी प्रीत है? अमृतवेले ही बाप को याद करना अच्छा है। प्रभात का समय बहुत अच्छा है। उस समय माया के तूफान नहीं आयेंगे। रात को 12 बजे तक तपस्या करने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि टाइम ही गन्दा होता है। वायुमण्डल खराब रहता है। तो एक बजे तक छोड़ देना चाहिए। एक के बाद वायुमण्डल अच्छा रहता है। बाप कहते हैं– अपना तो है ही सहज राजयोग, भल आराम से बैठो। बाबा अपना अनुभव भी सुनाते हैं। कैसे बाबा से बातें करता हूँ। बाबा कैसा वन्डरफुल यह ड्रामा है! आप कैसे आकर पतित से पावन बनाते हो! सारी दुनिया को कैसे पलटाते हो! बड़ा वण्डर है! जैसे बाप को ख्याल आते हैं वैसे बच्चों को भी आने चाहिए।

- ब्राह्मण कुल भूषण बच्चे जानते हैं कि अभी हम ब्राह्मण सम्प्रदाय के हैं फिर दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं- जबकि बेहद का बाप सम्मुख है और उससे बेहद का वर्सा मिल रहा है। बाकी और क्या चाहिए। भक्ति मार्ग कब से चलता है, यह कोई को पता नहीं है। भक्ति मार्ग वाले भक्त भगवान को अथवा ब्राइड्स ब्राइडग्रुम को याद करते हैं। परन्तु वन्डर है कि उनको जानते नहीं। ऐसा कभी देखा कि सजनी साजन को न जाने। नहीं तो याद कर ही कैसे सकती। भगवान तो सबका बाप ठहरा। बच्चे बाप को याद करते हैं। परन्तु पहचान बिगर याद करना सब व्यर्थ हो जाता है इसलिए याद करने से कोई फायदा नहीं निकलता। याद करते कोई भी उस एम आब्जेक्ट को पाते नहीं। भगवान कौन है, उससे क्या मिलेगा। कुछ भी नहीं जानते। इतने सब धर्म क्राइस्ट, बौद्ध आदि प्रीसेप्टर अथवा धर्म स्थापन करने वालों को उनके फालोअर्स याद करते हैं परन्तु उनको याद करने से हमको क्या मिलना है, कुछ भी पता नहीं है। इससे तो जिस्मानी पढ़ाई अच्छी है। एम-आब्जेक्ट तो बुद्धि में रहती है ना। बाप से क्या मिलता है? टीचर से क्या मिलता है? और गुरू से क्या मिलता है? यह और कोई भी नहीं समझ सकते हैं।

- अभी तुम बच्चे समझते हो - वह हमारा बाप है, टीचर भी है, गुरू भी है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का चक्र, 84 जन्मों का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। अनगिनत बार 84 जन्म लिए हैं और लेते रहेंगे। इनका इन्ड (अन्त) कभी होता नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में ही यह चक्र है, स्वदर्शन चक्र घड़ी-घड़ी याद आना चाहिए। यही मनमनाभव है, जितना बाप को याद करेंगे उतना पाप भस्म होंगे

- बाप कहते हैं वह सब है भक्ति मार्ग। ज्ञान तो बड़ा सिम्पुल है, कोई और बात पूछने के पहले बाप और वर्से को याद करना है, वह मेहनत कोई से होती नहीं है, भूल जाते हैं। एक नाटक भी है-माया ऐसे करती, भगवान ऐसे करते हैं। तुम बाप को याद करते हो, माया तुमको और तूफान में ले जाती है। माया का फरमान है-रूसतम से रूसतम होकर लड़ो, तुम सब लड़ाई के मैदान में हो। जानते हो इनमें किस-किस प्रकार के योद्धे हैं। कोई तो बहुत कमजोर हैं, कोई मध्यम कमजोर हैं, कोई तो फिर तीखे हैं। सभी माया से युद्ध करने वाले हैं। गुप्त ही गुप्त अन्डरग्राउण्ड। वे भी अन्डरग्राउण्ड बाम्ब्स की ट्रायल करते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो, अपनी मौत के लिए सब कुछ कर रहे हैं। तुम बिल्कुल शान्ति में बैठे हो, उनका हैं साइन्स बल।

- बाप बच्चों से पूछते हैं-बच्चे, आत्म-अभिमानी हो बैठे हो? अपने को आत्मा समझ बैठे हो? हम आत्माओं को परमात्मा बाप पढ़ा रहे हैं, बच्चों को यह स्मृति आई है हम देह नहीं, आत्मा हैं। बच्चों को देही-अभिमानी बनाने लिए ही मेहनत करनी पड़ती है। बच्चे आत्म-अभिमानी रह नहीं सकते। घड़ी-घड़ी देह-अभिमान में आ जाते हैं इसलिए बाबा पूछते हैं-आत्म-अभिमानी हो रहते हो? आत्म-अभिमानी होंगे तो बाप की याद आयेगी, अगर देह-अभिमानी होंगे तो लौकिक सम्बन्धी याद आयेंगे। पहले-पहले यह शब्द याद रखना पड़े, हम आत्मा हैं। मुझ आत्मा में ही 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। यह पक्का करना है। हम आत्मा हैं। आधाकल्प तुम देह-अभिमानी हो रहे हो। अभी सिर्फ संगमयुग पर ही बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाया जाता है। अपने को देह समझने से बाप याद नहीं आयेगा, इसलिए पहले-पहले यह शब्क पक्का कर लो - हम आत्मा बेहद बाप के बच्चे हैं। देह के बाप को याद करना कभी सिखलाया नहीं जाता है। अब बाप कहते हैं मुझ पारलौकिक बाप को याद करो, आत्म-अभिमानी बनो। देह-अभिमानी बनने से देह के सम्बन्ध याद आयेंगे, अपने को आत्मा समझ और बाप को याद

करो, यही मेहनत है। यह कौन समझा रहे हैं, हम आत्माओं का बाप, जिनको सब याद करते हैं बाबा आओ, आकर इस दु:ख से लिबरेट करो। बच्चे जानते हैं इस पढ़ाई से हम भविष्य के लिए ऊंच पद पाते हैं।

तुम पढ़ते ही हो अमरलोक के लिए, न कि इस मृत्युलोक के लिए। अब बाप कहते हैं सवेरे उठकर घूमो, फिरो। पहला-पहला शब्क यह याद करो कि हम आत्मा हैं, न कि शरीर। हमारा रूहानी बाबा हमको पढ़ाते हैं। यह दु:ख की दुनिया अब बदलनी है। सतयुग है सुख की दुनिया, बुद्धि में सारा ज्ञान है। यह है रूहानी स्प्रीचुअल नॉलेज। बाप ज्ञान का सागर स्प्रीचुअल फादर है। वह है देही का बाप। बाकी तो सभी देह के ही सम्बन्धी हैं। अब देह के सम्बन्ध तोड़ एक से जोड़ना है। गाते भी हैं मेरा तो एक दूसरा न कोई। हम एक बाप को ही याद करते हैं। देह को भी याद नहीं करते। यह पुरानी देह तो छोड़नी है। यह भी तुमको ज्ञान मिलता है। यह शरीर कैसे छोड़ना है। याद करते-करते शरीर छोड़ देना है इसलिए बाबा कहते हैं देही-अभिमानी बनो। अपने अन्दर घोटते रहो-बाप, बीज और झाड़ को याद करना है। शास्त्रों में यह कल्प वृक्ष का वृतान्त है।

जो ज्ञान सागर के साथ है उनके लिए ज्ञान बरसात है। तुम बाप के साथ हो ना। भल विलायत में हो वा कहाँ भी हो, साथ हो। याद तो रखते हो ना। जो भी बच्चे याद में रहते हैं, वो सदैव साथ में हैं। याद में रहने से साथ रहते हैं और विकर्म विनाश होते हैं फिर शुरू होता है विकर्मीजीत संवत। फिर जब रावण राज्य होता है तब कहते हैं राजा विक्रम का संवत।

बाबा आप सारे रचता और रचना की नॉलेज सुनाते हो। आप हमको कितना ऊंच पढ़ाते हो। बलिहार जाऊं, हमको तो सिवाए एक बाप के और कोई को याद नहीं करना है। अन्त तक पढ़ना है तो जरूर टीचर को याद करना है। स्कूल में टीचर को याद करते हैं ना। उन स्कूलों में तो कितने टीचर्स होते हैं। हर एक दर्जे का टीचर अलग होता है, यहाँ तो एक ही टीचर है। कितना लवली है। बाप लवली, टीचर लवली..... आगे भक्ति मार्ग में अन्धश्रद्धा से याद करते थे। अभी तो डायरेक्ट बाप पढ़ाते हैं तो कितनी खुशी होनी चाहिए फिर भी कहते बाबा भूल जाते हैं। पता नहीं हमारी बुद्धि आपको क्यों नहीं याद करती है। गाते भी हैं ईश्वर की गति-मति न्यारी है। बाबा आपकी गति और सद्गति की मत तो बड़ी वन्डरफुल है। ऐसे बाप को याद करना चाहिए। स्त्री अपने पति के गुण गाती है ना। बड़ा अच्छा है, यह-यह उनकी प्रॉपर्टी है, अन्दर में खुशी रहती है ना। यह तो पतियों का पति, बापों का बाप है, इनसे कितना हमको सुख मिलता है। और सबसे तो दुःख मिलता है। हाँ, टीचर से सुख मिलता है क्योंकि पढ़ाई से इनकम होती है। गुरू हमेशा किया जाता है वानप्रस्थ में। बाप भी कहते हैं मैं वानप्रस्थ में आया हूँ। यह भी वानप्रस्थी, मैं भी वानप्रस्थी। यह सब मेरे बच्चे भी वानप्रस्थी हैं। बाप टीचर गुरू तीनों ही इकट्ठे हैं। बाप टीचर भी बनते हैं फिर गुरू बन साथ ले जाते हैं। उस एक बाप की ही महिमा है, यह बातें और कोई शास्त्र आदि में नहीं हैं। बाबा हर बात अच्छी रीति समझाते हैं। इनसे ऊंची नॉलेज कोई होती नहीं, न जानने की दरकार रहती है। हम सब कुछ जानकर विश्व के मालिक बन जाते हैं और जास्ती क्या करेंगे। बच्चों की बुद्धि में यह हो तब खुशी में और उसी याद में रहें। पुण्य आत्मा बनने के लिए याद में जरूर रहना चाहिए। माया का धर्म है तुम्हारे योग को तोड़ना। योग में ही माया विघ्न डालती है। भूल जाते हो। माया के तूफान बहुत आते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। सबसे आगे तो यह है, तो इनको सब अनुभव होते हैं। मेरे पास जब आयें तब तो सबको समझाऊं ना। यह सब माया के तूफान आयेंगे। बाबा के पास भी आते हैं। तुमको भी आयेंगे। माया का तूफान ही न आये, योग लगा ही रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जाए। फिर हम यहाँ रह न सकें। कर्मातीत अवस्था हो जायेगी तो फिर सब चले जायेंगे। शिव की बरात गाई हुई है ना।

शिवबाबा आये तब हम सब आत्मायें जायें। शिवबाबा आते ही हैं सबको ले जाने। सतयुग में इतनी आत्मायें थोड़ेही होंगी।

भगवान पढ़ाते हैं फिर इतने थोड़े क्यों? ऐसे बहुत कहते हैं। अरे, यहाँ तो मरना होता है। वहाँ तो कनरस है। बड़े भभके से बैठ गीता सुनाते हैं, भगत लोग सुनते हैं। यहाँ कनरस की बात नहीं। तुमको सिर्फ कहा जाता है बाप को याद करो। गीता में भी यह अक्षर हैं मनमनाभव। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं अच्छा ब्राह्मणी से वा सेन्टर से रूठ जाते हो, अच्छा यह तो काम करो और संग तोड़ अपने को आत्मा समझो, एक बाप को याद करो। बाप ही पतित-पावन है। बस बाप को याद करते रहो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। इतना याद किया तो भी स्वर्ग में जरूर आयेंगे। स्वर्ग में ऊंच पद तो पुरूषार्थ के अनुसार ही मिलेगा। प्रजा बनानी पड़े। नहीं तो राजाई किस पर करेंगे। जो बहुत मेहनत करते हैं, ऊंच पद भी वही पायेंगे। ऊंच पद के लिए ही कितना माथा मारते हैं। पुरूषार्थ बिगर कोई रह नहीं सकता। तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच पतित-पावन बाप है। मनुष्य महिमा भल गाते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। भारत कितना साहूकार था, भारत है स्वर्ग, वन्डर ऑफ वर्ल्ड। वह 7 वन्डर्स माया के। सारे ड्रामा में ऊंच ते ऊंच है स्वर्ग, नीचे ते नीच है नर्क। अभी तुम बाप के पास आये हो, जानते हो मीठा बाबा इतना ऊंच ते ऊंच ले जाते हैं। उनको कौन भूलेंगे। भल कहाँ भी बाहर जाओ सिर्फ एक बात याद रखो, बाप को याद करो। बाप ही श्रीमत देते हैं - भगवानुवाच, न कि ब्रह्मा भगवानुवाच।

ओम् शान्ति। तुम बच्चों का बैठना सिम्पुल है। कहाँ भी बैठ सकते हो। चाहे जंगल में बैठो, पहाड़ी पर बैठो, घर में बैठो या कुटिया में बैठो, कहाँ भी बैठ सकते हो। ऐसे बैठने से तुम बच्चे ट्रांसफर होते हो। तुम बच्चे जानते हो अभी हम मनुष्य, भविष्य के लिए देवता बन रहे हैं। हम

कांटों से फूल बन रहे हैं। बाबा बागवान भी है, माली भी है। हम बाप को याद करने से और 84 का चक्र फिराने से ट्रांसफर हो रहे हैं। यहाँ बैठो, चाहे कहाँ भी बैठो तुम ट्रांसफर होते-होते मनुष्य से देवता बनते जाते हो। बुद्धि में एम ऑब्जेक्ट है, हम यह बन रहे हैं। कुछ भी काम-काज करो, रोटी पकाओ, बुद्धि में सिर्फ बाप को याद करो। बच्चों को यह श्रीमत मिलती है-चलते-फिरते सब कुछ करते सिर्फ याद में रहो। बाप की याद से वर्सा भी याद आता है, 84 का चक्र भी याद आता है। इसमें और क्या तकलीफ है, कुछ भी नहीं। जबकि हम देवता बनते हैं, तो कोई आसुरी स्वभाव भी नहीं होना चाहिए। कोई पर क्रोध नहीं करना, किसको दु:ख नहीं देना, कोई भी फालतू बातें कान से सुननी नहीं हैं। सिर्फ बाप को याद करो। बाकी संसार की झरमुई-झगमुई तो बहुत सुनी। आधाकल्प से यह सुनते- सुनते तुम नीचे गिरे हो। अब बाप कहते हैं यह झरमुई-झगमुई न करो। फलाना ऐसा है, इनमें यह है। कोई भी फालतू बातें नहीं करनी है। यह जैसेकि अपना टाइम वेस्ट करना है। तुम्हारा टाइम बहुत वैल्युबुल है। पढ़ाई से ही अपना कल्याण है, इनसे ही पद पायेंगे। उस पढ़ाई में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इम्तहान पास करने विलायत में जाते हैं। तुमको तो कोई तकलीफ नहीं देते। बाप आत्माओं को कहते हैं मुझ बाप को याद करो, एक-दो को सामने बिठाते हैं, तो भी बाप की याद में रहो। याद में बैठते-बैठते तुम कांटों से फूल बनते हो। कितनी अच्छी युक्ति है, तो बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। हर एक की अलग-अलग बीमारी होती है। तो हर एक बीमारी के लिए सर्जन है। बड़े-बड़े आदमियों के खास सर्जन होते हैं ना। तुम्हारा सर्जन कौन बना है? भगवान। वह है अविनाशी सर्जन। कहते हैं हम तुमको आधाकल्प के लिए निरोगी बनाते हैं। सिर्फ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम 21 जन्म के लिए निरोगी बन जायेंगे। यह गांठ बांध देनी चाहिए। याद से ही तुम निरोगी बन जायेंगे। फिर 21 जन्म लिए कोई भी रोग नहीं होगा। भल आत्मा तो अविनाशी है, शरीर ही रोगी बनता है। लेकिन भोगती तो आत्मा है ना। वहाँ आधाकल्प तुम कभी भी रोगी नहीं बनेंगे। सिर्फ याद में तत्पर रहो। सर्विस तो बच्चों को करनी ही है।

- तुम जानते हो पहले मुख्य है देह-अभिमान, उसके बाद ही सब भूत आते हैं। मेहनत करनी है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, यह कोई कड़ुवी दवाई नहीं है। सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। फिर कितना भी पैदल बाबा की याद में करते जाओ, कभी टांगे थकेंगी नहीं। हल्के हो जायेंगे। बहुत मदद मिलती है। तुम मास्टर सर्वशक्तिमान बन जाते हो। तुम जानते हो हम विश्व का मालिक बनते हैं, बाप के पास आये हैं और कोई तकलीफ नहीं देते हैं।

- यह बात रोज़-रोज़ बाप बच्चों को समझाते हैं कि सोने के समय अपना पोतामेल अन्दर देखो कि किसको दुःख तो नहीं दिया और कितना समय बाप को याद किया? मूल बात यह है। गीत में भी कहते हैं अपने अन्दर देखो-हम कितना तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हैं? सारे दिन में कितना समय याद किया अपने मीठे बाप को? कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। सभी आत्माओं को कहा जाता है अपने बाप को याद करो। अब वापिस जाना है। कहाँ जाना है? शान्तिधाम होकर नई दुनिया में जाना है। हीरे जैसा बनने के लिए बाप को याद करना है। पुखराज परी, सब्ज परी भी जो नाम हैं, वह तुम हो। जितना याद में रहेंगे उतना हीरे जैसा बन जायेंगे। कोई माणिक जैसा, कोई पुखराज जैसा बनेंगे। 9 रत्न होते हैं ना। कोई ग्रहचारी होती है तो 9 रत्न की अंगूठी पहनते हैं। भक्ति मार्ग में बहुत टोटका देते हैं। यहाँ तो सब धर्म वालों के लिए एक ही टोटका है-मनमनाभव क्योंकि गॉड इज वन। मनुष्य से देवता बनने वा मुक्ति-जीवनमुक्ति पाने की तदबीर एक ही है, सिर्फ बाप को याद करना है, तकलीफ की कोई बात नहीं। सोचना चाहिए मुझे याद क्यों नहीं ठहरती। सारे दिन में इतना थोड़ा क्यों याद किया? जब इस याद से हम एवर हेल्दी, निरोगी बनेंगे तो क्यों न अपना चार्ट रख उन्नति को पायें। बहुत हैं जो 2-4

रोज़ चार्ट रख फिर भूल जाते हैं। कोई को भी समझाना बहुत सहज होता है। नई दुनिया को सतयुग और पुरानी को कलियुग कहा जाता है। कलियुग बदल सतयुग होगा। बदली होता है तब हम समझा रहे हैं।

- बाबा के पास समाचार तो सब आते हैं, बतलाते रहेंगे। कितनों को माया खींच ले गई। खत्म हो गये। बच्चियां भी बहुत गिरती हैं। एकदम दुर्गति को पा लेती हैं, बात मत पूछो इसलिए बाबा कहते हैं-बच्चे, खबरदार रहो। माया कोई न कोई रूप धरकर पकड़ लेती है। कोई के नाम-रूप के तरफ देखो भी नहीं। भल इन आंखों से देखते हो परन्तु बुद्धि में एक बाप की याद है। तीसरा नेत्र मिला है, इसलिए कि बाप को ही देखो और याद करो। देह अभिमान को छोड़ते जाओ। ऐसे भी नहीं आंखे नीचे करके कोई से बात करनी है। ऐसा कमज़ोर नहीं बनना है। देखते हुए बुद्धि का योग अपने बिलवेड माशुक की तरफ हो। इस दुनिया को देखते हुए अन्दर में समझते हैं यह तो कब्रिस्तान होना है। इनसे क्या कनेक्शन रखेंगे। तुमको ज्ञान मिलता है-उसको धारण कर उस पर चलना है।

- तुम बच्चे जब प्रदर्शनी आदि समझाते हो तो हज़ार बार मुख से बाबा-बाबा निकलना चाहिए। बाबा को याद करने से तुम्हारा कितना फायदा होगा। शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। शिवबाबा को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह भूलो मत। बाप का डायरेक्शन मिला है मनमनाभव। बाप ने कहा है यह ‘बाबा’ शब्द खूब अच्छी तरह से घोटते रहो। सारा दिन बाबा-बाबा करते रहना चाहिए। दूसरी कोई बात नहीं। नम्बरवन मुख्य बात ही यह है। पहले बाप को जानें, इसमें ही कल्याण है। यह 84 का चक्र समझना तो बहुत इजी है।

बाप कहते हैं कल्प-कल्प तुम अबलायें मातायें ही पुकारती हो। कहते हैं बाबा हमको नंगन होने से बचाओ। बाप कहते हैं याद के सिवाए और कोई रास्ता नहीं। याद से ही बल आता जायेगा। माया बलवान की ताकत कम होती जायेगी। फिर तुम छूट जायेंगे। ऐसे बहुत बन्धन से छूटकर आते हैं। फिर अत्याचार होना बन्द हो जाता है फिर आकर शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा बातचीत करते हैं। यह भी आदत पड़ जानी चाहिए। बुद्धि में यह रहना चाहिए कि हम शिवबाबा पास जाते हैं। वह इस ब्रह्मा तन में आते हैं। हम शिवबाबा के आगे बैठे हैं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यही शिक्षा मिलती है। बाप से मिलने आओ तो भी अपने को आत्मा समझो। आत्म-अभिमानी भव। यह ज्ञान भी तुमको अभी मिलता है। यह है मेहनत। उस भक्ति मार्ग में तो कितने वेद शास्त्र आदि पढ़ते हैं। यह तो एक ही मेहनत है-सिर्फ याद की। यह बहुत सहज ते सहज है, बहुत डिफीकल्ट ते डिफीकल्ट भी है। बाप को याद करना-इससे सहज कोई बात होती नहीं। बच्चा पैदा हुआ और मुख से बाबा-बाबा निकलेगा। बच्ची के मुख से माँ निकलेगा। आत्मा ने फीमेल का शरीर धारण किया है। फीमेल माँ के पास ही जायेगी। बच्चा अक्सर करके बाप को याद करता है क्योंकि वर्सा मिलता है। अभी तुम आत्मायें तो सब बच्चे हो। तुमको वर्सा मिलता है बाप से। आत्मा को बाप से वर्सा मिलता है, याद करने से। देह- अभिमानी होंगे तो वर्सा पाने में मुश्किलात होगी। तुम सब आशिक थे, उस माशूक के। सारी दुनिया आशिक है एक माशूक की। परमात्मा को सब परमपिता भी कहते हैं। बाप को आशिक नहीं कहा जाता। तुम काल पर विजय पाते हो। वहाँ कभी अकाले मृत्यु होती नहीं। नाम ही है स्वर्ग। तुम बच्चों को इस पढ़ाई में बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप की याद से बाप की प्रॉपर्टी भी याद आयेगी। सेकण्ड में सारे ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन, 84 का चक्र बस, यह नाटक सारा भारत पर ही बना हुआ है। बाकी सब हैं बाईप्लाट। बाप नॉलेज भी तुमको सुनाते हैं। तुम ही ऊंच से ऊंच फिर नींच बने हो। महावीर हनूमान को भी कहते हैं। वास्तव में तुम बच्चे ही सच्चे-सच्चे महावीर हनूमान हो क्योंकि तुम योग में इतना रहते हो जो माया के भल कितने भी तूफान

आयें लेकिन तुम्हें हिला नहीं सकते। तुम महावीर के बच्चे महावीर बने हो क्योंकि तुम माया पर जीत पाते हो।

अब बाप को बच्चों के प्रति रोज़-रोज़ बोलने की दरकार नहीं रहती कि अपने को आत्मा समझो। आत्म- अभिमानी भव अथवा देही-अभिमानी भव... अक्षर है तो वही ना। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। आत्मा में ही 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। एक शरीर लिया, पार्ट बजाया फिर शरीर खलास हो जाता है। आत्मा तो अविनाशी है। तुम बच्चों को यह ज्ञान अभी ही मिलता है और कोई को इन बातों का पता नहीं है। अब बाप कहते हैं-कोशिश कर जितना हो सके बाप को याद करो। धन्धेधोरी में लग जाने से तो इतनी याद नहीं ठहरती। गृहस्थ व्यवहार में रहकर कमल फूल समान पवित्र बनना है। फिर जितना हो सके मुझे याद करो। ऐसे नहीं कि हमको नेष्ठा में बैठना है। नेष्ठा अक्षर भी रांग है। वास्तव में है ही याद । कहाँ भी बैठे हो, बाप को याद करो। माया के तूफान तो बहुत आयेंगे। कोई को क्या याद आयेगा, कोई को क्या। तूफान आयेंगे जरूर फिर उस समय उनको मिटाना पड़ता है कि न आयें। यहाँ बैठे-बैठे भी माया बहुत तंग करती रहेगी। यही तो युद्ध है। जितने हल्के होंगे उतने बंधन कम होंगे। पहले तो आत्मा निर्बन्धन है, जब जन्म लेती तो माँ-बाप में बुद्धि जाती है फिर स्त्री को एडाप्ट करते हैं, जो चीज़ सामने नहीं थी वह सामने आ जाती, फिर बच्चे पैदा होंगे तो उनकी याद बढ़ेगी। अब तुम सबको यह भूल जाना है, एक बाप को ही याद करना है, इसलिए ही बाप की महिमा है। तुम्हारा मात-पिता आदि सब कुछ वही है, उनको ही याद करो। वह तुमको भविष्य के लिए सब कुछ नया देते हैं। बाबा को कहते हैं-बाबा हम अनपढ़े हैं, कुछ नहीं जानते। बाबा तो खुश होते हैं क्योंकि यहाँ तो पढ़ा हुआ सब भूलना है। यह तो थोड़े टाइम के लिए शरीर निर्वाह आदि के लिए पढ़ना है। जानते हो ना-यह सब खलास होने का है। जितना हो सके बाप को याद करना है और रोटी टुकड़ा खुशी से खाना है। वाह गरीबी इस समय की। आराम से रोटी टुकड़ खाना है। हबच (लालच) नहीं। आजकल अनाज मिलता कहाँ है। चीनी आदि भी धीरे-धीरे करके

मिलेगी ही नहीं। ऐसे नहीं, तुम ईश्वरीय सर्विस करते हो तो तुमको गवर्मेन्ट दे देगी। वह तो कुछ भी जानते नहीं। हाँ, बच्चों को कहा जाता है-गवर्मेन्ट को समझाओ कि हम सब मिलकर माँ-बाप के पास जाते हैं, उन्हों को बच्चों के लिए टोली भेजनी होती है। यहाँ तो साफ कह देते कि है ही नहीं। लाचारी थोड़ी दे देते हैं। जैसे फकीर लोगों को कोई साहूकार होगा तो मुट्ठी भरकर दे देगा। गरीब होगा तो थोड़ा बहुत दे देगा। चीनी आदि आ सकती है परन्तु बच्चों का योग कम हो जाता है। याद न रहने कारण, देह-अभिमान में आने के कारण कोई काम हो नहीं सकता। यह काम पढ़ाई से इतना नहीं होगा जितना योग से होगा। वह बहुत कम है। माया याद को उड़ा देती है। रूसतम को और ही अच्छी रीति पकड़ती है। अच्छे-अच्छे फर्स्टक्लास बच्चों पर भी ग्रहचारी बैठती है। ग्रहचारी बैठने का मुख्य कारण योग की कमी है। ग्रहचारी के कारण ही नाम-रूप में फँस मरते हैं। यह बड़ी मंजिल है। अगर सच्ची मंजिल पानी है, तो याद में रहना पड़े।

बाप कहते हैं - ध्यान से भी ज्ञान अच्छा। ज्ञान से याद अच्छी। ध्यान में जास्ती जाने से माया के भूतों की प्रवेशता हो जाती है। ऐसे बहुत हैं जो फालतू ध्यान में जाते हैं। क्या-क्या बोलते हैं, उन पर विश्वास नहीं करना। ज्ञान तो बाबा की मुरली में मिलता रहता है। बाप खबरदार करते रहते हैं। ध्यान कोई काम का नहीं है। बहुत माया की प्रवेशता हो जाती है। अहंकार आ जाता है। ज्ञान तो सबको मिलता रहता है। ज्ञान देने वाला शिवबाबा है। मम्मा को भी यहाँ से ज्ञान मिलता था ना। उनको भी कहेंगे मनमनाभव। बाप को याद करो, दैवीगुण धारण करो। अपने को देखना है हम दैवी गुण धारण करते हैं? यहाँ ही दैवीगुण धारण करने हैं। कोई को देखो अभी फर्स्टक्लास अवस्था है, खुशी से काम करते, घण्टे के बाद क्रोध का भूत आया, खत्म। फिर स्मृति आती है, यह तो हमने भूल की। फिर सुधर जाते हैं। घड़ी-घड़ी के घड़ियाल - बाबा पास बहुत हैं, अभी देखो बड़े मीठे, बाबा कहेंगे ऐसे बच्चों पर तो कुर्बान जाऊं। घण्टे बाद फिर कोई न कोई बात में बिगड़ पड़ते। क्रोध आया, सारी की कमाई खत्म हो गई। अभी-अभी

कमाई, अभी-अभी घाटा हो जाता। सारा मदार याद पर ही है। ज्ञान तो बड़ा सहज है। छोटा बच्चा भी समझा ले। परन्तु मैं जो हूँ, जैसा हूँ, यथार्थ रीति जानें। अपने को आत्मा समझें, इस रीति छोटे बच्चे थोड़ेही याद कर सकेंगे। मनुष्यों को मरने समय कहा जाता है भगवान को याद करो। परन्तु याद कर न सके क्योंकि यथार्थ कोई भी जानते नहीं हैं। तुम्हारे में भी कोई हैं जो यथार्थ रीति जानते हैं, कहते हैं बाबा घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बाप कहते हैं-कहाँ भी जाओ सिर्फ बाप को याद करो। बड़ी भारी कमाई है। तुम 21 जन्मों के लिए निरोगी बनते हो। ऐसे बाप को अन्तर्मुख हो याद करना चाहिए ना। परन्तु माया भुलाकर तूफान में ला देती है, इसमें अन्तर्मुख हो विचार सागर मंथन करना है। विचार सागर मंथन करने की बात भी अभी की है। यह है पुरूषोत्तम बनने का संगमयुग। यह भी वन्डर है, तुम बच्चों ने देखा है-एक ही घर में तुम कहते हो हम संगमयुगी हैं और हाफ पार्टनर वा बच्चा आदि कलियुगी है। कितना फर्क है। बड़ी महीन बात बाप समझाते हैं। घर में रहते हुए भी बुद्धि में है कि हम फूल बनने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। यह है अनुभव की बातें। प्रैक्टिकल में मेहनत करनी है। याद की ही मेहनत है। एक ही घर में एक हंस तो दूसरा बगुला। फिर कोई बड़े फर्स्टक्लास होते हैं। कभी विकार का ख्याल भी नहीं आता है। साथ में रहते भी पवित्र रहते हैं, हिम्मत दिखाते हैं तो उन्हें कितना ऊंच पद मिलेगा। ऐसे भी बच्चे हैं ना।

- मैं आत्मा बिन्दी हूँ। बाप भी बिन्दी है, उस रूप में याद करें, ऐसे बहुत थोड़े हैं। नम्बरवार बुद्धि है ना। कोई तो अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाने लग पड़ते हैं। तुम समझाते हो अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है। वही पतित-पावन है।

- मृत्युलोक का विनाश जरूर होना है। यह 100 परसेन्ट सरटेन है। बाप समझा रहे हैं कि अपनी आत्मा को योगबल से पवित्र बनाओ। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। परन्तु यह

भी बच्चे याद नहीं कर सकते हैं। बाप से वर्सा अथवा राजाई लेने में मेहनत तो चाहिए ना। जितना हो सके याद में रहना है। अपने को देखना है-कितना समय हम याद में रहते हैं और कितनों को याद दिलाते हैं? मनमनाभव, इनको मन्त्र भी नहीं कहा जाए, यह है बाप की याद । देह-अभिमान को छोड़ देना है। तुम आत्मा हो, यह तुम्हारा रथ है, इससे तुम कितना काम करते हो। तुम बच्चों को बीमारी आदि में भी पुराने शरीर से कभी तंग नहीं होना है क्योंकि तुम समझते हो इस शरीर में ही जी करके बाप से वर्सा पाना है। शिवबाबा की याद से ही पवित्र बन जायेंगे। यह है मेहनत। परन्तु पहले तो आत्मा को जानना पड़े। मुख्य तुम्हारी है ही याद की यात्रा। याद में रहते-रहते फिर हम चले जायेंगे मूलवतन। जहाँ के हम निवासी हैं, वही हमारा शान्तिधाम है। शान्तिधाम, सुखधाम को तुम ही जानते हो और याद करते हो। और कोई नहीं जानते। जिन्होंने कल्प पहले बाप से वर्सा लिया है, वही लेंगे।

मुख्य है याद की यात्रा। भक्ति मार्ग की यात्रायें अब खत्म होनी हैं। भक्ति मार्ग ही खलास हो जायेगा। भक्ति मार्ग क्या है? जब ज्ञान हो तब समझें। समझते हैं भक्ति से भगवान मिलेगा। भक्ति का फल क्या देंगे? कुछ भी पता नहीं। तुम बच्चे अब समझते हो बाप बच्चों को जरूर स्वर्ग की बादशाही का ही वर्सा देंगे। सबको वर्सा दिया था, यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब स्वर्गवासी थे। बाप कहते हैं 5000 वर्ष पहले भी तुमको स्वर्गवासी बनाया था। अब फिर तुमको बनाता हूँ। फिर तुम ऐसे 84 जन्म लेंगे। यह बुद्धि में याद रहना चाहिए, भूलना नहीं चाहिए। जो नॉलेज सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की बाप के पास है वह बच्चों की बुद्धि में टपकती है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ऊंच ते ऊंच है भगवान शिव। शिव परमात्माए नम: कहा जाता है, वह कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। बस। और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। आगे चल शिवबाबा को भी याद करने लग पड़ेंगे। वर्सा तो लेना है, जीते जी बाप से वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। शिवबाबा की याद में शरीर छोड़ देते हैं, तो वह फिर

संस्कार ले जाते हैं। स्वर्ग में जरूर आयेंगे, जितना योग उतना फल मिलेगा। मूल बात है-चलते-फिरते जितना हो सके याद में रहना है। अपने सिर से बोझा उतारना है, सिर्फ याद चाहिए और कोई तकलीफ बाप नहीं दते हैं। जानते हैं आधाकल्प से बच्चों ने तकलीफ देखी है इसलिए अभी आया हूँ, तुमको सहज रास्ता बताने - वर्सा लेने का। बाप को सिर्फ याद करो। भल याद तो आगे भी करते थे परन्तु कोई ज्ञान नहीं था, अभी बाप ने ज्ञान दिया है कि इस रीति मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। भल शिव की भक्ति तो दुनिया में बहुत करते हैं, बहुत याद करते हैं परन्तु पहचान नहीं है। इस समय बाप खुद ही आकर पहचान देते हैं कि मुझे याद करो। अभी तुम समझते हो हम अच्छी रीति जानते हैं। तुम कहेंगे हम जाते हैं बापदादा के पास। बाप ने यह भागीरथ लिया है, भागीरथ भी मशहूर है, इन द्वारा बैठ ज्ञान सुनाते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। कल्प- कल्प इस भाग्यशाली रथ पर आते हैं। आत्मा को अब बाप कहते हैं सिर्फ मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे इसलिए तुमको खुशी भी होती है। यह एक अन्तिम जन्म पवित्र बनने से हम पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। तो क्यों न पवित्र बनें। हम एक बाप के बच्चे ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, फिर भी वह जिस्मानी वृत्ति बदलने में टाइम लगता है। धीरे-धीरे पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। इस समय किसकी कर्मातीत अवस्था होना असम्भव है। कर्मातीत अवस्था हो जाए फिर तो यह शरीर भी न रहे, इनको छोड़ना पड़े। लड़ाई लग जाए, एक बाप की ही याद रहे, इसमें मेहनत है।

अभी तुम बच्चों की बुद्धि में नई दुनिया है, जानते हो यह चक्र फिरना है, तुमको और कोई बातों में जाना नहीं है। सिर्फ बाप को याद करना है, सबको यही कहते रहो-बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। हम सबसे ऊंच पार्टधारी हैं। हमारा पार्ट बाबा के साथ है, हम बाबा की श्रीमत पर बाबा की याद में रहकर औरों को भी आप समान बनाते हैं। जो कल्प पहले थे वही बनेंगे। साक्षी होकर देखते रहेंगे और पुरूषार्थ भी कराते रहेंगे। सदा उमंग में रहने के लिए

रोज़ एकान्त में बैठकर अपने साथ बातें करो। बाकी थोड़ा समय इस अशान्त दुनिया में हैं, फिर तो अशान्ति का नाम नहीं रहेगा। कोई मुख से कह न सके कि मन की शान्ति कैसे मिले। शान्ति के लिए तो जाते हैं परन्तु शान्ति का सागर तो एक बाप ही है, दूसरे कोई पास यह वस्तु है नहीं। वैसे तुम बच्चों की बुद्धि में गूँजना चाहिए-रचता और रचना को जानना - यह है ज्ञान। वह शान्ति के लिए, वह सुख के लिए। सुख होता है धन से। धन नहीं तो मनुष्य काम का नहीं। धन के लिए मनुष्य कितना पाप करते हैं। बाप ने अथाह धन दिया है। स्वर्ग सोने का, नर्क पत्थरों का।

- यह नाटक फिरता रहता है। तुम बच्चों को बेहद के नाटक का पता है। फिर भी तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। बाबा कहते हैं तुम सिर्फ याद करो, हमारा बाबा, बाबा है, वही टीचर है, गुरू है। तुम्हारी बुद्धि उस तरफ चली जानी चाहिए। आत्मा खुश होती है बाप की महिमा सुनकर। सब कहते हैं हमारा बाबा, बाबा है, टीचर है, वह सच्चा ही सच्चा है। पढ़ाई भी सच्ची और पूरी है। उन मनुष्यों की पढ़ाई अधूरी है। तो तुम बच्चों की बुद्धि में कितनी खुशी होनी चाहिए। बड़ा इम्तहान पास करने वालों की बुद्धि में जास्ती खुशी रहती है। तुम कितना ऊंच पढ़ते हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। भगवान बाबा, बेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं। तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। वही एपीसोड रिपीट हो रहा है, सिवाए तुम्हारे किसको पता नहीं है।

- साक्षात्कार हुआ, उमंग आया और सब कुछ छोड़ दिया। यहाँ तुम बच्चों को मालूम पड़ा बाप आये हैं, विश्व की बादशाही देने। बाप पूछते हैं निश्चय कब हुआ? तो कहते हैं 8 मास। बाबा ने समझाया है मूल बात है याद और ज्ञान। बाकी तो दीदार कोई काम का नहीं। बाप को पहचान लिया तो फिर पढ़ना शुरू करो तो तुम भी यह बन जायेंगे।

- शरीर निर्वाह अर्थ पुरूषों को धंधा भी करना होता है। कहते हैं शाम के समय देवतायें परिक्रमा पर निकलते हैं, अब देवतायें यहाँ कहाँ से आये। परन्तु इस समय को शुद्ध कहते हैं। इस टाइम पर सबको फुर्सत भी मिलती है। तुम बच्चों को चलते, फिरते, उठते, बैठते याद करना है। बस कोई देहधारी की चाकरी आदि नहीं करनी है। बाप का तो गायन है द्रौपदी के पांव दबाये। इसका भी अर्थ नहीं समझते हैं। स्थूल में पांव दबाने की बात नहीं है। बाबा के पास बुढ़ियां आदि बहुत आती हैं, जानते हैं भक्ति करते-करते थक गई हैं। आधाकल्प बहुत धक्के खाये हैं ना। तो यह पैर दबाने के अक्षर को उठा लिया है।

- मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो कितना हाय दोष मचाते हैं। तुम खुशी से जाते हो। अभी तुम्हारी आत्मा रेस करती हैं देखें कौन शिवबाबा को जास्ती याद करते हैं। शिवबाबा की याद में रहते-रहते ही शरीर छूट जाए तो अहो सौभाग्य। बेड़ा ही पार। सभी को बाप कहते हैं ऐसे पुरूषार्थ करो। सन्यासी भी कोई-कोई ऐसे होते हैं। ब्रह्म में लीन होने के लिए अभ्यास करते हैं। फिर पिछाड़ी में ऐसे बैठे-बैठे शरीर छोड़ देते हैं। सन्नाटा हो जाता है।

- बाप सम्मुख कहते हैं-मीठे बच्चों, तुम्हारे जो भी देह के सम्बन्ध है, सब भूल जाओ। अभी कोई भी नया सम्बन्ध नहीं जोड़ना है। अगर कोई भी सम्बन्ध जोड़ेंगे तो फिर उनको भूलना पड़ेगा। समझो बच्चा वा बच्ची पैदा हुए तो वह भी मुसीबत हुई। एक्स्ट्रा याद बढ़ी ना। बाप कहते हैं सबको भूल एक को ही याद करना है। वही हमारा मात, पिता, टीचर गुरू आदि सब कुछ है, एक बाप के बच्चे हम भाई-बहन हैं। चाचा-मामा आदि का कोई सम्बन्ध नहीं। यह एक ही समय है जबकि भाई-बहन का सम्बन्ध ही रहता है। ब्रह्मा के बच्चे शिवबाबा के बच्चे भी हैं तो पोत्रे-पोत्रियां भी हैं। यह तो पक्का बुद्धि में याद आता है ना। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। स्वदर्शन चक्रधारी तुम बच्चे चलते-फिरते बनते हो।

बाप समझाते हैं-अच्छी रीति बाप की याद में रह सर्विस करेंगे तो आगे चल तुमको साक्षात्कार भी होते रहेंगे। तुम कोई की भी भक्ति आदि नहीं करते हो। तुमको बाप सिर्फ पढ़ाते हैं। घर बैठे आपेही साक्षात्कार आदि होते रहते हैं। बहुतों को ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है, उनके साक्षात्कार के लिए कोई पुरूषार्थ नहीं करते। बेहद का बाप इन द्वारा साक्षात्कार कराते हैं।

बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे। देह द्वारा कर्म तो करना ही है। देह बिगर तो तुम कर्म कर नहीं सकेंगे। कोशिश करनी है काम काज करते भी हम बाप को याद करें। परन्तु यहाँ तो बिगर काम भी याद नहीं कर सकते हैं। भूल जाते हैं। यही मेहनत है। भक्ति में ऐसे कोई थोड़ेही कहा जाता कि सारा दिन भक्ति करो। उसमें टाइम होता है। सवेरे, शाम वा रात को। फिर मन्त्र आदि जो मिलते हैं, वह बुद्धि में रहते हैं। अनेकानेक शास्त्र हैं। वह भक्ति मार्ग में पढ़ते हैं। तुमको तो कोई पुस्तक आदि नहीं पढ़ना है, न बनाना है। यह मुरली छपाते भी हैं रिफ्रेश होने के लिए। बाकी कोई भी किताब आदि नहीं रहेंगी। यह सब खत्म हो जानी है। ज्ञान तो है ही एक बाप में।

तुम बच्चे जब याद की यात्रा में बैठते हो तो माया के तूफान आते हैं, युद्ध चलता है, उससे घबराना नहीं है। माया घड़ी-घड़ी याद को तोड़ेगी। संकल्प-विकल्प ऐसे-ऐसे आयेंगे जो एकदम माथा खराब कर देंगे। तुम मेहनत करो। बाप ने समझाया है इन लक्ष्मी-नारायण की कर्मेन्द्रियाँ वश कैसे हुई। यह सम्पूर्ण निर्विकारी थे। यह शिक्षा इन्हों को कहाँ से मिली? अभी तुम बच्चों को यह बनने की शिक्षा मिल रही है। इनमें कोई विकार नहीं होता। वहाँ रावण राज्य ही नहीं। पीछे रावण राज्य होता बाप कहते हैं पहले-पहले तो एक बात पक्की कर लो-अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। इसमें ही मेहनत है। जैसे 8 घण्टे सरकारी नौकरी होती है ना। अभी

तुम बेहद की सरकार के मददगार हो। तुमको कम से कम 8 घण्टा पुरूषार्थ कर याद में रहना है। यह अवस्था तुम्हारी ऐसी पक्की हो जायेगी जो कोई की भी याद नहीं आयेगी। बाप की याद में ही शरीर छोड़ेंगे। फिर वही विजय माला के दाने बनेंगे। एक राजा की प्रजा कितनी ढेर होती है। यहाँ भी प्रजा बननी है। तुम विजय माला के दाने पूजने लायक बनेंगे। 16108 की माला भी होती है। एक बड़े बॉक्स में पड़ी रहती है। 8 की माला है, 108 की भी है। अन्त में फिर 16108 की भी बनती है। तुम बच्चों ने ही बाप से राजयोग सीख सारे विश्व को स्वर्ग बनाया है इसलिए तुमको पूजा जाता है। अभी तुम कहते हो हम शिवबाबा के गले का हार जाए बनते हैं। ब्राह्मणों की माला नहीं बन सकती है। ब्राह्मणों की माला होती नहीं। तुम जितना याद में रहते हो फिर वहाँ भी नजदीक में ही आकर राज्य करेंगे। यह पढ़ाई और कोई जगह मिल न सके। तुम जानते हो अभी हम इस पुराने शरीर को छोड़ स्वर्गवासी बनेंगे। सारा भारत स्वर्गवासी बनेगा। इनपर्टीकुलर, भारत ही स्वर्ग था।

बाप कहते हैं-मुझे याद करो। योग भक्ति मार्ग का अक्षर है। बाप से बादशाही मिलती है स्वर्ग की, उनको तुम याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे। राजाई कैसे मिलेगी। याद नहीं करेंगे तो पद भी कम हो पड़ेगा, सज़ा भी खायेंगे। यह भी अक्ल नहीं है। इतने बेसमझ बन पड़े हैं। मैं कल्प-कल्प तुमको कहता हूँ-मामेकम् याद करो। जीते जी इस दुनिया से मर जाओ। बाप की याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम विजय माला का दाना बन जायेंगे। कितना सहज है। ऊंच ते ऊंच शिवबाबा और ब्रह्मा दोनों हाइएस्ट हैं। वो पारलौकिक और यह अलौकिक। बिल्कुल साधारण टीचर है। वह टीचर्स फिर भी सज़ा देते हैं, यह तो पुचकार देते रहते हैं। कहते हैं-मीठे बच्चे, बाप को याद करो, सतोप्रधान बनना है। पतित-पावन एक ही बाप है। गुरू भी वही ठहरा और कोई गुरू हो न सके।

7 रोज़ का कोर्स लो। जो मुरली को सहज समझ सको। कहाँ भी जाओ सिर्फ दो अक्षर याद करो। यह है महामन्त्र। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। कोई भी विकर्म वा पाप कर्म देह-अभिमान में आने से ही होता है। विकर्मों से बचने के लिए बुद्धि की प्रीति एक बाप से ही लगानी है। कोई देहधारी से नहीं। एक से बुद्धि का योग लगाना है। अन्त तक याद करना है तो फिर कोई विकर्म नहीं होगा। यह तो सड़ी हुई देह है। इनका अभिमान छोड़ दो। नाटक पूरा होता है, अभी हमारे 84 जन्म पूरे हुए। यह पुरानी आत्मा पुराना शरीर है। अब तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है फिर शरीर भी सतोप्रधान मिल जायेगा। आत्मा को सतोप्रधान बनाना है- यही तात लगी रहे। बाप सिर्फ कहते हैं मामेकम् याद करो। बस यही ओना रखो। तुम भी कहते हो ना-बाबा हम पास होकर दिखायेंगे। क्लास में जानते हैं सबको स्कॉलरशिप तो नहीं मिलेगी। फिर भी पुरूषार्थ तो बहुत करते हैं ना। तुम भी समझते हो हमको नर से नारायण बनने का पूरा पुरूषार्थ करना है। कम क्यों करें। कोई भी बात की परवाह नहीं। वारियर्स कभी परवाह नहीं करते हैं। कोई कहते हैं बाबा बहुत तूफान, स्वप्न आदि आते हैं। यह तो सब होगा। तुम एक बाप को याद करते रहो। इन दुश्मन पर जीत पानी है। कोई समय ऐसे-ऐसे स्वप्न आयेंगे न मन, न चित, ऐसे-ऐसे घुटके आयेंगे। यह सब माया है। हम माया को जीतते हैं। आधाकल्प के लिए दुश्मन से राज्य लेते हैं, हमको कोई परवाह नहीं। बहादुर कभी चूँ-चाँ नहीं करते। लड़ाई में खुशी से जाते हैं। तुम तो यहाँ बड़े आराम से बाप से वर्सा लेते हो। यह छी-छी शरीर छोड़ना है। अब जाते हैं स्वीट साइलेन्स होम। बाप कहते हैं मैं आया हूँ, तुमको ले चलने। मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। इमप्योर आत्मा जा न सके। यह हैं नई बातें।

जितनी जास्ती परहेज रखेंगे उतना तुम्हारा कल्याण होगा। जास्ती परहेज रखने में कुछ मेहनत भी होगी। रास्ते में भूख लगती है, खाना साथ में ले जाओ। कोई तकलीफ होती है, लाचारी है तो स्टेशन वालों से डबलरोटी ले खाओ। सिर्फ बाप को याद करो। इनको ही कहा जाता है योगबल। इसमें हठयोग की कोई बात नहीं है, शरीर को कमजोर नहीं बनाना है। दधीचि ऋषि

मिसल हड्डी-हड्डी देनी है, इसमें हठयोग की बात नहीं है। यह सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। शरीर को तो बिल्कुल तन्दुरूस्त रखना है। योग से 21 जन्मों के लिए तन्दुरूस्त बनना है। यह प्रैक्टिस यहाँ ही करनी है। बाबा समझाते हैं इसमें पूछने की दरकार नहीं रहती। हाँ कोई बड़ी बात है, उसमें मूँझते हो तो पूछ सकते हो। छोटी-छोटी बातें बाबा से पूछने में कितना टाइम जाता है। बड़े आदमी बहुत थोड़ा बोलते हैं। शिवबाबा को कहा जाता है - सद्गति दाता।

मीठे-मीठे बच्चों, अपने को आत्मा समझकर यहाँ बैठना है। यह राज़ तुम बच्चों को भी समझाना है। आत्म-अभिमानी होकर बैठेंगे तो बाप के साथ प्यार रहेगा। बाबा हमको राजयोग सिखलाते हैं। बाबा से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यह याद सारा दिन बुद्धि में रहे-इसमें ही मेहनत है। यह घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं तो खुशी का पारा डल हो जाता है। बाबा सावधान करते हैं कि बच्चे देही-अभिमानी होकर बैठो। अपने को आत्मा समझो। अभी आत्माओं और परमात्मा का मेला है ना। मेला लगा था, कब लगा था? जरूर कलियुग अन्त और सतयुग आदि के संगम पर ही लगा होगा।

कहते हैं दादा ने तो सब अनुभव किया, पिछाड़ी में करके सन्यास किया है, बहुत मेहनत तो उनको है जो जोड़ा बन जाते हैं। फिर उसमें ज्ञान और योग भी चाहिए। बहुतों को आपसमान बनायें तब बड़ा राजा बनें। सिर्फ एक बात तो नहीं है ना। बाप कहते हैं तुम शिवबाबा को याद करो। यह है प्रजापिता। बहुत ऐसे भी हैं जो कहते हैं हमारा काम तो शिवबाबा से है। हम ब्रह्मा को याद ही क्यों करें! उनको पत्र ही क्यों लिखें! ऐसे भी हैं। तुमको याद करना है शिवबाबा को इसलिए बाबा फोटो आदि भी नहीं देते हैं। इनमें शिवबाबा आता है, यह तो देहधारी है ना। अभी तो तुम बच्चों को बाप से वर्सा मिलता है। वह अपने को ईश्वर कहते हैं फिर उनसे क्या

मिलता है, कितना घाटा पड़ा है भारतवासियों को। एकदम भारतवासियों ने देवाला मारा है। प्रजा से भीख मांगते रहते हैं।

पहले-पहले बच्चों को सावधानी मिलती है – बाप को याद करो और वर्से को याद करो। मनमनाभव। यह अक्षर भी व्यास ने लिखा है। संस्कृत में तो बाप ने समझाया नहीं है। बाप तो हिन्दी में ही समझाते हैं। बच्चों को कहते हैं कि बाप को और वर्से को याद करो। यह सहज अक्षर है कि हे बच्चों मुझ बाप को याद करो। लौकिक बाप ऐसे नहीं कहेंगे कि हे बच्चों मुझ अपने बाप को याद करो। यह है नई बात। बाप कहते हैं हे बच्चों मुझ अपने निराकार बाप को याद करो। यह भी बच्चे समझते हैं रूहानी बाप हम रूहों से बात करते हैं। घड़ी-घड़ी बच्चों को कहना कि बाप को याद करो, यह शोभता नहीं है। जबकि बच्चे जानते हैं हमारा फर्ज है रूहानी बाप को याद करना, तब ही विकर्म विनाश होंगे। बच्चों को निरन्तर याद करने की कोशिश करनी पड़े। इस समय कोई निरन्तर याद कर न सके, टाइम लगता है। यह बाबा कहते हैं मैं भी निरन्तर याद नहीं कर सकता हूँ। वह अवस्था पिछाड़ी में ठहरेगी। तुम बच्चों को पहला पुरूषार्थ बाप को याद करने का ही करना है।

रात दिन सर्विस का ही ओना रहता है। ईश्वरीय संबंध से लव रहता है। बाहर में उनकी बुद्धि कहाँ नहीं जाती। ऐसा लव दैवी परिवार से रखना है। अज्ञान काल में भी बच्चों का बाप से, बहन-भाइयों का आपस में बहुत ही लव रहता है। यहाँ तो कोई-कोई का रिंचक मात्र भी बाप से योग नहीं है। गैरन्टी तो बहुत करते हैं। भक्ति मार्ग में गाते हैं, अभी तो बच्चे सम्मुख हैं। विचार किया जाता है भक्ति मार्ग में जो गाते रहते हैं, कितना लव से याद करते हैं। यहाँ तो याद ही नहीं करते। बाबा का बनने से माया दुश्मन बन पड़ती है। बुद्धि बाहर चली जाती है तो माया अच्छा ही गिरा देती है। वह खुद नहीं समझते कि हम जो कुछ करते हैं वह गिरने के लिए ही करते हैं। अपनी

मत पर गिरते रहते हैं। उनको पता ही नहीं पड़ता कि हम क्या कर रहे हैं। कुछ तो खामियाँ बच्चों में हैं ना। कहते एक हैं करते दूसरा हैं। नहीं तो बाप से वर्सा कितना ऊंच मिलता है। सच्चाई से कितना बाप की सर्विस में लग जाना चाहिए। परन्तु माया कितनी दुस्तर है। कोटों में कोई बाप को पूरा पहचानते हैं। बाप कहते हैं, कल्प-कल्प ऐसे ही होता है। पूरा वफादार, फरमानबरदार न होने के कारण उन बिचारों का पद ऐसा हो पड़ता है।

- पीछे रामलीला दिखाते हैं। परन्तु नम्बरवन में राधे कृष्ण की रास लीला है क्योंकि इस समय वह बाप से बहुत ही सच्चे बनते हैं तो कितना ऊंच पद पाते हैं। हाथ तो बहुत उठाते हैं, परन्तु माया कैसी है। प्रतिज्ञा करते हैं तो उस पर चलना पड़े ना। माया के भूतों को भगाना है। देह-अभिमान के पीछे सब भूत चटक जाते हैं। बाबा कहते हैं देही-अभिमानी बन बाप को याद करो। उसमें भी सवेरे-सवेरे बैठ बातें करो। बाबा की महिमा करो। भक्तिमार्ग में भल याद करते हैं परन्तु महिमा तो कोई की है नहीं। कृष्ण को याद करेंगे। महिमा करेंगे – माखन चुराया, उनको भगाया। अकासुर, बकासुर को मारा, यह किया। बस और क्या कहेंगे। यह है सब झूठ। सच की रत्ती नहीं। फिर रास्ता क्या बतायेंगे! मुक्ति को ही नहीं जानते। इस समय सारे विश्व पर रावण का राज्य है। सब इस समय पतित हैं।

- तुम ही पूज्य देवी-देवता थे, अब पुजारी बने हो। फिर बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो खाद निकल जायेगी। तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और कोई उपाय नहीं है। यही सच्चा-सच्चा उपाय है। परन्तु योग में रहते नहीं हैं। देह-अभिमान बहुत है। देह-अभिमान जब मिटे तब योग में रह सकते, फिर कर्मातीत अवस्था हो। पिछाड़ी में कोई भी चीज याद नहीं आनी चाहिए। कोई-कोई बच्चों का कोई चीज में इतना मोह पड़ जाता है जो बात मत पूछो। शिवबाबा को कभी याद नहीं करते हैं। ऐसे बाप को खास याद करना है। कहा जाता है हथ कार डे दिल यार डे.. ऐसे

बहुत मुश्किल किसको याद रहता है। चलन से ही पता पड़ जाता है। यज्ञ का रिगार्ड नहीं रहता। इस यज्ञ की बड़ी सम्भाल रखनी चाहिए। सम्भाल की गोया बाबा को खुश किया। हर बात में सम्भाल चाहिए।

बिगर कौड़ी खर्चा, सेकण्ड में विश्व की बादशाही लो। अल्फ को याद करो। बे बादशाही है ही। बाप कहते हैं जितना हो सके सच्ची दिल से सच्चे साहेब को राजी करो, तो सचखण्ड के मालिक बनेंगे। झूठ यहाँ नहीं चलेगी। याद करना है। ऐसे नहीं कि हम तो बच्चे हैं ही। याद करने में बड़ी मेहनत है। कोई विकर्म किया तो बड़े घोटाले में आ जायेंगे। बुद्धि ठहरेगी नहीं। बाबा तो अनुभवी है ना। बाबा बताते रहते हैं। कई बच्चे अपने को मिया मिट्ठू समझते हैं परन्तु बाबा कहते हैं बहुत मेहनत है। माया बहुत विघ्न डालती है।

कहते हैं कि हम बी.के. हैं, परन्तु हैं नहीं। बाकी जो पूरी रीति डायरेक्शन पर चलते हैं, आप समान बनाते रहते हैं, वे ही ऊंच पद पा सकेंगे। विघ्न तो पड़ेंगे। अमृत पीते-पीते फिर जाकर विघ्न डालते हैं। यह भी गायन है, उनका पद क्या होगा? कई बच्चियां तो विकार के कारण मार भी खाती हैं, कहती हैं कि बाबा यह दु:ख थोड़ा सहन कर लेंगे। हमारा माशूक तो बाबा है ना। मार खाते भी हम शिवबाबा को याद करती हूँ। वह खुशी में बहुत रहती हैं। इस अपार खुशी में रहना चाहिए। बाप से हम वर्सा ले रहे हैं औरों को भी हम आप समान बनाते रहते हैं। बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है। इसको बड़ा महत्व देते हैं। बच्चे जो विचार सागर मंथन कर ऐसे– ऐसे चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनकी शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है।

शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना करवाते हैं। ब्रह्मा एक ही है। यह पतित फिर वही ब्रह्मा पावन बनता है तो फरिश्ता बन जाता है। जो सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं, वह दूसरा ब्रह्मा नहीं है। ब्रह्मा एक है। यह व्यक्त वह अव्यक्त। यह सम्पूर्ण पावन हो जायेंगे तो सूक्ष्मवतन में देखेंगे। वहाँ हड्डी आदि होती नहीं। जैसे बाबा ने समझाया था – जिस आत्मा को शरीर नहीं मिलता है तो भटकती रहती है। उनको भूत कहते हैं। जब तक शरीर मिले तब तक भटकती है। कोई अच्छी होती है, कोई बुरी होती है। तो बाप हर एक बात की समझानी देते हैं। वह ज्ञान का सागर है तो जरूर समझायेंगे ना। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति है। अल्फ और बे को याद करो तो सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा। कितना सहज है। नाम ही है सहज राजयोग। वह समझते हैं भारत का योग यह था। परन्तु वह सन्यासियों का हठयोग है। यह तो बिल्कुल ही सहज है। योग माना याद । उनका है हठयोग। यह है सहज। बाप कहते हैं मुझे इस प्रकार याद करो। कोई लॉकेट आदि लगाने की दरकार नहीं है। तुम तो बच्चे हो बाप के। बाप को सिर्फ याद करो। तुम यहाँ पार्ट बजाने आये हो। अब सबको वापिस घर जाना है फिर वही पार्ट बजाना है। भारतवासी ही सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, वैश्य वंशी, शूद्र वंशी बनते हैं। इस बीच में और धर्म वाले भी आते हैं। 84 जन्म तुम लेते हो। फिर तुमको ही नम्बरवन में जाना है। फिर तुम सतयुग में आयेंगे तो और सभी शान्तिधाम में होंगे। और धर्म वालों के वर्ण नहीं हैं। वर्ण भारत के ही हैं। तुम ही सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बने थे। अभी ब्राह्मण वर्ण में हो। ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण बने हो। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। जिनकी बुद्धि में धारणा नहीं हो सकती, उनको कहते हैं सिर्फ बाप को याद करो। जैसे बाप को जानने से बच्चे को मालूम पड़ जाता है यह मिलकियत है। बच्ची को तो वर्सा नहीं मिलता है। यहाँ तुम सब शिवबाबा के बच्चे हो, सबका हक है। मधुबन मेल अथवा फीमेल सबका हक है। सबको सिखाना है – शिवबाबा को याद करो। जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे, पतित से पावन बनेंगे। आत्मा में जो खाद पड़ी है वह निकले कैसे? बाप कहते हैं योग से ही तुम्हारी खाद खत्म हो जायेगी। यह पतित शरीर तो यहाँ ही छोड़ना है। आत्मा पवित्र बन जायेगी।

भूलें बहुतों से होती हैं, तुम तो सच बताते हो, कई तो सुनाते भी नहीं हैं। कोई-कोई फर्स्टक्लास बच्चियाँ हैं, कभी भी कहाँ बुद्धि जाती नहीं। जैसे बम्बई में निर्मला डॉक्टर है, नम्बरवन। बिल्कुल साफ दिल, कभी दिल में उल्टा ख्याल नहीं आयेगा इसलिए दिल पर चढ़ी हुई है। ऐसे और भी बच्चियाँ हैं। तो बाप समझाते हैं सिर्फ सच्ची दिल से बाप को याद करो। कर्म तो करना ही है। बुद्धियोग बाप से लगा रहे। हाथ काम तरफ दिल यार तरफ। वह अवस्था पिछाड़ी की है। जिसके लिए ही गाते हैं– अतीन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो जो इस अवस्था को पाते हैं। जो पाप कर्म करते हैं उनकी यह अवस्था होती नहीं। बाबा अच्छी तरह जानते हैं तब तो भक्ति मार्ग में भी अच्छे वा बुरे कर्म का फल मिलता है। देने वाला तो बाप है ना। जो किसको दु:ख देंगे तो जरूर दु:ख भोगेंगे। जैसा कर्म किया है तो भोगना ही होगा। यहाँ तो बाप खुद हाजिर है, समझाते रहते हैं फिर भी गवर्मेन्ट है, धर्मराज तो मेरे साथ हुआ ना। इस समय मेरे से कुछ भी छिपाओ नहीं। ऐसे नहीं कि बाबा जानता है, हम शिवबाबा से दिल अन्दर क्षमा लेते हैं, कुछ भी क्षमा नहीं होगा। पाप कभी भी किसका छिपा नहीं रहेगा।

निरन्तर याद तो पिछाड़ी में रहेगी। सिवाए एक बाप के और कोई की याद न रहे। गाया हुआ भी है अन्तकाल जो स्त्री सिमरे... जिसमें मोह होगा तो वह याद आ पड़ेगी। आगे चल जितना तुम नज़दीक आते जायेंगे, साक्षात्कार होता जायेगा। बाबा हर एक को दिखायेंगे तुमने ऐसा-ऐसा काम किया है। शुरू-शुरू में भी तुमने साक्षात्कार किये हैं। सज़ायें जो भोगते थे वो बहुत ही चिल्लाते थे। बाबा कहते हैं तुमको दिखलाने के लिए इनकी सौगुणी सज़ायें कटवा दी। तो ऐसा काम नहीं करना है जो बाबा की सर्विस में विघ्न पड़े।

- सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। दूसरे को सिखाते रहेंगे, खुद उस अवस्था में नहीं रहेंगे तो असर पड़ेगा नहीं। अपना भी पुरूषार्थ करना है। बाप भी बताते हैं कि हम भी याद करने की कोशिश करता हूँ। कभी माया का तूफान ऐसा आता है जो बुद्धि का योग तोड़ देते हैं। बहुत बच्चे चार्ट भेज देते हैं। वन्डर खाता हूँ कि यह तो हमसे भी तीखे जाते हैं।

- जितना तुम याद करते हो उतना तुम प्यार पाते हो। विकर्म विनाश होते हैं और धारणा भी होती है। बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। जो भी आये उनको रास्ता बतायें।

- बच्चों को ओम् शान्ति के अर्थ का तो पता है कि मैं आत्मा हूँ और मुझ आत्मा का स्वधर्म है शान्ति। मैं आत्मा शान्त स्वरूप, शान्तिधाम की रहने वाली हूँ। यह लेसन पक्का करते जाओ। यह कौन समझाते हैं? शिवबाबा। याद भी करना है शिवबाबा को। उनको अपना रथ नहीं है इसलिए उनको बैल दे देते हैं।

- बाप कहते हैं कोई भी देहधारी को याद नहीं करो, देखते हुए हम नहीं देखते हैं। हम आत्मा हैं, हम अपने घर जायेंगे। खुशी से पुराना शरीर छोड़ देना है। अपने शान्तिधाम को याद करते रहेंगे तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। एक बाप को याद करना, इसमें ही मेहनत है। मेहनत बिगर ऊंच पद थोड़ेही मिलेगा। बाप आते ही हैं तुमको नर से नारायण बनाने के लिए। अब स्वर्ग में चलना है। अब बाप को और स्वर्ग को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। शादी आदि में भल जाओ परन्तु याद बाप को करो। नॉलेज सारी बुद्धि में रहनी चाहिए। भल घर में रहो, बच्चों आदि की सम्भाल करो परन्तु बुद्धि में याद रखो-बाबा का फरमान है मुझे याद करो। घर

छोड़ना नहीं है। नहीं तो बच्चों की सम्भाल कौन करेगा? भक्त लोग घर में रहते हैं, गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं फिर भी भक्त कहा जाता है क्योंकि भक्ति करते हैं, घर-बार सम्भालते हैं।

घड़ी-घड़ी बाप को लिखते हैं हम बाप की याद भूल जाते हैं। उदास हो जाते हैं। अरे तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने आया हूँ फिर तुम उदास क्यों रहते हो! मेहनत तो करनी है, पवित्र बनना है। ऐसे ही तिलक दे देवें क्या! आपेही अपने को राजतिलक देने के लायक बनाना है - ज्ञान और योग से। बाप को याद करते रहो तो तुम आपेही तिलक के लायक बन जायेंगे। बुद्धि में है शिवबाबा हमारा स्वीट बाप, टीचर, सतगुरू है। हमको भी बहुत स्वीट बनाते हैं। तुम जानते हो हम कृष्णपुरी में जरूर जायेंगे।

रावण राज्य में बहुत उपद्रव हैं। अभी तो तमोप्रधान है ना। एक-दो में मत न मिलने कारण कितना झगड़ा है इसलिए बाप समझाते रहते हैं इस पुरानी दुनिया को भूल अकेले बन जाओ, घर को याद करो। अपने सुखधाम को याद करो, किससे जास्ती बात भी न करो, नहीं तो नुकसान हो जाता है। बहुत मीठा, शान्त, प्यार से बोलना अच्छा है। जास्ती न बोलना अच्छा है। शान्ति में रहना सबसे अच्छा है। तुम बच्चे तो शान्ति से विजय पाते हो। सिवाए एक बाप के और कोई से प्रीत नहीं लगानी है। जितना बाप से प्रॉपर्टी लेना चाहो उतनी ले लो। नहीं तो लौकिक बाप की प्रॉपर्टी पर कितना झगड़ा हो पड़ता है। इसमें कोई खिट-खिट नहीं। जितना चाहे उतना अपनी पढ़ाई से ले सकते हो।

प्रजापिता तो यह है ना। कितने ढेर बच्चों का ख्याल रहता है, तब बाबा कहते हैं तुम बच्चे अच्छी रीति बाप की याद में रह सकते हो। इनको तो हजारों फुरने हैं। एक फुरना तो है ही।

हजारों फुरने (ख्यालात) दूसरे रहते हैं । कितने ढेर बच्चों को सम्भालना पड़ता है । माया भी बड़ी दुश्मन है ना । अच्छी रीति कोई-कोई की खाल उतार देती है । कोई को नाक से, कोई को चोटी से पकड़ लेती है । इतने सबका विचार तो करना पड़ता है । फिर भी बेहद बाप की याद में रहना पड़े । तुम हो बेहद के बाप के बच्चे । जानते हो हम बाप की श्रीमत पर चल क्यों न बाप से पूरा वर्सा ले लेवे । सब तो एकरस चल न सकें क्योंकि यह राजाई स्थापन हो रही है, और कोई की बुद्धि में आ न सके ।

फर्स्टक्लास बच्चे भी कहाँ-कहाँ भूल जाते हैं। सब बातें पूछनी चाहिए क्योंकि बहुतों में माया प्रवेश कर लेती है। फिर ध्यान में जाकर क्या-क्या बोलते रहते हैं। इसमें भी बड़ा सम्भालना चाहिए। बाप को पूरा समाचार देना चाहिए। फलाने में मम्मा आती है, फलाने में बाबा आते हैं- इन सब बातों को छोड़ बाप का एक ही फरमान है कि मामेकम् याद करो। बाप को और सृष्टि चक्र को याद करो। रचयिता और रचना का सिमरण करने वाले की शक्ल सदैव हार्षित रहेगी। बहुत हैं जिनका सिमरण होता नहीं है। कर्म-बन्धन बड़ा भारी है। विवेक कहता है-जबकि बेहद का बाप मिला है, कहते हैं मुझे याद करो तो फिर क्यों न हम याद करें। कुछ भी होता है तो बाप से पूछो। बाप समझायेंगे कर्मभोग तो अभी रहा हुआ है ना। कर्मातीत अवस्था हो जायेगी तो फिर तुम सदैव हार्षित रहेंगे। तब तक कुछ न कुछ होता है। यह भी जानते हो मिरूआ मौत मलूका शिकार। विनाश होना है। तुम फरिश्ते बनते हो। बाकी थोड़े दिन इस दुनिया में हो फिर तुम बच्चों को यह स्थूलवतन भासेगा नहीं। सूक्ष्मवतन और मूलवतन भासेगा। सूक्ष्मवतनवासियों को कहा जाता है फरिश्ते। वह बहुत थोड़ा समय बनते हो जबकि तुम कर्मातीत अवस्था को पाते हो। सूक्ष्मवतन में हड्डी मांस होता नहीं। हड्डी मांस नहीं तो बाकी क्या रहा? सिर्फ सूक्ष्म शरीर होता है! ऐसे नहीं कि निराकार बन जाते हैं। नहीं, सूक्ष्म आकार रहता है। वहाँ की भाषा मूवी चलती है। आत्मा आवाज से परे है। उसको कहा जाता है सटिल वर्ल्ड। सूक्ष्म आवाज होता है। यहाँ है टाकी। फिर मूवी फिर है साइलेन्स। यहाँ टॉक चलती है।

यह ड्रामा का बना बनाया पार्ट है। वहाँ है साइलेन्स। वह मूवी और यह है टाकी। इन तीन लोकों को भी याद करने वाले कोई विरले होंगे। बाप समझाते हैं- बच्चे, सजाओं से छूटने के लिए कम से कम 8 घण्टा कर्मयोगी बन कर्म करो, 8 घण्टा आराम करो और 8 घण्टा बाप को याद करो। इसी प्रैक्टिस से तुम पावन बन जायेंगे। नींद करते हो, वह कोई बाप की याद नहीं है। ऐसे भी कोई न समझे कि बाबा के तो हम बच्चे हैं ना फिर याद क्या करें। नहीं, बाप तो कहते हैं मुझे वहाँ याद करो। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। जब तक योगबल से तुम पवित्र न बनो तब तक घर में भी तुम जा नहीं सकते। नहीं तो फिर सजायें खाकर जाना होगा। सूक्ष्मवतन मूलवतन में भी जाना है फिर आना है स्वर्ग में। बाबा ने समझाया है आगे चल अखबारों में भी पड़ेगा, अभी तो बहुत टाइम है। इतनी सारी राजधानी स्थापन होती है। साउथ, नार्थ, इस्ट, वेस्ट भारत का कितना है। अब अखबारों द्वारा ही आवाज निकलेगा। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। बुलाते भी हैं-हे पतित-पावन, लिबरेटर हमको दु:ख से छुड़ाओ। बच्चे जानते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार विनाश भी होना है। इस लड़ाई के बाद फिर शान्ति ही शान्ति होगी, सुखधाम हो जायेगा। सारी उथल पाथल हो जायेगी। सतयुग में होता ही है एक धर्म। कलियुग में हैं अनेक धर्म। यह तो कोई भी समझ सकते हैं।

बाप बच्चों को समझा रहे हैं। अब इसको याद की यात्रा भी कहें तो प्रीत की यात्रा भी कहें। मनुष्य तो उन यात्राओं पर जाते हैं। यह जो रचना है उनकी यात्रा पर जाते हैं, भिन्न-भिन्न रचना है ना। रचयिता को तो कोई भी जानते ही नहीं। अभी तुम रचयिता बाप को जानते हो, उस बाप की याद में तुमको कभी रूकना नहीं है। तुमको यात्रा मिली है याद की। इसको याद की यात्रा अथवा प्रीत की यात्रा कहा जाता है। जिसकी जास्ती प्रीत होगी वह यात्रा भी अच्छी करेंगे। जितना प्यार से यात्रा पर रहेंगे, पवित्र भी बनते जायेंगे। शिव भगवानुवाच है ना। विनाश काले विपरीत बुद्धि और विनाश काले प्रीत बुद्धि। तुम बच्चे जानते हो अभी विनाशकाल है। यह

वही गीता एपीसोड चल रहा है। बाबा ने श्रीकृष्ण की गीता और त्रिमूर्ति शिव की गीता का कान्ट्राक्ट भी बताया है! अब गीता का भगवान कौन? परमपिता शिव भगवानुवाच। सिर्फ शिव अक्षर नहीं लिखना है क्योंकि शिव नाम भी बहुतों के हैं इसलिए परमपिता परमात्मा लिखने से वह सुप्रीम हो गया। परमपिता तो कोई अपने को कह न सके। सन्यासी लोग शिवोहम् कह देते हैं, वह तो बाप को याद भी कर न सकें। बाप को जानते ही नहीं। बाप से प्रीत है ही नहीं। प्रीत और विपरीत यह प्रवृत्ति मार्ग के लिए है। कोई बच्चों की बाप से प्रीत बुद्धि होती है, कोई की विपरीत बुद्धि भी होती है। तुम्हारे में भी ऐसे हैं। बाप के साथ प्रीत उनकी है, जो बाप की सार्विस में तत्पर हैं। बाप के सिवाए और कोई से प्रीत हो न सके। शिवबाबा को ही कहते हैं बाबा हम तो आपके ही मददगार हैं। ब्रह्मा की इसमें बात ही नहीं। शिवबाबा के साथ जिन आत्माओं की प्रीत होगी वह जरूर मददगार होंगे। शिवबाबा के साथ वह सार्विस करते रहेंगे। प्रीत नहीं है तो गोया विपरीत हो जाते हैं, विपरीत बुद्धि विनशन्ती। जिनकी बाप से प्रीत होगी तो मददगार भी बनेंगे। जितनी प्रीत उतना सार्विस में मददगार बनेंगे। याद ही नहीं करते तो प्रीत नहीं है। फिर देहधारियों से प्रीत हो जाती है। मनुष्य, मनुष्य को अपनी याद गार की चीज भी देते हैं ना। वह याद जरूर पड़ते हैं। अभी तुम बच्चों को बाप अविनाशी ज्ञान रत्नों की सौगात देते हैं, जिससे तुम राजाई प्राप्त करते हो। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते हैं तो प्रीत बुद्धि हैं। जानते हैं बाबा सबका कल्याण करने आये हैं, हमको भी मददगार बनना है। ऐसे प्रीत बुद्धि विजयन्ती होते हैं। जो याद ही नहीं करते वह प्रीत बुद्धि नहीं। बाप से प्रीत होगी, याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और दूसरों को भी कल्याण का रास्ता बतायेंगे। तुम ब्राह्मण बच्चों में भी प्रीत और विपरीत का मदार है। बाप को जास्ती याद करते हैं गोया प्रीत है। बाप कहते हैं मुझे निरन्तर याद करो, मेरे मददगार बनो। रचना को एक रचता बाप ही याद रहना चाहिए। किसी रचना को याद नहीं करना है। दुनिया में तो रचयिता को कोई जानते नहीं, न याद करते हैं। सन्यासी लोग भी ब्रह्म को याद करते हैं, वह भी रचना हो गई। रचयिता तो सबका एक ही है ना। और जो भी चीजें इन आंखों से देखते हो वह सब तो हैं रचना। जो नहीं देखने आता है वह

है रचयिता बाप। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी चित्र है। वह भी रचना है। बाबा ने जो चित्र बनाने लिए कहा है ऊपर में लिखना है परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। भल कोई अपने को भगवान कहे परन्तु परमपिता कह न सके। तुम्हारा बुद्धियोग है शिवबाबा के साथ, न कि शरीर के साथ। बाप ने समझाया है अपने को अशरीरी आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। प्रीत और विपरीत का सारा मदार है सार्विस पर। अच्छी प्रीत होगी तो बाप की सार्विस भी अच्छी करेंगे, तब विजयन्ती कहेंगे। प्रीत नहीं तो सार्विस भी नहीं होगी। फिर पद भी कम। कम पद को कहा जाता है ऊंच पद से विनशन्ती। यूँ विनाश तो सबका होता ही है, परन्तु यह खास प्रीत और विपरीत की बात है। रचयिता बाप तो एक ही है, उनको ही शिव परमात्माए नम: कहते हैं। शिवजयन्ती भी मनाते हैं। शंकर जयन्ती कभी सुना नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा का भी नाम बाला है, विष्णु की जयन्ती नहीं मनाते, कृष्ण की मनाते हैं। यह भी किसको पता नहीं-कृष्ण और विष्णु में क्या फर्क है? मनुष्यों की है विनाश काले विपरीत बुद्धि। तो तुम्हारे में भी प्रीत और विपरीत बुद्धि हैं ना। बाप कहते हैं तुम्हारा यह रूहानी धंधा तो बहुत अच्छा है। सवेरे और शाम को इस सार्विस में लग जाओ। शाम का समय 6 से 7 तक अच्छा कहते हैं। सतसंग आदि भी शाम को और सवेरे करते हैं। रात में तो वायुमण्डल खराब हो जाता है। रात को आत्मा स्वयं शान्ति में चली जाती है, जिसको नींद कहते हैं। फिर सवेरे जागती है। कहते भी हैं राम सिमर प्रभात मोरे मन। अब बाप बच्चों को समझाते हैं मुझ बाप को याद करो। शिवबाबा जब शरीर में प्रवेश करे तब तो कहे कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम कितना बाप को याद करते हैं और रूहानी सेवा करते हैं। सभी को यही परिचय देना है-अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। खाद निकल जायेगी। प्रीत बुद्धि में भी परसेन्टेज है। बाप से प्रीत नहीं है तो जरूर अपनी देह में प्रीत है या मित्र सम्बन्धियों आदि से प्रीत है। बाप से प्रीत होगी तो सार्विस में लग जायेंगे। बाप से प्रीत नहीं तो सार्विस में भी नहीं लगेंगे। कोई को सिर्फ अलफ और बे का राज समझाना तो बहुत ही सहज है। हे भगवान, हे परमात्मा कह याद करते हैं परन्तु उनको जानते बिल्कुल नहीं।

बाबा ने समझाया है हर एक चित्र में ऊपर परमपिता त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच जरूर लिखना है तो कोई कुछ कह न सके। अभी तुम बच्चे तो अपना सैपालिंग लगा रहे हो। सभी को रास्ता बताओ तो बाप से आकर वर्सा लेवे। बाप को जानते ही नहीं इसलिए प्रीत बुद्धि हैं नहीं। पाप बढ़ते-बढ़ते एकदम तमोप्रधान बन पड़े हैं। बाप के साथ प्रीत उनकी होगी जो बहुत याद करेंगे। उनकी ही गोल्डन एज बुद्धि होगी। अगर और तरफ बुद्धि भटकती होगी तो तमोप्रधान ही रहेंगे। भल सामने बैठे हैं तो भी प्रीत बुद्धि नहीं कहेंगे क्योंकि याद ही नहीं करते हैं। प्रीत बुद्धि की निशानी है याद । वह धारणा करेंगे, औरों पर भी रहम करते रहेंगे कि बाप को याद करो तो तुम पावन बनेंगे। यह किसको भी समझाना तो बहुत सहज है। बाप स्वर्ग की बादशाही का वर्सा बच्चों को ही देते हैं। जरूर शिवबाबा आया था तब तो शिवजयन्ती भी मनाते हैं ना। कृष्ण राम आदि सब होकर गये हैं तब तो मनाते आते हैं ना। शिवबाबा को भी याद करते हैं क्योंकि वह आकर बच्चों को विश्व की बादशाही देते हैं, नया कोई इन बातों को समझ न सके। भगवान कैसे आकर वर्सा देते हैं, बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि हैं। याद करने की बुद्धि नहीं। बाप खुद कहते हैं तुम आधाकल्प के आशिक हो। मैं अब आया हुआ हूँ। भक्ति मार्ग में तुम कितने धक्के खाते हो। परन्तु भगवान तो कोई को मिला ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो बाप भारत में ही आया था और मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताया था। कृष्ण तो यह रास्ता बताते नहीं। भगवान से प्रीत कैसे जुटे सो भारतवासियों को ही बाप आकर सिखलाते हैं। आते भी भारत में हैं। शिव जयन्ती मनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच है ही भगवान, उनका नाम है शिव इसलिए तुम लिखते हो शिव जयन्ती ही हीरे तुल्य है, बाकी सबकी जयन्ती है कौड़ी तुल्य। ऐसे लिखने से बिगड़ते हैं इसलिए हर एक चित्र में अगर शिव भगवानुवाच होगा तो तुम सेफ्टी में रहेंगे। कोई-कोई बच्चे पूरा नहीं समझते हैं तो नाराज हो जाते हैं। माया की ग्रहचारी पहला वार बुद्धि पर ही करती है। बाप से ही बुद्धियोग तोड़ देती है, जिससे एकदम ऊपर से नीचे गिर जाते हैं। देहधारियों से बुद्धियोग अटक पड़ता है तो बाप से विपरीत हुए ना। तुमको प्रीत रखनी है एक विचित्र विदेही बाप से। देहधारी से प्रीत रखना नुकसानकारक है। बुद्धि ऊपर से टूटती है तो एकदम नीचे गिर पड़ते हैं। भल यह अनादि बना बनाया ड्रामा है फिर भी समझायेंगे तो सही

ना। विपरीत बुद्धि से तो जैसे बांस आती है, नाम-रूप में फँसने की। नहीं तो सार्विस में खड़ा हो जाना चाहिए। बाबा ने कल भी अच्छी रीति समझाया-मुख्य बात ही है गीता का भगवान कौन? इसमें ही तुम्हारी विजय होनी है। तुम पूछते हो कि गीता का भगवान शिव या श्रीकृष्ण? सुख देने वाला कौन है? सुख देने वाला तो शिव है तो उनको वोट देना चाहिए। उनकी ही महिमा है। अब वोट दो गीता का भगवान कौन? शिव को वोट देने वाले को कहेंगे प्रीत बुद्धि। यह तो बहुत भारी इलेक्शन है। यह सब युक्तियां उनकी बुद्धि में आयेंगी जो सारा दिन विचार सागर मंथन करते रहते होंगे। कई बच्चे चलते-चलते रूठ पड़ते हैं। अभी देखो तो प्रीत है, अभी देखो तो प्रीत टूट पड़ती, रूठ जाते हैं। कोई बात से बिगड़े तो कभी याद भी नहीं करेंगे। चिट्ठी भी नहीं लिखेंगे। गोया प्रीत नहीं है। तो बाबा भी 6-8 मास चिट्ठी नहीं लिखेंगे। बाबा कालों का काल भी है ना! साथ में धर्मराज भी है। बाप को याद करने की फुर्सत नहीं तो तुम क्या पद पायेंगे। पद भ्रष्ट हो जायेगा। शुरू में बाबा ने बड़ी युक्ति से पद बतलाये थे। अभी तो वह हैं थोड़ेही। अब तो फिर से माला बननी है। सार्विसएबुल की तो बाबा भी महिमा करते रहेंगे। जो खुद बादशाह बनते हैं तो कहेंगे हमारे हमजिन्स भी बनें। यह भी हमारे मिसल राज्य करें। राजा को अन्न दाता, मात पिता कहते हैं। अब माता तो है जगत अम्बा, उन द्वारा तुमको सुख घनेरे मिलते हैं। तुम्हें पुरूषार्थ से ऊंच पद पाना है। दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों को मालूम होता जायेगा-कौन-कौन क्या बनेगा? सार्विस करेंगे तो बाप भी उनको याद करेंगे। सार्विस ही नहीं करते तो बाप याद क्यों करे! बाप याद उन बच्चों को करेंगे जो प्रीत बुद्धि होंगे। यह भी बाबा ने समझाया है - किसकी दी हुई चीज पहनेंगे तो उनकी याद जरूर आयेगी। बाबा के भण्डारे से लेंगे तो शिवबाबा ही याद आयेगा। बाबा खुद अनुभव बतलाते हैं। याद जरूर पड़ती है इसलिए कोई की भी दी हुई चीज रखनी नहीं चाहिए।

बाप कहते हैं तुम पतित बने हो इसलिए अब मुझे बुलाते हो कि आकर पावन बनाओ तो जरूर आयेंगे तब तो पावन दुनिया स्थापन होगी ना। तुम बच्चे जानते हो बाबा आया हुआ है। युक्ति

कितनी अच्छी बतलाते हैं। भगवानुवाच मनमनाभव। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को तोड़ मामेकम् याद करो। इसमें ही मेहनत है। ज्ञान तो बहुत सहज है। छोटा बच्चा भी झट याद कर लेगा। बाकी अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करे, वह इम्पॉसिबुल है। बड़ों की बुद्धि में ही नहीं ठहर सकता, तो छोटे फिर कैसे याद कर सकेंगे? भल शिवबाबा-शिवबाबा कहे भी परन्तु है तो बेसमझ ना। हम भी बिन्दी हैं, बाबा भी बिन्दी है, यह स्मृति में आना मुश्किल लगता है। यही यथार्थ रीति याद करना है। मोटी चीज तो है नहीं। बाप कहते हैं यथार्थ रूप में मैं बिन्दी हूँ इसलिए मैं जो हूँ, जैसा हूँ वह सिमरण करें-यह बड़ी मेहनत है। वह तो कह देते परमात्मा ब्रह्म तत्व है और हम कहते हैं वह एकदम बिन्दी है। रात-दिन का फर्क है ना।

बाप कहते हैं नष्टोमोहा बन जाओ, सिर्फ मुझे याद करो। कुटुम्ब परिवार में रहते हुए मेरे को याद करो। कुछ मेहनत करेंगे तब तो विश्व का मालिक बनेंगे। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और आसुरी गुण छोड़ो। रोज रात्रि को अपना पोतामेल निकालो। यह तुम्हारा व्यापार है। यह विरला कोई व्यापार करे। एक सेकेण्ड में कंगाल को सिरताज बना देते हैं, यह जादू ठहरा ना। ऐसे जादूगर का तो हाथ पकड़ लेना चाहिए। जो हमको योगबल से पतित से पावन बनाते हैं। दूसरा कोई बना न सके। गंगा जी से कोई पावन बन नहीं सकता। तुम बच्चों में अभी कितना ज्ञान है। तुम्हारे अन्दर खुशी होनी चाहिए-बाबा फिर से आया हुआ है।

मूल बात है पतित से पावन बनना। वह तो बड़ा मुश्किल है, इसमें लग जायें। हमको तो बाप को याद करना है। रोटी खावे और बाप को याद करे। समझेंगे पहले हम बाप से वर्सा तो लेवें। हम आत्मा हैं पहले तो यह पक्का करना चाहिए। ऐसे जब कोई निकले तब तीखी दौड़ी पहन सके। वास्तव में तुम बच्चे सारे विश्व को योगबल से पवित्र बनाते हो तो कितना बच्चों को नशा रहना चाहिए। मूल बात है ही पवित्रता की। यहाँ पढ़ाया भी जाता है और पवित्र भी बनना होता

है, स्वच्छ भी रहना है। अन्दर में और कोई बात याद नहीं रहनी चाहिए। बच्चों को समझाया जाता है अशरीरी भव। यहाँ तुम पार्ट बजाने आये हो। सभी को अपना-अपना पार्ट बजाना ही है। यह नॉलेज बुद्धि में रहनी चाहिए। सीढ़ी पर भी तुम समझा सकते हो। रावण राज्य है ही पतित, रामराज्य है पावन। फिर पतित से पावन कैसे बनें, ऐसी ऐसी बातों में रमण करना चाहिए, इसको ही विचार सागर मंथन कहा जाता है। 84 का चक्र याद आना चाहिए। बाप ने कहा है मुझे याद करो। यह है रूहानी यात्रा। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। उन जिस्मानी यात्राओं से और ही विकर्म बनते हैं। बोलो, यह ताबीज है। इनको समझेंगे तो सभी दु:ख दूर हो जायेंगे। ताबीज पहनते ही हैं दु:ख दूर होने लिये।

अब बाप कहते हैं मैं तुमको गॉड-गॉडेज बनाता हूँ। यहाँ तो अनेक प्रकार के दु:ख देने वाले मनुष्य हैं। काम कटारी चलाए कितना दु:खी बनाते हैं। तो अब तुम बच्चों को यह खुशी रहनी चाहिए कि बेहद का बाप ज्ञान का सागर हमको पढ़ा रहे हैं। मोस्ट बिलवेड माशूक है। हम आशिक उनको आधाकल्प याद करते हैं। तुम याद करते आये हो, अब बाप कहते हैं मैं आया हूँ, तुम मेरी मत पर चलो। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। दूसरा न कोई। सिवाए मेरी याद के तुम्हारे पाप भस्म नहीं होंगे। हर बात में सर्जन से राय पूछते रहो। बाबा राय देंगे - ऐसे-ऐसे तोड़ निभाओ। अगर राय पर चलेंगे तो कदम-कदम पर पदम मिलेंगे।

ब्रह्माभोजन बनाने में भी कल्याण है, अगर योगयुक्त हो बनायें। ऐसा योगयुक्त भोजन बनाने वाला हो तो भण्डारे में बड़ी शान्ति हो। याद की यात्रा पर रहे। कोई भी आये तो झट उनको समझाये। बाबा समझ सकते हैं-सर्विसएबुल बच्चे कौन हैं, जो दूसरों को भी समझा सकते हैं उन्हों को ही अक्सर करके सर्विस पर बुलाते भी हैं। तो सर्विस करने वाले ही बाप की दिल पर चढ़े रहते हैं।

देही-अभिमानी बड़े शीतल होंगे। वह इतना जास्ती बातचीत नहीं करेंगे। उन्हों का बाप से लव ऐसा होगा जो बात मत पूछो। आत्मा को इतनी खुशी होनी चाहिए जो कभी कोई मनुष्य को न हो। इन लक्ष्मी-नारायण को तो ज्ञान है नहीं। ज्ञान तुम बच्चों को ही है, जिनको भगवान पढ़ाते हैं। भगवान हमको पढ़ाते हैं, यह नशा भी तुम्हारे में कोई एक-दो को रहता है। वह नशा हो तो बाप की याद में रहें, जिसको देही-अभिमानी कहा जाता है। परन्तु वह नशा नहीं रहता है। याद में रहने वाले की चलन बड़ी अच्छी रॉयल होगी। हम भगवान के बच्चे हैं इसलिए गायन भी है- अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो, जो देही-अभिमानी हो बाप को याद करते हैं। याद नहीं करते हैं इसलिए शिवबाबा के दिल पर नहीं चढ़ते हैं। शिवबाबा के दिल पर नहीं तो दादा के भी दिल पर नहीं चढ़ सकते। उनके दिल पर होंगे तो जरूर इनके दिल पर भी होंगे। बाप हर एक को जानते हैं। बच्चे खुद भी समझते हैं कि हम क्या सर्विस करते हैं। सर्विस का शौक बच्चों में बहुत होना चाहिए। कोई को सेन्टर जमाने का भी शौक रहता है। कोई को चित्र बनाने का शौक रहता है। बाप भी कहते हैं-मुझे ज्ञानी तू आत्मा बच्चे प्यारे लगते हैं, जो बाप की याद में भी रहते हैं और सर्विस करने के लिए भी फथकते रहते हैं। कोई तो बिल्कुल ही सर्विस नहीं करते हैं, बाप का कहना भी नहीं मानते हैं। बाप तो जानते हैं ना-कहाँ किसको सर्विस करनी चाहिए। परन्तु देह-अभिमान के कारण अपनी मत पर चलते हैं तो वह दिल पर नहीं चढ़ते हैं। अज्ञान काल में भी कोई बच्चा बदचलन वाला होता है तो बाप की दिल पर नहीं रहता है। उनको कपूत समझते हैं। संगदोष में खराब हो पड़ते हैं। यहाँ भी जो सर्विस करते हैं वही बाप को प्यारे लगते हैं। जो सर्विस नहीं करते उनको बाप प्यार थोड़ेही करेंगे। समझते हैं तकदीर अनुसार ही पढ़ेंगे, फिर भी प्यार किस पर रहेगा? वह तो कायदा है ना। अच्छे बच्चों को बहुत प्यार से बुलायेंगे। कहेंगे तुम बहुत सुखदाई हो, तुम पिता स्नेही हो। जो बाप को याद ही नहीं करते उनको पिता स्नेही थोड़ेही कहेंगे। दादा स्नेही नहीं बनना है, स्नेही बनना है बाप से। जो बाप का स्नेही होगा उनका बोलचाल बड़ा मीठा सुन्दर रहेगा। विवेक ऐसा कहता है-भल टाइम है परन्तु

शरीर पर कोई भरोसा थोड़ेही है। बैठे-बैठे एक्सीडेंट हो जाते हैं। कोई हार्टफेल हो जाते हैं। किसको रोग लग जाता है, मौत तो अचानक हो जाता है ना इसलिए श्वांस पर तो भरोसा नहीं है। नैचुरल कैलेमिटीज की भी अभी प्रैक्टिस हो रही है। बिगर टाइम बरसात पड़ने से भी नुकसान कर देती है।

- तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनने की बहुत गुप्त मेहनत करनी है। जैसे बाप जानते हैं मैं आत्माओं को पढ़ा रहा हूँ, ऐसे तुम बच्चे भी आत्म-अभिमानी बनने की मेहनत करो। मुख से शिव-शिव भी कहना नहीं है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है क्योंकि सिर पर पापों का बोझा बहुत है। याद से ही तुम पावन बनेंगे। कल्प पहले जैसे-जैसे जिन्होंने वर्सा लिया होगा, वही अपने-अपने समय पर लेंगे। अदली बदली कुछ हो नहीं सकती। मुख्य बात है ही देही-अभिमानी हो बाप को याद करना तो फिर माया का थप्पड़ नहीं खायेंगे। देह-अभिमान में आने से कुछ न कुछ विकर्म होगा फिर सौ गुणा पाप बन जाता है। सीढ़ी उतरने में 84 जन्म लगे हैं। अब फिर चढ़ती कला एक ही जन्म में होती है। बाबा आया है तो लिफ्ट की भी इन्वेन्शन निकली है। आगे तो कमर को हाथ देकर सीढ़ी चढ़ते थे। अभी सहज लिफ्ट निकली है।

- तुम बच्चे जानते हो याद के लिए एकान्त की बहुत जरूरत है। जितना तुम एकान्त वा शान्त में बाप की याद में रह सकते हो उतना झुण्ड में नहीं रह सकते हो। स्कूल में भी बच्चे पढ़ते हैं तो एकान्त में जाकर स्टडी करते हैं। इसमें भी एकान्त चाहिए। घूमने जाते हो तो उसमें भी याद की यात्रा मुख्य है। पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है क्योंकि आधाकल्प माया का राज्य आने से ही तुम देह-अभिमानी बनते हो। पहला-पहला शत्रु है देह-अभिमान। बाप को याद करने के बदले देह को याद कर लेते हैं। इसको देह का अहंकार कहा जाता है। यहाँ तुम बच्चों को कहा जाता है आत्म-अभिमानी बनो, इसमें ही मेहनत लगती है। अब भक्ति तो छूटी। भक्ति होती ही है शरीर

के साथ। तीर्थों आदि पर शरीर को ले जाना पड़ता है। दर्शन करना है, यह करना है। शरीर को जाना पड़े। यहाँ तुमको यही चिंतन करना है कि हम आत्मा हैं, हमको परमपिता परमात्मा बाप को याद करना है। बस जितना याद करेंगे तो पाप कट जायेंगे। भक्ति मार्ग में तो कभी पाप कटते नहीं हैं। कोई बुढ़े आदि होते हैं तो अन्दर में यह वहम होता है-हम भक्ति नहीं करेंगे तो नुकसान होगा, नास्तिक बन जायेंगे। भक्ति की जैसे आग लगी हुई है और ज्ञान में है शीतलता। इसमें काम क्रोध की आग खत्म हो जाती है। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितनी भावना रखते हैं, मेहनत करते हैं। समझो बद्रीनाथ पर गये, मूर्ति का साक्षात्कार हुआ फिर क्या! झट भावना बन जाती है, फिर बद्रीनाथ के सिवाए और कोई की याद बुद्धि में नहीं रहती। आगे तो पैदल जाते थे। बाप कहते हैं मैं अल्पकाल के लिए मनोकामना पूरी कर देता हूँ, साक्षात्कार कराता हूँ। बाकी मैं इनसे मिलता नहीं हूँ।

तुम इस सृष्टि को पावन बनाते हो। पहले तो अपने को पावन बनाना है। ड्रामा अनुसार पावन भी बनना ही है, इसलिए विनाश भी नूँधा हुआ है। ड्रामा को समझ कर बहुत हर्षित रहना चाहिए। अभी हमको जाना है शान्तिधाम। बाप कहते हैं वह तुम्हारा घर है। घर में तो खुशी से जाना चाहिए ना। इसमें देही-अभिमानी बनने की बहुत मेहनत करनी है। इस याद की यात्रा पर ही बाबा बहुत जोर देते हैं, इसमें ही मेहनत है। बाप पूछते हैं चलते फिरते याद करना सहज है या एक जगह बैठकर याद करना सहज है? भक्ति मार्ग में भी कितनी माला फेरते हैं, राम-राम जपते रहते हैं। फायदा तो कुछ भी नहीं। बाप तो तुम बच्चों को बिल्कुल सहज युक्ति बतलाते हैं-भोजन बनाओ, कुछ भी करो, बाप को याद करो। भक्ति मार्ग में श्रीनाथ द्वारे में भोग बनाते हैं, मुँह को पट्टी बांध देते हैं। जरा भी आवाज न हो। वह है भक्ति मार्ग। तुमको तो बाप को याद करना है। वो लोग इतना भोग लगाते हैं फिर वह कोई खाते थोड़ेही हैं। पण्डे लोगों के कुटुम्ब होते हैं, वह खाते हैं। तुम यहाँ जानते हो हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं।

- तुम वानप्रस्थी हो ना। वानप्रस्थियों के भी आश्रम होते हैं। वानप्रस्थियों के पास जाना चाहिए, मरने के पहले लक्ष्य तो बता दो। वाणी से परे तुम्हारी आत्मा जायेगी कैसे! पतित आत्मा तो जा न सके। भगवानुवाच मामेकम् याद करो तो तुम वानप्रस्थ में चले जायेंगे। बनारस में भी सार्विस ढेर है। बहुत साधु लोग काशीवास के लिये वहाँ रहते हैं, सारा दिन कहते रहते हैं शिव काशी विश्वनाथ गंगा। तुम्हारे अन्दर में सदैव खुशी की ताली बजती रहनी चाहिए। स्टूडेन्ट हो ना! सार्विस भी करते हैं, पढ़ते भी हैं। बाप को याद करना है, वर्सा लेना है। हम अब शिवबाबा के पास जाते हैं। यह मन्मनाभव है। परन्तु बहुतों को याद रहती नहीं है। झरमुई झगमुई करते रहते। मूल बात है याद की। याद ही खुशी में लायेगी। सभी चाहते तो हैं कि विश्व में शान्ति हो। बाबा भी कहते हैं उन्हें समझाओ कि विश्व में शान्ति अब स्थापन हो रही है, इसलिये बाबा लक्ष्मी- नारायण के चित्र को जास्ती महत्व देते हैं।

- गीत जब सुनते हैं तो उस समय कोई-कोई को उसका अर्थ समझ में आता है और वह खुशी भी चढ़ती है। भगवान हमको पढ़ाते हैं, भगवान हमको विश्व की बादशाही देते हैं। परन्तु इतनी खुशी कोई विरले को यहाँ रहती है। स्थाई वह याद ठहरती नहीं है। हम बाप के बने हैं, बाप हमको पढ़ाते हैं। बहुत हैं जिनको यह नशा चढ़ता नहीं है। उन सतसंगों आदि में कथायें सुनते हैं, उनको भी खुशी होती है। यहाँ तो बाप कितनी अच्छी बातें सुनाते हैं। बाप पढ़ाते हैं और फिर विश्व का मालिक बनाते हैं तो स्टूडेन्ट को कितनी खुशी होनी चाहिए। उस जिस्मानी पढ़ाई पढ़ने वालों को जितनी खुशी रहती है, यहाँ वालों को उतनी खुशी नहीं रहती। बुद्धि में बैठता ही नहीं। बाप ने समझाया है ऐसे-ऐसे गीत 4-5 बार सुनो। बाप को भूलने से फिर पुरानी दुनिया और पुराने सम्बन्ध भी याद आ जाते हैं। ऐसे समय गीत सुनने से भी बाप की याद आ जायेगी। बाप कहने से वर्सा भी याद आ जाता है। पढ़ाई से वर्सा मिलता है। तुम शिवबाबा से पढ़ते हो सारे

विश्व का मालिक बनने। तो बाकी और क्या चाहिए। ऐसे स्टूडेन्ट को अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए! रात-दिन नींद भी फिट जाए। खास नींद फिटा करके भी ऐसे बाप और टीचर को याद करते रहना चाहिए। जैसे मस्ताने। ओहो, हमको बाप से विश्व की बादशाही मिलती है! परन्तु माया याद करने नहीं देती है। मित्र-सम्बन्धियों आदि की याद आती रहती है। उनका ही चिंतन रहता है। पुराना सड़ा हुआ किचड़ा बहुतों को याद आता है। बाप जो बतलाते हैं, तुम विश्व के मालिक बनते हो वह नशा नहीं चढ़ता। स्कूल में पढ़ने वालों का चेहरा खुशनुम: रहता है। यहाँ भगवान पढ़ाते हैं, वह खुशी कोई विरले को रहती है। नहीं तो खुशी का पारा अथाह चढ़ा रहना चाहिए। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं, यह भूल जाते हैं। यह याद रहे तो भी खुशी रहे। परन्तु पास्ट का कर्मभोग ही ऐसा है तो बाप को याद करते ही नहीं। मुँह फिर भी किचड़े तरफ चला जाता है। बाबा सबके लिए तो नहीं कहते हैं, नम्बरवार हैं। महान सौभाग्यशाली वह जो बाप की याद में रहे। भगवान, बाबा हमको पढ़ाते हैं! जैसे उस पढ़ाई में रहता है फलाना टीचर हमको बैरिस्टर बनाते हैं, वैसे यहाँ हमको भगवान पढ़ाते हैं - भगवान भगवती बनाने के लिए तो कितना नशा रहना चाहिए। सुनने समय कोई-कोई को नशा चढ़ता है। बाकी तो कुछ भी नहीं समझते हैं। बस गुरू किया, समझेंगे यह हमको साथ ले जायेंगे। भगवान से मिलायेंगे। यह तो खुद भगवान हैं। अपने से मिलाते हैं, साथ ले जायेंगे। मनुष्य गुरू करते ही इसलिए हैं कि भगवान के पास ले जाए वा शान्तिधाम ले जाये। यह बाप सम्मुख कितना समझाते हैं। तुम स्टूडेन्ट हो। पढ़ाने वाले टीचर को तो याद करो। बिल्कुल ही याद नहीं करते, बात मत पूछो। अच्छे-अच्छे बच्चे भी याद नहीं करते। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं, वह ज्ञान का सागर है, हमको वर्सा देते हैं, यह याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ा रहे। बाप सम्मुख बताते हैं फिर भी वह नशा नहीं चढ़ता। बुद्धि और-और तरफ चली जाती है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। मैं गैरन्टी करता हूँ - एक बाप के सिवाए और कोई को याद न करो। विनाश होने वाली चीज को याद क्या करना है। यहाँ तो कोई मरता है तो 2-4 वर्ष तक भी उनको याद करते रहते। उनका गायन करते रहते। अब बाप सम्मुख कहते हैं बच्चों को कि मुझे याद करो।

जो जितना प्यार से याद करते हैं उतना पाप कटते जाते हैं। बहुत कमाई होती है। सवेरे उठकर बाप को याद करो। भक्ति भी मनुष्य सवेरे उठकर करते हैं। तुम तो हो ज्ञान वाले। तुम्हें पुरानी दुनिया की किचड़पट्टी में नहीं फँसना है। परन्तु कई बच्चे ऐसे फँस पड़ते हैं जो बात मत पूछो। किचड़पट्टी से निकलते ही नहीं। सारा दिन किचड़ा ही बोलते रहते। ज्ञान की बातें बुद्धि में आती ही नहीं। कई तो ऐसे बच्चे भी हैं जो सारा दिन सार्विस पर भागते रहते हैं। बाप की जो सार्विस करते हैं, याद भी वह आयेंगे। इस समय सबसे जास्ती सार्विस पर तत्पर मनोहर देखने में आती है। आज करनाल गई, आज कहाँ गई, सार्विस पर भागती रहती है। जो आपस में लड़ते रहते वो सार्विस क्या करते होंगे! बाप को प्यारे कौन लगेंगे? जो अच्छी सार्विस करते हैं। दिन- रात सार्विस की ही चिंता रहती है। बाप की दिल पर भी वही चढ़ते हैं। घड़ी-घड़ी ऐसे गीत तुम सुनते रहो तो भी याद रहे, कुछ नशा चढ़े। बाबा ने कहा है, कोई समय किसको उदासी आ जाती है तो रिकार्ड बजाने से खुशी आ जायेगी। ओहो! हम विश्व के मालिक बनते हैं। बाप तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। कितनी सहज पढ़ाई है। बाबा ने अच्छे-अच्छे 10- 12 रिकार्ड छांटकर निकाले थे कि हरेक के पास रहने चाहिए। परन्तु फिर भी भूल जाते हैं। कई तो चलते-चलते पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। माया वार कर लेती है। बाप तमोप्रधान बुद्धि को सतोप्रधान बनाने की कितनी सहज युक्ति बताते हैं। अभी तुमको रांग राइट सोचने की बुद्धि मिली है। बुलाते भी बाप को हैं-हे पतित-पावन आओ। अब बाप आये हैं तो पावन बनना चाहिए ना। तुम्हारे सिर पर जन्म-जन्मान्तर का बोझा है, उसके लिए जितना याद करेंगे, पवित्र बनेंगे, खुशी भी रहेगी। भल सार्विस तो करते रहते हैं परन्तु अपना भी हिसाब रखना है। हम बाप को कितना समय याद करते हैं। याद का चार्ट कोई रख नहीं सकते। प्वाइंट तो भल लिखते हैं परन्तु याद को भूल जाते हैं। बाप कहते हैं तुम याद में रह भाषण करेंगे तो बल बहुत मिलेगा। नहीं तो बाप कहते हैं मैं ही जाकर बहुतों को मदद करता हूँ। कोई में प्रवेश कर मैं ही जाकर सार्विस करता हूँ। सार्विस तो करनी है ना। देखता हूँ किसका भाग्य खुलने का है, समझाने वाले में इतना अक्ल नहीं है तो मैं प्रवेश कर सार्विस कर लेता हूँ फिर कोई-कोई लिखते हैं-बाबा ने ही यह सार्विस की। हमारे में तो इतनी ताकत नहीं, बाबा ने मुरली चलाई। कोई को फिर अपना अहंकार आ जाता है, हमने

ऐसा अच्छा समझाया। बाप कहते हैं मैं कल्याण करने के लिए प्रवेश करता हूँ फिर वह ब्राह्मणी से भी तीखे हो जाते हैं। कोई बुद्धू को भेज दूँ तो वह समझते हैं इससे तो हम अच्छा समझा सकते हैं। गुण भी नहीं हैं। इससे तो हमारी अवस्था अच्छी है। कोई-कोई हेड बनकर रहते हैं तो बड़ा नशा चढ़ जाता है। बहुत भभके से रहते हैं। बड़े आदमी से भी तू-तू कर बात करते हैं। बस उनको देवी-देवी कहते हैं तो उसमें ही खुश हो जाते। ऐसे भी बहुत हैं। टीचर से भी स्टूडेन्ट होशियार हो जाते हैं। इम्तहान पास किया हुआ तो एक बाबा ही है, वह है ज्ञान सागर। उन द्वारा तुम पढ़कर फिर पढ़ाते हो। कोई तो अच्छी रीति धारणा कर लेते हैं। कोई भूल जाते हैं। बड़े ते बड़ी मुख्य बात है याद की यात्रा। हमारे विकर्म विनाश कैसे हों? कई बच्चे तो ऐसी चलन चलते हैं जो बस यह बाबा जाने और वह बाबा जाने।

बाबा को लिखें बाबा यह ब्राह्मणी तो बड़ी होशियार है। बहुत अच्छी सार्विस करती है, हमको अच्छा पढ़ाती है। योग में फिर बच्चे फेल होते हैं। याद करने का अक्ल नहीं है। बाप समझाते हैं भोजन खाते हो तो भी शिवबाबा को याद करके खाओ। कहाँ घूमने फिरने जाते हो शिवबाबा को याद करो। झरमुई झगमुई न करो। भल कोई बात का ख्यालात भी आता है फिर बाप को याद करो तो गोया कामकाज का ख्याल भी किया फिर बाबा की याद में लग गया। बाप कहते हैं कर्म तो भल करो, नींद भी करो, साथ-साथ यह भी करो। कम से कम 8 घण्टे तक आना चाहिए-यह होगा पिछाड़ी तक। धीरे-धीरे अपना चार्ट बढ़ाते रहो। कोई-कोई लिखते हैं दो घण्टा याद में रहा फिर चलते-चलते चार्ट ढीला हो जाता है। वह भी माया गुम कर देती है। माया बड़ी जबरदस्त है। जो इस सार्विस में सारा दिन बिजी रहेंगे वही याद भी कर सकेंगे। घड़ी-घड़ी बाप का परिचय देते रहेंगे। बाबा याद के लिए बहुत जोर देते रहते हैं। खुद भी फील करते हैं हम याद में रह नहीं सकते हैं। याद में ही माया विघ्न डालती है। पढ़ाई तो बहुत सहज है। बाप से हम पढ़ते भी हैं। जितना धन लेंगे उतना साहूकार बनेंगे। बाप तो सभी को पढ़ाते हैं ना। वाणी सबके पास जाती है सिर्फ तुम नहीं, सब पढ़ रहे हैं। वाणी नहीं जाती तो चिल्लाते हैं। कई तो फिर ऐसे भी

हैं जो सुनेंगे ही नहीं। ऐसे ही चलते रहते। मुरली सुनने का शौक होना चाहिए। गीत कितना फर्स्ट क्लास है-बाबा हम अपना वर्सा लेने आये हैं। कहते भी हैं ना-बाबा, जैसी हूँ, तैसी हूँ, कानी हूँ, कैसी भी हूँ, आपकी हूँ। वह तो ठीक है परन्तु छी-छी से तो अच्छा बनना चाहिए ना। सारा मदार है योग और पढ़ाई पर।

बाबा का विचार सागर मंथन तो चलता है ना। क्या नाम रखें? सवेरे विचार सागर मंथन करने से मक्खन निकलता है। अच्छी राय निकलती है, तब बाबा कहते हैं सवेरे उठ बाप को याद करो और विचार सागर मंथन करो-क्या नाम रखा जाए? विचार करना चाहिए, कोई का अच्छा विचार भी निकलता है। अब तुम समझते हो पतित को पावन बनाना माना नर्कवासी से स्वर्गवासी बनाना। देवतायें पावन हैं, तब तो उनके आगे माथा टेकते हैं। तुम अभी किसको माथा नहीं टेक सकते हो, कायदा नहीं। बाकी युक्ति से चलना होता है। साधू लोग अपने को ऊंच पवित्र समझते हैं, औरों को अपवित्र नींच समझते हैं।

अलाउद्दीन की बत्ती भी मशहूर है ना! नोट ऐसा करने से कारून का खजाना मिल जाता है। है भी बरोबर। तुम जानते हो अल्लाह अवलदीन झट इशारे से साक्षात्कार कराते हैं। सिर्फ तुम शिवबाबा को याद करो तो सब साक्षात्कार हो जायेंगे। नौधा भक्ति से भी साक्षात्कार होता है ना। यहाँ तुमको एम ऑब्जेक्ट का साक्षात्कार तो होता ही है फिर तुम बाबा को, स्वर्ग को बहुत याद करेंगे। घड़ी-घड़ी देखते रहेंगे। जो बाबा की याद में और ज्ञान में मस्त होंगे वही अन्त की सभी सीन सीनरी देख सकेंगे। बड़ी मंजिल है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना, मासी का घर नहीं है। बहुत मेहनत है। याद ही मुख्य है। जैसे बाबा दिव्य दृष्टि दाता है तो स्वयं अपने लिए दिव्य दृष्टि दाता बन जायेंगे। जैसे भक्ति मार्ग में तीव्र वेग से याद करते हैं तो साक्षात्कार होता है। अपनी मेहनत से जैसे दिव्य दृष्टि दाता बन जाते हैं। तुम भी याद की मेहनत

में रहेंगे तो बहुत खुशी में रहेंगे और साक्षात्कार होते रहेंगे। यह सारी दुनिया भूल जाए। मनमनाभव हो जाएं। बाकी क्या चाहिए! योगबल से फिर तुम अपना शरीर छोड़ देते हो। भक्ति में भी मेहनत होती है, इसमें भी मेहनत चाहिए। मेहनत का रास्ता बाबा बहुत फर्स्टक्लास बताते रहते हैं। अपने को आत्मा समझने से फिर देह का भान ही नहीं रहेगा। जैसे बाप समान बन जायेंगे। साक्षात्कार करते रहेंगे। खुशी भी बहुत रहेगी। रिजल्ट सारी पिछाड़ी की गाई हुई है। अपने नाम-रूप से भी न्यारा होना है तो फिर दूसरे के नाम-रूप को याद करने से क्या हालत होगी! नॉलेज तो बहुत सहज है। प्राचीन भारत का योग जो है, जादू उसमें है। बाबा ने समझाया है ब्रह्म ज्ञानी भी ऐसे शरीर छोड़ते हैं। हम आत्मा हैं, परमात्मा में लीन होना है। लीन कोई होते नहीं हैं। हैं ब्रह्म ज्ञानी। बाबा ने देखा है बैठे-बैठे शरीर छोड़ देते हैं। वायुमण्डल बड़ा शान्त रहता है, सन्नाटा हो जाता है। सन्नाटा भी उनको भासेगा जो ज्ञान मार्ग में होंगे, शान्त में रहने वाले होंगे। बाकी कई बच्चे तो अभी बेबियाँ हैं। घड़ी-घड़ी गिर पड़ते हैं, इसमें बहुत-बहुत गुप्त मेहनत है। भक्ति मार्ग की मेहनत प्रत्यक्ष होती है। माला फेरो, कोठी में बैठ भक्ति करो। यहाँ तो चलते-फिरते तुम याद में रहते हो। कोई को पता पड़ न सके कि यह राजाई ले रहे हैं। योग से ही सारा हिसाब-किताब चुक्तू करना है। ज्ञान से थोड़े ही चुक्तू होता है। हिसाब-किताब चुक्तू होगा याद से। कर्मभोग याद से चुक्तू होगा। यह है गुप्त। बाबा सब कुछ गुप्त सिखलाते हैं।

मांस खरीद करने वाले पर, बेचने वाले पर, खिलाने वाले पर भी पाप लगता है। पतित-पावन बाप से कोई बात छिपानी नहीं चाहिए। सर्जन से छिपाया तो बीमारी छूटेगी नहीं। यह है बेहद का अविनाशी सर्जन। इन बातों को दुनिया तो नहीं जानती है। तुमको भी अभी नॉलेज मिल रही है फिर भी योग में बहुत कमी है। याद बिल्कुल करते नहीं हैं। यह तो बाबा जानते हैं फट से कोई याद ठहर नहीं जायेगी। नम्बरवार तो हैं ना। जब याद की यात्रा पूरी होगी तब कहेंगे कर्मातीत अवस्था पूरी हुई, फिर लड़ाई भी पूरी लगेगी, तब तक कुछ न कुछ होता फिर बन्द होता रहेगा। लड़ाई तो कभी भी छिड़ सकती है। परन्तु विवेक कहता है जब तक राजाई स्थापन

नहीं हुई है तब तक बड़ी लड़ाई नहीं लगेगी। थोड़ी-थोड़ी लगकर बन्द हो जायेगी। यह तो कोई नहीं जानते कि राजाई स्थापन हो रही है। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो बुद्धि तो है ना। तुम्हारे में भी सतोप्रधान बुद्धि वाले अच्छी रीति याद करते रहेंगे। ब्राह्मण तो अभी लाखों की अन्दाज में होंगे परन्तु उसमें भी सगे और लगे तो हैं ना। सगे अच्छी सार्विस करेंगे, माँ-बाप की मत पर चलेंगे। लगे रावण की मत पर चलेंगे। कुछ रावण की मत पर, कुछ राम की मत पर लंगड़ाते चलेंगे।

अभी तुम बच्चे समझते हो हम जीते जी इस पुरानी दुनिया से, पुराने शरीर से मर चुके हैं फिर तुम आत्मायें भी शरीर छोड़ कहाँ जायेंगी? अपने घर। पहले-पहले तो यह पक्का याद करना है-हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। आत्मा कहती है-बाबा, हम आपके हो चुके, जीते जी मर चुके हैं। अब आत्मा को फरमान मिला हुआ है कि मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यह याद का अभ्यास पक्का चाहिए। आत्मा कहती है-बाबा, आप आये हैं तो हम आपके ही बनेंगे। आत्मा मेल है, न कि फीमेल। हमेशा कहते हैं हम भाई-भाई हैं, ऐसे थोड़ेही कहते हम सब सिस्टर्स हैं, सब बच्चे हैं। सब बच्चों को वर्सा मिलना है। अगर अपने को बच्ची कहेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा? आत्मायें सब भाई-भाई हैं। बाप सबको कहते हैं-रूहानी बच्चों मुझे याद करो। आत्मा कितनी छोटी है। यह है बहुत महीन समझने की बातें। बच्चों को याद ठहरती नहीं है। सन्यासी लोग दृष्टान्त देते हैं-मैं भैंस हूँ, भैंस हूँ....... ऐसे कहने से फिर भैंस बन जाते हैं। अब वास्तव में भैंस कोई बनते थोड़ेही हैं। बाप तो कहते हैं अपने को आत्मा समझो। यह आत्मा और परमात्मा का ज्ञान तो कोई को है नहीं इसलिए ऐसी-ऐसी बातें कह देते हैं।

- बाप आकर देही-अभिमानी बनाते हैं, इसमें ही मेहनत है। बाप कहते हैं-मुझे याद करो, और कोई को याद न करो। योगी तो दुनिया में बहुत हैं। कन्या की सगाई होती है तो फिर पति के साथ योग लग जाता है ना। पहले थोड़ेही था। पति को देखा फिर उनकी याद में रहती है। अब बाप कहते हैं-मामेकम् याद करो। यह बहुत अच्छी प्रैक्टिस चाहिए। जो अच्छे-अच्छे पुरुषार्थी बच्चे हैं वह सवेरे-सवेरे उठकर देही-अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करेंगे। भक्ति भी सवेरे करते हैं ना। अपने-अपने ईष्ट देव को याद करते हैं। चलते फिरते एक-दो को सावधान करना है-मन्मनाभव। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। पतित-पावन तो बाप है ना। अभी तुम हो रावण पुरी में। तो अब बाप कहते हैं सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। बाप भी परमधाम में रहते हैं, तुम आत्मायें भी परमधाम में रहती हो। बाप कहते हैं तुमको कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। बहुत सहज है। बाकी यह रावण दुश्मन तुम्हारे सामने खड़ा है। यह विघ्न डालते हैं। ज्ञान में विघ्न नहीं पड़ते, विघ्न पड़ते हैं याद में। घड़ी-घड़ी माया याद भुला देती है। देह-अभिमान में ले आती है। बाप को याद करने नहीं देती, यह युद्ध चलती है। बाप कहते हैं तुम कर्मयोगी तो हो ही। अच्छा, दिन में याद नहीं कर सकते हो तो रात को याद करो। रात का अभ्यास दिन में काम आयेगा।

- अब बाप समझाते हैं - मामेकम् याद करने का पुरूषार्थ करो। यह याद करने की ही युद्ध है। बाप बच्चों को समझाते रहते हैं-मीठे बच्चे, अपने ऊपर अटेन्शन का पहरा देते रहो। माया कहाँ नाक-कान काट न जाये क्योंकि दुश्मन है ना। तुम बाप को याद करते हो और माया तूफान में उड़ा देती है इसलिए बाबा कहते हैं हर एक को सारे दिन का चार्ट लिखना चाहिए कि कितना बाप को याद किया? कहाँ मन भागा? डायरी में नोट करो, कितना समय बाप को याद किया? अपनी जांच करनी चाहिए तो माया भी देखेगी यह तो अच्छा बहादुर है, अपने पर अच्छा अटेन्शन रखते हैं। पूरा पहरा रखना है। अभी तुम बच्चों को बाप आकर परिचय देते हैं। कहते हैं भल घरबार सम्भालो सिर्फ बाप को याद करो। यह कोई उन सन्यासियों मुआफ़िक नहीं है। वह

भीख पर चलते हैं फिर भी कर्म तो करना पड़ता है ना। तुम उनको भी कह सकते हो कि तुम हठयोगी हो, राजयोग सिखलाने वाला एक ही भगवान है। अभी तुम बच्चे संगम पर हो। इस संगमयुग को ही याद करना पड़े। हम अभी संगमयुग पर सर्वोत्तम देवता बनते हैं।

शिवबाबा के मिलने की याद तो है ना। याद से ही कितने पाप कटते हैं। अबलाओं, बांधेलियों के तो और ही जास्ती कटते हैं क्योंकि वह जास्ती शिवबाबा को याद करती हैं। अत्याचार होते हैं तो बुद्धि शिवबाबा की तरफ चली जाती है। शिवबाबा रक्षा करो। तो याद करना अच्छा है ना। भले रोज मार खाओ, शिवबाबा को याद करेंगी, यह तो भलाई है ना। ऐसे मार पर तो बलिहार जाना चाहिए। मार पड़ती है तो याद करते हैं। कहते हैं गंगा जल मुख में हो, गंगा का तट हो, तब प्राण तन से निकलें। तुमको जब मार मिलती है, बुद्धि में अल्फ और बे याद हो। बस। बाबा कहने से वर्सा जरूर याद आयेगा। ऐसा कोई भी नहीं होगा, जिसको बाबा कहने से वर्सा याद न पड़े। बाप के साथ मिलकियत जरूर याद आयेगी। तुमको भी शिवबाबा के साथ वर्सा जरूर याद आयेगा। वह तो तुमको विष के लिए (विकार के लिए) मार देकर शिवबाबा की याद दिलाते हैं। तुम बाप से वर्सा पाते हो, पाप कट जाते हैं। यह भी ड्रामा में तुम्हारे लिए गुप्त कल्याण है। जैसे कहा जाता है लड़ाई कल्याणकारी है तो यह मार भी अच्छी हुई ना।

अभी तुम समझते हो, बाबा आया हुआ है, कहते हैं चलो घर और हम घर जाते हैं। बुद्धि काम करती है ना। यहाँ कई बच्चे होंगे जिनकी बुद्धि धन्धे आदि तरफ दौड़ती होगी। फलाना बीमार है, क्या हुआ होगा। अनेक प्रकार के संकल्प आ जाते हैं। बाप कहते हैं तुम यहाँ बैठे हो, आत्मा की बुद्धि बाप और वर्से तरफ रहे। आत्मा ही याद करती है ना। समझो कोई का बच्चा लण्डन में है, समाचार आया बीमार है। बस, बुद्धि चली जायेगी। फिर ज्ञान बुद्धि में बैठ न सके। यहाँ बैठे हुए बुद्धि में उनकी याद आती रहेगी। कोई का पति बीमार हो गया तो स्त्री के अन्दर उथल-

पाथल होगी। बुद्धि जाती तो है ना। तो तुम भी यहाँ बैठे सब कुछ करते शिवबाबा को याद करते रहो। तो भी अहो सौभाग्य। जैसे वह पति को अथवा गुरू को याद करते हैं, तुम बाप को याद करो। तुम्हें अपना एक मिनट भी वेस्ट नहीं करना चाहिए। बाप को जितना याद करेंगे तो सर्विस करने में भी बाप ही याद आयेगा।

तुम बच्चे जब यहाँ आते हो तो फ्री हो, घर-बार धन्धे आदि का कोई फुरना नहीं है। तो यहाँ तुमको याद की यात्रा में रहने का चांस अच्छा है। वहाँ तो घर-घाट आदि याद आता रहेगा। यहाँ तो कुछ है नहीं। रात को दो बजे उठकर यहाँ बैठ जाओ। सेन्टर्स पर तो रात को तुम जा नहीं सकते। यहाँ तो सहज है। शिवबाबा की याद में आकर बैठो, और कोई याद न आये। यहाँ तुमको मदद भी मिलेगी। सवेरे (जल्दी) सो जाओ फिर सवेरे उठो। 3 से 5 बजे तक आकर बैठो। बाबा भी आ जायेंगे, बच्चे खुश होंगे। बाबा है योग सिखलाने वाला। यह भी सीखने वाला है तो दोनों बाप और दादा आ जायेंगे फिर यहाँ और वहाँ योग में बैठने के फर्क का भी पता पड़ेगा। यहाँ कुछ भी याद नहीं पड़ेगा, इसमें फायदा बहुत है। बाबा राय देते हैं - यह बहुत अच्छा हो सकता है। अब देखें बच्चे उठ सकते हैं? कइयों को सवेरे उठने का अभ्यास है।

अपने से पूछो हम कितना समय बाबा को याद करते हैं? हम जैसेकि याद की अग्नि में पड़े हैं, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। एक बाप से प्रीत बुद्धि होना है। सबसे फर्स्टक्लास माशूक है जो तुमको भी फर्स्टक्लास बनाते हैं। कहाँ थर्ड क्लास में बकरियों मिसल ट्रेवल करना, कहाँ एयरकन्डीशन में। कितना फर्क है। यह सब विचार सागर मंथन करना है तो तुमको मजा आयेगा। यह बाबा भी कहते हैं मैं भी बाबा को याद करने लिए बहुत माथा मारता हूँ। सारा दिन ख्यालात चलती रहती हैं। तुम बच्चों को भी यही मेहनत करनी है।

- तुम बच्चे तो अपने योगबल से अपनी कर्मेन्द्रियों को वश में करते हो। कर्मेन्द्रियाँ योगबल से शीतल हो जायेंगी। कर्मेन्द्रियों में चंचलता होती है ना। अब कर्मेन्द्रियों पर जीत पानी है, जो कोई चंचलता न चले। सिवाए योगबल से कर्मेन्द्रियों का वश होना इम्पासिबुल है। बाप कहते हैं कर्मेन्द्रियों की चंचलता योगबल से ही टूटेगी। योगबल की ताकत तो है ना। इसमें बड़ी मेहनत लगती है। आगे चलकर कर्मेन्द्रियों की चंचलता नहीं रहेगी। सतयुग में तो कोई गन्दी बीमारी नहीं होती। यहाँ तुम कर्मेन्द्रियों को वश कर जाते हो तो कोई भी गंदी बात वहाँ होती नहीं। नाम ही है स्वर्ग। उनको भूल जाने कारण लाखों वर्ष कह देते हैं। अभी तक भी मन्दिर बनाते रहते हैं। अगर लाखों वर्ष हुए हो तो फिर बात ही याद न हो। यह मन्दिर आदि क्यों बनाते? तो वहाँ कर्मेन्द्रियाँ शीतल रहती है। कोई चंचलता नहीं रहती। शिवबाबा को तो कर्मेन्द्रियाँ हैं नहीं। बाकी आत्मा में ज्ञान तो सारा है ना। वही शान्ति का सागर, सुख का सागर है। वो लोग कहते कर्मेन्द्रियां वश नहीं हो सकती। बाप की याद में रहो। कोई भी बेकायदे काम कर्मेन्द्रियों से नहीं करना कहते हैं योगबल से तुम कर्मेन्द्रियों को वश करो। बाप है। ऐसे लवली बाप को याद करते-करते प्रेम में आंसू आने चाहिए।

- तुम जानते हो कि अब हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरूषार्थ करना है। इस बात को अन्दर में घोटना है। ज्ञान सुनाने वाले तो बहुत हैं। परन्तु याद है नहीं। अन्दर में वह अन्तर्मुखता रहनी चाहिए। हमको बाप की याद से पतित से पावन बनना है, सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। इस पर एक पण्डित का मिसाल भी है-माताओं को कहते राम-राम कहने से पार हो जायेंगे............ तो ऐसे लबाड़ी नहीं बनना है। ऐसे बहुत हैं।

- समझाते बहुत अच्छा हैं, परन्तु योग है नहीं। सारा दिन देह-अभिमान में रहते हैं। नहीं तो बाबा को चार्ट भेजना चाहिए-हम इस समय उठता हूँ, इतना याद करता हूँ। कुछ समाचार नहीं देते।

ज्ञान की बहुत लबाड़ (गप्प) मारते हैं। योग है नहीं। भल बड़ों-बड़ों को ज्ञान देते हैं, परन्तु योग में कच्चे हैं। सवेरे उठ बाप को याद करना है। बाबा आप कितने मोस्ट बिलवेड हो। कैसा यह विचित्र ड्रामा बना हुआ है। कोई भी यह राज नहीं जानते। न आत्मा को, न परमात्मा को जानते हैं। इस समय मनुष्य जानवर से भी बदतर हैं। हम भी ऐसे थे। माया के राज्य में कितनी दुर्दशा हो जाती है।

- याद बहुत जरूरी है। जो बच्चे याद में अलबेले हैं वह कहते हैं-हम शिवबाबा के बच्चे तो हैं ही। याद में ही हैं। लेकिन बाबा कहते वह सब गपोड़े हैं। अलबेलापन है। इसमें तो पुरूषार्थ करना है सवेरे उठ अपने को आत्मा समझ बैठ जाना है। रूहरिहान करनी है। आत्मा ही बातचीत करती है ना। अभी तुम देही- अभिमानी बनते हो। जो कोई का कल्याण करता है तो उनकी महिमा भी की जाती है ना। वह होती है देह की महिमा। यह तो है निराकार परमपिता परमात्मा की महिमा।

- बाकी मेहनत है बाप को याद करने में। बाप कहते हैं कम से कम पुरूषार्थ कर 8 घण्टा तो याद करो। एक घड़ी आधी घड़ी.....। क्लास में आओ तो स्मृति आयेगी-बाप हमको यह पढ़ाते हैं। अभी तुम बाप के सम्मुख हो ना। बाप बच्चे-बच्चे कह समझाते हैं। तुम बच्चे सुनते हो। बाप कहते हैं हियर नो ईविल..... यह भी अभी की ही बात है।

- यहाँ बच्चियाँ बैठती हैं प्रैक्टिस के लिए। वास्तव में यहाँ (संदली पर) बैठना उनको चाहिए जो देही- अभिमानी बन बाप की याद में बैठे। अगर याद में नहीं बैठेंगी तो वह टीचर कहला नहीं सकती। याद में शक्ति रहती है, ज्ञान में शक्ति नहीं है। इसको कहा ही जाता है - याद का बल। योगबल सन्यासियों का अक्षर है। बाप डिफीकल्ट अक्षर काम में नहीं लाते। बाप कहते हैं बच्चों अब बाप को याद करो। जैसे छोटे बच्चे माँ-बाप को याद करते हैं ना। वह तो देहधारी

हैं। तुम बच्चे हो विचित्र। यह चित्र यहाँ तुमको मिलता है। तुम रहने वाले विचित्र देश के हो। वहाँ चित्र रहता नहीं।

- जो भी शंकराचार्य आदि हैं, इन सबकी आत्माओं का मैं बाप हूँ। शरीरों के बाप जो हैं वह तो हैं ही, मैं हूँ सभी आत्माओं का बाप। मेरी सब पूजा करते हैं। अभी वह यहाँ सम्मुख बैठे हैं। परन्तु सभी समझते थोड़ेही हैं कि हम किसके सामने बैठे हैं। आत्मायें जन्म-जन्मान्तर से देह-अभिमान पर हिरी हुई हैं इसलिए बाप को याद नहीं कर सकते। देह को ही देखते हैं। देही-अभिमानी हों तो उस बाप को याद करें और बाप की श्रीमत पर चलें। बाप कहते हैं मुझे जानने के लिए सब पुरुषार्थी हैं। अन्त में पूरे देही-अभिमानी बनने वाले ही पास होंगे। बाकी सबमें जरा-जरा देह-अभिमान रहेगा। बाप तो है गुप्त। उनको कुछ भी दे नहीं सकते।

- तुम बच्चे अभी जो पढ़ते हो यह बहुत सहज है, अच्छा पढ़ा भी लेते हो, परन्तु याद की यात्रा कहाँ। यह है सारी बुद्धि की बात। हमको बाप को याद करना है, इसमें ही माया फथकाती है। एकदम योग तोड़ देती है। बाप कहते हैं तुम सब योग में बहुत कमजोर हो। अच्छे-अच्छे महारथी भी बहुत कमजोर हैं। समझते हैं इनमें यह ज्ञान बड़ा अच्छा है इसलिए महारथी हैं। बाबा कहते हैं घोड़ेसवार प्यादे हैं। महारथी वह जो याद में रहते हैं। उठते-बैठते याद में रहें तो विकर्म विनाश होंगे, पावन होंगे। नहीं तो सजा भी खानी पड़ेगी और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा इसलिए अपना चार्ट रखो तो तुमको मालूम पड़ेगा, बाबा खुद बतलाते हैं मैं भी पुरूषार्थ करता हूँ। घड़ी-घड़ी बुद्धि और तरफ चली जाती है।

- तकदीरवान बच्चे ही शरीर का भान भूल अपने को अशरीरी समझ बाप को याद करने का पुरूषार्थ कर सकते हैं। बाप रोज-रोज समझाते हैं-बच्चे, तुम शरीर का भान छोड़ दो। हम

अशरीरी आत्मा अब घर जाते हैं, यह शरीर यहाँ छोड़ देना है, वो तब छोड़ेंगे जब निरन्तर बाप की याद में रह कर्मातीत हो जाए। इसमें बुद्धि की बात है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो तदबीर क्या करें। बुद्धि में यह रहना चाहिए कि हम अशरीरी आये थे, फिर सुख के कर्म सम्बन्ध में बंधे फिर रावण राज्य में विकारी बंधन में फँसें। अब फिर बाप कहते हैं अशरीरी होकर जाना है। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। आत्मा ही पतित बनी है।

अभी बाप आये हैं पुरूषार्थ कराने, यह लास्ट चांस है। देरी की तो फिर अचानक ही मर जायेंगे। मौत सामने खड़ा है। अचानक बैठे-बैठे मनुष्य मर जाते हैं। मरने के पहले तो याद की यात्रा करो। अभी तुम बच्चों को घर जाना है इसलिए बाप कहते हैं-बच्चे, घर को याद करो, इससे अन्त मती सो गति हो जायेगी, घर चले जायेंगे। परन्तु सिर्फ घर को याद करेंगे तो पाप विनाश नहीं होंगे। बाप को याद करेंगे तो पाप विनाश हो और तुम अपने घर चले जायेंगे इसलिए बाप को याद करते रहो। अपना चार्ट रखो तो मालूम पड़ेगा, सारे दिन में हमने क्या किया? 5-6 वर्ष की आयु से लेकर अपनी लाइफ में क्या- क्या किया......... वह भी याद रहता है। ऐसे भी नहीं, सारा टाइम लिखना पड़ता है। ध्यान में रहता है-बगीचे में बैठ बाबा को याद किया, दुकान पर कोई ग्राहक नहीं है हम याद में बैठे रहे। अन्दर में नोट रहेगा। अगर लिखने चाहते हो तो फिर डायरी रखनी पड़े। मूल बात है ही यह। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें! पवित्र दुनिया के मालिक कैसे बनें! पतित से पावन कैसे बनें! बाप आकर यह नॉलेज देते हैं।

जितना-जितना याद किया होगा, सर्विस की होगी उतना वह ऊंच पद पायेंगे। याद में ही बहुत विघ्न पड़ते हैं। पावन नहीं बनेंगे तो फिर धर्मराज पुरी में सजायें भी खानी पड़ेगी। इज्जत भी जायेगी, पद भी भ्रष्ट होगा। पिछाड़ी में सब साक्षात्कार होंगे। परन्तु कुछ कर नहीं सकेंगे। साक्षात्कार करायेंगे तुमको इतना समझाया फिर भी याद नहीं किया, पाप रह गये। अब खाओ

सजा। उस समय पढ़ाई का टाइम नहीं रहता। अफसोस करेंगे हमने क्या किया! नाहेक टाइम गँवाया। परन्तु सजा तो खानी पड़े। कुछ हो थोड़ेही सकेगा।

यह इम्तहान है भी प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने का। नॉलेज तो बड़ी सहज है। बाप को याद करना है और भविष्य वर्से को याद करना है। इस याद करने में ही मेहनत है। इस याद में रहेंगे तो फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। सन्यासी लोग मिसाल देते हैं, कोई कहते भैंस हूँ...... तो सचमुच समझने लगा। वह हैं सब फालतू बातें। यहाँ तो रिलीजन की बात है। तो बाप बच्चों को समझाते हैं ज्ञान तो बड़ा सहज है, परन्तु याद में मेहनत है। बाबा अक्सर कहते हैं-तुम तो बेबी हो। तो बच्चों के उल्हनें आते हैं, हम बेबी हैं? बाबा कहते-हाँ, बेबी हो। भल ज्ञान तो बहुत अच्छा है, प्रदर्शनी में सर्विस बहुत अच्छी करते हो, रात-दिन सर्विस में लग जाते हो फिर भी बेबी कह देता हूँ। बाप कहते हैं यह (ब्रह्मा) भी बेबी है। यह बाबा कहते हैं तुम हमारे से भी बड़े हो, इनके ऊपर तो बहुत मामले हैं। जिनके माथे मामला...... सब ख्यालात रहती हैं। कितने समाचार बाबा के पास आते हैं इसलिए फिर सुबह को बैठ याद करने की कोशिश करते हैं। वर्सा तो उनसे ही पाना है। तो बाप को याद करना है। सब बच्चों को रोज समझाता हूँ। मीठे बच्चों, तुम याद की यात्रा में बहुत कमजोर हो। ज्ञान में तो भल अच्छे हो परन्तु हर एक अपने दिल से पूछे-मैं बाबा की याद में कितना रहता हूँ? अच्छा, दिन में बहुत काम आदि में बिजी रहते हो, यूँ तो काम करते भी याद में रह सकते हो। कहावत भी है हथ कार डे दिल यार डे....... (हाथों से काम करते, बुद्धि वहाँ लगी रहे) जैसे भक्ति मार्ग में भल पूजा करते रहते हैं, बुद्धि और-और तरफ धन्धे आदि में चली जाती है अथवा कोई स्त्री का पति विलायत में होगा तो उनकी बुद्धि वहाँ चली जायेगी, जिससे जास्ती कनेक्शन है। तो भल सर्विस अच्छी करते हैं फिर भी बाबा बेबी बुद्धि कहते हैं। बहुत बच्चे लिखते हैं - हम बाबा की याद भूल जाते हैं। अरे, बाप को तो बेबी

भी नहीं भूलते तुम तो बेबी से भी बेबी हो। जिस बाप से तुम प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हो, वह तुम्हारा बाप-टीचर-गुरू है, तुम उनको भूल जाते हो!

अभी तुम बच्चों को यह चिंता लग जानी चाहिए कि हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान, पतित से पावन बनना है। पतित-पावन बाप सभी बच्चों को एक ही युक्ति बताते हैं-सिर्फ कहते हैं बाप को याद करो, चार्ट रखो तो तुमको बहुत खुशी होगी। अब तुमको ज्ञान है, दुनिया तो घोर अन्धियारे में है। तुमको अब रोशनी मिलती है। तुम त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बन रहे हो। बहुत ऐसे भी मनुष्य हैं जो कहते हैं ज्ञान तो जहाँ-तहाँ मिलता रहता है, यह कोई नई बात नहीं है। अरे, यह ज्ञान कोई को मिलता ही नहीं। अगर वहाँ ज्ञान मिलता भी है फिर भी करते तो कुछ नहीं हो। नर से नारायण बनने का कोई पुरूषार्थ करते हैं? कुछ भी नहीं। तो बाप बच्चों को कहते हैं - सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। बड़ा मजा आता है, शान्त हो जाते हैं, वायुमण्डल अच्छा रहता है। सबसे खराब वायुमण्डल रहता है - 10 से 12 तक इसलिए सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। रात को जल्दी सो जाओ फिर 2-3 बजे उठो। आराम से बैठो। बाबा से बातें करो। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी याद करो। शिवबाबा कहते हैं-मेरे में ज्ञान है ना, रचता और रचना का। मैं तुमको टीचर बनकर पढ़ाता हूँ। तुम आत्मा बाप को याद करते रहते हो। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। योग किसके साथ? यह भी लिखना है। आत्मा का परमात्मा के साथ योग अर्थात् याद है। तुम बच्चे अभी जानते हो हम आलराउन्डर हैं, पूरे 84 जन्म लेते हैं। यहाँ ब्राह्मण कुल के ही आयेंगे। हम ब्राह्मण हैं। अभी हम देवता बनने वाले हैं। सरस्वती भी बेटी है ना। बूढ़ा भी हूँ, बहुत खुशी होती है, अभी हम शरीर छोड़ फिर जाकर राजा के घर में जन्म लूँगा। मैं पढ़ रहा हूँ। फिर गोल्डन स्पून इन माउथ होगा। तुम सबकी यह एम ऑबजेक्ट है। खुशी क्यों नहीं होनी चाहिए। मनुष्य भल क्या भी बोलते रहें। तुम्हारी खुशी क्यों गुम हो जानी चाहिए। बाप को याद ही नहीं

करेंगे तो नर से नारायण कैसे बनेंगे। ऊंच बनना चाहिए ना। ऐसा पुरूषार्थ करके दिखाओ, मूंझते क्यों हो? दिलहोल क्यों होते हो कि सभी थोड़ेही राजायें बनेंगे! यह ख्याल आया, फेल हुआ। स्कूल में बैरिस्टरी, इन्जीनियरी आदि पढ़ते हैं। ऐसे कहेंगे क्या कि सब बैरिस्टर थोड़ेही बनेंगे। नहीं पढ़ेंगे तो फेल हो जायेंगे। 16108 की सारी माला है। पहले-पहले कौन आयेंगे? जितना जो पुरूषार्थ करेंगे। एक-दो से तीखा पुरूषार्थ करते तो हैं ना। तुम बच्चों की बुद्धि में है-अभी हमें यह पुराना शरीर छोड़ घर जाना है। यह भी याद रहे तो पुरूषार्थ तीव्र हो जायेगा। तुम बच्चों की बुद्धि में रहना चाहिए कि सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता है ही एक बाप। आज दुनिया में इतने करोड़ों मनुष्य हैं। तुम 9 लाख होंगे। सो भी एबाउट कहा जाता है। सतयुग में और कितने होंगे। राजाई में कुछ तो आदमी चाहिए ना। यह राजाई स्थापन हो रही है। बुद्धि कहती है सतयुग में बहुत छोटा झाड़ होता है, ब्युटीफुल। नाम ही है स्वर्ग पैराडाइज। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा चक्र फिरता रहता है। यह भी सदैव फिरता रहे तो भी अच्छा।

बच्चों को याद की यात्रा पर बहुत ध्यान देना है, जो अभी बहुत कम है, इसलिए बाबा बेबी कहते हैं। बेबीपना दिखाते हैं। कहते हैं बाबा को याद नहीं कर सकता हूँ, तो बेबी कहेंगे ना। तुम छोटे बेबी हो, बाप को भूल जाते हो? मीठे ते मीठा बाप, टीचर, गुरू आधा कल्प का बिलवेड मोस्ट, उनको भूल जाते हो! आधाकल्प दु:ख में तुम उनको याद करते आये हो, हे भगवान! आत्मा शरीर द्वारा कहती है ना। अब मैं आया हूँ, अच्छी रीति याद करो। बहुतों को रास्ता बताओ। मुख्य है याद । नॉलेज तो बहुत सहज है। मुरली पढ़कर सुनाओ। याद करते रहो। याद करते-करते आत्मा पवित्र हो जायेगी। पेट्रोल भरता जायेगा। फिर यह भागे। यह शिवबाबा की बरात कहो, बच्चे कहो। बाप कहते हैं मैं आया हूँ, काम चिता से उतार तुमको अब योग चिता पर बिठाता हूँ। योग से हेल्थ, ज्ञान से वेल्थ मिलती है। अच्छा।

परमपिता अक्षर बहुत मीठा है। सर्वव्यापी कह देते हैं तो मीठापन आता नहीं। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो प्यार से अन्दर याद करते हैं, वह स्त्री पुरूष तो एक-दो को स्थूल में याद करते हैं। यह है आत्माओं को परमात्मा को याद करना, बहुत प्यार से। भक्ति मार्ग में इतना प्यार से पूजा नहीं कर सकते। वह लव नहीं रहता। जानते ही नहीं तो लव कैसे हो। अभी तुम बच्चों का बहुत लव है। आत्मा कहती है – 'मेरा बाबा'। आत्मायें भाई- भाई हैं ना। हर एक भाई कहते हैं बाबा ने हमको अपना परिचय दिया है। परन्तु वह लव नहीं कहा जाता है। जिससे कुछ मिलता है उसमें लव रहता है।

ज्ञान सागर तो सबको पढ़ाते रहते हैं। बाप का बना और विश्व का वर्सा तुम्हारा है। हाँ, तुम्हारी आत्मा जो पतित है उनको पावन जरूर बनाना है, उसके लिए सहज ते सहज तरीका है बेहद के बाप को याद करते रहो तो तुम यह बन जायेंगे। तुम बच्चों को इस पुरानी दुनिया से वैराग्य आना चाहिए। बाकी मुक्तिधाम, जीवनमुक्तिधाम है और किसको भी हम याद नहीं करते सिवाए एक के। सवेरे-सवेरे उठकर अभ्यास करना है कि हम अशरीरी आये, अशरीरी जाना है। फिर कोई भी देहधारी को हम याद क्यों करें। सवेरे अमृतवेले उठकर अपने से ऐसी-ऐसी बातें करनी है। सवेरे को अमृतवेला कहा जाता है। ज्ञान अमृत है ज्ञान सागर के पास। तो ज्ञान सागर कहते हैं सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। सवेरे उठकर बहुत प्रेम से बाप को याद करो-बाबा, आप 5 हजार वर्ष के बाद फिर मिले हो। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जायेंगे। श्रीमत पर चलना है। सतोप्रधान जरूर बनना है। बाप को याद करने की आदत पड़ जायेगी तो खुशी में बैठे रहेंगे। शरीर का भान टूटता जायेगा। फिर देह का भान नहीं रहेगा। खुशी बहुत रहेगी। तुम खुशी में थे जब पवित्र थे। तुम्हारी बुद्धि में यह सारा ज्ञान रहना चाहिए। पहले-पहले जो आते हैं जरूर वह 84 जन्म लेते होंगे। फिर चन्द्रवंशी कुछ कम, इस्लामी उनसे कम। नम्बरवार झाड़ की वृद्धि होती है ना। मुख्य है डीटी धर्म फिर उनसे 3 धर्म निकलते हैं। फिर टाल- टालियाँ निकलती हैं। अभी तुम ड्रामा को जानते हो। यह ड्रामा जूँ मिसल बहुत धीरे-धीरे फिरता रहता

है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड टिक-टिक चलती रहती है इसलिए गाया जाता है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। आत्मा अपने बाप को याद करती है।बाबा हम आपके बच्चे हैं। हम तो स्वर्ग में होने चाहिए। फिर नर्क में क्यों पड़े हैं। बाप तो स्वर्ग की स्थापना करने वाला है फिर नर्क में क्यों पड़े हैं। बाप समझाते हैं तुम स्वर्ग में थे, 84 जन्म लेते-लेते तुम सब भूल गये हो। अब फिर मेरी मत पर चलो। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे क्योंकि आत्मा में ही खाद पड़ती है। शरीर आत्मा का जेवर है। आत्मा पवित्र तो शरीर भी पवित्र मिलता है। तुम जानते हो हम स्वर्ग में थे, अब फिर बाप आये हैं तो बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए ना। 5 विकारों को छोड़ना है। देह-अभिमान छोड़ना है। काम-काज करते बाप को याद करते रहो। आत्मा अपने माशूक को आधाकल्प से याद करती आई है। अब वह माशूक आया हुआ है। कहते हैं तुम काम चिता पर बैठ काले बन गये हो। अभी हम सुन्दर बनाने आये हैं। उसके लिए यह योग अग्नि है। ज्ञान को चिता नहीं कहेंगे। योग की चिता है। याद की चिता पर बैठने से विकर्म विनाश होंगे। ज्ञान को तो नॉलेज कहा जाता है। बाप तुमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप है फिर ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, फिर सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी फिर और धर्मों के बाईप्लाट हैं। झाड़ कितना बड़ा हो जाता है। अभी इस झाड़ का फाउन्डेशन है नहीं इसलिए बनेन ट्री का मिसाल दिया जाता है। देवी-देवता धर्म प्राय: लोप हो गया है। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट बन गये हैं। अभी तुम बच्चे श्रेष्ठ बनने के लिए श्रेष्ठ कर्म करते हो। अपनी दृष्टि को सिविल बनाते हो। तुम्हें अब भ्रष्ट कर्म नहीं करना है। कोई कुदृष्टि न जाये। अपने को देखो-हम लक्ष्मी को वरने लायक बने हैं? हम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं? रोज पोतामेल देखो। सारे दिन में देह-अभिमान में आकर कोई विकर्म तो नहीं किया? नहीं तो सौ गुणा हो जायेगा। माया चार्ट भी रखने नहीं देती है। 2-4 दिन लिखकर फिर छोड़ देते हैं। बाप को ओना (ख्याल) रहता है ना। रहम पड़ता है-बच्चे, हमको याद करें तो उनके पाप कट जायें। इसमें मेहनत है। अपने को घाटा नहीं डालना है। ज्ञान तो बहुत सहज है। अच्छा।

- तुम बच्चों को बाप को याद करने की बहुत मेहनत करनी पड़ती है। ज्ञान तो बहुत सहज है। बाकी विनाश काले प्रीत बुद्धि और विप्रीत बुद्धि यह याद के लिए कहा जाता है। याद अच्छी है तो प्रीत बुद्धि कहा जाता है। प्रीत भी अव्यभिचारी चाहिए। अपने से पूछना है-हम बाबा को कितना याद करते हैं? यह भी समझते हैं बाबा से प्रीत रखते-रखते जब कर्मातीत अवस्था होगी तब यह शरीर छूटेगा और लड़ाई लगेगी। जितना बाप से प्रीत होगी तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। इम्तहान तो एक ही समय होगा ना। जब पूरा समय आता है, सबकी प्रीत बुद्धि हो जाती है, उस समय फिर विनाश होता है। तब तक झगड़े आदि लगते रहते हैं। विलायत वाले भी समझते हैं अभी मौत सामने है, कोई प्रेरक है, जो हमसे बॉम्ब्स बनवाते हैं। परन्तु कर क्या सकते हैं। ड्रामा की नूँध है ना। अपनी ही साइंस बल से अपने कुल का मौत लाते हैं।

- मेहनत है याद की। उसमें बहुत फेल होते हैं। याद भी अव्यभिचारी चाहिए। माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। मेहनत बिगर थोड़ेही कोई विश्व के मालिक बन सकते हैं। पूरा पुरूषार्थ करना चाहिए-हम सुखधाम के मालिक थे। अनेक बार चक्र लगाया है। अब बाप को याद करना है। माया बहुत विघ्न डालती है।

- तुम्हारा काम है पुरूषार्थ कराना। कम भक्ति की होगी तो योग लगेगा नहीं। शिवबाबा की याद बुद्धि में ठहरेगी नहीं। कभी भी पुरूषार्थ में ठण्डा नहीं होना चाहिए। माया को पहलवान देख हार्ट फेल नहीं होना चाहिए। माया के तूफान तो बहुत आयेंगे।

- बाप कहते हैं, मुझे याद करो तो तुम पावन बनेंगे। स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। हम बाप के बनते हैं तो बाप का वर्सा मिलता है। परन्तु जब तक तमोप्रधान से सतोप्रधान न बनें, योग से पावन न

बनें तब तक वर्सा मिल न सके। बाप कहते हैं, मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, विकर्माजीत बनेंगे, यह गैरन्टी है। समझानी देनी पड़ती है। कोई समझेंगे, कोई तेज बुद्धि वाले होते तो रड़ियाँ मचाने लगते हैं। कोई न कोई विघ्न डालने वाले निकल पड़ते हैं। कोई हंगामा करे तो बोलना चाहिए- एकान्त में आकर समझो।

तुमको बाप कहते हैं-यह नियम रखो, बाप को याद करने का। याद का स्नान वा यात्रा करो। ज्ञान-स्नान भी कराते हैं, योग की यात्रा सिखलाते हैं। बाप ज्ञान देते हैं। इनमें योग का भी ज्ञान, सृष्टि-चक्र का भी ज्ञान है। बाकी शास्त्रों का ज्ञान तो बहुत देते हैं, योग को जानते ही नहीं। हठयोग समझ लिया है। योग आश्रम तो ढेर हैं। मनमनाभव का मन्त्र देंगे लेकिन सिवाए बाप के कोई भी मनुष्य के पास यह ज्ञान नहीं है।

तुम पुरूषार्थ कर सम्पूर्ण गुणवान बनते हो। सम्पूर्ण निर्विकारी, गृहस्थ व्यवहार में रहते भी तुम बाप को याद करो, कर्म तो करना ही है। बुद्धि का योग बाप के साथ लगा रहे। कर्म भल कोई भी करो, बढ़ई का काम करो वा राजाई का करो। राजा जनक का भी गायन हैं ना। राजाई करते रहो परन्तु बुद्धि का योग बाप के साथ लगाओ तो वर्सा मिल जायेगा। बाप कहते हैं मनमनाभव, मामेकम् याद करो। शिवबाबा कहते हैं सिर्फ शिव कहने से लिंग याद आयेगा। और तो सबके शरीर का नाम लिया जाता है, पार्ट शरीर से बजाते हैं। अभी तुमको आत्म-अभिमानी बनाया जाता है, जो आधाकल्प चलता है। इस समय सभी हैं देह-अभिमान में। वहाँ आत्म-अभिमानी होंगे यथा राजा-रानी तथा प्रजा। आयु तो सबकी बड़ी होती है। यहाँ सबकी आयु कम है। तो बाप सम्मुख बैठ बच्चों को कितना अच्छी रीति समझाते हैं-हे आत्माओं, क्योंकि आत्मा ज्ञान लेती है, धारणा आत्मा में होती है। बाबा को शरीर तो है नहीं। आत्मा में सारा ज्ञान है।

इस दुनिया से वैराग्य भी चाहिए अर्थात् देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को अशरीरी आत्मा समझना है। नंगे आये थे, नंगे जाना है। यह पुरानी दुनिया खलास हो जानी है, हम सब नई दुनिया में जाने वाले हैं। बस यह याद की मेहनत करते रहो, इसमें ही फेल होते हैं। याद करते नहीं हैं। जो भी समझने के लिए आते हैं उनको भी यही समझाना है-शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कहते हैं कि मुझे याद करो तो याद से तुम्हारी खाद निकल जायेगी, तुम विष्णुपुरी के मालिक बन जायेंगे। विष्णुपुरी ही स्वर्गपुरी है। तो जितना हो सके बाप को याद करो, जिस बाप को आधाकल्प याद किया है अब वह सम्मुख आये हैं। कहते हैं-मुझे याद करो, उनको कोई भी जानते नहीं। खुद ही आकर अपना परिचय देते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा कोई विरला जानते और निश्चय करते हैं। निश्चय कर लेते हैं तो पुरूषार्थ कर वर्सा पा लेते हैं। शिवबाबा कहते हैं-मुझे याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम पवित्र बन पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। विकर्म कोई भी नहीं करना है। अच्छा।

तुम जब यहाँ बैठते हो तो सबको कहना है कि शिवबाबा को याद करो। यह तो तुम जानते हो शिवबाबा है, उनके मन्दिर में भी जाते हैं परन्तु यह कोई भी नहीं जानते कि शिवबाबा कौन है-सिवाए तुम बच्चों के। तो शिवबाबा की याद दिलानी है। यहाँ बैठे कईयों का बुद्धियोग कहाँ-कहाँ भटकता रहेगा इसलिए तुम्हारा फर्ज है याद दिलाना। भाईयों और बहिनों बाप को याद करो। जिस बाप से वर्सा मिलना है। तुम अभी सच्चे भाई-बहिन हो। वह तो सिर्फ मेल, फीमेल के कारण भाई-बहिन कह देते हैं। लेक्चर्स में भी ऐसे कहेंगे- ब्रदर्स सिस्टर्स... वह हैं भाई-बहिन शरीर के नाते से। यहाँ वह बात नहीं है। यहाँ तो आत्माओं को समझाया जाता है कि अपने रचयिता बाप को याद करो, उससे वर्सा मिलना है। फर्क है ना। भाई-बहिन अक्षर तो कॉमन है। यहाँ बाप बच्चों को कहते हैं मुझ बाप को याद करो। वह शिवबाबा है रूहानी बाप और

प्रजापिता ब्रह्मा है जिस्मानी बाप। तो बापदादा दोनों कहते हैं बच्चे, बाप को याद करो और कहाँ भी बुद्धि योग न जाये। बुद्धि बहुत भटकती है। भक्ति मार्ग में भी ऐसे होता है। कृष्ण के आगे वा किसी भी देवता के आगे बैठते हैं, माला फेरते हैं। बुद्धि कहाँ-कहाँ भागती रहती है। देवतायें कौन हैं? उन्हों को यह राजाई कैसे मिली, कब मिली! यह किसको पता नहीं है। सिक्ख लोग जानते हैं-गुरू नानक ने सिक्ख पंथ स्थापन किया। फिर उनके गुरू पोत्रे चलते आते हैं। वह पुनर्जन्म में आते रहते हैं, यह बातें कोई जानते नहीं। सदैव थोड़ेही गुरूनानक को याद करेंगे। अच्छा समझो, गुरूनानक को वा बुद्ध को वा कोई भी अपने धर्म-स्थापक को याद करते हैं परन्तु यह किसको थोड़ेही पता है कि अभी वह कहाँ है। वह तो कह देते हैं ज्योति ज्योत समाया। वाणी से परे चले गये या कह देते कृष्ण हाजिरा-हजूर है, जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण है। राधे ही राधे है। ऐसे कहते रहते हैं। बाप बैठ समझाते हैं-तुम भारतवासी देवता थे।

कल्प का ज्ञान तो कोई में है नहीं। कहते भी हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले पैराडाइज था। फिर शास्त्रों में कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है! कोई का भी अटेन्शन नहीं जाता है, सुनकर फिर अपने धन्धे आदि में लग जाते हैं। तो अब बाप बच्चों को समझाते हैं-अब जल्दी-जल्दी पुरूषार्थ करो। याद में रहो तो खाद निकलती जायेगी। तुमको यहाँ ही सतोप्रधान बनना है। नहीं तो सजायें खाकर फिर अपने-अपने धर्म में चले जायेंगे। श्रीमत भगवान की मिलती है। श्रीकृष्ण तो राजकुमार है, वह क्या किसको मत देंगे! इन बातों को दुनिया में कोई भी नहीं जानते। प्यार से समझाना है कि शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा खुद कहते हैं कि मामेकम् याद करो। वह भी कल्याणकारी है और संग तोड़ एक संग जोड़ना है। तुम हो भारत का बेड़ा पार करने वाले। सत्य-नारायण की कथा भी भारत से ही तैलुक रखती है। और धर्म वाले कभी सत्य-नारायण की कथा नहीं सुनेंगे। यह सुनेंगे वह, जो नर से नारायण बनने वाले आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले होंगे। वही अमर कथा सुनेंगे। अमरलोक में देवी-देवता थे तो जरूर अमरलोक

में अमर कथा से यह पद पाया होगा। एक-एक बात याद करने लायक है। एक बात भी बुद्धि में अच्छी रीति बैठ जाए तो सब आ जायेंगे। बाप को याद करना है और स्वदर्शन-चक्र ध्यान में रखना है। शिवबाबा के साथ यहाँ पार्ट बजा रहे हैं फिर जाना है।

पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी- ऐसी बच्चियाँ हैं, जो एक दो को इतना प्यार करती हैं जो शिवबाबा को भी इतना नहीं करती। शिवबाबा कहते हैं-तुमको बुद्धियोग मेरे साथ लगाना है या एक दो में आशिक-माशूक बन जाना है। फिर मेरे को बिल्कुल ही भूल जाते हैं। तुमको तो बुद्धियोग मेरे साथ जोड़ना है, इसमें मेहनत लगती है। बुद्धि टूटती ही नहीं है। शिवबाबा के बदले, दिन-रात एक दो को ही याद करते रहते हैं। बाबा नाम सुनाये तो ट्रेटर बन जाते हैं, फिर गाली देने में भी देरी नहीं करते। इस बाबा को गाली दी तो शिवबाबा भी झट सुन लेगा। ब्रह्मा से नहीं पढ़े तो शिवबाबा से पढ़ न सके। ब्रह्मा बिगर तो शिवबाबा भी सुन न सके, इसलिए कहते हैं साकार से जाकर पूछो। कई अच्छे-अच्छे बच्चे हैं जो साकार को मानते ही नहीं। समझते हैं- यह तो पुरूषार्थी हैं। पुरूषार्थी तो सब हैं परन्तु तुमको फालो तो माँ-बाप को ही करना है। कोई तो समझाने से समझ जाते हैं, कोई की तकदीर में नहीं है तो समझते नहीं। सर्विसएबुल बनते नहीं। परन्तु बुद्धि एक बाप से रखनी होती है। बहुत आजकल निकले हैं जो कहते हैं मेरे में शिवबाबा आते हैं, इसमें बड़ी सम्भाल चाहिए। माया की बहुत प्रवेशता होती है, जिनमें आगे श्री नारायण आदि आते थे, वह भी आज हैं नहीं। सिर्फ प्रवेशता से कुछ होता नहीं है। बाप कहते हैं- मामेकम् याद करो। बाकी मेरे में यह आता है, वह आता है... यह सब माया है। मेरी याद ही नहीं होगी तो प्राप्ति क्या होगी, जब तक बाप से सीधा योग नहीं रखेंगे तो पद कैसे पायेंगे, धारणा कैसे होगी।

बच्चे बाप की याद में बैठे हैं, यह श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत मिलती है। याद की यात्रा बहुत मीठी है। बच्चे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हैं कि जितना बाप को याद करेंगे उतना बाबा स्वीट लगेगा। सैक्रीन है ना। एक बाप ही प्यार करते हैं बाकी तो सब मार देते हैं। दुनिया सारी एक दो को ठुकराती है। बाप प्यार करते हैं, उनको सिर्फ तुम बच्चों ने जाना है। बाप कहते हैं- मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कितना बड़ा हूँ, बताओ हमारा बाप कितना बड़ा है? तो कहते हैं बिन्दी है और तो कोई जानते नहीं। बच्चे भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। कहते हैं भक्ति मार्ग में तो बड़े-बड़े चित्रों की पूजा करते थे। अब बिन्दी को कैसे याद करें? बिन्दी, बिन्दी को ही याद करेगी ना। आत्मा जानती है हम बिन्दी हैं। हमारा बाप भी ऐसे है। आत्मा ही प्रेजीडेन्ट है, आत्मा ही नौकर है। पार्ट आत्मा ही बजाती है। बाप है सबसे स्वीट। सब याद करते हैं हे पतितपावन, दुःख-हर्ता सुख-कर्ता आओ। अब तुम बच्चों को यह निश्चय है हम जिसको बिन्दी कहते हैं, वह बहुत सूक्ष्म है परन्तु महिमा कितनी भारी है। भल महिमा गाते भी हैं ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है, परन्तु समझते नहीं कि वह कैसे आकर सुख देते हैं। मीठे-मीठे चिल्ड्रेन हर एक समझ सकते हैं- कौन-कौन कितना श्रीमत पर चलते हैं।

तुम बच्चे अभी जानते हो, बरोबर बेहद बाप की यह फैमिली है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय। इनके लिए गाया है विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ती। ऐसी फैमिली कभी गीता में नहीं गाई हुई है। तुम ईश्वरीय फैमिली; गुप्त दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हो। किसको भी पता नहीं पड़ता। तुमको नशा है, जो-जो बाप को याद करेंगे, उनको नशा रहेगा। देह-अभिमान में आने से वह नशा उतर जायेगा। यह ईश्वरीय फैमिली है। हमको घर जाना है फिर दैवी राजधानी में आयेंगे। वहाँ है दैवी फैमिली। वह आसुरी फैमिली, यह है तुम्हारी ईश्वरीय फैमिली। रूहानी बापदादा के बच्चे बहन- भाई हैं। बस यह है रूहानी प्रवृत्ति मार्ग। सतयुग में ईश्वरीय फैमिली नहीं कहेंगे। वहाँ दैवी फैमिली हो जाती है। यह ईश्वरीय फैमिली बड़ी जबरदस्त है। तुम जानते हो अभी हम

ईश्वरीय फैमिली, दैवी राज्य स्थापन कर रहे हैं। ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करते, विचार सागर मंथन करना चाहिए। सवेरे उठकर याद में बैठो तो विचार सागर मंथन करने की आदत पड़ जायेगी। उमंग में आते जायेंगे। जब और सब मनुष्य नींद में सोये रहते हैं, तुम उस समय जागते हो। तुम्हें सवेरे-सवेरे उठकर ऐसे-ऐसे ख्याल करने चाहिए फिर देखो तुमको कितनी खुशी रहती है। जो भी श्रीमत मिलती है उस पर चलना है फिर तुमको खुशी बहुत होगी, ईश्वरीय फैमिली की याद आयेगी। आसुरी फैमिली से दिल हट जायेगी। नया मकान जब बिल्कुल तैयार हो जाता है तो फिर पुराने से आसक्ति निकल जाती है। जब तक नया नहीं बना है तब तक कुछ न कुछ मरम्मत आदि करते रहते हैं। फिर दिल हट जाती है। यह पुरानी दुनिया भी ऐसी है।

यह जो कहते हैं– हमारे में शिवबाबा आते हैं। शिवबाबा यह बोलते हैं। यह सब भूत की प्रवेशता है। तुम बच्चों को खबरदार रहना है। यह भूत की बीमारी ऐसी है जो दोनों जहाँ से उड़ा देती है। यह कभी भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि हम साक्षात्कार करें। यह सब भक्ति के ख्यालात हैं। ज्ञान मार्ग को अच्छी रीति समझना है। माया अनेक प्रकार से धोखा देती है। साक्षात्कार आदि से कोई फायदा नहीं। बाप कहते हैं इन द्वारा सगाई कराते हैं। बाप का फरमान है– तुमको कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। अपने कल्याण के लिए बाप को याद करना है। यह तो बहुत समझ की बात है। बाबा को कोई भी समाचार लिख सकते हैं। कई बच्चों को तो इतना भी अक्ल नहीं कि बेहद के बाप को चिट्ठी में अपना खुश-खैराफत का समाचार लिखें। लौकिक बाप को चिट्ठी न लिखें तो आराम ही फिट जाता। यह भी बेहद का बाप है। देखते हैं मास डेढ़ चिट्ठी नहीं आती है तो समझते हैं, इनको शायद माया खा गई, जो ऐसे पारलौकिक बाप को चिट्ठी नहीं लिखते हैं। इतना तो लिखना चाहिए– बाबा, हम नारायणी नशे में सदैव रहते हैं। आपकी दी हुई युक्ति में ही हम तत्पर हैं। तो बाबा समझेंगे खुश-राजी हैं। चिट्ठी नहीं लिखेंगे तो समझेंगे बीमार हैं। याद में ही

नहीं रहते हैं। नहीं तो बाबा को समाचार देना है, बाबा हमने यह सर्विस की है, इनको समझाया, इनकी बुद्धि में पूरा नहीं बैठा। तो फिर यह भी समझायेंगे कि इस रीति समझाओ।

बाबा कहते हैं कि तुम शिवबाबा कहकर याद करो, इस पुरानी दुनिया को भूल जाओ। तुम शान्तिधाम में याद करो। सिर्फ शान्तिधाम को याद नहीं करना है, बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। आत्मा का स्वीट बाप से लव चाहिए। आधाकल्प का लवर है। आत्मा कहती है– हम आधाकल्प आपको भूल गये हैं। यहाँ ब्राह्मणियाँ जिनको ले आती हैं, बहुत खबरदारी से निश्चयबुद्धि वाले को ही आना है। अगर यहाँ आकर फिर जाए कोई पतित बना तो दण्ड ब्राह्मणी पर आ जायेगा इसलिए ब्राह्मणी पर बहुत रेसपान्सिबिलिटी है। बाबा ने यह रथ लिया है। सब बातों का अनुभवी है। यहाँ तो गन्द की बात नहीं। आपस में हँसना, खेलना, बातचीत करना इसकी कोई मना नहीं है। बाकी थोड़ा भी कोई आत्मा से प्यार रखेंगे तो फिर जास्ती बढ़ता जायेगा। उसकी याद आती रहेगी इसलिए इससे भी पार जाना है।

बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और फिर दूसरे तरफ अगर कोई पाप कर्म करेंगे तो सौ गुणा पाप लग जायेगा। जितना हो सके कोई विकर्म नहीं करना चाहिए। कर्मेन्द्रियाँ धोखा बहुत देती हैं।

अब तुम बच्चे जानते हो– बाबा आकर हमको वर्सा दे रहे हैं। जैसे लौकिक बाप बच्चों का लालन-पालन करते हैं, पढ़ाते नहीं हैं। पढ़ाई के लिए स्कूल में जाते हैं फिर वानप्रस्थ में गुरू किया जाता है। आजकल तो छोटे-बड़े सबको गुरू करा देते हैं। यहाँ तो तुम बच्चों को कहा जाता है– शिवबाबा को याद करो, सबका हक है। सब मेरे बच्चे हैं। तुम्हारे में भी कोई हैं जो

अच्छी रीति याद करते हैं। कई तो कहते हैं– बाबा, किसको याद करें? बिन्दी को कैसे याद करें? बड़ी चीज को याद किया जाता है। अच्छा परमात्मा, जिसको तुम याद करते हो, वह चीज क्या है? तो कह देते अखण्ड ज्योति स्वरूप है। परन्तु ऐसे नहीं है। अखण्ड ज्योति को याद करना रांग हो जाता है। याद तो एक्यूरेट चाहिए। पहले एक्यूरेट जानना चाहिए। बाप ही आकर अपना परिचय देते हैं, और फिर बच्चों को सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का समाचार भी सुनाते हैं। डिटेल में भी तो नटशेल में भी। अब बाप कहते हैं बच्चे तुमको पावन बनना है तो उसके लिए एक ही उपाए है– मुझे याद करो, मुझे कहते ही हो पतित-पावन। आत्मा को पावन बनाना है। आत्मा ही कहती है हम पतित बन गये हैं। हम पावन थे, अब पतित हैं। सब तमोप्रधान हैं। हर एक चीज पहले सतोप्रधान फिर तमोप्रधान होती है। आत्मा खुद कहती है मैं पतित बनी हूँ, मुझे पावन बनाओ। शान्तिधाम में पतित होते नहीं। यहाँ पतित हैं तो दु:खी हैं।

- संस्कार अच्छे वा बुरे आत्मा में रहते हैं। उन संस्कारों अनुसार शरीर भी ऐसा मिलता है। सारा मदार आत्मा पर है। यह बहुत बड़ी मेहनत है। जन्म-जन्मान्तर लौकिक बाप को याद किया, अब पारलौकिक बाप को याद करना है। अपने को घड़ी-घड़ी आत्मा समझना है। हम आत्मा यह शरीर लेते हैं। अभी हम आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। यह है रूहानी ज्ञान, जो रूहानी बाप देते हैं। पहली-पहली मुख्य बात बच्चों को देही-अभिमानी हो रहना है। देही-अभिमानी हो रहना, यह बड़ी ऊंची मंजिल है। ज्ञान ऊंच नहीं है। ज्ञान में मेहनत नहीं है। सृष्टि चक्र को जानना– यह है हिस्ट्री-जॉग्राफी। ऊंच ते ऊंच बाप है, फिर हैं सूक्ष्मवतन में देवतायें।

- बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो, यह है रूहानी याद की यात्रा। ज्ञान की यात्रा नहीं, इसमें बहुत मेहनत करनी पड़े। कोई तो भल बी.के. कहलाते हैं परन्तु बाप को याद नहीं करते। बाप

आकर ब्रह्मा द्वारा तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनाते हैं। यह देह-अभिमानी थे। अभी देही-अभिमानी बनने का पुरूषार्थ चल रहा है। ब्रह्मा कोई भगवान नहीं है। यहाँ तो सब मनुष्य मात्र पतित हैं। पावन श्रेष्ठाचारी एक भी नहीं। आत्मा के लिए ही कहा जाता है पुण्य आत्मा, पाप आत्मा। मनुष्य भी कहते हैं मेरी आत्मा को तंग नहीं करो। परन्तु समझते नहीं हैं कि मैं कौन हूँ? पूछा जाता है– हे जीव की आत्मा, तुम क्या धन्धा करते हो? कहेंगे मैं आत्मा इस शरीर द्वारा फलाना धन्धा करता हूँ। तो पहले-पहले यह निश्चय कर बाप को याद करो। यह रूहानी नॉलेज सिवाए बाप के कोई दे न सके। बाप आकर देही-अभिमानी बनाते हैं। ऐसे नहीं कि ज्ञान में कोई तीखे जाते हैं तो वह पक्के देही-अभिमानी बने हैं। देही-अभिमानी जो हैं वह ज्ञान को अच्छी रीति धारण करते हैं। बाकी तो बहुत हैं जो ज्ञान को अच्छी रीति समझते हैं, परन्तु शिवबाबा की याद भूल जाते हैं। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, इसमें जिन्न मुआफक बनना है। जिन्न की कहानी है। बाप भी यह काम देते हैं– मुझे याद करो, नहीं तो माया तुझे खा जायेगी। माया है जिन्न। जितना बाप को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और तुमको बहुत कशिश होगी। माया उल्टा बनाकर तुमको बहुत तूफान में लायेगी। बुद्धि में यही याद रहे कि हम आत्मा बाप के बच्चे हैं। बस इस खुशी में रहना है।

सपूत बच्चे वह जो मात-पिता को फालो कर तख्तनशीन बनें। पुरूषार्थ खूब करना चाहिए। बाप कहते हैं– मुझे याद करो तो करते नहीं, श्रीमत पर चलते नहीं हैं। अन्दर सच्चाई नहीं है। दिल सच्ची हो तो श्रीमत पर चलते, बाप को याद करते रहें। श्रीमत पर ही तुमको दादे से वर्सा मिलता है। ब्रह्मा स्वर्ग का वर्सा दे नहीं सकते।

बाप ने स्मृति दिलाई है - अभी कलियुग है। तुम सतयुग के लिए पढ़ते हो। ऐसा पढ़ाने वाला तो कोई भी नहीं होगा जो कहे कि इस पढ़ाई से तुमको नई दुनिया में राज्य पद मिलेगा। कोई बोल

न सके। तुम बच्चों को हर बात की स्मृति दिलाई जाती है। गफ़लत नहीं करनी है। बाबा सबको समझाते रहते हैं। कहाँ भी बैठो, धंधा आदि करो अपने को आत्मा समझ करो। धन्धे धोरी में जरा मुश्किलात होती है तो जितना हो सके - टाइम निकाल याद में बैठो तब ही आत्मा पवित्र होगी। और कोई उपाय नहीं। तुम राजयोग सीख रहे हो नई दुनिया के लिए। वहाँ आइरन एजड आत्मा जा न सके। माया ने आत्मा के पंख तोड़ डाले हैं। आत्मा उड़ती है ना। एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्मा है सबसे तीखा रॉकेट। तुम बच्चों को यह नई-नई बातें सुनकर वन्डर लगता है। आत्मा कितना छोटा रॉकेट है। उसमें 84 जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। ऐसी बातें दिल में याद रखने से उमंग आयेगा। स्कूल में विद्यार्थियों की बुद्धि में विद्या याद रहती है ना। तुम्हारी बुद्धि में अब क्या है? बुद्धि कोई शरीर में नहीं है। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। आत्मा ही पढ़ती है। नौकरी आदि सब कुछ आत्मा ही करती है। शिवबाबा भी आत्मा है। परन्तु उनको परम कहते हैं। वह ज्ञान का सागर है। वह बहुत छोटी बिन्दी है। यह भी किसको पता नहीं है, जो उस बाप में संस्कार हैं वही तुम बच्चों में भरे जाते हैं। अभी तुम योगबल से पावन बन रहे हो। उसके लिए पुरूषार्थ करना पड़े। पढ़ाई में फुरना तो रहता है कि कहाँ हम फेल न हो जाएं। इसमें पहले नम्बर की सबजेक्ट ही यह है कि हम आत्मा सतोप्रधान बनें। कुछ खामी न रह जाए। नहीं तो नापास हो जायेंगे। माया तुमको हर बात में भुलाती है। आत्मा चाहती भी है चार्ट रखें। सारे दिन में कोई आसुरी काम न करें। परन्तु माया चार्ट रखने नहीं देती। तुम माया के चम्बे में आ जाते हो। दिल कहती भी है - पोतामेल रखें। व्यापारी लोग हमेशा फायदे नुकसान का पोतामेल रखते हैं। तुम्हारा तो यह बहुत बड़ा पोतामेल है। 21 जन्मों की कमाई है, इसमें गफ़लत नहीं करनी चाहिए। बच्चे बहुत गफ़लत करते हैं। इस बाबा को तो तुम बच्चे सूक्ष्मवतन में, स्वर्ग में भी देखते हो। बाबा भी बहुत पुरूषार्थ करते हैं। वन्डर भी खाते रहते हैं। बाबा की याद में स्नान करता हूँ, भोजन खाता हूँ, फिर भी भूल जाता हूँ फिर याद करने लगता हूँ। बड़ी सबजेक्ट है यह। इस बात में कोई भी मतभेद आ नहीं सकता। गीता में भी है देह सहित देह के सब धर्म छोड़ो। बाकी रही आत्मा। देह को भूल अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही पतित तमोप्रधान बनी है। मनुष्य फिर कह देते आत्मा निर्लेप है। आत्मा सो परमात्मा, सो आत्मा है इसलिए

समझते हैं आत्मा में कोई लेप-छेप नहीं लगता है। तमोगुणी मनुष्य शिक्षा भी तमोगुणी देते हैं। सतोगुणी बना न सकें। भक्ति मार्ग में तमोप्रधान बनना है। हर एक चीज पहले सतोप्रधान फिर रजो तमो में आती है। कन्स्ट्रक्शन और डिस्ट्रक्शन होता है। बाप नई दुनिया का कन्स्ट्रक्शन कराते फिर इस पुरानी दुनिया का डिस्ट्रक्शन हो जाता है।

तुमको बाप की याद में रहना है। भल शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है फिर भी समय तो बहुत मिलता है। कोई जिज्ञासु आदि नहीं है, काम नहीं है तो बाप की याद में बैठ जाना चाहिए। वह तो है अल्पकाल के लिए कमाई और तुम्हारी यह है सदाकाल के लिए कमाई, इसमें अटेन्शन जास्ती देना पड़ता है। माया घड़ी-घड़ी और तरफ ख्यालात को ले जाती है। यह तो होगा ही। माया भुलाती रहेगी। इस पर एक नाटक भी दिखाते हैं - प्रभू ऐसे कहते, माया ऐसे कहती। बाप बच्चों को समझाते हैं मामेकम् याद करो, इसमें ही विघ्न पड़ते हैं। और कोई बात में इतने विघ्न नहीं पड़ते। पवित्रता पर कितनी मार खाते हैं। भागवत आदि में इस समय का ही गायन है। पूतनायें, सूपनखायें भी हैं, यह सब इस समय की बातें हैं जबकि बाप आकर पवित्र बनाते हैं। उत्सव आदि भी जो मनाते हैं, जो पास्ट हो गया है, उनका फिर त्योहार मनाते आते। पास्ट की महिमा करते आते हैं।

बाबा घड़ी-घड़ी मूल बात समझाते हैं - अपने को आत्मा समझकर बैठो। परमात्मा बाप हम आत्माओं को बैठ समझाते हैं। तुम घड़ी-घड़ी देह-अभिमान में आ जाते हो फिर घरबार आदि याद आ जाता है। यह होता है। भक्ति मार्ग में भी भक्ति करते-करते बुद्धि और तरफ चली जाती है। एक टिक सिर्फ नौधा भक्ति वाले ही बैठ सकते हैं, जिसको तीव्र भक्ति कहा जाता है। एकदम लवलीन हो जाते हैं। तुम जैसे याद में बैठते हो तो कोई समय एकदम अशरीरी बन जाते हो। जो अच्छे बच्चे होंगे - वही ऐसी अवस्था में बैठेंगे। देह का भान निकल जायेगा। अशरीरी हो उस

मस्ती में बैठे रहेंगे। यह आदत पड़ जायेगी। सन्यासी हैं तत्व ज्ञानी वा ब्रह्म ज्ञानी। वह कहते हैं हम लीन हो जायेंगे। यह पुराना शरीर छोड़ ब्रह्म तत्व में लीन हो जायेंगे। सबका अपना-अपना धर्म है ना। कोई भी दूसरे धर्म को नहीं मानते हैं। आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले भी तमोप्रधान बन गये हैं।

यह है भी बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। फिर सतोप्रधान बनते हैं। उसके लिए बाप युक्ति बताते हैं कि अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। मैं ही सर्वशक्तिमान् हूँ। मुझे याद करने से तुम्हारे में शक्ति आयेगी। तुम विश्व के मालिक बनेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण का वर्सा इन्हों को बाप से मिला है। बाबा जानते हैं याद की यात्रा में बच्चे बहुत ढीले हैं। बाप को याद करने की मेहनत है। उसमें ही माया बहुत विघ्न डालती है। यह भी खेल बना हुआ है। बाप बैठ समझाते हैं - कैसे यह खेल बना-बनाया है। दुनिया के मनुष्य तो रिंचक भी नहीं जानते। बाप की याद में रहने से तुम किसको समझाने में भी एकरस होंगे। नहीं तो कुछ न कुछ नुक्स (कमी) निकालते रहेंगे। बाबा कहते हैं तुम जास्ती कुछ भी तकलीफ न लो। स्थापना तो जरूर होनी ही है। भावी को कोई भी टाल नहीं सकते। हुल्लास में रहना चाहिए। बाप से हम बेहद का वर्सा ले रहे हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बहुत प्रेम से बैठ समझाना है। बाप को याद करते प्रेम में आंसू आ जाने चाहिए। और तो सभी सम्बन्ध हैं कलियुगी। यह है रूहानी बाप का सम्बन्ध। यह तुम्हारे आंसू भी विजयमाला के दाने बनते हैं। बहुत थोड़े हैं - जो ऐसा प्रेम से बाप को याद करते हैं। कोशिश कर जितना हो सके अपना टाइम निकाल अपने भविष्य को ऊंचा बनाना चाहिए। प्रदर्शनी में इतने ढेर बच्चे नहीं होने चाहिए। न इतने चित्रों की दरकार है। नम्बरवन चित्र है गीता का भगवान कौन? उसके बाजू में लक्ष्मी-नारायण का, सीढ़ी का। बस। बाकी इतने चित्र कोई काम के नहीं। तुम बच्चों को जितना हो सके याद की यात्रा को बढ़ाना है। मूल फिकरात रखनी है कि पतित से पावन कैसे बनें! बाबा का बनकर और फिर बाबा के आगे जाकर सज़ा खायें यह तो बड़ी दुर्गति की बात है। अभी याद की यात्रा पर नहीं रहेंगे तो फिर बाप के आगे सज़ा खाने समय बहुत-बहुत लज्जा आयेगी। सज़ा न खानी पड़े, यह सबसे जास्ती फुरना रखना है।

तुम रूप भी हो, बसन्त भी हो। बाबा भी कहते हैं मैं रूप भी हूँ, बसन्त भी हूँ। छोटी सी बिन्दी हूँ और फिर ज्ञान का सागर भी हूँ।

माला का जाप करते हैं। यहाँ तो बाप कहते हैं मुझे याद करो। यह है अजपाजाप। मुख से कुछ बोलना नहीं है। गीत भी स्थूल हो जाता है। बच्चों को तो सिर्फ बाप को याद करना है। नहीं तो फिर गीत आदि याद आते रहेंगे। यहाँ मूल बात है ही याद की। तुमको आवाज से परे जाना है। बाप का डायरेक्शन है ही मनमनाभव। बाप थोड़ेही कहते हैं गीत गाओ, रड़ी मारो। मेरी महिमा गायन करने की भी दरकार नहीं है। यह तो तुम जानते हो वह ज्ञान का सागर, सुख-शान्ति का सागर है।

मूल बात है कि बाप को कोई नहीं जानते। मनुष्य होकर और पारलौकिक बाप को नहीं जानते, उनसे प्यार नहीं रखते। अब बाप कहते हैं मेरे साथ प्यार रखो। मेरे साथ प्यार रखते-रखते तुमको मेरे साथ ही वापिस चलना है। जब तक वापिस चलो तब तक इस छी- छी दुनिया में रहना पड़ता है। पहले-पहले तो देह-अभिमानी से देही-अभिमानी बनो तब तुम धारणा कर सकते हो और बाप को याद कर सकते हो। अगर देही-अभिमानी नहीं बनते तो कोई काम के नहीं। देह-अभिमानी तो सब हैं। तुम समझते भी हो कि हम आत्म-अभिमानी नहीं बनते, बाप को याद नहीं करते तो हम वही हैं जो पहले थे। मूल बात ही है देही-अभिमानी बनने की। बाप तो सदैव आत्म-अभिमानी है ही इसलिए वह सुप्रीम है। बाप कहते हैं मैं तो आत्म- अभिमानी हूँ। जिसमें प्रवेश किया है उनको भी आत्म-अभिमानी बनाता हूँ। इनमें प्रवेश करता हूँ इनको कनवर्ट करने क्योंकि यह भी देह-अभिमानी थे, इनको भी कहता हूँ अपने को आत्मा समझ मुझे यथार्थ रीति याद करो। ऐसे बहुत मनुष्य हैं जो समझते हैं आत्मा अलग है, जीव अलग है। आत्मा देह से निकल जाती है तो दो चीज़ हुई ना। बाप समझाते हैं तुम आत्मा हो। आत्मा ही पुनर्जन्म लेती

है। आत्मा ही शरीर लेकर पार्ट बजाती है। बाबा बार-बार समझाते हैं अपने को आत्मा समझो, इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। जैसे स्टूडेण्ट पढ़ने के लिए एकान्त में, बगीचे आदि में जाकर पढ़ते हैं। पादरी लोग भी घूमने जाते हैं तो एकदम शान्त रहते हैं। वह कोई आत्म-अभिमानी नहीं रहते। क्राइस्ट की याद में रहते हैं। घर में रहकर भी याद तो कर सकते हैं परन्तु खास एकान्त में जाते हैं क्राइस्ट को याद करने और कोई तरफ देखते भी नहीं। जो अच्छे- अच्छे होते हैं, समझते हैं हम क्राइस्ट को याद करते-करते उनके पास चले जायेंगे। क्राइस्ट हेविन में बैठा है, हम भी हेविन में चले जायेंगे। यह भी समझते हैं क्राइस्ट हेविनली गॉड फादर के पास गया। हम भी याद करते-करते उनके पास जायेंगे। सब क्रिश्चियन उस एक के बच्चे ठहरे। उनमें कुछ ज्ञान ठीक है। लेकिन तुम कहेंगे कि यह उनकी समझ भी रांग है क्योंकि क्राइस्ट की आत्मा तो ऊपर गई ही नहीं। क्राइस्ट नाम तो शरीर का है, जिसको फाँसी पर चढ़ाया। आत्मा तो फाँसी पर नहीं चढ़ती है। अब क्राइस्ट की आत्मा गॉड फादर के पास गई, यह कहना भी रांग हो जाता है। वापिस कोई कैसे जायेंगे? हर एक को स्थापना फिर पालना जरूर करनी होती है। मकान को पोताई आदि कराई जाती है, यह भी पालना है ना।

तुम बच्चे पहले-पहले निरोगी दुनिया में आते हो, निरोगी बनते हो याद की यात्रा से। याद से तुम चले जायेंगे अपने स्वीट होम। यह भी एक यात्रा है। आत्मा की यात्रा है, बाप परमात्मा के पास जाने की। यह है स्प्रीचुअल यात्रा। यह अक्षर कोई समझ नहीं सकेंगे। तुम भी नम्बरवार जानते हो, परन्तु भूल जाते हो। मूल बात है यह, समझाना भी बहुत सहज है। परन्तु समझाये वह जो खुद भी रूहानी यात्रा पर हो। खुद होगा नहीं, दूसरे को बतायेंगे तो तीर नहीं लगेगा। सच्चाई का जौहर चाहिए। हम बाबा को इतना याद करते हैं जो बस। स्त्री पति को कितना याद करती है। यह है पतियों का पति, बापों का बाप, गुरूओं का गुरू। गुरू लोग भी उस बाप को ही याद करते हैं। क्राइस्ट भी बाप को ही याद करते थे। परन्तु उनको कोई जानते नहीं हैं। बाप

जब आये तब आकर अपनी पहचान देवे। भारतवासियों को ही बाप का पता नहीं है तो औरों को कहाँ से मिल सकता। विलायत से भी यहाँ आते हैं, योग सीखने के लिए। समझते हैं प्राचीन योग भगवान ने सिखाया। यह है भावना। बाप समझाते हैं सच्चा-सच्चा योग तो मैं ही कल्प-कल्प आकर सिखलाता हूँ, एक ही बार। मुख्य बात है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसको ही रूहानी योग कहा जाता है। बाकी सबका है जिस्मानी योग। ब्रह्म से योग रखते हैं। वह भी बाप तो नहीं है। वह तो महतत्व है, रहने का स्थान। तो राइट एक ही बाप है। एक बाप को ही सत्य कहा जाता है। यह भी भारतवासियों को पता नहीं कि बाप ही सत्य कैसे है। वही सचखण्ड की स्थापना करते हैं। सचखण्ड और झूठ खण्ड।

बाप कहते हैं पास्ट इज़ पास्ट। बीती बात को चितवो नहीं। पुरानी दुनिया में कोई आश नहीं रखो। अब तो एक ही ऊंच आश रखनी है - हम चलें सुखधाम। बुद्धि में सुखधाम ही याद रहना चाहिए। पिछाड़ी में क्यों फिरना चाहिए। परन्तु बहुतों की पीठ मुड़ जाती है। तुम अभी हो पुरूषोत्तम संगमयुग पर। पुरानी दुनिया से किनारा कर लिया है। यह समझ की बात है ना। कहाँ ठहरना नहीं है। कहाँ देखना नहीं है। बीती को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं आगे बढ़ते जाओ, पिछाड़ी को नहीं देखो। एक तरफ ही देखते रहो तब ही अचल, स्थिर, अडोल अवस्था रह सकती है। उस तरफ देखते रहेंगे तो पुरानी दुनिया के मित्र-सम्बन्धी आदि याद पड़ते रहेंगे। नम्बरवार तो हैं ना। आज देखो तो बहुत अच्छा चल रहा है, कल गिरा तो दिल एकदम हट जाती है। ऐसी ग्रहचारी बैठ जाती है जो मुरली सुनने पर भी दिल नहीं होती। विचार करो - ऐसे होता है ना?

बाप कहते हैं तुम अभी संगम पर खड़े हो तो रूख आगे रखना चाहिए। आगे है नई दुनिया, तब ही खुशी होगी। अब बाकी शडपंथ (थोड़े से रास्ते) पर हैं। कहते हैं ना - अभी तो अपने देश के

झाड़ देखने में आते हैं। आवाज़ करो तो झट वह सुनेंगे। शडपंथ अर्थात् बिल्कुल सामने हैं। तुम याद करते हो और देवतायें आ जाते हैं। आगे थोड़ेही आते थे। सूक्ष्मवतन में ससुरघर वाले आते थे क्या? अब तो पियरघर और ससुरघर वाले जाकर मिलते हैं। फिर भी बच्चे चलते-चलते भूल जाते हैं। बुद्धियोग पिछाड़ी में हट जाता है। बाप कहते हैं तुम सबका यह अन्तिम जन्म है। तुम्हें पीछे नहीं हटना है। अब पार होना है। इस तरफ से उस तरफ जाना है। मौत भी नज़दीक होता जाता है। बाकी सिर्फ कदम भरना है, नांव किनारे आती है तो उस तरफ कदम उठाना पड़ता है ना। तुम बच्चों को खड़ा होना है किनारे पर। तुम्हारी बुद्धि में है आत्मायें जाती हैं अपने स्वीट होम। यह याद रहने से भी खुशी तुमको अचल-अडोल बना देगी। यही विचार सागर मंथन करते रहना है। यह है बुद्धि की बात। हम आत्मा जा रही हैं। अब बाकी नज़दीक शडपंथ पर हैं। बाकी थोड़ा समय है। इसको ही याद की यात्रा कहा जाता है। यह भी भूल जाते हैं। चार्ट लिखना भी भूल जाते हैं। अपने दिल पर हाथ रखकर देखो - बाबा जो कहते हैं कि अपने को ऐसे समझो - हम नज़दीक शडपंथ पर खड़े हैं, ऐसी अवस्था हमारी है? बुद्धि में एक बाबा ही याद हो। बाबा याद की यात्रा भिन्न-भिन्न प्रकार से सिखलाते रहते हैं। इस याद की यात्रा में ही मस्त रहना है। बस अब हमको जाना है। यहाँ हैं सब झूठे संबंध। सच्चा सतयुग का सम्बन्ध है। अपने को देखो हम कहाँ खड़े हैं? सतयुग से लेकर बुद्धि में यह चक्र याद करो। तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो ना। सतयुग से लेकर चक्र लगाए आकर किनारे पर खड़े हुए हो। शडपंथ हुआ ना। कई तो अपना टाइम बहुत व्यर्थ गँवाते रहते हैं। 5-10 मिनट भी मुश्किल याद में रहते होंगे। स्वदर्शन चक्रधारी तो सारा दिन बनना चाहिए। ऐसे तो है नहीं। बाबा भिन्न-भिन्न तरीके से समझाते हैं। आत्मा की ही बात है। तुम्हारी बुद्धि में चक्र फिरता रहता है। बुद्धि में यह याद क्यों नहीं रहनी चाहिए। अभी हम किनारे पर खड़े हैं। यह किनारा बुद्धि में क्यों नहीं याद रहता है, जबकि जानते हो हम पुरूषोत्तम बन रहे हैं तो जाकर किनारे पर खड़े रहो। जूँ मुआफ़िक चलते ही रहो। क्यों नहीं यह प्रैक्टिस करते हो? क्यों नहीं चक्र बुद्धि में आता है? यह स्वदर्शन चक्र है ना। बाबा शुरू से लेकर सारा चक्र समझाते रहते हैं। तुम्हारी बुद्धि सारा चक्र लगाए, आकर किनारे पर खड़ी रहनी

चाहिए, और कोई भी बाहर का वातावरण झंझट न रहे। दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों को साइलेन्स में ही जाना है। टाइम वेस्ट नहीं गँवाना है। पुरानी दुनिया को छोड़ नये सम्बन्ध से अपना बुद्धि का योग लगाओ। योग नहीं लगायेंगे तो पाप कैसे कटेंगे? तुम जानते हो यह दुनिया ही खत्म होनी है, इनका मॉडल कितना छोटा है। 5 हज़ार वर्ष की दुनिया है। अजमेर में स्वर्ग का मॉडल है परन्तु किसको स्वर्ग याद आयेगा क्या? वह क्या जाने स्वर्ग से। समझते हैं स्वर्ग तो 40 हज़ार वर्ष के बाद आयेगा। बाप तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं इस दुनिया में कामकाज करते बुद्धि में यह याद रखो कि यह दुनिया तो खत्म होने वाली है। अब जाना है, हम पिछाड़ी में खड़े हैं। कदम-कदम जूँ मिसल चलता है।

आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले जो होंगे वह जरूर आगे-पीछे आयेंगे। पिछाड़ी में आने वाले भी आगे वालों से तीखे जायेंगे। यह पिछाड़ी तक होता रहेगा। वह पुरानों से तीखे कदम बढ़ायेंगे। सारा इम्तहान है याद की यात्रा का। भल देरी से आये हैं, याद की यात्रा में लग जाएं और सब धंधाधोरी छोड़ इस यात्रा में बैठ जायें, भोजन तो खाना ही है। अच्छी रीति याद में रहें तो इस खुशी जैसी खुराक नहीं। यही तात लगी रहेगी - अभी हम जाते हैं। 21 जन्मों का राज्य-भाग्य मिलता है। लॉटरी मिलने वाले को खुशी का पारा चढ़ जाता है ना। तुमको बहुत मेहनत करनी है। इसको ही अन्तिम अमूल्य जीवन कहा जाता है। याद की यात्रा में बहुत मज़ा है। हनूमान भी पुरूषार्थ करते-करते स्थेरियम बना ना। भंभोर को आग लगी, रावण का राज्य जल गया। यह एक कहानी बना दी है। बाप यथार्थ बात बैठ समझाते हैं। रावण राज्य खलास हो जायेगा। स्थेरियम बुद्धि इसको कहा जाता है। बस अब शडपंथ है, हम जा रहे हैं। इस याद में रहने का पुरूषार्थ करो तब खुशी का पारा चढ़ेगा, आयु भी योगबल से बढ़ती है। तुम अभी दैवीगुण धारण करते हो फिर वह आधाकल्प चलती है। इस एक जन्म में तुम इतना पुरूषार्थ करते हो, जो तुम जाकर यह लक्ष्मी-नारायण बनते हो। तो कितना पुरूषार्थ करना चाहिए। इसमें

गफ़लत वा टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए, जो करेगा सो पायेगा। बाप शिक्षा देते रहते हैं। तुम समझते हो - कल्प-कल्प हम विश्व के मालिक बनते हैं, इतने थोड़े टाइम में कमाल कर देते हैं। सारी दुनिया को चेंज कर देते हैं। बाप के लिए कोई बड़ी बात नहीं। कल्प-कल्प करते हैं। बाप समझाते हैं - चलते-फिरते, खाते-पीते अपना बुद्धियोग बाप से लगाओ। यह गुप्त बात बाप ही बच्चों को बैठ समझाते हैं। अपनी अवस्था को अच्छी रीति जमाते रहो। नहीं तो ऊंच पद नहीं पायेंगे। तुम बच्चे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार मेहनत करते हो। समझते हो अभी तो हम किनारे पर खड़े हैं। फिर पिछाड़ी में हम क्यों देखें? आगे कदम बढ़ते रहते हैं। इसमें अन्तर्मुखता बहुत चाहिए, इसलिए कछुए का भी मिसाल है। यह मिसाल आदि सब तुम्हारे लिए हैं।

तुमको बाप आकर नॉलेज पढ़ाते हैं। खुद कहते हैं मैं आता हूँ रावण राज्य में। माया ने तुमको कितना पत्थरबुद्धि बना दिया है। अब फिर बाप तुमको पारसबुद्धि बनाते हैं। उतरती कला में तुम पत्थरबुद्धि बन गये। अब फिर बाप चढ़ती कला में ले जाते हैं, नम्बरवार तो होते हैं ना। हर एक को अपने पुरूषार्थ से समझना है। मुख्य बात है याद की। रात को जब सोते हो तो भी यह ख्याल करो। बाबा हम आपकी याद में सो जाते हैं। गोया हम इस शरीर को छोड़ देते हैं। आपके पास आ जाते हैं। ऐसे बाबा को याद करते-करते सो जाओ तो फिर देखो कितना मज़ा आता है। हो सकता है साक्षात्कार भी हो जाए। परन्तु इस साक्षात्कार आदि में खुश नहीं होना है। बाबा हम तो आपको ही याद करते हैं। आपके पास आने चाहते हैं। बाप को तुम याद करते-करते बड़े आराम से चले जायेंगे। हो सकता है सूक्ष्मवतन में भी चले जाओ। मूलवतन में तो जा नहीं सकेंगे। अभी वापिस जाने का समय कहाँ आया है। हाँ, साक्षात्कार हुआ बिन्दी का फिर छोटी-छोटी आत्माओं का झाड़ दिखाई पड़ेगा। जैसे तुमको बैकुण्ठ का साक्षात्कार होता है ना। ऐसे नहीं, साक्षात्कार हुआ तो तुम बैकुण्ठ में चले जायेंगे। नहीं, उसके लिए तो फिर मेहनत करनी पड़े। तुमको समझाया जाता है तुम पहले-पहले जायेंगे स्वीट होम। सब आत्माएं पार्ट बजाने से मुक्त हो जायेंगी। जब तक आत्मा पवित्र नहीं बनी है तब तक जा न सके।

बाप ने समझाया है-रात्रि को सोते समय बाबा को याद करते, चक्र को बुद्धि में याद करते रहो। बाबा हम अब इस शरीर को छोड़ आपके पास आते हैं। ऐसे याद करते-करते सो जाओ फिर देखो क्या होता है। आगे कब्रिस्तान बनाते थे फिर कोई शान्त में चले जाते थे, कोई रास करने लगते थे। जो बाप को जानते ही नहीं, तो वह याद कैसे कर सकेंगे। मनुष्य-मात्र बाप को जानते ही नहीं तो बाप को याद कैसे करें, तब बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोई भी नहीं जानते।

बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोई विरला ही समझते हैं। वह भी तुम नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हो जो अच्छे पुरुषार्थी हैं उनको बड़ा अच्छा नशा रहता है। याद के पुरुषार्थी को रीयल नशा चढ़ेगा। 84 के चक्र की नॉलेज समझाने में इतना नशा नहीं चढ़ता जितना याद की यात्रा में चढ़ता है। मूल बात है ही पावन बनने की।

तुम समझते हो कि विनाश काले प्रीत बुद्धि हमारी ही है। बाप को हम बहुत याद करते हैं। बाप को याद करते-करते प्रेम में आंसू आ जाते हैं। बाबा, आप हमें आधाकल्प के लिए सब दु:खों से दूर कर देते हो। और कोई गुरू वा मित्र-सम्बन्धी आदि किसको भी याद करने की दरकार नहीं। एक बाप को ही याद करो। सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। बाबा आपकी तो बड़ी कमाल है। हर 5 हज़ार वर्ष बाद हमें आप जगाते हो। सभी मनुष्य मात्र कुम्भकरण की आसुरी नींद में सोये हुए हैं अर्थात् अज्ञान अन्धेरे में हैं। अभी तुम समझते हो - भारत का प्राचीन योग तो यह है, बाकी जो भी इतने हठयोग आदि सिखलाते हैं, वह सभी हैं - एक्सरसाइज़, शरीर को तन्दरूस्त रखने के लिए। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है तो खुशी रहती है। यहाँ आते हो,

समझते हो बाबा रिफ्रेश करते हैं। कोई तो यहाँ रिफ्रेश हो बाहर निकलते हैं, वह नशा खलास हो जाता है। नम्बरवार तो हैं ना। बाबा समझाते हैं - यह है पतित दुनिया। बुलाते भी हैं-हे पतित-पावन आओ परन्तु अपने को पतित समझते थोड़ेही हैं, इसलिए पाप धोने जाते हैं। लेकिन शरीर को थोड़ेही पाप लगता है। बाप तो आकर तुम्हें पावन बनाते हैं और कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह ज्ञान अभी तुमको मिला है। भारत स्वर्ग था, अभी नर्क है। तुम बच्चे तो अभी संगम पर हो। कोई विकार में गिरते हैं तो फेल होते हैं तो जैसे नर्क में जाकर गिर पड़ते हैं। 5 मेंजिल से गिर पड़ते हैं, फिर 100 गुणा सज़ा खानी पड़ती है। तो बाप समझाते हैं कि भारत कितना ऊंच था, अब कितना नींच है। अब तुम कितना समझदार बनते हो। मनुष्य तो कितने बेसमझ हैं। बाबा तुमको यहाँ कितना नशा चढ़ाते हैं, फिर बाहर निकलने से नशा कम हो जाता है, खुशी उड़ जाती है। स्टूडेण्ट कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो कभी नशा कम होता है क्या? पढ़कर पास होते हैं फिर क्या-क्या बन जाते हैं।

सारा मदार पढ़ाई और याद पर है। उसमें भी नम्बरवन है याद । डिफीकल्ट सब्जेक्ट पर मार्क्स जास्ती मिलती हैं। उनका प्रभाव भी होता है। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट सब्जेक्ट होती हैं ना। इनमें हैं दो मुख्य। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सम्पूर्ण निर्विकारी बन जायेंगे और फिर विजय माला में पिरो जायेंगे। यह है रेस। पहले तो खुद को देखना है कि मैं कहाँ तक धारणा करता हूँ? कितना याद करता हूँ? मेरे कैरेक्टर्स कैसे हैं? अगर मेरे में ही रोने की आदत है तो दूसरे को खुशमिज़ाज़ कैसे बना सकता हूँ? बाबा कहते हैं जो रोते हैं सो खोते हैं। कुछ भी हो जाए लेकिन रोने की दरकार नहीं है। बीमारी में भी खुशी से इतना तो कह सकते हो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बीमारी में ही अवस्था की परख होती है। तकलीफ में थोड़ा कुड़कने की आवाज़ भल निकलती है परन्तु अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप ने पैगाम दिया है। पैगम्बर-मैसेन्जर एक शिवबाबा है, दूसरा कोई है नहीं। बाकी जो भी सुनाते हैं, सारी

भक्ति मार्ग की बातें। इस दुनिया की जो भी चीजें हैं सब विनाशी हैं, अभी तुमको वहाँ ले जाते हैं जहाँ टूट-फूट नहीं। वहाँ तो चीजें ही ऐसी अच्छी बनेंगी जो टूटने का नाम ही नहीं होगा।

स विश्व का मालिक तुम बच्चों को बनाता हूँ। कितनी गुह्य बातें हैं। तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। फिर तुम माया के दास बन जाते हो। यहाँ जब सामने योग में बिठाते हो तो भी याद दिलानी है - आत्म-अभिमानी हो बैठो, बाप को याद करो। 5 मिनट बाद फिर बोलो। तुम्हारे योग के प्रोग्राम चलते हैं ना। बहुतों की बुद्धि बाहर चली जाती है इसलिए 5- 10 मिनट बाद फिर सावधान करना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बैठे हो? बाप को याद करते हो? तो खुद का भी अटेन्शन रहेगा। बाबा यह सब युक्तियां बतलाते हैं। घड़ी-घड़ी सावधान करो। अपने को आत्मा समझ शिवाबाबा की याद में बैठे हो? तो जिनका बुद्धियोग भटकता होगा वह खड़े हो जायेंगे। घड़ी-घड़ी यह याद दिलाना चाहिए। बाबा की याद से ही तुम उस पार चले जायेंगे। गाते भी हैं खिवैया, नईया मेरी पार लगाओ। परन्तु अर्थ को नहीं जानते। मुक्तिधाम में जाने के लिए आधाकल्प भक्ति की है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो मुक्तिधाम में चले जायेंगे। तुम बैठते ही हो पाप कटने लिए तो फिर पाप करने थोड़ेही चाहिए। नहीं तो फिर पाप रह जायेंगे। नम्बरवन यह पुरूषार्थ है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ऐसे सावधान करते रहने से अपना भी अटेन्शन रहेगा। खुद को भी सावधान करना है। खुद भी याद में बैठे तब औरों को बिठायें। हम आत्मा हैं, जाते हैं अपने घर। फिर आकर राज्य करेंगे। अपने को शरीर समझना- यह भी एक कड़ी बीमारी है इसलिए ही सब रसातल में चले गये हैं। उनको फिर सैलवेज करना है। अच्छा!

पहले तुम बेहद के आरफन थे, बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है और कोई बाप नहीं जो ऐसा सुख देता हो। नई दुनिया और पुरानी दुनिया यह सब तुम बच्चों की बुद्धि में है। परन्तु

औरों को भी यथार्थ रीति समझायें, इस ईश्वरीय धन्धे में लग जाएं। हर एक के सरकमस्टांश अपने-अपने होते हैं। समझा भी वह सकेंगे जो याद की यात्रा में होंगे। याद से बल मिलता है ना। बाप है ही - जौहरदार तलवार। तुम बच्चों को जौहर भरना है। योगबल से विश्व की बादशाही पाते हो। योग से बल मिलता है, ज्ञान से नहीं। बच्चों को समझाया है - नॉलेज सोर्स ऑफ इनकम है। योग को बल कहा जाता है। रात-दिन का फ़र्क है। अब योग अच्छा या ज्ञान अच्छा? योग ही नामीग्रामी है। योग अर्थात् बाप की याद। बाप कहते हैं इस याद से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे। इस पर ही बाप ज़ोर देते हैं। ज्ञान तो सहज है। भगवानुवाच - मैं तुमको सहज ज्ञान सुनाता हूँ। 84 के चक्र का ज्ञान सुनाता हूँ। उसमें सब आ जाता है। हिस्ट्री-जॉग्राफी है ना। ज्ञान और योग दोनों है सेकण्ड का काम। बस हम आत्मा हैं, हमको बाप को याद करना है। इसमें मेहनत है। याद की यात्रा में रहने से शरीर की जैसे विस्मृति होती जाती। घण्टा भर भी ऐसे अशरीरी होकर बैठो तो कितने पावन हो जाएं। मनुष्य रात को कोई 6, कोई 8 घण्टा नींद करते हैं तो अशरीरी हो जाते हैं ना। उस समय में कोई विकर्म नहीं होता है। आत्मा थक कर सो जाती है। ऐसे भी नहीं कोई पाप विनाश होते हैं। नहीं, वह है नींद। विकर्म कोई होता नहीं है। नींद न करे तो पाप ही करते रहेंगे। तो नींद भी एक बचाव है। सारा दिन सर्विस कर आत्मा कहती है मैं अब सोता हूँ, अशरीरी बन जाता हूँ। तुमको शरीर होते अशरीरी बनना है। हम आत्मा इस शरीर से न्यारी, शान्त स्वरूप हैं। आत्मा की महिमा कभी नहीं सुनी होगी। आत्मा सत् चित आनन्द स्वरूप है। परमात्मा की महिमा गाते हैं कि सत है, चैतन्य है। सुख-शान्ति का सागर है। अब तुमको फिर कहेंगे मास्टर, बच्चे को मास्टर भी कहते हैं। तो बाप युक्तियां भी बतलाते रहते हैं। ऐसे भी नहीं सारा दिन नींद करनी है। नहीं, तुमको तो याद में रह पापों का विनाश करना है। जितना हो सके बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं बाप हमारे ऊपर रहम वा कृपा करते हैं। नहीं, यह उनका गायन है - रहमदिल बादशाह। यह भी उनका पार्ट है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना। भक्त लोग महिमा गाते हैं - तुम्हें सिर्फ महिमा नहीं गानी है। यह गीत आदि भी

दिनप्रतिदिन बंद होते जाते हैं। स्कूल में कभी गीत होते हैं क्या? बच्चे शान्ति में बैठे रहते हैं। टीचर आता है तो उठकर खड़े होते हैं, फिर बैठते हैं। यह बाप कहते हैं मुझे तो पार्ट मिला हुआ है पढ़ाने का, सो तो पढ़ाना ही है। तुम बच्चों को उठने की दरकार नहीं। आत्मा को बैठ सुनना है। तुम्हारी बात ही सारी दुनिया से न्यारी है।

शिवबाबा कितना छोटा है, उनकी भी कितनी बड़ी प्रतिमा बना दी है। बुद्ध के चित्र, पाण्डवों के चित्र बड़े-बड़े लम्बे बनाये हैं। ऐसे तो कोई होते नहीं। तुम बच्चों को तो यह एम ऑब्जेक्ट का चित्र घर-घर में रखना चाहिए। हम पढ़कर यह बन रहे हैं। फिर रोना थोड़ेही चाहिए। जो रोते हैं वह खोते हैं। देह-अभिमान में आ जाते हैं। तुम बच्चों को आत्म-अभिमानी बनना है, इसमें ही मेहनत लगती है। आत्म-अभिमानी बनने से ही खुशी का पारा चढ़ता है। मीठा बाबा याद आता है। बाबा से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बाबा हमको इस भाग्यशाली रथ में आकर पढ़ाते हैं। रात-दिन बाबा-बाबा याद करते रहो। तुम आधाकल्प के आशिक हो। भक्त भगवान को याद करते हैं। भक्त हैं अनेक। ज्ञान में सब एक बाप को याद करते हैं। वही सबका बाप है। ज्ञान सागर बाप हमको पढ़ाते हैं, तुम बच्चों के तो रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। तूफान तो माया के आयेंगे ही। बाबा कहते हैं - सबसे जास्ती तूफान तो मुझे आते हैं क्योंकि सबसे आगे मैं हूँ। हमारे पास आते हैं तब तो मैं समझता हूँ - बच्चों के पास कितने आते होंगे। मूँझते होंगे। अनेक प्रकार के तूफान आते हैं जो अज्ञान काल में भी कभी नहीं आते होंगे, वह भी आते हैं। पहले मुझे आने चाहिए, नहीं तो मैं बच्चों को समझाऊंगा कैसे। यह है फ्रंट में। रूसतम है तो माया भी रूसतम से रूसतम होकर लड़ती है। मल्लयुद्ध में सब एक जैसे नहीं होते हैं। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड ग्रेड होती है। बाबा के पास सबसे जास्ती तूफान आते हैं, इसलिए बाबा कहते हैं इन तूफानों से डरो मत। सिर्फ कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करो। कई कहते हैं - ज्ञान में आये हैं तो यह क्यों होता है, इससे तो ज्ञान नहीं लेते तो अच्छा था। संकल्प ही नहीं आते। अरे यह तो युद्ध है ना। स्त्री के

सामने होते भी पवित्र दृष्टि रहे, समझना है शिवबाबा के बच्चे हम भाई-भाई हैं फिर प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान होने से भाई-बहन हो गये। फिर विकार कहाँ से आया। ब्राह्मण हैं ऊंच चोटी। जो ही फिर देवता बनते हैं तो हम बहन-भाई हैं।

बाबा-बाबा कहते रहो तो कल्याण होता रहेगा। कहते हैं शेरनी के दूध लिये सोने का बर्तन चाहिए। सोने की बुद्धि कैसे बनेगी? आत्मा में ही बुद्धि है ना। आत्मा कहती है - मेरी बुद्धि अब बाबा तरफ है। मैं बाबा को बहुत याद करता हूँ। बैठे-बैठे बुद्धि और तरफ चली जाती है ना। बुद्धि में धन्धाधोरी याद आता रहेगा। तो तुम्हारी बात जैसे सुनेंगे नहीं। मेहनत है। जितना-जितना मौत नज़दीक आता जायेगा - तुम याद में बहुत रहेंगे। मरने समय सब कहते हैं भगवान को याद करो। अब बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। तुम सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। वापिस जाना है इसलिए अब मुझे याद करो। दूसरी कोई बात नहीं सुनो। जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा तुम्हारे सिर पर है। शिवबाबा कहते हैं इस समय सब अजामिल हैं। मूल बात है याद की यात्रा जिससे तुम पावन बनेंगे फिर आपस में प्रेम भी होना चाहिए। एक-दो से राय लेनी चाहिए। बाप प्रेम का सागर है ना। तो तुम भी आपस में बहुत प्यारे होने चाहिए। देही-अभिमानी बन बाप को याद करना है। बहन-भाई का संबंध भी तोड़ना पड़ता है। भाई-बहन से भी योग नहीं रखो। एक बाप से ही योग रखो। बाप आत्माओं को कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारी विकारी दृष्टि खलास हो जाए। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना चाहिए। मन्सा में तूफान जरूर आयेंगे। यह बड़ी मंजिल है। बाबा कहते हैं देखो कर्मेन्द्रियां धोखा देती हैं तो खबरदार हो जाओ। अगर उल्टा काम कर लिया तो खलास। चढ़े तो चाखे बैकुण्ठ का मालिक........ मेहनत के सिवाए थोड़ेही कुछ होता है। बहुत मेहनत है। देह सहित देह के....... कोई-कोई को तो बन्धन नहीं है तो भी फँसे रहते हैं।

जैसे कल्प पहले बनाये हैं। बनायेंगे फिर भी वही जो कल्प पहले बनाया होगा। उस समय वह बुद्धि आ जायेगी। उसका ख्याल अब क्यों करें, इससे तो बाप की याद में रहें। याद की यात्रा को नहीं भूलो। महल तो बनेंगे ही कल्प पहले मिसल। परन्तु अभी याद की यात्रा में तोड़ निभाना है और बहुत खुशी में रहना है कि हमको बाप, टीचर, सतगुरू मिला है। इस खुशी में तो रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। तुम जानते हो हम आये ही हैं अमरपुरी का मालिक बनने। यह खुशी स्थाई रहनी चाहिए। यहाँ रहेगी तब फिर 21 जन्म वह स्थाई हो जायेगी। बहुतों को याद कराते रहेंगे तो अपनी भी याद बढ़ेगी। फिर आदत पड़ जायेगी। जानते हैं इस अपवित्र दुनिया को आग लगनी है। तुम ब्राह्मण ही हो जिनको यह ख्याल है - इतनी सारी दुनिया खत्म हो जायेगी। सतयुग में यह कुछ भी मालूम नहीं पड़ेगा। अभी अन्त है, तुम याद के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। अच्छा!

अब जितना योग में रहेंगे उतना कट उतरेगी और बाप से लव होता जायेगा, खुशी भी होगी। बाबा साफ कहते हैं-बच्चे, चार्ट रखो कि सारे दिन में हम कितना समय याद करते हैं? याद की यात्रा, यह अक्षर राइट है। याद करते-करते कट निकलते-निकलते अन्त मती सो गति हो जायेगी। वह तो पण्डे लोग यात्रा पर ले जाते हैं। यहाँ तो आत्मा खुद यात्रा करती है। अपने परमधाम जाना है क्योंकि ड्रामा का चक्र अब पूरा होता है। यह भी तुम जानते हो कि यह बहुत गन्दी दुनिया है। परमात्मा को तो कोई भी नहीं जानते, न जानेंगे इसलिए कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि। उन्हों के लिए तो यह नर्क ही स्वर्ग के समान है। उन्हों की बुद्धि में यह बातें बैठ न सकें। तुम बच्चों को यह सब विचार सागर मंथन करने के लिए बहुत एकान्त चाहिए। यहाँ तो एकान्त बहुत अच्छी है इसलिए मधुबन की महिमा है। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए।

हम आत्मा जो पवित्र थी, उसमें कट लगी है। जितना बाप को याद करेंगे उतना बाप से लव जुटेगा। पढ़ाई से नहीं, याद से लव जुटेगा। रावणराज्य में सब विपरीत बुद्धि बन पड़े हैं। अब बाप से प्रीत लगानी है। तुम्हारा अन्जाम (वायदा) है मेरा तो एक दूसरा न कोई। नष्टोमोहा बनना है। बड़ी मेहनत है। यह जैसे फाँसी पर चढ़ना है। बाप को याद करना माना फाँसी पर चढ़ना। शरीर को भूल आत्मा को चले जाना है बाप की याद में। बाप की याद बहुत जरूरी है। नहीं तो कट कैसे उतरेगी? बच्चों के अन्दर में खुशी रहनी चाहिए-शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। कोई सुने तो कहेंगे यह क्या कहते हैं क्योंकि वह तो कृष्ण को भगवान समझते हैं।

बाप मीठे-मीठे बच्चों को राय देते हैं - चार्ट लिखो और एकान्त में बैठ ऐसे अपने साथ बातें करो। यह बैज तो छाती से लगा दो। भगवान की श्रीमत पर हम यह बन रहे हैं। इनको देखकर उनको प्यार करते रहो। बाबा की याद से हम यह बनते हैं। बाबा आपकी तो कमाल है, बाबा हमको आगे थोड़ेही पता था कि आप हमको विश्व का मालिक बनायेंगे। नौधा भक्ति में दर्शन के लिए गला काटने, प्राण त्यागने लग पड़ते हैं तब दर्शन होता है। ऐसे-ऐसे की ही भक्त माला बनी हुई है। भक्तों का मान भी है। कलियुग के भगत तो जैसे बादशाह हैं। अभी तुम बच्चों की बेहद के बाप से प्रीत है। एक बाप के सिवाए और कोई याद न रहे। एकदम लाइन क्लीयर होनी चाहिए। अब हमारे 84 जन्म पूरे हुए। अब हम बाप के फरमान पर पूरा चलेंगे। काम महाशत्रु है, उनसे हार नहीं खानी है। हार खाकर फिर पश्चाताप् कर क्या करेंगे? एकदम हड्डी-हड्डी टूट जाती है। बहुत कड़ी सज़ा मिल जाती है। कट उतरने बदले और ही जोर से चढ़ जाती है। योग लगेगा नहीं। याद में रहना बड़ी मेहनत है। बहुत गप भी मारते हैं-हम तो बाप की याद में रहते हैं। बाबा जानते हैं, रह नहीं सकते। इसमें माया के बड़े तूफान आते हैं। स्वप्न आदि ऐसे आयेंगे, एकदम तंग कर देंगे। ज्ञान तो बड़ा सहज है। छोटा बच्चा भी समझा लेंगे। बाकी याद की यात्रा में ही बड़ा रोला है। खुश नहीं होना चाहिए-हम बहुत सर्विस करते हैं। गुप्त सर्विस अपनी (याद की) करते रहो। इनको तो नशा रहता है - हम शिवबाबा का बच्चा अकेला हूँ। बाबा विश्व का

रचयिता है तो जरूर हम भी स्वर्ग का मालिक बनेंगे। प्रिन्स बनने वाला हूँ, यह आन्तरिक खुशी रहनी चाहिए। परन्तु जितना तुम बच्चे याद में रह सकते हो, उतना हम नहीं। बाबा को तो बहुत ख्याल करने पड़ते हैं। बच्चों को कभी ईर्ष्या भी नहीं होनी चाहिए कि बाबा बड़े आदमियों की खातिरी क्यों करते हैं। बाप हर एक बच्चे की नब्ज देख उनके कल्याण अर्थ हर एक को उस अनुसार चलाते हैं। टीचर जानता है हर एक स्टूडेण्ट को कैसे चलाना है। बच्चों को इसमें संशय नहीं लाना चाहिए। अच्छा!

मेरा ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है, जो मैं इनमें प्रवेश कर तुमको सुना रहा हूँ इसलिए इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। इनको पुरानी जुत्ती भी कहते हैं। शिवबाबा ने भी पुराना लांग बूट पहना है। बाप कहते हैं मैंने इसमें बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश किया है। पहले-पहले यह बनते हैं तत् त्वम। बाबा कहते हैं तुम तो जवान हो। मेरे से जास्ती पढ़कर ऊंच पद पाना चाहिए, परन्तु मेरे साथ बाबा है तो मुझे घड़ी-घड़ी उनकी याद आती है। बाबा मेरे साथ सोता भी है, परन्तु बाबा मुझे भाकी नहीं पहन सकते। तुमको भाकी पहनते हैं। तुम भाग्यशाली हो ना। शिवबाबा ने जो शरीर लोन लिया है तुम उनको भाकी पहन सकते हो। मैं कैसे पहनूँ! मुझे तो यह भी नसीब नहीं है इसलिए तुम लक्की सितारे गाये हुए हो। बच्चे हमेशा लक्की होते हैं।

जन्म-जन्मान्तर के पाप योगबल बिना कट नहीं सकते इसके लिए याद की यात्रा बड़ी अच्छी चाहिए। याद अच्छी रहेगी– अमृतवेले। उस समय वायुमण्डल अच्छा होता है। दिन में भल कितना समय भी बैठो, परन्तु अमृतवेले जैसा समय नहीं है। अपनी बातें गुप्त हैं। बाप कहते हैं– मुझे याद करो तो सतोप्रधान पावन बन जायेंगे, और कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। किसको गुरू नहीं बनाओ। कहा जाता है गुरू बिना घोर अन्धियारा। ढेर के ढेर गुरू हैं। परन्तु सब अन्धियारे में ले जाने वाले हैं। बाप कहते हैं– ज्ञान सूर्य जब आये तब घोर अन्धियारा दूर

हो। सन्यासी भल पावन बनते हैं परन्तु जन्म तो विकार से लेते हैं ना। देवी-देवता तो विकार से पैदा नहीं होते। यहाँ सबके शरीर मूत पलीती हैं। बाप ऐसे मूत पलीती कपड़े साफ करते हैं। आत्मा पवित्र बने फिर शरीर भी अच्छा मिले। उसके लिए पुरूषार्थ करना है। अपनी जांच रखनी है– मेरे से कोई बुरा काम तो नहीं होता है। ईश्वरीय कायदे भी कड़े हैं। कोई बुरा काम करे तो उनकी सजा बहुत कड़ी है।

बाबा तो समझते हैं बच्चे रूपये में 5 आना भी मुश्किल सीखे हैं या तो खुद पूरे योगी नहीं बने हैं तो ताकत नहीं मिलती। याद से ही ताकत मिलती है, बाबा सर्वशक्तिमान् अथॉरिटी है ना। योग हो तो शक्ति भी मिले। योग तो बहुत बच्चों का बिल्कुल कम है। सच भी कोई लिखते नहीं। याद का चार्ट नोट करें सो भी मुश्किल है। टीचर्स ही चार्ट नहीं रखती तो स्टूडेन्ट कैसे रखेंगे। बहुत स्टूडेन्ट योग में बहुत तीखे हैं। मुख्य बात है बाप को याद करना है। योग अक्षर शास्त्रों का है। मनुष्य सुनकर मूँझ जाते हैं। कहते हैं योग सिखाओ। अरे योग कोई सीखने का थोड़ेही है। सुबह सवेरे-सवेरे उठ आपेही याद करना है, इसमें टीचर की क्या दरकार है जो बैठ सिखावे इसलिये याद अक्षर ठीक है। योग सीखने की बात नहीं। यह आदत नहीं डालनी चाहिए। बाप कहते हैं– अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। अमृतवेले याद करना अच्छा है। भक्ति भी सवेरे उठकर करते हैं। यह भी तो बाप को याद करता है। याद क्यों करते हैं? क्योंकि बाप से वर्सा मिलना है। भल भक्ति मार्ग में शिव को याद करते हैं परन्तु उनको यह मालूम नहीं कि शिव से क्या मिलना है। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। अब बाप श्रीमत देते हैं कि अपना कल्याण करने के लिए मुझे याद करो। याद से ही शक्ति आती है। शक्ति से विकर्म विनाश होंगे। ज्ञान से विकर्म विनाश नहीं होंगे। ज्ञान से पद मिलेगा। पतित से पावन बनते हैं याद से। बहुत बच्चे इसमें फेल्युअर हैं। बहुत अच्छे महारथी 5 आना भी मुश्किल याद करते हैं। कोई तो एक पैसा भी याद नहीं करते, इसमें बड़ी मेहनत है। समझानी तो झट सीख जाते हैं परन्तु बेड़ा पार तब हो जब याद में रहे। तब ही जन्म-जन्मान्तर के विकर्म

विनाश हों, फिर पुण्य आत्मा बन जायेंगे। बाप को बुलाते हैं– आकर हमें पतित से पावन बनाओ। पावन तो ढेर बनते हैं परन्तु ऊंच वर्सा वह पायेंगे जो याद में अच्छी रीति रहेंगे। तुम्हारे से, जो बांधेलियाँ हैं वह जास्ती याद करती हैं। याद से ही विकर्म विनाश हो सकते हैं। तो जब कोई कहे कि पवित्र रहना इम्पासिबुल है तो फिर उनसे बात भी नहीं करनी चाहिए। निर्विकारी भारत था तो सतोप्रधान था, परन्तु साहूकारों की बुद्धि में यह ज्ञान बैठना ही मुश्किल है क्योंकि याद में ही मेहनत है। बाप कहते हैं– गृहस्थ व्यवहार में रहते उनसे भी तोड़ निभाओ। वास्तव में कायदे बहुत कड़े हैं। तुम जन्म-जन्मान्तर तो पाप आत्माओं को दान देते पाप आत्मा बनते रहे। अभी तुम पाप आत्मा को पैसा दे नहीं सकते, परन्तु दादे का वर्सा है तो देना पड़ता है इसलिए बाप कहते हैं पहले सब (लौकिक के) काम उतार फिर सरेन्डर हो जाओ। ऐसा भी कोटों में कोई निकलता है। बड़ी भारी मंजिल है। फालो फादर करना है। नष्टोमोहा होना कोई मासी का घर नहीं है, बड़ी मेहनत है। विश्व का मालिक बनना; प्राप्ति कितनी भारी है। कल्प-कल्प जो विश्व का मालिक बनें, वही फिर भी बनते हैं। ड्रामा का राज भी थोड़ों की बुद्धि में बैठता है। साहूकार तो मुश्किल उठ सकते हैं। गरीब तो झट कह देते हैं– बाबा यह सब कुछ आपका है फिर उन्हों को सर्विस भी करनी है। पावन बनने के लिए याद भी चाहिए। नहीं तो बहुत सजा खानी पड़ेगी। सजा खाई तो पद भी कम हो जायेगा। सजा खाते वह हैं जो याद नहीं करते हैं। ज्ञान कितना भी उठायें, उससे विकर्म विनाश नहीं होंगे। मोचरा खाकर फिर थोड़ा पद पाना– वह कोई वर्सा थोड़ेही है। बाप से तो पूरा वर्सा लेने के लिए बाप का आज्ञाकारी बनना चाहिए। ऊंच ते ऊंच बाप के महावाक्य सिर पर रखने चाहिए। कृष्ण की आत्मा भी इस समय वर्सा ले रही है। इन लक्ष्मी-नारायण के बहुत जन्मों के अन्त में हम फिर से उन्हों को पढ़ाकर वर्सा देते हैं। तुम्हारे में भी प्रिन्स प्रिन्सेज बनने वाले होंगे ना। रॉयल घराने वालों की चलन बहुत धैर्यवत होती है। गुप्त नशा रहता है। बाबा कितना साधारण रहता है। जानते हैं बाकी थोड़ा समय है। मेरे को तो जाकर विश्व महाराजन बनना है। यह भी पतित थे। यह तो बाबा का रथ है, तब यहाँ संदली पर बैठना

पड़ता है। नहीं तो बाबा कहाँ बैठे। यह भी तुम्हारे जैसा स्टूडेन्ट है। पढ़ते हैं। बहुत बच्चे हैं– बाप को पहचानते नहीं हैं।

हम ब्राह्मण ही शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। तुम भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। याद है बड़ी सहज। योग अक्षर सन्यासियों ने रखा है। तुम तो बाप को याद करते हो। योग तो कॉमन अक्षर है, इनको योग आश्रम भी नहीं कहेंगे। बच्चे और बाप बैठे हैं। बच्चों का फर्ज है– बेहद के बाप को याद करना। हम ब्राह्मण हैं, दादे से वर्सा लेते हैं ब्रह्मा द्वारा इसलिए शिवबाबा कहते हैं– जितना हो सके याद करते रहो। चित्र भी भल याद रखो। याद तो रहेगी, हम ब्राह्मण हैं, बाप से वर्सा लेते हैं। ब्राह्मण कब अपनी जाति को भूलते हैं क्या? तुम शूद्रों के संग में आने से ब्राह्मणपना भूल जाते हो। ब्राह्मण तो देवताओं से भी ऊंच हैं क्योंकि तुम ब्राह्मण नॉलेजफुल हो। भगवान को जानी-जाननहार कहते हैं ना। इसका अर्थ यह नहीं कि सबके दिल में क्या है– वह बैठ देखता है। नहीं, उनको सृष्टि के आदि मध्य अन्त की नॉलेज है। वह बीजरूप है। बीज झाड़ के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। तो ऐसे बाप को बहुत-बहुत याद करना है। इनकी आत्मा भी उस बाप को याद करती है। वह बाप कहते हैं– यह (ब्रह्मा) भी मुझे याद करेंगे तब यह पद पायेंगे। तुम भी याद करेंगे तो पद पायेंगे। पहले-पहले तुम बिना शरीर (अशरीरी) आये थे। फिर अशरीरी बनकर वापिस जाना है। और सब देह के सम्बन्धी तुमको दु:ख देने वाले हैं, उनको क्यों याद करते हो! जबकि मैं तुमको मिला हूँ। मैं तुमको नई दुनिया में ले जाने आया हूँ। वहाँ कोई दु:ख नहीं। वह है दैवी सम्बन्ध। यहाँ पहले दु:ख होता है– स्त्री और पुरूष के सम्बन्ध में, क्योंकि विकारी बनते हैं। तुमको मैं अब उस दुनिया के लायक बनाता हूँ, जहाँ विकार की बात ही नहीं रहती। यह काम महाशत्रु गाया हुआ है, जो आदि मध्य अन्त दु:ख देते हैं। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि यह आदि मध्य अन्त दु:ख देते हैं। नहीं, काम को जीतना है, वही आदि मध्य अन्त दु:ख देते हैं।

सतोप्रधान जरूर बनना है। सिर्फ तुम ब्राह्मण ही हो जिसको बाप बैठ पढ़ाते हैं। ब्राह्मणों का झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा। ब्राह्मण जो पक्के बन जायेंगे वही जाकर देवता बनेंगे। यह नया झाड़ है, माया के तूफान भी लगते हैं। सतयुग में कोई तूफान नहीं लगेगा। यहाँ माया बाबा की याद में रहने नहीं देती है। हम जानते हैं बाबा की याद से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हैं। सारा मदार है याद पर। भारत का प्राचीन योग भी मशहूर है ना। विलायत वाले चाहते हैं, प्राचीन योग आकर कोई सिखाये। अब योग दो प्रकार का है– एक हैं हठयोगी, दूसरे हैं राजयोगी। तुम हो राजयोगी। वह तो बहुत दिन से चले आते हैं। राजयोग का अब तुमको पता पड़ा है। सन्यासी क्या जानें राजयोग से। बाप ने आकर बताया है– राजयोग मैं ही आकर सिखाता हूँ, कृष्ण तो सिखला न सके। यह भारत का ही प्राचीन योग है, सिर्फ गीता में मेरे बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। कितना फर्क हो गया है। शिव जयन्ती होती है तो तुम्हारे बैकुण्ठ की भी जयन्ती होती है, जिसमें कृष्ण का राज्य है। तुम जानते हो शिवबाबा की जयन्ती है तो गीता की भी जयन्ती है, बैकुण्ठ की भी जयन्ती हो रही है। तुम पवित्र बन जायेंगे, कल्प पहले मुआफक स्थापना हो रही है तो शिवबाबा की जयन्ती सो स्वर्ग की जयन्ती, बाबा ही आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो। याद न करने से माया कुछ न कुछ विकर्म करा देती है। याद नहीं किया और लगी चमाट। याद में रहने से चमाट नहीं खायेंगे। यह बॉक्सिंग होती है। तुम जानते हो हमारा दुश्मन कोई मनुष्य नहीं है, रावण दुश्मन है। शादी करने के बाद कुमार-कुमारी भी पतित बनने से एक दो के दुश्मन बन जाते हैं। शादी में लाखों रूपये खर्च करते हैं। बाप कहते हैं– शादी है बरबादी। अब पारलौकिक बाप ने आर्डीनेन्स निकाला है कि बच्चे यह काम महाशत्रु है, इन पर जीत पहनो और पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। कोई भी पतित न बने। जन्म-जन्मान्तर तुम पतित बने हो इस विकार से, इसलिए काम महाशत्रु कहा जाता है। बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। तुमने 84 जन्म कैसे लिए हैं। अब वापिस जाना है। तुमको तो

बड़ा ही शुद्ध अहंकार होना चाहिए। हम आत्मायें बाप की मत पर चल भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। हम ही फिर स्वर्ग में राज्य करेंगे। जितनी मेहनत करेंगे उतना पद पायेंगे। चाहे राजा-रानी बनो, चाहे प्रजा बनो। राजारानी कैसे बनते हैं वह भी देख रहे हो। फालो फादर गाया जाता है। वह अब की बात है। लौकिक सम्बन्ध के लिए नहीं कहा जाता है। यह बाप मत देते हैं, मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम समझते हो हम अच्छी मत पर चलते हैं, बहुतों की सेवा करते हैं। बच्चे बाप के पास आते हैं तो शिवबाबा भी रिफ्रेश करते हैं तो यह भी रिफ्रेश करते हैं। यह भी तो सीखते हैं ना। शिवबाबा कहते हैं मैं आता हूँ सवेरे को। अच्छा फिर कोई मिलने आते हैं तो क्या यह ब्रह्मा नहीं समझायेंगे। ऐसे कहेंगे क्या कि बाबा आप आकर समझाओ मैं नहीं समझाऊंगा। यह बड़ी गुप्त गुह्य बातें हैं ना। मैं तो सबसे अच्छा समझा सकता हूँ। तुम ऐसे क्यों समझते हो कि शिवबाबा ही समझाते हैं। यह नहीं समझाते होंगे। यह भी जानते हो कल्प पहले इसने समझाया है तब तो यह पद पाया है।

सबको पूछना चाहिए– बाबा इस हालत में हमको क्या करना चाहिए! अब क्या करें? बाप स्वर्ग में तो ले जाते हैं। तुम जानते हो हम स्वर्गवासी तो बनने वाले हैं, अब हम नर्कवासी हैं। अब तुम न नर्क में हो, न स्वर्ग में हो। जो-जो ब्राह्मण बनते हैं उनका लंगर इस छी-छी दुनिया से उठ चुका। तुम कलियुगी दुनिया से किनारा अब छोड़ चुके हो। कोई ब्राह्मण तीखा जा रहा है, कोई याद की यात्रा में कम। कोई हाथ छोड़ देते हैं तो घुटका खाकर डूब मरते हैं अर्थात् फिर कलियुग में चले जाते हैं। तुम जानते हो खिवैया अब हमको ले जा रहे हैं। वह यात्रा तो अनेक प्रकार की है। तुम्हारी यात्रा एक ही है, यह बिल्कुल ही न्यारी यात्रा है। हाँ, तूफान आते हैं जो याद को तोड़ देते हैं। इस याद की यात्रा को अच्छी रीति पक्का करो, मेहनत करो। तुम कर्मयोगी हो। जितना हो सके हथ कार डे, दिल यार डे। आधाकल्प से तुम आशिक बन माशूक को याद करते आये हो। बाबा हमको यहाँ बहुत दु:ख है, अब हमको सुखधाम का मालिक बनाओ।

याद की यात्रा में रहेंगे तो तुम्हारे पाप खलास हो जायेंगे। तुमने ही स्वर्ग का वर्सा पाया था, अब गँवाया है। भारत स्वर्ग था तब कहते हैं प्राचीन भारत। भारत को बहुत मान देते हैं, सबसे बड़ा भी है, सबसे पुराना भी है। यह तो तुम जानते हो विनाश सामने खड़ा है। जो अच्छी रीति समझते हैं उन्हों के अन्दर में बहुत खुशी रहती है। प्रदर्शनी में कितने आते हैं।

बाबा कहते हैं– यह विकार दुःख देने वाले हैं। पतितों को पावन बनाना– यह मेरा काम है। कितना प्यार से समझाते हैं– खाओ, पियो सुखी रहो, यह याद रखो हम शिवबाबा के पास आये हैं, उनसे हमारी पालना होती है। अगर मित्र-सम्बन्धियों आदि की चीज पहनेंगे तो वह याद आयेंगे, पद भ्रष्ट हो जायेगा। यहाँ शिवबाबा के भण्डारे से, पतित-पावन बाप के यज्ञ से परवरिश होनी है, न कि पतित घर से। और किसी की दी हुई चीज होगी तो वह याद आयेगा। उसके लिए गायन है अन्तकाल जो स्त्री सिमरे... कितनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में रहते बुद्धि से समझना है कि यह सब खत्म हुए पड़े हैं। हमारा तो एक बाबा है। अब बाप की कभी माला सिमरी जाती है क्या? मैं तुम बच्चों को स्मृति दिलाता हूँ कि मुझे याद करो, तुमको बहुत बल मिलेगा, विकर्म विनाश होंगे, बलवान बन जायेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण बलवान हैं ना। जो बलवान् होते हैं वह राजाई पाते हैं। बाबा अपना मिसाल बताते हैं। मैंने 12 गुरू किये, गुरू ने कहा सुबह को उठकर 1000 मालायें जपो। हम कहते थे कोई और टाइम बताओ। सारा दिन धन्धा-धोरी से थक जाते हैं। जैसे तुम भी कहते हो– बाबा सवेरे उठ नहीं सकते। बाप कहते हैं– ऐसे मत कहो हम पवित्र नहीं रह सकते, याद में नहीं रह सकते। याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे। तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। यह अन्तिम जन्म है जरूर पवित्र बनो। बाप की श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो क्या पद पायेंगे। आधाकल्प से मुझे बुलाया। अब मैं कहता हूँ पावन बनकर मुझे याद करो। औरों को भी रास्ता बताते रहो, मैसेज देते रहो। बाप कहते हैं मन्मनाभव। मौत सामने खड़ा है। तुमको ही मैसेन्जर अथवा पैगम्बर

कहा जाता है। तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई मैसेन्जर बन नहीं सकता। पतित-पावन शिवबाबा आते हैं। किसमें प्रवेश करते हैं, यह भी लिखा हुआ है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। यह समझते थोड़ेही है। सूक्ष्मवतन में प्रजापिता ब्रह्मा होगा क्या? यहाँ ही पतित से पावन बनते हैं। साइलेन्स बल से स्थापना होती है, साइंस बल से विनाश।

बाबा ही विश्व का मालिक बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक, सतोप्रधान थे। फिर पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बन गये हैं। फिर बाप कहते हैं- मुझे याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कोई भी धर्म वाले हों बाप का सन्देश सबके लिए है। उनको कहते हैं गॉड फादर लिबरेटर। लिबरेट करने जरूर पतित दुनिया में आयेंगे। कलियुग अन्त में सारी दुनिया ही तमोप्रधान है, जब सतोप्रधान बनें तब नई दुनिया में जा सकें। बाकी जो वहाँ नहीं आते वह शान्तिधाम में रहते हैं। यह बुद्धि में बिठाना है, जो समझें तो हमको उस बाप को याद करना है। कोई देहधारी को याद नहीं करना है। बाप है ही विदेही, विचित्र और सबके चित्र भिन्न-भिन्न हैं। कोई को समझाने का शौक रहना चाहिए। प्रदर्शनी में बहुत लोग आते हैं। सेन्टर पर इतने नहीं आते हैं। सर्विस में रहने से बच्चों को बहुत हुल्लास रहेगा। यहाँ बाप को घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। सर्विस में रहेंगे तो याद की यात्रा भूलेंगे नहीं। खुद याद करेंगे औरों को भी याद करायेंगे। तुम बच्चे पढ़ रहे हो। तुम्हारी बुद्धि में है हम राजाई जरूर लेंगे। यह याद रहने से भी खुशी रहती है। भूल जाने से घबराहट आती है। बाबा को लिखना चाहिए कि बाबा हम अतीन्द्रिय सुख में है। बाकी थोड़ा समय है हम चलें अपने सुखधाम। 63 जन्म हम बहुत बीमार रहे। कोई दवाई न्हीं हुई तो नासूर बन गया। कोई की सम्भाल मिल न सकी, बीमारी अन्दर घर कर गई। यह बीमारी ऐसी है जो सिवाए अविनाशी सर्जन के कभी छूट नहीं सकती। अभी सबके छूटने का टाइम है। पवित्र बन मुक्तिधाम में चले जायेंगे। कोई कहते हैं मुक्ति में रहना अच्छा है। पार्ट ही नहीं। जैसे नाटक में किसने थोड़ा पार्ट कर लिया तो उनको हीरो हीरोइन अथवा ऊंचा पार्टधारी नहीं कहेंगे। बाप समझाते हैं जितना हो सके बाप को याद करो तो पक्के हो जाओ। याद भूलनी

नहीं चाहिए। मुख्य है एक बाप। बाकी यह छोटे-छोटे चित्र हैं– समझाने के लिए, इनसे सिद्ध करना है शिव-शंकर एक नहीं। बाकी सूक्ष्मवतन में कोई बात होती नहीं। अभी तुम समझते हो यह सब है भक्ति मार्ग, ज्ञान देने वाला है एक बाप। वह देते हैं संगम पर, यह पक्का करो। भारतवासियों को तो कल्प-कल्प स्वर्ग का वर्सा मिलता ही है। 5 हजार वर्ष की बात है। वह फिर लाखों वर्ष कह देते हैं। वह कहते सिर्फ कलियुग लाखों वर्ष का है और हम कहते यह सारा चक्र ही 5 हजार वर्ष का है।

बाबा के पास आते हैं तो बाप इशारा करते हैं सर्विस करो। जो तुमको खिलाते हैं उनकी सर्विस जरूर करनी चाहिए। सेवा करना बाप सिखलाते हैं। देखो, ऊंचे ते ऊंचा बाप भी कितनी सेवा करते हैं। जो काम अज्ञान में नहीं किया, वह भी करना पड़े। इतना निरहंकारी बनना है। कायदे के विरूद्ध कोई काम नहीं करना है। जितना हो सके औरों के कल्याण अर्थ सब कुछ हाथों से करना पड़े। लाचारी हालत में कुछ कराया वह और बात है। अपने को निरहंकारी, निर्मोही बनाना है। बाबा की याद बिगर किसका कल्याण हो न सके। जितना याद करेंगे उतना पावन बनेंगे। याद में ही विघ्न पड़ते हैं। ज्ञान में इतने विघ्न नहीं पड़ते, ज्ञान की तो अनेक प्वाइंट हैं। बाप को याद करने से खुशबूदार फूल बनेंगे। कम याद करेंगे तो रतन-ज्योत बनेंगे। अक के भी फूल होते हैं। तो अपने को खुशबूदार फूल बनाना चाहिए। कोई बदबू नहीं होनी चाहिए। आत्मा को खुशबूदार बनना है। फर्स्ट फ्लोर मूलवतन, सेकेण्ड फ्लोर सूक्ष्मवतन। थर्ड फ्लोर है यह साकारी दुनिया। अगर इन फ्लोर्स की भी बच्चों को याद रहे तो पहले बाबा जरूर याद पड़े।

एक तो शिवबाबा को जपते हैं दूसरा ब्रह्मा बाबा को तीसरा फिर कुमारका, गंगे, मनोहर को जपेंगे। भक्ति मार्ग में हाथ में माला फेरते हैं। अब मुख से नाम जपते हैं। फलानी बहुत सर्विसएबुल है। निरहंकारी है, मीठी है। देह-अभिमान नहीं है। कहते हैं ना– घुर त घुराय..(स्नेह

दो तो स्नेह मिलेगा) अब बाप कहते हैं तुम दु:खी बने हो। तुम मुझे याद करेंगे तो मैं भी मदद करूँगा। तुम नफरत करेंगे तो यह तो गोया अपने ऊपर नफरत करते हैं, पद नहीं मिलेगा। धन कितना अथाह मिलता है। किसको लॉटरी मिलती है तो कितना खुशी होती है। उनमें भी कितने इनाम आते हैं। फिर सेकेण्ड प्राइज, थर्ड प्राइज भी होती है। यह भी ईश्वरीय रेस है। ज्ञान और योग की रेस है, जो उनमें तीखे जायेंगे वही गले का हार बनेंगे और तख्त पर नजदीक बैठेंगे। तुम सब हो कर्मयोगी। अपने घर को भी सम्भालो। क्लास में एक घण्टा पढ़ना है। फिर घर में जाकर रिवाइज करना है। स्कूल में भी ऐसे करते हैं ना। पढ़कर फिर घर में जाकर रिवाइज करते हैं। बाप कहते हैं एक घड़ी आधी घड़ी.. दिन में 8 घड़ी होती हैं। उनमें भी बाप कहते हैं एक घड़ी, अच्छा आधी घड़ी, 15-20 मिनट भी क्लास में पढ़कर धारणा कर फिर धन्धेधोरी में चक्र लगाओ। आगे तुमको बाबा बिठाते थे तो बाप की याद में बैठो। स्वदर्शन चक्र फिराओ। याद का ज्ञान तो था ना। बाप और वर्से को याद करते, स्वदर्शन चक्र फिराते जब देखो नींद आती है तो सो जाओ। फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। फिर सवेरे उठेंगे तो वही प्वाइंट्स याद आती रहेंगी। ऐसे अभ्यास करते-करते तुम नींद को जीतने वाले बन जायेंगे। जो करेगा सो पायेगा। करने वाले का देखने में आता है, चलन प्रसिद्ध होती है। देखा जाता है यह विचार सागर मंथन करते हैं। धारणा करते हैं। कोई लोभ आदि तो नहीं है। यह शरीर पुराना है, इनका भी बहुत ख्याल नहीं करना है। यह ठीक भी तब रहेगा जब ज्ञान योग की पूरी धारणा होगी। धारणा नहीं होगी तो शरीर और सड़ता जायेगा। सड़ते-सड़ते बिल्कुल ही कब्रदाखिल हो जायेगा। नया शरीर फिर भविष्य में मिलना है। आत्मा को पवित्र बनाना है। यह तो पुराना मूत पलीती शरीर है। इनको कितना भी पाउडर लगाओ तो भी वर्थ नाट ए पेनी है। अब तुम सबकी सगाई शिवबाबा से है। जब शादी होती है तो उस दिन पुराने कपड़े पहनते हैं। अब इस शरीर का स्थूल श्रंगार ज्यादा नहीं करना है। ज्ञान योग से अपने को सजायेंगे तो परियाँ बन जायेंगे। यह है ज्ञान मान सरोवर। इसमें ज्ञान की डुबकी मारते रहो तो तुम स्वर्ग की परियां बन जायेंगे। प्रजा को परी नहीं कहेंगे। कहते हैं कृष्ण ने भगाया फिर महारानी, पटरानी बनाया। ऐसे तो नहीं कहेंगे

भगाकर प्रजा में चण्डाल बनाया। भगाया पटरानी बनाने के लिए। तुमको भी ऐसा पुरूषार्थ करना चाहिए। ऐसे नहीं जो मिला। यह है पाठशाला। यहाँ मुख्य है पढ़ाई। गीता पाठशाला बहुत बनाते हैं। बैठकर गीता सुनाते हैं, कण्ठ कराते हैं।

तुम पहले-पहले पावन थे, गोल्डन एज में थे। फिर 84 जन्म लेते-लेते आइरन एज में तमोप्रधान बन गये हो। अब तुमको सतोप्रधान बनना है इसलिए मुझे याद करो। सो भी अजपा। जैसे कन्या की जब शादी होती है तो क्या जाप करती है? याद में रहती है। तुम भी सब पत्नियाँ हो, यह शिवबाबा पतियों का पति है। तुम्हारी सगाई हुई है परमात्मा के साथ। सगाई जब हो गई तो बस याद बुद्धि में बैठ गई। खातिरी हो गई कि हमने सगाई कर ली। फिर एक दो को याद करते रहते हैं। तुमको भी बाप कहते हैं निश्चय बुद्धि हो गये कि हम एक बाप के बच्चे आपस में भाई-भाई हैं। भाइयों को वर्सा मिलता है– एक बाप से, इसलिए बाप को पुकारते हैं। भल मनुष्य तन में आकर भाई-बहन बन जाते हैं। परन्तु पुकारती आत्मा है ना। भाई- भाई पुकारते हैं हे पतित-पावन बाबा आओ। बाबा कहते हैं– मुझे याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। पावन को सतोप्रधान, पतित को तमोप्रधान कहा जाता है। यह बातें बाबा संगम पर ही समझाते हैं। यह है गीता पाठशाला। इस पाठशाला में बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं, नर से नारायण बनाते हैं। वहाँ टीचर तो सामने बैठ पढ़ाते हैं, दिखाई पड़ता है। यह है गुप्त। तो इस टीचर को भी बुद्धियोग से समझना पड़ता है। वह निराकार पतित-पावन बाप है। वही स्मृति दिलाते हैं कि कल्प पहले भी मैंने तुमको राजयोग सिखाया था। तब कहा जाता है मनमनाभव, पवित्र बनो तो यह लक्ष्मी-नारायण बन जायेंगे। इसमें घण्टा-घड़ियाल आदि बजाने की दरकार ही नहीं। बाप खुद आकर जगाते हैं। मनमनाभव का अर्थ है साइलेन्स। अपने को आत्मा निश्चय करो। बस! अब हमको अपने घर जाना है। बाप को ही सब कहते हैं कि हमको दु:ख से छुड़ाए मुक्त करो। सन्यासी लोग सिर्फ ब्रह्म को याद करते हैं। अब ब्रह्म तत्व तो है घर। वह घर को याद करेंगे, यहाँ बाप को याद करना है। सिर्फ घर को याद करेंगे तो जैसे सन्यासी हो जायेंगे। ब्रह्म

तो भगवान है नहीं। बाप बैठ समझाते हैं– मुझे याद करो तो तुम निर्वाणधाम में चले जायेंगे। फिर वहाँ से आयेंगे स्वर्ग में। यहाँ से मैं तुम बच्चों को साथ ले जाऊंगा। तुमको मालूम है टिडिड्यों का झुण्ड कितना बड़ा होता है। सबकी युनिटी होती है। पहले आगे वाला बैठा तो सब बैठ जायेंगे। मधुमक्खियाँ भी ऐसी होती हैं। रानी ने घर छोड़ा तो सब भागेंगी उनके पिछाड़ी। वह जैसे उन्हों का साजन हुआ। उनमें फिर सजनी ही राज्य करती है हमजिन्स पर। शास्त्रों में भी है आत्मायें सब मच्छरों सदृश्य भागती हैं।

अब सूर्यवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। जिनको बाबा की याद रहती है, वही खुशी में रहते हैं। सिर्फ यह भी याद रहे कि बाप द्वारा क्या वर्सा ले रहे हैं, तो भी बहुत फायदा है। धारण कर फिर आपसमान बनाना है। बच्चों से सर्विस पहुँचती नहीं है। थोड़ी सर्विस की तो समझते हैं हम पास हो गये। देह-अभिमान में आकर गिर पड़ते हैं। अगर बाबा (ब्रह्मा) की बेअदबी की तो शिवबाबा कहते हैं– गोया मेरी बेअदबी की। बापदादा दोनों इकट्ठे हैं ना। ऐसे नहीं हमारा तो शिवबाबा से कनेक्शन है, अरे वर्सा तो इन द्वारा मिलेगा ना। इनको दिल का समाचार सुनाना है। राय लेनी है। शिवबाबा कहते हैं हम साकार द्वारा राय देंगे। ब्रह्मा के बिना शिवबाबा से वर्सा कैसे लेंगे। बाप के बिना कुछ काम हो न सके इसलिए बच्चों को बहुत-बहुत सम्भाल रखनी है। उल्टे अहंकार में आकर अपनी बरबादी कर देते हैं।

तुम जानते हो नर्कवासियों का विनाश, स्वर्गवासियों की स्थापना हो रही है। कल्प-कल्प ऐसा ही होता है। अभी जो थोड़ा बहुत टाइम है, इसमें भी बहुतों को समझानी मिलती जायेगी। मेले होते रहेंगे। सब तरफ से लिखते रहते हैं हम मेला करें, प्रदर्शनी करें। परन्तु साथ-साथ अपनी याद की यात्रा भी भूलनी नहीं चाहिए। बच्चे बिल्कुल ही ठण्डे चल रहे हैं। यात्रा ऐसे करते हैं जैसे बूढ़े। जैसे ताकत ही नहीं, कुछ खाया ही नहीं है। बाबा का कितना ख्याल चलता रहता है।

ख्यालात करते-करते नींद ही फिट जाती है। विचार सागर मंथन तो सबको करना चाहिए ना। बच्चे जानते हैं हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। तो बच्चों को कितना अपार खुशी होनी चाहिए। इस पढ़ाई से हम विश्व के मालिक बनते हैं। कोई-कोई की तो चलन ऐसी है – जैसे केकड़े हैं। केकड़ों को बाप देवता बनाते हैं। फिर भी चलन मुश्किल किसकी सुधरती है। इस सीढ़ी के चित्र में बड़ी अच्छी नॉलेज है। परन्तु बच्चे इतना काम नहीं करते। यात्रा ही नहीं करते। बाप को याद करें तो बुद्धि का ताला भी खुलता जाए। गोल्डन बुद्धि बनती जाए। तुम बच्चों की पारसबुद्धि होनी चाहिए, बहुतों का कल्याण करना चाहिए। तुम सतोप्रधान से अब तमोप्रधान बने हो, फिर सतोप्रधान बनना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। कृष्ण को भगवान नहीं कहा जा सकता। उनको तो कहते हैं सावंरा-श्याम। बाप ने सांवरे की आत्मा को बैठ फिर समझाया है। यह आत्मा जानती है कि बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं तो खुशी में कितना दिमाग पुर होना चाहिए। इसमें घमन्ड की कोई बात नहीं। बाप कितना निरहंकारी है। बुद्धि में कितनी खुशी रहती है।

राम वर्सा देते, रावण श्राप देते हैं। ज्ञान अर्थात् दिन पूरा हो रात हो जाती है। दिन में सिर्फ सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी। यह बातें नटशेल में समझाने की बहुत सहज हैं। पहले-पहले ऊंचे ते ऊंच बाप का परिचय दे पक्का कराना चाहिए। मूल बात ही यह है। सतयुग में देवी-देवता घराना था। सतोप्रधान थे फिर सतो-रजो-तमो में आये। यह है चक्र। एक ही चीज कायम नहीं रह सकती। तुम बच्चों की बुद्धि में यही याद रहे कि ऊंचे ते ऊंच बाप को याद करना है। इस याद में बहुत कच्चे हैं। बाबा भी अपना अनुभव बताते हैं तो याद ही घड़ी-घड़ी भूल जाती है क्योंकि इनको बहुत ख्यालात रहते हैं। तब तो कहा जाता है जिनके मत्थे मामला, वह याद में कैसे रह सकें। बाबा का सारा दिन ख्यालात चलता रहता है। कितनी बातें सामने आती हैं। बाबा को सुबह उठकर बैठने में जास्ती मजा आता है। नशा भी रहता है। बस, यह स्थापना होने के बाद हम विश्व का महाराजा बनूँगा फिर से। जैसे बाबा अपना अनुभव बताते हैं कि पहली-पहली

मुख्य बात है– बाप का परिचय। और जो भी बातें कोई कहे बोलो, इससे कोई फायदा नहीं। हम तुमको परिचय देते हैं ऊंचे ते ऊंच बाप का।

हम ही स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं। यह अन्दर में सुमिरण करना है। जैसे स्कूल में स्टूडेन्ट की बुद्धि में रहता है कि हम बैरिस्टर-इन्जीनियर आदि बनने के लिए पढ़ रहे हैं। तुमको इतना भी याद रहता है वा भूल जाते हो? तुम ऊंच ते ऊंच भगवान के स्टूडेन्ट हो। तुमको ऊंच ते ऊंच देवता बनाने के लिए बाप पढ़ा रहे हैं, तुम उनके बच्चे हो। आत्मायें इस शरीर द्वारा अपने भविष्य मर्तबे को याद कर रही हैं या शरीर के सम्बन्धी, जिस्मानी मिलकियत, धन्धा-धोरी याद करती हैं? यहाँ जब आते हो तो यह समझना चाहिए कि हमको बेहद का बाप पढ़ाने आता है– बेहद का मालिक बनाने। फिर राजा-रानी बनो या प्रजा! मालिक तो बनते हैं ना। नई दुनिया में है ही सूर्यवंशी घराना। यह तो समझते हो ना कि हम अपनी राजाई करेंगे। बाबा जानते हैं कि बच्चों को बाहर रहते, घरबार, खेती-बाड़ी में रहते इतनी बाबा की याद नहीं रह सकती। तो यहाँ जब आते हो तो सब ख्यालात छोड़कर आओ। तुम अभी उस कलियुगी दुनिया में हो ही नहीं, अब तुम संगम पर हो। कलियुग को छोड़ दिया है, बाहर में कलियुग है। मधुबन जो खास है, यह है संगम इसलिए मधुबन का गायन है। यहाँ इस मुरली का ही सिमरण करना है। जो सुनते हो वह रिपीट करो और विचार सागर मंथन करो। जितना समय मिले चित्रों के आगे आकर बैठ जाओ। इन्हों को देखते और पढ़ते रहो। ब्राह्मणियाँ जो ले आती हैं उन पर बहुत जिम्मेवारी है। बहुत ओना रखना चाहिए। जैसे टीचर्स को ओना रहता है– हमारे स्कूल से अगर कम पास होंगे तो इज्जत जायेगी। जब स्कूल से बहुत पास होते हैं तो वह टीचर अच्छा माना जाता है। ब्राह्मणियों को स्टूडेन्ट पर ध्यान देना चाहिए। यहाँ तुम जैसे संगम पर आये हो, जहाँ डायरेक्ट बाबा सुनाते हैं। यहाँ का प्रभाव बहुत अच्छा है। अगर यहाँ घरघाट, धन्धा याद पड़ा तो बाबा समझेंगे यह साधारण प्रजा बनेगा। आये थे राजा बनने के लिए परन्तु.... नहीं तो बच्चों को अन्दर में बहुत

खुशी होनी चाहिए। चित्र भी तुमको बहुत मदद करते हैं। लोग अष्ट देवताओं के और गुरूओं के चित्र घर में रखते हैं, याद के लिए। परन्तु उन्हों को याद करने से मिलता कुछ भी नहीं। भक्ति मार्ग में जो कुछ करते, नीचे ही उतरते आये हो। तुम बच्चों को ऊंच जाने का पुरूषार्थ करना है। घर में शिवबाबा का चित्र रख दो तो घड़ी-घड़ी याद आयेगी। पहले तुम हनूमान को, कृष्ण को, राम को याद करते थे। अब शिवबाबा सम्मुख कहते हैं कि मुझे याद करो। त्रिमूर्ति का चित्र बड़ा अच्छा है, यह चित्र सदैव पॉकेट में रख दो। घड़ी-घड़ी देखते रहो तो याद रहेगी। बाबा भगत था तो लक्ष्मी-नारायण का फोटो पॉकेट में रखता था। गद्दी के नीचे साथ-साथ रखता था, उनसे मिला कुछ नहीं। अब बाबा से बहुत प्राप्ति हो रही है, उनको ही याद करना है, इसमें माया सामना करती है। ज्ञान तो भल बहुत सुनते सुनाते हैं, इसमें तीखे जाते हैं, ऐसे नहीं कहते कि 84 का चक्र भूल जाता है। ऐसे भी नहीं यहाँ रहने वाले जास्ती याद करते हैं। नहीं, यहाँ रहते भी कई हैं जो धूलछांई को याद करते रहते हैं। जिस बाप से हम गोरे बनने आये हैं उनको जानते ही नहीं। माया का परछाया बहुत पड़ जाता है। मूल बात है याद की। बाबा जानते हैं बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे भी याद में नहीं रहते हैं। योग में रहने से ही देह-अभिमान कम होगा, बहुत मीठे रहेंगे। देह-अभिमान होने से मीठे नहीं बनते, बिगड़ते रहते हैं। बाबा सबके लिए नहीं कहते। कोई सपूत भी हैं, सपूत उनको समझा जाता है जो योग में रहते हैं। उनसे कोई भी उल्टी-सुल्टी बात नहीं होगी। मित्र सम्बन्धी आदि सबको भूल जायेंगे। हम नंगे (अशरीरी) आये थे, अब अशरीरी बन घर जाना है। अभी तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है जिससे तुम अपने घर को जानते हो, राजधानी को भी जानते हो। यह भी तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा कोई काला लिंग नहीं है। जैसे वह दिखाते हैं, वह तो बिन्दी मिसल है। यह भी हम जानते हैं। अभी हम घर जायेंगे, वहाँ हम अशरीरी रहते हैं। अब हमको अशरीरी बनना है। अपने को आत्मा समझ पतित-पावन बाप को याद करना है। यह तो समझाया जाता है आत्मा अविनाशी है। उसमें 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है, उसका अन्त होता नहीं। थोड़ा समय मुक्तिधाम में जाकर फिर पार्ट में आना

है। तुम ऑलराउन्ड पार्ट बजाते हो, यह सदैव याद रहना चाहिए। अभी हमको घर जाना है। बाबा को याद करने से हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यहाँ धन्धा-धोरी को याद नहीं करना है। यहाँ तुम पूरे सगंमयुग पर हो। अभी तुम बोट में बैठे हो। कोई बीच में उतर जाते हैं फिर फँस मरते हैं। इस पर भी शास्त्रों में एक कहानी है। अब तुम जानते हो उस पार जा रहे हैं, खिवैया शिवबाबा है। कृष्ण को खिवैया वा बागवान नहीं कहेंगे। शिव भगवानुवाच है। पतित-पावन शिवबाबा है। कृष्ण की तरफ बुद्धि जा न सके। मनुष्यों की बुद्धि तो भटकती रहती है, बाबा आकर भटकने से छुड़ाते हैं। सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करो तब ही तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह बातें भूलनी नहीं चाहिए। यहाँ से तुम बहुत रिफ्रेश होकर जाते हो। अनुभव भी सुनाते हो, बाबा, हम फिर वैसे के वैसे हो जाते हैं। मित्र सम्बन्धी आदि का मुँह देखते हैं, लुभायमान हो जाते हैं। तुम बच्चे आशिक हो, काम काज करते माशूक को याद करो तब ऊंच पद पायेंगे। अगर अभी पुरूषार्थ नहीं करेंगे तो सिंगल ताज भी नहीं मिलेगा। यहाँ बच्चे जब आते हैं तो टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। और तो कुछ यहाँ है नहीं। सिर्फ देलवाड़ा मन्दिर तुम्हारा याद गार है, वह तुम देख सकते हो। ऊपर में बैकुण्ठ खड़ा है। झाड़ भी तुम्हारा क्लीयर है। नीचे राजयोग में बैठे हो, ऊपर राजाई खड़ी है। हूबहू जैसे दिलवाला मन्दिर बना हुआ है। तुम जानते हो शिवबाबा हमको फिर से ज्ञान देकर स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं। इस कलियुग का विनाश होना है। यह आदि देव, आदि नाथ कौन हैं। तुम सबके आक्यूपेशन को जानते हो ना। इस समय की चर्चा फिर भक्ति मार्ग में चलती है। त्योहार, व्रत सब इस समय के हैं। सच्चा व्रत है मन्मनाभव। बाकी निरजल रखना, खाना नहीं खाना यह कोई व्रत नहीं है। इस समय दुनिया में माया का पाम्प बहुत है। पहले यह बिजली, गैस आदि नहीं थी फिर निकली है। 100 वर्ष हुए हैं, इसमें मनुष्य फँस मरे हैं। कहते हैं हमारे लिए स्वर्ग यहाँ ही है। माया का इतना जोर है जो बाप को बिल्कुल ही याद नहीं करते हैं, कहते हैं तुम चलकर देखो– हम कैसे स्वर्ग में बैठे हैं। अब स्वर्ग के आगे तो यह कुछ भी नहीं है। कहाँ स्वर्ग, कहाँ नर्क। स्वर्ग की एक भी चीज

यहाँ हो नहीं सकती। वहाँ हर चीज सतोप्रधान होगी। गायें भी फर्स्टक्लास होंगी। तुम भी फर्स्टक्लास बनते हो तो तुम्हारा फर्नीचर, खान-पान आदि सब फर्स्टक्लास होता है। सूक्ष्मवतन में फल आदि देखकर आते हो ना। नाम ही रखते हैं शूबीरस। दुनिया वालों को यह भी मालूम नहीं कि स्वर्ग है कहाँ? वहाँ सब कुछ सतोप्रधान होता है। यह मिट्टी आदि वहाँ नहीं पड़ती। दु:ख की कोई बात ही नहीं है। परन्तु बच्चों को यह नशा अजुन चढ़ता नहीं है कि बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए यह पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। चित्र कितने क्लीयर हैं। चित्र बनने में समय तो लगता है। बाबा सब कुछ सर्विस अर्थ बनवाते ही रहते हैं। परन्तु कोई तो अपने धन्धे-धोरी में इतना फँसे हुए हैं जो बाबा को याद भी नहीं करते हैं। प्रदर्शनी के चित्रों की मैगजीन भी है, वह भी पढ़नी चाहिए। गीता के जो नियमी होते हैं, वह कहाँ भी जायेंगे तो गीता जरूर पढ़ेंगे। अब तुमको सच्ची गीता चित्रों सहित मिली है। अब अच्छी तरह मेहनत करनी चाहिए। नहीं तो ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। फिर हाय-हाय करनी पड़ेगी, जब साक्षात्कार होगा। इम्तहान पूरा हुआ फिर दूसरे क्लास में नम्बरवार बैठ जाते हैं। यहाँ भी जब साक्षात्कार हो जायेगा तो नम्बरवार रूद्र माला फिर विजय माला में जायेंगे। स्कूल में कोई बच्चे नापास होते हैं तो कितने दु:खी हो जाते हैं। तुम्हारी है कल्प कल्पान्तर की बाजी। कई बच्चे पूरी मैगजीन पढ़ते नहीं हैं। बच्चों को मैंगजीन पढ़कर सर्विस करनी चाहिए। लिखते हैं बाबा फलानी को बदली कर दो। अच्छी ब्राह्मणी भेज दो। कोई-कोई ब्राह्मणी के साथ इतना प्यार हो जाता है, ब्राह्मणी बदली होने से गिर पड़ते हैं। सेन्टर पर आना ही छोड़ देते हैं। कोई उल्टा काम हो जाए तो सच्चाई से फौरन बाबा को लिखना चाहिए तो पाप का असर कम हो जायेगा। नहीं तो वृद्धि होती जायेगी। बाबा सुधारने के लिए कहते हैं परन्तु कोई को सुधरना नहीं है तो पाप कर्म करना छोड़ते ही नहीं हैं। तकदीर में नहीं है तो बाबा को सच्चा समाचार नहीं देते हैं। बाबा के पास रिपोर्ट आने से सुधारने की कोशिश करेंगे।

- अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेगी। सतोप्रधान बनने बिगर वापिस कोई जा नहीं सकते। नहीं तो सजा खानी पड़ेगी। सजा भी आत्मा को मिलती है ना। गर्भ जेल में शरीर धारण कराए फिर सजा देते हैं। बच्चों को बहुत दु:ख भोगना पड़ता है। त्राहि-त्राहि करते हैं। कहते हैं फिर पाप नहीं करूँगा। तुम बच्चों को तो गर्भ जेल में जाना नहीं है। वहाँ गर्भ महल है क्योंकि पाप होता नहीं। यहाँ रावणराज्य में पाप होता है तब तो राम राज्य माँगते हैं।

- भक्ति मार्ग में कहते हैं हे राम... बाप कहते हैं यहाँ कोई आवाज नहीं करना है। अपने को आत्मा समझ गुप्त बाप को याद करना है। हे शिव..... भी कहना नहीं है। तुमको आवाज से परे जाना है। बच्चे को अन्दर में बाप याद रहता है। आत्मा जानती है कि यह हमारा बाबा है। तुमको अन्दर गुप्त याद करना है, इसको अजपा याद कहा जाता है। जाप नहीं करना है। माला अन्दर फेरो या बाहर फेरो। बात एक ही है। अन्दर फेरना कोई गुप्त नहीं। गुप्त बात है– अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। वह शिवबाबा यह प्रजापिता ब्रह्मा। तुमको डबल इंजन मिलती है, श्रृंगारने लिए। इनकी आत्मा भी श्रृंगार रही है।

- जब तक बाबा की याद नहीं रहती है, बाप की सर्विस नहीं करते हैं, तब तक आराम नहीं आना चाहिए। तुम्हारी लड़ाई है ही माया के साथ। रावण को भल जलाते हैं परन्तु जानते नहीं हैं कि यह है कौन। दशहरा बहुत मनाते हैं। अभी तुमको वन्डर लगता है– राम भगवान की भगवती सीता चुराई गई। फिर बन्दरों वा लश्कर लिया।

- कहते हैं– अल्फ को याद करो। बस बाकी टाइम किसमें लगाते हैं? तुम्हारे सिर पर पापों का बोझा बहुत है। वह याद से ही उतरना है, इसमें मेहनत लगती है। घड़ी-घड़ी तुम भूल जाते हो।

तुम बाबा को याद करते रहो तो कभी विघ्न नहीं पड़ेंगे। देह-अभिमानी बनने से विघ्न पड़ते हैं। देही-अभिमानी बनते हो अन्त में। फिर आधाकल्प कुछ विघ्न नहीं पड़ता। यह कितनी गुह्य बातें हैं समझने की। शुरू से लेकर कितना सुनाते आये हैं फिर भी कहते हैं सिर्फ अल्फ बे को याद करो। बस। झाड़ का है विस्तार। बीज तो छोटे से छोटा होता है। झाड़ कितना बड़ा निकलता है।

वह पढ़ाई कितनी लम्बी चौड़ी होती है। यह तो बहुत सहज है। रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को तुम जानकर औरों को बताते रहते हो। कैसे 84 का चक्र लगाया है। अभी वापिस जाना है बाप के पास। यह भी बाप ने बतलाया है– माया के तूफान बहुत आयेंगे, इनसे डरो मत। सुबह को उठकर बैठेंगे, बुद्धि और-और ख्यालातों में चली जायेगी। दो मिनट भी याद नहीं रहेगी। बाप कहते हैं थकना नहीं है। अच्छा एक मिनट याद रही फिर कल बैठना, परसों बैठना। अन्दर में यह पक्का जरूर करो कि हमें याद करना है। अगर कोई विकार में जाता होगा फिर तो बहुत तूफान आयेंगे। पवित्रता ही मुख्य है। आज यह दुनिया पतित वेश्यालय है। कल पावन शिवालय होगा। जानते हो यह पुराना शरीर है। बाप को याद करते रहेंगे तो कोई भी समय शरीर छूट जाए तो स्वर्ग में चलने लायक बन जायेंगे। बाप से कुछ न कुछ ज्ञान तो सुना है ना। ऐसे भी हैं जो यहाँ से भागन्ती हो गये हैं फिर भी आकर अपना वर्सा ले रहे हैं। यह भी समझाया है अन्त मती सो गति होगी। समझो कोई शरीर छोड़ते हैं, संस्कार ज्ञान के ले जाते हैं तो छोटेपन में ही इस तरफ उनको खींच होगी।

तुमको भारत के लिए बहुत तरस रहता है। हमारा भारत क्या था फिर रावण ने किस गति में लाया है। अब हम बाप की श्रीमत पर चल वर्सा जरूर लेंगे। अभी तुम जानते हो हम हैं संगमयुगी, बाकी सब हैं कलियुगी। हम उस पार जा रहे हैं। जो बाप की याद में अच्छी रीति रहेंगे वह ऐसे बैठे-बैठे याद करते-करते शरीर छोड़ देंगे। बस फिर आत्मा वापिस आयेगी नहीं।

बैठे-बैठे बाप की याद में गया। यहाँ हठयोग आदि की कोई बात नहीं। जैसे देखते हो ध्यान में बैठे-बैठे चले जाते हैं, वैसे तुम बैठे-बैठे यह शरीर छोड़ देंगे। सूक्ष्मवतन जाकर फिर बाप के पास चले जायेंगे। जो याद के यात्रा की बहुत मेहनत करेंगे वह ऐसे शरीर छोड़ देंगे। साक्षात्कार हो जाता है। जैसे शुरू में तुमको बहुत साक्षात्कार हुए वैसे पिछाड़ी में भी तुम बहुत देखेंगे। अच्छा–

भारत जब प्राचीन है तो सिर्फ देवी-देवतायें ही थे। बाकी सब शान्तिधाम में रहते हैं। तुम बीज और झाड़ दोनों को जानते हो। बीज ऊपर में है, जिसको वृक्षपति कहते हैं। अब तुम बाप के बने हो तो तुम्हारे ऊपर बृहस्पति की दशा बैठी हुई है। जो बाप के बनते हैं उनके ऊपर बृहस्पति की दशा कहेंगे। फिर है शुक्र की दशा, बुद्ध की दशा। बृहस्पति की दशा वाले सूर्यवंशी बनते हैं। बुद्ध की दशा वाले प्रजा में चले जाते हैं, सर्विस नहीं कर सकते। बाप को याद नहीं कर सकते हैं तो बुद्धू ठहरे, इसमें भी नम्बरवार बुद्धू बनते हैं। कोई ऊंच प्रजा कोई कम प्रजा। कहाँ साहूकार प्रजा फिर कहाँ उनके भी नौकर चाकर। सारा पढ़ाई पर मदार है। पढ़ाई भी सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी होती है। राजधानी स्थापन हो रही है। जो होशियार हैं वह बाप की याद में भी रहते हैं। सारा झाड़ बुद्धि में रहता है। पढ़ाई से ही टीचर, बैरिस्टर बनते हैं। टीचर फिर दूसरे को भी पढ़ाते हैं। पढ़ते तो सब हैं। एक ही पढ़ाई है फिर कोई तो पढ़कर ऊंच चढ़ जाते हैं, कोई फिर वहाँ ही टीचर बन जाते हैं। जो सीखे हैं वह पढ़ाते हैं। अभी तुम भी पढ़ते हो। कोई तो पढ़ते-पढ़ते टीचर बन जाते हैं। खुद कहते हैं टीचर का काम है आपसमान टीचर बनाना। टीचर नहीं बनेंगे तो औरों का कल्याण कैसे करेंगे। टाइम थोड़ा है, जब तक विनाश हो तब तक सीखते रहेंगे। फिर तो सीखना बन्द हो जायेगा। फिर बाबा 5 हजार वर्ष बाद आकर सिखलायेंगे। यह पढ़ाई कोई सैकड़ों वर्ष नहीं चलने वाली है।

बाप कितना सहज कर बताते हैं कि सिर्फ दो बातें याद करनी है– अल्फ और बे। तो तुम पवित्र भी बनेंगे, उड़ भी सकेंगे और ऊंच पद भी पायेंगे। तो यह ओना रखना चाहिए कि कैसे भी करके बाप को याद करना है। माया के तूफान भी आयेंगे, परन्तु हार नहीं खाना। भल कोई क्रोध भी करे परन्तु तुम नहीं बोलो। सन्यासी भी कहते हैं– मुख में ताबीज डाल दो, तो वह बोल-बोल कर चुप हो जायेगा। बाप भी कहते हैं- कोई क्रोध से बोले तो तुम शान्त होकर देखते रहो। कोई भी हालत में तुम्हें शिवबाबा को याद करना है। बाबा की याद से ही वर्सा भी याद आयेगा। तुम्हारे अतीन्द्रिय सुख का गायन है कि हम 21 जन्म के लिए स्वर्ग के परीजादे बनेंगे। वहाँ दु:ख का नाम भी नहीं होगा। तुम 50-60 जन्म सुख भोगते हो, सुख का हिसाब जास्ती है। सुख-दु:ख इक्वल हो तो फायदा ही क्या! तुम्हारे पास धन भी बहुत होता है। कुछ समय पहले यहाँ भी बहुत सस्ता अनाज था। राजाओं की बड़ी राजाई थी। बाबा ने 10 आने मण बाजरी बेची है। तो उनसे भी आगे कितनी सस्ताई होगी। मनुष्य थोड़े होंगे, अन्न की परवाह नहीं होगी। अब यह तो याद रहना चाहिए कि पहले हम घर जाकर फिर नई दुनिया में आकर नया पार्ट बजायेंगे। वहाँ हमारा शरीर भी सतोप्रधान तत्वों से बनेगा। अब 5 तत्व बिल्कुल ही तमोप्रधान पतित बन गये हैं। आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। वहाँ शरीर रोगी नहीं होता। यह सब समझने की बातें हैं। बच्चों को यहाँ अच्छी रीति समझाते हैं– फिर घर में जाकर भूल जाते हैं।

सारी दुनिया को रावण से छुड़ा देते हैं। तुम्हारी शक्ति सेना है, तुम भारत को स्वर्ग बना रहे हो। कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझाते हैं। फिर तुमको बाप और वर्से को याद कर कितना खुश रहना चाहिए। ज्ञान मार्ग में खुशी बहुत होती है। अभी बाबा आया हुआ है, अभी हम इस पुरानी दुनिया से गये कि गये। बाबा को याद करने से सतोप्रधान बनेंगे। नहीं तो सजायें खानी पड़ेगी, फिर करके रोटी टुकड़ा मिलेगा, इससे क्या फायदा। जितना हो सके अपना पुरूषार्थ करना है।

श्रीमत पर चलना है। कदम-कदम पर बाबा से राय लेनी है। कोई कहते हैं बाबा धन्धे में झूठ बोलना पड़ता है। बाप कहते हैं– धन्धे में तो झूठ होता ही है, तुम बाबा को याद करते रहो। ऐसे नहीं विकार में जाकर फिर कहो मैं बाबा की याद में था। नहीं, विकार में गये तो मरे। यह तो बाप के साथ प्रतिज्ञा की है ना। पवित्रता के लिए ही राखी बांधी जाती है। क्रोध के लिए कब राखी नहीं बांधी जाती। राखी बंधन का मतलब ही है कि विकार में नहीं जाना है। मनुष्य कहते हैं पतित-पावन आओ। तुम बच्चों के अन्दर में खुशी बहुत होनी चाहिए। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं, फिर बाबा साथ ले जायेंगे। वहाँ से स्वर्ग में चले जायेंगे। जितना हो सके सवेरे उठकर बाबा को याद करना है। याद करना गोया कमाई करना, इसमें आशीर्वाद क्या करेंगे। ऐसे थोड़ेही कहना है– आप आशीर्वाद करो तो हम याद करें। सब पर आशीर्वाद करें तो सब स्वर्ग में चले जायें। यहाँ तो मेहनत करनी है। जितना हो सके बाबा को याद करना है। बाबा माना वर्सा। जितना याद करेंगे उतना राजाई मिलेगी, याद से बहुत फायदा है। सस्ता सौदा है। ऐसा कोई सस्ता सौदा दे न सके। यह भी कोई विरला ही लेते

भक्ति में राम-राम जपते, माला फेरते रहते हैं। बाबा का पादरियों से भी सम्पर्क रहा है। पादरी भी बाइबिल लेकर बैठ समझाते रहते हैं। बहुत क्रिश्चियन बन जाते हैं। यहाँ माला आदि फेरने की बात नहीं। बाप कहते हैं– अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करो। शिव-शिव मुख से कहना नहीं है। हम तो आवाज से परे जाने वाले हैं। बाबा बहुत सहज युक्ति बताते हैं कि मुझे याद करो तो खाद निकल जाए और गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है। कमल फूल बड़ा नामीग्रामी है। सर्वशक्तिमान् एक बाप को ही गाया जाता है। उनके साथ योग लगाने से ही हम पवित्र बन जाते हैं तो सर्वशक्तिमान् हुआ ना। हम सबको पतित से पावन बना देते हैं। रावणराज्य से मुक्त कर देते हैं। तुम अब शिवबाबा से शक्ति ले रहे हो। जितना जास्ती याद करेंगे उतना शक्ति मिलेगी और खाद निकल जायेगी। तुमको दिन-रात यही फुरना रहना चाहिए कि पतित से पावन, तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायें। माया के तूफान आयेंगे। बाबा कहते हैं खबरदार

रहना चाहिए। तुम्हारी माया के साथ युद्ध है। फालतू विकल्प बहुत आयेंगे। जो कभी अज्ञान में नहीं आये होंगे वह भी आयेंगे। तुम युद्ध के मैदान में हो। मेहनत सारी याद की यात्रा में है। भारत का योग नामीग्रामी है। योग के लिए ही बाबा समझाते हैं कि तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ऐसे और कोई मनुष्य समझा न सके। वह कह देते हैं सब भगवान के रूप हैं। जिधर देखता हूँ– परमात्मा ही परमात्मा है। बाप समझाते हैं तुम आत्मा हो, 84 जन्म भोगते हो। अगर सब परमात्मा हैं तो क्या परमात्मा जन्म-मरण के चक्र में आते हैं? आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्मा में अच्छे बुरे संस्कार रहते हैं।

तुम्हारा भी ड्रामा में पार्ट है, इसमें बड़ाई क्या है। राज्य करते-करते पतित बन गये। तुम भी पहले क्या थे? वर्थ नाट ऐ पेनी। अब तुम विश्व के मालिक बनते हो, यह तुम्हारा पार्ट है फिर भी हमको ऐसा बनना ही है। इसमे बड़ाई की वा महिमा की कोई बात नहीं। यह ड्रामा बना हुआ है। बाबा भी आकर अपना पार्ट बजाते हैं। भगत लोग बड़ाई देते, महिमा गाते, वह काम हम नहीं कर सकते। यहाँ तो बाप को याद करना है। बाबा इस ड्रामा का राज तो बड़ा वन्डरफुल है! जो कोई को पता नहीं। बाबा हम सतयुग में यह भी भूल जायेंगे! बड़ा विचित्र ड्रामा है। ऐसे-ऐसे अपने से बातें करो। कोई पार्टधारी अच्छा पार्ट बजाते हैं तो ताली बजाते हैं। हम भी कहते हैं मीठे बाबा का, शिवबाबा का बहुत अच्छा पार्ट है। हम भी बाबा के संग अच्छा पार्ट बजाते हैं। तुम आये हो स्वर्गवासी बनने। बाबा को याद करो तो खाद निकले। तुम सब आशिक हो, अब माशूक तुमको कहते हैं– मामेकम् याद करो तो अमरपुरी के मालिक बन जायेंगे। वहाँ अकाले मृत्यु होता नहीं।

ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ ही बनाते हैं, इसलिए इनकी महिमा अपरमअपार है। इससे तुम पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनते हो, इसलिए पवित्र भोजन अच्छा है। जितना तुम ऊंच होते

जायेंगे उतना भोजन भी शुद्ध तुमको मिलेगा। योगयुक्त कोई भोजन बनाये तो बल बहुत मिल जाए, वह भी आगे चल मिलेगा। सर्विसएबुल बच्चे जो सेन्टर पर रहते हैं, वह अपने ही हाथों से भोजन बनाकर खायें तो भी उसमें बहुत बल मिल सकता है। जैसे पतिव्रता स्त्री, पति के बिगर किसी को याद नहीं करती। ऐसे तुम बच्चे भी याद में रहकर बनाओ, खाओ तो बहुत बल मिलेगा। बाबा की याद में रहने से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। बाबा राय तो देते हैं परन्तु अभी किसकी बुद्धि में नहीं आता। आगे चल हो सकता है– कहेंगे हम अपने हाथ से योगयुक्त हो भोजन बनाते हैं, तो सबका कल्याण हो जाए। बाप बच्चों को हर प्रकार की मत देते हैं ना। त्रिमूर्ति चित्र सामने रखा हो। वर्सा शिवबाबा से लेना है। कुछ न कुछ युक्ति करते रहो। बाबा अपना मिसाल देते हैं– भक्ति मार्ग में हम नारायण के चित्र को बहुत प्यार करते थे। बस उनको याद करने से आंसू आ जाते थे क्योंकि उस समय वैराग्य था। छोटेपन में वृत्ति वैराग्य की थी। यह हैं फिर बेहद की बातें। फिर भी कहते हैं मनमनाभव। योग में रहने से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। याद में रहने का फुरना रखना है। श्रीमत मिलती है, बाप कहते हैं याद करो। मैं सृष्टि का रचयिता हूँ तो तुम भी नई दुनिया के मालिक बनेंगे ना। नहीं तो सजा भी खायेंगे और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। मरने के पहले बच्चों को यह फुरना (फिक्र) रखना है कि हम सतोप्रधान कैसे बनें। बाप को याद तो जरूर करना है। यह है बड़े ते बड़ा फुरना।

रूहानी बाप आकर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचते हैं। कहते भी हैं पतित दुनिया को आकर पावन बनाओ। प्रलय तो कभी होती नहीं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होती है। पुरानी दुनिया सो फिर नई बनती है। अभी तुम पुरूषार्थ कर रहे हो नई दुनिया के लिए। यह बेहद की नॉलेज बेहद का बाप ही देते हैं। हद का वर्सा होते भी बेहद के बाप को याद करते हैं। हे भगवान कहते हैं ना। जब कोई मरते हैं तो कहते हैं– गॉड फादर को याद करो तो दो फादर सिद्ध होते हैं ना। सभी आत्मायें ब्रदर्स हैं। आत्मा ही पुकारती है हे दुःख हर्ता सुख कर्ता, हे लिबरेटर आओ, हमको घर जाने के लिए गाइड करो। हमको घर याद है परन्तु जा नहीं सकते क्योंकि माया ने पंख तोड़

डाले हैं। कोई घर वापिस जा नहीं सकते। अभी तुमको अपनी ज्योत को आपेही जगाना है। बाप को याद करने से घृत पड़ जायेगा। ज्योत एकदम बुझ नहीं सकती। कोई मरता है तो दीवा जगाते हैं। खास वहाँ एक मुकरर रखते हैं कि इसमें घृत डालते जाओ, नहीं तो अन्धियारा हो जाए। अभी तो तुमको योगबल से घृत डालना है तो घोर अन्धियारे से सोझरा, दीप माला हो जायेगी। दीपमाला सतयुग में होगी। यहाँ नहीं। उत्सव जो भी मनाये जाते हैं, उनका भी रहस्य तुमने समझा है। वह तो कुछ भी समझते नहीं। फिर भी समझाया जाता है यह राखी आदि है पवित्रता में रहने के लिए। मनुष्यों को ज्ञान का इन्जेक्शन ऐसी युक्ति से लगाना चाहिए जो फील करें कि बरोबर हम तो भ्रष्टाचारी हैं। श्रेष्ठाचारी बाप ही बनाते हैं। बाप कहते हैं– मनमनाभव– तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। युक्ति से तीर लगाना चाहिए, बात करने की ताकत चाहिए। अभी तुम सर्वशक्तिमान बाप से शक्ति पाए माया पर जीत पाते हो। फिर तुम्हें राज्य-भाग्य मिल सकता है, सिवाए बाप के और कोई जीत पहना न सके। बाप कहते हैं देखो– बच्चे तुमको क्या से क्या बनाता हूँ। अब ऐसे बाप को निरन्तर याद जरूर करना है तो विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं– मामेकम् याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। जैसा चिंतन किया जाता है वैसा बन जाते हैं, तो बाप कहते हैं मुझे याद करते-करते तुम भी बन जायेंगे। याद से विकर्म भी विनाश होंगे और अपने घर वापिस चले जायेंगे। यह नॉलेज सोर्स आफ इनकम है। हेल्थ वेल्थ है तो हैप्पी भी है। वहाँ कितनी बड़ी आयु होती है। योगेश्वर कृष्ण को नहीं कहेंगे। योगेश्वर तुम हो। ईश्वर तुमको योग सिखा रहे हैं। यह राजयोग है। योग लगाकर तुम राज्यभाग्य पाते हो। ईश्वर तुमको योग सिखाए राजाई का वर्सा देते हैं। तुमको राज्य किसने दिया? बाप ने। बाप कहते हैं- अल्फ को याद करो। बाप और वर्से को याद करो तो पाप कटते जायेंगे। यह तो बहुत सहज है। तुम्हारी बुद्धि में कितना ज्ञान है। भगवान के बच्चे मास्टर गॉड ठहरे। बाप के पास बैठ थोड़ेही जाना है। हमको तो पार्ट बजाना है, इसमें देही-अभिमानी बनना है।

अब तो विनाश ज्वाला सामने खड़ी है। फिर समझेंगे तो आप सच कहते हो बरोबर यह वही महाभारत लड़ाई है। यह नामीग्रामी है तो जरूर इस समय भगवान भी है। भगवान कैसे आता है, यह तो तुम बता सकते हो। तुम सबको बताओ कि हमको तो डायरेक्ट भगवान समझाते हैं। वह कहते हैं तुम मुझे याद करो। सतयुग में तो सभी सतोप्रधान हैं, अभी तमोप्रधान हैं। अब फिर सतोप्रधान बनो तब मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाओ। बाप कहते हैं- सिर्फ मेरी याद से ही तुम सतोप्रधान बन सतोप्रधान दुनिया का मालिक बन जायेंगे। हम रूहानी पण्डे हैं, यात्रा करते हैं– मनमनाभव की। बाप आकर ब्राह्मण धर्म, सूर्यवंशी चन्द्रवंशी धर्म स्थापन करते हैं। बाप कहते हैं– मुझे याद नहीं करेंगे तो जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा उतरेगा नहीं। यह बड़े ते बड़ा फुरना है। कर्म करते, धन्धा करते मेरे आशिक मुझ माशूक को याद करो। हर एक को अपनी पूरी सम्भाल करनी है। बाप को याद करो। कोई पतित काम नहीं करो। घर-घर में बाप का सन्देश देते रहो कि भारत स्वर्ग था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अभी नर्क है। नर्क के विनाश के लिए यह वही महाभारत लड़ाई है। अब देही-अभिमानी बनो। बाप का फरमान है– मानो व न मानो। हम तो आये हैं तुमको सन्देश सुनाने। बाप का हुक्म है– सबको सन्देश सुनाओ। बाप से पूछते हैं कौन सी सर्विस करें, बाबा कहते हैं– सन्देश देते रहो। बाप को याद करो, राजधानी को याद करो। अन्त मती सो गति हो जायेगी। मन्दिरों में जाओ, गीता पाठशालाओं में जाओ। आगे चलकर तुमको बहुत मिलते रहेंगे। तुमको उठाना है देवी-देवता धर्म वालों को। बाप समझाते हैं बहुत-बहुत मीठे बनो। खराब चलन होगी तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। कोई को दु:ख मत दो, टाइम बहुत थोड़ा है। बिलवेड बाप को याद करो, जिससे स्वर्ग की राजाई मिलती है। कोई की मुरली नहीं चलती तो सीढ़ी के आगे बैठ सिर्फ यह ख्याल करो– ऐसे-ऐसे हम जन्म लेते हैं, ऐसे चक्र फिरता रहता है.. तो आपेही वाणी खुल जायेगी। जो बात अन्दर आती है, वह बाहर जरूर निकलती है। याद करने से हम पवित्र बनेंगे और नई दुनिया में राज्य करेंगे। हमारी अब चढ़ती कला है। तो अन्दर खुशी होनी चाहिए। हम मुक्तिधाम में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे। बड़ी जबरदस्त कमाई है। धन्धाधोरी भल करो– सिर्फ बुद्धि से याद करो। याद की

आदत पड़ जानी चाहिए। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। चलन खराब होगी तो फिर धारणा नहीं होगी। किसको समझा नहीं सकेंगे। कदम आगे बढ़ाने का पुरूषार्थ करना चाहिए। पीछे नहीं आना चाहिए। प्रदर्शनी में सर्विस करने से बहुत खुशी होगी। सिर्फ बताना है कि बाप कहते हैं मुझे याद करो। देहधारियों को याद करने से विकर्म बनेंगे। वर्सा देने वाला मैं हूँ। मैं सबका बाप हूँ। मैं ही आकर तुमको मुक्तिजीवनमुक्ति में ले जाता हूँ। प्रदर्शनी मेले में सर्विस करने का बहुत शौक होना चाहिए। सर्विस में अटेन्शन देना चाहिए। आपेही बच्चों को ख्यालात आने चाहिए।

चक्र लगाते रहते हैं। सर्विस नहीं करते तो उनको रहमदिल, कल्याणकारी कुछ भी नहीं कहेंगे। बाबा को याद नहीं करते तो तुच्छ काम करते रहेंगे। पद भी तुच्छ पायेंगे। ऐसे नहीं, हमारा तो शिवबाबा से योग है। यह तो है ही बी.के.। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ही ज्ञान दे सकते हैं। सिर्फ शिवबाबा को याद करेंगे तो मुरली कैसे सुनेंगे फिर नतीजा क्या होगा? पढ़ेंगे नहीं तो पद क्या पायेंगे। यह भी जानते हैं सबकी तकदीर ऊंच नहीं बनती है। वहाँ भी तो नम्बरवार पद होंगे। पवित्र तो सबको होना है। आत्मा पवित्र बनने बिगर शान्तिधाम जा नहीं सकती।

पिछाड़ी में जब आग लगेगी तो यह सब खत्म हो जायेंगे। तुम्हारी प्रीत बुद्धि है, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। जितना प्रीत बुद्धि होगी उतना ऊंच पद पायेंगे। सवेरे उठकर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भल प्रेम के आंसू भी आयें क्योंकि बहुत समय के बाद बाप आकर मिले हैं। बाबा आप आकर हमको दु:ख से छुड़ाते हो। हम विषय सागर में गोते खाते कितना दु:खी होते आये हैं। अभी यह है रौरव नर्क।

अब पूरा पवित्र बनना है। श्रीमत मिलती है मामेकम् याद करो। कोई-कोई को तो अभी तक भी समझ में नहीं आता कि हम याद कैसे करें। मूंझ पड़ते हैं। बाप का बनकर और विकर्माजीत न

बने, पाप न कटे, याद की यात्रा में न रहे तो वह क्या पद पायेंगे। भल सरेन्डर हैं परन्तु उनसे क्या फायदा। जब तक पुण्य आत्मा बन औरों को न बनायें तब तक ऊंच पद पा नहीं सकते। जितना थोड़ा मुझे याद करेंगे, कम पद पायेंगे। डबल ताजधारी कैसे बनेंगे, फिर नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार देरी से आयेंगे। ऐसे नहीं हमने सब कुछ सरेन्डर कर दिया है इसलिए डबल सिरताज बनेंगे। नहीं। पहले दास-दासियां बनते-बनते फिर पिछाड़ी में थोड़ा मिल जायेगा। बहुतों को यह अंहकार रहता है हम तो सरेन्डर हूँ। अरे याद बिगर क्या बन सकेंगे। दास-दासी बनने से तो साहूकार प्रजा बनना अच्छा है। दास-दासी भी कोई कृष्ण के साथ थोड़ेही झूल सकेंगी। यह बहुत समझने की बातें हैं, इसमें बड़ी मेहनत करनी पड़े। थोड़े में खुश नहीं होना है। हम भी राजा बनेंगे। ऐसे तो फिर ढेर राजायें बन जायें। बाप कहते हैं पहली मुख्य है याद की यात्रा। जो अच्छी रीति याद में रहते हैं, उनको खुशी रहती है। तुम जानते हो हम आत्मा हैं, यह तो पुराना शरीर अब छोड़ना ही है। सयाने बच्चे जो बाप की याद में रहते हैं, वह तो कहते हैं बाप की याद में ही शरीर छोड़ें, फिर जाकर बाप से मिलें। कोई भी मनुष्य मात्र को यह पता नहीं है कि कैसे मिल सकते हैं। तुम बच्चों को रास्ता मिला है। अब पुरूषार्थ कर रहे हो, जीते जी मरे तो हो परन्तु जबकि आत्मा पवित्र भी बनें ना। पवित्र बन फिर यह पुराना शरीर छोड़ जाना है। समझते हैं कहाँ कर्मातीत अवस्था हो जाए तो यह शरीर छूटे परन्तु कर्मातीत अवस्था होगी तो आपेही शरीर छूट जायेगा। बस हम बाबा के पास जाकर रहें। इस पुराने शरीर से जैसे नफरत आती है। सर्प को पुरानी खाल से नफरत होती होगी ना। तुम्हारी नई खाल तैयार हो रही है। परन्तु जब कर्मातीत अवस्था हो, पिछाड़ी को तुम्हारी ऐसी अवस्था होगी। बस अभी हम जा रहे हैं। लड़ाई की भी पूरी तैयारी होगी। विनाश का सारा मदार तुम्हारी कर्मातीत अवस्था होने पर है। अन्त में कर्मातीत अवस्था को नम्बरवार सब पहुँच जायेंगे। कितना फायदा है। तुम विश्व के मालिक बनते हो तो कितना बाप को याद करना चाहिए। तुम देखेंगे कई ऐसे भी निकलेंगे जो बस उठते-बैठते बाप को याद करते रहेंगे। मौत सामने खड़ा है। अखबारों में ऐसा दिखाते हैं, जैसे कि अभी-अभी लड़ाई छिड़नी है। बड़ी लड़ाई छिड़ेगी तो बॉम्बस चल पड़ेंगे। देरी नहीं लगेगी।

सयाने बच्चे समझते हैं, बेसमझ जो हैं, कुछ नहीं समझते हैं। ज़रा भी धारणा नहीं होती। हाँ-हाँ भल करते रहते हैं, समझते कुछ भी नहीं। याद में नहीं रहते। जो देह-अभिमान में रहते हैं, यह दुनिया याद रहती है, वह क्या समझ सकेंगे। अब बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो। देह को भूल जाना है। पिछाड़ी में तुम बहुत कोशिश करने लग पड़ेंगे, अभी तुम समझते नहीं हो। पिछाड़ी में बहुत- बहुत पछतायेंगे। बाबा साक्षात्कार भी करायेंगे। यह-यह पाप किये हैं। अब खाओ सज़ा। पद भी देखो। शुरू में भी ऐसे साक्षात्कार करते थे फिर पिछाड़ी में भी साक्षात्कार करेंगे।

- शिव शक्ति पाण्डव सेना गाई हुई है ना। जो स्वर्ग के द्वार खोलते हैं। नाम बाला है तो फिर ऐसी बहादुरी भी चाहिए। जब सर्वशक्तिमान् बाप की याद में रहेंगे तब वह शक्ति प्रवेश करेगी। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, इस योग अग्नि से ही विकर्म विनाश होंगे फिर विकर्माजीत राजा बन जायेंगे। मेहनत है याद की, जो करेगा सो पायेगा। दूसरे को भी सावधान करना है। याद की यात्रा से ही बेड़ा पार होगा। पढ़ाई को यात्रा नहीं कहा जाता है। वह है जिस्मानी यात्रा, यह है रूहानी यात्रा, सीधा शान्तिधाम अपने घर चले जायेंगे। बाप भी घर में रहते हैं। मुझे याद करते-करते तुम घर पहुँच जायेंगे। यहाँ सबको पार्ट बजाना है। ड्रामा तो अविनाशी चलता ही रहता है। बच्चों को समझाते रहते हैं एक तो बाप की याद में रहो और पवित्र बनो, दैवीगुण धारण करो और जितनी सर्विस करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। कल्याणकारी जरूर बनना है।

- बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बाप को भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। माया याद भुला देती है। ज्ञान नहीं भुलाती है। बाप कहते भी हैं अपनी उन्नति करनी है तो चार्ट रखो-सारे दिन में कोई पाप कर्म तो नहीं किया? नहीं तो सौ गुणा पाप बन जायेगा। यज्ञ की सम्भाल करने वाले बैठे हैं, उनकी राय से करो। कहते भी हैं जो खिलाओ, जहाँ बिठाओ। तो बाकी

और आशायें छोड़ देनी है। नहीं तो पाप बनता जायेगा। आत्मा पवित्र कैसे बनेगी। यज्ञ में कोई भी पाप का काम नहीं करना है।

- अभी तुम्हारी बुद्धि का ताला खुला है तो समझते हो यह तो बहुत सहज बात है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। पुराने झाड़ में जरूर बहुत पत्ते होंगे। नये झाड़ में थोड़े पत्ते होंगे। वह है सतोप्रधान दुनिया, इनको तमोप्रधान कहेंगे। तुम्हारा भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार बुद्धि का ताला खुला है क्योंकि सब यथार्थ रीति बाप को याद नहीं करते हैं। तो धारणा भी नहीं होती है।

- पुण्य आत्मा बनने के लिए पुरूषार्थ कर और फिर पाप करने से सौगुणा पाप हो जाता है फिर जामड़े (बौने) रह जाते हैं, वृद्धि को पा नहीं सकते। सौगुणा दण्ड एड होने से अवस्था जोर नहीं भरती। बाप जिससे तुम हीरे जैसा बनते हो उनमें संशय क्यों आना चाहिए। कोई भी कारण से बाप को छोड़ा तो कमबख्त कहेंगे। कहाँ भी रहकर बाप को याद करना है, तो सज़ाओं से छूट जायें। यहाँ तुम आते ही हो पतित से पावन बनने। पास्ट के भी कोई ऐसे कर्म किये हुए हैं तो शरीर की भी कर्म भोगना कितना चलती है। अभी तुम तो आधाकल्प के लिए इनसे छूटते हो। अपने को देखना है हम कहाँ तक अपनी उन्नति करते हैं, औरों की सर्विस करते हैं?

- मीठे-मीठे रूहानी बच्चे सहज याद में बैठे हैं। कोई-कोई को डिफीकल्ट लगता है। बहुत मूंझते हैं - हम टाइट अथवा स्ट्रिक होकर बैठें। बाप कहते हैं ऐसी कोई बात नहीं है, कैसे भी बैठो। बाप को सिर्फ याद करना है। इसमें मुश्किलात की कोई बात नहीं। वह हठयोगी ऐसे टाइट होकर बैठते हैं। टांग, टांग पर चढ़ाते हैं। यहाँ तो बाप कहते हैं आराम से बैठो। बाप को और

84 के चक्र को याद करो। यह है ही सहज याद। उठते-बैठते बुद्धि में रहे। जैसे देखो यह छोटा बच्चा बाप के बाजू में बैठा है, इनको बुद्धि में माँ-बाप ही याद होंगे। तुम भी बच्चे हो ना। बाप को याद करना तो बहुत सहज है। हम बाबा के बच्चे हैं। बाबा से ही वर्सा लेना है। शरीर निर्वाह अर्थ गृहस्थ व्यवहार में भल रहो। सिर्फ औरों की याद बुद्धि से निकाल दो। कोई हनूमान को, कोई किसको, साधू आदि को याद करते थे, वह याद छोड़ देनी है। याद तो करते हैं ना, पूजा के लिए पुजारी को मंदिर में जाना पड़ता है, इसमें कहाँ जाने की भी दरकार नहीं है। कोई भी मिले बोलो शिवबाबा का कहना है मुझ एक बाप को याद करो। शिवबाबा तो है निराकार। जरूर वह साकार में ही आकर कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं पतित-पावन हूँ। यह तो राइट अक्षर है ना। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। तुम सब पतित हो। यह पतित तमोप्रधान दुनिया है ना इसलिए बाबा कहते हैं कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। यह तो अच्छी बात है ना। कोई गुरू आदि की महिमा नहीं करते हैं। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। यह है योगबल अथवा योग अग्नि। बेहद का बाप तो सच कहते हैं ना - गीता का भगवान निराकार ही है। कृष्ण की बात नहीं। भगवान कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो और कोई उपाय नहीं। पावन होकर जाने से ऊंच पद पायेंगे। नहीं तो कम पद हो जायेगा। हम तुमको बाप का सन्देश देते हैं। मैं सन्देशी हूँ। इस समझाने में कोई तकलीफ नहीं है। मातायें, अहिल्यायें, कुब्जायें भी ऊंच पद पा सकती हैं। चाहे यहाँ रहने वाले हों, चाहे घर गृहस्थ में रहने वाले हों, ऐसे नहीं कि यहाँ रहने वाले जास्ती याद कर सकते हैं। बाबा कहते हैं बाहर में रहने वाले भी बहुत याद में रह सकते हैं। बहुत सर्विस कर सकते हैं। अब बाप को याद करने से माया पर जीत पानी है। अब इस दु:खधाम में तो रहना नहीं है। तुम पढ़ते ही हो सुखधाम में जाने के लिए।

तुम जानते हो हमारी आत्मा बेहद के बाप को याद करती है वा नहीं करती है? यह तो हर एक को अपने से पूछना है। पढ़ाई का सारा मदार है योग पर। पढ़ाई तो सहज है, समझ गये हैं कि

चक्र कैसे फिरता है, मुख्य है ही याद की यात्रा। यह अन्दर गुप्त है। देखने में थोड़ेही आता है। बाबा नहीं कह सकते कि यह बहुत याद करते हैं वा कम। हाँ, ज्ञान के लिए बता सकेंगे कि यह ज्ञान में बहुत तीखा है। याद का तो कुछ देखने में नहीं आता है।

यहाँ तुम हो ही संगमयुग पर, पुरूषोत्तम बनने का पुरूषार्थ कर रहे हो। विकारी पतित मनुष्यों से तुम्हारा कोई कनेक्शन ही नहीं है, हाँ, अभी कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है इसलिए कर्म सम्बन्धों से भी दिल लग जाती है। कर्मातीत बनना उसके लिए चाहिए याद की यात्रा। बाप समझाते हैं तुम आत्मा हो, तुम्हारा परमात्मा बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। ओहो! बाबा हमको पढ़ाते हैं। वह उमंग कोई में रहता नहीं है। माया घड़ी-घड़ी देह-अभिमान में ला देती है। जबकि समझते हो शिवबाबा हम आत्माओं से बात कर रहे हैं, तो वह कशिश, वह खुशी रहनी चाहिए ना। जिस सुई पर ज़रा भी जंक नहीं होगी, वह चुम्बक के आगे तुम रखेंगे तो फट से चटक जायेगी। थोड़ी भी कट होगी तो चटकेगी नहीं। कशिश नहीं होगी। जहाँ से नहीं होगी फिर उस तरफ से चुम्बक खीचेंगे। बच्चों में कशिश तब होगी जब याद की यात्रा पर होंगे। कट होगी तो खींच नहीं सकेंगे। हर एक समझ सकते हैं हमारी सुई बिल्कुल पवित्र हो जायेगी तो कशिश भी होगी। कशिश नहीं होती है क्योंकि कट चढ़ी हुई है। तुम बहुत याद में रहते हो तो विकर्म भस्म होते हैं। अच्छा, फिर अगर कोई पाप करते तो वह सौगुणा दण्ड हो जाता है। कट चढ़ जाती है, याद नहीं कर सकते। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, याद भूलने से कट चढ़ जाती है। तो वह कशिश, लव नहीं रहता। कट उतरी हुई होगी तो लव होगा, ख़ुशी भी रहेगी। चेहरा खुशनुम: रहेगा। तुमको भविष्य में ऐसा बनना है। सर्विस नहीं करते तो पुरानी सड़ी हुई बातें करते रहते। बाप से बुद्धियोग ही तुड़ा देते हैं। जो कुछ चमक थी, वह भी गुम हो जाती है। बाप से ज़रा भी लव नहीं रहता। लव उनका रहेगा जो अच्छी रीति बाप को याद करते होंगे। बाप को भी उनसे कशिश होगी। यह बच्चा सर्विस भी अच्छी करता है और योग में रहता है।

तो बाप का प्यार उन पर रहता है। अपने ऊपर ध्यान रखते हैं, हमसे कोई पाप तो नहीं हुआ। अगर याद नहीं करेंगे तो कट कैसे उतरेगी। बाप कहते हैं चार्ट रखो तो कट उतर जायेगी। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है तो कट उतरनी चाहिए। उतरती भी है फिर चढ़ती भी है। सौ गुणा दण्ड पड़ जाता है। बाप को याद नहीं करते हैं तो कुछ न कुछ पाप कर लेते हैं। बाप कहते हैं कट उतरने बिगर तुम मेरे पास आ नहीं सकेंगे। नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़ेगी। मोचरा भी मिलता, पद भी भ्रष्ट हो जाता। बाकी बाप से वर्सा क्या मिला? ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए जो और ही कट चढ़ जाए। पहले तो अपनी कट उतारने का ख्याल रखो। ख्याल नहीं करते हैं तो फिर बाप समझेंगे इनकी तकदीर में नहीं है। क्वालिफिकेशन चाहिए। अच्छे कैरेक्टर्स चाहिए। लक्ष्मी-नारायण के कैरेक्टर तो गाये हुए हैं।

- जैसे सुई को मिट्टी के तेल में डालने से कट उतर जाती है, वैसे बाप की याद में रहने से भी कट उतरती है। नहीं तो वह कशिश, वह लव बाप में नहीं रहता है। लव सारा चला जाता है मित्र-सम्बन्धियों आदि में, मित्र-सम्बन्धियों के पास जाकर रहते हैं। कहाँ वह जंक खाया हुआ संग और कहाँ यह संग। जंक खाई हुई चीज़ के संग में उनको भी कट चढ़ जायेगी। कट उतारने के लिए ही बाप आते हैं। याद से ही पावन बनेंगे। आधाकल्प से बड़ी ज़ोर से कट चढ़ी हुई है। अब बाप चुम्बक कहते हैं मुझे याद करो। बुद्धि का योग जितना मेरे साथ होगा उतनी कट उतरेगी। बाप की श्रीमत पर चलने पर है, बुद्धियोग बाहर जाता रहता है, तो भी कट लग जाती है। यहाँ आते हैं तो सब हिसाब-किताब चुक्तू कर, जीते जी सब कुछ खत्म करके आते हैं। सन्यासी भी सन्यास करते हैं तो भी कितने समय तक सब याद आता रहता है।

- तुम बच्चे जानते हो अभी हमको सत का संग मिलता है। हम अपने बाप की ही याद में रहते हैं। मित्र-सम्बन्धियों आदि को जानते तो हैं ना। गृहस्थ व्यवहार में रहते, कर्म करते बाप को याद

करते हैं, पवित्र बनना है, औरों को भी सिखाना है। फिर तकदीर में होगा तो चल पड़ेंगे। ब्राह्मण कुल का ही नहीं होगा तो देवता कुल में कैसे आयेगा? बहुत सहज प्वाइंट्स दी जाती हैं, जो झट किसकी बुद्धि में बैठ जाएं। विनाश काले विपरीत बुद्धि वाला चित्र भी क्लीयर है। अब वह सावरन्टी तो है नहीं। दैवी सावरन्टी थी, जिसको स्वर्ग कहा जाता था। अभी तो पंचायती राज्य है, समझाने में कोई हर्जा नहीं है। परन्तु कट निकली हुई हो तो कोई को तीर लगे। पहले कट निकालने की कोशिश करनी चाहिए। अपना कैरेक्टर देखना है। रात-दिन हम क्या करते हैं? किचन में भी भोजन बनाते, रोटी पकाते जितना हो सके याद में रहो, घूमने जाते हो तो भी याद में। बाप सबकी अवस्था को तो जानते हैं ना। झरमुई-झगमुई करते हैं तो फिर कट और ही चढ़ जाती है। परचिन्तन की कोई बात नहीं सुनो।

वह है गोल्डन एज, यह है आइरन एज। कट चढ़ जाती है ना। अभी तुम्हारी कट उतर रही है। जो याद ही नहीं करते तो कट भी नहीं उतरती। बहुत कट चढ़ी हुई होगी तो उसे पुरानी दुनिया की कशिश होती रहेगी। सबसे बड़ी कट चढ़ती ही है विकारों से। पतित भी उनसे बने हैं। अपनी जांच करनी है - हमारी बुद्धि क्रिमिनल तरफ तो नहीं जाती। अच्छे-अच्छे फर्स्टक्लास बच्चे भी फेल हो पड़ते हैं। अभी तुम बच्चों को यह समझ मिली है। मुख्य बात है ही पवित्रता की।

हम हैं रूहानी पण्डे। वह हैं कलियुगी ब्राह्मण। पुरूषोत्तम बनने के लिए पढ़ रहे हैं। हम पुरूषोत्तम संगमयुग पर हैं। बाबा अनेक प्रकार से समझाते रहते हैं। फिर भी देह-अभिमान में आने से भूल जाते हैं। मैं आत्मा हूँ, बाप का बच्चा हूँ, वह नशा नहीं रहता है। जितना याद करते रहेंगे उतना देह-अभिमान टूटता जायेगा। अपनी सम्भाल करते रहो। देखो, हमारा देह-अभिमान टूटा है? हम अभी जा रहे हैं फिर हम विश्व के मालिक बनेंगे। हमारा पार्ट ही हीरो-हीरोइन का है। हीरो-हीरोइन नाम तब पड़ता है जब कोई विजय पाते हैं।

- बाप कहते हैं बुद्धि में रहे - बाप हमको पढ़ा रहे हैं। जिस पढ़ाई से हम मनुष्य से देवता बन जायेंगे। इसमें तकलीफ की कोई बात नहीं। धन्धे आदि से भी कुछ टाइम निकाल याद कर सकते हो। यह भी अपने लिए धन्धा है ना। छुट्टी लेकर जाए बाबा को याद करो। यह कोई झूठ नहीं बोलते हैं। सारा दिन ऐसे ही थोड़ेही गंवाना है। हम भविष्य का तो कुछ ख्याल करें। युक्तियाँ बहुत हैं, जितना हो सके टाइम निकाल बाप को याद करो। शरीर निर्वाह के लिए धन्धा आदि भी भल करो। हम तुमको विश्व का मालिक बनने की बहुत अच्छी राय देते हैं। तुम बच्चे भी सबको राय देने वाले ठहरे। वजीर राय के लिए होते हैं ना। तुम एडवाइजर हो।

- जितना तुम याद में रहेंगे उतना खुशी में रहेंगे। याद से ही फायदा है। भण्डारे में भोजन बनाते हैं तो भी समझो हम शिवबाबा के बच्चों के लिए बनाते हैं। खुद भी शिवबाबा के बच्चे हैं तो ऐसे याद करने से भी फायदा ही है। सबसे जास्ती पद उनको मिलेगा जो याद में रह कर्मातीत अवस्था को पाते हैं और सर्विस भी करते हैं। यह बाबा भी बहुत सर्विस करते हैं ना। इनकी बेहद की सर्विस है तुम हद की सर्विस करते हो। सर्विस से ही इनको भी पद मिलता है। शिवबाबा कहते - ऐसे-ऐसे करो, इनको भी राय देते हैं। तूफान तो बच्चों को आते हैं, सिवाए याद के कर्मेन्द्रियाँ वश होना मुश्किल है। याद से ही बेड़ा पार होना है, यह शिवबाबा कहते हैं या ब्रह्मा बाबा कहते हैं, यह समझना भी मुश्किल हो जाता है। इसमें बड़ी महीन बुद्धि चाहिए।

- देहली परिस्तान थी, जमुना का कण्ठा था। लक्ष्मी- नारायण का राज्य था। चित्र भी हैं। लक्ष्मी-नारायण को स्वर्ग का ही कहेंगे। तुम बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है कि कैसे स्वंयवर होता है। यह सब प्वाइंट्स बाबा रिवाइज़ कराते हैं। अच्छा प्वाइंट्स याद नहीं पड़ती हैं तो बाबा को याद करो। बाप भूल जाता है तो टीचर को याद करो। टीचर जो सिखलाते हैं वह भी जरूर याद

आयेगा ना। टीचर भी याद रहेगा, नॉलेज भी याद रहेगी। उद्देश्य भी बुद्धि में है। याद रखना ही पड़े क्योंकि तुम्हारी स्टूडेन्ट लाइफ है ना। यह भी जानते हो जो हमको पढ़ाते हैं वह हमारा बाप भी है, लौकिक बाप कोई गुम नहीं हो जाता है। लौकिक, पारलौकिक और फिर यह है अलौकिक। इनको कोई याद नहीं करते। लौकिक बाप से तो वर्सा मिलता है। अन्त तक याद रहती है। शरीर छोड़ा फिर दूसरा बाप मिलता है। जन्म बाई जन्म लौकिक बाप मिलते हैं। पारलौकिक बाप को भी दु:ख व सुख में याद करते हैं। बच्चा मिला तो कहेंगे ईश्वर ने बच्चा दिया। बाकी प्रजापिता ब्रह्मा को क्यों याद करेंगे, इनसे कुछ मिलता थोड़ेही है। इनको अलौकिक कहा जाता है।

- बाप को याद करने में ही माया विघ्न डालती है। बाप कहते हथ कार डे दिल यार डे। यह है बहुत सहज। जैसे आशिक-माशूक होते हैं जो एक-दो को देखने बिगर रह न सकें। बाबा तो माशूक ही है। आशिक सब बच्चे हैं जो बाप को याद करते रहते हैं। एक बाप ही है जो कभी किसी पर आशिक नहीं होता है क्योंकि उनसे ऊंच तो कोई है नहीं। बाकी हाँ बच्चों की महिमा करते हैं, तुम भक्ति मार्ग से लेकर मुझ माशूक के सब आशिक हो। बुलाते भी हो कि आकर दु:ख से लिबरेट कर पावन बनाओ। तुम सब हो ब्राइड्स, मैं हूँ ब्राइडग्रूम। तुम सब आसुरी जेल में फंसे हुए हो, मैं आकर छुड़ाता हूँ। यहाँ मेहनत बहुत है क्रिमिनल आई धोखा देती है, सिविल आई बनने में मेहनत लगती है। देवताओं के कितने अच्छे कैरेक्टर्स हैं, अब ऐसा देवता बनाने वाला जरूर चाहिए ना।

- बाबा ने कह दिया है हर बात में योगबल से काम लो, याद की यात्रा से काम लो और कहाँ भी जाओ तो मुख्य बात बाप को जरूर याद करना है। और कोई भी आसुरी काम नहीं करना है। हम ईश्वरीय सन्तान हैं वह है सबका बाप, सबके लिए शिक्षा यह एक ही देंगे। बाप शिक्षा देते

हैं-बच्चे स्वर्ग का मालिक बनना है। राजाई में भी पोजीशन तो होती हैं ना। हर एक के पुरूषार्थ अनुसार मर्तबा होता है।

- पतित परमात्मा कभी नहीं सुना है। सर्व के अन्दर परमात्मा अगर होता तो पतित परमात्मा हो जाए। तो मुख्य बात है आत्म-अभिमानी बनना। आत्मा कितनी छोटी है, उसमें कैसे पार्ट भरा हुआ है, यह किसको भी पता नहीं है। तुम तो नई बात सुनते हो। यह याद की यात्रा भी बाप ही सिखलाते हैं, और कोई सिखला न सके। मेहनत भी है इसमें। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझना है। जैसे देखो यह इमर्जेन्सी लाइट आई है, जो बैटरी पर चलती है। इसको फिर चार्ज करते हैं। बाप है सबसे बड़ी पावर। आत्मायें कितनी ढेर हैं। सबको उस पावर से भरना है। बाप है सर्वशक्तिमान्। हम आत्माओं का उनसे योग नहीं होगा तो बैटरी चार्ज कैसे हो? सारा कल्प लगता है डिस्चार्ज होने में। अभी फिर बैटरी को चार्ज करना होता है। बच्चे समझते हैं हमारी बैटरी डिस्चार्ज हो गई है, अब फिर चार्ज करनी है। कैसे? बाबा कहते हैं मेरे से योग लगाओ। यह तो बहुत सहज समझने की बात है। बाप कहते हैं मेरे साथ बुद्धि योग लगाओ तो तुम्हारी आत्मा में पावर भरकर सतोप्रधान बन जायेगी। पढ़ाई तो है ही कमाई। याद से तुम पावन बनते हो। आयु बड़ी होती है। बैटरी चार्ज होती है। हर एक को देखना है - कितना बाप को याद करते हैं। बाप को भूल जाने से ही बैटरी डिस्चार्ज होती है, कोई का भी सच्चा कनेक्शन नहीं है। सच्चा कनेक्शन है ही तुम बच्चों का। बाप को याद करने बिगर ज्योत जगेगी कैसे? ज्ञान भी सिर्फ एक बाप ही देते हैं।

- तुम जानते हो ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। फिर रात से होता है वैराग्य, फिर दिन शुरू होता है। बाप कहते हैं रात को भूलो, अब दिन को याद करो। स्वर्ग है दिन, नर्क है रात। आत्मायें ही बाप को पुकारती हैं - ओ बाबा हम डिस्चार्ज हो गये हैं, अब आप आओ, हमको चार्ज होना है।

अब बाप कहते हैं - जितना याद करेंगे उतना ताकत आयेगी। बाप से बहुत लव होना चाहिए। बाबा हम आपके हैं, आपके साथ ही घर जाने वाले हैं। जैसे पियर घर से ससुरघर वाले ले जाते हैं ना। यहाँ तुमको दो बाप मिले हैं, श्रृंगार कराने वाले। श्रृंगार भी अच्छा चाहिए अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न बनना है।

- तुम बच्चे जब योग में मजबूत हो जायेंगे तो फिर तुम्हारा प्रभाव निकलेगा। अभी अजुन वह जौहर नहीं है। याद से शक्ति मिलती है। पढ़ाई से शक्ति नहीं मिलती है। ज्ञान तलवार है, उसमें याद का जौहर भरना है। वह शक्ति कम है। बाप रोज़ कहते रहते हैं - बच्चे, याद की यात्रा में रहने से तुमको ताकत मिलेगी। पढ़ाई में इतनी ताकत नहीं है। याद से तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो।

- बाप कहते हैं एक तो देही-अभिमानी बनो और बाप को याद करो। जितना याद करेंगे, अपना कल्याण करेंगे। तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो फिर से। आगे भी हमारी राजधानी थी। हम देवी-देवता धर्म वाले ही 84 जन्म भोग, अन्तिम जन्म में अभी संगम पर हैं। इस पुरूषोत्तम संगमयुग का सिवाए तुम बच्चों के और कोई को पता नहीं है। बाबा कितनी प्वाइंट्स देते हैं- बच्चे, अगर अच्छी रीति याद में रहेंगे तो बहुत खुशी में रहेंगे। परन्तु बाप को याद करने के बदले और दुनियावी बातों में पड़ जाते हैं। यह याद रहनी चाहिए कि हम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। गाया भी हुआ है ऊंच ते ऊंच भगवान, उनकी ही ऊंच ते ऊंच श्रीमत है। श्रीमत क्या सिखलाती है? सहज राजयोग। राजाई के लिए पढ़ा रहे हैं। अपने बाप के द्वारा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानकर फिर दैवीगुण भी धारण करने हैं।

वह(राजाई चित्र) अपने पास रख दो तो घड़ी-घड़ी याद आता रहेगा। हम सो देवता बन रहे हैं। ऊपर में भल शिवबाबा हो। यह सब चित्र निकालने होंगे। हम मनुष्य से देवता बनते हैं। यह शरीर छोड़ हम जाकर देवता बनेंगे क्योंकि अभी यह राजयोग सीख रहे हैं। तो यह फोटो मदद करेंगे। ऊपर में शिव फिर राजाई चित्र, नीचे तुम्हारा साधारण चित्र। शिवबाबा से हम राजयोग सीखकर डबल सिरताजधारी देवता बन रहे हैं। चित्र रखा होगा, कोई भी पूछेंगे तो तुम बता सकेंगे। हमको सिखाने वाला यह शिवबाबा है। चित्र देख बच्चों को नशा चढ़ेगा। भल दुकान में भी यह चित्र रख दो। भक्ति मार्ग में बाबा नारायण का चित्र रखता था। पॉकेट में भी रहता था। तुम भी अपना फोटो रख दो तो याद रहेगा कि हम सो देवी-देवता बन रहे हैं। बाप को याद करने का उपाय ढूँढना चाहिए। बाप की याद भूल जाने से ही गिरते हैं। विकार में गिरेंगे तो फिर शर्म आयेगी कि अब तो हम यह देवता बन नहीं सकते। हार्टफेल हो जायेगी कि हम अब देवता कैसे बनेंगे। बाबा कहते हैं- विकार में गिरने वाले का फोटो निकाल दो। बोलो, तुम स्वर्ग में चलने लायक नहीं हो। तुम्हारा पासपोर्ट खलास। खुद भी फील करेंगे– हम तो गिर गये! अब स्वर्ग में कैसे जायेंगे। जैसे बाबा नारद का मिसाल देते हैं, उनको कहा कि अपनी शक्ल तो देखो लक्ष्मी को वरने लायक हो? तो शक्ल बन्दर की दिखाई पड़ी तो मनुष्यों को भी शर्म आयेगा– हमारे में तो यह विकार हैं फिर श्री लक्ष्मी-नारायण को कैसे वर सकते हैं। बाबा तो युक्तियां बहुत बताते हैं।

भगवान आयेगा तब जब पतित दुनिया को पावन बनाना है। अब बाप सहज युक्ति बताते हैं कि देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ देही-अभिमानी बन बाप को याद करो। बाप है भक्तों को फल देने वाला। भक्तों को ज्ञान देते हैं– पावन बनने के लिए। सबको पावन बनाने वाला है योग। ज्ञान सागर मुख से आकर ज्ञान सुनाते हैं। पतितों को पावन बनाते । बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। अब करो वा न करो। परन्तु बाप का डायरेक्शन है, प्यारी वस्तु को याद किया जाता है ना। भक्ति मार्ग में भी कहते हैं कि हे पतित-पावन आओ। अब वह मिला है।

कहते हैं मुझे याद करो तो कट उतर जायेगी। बादशाही ऐसे ही थोड़ेही मिल जायेगी। याद में ही थोड़ी मेहनत है। बहुत याद करने वाले ही कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं। पूरा याद न करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। योगबल से ही विकर्माजीत बनना है।

- यह तो बच्चों को समझाया गया है– बाप को याद करने से ही पाप भस्म हो जाते हैं। मुख्य बात है याद की। याद करने से तुम्हारे से कोई विकर्म नहीं होगा और खुशी में रहेंगे। पतित-पावन बाप आये हैं पावन बनाने, तो फिर हम विकर्म क्यों करें। अपनी सम्भाल करनी है। बुद्धि तो मनुष्य को है ना। इसमें और कुछ लड़ने आदि की बात नहीं है सिर्फ 5 विकारों को जीतने लिए बाप को याद करना बहुत सहज है। हाँ इसमें मेहनत लगती है, टाइम लगता है। माया दीवा बुझाने लिए घड़ी-घड़ी तूफान लाती है। बाकी इसमें लड़ाई की कोई बात नहीं है। वहाँ है ही देवताओं का राज्य। असुर कोई होते नहीं। हम हैं ब्राह्मण, ब्रह्मा मुख वंशावली। जो ब्राह्मण कुल के हैं वही अपने को ब्राह्मण समझते हैं। रूहानी बाप हम रूहों को बैठ ज्ञान देते हैं।

- जीवनमुक्त तो राजा प्रजा सब हैं। जो भी आने हैं उनको जीवनमुक्त बनना है। बाप तो समझाते हैं सबको। फिर है पुरूषार्थ करना, ऊंच पद पाने के लिए। सारा मदार है पुरूषार्थ पर। क्यों न पुरूषार्थ करते-करते हम ऊंच पद पायें। बाप को बहुत याद करने से बाप की दिल पर अर्थात् तख्त पर चढ़ जायेंगे। बाप कोई मेहनत नहीं देते हैं। अबलाओं से और क्या मेहनत करायेंगे। बाप की याद है भी गुप्त। ज्ञान तो प्रत्यक्ष हो जाता है। कहा जाता है इनका भाषण तो बहुत अच्छा है, परन्तु योग में कहाँ तक हैं? बाप को याद करते हैं? कितना समय याद करते हैं? याद से ही जन्मजन्मान्तर के विकर्म विनाश होंगे। यह स्प्रीचुअल नॉलेज कल्प-कल्प रूहानी बाप शिव ही आकर देते हैं। और कोई भी ज्ञान दे नहीं सकते।

अ अगर बाप का बनकर अच्छी रीति पढ़े तो राजाई पद पा सकते हैं। नहीं पढ़ते हैं तो समझेंगे उनकी तकदीर में नहीं है। पवित्र रहेंगे, पढ़ेंगे तो ऊंच पद पायेंगे। अपवित्र होने से बाप को याद नहीं कर सकेंगे। ऐसे भी बहुत हैं– कर्मबन्धन का हिसाब जब छूटे। गाड़ी के दोनों पहिया पवित्र होंगे तो ठीक चलेंगे। दोनों पवित्र रहेंगे तो ज्ञान चिता पर बैठ जायेंगे, नहीं तो खिटपिट होती है।

शिवबाबा भी बिन्दी है, हम बिन्दी को याद करते हैं। ऐसे समझ याद करें तब विकर्म विनाश हों। बाकी यह देखने में आता, वह आता... इसे माया का विघ्न कहा जाता है। अभी तो खुशी है कि हमको परमात्मा मिला है, परन्तु ज्ञान भी चाहिए ना। किसको कृष्ण का साक्षात्कार होता है तो खुश हो जाते हैं। बाबा कहते हैं- कृष्ण का साक्षात्कार कर बहुत खुशी में डांस आदि करते हैं परन्तु उनसे कोई सद्गति नहीं होती। यह साक्षात्कार तो अनायास ही हो जाता है। अगर अच्छी रीति नहीं पढ़ेंगे तो प्रजा में चले जायेंगे। थोड़ा भी सुनते हैं तो कृष्णपुरी में साधारण प्रजा आदि जाकर बनेंगे। अभी तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा हमको यह नॉलेज सुना रहे हैं। वह है ही नॉलेजफुल।

यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे चक्र लगाती है, वह भी बच्चों को समझाया है। फिर भी कहते हैं बच्चे मनमनाभव। यह सब फिर रिपीट होगा। हर चीज सतो से तमोप्रधान बन जायेगी। दिन में धन्धा-धोरी आदि करते हो, वह टाइम छोड़ो। बाकी जितना टाइम मिले मुझे याद करो। धन्धे आदि में भी कभी-कभी टाइम मिलता है। कइयों की ऐसी सर्विस रहती है, सिर्फ सही की, खलास। ऐसे भी बहुत फ्री रहते हैं। फिर भी रात तो अपनी है। दिन में शरीर निर्वाह के लिए कमाई करते हो, रात को फिर यह कमाई करो। यह है भविष्य 21 जन्मों के लिए। कहा जाता है एक घड़ी, आधी घड़ी– जितना हो सके बाप की याद में रहो तो तुम्हारी बहुत कमाई होगी। सेन्सीबुल जो होगा वह समझेगा कि बरोबर बहुत कमाई कर सकते हैं। कोई-कोई चार्ट भी

लिखते हैं– हमने इतना समय याद किया। अज्ञान काल में कोई अपनी दिनचर्या लिखते हैं। तुम भी चार्ट लिखेंगे तो अटेन्शन रहेगा। कोई टाइम वेस्ट तो नहीं होता है! कोई विकर्म तो नहीं किया!

तुम कृष्ण् के लिए मुरली नहीं कह सकते। मुरली शिवबाबा बजाते हैं। तुम्हारे पास अच्छे-अच्छे गीत बनाने वाले आयेंगे। गीत अक्सर करके पुरूष ही बनाते हैं। तुमको कोई भक्ति मार्ग के गीत आदि नहीं गाने हैं। तुम्हें तो एक शिवबाबा को ही याद करना है। बाप कहते हैं-मुझ अल्फ को याद करो। शिव को कहते हैं बिन्दी। व्यापारी लोग बिन्दी लिखेंगे तो कहेंगे शिव। एक बिन्दी लिखें 10 हो जायेगा फिर बिन्दी लिखो तो 100 .. तुमको भी शिवबाबा को याद करना है। जितना शिव को याद करते हो तो आधाकल्प के लिए बहुत साहूकार बन जाते हो। वहाँ गरीब होते ही नहीं। सब सुखी रहते हैं। दु:ख का नाम नहीं। बाप की याद से विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम बहुत धनवान बनेंगे। इसको कहा जाता है सच्चे बाप द्वारा सच्ची कमाई। यही साथ चलेगी। मनुष्य सभी खाली हाथ जाते हैं। तुमको भरतू हाथ जाना है। बाप को याद करना है और पवित्र बनना है। बाप ने समझाया है– प्योरिटी होगी तो पीस, प्रासपर्टी मिलेगी।

तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। फर्क देखो कितना है। ऐसे वर्सा देने वाले को कितना याद करना चाहिए। यहाँ तो बहुत हैं जो सारे दिन में शिवबाबा को याद ही नहीं करते हैं। सारा दिन घर के, धन्धे धोरी के लफड़ों में ही रहते हैं। नहीं तो सवेरे उठ बाप को बहुत प्रेम से याद करना चाहिए। बाबा आपसे हम प्रतिज्ञा करते हैं। आपसे हम वर्सा जरूर लेंगे। बाबा आप कितने मीठे हो। आपकी याद से हमारे विकर्म विनाश होंगे। अन्दर में अपने से बात करना, उसको विचार सागर मंथन करना कहा जाता है। बाबा आपसे हम पूरा वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। अब हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है, तब ही सतयुगी राज्य पायेंगे। बाबा आपको हम

निरन्तर याद करेंगे। 63 जन्मों में हमने कितने पाप किये हैं। कितना सिर पर बोझा है इसलिए बाबा हम आपको बहुत याद करते हैं। बाबा हम खाना पकायेंगे, घूमने जायेंगे तो भी आपकी याद में रहेंगे। ऐसे-ऐसे बातें करते प्रतिज्ञा करेंगे तो विकर्म विनाश होते जायेंगे। बाबा हम भोजन बनायेंगे आपकी याद में। हमको सतोप्रधान जरूर बनना है। पता नहीं कल शरीर छूट जाए तो हम सतोप्रधान बनेंगे ही नहीं! मौत का डर है ना। बाबा हम जीते जी आपसे वर्सा जरूर लेंगे। फिर देखना चाहिए कि आज के सारे दिन में हमने कितना याद किया। कोई भी हालत में याद की यात्रा में जरूर रहना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। युक्ति से चलना है। ऐसे-ऐसे तीव्र वेग से पुरूषार्थ में लग जाएं तो याद भी रहेगी और आयु भी बढ़ेगी। भविष्य में तुम्हारी आयु बढ़ेगी, याद नहीं करेंगे तो पद भी कम हो जायेगा। पुरूषार्थ कर बाप से वर्सा तो लेना है ना और स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।

अभी है संगम। अभी बाप सबको सद्गति में ले जाते हैं। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अपनी अवस्था को जमाना है। सवेरे उठकर बाप को याद करना चाहिए। अपने को आत्मा समझना है। यह शरीर के आरगन्स हैं। बाप कहते हैं– जो बच्चे अच्छी सर्विस करते हैं, मैं उनको याद करता हूँ क्योंकि मेरे मददगार हैं। बहुतों का कल्याण करते हैं तो वह मुझे प्यारे लगते हैं। तुमको तो एक बाप ही प्यारा लगता है जिससे वर्सा मिलता है इसलिए तुम बच्चों को अच्छी रीति पुरूषार्थ करना पड़े। याद की यात्रा में रहना है। बहुत फालतू ख्यालात भी आयेंगे। भक्ति मार्ग में अपने को मारते भी हैं, हमको शिव का दर्शन हो, बहुत मेहनत करते हैं दर्शन के लिए। यहाँ तुम सगझते हो बाप की याद से पाप कट जायेंगे और 21 जन्मों के लिए वर्सा मिलेगा। दर्शन होने से कोई पाप नहीं कट जाते। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं। उनको तो बहुत प्रेम से याद करना चाहिए। अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम क्या बन रहे हैं। दूसरे जन्म में हम यह जाकर बनेंगे। यह कॉलेज ही है सतयुग का प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने का। बाप आकर धर्म के साथ डीटी किंगडम भी स्थापन करते हैं। अच्छा।

- बच्चे जब गीत सुनते हैं तो अपनी राजाई का नशा बुद्धि में आना चाहिए। ऐसे-ऐसे गीत घर में रहने चाहिए, जिससे बाप और वर्से की झट याद आती है। बाप के याद की मस्ती के गीत होने चाहिए। तुम्हारा सब है गुप्त।

- अभी तुम संगमयुगी पुरूषोत्तम बनने वाले हो। यह सारी मेहनत की बात है। याद से विकर्माजीत बनना है। तुम खुद कहते हो याद घड़ी-घड़ी भूल जाती है। बाबा पिकनिक पर बैठते हैं तो बाबा को ख्याल रहता है। हम याद में नहीं रहेंगे तो बाबा क्या कहेंगे इसलिए बाबा कहते हैं तुम याद में बैठ पिकनिक करो। कर्म करते माशूक को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, इसमें ही मेहनत है। याद से आत्मा पवित्र होगी, अविनाशी ज्ञान धन भी जमा होगा। फिर अगर अपवित्र बन जाते हैं तो सारा ज्ञान बह जाता है। पवित्रता ही मुख्य है। बाप तो अच्छी-अच्छी बात ही समझाते हैं। यह सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान और कोई में भी नहीं है। और जो भी सतसंग आदि हैं वह सब हैं भक्ति मार्ग के।

- अब बाप कहते हैं देह होते हुए, गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए मामेकम् याद करो। भक्ति मार्ग में जो नौधा भक्ति करते हैं, उसको कहा जाता है - सतोप्रधान नौधा भक्ति। कितनी तेज भक्ति होती है। अब फिर तेज रफ्तार चाहिए - याद की। तेज याद करने वाले का ही ऊंच नाम होगा। विजय माला का दाना बनेंगे।

- बाबा कहने से वर्सा मिलने की बात हो जाती है। शिवबाबा कहते हैं हमेशा बाबा-बाबा कहना चाहिए। ईश्वर वा प्रभू आदि अक्षर भूल जाने चाहिए। बाबा ने कहा है - मामेकम् याद करो।

प्रदर्शनी आदि में भी जब समझाते हो तो घड़ी-घड़ी शिवबाबा का परिचय दो। शिवबाबा एक ही ऊंच ते ऊंच है, जिसको गॉड फादर कहा जाता है। मुसलमान अल्लाह कहते हैं, सुबह को 10 मिनट बैठकर कुरान का अर्थ करते हैं कि अल्लाह मिया ने कहा है, किसको दु:ख नहीं देना चाहिए। यह नहीं करना चाहिए। ऐसे नहीं समझते कि बाबा ने कहा है। बाबा अक्षर सबसे मीठा है। शिवबाबा, शिवबाबा मुख से निकलता है। मुख तो मनुष्य का ही होगा। गऊ का मुख थोड़ेही हो सकता। तुम हो शिव शक्तियां। तुम्हारे मुख कमल से ज्ञान अमृत निकलता है।

याद में ही मेहनत है, इसमें माया आपोजीशन करती है। घड़ी-घड़ी याद भुला देती है इसलिए बाबा कहते हैं - चार्ट लिखो। तो बाबा भी देखे कौन कितना याद करते हैं। क्वार्टर परसेन्ट भी चार्ट नहीं रखते हैं। कोई कहते हैं हम तो सारा दिन याद में रहता हूँ। बाबा कहते हैं यह तो बड़ी मुश्किल है। सारा दिन रात तो बांधेलियां जो मार खाती रहती वह याद में रहती होंगी, शिवबाबा कब इन सन्बन्धियों से हम छूटेंगे? आत्मा पुकारती है - बाबा हम बन्धन से कैसे छूटें। अगर कोई बहुत याद में रहते हैं तो बाबा को चार्ट भेजें। डायरेक्शन मिलते हैं रोज़ रात को अपना पोतामेल निकालो, डायरी रखो। डायरी रखने से डर रहेगा, हमारा घाटा न निकल आये। बाबा देखेंगे तो क्या कहेंगे - इतने मोस्ट बिलवेड बाबा को इतना समय ही याद करते हो! लौकिक बाप को, स्त्री को तुम याद करते हो, मुझे इतना थोड़ा भी याद नहीं करते हो। चार्ट लिखो तो आपेही लज्जा आयेगी। इस हालत में मैं पद पा नहीं सकूंगा, इसलिए बाबा चार्ट पर जोर दे रहे हैं। बाप को और 84 के चक्र को याद करना है तो फिर चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। आप समान बनायेंगे तब तो प्रजा पर राज्य करेंगे। यह है ही राजयोग - नर से नारायण बनने का। एम आबजेक्ट यह है। जैसे आत्मा को देखा नहीं जाता, समझा जाता है। इनमें आत्मा है, यह भी समझा जाता है। इन लक्ष्मी- नारायण की जरूर राजधानी होगी।

कल्प पहले वाले जो भाग्यशाली होंगे उनको ही यह टच होगा। पढ़ाई तो बहुत अच्छी है। बाकी हर एक की बुद्धि अपनी होती है। कैसे भी करके बाप से वर्सा लेना है। बाप डायरेक्शन सब देते हैं। करना तो बच्चों को ही है। बाबा डायरेक्शन देंगे जनरल। एक-एक पर्सनल भी आकर कोई पूछे तो राय दे सकते हैं। तीर्थों पर बड़े-बड़े पहाड़ों पर जाते हैं तो पण्डे लोग सावधान करते रहते हैं। बड़ी मुश्किलात से जाते हैं। तुम बच्चों को तो बाप बहुत सहज युक्ति बताते हैं। बाप को याद करना है। शरीर का भान खत्म करना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। बाप आकर नॉलेज दे चले जाते हैं। आत्मा जैसा तीखा रॉकेट और कोई हो नहीं सकता। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना - यह है डेड साइलेन्स। मैं आत्मा शरीर से अलग हूँ। यह शरीर पुरानी जुत्ती है। आंखें बड़ी क्रिमिनल हैं। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलने से आंखे सिविल बनती हैं फिर आधाकल्प कभी क्रिमिनल नहीं बनेंगी। यह हैं बड़ी धोखेबाज। तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना कर्मेन्द्रियाँ शीतल होंगी। फिर 21 जन्म कर्मेन्द्रियों को चंचलता में आना नहीं है। वहाँ कर्मेन्द्रियों में चंचलता होती नहीं। सब कर्मेन्द्रियां शान्त सतोगुणी रहती हैं। देह-अभिमान के बाद ही सब शैतानी आती है। बाप तुमको देही-अभिमानी बनाते हैं। आधाकल्प के लिए तुमको वर्सा मिल जाता है। जितनी जो मेहनत करते हैं, उतना ऊंच पद पायेंगे। मेहनत करनी है - देही-अभिमानी बनने की, फिर कर्मेन्द्रियां धोखा नहीं देंगी। अन्त तक युद्ध चलती रहेगी। जब कर्मातीत अवस्था को पायेंगे तब वह लड़ाई भी शुरू होगी। दिन प्रतिदिन आवाज होता जायेगा, मौत से डरेंगे।

तुम जानते हो हम इस 84 के चक्र को जानने से ही चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं। कितना सहज है और फिर पवित्र भी बनना है। याद की यात्रा का चार्ट रखो, इसमें तुमको बहुत फायदा है। नोट बुक नहीं निकाला तो समझो - बाबा को याद नहीं किया। नोट बुक सदा हाथ में रखो। अपना चार्ट देखो - कितना समय बाप को याद किया। याद बिगर जंक उतर न सके। कट उतारने के लिए चीज़ को घासलेट में डालते हैं ना। कर्म करते हुए भी बाप को याद करना है तो पुरूषार्थ का फल मिल जायेगा। मेहनत है ना। ऐसे ही थोड़ेही ताज रख देंगे सिर पर। बाबा इतना ऊंच

पद देते हैं, कुछ तो मेहनत करनी है। इसमें हाथ पांव आदि कुछ भी नहीं चलाने हैं। पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है।

- कितना मम्मा को याद करते हैं। बाप कहते हैं याद करते हो, यह तो ठीक है, परन्तु अभी मम्मा के नाम-रूप को याद नहीं करना है। हमको भी उन जैसी धारणा करनी है। हम भी मम्मा जैसे अच्छा बनकर गद्दी लायक बनें। सिर्फ मम्मा की महिमा करने से थोड़ेही हो जायेंगे। बाप तो कहते हैं मामेकम् याद करो, याद की यात्रा में रहना है। मम्मा जैसा ज्ञान सुनाना है। मम्मा की महिमा का सबूत तब हो जब तुम भी ऐसे महिमा लायक बनकर दिखाओ। सिर्फ मम्मा-मम्मा कहने से पेट नहीं भरेगा। और ही पेट पीठ से लग जायेगा। शिवबाबा को याद करने से पेट भरेगा। इस दादा को भी याद करने से पेट नहीं भरेगा। याद करना है एक को। बलिहारी एक की है।

- तुम विश्व के मालिक थे। अभी तुम विश्व के गुलाम क्यों बने हो? सभी से कर्जा लेते रहते हो। इतने सब पैसे कहाँ गये? जैसे बाबा भाषण कर रहे हैं वैसे तुम भी भाषण करो तो बहुतों को आकर्षण हो। तुम लोग बाबा को याद नहीं करते हो तो किसको तीर लगता नहीं। वह ताकत नहीं मिलती। नहीं तो तुम्हारा एक ही भाषण ऐसा सुनें तो कमाल हो जाए। शिवबाबा समझाते हैं भगवान तो एक ही है।

- जब तक मेरी श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो कट कैसे उतरेगी। तुम सबकी पूजा करते रहते हो तो क्या हालत हो गई, इसलिये फिर मुझे आना पड़ता है। तुम कितने धर्म कर्म भ्रष्ट हो गये हो। बताओ हिन्दू धर्म किसने कब स्थापन किया? ऐसे अच्छी ललकार से भाषण करो। तुमको घड़ी-घड़ी बाप याद ही नहीं आता है। कभी-कभी कोई लिखते हैं कि हमारे में तो जैसे बाबा ने आकर

भाषण किया। बाबा बहुत मदद करते रहते हैं। तुम याद की यात्रा में नहीं रहते हो इसलिए चींटी मार्ग की सर्विस करते हो। बाबा का नाम लेंगे तब ही किसको तीर लगेगा।

"बाबा कहते हैं, बाबा कहते हैं", यह तो धुन लगा देनी चाहिए। तुम जब ऐसे-ऐसे भाषण करो, जब ऐसा हम सुनें तब समझें कि अब तुम चींटी से मकोड़े बने हो। बाप कहते हैं मैं तुमको पढ़ाता हूँ, तुम सिर्फ मामेकम् याद करो। इस रथ द्वारा तुमको सिर्फ कहता हूँ कि मुझे याद करो। रथ को थोड़ेही याद करना है। बाबा ऐसे कहते हैं, बाबा यह समझाते हैं, ऐसे- ऐसे तुम बोलो फिर देखो तुम्हारा कितना प्रभाव निकलता है। बाप कहते हैं देह सहित सभी सम्बन्धों से बुद्धि का योग तोड़ो। अपनी देह भी छोड़ी तो बाकी रही आत्मा। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। कई कहते हैं "अहम् ब्रह्मस्मि" माया के हम मालिक हैं। बाप कहते हैं तुम यह भी नहीं जानते कि माया किसको कहा जाता और सम्पत्ति किसको कहा जाता है! तुम धन को माया कह देते हो। ऐसे-ऐसे तुम समझा सकते हो। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। बाप को याद नहीं करते तो तीर नहीं लगता क्योंकि याद का बल नहीं मिलता है। बल मिलता है याद से। जिस योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। बच्चे हर बात में बाबा का नाम लेते रहो तो कभी कोई कुछ कह न सके। सर्व का भगवान बाप तो एक है या सभी भगवान हैं? कहते हैं हम फलाने सन्यासी के फालोअर्स हैं।

अभी तुम बाप से वर्सा ले रहे हो। बाप कहते हैं पवित्र बनो। इसमें कोई विघ्न डालता है तो परवाह नहीं करनी चाहिए। रोटी टुकड़ तो मिल सकती है ना। बच्चों को पुरूषार्थ करना चाहिए तो याद रहेगी। बाबा भक्ति मार्ग का मिसाल बताते हैं - पूजा के टाइम बुद्धियोग बाहर में जाता था तो अपना कान पकड़ते थे, चमाट लगाते थे। अब तो यह है ज्ञान। इसमें भी मुख्य बात है याद की। याद न रहे तो अपने को थप्पड़ मारना चाहिए। माया मेरे ऊपर जीत क्यों पाती। क्या मैं इतना कच्चा हूँ। मुझे तो इन पर जीत पानी है। अपने आपको अच्छी रीति सम्भालना है।

अपने से पूछो मैं इतना महावीर हूँ? औरों को भी महावीर बनाने का पुरूषार्थ करना है। जितना बहुतों को आपसमान बनायेंगे तो ऊंच दर्जा होगा। अपना राज्य-भाग्य लेने के लिए रेस करनी है। अगर हमारे में ही क्रोध है तो दूसरे को कैसे कहेंगे कि क्रोध नहीं करना है। सच्चाई नहीं हुई ना। लज्जा आनी चाहिए। दूसरों को समझायें और वह ऊंच बन जाए, हम नीचे ही रह जायें, यह भी कोई पुरूषार्थ है! (पण्डित की कहानी) बाप को याद करते तुम इस विषय सागर से क्षीर सागर में चले जाते हो। बाकी यह सब मिसाल बाप बैठ समझाते हैं, जो फिर भक्ति मार्ग में रिपीट करते हैं। बाप कहते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। इनमें मेरा भी पार्ट है। मैं हूँ सर्व शक्तिमान। मेरे को याद करने से तुम पवित्र बन जाते हो। सबसे जास्ती चुम्बक है शिवबाबा, वही ऊंच ते ऊंच रहते हैं। अच्छा!

- बाबा ने बताया - हमारा अपना घरघाट मित्र-सम्बन्धी आदि कुछ भी नहीं, हमको क्या याद पड़ेगा, सिवाए बाप के और तुम बच्चों के कुछ नहीं है। सब कुछ एक्सचेंज कर दिया। बाकी बुद्धि कहाँ जायेगी। बाबा को रथ दिया है। जैसे तुम वैसे हम पढ़ रहे हैं। सिर्फ रथ बाबा को लोन पर दिया है।

- सब बच्चे ज्ञान सागर के साथ तो हैं ही। इतने सब बच्चे एक जगह तो रह नहीं सकते। भल जो साथ हैं वह नज़दीक में डायरेक्ट ज्ञान सुनते हैं और जो दूर हैं उन्हों को देरी से मिलता है। परन्तु ऐसे नहीं कि साथ वाले जास्ती उन्नति को पाते हैं और दूर वाले कम उन्नति को पाते हैं। नहीं, प्रैक्टिकल देखा जाता है जो दूर हैं वह जास्ती पढ़ते हैं और उन्नति को पाते हैं। इतना जरूर है बेहद का बाप यहाँ हैं। ब्राह्मण बच्चों में भी नम्बरवार हैं। बच्चों को दैवीगुण भी धारण करने हैं। कोई-कोई बच्चों से बड़ी-बड़ी गफलत होती है। समझते भी हैं बेहद का बाप जिसको सारी सृष्टि याद करती है, वह हमारी सेवा में उपस्थित है और हमको ऊंच ते ऊंच बनाने का मार्ग

बताते हैं। बहुत प्यार से समझाते हैं फिर भी इतना रिगार्ड देते नहीं। बांधेलियाँ कितनी मार खाती हैं, तड़फती हैं फिर भी याद में रह अच्छा उठा लेती हैं। पद भी ऊंच बन जाता है। बाबा सबके लिए नहीं कहते हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तो हैं ही। बाप बच्चों को सावधान करते हैं, सब तो एक जैसे हो न सकें। बांधेलियाँ आदि बाहर में रहकर भी बड़ी कमाई करती हैं। यह गीत तो भक्ति मार्ग वालों का बना हुआ है। परन्तु तुम्हारे लिए अर्थ करने जैसा भी है, वह क्या जानें, पिया कौन है, किसका पिया है? आत्मा खुद को ही नहीं जानती तो बाप को कैसे जाने। है तो आत्मा ना।

- बाप कितना ऊंच पढ़ाते हैं। इसमें सिर्फ बुद्धि से बाप को याद करना है। बत्ती आदि जगाने की भी दरकार नहीं। कहाँ भी बैठे याद करो। परन्तु माया ऐसी है जो बाप की याद भुला देती है। याद में ही विघ्न पड़ते हैं। यही तो युद्ध है ना। आत्मा पवित्र बनती ही है बाप को याद करने से। पढ़ाई में माया कुछ नहीं करती। पढ़ाई से याद का नशा ऊंच है, इसलिए प्राचीन योग गाया हुआ है। योग और ज्ञान कहा जाता है। योग के लिए ज्ञान मिलता है-ऐसे-ऐसे याद करो। और फिर सृष्टि चक्र का भी ज्ञान है। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को और कोई नहीं जानते। भारत का प्राचीन योग सिखलाते हैं। प्राचीन तो कहा जाता है नई दुनिया को।

- बाबा व्यापारी भी है ना। वह है विनाशी रत्नों के व्यापारी। यह है ज्ञान रत्नों के। योग में ही बहुत बच्चे फेल होते हैं। एक्यूरेट याद में कोई घण्टा डेढ़ भी मुश्किल रह सकते हैं। 8 घण्टा तो पुरूषार्थ करना है। तुम बच्चों को शरीर निर्वाह भी करना है। बाबा ने आशिक- माशूक का भी मिसाल दिया है। बैठे-बैठे याद किया और झट सामने आ जाते। यह भी एक साक्षात्कार है। वह उनको याद करते, वह उनको याद करते। यहाँ तो फिर एक है माशूक, तुम सब हो आशिक। वह सलोना माशूक तो सदैव गोरा है। एवर प्योर। बाप कहते हैं मैं मुसाफिर सदैव खूबसूरत हूँ। तुमको

भी खूबसूरत बनाता हूँ। इन देवताओं की नेचुरल ब्युटी है। यहाँ तो कैसे-कैसे फैशन करते हैं। भिन्न-भिन्न ड्रेस पहनते हैं।

पुरूषार्थ अनुसार ही बनेगी। तुम हो स्टूडेन्ट, वन्डरफुल। स्कूल में भी बच्चों को दौड़ाते हैं ना निशान तक। बाबा भी कहते हैं तुमको निशान तक दौड़कर फिर यहाँ ही आना है। याद की यात्रा से तुम दौड़कर जाओ फिर तुम नम्बरवन में आ जायेंगे। मुख्य है याद की यात्रा। कहते हैं - बाबा हम भूल जाते हैं। अरे बाप इतना तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको तुम भूल जाते हो। भल तूफान तो आयेंगे। बाप हिम्मत दिलायेंगे ना। साथ-साथ कहते हैं यह युद्ध-स्थल है। युद्धिष्ठिर भी वास्तव में बाप को कहना चाहिए जो युद्ध सिखलाते हैं। युद्धिष्ठिर बाप तुमको सिखलाते हैं - माया से तुम युद्ध कैसे कर सकते हो। इस समय युद्ध का मैदान है ना। बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, उन पर जीतने से तुम जगत जीत बनेंगे। तुमको मुख से कुछ भी जपना, करना नहीं है, चुप रहना है। भक्ति मार्ग में कितनी मेहनत करते हैं। अन्दर राम-राम जपते हैं, उसको ही कहा जाता है नौधा भक्ति। तुम जानते हो बाबा हमको अपनी माला का बना रहे हैं। तुम रूद्र माला के मणके बनने वाले हो जिसको फिर पूजेंगे। रूद्र माला और रूण्ड माला बन रही है। विष्णु की माला को रूण्ड कहा जाता है। तुम विष्णु के गले का हार बनते हो। कैसे बनेंगे? जब दौड़ी में विन करेंगे। बाप को याद करना है और 84 के चक्र जानना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। तुम कैसे लाइट हाउस हो। एक आंख में मुक्तिधाम, एक में जीवनमुक्तिधाम। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा, सुखधाम के मालिक बन जायेंगे। तुम्हारी आत्मा कहती है - अभी हम आत्मायें जायेंगे अपने घर। घर को याद करते-करते जायेंगे। यह है याद की यात्रा। तुम्हारी यात्रा देखो कैसी फर्स्टक्लास है। बाबा जानते हैं हम ऐसे बैठे-बैठे क्षीरसागर में जायेंगे। विष्णु को क्षीर सागर में दिखाते हैं ना। बाप को याद करते-करते क्षीर सागर में चले जायेंगे। क्षीर सागर अभी तो है नहीं। जिन्हों ने तलाव बनाया है जरूर क्षीर डाला होगा। आगे तो क्षीर (दूध) बहुत सस्ता था। एक पैसे का लोटा भरकर आता था। तो क्यों नहीं तलाव

भरता होगा। अभी तो क्षीर है कहाँ। पानी ही पानी हो गया है। बाबा ने नेपाल में देखा है - बहुत बड़ा विष्णु का चित्र है। सांवरा ही बनाया है। अभी तुम विष्णुपुरी के मालिक बन रहे हो - याद की यात्रा से और स्वदर्शन चक्र फिराने से। दैवीगुण भी यहाँ धारण करने हैं। यह है पुरूषोत्तम संगमयुग। पढ़ते-पढ़ते तुम पुरूषोत्तम बन जायेंगे। आत्मा का कनिष्टपना छूट जायेगा। बाबा रोज़-रोज़ समझाते हैं - नशा चढ़ना चाहिए।

परमात्मा बाप आकर आत्माओं को प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अपना बनाते हैं। उनके तो जरूर ढेर बच्चे होंगे। शिवबाबा की तो सब सन्तान हैं, उनको सब याद करते हैं। फिर भी कोई-कोई उनको भी नहीं मानते, पक्के नास्तिक होते हैं - जो कहते हैं यह संकल्प की दुनिया बनी हुई है। अभी तुमको बाप समझाते हैं, यह बुद्धि में याद रखो - हम पढ़ रहे हैं। पढ़ाने वाला है शिवबाबा। यह रात-दिन याद रहना चाहिए। यही माया घड़ी-घड़ी भुला देती है, इसलिए याद करना होता है। बाप, टीचर, गुरू तीनों को भूल जाते हैं। है भी एक ही फिर भी भूल जाते हैं। रावण के साथ लड़ाई इसमें है। बाप कहते हैं-हे आत्मायें, तुम सतोप्रधान थी, अभी तमोप्रधान बनी हो। जब शान्तिधाम में थी तो पवित्र थी। प्योरिटी के बिगर कोई आत्मा ऊपर में रह नहीं सकती इसलिए सब आत्मायें पतित-पावन बाप को बुलाती रहती हैं।

तुम जानते हो यह मनुष्य सृष्टि कैसे ट्रांसफर होती है। प्वाइंट्स तो बच्चों को बहुत मिलती हैं। फिर भी बाबा कहते हैं - और कुछ धारणा नही होती है, मुख नहीं चलता है तो अच्छा तुम बाप को याद करते रहो तो तुम भाषण आदि करने वालों से ऊंच पद पा सकते हो। भाषण करने वाले कोई समय तूफान में गिर पड़ते हैं। वह गिरे नहीं, बाप को याद करते रहें तो जास्ती पद पा सकते हैं। सबसे जास्ती जो विकार में गिरते हैं तो 5 मार (मंजिल) से गिरने से हडगुड टूट जाते हैं। पांचवी मंजिल है - देह-अभिमान। चौथी मंजिल है काम फिर उतरते आओ। बाप कहते हैं

काम महाशत्रु है। लिखते भी हैं बाबा हम गिर पड़े। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि हम गिर पड़े। काला मुँह करने से बड़ी चोट लगती है फिर दूसरे को कह न सकें कि काम महाशत्रु है। बाबा बार-बार समझाते हैं - क्रिमिनल आंखों की बहुत सम्भाल करनी है। सतयुग में नंगन होने की बात ही नहीं। क्रिमिनल आई होती नहीं। सिविल आई हो जाती है। वह है सिविलीयन राज्य। इस समय है क्रिमिनल दुनिया। अभी तुम्हारी आत्मा को सिविलाइज मिलती है, जो 21 जन्म काम देती है। वहाँ कोई भी क्रिमिनल नहीं बनते। अब मुख्य बात बाप समझाते हैं बाप को याद करो और 84 के चक्र को याद करो। यह भी वन्डर है जो श्री नारायण है वही अन्त में आकर भाग्यशाली रथ बनते हैं। उनमें बाप की प्रवेशता होती है तो भाग्यशाली बनते हैं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा, यह 84 जन्मों की हिस्ट्री बुद्धि में रहनी चाहिए। अच्छा!

अभी तुम हो आधाकल्प के आशिक। तुम आकर एक माशूक पर फिदा हुए हो, जलने की तो बात नहीं। जैसे वह आशिक-माशूक होते हैं तो वह एक-दो के आशिक बन जाते हैं। यहाँ वह एक ही माशूक है, बाकी सब हैं आशिक। आशिक उस माशूक को भक्तिमार्ग में याद करते रहते हैं। माशूक आप आओ तो हम तुम्हारे पर बलि चढ़ें। तुम्हारे सिवाए हम किसको भी याद नहीं करेंगे। यह तुम्हारा जिस्मानी लव नहीं है। उन आशिक-माशूक का जिस्मानी लव होता है। बस एक-दो को देखते रहते हैं, देखने से ही जैसे तृप्त हो जाते हैं। यहाँ तो एक माशूक बाकी सब हैं आशिक। सब बाप को याद करते हैं। भल कोई नेचर आदि को भी मानते हैं। फिर भी ओ गॉड, हे भगवान मुख से जरूर निकलता है। सब उनको बुलाते हैं, हमारे दु:ख दूर करो। भक्तिमार्ग में तो बहुत आशिक-माशूक होते हैं, कोई किसका आशिक, कोई किसका आशिक। हनूमान के कितने आशिक होंगे? सब अपने-अपने माशूक के चित्र बनाकर फिर आपस में मिलकर बैठ उनकी पूजा करते हैं। पूजा कर फिर माशूक को डुबो देते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं निकलता।

- आगे बहुतों को साक्षात्कार होता था भावना अनुसार। बहुत लाल-लाल हो जाते थे। बस हम नहीं सहन कर सकते। अब वह तो साक्षात्कार था। बाप कहते हैं साक्षात्कार से कोई कल्याण नहीं। यहाँ तो मुख्य है याद की यात्रा। जैसे पारा खिसक जाता है ना। याद भी घड़ी-घड़ी खिसक जाती है। कितना चाहते हैं बाप को याद करें फिर और-और ख्याल आ जाते हैं। इसमें ही तुम्हारी रेस है। ऐसे नहीं कि फट से पाप मिट जायेंगे। समय लगता है। कर्मातीत अवस्था हो जाए तो फिर यह शरीर ही न रहे। परन्तु अभी कोई कर्मातीत अवस्था को नहीं पा सकते हैं। फिर उनको सतयुगी शरीर चाहिए। तो अब तुम बच्चों को बाप को ही याद करना है। अपने को देखते रहो - हमसे कोई बुरा काम तो नहीं होता है? पोतामेल जरूर रखना है। ऐसे व्यापारी झट साहूकार बन सकते हैं।

- कम से कम यह तो बताओ - बाप को याद करो और पवित्र बनो। पवित्रता में ही फेल होते हैं क्योंकि याद नहीं करते हैं। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। हम बेहद के बाप के सम्मुख बैठे हैं जिसको कोई भी नहीं जानते हैं। ज्ञान का सागर वह शिवबाबा ही है। देहधारी से बुद्धि योग निकाल देना चाहिए। शिवबाबा का यह रथ है। इनका रिगार्ड नहीं रखेंगे तो धर्मराज द्वारा बहुत डन्डे खाने पड़ेंगे। बड़ों का रिगार्ड तो रखना है ना। आदि देव का कितना रिगार्ड रखते हैं। जड़ चित्र का इतना रिगार्ड है तो चैतन्य का कितना रखना चाहिए। अच्छा!

- बाप कहते हैं तुम आत्मा रूप-बसन्त बनते हो। तुम्हारे मुख से रत्न ही निकलने चाहिए। अगर पत्थर निकलते हैं तो गोया आसुरी बुद्धि ठहरे। गीत भी बच्चों ने सुना। बच्चे कहते हैं - बाबा प्यार का सागर, सुख का सागर है। शिवबाबा की ही महिमा है। बाप कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। इसमें बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे फेल होते हैं। देही-अभिमानी स्थिति में ठहर नहीं सकते। देही-अभिमानी बनेंगे तब ही इतना ऊंच पद पायेंगे। कई बच्चे फालतू बातों में बहुत टाइम वेस्ट करते हैं।

- बाप बच्चों को समझाते हैं बच्चे माया बड़ा जोर से थप्पड़ लगाती है, विकर्म करा देती है इसलिए कचहरी करो, आपेही अपनी कचहरी करना अच्छा है। तुम अपने को आपेही राजतिलक देते हो तो अपनी जांच करनी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप श्रीमत देते हैं ऐसे-ऐसे करो, दैवीगुण धारण करो। जो करेंगे वह पायेंगे। तुम्हारे तो खुशी में रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। बेहद का बाप मिला है, उनकी सर्विस में मददगार बनना है। अन्धों की लाठी बनना है। जितना जास्ती बनेंगे, उतना अपना ही कल्याण होगा। बाबा को तो घड़ी-घड़ी याद करना है। नेष्ठा में एक जगह बैठने की बात नहीं। चलते-फिरते याद करना है। ट्रेन में भी तुम सर्विस कर सकते हो। तुम कोई को भी समझा सकते हो कि ऊंच ते ऊंच कौन है? उनको याद करो। वर्सा उनसे ही मिलेगा। आत्मा को बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। पुरूषार्थ नहीं करते हैं तो गोया अपने पांव पर कुल्हाड़ा मारते हैं। चार्ट लिखते रहो तो डर रहेगा। कोई-कोई लिखते भी हैं, बाबा देखेंगे तो क्या कहेंगे। चाल-चलन में बहुत फ़र्क रहता है। तो बाप कहते हैं गफलत छोड़ो।

- याद से विकर्म विनाश होते हैं और पढ़ाई से स्टेट्स मिलती है। दैवीगुण धारण करने हैं। हाँ, इतना जरूर है माया के तूफान आयेंगे। सवेरे उठकर बाबा से बातें करना बड़ा अच्छा है। भक्ति और ज्ञान दोनों के लिए यह टाइम अच्छा है। मीठी-मीठी बातें करनी चाहिए। अभी हम श्रेष्ठाचारी दुनिया में जायेंगे। बूढ़ों के दिल में तो यह रहता है ना कि हम शरीर छोड़ गर्भ में जायेंगे। बाबा कितना नशा चढ़ाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें बैठ करो तो भी तुम्हारा जमा हो जाए। शिवबाबा हमको नर्कवासी से स्वर्गवासी बना रहे हैं। पहले-पहले हम आते हैं, सारा आलराउन्ड पार्ट हमने बजाया है। अब बाबा कहते हैं इस छी-छी चोले को छोड़ दो। देह सहित सारी दुनिया को भूल जाओ। यह है बेहद का सन्यास। वहाँ भी तुम बूढ़े होंगे तो साक्षात्कार होगा - हम बच्चा बनते हैं। खुशी

होती है। बचपन तो सबसे अच्छा है। ऐसे-ऐसे सवेरे बैठ विचार सागर मंथन करना है। प्वाइंट्स निकलेंगी तो तुमको खुशी होगी। खुशी में घण्टा डेढ़ घण्टा बीत जाता है। जितनी प्रैक्टिस होती जायेगी उतनी खुशी बढ़ती जायेगी। बहुत मज़ा आयेगा और फिर घूमते-फिरते याद करना है। फुर्सत बहुत है, हाँ विघ्न पड़ेंगे, उसमें कोई शक्य नहीं। धन्धे में मनुष्य को नींद नहीं आती। सुस्त लोग नींद करते हैं। तुम जितना हो सके शिवबाबा को ही याद करते रहो। तुमको बुद्धि में रहता है शिवबाबा के लिए हम भोजन बनाते हैं। शिवबाबा के लिए हम यह करते हैं। भोजन भी शुद्धि से बनाना है। ऐसी चीज़ न हो जिससे खिटपिट हो जाए। बाबा खुद भी याद करते हैं। अच्छा!

ज्ञान भगवान तुमको भी सुनाते हैं और किसको पता ही नहीं | नॉलेज तो बहुत सहज है | परन्तु भगवान पढ़ाते हैं यह भूल जाते हैं | टीचर को ही भूल जाते हैं | नहीं तो स्टूडेन्ट कभी टीचर को भूलते नहीं हैं | घड़ी-घड़ी कहते हैं बाबा हम आपको भूल जाते हैं | बाबा कहते हैं, माया कम नहीं | तुम देह-अभिमानी बन पड़ते हो | बहुत विकर्म बन जाते हैं | ऐसा कोई खाली दिन नहीं जो विकर्म न होते हों | एक मुख्य विकर्म यह करते हो जो बाप के फ़रमान को ही भूल जाते हो | बाप फ़रमान करते हैं मनमनाभव, अपने को आत्मा समझो | यह फरमान बहुत सहज भी है तो बहुत कड़ा है | कितना भी माथा मारे फिर भी भूल जायेंगे क्योंकि आधाकल्प का देह-अभिमान है ना | 5 मिनट भी यथार्थ रीति याद में बैठ नहीं सकते | अगर सारा दिन याद में रहें फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाए | बाप ने समझाया है इसमें मेहनत है | तुम वह जिस्मानी पढ़ाई तो अच्छी रीति पढ़ते हो | हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ने की कितनी प्रैक्टिस है | परन्तु याद की यात्रा का बिल्कुल ही अभ्यास नहीं | अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना – यह है नई बात | विवेक कहता है ऐसे बाप को तो अच्छी रीति याद करना चाहिए | थोड़ा टाइम निकाल रोटी टुक्कड़ खाते हैं, वह भी बाबा की याद में | जितना याद में रहेंगे उतना पावन बनेंगे | ऐसे बहुत बच्चे हैं, जिनके पास इतने पैसे हैं जो ब्याज़ मिलता रहे | बाप

को याद करते रोटी टुक्कड़ खाते रहें, बस | परन्तु माया याद करने नहीं देती | कल्प पहले जिसने जितना पुरुषार्थ किया है उतना ही करेंगे | टाइम लगता है | कोई ज़ल्दी दौड़ी लगाकर पहुँच जायें यह हो न सके |

अभी तुम्हारी बुद्धि अलौकिक है, और कोई की बुद्धि में यह बातें रमण नहीं करेंगी | यहाँ तुम जानते हो हम सत बाबा, शिवबाबा के संग में बैठे हैं | ऊँच ते ऊँच बाप हमको पढ़ा रहे हैं | वह है मोस्ट स्वीटेस्ट | उस स्वीटेस्ट बाप को बहुत लव से याद करना है क्योंकि बाप कहते हैं बच्चो मुझे याद करने से तो तुम ऐसा पुरुषोत्तम बनेंगे और ज्ञान रत्नों को धारण करने से तुम भविष्य 21 जन्मों के लिए पदमा पदमपति बनेंगे | बाप जैसे वर देते हैं | वर मिलेगा मीठी-मीठी सजनी को अथवा मीठे-मीठे सपूत बच्चो को |

बाप जैसे स्वीट का पहाड़ है | स्वीट बाप ही आकर कड़ुई दुनिया को बदल स्वीट बनाते हैं | बच्चे जानते हैं स्वीटेस्ट बाबा हमको मोस्ट स्वीटेस्ट बना रहे हैं | हुबहू आप समान बनाते हैं | जो जैसा होगा वैसा बनायेगा ना | तो ऐसा स्वीटेस्ट बनने के लिए स्वीट बाप को और स्वीट वर्से को याद करना है | बाबा बार-बार बच्चों को कहते हैं मीठे बच्चे अपने को अशरीरी समझ मुझे याद करो तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ याद से ही तुम्हारे सब कल कलेष मिट जायेंगे | तुम एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बन जायेंगे | तुम मोस्ट स्वीट बन जायेंगे | आत्मा स्वीट बनेगी तो शरीर भी स्वीट मिलेगा | बाबा तुम्हारा टीचर भी है ना | तो टीचर ज़रूर बच्चों को शिक्षा देंगे बच्चे, याद का रोज़ अपना चार्ट रखो | जैसे व्यापारी लोग रात को मुरादी सम्भालते हैं ना | तो तुम व्यापारी हो, बाप से कितना बड़ा व्यापार करते हो | जितना बाप को जास्ती याद करेंगे उतना

बाप से अथाह सुख पायेंगे, सतोप्रधान बनेंगे | रोज़ अपने अन्दर जांच करनी है | जैसे नारद को कहा ना आईने में अपना मुँह देखो कि लक्ष्मी को वरने के लायक हूँ! तुमको भी देखना है हम ऐसा बनने लायक हैं! नहीं तो हमारे में क्या-क्या खामियाँ हैं, क्योंकि तुम बच्चों को परफेक्ट बनना है | बाप आये ही हैं परफेक्ट बनाने लिए | तो ईमानदारी से अपनी जांच करनी है – हमारे में क्या-क्या खामी है? जिस कारण समझता हूँ कि ऊँच पद नहीं पा सकूंगा | इन भूतों को भगाने की युक्ति बाप बताते रहते हैं | बाप बैठ सभी आत्माओं को देखते हैं, किसकी खामी देखते हैं तो फिर उनको करेन्ट देते हैं कि इनका यह विघ्न निकल जाये | जितना बाप की मदद कर बाप की महिमा करते रहेंगे तो यह भूत भागते रहेंगे और तुमको बहुत ख़ुशी होगी, इसलिए अपनी पूरी जांच करनी है – सारे दिन में मन्सा, वाचा कर्मणा किसी को दुःख तो नहीं दिया? साक्षी हो अपनी चलन को देखना है, औरों की चलन को भी देख सकते हो परन्तु पहले अपने को देखना है | सिर्फ़ दूसरे को देखने से अपना भूल जायेंगे | हरेक को अपनी सर्विस करनी है | दूसरों की सर्विस करना माना अपनी सर्विस करना | तुम शिवबाबा की सर्विस नहीं करते हो | शिवबाबा तो सर्विस पर आये हैं ना |

बाप समझाते हैं मीठे बच्चों अब देही-अभिमानी बनो | योग की ताकत से तुम किसको थोड़ा भी समझायेंगे तो उनको झट तीर लग जायेगा | जिसको तीर लगता है तो एकदम घायल कर देते हैं | पहले घायल होते हैं फिर बाबा के बनते हैं | बाप को प्यार से याद करते हैं तो बाप को भी कशिश होती है | कई तो बिल्कुल ही याद नहीं करते | बाबा को तरस पड़ता है फिर भी कहेंगे बच्चे उन्नति को पाओ | आगे नम्बर में आओ | जितना ऊँच पद पायेंगे उतना नज़दीक आयेंगे और उतना अथाह सुख पायेंगे | पतित-पावन तो एक ही बाप है, इसलिए एक बाप को याद करना है | सिर्फ़ एक बाप भी नहीं, साथ-साथ फिर स्वीट होम को भी याद करना

है | सिर्फ़ स्वीट होम को भी नहीं, माल-मिलकियत भी चाहिए इसलिए स्वर्गधाम को भी याद करना है | पवित्र ज़रूर बनना है | जितना हो सके बच्चों को अन्तर्मुख हो रहना है | जास्ती बोलो नहीं, शान्त में रहो | बाप बच्चों को शिक्षा देते हैं मीठे बच्चे अशान्ति नहीं फैलानी है | अपने घर-गृहस्थ में रहते भी बहुत शान्ति में रहो | अन्तर्मुख हो रहो | बहुत मीठा बोलो | कोई को दुःख न दो | क्रोध न करो | क्रोध का भूत होगा तो याद में रह नहीं सकेंगे | बाप कितना मीठा है, तो बच्चों को भी समझाते हैं, बुद्धि को धक्का नहीं खिलाओ | बाह्यमुखी मत बनो, अन्तर्मुखी बनो |

बाप कितना लवली प्युअर है | तुम बच्चों को भी आप समान प्युअर बनाते हैं | तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना अथाह लवली बनेंगे | देवतायें कितने लवली हैं, जो अभी तक भी उनके जड़-चित्रों को पूजते रहते हैं | तो बाप कहते हैं बच्चे तुम्हें फिर से ऐसा लवली बनना है | कोई भी देहधारी, कोई भी चीज़ पिछाड़ी को याद न आये | इतना लव से बाप को याद करना है, जो बस बैठे-बैठे प्रेम के आँसू बहते रहें | बाबा, ओ मीठा बाबा आप से तो हमें सब कुछ मिल गया है | बाबा आप हमें कितना लवली बनाते हो | आत्मा लवली बनती है ना | जैसे बाप अति लवली प्युअर है, ऐसे प्युअर बनना है | बहुत लव से बाप को याद करना है | बाबा आपके सिवाए हमारे सामने दूसरा कोई न आये | बाप जैसा प्यारा कोई है नहीं | हरेक उस एक माशूक के आशिक बनते हैं | तो उस माशूक को बहुत याद करना है | बाप ने बताया है वह जिस्मानी आशिक-माशूक कोई इकट्ठे नहीं रहते, एक बार देख लिया बस | तो बाप कहते हैं मीठे बच्चे, मामेकम् याद करो तो बेडा पार है | जिस मीठे बाप द्वारा हम हीरे जैसा बनते हैं ऐसे बाप के साथ हमारा कितना लव है | बहुत प्रेम से बाप को याद कर अन्दर रोमांच खड़े हो जाने चाहिए | जो भी डिफेक्ट्स हैं उनको निकाल प्युअर डायमण्ड बनना है | अगर

थोड़ी भी कमी होगी तो वैल्यु कम हो जायेगी | अपने को बहुत वैल्युबुल हीरा बनाना है | बाप की याद सतानी चाहिए | भूलनी नहीं चाहिए बल्कि और ही याद सतानी चाहिए | बाबा-बाबा कह एकदम ठर जाना (शीतल हो जाना) चाहिए | बाप से वर्सा कितना भारी मिलता है |

- बाप जो इतना ऊँचा बनाते हैं उनको तो कितना याद करना चाहिए इसलिए बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे | सतोप्रधान बन जायेंगे | यहाँ अन्दर आने से ख़ुशी में रोमांच खड़े हो जाने चाहिए | मैं यह बनता हूँ | मैं अन्दर आता हूँ और इन लक्ष्मी-नारायण को देखता हूँ, बड़ा खुश होता हूँ | ओहो! बाबा हमको यह बनाते हैं | वाह बाबा वाह! लौकिक घर में किसका बाप बड़े मर्तबे पर होता है तो बच्चों को ख़ुशी होती है मेरा बाप वजीर है | तुमको कितनी ख़ुशी होनी चाहिए कि बाप हमको यह बनाते हैं | परन्तु माया भुला देती है, बड़ा सामना करती है | तुम बच्चों को बहुत ख़ुशी रहनी चाहिए, दैवीगुण भी धारण करने चाहिए | आत्म-अभिमानी भव |

- बच्चे ही धन देते हैं और लेते हैं | दो मुट्ठी देते हैं और भविष्य में लेते हैं | कोई के पास कुछ है नहीं, तो कुछ देते नहीं बाकी हाँ अच्छा पढ़ते हैं तो भविष्य में अच्छा पद पाते हैं, यह भी बहुत थोड़े हैं, जिनको याद रहता है कि हम नई दुनिया के लिए पढ़ रहे हैं | यह याद रहे तो भी मनमनाभव है | परन्तु बहुत हैं जो दुनियावी बातों में समय बरबाद करते हैं, बाबा क्या पढ़ाते हैं, कैसे पढ़ाते हैं, कितना ऊँच पद पाना है, यह सब कुछ भूल जाते हैं | आपस में ही लड़ते झगड़ते टाइम वेस्ट करते रहते है | जो बड़ा इम्तहान पास करते हैं, वह कभी अपना समय वेस्ट

नहीं करते | अच्छी तरह पढ़ेंगे, श्रीमत पर चलेंगे | श्रीमत पर तो चलना पड़े ना | बाप कहते हैं तुम तो नाफ़रमानबरदार हो | श्रीमत देता हूँ, बाप को याद करो तो भूल जाते हो | यह तो कमज़ोरी कहेंगे | माया एकदम नाक से पकड़कर, डसकर सिर पर बैठ जाती है | यह युद्ध का मैदान है ना | अच्छे-अच्छे बच्चों पर माया जीत पा लेती है | फिर नाम किसका बदनाम होता है? शिवबाबा का | गायन भी है गुरु का निंदक ठौर न पाये | ऐसे माया से हराने वाले फिर ठौर कैसे पायेंगे | अपने कल्याण के लिए बुद्धि चलानी चाहिए कि हम कैसे पुरुषार्थ कर बाबा से वर्सा लूं | अच्छे-अच्छे महारथियों जैसा बनकर सबको रास्ता बताऊँ | बाबा सर्विस की युक्तियाँ तो बहुत सहज बतलाते हैं | बाप कहते हैं तुम मुझे बुलाते आये हो, अब मैं कहता हूँ कि मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे | पावन दुनिया के चित्र हैं ना | यह है मुख्य | यहाँ एम ऑब्जेक्ट रखी जाती है | ऐसे नहीं कि डॉक्टरी पढ़नी है तो डॉक्टर को याद करना है | बैरिस्टरी पढ़नी है तो कोई बैरिस्टर को याद करना है | बाप कहते हैं सिर्फ़ मुझ एक को याद करो | बस मैं तुम्हारी सब मनोकामना पूर्ण करने वाला हूँ | तुम सिर्फ़ मुझे याद करो | भल माया तुमको कितना भी हैरान करे, फिर भी युद्ध है ना | ऐसे नहीं फट से जीत पा लेंगे | इस समय तक एक ने भी माया पर जीत नहीं पाई है, जीत पाने से फिर जगतजीत होने चाहिए | गाते हैं मैं गुलाम, मैं गुलाम तेरा....| यहाँ तो माया को गुलाम बनाना है | वहाँ माया कभी दुःख नहीं देगी | आजकल तो दुनिया ही बड़ी गन्दी है | एक दो को दुःख देते ही रहते हैं | तो कितना मीठा बाबा है, जिसको अपने लिए कोई तमन्ना नहीं | ऐसे बाप को याद नहीं करते वा कोई कहे हम शिवबाबा को मानते हैं, ब्रह्मा बाबा को नहीं | परन्तु यह दोनों इकट्ठे हैं, बिगर दलाल सौदा हो न सके | बाबा का रथ है, इनका नाम ही है भाग्यशाली रथ | यह भी जानते हो सबसे नम्बरवन ऊँच है यह | क्लास में मानीटर का भी मान होता है | रिगार्ड रखते हैं | नम्बरवन सिकीलधा बच्चा तो यह है ना | वहाँ भी सब राजाओं को इनका (श्री नारायण का)

रिगार्ड रखना है | यह जब समझें तब रिगार्ड रखने का अक्ल आये | यहाँ जब रिगार्ड रखना सीखो तब वहाँ भी रखो | नहीं तो बाकी मिलेगा क्या? शिवबाबा को याद भी नहीं कर सकते | बाप कहते हैं याद से ही तुम्हारा बेडा पार होता है | बेहद की राजाई देते हैं | ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए | अन्दर में कितना लव होना चाहिए | इनका देखो बाप से कितना लव है | लव हो तब तो सोने का बर्तन बने, जिनका बर्तन सोने का होगा उनकी चलन बड़ी फर्स्टक्लास होगी | ड्रामा अनुसार राजधानी स्थापन होनी है | उनमें तो सब प्रकार के चाहिए |

वहाँ शादियाँ कितनी रॉयल होती हैं | तुमने सब साक्षात्कार किया है | जितना आगे बढ़ते जायेंगे तो तुम सब साक्षात्कार करेंगे | अच्छे फर्स्टक्लास योगी बच्चों की आयु बढ़ती जायेगी | बाप कहते हैं योग से अपनी आयु बढ़ाओ | बच्चे समझते हैं योग में हम ढीले हैं | याद में रहने लिए माथा मारते हैं परन्तु रह नहीं सकते | घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं | वास्तव में यहाँ वालों का चार्ट बहुत अच्छा होना चाहिए | बाहर तो गोरख़धन्धे में रहते हैं | बाप को याद करते-करते यहाँ ही तुमको सतोप्रधान बनना है | कम से कम भोजन बनाते, काम करते 8 घण्टा मुझे याद करो तब कर्मातीत अवस्था अन्त में होगी | कोई कहे मैं 6-8 घण्टा योग में रहता हूँ तो बाबा मानेगा नहीं | बहुतों को लज्जा आती है, चार्ट नहीं लिखते हैं | आधा घण्टा भी याद में नहीं रह सकते | मुरली सुनना कोई याद नहीं है, यह तो धन कमाते हो | याद में तो सुनना बन्द हो जाता है | कई बच्चे लिख देते हैं याद में मुरली सुनी, परन्तु यह याद थोड़ेही है | बाबा खुद कहते हैं मैं घड़ी-घड़ी भूल जाता हूँ | याद में भोजन करने बैठता हूँ, बाबा आप तो अभोक्ता हो, यह कैसे कहूँ बाबा आप भी खाते हो, हम भी खाते हैं | कोई-कोई बात में कहेंगे कि बाबा भी साथ है | मुख्य है याद की यात्रा | मुरली की सब्जेक्ट बिल्कुल अलग है | याद से पवित्र

बनते हैं | आयु बढ़ती है | बाकी ऐसे नहीं कि मुरली सुनी तो बाबा इसमें था ना | मुरली सुनने से विकर्म विनाश नहीं होंगे | मेहनत है | बाबा जानते हैं बहुत बच्चे बिल्कुल याद नहीं कर सकते हैं | याद में रहने की अवस्था, बोल चाल बिल्कुल अलग रहेगा | याद से ही सतोप्रधान बनेंगे | परन्तु माया ऐसी है जो एकदम बुद्धू बना देती है | बहुतों की बीमारी उथल पड़ती है | मोह जो नहीं था वह उथल पड़ता है | फँस मरते हैं | बड़ी मेहनत का काम है | मुरली सुनना यह सब्जेक्ट अलग है | यह है धन कमाने की बात, इसमें आयु नहीं बढ़ेगी, पावन नहीं बनेंगे, विकर्म विनाश नहीं होंगे | मुरली तो बहुत सुनते हैं | फिर विकार में गिरते रहते हैं |

- बाबा जानते हैं यह रूहानी सर्विस नहीं कर सकते तो फिर स्थूल सर्विस | बाबा की याद में रहकर सर्विस करें तो अहो भाग्य | एक दो को याद दिलाते रहो | याद से बहुत बल मिलेगा | याद करने वाले को फिर चार्ट रखना है | चार्ट से मालूम पड़ जाता है | हर एक को बाबा सावधान करते रहते हैं |

- अभी जितना तुम बच्चे बाप को याद करते हो तो लाइट आती रहती है | मनुष्यों को साक्षात्कार होता रहेगा क्योंकि आत्मा प्योर बनेगी ही याद से फिर किसको साक्षात्कार भी हो सकता है | बाप मददगार भी बैठा है, बाप हमेशा बच्चों का मददगार है | पढ़ाई में नम्बरवार हैं | हर एक अपनी बुद्धि से समझ सकते हैं मेरे में कितनी धारणा है |

- सबको यही कहते रहो मामेकम् याद करो | बच्चे कहते हैं बाबा योग में नहीं रह सकते | अरे तुमको सम्मुख कह रहा हूँ – मुझे याद करो फिर योग अक्षर तुम क्यों कहते हो | योग कहने से

ही तुम भूलते भी हो | बाप को याद कौन नहीं कर सकता | लौकिक माँ बाप को कैसे याद करते हो, यह भी माँ बाप हैं ना | यह भी पढ़ते हैं |

घरबार होते, सम्भाल करते पवित्र ज़रूर बनना है | कोई भी अपवित्र काम नहीं करना है | मोह भी बहुतों में होता है | अपने को देखना चाहिए हमने प्रतिज्ञा की है कि आपके सिवाए किसको भी प्यार नहीं करेंगे फिर दूसरों को क्यों प्यार करते हो! जो प्यारे ते प्यारी चीज़ है वह याद आनी चाहिए | फिर और सब देह के सम्बन्ध भूल जायेंगे | सबको देखते ऐसे समझो हम अब स्वर्ग में जा रहते हैं | यह सब कलियुगी बन्धन है | हम दैवी सम्बन्ध में जा रहे हैं | और कोई मनुष्य की बुद्धि में यह ज्ञान नहीं | तुम बाप की याद में अच्छी तरह रहो तो ख़ुशी का पारा चढ़ा रहेगा | जितना हो सके बन्धन कम करते जाओ | अपने को हल्का कर दो | बन्धन बढ़ाने की ज़रूरत नहीं | इस राज्य पाने में खर्चे की ज़रूरत नहीं | बिगर खर्चे विश्व की राजाई लेते हो |

बाप तुम बच्चों को कितना सहज रास्ता बताते हैं, गृहस्थ – व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहो | धन्धा-धोरी आदि करते भी मुझे याद करते रहो | जैसे आशिक और माशूक होते हैं, वह तो एक दो को याद करते रहते हैं | वह उनका आशिक, वह उनका माशूक होता है | यहाँ यह बात नहीं है, यहाँ तो तुम सभी एक माशूक के जन्म-जन्मान्तर से आशिक हो रहते हो | बाप तुम्हारा आशिक नहीं बनता | तुम उस माशूक को आने लिए याद करते आये हो | जब दुःख जास्ती होता है तो जास्ती सुमिरण करते हैं, तब तो गायन भी है दुःख में सुमिरण सब करें, सुख में करे न कोय | इस समय बाप भी सर्वशक्तिमान है, दिन-प्रतिदिन माया भी सर्वशक्तिमान-

तमोप्रधान होती जाती है इसलिए अब बाप कहते हैं मीठे बच्चे देही-अभिमानी बनो | अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो और साथ-साथ दैवीगुण भी धारण करो तो तुम ऐसे (लक्ष्मी-नारायण) बन जायेंगे | इस पढ़ाई में मुख्य बात है ही याद की | ऊँचे ते ऊँच बाप को बहुत प्यार, स्नेह से याद करना चाहिए | वह बाप ही नई दुनिया स्थापन करने वाला है | बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाने इसलिए अब मुझे याद करो तो तुम्हारे अनेक जन्मों के पाप कट जायें | पतित-पावन बाप को ही बुलाते हैं ना | अब बाप आये हैं, तो ज़रूर पावन बनना पड़े | बाप दुःख-हर्ता, सुख-कर्ता है | बरोबर सतयुग में पावन दुनिया थी तो सभी सुखी थे | अब बाप फिर से कहते हैं बच्चे, शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते रहो | अभी है संगमयुग, खिवैया तुमको इस पार से उस पार ले जाते हैं | नईया कोई एक नहीं, सारी दुनिया जैसे एक बड़ा जहाज है, उनको पार ले जाते हैं |

एक बच्चे ने और धर्मों का हिसाब-किताब निकालकर भेजा था | परन्तु जास्ती इन बातों में जाने से कोई फ़ायदा नहीं | यह भी वेस्ट ऑफ़ टाइम हुआ | इतना समय अगर बाप की याद में रहते तो कमाई होती | अपनी तो मुख्य बात है – हम पूरा पुरुषार्थ कर विश्व का मालिक बनें |

अब फिर आत्म-अभिमानी बनना पड़े | आत्मा को ही पवित्र बनना है | बाप ने कहा है बस मुझ एक को ही याद करो और कोई को भी याद न करो | धन-दौलत, मकान, बच्चों आदि में बुद्धि गई तो कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकेंगे | फिर पद कम हो जायेगा और फिर सजायें भी खानी पड़े | अभी हम आत्मा लौटने वाली हैं | पावन बन लौटना है | बाप आये हैं पावन बनाने तो हम ख़ुशी से बाप को क्यों नहीं याद करेंगे जो हमारे विकर्म विनाश हो जायें

| खुद याद करते होंगे तो दूसरों को भी कहने से तीर लगेगा | इसको विचार सागर मंथन कहा जाता है | सुवह को विचार सागर मंथन अच्छा होता है क्योंकि बुद्धि अच्छी होती है, रिफ्रेश होते हैं | भक्ति भी उस समय होती है | गीत है राम सुमिर प्रभात मोरे मन....भक्ति मार्ग में तो सिर्फ़ गाते थे | अभी बाप का डायरेक्शन है कि सवेरे-सवेरे उठ मुझे याद करो | सतयुग में तो राम को सिमरते नहीं |

बाबा कहते हैं जो अच्छा वफ़ादार, सर्विसएबुल बच्चा होगा वह हमको ज़रूर मीठा लगेगा, उनको पुचकार भी देंगे | दूसरे को नहीं देंगे | फिर कहते हैं इनकी पास खातिरी होती है | यह बड़ा आदमी है | ऐसे बहुत नुकसान करते हैं | उल्टा सुल्टा काम करके दोष धरते हैं | समाचार आता है फ़लाना बीड़ी नहीं छोड़ता.....बाबा कहते हैं उनको भी समझाना पड़ता है कि तुम योगबल से विश्व को पावन बना सकते हो तो क्या यह नहीं छोड़ सकते? बाप को याद करो |

बाप कहते हैं बच्चे तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जो पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये | अपने को आत्मा समझें, इसको कहा जाता है कर्मातीत अवस्था |

कोई दैवी गुणों में कच्चे हैं, कोई योग में कच्चे हैं. कोई ज्ञान में कच्चे हैं | कच्चे होने से नापास हो जायेंगे | ऐसे भी नहीं आज कच्चे हैं, कल पक्के नहीं हो सकते | गैलप करते रहेंगे | खुद भी फ़ील करते हैं हम जहाँ तहाँ से फेल हो आते हैं | फ़लाने हमसे होशियार हैं | सीखकर होशियार भी हो सकते हैं | अगर देह-अभिमान होगा तो फिर क्या सीख सकेंगे | मैं आत्मा हूँ यह तो एकदम पक्का कर दो | बाप ने स्मृति दिलाई है | बाप कहते हैं मुझे याद करो तो

विकर्म विनाश होंगे, फिर दैवीगुण धारण होंगे | अपनी नब्ज़ देखनी है कि मैं कहाँ तक लायक बना हूँ?

मनुष्य देखो – मौत से कितना डरते हैं | यहाँ डरने की तो बात ही नहीं | तुम तो कहेंगे अभी मौत न आये | अभी हमने इम्तहान ही पूरा कहाँ किया है | अभी यात्रा पूरी नहीं की है तो शरीर क्यों छूटना चाहिए | ऐसे मीठी-मीठी बातें बाप से करनी है | बहुत अच्छी टेव (आदत) पड़ जायेगी | यहाँ चित्र के आगे आकर बैठ जाओ | तुम जानते हो हमको बाबा से विश्व की राजाई मिलती है | तो ऐसे बाप को बहुत याद करना चाहिए ना | याद नहीं करेंगे तो सजायें भोगनी पड़ेंगी | बाबा को तो याद पड़ गया है कि हम यह बनने वाले हैं | तो बहुत ख़ुशी होती है कि हम यह बनेंगे | देखने से ही नशा चढ़ जाता है | तुमको भी यह बनना है | बाबा हम आपको याद कर ऐसे बनेंगे ज़रूर | और कोई काम नहीं है तो यहाँ चित्रों के सामने आकर बैठ जाओ | बाप द्वारा हमको यह वर्सा मिलता है | यह पक्का कर दो | यह युक्ति कम नहीं है | परन्तु तक़दीर में नहीं है तो याद नहीं करते | बाबा कहते हैं यहाँ आते हो तो बहुत प्रैक्टिस करो | तो जो कुछ ग्रहचारी होगी वह उतर जायेगी | सीढी के चित्र पर यह विचार करो | परन्तु तक़दीर में नहीं है तो श्रीमत पर चल नहीं सकते | बाबा रास्ता बताते हैं माया काट देती है | बाबा युक्तियाँ बहुत बतलाते हैं | बाप और वर्से को याद करते रहो | कहते हैं अतीन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो, जिनको निश्चय है कि हम बाप से वर्सा ज़रूर लेंगे | बाबा स्वर्ग की स्थापना कर हमें उसका मालिक बनाते हैं | चित्र भी ऐसे बने हुए हैं | तुम सिद्ध कर बताते हो कि ब्रह्मा, विष्णु का क्या सम्बन्ध है | और किसको भी पता नहीं, ब्रह्मा का चित्र देख मूँझ जाते हैं | स्थापना में टाइम ज़रूर लगता है, कर्मातीत अवस्था में भी टाइम लगता है | घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं | यह आदत डालनी चाहिए | नौधा भक्ति वाले भी चित्र के आगे बैठ जाते

हैं – हमको दीदार हो | तुम तो यह बनते हो तो तुमको याद करना चाहिए | बैज भी तुम्हारे पास है | बाबा अपना भक्ति मार्ग का मिसाल बताते हैं कि नारायण की मूर्ति से मेरा बहुत प्यार था | वह सब था भक्ति मार्ग | अब बाप कहते मामेकम् याद करो और कुछ भी नहीं करना है | बाबा कहते हैं हम तो ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हैं | हमें तुम माथा क्यों टेकते हो |

- अब बाप कहते हैं मुझे याद करो और दैवीगुण धारण करो | और कोई बात नहीं | तुमको योग में बिठाया जाता है क्योंकि बहुत हैं जो बाबा को याद नहीं करते | अपने ही धन्धों में रहते हैं | उनको फ़ुर्सत ही नहीं | परन्तु इसमें तो काम आदि करते भी बुद्धि से याद करना है | तुम आशिक हो मुझ माशूक के | अब मैं तुमको कहता हूँ और संग तो मुझ एक संग जोड़ो | खाते पीते सिर्फ़ यह आदत डालो कि मैं आत्मा हूँ और बाप को याद करो | बाप तुमको कितना ऊँचा बनाते हैं, तुम यह पाई-पैसे की बात नहीं मानते, मुझे याद नहीं करते | अपने बाल बच्चों को करते हो, मुझे नहीं कर सकते हो | वास्तव में निष्ठा अक्षर कहना रांग है | बाबा डायरेक्ट आकर कहते हैं मामेकम् याद करो |

- बापदादा का विचार है कि एक सेकेण्ड में बच्चों से लिखाकर लेवें कि किसकी याद में बैठे हो? इस लिखने में कोई टाइम नहीं लगता है | हरेक एक सेकेण्ड में लिखकर बाबा को दिखा जाये | (सबने लिखकर बापदादा को दिखाया फिर बाबा ने भी लिखा | बाबा ने जो लिखा सो कोई ने नहीं लिखा) बाबा ने लिखा अल्फ और बे, कितना सहज है | अल्फ माना बाबा, बे माना बादशाही | बाबा पढ़ाते हैं और तुम राजाई प्राप्त करते हो | और जास्ती लिखने की दरकार नहीं | तुमने तो लिखने में दो मिनट भी लगाया | अल्फ बे सेकेण्ड की बात है |

सन्यासी सिर्फ़ अल्फ को याद करेंगे | तुमको बादशाही भी याद है | याद की आदत पड़ जाती है | बुद्धि में बैठता है तो ख़ुशी का पारा चढ़ा रहता है | अल्फ का अर्थ कितना बड़ा हाइएस्ट चोटी है | उससे ऊपर और कोई चीज़ ही नहीं | रहने का स्थान भी ऊँचे ते ऊँचा है | सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अर्थ भी कोई नहीं जानते | उसका भी ज़रूर अर्थ होगा | बच्चा पैदा होता है तो लिखते हैं इतने घण्टे, इतने मिनट, इतने सेकेण्ड हुए | टिक-टिक चलती रहती है | टिक हुई अल्फ बे, बस सेकेण्ड भी नहीं लगता | कहने की भी दरकार नहीं | याद तो है ही | तुम बच्चों की इतनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए | परन्तु वह तब होगी जब याद रहेगी | यहाँ बैठे हो तो बाप और राजाई याद रहनी चाहिए | बुद्धि देखती है, जिसको दिव्य दृष्टि कहा जाता है | आत्मा भी देखती है | बाप को आत्मा ही याद करती होगी | तुम भी बाप को याद करो तो राजाई इकट्ठी याद आ जायेगी | कितनी देरी लगती है | यहाँ भी याद में बैठेंगे तो बहुत गद-गद हो जायेंगे | बाबा भी इस ख़ुशी में बैठे हैं | बाप को यहाँ की कोई बात याद ही नहीं | बाबा याद करते हैं वहाँ की बातें | बाबा और राजाई जैसेकि दर पर खड़े हैं | बाप कहते हैं तुम बच्चों के लिए राजाई ले आया हूँ | तुम सिर्फ़ याद नहीं करते इसलिए ख़ुशी नहीं ठहरती | तुम उठते बैठते अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप और वर्से को याद करो | कितना ऊँचा स्थान है जहाँ तुम रहते हो | दुनिया थोड़ेही जानती है | वास्तव में 9 रत्न गाये हुए हैं | ज़रूर उन्होंने गुप्त मेहनत की होगी | बाप और वर्से की याद रहे तब ही विकर्म विनाश होंगे | परन्तु माया याद करने नहीं देती | कभी काम, कभी क्रोध....बहुत तूफ़ानों में लाती है | अपनी नब्ज़ देखनी है | नारद को भी कहा शक्ल देखो | तो वह अवस्था अभी है नहीं, बनानी है | बाबा एम आब्जेक्ट ज़रूर बतायेंगे | अन्दर में पुरुषार्थ करते रहो | आगे चलकर वह अवस्था तुम्हारी होगी | अशरीरी रहने की प्रैक्टिस करनी है | अब जाना है वापिस | बाबा ने कहा है मुझे याद करो | याद नहीं करेंगे तो सजायें भी बहुत खानी पड़ेगी और फिर पद भी कम | यह

हैं बहुत सूक्ष्म बातें | वो लोग साइन्स में कितना डीप जाते हैं | क्या-क्या बनाते रहते हैं | वह भी संस्कार तो चाहिए ना, जो फिर वहाँ भी जाकर यह चीज़ें बनायेंगे | सिर्फ़ यह दुनिया बदली होनी है | यहाँ के संस्कार अनुसार ही जाकर जन्म लेंगे | जैसे लड़ाई वालों की बुद्धि में लड़ाई के संस्कार रहते हैं, तो वह संस्कार ले जाते हैं | लड़ने बिगर रह नहीं सकते | आफ़ीसर के पास क्यू लगी रहती है | भरती करते समय जांच करते हैं, कोई बीमारी तो नहीं है | आँख-कान आदि सब ठीक हैं | लड़ाई में तो सब ठीक चाहिए | यहाँ भी देखा जाता है कि कौन-कौन विजय माला का दाना बनेंगे | तुम्हें पुरुषार्थ कर कर्मातीत अवस्था को पाना है | आत्मा अशरीरी आई है, अशरीरी बन जाना है | वहाँ शरीर का कोई सम्बन्ध नहीं | अब अशरीरी बनना है | आत्मायें वहाँ से आती हैं, आकर शरीर में प्रवेश करती हैं | ढेर की ढेर आत्मायें आती रहती हैं | सबको अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है | जो नई पवित्र आत्मायें आती हैं, उनको ज़रूर पहले सुख मिलना है इसलिए उनकी महिमा होती है | बड़ा झाड़ है ना | कितने नामीग्रामी बड़े आदमी हैं | अपनी-अपनी ताकत अनुसार बहुत सुख में होंगे | तो अब बच्चों को मेहनत करनी है, कर्मातीत अवस्था में पवित्र होकर जाना है | अपनी चाल को देखना है किसको दुःख तो नहीं देते हैं! बाप कितना मीठा है | मोस्ट बिलवेड है ना | तो बच्चों को भी बनना है | यह तो तुम बच्चे जानते हो कि बाप यहाँ है | मनुष्यों को थोड़ेही यह मालूम है कि बाप यहाँ स्थापना कर रहे हैं फिर भी जन्म-जन्मान्तर उनको याद करते रहते हैं | शिव के मन्दिर में जाकर कितनी पूजा करते हैं | कितनी ऊँची चोटी पर बद्रीनाथ आदि के मन्दिर में जाते हैं | कितने मेले लगते हैं क्योंकि बहुत मीठा है ना | गाते भी हैं ऊँचे ते ऊँचा भगवान | बुद्धि में निराकार ही याद आयेगा | निराकार तो है ही | फिर है ब्रह्मा-विष्णु-शंकर | उनको भगवान नहीं कहेंगे |

याद बिगर तो तुम पवित्र कभी नहीं बन सकेंगे | बाप ही चुम्बक है | वह एकदम हाइएस्ट पॉवर वाला है | उन पर कभी कट चढ़ नहीं सकती, बाकी सब पर कट चढ़ी हुई हिया, उनको उतार फिर सतोप्रधान बनना है | बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और कोई में ममत्व न रहे | साहूकारों को तो सारा दिन धन दौलत ही सामने आता रहेगा | गरीबों को तो कुछ है नहीं परन्तु गरीब भी कुछ समझदार हों जो धारणा कर सकें | याद बिगर किचड़ा कैसे निकलेगा | हम पवित्र कैसे बनेंगे | तुम यहाँ आये हो ऊँच चोटी पर जाने | जानते हो बाप की शिक्षा पर चलने से हम ऊँच सुख के चोटी पर जायेंगे | इसमें मेहनत है | बाप आते हैं टावर पर ले जाने | तो श्रीमत पर चलना पड़े |

तुम बच्चे अब सर्विस पर लगे हुए हो | समझते हो श्रीमत पर सर्विस में लगने से फल पायेंगे | हमको सब कुछ वहाँ ट्रान्सफर करना है | बैग बैगेज सब कुछ ट्रान्सफर कर देना है | बाबा को शुरू में बहुत मज़ा आया था | वहाँ से जब निकला तो गीत बनाया – अल्फ को मिला अल्लाह, बे को मिली बादशाही....श्रीकृष्ण का, चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ समझा द्वारिका का बादशाह बनूँगा | ऐसा नशा चढ़ता था | अब यह विनाशी पैसा क्या करेंगे | तो तुम बच्चों को भी ख़ुशी होनी चाहिए | हमको बाबा स्वर्ग की बादशाही देते हैं | परन्तु बच्चे इतना पुरुषार्थ ही नहीं करते हैं | चलते-चलते गिर पड़ते हैं | अच्छे-अच्छे बच्चे, बाबा को निमन्त्रण देने वाले कभी बाबा को याद नहीं करते | बाबा के पास पत्र आना चाहिए कि बाबा हम बहुत खुश हैं | आपकी याद में मस्त रहते हैं | बहुत हैं जो कभी याद नहीं करते | याद की यात्रा से ही ख़ुशी ज़ोर से चढ़ेगी | ज्ञान में भल कितना भी मस्त रहते हैं परन्तु देह-अभिमान कितना है | देही-अभिमानी-पना कहाँ है? ज्ञान तो बड़ा इज़ी है | योग में ही माया विघ्न डालती है | गृहस्थ व्यवहार में भी अनासक्त हो रहना है | ऐसा न हो जो माया अंगूरी लगा दे | माया काटती

ऐसे है जैसे चूहा | चूहा ऐसे काटता है जो भल खून निकल आये पर पता न पड़े | बच्चों को पता नहीं पड़ता कि देह-अभिमान आने से कितना नुकसान होता है | ऊँच पद पा नहीं सकेंगे | बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए | मम्मा बाबा मुआफ़िक हम भी तख़्तनशीन बनें | बाप है दिल लेने वाला | देलवाड़ा मन्दिर में भी पूरा यादगार है, अन्दर हाथियों पर महारथी बैठे हैं | तुम्हारे में भी महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे हैं | हर एक को अपनी-अपनी नब्ज़ देखनी है | बाबा क्यों देखे | तुम अपने को देखो हम बाबा को याद करते हैं और बाबा मिसल सर्विस करते हैं! हमारा बाबा के साथ योग है! रात को जागकर बाबा को याद करते हैं? हम बहुतों की सर्विस करते हैं? चार्ट रखना चाहिए – बाबा को हड्डी (जिगरी) कितना याद करते हैं? कोई समझते हैं हम निरन्तर याद करते हैं, यह नहीं हो सकता | कई समझते हैं हम बाबा के बच्चे बन गये, बस | परन्तु अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है | बाबा की याद बिगर कुछ काम किया गोया बाबा को याद नहीं करते | बाबा की याद में सदैव हर्षित रहना चाहिए | याद में रहने वाला सदैव रमणीक रहेगा, हर्षितमुख रहेगा | किसको बहुत ख़ुशी से और रमणीकता से समझायेंगे | बहुत थोड़े हैं जिनको सर्विस का बहुत शौक है | चित्रों पर समझाना बहुत सहज है |

पहले-पहले बाप बच्चों को समझाते हैं कि हे बच्चे बुद्धि में सदा यह याद रखो कि शिवबाबा हमारा सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम शिक्षक भी है, सुप्रीम सतगुरु भी है | यह पहले-पहले बुद्धि में ज़रूर आना चाहिए | हर एक अपने को जान सकते हैं कि हमारी बुद्धि में आया वा नहीं | अगर बुद्धि में याद आता तो आस्तिक हैं, नहीं आता है तो नास्तिक हैं | स्टूडेन्ट की बुद्धि में फट से आना चाहिए कि टीचर आया है | घर में रहते हैं तो वह भूल जाता है | उस रुहाब से बहुत कोई मुश्किल समझते हैं कि हमारा सुप्रीम बाबा आया हुआ है | वह टीचर भी है और

वापिस ले जाने वाला सतगुरु भी है | याद आने से ख़ुशी का पारा चढ़ेगा | नहीं तो अपने ही दुःख दर्द दुनिया की छी-छी बातों में, भिन्न-भिन्न ख्यालात में बैठे रहते हैं | दूसरी बात बहुत करके बच्चों से पूछते हैं कि विनाश में बाकी कितना समय है | बोलो, यह पूछने की बात नहीं है | पहले तो यह हमको किसने समझाया है, उनको जानो | पहले बाप का परिचय दो |

- ऊँचे ते ऊँचे बाप द्वारा अब सबकी उन्नति हो रही है | बाकी तो सबको सीढी उतरनी है | कमाल है बाप की | भल खाओ-पिओ सब कुछ करो सिर्फ़ बाबा के गुण गाओ | ऐसे नहीं बाबा की याद में रहने से खाना नहीं खा सकते | रात फ़ुर्सत बहुत मिलती है | 8 घण्टा तो फ़ुर्सत है | बाप कहते हैं कम से कम 8 घण्टा इस गवर्मेन्ट की सर्विस करो | जो भी आये उनको आत्मा की उन्नति के लिए रास्ता बताओ | जीवनमुक्ति माना विश्व का मालिक और मुक्ति माना ब्रह्माण्ड का मालिक | ये समझाना तो सहज है ना | परन्तु तक़दीर में नहीं है तो तदबीर क्या कर सकेंगे |

- बाप समझाते हैं कि बाप की याद सिवाए आत्मा की जंक निकल नहीं सकती | भल ज्ञान सारा दिन सुनाओ परन्तु आत्मा की उन्नति का उपाय याद के सिवाए और कोई नहीं | बाप बच्चों को बहुत प्यार से रोज़-रोज़ समझाते हैं परन्तु अपनी उन्नति करते हैं वा नहीं करते हैं, वह हर एक खुद समझ सकते है |

- मीठे-मीठे बच्चों को बाप समझाते हैं अब पुरुषार्थ करो | योग से पवित्र बनो तब धारणा हो | मंज़िल बहुत ऊँची है | अपने को आत्मा समझ बहुत प्यार से बाप को याद करना है | आत्मा

का परमात्मा के साथ लव है ना | यह है रूहानी लव, जिससे आत्मा की उन्नति होती है | जिस्मानी लव से गिर पड़ते हैं | तक़दीर में नहीं है तो भागन्ती हो जाते हैं | यज्ञ की बड़ी सम्भाल चाहिए | माताओं की पाई-पाई से यज्ञ की सर्विस हो रही है | यहाँ गरीब ही साहूकार बनते हैं | सारा मदार पढ़ाई पर है | तुम अभी सदा सुहागिन बनती हो – यह सबको फीलिंग आती है | माला का दाना बनने वालों को कितनी अच्छी फीलिंग चाहिए | शिवबाबा को याद करते, सर्विस करते रहो तो बहुत उन्नति हो सकती है | शिवबाबा की सर्विस में शरीर भी न्योछावर करना चाहिए | सारा दिन नशा रहे – यह मासी का घर नहीं है | देखना है हमने अपनी कितनी उन्नति की है | बाबा कहते हैं – बीती को याद न करो | आगे की कोई आश मत रखो | शरीर निर्वाह अर्थ कर्म तो करना है | जो टाइम मिले उसमें बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे |

रूहानी बाप रूहानी बच्चों के साथ रूहरिहान कर रहे हैं। यह तो आत्माये जानती हैं कि एक ही हमारा बाप है और शिक्षा भी देते हैं, टीचर का काम हैं शिक्षा देना। गुरू का काम है मंजिल बताना। मंजिल को भी बच्चे समझ गये है। मुक्ति जीवनमुक्ति के लिए याद की यात्रा बिकुल जरूरी है। हैं दोनों सहज। 84 जन्मों का चक्र भी फिरता रहता है। यह याद रहना चाहिए अभी हमारा 84 का चक्र पूरा हुआ है 7 अब वापिस जाना है। परन्तु पाप आत्मायें मुक्ति जीवनमुक्ति मे वापिस जा नहीं सकती। ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करना है। जो करेंगे सो पायेंगे। खुशी में भी वही आयेगे और दूसरों को भी खुशी में वही लायेंगे। औरों पर भी कृपा करनी है - रास्ता बताने की। तुम बच्चे जानते हो यह पुरूषोत्तम संगमयुग है। यह भी कोई को याद रहता है, कोई को नहीं। भूल जाता है। यह भी याद रहे तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। बाप टीचर गुरू के रूप में याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ा रहे। परन्तु चलते-चलते कुछ रोला पड़ जाता है। जैसे पहाड़ों पर नीचे ऊपर चढ़ना होता है, वैसे बच्चों की अवस्था भी ऐसे होती है। कोई बहुत

ऊंच बढ़ते हैं फिर गिरते है तो आगे से भी जास्ती गिर पड़ते हैं। की कमाई चट हो जाती है। भल कितना भी दान पुण्य करते है परन्तु फिर पुण्य करते- करते अगर पाप करने लग पड़ते है तो सब पुण्य खत्म हो जाते हैं। सबसे बड़ा पुण्य है-बाप को याद करना। याद से ही पुण्य आत्मा बनेंगे। अगर संग के रंग से भूल ही भूल करते जायें तो आगे से भी जास्ती नीचे गिर जाते। फिर वह खाता जमा नहीं रहेगा। ना घाटा हो जायेगा। पाप का काम करने से ना हो जाता। बहुत पाप का खाता चढ़ जाता है। मुरादी सम्भाली जाती है ना। बाप भी कहते हैं तुम्हारा खाता पुण्य का था, पाप करने से वह सौ गुणा हो जाता है और ही घाटे में आ जायेगा। पाप भी कोई बहुत बड़ा, कोई हल्का होता है। काम है बहुत कड़ा, क्रोध है सेकेण्ड नम्बर, लोभ उनसे कम। सबसे जास्ती काम वश होने से जो जमा हुआ वह ना हो जाता है। फायदे के बदले नुकसान हो जाता है।

अब बाप कहते है मामेकम् याद करो तो तुम्हारे सब दु :ख दूर हो जायेंगे। अब देखना है हम कितना याद करते हैं, जो पुराना खत्म हो नया जमा हो। कोई तो कुछ भी जमा नहीं करते। सारा मदार है याद पर। याद बिगर पाप कैसे मिटे अथवा कटे। पाप तो बहुत हैं - जन्म-जन्मान्तर के। इस जन्म की जीवन कहानी सुनाने से कोई जन्म-जन्मान्तर के पाप कट नहीं जायेंगे। सिर्फ इस जन्म की हल्काई हो जाती है। बाकी तो मेहनत बहुत करनी है पुराने जन्मों का जो हिसाब किताब है - वो योग से ही चुक्तू होने वाला है। विचार करना चाहिए कि हमारा योग कितना है? हमारा जन्म सतयुग के आदि मे हो सकेगा? जो बहुत पुरूषार्थ करेंगे वही सतयुग के आदि मे जन्म लौ। वह छिपे नहीं रह सकते। सब तो सतयुग मे नहीं आयेगे। पिछाड़ी मे जाकर थोड़ा पद पाते हैं। अगर पहले आते भी हैं तो नौकरी करते हैं। यह तो कामन बात है समझने की, इसलिए बाप को बहुत याद करना है। तुम जानते हो हम नई दुनिया के लिए विश्व का मालिक बनने आये है। जो याद करेंगे उनको जरूर मधुबन खुशी रहेगी। अगर राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी पड़े। नहीं तो कैसे समझेंगे कि हम राजा बनने वाले हैं।

- बाप सिफ कहते है काम चिता पर बैठ तुम काल हो गये हो। अब ज्ञान चिता पर बैठो तो गोरे बन जायेंगे। बुद्धि मे यही चिन्तन चलता रहे, भल काम करते रहो, याद करते रहो। ऐसे नहीं फुर्सत नहीं है। जितनी फुर्सत मिले रूहानी कमाई करो। कितनी बड़ी कमाई है। हेल्थ वेल्थ दोनों एक साथ मिलती है। एक कहानी है अर्जुन और भील की। ऐसे गहस्थ व्यवहार मे रहकर ज्ञान- योग मे अन्दर वालों से भी तीखे जा सकते हैं। सारा मदार याद पर है। यहाँ सब बैठ जायेने तो सर्विस कैसे करने। रिफ्रेश होकर सर्विस मे लग जाना है। सर्विस का ख्याल रखना चाहिए। बाबा तो प्रदर्शनी में जा न सके क्योंकि बापदादा दोनो इकट्ठे है। बाबा की आत्मा और इनकी आत्मा इकट्ठी है। इन्हे तो खुशी है कि मैं बाबा का सिकीलधा बच्चा हूँ। फिर भी सदैव याद ठहरती नहीं। और- और तरफ ख्यालात चले जाते हैं। ड़ामा का लॉ नहीं जो एकदम याद ठहर जाए और कोई ख्याल न आये। माया के तूफान याद नहीं करने देते। जानता हूँ हमारे लिए बहुत सहज है, क्योंकि बाबा की प्रवेशता है। बाबा का नम्बरवन सिकीलधा बच्चा हूँ। पहलै नम्बर मैं राजकुमार बनूँगा फिर भी याद भूल जाती है। अनेक प्रकार के ख्यालात आ जाते हैं। यह है माया। जब इस बाबा को अनुभव हो तब तो तुम बच्चों को समझा सके। यह ख्यालात बन्द तब होगे जब कर्मातीत अवस्था होगी। आत्मा सम्पूर्ण बन जाए फिर तो यह शरीर रह न सके। शिवबाबा तो सदैव प्योर ही प्योर है।

- काम महाशत्रु है। माया नाम रूप में फँसाए गिरा देती है। बाप को याद करने नहीं देती। फिर वह खुशी कम हो जाती है। इसमें खुश नहीं होना चाहिए कि हम बहुतों को समझाते हैं, पहले देखना है बाबा को कितना याद करता हूँ। रात को बाबा को याद करके सोता हूँ या भूल जाता हूँ। कोई बच्चे तो पक्के नेमी भी हैं। तुम बच्चे बहुत लक्की हो। बाप के ऊपर तो बहुत बोझ है। परन्तु फिर भी रथ को रियायत मिल जाती है। ज्ञान और योग भी है, इसके बिगर लक्ष्मी-नारायण पद कैसे पायेंगे। खुशी तो रहती है, हम अकेला बाप का बच्चा हूँ और फिर मेरे ढेर

बच्चे हैं, यह नशा भी रहता है तो माया विघ्न भी डालती है। बच्चों को भी माया के विघ्न आते होंगे। कर्मातीत अवस्था आगे चलकर आनी है। यह बापदादा दोनों इकट्ठे हैं। कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे.. बाप तो प्यार का सागर है। इनकी आत्मा इकट्ठी है। यह भी प्यार करते है। समझते हैं जैसा कर्म मैं करुँगा, मुझे देख और भी करने। बहुत मीठा रहना है। बच्चे बडे सयाने चाहिए। भारत बहुत बड़ा है, इतनी सर्विस करनी है। दूसरा याद में रहकर विकर्म भी विनाश करने हैं। यह है कड़ा फुरना (फिकर)। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें? इसमें मेहनत है। सर्विस के चांस बहुत हैं। ट्रेन में बैज पर सर्विस कर सकते हो। यह बाबा यह वर्सा। बरोबर 5 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। फिर जरूर इनका राज्य आना चाहिए। हम बाबा की याद से पावन दुनिया का मालिक बन रहे हैं। ट्रेन मे बहुत सर्विस हो सकती है।

- बाप ही संगम पर कहते हैं आत्मा-अभिमानी बनो | यह है उत्तम बनने का युग | बाप कितना प्यार से समझाते रहते हैं | घड़ी-घड़ी कितना प्यार से बाप को याद करना चाहिए – बाबा आपकी तो कमाल है | हम कितने पत्थर बुद्धि थे, आप हमको कितना ऊँच बनाते हैं ! आपकी मत बिगर हम और किसकी मत पर नहीं चलेंगे | पिछाड़ी को सब कहेंगे बरोबर ब्रह्माकुमार-कुमारियां तो दैवी मत पर चल रहे हैं | कितनी अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं | आदि-मध्य-अन्त का परिचय देते हैं | कैरेक्टर सुधारते हैं |

- अपने को शरीर से न्यारा समझना है | इसको ही जीते जी मरना कहा जाता है | अपना घर ही याद रहता है | तुम जन्म-जन्मान्तर से इस शरीर में रहते आये हो इसलिए तुमको मेहनत करनी पड़ती है | जीते जी मरना पड़ता है | मैं तो इसमें आता ही टैम्प्रेरी हूँ | तो मरकर चलने से

अर्थात् अपने को आत्मा समझकर चलने से कोई भी देहधारी ममत्व नहीं रहेगा | अक्सर करके किसी न किसी का किसी में मोह हो जाता है | बस, उनको देखने बिगर रह नहीं सकते | यह देहधारी की याद एकदम उड़ा देनी चाहिए क्योंकि बहुत बड़ी मंज़िल है | खाते-पीते जैसेकि इस शरीर में हूँ ही नहीं | यह अवस्था पक्की करनी है तब 8 रत्नों की माला में आ सकते हैं | मेहनत बिगर थोड़े ही ऊँच पद मिल सकता है |

कोई की बात अच्छी लगेगी, कोई का शरीर अच्छा लगेगा, तो घर में भी उनकी याद आती रहेगी | जिस्म पर प्यार होगा तो हार खा लेंगे | ऐसे बहुत ख़राब हो जाते हैं | बाप कहते हैं स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो | यह भी आत्मा, हम भी आत्मा | आत्मा समझते-समझते शरीर का भान निकलता जायेगा | बाप की याद से ही विकर्म भी विनाश होंगे | इस बात पर तुम अच्छी तरह से विचार सागर मंथन कर सकते हो | विचार सागर मंथन करने बिगर तुम उछल नहीं सकेंगे | यह पक्का होना चाहिए कि हमको बाप के पास जाना है ज़रूर | मूल बात है याद की | 84 का चक्र पूरा हुआ फिर शुरू होना है | इस पुरानी देह से ममत्व नहीं हटाया तो फँस पड़ेंगे या अपने शरीर में या कोई मित्र-सम्बन्धी के शरीर में | तुमको तो किससे भी दिल नहीं लगनी है | अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है | हम आत्मा भी निराकार, बाप भी निराकार, आधाकल्प तुम भक्ति मार्ग में बाप को याद करते आये हो ना | 'हे प्रभू' कहने से शिवलिंग ही सामने आयेगा | कोई देहधारी को 'हे प्रभू' कह न सके | सभी शिव के मन्दिर में जाते हैं, उनको ही परमात्मा समझ पूजते हैं | ऊँचे से ऊँचा भगवान् एक ही है |

- बाप कहते हैं मामेकम् याद करो | नाम रूप में नहीं फँसना है, और ही पाप हो जायेगा क्योंकि बाप का नाफ़रमानबरदार बनते हो | बहुत बच्चे भूले हुए हैं | बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को लेने आया हूँ सो ज़रूर ले जाऊंगा, इसलिए मेरे को याद करो | एक मुझे याद करने से ही तुम्हारे पाप कटेंगे | भक्ति मार्ग में बहुतों को याद करते आये हो | परन्तु बाप बिगर कोई काम कैसे होगा | बाप थोड़े ही कहते हैं माँ को याद करो | बाप तो कहते हैं मुझे याद करो | पतित-पावन मैं हूँ | बाप के डायरेक्शन पर चलो | तुम भी बाप के डायरेक्शन पर औरों को समझाते रहो | तुम थोड़े ही पतित-पावन ठहरे | याद एक को ही करना है | हमारा तो एक बाप, दूसरा न कोई | बाबा हम आप पर ही वारी जायेंगे | वारी जाना तो शिवबाबा पर ही है और सबकी याद छूट जानी चाहिए | भक्ति मार्ग में तो बहुतों को याद करते रहते हैं | यहाँ तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई | फिर भी कोई अपनी चलते हैं तो क्या गति-सद्गति होगी! मूँझ पड़ते हैं – बिन्दी को कैसे याद करें? अरे, तुमको अपनी आत्मा याद है ना कि मैं आत्मा हूँ | वह भी बिन्दी रूप ही है | तो तुम्हारा बाप भी बिन्दी है | बाप से वर्सा मिलता है | माँ तो फिर भी देहधारी हो जाती है | तुमको विदेही से ही वर्सा मिलना है इसलिए और सब बातें छोड़ एक से बुद्धियोग लगाना है |

- मूल बात है बाप का परिचय देना क्योंकि बाप से ही वर्सा मिलता है | तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि हम शिवबाबा के फ़ालोअर्स हैं | नहीं, शिवबाबा के बच्चे हैं | हमेशा अपने को बच्चे समझो | और कोई को यह पता नहीं है कि वह बाप-टीचर-गुरु भी हैं | तुम बच्चों में भी बहुत हैं जो भूल जाते हैं | यह याद रहे तो भी अहो सौभाग्य | बाबा को भूल जाते हैं फिर लौकिक देह के सम्बन्ध याद आ जाते हैं | वास्तव में तुम्हारी बुद्धि से और सब निकल जाना चाहिए | एक बाप ही याद रहे | तुम कहते हो – त्वमेव माताश्च पिता......अगर दूसरा कोई याद आता है तो

ऐसे नहीं कहेंगे कि सद्गति में जा रहे हैं, देह-अभिमान में हैं तो दुर्गति ही होती है, देही-अभिमानी हो तो सद्गति होती है | कभी नीचे, कभी ऊपर चढ़ते-उतरते रहते हैं | कभी आगे बढ़ते हैं, कभी पीछे हटते हैं | देह-अभिमान में तो बहुत आते हैं, इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं चार्ट रखो तो पता पड़े हम आगे बढ़ रहे हैं या पीछे हट रहे हैं? सारा मदार है याद पर | नीचे-ऊपर होते ही रहते हैं | बच्चे चलते-चलते थक जाते हैं, फिर रड़ियाँ मारते हैं – बाबा, यह होता है | याद भूल जाती है | देह-अभिमान में आने से ही पीछे हटते हैं | कुछ न कुछ पाप करते हैं | याद पर सारा मदार है | याद से आयु बढती है इसलिए योग अक्षर नामीग्रामी है | ज्ञान की तो बहुत सहज सब्जेक्ट हैं | बहुत हैं जिनको ज्ञान भी नहीं है तो योग भी नहीं है, इससे नुकसान बहुत होता है | बहुतों से मेहनत होती नहीं है | पढ़ाई में नम्बरवार तो होते ही हैं | पढ़ाई से समझा जाता है कि यह कहाँ तक और किसकी सर्विस करते हैं? सबको शिवबाबा का परिचय देना है | तुम जानते हो बेहद का वर्सा एक ही बेहद के बाप से मिलता है | मुख्य है मात-पिता और तुम बच्चे | यह हुआ ईश्वरीय कुटुम्ब | और कोई की भी बुद्धि में यह नहीं होगा कि हम शिवबाबा की सन्तान हैं, उनसे ही वर्सा लेना है | एक बाप को ही याद करना है, वह भी निराकार शिवबाबा, परिचय ही ऐसे दो | वह तो बेहद का बाप है | उनको सर्वव्यापी कैसे कह सकेंगे! भला उनसे वर्सा कैसे पायेंगे? पावन कैसे बनेंगे? बन ही नहीं सकेंगे | बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं – मनमनाभव, मुझे याद करो | यह कोई भी जानते नहीं हैं | कृष्ण को भी वास्तव में सब नहीं जानते | वह मोर-मुकुटधारी यहाँ कैसे आयेंगे? यह है बहुत ऊँचा ज्ञान | ऊँचे ज्ञान में ज़रूर थोड़ी डिफ़िकल्टी भी होगी | सहज नाम भी है | बाप से वर्सा लेना तो सहज है ना | बच्चे डिफ़िकल्ट क्यों समझते हैं? क्योंकि बाप को याद नहीं कर सकते |

- अपने से प्रण कर लेना चाहिए कि बाप को ही याद करना है, जिससे सब विकर्म विनाश हो जायें | इसका मतलब यह नहीं कि धन्धा नहीं करना है | धन्धा नहीं करेंगे तो पैसा कहाँ से आयेगा? भीख तो नहीं माँगना है | यह तो घर है, शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं | अगर सर्विस नहीं करते हैं तो मुफ़्त में खाते हैं तो गोया भीख पर चलना होता है |

- मौत सो सामने खड़ा है, इसलिए बाप कहते हैं वर्सा लेना हो तो लो | मेहनत करो | टूमच धन्धे आदि में मत जाओ | कितना चिन्तन रखना पड़ता है | बाबा ने इनको तो छुड़ा दिया | अब यह छी-छी दुनिया है | तुम बच्चों को बाप को याद करना है, जो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायें और बाप से वर्सा ले लेंवे | बहुत प्यार से याद करना है | लक्ष्मी-नारायण का चित्र देखने से ही दिल खुश हो जाता है | यह हमारा एम आब्जेक्ट है | भल पूजा करते थे परन्तु यह मालूम थोड़ेही था कि हम यह बन सकते हैं | कल पुजारी थे, आज पूज्य बन रहे हैं | बाबा आया तो पूजा छोड़ दी | बाप ने विनाश और स्थापना का साक्षात्कार कराया ना | हम विश्व के मालिक बनते हैं | यह तो सब ख़त्म होना है फिर हम क्यों न बाप को याद करें | अन्दर में एक की ही महिमा गाते रहते हैं – बाबा, आप कितने मीठे हो |

- सबसे पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, पीछे और धर्म हुए हैं | तो ऐसे बाप को कितना प्यार से याद करना चाहिए | मनुष्य मत तो अनेक निकलती रहती हैं | देवता मत तो मिलती ही नहीं | बाकी है मनुष्य मत | हरेक अपना अक्ल निकालते रहते हैं | अब तुमको और कोई को भी याद नहीं करना है | आत्मा सिर्फ़ अपने बाप को याद करती रहे | मेहनत करनी है | भक्त भी मेहनत करते हैं ना | बहुत श्रद्धा से भक्ति करते हैं | जैसे वह भक्ति है, तुम्हारी फिर है

ज्ञान की मेहनत | भक्ति में कम मेहनत करते हैं क्या? गुरु लोग कहते रोज़ 100 माला फेरो, फिर कोठरी में बैठ जाते हैं | माला फ़ेरते-फ़ेरते घण्टा लग जाता | बहुत करके राम-राम की धुनी लगाते हैं, यहाँ तो तुमको बाप की याद में रहना है | बहुत प्यार से याद करना है | कितना मीठे से मीठा बाबा है | सिर्फ़ कहते हैं मुझे याद करो और दैवीगुण धारण करो | खुद करेंगे तब दूसरों को भी रास्ता बतायेंगे | बाप जैसा मीठा और कोई हो नहीं सकता | कल्प के बाद तुमको मीठा बाबा मिलता है | फिर पता नहीं, ऐसे मीठे बाप को क्यों भूल जाते हो! बाप स्वर्ग का रचयिता है तो तुम भी ज़रूर स्वर्ग के मालिक बनते हो | परन्तु कट (जंक) उतारने के लिए बाप को याद करो | न याद करने की ऐसी कौन-सी मुसीबत आती है, कारण बताओ क्या बाप को याद करना डिफिकल्ट है?

लड़ाई में तो बहुत मरेंगे फिर इतनी सब आत्मायें कहाँ जायेंगी | क्या इकट्ठी ही जाकर जन्म लेंगी? झाड़ बड़ा होता है, बहुत टाल-टालियाँ, पत्ते हो जाते हैं | रोज़ कितने जन्मते हैं, मरते भी कितने हैं | वापिस तो कोई जा नहीं सकते | मनुष्यों की वृद्धि होती जाती है | इन रेज़गारी बातों में जाने से पहले बाप को तो याद करें जिससे विकर्म विनाश हों और किचड़ा निकल जाये | फिर है दूसरी बात | तुम इसका कोई विचार न करो | पहले अपना पुरुषार्थ करो जो ऐसा बन सको | मुख्य है याद की यात्रा और सबको पैगाम देना है | पैगम्बर एक ही है |

अब तुमको एक्यूरेट नॉलेज मिलती है | पहले तुम कुछ भी नहीं जानते थे तो बाबा से प्रश्न भी क्या पूछेंगे | बाबा सब-कुछ आपेही बताते हैं | बाप कहते हैं मामेकम् याद करो | इन प्रश्नों में टाइम वेस्ट मत करो | पहले जरुरी पुरुषार्थ करो | किचड़ा निकालो | 84 का चक्र भी

तुमने लगाया है | यह समझ बुद्धि में आ गई है | यह चक्र का नॉलेज बुद्धि में हो | बाप की याद हो तब आत्मा यह शरीर छोड़कर जाये | अन्त घड़ी जब ऐसी अवस्था हो तब पद पा सकते हैं | पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते ट्रान्सफर हो जाना है | वह एक क्लास से दूसरे क्लास में ट्रान्सफर होते हैं, तुम मृत्युलोक से अमरलोक में ट्रान्सफर होते हो | तुमको ख़ातिरी है | कल्प-कल्प हम बाबा से नॉलेज सुनते हैं | तो तुम बच्चों को बहुत ख़ुशी होनी चाहिए | यह गीता एपिसोड रिपीट हो रहा है | यह पुरुषोत्तम संगमयुग है |

रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, पढ़ाते हैं, योग सिखलाते हैं | योग कोई बड़ी बात नहीं है | जैसे बच्चे पढ़ते हैं तो योग ज़रूर टीचर से रहता है कि हमको फ़लाना टीचर पढ़ाते हैं – आप समान बनाने के लिए | एम आब्जेक्ट तो रहती है | समझते हैं कि फ़लाना दर्जा पढ़ रहे हैं | उसमें टीचर को कहना नहीं है कि मेरे से योग लगाओ | ऑटोमेटिकली पढ़ाने वाले के साथ योग रहता है | सारा दिन तो नहीं पढ़ाते | वह जन्म-जन्मान्तर तो पढ़ाते आये हैं | प्रैक्टिस हो जाती है | यहाँ तो तुम्हारी बिल्कुल नई प्रैक्टिस है | यह देहधारी टीचर नहीं है | यह है विदेही टीचर, जो हर 5 हज़ार वर्ष के बाद तुमको मिलता है | खुद कहते हैं मैं तुम्हारा देहधारी टीचर नहीं हूँ | इसलिए ये याद ठहरती नहीं है | अपने को आत्मा समझना पड़े कि हमको परमपिता परमात्मा टीचर पढ़ा रहे हैं | टीचर को याद ज़रूर करना है | जब तक इम्तिहान पास हो | याद करते-करते इम्तिहान पास हो जायेगा, फिर चले जायेंगे घर | इम्तिहान पूरा होते ही ड्रामा फिनिश हो जाता है | फिर तुम बच्चों को मालूम है कि हमारी आत्मा में पार्ट भरा हुआ है 84 जन्मों का, जो हमको बजाना है | यह भी अभी मालूम है | पीछे वहाँ याद नहीं रहेगा | यहाँ तुमको सारी नॉलेज मिलती है | टीचर ही बैठ सारी नॉलेज बच्चों को समझाते हैं, जो समझते रहना है और याद में भी ज़रूर रहना है | घड़ी-घड़ी बाप

कहते हैं मन्मनाभव | मन्मनाभव का अर्थ भी है | बच्चे समझते हैं अक्षर राइट है | बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, इसमें टाइम तो लगता है | अपनी जाँच करनी है | जैसे पढ़ाई में और सब्जेक्ट होती हैं हिस्ट्री, हिसाब-किताब, साइन्स आदि | स्टूडेण्ट समझते हैं हम कहाँ तक पास होंगे | तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम इतने-इतने मार्क्स से पास होंगे | अपने को देखना चाहिए कि हम बाबा को भूल तो नहीं जाते हैं | बहुत लिखते हैं बाबा माया घड़ी-घड़ी भुला देती है | बहुत माया के तूफ़ान आते हैं, विकल्प आते हैं | न समझने के कारण लिखते हैं बाबा इसमें पाप तो नहीं लगता? ऐसे-ऐसे संकल्प विकल्प आते हैं | देखने से ख्याल आता है यह करें | इसमें पाप तो नहीं लगता? बाप कहते हैं, नहीं | पाप तब होगा जब कर्मेन्द्रियों से विकर्म करेंगे |

ज्ञान को धारण कर बाप को याद करो | बाप को याद करने से ही विकर्मों का विनाश होता है | हरेक को अपने लिए मेहनत करनी पड़ती है | ऐसे नहीं बाबा दृष्टि बैठ देंगे कि इनके पाप कट जायें | बाप बैठ यह धन्धा नहीं करते | यूँ तो सबको देखेंगे ही | देखने से वा ज्ञान देने से विकर्म विनाश नहीं होंगे | बाप तो रास्ता बताते हैं ऐसे ऐसे करो तो विकर्म विनाश होंगे | श्रीमत देते हैं | अच्छा समझो बाप आते हैं – आत्मा समझकर देखते हैं | ऐसे नहीं इससे हमारे पाप कट जायेंगे, नहीं | पाप कटते हैं अपनी मेहनत से | ऐसे बाप बैठ करे तो यह तो एक धन्धा हो जाए | बाप समझाते हैं ऐसे-ऐसे तुम अपने बाप को याद करो | बाप है ही श्रीमत देने वाला | मेहनत अपनी करनी है | बहुत समझते हैं फ़लाने साधू सन्यासी की दृष्टि ही बस है | कृपा आशीर्वाद लेते-लेते गिरते ही रहते हैं | वह कृपा क्या करेंगे | वह तो अपने ब्रह्म महतत्व को ही याद करेंगे | बाप तो साफ़ रास्ता बताते हैं ऐसे-ऐसे करो | गाते भी हैं नंगे आये, नंगे जाना है | यह गायन भी इस समय का है | बाप के वरशन्स फिर भक्ति में काम आते हैं | अब

बाप कहते हैं – मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे | बाप तो श्रीमत देते हैं | यह भी ड्रामा में उनका पार्ट है | इसको ही मदद कहो, ड्रामा अनुसार श्रीमत गाई हुई है | बाप को मत देनी है | कहते हैं अपने को आत्मा समझो | ऐसे नहीं मदद दे कर्मातीत अवस्था में ले जायेंगे | नहीं | टाइम लगता है | बहुत मेहनत करनी पड़ती है | अपने को आत्मा समझने का बहुत अच्छा अभ्यास करना है | वास्तव में माताओं को टाइम बहुत मिलता है | पुरुषों को धन्धे का फुरना रहता है | तुम बच्चों को बाप को याद करते-करते लाटरी लेनी है | ताकि सारी जंक (कट) निकल जाये | फ़ील होता है फ़लाने अच्छे पुरुषार्थी हैं | चार्ट रखते हैं | जैसे भक्ति में दो तीन घण्टे भी बैठ जाते हैं | वानप्रस्थी गुरु आदि बहुत करते हैं | परन्तु उनको भी इतना याद नहीं करते, जितना देवताओं को याद करते हैं | वास्तव में देवताओं को याद करना नहीं होता है | न देवतायें कभी सिखलाते हैं |

- जितनी तुम्हारे में ज्ञान की ताकत भरती जायेगी तो तुम चुम्बक बन जायेंगे | तो फिर सबको कशिश होगी | अभी नहीं है | फिर भी यथा योग, यथा शक्ति जितना बाप को याद करते हैं | ऐसे नहीं, सदैव बाप को याद करते हैं | फिर तो यह शरीर भी न रहे | अभी तो बहुतों को पैगाम देना है, पैगम्बर बनना है | तुम बच्चे ही पैगम्बर बनते हो और कोई नहीं बनते |

- तुम ही सतोप्रधान आदि सनातन थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बने हो, अब फिर याद की यात्रा से सतोप्रधान बनो | उन्हों को यह दवाई अच्छी लगेगी | बाबा सर्जन है ना | जिन्हों को यह दवाई अच्छी लगती है उनको देनी चाहिए | जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे, उन्हों को स्मृति दिलानी चाहिए | जैसे तुम बच्चों को स्मृति आई है | बाबा ने समझाया है –

कैसे तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो? अब फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है | तुम बच्चे सतोप्रधान बन रहे हो – याद की यात्रा से | जो आदि सनातन हिन्दू होंगे वही असुल देवी-देवता होंगे और वही देवताओं को पूजने वाले भी होंगे | कोई बच्चे भल समझाते बहुत अच्छा हैं परन्तु योग है नहीं | अशरीरी बन बाप को याद करें, वह है नहीं | याद में ठहर नहीं सकते | भल समझते हैं हम अच्छा समझाते हैं, म्यूज़ियम आदि भी खोलते हैं परन्तु याद कम है | अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहें, इसमें ही मेहनत है | बाप वार्निंग देते हैं | ऐसे मत समझो कि हम तो बहुत अच्छा कनविन्स कर सकते हैं | परन्तु इससे फ़ायदा क्या? चलो, स्वदर्शन चक्रधारी बन गये परन्तु इसमें तो विदेही बनना है | कर्म करते अपने को आत्मा समझना है | आत्मा इस शरीर द्वारा कर्तव्य करती है – यह याद करना भी नहीं आता, ख्याल में नहीं आता, उनको कहेंगे बुद्धू | बाप को याद नहीं कर सकते! सर्विस करने की ताक़त नहीं | याद बिगर आत्मा में ताक़त कहाँ से आयेगी? बैटरी कैसे भरे? चलते-चलते खड़ी हो जायेगी, ताक़त नहीं रहेगी |

कहा जाता है रिलीजन इज़ माइट | आत्मा स्वधर्म में टिके, तक ताक़त मिले | बहुत हैं जिनको बाप को याद करना आता नहीं | शक्ल से पता पड़ जाता है | और सब याद आयेगा, बाबा की याद ठहरेगी नहीं | योग से ही बल मिलेगा | याद से बड़ी ख़ुशी और तन्दुरुस्ती रहेगी | फिर दूसरे जन्म में भी शरीर ऐसा तेजस्वी मिलेगा | आत्मा प्योर तो शरीर भी प्योर मिलेगा | कहेंगे यह 24 कैरेट गोल्ड है, तो 24 कैरेट जेवर है | इस समय सब 9 कैरेट बन गये हैं | सतोप्रधान को 24 कैरेट कहेंगे, सतो को 22, यह बड़ी समझने की बातें हैं | बाप समझाते हैं पहले तो फॉर्म भराना है तो पता पड़े कहाँ तक रेस्पान्स करते हैं? कितनी धारणा की है? फिर यह भी आता है याद की यात्रा में रहते हैं? तमोप्रधान से सतोप्रधान याद की यात्रा से बनना है

| वह हैं भक्ति की जिस्मानी यात्रायें, यह है रूहानी यात्रा | रूह यात्रा करती है | उसमें रूह और जिस्म दोनों ही यात्रा करते हैं | पतित-पावन बाप को याद करने से ही आत्मा में तेज आता है | कोई जिज्ञासु को जलवा आदि दिखाना है तो बाबा की प्रवेशता भी हो जाती है | माँ-बाप दोनों ही मदद करते हैं – कहीं नॉलेज की, कहीं योग की | बाप तो सदा विदेही है | शरीर का भान है ही नहीं | तो बाप दोनों ताक़त की मदद दे सकते हैं | योग नहीं होगा तो ताक़त मिलेगी कहाँ से? समझा जाता है यह योगी है या ज्ञानी है | योग के लिए दिन-प्रतिदिन नई-नई बातें भी समझाते हैं | आगे थोड़ेही यह समझाते थे | अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | अब बाबा जोर से उठाते हैं, जिससे भाई-बहन का सम्बन्ध भी हट जाए, सिर्फ़ भाई-भाई की दृष्टि रह जाए | हम आत्मा भाई-भाई हैं | यह बहुत ऊँची दृष्टि है | अन्त तक यह पुरुषार्थ चलना है | जब सतोप्रधान बन जायेंगे तब यह शरीर छोड़ देंगे इसलिए जितना हो सके पुरुषार्थ को बढ़ाना है | बूढों के लिए और ही सहज है | अब हमको वापिस ज़रूर जाना है | जवानों को कभी ऐसे ख्यालात नहीं आयेंगे | बूढ़े वानप्रस्थी रहते हैं | समझा जाता है अब वापिस जाना है | तो यह सब ज्ञान की बातें समझनी हैं |

सबसे मुख्य बात है बाप को बहुत प्यार से याद करना है | जैसे बच्चे माँ-बाप को एकदम चटक जाते हैं, वैसे बहुत प्यार से बुद्धियोग द्वारा बाप को एकदम चटक जाना चाहिए | अपने को देखना भी है कि हम कितनी धारणा कर रहे हैं | (नारद का मिसाल) भक्त जब तक ज्ञान न उठायें तब तक देवता बन न सकें | यह सिर्फ़ लक्ष्मी को वरने की बात नहीं है | यह तो समझने की बात है | तुम बच्चे समझते हो जब हम सतोप्रधान थे तो विश्व पर राज्य करते थे | अब फिर सतोप्रधान बनने के लिए बाप को याद करना है | यह मेहनत कल्प-कल्प तुम यथा योग यथा शक्ति करते ही आये हो | हर एक समझ सकते हैं हम कहाँ तक किसको समझा सकते

हैं? देह-अभिमान से हम कहाँ तक निकलते जा रहे हैं? मैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हूँ | मैं आत्मा इनसे काम लेती हूँ, यह मेरे आरगन्स हैं | हम सब पार्टधारी हैं | इस ड्रामा में यह बेहद का बड़ा नाटक है | उसमें नम्बरवार सब एक्टर्स हैं |

ज्ञान का सागर एक ही बेहद का बाप है | उनसे दैवीगुण धारण करने चाहिए | यह दुनिया के मनुष्य दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान बनते जाते हैं | जास्ती अवगुण सीखते जाते हैं | आगे इतना करप्शन, एडलट्रेशन. भ्रष्टाचार नहीं था, अब बढ़ता जाता है | अभी तुम बाप की याद के बल से सतोप्रधान बनते जा रहे हो | जैसे उतरते हो, फिर जाना भी ऐसे ही है | पहले तो बाप मिला उसकी ख़ुशी होगी, कनेक्शन जुटा फिर है याद की यात्रा | जिसने जास्ती भक्ति की होगी उनकी जास्ती याद की यात्रा होगी | बहुत बच्चे कहते हैं बाबा याद ठहरती नहीं है | भक्ति में भी ऐसे होता है | कथा सुनने बैठते हैं तो बुद्धि और-और तरफ़ भाग जाती है | सुनाने वाला देखता रहता है फिर अचानक पूछते हैं हमने क्या सुनाया तो वायरे हो जाते हैं | (मूँझ जाते हैं) कोई झट बतायेंगे | सब तो एक जैसे नहीं होते हैं | भल यहाँ बैठे हैं परन्तु धारणा कुछ भी नहीं | अगर धारणा होती तो कमाल कर दिखाते | वह अपना और दूसरों का कल्याण करने बिना रह नहीं सकते | भल किसको घर में बहुत सुख है, महल मोटरें आदि हैं परन्तु एक बार तीर लग गया तो बस, पति को कहेंगे यह यह रूहानी सर्विस करने चाहते हैं | परन्तु माया बड़ी जबरदस्त है, करने नहीं देती | मोह है ना | इतने महल, इतने सुख कैसे छोड़े | अरे, यह इतने सब पहले जो भागे | बड़े-बड़े लखपति, करोड़पति घर की थी, सब छोड़कर चली आई | यह तक़दीर दिखाती है, इतनी ताक़त नहीं है छोड़ने की | रावण की जंज़ीरों में जकड़े हुए हैं | यह हैं बुद्धि की जंज़ीरें | बाप समझाते हैं – अरे, तुम स्वर्ग के मालिक पूज्य बनते हो! बाप गैरन्टी करते हैं 21 जन्म तुम कभी बीमार नहीं पड़ेंगे | एवर हेल्दी 21 जन्मों तक रहेंगे | तुम भल रहो

पति के पास सिर्फ़ उनकी छुट्टी लो – पवित्र बनूँगी और बनाऊँगी | यह तुम्हारा फ़र्ज़ है बाप को याद करना, जिससे अपार सुख मिलते हैं | याद करते-करते तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे | कितनी समझ की बात है | शरीर पर भरोसा नहीं है | बाप का तो बन जाओ | उन जैसी प्यारी वस्तु कोई और नहीं है |

बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को शान्तिधाम-सुखधाम ले चलने के लिए | तुम मुझे याद करो और सृष्टि चक्र को फिराओ | कोई भी विकर्म नहीं करो | जो गुण इन देवताओ में हैं ऐसे गुण धारण करने हैं | बाबा कोई तकलीफ़ नहीं देते हैं | कोई-कोई घरों में भी ईविल सोल होती है तो आग लगा देती है, नुकसान करती है | इस समय मनुष्य ही सब ईविल हैं ना | स्थूल में भी कर्मभोग होता है | आत्मा एक-दो को दुःख देती है शरीर द्वारा, शरीर नहीं है तो भी दुःख देती है | बच्चों ने देखा है जिसको घोस्ट कहते हैं वह सफ़ेद छाया मुआफ़िक देखने में आते हैं | परन्तु उनका कुछ ख्याल नहीं करना होता है | तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना यह सब ख़त्म होते जायेंगे | यह भी हिसाब-किताब है ना | घर में बच्चियाँ कहते हैं – हम पवित्र रहना चाहती हैं | यह आत्मा कहती है | और जिनमें ज्ञान नहीं है, वह कहते हैं पवित्र नहीं बनो | फिर झगड़ा हो पड़ता है | इतना हंगामा होता है | अब तुम पवित्र आत्मा बन रहे हो | वह है अपवित्र, तो दुःख देते हैं | हैं तो आत्मा ना | उनको कहा जाता है ईविल आत्मा | शरीर से भी, तो बिगर शरीर भी दुःख देते हैं | ज्ञान तो सहज है | स्वदर्शन चक्रधारी बनना है | बाकी मुख्य है पवित्रता की बात | इसके लिए बाप को ख़ुशी से याद करना है | रावण को ईविल कहेंगे ना | इस समय यह दुनिया है ही ईविल | एक-दो से अनेक प्रकार के दुःख पाते रहते हैं | ईविल पतित को कहा जाता है | पतित आत्मा में भी 5 विकार अनेक प्रकार के होते हैं | कोई में विकार की आदत, कोई में क्रोध की आदत, कोई में तंग करने की आदत,

कोई में नुकसान करने की आदत होती है | कोई में विकार की आदत होगी तो विकार न मिलने कारण क्रोध में आकर बहुत मारते भी हैं | यह दुनिया ही ऐसी है | तो बाप आकर धीरज देते हैं – हे आत्मायें, बच्चों धीरज धरो, मुझे याद करते रहो और दैवीगुण भी धारण करो | ऐसे भी नहीं कहते हैं कि धन्धा आदि नहीं करो | जैसे मिलेट्री वालों को लड़ाई में जाना पड़ता है तो उन्हों को भी कहा जाता है शिवबाबा की याद में रहो | गीता के अक्षरों को उठाए वह समझते हैं हम युद्ध के मैदान में मरेंगे तो स्वर्ग में जायेंगे इसलिए ख़ुशी से लड़ाई में जाते हैं | परन्तु वह तो बात ही नहीं | अब बाबा कहते हैं तुम स्वर्ग में जा सकते हो सिर्फ़ शिवबाबा को याद करो | याद तो एक शिवबाबा को ही करना है तो स्वर्ग में ज़रूर जायेंगे | जो भी आते हैं भल फिर जाकर पतित बनते हैं तो भी स्वर्ग में ज़रूर आयेंगे | सजायें खाकर, पावन बनकर फिर भी आयेंगे ज़रूर | बाप रहमदिल है ना | बाप समझाते हैं कोई विकर्म न करो तो विकर्माजीत बनेंगे | यह लक्ष्मी-नारायण विकर्माजीत हैं ना | फिर रावण राज्य में विकर्मी बन जाते हैं | विक्रम संवत शुरू होता है ना | मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है | तुम बच्चे अभी जानते हो यह लक्ष्मी-नारायण विकर्माजीत बने हैं | कहेंगे विकर्माजीत नम्बरवन फिर 2500 वर्ष के बाद विक्रम संवत शुरू होता है | मोहजीत राजा की कहानी है ना | बाप कहते हैं नष्टोमोहा बनो | मामेकम् याद करो तो पाप कटेंगे | जो 2500 वर्ष में पाप हुए हैं वह 50-60 वर्ष में तुम स्वयं को सतोप्रधान बना सकते हो | अगर योगबल नहीं होगा तो फिर नम्बर पीछे हो जायेंगे | माला तो बहुत बड़ी है | भारत की माला तो ख़ास है | जिस पर ही सारा खेल बना हुआ है | इसमें मुख्य है याद की यात्रा, और कोई तकलीफ़ नहीं है | भक्ति में तो अनेकों से बुद्धियोग लगाते हैं | यह सब है रचना | उनकी याद से किसका भी कल्याण नहीं होगा | बाप कहते हैं किसको भी याद नहीं करो | जैसे भक्ति मार्ग में पहले सिर्फ़ तुम भक्ति करते थे अब फिर पिछाड़ी में भी मुझे याद करो | बाप कितना क्लीयर समझाते हैं | आगे थोड़ेही जानते थे

| अभी तुमको ज्ञान मिला है | बाप कहते हैं और संग तोड़ एक संग जोड़ो तो योग अग्नि से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे | पाप तो बहुत करते आये हो | काम कटारी चलाते हो | एक-दो को आदि-मध्य-अन्त दुःख देते आये हो | मूल बात है काम कटारी की |

एक बाप के बच्चे हो | इस संगमयुग पर ही भाई-बहन के सम्बन्ध में रहते हैं | तो विकार की दृष्टि बन्द हो जाए | एक बाप को ही याद करना है | वाणी से भी परे जाना है | ऐसे-ऐसे अपने से बातें करना यह है सूक्ष्म स्टडी, इसमें आवाज़ करने की दरकार नहीं | यह तो बच्चों को समझाने के लिए आवाज़ में आना पड़ता है | वाणी से परे जाने लिए भी समझाना पड़ता है | अब वापिस जाना है | बाप को बुलाया है कि आओ, हमको साथ ले जाओ | हम पतित हैं, वापिस जा नहीं सकते | पतित दुनिया में अब पावन कौन बनाये! साधू-सन्त आदि कोई पावन बना न सकें | खुद ही पावन होने के लिए गंगा स्नान करते हैं | बाप को जानते नहीं | जिन्होंने कल्प पहले जाना है, वही अब पुरुषार्थ कर रहे हैं | यह पुरुषार्थ भी बाप के बिना कोई करा नहीं सकता | बाप ही सबसे ऊँच है | ऐसे बाप को पत्थर ठिक्कर में कहने से मनुष्य का क्या हाल हो गया है! सीढी उतरते ही आये हैं | कहाँ वह सम्पूर्ण निर्विकारी, कहाँ यह सम्पूर्ण विकारी | इन बातों को मानेंगे भी वह जिन्होंने कल्प पहले माना होगा | तुम्हारा फ़र्ज़ है जो भी आये उनको बाप का फ़रमान बताना | सीढी के चित्र पर समझाओ | सभी की अब वानप्रस्थ अवस्था है | सभी शान्तिधाम और सुखधाम में जायेंगे | सुखधाम में वह जायेंगे जो आत्मा को बुद्धियोग बल से सम्पूर्ण पवित्र बनायेंगे | भारत का प्राचीन योग भी गाया हुआ है | आत्मा को अब स्मृति आती है बरोबर हम पहले-पहले आये हैं | अब फिर वापिस जाना है | तुमको अपना पार्ट याद आता है | जो इस कुल में आने वाले नहीं हैं उनको याद भी नहीं आता है कि हमको पवित्र बनना है | पवित्र बनने में ही मेहनत करनी पड़ती है | बाप कहते हैं

अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो विकर्माजीत बनेंगे और बहन-भाई समझो तो दृष्टि बदल जायेगी | सतयुग में दृष्टि ख़राब नहीं होती | बाप तो समझाते रहते हैं बच्चे अपने से पूछो – हम सतयुगी देवता हैं या कलियुगी मनुष्य हैं? तुम बच्चों को बहुत अच्छे-अच्छे चित्र, स्लोगन आदि बनाने चाहिए | एक कहे सतयुगी हो या कलियुगी? दूसरा फिर दूसरा प्रश्न पूछे, ऐसे धूम मचा देनी चाहिए |

मैं जो हूँ, जैसा हूँ कोई तो यह 5 परसेन्ट भी नहीं जानते | तुम्हें बाप को जानकर पूरी रीति याद करना है | मामेकम याद क्यों नहीं करते हो? कहते हैं बाबा याद भूल जाती है | अरे तुम बाबा को याद नहीं कर सकते हो | यूँ तो बाप समझते हैं यह मेहनत का काम है, फिर भी पुरुषार्थ कराने के लिए पम्प करते रहते हैं | अरे, जो बाप तुमको क्षीरसागर में ले जाते हैं, विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको भूल जाते हो! माया भुलायेगी भी ज़रूर | टाइम लगेगा | ऐसे भी नहीं कि माया को भुलाना ही है, इसलिए ठण्डे होकर बैठ जाओ | नहीं, पुरुषार्थ ज़रूर करना है | काम पर जीत पानी है | मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे |

विकार एकदम मार डालता है | जो कुछ जंक निकाल पतित से पावन बना, वह की कमाई चट हो जाती है | फिर नयेसिर मेहनत करनी पड़े | ऐसे नहीं, उनको एलाउ नहीं करना है | नहीं, उनको समझाना है जो कुछ याद के यात्रा की, पढ़ा वह सब ख़लास हो गया | एकदम नीचे गिर पड़ते हैं | फिर भी घड़ी-घड़ी अगर गिरते रहेंगे तो कहेंगे गेट आउट | एक-दो बारी आजमाया जायेगा | दो बारी माफ़ी मिली, फिर केस होपलेस हो जाता है | फिर आयेगा भी लेकिन एकदम डर्टी क्लास में | भेंट में तो ऐसे कहेंगे ना | जो बिल्कुल कम पद पाते हैं उनको

कहेंगे डर्टी क्लास | दास-दासियाँ, चण्डाल, प्रजा के भी नौकर-चाकर सब बनते हैं ना | बाप तो जानते हैं मैं इन्हों को पढ़ा रहा हूँ | हर 5 हज़ार वर्ष के बाद पढ़ाता हूँ | वह लोग लाखों वर्ष कह देते हैं | आगे चलकर यह भी कहने लग पड़ेंगे कि बरोबर 5 हज़ार वर्ष की बात है | वो ही महाभारी लड़ाई है | परन्तु याद की यात्रा में रह न सकें | दिन प्रतिदिन टूलेट होते जायेंगे | गाया भी जाता है बहुत गई थोड़ी रही....... | यह सब इस समय की बातें हैं | बाकी थोड़ा समय है पावन बनने में | लड़ाई सामने खड़ी है | अपने दिल से पूछना है – हम याद की यात्रा पर हैं?

पुरुषार्थ से सारा मालूम पड़ जाता है | स्थूल सेवा की भी सब्जेक्ट है, मन्सा नहीं तो वाचा, कर्मणा | वाचा तो बहुत सहज है | पहले है मन्सा अर्थात् मन्मनाभव, याद की यात्रा में रहना है | अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है | बाबा से शिक्षा लेनी है | बहुत हैं जो बाप को याद नहीं कर सकते | ऐसे नहीं कहेंगे कि ज्ञान को याद नहीं कर सकते | मामेकम् याद नहीं कर सकते | याद नहीं करेंगे तो ताक़त कैसे मिलेगी | बाप सर्वशक्तिमान् है, उनको याद करने से ही शक्ति आएगी, इनको ही जौहर कहा जाता है | कर्मणा भी कोई अच्छी करे तो पद मिले | कर्मणा भी नहीं करते तो फिर पद क्या मिलेगा | सब्जेक्ट होती है ना | यह है गुप्त समझने की बातें | वो लोग योग-योग कहते रहते हैं परन्तु समझते नहीं कि योग से तुम विश्व की बादशाही लेते हो | योगबल से वहाँ बच्चा पैदा होता है | यह भी किसको पता नहीं है | तुमको समझाया जाता है फिर भी आधाकल्प के बाद तुम माया के मुरीद (चेला) बन जाते हो | फिर माया तुमको अभी भी नहीं छोड़ती है | अब तुमको शिवबाबा के मुरीद बनना है | कोई भी देहधारियों का मुरीद नहीं बनना है | बहन-भाई भी अब कहा जाता है – पवित्र बनने के लिए | फिर तो इससे भी ऊपर जाना है | भाई-भाई समझना है | भाई-बहन की दृष्टि भी

नहीं | ड्रामा अनुसार जो कुछ चलता है, बिल्कुल एक्यूरेट | ड्रामा बहुत एक्यूरेट है | बाप तो बेफ़िक्र है, इनको तो फ़िक्र ज़रूर रहेगा | बेफ़िक्र तब रहेंगे जब कर्मातीत अवस्था होगी, तब तक कुछ न कुछ होता है | योग अच्छा चाहिए | योग के लिए बाबा अब ज़ोर देते हैं | इसके लिए कहते हैं घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं | बाप उल्हना देते हैं, जो बाप तुमको इतना ख़ज़ाना देते हैं उनको तुम भूल जाते हो | बाप जानते हैं किसमें ज्ञान है, किसमें नहीं है | ज्ञानी कभी छिपा नहीं रहेगा | वह झट सर्विस का सबूत देगा | तो यह सब समझने की बातें हैं |

- कोई में ज्ञान बहुत है, योग का जौहर कम है | जो बांधेले हैं, गरीब हैं वह शिवबाबा को बहुत याद करते हैं | उनमें ज्ञान कम है, योग का जौहर बहुत है | वह तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हैं | जैसे एक अर्जुन-भील का भी मिसाल दिखाते हैं | अर्जुन से भी भील तीखा हो गया – बाण मारने में | अर्जुन अर्थात् जो घर में रहते हैं, रोज़ सुनते हैं | उनसे बाहर रहने वाले तीखे हो जाते हैं | जिनमें ज्ञान का जौहर है उनके आगे वह भरी ढोते हैं | कहेंगे भावी | कोई फेल होते हैं वा देवाला मारते हैं तो नसीब पर हाथ रखते हैं | ज्ञान के साथ योग का जौहर भी ज़रूर चाहिए | जौहर नहीं तो गोया कुक्कड़-ज्ञानी हैं | बच्चे भी फ़ील करते हैं | कोई का पति में, कोई का किसमें प्यार होता है | ज्ञान में बहुत तीखे होते लेकिन अन्दर खिटखिट रहती है | यहाँ तो बिल्कुल साधारण रहना है |

- यहाँ बहुत साइलेन्स होनी चाहिए | यह है होलीएस्ट ऑफ़ होली क्लास | जहाँ शान्ति में तुम बाप को याद करते हो | हमको अब शान्तिधाम जाना है, इसलिए बाप को बहुत प्यार से याद करना है | सतयुग में 21 जन्म के लिए तुम सुख-शांति दोनों पाते हो | बेहद का बाप है बेहद

का वर्सा देने वाला | तो ऐसे बाप को फ़ालो करना चाहिए | अहंकार नहीं आना चाहिए, वह गिरा देता है | बहुत धैर्यवत अवस्था चाहिए | हठ नहीं | देह-अभिमान को हठ कहा जाता है | बहुत मीठा बनना है | देवतायें कितने मीठे हैं, कितनी कशिश होती है | बाप तुमको ऐसा बनाते हैं | तो ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए | तो बच्चों को यह बातें बार-बार सिमरण कर हर्षित होना चाहिए | इनको तो निश्चय है कि हम शरीर छोड़ यह (लक्ष्मी-नारायण) बनेंगे | एम ऑब्जेक्ट का चित्र पहले-पहले देखना चाहिए |

बाप बच्चों से पूछते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार | मूलवतन भी नम्बरवार ज़रूर याद आता होगा | बच्चों को यह भी ज़रूर याद आता होगा कि हम पहले शान्तिधाम के रहने वाले हैं फिर आते हैं सुखधाम में, यह तो ज़रूर अन्दर में समझते होंगे | मूलवतन से लेकर यह जो सृष्टि का चक्र है वह कैसे फिरता है – यह भी बुद्धि में है | इस समय हम ब्राह्मण हैं फिर देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे | यह तो बुद्धि में चक्र चलना चाहिए ना | बच्चों की बुद्धि में यह सारी नॉलेज है | बाप ने समझाया है, आगे नहीं जानते थे | अभी तुम ही जानते हो | दिन-प्रतिदिन तुम्हारी वृद्धि होती रहेगी | बहुतों को सिखलाते रहते हो | ज़रूर पहले तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी बनेंगे | यहाँ तुम बैठे हो, बुद्धि से जानते हो वह हमारा बाप है | वो ही सुप्रीम टीचर है सिखलाने वाला | उसने ही समझाया है हम 84 का चक्र कैसे लगाते हैं | बुद्धि में ज़रूर याद होगा ना | यह बुद्धि में हर वक्त याद करना है, लेसन कोई बड़ा नहीं है | सेकेण्ड का लेसन है | बुद्धि में रहता है कि हम कहाँ के रहवासी हैं, फिर यहाँ कैसे पार्ट बजाने आते हैं | 84 का चक्र है | सतयुग में इतने जन्म, त्रेता में इतने जन्म – यह चक्र तो याद करेंगे ना | अपना जो पोजीशन मिला है, पार्ट बजाया है, वह भी ज़रूर बुद्धि में याद रहेगा | कहेंगे हम यह डबल सिरताज थे फिर सिंगल ताज वाले बनें | फिर सारी राजाई ही चली गई, तमोप्रधान बन गये

| यह चक्र तो फिरना चाहिए ना इसलिए नाम ही रखा है स्वदर्शन चक्रधारी | आत्मा को ज्ञान मिला हुआ है | आत्मा को दर्शन हुआ है | आत्मा जानती है हम ऐसे-ऐसे चक्र लगाते हैं | अब फिर जाना है घर | बाप ने कहा है मुझे याद करो तो घर पहुँच जायेंगे | ऐसे भी नहीं है कि इस समय तुम उस अवस्था में बैठ जायेंगे | नहीं, बाहर की बहुत बातें बुद्धि में आ जाती हैं | किसको क्या याद आता होगा, किसको क्या याद आता होगा | यहाँ तो बाप कहते हैं और सब बातों को समेट एक को ही याद करो | श्रीमत मिलती है उस पर चलना है | स्वदर्शन चक्रधारी बनकर तुमको अन्त तक पुरुषार्थ करना है | पहले तो कुछ पता नहीं था, अब तो बाप बतलाते हैं | उनको याद करने से सब-कुछ आ जाता है | रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सारा राज़ बुद्धि में आ जाता है | यह तो सबक (पाठ) मिलता है, उसको तो घर में भी याद कर सकते हो | यह है बुद्धि से समझने की बात | तुम वन्डरफुल स्टूडेण्ट हो | बाप ने समझाया है – 8 घण्टा आराम भी भल करो, 8 घण्टा शरीर निर्वाह के लिए काम भी भल करो | वह धन्धा आदि भी करना है | साथ में यह जो बाप ने धन्धा दिया है, आप समान बनाने का, यह भी शरीर निर्वाह हुआ ना | वह है अल्पकाल के लिए और यह है 21 जन्म शरीर निर्वाह के लिए | तुम जो पार्ट बजाते हो, उसमें इसका भी बहुत भारी महत्व है | जो जितनी मेहनत करते हैं उतनी ही फिर बाद में भक्ति में उनकी पूजा होती है | यह सब धारणा तुम बच्चों को ही करनी है |

कृष्ण को भी हिंसक बना दिया है! इसमें एकान्त में विचार सागर मंथन करना होता है | रात्री को जो बच्चे पहरा देते हैं उन्हें टाइम बहुत अच्छा मिलता है, वह बहुत प्यार कर सकते हैं | बाप को याद करते स्वदर्शन चक्र भी फिराते रहो | याद करेंगे तो ख़ुशी में नींद भी फिट जायेगी | जिसको धन मिलता है वह बहुत ख़ुशी में रहता है | कभी झटके नहीं खायेगा | तुम जानते

हो हम एवर हेल्दी, वेल्दी बनते हैं | तो इसमें अच्छी रीति लग जाना चाहिए | यह भी अब बाप जानते हैं ड्रामा अनुसार जो कुछ चलता है वह ठीक है |

- देही-अभिमानी भव | देह-अभिमान में आने से तुम छी-छी बन पड़े हो | कोई ख़ुशी नहीं है | बीमारियाँ रोग आदि सब-कुछ है | अब पतित-पावन मैं ही हूँ | मुझे तुमने बुलाया है | मैं कोई साधू-सन्त आदि नहीं हूँ | कोई आते हैं, कहते हैं गुरू जी का दर्शन करें | बोलो गुरु जी तो हैं नहीं और दर्शन से भी कोई फ़ायदा नहीं | बाप तो हर बात सहज समझाते हैं | जितना याद करेंगे उतना तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे | फिर देवता बन जायेंगे | तुम यहाँ फिर से देवता सतोप्रधान बनने के लिए आये हो | बाप कहते हैं मेरे को याद करने से तुम्हारी कट निकल जायेगी | सतोप्रधान बनेंगे | पुरुषार्थ से ही बनेंगे ना | उठते बैठते चलते बाप को याद करो | क्या स्नान करते बाप को याद नहीं कर सकते हो? अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो कट निकलेगी और ख़ुशी का पारा चढ़ेगा | तुमको कितना धन देता हूँ | तुम आये हो विश्व का मालिक बनने |

- म्युज़ियम में आते बहुत हैं, समझने के लिए | सेवा का चान्स अच्छा है परन्तु योग है नहीं | बाप को याद करें तो प्रफुल्लता भी आये | हम किसकी सन्तान हैं | कितने बच्चे कायदेसिर पढ़ते नहीं हैं | बाप से योग है नहीं | सम्पूर्ण तो कोई बना नहीं है | नम्बरवार हैं | बच्चों को एकान्त में बैठ बाप को याद करना है | ऐसे बाप से हम स्वर्ग का वर्सा पाते हैं | इस दुनिया में हम ही सबसे पतित बने हैं, फिर हमको ही पावन बनना है | यह अच्छी रीति याद करना है | बाप हर प्रकार की राय तो देते हैं – ऐसे-ऐसे करो | जैसे क्वीन विक्टोरिया का वजीर गरीब था,

रोड की लाइट पर (बत्ती) पर पढ़-पढ़ कर ऊँच पद पा लिया | शौक था | यह भी गरीबों के लिए है | बाप है गरीब निवाज़ | साहूकार क्या भगवान् को याद कर सकेंगे | कहेंगे हमारे लिए तो स्वर्ग यहाँ ही है | अरे, बाबा ने स्वर्ग की स्थापना की नहीं है | अब कर रहे हैं | बाप को याद करो, पावन तो ज़रूर बनना है | बच्चों को युक्ति रचनी है – कैसे किसको समझायें कि भारत का प्राचीन योग सिवाए परमपिता परमात्मा के कोई सिखला नहीं सकते | हठयोग है निवृत्ति मार्ग वालों के लिए | बाप समझाते रहते हैं जब किसका कल्याण होना होगा तो फिर लिखेंगे भी ऐसे | अभी देरी है तो किसकी बुद्धि में आता नहीं है |

सर्विस करते-करते बहुत बच्चों के गले थक जाते हैं | परन्तु योग नहीं है तो तीर नहीं लगता है | इसको भी ड्रामा कहेंगे | बाबा को जान लिया तो फिर बाबा से मिलने बिगर रह नहीं सकेंगे | ट्रेन में भी योगयुक्त हो आयें, हम जाते हैं बाबा के पास | जैसे विलायत से आते हैं तो स्त्री, बाल बच्चे सब याद आते हैं | यह तो हम किसके पास जाते हैं! तो रास्ते में कितनी ख़ुशी होनी चाहिए | सर्विस करते-करते आना चाहिए | बाबा है सागर, देखते हैं बच्चे फ़ालो कर रहे हैं | ज्ञान की लहरें उठती हैं तो देखकर खुश होते हैं | यह तो बहुत अच्छा सपूत बच्चा है | सवेरे याद की यात्रा में बहुत फ़ायदा है | ऐसे भी नहीं, सिर्फ़ सुबह को याद करना है | उठते-बैठते खाते-पीते याद किया, सर्विस की तो तुम यात्रा पर हो |

मैं बच्चों को आत्मा ही समझता हूँ | आत्मा को पढ़ाता हूँ | भक्ति मार्ग में भी आत्मा पार्ट बजाती आई है | पार्ट बजाते-बजाते पतित बनी है | अब फिर आत्मा को पवित्र बनना है | सो जब तक बाप को परमात्मा समझकर याद नहीं करेंगे तो पवित्र कैसे बनेंगे | इस पर बच्चों

को बहुत अन्तर्मुखी हो याद का अभ्यास करना है | नॉलेज सहज है | बाकी यह निश्चय पक्का रहे कि हम आत्मा पढ़ते हैं, बाबा हमको पढ़ाते हैं, तो धारणा भी होगी और कोई विकर्म नहीं होगा | ऐसे नहीं, इस समय हमसे कोई विकर्म नहीं होता है | विकर्माजीत तो अन्त में बनेंगे | भाई-भाई की दृष्टि बहुत मीठी रहती है | इसमें कभी देह-अभिमान नहीं आयेगा | बच्चे समझते हैं बाप की नॉलेज बड़ी डीप है | अगर ऊँच ते ऊँच बनना है तो यह प्रैक्टिस अच्छी रीति करनी पड़े | इस पर गौर करना पड़े | अन्तर्मुखी होने के लिए एकान्त भी चाहिए | यहाँ जैसा एकान्त घर में धन्धेधोरी में तो मिल न सके | यहाँ तुम सब प्रैक्टिस बहुत अच्छी कर सकते हो | आत्मा को ही देखना पड़े | अपने को भी आत्मा समझना है यह प्रैक्टिस यहाँ करने से आदत पड़ जायेगी | फिर अपना चार्ट भी रखना चाहिए – कहाँ तक आत्म-अभिमानी बने हैं? आत्मा को ही हम सुनाते हैं, उनसे ही बातचीत करते हैं | यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए | बच्चे समझते होंगे यह बात तो ठीक है | देह-अभिमान निकल जाए और हम आत्म-अभिमानी बन जाएं, धारणा करते और कराते जाएं | कोशिश कर अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना – यह चार्ट बड़ा डीप है | बड़े-बड़े महारथी भी समझते होंगे – बाबा जो दिन-प्रतिदिन सब्जेक्ट देते हैं विचार सागर मंथन करने के लिए, यह तो बहुत बड़ी प्वाइन्ट्स हैं | फिर कभी भी मुख से कोई उल्टा-सुल्टा अक्षर नहीं निकलेगा | भाइयों-भाइयों का आपस में बहुत लव हो जायेगा | हम सब ईश्वर की सन्तान हैं | बाप की महिमा को तो जानते ही हो |

देह-अभिमान आने से विकर्म बन जायेंगे इसलिए छुई-मुई का दृष्टान्त है | बाप को याद करने से तुम खड़े हो जायेंगे | भूलने से कुछ न कुछ भूल हो जायेगी | पद भी कम हो पड़ता है | शिक्षा तो सबको दी है, जिसकी बाद में गीता बनाई है | गरुड़ पुराण में रोचक बातें लिखी हैं, जो मनुष्यों को डर लगे | रावण राज्य में पाप तो होते ही हैं क्योंकि है ही काँटों का जंगल |

बाप कहते हैं दृष्टि को भी बदलना है | बहुत समय से हिरे हुए हैं इसलिए शरीर की तरफ़ प्यार चला जाता है | विनाशी चीज़ से प्यार रखने से फ़ायदा ही क्या? अविनाशी से प्यार रखने में अविनाशी बन जाता है | बच्चों को यही डायरेक्शन है – उठते-बैठते चलते-फिरते बाप को याद करो |

84 जन्मों की भी कहानी है ना | जो भी भक्ति की है, नीचे ही उतरे हैं | अब बाप ऊपर चढ़ना सिखलाते हैं | अब तुम्हारी चढ़ती कला है | अगर बुद्धियोग बाप के साथ नहीं लगायेंगे तो ज़रूर नीचे ही गिरेंगे | बाप को याद करते हो तो ऊपर चढ़ते हो | मेहनत है बहुत, परन्तु बच्चे गफ़लत करते हैं | धन्धे में बाप को और नॉलेज को भूल जाते हैं | माया तूफ़ान में लाती है – फ़लाना ऐसा है, यह करता है, यह ब्राह्मणी ऐसी है, इसमें यह अवगुण है | अरे, इसमें तुम्हारा क्या जाता है! सर्वगुण सम्पन्न तो कोई बना नहीं है | कोई का अवगुण न देख गुण ग्रहण करना है | अवगुण देखो तो मुँह मोड़ लो | मुरली तो मिलती है वह सुनते धारण करते रहो | बुद्धि से समझना है यह बाबा की बात बिल्कुल ठीक है | जो बात ठीक न लगे, छोड़ देनी चाहिए | पढ़ाई से कभी रूठना नहीं चाहिए | ब्राह्मणी से वा पढ़ाई से रूठना गोया बाप से रूठना | ऐसे बहुत बच्चे हैं, जो फिर सेन्टर पर नहीं आते हैं | भल कोई कैसा भी है तुम्हारा काम मुरली से है, मुरली जो सुनाये उनमें से अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स धारण करनी है | किसी से बात करने में मज़ा नहीं आता तो शान्त करके मुरली सुनकर चले जाना चाहिए | रूठना नहीं चाहिए कि हम यहाँ नहीं आयेंगे | नम्बरवार तो हैं | यह भी अच्छा है जो सुबह को तुम याद में बैठते हो | बाबा आकर सर्च लाइट देते हैं | बाबा अनुभव सुनाते हैं जब बैठते हैं तो जो अनन्य हैं वह बच्चे पहले याद आते हैं | भल विलायत में हैं, कलकत्ते में हैं, तो पहले अनन्य को याद कर सर्चलाइट देते हैं | बच्चे तो भल यहाँ भी बैठे हैं परन्तु बाबा याद उनको करते हैं जो सर्विस

करते हैं | जैसे अच्छे बच्चे शरीर छोड़ जाते हैं तो उनकी आत्मा को भी याद करते हैं, बहुत सर्विस करके गये हैं | तो ज़रूर यहाँ ही नज़दीक कोई घर में होंगे | तो उनको भी बाबा याद कर सर्चलाइट देते हैं | हैं तो सब बाबा के बच्चे | परन्तु कौन-कौन अच्छी सर्विस करते हैं, यह तो सब जानते हैं | बाबा ने कहा – यहाँ सर्च लाइट दो, तो देते हैं | दो इन्जन हैं ना | यह भी इतना ऊँच पद पाते हैं तो ज़रूर ताक़त होगी | भल बाबा कहते हैं हमेशा यही समझो कि शिवबाबा पढ़ाते हैं तो उनकी याद रहनी चाहिए | बाकी यह तो समझते हो यहाँ दो बत्ती हैं | और तो कोई में दो बत्ती नहीं हैं इसलिए यहाँ दो बत्तियों के सम्मुख आते हैं तो अच्छी तरह से रिफ्रेश होते हैं | टाइम भी सवेरे का अच्छा है | स्नान कर छत पर एकान्त में चले जाना चाहिए | बाबा ने इसलिए बड़ी-बड़ी छतें बनाई हैं | पादरी लोग भी एकदम साइलेन्स में जाते हैं, ज़रूर क्राइस्ट को याद करते होंगे | गॉड को जानते नहीं | अगर गॉड को याद करते होंगे तो शिवलिंग ही बुद्धि में आता होगा | अपनी मस्ती में जाते हैं, तो उनसे गुण उठाना है | दत्तात्रेया के लिए भी कहते हैं वह सबसे गुण उठाते थे | तुम बच्चे भी नम्बरवार दतात्रेय हो | यहाँ एकान्त बहुत अच्छा है | जितनी चाहो कमाई कर सकते हो | बाहर तो गोरख़धन्धा याद पड़ेगा | 4 बजे का टाइम भी बहुत अच्छा है | बाहर कहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है | घर में बैठे हो, पहरा भी है | यज्ञ में पहरा भी रखना पड़ता है | यज्ञ के हर वस्तु की सम्भाल रखनी पड़ती है क्योंकि यज्ञ की एक-एक चीज़ बहुत-बहुत वैल्युबुल है, इसलिए सेफ़्टी फर्स्ट | यहाँ कोई आयेंगे नहीं | समझते हैं यहाँ जेवर आदि तो कुछ हैं नहीं | यह मन्दिर भी नहीं है | आजकल चोरी सब जगह होती है | विलायत में भी पुरानी चीज़ें चोरी करके ले जाते हैं | जमाना बहुत डर्टी है, काम महाशत्रु है | वह सब कुछ भुला देता है | तो तुम्हारा सवेरे एक क्लास होता है एवरहेल्दी बनने का और फिर यह है एवरवेल्दी बनने का | बाप को याद भी करना है तो विचार सागर मंथन भी करना है | बाप को याद करेंगे तो वर्सा भी याद आयेगा | यह युक्ति बहुत

सहज है | जैसे बाप बीजरूप है | झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं | तुम्हारा भी धन्धा यह है | बीज को याद करने से पवित्र बनेंगे | चक्र को याद करेंगे तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे अर्थात् धन मिलेगा | राजा विकर्म और राजा विकर्माजीत दो संवत मिक्स कर दिये हैं |

- बच्चों में योग की पॉवर अच्छी चाहिये | ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिये | खुशमिज़ाज़ और योगी होगा तो नाम निकालेंगे | नम्बरवार तो हैं | राजधानी बननी है | बाप कहते हैं धारणा तो बहुत सहज है | बाबा को जितना याद करेंगे उतना लव रहेगा | कशिश होगी | सुई साफ़ है तो चुम्बक तरफ़ खिंचती है | कट होगी तो खींचेगी नहीं | यह भी ऐसे है | तुम साफ़ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो | बाप की याद से कट निकलेगी |

- गायन है – बलिहारी गुरु आपकी.....इसलिये कहते हैं गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु.....वह सगाई कराने वाले गुरु मनुष्य हैं | तुमने सगाई शिव के साथ की है, न कि ब्रह्मा से | तो याद भी शिव को ही करना है | दलाल के चित्र की ज़रूरत नहीं | सगाई पक्की हो गई फिर एक-दो को याद करते रहते हैं तो इनको भी दलाली मिल जाती है | सगाई का भी मिलता है ना | दूसरा फिर इनमें प्रवेश करते हैं, लोन लेते हैं तो वह भी कशिश करते हैं | तब बच्चों को भी समझाते हैं कि जितना तुम बहुतों का कल्याण करेंगे उतना तुमको उजूरा मिलेगा | यह हैं ज्ञान की बातें |

- बाबा हमेशा कहते हैं याद की यात्रा का चार्ट रखो | दिल से हर एक पूछे – हम कहाँ तक याद करते हैं? तुम बच्चों की दिल में अथाह ख़ुशी रहनी चाहिए | तुमको अन्दरूनी ख़ुशी होगी तो दूसरों को भी समझाने का असर होगा | पहली मूल बात यही कहना है कि भाइयों और बहनों,

अपने को आत्मा समझो | ऐसे और कोई सतसंग में नहीं कहेंगे | वास्तव में सतसंग कोई है नहीं | सत का संग एक ही है | बाकी है कुसंग |

- अब बाप कहते हैं – बीती सो बीती | पहले अपने को सुधारो | दिल से पूछो – हम अपने को आत्मा समझ बाप को कितना याद करते हैं? जो बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं | हम शिवबाबा के बच्चे हैं, तो ज़रूर हमको विश्व का मालिक बनना है | वही एक माशूक आकर तुम्हारे सामने खड़ा हुआ है, तो उनके साथ बहुत लव होना चाहिए | लव माना याद | शादी होती है तो स्त्री का पति के साथ कितना लव होता है | तुम्हारी भी सगाई हुई है, शादी नहीं | वह तो जब विष्णुपुरी में जायेंगे | पहले शिवबाबा के पास जायेंगे फिर ससुरघर जायेंगे | सगाई की ख़ुशी कम होती है क्या! सगाई हुई और याद पक्की हुई | सतयुग में भी सगाई होती है | परन्तु वहाँ सगाई कब टूटती नहीं है | अकाले मृत्यु नहीं होती | यह तो यहाँ होती है | तुम बच्चों को भी गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है | भल बहुत नज़दीक भी रहते हैं फिर भी उन्नति नहीं होती है | जो उस लव से आते हैं, उनकी बहुत उन्नति होती है | याद ही नहीं तो लव भी नहीं रहता | तो उनकी शिक्षाओं को भी धारण नहीं कर सकते |

- पापों का बोझा जो सिर पर है वह कैसे छूटे? तुम पुरुषार्थ ही करते हो कि याद से पाप विनाश हो जाएं | रावण के कारण बहुत पाप हुआ है, जिससे छूटने का रास्ता बाप बतलाते हैं | सिर्फ़ कहते हैं मुझे याद करते रहो | याद करते-करते शरीर छूट जाए | तुम्हारे पाप आदि सब ख़त्म हो जायेंगे | याद करना भी मासी का घर नहीं है | मुझे याद करने लिए माया तुमको बहुत हैरान करती है | घड़ी-घड़ी भुला देती है | बाबा अनुभव भी सुनाते हैं | मैं बहुत कोशिश करता

हूँ | परन्तु फिर भी माया अटक डालती है | हैं भी दोनों साथ, इकट्ठे | इकट्ठा होते भी घड़ी-घड़ी भूल जाता हूँ | बड़ा कठिन है | घड़ी-घड़ी यह याद पड़ा, फ़लाना याद पड़ा | तुम तो बहुत अच्छा पुरुषार्थ करते हो | कोई तो गपोड़े भी मारते हैं | 10-15 दिन चार्ट लिखकर छोड़ देते हैं, इसमें बहुत खबरदारी रखनी पड़ती है | समझते तो हैं जब प्योर हो जाएं, कर्मातीत अवस्था को पहुँचे, तब विन करें | यह ईश्वरीय लॉटरी है ना | बाबा को याद करना – यह है याद की डोरी | बुद्धि से समझने की बात है | भल कहते हैं हम बाबा को याद करते हैं परन्तु बाबा कहता है याद करना आता ही नहीं है | पद में भी फ़र्क तो पड़ता है ना | कैसे राजाई स्थापन हुई है | तुमने अनेक बार राजाई की है, फिर गँवाई है | बाबा हर 5 हज़ार वर्ष बाद पढ़ाते हैं | फिर रावण राज्य में तुम वाम मार्ग में चले जाते हो | जो देवता थे वही फिर वाम मार्ग में गिरते हैं तो बाप बहुत गुह्य बातें समझाते हैं – बाप को याद करने की | है तो बहुत सहज | शरीर छोड़ बाप के पास चले जायें | मुझे जानें तब योगबल से विकर्म विनाश हों | वह तो पिछाड़ी में ही हो सकता है | परन्तु वापिस तो कोई आता नहीं | भल कोई कुछ भी करे, यथार्थ योग तो मैं ही आकर सिखलाता हूँ | फिर आधाकल्प योगबल चलता है | वहाँ तो अथाह सुख भोगते हो |

कल्प-कल्प मैं यही बात तुमको सुनाता हूँ | जब तुम काम चिता पर चढ़कर काले हो भस्म हो जाते हो | आग में मनुष्य काले हो जाते हैं | तुम भी सांवरे हो गये हो | सतोप्रधान वाली ताक़त सारी निकल गई है | आत्मा की बैटरी ऐसी न हो जो एकदम डिस्चार्ज हो जाये और मोटर खड़ी जो जाए | इस समय सभी के डिस्चार्ज होने का समय आ गया है, तब बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं आता हूँ जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं उन्हों की बैटरी चार्ज होती है | तुम्हारी बैटरी अभी चार्ज होनी है ज़रूर | ऐसे भी नहीं सिर्फ़ सुबह को यहाँ आकर बैठने

से बैटरी चार्ज हो सकेगी | नहीं, बैटरी चार्ज तो उठते, बैठते, चलते भी हो सकती है – याद में रहने से | तुम पहले पवित्र आत्मा सतोप्रधान थी | सच्चा सोना, सच्चा जेवर थी | अभी तमोप्रधान हो गये हैं | अब फिर आत्मा सतोप्रधान बनती है तो शरीर भी प्योर मिलेगा | यह बड़ी सहज प्योर होने लिए भट्ठी है, इसको योग की भट्ठी भी कह सकते हैं | सोने को भी भट्ठी में डालते हैं | यह है सोने को शुद्ध बनाने की भट्ठी, बाप को याद करने की भट्ठी | प्योर तो ज़रूर बनना है | याद नहीं करेंगे तो इतना प्योर नहीं होंगे | फिर हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है क्योंकि कयामत का समय है | सबको घर जाना है | बुद्धि में घर की याद बैठी हुई है | और किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा | वह ब्रह्म को ईश्वर कह देते हैं, उसको घर नहीं समझते |

यह बहुतों को राजाई मिलनी है | एक हम जाकर क्या करेंगे | यह ज्ञान अभी मिलता है | पहले ख़ुशी का पारा चढ़ गया | पुरुषार्थ तो सबको करना है | तुम पुरुषार्थ के लिए बैठे हो | सुबह को याद में बैठते हो | यह बैठना भी अच्छा है | जानते हो बाबा आया है | बाप आया या दादा आया, यह तो गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने | एक-एक बच्चे को देखते रहेंगे | एक-एक को बैठ सकाश देते हैं | योग की अग्नि है ना | योग अग्नि से उनके विकर्म भस्म हो जाएं | जैसे कि बैठकर लाइट देते हैं | एक-एक आत्मा को सर्चलाइट देते हैं | जैसे बाप कहते हैं मैं हर एक आत्मा को बैठ करेन्ट देता हूँ जो ताक़त भरती जाए | अगर किसकी बुद्धि बाहर में होगी तो फिर करेन्ट को कैच नहीं कर सकेंगे | बुद्धि कहाँ न कहाँ भटकती रहेगी | उनको मिलेगा फिर क्या? कहते हैं मिठरा घुर त घुराय तुम प्यार करेंगे तो प्यार पायेंगे | बुद्धि बाहर भटकती रहेगी तो बैटरी चार्ज नहीं होगी | बाप बैटरी चार्ज करने आता है, उनका फ़र्ज़ है सर्विस करना | बच्चे सर्विस स्वीकार करते हैं वा नहीं यह तो उनकी आत्मा जाने | किस ख्यालात में बैठे हैं, यह सब बातें बाप समझाते हैं | मैं भी परम आत्मा हूँ | मुझ बैटरी के साथ योग

लगाते हो | मैं भी सकाश दूंगा | बहुत प्यार से एक-एक को सकाश देता हूँ | तुम तो बैठेंगे बाप को याद करने | बाबा कहते हैं मैं एक-एक आत्मा को सकाश देता हूँ | सामने बैठ लाइट देता हूँ | तुम तो ऐसे नहीं करेंगे | जो पकड़ने वाले होंगे वह पकड़ेंगे और उनकी बैटरी चार्ज होगी | बाबा दिन-प्रतिदिन युक्तियाँ तो बताते रहते हैं | बाकी समझा, न समझा – यह तो नम्बरवार स्टूडेन्ट पर मदार है | तुम्हें बहुत तरावटी माल मिल रहा है | कोई हजम भी करे ना | बड़ी लॉटरी है | जन्म-जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर की लॉटरी है | इस पर पूरा अटेन्शन देना है | बाबा से हम करेन्ट ले रहे हैं | बाप भी भ्रकुटी के बीच में बैठा है, बाजू में | तुमको भी अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना है, न कि ब्रह्मा को | हम उनसे योग लगा कर बैठे हैं, इनको देखते भी हम उनको देखते हैं | आत्मा की ही बात है ना |

बच्चे बैठे हैं याद की यात्रा में | बेहद का बाप तो यात्रा में नहीं बैठे हैं, वह तो बच्चों को सकाश की मदद दे रहे हैं अर्थात् इस शरीर को भुला रहे हैं | बाप की मदद मिलती है कि बच्चों को शरीर भूल जाए | सकाश देते हैं आत्माओं को क्योंकि बाप देखते ही आत्माओं की तरफ़ है | तुम हर एक की बुद्धि बाप की तरफ़ जाती है | बाप की बुद्धि वा दृष्टि फिर बच्चों तरफ़ जाती है | फ़र्क है ना | (डेड साइलेन्स) यह अभ्यास करते हो डेड साइलेन्स का | शरीर को छोड़ अलग होना चाहते हो | आत्मा समझती है कि जितना याद करते रहेंगे उतना इस शरीर से निकल जायेंगे | जैसे सर्प का मिसाल देते हैं, जो मिसाल देते हैं उसमें ज़रूर कुछ खूबी होती है | तुम जानते हो हम शरीर छोड़ कर वापिस चले जायेंगे और फिर आयेंगे | यह बातें और कोई नहीं जानते | यह ड्रामा को कोई भी जानते नहीं हैं | कोई भी ऐसी गैरन्टी नहीं देते कि इस याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे | ऐसी बात कोई भी सुनाते नहीं हैं | तुम बच्चे जानते हो हमारी अब वापसी जरनी है | आत्मा का बुद्धियोग उस तरफ़ है | अब नाटक पूरा हुआ,

अब घर जाना है | बाप को ही याद करना है | वही पतित-पावन है | गंगा के पानी को तो लिबरेटर और गाइड नहीं कहेंगे | एक बाप ही लिबरेटर और गाइड हो सकता है | यह भी बड़ी समझने और समझाने की बातें हैं | वह तो है ही भक्ति | उनसे कोई कल्याण नहीं हो सकता |

- तुम तो बाप के बने हो | तुम्हारे में जो भूत हैं वह सब निकल जाने हैं | पहले नम्बर में भूत है देह अहंकार | उनको निकालने लिए ही बाप देही-अभिमानी बनाते रहते हैं | बाप को याद करने से कोई भी भूत सामने आयेगा नहीं | 21 जन्मों के लिए कोई भूत आता नहीं | यह 5 भूत हैं रावण सम्प्रदाय के | रावण राज्य कहते हैं | राम राज्य अलग है, रावण राज्य अलग है | रावण राज्य में भ्रष्टाचारी और राम राज्य में श्रेष्ठाचारी होते हैं |

- बाप मीठे-मीठे बच्चों को कहते हैं अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो | आत्म-अभिमानी होकर रहो | शरीर ही नहीं तो दूसरे का सुनेंगे कैसे | यह पक्का अभ्यास करो – हम आत्मा हैं, अब हमको वापिस जाना है | बाप कहते हैं यह सब त्याग करो, बाप को याद करो | इस पर ही सारा मदार है | बाप कहते हैं धन्धा आदि भल करते रहो | 8 घण्टा धन्धा, 8 घण्टा आराम, बाकी 8 घण्टा इस गवर्मेन्ट की सर्विस करो | यह भी तुम मेरी नहीं, सारे विश्व की सेवा करते हो, इसके लिए टाइम निकालो | मुख्य है याद की यात्रा | टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए | उस गवर्मेन्ट की 8 घण्टा सर्विस करते हो, उससे क्या मिलता है! हज़ार दो, पाँच हजार.....इस गवर्मेन्ट की सर्विस करने से तुम पदमापदमपति बनते हो | तो कितना दिल से सेवा करनी चाहिए | 8 रत्न बने हैं तो ज़रूर 8 घण्टा बाबा को याद करते होंगे | भक्ति मार्ग

में बहुत याद करते हैं, टाइम गँवाते हैं, मिलता कुछ भी नहीं है | गंगा स्नान, जप तप आदि करने से बाप नहीं मिलता है जो वर्सा मिले | यहाँ तो तुमको बाप से वर्सा मिलता है |

यह कथा है ही सत्य नारायण बनने की, फिर प्रजा भी बनती है | थोड़ा समझकर चले जाते हैं, हो सकता है फिर आकर समझें | आगे चलकर मनुष्यों में वैराग्य भी होगा | जैसे शमशान में वैराग्य आता है, बाहर निकले तो ख़लास | तुम भी जब समझाते हो, अच्छा-अच्छा करते हैं, बाहर गये ख़लास | कहते हैं यह काम उतारकर आयेंगे | बाहर जाने से माया माथा मूड़ लेती है | कोटों में कोई निकलता है | राजाई पद पाना – इसमें मेहनत लगती है | हर के दिल से पूछे – बेहद के बाप को हम कितना याद करते हैं? कहते हैं बाप की याद भूल जाती है | अरे, अज्ञान काल में कभी ऐसे कहते हैं कि हमको बाप भूल जाता है |बाबा कहते हैं भल कितने भी तूफ़ान आयें तुमको हिलना नहीं है | तूफ़ान आयेगा, सिर्फ़ कर्मेन्द्रियों से कर्म नहीं करना | कहते हैं – बाबा, माया ने जादू लगा दिया | बाबा कहते हैं – मीठे-मीठे बच्चे, याद करो तो कट निकल जायेगी | आत्मा पर कट (जंक) चढ़ती है, वह निकलेगी याद से | बाप भी बिन्दी है | सिवाए बाप की याद के और कोई उपाय नहीं कट उतरने का |

अब योग और ज्ञान – दो चीज़ें हैं | बाप के पास यह बहुत बड़ा ख़ज़ाना है जो बच्चों को देते हैं | बाप को जो बहुत याद करते हैं उनको करेन्ट जास्ती मिलती है क्योंकि याद से याद मिलती है – यह कायदा है क्योंकि मुख्य है याद | ऐसे नहीं कि ज्ञान बहुत है, इसका मतलब याद करते हैं, नहीं | ज्ञान की डिपार्टमेन्ट अलग है | योग की बहुत बड़ी सब्जेक्ट है, ज्ञान की उससे कम | योग से आत्मा सतोप्रधान बन जाती है क्योंकि बहुत याद करते हैं | याद के बिगर सतोप्रधान

बनना असम्भव है | बच्चे ही सारा दिन बाप को याद नहीं करते तो बाप भी याद नहीं करेंगे | बच्चे अच्छी रीति याद करते हैं तो बाप की भी याद से याद मिलती है | बाप को खींचते हैं | यह भी बना-बनाया खेल है जिसको अच्छी रीति समझना है | याद के लिए बहुत एकान्त भी चाहिए | पिछाड़ी में आने वाले जो ऊँच पद पाते हैं उसका आधार भी याद है | उन्हें याद बहुत रहती है | याद से याद मिलती है | जब बच्चे बहुत याद करते हैं तो बाप भी बहुत याद करते हैं | वह कशिश करते हैं | कहते हैं ना – बाबा, रहम करो, कृपा करो | इसमें भी चाहिए याद | अच्छी तरह याद करेंगे तो ऑटोमेटिकली वह कशिश होगी, करेन्ट मिलेगी | आत्मा को अन्दर आता है कि मैं बाबा को याद करती हूँ तो वह याद एकदम भरपूर कर देती है | ज्ञान है धन | याद से फिर याद मिलती है, जिससे हेल्दी बन जाते हैं, पवित्र बन जाते हैं | इतनी ताकत है जो सारे विश्व को पवित्र बना देते हैं इसलिए बुलाते हैं – बाबा आकर पतितों को पावन बनाओ |

यहाँ बाबा बार-बार कहते हैं मन्मनाभव | मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे | तुम काल पर जीत पाते हो, इसमें तुम जितनी कोशिश करेंगे तो माया भी विघ्न डालेगी क्योंकि माया समझती है – यह बाप को याद करेंगे तो मुझे छोड़ देंगे; क्योंकि जब तुम मेरे बनते हो तो सबकुछ छोड़ना पड़े | मित्र, सम्बन्धी, धन आदि कुछ भी याद न आये | एक कथा है लाठी भी छोड़ो | सब चीज़ें छुड़ाते हैं, परन्तु यह कभी नहीं कहते कि शरीर को भी याद नहीं करो | बाप कहते हैं यह शरीर तो पुराना है, इसे भी भूलो | भक्ति मार्ग की बातें भी छोड़ दो | एकदम सब-कुछ भूल जाओ अथवा जो कुछ है काम में लगा दो, तब ही याद टिकेगी | अगर ऊँच पद पाना है तो बहुत मेहनत चाहिए | शरीर भी याद न रहे | अशरीरी आये थे, अशरीरी होकर जाना है |

- बाप बच्चों को पढ़ाते हैं, इनको कोई तमन्ना नहीं है | यह तो सर्विस करते हैं | बाप में ही तो ज्ञान है ना | यह बाप और बच्चे का खेल है इकट्ठा | बच्चे भी याद करते हैं फिर बाप बैठ सर्चलाइट देते हैं | कोई बहुत खींचते हैं तो बाप बैठ लाइट देते हैं | बहुत नहीं खींचते हैं तो यह बाबा बैठ बाप को याद करते हैं | कोई समय किसको करेन्ट देनी होती है तो नींद फिट जाती है | यह फुरना लग जाता है कि फ़लाने को करेन्ट देनी है | पढ़ाई से आयु नहीं बढ़ेगी, करेन्ट से आयु बढ़ती है | एवर हेल्दी बनते हैं |

- यह बापदादा दोनों इकट्ठे हैं | मम्मा सबसे अच्छा समझाती थी | बच्चे सम्पूर्ण मम्मा का साक्षात्कार भी करते थे | कहाँ ज़रूरी होता था तो बाबा भी प्रवेश करके अपना काम कर लेता था | यह सब समझने की बातें हैं | पढ़ाई फ़ुर्सत के समय होती है | सारा दिन तो धन्धा आदि करते हैं | विचार सागर मंथन करने के लिए फ़ुर्सत चाहिए, शान्ति चाहिए | समझो, कोई को करेन्ट देनी है, कोई अच्छी सर्विस करने वाला बच्चा है, तो उनको मदद करनी है | उनकी आत्मा को याद करना पड़ता है | शरीर को याद कर फिर आत्मा को याद करना है | यह युक्ति रचनी है | सर्विसएबुल बच्चे को तकलीफ़ है तो उनको मदद करनी है | बाप को याद करना है फिर खुद को भी आत्मा समझ कुछ न कुछ उनकी आत्मा को भी याद करना है | यह जैसे सर्च लाइट देना होता है | ऐसे नहीं, सिर्फ़ एक जगह बैठ याद करना है | चलते-फिरते भोजन खाते भी बाप को याद करो | दूसरे को करेन्ट देना है तो फिर रात्रि को भी जागो | बच्चों को समझाया है – सवेरे उठकर जितना बाप को याद करेंगे उतना कशिश होगी | बाबा भी लाइट देंगे | बाबा का यही धन्धा है – बच्चों को सर्च-लाइट देने का | जब बहुत सर्च-लाइट देनी होती है तो भी बाप को बहुत याद करते हैं | तो बाप भी सर्च-लाइट देते हैं | आत्मा को याद कर सर्च-लाइट देनी होती है | यह बाबा भी सर्च-लाइट देते हैं, फिर इसको कृपा कहो,

आशीर्वाद कहो, कुछ भी कहो | सर्विसएबुल बीमार होगा तो तरस पड़ेगा | रात को जागकर भी उनकी आत्मा को याद करेंगे क्योंकि उनको पॉवर की दरकार है | याद करते हैं तो उनकी रिटर्न में याद मिलती है | बाप का लव बच्चों पर जास्ती है | फिर उनको भी याद पहुँचती है | बाकी ज्ञान तो सहज है, उसमें माया के विघ्न नहीं पड़ते हैं | मुख्य है याद , इसमें विघ्न पड़ते हैं | याद से बुद्धि सोने का बर्तन बन जाती है, जिसमें धारणा होती है | कहावत है शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ठहरता है | इस बाप के ज्ञान धन के लिए भी सोने का बर्तन चाहिए | वह तब होगा जब याद की यात्रा में रहेंगे | याद नहीं करेंगे तो धारणा नहीं होगी |

बच्चे कहते थे आज सेमिनार करेंगे – चार्ट कैसे लिखना चाहिए? बाबा को कैसे याद करना चाहिए? इस पर सेमिनार करेंगे | अब बाप तो तकलीफ़ नहीं देते हैं कि बैठकर लिखो | कागज़ खराब करो | ज़रूरत ही नहीं रहती | बाप तो सिर्फ़ कहते हैं बुद्धि में बाप को याद करो | अज्ञान काल में बाप को याद करने के लिए चार्ट बनाया जाता है क्या! इसमें लिखापढ़ी करने की कोई ज़रूरत नहीं | बाप को कहते हैं – बाबा, हम आपको भूल जाते हैं | कोई सुने तो क्या कहेंगे? कहते भी हैं हम जीते जी बाप के बने हैं | क्यों बने हैं? बाप से विश्व की बादशाही का वर्सा लेने | फिर ऐसे बाप को तुम भूलते क्यों हो? ऐसा बाप, जिससे इतना भारी वर्सा मिलता है उनको तुम याद नहीं कर सकते हो! इतना बार तुमने वर्सा लिया है फिर भी भूल जाते हो | बाप से वर्सा लेना है तो याद भी करना है, दैवीगुण भी धारण करने हैं | लिखना क्या है? यह तो हर एक अपनी दिल से पूछे, नारद का भी मिसाल है | खुद कहते हैं बड़ा भक्त था | तुम भी जानते हो जन्म-जन्मान्तर के हम पुराने भक्त हैं | हम मीठे बाप को याद कर कितना खुश होते हैं | जो जितना याद करते हैं वही लक्ष्मी-नारायण को वरने लायक बनेंगे | कोई गरीब का बच्चा जाकर साहूकार की गोद लेता है तो कितना खुश होता है | बाप को और

प्रॉपर्टी को ही याद करते हैं | यहाँ तो बहुत हैं जिनको बेहद के बाप का बच्चा बन राजाई लेने का भी अक्ल नहीं आता है | वन्डरफुल बात है | जो बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनको याद नहीं कर सकते हैं | बाप बच्चों को एडाप्ट करते हैं | ऐसे बाप को याद न करना यह तो वन्डरफुल बात है | घड़ी-घड़ी बाप और प्रॉपर्टी याद आनी चाहिए |

बाप कहते हैं हे आत्मायें तुम सबको निहाल कर ले जाऊंगा | बाकी थोड़ा समय है | अब मेहनत करो | अपनी दिल से पूछो – मैं स्वीट बाबा को कितना याद करता हूँ? हीर-राँझा का विकार के लिए लव नहीं था | शारीरिक प्यार था | याद करते थे और सामने आ जाता था | दोनों आपस में मिल जाते थे | बाप कहते हैं तुम भी ऐसे बनो | वह है एक जन्म के आशिक-माशूक, तुम हो जन्म-जन्मान्तर के | यह बातें इस समय ही होती हैं | आशिक-माशूक का अक्षर भी स्वर्ग में नहीं है | वह भी पवित्र रहते हैं | मन्सा में ही ख्याल आते हैं, सामने देखा और खुश हुए | तुम बच्चों को देखने की तो कोई चीज़ नहीं | इस समय तुम सिर्फ़ अपने को आत्मा समझो और माशूक बाप को याद करो | आत्मा समझ बाप को बहुत ख़ुशी से याद करना है | बाप समझाते रहते हैं भक्ति मार्ग में तुम ऐसे आशिक थे, माशूक पर कुर्बान जाते थे | आप आयेंगे तो हे माशूक हम तुम पर वारी जायेंगे | अब माशूक आया हुआ है, सबको गोरा बनाने | जो जैसा है ऐसा बनाने की कोशिश करते हैं | तुम गोरा बनते हो तो शरीर भी गोरा बनेगा | आत्मा में ही खाद पड़ती है | अब तुम मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी | यहाँ तुम बच्चे आते हो, एकान्त बहुत अच्छी है | पादरी लोग भी पैदल करते हैं, एकदम साइलेन्स में रहते हैं | माला हाथ में रहती है | कोई को देखते भी नहीं हैं | धीरे-धीरे चलते जाते हैं | वो लोग क्राइस्ट को याद करते रहेंगे | बाप को तो जानते ही नहीं | मेरे लिए तो कह देते नाम-रूप से न्यारा है | अब बिन्दी है तो देखेंगे क्या! बिन्दी को कैसे याद करें, किसको

पता नहीं | तुमको अभी मालूम पड़ा है तो तुम यहाँ आते हो | मधुबन का तो गायन है | यह है सच्चा-सच्चा मधुबन, जहाँ तुम आते हो | जितना हो सके तुम एकान्त में याद में रहो | किसको भी देखो नहीं | ऊपर छतें तो पड़ी हैं | बाबा की याद में सवेरे छत पर चले जाओ, बड़ा मज़ा आयेगा | कोशिश करो रात को एक-दो बजे जागने की | तुम नींद को जीतने वाले मशहूर हो | रात को जल्दी सो जाओ | फिर 1-2 बजे उठकर छत पर एकान्त में याद की यात्रा करते रहो | बहुत जमा करना है | बाप को याद करते बाप की महिमा करने लग जाओ | आपस में भी यही राय करते रहो | बाबा कितना मीठा है, उनको याद करने से ही पाप कटेंगे | यहाँ बहुत जमा कर सकते हैं | यह चान्स भी यहाँ अच्छा मिलता है | घर में तो तुम कर नहीं सकेंगे | फ़ुर्सत ही कहाँ रहती है | दुनिया का वायब्रेशन वातावरण बहुत ख़राब रहता है | वहाँ इतनी याद की यात्रा नहीं होगी | अब इसमें लिखने की भी क्या बात है | आशिक-माशूक लिखते हैं क्या! अन्दर में देखो हमने किसको दुःख तो नहीं दिया? कितने को याद दिलाया? यहाँ हम आते हैं जमा करने तो यहाँ कोशिश करो, ऊपर छतों पर एकान्त में जाकर बैठो | ख़ज़ाना जमा करो | यह समय है ही जमा करने का | 7 रोज़ 5 रोज़ आते हो, मुरली सुनकर जाए एकान्त में बैठो | यहाँ तो घर में बैठे हो | बाप को याद करो तो कुछ तुम्हारा जमा हो जाए | बहुत मातायें बाँधेलियाँ हैं | याद करती हैं – शिवबाबा बन्धन से छुडाओ | विकार के लिए कितना मारते हैं | खेल दिखाया है ना – द्रोपदी के चीर हरे | तुम सब द्रोपदियाँ हो ना | तो बाप को याद करते रहना है | बाबा युक्ति तो बहुत बतलाते हैं | इसमें स्नान आदि की भी बात नहीं रहती | हाँ पाखाना (लेट्रीन में) जाना होता तो स्नान जरुरी है | मनुष्य तो स्नान के समय भी किसी देवता या भगवान् को याद करते हैं | मुख्य बात है ही याद की | ज्ञान तो बहुत मिला हुआ है | 84 के चक्र का गायन है | अपने अन्दर में बैठकर देखो | अपने से पूछो – ऐसा मीठा-मीठा बाबा जो हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं उनको सारे दिन में कितना याद

किया? मन भागता तो नहीं? कहाँ भागेगा, दुनिया तो है नहीं | यह सब ख़त्म हो जाना है, हम और बाबा ही रहने वाले हैं | ऐसे-ऐसे अन्दर में बातें करो तो फिर बहुत मज़ा आयेगा |

मुख्य बात है – यह यूनिवर्सिटी है | इसमें पढ़ने वाले बड़े अच्छे समझदार चाहिए | कच्चे भी डिस्ट्रबेन्स करेंगे क्योंकि बाप की याद में नहीं होंगे तो बुद्धि इधर-उधर भटकती रहेगी | नुकसान कर देंगे | याद में रह नहीं सकेंगे | बाल-बच्चे लायेंगे तो इसमें बच्चों का ही नुकसान है |

अभी तुम्हारी सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी दोनों डिनायस्टी बनती हैं | जितना तुम जानते हो और पवित्र बनते हो उतना और कोई जान नहीं सकेंगे, न पवित्र बन सकेंगे | बाकी सुनेंगे बाप आया हुआ है तो बाप को याद करने लग जायेंगे | सो भी तुम आगे चल यह भी देखेंगे – लाखों, करोड़ों समझते जायेंगे | वायुमण्डल ही ऐसा होगा | पिछाड़ी की लड़ाई में सभी होपलेस हो जायेंगे | सभी को टच होगा | तुम्हारा आवाज़ भी होगा | स्वर्ग की स्थापना हो रही है | बाकी सभी का मौत तैयार है | परन्तु वह समय ऐसा होता है जो घुटका खाने का समय नहीं रहेगा | आगे चल बहुत समझेंगे, जो होंगे | ऐसे भी नहीं – यह सभी उस समय होंगे | कोई मर भी जायेंगे | होंगे वही जो कल्प-कल्प होते हैं | उस समय एक बाप की याद में होंगे | आवाज़ भी कम हो जायेगा | फिर अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने लगेंगे | तुम सभी साक्षी होकर देखेंगे | बहुत दर्दनाक घटनायें होती रहेंगी | सभी को मालूम पड़ जायेगा कि अभी विनाश होना है पिछाड़ी के समय याद की यात्रा में भी बहुत रहेंगे | अभी तो समय पड़ा है, पुरुषार्थ पूरा नहीं करेंगे तो पद कम हो जायेगा | पुरुषार्थ करने से पद भी अच्छा मिलेगा | उस समय

तुम्हारी अवस्था भी बहुत अच्छी होगी | साक्षात्कार भी करेंगे | कल्प-कल्प जैसे विनाश हुआ है, वैसे होगा | जिनमें निश्चय होगा, चक्र का ज्ञान होगा वह ख़ुशी में रहेंगे |

अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करने से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे और फिर ऐसे विश्व के मालिक बन जायेंगे | कल्प-कल्प तुम ऐसे ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो फिर 84 जन्मों में तमोप्रधान बनते हो | फिर बाप शिक्षा देते हैं, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | भक्ति मार्ग में भी तुम याद करते थे, परन्तु उस समय मोटी बुद्धि का ज्ञान था | अब महीन बुद्धि का ज्ञान है | प्रैक्टिकल में बाप को याद करना है | यह भी समझाना है – आत्मा भी स्टार मिसल है, बाप भी स्टार मिसल है | सिर्फ़ वह पुनर्जन्म नहीं लेते हैं, तुम लेते हो इसलिए तुमको तमोप्रधान बनना पड़ता है | फिर सतोप्रधान बनने के लिए मेहनत करनी पड़े | माया घड़ी-घड़ी भुला देती है | अब अभुल बनना है, भूल नहीं करनी है | अगर भूलें करते रहेंगे तो तुम और भी तमोप्रधान बन जायेंगे | डायरेक्शन मिलता है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, बैटरी चार्ज करो तो तुम सतोप्रधान विश्व के मालिक बन जायेंगे | टीचर तो सबको पढ़ाते हैं | स्टूडेन्ट में नम्बरवार पास होते हैं | नम्बरवार फिर कमाई करते हैं | तुम भी नम्बरवार पास होते हो फिर नम्बरवार मर्तबा पाते हो |

सतोप्रधान बनने लिए बाप बहुत सहज रास्ता बताते हैं – मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे | तुम चढ़ते-चढ़ते सतोप्रधान बन जायेंगे | चढ़ेंगे धीरे-धीरे इसलिए भूलो मत | परन्तु माया भुला देती है | नाफ़रमानबरदार बना देती है | बाप जो डायरेक्शन देते हैं, वह मानते हैं, प्रतिज्ञा करते हैं फिर उस पर चलते नहीं हैं | तो बाप कहेंगे आज्ञा का उल्लंघन कर अपने वचन से

फिरने वाले हैं | बाप से प्रतिज्ञा कर फिर अमल किया जाता है | बेहद का बाप जैसी शिक्षाएं देते हैं ऐसी शिक्षाएं और कोई देंगे नहीं | चेन्ज भी ज़रूर होना है |

- स्टूडेन्ट का काम है पढ़ाई में अटेन्शन देना | उठते, बैठते, चलते, फिरते याद करना है | स्टूडेन्ट की बुद्धि में यह पढ़ाई रहती है | इम्तहान के दिनों में बहुत मेहनत करते हैं कि कहाँ नापास न हो जायें | ख़ास सवेरे बगीचे में जाकर पढ़ते हैं क्योंकि घर के शोर के वायब्रेशन्स गन्दे होते हैं |

- बच्चे यहाँ क्लास में बैठे हैं और जानते हैं हमारा टीचर कौन है | अभी यही याद कि हमारा टीचर कौन है स्टूडेन्ट को सारा समय रहती है | यहाँ भूल जाते हैं | टीचर जानते हैं बच्चे मुझे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं | ऐसा रूहानी बाप तो कब मिला नहीं | संगमयुग पर ही मिलता है | सतयुग और कलियुग में तो जिस्मानी बाप मिलते हैं | यह याद दिलाते हैं कि बच्चों को पक्का हो जाये कि यह संगमयुग है, जिसमें हम बच्चे ऐसे पुरुषोत्तम बनने वाले हैं | तो बाप को याद करने से तीनों ही याद आने चाहिए | टीचर को याद करो तो भी तीनों याद , गुरु को याद करो तो भी तीनों याद आनी चाहिए | यह ज़रूर याद करना पड़ता है | मुख्य बात है पवित्र बनने की | पवित्र को सतोप्रधान ही कहा जाता है | देवता बनना है तो शुद्ध कर्म करना है | गन्दगी कोई भी न रहे | और बहुत ख़ास बात है बाप को याद करने की | समझते हैं बाप को भूल जाते हैं, शिक्षा को भी भूल जाते हैं और याद की यात्रा को भी भूल जाते हैं | बाप को भूलने से ज्ञान भी भूल जाता है | मैं स्टूडेन्ट हूँ, यह भी भूल जाता है | याद तो तीनों पड़नी चाहिए | बाप को याद करे तो टीचर, सद्गुरु ज़रूर याद पड़ेंगे | शिवबाबा को याद करते हैं तो साथ-साथ

दैवीगुण भी ज़रूर चाहिए | बाप की याद में है करामत | करामात जितनी बाप बच्चों को सिखलाते हैं उतनी और कोई सिखला न सके | तमोप्रधान से हम इसी जन्म में सतोप्रधान बनते हैं | तमोप्रधान बनने में पूरा कल्प लगता है |

- मुख्य बात है अल्फ | मुसलमान भी कहते हैं – सवेरे उठकर अल्फ को याद करो | यह वेला सोने की नहीं है | इस उपाय से ही विकर्म विनाश होते हैं, और कोई उपाय नहीं | बाप तुम बच्चों के साथ कितना वफ़ादार है | कभी तुमको छोड़ेंगे नहीं | आये ही हैं सुधार कर साथ ले जाने | याद की यात्रा से ही तुम सतोप्रधान होंगे | उस तरफ़ जमा होता जायेगा | बाप कहते हैं अपना चौपड़ा रखो – कितना याद करते हैं, कितनी सर्विस करते हैं | व्यापारी लोग घाटा देखते हैं तो खबरदार रहते हैं | घाटा नहीं डालना चाहिए | कल्प-कल्पान्तर का घाटा पड़ जाता है |

- अभी बच्चे समझते हैं बाबा आया है, हमको घर ले चलने | हम पतितों को पावन बनाकर ले जायेंगे | पावन बनेंगे याद की यात्रा से | यात्रा पर बहुत नीचे-ऊपर होते हैं | कोई तो बीमार पड़ जाते हैं फिर लौट आते हैं | यह भी ऐसे हैं | यह है रूहानी यात्रा, अन्त मती सो गति हो जायेगी | हम अपने शान्तिधाम में जा रहे हैं | है बहुत सहज | परन्तु माया बहुत भुलाती है | तुम्हारी युद्ध माया के साथ है | बाप बहुत सहज कर समझाते हैं, हम अभी शान्तिधाम जाते हैं | बाप को ही याद करते हैं | दैवीगुण धारण करते हैं |

- बाप कहते हैं, सारे दिन का पोतामेल देखो – कोई भूल तो नहीं हुई? व्यापारी लोग मुरादी सम्भालते हैं, यह भी कमाई है | तुम हर एक व्यापारी हो | बाबा से व्यापार करते हो | अपनी जाँच करनी है – हमारे में कितने दैवीगुण हैं? कितना बाप को याद करते हैं? कितना हम अशरीरी बनते जाते हैं? हम अशरीरी आये थे फिर अशरीरी बनकर जाना है |

- सतयुग में 5 तत्व भी शुद्ध होते हैं | यहाँ हैं अशुद्ध | तो पुरुषार्थी बच्चे ऐसी-ऐसी ख्यालात करते रहेंगे | बाप कहते हैं इन सब बातों को भी छोड़ दो | जो होना है वह होगा | पहले बाप को याद करो | चारों तरफ़ से बुद्धि हटाकर मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे | जो कुछ सुनते हो उन सब को छोड़ एक बात पक्की करो कि हमको सतोप्रधान बनना है | फिर सतयुग में जो कल्प-कल्प हुआ होगा, वही होगा | उसमें फ़र्क नहीं पड़ सकता | मूल बात है, बाप को याद करो | यह है मेहनत | वह पूरी करो | तूफ़ान तो बहुत आते हैं | जन्म-जन्मान्तर जो कुछ किया है वह सब सामने आता है | तो सब तरफ़ से बुद्धि को हटाकर मेरे को याद करो करने का पुरुषार्थ करो, अन्तर्मुखी होकर | तुम बच्चों को स्मृति तो आई, सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार |

- मुख्य बात है बेहद के बाप को याद करो | जब बेहद का बाप आते हैं तो विनाश भी होता है | महाभारत लड़ाई कब लगी? जब भगवान् ने राजयोग सिखलाया था | पावन सभी को बनना है | कोई योगबल से, कोई सजाओं से | मेहनत है याद की यात्रा की | बाबा प्रैक्टिस भी कराते रहते हैं | कहाँ भी जाओ तो बाबा की याद में जाओ | जैसे पादरी लोग शान्ति में क्राइस्ट की याद में जाते हैं और क्राइस्ट को याद करते हैं | भारतवासी तो अनेकों को याद

करते हैं | बाप कहते हैं एक के सिवाए और किसी को याद न करो | बेहद के बाप से हम मुक्ति और जीवनमुक्ति के हक़दार बनते हैं | सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है | सतयुग में सब जीवनमुक्ति में थे, कलियुग में सब जीवनबन्ध में हैं | बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे | पाप कट जायेंगे | यह है सच्ची गीता, जो बाप सिखलाते हैं | मनुष्य मत से गिरे हो, भगवान् की मत से तुम वर्सा ले रहे हो | मूल बात है – उठते-बैठते, चलते-फिरते बाबा को याद करते रहो और परिचय देते रहो | बैज तो तुम्हारे पास है, फ्री देने में हर्ज़ा नहीं है | परन्तु पात्र देखकर | बाप बच्चों को उल्हना देते हैं कि तुम लौकिक बाप को याद करते हो और मुझ पारलौकिक बाप को भूल जाते हो | लज्जा नहीं आती | तुम ही पवित्र प्रवृत्ति मार्ग के गृहस्थ व्यवहार में थे, फिर अब बनना है | तुम हो भगवान् के सौदागर | अपने अन्दर देखो बुद्धि कहाँ भटकती तो नहीं है? बाप को कितना समय याद किया? बाप कहते हैं और संग तोड़ एक संग जोड़ो | भूल नहीं करनी है | यह भी समझाया है भाई-भाई की दृष्टि से देखो तो देह नहीं देखेंगे | दृष्टि बिगड़ेगी नहीं | मंज़िल है ना | यह ज्ञान अभी ही तुमको मिलता है | भाई-भाई तो सब कहते हैं, मनुष्य कहते हैं, ब्रदरहुड | यह तो ठीक है |

बच्चे जानते हैं हम श्रीमत पर अपने लिये राजधानी स्थापन कर रहे हैं | जितनी जो सर्विस करते हैं, मन्सा-वाचा-कर्मणा अपना ही कल्याण करते हैं | इसमें हंगामे आदि की कोई बात नहीं | बस, इस पुरानी देह का भान छोड़ते-छोड़ते तुम वहाँ जाकर पहुँचते हो | बाबा को याद करने से ख़ुशी भी बहुत होती है | सदैव याद रहे तो ख़ुशी ही ख़ुशी रहे | बाप को भूलने से मुरझाइस आती है | बच्चों को सदैव हर्षित रहना चाहिए | हम आत्मा हैं | हम आत्मा का बाप इस मुख द्वारा बोलते हैं, हम आत्मा इन कानों द्वारा सुनते हैं | ऐसे-ऐसे अपनी आदत डालने के लिए मेहनत करनी होती है | बाप को याद करते-करते वापिस घर जाना है | यह याद की यात्रा

ही बहुत ताक़त देती है | तुमको इतनी ताक़त मिलती है जो तुम विश्व के मालिक बनते हो | बाप कहते हैं तुम मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे | इस बात को पक्का करना चाहिए | अन्त में यही वशीकरण मन्त्र काम में आयेगा | सबको पैगाम भी यही देना है – अपने को आत्मा समझो, यह शरीर विनाशी है | बाप का फ़रमान है मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे | तुम बच्चे बाप की याद में बैठे हो | साथ में ज्ञान भी है क्योंकि तुम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को भी जानते हो | स्व आत्मा में सारा ज्ञान है | तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो ना | तुम्हारी यहाँ बैठे-बैठे बहुत कमाई है | तुम्हारी दिन और रात कमाई ही कमाई है |

याद का जितना पुरुषार्थ करते रहेंगे उतना सतोप्रधान बनते जायेंगे | ख़ुशी बढ़ती जायेगी | यह है आत्मा और परमात्मा का शुद्ध लव | वह है भी निराकार | तुम्हारी जितनी कट उतरती जायेगी, उतनी कशिश होगी | अपनी डिग्री तुम देख सकते हो – हम कितना ख़ुशी में रहते हैं? इसमें आसन आदि लगाने की बात नहीं है | हठयोग नहीं है | आराम से बैठे बाबा को याद करते रहो | लेटे हुए भी याद कर सकते हो | बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जायेंगे और पाप कट जायेंगे | बेहद का बाप जो तुम्हारा टीचर भी है, सतगुरु भी है, उनको बहुत प्यार से याद करना चाहिये | इसमें ही माया विघ्न डालती है | देखना है हमने बाप की याद में रह हर्षित होकर खाना खाया? आशिक को माशूक मिला है तो ज़रूर ख़ुशी होगी ना | याद में रहने से तुम्हारा बहुत जमा होता जायेगा | मंज़िल बहुत बड़ी है | तुम क्या से क्या बनते हो! पहले तो बेसमझ थे, अभी तुम बहुत समझदार बने हो | तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट कितनी फर्स्टक्लास है | तुम जानते हो हम बाबा को याद करते-करते इस पुरानी खाल को छोड़ जाए नई लेंगे | कर्मातीत अवस्था होने से फिर यह खाल छोड़ देंगे | नज़दीक

आने से घर की याद आती है ना | बाबा की नॉलेज बड़ी मीठी है | बच्चों को कितना नशा चढ़ना चाहिए | बच्चों को याद की यात्रा का बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए | अपने को भाई-भाई समझो तो नाम-रूप का भान निकल जाये, इसमें भी मेहनत है | बहुत अटेन्शन देना है | जो बहुतों को रास्ता बताते हैं, तो बाबा भी उनको बहुत याद करते हैं | उनको भी बाप के याद की कशिश होती है | याद से ही कट उतरती जायेगी बाप को याद करना गोया घर को याद करना | सदैव बाबा-बाबा करते रहो | यह है ब्राह्मणों की रूहानी यात्रा | सुप्रीम रूह को याद करते-करते घर पहुँच जायेंगे | जितना देही-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करेंगे तो कर्मेन्द्रियाँ वश होती जायेगी | कर्मेन्द्रियों को वश करने का एक ही उपाय याद का है | तुम हो रूहानी स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण कुल भूषण | तुम्हारा यह सर्वोत्तम श्रेष्ठ कुल है | ब्राह्मण कुल देवताओं के कुल से भी ऊँच है क्योंकि तुमको बाप पढ़ाते हैं | मूल बात है याद की | अन्तकाल कोई शरीर का भान अथवा धन दौलत याद न आये | नहीं तो पुनर्जन्म लेना पड़ेगा |

मीठे-मीठे बच्चे, तुम भी बाप से नज़र लगाओ अथवा हे आत्मा, अपने बाप को याद करो तो निहाल हो जायेंगे | बाबा कहते हैं – जो मुझे याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ | जो मेरे लिए सर्विस करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ, तो उनको बल मिलता है | तुम यहाँ सब बैठे हो जो निहाल हो जायेंगे, वही राजा बनेंगे | गायन भी है और संग तोड़ एक संग जोडूँ | एक है निराकार | आत्मा भी निराकार है | बाप कहते हैं मुझे याद करो | तुम ख़ुद कहते हो हे पतित-पावन.... यह किसको कहा? ब्रह्मा को, विष्णु को, शंकर को? नहीं | पतित-पावन तो एक है, वह सदैव पावन ही है | उनको कहा जाता है सर्वशक्तिमान् |

- इस समय तुम बागवान द्वारा कांटे से फूल बन रहे हो | कैसे बनते हो? याद के बल से | बाप को कहा जाता है सर्व शक्तिमान् | जैसे बाप सर्वशक्तिमान् है वैसे रावण भी कम शक्तिमान् नहीं है | बाप ख़ुद ही कहते हैं माया बड़ी बलवान है, दुस्तर है | कहते हैं बाबा हम आपको याद करते हैं, माया हमारी याद को भुला देती है | एक-दो के दुश्मन हुए ना | बाप आकर माया पर जीत पहनाते हैं, माया फिर हरा देती है | देवताओं और असुरों की युद्ध दिखाई है | परन्तु ऐसे कोई है नहीं | युद्ध तो यह है | तुम बाप को याद करने से देवता बनते हो | माया याद में विघ्न डालती है, पढाई में विघ्न नहीं डालती | याद में ही विघ्न पड़ते हैं | घड़ी-घड़ी माया भुला देती है | देह-अभिमानी बनने से माया का थप्पड़ लग जाता है |

- पावन दुनिया होती है शान्तिधाम और सुखधाम | अभी तो सब पतित हैं | हमेशा बाबा-बाबा कहते रहो | यह भूलना नहीं है, तो सदैव शिवबाबा याद आयेगा | यह हमारा बाबा है | पहले-पहले है यह बेहद का बाबा | बाबा कहने से ही वर्से की ख़ुशी में आते हैं | सिर्फ़ भगवान् वा ईश्वर कहने से कभी ऐसा विचार नहीं आयेगा | सबको बोलो – बेहद का बाप समझाते हैं ब्रह्मा द्वारा | यह उनका रथ है | उनके द्वारा कहते हैं मैं तुम बच्चों को यह बनाता हूँ | इस बैज में सारा ज्ञान भरा हुआ है | पिछाड़ी में तुमको यही याद रहेगा – शान्तिधाम, सुखधाम | दुःखधाम को तो भूलते जाते हैं |

- बाप बैठ समझाते हैं, मेरी सर्विस करने वाले बच्चे ही मुझे प्रिय लगते हैं | बहुतों को सुखदाई बनाते हैं, ऐसे बच्चों को याद करता रहता हूँ |

- इस समय तुम बच्चों को ज्ञान की बातें समझाई जाती हैं और सवेरे याद में बैठते हो, वह है ड्रिल | आत्मा को अपने बाप को याद करना है | योग अक्षर छोड़ दो | इसमें मूँझते हैं | कहते हैं हमारा योग नहीं लगता है | बाप कहते हैं – अरे, बाप को तुम याद नहीं कर सकते हो! क्या यह अच्छी बात है! याद नहीं करेंगे तो पावन कैसे बनेंगे? बाप है ही पतित-पावन | बाप आकर ड्रामा के आदि-मध्य-अंत का राज़ समझाते हैं |

- तुम बच्चों को यह याद रहे कि हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं, यह भी मन्मनाभव ही है | बाप कहते हैं – मुझे याद करो क्योंकि अब वापिस जाना है | 84 जन्म अब पूरे हुए हैं, अब सतोप्रधान बन वापिस जाना है | कोई तो बिल्कुल याद ही नहीं करते | बाप तो हर एक के पुरुषार्थ को अच्छी रीति जानते हैं | उसमें भी ख़ास यहाँ हैं अथवा बाहर में हैं | बाबा जानते हैं भल यहाँ बैठ देखता हूँ परन्तु मीठे-मीठे जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, याद उनको करता हूँ | देखता भी उनको हूँ, यह किस प्रकार का फूल है, इनमें क्या-क्या गुण हैं? कोई तो ऐसे भी हैं जिनमें कोई गुण नहीं है | अब ऐसे को बाबा देख क्या करेंगे | बाप तो चुम्बक प्योर आत्मा है, तो ज़रूर कशिश करेंगे | परन्तु बाबा अन्दर में जानते ही हैं | बाप अपना सारा पोतामेल बताते हैं तो बच्चे भी बतायें | बाप बतलाते हैं हम तुमको विश्व का मालिक बनाने आये हैं | फिर जो जैसा पुरुषार्थ करे |

- बाबा को सर्विसएबुल बच्चे चाहिए | बाप तो सर्विस के लिए ही आते हैं | पतितों को पावन बनाते हैं | यह तुम जानते हो, दुनिया वाले नहीं जानते हैं क्योंकि अभी तुम बहुत थोड़े हो | जब तक योग नहीं होगा तब तक कशिश नहीं होगी | वह मेहनत बहुत थोड़े करते हैं | कोई न

कोई बात में लटक पड़ते हैं | यह वह सतसंग नहीं है, जो सुना वह सत सत करते हैं | सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है एक गीता | गीता में ही राजयोग है | विश्व का मालिक तो बाप ही है | बच्चों को कहता रहता हूँ गीता से ही प्रभाव निकलेगा | परन्तु इतनी ताक़त भी हो ना | योगबल का जौहर अच्छा चाहिए, जिसमें बहुत कमज़ोर हैं | अभी थोडा टाइम है | कहते हैं मिठरा घुर त घुराय.....मुझे प्यार करो तो मैं भी करूँ | यह है आत्मा का लव | एक बाबा की याद में रहे, इस याद से ही विकर्म विनाश होंगे | कोई तो बिल्कुल याद नहीं करते हैं | बाप समझाते हैं – यहाँ भक्ति की बात नहीं | यह बाबा का रथ है, इनके द्वारा शिवबाबा पढ़ाते हैं | शिवबाबा नहीं कहते हैं कि मेरे पाँव धोकर पियो | बाबा तो हाथ लगाने भी नहीं देते | यह तो पढ़ाई है | हाथ लगाने से क्या होगा | बाप तो है सबकी सद्गति करने वाला | कोटों में कोई ही यह बात समझते हैं | जो कल्प पहले वाले होंगे, वही समझेंगे | भोलानाथ बाप आकर भोली-भोली माताओं को ज्ञान दे उठाते हैं | बाबा बिल्कुल चढ़ा देते हैं – मुक्ति और जीवनमुक्ति में | बाप सिर्फ़ कहते हैं – विकारों को छोड़ो | इस पर ही हंगामा होता है | बाप समझाते हैं – अपने को देखो हमारे में क्या-क्या अवगुण हैं? व्यापारी लोग रोज़ अपना पोतामेल फ़ायदे-घाटे का निकालते हैं | तुम भी पोतामेल रखो कि कितना समय अति प्यारा बाबा, जो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको याद किया? देखेंगे, कम याद किया तो आपेही लज्जा आयेगी कि यह क्या ऐसे बाबा को हमने याद नहीं किया | हमारा बाबा सबसे वन्डरफुल है | स्वर्ग भी है सारी सृष्टि में सबसे वन्डरफुल | बाबा को भी ख़ुशी रहती है कि हम जाकर प्रिन्स गोरा बनेंगे | पुरुषार्थ भी कराते रहते हैं | मुफ़्त में कैसे बनेंगे | तुम भी अच्छी रीति बाबा को याद करेंगे तो स्वर्ग का वर्सा पायेंगे | कोई तो पढ़ते नहीं, न दैवीगुण धारण करते हैं | पोतामेल ही नहीं रखते | पोतामेल सदैव वही रखेंगे जो ऊँच बनने वाले होंगे | नहीं तो सिर्फ़ शो करेंगे | 15-20 रोज़ के बाद लिखना छोड़ देते हैं | यहाँ तो परीक्षायें आदि हैं

सब गुप्त | हर एक की क्वालिफिकेशन को बाप जानते हैं | बाबा का कहना फट से मान लिया तो कहेंगे आज्ञाकारी, फ़रमानबरदार हैं | बाबा कहते हैं अभी बच्चों को बहुत काम करना है | कितने अच्छे-अच्छे बच्चे भी फ़ारकती देकर चले जाते हैं | यह कभी किसको फ़ारकती वा डायओर्स नहीं देंगे |

- माला आठ की भी होती है, 108 की भी होती है | आठ तो ज़रूर कमाल करते होंगे | सचमुच वारिस बना कर ही छोड़ते होंगे | भल वारिस भी बनाते हैं वर्सा तो लेते ही हैं | फिर भी ऐसे ऊँच वारिस बनाने वालों के कर्म भी ऐसे ऊँच होंगे | कोई विकर्म न हो | विकार जो भी हैं सभी विकर्म हैं ना | बाप को छोड़ दूसरे किसको याद करना – यह भी विकर्म है | बाप माना बाप | बाप मुख से कहते हैं मामेकम् याद करो | डायरेक्शन मिला ना | तो एकदम याद करना – उसमें है बहुत मेहनत | एक बाप को याद करे तो माया इतना तंग न करे | बाकी माया भी बड़ी ज़बदस्त है | समझ में आता है, माया बड़ा विकर्म कराती है | बड़े-बड़े महारथियों को भी गिराकर पट कर देती है |

- यह राजधानी बन रही है | जो जितना-जितना बाप को याद करेंगे, उस अनुसार राजधानी में पद पायेंगे | मुख्य बात है ही बाप को याद करने की | बाप स्वयं बैठ ड्रिल सिखलाते हैं | यह है डेड साइलेन्स | तुम यहाँ जो कुछ देखते हो, उनको देखना नहीं है | देह सहित सबका त्याग करना है |

- बाप समझाते हैं कि कोई भी साकारी वा आकारी देवता से बुद्धियोग नहीं लगाओ | बाप दलाल बनकर कहते हैं | गाते हैं ना आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल | अब बहुकाल से अलग तो देवी-देवता हैं | अपने पास रिकार्ड रखो कि हम कितना समय ऐसे मोस्ट बिलवेड बाप को याद करते हैं | कन्या दिन-रात पति को याद करती है ना | बाप कहते हैं – हे नींद को जीतने वाले बच्चे, अब पुरुषार्थ करो | एक घड़ी, आधी घड़ी.......शुरू करो फिर धीरे-धीरे बढ़ाते जाओ | मेरे से योग लगायेंगे तो पास विद् आनर हो जायेंगे | यह रेस है बुद्धि की | समय लगता है, बुद्धियोग से ही पाप कटेंगे |

- शान्त में भी बैठने की रॉयल्टी चाहिए | ऐसे नहीं कुछ समय याद किया फिर सारा दिन ख़लास | यह भी अभ्यास करना है | बाप को याद करने से ताकत आती है | तो बाप भी खुश होता है | ऐसी अवस्था वाला जिसको भी देखेगा तो झट उनको भी अशरीरी बना देगा | अशरीरी बन जाते हैं, शान्त हो जाते हैं | सिर्फ़ शान्ति में बैठना कोई सुख नहीं है, वह है अल्पकाल का सुख | शान्त हो बैठ जायेगा तो फिर कर्म कैसे करेगा? योग से विकर्म विनाश होंगे | सच्ची सुख-शान्ति तो यहाँ हो न सके | यहाँ हर चीज़ अल्पकाल की है |

- तुम बच्चों को कहा जाए, शिवबाबा और वर्से को याद करो तो क्या सिर्फ़ याद करने से सभी लक्ष्मी-नारायण बन जायेंगे? नहीं | फिर पढ़ाई भी तो है | जितना ज्यादा सर्विस करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे, उतना गोल्डन स्पून इन माउथ होगा | नई दुनिया बनने में, अदली-बदली होने में टाइम तो लगता है ना | विनाश के बाद स्थापना होगी | कलियुग के बाद सतयुग होगा | भल अर्थक्वेक आदि होती रहती है परन्तु अनेक धर्मों का विनाश होना है |

बाप ही आकर इन जंजीरों से छुड़ाते हैं। इस ब्रह्मा को भी जंजीरों से छुड़ाया ना। शास्त्र पढ़ते-पढ़ते क्या हालत हुई है ! तो बाप कहते हैं अब मुझे याद करो। बाप को याद करने की हिम्मत नहीं है। पवित्र रहते नहीं, फालतू प्रश्न पूछते रहते हैं। तो बाप कहते हैं मनमनाभव। अगर किसी बात में मूझते हो तो उसको छोड़ दो, मनमनाभव। ऐसे नहीं कि प्रश्न का रेसपॉन्स नहीं मिला तो पढ़ना ही छोड़ दो। कहते हैं भगवान् है तो रेसपॉन्स क्यों नहीं देते ? बाप कहते हैं तुम्हारा काम है बाप और वर्से से। चक्र को भी याद करना पड़े। वह भी त्रिमूर्ति और चक्र दिखाते हैं। लिखते हैं- "सत्य मेव जयते" परन्तु अर्थ नहीं समझते। तुम समझा सकते हो - शिवबाबा को याद किया तो सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी याद आयेंगे और स्वदर्शन चक्र को याद करने से विजयन्ति हो जायेंगे। 'जयते' माना माया पर जीत पहनेंगे। कितनी समझ की बात है। यहाँ कायदे हैं- हंसो की सभा में बगुले बैठ न सके। बी .के. जो स्वर्ग की परी बनाती हैं, उन पर बड़ी रेसपॉन्सिबिलिटी है।

तुम बच्चे एक बाप की याद में बैठे हो, एक की याद में रहना इसे कहेंगे अव्यभिचारी याद । अगर यहाँ बैठे भी दूसरे कोई की याद आती है तो व्यभिचारी याद कहेंगे । खाना पीना, रहना एक घर में, याद दूसरे को करना यह तो ठगी हो गई । भक्ति भी जब तक एक शिवबाबा की करते हैं तब तक अव्यभिचारी भक्ति हुई फिर औरों को याद करना यह व्यभिचारी भक्ति हो जाता है । अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिला है, एक बाप कितनी कमाल करते हैं ! हमको विश्व का मालिक बनाते हैं । तो उस एक को ही याद करना चाहिए। मेरा तो एक। परन्तु बच्चे कहते हैं शिवबाबा की याद भूल जाती है। वाह ! भक्ति मार्ग में तो तुम कहते थे हम एक की ही भक्ति करेंगे । वही पतित-पावन है, और तो कोई को पतित-पावन नहीं कहा जाता । एक को ही कहा जाता है । वही ऊंच ते ऊंच है । अभी तो भक्ति की बात ही नहीं । बच्चों को ज्ञान है । ज्ञान सागर

को याद करना है। भक्ति मार्ग में कहते हैं आप आयेंगे तो हम आपको ही याद करेंगे। तो यह बात याद करनी चाहिए। हरेक अपने से पूछे हम एक बाप को याद करते हैं या अनेक मित्र, सम्बन्धियों आदि को याद करते हैं ? एक बाप से ही दिल लगानी है। अगर दिल और तरफ गई तो याद व्यभिचारी हो जाती है। बाप कहते हैं बच्चे मामेकम् याद करो। फिर वहाँ तुम्हे दैवी सम्बन्धी मिलेंगे। नई दुनिया में सभी नये मिलेंगे। तो अपनी जाँच रखनी है कि हम किसको याद करते हैं ? बाप कहते हैं तुम मुझ पारलौकिक बाप को याद करो। मैं ही पतित-पावन हूँ, कोशिश कर और तरफ से बुद्धियोग हटाकर बाप को याद करना है। जितना याद करेंगे उतना ही पाप कटेंगे। ऐसा नहीं कि जितना हम याद करेंगे उतना बाबा भी याद करेंगे। बाप को कोई पाप थोड़े ही काटने हैं। अभी तुम यहाँ बैठे हो पावन बनने लिए। शिवबाबा भी यहाँ है। उन्हें अपना शरीर तो है नहीं, लोन लिया हुआ है। तुम्हारी बाप से प्रतिज्ञा की हुई है - बाबा आप आयेंगे तो हम आपके बन नई दुनिया के मालिक बनेंगे। अपने दिल से पूछते रहो। यह तो जानते हो बुद्धियोग की लिंक घड़ी-घड़ी बाप से टूट जाती है। बाप जानते हैं लिंक टूटेगी, फिर याद करेंगे, फिर टूटेगी। बच्चे नम्बरवार तो पुरूषार्थ करते ही हैं। अच्छी रीति याद में रहे तो इस डिनायस्टी में आ जायेंगे। अपनी जांच करते रहो, डायरी रखो। सारे दिन में हमारा बुद्धियोग कहाँ-कहाँ गया? तो फिर बाप समझायेंगे। आत्मा में जो मन, बुद्धि है वह भागती है। बाप कहते हैं भागने से घाटा पड़ जायेंगा। मुझे याद करने से बहुत फायदा है, बाकी तो नुकसान ही नुकसान है। याद करना है मुख्य एक को। अपने ऊपर खबरदारी रखनी है, कदम- कदम पर फायदा, कदम-कदम पर घाटा। 84 जन्म देहधारियों को याद कर घाटा ही पाया। एक-एक दिन होकर 5000 वर्ष बीत गये, घाटा ही हुआ, अभी बाप की याद में रह फायदा करना है। ऐसे विचार सागर मंथन कर ज्ञान रत्न निकालने हैं, बाप की याद में एकाग्रचित हो लगना है। कई बच्चों को कौड़ियां कमाने की चिंता रहती है। माया धंधे आदि के विचार ले आती है। धनवान को तो बहुत विचार आते हैं। बाबा क्या करे। बाबा का कितना अच्छा धंधा था,

धक्के आदि खाने की दरकार ही नहीं थी। कोई व्यापारी आता था तो मैं पूछता था पहले यह तो बताओ व्यापारी हो या एजेन्ट हो ? (हिस्ट्री) तुम्हें धन्धा आदि करते बुद्धि का योग बाप से रखना है। अभी कलियुग पूरा हो सतयुग आता है। पतित तो सतयुग में जायेंगे ही नहीं। जितना याद करेंगे उतना ही पवित्र बनेंगे। प्युरिटी से धारणा अच्छी होगी। पतित न याद कर सकेगा, न धारणा होगी। कोई को तकदीर अनुसार समय मिलता है, पुरूषार्थ करते हैं, कोई को समय ही नहीं मिलता, याद ही नहीं करते। जिसने जितनी कोशिश कल्प पहले की है उतनी करते हैं। हरेक को अपने से मेहनत करनी है। कमाई में घाटा पड़ता था तो आगे कहते थे ईश्वर की इच्छा। अभी कहते हैं ड्रामा। जो कल्प पहले हुआ है वह होगा। ऐसे नहीं अभी 4 घण्टा याद करते हो तो दूसरे कल्प में जास्ती करेंगे। नहीं। शिक्षा दी जाती है। अभी पुरूषार्थ करेंगे तो कल्प-कल्प अच्छा पुरूषार्थ होगा। तो जांच करो बुद्धि कहाँ-कहाँ जाती है। मलयुद्ध में बड़ी खबरदारी रखते हैं।

- बाप को याद करना है। ऐसी बहुत बच्चियां हैं जिन्होंने कभी देखा भी नहीं। लिखती हैं बाबा आप हमको पहचानते नहीं हो लेकिन मैं अच्छी रीति जानती हूँ। आप वही बाबा हो, हम आपसे वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। घर बैठे भी बहुतों को साक्षात्कार होते हैं। भल साक्षात्कार न भी हो तो भी लिखती रहती हैं। याद में एकदम लवलीन हो जाती हैं। बाप ही सद्गति दाता है, उनको कितना प्यार करना चाहिए। माँ-बाप से बच्चे एकदम लिपट जाते हैं क्योंकि माँ-बाप बच्चों को सुख देते हैं। लेकिन आजकल के माँ-बाप कोई सुख नहीं देते हैं और ही विकारों में फंसा देते हैं। बाप कहते हैं - पास्ट इज पास्ट।

- यह है तुम्हारी रूहानी यात्रा | बाबा की याद में रहना है | समझते हो यह शरीर जहाँ तक रहेगा वहाँ तक यात्रा चालू है | कर्म भी तो करना है | भल खाओ, पियो, खाना पकाओ | जितना

समय मिले बाप को ज़रूर याद करना है | दफ़्तर में बैठते हो, देखो फ़ुर्सत है तो बाबा की याद में बैठ जाओ | बहुत कमाई है | ट्रेन में सफ़र करते हो, उस समय तो कोई काम नहीं रहता है | बैठे हुए बाबा को याद करते रहो | अभी हम बाबा के पास जाते हैं | बाबा परमधाम से हमको लेने लिए आया है | अच्छा, शाम को घर का खाना आदि पकाते हो तो भी एक-दो को याद दिलाओ – आओ, हम अपने बाप की याद में बैठें | प्वाइंट भी एक-दो को सुनाओ | हम स्वदर्शन चक्रधारी हैं | बाबा कहते हैं – तुम लाइट हाउस भी हो, रास्ता बतलाते हो | उठते, बैठते, चलते तुम लाइट हाउस हो | एक आँख में मुक्ति, एक आँख में जीवनमुक्ति | स्वर्ग यहाँ था | अभी नहीं है | अब तो नर्क है | बाबा फिर से स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं |

भील लोग देखो कितने मज़बूत रहते हैं! और खाते क्या हैं! कितना काम करते हैं! अपनी कुटिया में वह खुश रहते हैं | तो इस समय तुम्हें और सब आशायें छोड़ देनी चाहिए | दो रोटी मिली, पेट भरा, बस, बाप को याद करना है | तुम हो रूहानी बच्चे, परमपिता परमात्मा माशूक के आशिक बने हो | जितना बाबा को याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे और जिसको याद करते हो उनसे जा मिलेंगे | कई चाहते हैं साक्षात्कार हो, यह हो | बाबा कहते हैं घर बैठे भी तुमको हो सकता है | शिवबाबा को याद करने से तुमको वैकुण्ठ का साक्षात्कार होगा, कृष्णपुरी देखेंगे | यहाँ तो बाबा तुमको वैकुण्ठ का मालिक बना देते हैं | सिर्फ़ साक्षात्कार की बात नहीं | मेरे को याद करो क्योंकि मैं आया हूँ तुमको ले जाने | शिवबाबा को याद करना है | वही कृष्णपुरी का मालिक बनाने वाला है | कृष्ण तो नहीं बनायेंगे | शिवबाबा को याद करने से तुमको वैकुण्ठ की बादशाही मिलती है | अब वह परमधाम से आया हुआ है | ज़रूर आये हैं तब तो मन्दिर याद गार बना है ना | शिव का मन्दिर है |

- एक शिवबाबा को याद करना है | शिवबाबा को भूल औरों को याद करेंगे तो अन्त में फेल हो जायेंगे | फेल नहीं होना है | मनुष्य मरते हैं तो उनको कहते हैं राम-राम कहो, परन्तु ऐसे याद आता नहीं है | फिर भी गाया जाता है अन्तकाल जो नारायण सिमरे.....बात अभी की है | भंभोर को आग तो लगनी है | अन्तकाल जो नारायण सिमरे |

- कोई-कोई को तो देह-अभिमान बहुत है | कोई न कोई मित्र सम्बन्धी आदि याद पड़ते रहते हैं | बाप कहते हैं औरों को याद करेंगे तो मेरी याद भूल जायेंगे | तुम गाते भी हो और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे | वह तो अब यहाँ बैठे हैं | बाबा हम आपके हैं, आपकी मत पर चलेंगे |

- बाप जानते हैं काम, क्रोध यह महाशत्रु हैं | यह नाक-कान से पकड़ते रहते हैं | यह तो होगा | उनसे पार जाना है | कोई तो नाम-रूप में फंस पड़ते हैं | सब बच्चे तो एक जैसे नहीं होते | बाप फिर भी सावधान करते हैं – ख़बरदार रहना! ऐसे अकर्तव्य कार्य कर अगर निन्दा करायेंगे तो पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे | रुस्तम के साथ माया भी रुस्तम हो लडती है | बाप को याद करते-करते माया का तूफ़ान कहाँ ले जाता है | बच्चे कोई सच बताते नहीं है | राय भी नहीं लेते हैं | अविनाशी सर्जन से कुछ भी छिपाना नहीं है | अगर बताते नहीं हैं तो और ही गन्दे हो जाते हैं | ऐसे नहीं, बाबा जानी जाननहार है, सब समझते हैं | नहीं, तुम जो अवज्ञा करते हो वह आकर बताओ – शिवबाबा मेरे से यह भूल हुई है, क्षमा चाहता हूँ | क्षमा नहीं लेते तो भूलें होती रहेंगी | गोया अपने सिर पर पाप चढ़ाते रहते हो | बाप तो समझाते हैं कल्प-कल्पान्तर के लिये अपने पद को भ्रष्ट न करो |

सारा मदार योग पर है | योग से बुद्धि पवित्र होती है तब ही धारणा हो सकती है | इसमें देही-अभिमानी अवस्था चाहिए | सब कुछ भूलना पड़े | शरीर को भी भूलना है | बस, अब हमको वापिस जाना है, यह दुनिया तो ख़त्म हो जाने वाली है | इस (बाबा) के लिए तो सहज है क्योंकि इनका धन्धा ही यह है | सारा दिन बुद्धि इसी में लगी हुई है | अच्छा, जो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं उनको तो कर्म करना है | स्थूल कर्म करने से वह बातें भूल जाती हैं, बाबा की याद भूल जाती है | बाबा खुद अपना अनुभव सुनाते हैं | बाबा को याद करता हूँ, बाबा इस रथ को खिला रहे हैं फिर भूल जाता हूँ तो बाबा विचार करते हैं जबकि मैं भी भूल जाता हूँ तो इन बिचारों को कितनी तकलीफ़ होती होगी! इस चार्ट को बढ़ा कैसे सकते होंगे? प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए मुश्किल है | उन्हों को फिर मेहनत करनी पड़े | बाबा समझाते तो सबको हैं | जो पुरुषार्थ करते होंगे वह रिज़ल्ट लिख भेज सकते हैं | बाबा जानते हैं बरोबर डिफीकल्ट है | बाबा कहते हैं रात को मेहनत करो | तुम्हारा थकान सारा उतर जायेगा, अगर तुम योगयुक्त हो विचार सागर मंथन करते रहेंगे तो | बाबा अपना अनुभव बताते हैं – कब और बातों तरफ़ बुद्धि चली जाती है तो माथा गर्म हो जाता है | फिर उन तूफानों से बुद्धि को निकाल इस विचार सागर मंथन में लग जाता हूँ तो माथा हल्का हो जाता है | माया के तूफ़ान तो अनेक प्रकार के आते हैं | इस तरफ़ बुद्धि लगाने से वह थकावट सारी उतर जाती है, बुद्धि रिफ्रेश हो जाती है | बाबा की सर्विस में लग जाते हैं तो योग और ज्ञान का मक्खन मिल जाता है | यह बाबा अनुभव बता रहे हैं | बाप तो बच्चों को बतायेंगे ना – ऐसे-ऐसे होगा, माया के विकल्प आयेंगे | बुद्धि को फिर उस तरफ़ लगा देना चाहिए | चित्र उठाकर उसी पर ख्यालात करना चाहिए तो माया का तूफ़ान उड़ जाये | बाबा जानते हैं कि माया ऐसी है जो याद में रहने नहीं देती | थोड़े हैं जो पूरा याद में रहते हैं | बड़ी-बड़ी बातें तो बहुत करते हैं | अगर बाबा की याद में रहें

तो बुद्धि क्लीयर रहे | याद करने जैसा माखन और कोई है नहीं | परन्तु स्थूल बोझ बहुत होने से याद कम हो जाती है |

- रूहानी बाप समझा रहे हैं बच्चों को कि बच्चे गिरना और सम्भलना है | घड़ी-घड़ी बाप को भूलते हो अर्थात् गिरते हो | याद करते हो तो सम्भलते हो | माया बाप की याद भुलवा देती है क्योंकि नई बात है ना | ऐसे तो कोई बाप को कभी भूलते नहीं | स्त्री कभी अपने पति को भूलती नहीं | सगाई हुई और बुद्धियोग लटका | भूलने की बात नहीं होती | पति, पति है | बाप, बाप है | अब यह तो है निराकार बाप, जिसको साजन भी कहते हैं | सजनी कहा जाता है भक्तों को | इस समय सब हैं भक्त | भगवान् एक है | भक्तों को सजनियाँ, भगवान् को साजन या भक्तों को बालक, भगवान् को बाप कहा जाता है | अब पतियों का पति वा पिताओं का पिता वह एक है |

- बाप हेविन का मालिक बनाने के लिए पढ़ाते हैं | देखो, कैसे साधारण है | ऐसे बाप को याद करना भी भूल जाते हैं ! निश्चय पूरा नहीं तो भूल जाते है | जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है, ऐसे मात-पिता को भूल जाना कैसी बदकिस्मती है | बाप आकर ऊँच ते ऊँच बनाते हैं | सतयुग में सब पवित्र थे, यहाँ पतित हैं | कितना अच्छी रीति समझाया जाता है परन्तु बाप को याद नहीं करते तो बुद्धि का ताला बन्द हो जाता है | सुनते-सुनते पढ़ाई छोड़ देते हैं तो ताला एकदम बन्द हो जाता है | स्कूल में भी नम्बरवार हैं | पत्थरबुद्धि और पारसबुद्धि कहा जाता है | पत्थरबुद्धि कुछ भी समझते नहीं, सारे दिन में 5 मिनट भी बाप को याद नहीं करते | 5 मिनट याद करेंगे तो इतना ही ताला खुलेगा | जास्ती याद करेंगे तो अच्छी रीति ताला खुल

जायेगा | सारा मदार याद पर है | कोई-कोई बच्चे बाबा को पत्र लिखते हैं – प्रिय बाबा वा प्रिय दादा | अब सिर्फ़ प्रिय दादा पोस्ट में चिट्ठी डालो तो मिलेगी? नाम तो चाहिए ना! दादा-दादियाँ तो दुनिया में बहुत हैं |

यहाँ जब बैठते हो तो बाप की याद में बैठना है | माया बहुतों को याद करने नहीं देती क्योंकि देह-अभिमानी हैं | कोई को मित्र-सम्बन्धी कोई को खान-पान आदि याद आता रहता है | यहाँ जब आते है तो बाप का आह्वान करना चाहिए | जैसे लक्ष्मी की पूजा होती है तो लक्ष्मी का आह्वान करते हैं, लक्ष्मी कोई आती नहीं है | यह सिर्फ़ कहा जाता है तो तुम भी बाप को याद करो अथवा आह्वान करो, बात एक ही है | याद से ही विकर्म विनाशी होंगे | धारणा नहीं होती है क्योंकि विकर्म बहुत किये हुए हैं, जिस कारण बाप को भी याद नहीं कर सकते हैं | जितना बाप को याद करेंगे उतना विकर्माजीत बनेंगे, हेल्थ मिलेगी | है बहुत सहज, परन्तु माया अथवा पास्ट के विकर्म रुकावट डालते हैं | बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प अयथार्थ याद किया है | अभी तो प्रैक्टिकल में आह्वान करते हो क्योंकि जानते हो आने वाला है, मुरली सुनाने वाला है | परन्तु यह याद की आदत पड़ जानी चाहिए | एवर निरोगी बनाने लिए सर्जन दवाई देते हैं कि मुझे याद करो | फिर तुम मेरे से आकर मिलेंगे | मुझे याद करने से ही वर्सा पायेंगे | बाप और स्वीटहोम को याद करना है | जहाँ जाना है, वह बुद्धि में रखना है | बाप की याद से ही पावन बनना है | बाप कहते हैं पावन बनने का एक ही उपाय है – देह सहित जो भी देह के सम्बन्ध हैं, उनको भूल जाना है |

- बाप फ़रमान करते हैं जितना हो सके याद को बढाते रहो | देह-अभिमान में आने से तुम याद नहीं करते न बुद्धि पवित्र होती है | शेरनी के दूध के लिए कहते हैं सोने का बर्तन चाहिए | इसमें भी पिताव्रता बर्तन चाहिए | अव्यभिचारी पिताव्रता बहुत थोड़े हैं | कोई तो बिल्कुल जानते नहीं | जैसे छोटे बच्चे हैं | बैठे भल यहाँ हैं परन्तु कुछ भी समझते नहीं | जैसे बच्चे को छोटेपन में ही शादी करा देते हैं ना | गोद में बच्चा ले शादी कराई जाती है | एक-दो में दोस्त होते हैं | बहुत प्रेम होता है तो झट शादी करा देते हैं तो यह भी ऐसे है | सगाई करनी है परन्तु समझते कुछ भी नहीं | हम मम्मा-बाबा के बने हैं, उनसे वर्सा लेना है | कुछ भी नहीं जानते | वन्डर है ना | 5-6 वर्ष रहकर भी फिर बाप को अथवा पति को फ़ारकती दे देते हैं | माया इतना तंग करती है |

- बाप कहते हैं नींद को जीतने वाले बनो | देह-अभिमान छोड़ो, देही-अभिमानी बनो | रात को जागकर याद करना है क्योंकि तुम्हारे सिर पर जन्म-जन्मान्तर के विकर्मों का बोझा बहुत है जो तुमको धारणा करने नहीं देते हैं | कर्म ऐसे किये हुए हैं, इस कारण देही-अभिमानी नहीं बनते | गपोड़े बहुत मारते हैं, बड़े गपोड़े का चार्ट लिख भेजते हैं कि हम 75 परसेन्ट याद में रहते हैं | परन्तु बाबा कहते हैं – इम्पासिबुल है | सबसे आगे चलने वाला खुद कहता है – कितनी भी कोशिश करता हूँ याद करने की परन्तु माया भुला देती है | सच्चा चार्ट लिखना चाहिए | बाबा भी बतलाते हैं ना तो बच्चों को भी फ़ालो करना चाहिए | फ़ालो नहीं करते तो चार्ट भी नहीं भेजते हैं | पुरुषार्थ के लिए समय मिला हुआ है | यह धारणा कोई मासी का घर नहीं | इसमें थकना नहीं होता है | कोई समझने में टाइम लेते हैं, आज नहीं तो कल समझ लेंगे |

बाप की दिल पर तब चढ़ेंगे जब रहमदिल बनेंगे, आपसमान बनायेंगे | इन्श्योर किया वह बात अलग है | वह तो अपने लिए ही करते हैं | यह तो ज्ञान रत्नों का दान औरों को देना है | बाप को पूरा याद नहीं करेंगे तो विकर्मों का बोझा जो सिर पर है, वह खुल पड़ेगा | प्रदर्शनी में भी समझाने वाले लायक चाहिए | होशियार बनना चाहिए | मज़ा आता है रात को याद करने में | इस रूहानी साजन को फिर प्रभात में याद करना है | बाबा आप कितने मीठे हो, क्या से क्या बना रहे हो |

बाप समझाते हैं माया बड़ी दुश्तर है | बहुतों को धोखा मिलता है | कोई को काम की चमाट, कोई को मोह की चमाट लग जाती है | देह-अभिमान में आने से ही चमाट लगती है | मेहनत है ही देही-अभिमानी बनने में इसलिए बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं सावधान, मनमनाभव | बाप को याद नहीं करेंगे तो माया थप्पड़ लगा देगी इसलिए निरन्तर याद करने का अभ्यास करो | नहीं तो माया उल्टा कर्तव्य करा देगी | रांग-राइट की बुद्धि तो मिली ही है | कहाँ भी मूंझो तो बाप से पूछो | तार में, चिट्ठी में अथवा फोन पर पूछ सकते हो | फोन सवेरे-सवेरे झट मिल सकता है क्योंकि उस समय सिवाए तुम्हारे बाकी सब सोये रहते हैं | तो फोन पर तुम पूछ सकते हो |

ज्ञान मार्ग में अति मीठा बनना है | स्वीट तब बनेंगे, जब मीठे बाप के साथ पूरा योग होगा तो धारणा भी होगी | ऐसे मीठे बाबा से बहुतों का योग नहीं है | समझते ही नहीं – गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप से पूरा योग लगाना है | माया के तूफ़ान तो आयेंगे ही | कोई को पुराने मित्र-सम्बन्धी याद आयेंगे, कोई को क्या याद पड़ता रहेगा | तो मित्र-सम्बन्धियों आदि के याद

आत्मा को मैला कर देती है | किचड़ा पड़ने से फिर घबरा जाते हैं, इसमें घबराना नहीं है | यह तो माया करेगी, किचड़ा पड़ेगा ही हमारे ऊपर | होली में किचड़ा पड़ता है ना | हम बाबा की याद में रहें तो किचड़ा नहीं रहेगा | बाप को भूले तो पहला नम्बर देह-अभिमान का किचड़ा पड़ेगा | फिर लोभ, मोह आदि सब आयेंगे | अपने लिए मेहनत करनी है, कमाई करनी है और फिर आप समान बनाने की मेहनत करनी है | पहले नम्बर की सब्जेक्ट है याद , पीछे पढ़ाई | बाकी सब है गुप्त |

बाप कहते तुम दुःखी बने हो, अब तुम बच्चे मुझे याद करेंगे तो मैं भी मदद करूँगा | तुम नफ़रत करेंगे तो मैं क्या करूँगा | यह तो गोया अपने ऊपर नफ़रत करते हैं | पद नहीं मिलेगा | धन कितना अथाह मिलता है | किसको लॉटरी मिलती है तो कितना खुश होते हैं | उनमें भी कितने इनाम आते हैं | फर्स्ट प्राइज़, फिर सेकेण्ड प्राइज़, थर्ड प्राइज़ होती है | हुबहू यह भी ईश्वरीय रेस है | ज्ञान और योग बल की रेस है | जो इनमें तीखे जाते हैं वही गले का हार बनेंगे और तख़्त पर नज़दीक बैठेंगे | समझाया तो बहुत सहज जाता है | अपने घर को भी सम्भालो क्योंकि तुम कर्मयोगी हो | क्लास में एक घण्टा पढ़ना है फिर घर में जाकर उस पर विचार करना है | स्कूल में भी ऐसे करते हैं ना | पढ़कर फिर घर में जाकर होम वर्क करते हैं | बाप कहते हैं एक घड़ी, आधी घड़ी.......दिन में 8 घड़ियाँ होती हैं | उनसे भी बाप कहते एक घड़ी, अच्छा आधी घड़ी | 15-20 मिनट भी क्लास अटेन्ड कर, धारणा कर फिर अपने धन्धेधोरी में जाकर लगो | आगे बाबा तुमको बिठाते भी थे कि याद में बैठो, स्वदर्शन चक्र फिराओ | याद का नाम तो था ना | बाप और वर्से को याद करते-करते स्वदर्शन चक्र फिराते-फिरते जब देखो नींद आती है तो सो जाओ | फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी | फिर सवेरे

उठेंगे तो वही प्वाइन्ट्स याद आती रहेंगी | ऐसे अभ्यास करते-करते तुम नींद को जीतने वाले बन जायेंगे |

यह है मृत्युलोक | तो बाप का परिचय देने से समझेंगे, बाप से वर्सा मिलता है जिसको दैवी स्वराज्य कहा जाता है | वह बाप ही देते हैं | वही पतित-पावन गाया जाता है वह कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो पाप कट जायेंगे | पतित से पावन बन पावन दुनिया में चलने लायक बन सकते हो | कल्प-कल्प बाप कहते हैं मामेकम् याद करो | याद की यात्रा से ही पवित्र बनना है | अभी पावन दुनिया आ रही है | पतित दुनिया विनाश होनी है | पहले-पहले बाप का परिचय दे पक्का कराना है | जब पक्का बाप को समझ जायें तब बाप से वर्सा मिले | इसमें माया भुलाती बहुत है | तुम कोशिश करते हो बाबा को याद करने की फिर भूल जाते हो | शिवबाबा को याद करने से ही पाप कटेंगे | वह बाबा इनके द्वारा बताते हैं बच्चे मुझे याद करो | फिर भी धन्धे आदि में भूल जाते हैं | यह भूलना नहीं चाहिए | यही मेहनत की बात है | बाप को याद करते-करते कर्मातीत अवस्था तक पहुँचना है | कर्मातीत अवस्था वाले को कहा जाता है फ़रिश्ता | तो यह पक्का याद करो कैसे किसको समझायें | पक्का निश्चय भी हो कि हम भाइयों को (आत्माओं को) समझाते हैं | सबको बाप का पैगाम देना है | कई कहते हैं बाबा पास चलूँ, दीदार करूँ | परन्तु इसमें दीदार आदि की तो बात ही नहीं है | भगवान आकर सिखलाते हैं और मुख से कहते हैं तुम मुझ अपने निराकार बाप को याद करो | याद करने से सब पाप कट जाते हैं | कहाँ भी धन्धे आदि में बैठे घड़ी-घड़ी बाप को याद करना है | बाप ने हुक्म दिया है मुझे याद करो | निरन्तर याद करने वाले ही विन करेंगे | याद नहीं करेंगे तो मार्क्स कम हो जायेंगे | यह पढ़ाई है ही मनुष्य से देवता बनने की, जो एक बाप ही पढ़ाते हैं | तुम्हें चक्रवर्ती राजा बनना है, तो 84 जन्मों को (चक्र

को) भी याद करना है | कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने के लिए मेहनत करनी है | वह अन्त में होनी है | अन्त कोई भी समय आ सकती है, इसलिए पुरुषार्थ लगातार करना है | नित्य तुम्हारा पुरुषार्थ चलता रहे | लौकिक बाप तुम्हें ऐसे नहीं कहेंगे कि देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो | शरीर का भान छोड़ मुझे याद करो तो पाप कटेंगे | यह तो बेहद का बाप ही कहते हैं बच्चे मुझ एक की याद में रहो तो सब पाप कट जायेंगे | तुम सतोप्रधान बन जायेंगे | यह धन्धा तो ख़ुशी से करना चाहिए ना | भोजन खाते समय भी बाप को याद करना है | याद में रहने का गुप्त अभ्यास तुम बच्चों का चलता रहे तो अच्छा है | तुम्हारा भी कल्याण है | अपने को देखना है बाबा को कितना समय याद करता हूँ?

- बाप समझाते हैं – बच्चे, देही-अभिमानी बनो | बहुत अच्छे बच्चे भी देह-अभिमानी हैं क्योंकि बाबा को याद नहीं करते | जो योगी नहीं, वह धारणा नहीं कर सकते | यहाँ तो सच्चाई चाहिए | पूरा फ़ालो करना चाहिए | जो सुनते हो वह धारण कर समझाते रहो | निर्भय रहना है | ड्रामा पर खड़े रहना है | कोई भी आफतें आदि आती हैं तो समझते हैं यह ड्रामा में है | तकलीफ़ पास तो की है ना | तुम सब महावीर हो ना | तुम्हारा नाम बाला है | 8 बहुत अच्छे महावीर हैं, 108 उनसे कम हैं, 16 हज़ार उनसे कम |

- बाप बच्चों प्रति कहे कि बच्चे स्वदर्शन चक्रधारी भव। यह बाप ने बच्चों को सावधानी दी। बच्चों को भी एक दो को सावधानी देनी है। बाप को याद करने से झट वह नशा चढ जाता है। स्मृति दिलाने के लिए एक दो को सावधान करना है। जैसे आपस में मिलते हैं तो नमस्ते आदि करते हैं ना। परन्तु उनसे कोई कल्याण नहीं होता है। कल्याण तब होगा जब तुम बच्चे एक दो को सावधानी देंगे। स्वदर्शन चक्रधारी अक्षर में सब कुछ आ जाता है। बाप का परिचय,

मर्तबे का परिचय, चक्र का भी परिचय आ गया। तो एक दो को सावधानी देना पहला फर्ज है। याद कराने से खबरदार हो जायेंगे। घड़ी-घड़ी एक दो को सावधान करना है। बाप और वर्से को याद करते रहो। स्वदर्शन चक्रधारी हो, अपने को अशरीरी समझ, अशरीरी बाप को याद करते हो। याद अर्थात् योग। योग से ही तुम्हारी निरोगी काया बनती है। यह अभी का पुरुषार्थ है। अन्त में जब एकदम कर्मातीत अवस्था हो जायेगी तब निरोगी बनेंगे। अभी तो पुरुषार्थी हैं। अभी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं क्योंकि जानते हैं सभी बेसमझ हैं।

भल आत्मा प्योर होती जाती है परन्तु शरीर तो प्योर हो नहीं सकता। यह तमोप्रधान शरीर है। तो बाप समझाते हैं - बच्चे एक दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। बाप और वर्सा को याद करते हो? स्वदर्शन चक्र को याद करते हो? बाबा कहते हैं एक भी ऐसे सावधानी नहीं देते होंगे। बाप को याद करते-करते नींद को जीतने वाला बनना है, इसमें तो बहुत कमाई है। कमाई में कभी थकावट नहीं होती है। परन्तु स्थूल काम भी करने पड़ते हैं इसलिए थकावट भी होती है। बाप समझाते हैं रात को भी जागकर बाबा से बातें करते, ज्ञान सागर में डुबकी लगानी होती है। जैसे एक जानवर होता है, पानी मे डुबकी लगाता है। तो ऐसे डुबकी मारने से, विचार सागर मंथन करने से देखते है कि बहुत पॉइंट्स आती हैं। कहाँ-कहाँ से निकल आती हैं। इसको कहा जाता है रात को जागकर ज्ञान का विचार सागर मंथन करना। मनुष्य बिल्कुल ही नहीं जानते हैं, उन्हों को समझाना है। बाप ज्ञान का सागर है, उनसे वर्सा मिलना है।

आत्मा इन ऑखों से देखती रहती है। आत्मा को ऑखें मिली हैं देखने के लिए। बाकी जबान से काम नहीं लेता हूँ। ऐसे ही बैठ जाता हूँ। परन्तु सिर्फ बैठ जाने से कोई भी फायदा नहीं। फायदा है ही बाप को याद करने से। जब तक सर्वशक्तिमान से योग नहीं तो कोई फायदा हो नहीं सकता। योग को ही अग्नि कहा जाता है। इनको युद्ध का मैदान भी कहा जाता है। माया

पर जीत पाने का मैदान है। योग से तुम्हारी आयु भी बढ़ती है। विकर्म भी विनाश होते हैं। बड़ी खुशी होती है। बाबा को याद करते-करते बाबा के पास चले जायेंगे। है तो सब ड़ामा, परन्तु बाप हर एक बात समझाते है। बाप को याद करते रहो, साथ-साथ सर्विस भी करनी है क्योंकि तुम हठयोगी तो नहीं हो। आरगन्स मिले हैं काम करने के लिए। तुम जानते हो आत्मायें पहले सतोप्रधान रहती हैं।

तुम भी निराकार आत्मा हो। इस शरीर का आधार लिया है। तुम्हारा अपना शरीर है। हमारा यह शरीर उधार लिया हुआ है। अभी तुम मुझ बाप को याद करो। मैं तुम आत्माओं का निराकार बाप हूँ। ' बाबा-बाबा' अक्षर बोलो। कभी-कभी कोई बच्चे कहते हैं-हमारा मन मूँझता है, मन को खुशी नहीं है। अरे, मन अक्षर क्यों कहते हो? बोलो-बाबा, हमको क्यों भूल जाता है! बाबा जो हमको स्वर्ग के लिए लायक बनाते हैं, उनको हम क्यों भूलते हैं! शरीर का भान छोड़ देही- अभिमानी बनो। बाबा कहते हैं- अब तुमको वापिस आना है, मुझे याद करो। निराकार बाबा निराकार आत्माओं को कहते हैं- ' बाबा-बाबा' करते रहो। यह बाप है और माता फिर है गुप्त। फादर के साथ माता तो जरूर चाहिए ना।

जप-तप आदि करने से विकर्म विनाश नहीं हो सकते। विकर्म विनाश योग अग्नि से ही होते हैं। अन्त में सबका हिसाब-किताब बुकनू होगा, नम्बरवार। चुक्यू नहीं होगा तो सजा खानी पड़ेगी। चुक्यू करना है बाप की याद से। याद नहीं करते हैं, तब आत्मा मुरझाती है। बाप कहते हैं-मेरे को याद नहीं करेंगे तो माया वार करेगी। जितना हो सके याद करो। कम से कम 8 घण्टे तक याद रहेगी तो तुम पास हो जायेंगे। चार्ट रखो। तूफान अंत आते हैं जब अपने को आत्मा समझ बाप को याद नहीं करते हो। गाते भी हैं-सिमर-सिमर सुख पाओ। अन्दर सिमरना है। चुप रहना है। राम-राम वा शिव-शिव कहना नहीं है। याद से तुम्हारे कलह मिट जायेंगे। तुम

निरोगी बन जायेंगे। सीधी बात है। बाप को भूलने से ही माया का थप्पड़ लगता है। बाप कहते हैं-रहो भी भल गहस्थ व्यवहार में। कदम-कदम पर बाबा से राय पूछते रहो। कहाँ पाप का काम न हो जाये। कन्या ज्ञान में नहीं आती है तो उनको देना ही पड़े। बच्चा अगर पवित्र नहीं रह सकता तो अपना कमा सकते हैं। वो जाकर शादी करें। कई फिर बाप की मिलकियत पर बड़ा झगड़ा करते हैं। पूरा समाचार नहीं देते हैं। वह हुए सौतेले। मातेले जरूर बतायेंगे। बाप को समाचार नहीं देंगे तो बाप कैसे जानें? यहाँ तुम्हारा चेहरा हर्षितमुख होगा तब वहाँ भी तुम सदा हर्षितमुख रहेंगे। बिरला मन्दिर में लक्ष्मी-नारायण का कितना फर्स्टक्लास चित्र है! परन्तु जानते नहीं कि यह कब आये थे? अभी वह भारत का राज्य कहाँ गया? तुम जाकर समझा सकते हो। पहले थी सतोप्रधान अव्यभिचारी भक्ति। फिर बाद में व्यभिचारी रजो, तमोप्रधान भक्ति होती है। आगे तो परमात्मा को बेअन्त कहते थे। अभी कहते हैं सब ईश्वर ही ईश्वर हैं, इसको तमो बुद्धि कहा जाता है। तो ऐसे नहीं कहना चाहिए कि हमारा मन नहीं लगता। यह तुम क्या कहते हो! बाप को भूलने से ही यह हाल होता है। बाप को याद करो तो खुशी का पारा बढ़ा रहेगा। बाप को याद करने से बड़ी भारी कमाई है। सारी रात बाप को याद करो। नींद को जीतने वाले बनो। गाते आये हो-बलिहार जाऊं। अब कहते हैं-मैं आया हूँ, तो मामेकम् याद करो ना। मुझ आत्मा का बाप वह है, उनको याद करना है। इनसे ममत्व मिट जाना चाहिए। नष्टोमोहा बन एक के साथ बुद्धि लगानी है तो पक्के हो जायेंगे। मुझे अब नये घर जाना है। पुराने घर से क्या ममत्व रखें। नया मकान बनाया जाता है तो फिर पुराने से दिल हट जाती है ना। बाप कहते हैं-देह सहित सब कुछ यह पुराना है। अब बाप और वर्से को याद करो। इस पढ़ाई से हम प्रिन्स-प्रिन्सेज जाकर बनेंगे सतयुग में। सेकेण्ड में बाबा प्रत्यक्षफल देते हैं। यह है प्रिन्स प्रिन्सेज बनने का कॉलेज। प्रिन्स-प्रिप्सेज का कॉलेज नहीं। यहाँ बनना है। फिर प्रिन्स के बाद राजा तो जरूर बनेंगे। अच्छा।

बच्चों ने यह महिमा किसकी सुनी? परमपिता परमात्मा की। बच्चे जानते हैं कि ऐसे बाप को याद करके उनसे अब स्वर्ग का वर्सा लेना है। बाप का तो फरमान है निरन्तर मुझे याद करो और अपने को आत्मा रूप में बच्चे समझो। यही मंजिल है। बाप का निवास स्थान तो अब मधुबन ही है। अब बाप से वर्सा कैसे मिले? जितना जो बाप को याद करते हैं उतना उनके पाप कटते जाते हैं और जो बाप के वर्से को याद करते रहते उनके खाते में खजाना जमा होता रहता है। यह एक किस्म का व्यापार है जो बाप सिखाते हैं। ऐसे बाप को तो निरन्तर याद करना पड़े। अगर याद नहीं करते तो माया पत्थर मारती है। माया कोई कम नहीं है। भल कोई कितना भी कहे मैं बच्चा हूँ। भल स्थूल वा सूक्ष्म सर्विस भी करता रहे लेकिन बाप से योग लगाना नहीं जानते तो उसे सपूत बच्चा नहीं कहेंगे। बाप तो कभी किसी पर गुस्सा नहीं करते कभी और दृष्टि से नहीं देखते परन्तु चलन ऐसी देखते हैं तो समझते हैं यह आसुरी मत का है। माया एक ही घूसे से एकदम खत्म कर देती है। फिर कितना विष डालते हैं। उनका जितना बड़ा पाप बनता है उतना अज्ञानी मनुष्य का नहीं बनता। कई नजदीक रहते हुए जरा भी पहचानते नहीं। बाप कहते यह भी ड़ामा में नूँध है, जो सुनते हुए जैसेकि सुनते ही नहीं। तो बाबा क्या करें। आजकल मनुष्यों के ऊपर कितना भी आशीर्वाद करो, प्यार करो परन्तु बैठे-बैठे अपने को भस्मासुर बना देते हैं। इस दुनिया में किसी का बाप के साथ योग नहीं है। तुम्हारे में भी कोई तो ईश्वर के बन उनकी श्रीमत पर चलते हैं और जो नहीं चलते हैं वह भस्मासुर बन जल मरते हैं। तुम ईथरीय मत से स्वर्ग का मालिक देवता बनते हो और कोई स्वर्ग जाने बदले काम चिता पर बैठ भस्मीभूत हो जाते हैं। बाबा बच्चों को कितना युक्ति से उठाते हैं। परन्तु माया ऐसी है जो ऐसा वार करती है जो निंदा कराने के निमित्त बन पड़ते हैं, जो सयाने बच्चे हैं वह तो कदम-कदम बाप की श्रीमत पर चलते हैं। बाप की पहली-पहली आज्ञा है मुझ पारलौकिक बाप को याद करो तो सुधार हो। जो बाप से योग नहीं लगाते, श्रीमत पर नहीं चलते तो माया बेटी उन्हें खा लेती है। माया को बेटी कहते हैं क्योंकि मदद करती है। बाप तो परमधाम से आये हैं बच्चों को पढ़ाकर नर से नारायण बनाने फिर भी ऐसे बाप के नाफरमानबरदार बन जाते हैं। बाहर निकलने से ही माया का थपड़ लग जाता है फिर तरस पड़ता है। कहाँ-कहाँ बिचारी कन्याओं,

माताओं पर बँधन आ जाते हैं। काम का हल्का नशा भी हुआ तो गिर पड़ते हैं, फिर अबलाओं पर कितने अत्याचार होने लगते हैं! कितनी बिचारी बाँध हो जाती हैं! इतने सबका पाप उन पर पड़ता है। बड़ी कड़ी सजा खाते हैं। बात मत पूछो। माया जानती है कल्प पहले वाले कौन-कौन हैं जिन्होंने मुझे जीत बाबा का तरफ लिया है। वह भी सयानी है। देखती है यह बाबा की अवज्ञा करते हैं तो ताला बन्द कर देती है।

मनुष्य को अपनी सुखी जीवन बनाने के लिये कौनसी मुख्य प्याइट बुद्धि में रखनी हैं? पहले तो यह मुख्य बात समझनी है कि जिस परमात्मा बाप की हम संतान हैं उस बाप की याद में हर समय श्वासों श्वास उपस्थित रहें, उस अभ्यास में रहने की पूर्ण रीति से कोशिश करनी है। अब श्वासों श्वास का मतलब है लगातार बुद्धियोग लगा रहे, जिसको निरंतर योग अर्थात् अटूट अजपाजाप याद कही जाती है, यह याद कोई मुख से जपने की नहीं है और न कोई मूर्ति सामने रख उसका ध्यान करना है। परन्तु यह बुद्धि योग द्वारा याद रखनी है, अब वो याद भी निरन्तर तब रह सकेगी जब परमात्मा का पूरा परिचय हो, तब ही ध्यान पूर्ण लग सकेगा। परन्तु परमात्मा तो गीता में साफ कहता है, न मैं ध्यान से, न जप से मिलता हूँ और न मेरी सूरत को सामने रख उनका ध्यान करना है परन्तु अपने को ज्ञान योग द्वारा परमात्मा को पाना है इसलिए पहले चाहिए ज्ञान, ज्ञान बिगर याद कायम रह नहीं सकेगी। तो अपने को कोई मूर्ति का ध्यान नहीं करना है परन्तु अपने को तो ज्ञान योग द्वारा ही परमात्मा को पाना है इसलिए पहले चाहिए ज्ञान, ज्ञान बिगर याद ठहर नहीं सकेगी। अपने को कोई मूर्ति का ध्यान नहीं करना है परन्तु उस मूर्ति के ज्ञान में रहना है, तो याद का तैलुक है ही ज्ञान से। अब शान से, चाहे मन से कल्पना करें वा बैठकर दर्शन करें। अगर उस देखी हुई चीज का भी पहले ज्ञान होगा तब ही योग और ध्यान ठीक लग सकता है। ज्ञान के लिये फिर पहले संग चाहिए, अब यह सब ज्ञान की प्याइट बुद्धि में रखनी है तब ही योग ठीक लग सकेगा।

वह है स्वर्ग का रचयिता। उनसे ही स्वर्ग का वर्सा मिलना है इसलिए बाबा की मत पर चलना है। उनसे आशीर्वाद लेनी है। आज्ञाकारी बच्चे ही आशीर्वाद लेने के हकदार हैं। बाप कहते हैं कपूत नहीं लेकिन सपूत बनो। बाबा का हाथ पूरा पकड़ लो। तुमको बहुत आराम से ले जाते हैं। सब आत्माओं को पंख मिल जाते हैं। तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना उड़ने के पंख मिलते जायेंगे। सजा खाने वाले थोड़ेही ऊंच पद पायेंगे। श्रीमत पर चलो फिर सजा के लायक नहीं बनेंगे। पास विद आनर होने के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। मम्मा-बाबा के ऊपर भी जीत पानी होती है। बाप बार-बार कहते हैं-बच्चे, बाप से मुख नहीं मोड़ना।

अब भारतवासियों पर राहू की दशा बदलकर बृहस्पति की दशा बैठती है। बाप कहते हैं बच्चे दुआयें ले लो तो तुम्हारे पाप की गठरी उतरे। मामेकम् याद करने की प्रैक्टिस करो। उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप कहते हैं मुझ मोस्ट बिलवेड बाप को याद करो। तो माँ-बाप से दुआयें लेने के लायक बनना चाहिए। इसने (ब्रह्मा ने) भी लौकिक बाप की बहुत दुआयें ली है। बाप की बहुत सेवा की है। पिछाड़ी में कहा काशी में निवास कराओ। अच्छा बाबा चलो। वहाँ बिठाकर नौकर-चाकर सब दिये। वहाँ ही उनकी मनोकामना पूरी हुई। बाबा की आशीर्वाद मिली ना। सबकी सर्विस की तो आशीर्वाद मिली। माँ- बाप की आशीर्वाद आगे बढ़ाती है। अभी है बेहद की बात इसलिए सपूत बच्चे बन आशीर्वाद लेनी है। तो श्रीमत पर चलते रहो और सबको मार्ग बताओ। भारतवासी स्वर्ग के मालिक बने थे। अभी बाबा आया है वर्सा देने। कहते हैं सिर्फ मुझ बाप को याद करो और किसके नाम-रूप में नहीं फँसना है। देही अभिमानी बन बाप को याद करो तो बेड़ा पार हो जायेगा। तुम मात-पिता हम बालक तेरे... अब वह मात-पिता सामने बैठे हैं। बाबा बरोबर आप कल्प पहले आये थे। कल्प-कल्प भी आप ऐसे आते हो। यह हम जानते हैं और कोई नहीं जानते हैं। तुम 84 जन्म के चक्र को जान गये हो। अभी बाप से आशीर्वाद लेने में भूल न करो। यह बड़ी जबरदस्त आशीर्वाद है। बाप तुम बच्चों को

विथ का मालिक बनाकर खुद निर्वाणधाम में बैठ जाते हैं। यह खुद इस सृष्टि का सुख नहीं लेते हैं। अच्छा! बाप कहते हैं विस्तार से क्या सुनाऊं। थोडी-सी बात सिर्फ समझ लो-तुम बाप को याद करना भूल जाते हो। गाँठ बाँध लो। मनुष्य कोई बात याद करने लिए गाँठ बाँध लेते हैं तो भूलता नहीं है। तो यह भी भूलना नहीं है।

ऐसी क्या युक्ति करें जो घड़ी-घड़ी बाप को याद करते रहें? बाप राय देते हैं-हर एक अपने घर में शिव का चित्र रख दे। शिवबाबा का चित्र देख समझेंगे-बेहद का बाबा पतित- पावन आया हुआ है पावन दुनिया स्थापन करने। उनसे हम अभी 5 हजार वर्ष पहले मुआफिक वर्सा ले रहे हैं, स्वर्ग के स्वराज्य का। आत्मा जानती है-हम स्वर्ग में जाकर शरीर के साथ राज्य करेंगे। जो बात कभी स्वप्न में भी नहीं थी, अब वह आया है तो एक कोठरी अपनी बनाए शिव का चित्र रख उसमें लिख देना चाहिए-बाबा आया हुआ है। उनको आना ही है स्वर्ग की स्थापना करने। नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने। घडी-घड़ी शिवबाबा को देखते रहेंगे तो याद रहेगी। चित्र गले में भी डाल देते हैं। पति का चित्र भी गले में डाल देते है ना। तुम बच्चों के लिए भी तैयार करा रहे हैं। पारलौकिक बाप को याद करना बड़ा अनोखा है। और सभी की याद को समेट एक को याद करना है। जैसे भक्ति मार्ग में भी अपने घर में पूजा की कोठी अथवा मन्दिर बनाते हैं ना, वैसे ज्ञान मार्ग में भी कोठी बनाए उसमें सिर्फ शिवबाबा का चित्र रखना चाहिए। तुम्हारी युद्ध माया से है। तुम बाप को याद करते हो, माया तोड़ने की कोशिश करती है। हमको शिवबाबा से वर्सा मिलता है-ऐसे याद करते रहेंगे। शिवबाबा को देखते रहेंगे तो तुम्हारी कोठी वैकुण्ठ बन जायेगी। मीरा भी भक्ति करती थी तो वैकुण्ठ का साक्षात्कार करती थी। उनको भी साक्षात्कार कराने वाला शिवबाबा है। तुम्हारी बुद्धि में अब आया है-हम शिवबाबा से विश्व का मालिक बनते हैं। भक्ति मार्ग में यह पता नहीं रहता-शिव क्या करते हैं? क्यों उस पर बलि बढ़ते हैं? तुम समझते हो-सबसे ऊंच है शिवबाबा, उनको ही परमात्मा कहा जाता है।

अब तुमको देह सहित देह के सब सम्बन्धियों को भूल मुझ बाप को याद करना है। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी भल करो। जो कुछ समय मिले तो मुझे याद करने का पुरुषार्थ करो। यह एक ही तुमको युक्ति बताते हैं। सबसे जास्ती मेरी याद तुमको अमृतवेले रहेगी क्योंकि वह शान्त, शुद्ध समय होता है। उस समय न चोर चोरी करते, न कोई पाप करते, न कोई विकार में जाते। सोने के टाइम सब शुरू करते हैं। उसको कहा जाता है घोर तमोप्रधान रात। अब बाप कहते हैं - बच्चे पास्ट इज पाष्ट।

बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चे शिवबाबा को और वर्से को याद करते रहो। बाबा आप बहुत मीठे हो, कमाल है आपकी, ऐसे-ऐसे महिमा करनी चाहिए बाबा की। तुम बच्चों को ईश्वरीय लाटरी मिली है। अब मेहनत करनी है ज्ञान और योग की। इसमें जबरदस्त प्राइज मिलती है तो पुरुषार्थ करना चाहिए।

अविनाशी बाप अविनाशी पुरुषार्थ कराते हैं। यहाँ तो पैसे के लिए क्या नहीं करते हैं-बाप बच्चों को, बच्चे बाप को भी मार डालते हैं। तुम्हें अब अविनाशी बाप से अविनाशी वर्सा लेना है, तो अविनाशी बाप और वर्से को याद करना है। और कोई तकलीफ नहीं, सिर्फ दो अक्षर हैं। इसको महामन्त्र कहा जाता है। बस, यह दो अक्षर याद करने से तुमको राज-तिलक मिल जाता है। अब इस याद में है बल। जितना जो याद करेंगे। योग और ज्ञान। शास्त्रों आदि के ज्ञान की यहाँ बात नहीं। दो अक्षर याद करने के लिए कहते हैं तो फुर्सत नहीं रहती है। कह देते हैं हम याद नहीं कर सकते, घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। दो अक्षर की यात्रा नहीं कर सकते! तुम लोग गीत, कविता, डायलॉग बनाते हो, याद करते हो, वास्तव में इन सबकी यहाँ दरकार

नहीं है। यहाँ तो चुप रहना है। क्या तुम बीज और झाड़ को नहीं समझ सकते हो। बीज को हाथ में लेने से ही सारा झाड़ सामने आ जायेगा। इसमें चार युग और चार वर्ण हैं। यह सब बुद्धि में लाना, देरी नहीं लगती है। सेकण्ड में स्वर्ग की बादशाही मिल जाती है। सिर्फ याद में रहना है। सेकण्ड में साक्षात्कार कराया जाता है। उस समय जैसे स्वर्ग वा कृष्णपुरी में हैं। सिर्फ दो बातें याद करनी हैं-एक तो बाप की याद, दूसरा यह नॉलेज बहुत ऊँच है मनुष्य से देवता बनने की। देवतायें तो पवित्र होते हैं। नॉलेज हमेशा ब्रह्मचर्य में पड़ी जाती है। जब पढ़कर घर सम्भालने लायक बनें तब बाद में शादी करनी होती है। अपने घर वालों को क्रियेटर सम्भालेंगे, इसलिए अपनी कमाई चाहिए ना। तो ब्रह्मचर्य में कमाई होती है। आजकल तो धन के भूखे हो गये हैं। थोड़ी आमदनी हुई फिर दूसरा कोर्स करते हैं। अब बाप कहते हैं-बच्चों, यह कोर्स बहुत सहज है सिर्फ श्रीमत पर रात को जागकर प्रैक्टिस करो। रात को बुद्धि की यात्रा करना बहुत सहज है और मदद भी बहुत मिलेगी। दो तीन बजे अमृतवेला कहा जाता है। सवेरे उठकर स्वदर्शन चक्र फिराना है। यह बुद्धि का काम है। बाप का फरमान है-निरन्तर मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होते जायेंगे। नहीं तो तुम सजनियों को कैसे ले जायेंगे। तुम सजनियों हो पतित, सबके पंख टूटे हुए हैं। अब सिर्फ याद करो तो पवित्र बन जायेंगे। सवेरे उठने का प्रयत्न करो। दिन में तो याद न भी ठहरे, रात को पुरुषार्थ करना सहज है और मदद भी बहुत मिलेगी। मुख्य है याद। तुम जानते हो हम आत्मा हैं। हमको परमपिता परमात्मा पढ़ा रहे हैं। उनसे पढ़ना है। वह बाप भी है, उनका बनना है। तुम जानते हो हम आत्मायें आकर शिवबाबा से मिली हैं। आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल... जीव आत्मायें आकर बाप से मिलती हैं।

इन 5 विकारों को जीतो। योग अग्नि से विकर्मों को भस्म करो। इस विष विकार ने ही तुमको कबदाखिल कर दिया है, इसको प्याइजन कहा जाता है। ज्ञान अमृत से तुम पवित्र बन जाते हो। बाप और वर्से को याद करना, है तो बहुत सहज। कई बच्चियाँ कहती हैं बाबा धारणा

नहीं होती, बड़ी बहनों मुआफिक समझा नहीं सकते हैं। बाप कहते हैं-बच्चे, यह तो हरेक के कर्म का हिसाब-किताब है। कोई तो 25 - 30 वर्ष रहते हुए भी धारणा नहीं कर सकते हैं। तुम आत्माओं का तो बाप परमात्मा है। वह स्वर्ग का रचयिता है। बाप स्वर्ग का वर्सा देने ही आये हैं। तुम बाप को तो याद करो। बच्चों को भी होशियार करना है। तुम बच्चों को पहले रहम करना चाहिए - अपने बच्चों पर। तुम बच्चे समझते हो हम इस समय अपने मोस्ट बिलवेड परमपिता परमात्मा के सम्मुख बैठे हैं। कल्प पहले भी हमने निराकार बाप से बेहद का वर्सा स्वर्ग का लिया था। बाप कहते हैं मुझे भी इस शरीर का लोन लेना पड़ता है। किराये पर बैठे हैं। अपना न होने से जरूर किराये से ही लेंगे। यह रथ है जिसमें कल्प-कल्प रथी बनते हैं। रथ में रथी देख रहे हैं ना। आगे तो गीता पढ़ने से कुछ भी समझ में नहीं आता था। कहाँ वह अर्जुन और घोड़ों का रथ बैठ दिखाया है। तुम्हारा बाप रथी है, बच्चों को कहते हैं मुझ बाप को याद करो फिर चार्ट रखो। ऐसा साजन जो 2। जन्म सुख देते उनको क्यों नहीं याद करेंगे। परन्तु यह है गुप्त। अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा निश्चय कर फिर बाप की श्रीमत पर चलना है, इसमें ही माया बड़ा हैरान करती है। वह भी कम उस्ताद नहीं है। अच्छे- अच्छे बच्चों को भी जीत लेती है। बाबा स्वर्ग का मालिक बनावे और माया चण्डाल के जन्म में ले जावे क्योंकि श्रीमत छोड़ देते हैं। यहाँ बच्चे जानते हैं हमको भगवान पढ़ाते हैं। तुम गॉडली स्टूडेट हो ना। भल दूसरा भी कोर्स उठाते फिर भी टीचर को याद करेंगे। बाप कहते हैं- भल गहस्थ व्यवहार में रहो, परन्तु सदा सुखी बनने के लिए साथ में दूसरा कोर्स उठाओ। मैं तुम्हें अथाह धन देता हूँ जो तुम 2। जन्म कभी दु :ख नहीं देखेंगे। तुम्हारे जैसा अक्लमंद सृष्टि भर में कोई नहीं होता। प्रेजीडेट आदि की कितनी महिमा करते हैं। परन्तु तुम मोस्ट वंडरफुल इनकागनीटो बड़ी अथॉरिटी हो। तुम्हारे जैसा नॉलेजफुल इस दुनिया में कोई हो नहीं सकता। अब तुम बच्चे जानते हो भारत को हम स्वर्ग बनाए 2। जन्म के लिए स्वर्ग का मालिक बन रहे हैं। जगत अब्बा को कितनी बड़ी प्राप्ति है। वह भी यही महामन्त्र देती है कि शिवबाबा को याद करो। बाप सम्मुख कहते हैं-लाडले बच्चे, मुझे याद करो। यह यात्रा भूलो मत। टाइम वेस्ट न करो। यह बहुत भारी

कमाई है। बुद्धियोग वहाँ लग जाना चाहिए। हम शिवबाबा के सम्मुख हैं। बाप के घर आये हैं। अभी तो तुम हरिद्वार में बैठे हो। हरी परमात्मा खुद बैठे हैं। वहाँ तो पानी है। यह सच्चा-सच्चा हरी का द्वार है। हर हर यानी दुःख हरने वाला। यहाँ वह दु :ख हर्ता सुख कर्ता तुम्हारे सामने बैठा है। भक्त लोग जाकर गंगा के किनारे बैठते हैं, समझते हैं गंगा का तट हो, गंगा जल मुख में हो। जब कोई मरते हैं तो गंगाजल पिलाते हैं। अब गंगा पतित-पावनी नहीं है। पतित-पावन है ही शिवबाबा। हरेक को याद उस शिवबाबा को करना है तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। ऐसे नहीं, पिछाड़ी में कोई बैठ कहेंगे शिवबाबा को याद करो। अन्त में आपेही शिवबाबा की याद में शरीर छोड़ना है। अब हमको शिवबाबा के पास जाना है मुक्तिधाम। सतयुग को जीवनमुक्तिधाम कहा जाता है। धाम रहने के स्थान को कहा जाता है। निर्वाणधाम में निराकार आत्मायें ब्रह्म तत्व में रहती हैं। अब तुम आकर हरी के घर में बैठे हो। दुःख हरने वाला एक ही है। अब तुम बच्चों को शिवबाबा और उनका स्वीट होम याद आयेगा। बाबा आये हैं अपने घर ले चलने। अब शिवबाबा के स्वीट होम को याद करना है। यहाँ तो कोई स्वीट है नहीं। अब बाप बच्चों को कहते हैं-बेहद की राजाई लेनी है तो रात को जागकर यात्रा करो। मैं आता ही हूँ घोर अन्धियारी रात में। ब्रह्मा की रात पूरी हो दिन होना है। मैं आता हूँ बेहद की रात और बेहद दिन के संगम पर। तो तुम भी रात में नींद को जीत याद करने का अभ्यास करो। 2 - 3 बजे के समय को ब्रह्म महूर्त कहा जाता है। बाप शिक्षा देते हैं ब्रह्मा द्वारा। रात को जाग मुझे याद करो तो फिर पक्के हो जायेंगे। माया बहुत सतायेगी फिर भी मेहनत करो। इसमें मेहनत सारी बुद्धि की है। उठते, बैठते, चलते याद में रहना है। बाप कहते हैं थक मत जाना रात के राही। रात को बहुत मजा आयेगा। फिर वह नशा दिन में भी चलेगा। एक तो बाप को याद करो और अपनी तकदीर की महिमा करो। और सबकी तकदीरें फूटी हुई हैं। तुम्हारी तकदीर अब जग रही है, औरों की सो रही है। जिनका बुद्धियोग इस समय धन कमाने में रहता है उनकी तकदीर सोई हुई समझो। सच्ची तकदीर तुम्हारी जग रही है। पेट कोई जास्ती थोड़ेही खाता है। भील लोग क्या खाते हैं? मिर्ची और मकाई चने का आटा मिलाए रोटी खा लेते हैं। यहाँ तो तुमको सब कुछ मिलता है। तुमकी बहुत साधारण रहना है। न बहुत साहूकारी,

न बहुत गरीबी। अब बाप कहते हैं-हे लाडले बच्चे, मुझे याद करो। मैं तुमको नयनों पर बिठाए ले चलता हूँ। निरोगी काया रहेगी। न काल की ताकत है। अगर अच्छी रीति याद करेंगे तो मदद मिलेगी। जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ कर अपनी शलब्ध बनाई है।

सभी मनुष्य मात्र आशिक हैं उस माशूक के। तुम सब सजनियां हो, वह साजन ठहरा। साजन है निराकार। कोई साकार वा आकार को साजन नहीं कहा जा सकता। सभी का माशूक एक ही निराकार बाबा है। निराकार आत्मायें अपने माशूक को याद करती है। याद क्यों करती हैं? जरूर कुछ न कुछ तकलीफ है। सभी भक्त भगवान् को याद करते हैं। यह आशिक- माशूक निराकारी हैं। वह जो साकारी आशिक-माशूक होते हैं उन्हों की भी महिमा है और वह बहुत थोड़े होते हैं। एक-दूसरे के शरीर पर फिदा होते हैं। उनका कोई विकार के लिए प्यार नहीं होता है। सिर्फ एक-दो को देखते रहते। देखने बिगर सुख नहीं आयेगा। शरीर को याद करते हैं। कहाँ भी बैठे रहेंगे। समझेंगे हमारे सामने माशूक खड़ा है। उनको साक्षात्कार होता है क्योंकि वह पवित्रता का प्रेम है। शरीर की भी शोभा होती है ना। विकार के लिए नहीं, एक-दो को देख खुश होते हैं। खाते हुए उनकी याद आई, बस, खाना भूल जायेगा। उनको ही देखते रहेंगे। वह भी थोड़े होते हैं। यहाँ तो सभी के सभी आशिक हैं। उस माशूक (शिवबाबा) के, परन्तु कितने थोड़े सच्चे आशिक बनते हैं जो पास विथ ऑनर्स होते हैं! 8 दानों की कितनी महिमा है! तो जब भक्तों को भगवान् मिला है तो उनको कितना याद करना चाहिए! बाप कहते हैं- बच्चे, निरन्तर मुझे याद करो क्योंकि मेरे से तुमको बहुत सुख मिलता है। वह तो करके अल्प काल का सुख मिल जाता है। आपस में बहुत लव रहता है। यह फिर है बेहद के बाप से बेहद का लव। बेहद का प्यार एक में रहता है।

संगदोष से अपनी सम्भाल करनी है। देवताई गुण धारण कर स्वयं को लायक बनाना है। घर-घर को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है। भूतों को बाप की याद से भगाना है। बाप के साथ मंगल मिलन मनाते रहना है। महावीर बन संजीवनी बूटी द्वारा मूर्छित को सुरजीत करने वाले शक्तिवान भव जैसे सूर्य स्वयं शक्तिशाली है तो चारों ओर अपनी शक्ति से प्रकाश फैलाता है, ऐसे शक्तिवान बन अनेकों को संजीवनी बूटी देकर मूच्छित को सुरजीत बनाने की सेवा करते रहो, तब कहेंगे महावीर।

यह नया स्कूल है, नया पढ़ाने वाला है। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। झोली उनकी भरेगी जो लायक होंगे, बाप को याद करेंगे। माँ-बाप को कभी कोई भूलता नहीं है। फिर संगमयुगी बच्चे बाप को भूल कैसे सकते हैं। अच्छा! दुनिया धमचक्र में है और तुम बच्चे चुप हो। चुप में है शान्ति, शान्ति में है सुख। तुम जानते हो मुक्ति के बाद फिर है जीवनमुक्ति। तुम बच्चों को सिर्फ दो अक्षर याद हैं - अलफ अल्लाह और बे बादशाही। सिर्फ एक अलफ को याद करने से बादशाही मिल गई। बाकी क्या बचा? बाकी रही छांछ। अलफ मिला गोया मक्खन मिला, बाकी सब है छांछ। ऐसे हैं ना? हम चुप रहते है। जानते है चुप रहकर हम श्रीमत पर चलते है। परन्तु वंडर यह है कि बच्चे अलफ को भी पूरा याद नहीं करते, भूल जाते हैं। माया तूफान लाती है। बाप भी कहते हैं मनमनाभव, मध्याजीभव। गीता में अक्षर हैं। तो तुमको गीता वालों से अर्थ पूछना चाहिए कि मनमनाभव, मध्याजीभव का अर्थ क्या है? बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुमको बादशाही मिलेगी। सब देह के धर्म छोड़ देही बन जाओ और बाप को याद करो तो बादशाही मिलेगी। ग्रंथ मे भी कहते है - जपो अलफ को तो बादशाही मिलेगी। सचखण्ड की राजाई मिलती है। हम दुनिया से बिल्कुल न्यारे हैं, और कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे। बाप तुम्हें नई बातें सुनाते हैं, बाकी सब पुरानी बातें ही सुनाते हैं। बात बड़ी सहज है।

बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र हों उनको तुम्हें याद नहीं करना है । बाबा कहते हैं चित्रों को देखना बन्द करो । यह है भक्तिमार्ग । अभी तो तुम आत्माओं को वापिस मेरे पास आना है । पापों का बोझा सिर पर बहुत है । ऐसे नहीं, गर्भ जेल में हर जन्म के पाप खत्म हो जाते हैं । कुछ खत्म हो जाते हैं, कुछ रहते हैं । अब मैं पण्डा बनकर आया हूँ । इस समय सब आत्मायें माया की मत पर चलती हैं । परमात्मा सर्वव्यापी कहना यह माया की मत है । कभी कहते सर्वव्यापी है, कभी कहते 24 अवतार लेते हैं । बाप कहते हैं मैं सर्वव्यापी कहाँ हूँ । कहते हैं बच्चे कोई भी चित्र को नहीं देखो । मामेकम् याद करो, बुद्धियोग ऊपर लटका । जहाँ जाना है उनको ही याद करना है । एक बाप बस दूसरा न कोई । वही सच्चा पातशाह है, सच सुनाने वाला । तो तुम्हें कोई भी चित्रों का सिमरण नहीं करना है । यह शिव का जो चित्र है उनका भी ध्यान नहीं करना है क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं । जैसे हम आत्मा हैं वैसे वह परम आत्मा है । जैसे आत्मा भ्रकुटी के बीच में रहती है वैसे बाबा भी कहते थोड़ी जगह आत्मा के बाजू में ले बैठ जाता हूँ । रथी बन इनको बैठ ज्ञान देता हूँ । इनकी आत्मा में ज्ञान नहीं था, पतित थी ।

अब तुम बच्चों को बाप श्रीमत देते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो । टीचर यह प्रतिज्ञा करायेंगे क्या? मैं तुमको बैरिस्टरी की गद्दी पर बिठाऊंगा । वह तो खुद पढ़कर बैरिस्टरी की गद्दी पर बैठेंगे । बाप भी कहते हैं जितना याद करेंगे तो योग से सब पापों से मुक्त होने । याद करने से तुम्हारी आत्मा जैसे मेरे पास आ रही है । अपने पास चार्ट रखना है । कोई का चार्ट आधे घण्टे का होगा, कोई का सवा घण्टे का होगा । कोई का तो 5 मिनट भी नहीं । कोई का तो बहुत अच्छा चार्ट है । यह भी तुमको साक्षात्कार होगा । स्कूल में टीचर अथवा स्ट्रडेट खुद भी समझते हैं कितने नम्बर में आयेंगे । यहाँ तो नम्बरवार बिठा नहीं सकते माया अच्छे- अच्छे

को भी नीचे-ऊपर कर देती है। श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो माया फंसा मार देगी। इसमें है मेहनत। हम अब जाते हैं परमधाम। 84 जन्म पूरे हुए। बाबा आये है लेने लिए। तो बाप को याद करना है, औरों को भी मन्त्र देना है। मन कोई जपना नहीं है। गुरू लोग तो किसम-किसम के मन्त्र देते हैं। बाप कहते हैं प्रीतम को याद करो। प्रीतम आया है प्रीतमाओं के पास। सारी दुनिया की आत्मायें प्रीतमायें हैं, जो उनको याद करती हैं।

तुम तो सदा सौभाग्यशाली बनती हो और यह पति भी अमर है, अमरनाथ है ना। तुमको भी अमरनाथ, अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को बहुत याद करना है जो तुमको पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को भूलने से रोना आ जाता है। बाप कहते हैं-क्या तुम्हारा साजन मर गया है जो तुम रोती हो! तुमको तो अभी सदैव हर्षितमुख रहना है। देवताओं का मुखड़ा सदैव हर्षित रहता है। मनुष्य देखने से ही खुश होते हैं। देवताओं ने वह खुशी कहाँ से लाई? संगम पर बाप ने ऐसा हर्षितमुख, खुशमिजाज बनाया था। अभी पुरुषार्थ करना है तब ही तो अविनाशी बनेंगे। बाप कहते हैं-रोने की बात ही नहीं है। वाह ऐसा सलोना साजन मिला है जिससे स्वर्ग के महाराजा- महारानी बनते हो। तुम श्रीमत पर कदम-कदम चलते रहो।

बाबा कैसा कडरफुल है! एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति जनक को मिली - यह भी गाया हुआ है। तुम जानते हो कि अब हम शिवबाबा के बने हैं। शिवबाबा को जरूर याद करना पड़े। जैसे बच्चे धर्म की गोद लेते हैं तो जानते हैं कि पहले हम फलाने का बच्चा था, अब फलाने का हूँ, उनसे दिल हटती जायेगी और उनसे जुटती जायेगी। हम यहाँ भी ऐसे कहेंगे कि हम शिवबाबा के एडाप्टेड बच्चे है फिर उस लौकिक बाप को याद करने से फायदा ही क्या? मोस्ट बिलवेड बाप इतनी बड़ी सम्पत्ति देने वाला है। बाप भी मेहनत करके बच्चों को लायक बनाते हैं न?! ऐसे बाप को तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। और तो सभी तुमको दु :ख देने वाले हैं फिर भी

उनको याद करते रहते हो और मुझ बाप को तुम भूल जाते हो। रहो भल अपने घर में परन्तु याद बाबा को करो। इसमें मेहनत चाहिए। सिर्फ मेरा होकर रहो। निरन्तर मुझे याद करो और नई दुनिया को याद करो। यह तो सारा कब्रिस्तान बनना है। तुम मेरे बने गोया विश्व के मालिक बने। तुम जानते हो कि हम बाबा के बने हैं फिर स्वर्ग के मालिक हम भविष्य में बनेंगे। खुशी का पारा चढ़ना चाहिए।

कहते हैं यह तो उनका रथ है, इनको हम क्या करेंगे? हम तो निराकार को ही याद करेंगे। अच्छा, निराकार की गोद में जाकर दिखाओ? निराकार साथ खाओ, पियो। तुम इनके पास क्यों आते हो? कहते हैं - नहीं बाबा, आप इसमें हो, आपको ही इसमें विराजमान समझ चलते हैं। यह बड़ा मुश्किल किसकी बुद्धि में रहता है। ऐसे बहुत हैं जो गपोडे लगाते हैं - हमारा बाबा में बहुत प्यार है, हम इतने घण्टे बाबा को याद करते हैं। बाबा कहते हैं मैं भी पूरा याद नहीं करता हूँ। मैं तो एक ही सिकीलधा बच्चा हूँ फिर भी मैं पुरुषार्थ बहुत करता हूँ।

यह नॉलेज कितनी वन्हरफुल है! नॉलेज तो बहुत सहज है, बाकी कर्मातीत अवस्था को पाना इसमें ही सारी मेहनत है। जब विकर्म विनाश हों तब तो उड सकें। ध्यान से ज्ञान श्रेष्ठ है। ध्यान में माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं इसलिए ध्यान से ज्ञान अच्छा है। ऐसे नहीं कि योग से ज्ञान अच्छा। ध्यान के लिए कहा जाता है। ध्यान में जाने वाले आज हैं नहीं। योग में तो कमाई होती है, विकर्म विनाश होते हैं। ध्यान में कोई कमाई नहीं है। योग और ज्ञान में कमाई है। ज्ञान और योग बिगर हेल्दी-वेल्दी बन नहीं सकते। फिर यह घूमने-फिरने की एक आदत पड जाती है। यह भी ठीक नहीं। ध्यान नुकसान बहुत करता है। ज्ञान भी है सेकेण्ड का। योग कोई सेकेण्ड का नहीं है। जहाँ जीना है वहाँ योग लगाते रहना है। ज्ञान तो सहज है, बाकी एवरहेल्दी, निरोगी बनना इसमें मेहनत है। सवेरे उठकर याद में बैठने में भी विघ्न बहुत पड़ते हैं। सबसे

जास्ती तूफान तो पहले नम्बर वाले को आयेगे ना । शिवबाबा को तो नहीं आ सकते । बाबा हमेशा समझाते रहते हैं तूफान तो बहुत आयेगे । जितना याद में रहने की कोशिश करेंगे, उतना तूफान बहुत आयेंगे । उनसे डरना नहीं है, याद में रहना है, स्थिर होना है । तूफान कोई हिला न सके, यह अन्त की अवस्था है । यह है रूहानी रेस । शिवबाबा को याद करते रहो । यह भी समझने की और धारण करने की बातें हैं । धन दान नहीं करेंगे तो धारणा नहीं होगी । पुरुषार्थ करना चाहिए ।

बाबा समझाते हैं यहाँ बैठे बैठे बच्चों के अन्दर में जरूर आता होगा कि ओहो! यह हमारा बेहद का बाप भी है, फिर शिक्षा भी बहुत ऊंची देते हैं । सारी रचना के आदि मध्य अन्त का राज भी समझाया है । यह सब याद करना भी मनमनाभव है । यह भी तुम्हारे चार्ट में आ सकता है । यह तो बहुत सहज है । और भल कुछ भी न करो, परन्तु उठते बैठते, चलते फिरते बुद्धि में यह याद रहे । वण्डरफुल चीज को याद करना होता है । तुम समझते हो बाबा को याद करने से, पढ़ाई पढ़ने से हम फिर से विश्व का मालिक बनते हैं । यह बुद्धि में चलता रहना चाहिए । भल कहाँ भी बस-ट्रेन आदि में बैठे हो परन्तु बुद्धि में याद हो । पहले-पहले तो बच्चों को बाप चाहिए । तुम जानते हो हम आत्माओं का रूहानी बेहद का बाप है । सहज याद दिलाने लिए बाबा युक्ति बताते हैं । मामेकम् याद करो तो आधाकल्प के जो तुम्हारे विकर्म हैं, वह सब योग अग्नि से भस्म हो जाये । तुम बच्चे जानते हो यह जो हमारा बेहद का बाप है, उनका कोई भी बाप है नहीं और यह बेहद का टीचर भी है । इनका कोई टीचर नहीं । इन देवताओं को किसने पढ़ाया, यह तो जरूर याद आना चाहिए ना! यह भी मनमनाभव है । यह पढ़ाई तो कहाँ से पड़े नहीं हैं । बाप स्वयं ही नॉलेजफुल है । इनको किसने पढ़ाया है क्या? मनुष्य सृष्टि का वह बीजरूप है और चैतन्य है, ज्ञान का सागर है । चैतन्य होने कारण मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का आदि से अन्त तक राज सुनाते हैं ।

दु:ख का पार्ट पूरा हुआ। बस बाबा, अभी हम आये कि आये। यह अन्तिम जन्म है। बाबा साजन आया हुआ है। कहते हैं अभी पवित्र दुनिया के लायक बनो तो साथ ले जाऊंगा। योग से लायक नहीं बनेंगे तो सजा खायेंगे। फिर पद भी कम हो जायेगा। बात तो बहुत सहज है। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है, इसलिए बेहद के बाप को और बेहद सुख के वर्से को याद करना है। जितना चाहिए याद करो, जितना याद करेंगे वैसा पद मिलेगा। आठ घाटा जरूर याद करना चाहिए। पुरुषार्थ करना है। यह भी जानते हैं कल्प पहले मुआफिक ही बच्चे पुरुषार्थ करते हैं। इसको साक्षी हो देखा जाता है-कौन कितना पुरुषार्थ करते हैं, मोस्ट बिलवेड बाप से वर्सा लेने। कल्प-कल्पान्तर वही लेने लिए अधिकारी बनेंगे। बाप ने राजयोग सिखाया है स्वर्ग के लिए। लौकिक बाप भी बच्चों की कितनी सम्भाल करते हैं! बेहद के बाप को भी कितनी सम्भाल करनी पड़ती है। माया बड़ा हैरान करती है, बीमार कर देती है। फिर बाबा आकर दवाई देते हैं। यह है संजीवनी बूटी। बाकी कोई पहाड़ की बूटी हनूमान नहीं ले आया। सिर्फ बाप और वर्से को याद करना है। बाप को याद करने बिगर वर्से को याद नहीं कर सकेंगे।

अभी सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। वाणी से परे जाना है। बाबा कहते हैं मैं सबको ले जाऊंगा इसलिए जितना हो सके बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इसको रूहानी यात्रा कहा जाता है। बाबा कहते हैं-हे राही बच्चे, थक मत जाना। बाप और रचना को याद करना है। रचना का मालिक बनना है। यह तो अति सहज है। हमेशा शिवबाबा को याद करते रहो। मोटर चलाते भी बुद्धि का योग कहाँ रहना चाहिए? बाबा अपना मिसाल बताते हैं-हम नारायण की पूजा करने बैठता था तो बुद्धि और तरफ चली जाती थी। फिर अपने को चमाट मारता था। तो अभी भी बुद्धि दौड़ती है। पुरुषार्थ करते-करते उनकी याद में शरीर छोड़ना है।

बाप घड़ी घड़ी कहते हैं - बच्चे, देही- अभिमानी बनो, उठते-बैठते मुझ बाप को याद करो। समझो, हम श्रीमत पर चल रहे हैं। मैं आत्मा खा रही हूँ बाबा की याद में। याद से विकर्म विनाश होंगे। मंजिल है बड़ी भारी। योग कोई मासी का घर नहीं है।

तुम बच्चों को अब धीरज मिलता है - बच्चे, अब सतयुग आ रहा है। सुखधाम स्थापन करने में समय तो लगता है। फट से तो दु:खधान विनाश हो सुखधाम स्थापन नहीं हो जायेगा। तुमको भी देखो, कितना टाइम लगा है! पतित सृष्टि कितनी बड़ी है! तुम भी जब लायक बनो ना। तुम खुद ही कहेंगे हम अभी स्वर्ग में जाने के लिए पूरे लायक नहीं बने हैं। पूरे लायक बन जायें फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाए। परन्तु देह- अभिमान बहुतों में होने के कारण समझते हैं हम तो समूर्ण बन गये हैं। हमको श्रीमत की दरकार ही नहीं इसलिए याद नहीं करते। बाप की याद से ही तो श्रेष्ठ बनेंगे। कोई कह न सके कि हम निरन्तर बाप को याद करते हैं। अन्दर में कोई यह न समझे कि हम तो निरन्तर याद में रहते हैं। याद में रहते रहे तो बाकी क्या चाहिए। सारा दिन भी कोई याद में रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जाए। बड़ा मुश्किल है बाबा की याद में रहना। तुम पुरुषार्थ कर रहे हो - सुखधाम में राज्य- भाग्य लेने लिए। अपने को देखना है अगर हमारे में बहुत विकार हैं, कमियां हैं तो हम इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। निरन्तर याद की दौड़ी लगा नहीं सकेंगे। अपने को नहीं समझना है कि मैं तो समूर्ण हूँ। समूर्ण होते ही हैं शिवालय सतयुग में। सारा भारत शिवालय बन जाता है।

हम शिवबाबा के बच्चे हैं। वह स्वर्ग का रचयिता है। यह नशा रहना चाहिए। परन्तु माया ठहरने नहीं देती है। कोई तो कहते हैं बाप और वर्से को याद करना - यह कोई बड़ी बात नहीं। माया हमको क्या करेगी! हम तो जरूर वर्सा पायेंगे। कितनी सहज बात है! कोई को तीर लग जाए

तो बाप और वर्से को याद करते बहुत खुशी में रहे। जब तक खुशी नहीं आती तो बाबा कहेंगे पाई-पैसे के निश्चय वाले हैं। पक्के निश्चय वाले को खुशी का पारा बहुत चढ़ा रहता है। कोई राजा के पास सन्तान नहीं होती है तो कहते हैं किले के अन्दर जो पहले-पहले आयेगा उनको गोद में लेंगे फिर क्यू लग जाती है। पहला नम्बर जाने के लिए सवेरे उठकर जाए खड़े रहते हैं। नहीं तो समझते हैं फिर ठहरना पड़ेगा। तो यहाँ भी बाबा के गले का हार बनने के लिए क्यू है। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। बाप को याद करना, यह बुद्धि की दौड़ है। बाकी काम आदि भल करते रहो। आत्मा की दिल यार दे, हथ कार डे.... आशिक माशूक एक जगह बैठ थोड़ेही जाते हैं। काम-काज आदि सब कुछ करते बुद्धि उनके तरफ रहती है। तो यहाँ भी बुद्धि एक के साथ चाहिए, जो हमको स्वर्ग का मालिक बनाता है। जो टाइम मिलता है उसमें पुरुषार्थ करो। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। यह कोई कर्म सन्यास नहीं है। शरीर निर्वाह तो करना ही है। बाप अब ब्रह्मा तन में आकर कहते हैं मैं तुम्हारा बाप हूँ। हम तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तुम हमको अपना नहीं बनायेंगे? मेरे बने हो तो अब मेरे साथ योग लगाओ और मेरे बनकर फिर तुम पवित्र नहीं रहेंगे, नाम बदनाम करेंगे तो बहुत सजा खायेंगे। सतगुरू के निंदक स्वर्ग के द्वार जा नहीं सकेंगे।

बाबा कहते हैं तुम आत्माओं को इस शरीर से अलग कर मैं ले जाऊंगा फिर तुमको मित्र-सम्बन्धियों आदि की याद तो नहीं पड़ेगी? पिछाड़ी में एक बाप को ही याद करना है। पुनर्जन्म में तो फिर यहाँ आना नहीं है इसलिए देह सहित सबको भूलते जाओ। मुझ एक बाप को याद करो। जब तक तुम पवित्र नहीं बनेंगे तब तक तुमको ले नहीं जा सकता हूँ। अब मैं तुम आत्माओं को लेने आया हूँ परन्तु तुम्हारे ऊपर विकर्मों का बहुत बोझा है। आत्माओं को शुद्ध बनने के लिए निरन्तर देही- अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करना है। देह होते भी अपने को आत्मा समझ बाप के साथ योग लगाना है। जैसे सन्यासी लोग ब्रह्म अथवा तत्व से योग लगाते हैं, कहते हैं हम तत्व में लीन हो जायेंगे। तत्व से बुद्धियोग लग जाता है। ऐसे नहीं कि शरीर छोड़

देते हैं। समझते हैं तत्व से अथवा ब्रह्म से हम योग लगाते-लगाते ब्रह्म में लीन हो जायेंगे इसलिए हम उनको ब्रह्म ज्ञानी, तत्व ज्ञानी कहते हैं।

अब तुम आत्मायें सुन रही हो। समझती हो हमारा बाबा आया हुआ है, हमको योग से पवित्र बना रहे हैं। तो बाप, टीचर, सतगुरू को याद करना पड़े। यहाँ बच्चों को भासना आती है सम्मुख रहने से। हम तो आत्मा हैं, इस शरीर से पार्ट बजाते हैं। बाबा हमको लेने आये हैं। हम पुरुषार्थ करते हैं बाबा से योग लगायें। बाबा को याद करते-करते बाबा के पास चले जायेंगे। कोई सन्यासी जो बहुत उत्तम होते हैं तो वह भी ऐसे बैठे-बैठे शरीर छोड़ देते हैं। समझते हैं हम आत्मा जाकर ब्रह्म में लीन हो जायेंगी। सभी मोक्ष अथवा मुक्ति के लिए ही पुरुषार्थ करते हैं क्योंकि संसार में बहुत दुःख है, इसलिए मोक्ष अथवा मुक्ति चाहते हैं। उन्हों को यह मालूम नहीं रहता कि दुनिया का चक्र फिरना है। हमारा पार्ट जरूर अविनाशी होना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि जिन मिसल होनी चाहिए। जिन की कहानी कहते हैं ना, बोला - हमको काम नहीं देते तो खा जायेंगे। फिर उसको काम दिया - सीढ़ी चढ़ो और उतरो। तुमको भी बाप कहते हैं मेरे साथ बुद्धियोग लगाओ, नहीं तो माया जिन खा जायेगी। माया है जिन्न, योग लगाने नहीं देती है। अच्छे- अच्छे पहलवान बहादुर को भी माया कच्चा खा जाती है। तुम जानते हो - बाबा सिखलाने आया हुआ है। कहते हैं - बच्चे, अब सम्मुख आया हूँ, मुझे अब याद करो, नहीं तो माया जिन खा जायेगा। यह काम दिया जाता है तुम्हारे ही कल्याण के लिए। तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। अपने को आत्मा समझ शरीर का भान छोड़ देना है। सन्यासी माना देह सहित सब सन्यास। बाकी अपने को आत्मा समझना है। तुम जानते हो ज्ञान और योगबल से बाबा हमको सो देवी-देवता बनाते हैं। राजाई स्थापन हो रही है। बाबा कहते हैं अब मुझे याद करो और ट्रस्टी बनकर श्रीमत पर चलो। हर बात में राय लेते रहो। बच्चों आदि की शादी करानी है, मना थोड़ेही करते हैं। हर एक का हिसाब-किताब अलग है। जैसे-जैसे जो बच्चे हैं

उनका हिसाब देख राय दी जाती है। कहेंगे बच्चों को शादी करानी है भल करो। पैसा तुम्हारे पास है तो मकान भल बनाओ।

- मनुष्य तो मूंझे हुए हैं, ड़ामा अनुसार तुम बच्चों को ही बेहद के बाप से वर्सा लेना है। बाबा ने बहुत युक्तियां बताई हैं सिर्फ बाबा को याद करो, चार्ट रखो। भोजन बनाने समय भी याद करो। भोजन बनाने समय पति, बच्चा याद पड़ता है तो शिवबाबा क्यों नही पड़ सकता! यह तुम्हारा काम है। बाबा बुद्धि की सीढ़ी देते हैं फिर चढ़ो न चढ़ो, यह है तुम्हारा काम। जितना याद करेंगे उतनी सीढ़ी बढ़ते जायेंगे। नहीं तो इतना सुख नहीं मिलेगा।

- स्वदर्शन चक्रधारी बनो और शंख ध्वनि करते रहो। चलते-फिरते बेहद के बाप को याद करो और उसी सुख में रहो तो ऊँच पद मिल जायेगा। यही मेहनत है। योग से तुम्हें कौन सा डबल फायदा होता है? एक तो इस समय कोई विकर्म नहीं होता है, दूसरा पास्ट के किये हुए विकर्म विनाश हो जाते हैं।

- बाबा के पास बहुत आते हैं, उनकी बातचीत से ही पता पड़ जाता है कि यह पतित है। मुश्किल पवित्र रहते होंगे। शक पड़ता है फिर मुरली में समझाना पड़ता है। बहुत हैं जो छिपाते हैं। यात्रा पर विकार में जाना बड़ा खराब है। तुम विजय माला में पिरो नहीं सकेंगे। चाहते हो-हम सूर्यवंशी बनें तो यात्रा पर चलते कभी अपवित्र नहीं बनना है। यात्रा पर हूँ-यह बच्चे भूलते रहते हैं। कोई तो सारे दिन में एक घाटा, आधा घाटा भी याद नहीं करते। बाबा की याद में रहना बड़ा मुश्किल है। फिर रॉयल घराने में भी आकर दास-दासी पद पाते हैं। पुरुषार्थ कर मात-पिता के तख्तनशीन बन दिखाओ। नहीं तो बाप कहेंगे कपूत बच्चा है जो ठीक रीति से चलते

नहीं हैं। तुम ब्राह्मण यात्रा पर हो, अगर कुछ ऐसी चलन चल कुल को कलंक, लगाया तो बहुत सजा खायेंगे। तुमको तो अभी गर्भ महल में जाना है। तो कितनी मेहनत करनी चाहिए! भले तुम कहाँ भी बैठे हो, ट्रेन में हो अथवा कहाँ भी तुम यात्रा पर हो, याद में रहना है। कहते तो सब हैं-हम नारायण वा लक्ष्मी को वरेंगे। तो ऐसा बनकर दिखाओ। पद न पाया तो बाकी क्या किया। बाबा सावधान कर देते हैं। बाबा के पास आते हो तो बाबा अच्छी रीति हंसाते-बहलाते हैं। कोई तो मोह के कीड़े ऐसे हैं जैसे बन्दर-बन्दरियां। मित्र-सम्बन्धियों आदि से बुद्धियोग टूटता ही नहीं है। जो अपवित्र बनते हैं फिर लिखते भी हैं-बाबा, हमने हार खाई, काम के गटर में गिर पड़ा। चकनाचूर हो जाते हैं। बाबा सावधान करते रहते हैं-तुम यात्रा पर हो। काम विकार यहाँ नहीं होना चाहिए। नहीं तो बहुत दुःखी होंगे। बाप से वैकुण्ठ का वर्सा लेना है तो ऐसे भूलकर भी अपनी सत्यानाश नहीं कर देना। काम महाशत्रु है। आदि-मध्य-अन्त दुःख देने वाला है।

जैसे मनुष्य भक्ति बैठ करते हैं तो बुद्धि धन्धे तरफ, घर तरफ चली जाती है। यहाँ भी तुम्हारा ऐसे होगा। चलते-चलते तुमको बच्चा याद आ जायेगा। पति याद आजायेगा। बाप कहते हैं इन जंजीरों से बुद्धियोग हटाकर एक को याद करो। अगर अन्त समय और कोई स्मृति आई तो अन्तकाल जो पति सिमरे........ पिछाड़ी में सिवाए शिवबाबा के और कोई याद न आये, ऐसा अभ्यास डालना है। सवेरे उठ बाप को याद करो। बाबा हम आपके पास आये हैं – जरूर हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। बाप और वर्से को अर्थात् अल्क और बे को याद करना है। अल्क अल्लाह, वे बादशाही। आत्मा बिन्दी है। यहाँ मनुष्य टीका लगाते हैं तो कोई बिन्दी लगाते हैं, कोई लम्बा तिलक लगाते हैं, कोई क्राउन मुआफिक करते हैं, कोई छोटास्टॉ रलगा देते., कोई हीरा लगाते हैं। बाप कहते हैं तुम आत्मा हो। जानते हो आत्मा स्टार मिसल है। उस आत्मा में सारे ड़ामा का रिकार्ड भरा हुआ है। अब बाप फरमान करते हैं निरन्तरमुझ बाप को याद करो और सबसे-बुद्धियोग तोड़ी बाप कहते हैं तुम्हारे सिर पर जन्म-जन्मान्तर के पाप हैं।

वह याद के सिवाए भस्म नहीं होंगे। एवर हेल्दी बनने लिए बाप को याद करना है। आत्मा से बात करते हैं - बच्चे, अब इस शरीर को भूल अपने को अशरीरी समझ मुझे याद करो। यह शरीर तुमको पार्ट बजाने के लिए मिला है। सवेरे उठकर यह सिमरण करना चाहिए। साजन जो खाड़ी से पार ले जाते हैं, उनको याद करना है, बाकी और सब विषयसागर में डूबने वाले हैं। बाप है पारकरने वाला, उनको खिवैया, बागवान भी कहा जाता है। तुमको कांटे से फूल बनाकर स्वर्ग में भेज देते हैं। फिर स्वर्ग में तुम कभी दुःख नहीं देखेंगे इसलिए उनको कहते हैं दुःख हर्ता, सुखकर्ता। हर-हर महादेव कहते हैं ना। शिव को ही कहेंगे। यह है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी बाप। वही बाप 2। जन्म के लिए सुख का वर्सा देते हैं तो उसको याद करना चाहिए ना, इसमें चाहिए हिम्मत। याद करते-करते थक जाते हैं तो चलना ही बन्द कर देते हैं। संग ऐसा मिल जाता जो छोड़ देते हैं इसलिए कहा जाता है संग तारे, कुसंग बोरे। बाहर जाने से कुसंग मिलेगा, तो नशा उड़ जायेगा। कोई कहेंगे बह्माकुमारियों के पास तो जादू है, लगजायेगा। इनके पास नहीं जाना। परीक्षायें तो आयेंगी।

तुम आत्मा में खाद पड़ने से काले बन गये हो। अब खाद कैसे निकले? मेरे साथ योग लगाने से। उसी योग अग्नि से खाद भस्म हो जायेगी। यथार्थ बातें तुम समझते हो। बाप तुम्हें समझाते बहुत हैं परन्तु तुम भूल जाते हो क्योंकि योग ठीक नहीं है। नष्टोमोहा नहीं बने हो। बाप तो एवर प्योर अथवा पवित्रता का सागर है। तुम जानते हो हम आत्मा ही आइरन एजेड बनी हैं तो जेवर भी झूठा मिला है इसलिए पहले आत्मा की खाद को निकालना चाहिए। बाप को याद करो। इसको योग अग्नि कहा जाता है। शिवबाबा कहते हैं मैं तो एवर प्योर हूँ। मैं नहीं होता तो तुमको प्योर कौन बनाये? अपने को आत्मा पक्का निश्चय करो। हमारी आत्मा में 84 जन्मों में खाद पड़ी है। अभी हम बाबा के साथ योग लगाने से पवित्र हो जायेंगे। कोई विकार नहीं रहेगा। अगर कोई रह गया तो सजा खानी पड़ेगी। तो हम क्यों न निरन्तर पुरुषार्थ करें, मेहनत से

अवस्था ऐसी हो जो कभी भी माया का तूफान हिला न सके। अचल घर बन जाओ। आत्मा जो इसके अन्दर है, वह बाप की याद में परिपक्व अवस्था में आ जाए तो फिर कर्मातीत अवस्था आ जायेगी। कोई विकर्म नहीं होगा। आत्मा पवित्र हो जायेगी। मेहनत है ना। परमपिता परमात्मा का भी पार्ट है। हम उनको याद करते हैं। वह कैसे आकर पढ़ाते हैं। सो तो प्रैक्टिकल में होगा ना। भगवान् ने पढ़ाया था 5 हजार वर्ष पहले। बरोबर प्राचीन भारत का राजयोग सिखाया था। बच्चे जानते हैं यह वही प्राचीन राजयोग है। बाप कहते हैं मुझे याद करो इसमें ही मेहनत है। सारी याद की बात है। बाप फरमान करते हैं मुझे याद करो। परन्तु माया फरमान पर चलने नहीं देती। विघ्न डाल देती है। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम मेरे जैसे पवित्र बन जायेंगे और फिर नॉलेजकुल, ब्लिस्कुल बनते हो। तुम ब्लिस कर रहे हो। तुमको यहाँ तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते और बाप तुमको सारे विश्व की बादशाही देते हैं इसलिए सब बाप को याद करते हैं। वाणी से परे जाने लिए मनुष्य वानप्रस्थ लेते हैं अर्थात् मुक्तिधाम में जाना चाहते हैं। मुक्ति-जीवन्मुक्ति तो बाप के सिवाए कोई दे नहीं सकते। बाप द्वारा तुम पहले शूद्र से ब्राह्मण बनते हो। तकलीफ की कोई बात नहीं, उठते-बैठते चलते-फिरते अपना पुरुषार्थ करते रहो। तुम समझते हो याद करेंगे तो गोरे बन जायेंगे। तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जायेगी। पावन बाप आकर पावन होने की युक्तियां बतलाते हैं। मोस्ट बिलवेड बाप को याद करते रहना है। मनुष्य बीमार पड़ते हैं तो उनको कहते हैं फलाने को याद करो। परन्तु ऐसे थोड़ेही वह याद ठहरेगी। इसमें बड़ा अभ्यास चाहिए, तब ही अन्त मती सो गति होगी। तुमको बाप की याद में रहना है। कर्मातीत बनना ही है। योग से विकर्मों को भस्म करेंगे तो वह सजायें नहीं खायेंगे। योग में नहीं रहेंगे तो सजा खाकर मुक्तिधाम में जायेंगे, इसमें भी नम्बरवार हुआ। तो गोरा मुसाफिर एक बाबा है।

तुम कहते हो बाबा हम आपके हैं और कोई संबंध नहीं। बाप के बच्चे बने हो। यह कहते हैं मैं कोई गुरू-गोसाई नहीं हूँ। बोर्ड पर भी ब्रह्माकुमार-कुमारियों का नाम लिखा हुआ है तो जरूर

बाप भी होगा। लिखते हो हम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हैं। यह संबंध हुआ ना। माँ बाप का सम्बन्ध चाहिए। गाते भी हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे...... आत्मा को जैसे वह अविनाशी याद है। हम आपके जब बालक बनेंगे तब हम वर्सा लेंगे। अभी तुम जानते हो हम मात-पिता के बने हैं। हम शिवबाबा के बच्चे हैं तो जरूर बाप और वर्सा याद आता है। बाप के बने हो तो अब उनको याद करो। बाप कहते हैं मेरे को याद करने से तुम ऐसा (लक्ष्मी-नारायण) बनेंगे। कितनी सहज बात है। विशालबुद्धि होना चाहिए ना। बाप को ही याद करते रहना है। यह भी बुद्धि में है कि सृष्टि चक्र कैसे फिरता है? उसके आदि-मध्य- अन्त को जानने से ही तुम ऊंच ते ऊंच बनते हो। स्वर्ग के मालिक बनते हो। तुमको सदैव के लिए हर्षितमुख बनाता हूँ। कितनी सहज बात है। परन्तु फिर भी भूल जाते हो। क्या कारण है? माँ-बाप को कभी बच्चे भूलते नहीं हैं। बाप और वर्से को याद करो तो सदैव हर्षित रहेंगे। जब कोई दुःख होता है तो बाप को ही याद करते हैं। जरूर बाप ने सुख दिया है। कोई दुःख देते हैं तो कहते हैं हाय बाबा, हाय भगवान्। हर जन्म में हाय- हाय करते आये हो। अब तो तुम बच्चों को बिलकुल सहज समझाते हैं। भल तुम तन्दरुस्त न भी हो, कितने भी बीमार हो तो भी तुम सर्विस कर सकते हो। जैसे बीमारी में मनुष्य को कहते हैं राम-राम कहो। तुम भी बीमारी में फिर औरों को बोलो - शिवबाबा को याद करो। यह जरूर औरों को याद कराना पड़े। मरने की हालत में भी तुम यह नॉलेज औरों को दे सकते हो। परमात्मा के तुम बच्चे हो, उनको याद करो। शिवबाबा बेहद का बाप है, वही वर्सा देंगे। सर्विस का शौक होगा तो मरने समय भी किसको ज्ञान देंगे। ऐसे नहीं, हास्पिटल में पड़े रहें और मुख बन्द हो जाए। मुख से कुछ न कुछ निकलता रहे। कितनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए। बीमारी में भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। मित्र- सम्बन्धी आयेंगे उनको भी कहेंगे परमात्मा को याद करो। वही सबका रखवाला है इसलिए शिवबाबा को याद करो। वह एक है। वर्सा भी सबको एक से मिलता है।

बाप कहते हैं - बच्चे, टाइम वेस्ट मत करो। बाप को याद करते रहो। जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। विकर्म तो सबसे होते रहते हैं। ऐसे कोई मत समझे कि हमसे नहीं होता है। इतना अहंकार कोई मत रखे। विकर्म तो बहुत ही गुप्त भी बनाते हैं। उनसे बडी सम्भाल रखनी है। इस घड़ी से तुमको टाइम का तो पता लग ही जाता है। मनुष्यतो समझते कलियुग अभी बच्चा है। बिकुल घोर अन्धियारे में पड़े हुए हैं। अभी तुमको मुर्दों को जगाना है। सवेरे उठकर बाप को याद करना चाहिए। जिन सोया तिन खोया। यानी याद करने का जो समय है वह खोना नहीं है, नहीं तो मुर्दे के मुर्दे रह जायेंगे। कोई तो कली ही रह जाते हैं। बस, तूफान में अच्छी- अच्छी कलियां भी गिर जातीहैं। फूल भी गिरते हैं तो कलियां भी गिरती हैं। फिर जैसे कि कांटे के कांटे रह जाते हैं। दैवी घराने में तो आयेंगे परन्तु प्रजा में आयेंगे। यह तो बच्चे समझ सकते हैं जितना बाबा का मोस्ट सर्विसएल बच्चा होगा उतना वह बिलवेड भी मोस्ट होगा। यह तो कॉमन बात है। सपूत, आज्ञाकारी, इमानदार बच्चे माँ-बापको प्यारे लगते हैं। माया बिल्कुल ही बेइमानदार बना देती है। पता भी नहीं पड़ता है कि हम से बड़ी भारी गफलत होती है। बापकहते हैं जो करेंगे उनको पाना ही है। ऐसा विकर्म नहीं करना जो सजा खानी पड़े। कोई विकर्मों की यहाँ भी सजा पा लेते हैं। कर्मभोग है। गर्भजेल में भी कर्मभोग है। उनसे बड़ा खबरदारी से छूटना है, माया बड़ी शैतान है इसलिए बिलवेड मोस्ट बाप को तो हर वक्त याद करते रहना चाहिए।

तुम जानते हो बाबा हमको राजयोग सिखला रहे हैं परन्तु घर में रहते हुए फिर भी भूल जाते हैं। यह ऐसी विचित्र बात है जो साथ रहते भी फिर भूल जाते हैं। इतना लँव रिगार्ड नहीं रहता। सुई को कट लगी हुई होगी तो वह चुम्बक को खींच नहीं सकती। योग और ज्ञान भी हो तब कट निकल सके और परमात्मा की आशीर्वाद भी चाहिए ना। माया की जंक लगी हुई है, कोई चीज को जंक लगी हुई है तो घासलेट में डालते हैं। तुम्हारी भी योग से जंक निकलती है। आत्मा प्योर हो जाती है। तो बाप समझाते हैं - बच्चे, फूल बनकर दिखाओ। वह समय भी

जल्दी आयेगा जो तुम किसके सामने बैठेंगे और झट उसको साक्षात्कार होने लगेंगे। ब्रह्मा और विष्णु का साक्षात्कार तो बहुतों को होता है। डायरेक्शान देते हैं - जाओ बीके. के पास। ब्रह्मा भी बैठे हैं, ब्रह्माकुमार-कुमारियां भी बैठे हैं। आगे चलकर बहुतों को साक्षात्कार होगा। बाबा साक्षात्कार कराते हैं तुम वहाँ जाओ, मैं वहाँ राजयोग सिखला रहा हूँ। इससे तुम यह पद पा सकते हो। है भी सेकेण्ड की बात। मनमनाभव। मुझे याद करो तो तुम सूर्यवंशी बन जायेंगे। वहाँ हैं दैवी वंशी और यहाँ हैं असुर वंशी। कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। मकान का फाउण्डेशन पक्का करने के लिए कितनी मेहनत करते हैं। बाप भी कहते हैं जितना हो सके मुझे याद करो। शिवपुरी और विष्णुपुरी को याद करो। यह अन्दर अपने साथ बातें करनी चाहिए। पहले अपने से चिन्तनकर फिर बातकरनी होती है - समझानेके लिए। तुमको भी समझाना है। अब बच्चे प्रदर्शनी में कितनी मेहनत करते हैं। है सारी समझाने की बात। सिर्फ स्लोगन से तो कोई समझन सके। बाप बैठ समझातेहैं देवी-देवताओं को राज्य कैसे मिला? किसने राजयोग सिखाया? भगवानुवाच – मैं राजयोग सिखलाताहूँ कहता हूँ मुझे याद करो। शिवपुरी और विष्णुपुरी को याद करो। अब प्रदर्शनी में भी बच्चों को अच्छी रीति समझाना है। मेडीटेशन पर भी समझाना है। हम भी मेडीटेशन करते हैं। चलते-फिरते बाप को याद करते बाप से बातें करते रहते हैं। जैसे कोई प्रोग्राम से कहाँ जाना होता है तो बुद्धिमें रहता है आज फलाने के पास हमको जाना है। प्रोग्राम मिला और बुद्धि दौड़ती रहेगी। समय नजदीक आयेगा, समझेंगे अभी हमको जानाहै। तुमको भी अन्दर में यह रहना चाहिए - बस, अभी हमको जाना है बाबा के पास। यह पुरानी खाल छोड़नी है। शिवपुरी में जाना है। इस रावणपुरी को छोड़ना है। यह बड़ी छी-छी गन्दी दुनिया है। अभी हमसंगम पर बैठे हैं। यह आइरनएजड शरीर है। बाबा कहते हैं मुझे याद करतेर हो तो तुम आत्माओं को शिवपुरी ले जाऊंगा। कृष्ण तो नहीं ले जायेगा। तो यह समझाने की बात है। अब बाप कहते हैं मुझ शिवबाबा को याद करो। अभी तुम राजयोग सीख रहे हो। तुमको शिवपुरी में आना है, फिर विष्णुपुरी में चले आयेंगे।

बाप कहते हैं बच्चे खाना और सोना, यह कोई लाइफ नहीं । जबकि तुम बच्चों को यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान मिल रहा है, झोली भर रही है । फिर सोना और खाना यह तो गँवाना है । सवेरे उठने की बड़ी महिमा है । भक्ति मार्ग में भी, ज्ञान मार्ग में भी, क्योंकि सवेरे के समय बहुत शान्ति रहती है । आत्मायें सब अपने स्वधर्म में रहती हैं । अशरीरी होकर विश्राम पाती हैं । उस समय याद बहुत रहती है । दिन में तो माया का धम चक्र रहता है, यह एक ही टाइम अच्छा है । अभी हम कौड़ी से हीरे जैसा बन रहे हैं । बच्चों को बाप कहते हैं तुम हमारे बच्चे हो, हम तुम्हारे बच्चे हैं । बाप बच्चा बनता है, यह भी समझने की बात है । बाप अपने बच्चों को वर्सा देते हैं । वैसे मैं सौदागर तो हूँ ही । तुम्हारा कौड़ी जैसा तन-मन यह सब वर्थ नाट ए पेनी है । वह पुराना तुम्हारा सब कुछ लेकर फिर तुमको दे देता हूँ कि ट्रस्टी होकर सम्भालो । तुम जन्म बाई जन्म गाते आये हो - कुर्बान जाऊंगी, बलिहार जाऊंगी । हमारा तो एक, दूसरा न कोई क्योंकि सजनियां तो सब हैं । तो एक ही साजन को याद करेंगी । देह सहित सब सम्बन्धों को भूलते- भूलते एक की ही इतनी याद रहे जो अन्त में न यह शरीर, न और कोई याद आये । इतनी प्रैक्टिस करनी है । सवेरे का समय बड़ा अच्छा है । तुम्हारी यह सच्ची-सच्ची यात्रा है । वह तो जन्म बाई जन्म यात्रायें करते आये लेकिन मुक्ति को तो पाया नहीं, तो झूठी यात्रा हुई ना । यह है रूहानी और सच्ची मुक्ति और जीवनमुक्ति की यात्रा । मनुष्य तीर्थों पर जाते हैं तो अमरनाथ, बद्रीनाथ याद रहते हैं ना । खास 4 धाम कहते हैं । तुमने कितने धाम किये होंगे! कितनी भक्ति की होगी! आधाकल्प करते आये हो । अब इन बातों को कोई भी जानते ही नहीं । बाप ही आकर लिबरेट करके फिर गाइड बन साथ ले जाते हैं । कितना कहरफुल गाइड है ।

आधाकल्प हम सुखी बन जाते हैं । यह तो बुद्धि में रहता है ना । परन्तु धन्धे आदि में जाने से भूल जाते हैं । सवेरे उठते नहीं हैं । जिन सोया तिन खोया । तुम जानते हो - बरोबर हमको हीरे जैसा जन्म मिला है । अब भी अगर नींद से सवेरे नहीं उठेंगे तो समझेंगे यह बख्तावर नहीं है ।

सुबह को उठकर मोस्ट बिलवेड बाप को, साजन को याद नहीं करते हैं। आधाकल्प से साजन बिछुड़ा है और बाप को तुम सारा कल्प भूल जाते हो फिर भक्ति मार्ग में तुम साजन के रूप में वा बाप के रूप में याद करते हो। सजनी साजन को भी याद करती है। उनको फिर बाप भी कहा जाता है। अभी बाप सम्मुख है तो उनकी श्रीमत पर चलना पड़े। बहुत अच्छे- अच्छे बच्चे हैं जो यह नहीं जानते कि हम किसकी मत पर चलते हैं, कौन डायरेक्शन देते हैं? बाबा को तो याद नहीं करते। सवेरे उठते नहीं, याद नहीं करते तो विकर्म भी विनाश नहीं होते। बाबा बतलाते हैं इतनी मेहनत करता हूँ तो भी कर्मभोग चलता रहता है क्योंकि एक जन्म की तो बातनहीं है ना। अनेक जन्मों का हिसाब-किताब है।

- बाप की याद में रहो। आत्मा का स्वधर्म है शान्त। अटेन्तन प्लीज, सावधान- अपने बाप को याद करो। बाप को याद करने से वर्सा जरूर याद आयेगा। ऐसे हो नहीं सकता वर्सा याद न आये। बाप और वर्से को याद करने से तुम जीवनमुक्त बनते हो। कितनी सहज बात है। नाम ही रखा है- ' सहज राजयोग। ' योग कहने से ही मूँझते हैं। यह तो बाप को याद करना है ना। बाबा कहते हैं- अरे बच्चे, तुम बाप को भूल जाते हो! जिस बाप से हीरे जैसा जन्म मिला है, तुम उनको भूल जाते हो! लौकिक बाप को कब भूलते हो? बाबा को भूला तो वर्सा गुम। अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। आत्म- अभिमानी बदले देह- अभिमानी बनने से धोखा खाते हैं।

- हर एक का कर्मबंधन अपना- अपना है। कर्मातीत अवस्था को पाने के लिए अन्त तक पुरुषार्थ करना पड़ता है। कर्मातीत अवस्था अभी आई नहीं है। अजुन बहुत पुरुषार्थ करना है। कर्मातीत अवस्था वह जिसमें शरीर को भी कोई दु :ख न हो। पुराने शरीर को तो अन्त तक दु :ख होता ही है। ऐसे नहीं कि सब सम्पूर्ण हो चुके हैं। कर्मभोग चुक्तु करना है। कर्मातीत अवस्था जब

तक हो तब तक माया के तूफान, कर्मों के हिसाब-किताब की भोगना चली आयेगी। उसका फिक्र नहीं करना है। बाप को याद करना है। बाप कहते हैं देही- अभिमानी भव। यह अक्षर अभी के ही हैं जो गाये जाते हैं। मनुष्य तो जानते नहीं-इसका अर्थ क्या है? पुरुषार्थ करना है- मैं आत्मा हूँ, बाप को याद करती हूँ। सर्वव्यापी कहने से हम किसको याद करें? बाप ने समझाया है शान्ति के लिए कहाँ जाना नहीं है। कर्म तो करना ही है। अशरीरी होकर रहना है। हम आत्मा हैं, यह आरगन्स हैं। आत्मा का तो स्वधर्म है ही शान्त। हम बाजा नहीं बजाते। वह सन्यासी आदि तो हठयोग करते हैं, प्राणायाम चढ़ाते हैं।

बहुत-बहुत मीठे बनो। सच्चे साहेब से सच्चा होकर रहना है। सच्चे साहेब को याद भी करना है। अगर सचखण्ड का मालिक बनना है तो सच्चे बाबा को निरन्तर याद करने का अभ्यास करो। सिमर-सिमर सुख पाओ। ऐसा और कोई नहीं जिसके कलह-कलेष मिटे हुए हों। कुछ न कुछ बीमारी आदि होती रहती हैं। वह पानी की गंगा किसको पावन नहीं कर सकती। यह बाप की याद पावन बनाती है। ऐसे नहीं कि नेष्ठा में बैठें। हों, बैठना भी अच्छा है। एक- दो के बल से बैठ जायेंगे। परन्तु बाबा कहते हैं-कैसे भी बैठो, याद तो चलते-फिरते कार्य करते करना है। उस स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं तो स्ट्रडेन्ट को टीचर को जरूर याद करना पड़े। बच्चों को बुद्धि में यह बैठ जाना चाहिए कि हमको बाबा पढ़ाते है। ऐसा कोई नहीं जो बाप-टीचर को याद नहीं करे। तुम तो जानते हो अब वापिस जाना है तो सतगुरू को भी याद करना पड़े।

बाप समझाते हैं - बच्चे, इस रूहानी यात्रा में तुम्हें निरन्तर बुद्धियोग लगाना है। यह बहुत सहज है। भक्ति मार्ग में भी सवेरे उठते हैं। ज्ञान मार्ग में भी सवेरे उठ बाप को याद करना है और कोई किताब आदि पढ़ना नहीं है। सिर्फ बाप कहते हैं मुझे याद करो क्योंकि अब छोटे-बड़े सबका मौत सामने खड़ा है। मरते समय कहते हैं - भगवान् को सिमरो। अन्तकाल अगर भगवान् को

नहीं सिमरेंगे तो स्वर्ग में जा नहीं सकेंगे। तो बाप भी कहते हैं - मनमनाभव। इस देह को भी याद नहीं करना है। हम आत्मा एक्टर हैं, शिववादा की सन्तान हैं। लगातार याद में रहना है। वैसे छोटे बच्चों को तो नहीं कहेंगे कि भगवान् को याद करो। यहाँ सबको कहना पड़ता है क्योंकि सबको बाप के पास जाना है, बाप से ही बुद्धियोग लगाना है। कोई से लड़ाई-झगड़ा नहीं करना है। यह बड़ा नुकसानकारक है। कोई कुछ कहे, सुना- अनसुना कर देना है, सामना नहीं करना चाहिए, जो लड़ाई हो जाए।

निरन्तर बाप को याद करना है, नहीं तो विकर्म विनाश नहीं होगे। बड़ी मंजिल है। मासी का घर थोड़ेही है। ऐसे नहीं, भोजन पर पहले याद किया फिर खलास, ऐसे ही भोजन खाने लग पड़े। नहीं, सारा समय याद करना पड़े। मेहनत है। ऐसे थोड़ेही ऊंच पद मिल सकता है। तब तो देखो करोड़ों में 8 रत्न पास होते हैं। मंजिल बड़ी भारी है। विश्व का मालिक बनना है, यह तो किसकी बुद्धि में नहीं होगा। इनकी बुद्धि में भी नहीं था। अब ख्याल किया जाता है, 84 जन्म किसको मिलते हैं? जरूर जो पहले आते हैं वह हैं लक्ष्मी- नारायण। यह हैं सब विचार सागर मंथन करने की बातें। बाप समझाते हैं - हथ कार डे, दिल याद डे। भल धन्धे आदि में रहो, परन्तु निरन्तर बाप को याद करते रहो। यह है यात्रा। तीर्थों पर जाकर फिर लौटना नहीं है। तीर्थ बहुत मनुष्य करते हैं, अब तो वहाँ पर भी गंद हो गया है। नहीं तो तीर्थ स्थान पर कभी वेश्यालय नहीं होते। अभी कितना भ्रष्टाचार है। एक धनी तो कोई है नहीं। झट गाली देने लग पड़ते। आज चीफ मिनिस्टर है, कल उनको भी उतार देते। माया के मुरीद बन जाते हैं। पैसे इकट्ठे करेंगे, मकान बनायेंगे, धन के पिछाड़ी चोरी करने लग पड़ते हैं। तुम अब स्वर्ग में जाने की तैयारी कर रहे हो। वही याद आना चाहिए। धारणा भी होनी चाहिए। मुरली लिखकर फिर रिवाइज करनी चाहिए। फुर्सत तो बहुत रहती है। रात को तो बहुत फुर्सत है। रात को जागो तो आदत पड़ जायेगी। जो सच्चा-सच्चा बाबा को याद करने वाला होगा उनकी आंख आपे ही

खुल जायेगी। बाबा अनुभव बताते हैं। कैसे रात को आख खुल जाती है। अभी तो नींद के लिए और ही पुरुषार्थ करते हैं। हाँ, स्थूल काम करने से भी शरीर को थकावट होती है। बाबा का रथ भी देखो कितना पुराना है। विचार करो, बाबा पतित दुनिया में आकर कितनी मेहनत करते हैं! भक्ति मार्ग में भी मेहनत करते थे, अभी भी मेहनत करते हैं।

सबको अपना- अपना कर्मबन्धन है, तो दवाई भी अपनी- अपनी है। कोई कमाई लिए पूछते हैं तो बाबा उनका पोतामेल देख राय देते हैं। कई हैं जिनका धन्धा ऐसा है कि पाप करने बिगर शरीर निर्वाह चल नहीं सकता। आजकल समय ही ऐसा हो गया है। कोई पास बहुत पैसे हैं तो पाप करने की दरकार नहीं है। बाबा कहते हैं शान्त में बैठ योग की कमाई करो परन्तु काम करने से पहले राय लेनी होती है। ऐसे नहीं काम करने के बाद बोले इस बात में फंस गया हूँ - क्या करूं?? बाबा समझाते रहते हैं, अगर धन बहुत है तो शान्त में बैठ बाबा से वर्सा लो, धन्धेधोरी का झंझट छोड़ो। कदम-कदम पर श्रीमत पर चलना जरूरी है। आपस में बहुत मीठा रहना है। नहीं तो बापदादा का नाम बदनाम करेंगे। बापदादा वा सतगुरू की निंदा कराने वाला ऊंच ठौर नहीं पायेगा। अपने हाथ में लॉ नहीं उठाना चाहिए। नहीं तो सब कहेंगे ईश्वरीय कुल के भी ऐसे बच्चे होते हैं क्या? बाप कहते हैं किसको दु :ख मत दो। सवेरे उठ बाबा को याद करो। बाबा आप कितने मीठे हो, आप हमको राजाओं का राजा स्वर्ग का मालिक बनाते हो। हम आपकी श्रीमत पर जरूर चलेंगे। हम आसुरी मत पर नहीं चलेंगे। बाप को याद नहीं करते हैं तो बाप समझ जाते हैं इनके अजुन पुराने आसुरी संस्कार है। यह क्या स्वर्ग का राज्य भाग्य लेगे। अपनी चलन तो देखो। नहीं तो तुम बच्चों जैसा तकदीरवान दुनिया भर में कोई नहीं। बाप तो कहेंगे - सगे बच्चे बनो। ऐसी चलन दिखाओ जो बाप भी खुश हो।

ड़ामा के आदि-मध्य- अन्त, रचता और रचना का सारा समाचार तुमको सुनाते हैं। फिर भी कहते हैं अच्छा जास्ती नहीं तो दो अक्षर ही याद करो - मनमनाभव, मध्याजी भव। अपना चार्ट लिखना है, कितना समय हम योग में रहते हैं। ऐसे नहीं हर एक रेगुलर चार्ट लिखेंगे। नहीं, थक जाते है। वास्तव में क्या करना है? रोज अपना मुँह आइने में देखना है, तो पता पड़ेगा कि हम लक्ष्मी को वा सीता को वरने लायक है वा प्रजा में चले जायेंगे? पुरुषार्थ तीव्र कराने के लिए चार्ट लिखने को कहा जाता है और देख भी सकते हैं कि हमने कितना समय शिवबाबा को याद किया? सारी दिनचर्या सामने आ जाती है। जैसे छोटेपन से लेकर सारे आयु की जीवन याद रहती है ना! तो क्या एक दिन का याद नहीं पड़ेगा। देखना है हम बाबा को और चक्र को कितना समय याद करते हैं? ऐसी प्रैक्टिस करने से रूद्र माला मे पिरोने के लिए दौड़ी जल्द पहनेगे। यह है योग की यात्रा, जिसको और कोई जानते नहीं तो सिखा कैसे सकते। तुम जानते हो अब बाबा के पास लौटना है। बहुत हैं जो चार्ट लिख भी नहीं सकते। चलते- चलते थक पड़ते हैं। बाबा कहते हैं - बच्चे अपने पास नोट करो कि कितना समय मोस्ट बिलवेड बाबा को याद किया? जिस बाप की याद से ही वर्सा लेना है।

बाबा तो बहुत बिजी रहते हैं। कहते हैं कि मैं आया हूँ पतित दुनिया को पावन बनाने। तो मुझे कितने रूप धारण करने होते हैं। बहुतों की ज्योति जगाता हूँ। मेरे साथ योग लगाओ, यह पैट्रोल डालो तो बैटरी जग जायेगी। दीवा बुझ जाता है तो घड़ी-घड़ी घृत डालते हैं। बाबा कहते हैं अब पूरा योग लगाओ। यह तो जानते हो बाप इस ब्रह्मा के तन से हमको पढ़ाने आया है। भगवानुवाच, भगवान क्या कहते हैं? बच्चे, मुझे याद करो। मौत तुम्हारे सिर पर खड़ा है। छोटे-बड़े सबका मौत है। यह है मृत्युलोक। मैं अमरनाथ आया हूँ अमरकथा सुनाने। तुम पार्वतियाँ अथवा सीतायें हो। सब रावण की जेल में हो। शोक वाटिका में पड़ी हो। बाप आकर अशोक वाटिका में ले जाते हैं। वहाँ कोई शोक रहता नहीं। अभी तुम बच्चों को रॉग-

राइट सोचने की बुद्धि मिली है। राइट क्या है, रॉंग क्या है, पुण्य कैसे होता है, पाप कैसे होता है-यह सब तुम जानते हो। योग टूटा तो माया पाप करा देगी क्योंकि इस समय माया तमोप्रधान है इसलिए कदम-कदम पर सावधानी चाहिए। श्रीमत पर चलने में कोई नुकसान नहीं।

अब कृष्ण की आत्मा यहाँ है। अब कुछ समझो। बहुत बड़ी लॉटरी है। घोड़े दौड़ है। हमको दौड़ना है बुद्धियोग से। जितना हम दौड़ेंगे उतना जल्दी बाबा के पास पहुँचेंगे। विकर्म विनाश होंगे। बाबा ने बार-बार समझाया हैं-हम युद्ध के मैदान में खड़े हैं। मनुष्य कहेंगे हथियार आदि कहाँ हैं-जो सारी सृष्टि पर विजय पायेंगे? (बाबा ने एक्ट कर दिखाई) हम बुद्धियोग बल से मायाजीत-जगतजीत बन रहे हैं। हम नेष्ठा में बैठे हैं अर्थात् शिवबाबा की याद में हैं। बुद्धि वहाँ लटकी हुई है। योग लगाते-लगाते परिपक्व अवस्था को पाना है। कन्या भी पति को याद करती है ना। वह तो हैं देहधारी। परमात्मा तो अशरीरी है, उनको बुद्धि से ही याद कर सकते हैं। देह- अभिमान तोड़ देही- अभिमानी बनजायेंगे। बुद्धि में चक्र तो फिरता रहता है। हम अपने स्वर्गधाम जरूर पधारेंगे। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य, शूद्र वंशी बनेंगे। फिर बाबा आकर शूद्र से ब्राह्मण बनायेंगे। ऐसे-ऐसे अपने से बात करनी है। बच्चे लोग बगीचों में जाकर पढ़ते हैं। तुम भी एकान्त में बैठ शिवबाबा को याद करो। हमारा पुराना हिसाब-किताब चुक्यू होगा फिर हम राज्य करेंगे। अभी हम युद्ध के मैदान में है। फिर हम भारत पर अटल- अखण्ड सुख-शान्ति का राज्य करेंगे। वी आर एट वार........ हम सब लड़ाई के मैदान पर हैं। यह है सारी योगबल की बात। इनमें तकलीफ तो कोई नहीं।

बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। योगबल से ही तुम्हारी आत्मा पवित्र बनेगी। तुमसब सीतायें हो, आग से पार होती हो। या तो योगवल से पार होना है या तो आग मे

जलना पड़ेगा। देह सहित सब सम्बन्धों को त्याग एक मोस्ट बिलवेड बाप को याद करना है। परन्तु यह याद निरन्तर रहने में बड़ी मुश्किलात है। टाइम लगता है।

बाप के बने हो तो कदम-कदम श्रीमत पर चलना है। चुप रहना है और पढ़ना है, एक बाप को याद करना है। घड़ी-घड़ी इस बैज को देखते रहो तो बाप और वर्से की याद आयेगी। याद से ही तुम जैसे सारे विश्व को शान्ति का दान देते हो। हर एक बच्चे को अपनी प्रजा भी बनानी है, वारिस भी बनाने हैं। मुरली कोई भी मिस नहीं करनी चाहिए। बाबा बहुत प्यार से समझाते हैं - मीठे बच्चे अपने पर रहम करो, कोई अवज्ञा नहीं करो। बाप की दिल अन्दर बच्चों को सदा सुखी बनाने की कितनी फर्स्टक्लास आश रहती है कि बच्चे लायक बन स्वर्ग के मालिक बने। जो खुशबूदार फूल हैं वह खींचते है। जो जैसा है ऐसी सर्चलाइट लेने की कशिश करते हैं। खुशबूदार, गुणवान बच्चों को देख प्यार में खुशी में नयन गीले हो जाते हैं। कुछ तकलीफ होती है तो बाबा सर्चलाइट देते। बाबा समझाते हैं मीठे बच्चे, तुम्हें इस पुरानी दुनिया में कोई भी आशा नहीं रखनी है। अब तो एक ही श्रेष्ठ आश रखनी है कि हम तो चलें सुखधाम। कहाँ भी ठहरना नहीं है। देखना नहीं है। आगे बढ़ते जाना है। एक तरफ ही देखते रहो तब ही अचल-अडोल स्थिर अवस्था रहेगी।

मुरली सब बच्चों के पास जाती है। इनका पार्ट ही है पढ़ाने का। कई बच्चे ऐसे भी हैं जो माँ बाप से भी अच्छा पढ़ाते हैं। शिवबाबा की तो बात ही ऊंच ठहरी। परन्तु मम्मा बाबा से भी इस समय होशियार बच्चे हैं। भल सम्पूर्ण तो कोई बना नहीं है। कुछ न कुछ कांटे भी लगते हैं, माया का वार होता है। दीवे को तूफान लगते हैं जितना ज्ञान और योग में रहेंगे तो इस घृत से तुम्हारी ज्योति जगी रहेगी। कोई दीपक में घृत थोड़ा कम हो जाता है तो लाइट कम हो जाती है। कोई का दीवा बहुत अच्छा जलता रहता है। आत्मा रूपी दीवे को ही तूफान लगता है।

तूफान तो लगेंगे, बाबा कहते हैं नम्बरवन अनुभवी मैं हूँ। रुसतम से जरूर माया रुसतम होकर लड़ेगी। बाप समझाते हैं हे दीवे ऐसे-ऐसे तूफान आयेंगे, परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई पाप कर्म नहीं करना। कोई ने कुछ कहा तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल दिया, ऐसा अभ्यास करना पड़े। क्रोध भी मनुष्य की पूरी ही सत्यानाश कर देता है। यह भी बड़ी परीक्षा होती है। क्रोध का भूत आकर दरवाजा ठोकते हैं, देखें भौं- भौं करते हैं। अगर कोई भौं- भौं करने लग पड़ते हैं तो दीवा बुझ जाता है। माया सबकी परीक्षा लेती रहती है। समझा जाता है इनमें तो क्रोध था नहीं। अब फिर इनमें क्रोध आ गया है। बाबा के पास बहुत अच्छे- अच्छे बच्चे थे, माया का तूफान सहन नहीं कर सके तो गिर पड़े फिर कहा जाता है किसमत। हम परीक्षा में ठहर नहीं सकते। बच्चों को तो परीक्षा में बड़ा अडोल रहना है हनूमान मिसल। यह भी एक मिसाल है। बाकी कोई हनूमान था नहीं। तुम बच्चों के अन्दर खुशी के नगाड़े बजने चाहिए। सर्वशक्तिमान बाबा के साथ योग रखने से मदद आपेही मिलती रहती है। बाबा सब युक्ति सिखलाते हैं। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। काम का भूत तो बड़ा खराब है। शल कोई में काम का भूत फिर से प्रवेश न करे। उनको योगबल से निकाल देना है। योग से ही क्रोध का भूत भी निकलता है। घड़ी-घड़ी दरवाजा खटकाते हैं। कहाँ मार्जिन देखी और घुस पड़ते।

अब तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो भविष्य के लिए और कोई भी भविष्य के लिए पुरुषार्थ नहीं करते हैं। पुरुषार्थ में फिर माया भुला देती है फिर जैसे के वैसे बन जाते हैं। माया एकदम मुंह फेर देती है, इसलिए बहुत सम्भाल करनी है। जितना हो सके खुशी से बाबा को याद करना है। हम बाप से 2। जन्म सुख का फिर से वर्सा ले रहे हैं। बाप को याद करने से खुशी होगी। वह इन आखों से महल आदि देखते हैं तब खुशी होती है। तुम दिव्य दृष्टि से अथवा ज्ञान के तीसरे नेत्र से जानते हो कि हम बाप से सदा सुख का वर्मा लेते हैं। अगर बाप की मत पर चलेंगे तो। सावधान तो करते रहते हैं - बच्चे श्रीमत पर बहुत मीठे बनो, चुप रहो और बाप को याद करो। तुम बच्चों जैसा सौभाग्यशाली इस सृष्टि पर कोई नहीं है। तुम स्वर्ग का मालिक बनते हो।

वहाँ बड़ा सुख है। गाया हुआ भी है अतीन्द्रिय सुखमय जीवन गोप गोपियों से पूछो। कौन से गोप गोपियां? जैसे बाबा ने सुनाया यह है बड़ी लाटरी। बाप स्वर्ग का रचयिता है तो बाप और स्वर्ग को याद करना बहुत सहज है। विश्व का मालिक बनना कम बात थोड़ेही है।

श्रीमत मिलती ही इसलिए है कि आत्मा अच्छी हो जाए। अविनाशी बन जाए, जब तक योग नहीं तब तक कुछ सुधर नहीं सकते। जितना बाबा को याद करेंगे उतनी ताकत आयेगी और गुण धारण नहीं करेंगे तो माया कदम-कदम पर थपड़ मारेगी। प्रतिज्ञा करेंगे हम क्रोध नहीं करेंगे और 5 मिनट बाद क्रोध कर लेंगे। असली आदतें जन्म-जन्मान्तर की पड़ी हुई हैं तो उनको मिटाने में टाइम लगता है। इन भूतों को पूरा वश करना है। लोभ मोह यह फिर हैं उनके छोटे-छोटे बच्चे। विकारों के भूत भी नम्बरवार हैं। पहले है अशुद्ध अहंकार फिर काम क्रोध.... यह शिक्षा और कोई दे न सके। तो बच्चे देही- अभिमानी बनो। देही को याद करो।

तुम जितना अशरीरी, देही- अभिमानी बनेंगे और मीठे बाप को याद करेंगे उतना मीठा बनेंगे। देही- अभिमानी बन बाप और वर्से को याद करना है। यह एक मुख्य बात न भूलो। मुझे याद करेंगे तो मेरे जैसा मीठा बन जायेंगे। तो ऐसा बनाने वाले बाप को कितना याद करना चाहिए। बाबा मिठास का तो जैसे एक पहाड़ है। कहते हैं ना-सिमर- सिमर सुख पाओ। कोई सिमरणी नहीं सिमरनी है। माला नहीं फेरनी है। सिर्फ याद करना है। कोई को भी यह पता नहीं है कि यह माला किसकी याद में बनी हुई है। सिर्फ राम-राम करते रहते, माला फेरते रहते हैं। अभी तुम समझते हो राम शिव बाबा के हम बच्चे है इसलिए सिमरण करते हो। माला फेरना तो पुजारीपन का चिन्ह है। हम बाबा को बहुत याद करते हैं। याद से ही हम एवरहेल्दी, निरोगी बन जाते हैं। बाबा बार- बार कहते हैं अपने को अशरीरी समझ मुझे याद करो तो बेड़ा पार है।

- भक्ति मार्ग में कितना नियम होता है गीता सुनने का, वह पूरे नियम से सुनते हैं। मन्दिर में भी नियम पूर्वक जाते हैं। रोज पक्का नियम रखते हैं। तुम्हारा नियम तो बड़ा कड़ा है। एक घड़ी आधी घड़ी,....... फिर बढ़ाते रहना है। बाबा को याद करने से बुद्धि का ताला खुलेगा। विचार सागर मंथन कोई शिवबाबा नहीं करते हैं, उनको दरकार ही नहीं विचार सागर मंथन की। तुमको दरकार रहती है-किसको कैसे समझायें? तो कभी भी रूठना नहीं चाहिए। एक दो का रिगॉर्ड रखना चाहिए। कई बच्चों को महारथियों का रिगॉर्ड रखना आता नहीं।

- तुम चैतन्य में बैठे हो। शक्ति की शेर पर सवारी, महारथी की हाथी पर सवारी दिखाते हैं। गज को ग्राह ने हप किया। बाप की याद नहीं रहती है तो माया ग्राह हप कर लेता है। अच्छे- अच्छे महारथियों को भी माया ग्राह खा लेती है। इसमें बड़ी गम्भीरता चाहिए और अभिमान नहीं आना चाहिए-मैं यह करता हूँ। जितना हो सके हर बात में माताओं को आगे रखना है। माता का रिगॉर्ड रखना है।

- बाप बैठ समझाते हैं - तुम बापको क्यों भूलते हो? घड़ी-पड़ी मुझे याद करो। तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए, अब मैं तुमकोरा जयोग सिखलाने आया हूँ। फिर भी तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। देह- अभिमान छोड़ अपने को अशरीरी समझो।

- बाप ने समझाया है खुशी का पारा बढ़ेगा अमृतवेले। दिन को और रात को वायुमण्डल बहुत गन्दा रहता है, उस समय याद मुश्किल रहती है। अमृतवेले का समय गाया हुआ है। उसी समय सभी आत्मायें थक कर शरीर से डिटैच होकर सो जाती हैं। वह है शुभ महूर्त। यूं तो बाप की याद चलते फिरते दिल में रहनी चाहिए। बाकी हठ से एक जगह बैठ याद करेंगे तो ठहरेगी नहीं

। ऋषि मुनि भक्त लोग भी अमृतवेले उठ कीर्तन आदि करते हैं क्योंकि उस समय शुद्ध वायुमण्डल रहता है । तो कोई भी आये उनको समझाना है कि हम पढ़ रहे हैं । इसमें कोई अन्धश्रधा की तो बात ही नहीं । निराकार बाप टीचर के रूप से हमको सहज राजयोग सिखा रहे हैं । हमारा एम आबजेक्ट है मनुष्य से देवता बनना । बाप का परिचय देंगे तो बाप की याद रहेगी ।

- वहाँ माया होती नहीं जो कोई का मन भटके । यहाँ तो मन माया के वश है । मन सबसे जास्ती हैरान करने वाला है । योग नहीं है तो मन शैतान बन जाता है । देखना है हम बाबा से कितना धन लेकर और फिर दान करते हैं । मम्मा बाबा भी तो तुम्हारे जैसे मनुष्य ही हैं

- मनुष्य को रावण ने बिकुल असुर बनाया है । जब बिकुल दु :खधाम बन जाता है, तब फिर बाप आकर सुखधाम स्थापन करते हैं । तुम हो रूहानी सोशल वर्कर । तुमसे बाप सेवा कराते हैं कि-बच्चे, तुम इस भारत को स्वर्ग बनाओ । सारा मदार योग पर है । योग में कोई 7 रोज अच्छी रीति रहे तो कमाल हो जाये । ऐसे कोई योग में मुश्किल टिक सकेंगे । घर याद आयेगा । मन भागता रहेगा । सात रोज मशहूर हैं । गीता, भागवत, ग्रन्थ का पाठ भी 7 रोज रखते हैं । यह रस्म- रिवाज इस संगमयुग की है । सात रोज भट्ठी में रहना पड़े । किसकी भी याद न आवे । एक बाप के साथ योग लगा रहे । सात रोज इस एकरस अवस्था में रहना - यह बड़ा मुश्किल है । तुम बच्चों के यादगार भी यहाँ ही है । तुम अभी झाडू के नीचे बैठकर राजयोग की तपस्या करते हो । जगत अम्बा भी है तो तुम बच्चे भी हो ।

- यह किसको पता नहीं कि आत्मा का स्वधर्म शान्त है । (रानी के हार का मिसाल) यह आरगन्स हैं, चाहे कर्मेन्द्रियों से काम लो या न लो । हम आत्मा इस शरीर से अपने को डिटैच कर लेते हैं

। जैसे रात को आत्मा डिटैच हो जाती है ना। सब कुछ भूल जाती है। उसको फिर नींद कहेंगे। यहाँ सिर्फ शान्ति में तुम बैठते हो। आत्मा कहती है मैं कर्मेन्द्रियों से काम कर थक गयी हूँ। अच्छा अपने को शरीर से डिटैच कर लो। यह आरगन्स हैं कर्म करने के लिए। यह नॉलेज बाप ही देते हैं डिटैच कर बैठ जाओ, कुछ न बोलो। परन्तु ऐसे डिटैच हो कहाँ तक बैठेंगे? यह तो तुम जानते हो कर्म बिगर कोई रह न सके। डिटैच तो हुए परन्तु साथ मे फायदा भी चाहिए। सिर्फ डिटैच हो बैठने से इतना फायदा नहीं होगा। डिटैच हो फिर मुझे याद करो तो तुमको फायदा होगा, शक्ति मिलेगी। बाप अपने बच्चों को समझाते हैं-बच्चे, यह ज्ञान-इन्द्र-सभा है। यहाँ तुम सब रत्न बैठे हो। कोई पत्थर-बुद्धि बैठा होगा तो वायुमण्डल खराब कर देगा क्योंकि शिवबाबा की याद में रहेगा नहीं। उनको अपने मित्र- सम्बन्धी याद पड़ते रहेंगे। तुमको तो अपने बाप को निरन्तर याद करना है। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। यह बड़ी युनिवर्सिटी है।

अब बाबा समझाते हैं बुद्धि का योग बाप के साथ अन्त तक लगाते रहना है, इसमें अटकना नहीं है। स्त्री पुरुष होते हैं तो पहले एक दो को जानते भी नहीं हैं। फिर जब दोनों की सगाई होती है फिर कोई 60 - 70 वर्ष भी इकट्ठे रहते है, तो सारी जीवन जिस्म, जिस्म को याद करते रहते हैं। वह कहेगी यह मेरा पति है, वह कहेगा यह मेरी पत्नि है। अब तुम्हारी सगाई हुई है निराकार से। निराकार बाप ने ही आकर सगाई कराई है। कहते हैं कल्प पहले मुआफिक तुम बच्चों की अपने साथ सगाई कराता हूँ। मैं निराकार इस मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ। सभी कहेंगे यह मनुष्य सृष्टि गॉड फादर ने रची है। तो तुम्हारा बाप सदैव परमधाम में रहते है। अभी कहते हैं मुझे याद करो। मुसाफिरी लम्बी होने कारण बहुत बच्चे थक पड़ते हैं। बुद्धि का योग पूरा लगा नहीं सकते। माया की बहुत ठोकरें खाने से थक पड़ते हैं, मर भी पड़ते हैं। फिर हाथ छोड़ देते हैं। कल्प पहले भी ऐसे ही हुआ था। यहाँ तो जब तक जीना है, तब तक याद करना है। सी का पति मर जाता है तो भी याद करती रहती है। यह बाप वा पति ऐसे छोड्कर जाने

वाला तो नहीं है। कहते हैं मैं तुम सजनियों को साथ ले जाऊंगा। परन्तु इसमें समय लगता है, थकना नहीं है। पापों का बोझा सिर पर बहुत है, वो योग में रहने से ही उतरेगा। योग ऐसा हो जो अन्त में बाप वा साजन के सिवाए और कोई याद न पड़े। अगर और कुछ याद पड़ा तो व्यभिचारी हो गया, फिर पापों का दण्ड भोगना पडे इसलिए बाप कहते है परमधाम के राही थक मत जाना। तुम जानते हो मै ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहा हूँ और शंकर द्वारा सभी धर्मो का विनाश कराता हूँ।

बाबा कहते हैं 8 घाटा तो देही- अभिमानी बनो फिर भल शरीर निर्वाह अर्थ काम भी करो। रात को जागो तो बहुत अच्छी लगन रहेगी। कमाई है ना। हे नींद को जीतने वाले बच्चे, मुझ बाप को हर श्वास याद करो। विचार सागर मंथन करो। रात-दिन जितना योग में रहेगे उतना विकर्म विनाश होंगे और जितना ज्ञान सिमरण करेंगे उतनी कमाई होगी। बाकी तो सर्विस बहुत है। बाबा से पूछेंगे तो बाबा कहेंगे बैठे रहो, आराम करो, इसमें पूछने की दरकार नहीं है। बाबा ने लोक-लाज का कुछ ख्याल किया क्या? अरे बादशाही मिलती है तो इनको मारो ठोकर। बाकी हाँ, हर एक का अपना- अपना पार्ट है। हर एक का कर्मबन्धन अलग- अलग है। पैसे हैं तो अलौकिक सर्विस में पैसे को सफल करो।

तुमको भगवान पढ़ा रहे हैं! कितना ध्यान देना चाहिए! यह बड़ी वन्डरफुल पढ़ाई है। बूढ़े, बच्चे, जवान सब पढ़ते हैं। बीमार भी पढ़ सकते हैं। अगर बाप और वर्से को याद न किया तो माया थपड़ मार देगी। ब्लड से लिख देना चाहिए-मैं रात-दिन बाबा को याद करूंगा। शिवबाबा का हाथ पूरा पकड़ेगा। जो बाबा कहेगा सो करूंगा। शिवबाबा कहते हैं बच्चों की सम्भाल करो। जो बचे उनसे दो मुट्ठी शिवबाबा की सर्विस में लगा दो फिर उनका एवजा तुमको इतना मिलेगा जितना साहूकार का लाख देने से बनेगा। प्रत्यक्षफल मिल जाता है।

कदम-कदम पर राय पूछना है। सुप्रीम पण्डा तो बैठा है ना। बहुत बच्चे यह बात भूल जाते हैं क्योंकि योग में नहीं रहते हैं। योग अथवा याद को ही यात्रा कहा जाता है। याद नहीं करते तो समझें हम रेस्ट ले रहे हैं। यात्रा पर जाकर कोई रेस्ट लेते हैं। तुम भी अगर रेस्ट लेते हो, याद नहीं करते हो तो विकर्म भी विनाश नहीं होंगे और आगे भी नहीं बढेगे। याद नहीं करते तो नजदीक नहीं जाते। आत्मा थक जाती है। बाप को भूल जाती है। बाप कहते हैं तुम यात्रा पर चल रहे हो। रात को तो तुम रेस्ट लेते ही हो। ऐसे नहीं कि रात को तुम नींद में हो तो यात्रा पर हो। नहीं, वह रेस्ट है। जब जागते हो तब यात्रा पर हो। नींद में कोई विकर्म विनाश नहीं होंगे। बाकी हों, दूसरे कोई विकर्म होते नहीं हैं। तो बाप सभी बातें समझाते हैं परन्तु कोई अमल में भी जब लाये। चलते चलो, तुम्हारे सिर पर जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा बहुत है। उनको विनाश करने का उपाय एक ही है - बाप को याद करना। नहीं तो पद भ्रष्ट हो पड़ेंगे। माला बनी हुई है ना। 9 रत्नों का भी गायन है। यह कहाँ से आये, सो मनुष्य नहीं जानते हैं। 8 रत्न हैं जो रुद्र की माला बनते हैं। तो पुरुषार्थ अच्छा करना चाहिए। स्टूडेरस अच्छा पढ़ते हैं तो रजिस्टर से माँ-बापको भी पता लगता है। यहाँ तो बाप ही टीचर भी हैं तो वही जाने। तुम पढ़ते ही हो बाप के पास। रजिस्टर का भी उनको पता पड़ता है। तुम भी अपने रजिस्टर को समझ सकते हो - कहाँ तक हमारे में गुण हैं, मैं औरों को कहाँ तक आप समान बनाता हूँ? इतनी ताकत है जो कोई सामने देखे उनको शरीर भुला दें? कहा जाता है हिम्मते मर्दा मददे खुदा। बाप बहुत मदद देते हैं। तुम भी मदद देते हो योग की। बाप को चाहिए ही पवित्रता की मदद। सारी पतित दुनिया को पावन बनाना है योगबल से। जितना-जितना जो योग की मदद देंगे उतना बाबा खुश होंगे। यह बाबा के लिए मदद है वा अपने लिए? तुम जितना पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। जितना याद करेंगे उतना मुझे पवित्रता की मदद करेंगे। मैं आया हूँ पतित को पावन बनाने, पावन दुनिया के लिए। पतित और पावन यहाँ बनते हैं। वह तो है ही निराकारी दुनिया। गाते

भी हैं पतित-पावन आओ। समझते नहीं कि पावन दुनिया किसको कहा जाता है। सीता को रावण की जेल से, दु :ख से छुड़ाया तो फिर सुख चाहिए।

यहाँ सभी बैठे हैं समझते हैं कि हम आत्मायें हैं, बाप बैठा है। आत्म अभिमानी हो बैठना इसको कहा जाता है। सभी ऐसे नहीं बैठे हैं कि हम आत्मा हैं बाबा के सामने बैठे हैं। अब बाबा ने याद दिलाया है तो स्मृति आयेगी अटेंशन देंगे। ऐसे बहुत हैं जिनकी बुद्धि बाहर भागती है। यहाँ बैठे भी जैसे कि कान बन्द हैं। बुद्धि बाहर में कहाँ न कहाँ दौड़ती रहती है। बच्चे जो बाप की याद में बैठे हैं वे कमाई कर रहे हैं। बहुतों का बुद्धि योग बाहर मेँ रहता है, वह जैसे कि यात्रा मे नही हैं। टाइम वेस्ट होता है। बाप को देखने से भी बाबा याद पड़ेगा। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तौ है ही। कोई कोई को पक्की आदत पड़ जाती है। हम आत्मा हैं शरीर नहीं हैं। बाप नॉलेजफुल है तो बच्चों को भी नॉलेज आ जाती है। अभी वापिस जाना है। चक्र पूरा होता है अभी पुरुषार्थ करना है।

जानते हो हम देवता स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं। सिर्फ देवता भी नहीं। हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। यह अवस्था स्थाई तब रहेगी जब कर्मातीत अवस्था होगी। ड्रामा प्लैन अनुसार होश है जरूर। तुम समझते हो हम ईश्वरीय परिवार में हैं। स्वर्ग की बादशाही मिलनी है जरूर। जो जास्ती सर्विस करते हैं, बहुतों का कल्याण करते हैं तो जरूर ऊंच पद मिलेगा। बाबा ने समझाया है यह योग की बैठक यहाँ हो सकती है। बाहर सेंटर पर ऐसे नहीं हो सकती है। चार बजे आना, नेष्टा में बैठना, वहाँ कैसे हो सकता है। नहीं। सेंटर में रहने वाले बल बैठे। बाहर वाले को भूले चुके भी कहना नहीं है। समय ऐसा नहीं है। यह यहाँ ठीक है। घर में ही बैठे हैं। वहाँ तो बाहर से आना पड़ता है। यह सिर्फ यहाँ के लिये है। बुद्धि में ज्ञान धारण होना चाहिए

। हम आत्मा हैं। उनका यह अकाल तख्त है। टेव पड़ जानी चाहिए। हम भाई- भाई हैं, भाई से हम बात करते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जायें।

बाप की श्रीमत पर तुमको पूरा चलना है। जो खुद याद करते हैं, औरों को याद कराते हैं, वह जैसे बाबा के मददगार हैं। बाप और वर्से को याद करना है। बच्चों को समझाते रहते हैं - तुम्हारे अब 84 जन्म पूरे हुए हैं। बाकी थोड़ा टाइम है। नाटक में एक्टर समझते हैं - अभी बाकी आधा घण्टा है फिर हम घर जायेंगे। टाइम देखते रहते है। तुम्हारी तो बेहद की बहुत बड़ी घड़ी है। समझाया है कि अब घर चलना है। बाप को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और कोई शाखों में ऐसा सहज योग है नहीं। वह तो बहुत हठयोग करते हैं, बहुत मेहनत करते हैं, जो तुम मातायें कर न सको। तुमको हठयोगियों के मुआफिक आसन नहीं लगाना है। हाँ सभा में ठीक होकर बैठना है। तुम्हारा राजयोग है - टांग पर टांग चढ़ाकर बैठना। ऐसे राजयोग में बैठने से नशा बढ़ेगा। हठयोग में दोनों टांग चढ़ाते हैं। बाबा तुमको तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ थोड़ा फर्क रखना चाहिए। कामन बैठने में और योग में बैठने में। तुम राजयोग सीख रहे हो। तो ऐसे बैठना चाहिए जो मनुष्य समझें यह राजयोग में बैठे हैं। यह हमारा राजाई का ढंग है। तुम बेहद के बाप द्वारा राजाओं का राजा बन रहे हो। ऐसे बाप को घड़ी-घड़ी याद करना है। सतयुग में बाप को याद नहीं किया जाता है। अपने को किया जाता है। कलियुग में न बाप को जानते, न अपने को जानते हैं। सिर्फ बाप को पुकारते हैं। अभी तुम अच्छी रीति जान गये हो।

बच्चों प्रति शिवबाबा का फरमान है। कहते हैं अशरीरी भव। बच्चे, स्वधर्म मे टिक जाओ। मनमनाभव, मामेकम् याद करो। तुम पर फिर से माया का परछाया पड़ गया है। अब मैं आया हूँ माया पर जीत पहनाने के लिए इसलिए मनमनाभव क्योंकि तुमको वापिस जाना है मेरे परमधाम में। अगर कृष्ण होता तो कहते - मध्याजीत भव। कृष्ण को कृष्णपुरी में याद करो।

ज्ञान का दाता कोई कृष्ण नहीं है। वह तो है शिव। शिव की ही पूजा होती है, उनको परमात्मा कहा जाता है। तो हम आत्माओं को वहाँ जाना है, इसलिए बाबा ड्रिल सिखलाते हैँ। यह है नम्बरवन ड्रिल - मनमनाभव, अशरीरी भव। तुम सब ब्राह्मण उनको याद करेंगे, अगर कोई शूद्र यहाँ और कोई ख्यालात में बैठा होगा तो वायुमण्डल को खराब कर देगा। उस एक को जब सभी याद करेंगे तो सन्नाटा छा जायेगा। जैसे कोई मरता है तो सन्नाटा हो जाता है। आत्मा के अशरीरी होने का प्रभाव पड़ता है। तो अब बाबा कहते हैं - तुम सब आत्माओं को वापिस ले जाऊंगा। काल तो एक आत्मा को ले जाता है। मैं तो कालों का काल हूँ। मैं सबको लेने आया हूँ। और मैं आता हूँ साधारण ब्रह्मा तन में। मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप चैतन्य हूँ। मैने ही गीता सुनाई थी।

- बाबा ने समझाया है कि कोई-कोई बच्चे हैं जिन्हों को पुराने सम्बन्धी भी याद आते हैं। उस दुनिया के सुखों की आश हुई और यह मरा। फिर उसका पैर यहाँ ठहर न सके। माया बहुत लालच देती है। एक कहावत है 'भगवान को याद करो नहीं तो बाज आ जायेगा' यह माया भी बाज मिसल वार करती है। अब जबकि बाप आये हैं तो अभी भी पुरुषार्थ कर ऊँच पद नहीं पाया तो कल्प-कल्पान्तर भी नहीं पायेंगे। यहाँ बाप के पास तो तुमको कोई दुःख नहीं है, तो पुरानी दु :ख की दुनिया को भूलना चाहिए ना। सारे दिन का पोतामेल देखना चाहिए। कितना समय बाप को याद किया? किसको जीयदान दिया? बाप ने तुमको भी जीयदान दिया है ना।

- हरेक अपने अन्दर में देखे कोई खामी तो नही है? माया बहुत कड़ी है। उनको कैसे भी निकालना है। सभी खामियाँ निकालनी है। बाप कहते है बंधेलिया सभी से जास्ती याद में रहती हैं। वही अच्छा पद पाती हैं। जितना जास्ती मार खाती हैं उतना जास्ती याद में रहती हैं।

हाय शिवबाबा निकलेगा। ज्ञान से शिवबाबा को याद करते हैं। उन्हो का चार्ट अच्छा रहता है। ऐसे जो मार खाकर आते हैं वह सर्विस मे भी अच्छे लग जाते हैं। अपना जीवन ऊंच बनाने लिये अच्छी सर्विस करते हैं। सर्विस न करें तो दिल खाती है। दिल टपकती है हम जावें सर्विस पर।

अपने को देही समझ बाप को याद नहीं करेंगे तो रजिस्टर खराब हो जायेगा। मन्सा में तूफान तो आयेंगे परन्तु कर्मेन्द्रियों से नहीं करना है। बाप कहते हैं विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है। एक बाप की है श्रीमत। बाकी सब हैं भूत मत। श्रीमत को भूले और यह भूत आये। झट माया वार कर कांध नीचे करा देती है। अपने को देखना चाहिए मैं कहाँ तक मैला हूँ? अच्छे बच्चे कुमारका आदि हैं.... सर्विस कर रहे हैं। बच्चे मूत पलीती कपड़ों को धोने, 5 विकारों पर जीत पहनाने जाते हैं। कोई को काम का भूत आया तो एकदम नाम बदनाम कर देते है। गन्दा हो गया तो उनको बी .के. थोड़ेही कहेंगे। उनका फिर रजिस्टर एकदम खराब हो जाता है। बाबा कितना सटका मारते हैं साफ करने लिए। कहते हैं बाप को याद करो तो कपड़ा साफ होगा, नहीं तो भूत आते रहेंगे। धारणा नहीं होती है तो समझना चाहिए मैं कोई बहुत मैला हूँ। आगे जन्म में शायद हम बहुत गन्दें थे। शर्म आना चाहिए। पुरुषार्थ नहीं करते तो गन्दे के गन्दे रह जाते हैं। लायक नहीं बनते। तुम यहाँ आते हो लायक बनने। अच्छे कपड़े होंगे तो सूर्यवंशी वा चन्द्रवंशी बनेंगे। बाबा ने अब बेहद की विशाल बुद्धि दी है।

पहले तो पूरा भट्ठी थी। भट्ठी नहीं होती तो तुम तैयार कैसे होते? ईटें भट्ठी में पकती हैं ना। फिर कोई कच्चे रह जाते हैं, कोई टूट पड़ते हैं। यहाँ भी ऐसे हैं-बहुत कपड़े फट पड़ते, श्रीमत पर नहीं चलने से साफ नहीं होते हैं। अब आत्माओं की परमपिता के साथ सगाई कराई जाती है। शिवबाबा कहते हैं मैं तो एवर पावन हूँ। मुझे याद करते रहो तो तुम पावन बनते जायेगे। गहस्थ व्यवहार में रहते यह प्रैक्टिस करो। जो अच्छे बच्चे हैं वह तो झट प्रैक्टिस में लग जाते हैं। खुशी

में रहते हैं। रात को जागकर अपनी आत्मा को धोते हैं। समझते हैं पवित्र बनेंगे तो कपड़ा भी पवित्र मिलेगा इसलिए बाबा कहते हैं नींद को जीतने वाले बनो। बाप को याद करो तो आत्मा पवित्र होगी। अमृतवेले का समय अच्छा है। उसी समय याद करने की राय देते हैं। नींद आये तो आखों में तेल लगा लो। मतलब पुरुषार्थ करो। श्रीमत मिलती है याद करो। भल माया तूफान लाये तो भी तुम बाबा को याद करो।

जितना जो बच्चा बाप को याद करता है और ज्ञान धारण करता है उतना उनका अज्ञान अंधेरा विनाश हो जाता है। रोशनी ने ले जाने वाला एक ही बाप है। तब कहते हैं ज्ञान अंजन सतगुरू दिया... कोई सुरमा नहीं है। यह ज्ञान की बात है। ज्ञान के साथ योग भी रहता है। अब तुम बच्चों का बुद्धियोग लगा हुआ है-निराकार परमपिता परमात्मा के साथ। परन्तु तुम्हारे में भी नम्बरवार है। और कोई मनुष्यमात्र का सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा के साथ योग है नहीं। तुमको भी बाप से, मुक्ति और जीवन्मुक्ति धाम से योग लगाना पड़ता है। मुक्ति-जीवन्मुक्ति के लिए भी दैवी मैनर्स चाहिए। अब बाप आकर आत्मा को साफ करने के लिए लश्न सोप देते हैं, कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा जो उझाई हुई है वो योग से जग जायेगी। स्मृति दिलाते हैं तुमको स्वर्ग में भेजा था, माया ने मैला बना दिया है। अब तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने आया हूँ। मै इस ब्रह्मा तन से शिक्षा दे रहा हूँ। आत्मा को कहते हैं-देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल मुझ बाप को याद करो तो आत्मा साफ हो जायेगी। अब तुम बच्चों का बुद्धियोग पुरानी दुनिया से हट जाना चाहिए। तुम आत्माओं को स्वीट होम में जाना है। अब अपने को आत्मा निक्षय करना पड़े और बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। मनुष्य तो अनेकों को याद करते हैं-कोई गुरू को, कोई कृष्ण को। अब तुम बच्चे बाप के साथ योग लगाते हो। तुम देखते हो मैले कपड़ों को सटका लगाते हैं तो कोई फट भी पड़ते है। इतने तो अजामिल जैसे पापी हैं जो बिल्कुल साफ नहीं होते। बाबा कितना अच्छी रीति समझाते हैं-बच्चे, मोस्ट बिलवेड बाप और मोस्ट बिलवेड सुखधाम को याद करो। यह है अति दु

:खधाम। सभी त्राहि-त्राहि करते हैं। एक दो को मारते हैं फिर कहते हैं भगवान रक्षा करो। बाप तो है लिबरेटर।

- यह पुरानी दुनिया कब्रिस्तान होनी है इसलिए देह सहित सब कुछ भूल जाना है। यह शरीर पुरानी जुत्ती है, इसको अब छोड़ना है, योग में रहना है। योग में रहने से आयु बढ़ेगी तो हम बाप से वर्सा लेंगे। देह- अभिमानी की आयु बढ़ नहीं सकती। उनका देह से प्यार हो जाता है। कोई का शरीर अच्छा है तो देह से प्यार होता है। जितना तुम योग में रहेंगे उतना आत्मा प्योर होती जायेगी फिर लायक बनेंगे - नया बर्तन लेने के। हम शरीर को भल कितना भी साबुन, वैसलीन, पाउडर आदि लगाये फिर भी पुराना शरीर है ना। पुराने मकान को कितना भी मरम्मत करो तो भी जैसे खण्डहर है, तो यह शरीर भी ऐसे है। अपने से ऐसी-ऐसी बातें करेंगे तब बाप और वर्से से दिल लगेगी और कोई चीज से दिल नहीं लगानी है। मैं आत्मा हूँ, बाप के पास जाने वाली हूँ। बाप को याद करने से फायदा होता रहता है। आयु बढ़ती रहती है। आत्मा समझती है-मैं योगबल से प्योर होती जाती हूँ। यह मेरा शरीर कोई काम का नहीं है। भल सन्यासी पवित्र रहते हैं परन्तु शरीर तो फिर भी पतित है ना। यहाँ कोई का भी शरीर शुद्ध नही हो सकता।

- माया रावण ऐसा थपड़ लगा देती जो पता भी नहीं पड़ता है। अवज्ञा हो जाती है तो माफी तो ले लो, नहीं तो कर्म भोगना बहुत हो जाती है। समझाने से भी समझते नहीं। ऐसा माया का ग्रहण लग जाता है। बाबा खुद बतलाते है। कभी तो योग बड़ा अच्छा लगता है, कभी तो माया इतना तूफान में ले आती है, बात मत पूछो। बाबा कहते हैं पहले तुम अनुभव करेंगे, तब तो औरो को बतायेने ना। तो तूफान पहले सब बाबा के आगे आते है। बाबा बतलाते है अपने को मिया मिट्ठू नहीं समझना है। साफ दिल है तो ऊँची मुराद हांसिल होती है।

देह- अभिमान भी बहुत नुकसानकारक है, आधाकल्प चला है ना। वहाँ तो समझते हैं हम आत्मा हैं, यह पुराना शरीर छोड़ नया लेते हैं। वहाँ आत्म- अभिमानी कहेंगे। यहाँ तो सब देह-अभिमानी है। तो बच्चों को श्रीमत लेते रहना है। भूल कभी छिपाना नहीं चाहिए। छिपाते-छिपाते छिप ही जाते है। योग टूट पड़ता है। बिगड़ी को बनाने वाला एक ही भगवान् अथॉरिटी है। अभी तुम उनके बच्चे बने हो।

यहाँ तुम जानते हो शरीर छोड़ बाप के पास जायेगे। यह पुराना चोला उतारना है। बाप को घडी-घड़ी याद करना है। बाबा, बस, हम आये कि आये। योगबल से आत्मा को पवित्र बनाते हैं। इसके लिए एक ही उपाय है-बाप से योग लगाना। फिर तुम सतोप्रधान पवित्र बन जायेंगे। योग लगाते-लगाते अन्त में योग सिद्ध होना है। अब 84 जन्म पूरे हुए। अब हम घर जा रहे हैं। यह भी याद रहे तो तुम प्रफुल्लित रहेगे। बाबा अपना अनुभव बताते हैं-कोशिश करते हैं याद रखने की परन्तु फिर भूल जाते हैं इसलिए बाबा कहते हैं रात को जागकर प्रैक्टिस करो फिर अवस्था स्थाई जम जायेगी इसलिए कहा जाता है-हे नींद को जीतने वाले बच्चे, कमाई करो। हाथ, पाँव, मुख से कुछ करना वा बोलना नहीं है। आगे तो माला फेरते राम-राम जपते थे। माला का राज अभी तुम समझते हो। विजय माला और रूद्र माला। अब तुम सब पुरुषार्थी हो। इसको माला नहीं कहेंगे। रात को जागने से तुमको बहुत मजा आयेगा। रात को 9 से ।2 बजे का समय गन्दा होता है। 2 बजे से है अमृतवेला। यहाँ तो एकदम गन्दगी को निकाल दो। इतना सुनते भी अगर पवित्र नहीं बनेंगे तो बुद्धि का ताला बन्द हो जायेगा फिर किसको ज्ञान भी सुना नहीं सकेंगे। जैसे वृन्दावन में कुछ रास लीला का बना हुआ है। यह है ज्ञान डान्स की बात। यहाँ से सुनकर, देखकर बाहर जाकर उल्टा बोलते हैं तो गला घुट जाता है इसलिए सावधान रहना है। पवित्र जरूर बनना है तब योग लगा सकेंगे।

अब बाप तुमको अव्यभिचारी योग सिखलाते हैं। गहस्थ व्यवहार में रहते, खाते-पीते सिर्फ बाप और वर्से को याद करना है। मेहनत सारी इसमें हैं। भल अपने घर जाओ आओ सिर्फ गुप्त रीति से बुद्धि से याद करो। मुख से राम-राम अथवा शिवाए नमः कहने की भी दरकार नहीं। सिर्फ बाप को याद करो। बाबा है गुप्त, ज्ञान का सागर। सारे इस सृष्टि चक्र का उनको पता है। बाप कहते हैं तुम सिर्फ बाप और वर्से को याद करो। बस। अगर बीच में बुद्धि और तरफ चली जाती है तो उनको हटाओ। खाते-पीते, चलते सिर्फ मुझ बाप को याद करो, बहुत सहज है। समझो विलायत में कोई रहता है उनकी मेमसाहेब हिन्दुस्तान में हैं तो दूर रहते भी उसकी याद बुद्धि में रहेगी ना। हम भी कितने दूर हैं परन्तु बुद्धि से बाप को याद करना है जिससे बहुत सुख मिलता है और सबसे तो दु :ख मिलता है। मनुष्य, मनुष्य को कभी भी सदा सुख नहीं दे सकता। बाप कहते हैं जिन्न के मुआफिक याद करते रहो। बस बाप और स्वर्ग को याद करो। यही हमारा सेवा करो। हम तुम्हारी सेवा करते हैं - याद कराने की। तुम फिर याद करने की सेवा करो। यह राय अंगीकार (स्वीकार) करो। यही तुम्हारी मदद है। हिम्मते मर्दा मददे खुदा। यह याद ही तुमको स्वर्ग का मालिक बनायेगी। कितना सस्ता सौदा है।

कहते हैं माया के तूफान बहुत आते हैं। अरे तुम बाप के बच्चे हो तूफान तो आयेंगे। कहते हो बाबा हम आपके थे, आपसे वर्सा लिया था फिर पुनर्जन्म लेते-लेते 84 जन्म पास किये फिर आकर आपका बना हूँ। मैं तो आप से वर्सा लेकर छोड़ूँगा। तो ऐसे बाप को कितना याद करना पड़े और आप समान बनाए फल देना पड़े। नहीं तो मालिक कैसे बनेंगे। अपना वारिस कैसे बनायेंगे। प्रजा भी चाहिए और वारिस भी चाहिए, तो गद्दी पर बैठे। बाबा के पास तो बहुत आते हैं फिर फारकती दे देते हैं। बुद्धि का योग टूटा खेल खत्म। कई बच्चे बाबा से आकर पूछते हैं-बाबा, अवस्था को कैसे जमायें? कोई तूफान न लगे। उन्हों को तो रास्ता बतलाते ही रहते हैं कि बाप को याद करो। तूफान तो लगेंगे ही। बॉक्सिंग में ऐसा कब देखा जो एक ही थप्पड़ खाता रहे। जरूर दोनों में हिम्मत होगी, थप्पड़ एक वह लगायेंगे तो 10 थप्पड़ दूसरे भी

लगाते होंगे। यह भी बॉक्सिंग है। बाप को याद करते रहेंगे तो माया भागती जायेगी। परन्तु फट से तो नहीं होगा। माया से कुश्ती लड़नी है। ऐसे मत समझो माया थप्पड़ नहीं मारेगी। भल कोई भी हो बड़ी बॉक्सिंग है। बहुत डर जाते हैं। माया एकदम नाक में दम कर देती है। युद्धस्थल है ना। बुद्धियोग लगाने में माया बहुत विघ्न डालती है। मेहनत सारी योग में है। भल बाबा कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय हैं। परन्तु ऐसा नहीं सिर्फ ज्ञान देने वाला मुझे प्रिय है। पहले योग पूरा चाहिए। बाप को याद करना है। माया के विघ्नों से डरो नहीं। 16108 की माला बहुत बड़ी है। त्रेता अन्त तक इतने 16108 प्रिन्स-प्रिन्सेज होते हैं। शुरू में तो नहीं होंगे। पहले थोड़े होंगे फिर वृद्धि पाते जाते हैं। वह सब बनते यहाँ हैं, चांस अभी बहुत अच्छा है। परन्तु मेहनत बहुत है। बाप कहते हैं-बच्चे अशरीरी बनो। हमको याद करो, सभी सरेण्डर करो। जितना तुम योग में रहेंगे उतना शुद्ध बनते जायेंगे। बाबा यह सब आपका है। हम तो ट्रस्टी हैं। आपके हुक्म बिगर हम कुछ नहीं करेंगे। शरीर निर्वाह कैसे करना है, वह भी मत लेनी है। अक्सर करके गरीब ही पूरा पोतामेल देते हैं। साहूकार दे न सकें। सरेन्डर हो नहीं सकते। कोई विरला निकलता है। जैसे कि जनक का नाम है।

सन्यासियों को भी देखते हैं तो कहते हैं भगवान, परन्तु भगवान खुद समझाते हैं कि मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा सकता। निराकार भगवान को तो बहुत याद करते हैं। जिन्होंने गुरू नहीं किया है, छोटे बच्चे हैं उनको भी सिखाया जाता है परमात्मा को याद करो, परन्तु किस परमात्मा को याद करो - यह नहीं बताया जाता। कोई भी चित्र बुद्धि में नहीं रहता। दु :ख के समय कह देते हैं हे प्रभु। कोई गुरू वा देवता आदि का चित्र उनके सामने नहीं आता है। भल बहुत गुरू किये हों तो भी जब हे भगवान कहते हैं तो कभी उनको गुरू याद नहीं आयेगा। अगर गुरू को याद कर और ही भगवान कहें तो वह मनुष्य तो जन्म-मरण में आने वाला हो गया। तो यह होगया 5 तत्वों के बने हुए शरीर को याद करते हैं, जिसको 5 भूत कहा जाता है। आत्मा को भूत नहीं कहा जाता। तो वह जैसे भूत पूजा हो गई। बुद्धियोग शरीर तरफ चला गया।

अगर किसी मनुष्य को भगवान समझते तो ऐसे नहीं कि उनमें जो आत्मा है उसको याद करते हैं। नहीं। आत्मा तो दोनों में है। याद करने वाले में भी है तो जिसको याद करते हैं उनमें भी है। परमात्मा को तो सर्वव्यापी कह देते। परन्तु परमात्मा को पाप आत्मा नहीं कहा जा सकता। वास्तव में परमात्मा नाम जब निकलता है तो बुद्धि निराकार तरफ चली जाती है। निराकार बाप को निराकार आत्मा याद करती है। उसको देही- अभिमानी कहेने। साकार शरीर को जो याद करते हैं वह जैसे भूत अभिमानी हैं। भूत, भूत को याद करते हैँ क्योंकि अपने को आत्मा समझने बदले 5 भूतों का शरीर समझते हैं। नाम भी शरीर पर पड़ता है। अपने को भी 5 तत्वों का भूत समझते हैं और उनको भी शरीर से याद करते हैं। देही- अभिमानी तो हैं नहीं। अपने को निराकार आत्मा समझें तो निराकार परमात्मा को याद करे। सभी आत्माओं का सम्बन्ध पहले-पहले परमात्मा से है। आत्मा दु :ख में परमात्मा को ही याद करती है, उनके साथ सम्बन्ध है।

बाबा कितना मीठा है। कितना प्यार करते हैं। कोई तकलीफ नहीं देते। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो और चक्र को याद करो। बाप की याद में दिल एकदम ठर जानी चाहिए। एक बाप की ही याद सतानी चाहिए क्योंकि बाप से वर्सा कितना भारी मिलता है। अपने को देखना चाहिए हमारा बाप के साथ कितना लव है। कहाँ तक हमारे में दैवी गुण हैं क्योंकि तुम बच्चे अब कांटों से फूल बन रहे हो। जितना-जितना योग में रहेंगे उतना कांटों से फूल, सतोप्रधान बनते जायेंगे। फूल बन गये फिर यहाँ रह नहीं सकेंगे। फूलों का बगीचा है ही स्वर्ग। जो सच्चे-सच्चे बच्चे हैं जिनका बापदादा से पूरा लव है उनको बड़ी खुशी रहेगी। हम विथ का मालिक बनते हैं। हाँ पुरुषार्थ से ही विश्व का मालिक बना जाता है। सिर्फ कहने से नहीं। जो अनन्य बच्चे हैं उन्हों को सदैव यह याद रहेगा कि हम अपने लिए फिर से वही सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन कर रहे हैं।

- जितना बाप को याद करेंगे उतना लव रहेगा, कशिश होगी। सुई साफ होती है तो चुम्बक तरफ खैंच जाती है ना। बाप की याद से कट निकलती जायेगी। एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये। जैसे पत्नी का पति के साथ कितना लव होता है। तुम्हारी भी सगाई हुई है ना। सगाई की खुशी कभी कम होती है क्या? शिवबाबा कहते हैं मीठे बच्चे तुम्हारी हमारे साथ सगाई हुई है, बह्मा के साथ सगाई नहीं है। सगाई पक्की हो गई फिर तो उनकी ही याद सतानी चाहिए। बाप समझाते हैं मीठे बच्चे गफलत मत करो।

- मीठे-मीठे बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं जब कोई सभा में भाषण करते हो वा किसको समझाते हो तो घड़ी-घड़ी बोलो अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो। इस याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, तुम पावन बन जायेंगे। घड़ी-घड़ी यह याद करना है। परन्तु यह भी तुम तब कह सकेंगे जब खुद याद में होंगे। इस बात की बच्चों में बहुत कमजोरी है। याद में रहेंगे तब दूसरों को समझाने का असर होगा। तुम्हारा बोलना जास्ती नहीं होना चाहिए। आत्म- अभिमानी हो थोड़ा भी समझायेंगे तो तीर भी लगेगा। बाप कहते हैं बच्चे बीती सो बीती। अब पहले अपने को सुधारो। खुद याद करेंगे नहीं, दूसरों को कहते रहेंगे, यह ठगी चल न सके। अन्दर दिल जरूर खाती होगी। बाप के साथ पूरा लव नहीं है तो श्रीमत पर चलते नहीं हैं। बेहद के बाप जैसी शिक्षा तो और कोई दे न सके। बाप कहते हैं मीठे बच्चे इस पुरानी दुनिया को अब भूल जाओ। पिछाड़ी में तो यह सब भूल ही जाना है। बुद्धि लग जाती है अपने शान्तिधाम और सुखधाम में। बाप को याद करते-करते बाप के पास चले जाना है।

- बाबा ने नये शरीर का साक्षात्कार करा दिया है। हीरे जवाहरों के महल मिल जायेगे। ऐसे सुखधाम में जाने लिए कितनी मेहनत करनी चाहिए। थकना नहीं चाहिए। दिनरात बहुत कमाई करनी है इसलिए बाबा कहते हैं नींद को जीतने वाले बच्चे, मामेकम् याद करो और विचार

सागर मन्थन करो। ड़ामा के राज को बुद्धि में रखने से बुद्धि एकदम शीतल हो जाती है। जो महारथी बच्चे होंगे वह कभी हिलेंगे नहीं। शिवबाबा को याद करेंगे तो वह सम्भाल भी करेंगे। बाप तुम बच्चों को दुःख से छुड़ाकर शान्ति का दान देते हैं। तुमको भी शान्ति का दान देना है। तुम्हारी यह बेहद की शान्ति अर्थात् योगबल दूसरों को भी एकदम शान्त कर देंगे। झट मालूम पड़ जायेगा। यह हमारे घर का है वा नहीं। आत्मा को झट कशिश होगी यह हमारा बाबा है। नब्ज भी देखनी होती है। बाप की याद में रह फिर देखो यह आत्मा हमारे कुल की है। अगर होगी तो एकदम शान्त हो जायेगी। जो इस कुल के होंगे उन्हों को ही इन बातों में रस बैठेगा। बच्चे याद करते हैं तो बाप भी प्यार करते हैं। आत्मा को प्यार किया जाता है। यह भी जानते हैं जिन्होंने बहुत भक्ति की है वह ही जास्ती पढ़ेंने। उनके चेहरे से मालूम पड़ता जायेगा कि बाप में कितना लव है। आत्मा बाप को देखती है। बाप हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं।

ज्ञान का सागर तो एक शिवबाबा है। वह बाबा कहते हैं बच्चे विनाश सामने खड़ा है। पिछाड़ी में मन्त्र देने वाला कोई नहीं रहेगा। अन्त मती सो गति गाई हुई है ना। अन्त में मेरी याद रखेंगे तो गति मिल जायेगी। तुम आजकल करते आये हो। दो चार इतफाक दिखाऊंगा कि कैसे अचानक मनुष्य मरते हैं। उस समय मन्त्र तो याद कर नहीं सकेंगे। समझो अचानक छत गिर पड़ती है, उस समय याद कर सकेंगे ? धरती हिलेगी, उस समय तो हाय-हाय करने में लग जायेंगे।

भोलानाथ बाबा लिबरेटर भी ठहरा ना। कहते हैं मैं तुमको जीवनमुक्तिधाम ले जाता हूँ। परमपिता परमात्मा है ही सबसे मीठा, इसलिए सब उनको याद करते हैं। भोलानाथ बाप तुम माताओं के द्वारा भारत को स्वर्ग बनाते हैं जिसका यादगार देलवाड़ा मन्दिर है। तुम हरेक के आक्यूपेशन को जानते हो। ड़ामा में हरेक का पार्ट चलता है। कितने पुनर्जन्म लेते हैं। पाण्डव थे गुप्त, यादव कौरव थे प्रत्यक्ष। तुम इनकागनीटो, नानवायोलेन्स शक्ति सेना 2। जन्म विश्व

का मालिक बनते हो। तो जरूर मेहनत भी करनी पड़े। कदम-कदम श्रीमत पर चलना है। बाबा की याद भूली तो लगा माया का गोला इसलिए अपने बाप को याद करना है, अपने को आत्मा निश्चय करना है। मौत सामने खड़ा है। पापों का बोझा बहुत भारी है। जहाँ तक जीना है, पुरुषार्थ में रहना है और कुछ भी याद न रहे। इस मृत्युलोक में आना नहीं है। दुनिया बदल रही है। यादवों और कौरवों ने अपने कुल का विनाश किया। बाकी पाण्डवों ने अपना राज्य पाया। परन्तु अब हम पाण्डव बाप के बने हैं, रक्त की नदियाँ यहाँ बहेगी। नहीं तो पुरानी दुनिया का विनाश कैसे हो।

शिवबाबा कहते हैं - तुम ब्रह्मा द्वारा हमारे ब्रह्मा मुख वंशावली बने हो। ब्रह्मा भी कहते हैं तुम हमारे बच्चे बने हो। तुम ब्राह्मणों की बुद्धि में खाँसों खाँस यही चलेगा कि यह हमारा बाप है, वह हमारा दादा है। बाप से जास्ती दादे को याद करते हैं। वह मनुष्य तो बाप से झगड़ा आदि करके भी दादे से प्रापर्टी लेते हैं। तुमको भी कोशिश करके बाप से भी जास्ती दादे से वर्सा लेना है। बाबा जब पूछते हैं तो सभी कहते हैं हम नारायण को वरेंगे। कोई-कोई नये आते थे, पवित्र नहीं रह सकते तो वह हाथ नहीं उठा सकते। कह देते माया बड़ी प्रबल है। वह तो कह भी नहीं सकते कि हम श्री नारायण को वा लक्ष्मी को वरेंगे। देखो, जब बाबा सम्मख सनाते हैं तो कितना खशी का पारा चढ़ता है। बद्धि को रिफ्रेश किया जाता है तो नशा चढ़ता है। फिर किसी-किसी को वह नशा स्थाई रहता है, किसी-किसी में कम हो जाता है। बेहद के बाप को याद करना है, ८4 जन्मों को याद करना है और चक्रवर्ती राजाई को भी याद करना है। जो मानने वाले नहीं होंगे उनको याद नहीं रहेगी। बापदादा समझ जाते हैं कि बाबा-बाबा कहते तो हैं परन्तु सच- सच याद करते नहीं हैं और न लक्ष्मी-नारायण को वरने लायक हैं। चलन ही ऐसी है। अन्तर्यामी बाप हर एक की बुद्धि को समझते हैं। यहाँ शास्त्रों की तो कोई बात ही नहीं।

जैसे बच्चे धर्म की गोद लेते हैं तो जानते हैं पहले हम फलाने का बच्चा था, अब फलाने का हूँ । उनसे दिल हटती जायेगी और इनसे जुटती जायेगी । यहां भी तुम कहेंगे हम शिवबाबा के एडारेड बच्चे हैं । फिर उस बाप को याद करने से फायदा ही क्या । मोस्ट बिलवेड बाप, इतनी बड़ी सम्पत्ति देने वाला है । बाप ही मेहनत करके बच्चों को लायक बनाते हैं । ऐसे बाप को तुम घड़ी-घडी भूल जाते हो और तो सब तुमको दु :ख देने वाले हैं फिर भी उन्हों को याद करते हो और मुझ बाप को तुम भूल जाते हो । रहो भल अपने घर में परन्तु बाबा को याद करो । इसमें मेहनत चाहिए, तब ही पाप विनाश होंगे । यह तो सारा कब्रिस्तान बनना है । बच्चे मेरे बने गोया विथ के मालिक बने । तुम जानते हो बाबा के बने हैं फिर स्वर्ग के मालिक हम अवश्य बनेंगे । खुशी का पारा बढ़ना चाहिए ।

जैसे बाबा करन-करावनहार है वैसे माया भी करन-करावनहार है । बाप करन-करावनहार सुखदाता है, वह करन-करावनहार दु :ख दाता है । बाप से बेमुख कराती है । अब बाप खुद कहते हैं हे आत्मायें निरन्तर मुझ बाप को याद करो । तुम हमारे बच्चे हो । तुमको वर्सा लेना है सिर्फ मुझे याद करो । तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे । बाप को याद करना है । यह तो सहज है । कन्या की जब सगाई हो जाती है तो उनके पीछे एकदम चटक पड़ती है ना । वैसे अब तुम्हारी सगाई होती है शिवबाबा से, तो उनको चटक पड़ना चाहिए । बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो । तुम्हारी आत्मा पवित्र बनेगी तो तुम मेरे साथ चलोगे । मैं तुम्हें नैनों की पलकों पर ले चलूँगा । सिर्फ तुम मुझे याद करो तो पापों से मुक्त हो जायेंगे । एम आब्जेक्ट बिगर पुरुषार्थ कैसे करेंगे । यहाँ अन्धश्रद्धा की बात नहीं ।

- कई बच्चे कहते है कि बाबा की याद नहीं रहती है, अपने को आत्मा नहीं समझते, घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बाप को याद नहीं करेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा। बाबा कहते हैं निरन्तर मुझे याद करो तो उसी योगबल से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। याद नहीं करेंगे तो मम्मा-बाबा के तख्त-नशीन कैसे बनेंगे। उनको कपूत कहा जायेगा। सपूत बच्चे तो बाप को निरन्तर याद करने का खूब पुरुषार्थ करते रहेंगे। अन्त तक करना ही है। बाप को जितना याद करेंगे उतना तुम्हारी कमाई है। अपना चार्ट रखो। जो ओटे सो अर्जुन। उन्हें ही वारिस कहा जाता है।

- बच्चे जानते हैं माया के तूफान तो बहुत आते हैं। मुहलरा मुख में पड़ा हुआ हो तो माया कुछ नहीं कर सकती है। बाबा को याद करना बहुत सहज है। हम आत्मा हैं, आत्मा कहती है-मेरा स्वधर्म है शान्त। हम सब परदेशी है। इस माया के देश में आते हैं। एक गीत है ना- ओ दूर देश के रहने वाले..... सब आत्मायें दूर देश की रहने वाली हैं।

- बच्चे जब शान्त में बैठते हैं तो हमेशा स्वधर्म में बैठना है। बाप को याद करना है। शान्ति के लिए कोई जंगल में नही जाना पड़ता है। कोई भी आये तुम समझा सकते हो कि शान्ति तो गले का हार है, तुम ढूँढते कहाँ हो। आत्मा कहती है मेरा स्वधर्म शान्त है। फिर यहाँ शरीर में आने से टॉकी बनता हूँ। साइलेन्स में तो नाटक होता नहीं! पहले मूवी बाइसकोप चलता था। बाप घड़ी-घड़ी समझाते हैं मामेकम् याद करो। बच्चे भी कहेंगे बाप को याद करो! " मामेकम् याद करो बच्चे " -यह तुम नहीं कह सकते। बाबा इन द्वारा कह सकते हैं-बच्चे, मामेकम् याद करो। तुम सम्मुख बैठे हो ना। तुम कहेगे शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो। सबको कहना है कि बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। मौत तो सबका होना ही है। अभी तो क्या लगा पड़ा है। अमेरिका आदि कितना बड़ा है। यह बम्बई आदि कुछ भी नहीं रहेगी। बहुत थोड़े होंगे। अभी तो राज्य करने वाले कितने करोड़ों हैं! वहाँ तो शुरू मे बहुत थोड़े होते हैं

। पीछे आते जाते हैं। बच्चों को समझाया जाता है माया बड़ी प्रबल है। याद करने नहीं देगी, विघ्न डालती रहेगी। बाबा से बेमुख करेगी। परन्तु पुरुषार्थ पूरा करना है। पक्का महावीर बनना है। योग ऐसा रहना चाहिए जो माया कभी हिला न सके।

ब परमपिता परमात्मा कितना मीठा बाबा है परन्तु उसकी याद माया भुला देती है। तुम शिवबाबा को याद करने की कोशिश करते हो, लेकिन माया बड़ी जबरदस्त है, वह तुमको याद करने नहीं देगी. । अब बाबा तुमको इस रोने की दुनिया से दूर ले जाते हैं, जहाँ 2। जन्म तुमको रोने की दरकार ही नहीं रहती है।

मनुष्य गाते तो परमपिता परमात्मा के लिए हैं, परन्तु जानते नहीं हैं कि वह मात-पिता कैसे बनते हैं। अब तुम बच्चों को कहा जाता है ले लो, ले लो दुआयें माँ बाप की.?. अर्थात् श्रीमत पर चलो। अपनी चाल- चलन अच्छी हो तो अपने पर आपेही दुआयें हो जायेंगी। अगर चलन अच्छी नहीं होगी, किसको दु :ख देते रहेंगे, मात-पिता को याद नहीं करेंगे अथवा दूसरों को याद नहीं करायेंगे तो दुआयें मिल नहीं सकती। फिर इतना सुख भी नहीं पा सकेंगे। बाप की दिल पर चढ़ नहीं सकेंगे। इस बाप की ब्रह्मा की) दिल पर चढ़े तो गोया शिवबाबा की दिल पर चढ़े। यह गायन है ही उस मात-पिता का। बुद्धि उस बेहद के मात-पिता के तरफ चली जानी चाहिए। ब्रह्मा की तरफ भी कोई की बुद्धि नहीं जाती है। भल जगत अम्बा की तरफ कोई की जाती है। उनका भी मेला लगता है। तुम जानते हो हमारी सच्ची-सच्ची माता कायदे अनुसार यह ब्रह्मा है। यह भी समझना है। याद भी ऐसे करेंगे। यह माता भी है तो ब्रह्मा बाबा भी है। लिखते हैं शिवबाबा केयरआफ ब्रह्मा। तो माता भी हो जाती है तो पिता भी हो जाता। अब बच्चों को इस पिता की दिल पर चढ़ना है क्योंकि इनमें ही शिवबाबा प्रवेश होते हैं।

- याद उनको रहेगा जो औरों को सुनाते रहेंगे। दान नहीं करेंगे तो धारणा भी नहीं होगी। जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनका बापदादा भी नाम बाला करते हैं। यह तो बच्चे भी जानते हैं कि सर्विस में कौन-कौन तीखे हैं। जो सर्विस पर हैं वह दिल पर चढ़ते हैं। सदैव फालो माँ- बाप को करना है। उनके ही तख्तनशीन बनना है।

- सतयुग मे प्रजा बहुत सुखी रहती है। अपने महल, गाये, बैल आदि सब कुछ होते है। अच्छा - बच्चे, खुश रहो आबाद रहो, न बिसरों न याद रहो क्योंकि याद तो शिवबाबा को करना है। अपने शरीर को भी भूल जाना है तो औरों को कैसे याद करें।

- यह मदर फादर सारे वर्ल्ड के हैं। वह बैठ वर्सा देते हैं। बरोबर बाप से वर्सा मिला था। अब कलियुग का अन्त है फिर जरूर बाप से मिलना चाहिए। सन शोज फादर, फादर शोज सन। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारा बोझा उतर जायेगा। याद का चार्ट रखना चाहिए। हम कितना समय बाप को याद करते हैं। ऐसे नहीं, हम तो शिवबाबा की सन्तान हैं ही। परन्तु कहते हैं-उठते, बैठते, चलते कितना याद रखते हैं-चार्ट रखो। मुख्य है याद। विघ्न भी योग में पड़ते हैं। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। वह है हठयोग। राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। वह तो बहुत किस्म- किस्म के योग सिखलाते हैं। उनका है हद का सन्यास, तुम्हारा है बेहद का सन्यास। प्रवृत्ति में रहते हुए बाप को इतना याद करो जो अन्त समय औरों की याद न आये। आत्मा को एक बाप को याद करना है तब ही विकर्माजीत बन सकेंगे। विकर्माजीत और कोई बना न सके।

श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हो। तुमको अपनी अवस्था ऐसी रखनी है, जैसे अंगद को रावण हिला नहीं सका। तुम महावीरों को भी भल कितना भी माया का तूफान लगे, परन्तु हिलना नहीं है। यह अवस्था अभी नहीं होगी। पिछाड़ी में ऐसी अवस्था होनी है। कितने भी विकल्पों के तूफान आयें लेकिन अडोल रहना है। अव्यभिचारी याद रहे और किसकी याद ना आये, इसमें मेहनत बहुत करनी है। पिछाड़ी में ही अचल- अडोल बनेंगे। अचलघर यादगार है ना।

भक्ति मार्ग के दुबन मे फँसे हुए है। भक्ति का भभका बहुत है। यह तो कुछ भी नहीं है। सिर्फ स्मृति मे रखो- अभी वापस जाना है। पवित्र बनकर जाना है। इसके लिये याद में रहना है। बाप जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं उनको याद नहीं कर सकते! मुख्य बात यह है। सभी कहते हैं इसमें ही मेहनत है। बच्चे भाषण तो अच्छा करते हैं परन्तु योग मे रहकर समझायें तो असर भी अच्छा होगा। याद मे तुमको ताकत मिलती है। सतोप्रधान बनने से सतोप्रधान विश्व के मालिक बनेंगे। याद को नेष्ठा कहेंगे क्या! हम आधा घण्टा नेष्ठा में बैठे, यह रांग है। बाप सिर्फ कहते हैं याद में रहो। सामने बैठ सिखलाने की दरकार नहीं। बेहद बाप को बहुत लव से याद करना है क्योंकि बहुत खजाना देते हैं। याद से खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। अतीन्द्रिय सुख फील होगा। बाप कहते हैं तुम्हारी यह लाईफ बहुत वैल्युबुल है, इनको तन्दुरुस्त रखना है। जितना जीयेंगे उतना खजाना लेंगे। खजाना पूरा तब मिलेगा जबकि हम सतोप्रधान बन जायेगे। मुरली में भी बल होगा। तलवार में जौहर होता है ना। तुम्हारे में भी याद का जौहर पड़े तब तलवार तीखी हो। ज्ञान में इतना जौहर नहीं है इसलिये किसको असर नहीं होता है। फिर उनके कल्याण लिये बाबा को आना है। जब तुम याद में जौहर भरेंगे तो फिर विद्वान आचार्य आदि को अच्छा तीर लगेगा इसलिए बाबा कहते हैं चार्ट रखो। कई कहते हैं बाबा को बहुत याद करते हैं परन्तु मुख नहीं खुलता। तुम याद में रहो तो विकर्म विनाश होंगे।

- तुम्हारी कितनी विशाल बुद्धि बनी है । बाप आकर बुद्धि का ताला खोलते हैं । बुद्धि में मूलवतन, सूक्ष्मवतन याद है । यह है स्थूल वतन । तुम अब बन गये हो त्रिकालदर्शी । तीनों लोकों, तीनों कालों को जानते हो । यह हैं डिटेल की बातें । नटशेल में तो है ही दो बातें-बाप और वर्से को याद करना है । याद के चार्ट पर ही मदार है । घर में रहो, युक्ति से चलो, बापू और वर्से को याद करो । चार्ट रखो-हम कितना समय योग में रहे? बाप को याद करने से वर्सा जरूर मिलता है । बाप तो बहुत सहज कर बतलाते है । परन्तु कोई याद करे भी ना । माया एकदम: भुला देती है । कोई-कोई बाँधेली बच्चियाँ ऐसी अच्छी है जो घर में रहते भी कई महारथियों से अच्छा योग में रहती हैं । शिवबाबा को बहुत याद करती हैं-शिवबाबा हमें दु :ख से छुड़ाओ । जानते हैं-शिवदाबा से हमको स्वर्ग की राजाई मिलती है । घर में याद करते-करते अगर प्राण त्याग दें तो भी बहुत अच्छा पद मिल सकता है । ' ' मेरा तो एक दूसरा न कोई' ' -इसी निश्चय से बेड़ा पार हो जाए । कितनी मार खाती हैं! ऐसा सतसंग तो कभी नहीं देखा होगा जहाँ खियों मार खाती । सतसंग में जाने से कोई मना करते हैं क्या? ढेर सतसंग हैं । यहाँ तो अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं, विघ्न पड़ते हैं! शुरू से लेकर चलता आया है । अकासुर, बकासुर कैसे ले जाते थे बच्चों को, विष के लिए मारें कितनी खाती थी! कोई तो बात होगी ना ।

- बच्चों को मुरली अच्छी तरह 5 - 6 बार पढ़ना वा सुनना चाहिए तब ही बुद्धि में बैठेगी और खुशी का पारा बढ़ेगा । माया घड़ी-घडी याद भुला देती है । इसमें कोई हठ आदि करने की बात नहीं । फुर्सत मिली, अच्छा, बाबा को याद करना है कछुए मिसल । सबसे अच्छा है - अमृतवेले का टाइम । उसका असर सारे दिन रहेगा । यह भी बच्चों को समझाया गया है कि पहले खिलाने वाले को खिलाकर फिर खाना है । शिवबाबा के यह से खाते हैं तो पहले उनको भोग लगाना पड़े ।

अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह तो सहज है ना। सब कहते हैं कि हे भगवान आओ। हम पतितों को आकर पावन बनाओ। तो पतित-पावन बाप ही ठहरा। तुम जानते हो बाप हमको पावन बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। भल कोई 5 विकार दान में दे देते हैं परन्तु फिर योग भी लगाना है। जन्म-जन्मान्तर के जो सिर पर पाप हैं, जिससे तुम तमोप्रधान बने हो, वो योग के सिवाए कैसे भस्म होंगे? तुम 5 विकारों का दान करते हो कि हम कोई पाप नहीं करेंगे। परन्तु जन्म-जन्मान्तर के जो पापों का हिसाब है, वह कैसे चुक्तू होगा? उसकी युक्ति है जहाँ तक जीना है बाप की याद में रहना है। इस याद से ही विकर्म विनाश होंगे। पतित आत्मा वहाँ जा नहीं सकती। हर एक को अपना-अपना पार्ट और अपना-अपना मर्तबा मिला हुआ है। जैसा मनुष्य का मर्तबा वैसे आत्मा का भी मर्तबा। पहले-पहले आत्मा स्वर्ग में आयेगी। पहले नम्बर में हैं लक्ष्मी-नारायण, उनका सबसे बड़ा पार्ट है। ड्रामा में देवी-देवता धर्म की आत्मायें सबसे अच्छा पार्ट बजाकर सबसे जास्ती सुख भोगती हैं। फिर सतो रजो तमो में आना है। खाद पड़ती जाती है। अब वह खाद निकले कैसे? सोने को अग्नि में डालने से खाद निकलती है। यह योग अग्नि है जिससे विकर्म विनाश होते हैं। यह कोई नहीं जानते कि योग अग्नि से विकर्म विनाश हो सकते हैं। बच्चे कहते हैं घड़ी- घड़ी योग टूट पड़ता है। हम बाप को भूल जाते हैं। यह माया के विघ्न हैं। विघ्न न आयें, जल्दी योग लग जाये तो जल्दी विनाश हो जाए, परन्तु ऐसा हो नहीं सकता। टाइम लगता है। जब तक योग लगाते रहो, अन्त में कर्मातीत अवस्था होगी। फिर दुनिया भी खत्म हो जायेगी। तुम श्रीमत से रावण पर जीत पाते हो। गीता, महाभारत, रामायण सबमें भक्ति की सामग्री है। तुमने संगम पर जो कर्तव्य किया है, उसका यादगार यह मन्दिर आदि बने हैं। यादगार बनना द्वापर से शुरू होता है।

माया का बहुत ज़ोर है, अब माया से युद्ध करना है। माया जीते जगतजीत, मनुष्य शान्ति में रहने के लिए कितना माथा मारते हैं। मन ऐसे थोड़ेही शान्त हो सकता है। यह तो कुछ सीखते हैं जो

हिप्नोटाइज़ आदि कर अनकानसेस कर देते हैं। मेहनत लगती है, किसकी तो ब्रेन ही खराब हो जाती है। बाप कहते हैं अगर कोई कर्मबन्धन में अथवा मित्र सम्बन्धी आदि में बुद्धि जाती रहेगी तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। देहधारी से बुद्धि को हटाना है। सबको भूल जाओ, आप मुये मर गई दुनिया। दुनिया को याद करते हो तो तुमको दण्ड पड़ता है। तुम कहते हो कि बाबा हम मर चुके हैं। हम आपके हैं तो फिर मित्र सम्बन्धी आदि तरफ बुद्धि क्यों जाती है? गोया तुम मरे नहीं हो! बाप के बने नहीं हो! बहुत हैं जिनको रात-दिन कर्मबन्धन का ही चिंतन रहता है। याद में बैठते भी वही संकल्प आते रहते हैं। यहाँ बाबा की गोद में रहते तो मर चुके ना। तो बुद्धियोग कहाँ जाना नहीं चाहिए। सन्यासी तो घरबार छोड़ते हैं, गोया मर गये। अगर याद पड़ता रहेगा तो योग में कैसे रहेंगे। कोई फिर घर में लौट भी आते हैं। कोई पक्के होते हैं, बिल्कुल याद भी नहीं करते। तुम बच्चों की भी बुद्धि अगर बाहर जाती रहती है तो ऊंच पद पा न सकें।

सब सेन्टर्स पर ऐसे छिपे असुर (विकारी) बहुत आते हैं, फिर घर में जाकर विष पीते हैं। दो काम तो चल न सकें। वह पत्थरबुद्धि बन पड़ते हैं। बाप को पहचानते ही नहीं। निश्चय बिल्कुल ही नहीं कि हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। ऐसे ही आकर बैठ जाते हैं। तो न योग लगेगा, न पढ़ाई ही पढ़ सकते। भोगी के भोगी ही होंगे। बहुत समझते हैं कि कोई शक्ति है बस।

बाप कहते हैं – मैं कितना श्रृंगारता हूँ फिर भी सुधरते नहीं हैं, उल्टा सुल्टा बोलते रहते हैं। यहाँ बाबा कहते हैं देह सहित जो कुछ है सब कुछ भूल मामेकम् याद करो। अपनी देह में भी न फंसो। किसकी देह में फंसने से गिर पड़ते हैं। जैसे मम्मा की देह से प्यार था तो मम्मा के जाने के बाद कितने मर गये क्योंकि नाम रूप में फंसे हुए थे। बाप कितना कहते हैं कि देह-अभिमानी मत बनो, मामेकम् याद करो। तुम इस ब्रह्मा के शरीर को भी याद नहीं करो। शरीर को याद करने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकते। देही-अभिमानी बनने में बहुत मेहनत है। बाप की याद में रहना – यह

बहुत डिफीकल्ट है। ज्ञान तो बहुत अच्छा-अच्छा सुनाते हैं। योग में मुश्किल रहते हैं। जितना रूसतम, उतना माया के तूफान आयेंगे। किसी न किसी के नामरूप में फंस धोखा खा लेते हैं, इसमें बड़ी खबरदारी चाहिए। योग में ही बड़ी मेहनत है। नॉलेज तो सहज है। योग में ही घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं इसलिए बाप कहते हैं विकर्माजीत कैसे बनेंगे। योग में रहो तो पाप भी नहीं होंगे। नहीं तो सौगुणा हो जाता है। यहाँ तो खुद धर्मराज और बाप दोनों साथ हैं इसलिए खुद कहते हैं कि बाप के आगे कोई पाप नहीं करना, नहीं तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा। योग से ही विकर्माजीत बनना है। स्वदर्शन चक्र को तो जानना सहज है। इस गोले के नीचे लिखना है पा, न कि चर्खा। बाबा युक्तियाँ तो बहुत बतलाते हैं। बच्चों को एक्ट में आना है। अच्छा!

यहाँ जब बैठते हो तो बाबा की याद में बैठना है। माया बहुतों को याद करने नहीं देती क्योंकि देह-अभिमान है। कोई को मित्र सम्बन्धी, कोई को खान-पान आदि क्या-क्या याद आता रहता है। यहाँ जब आकर बैठते हो तो बाप का आह्वान करना चाहिए। जैसे जब लक्ष्मी की पूजा होती है तो लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। लक्ष्मी कोई आती नहीं है। यहाँ भी कहा जाता है तुम बाप को याद करो अथवा आह्वान करो, बात एक ही है। याद से विकर्म विनाश होंगे। धारणा नहीं हो सकती है क्योंकि विकर्म बहुत हैं। बाप को भी याद नहीं कर सकते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना विकर्माजीत, निरोगी बनेंगे। है बहुत सहज। परन्तु माया अथवा पास्ट के विकर्म सामने आते हैं जो याद में विघ्न डालते हैं। बाप कहते हैं तुमने ही आधाकल्प अयथार्थ रीति से याद किया। अभी तो तुम प्रैक्टिकल में आह्वान करते हो क्योंकि तुम जानते हो कि बाबा आया हुआ है। परन्तु यह याद की आदत पक्की हो जानी चाहिए। तुमको एवर निरोगी बनने के लिए अविनाशी सर्जन दवाई देते हैं कि मुझे याद करो फिर तुम मेरे से आकर मिलेंगे। मेरे द्वारा मेरे को याद करने से ही तुम मेरा वर्सा पायेंगे। बाप और स्वीट होम को याद करना है, जहाँ जाना है, वह बुद्धि में रहता है। बाप वहाँ से आकर सच्चा पैगाम देते हैं और कोई भी ईश्वरीय पैगाम नहीं देते। वह तो यहाँ स्टेज पर पार्ट बजाने आते हैं और ईश्वर को भूल जाते हैं। लक्ष्मी-नारायण यहाँ

आते हैं तो ईश्वर का पता नहीं रहता। उनको भी पैगम्बर नहीं कह सकते। यह तो मनुष्यों ने नाम लगा दिये हैं। वह आते ही हैं पार्ट बजाने। वह याद कैसे करेंगे? उनको पार्ट बजाते-बजाते पतित बनना ही है, फिर अन्त में पतित से पावन बनना है। वह तो बाप ही आकर बनाते हैं। बाप की याद से ही पावन बनना है। बाप कहते हैं बच्चे मेरे पास पावन बनाने का एक ही उपाय है। देह सहित जो भी देह के सम्बन्ध हैं उनको भूल जाना है। तुम जानते हो मुझ आत्मा को बाप को याद करने का फरमान मिला हुआ है। उस पर चलने वाले को ही फरमानवरदार कहा जाता है। जो कम याद करते हैं, वह कम फ़रमानवरदार। फ़रमानवरदार पद भी ऊंचा पाते हैं। बाबा का एक फ़रमान है याद करो, दूसरा है नॉलेज को धारण करो। याद नहीं करेंगे तो सज़ायें बहुत खानी पड़ेगी। स्वदर्शन चक्र फिराते रहेंगे तो धन बहुत मिलेगा। भगवानुवाच, मेरे द्वारा मुझे भी जानो और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को भी जानो। यह दो बातें मुख्य हैं जिस पर ध्यान देना है। श्रीमत पर पूरा ध्यान देंगे तो ऊंच पद पायेंगे फिर रहमदिल बनना है, सबको रास्ता बताना है, सबका कल्याण करना है। मित्र सम्बन्धियों आदि को भी सच्ची यात्रा पर ले जाने की युक्ति रचनी है। वह है जिस्मानी यात्रा, यह है रूहानी यात्रा। यह प्रीचुअल नॉलेज कोई के पास नहीं है। वह है सब शास्त्रों की फिलॉसाफी। यह है रूहानी नॉलेज, सुप्रीम रूह यह नॉलेज देते हैं रूहों को। रूहों को ही वापिस ले जाना है। अमृतवेले जब आकर बैठते हैं, कोई तो लाचारी आकर बैठते हैं। उन्हों को अपनी उन्नति का कुछ भी ख्याल नहीं है। बच्चों में देह-अभिमान बहुत है। देही-अभिमानी हो तो रहमदिल बन श्रीमत पर चलें।

माया के तूफान तो बहुत आयेंगे। बाप कहते हैं बच्चे तुम कितना फर्स्टक्लास थे। तुमको क्या हो गया? बाबा झट बतायेंगे, इस समय ब्राह्मणों की माला में नम्बरवार कौन-कौन हैं। परन्तु सब कायम नहीं रहेंगे। कमाई में दशायें बैठती हैं ना। किसको राहू की दशा बैठती है तो फिर छोड़ चले जाते हैं – पुरानी दुनिया में। कहते हैं हमसे मेहनत नहीं होती है। बाबा को याद नहीं

कर सकते। नहीं कहने से नास्तिक बन जाते हैं। दशायें फिरती रहती हैं। माया के तूफान आने से ढीले हो जाते हैं। अगर भागन्ती हो गया तो समझेंगे श्याम बन गया। यहाँ आते हैं – सुन्दर बनने। तुम ब्राह्मण कुल वाले श्याम से सुन्दर बन रहे हो। यहाँ बहुत जबरदस्त कमाई है। बच्चे जानते हैं मम्मा बाबा, लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। बच्चे कहते हैं बाबा हम भी आप जैसा पुरुषार्थ कर ज़रूर तख्तनशीन बनेंगे। वारिस बनेंगे। परन्तु फिर भी ग्रहचारी बैठ जाती है। चलन भी अच्छी चाहिए। तुम्हारा धन्धा है घर-घर में सन्देश पहुँचाना कि शिवबाबा को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। विनाश सामने खड़ा है – तुम निमंत्रण देते रहो। तुम्हारी दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जायेगी। सेन्टर्स खुलते जायेंगे। यह इतना बड़ा मकान भी कम पड़ जायेगा। आगे चल कितने मकान चाहिए। ड्रामा में आने वालों के लिए प्रबन्ध भी ज़रूर चाहिए। बच्चे अपने लिए सब कुछ कर रहे हैं। तो बच्चों को बेहद की खुशी होनी चाहिए। परन्तु माया घड़ी-घड़ी बुद्धियोग तोड़ देती है। अभी माला बन नहीं सकती – अन्त में रुद्र माला बनेगी, फिर विष्णु की माला बन जायेगी। बाबा कितना अच्छी रीति समझाते हैं। अम्बा के मंदिर के आगे भी अपना सेन्टर होना चाहिए जो सबको समझाया जाए, तो अभी यह ज्ञान ज्ञानेश्वरी है।

यह बेहद का स्कूल है। हजारों यहाँ पढ़ते हैं। जो अच्छी रीति नहीं पढ़ते वह खुद भी समझते होंगे कि हमारा योग पूरा नहीं लगता है। वह बच्चे बाप की दिल पर चढ़ नहीं सकते। बच्चे बने हैं तो माँ बाप पालना तो करते हैं ना। फिर भी बाप समझाते हैं मात-पिता और अनन्य बच्चों को फालो करो। सर्विस तो बहुत करनी है।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे बेहद के बाप पास आते ही हैं रिफ्रेश होने लिए क्योंकि बच्चे जानते हैं बेहद के बाप से बेहद विश्व की बादशाही मिलती है। यह कभी भूलना नहीं चाहिए। यह सदैव याद रहे तो भी बच्चों को अपार खुशी रहे। बाबा ने यह बैज जो बनवाये हैं, इसे चलते-फिरते

घड़ी-घड़ी देखते रहो। ओहो! भगवान की श्रीमत से हम यह बन रहे हैं। बस बैज़ को देख बाबा, बाबा करते रहो। तो सदैव स्मृति रहेगी। हम बाप द्वारा यह (लक्ष्मी-नारायण) बनते हैं। तो बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना।

तुम बच्चों की ईश्वरीय रेस चल रही है। जितना आगे दौड़ते जायेंगे उतना नई दुनिया के नज़ारे भी नज़दीक आते जायेंगे। खुशी बढ़ती जायेगी। जिनको नज़ारे नजदीक नहीं दिखाई पड़ते उनको खुशी भी नहीं होगी। अभी तो कलियुगी दुनिया से वैराग्य और सतयुगी नई दुनिया से बहुत प्यार होना चाहिए। शिवबाबा याद रहेगा तो स्वर्ग का वर्सा भी याद रहेगा। स्वर्ग का वर्सा याद रहेगा तो शिवबाबा भी याद रहेगा। तुम बच्चे जानते हो अभी हम स्वर्ग तरफ जा रहे हैं, पाँव नर्क तरफ हैं, सिर स्वर्ग तरफ है। अभी तो छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। बाबा को सदैव यह नशा रहता है ओहो! हम जाकर यह बाल (मिचनू) कृष्ण बनूँगा। जिसके लिए बच्चियां इनएडवान्स सौगातें भी भेजती रहती हैं। जिन्हों को पूरा निश्चय है वही गोपिकायें सौगातें भेजती हैं, उन्हें अतीन्द्रिय सुख की भासना आती है। हम ही अमरलोक में देवता बनेंगे। कल्प पहले भी हम ही बने थे फिर हमने 84 पुनर्जन्म लिए हैं। यह बाजोली याद रहे तो भी अहो सौभाग्य – सदैव अथाह खुशी में रहो। बड़ी लाटरी मिल रही है। 5000 वर्ष पहले भी हमने राज्यभाग्य पाया था फिर कल पायेंगे।

बेहद के बाप और दादा दोनों का मीठे-मीठे बच्चों से बहुत लव है, कितना लव से पढ़ाते हैं। काले से गोरा बनाते हैं। तो बच्चों को भी खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। पारा चढ़ेगा याद की यात्रा से। बाप कल्प-कल्प बहुत प्यार से लवली सर्विस करते हैं। 5 तत्वों सहित सबको पावन बनाते हैं। कितनी बड़ी बेहद की सेवा है। बाप बहुत प्यार से बच्चों को शिक्षा भी देते रहते क्योंकि बच्चों को सुधारना बाप वा टीचर का ही काम है। बाप की है श्रीमत, जिससे ही श्रेष्ठ

बनेंगे। जितना प्यार से याद करेंगे उतना श्रेष्ठ बनेंगे। यह भी चार्ट में लिखना चाहिए हम श्रीमत पर चलते हैं वा अपनी मत पर चलते हैं। श्रीमत पर चलने से ही तुम एक्यूरेट बनेंगे। जितनी बाप से प्रीति बुद्धि होगी उतनी गुप्त खुशी रहेगी और ऊंच बनेंगे। अपनी दिल से पूछना है इतनी अपार खुशी हमको है! बाप को इतना प्यार करते हैं! प्यार करना माना ही याद करना है। याद से ही एवरहेल्दी, एवरवेल्दी बनेंगे। पुरुषार्थ करना होता है और किसी की भी याद न आये। एक शिवबाबा की ही याद हो, स्वदर्शन चक्र फिरता रहे तब प्राण तन से निकले। एक शिवबाबा दूसरा न कोई। यही अन्तिम मंत्र है अथवा वशीकरण मंत्र, रावण पर जीत पाने का मंत्र है।

बाप समझाते हैं मीठे बच्चे इतना समय तुम देह-अभिमान में रहे हो अब देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करो। दृष्टि का परिवर्तन होना ही निश्चयबुद्धि की निशानी है। सब देह के सम्बन्धों को भूल अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो, आत्मा भाई-भाई की दृष्टि हो जाए, तब ही ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी भाई-बहन की दृष्टि पक्की हो जायेगी। सवेरे-सवेरे उठकर बाप को याद करो – नींद आ गई तो कमाई में घाटा पड़ जायेगा। अमृतवेले उठकर बाबा से मीठी मीठी रुहरिहान करो। बाबा आपने हमको क्या से क्या बना दिया, बाबा कमाल है आपकी। बाबा आप हमें अथाह खजाना देते हो, विश्व का मालिक बनाते हो! बाबा हम आपको कभी भूल नहीं सकते। भोजन खाते, कामकाज करते बाबा आपको ही याद करेंगे। ऐसे-ऐसे प्रतिज्ञा करते-करते फिर याद पक्की हो जायेगी। मोस्ट बिलवेड बाबा नॉलेजफुल भी है, ब्लिसफुल भी है। नम्बरवन पतित से हमको नम्बरवन पावन बनाते हैं। बस मीठे-मीठे बाबा की याद में गदगद होना चाहिए। बाबा को यह सुमिरण कर बहुत अन्दर में खुशी होती है। ओहो! मैं ब्रह्मा सो विष्णु बनूँगा! फिर 84 जन्मों बाद ब्रह्मा बनूँगा! फिर बाबा हमको विष्णु बनायेगा। फिर आधाकल्प बाद रावण पतित बनायेगा! कितना वन्डरफुल ड्रामा है! यह सुमिरण कर सदैव हर्षित रहता हूँ! शिवबाबा कितना लायक बनाते हैं। वाह तकदीर वाह! ऐसे-ऐसे विचार करते एकदम मस्ताना

हो जाना चाहिए। वाह! हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं! बाकी हम बहुत अच्छी सर्विस करते हैं, इसमें ही सिर्फ खुश नहीं होना है। पहले गुप्त सर्विस अपनी यह (याद की) करते रहो। अशरीरी बनने करा अभ्यास करना है, इससे ही तुम्हारा कल्याण होना है। अभ्यास पड़ जाने से फिर घड़ी-घड़ी तुम अशरीरी हो जायेंगे। आज बाबा खास इस पर ज़ोर दे रहे हैं, जो यह अभ्यास करेंगे वही कर्मातीत अवस्था को पा सकेंगे और ऊंच पद पायेंगे। इसी अवस्था में बैठे-बैठे बाप को याद करते घर चल जायें। दिन-प्रतिदिन याद का चार्ट बढ़ाना चाहिए। देखना है तमोप्रधान से सतोप्रधान कितने परसेन्ट बनें हैं? किसको दुःख तो नहीं देते हैं? किसी देहधारी में बुद्धि फंसी हुई तो नहीं है? बाप का सन्देश कितनों को देते हैं? ऐसा चार्ट रखो तो बहुत उन्नति होती रहेगी। अच्छा।

ओम् शान्ति। बच्चे किसकी याद में बैठे हैं? (शिवबाबा की) शिवबाबा को ही याद करना है और कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। तुम्हारे सामने यह देहधारी बैठा हुआ है, इनको भी याद नहीं करना है। तुमको याद सिर्फ एक विदेही को करना है, जिसको अपनी देह नहीं है। यह मम्मा बाबा अथवा अनन्य सर्विसएबुल जो बच्चे हैं, वह सब सीखते हैं शिवबाबा द्वारा। तो याद भी शिवबाबा को ही करना है। भल कोई बच्चे जाकर किसको समझाते हैं तो भी बुद्धि में समझना है कि शिवबाबा ने इनको पढ़ाया है। बुद्धि में शिवबाबा की याद रहनी चाहिए न कि देहधारी की। अगर इस देहधारी को तुम याद करते हो, तो यह कॉमन हो जाता है। बाप कहते हैं कभी भी देहधारी में लटकना नहीं है। तुमको याद एक को करना है – जो सभी को सद्गति देने वाला है। अगर इस साकार को याद किया तो वह याद निष्फल है। जैसे लौकिक बाप को बच्चे याद करते हैं, उनसे कोई फ़ायदा नहीं होता। कोई ब्राह्मणी को याद किया कि हमको फलानी ब्राह्मणी पढ़ावे, तो निष्फल हुआ। कोई की भी याद नहीं रहनी चाहिए। हमको शिवबाबा पढ़ा रहे हैं, कल्याणकारी शिवबाबा है। देहधारी पर कभी बलिहार नहीं जाना होता है। यह बाबा भी

तुमको कहते हैं मनमनाभव। देहधारी को याद किया तो दुर्गति को पायेंगे। बाप जानते हैं कोई-कोई की ब्राह्मणी के साथ बुद्धि जुट जाती है, यह राँग है। देहधारी में आसक्ति नहीं होनी चाहिए। बाबा का फरमान है मामेकम् याद करो। सुबह को उठकर मुझे याद करो। देहधारी को लौकिक कहा जायेगा। उनको याद नहीं करना है। एक मुझ निराकार को ही याद करो। गायन भी एक का ही है। शिवाए नमः, शिव है विदेही। वर्सा तुमको बाप से लेना है। यह देह भी उनकी नहीं है।

बाप कहते हैं पाप करते रहेंगे तो वृद्धि होती रहेगी फिर सौगुणा दण्ड भोगना पड़ेगा। चोर चोरी करता रहता है, उनको चोरी बिगर कुछ सूझता ही नहीं है। उनको जेल बर्ड कहा जाता है। बाप बच्चों को समझाते हैं कि सिवाए बाप की याद दिलाने के और कोई झरमुई-झगमुई की फालतू बात करे तो समझो यह दुश्मन है। फालतू बातें न करनी है, न सुननी है। एक दो को सावधानी देते रहो कि शिवबाबा को याद करो। कोई को फिर गुस्सा भी लगता है कि फलाना मुझे क्यों कहता है? परन्तु तुम्हारा फ़र्ज है याद दिलाना। याद से विकर्म विनाश होंगे। जब तक कर्मातीत अवस्था नहीं आई है तो मन्सा-वाचा-कर्मणा कुछ न कुछ भूलें तो होती रहती हैं। कर्मातीत अवस्था पिछाड़ी में आयेगी। सो भी थोड़े पास विद ऑनर होंगे। जो सर्विस नहीं करते उनकी यह अवस्था आयेगी नहीं। सर्विस पर जो रहते हैं वह एक दो को याद कराते रहते हैं – परमपिता परमात्मा के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? बाबा अपना मिसाल बताते हैं कि मैं भी भोजन पर बैठता हूँ, स्नान करता हूँ, तो मुझे भी याद दिलाओ कि शिवबाबा को याद करो। भल खुद याद न भी करे, परन्तु बाबा का डायरेक्शन अमल में लाना चाहिए। अगर अपना कल्याण करना चाहते हो तो याद दिलाओ एक दो को। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। भोजन बनाने वाले ब्राह्मणों का योग ठीक चाहिए तब तो भोजन में ताकत आयेगी। याद से ही तुमको जीयदान मिलता है। अपना हीरे जैसा जीवन बनाना है। सहज ते सहज बात है मुझे याद करो, पवित्र बनो। पतित बनें तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा। मुझ बाप को याद करते रहेंगे तो विकर्म भी विनाश होंगे और हम वर्सा भी देंगे। थोड़ा याद करेंगे तो वर्सा भी थोड़ा मिलेगा। गीता में भी आदि और

अन्त में आता है मनमनाभव। कोई भी देहधारी की याद नहीं आनी चाहिए। शिवबाबा को याद करेंगे तो तुम्हारा कल्याण होगा। पाप दग्ध होंगे। गंगा में स्नान करने से कोई पाप विनाश नहीं होते हैं। भल कहते हैं भावना है परन्तु भावना ही रॉंग है। गंगा पतित-पावनी नहीं है। पतित-पावन एक बाप है। कोई भी स्थूल चीज़ को तुम्हें याद नहीं करना है। एक शिवबाबा को ही याद करना है।

बाप कहते हैं मैं आकर बंधन से छुड़ाए सम्बन्ध में बुद्धियोग लगवाता हूँ। सतयुग में नये सम्बन्ध की प्रालब्ध अभी के पुरुषार्थ से मिलती है। जो सम्बन्ध को जानते ही नहीं तो पुरुषार्थ कैसे करेंगे। यह तो जरूर होगा, एक तरफ सम्बन्ध खींचेगा दूसरे तरफ बंधन खींचेगा। यह लड़ाई होती है। सतयुग, त्रेता में सम्बन्ध की बात ही नहीं। द्वापर, कलियुग में भी सम्बन्ध की बात नहीं। संगम पर ही सम्बन्ध और बंधन का ध्यान रहता है। अब तुम जानते हो आसुरी बंधन से ईश्वरीय सम्बन्ध में जा रहे हैं। संगम है ही पुरुषार्थ का युग। तुमको ही बंधन और सम्बन्ध का पता है। आसुरी बंधन में रावण ने लाया। ईश्वर फिर ईश्वरीय सम्बन्ध में ले जाते हैं। बाप तुम्हारा बुद्धियोग अपने साथ जोड़ते हैं, जिससे तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। भक्ति में जो पुरुषार्थ करते हैं वह है अयथार्थ। यथार्थ पुरुषार्थ परमपिता ही कराते हैं। सर्वव्यापी के ज्ञान से परमात्मा से सम्बन्ध नहीं हो सकता और ही टूट पड़ता है। अब तुमने एक बाप के साथ बुद्धियोग जोड़ा है और स्वर्ग वैकुण्ठ की राजाई के लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो।

तुम बच्चे जानते हो हमारी यह गुप्त पढ़ाई है। बेहद का बाप आकर आत्माओं को पढ़ाते हैं। आत्मायें ही पढ़ती हैं। अगर कृष्ण भगवान होता तो तुम्हारा बुद्धियोग उनके चित्र की तरफ जाता, उनकी तरफ कशिश होती। उनके चित्र बिगर तुम रह नहीं सकते। परन्तु कृष्ण तो भगवान है नहीं। तो उल्टा समझने के कारण मनुष्यों को कृष्ण की ही याद रहती है। जिस्मानी याद तो

बड़ी सहज है। रूहानी याद में मेहनत है। पूछते हैं बाबा कैसे याद करें? किसको याद करें? कृष्ण का चित्र तो स्वीट है, परमपिता परमात्मा तो निराकार है। वह खुद कहते हैं, मैं इस बुजुर्ग शरीर में बैठ तुम बच्चों को फिर से सहज राजयोग और ज्ञान सिखलाता हूँ। है बहुत सहज सिर्फ बाबा को याद करना है। शिवबाबा को याद तो करते हैं ना। बनारस में कहते हैं शिव काशी, फिर कहते हैं विश्वनाथ गंगा। विश्वनाथ ने गंगा लाई। अब पानी के गंगा की तो बात नहीं। ज्ञान सागर ने यह ज्ञान गंगायें लाई हैं। तो ज्ञान गंगाओं को जरूर ज्ञान देने वाले ज्ञान सागर बाप की याद रहनी चाहिए। हे ज्ञान गंगायें, अगर तुम अपने को ज्ञान गंगा समझती हो तो ज्ञान सागर को याद करो। जो अपने को ज्ञान गंगा नहीं समझते वह अज्ञानी ठहरे। तुम बच्चे जानते हो हमको ज्ञान सागर ने सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दिया है। अब हमको फिर सबको जाकर ज्ञान अमृत देना है। फिर कोई अंचली लेते, कोई लोटा भरते। वैष्णव जो होते हैं उनकी गंगा जल से प्रीत रहती है। वह हमेशा गंगाजल काम में लाते हैं। तुम्हारी फिर इस ज्ञान से प्रीत है क्योंकि इस ज्ञान से तुम सद्गति को पाते हो। शिवबाबा ने यह ज्ञान दिया है कि तुम आत्मा मुझ बाप को याद करो। वर्से को भी तुम जान गये हो। यह कौन समझाते हैं? परमपिता परमात्मा।

अब नये झाड़ का कलम लग रहा है तो ऐसे झाड़ को माया के तूफान देखो कितने लगते हैं। जब तूफान लगता है तो बगीचे में जाकर देखो कितने फल फूल गिरे हुए होते हैं। थोड़े बच जाते हैं। यहाँ भी ऐसे है कि माया के तूफान आने से और बाबा की याद न रहने से मुरझा जाते हैं। कोई तो गिर पड़ते हैं। हातमताई का खेल है ना कि मुख में मुहलरा डालते थे। अगर बुद्धि में बाबा याद हो तो माया का असर नहीं होता है। बाबा यह थोड़ेही कहते हैं कि धन्धा आदि न करो। धन्धा आदि करते बाप को याद करो – इसमें मेहनत है। राजाई लेना, कोई कम बात है क्या! कोई हद की राजाई लेते हैं तो भी कितनी मेहनत करनी पड़ती है।

बच्चे जानते हैं कि हम रात के राही हैं। परन्तु ऐसे नहीं कि तुम कोई रात्रि को ही बुद्धियोग लगाते हो वा मुसाफिरी पर हो, नहीं। यह तो बेहद की बात है। वो जिस्मानी यात्रा सिर्फ दिन में ही होती है। रात्रि को नहीं जाते हैं। रात्रि को तो सब सो जाते हैं। इस यात्रा को तो तुम जानो अथवा बाप जाने अर्थात् निराकार परमपिता परमात्मा जाने और निराकारी आत्मायें ही जानें। अभी परमपिता परमात्मा शरीर में बैठ यह यात्रा सिखलाते हैं। यह कभी न कोई शास्त्र में सुना, न कोई विद्वान पण्डित सिखला सकते हैं। यह यात्रा रात को भी, अमृतवेले भी हर समय हो सकती है। भक्त लोग सवेरे उठकर कोठरी में बैठ जाते हैं। पूजा करते हैं। तुमको भी कहा जाता है कि सवेरे याद की यात्रा अच्छी होगी। यह है रूहानी यात्रा। बच्चे देही-अभिमानी बने हैं। हम आत्मा हैं, यह निश्चय करना भी मासी का घर नहीं है। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बहुत बच्चे हैं जो इस यात्रा को जानते भी नहीं हैं। बुद्धि में बैठता ही नहीं है। अगर यात्रा पर चला हुआ है तो नित्य यात्रा करते रहे ना। यात्रा में फिर ठहरना थोड़ेही होता है। ठहर जाते हैं अर्थात् यात्रा करने का शौक नहीं है। तुम्हारी है गुप्त यात्रा, इनका वर्णन कोई शास्त्र में नहीं है। जितना यात्रा पर बुद्धि योग रहेगा अर्थात् बाप को याद करते रहेंगे उतना कमाई होगी। बुद्धि का योग दौड़ी पहनता है – बाप के पास, इसमें आत्म-अभिमानी बनना है। आधाकल्प तुम देह-अभिमानी बने हो। वह आधाकल्प की आदत तुमको इस एक जन्म में मिटानी है अथवा खत्म करनी है। यह कोई वह सतसंग नहीं है शास्त्र सुनने का। तुम बैठे हो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हो। फिर बाप की मत पर भी चलना है, जो मत बाबा ब्रह्मा द्वारा दे रहे हैं। फिर लक्षण भी अच्छे रखने हैं। शैतानी लक्षण नहीं होने चाहिए। उसमें भी जो पहला नम्बर अशुद्ध अहंकार है उनके बाद सब और विकार आते हैं। तो अपने को आत्मा निश्चय करना, यह अभ्यास बड़ी मेहनत का है। बहुतों से यह मेहनत पहुँचती नहीं है। क्यों? तकदीर में नहीं है। इस यात्रा पर रहने वाले की निशानी क्या होगी? वह बड़े गम्भीर और समझदार रहते हैं। एक बाप की याद के सिवाए उनको और कोई बात अच्छी नहीं लगेगी। शान्ति तो बहुत लोग पसन्द करते हैं। सन्यासी लोग भी एकान्त में जंगल आदि में जाकर रहते हैं। परन्तु वह तत्व अथवा ब्रह्म की याद में रहते हैं। वह

यात्रा तो है झूठी क्योंकि ब्रह्म अथवा तत्व कोई सर्वशक्तिमान बाप तो है नहीं। आत्माओं का बाप तो एक ही निराकार परमपिता परमात्मा शिव है, जिसको सब आत्मायें पुकारती हैं। आत्मा ऐसे कब नहीं कहती, हे ब्रह्म बाबा, हे तत्व बाबा। नहीं। आत्मा सदैव कहती है हे परमपिता परमात्मा, उनका नाम चाहिए। ब्रह्म तो महतत्व रहने का स्थान है। बाप कहते हैं ब्रह्म ज्ञानी वा ब्रह्म योगी कहना यह भ्रम है। कोई ने कह दिया और मान लिया। भक्ति में सब झूठा रास्ता बताते हैं, इसलिए देही-अभिमानी बन नहीं सकते। आत्मा सो परमात्मा कह दिया तो फिर योग किससे लगायें। बाप कहते हैं यह सब मिथ्या ज्ञान है अर्थात् ज्ञान ही नहीं है।

- पहले श्रीमत कहती है कि मुझे याद करो। एक घण्टा आधा घण्टा सिर्फ याद जरूर करो। कई बच्चे सारे दिन में 5 मिनट भी याद नहीं करते। यह सब लक्षणों से पता लग जाता है। अगर याद करते हो तो चलन बड़ी रॉयल होनी चाहिए। बच्चों ने राजाओं को कब देखा नहीं है। यह बाबा का रथ तो बहुत अनुभवी है। सबको जानते हैं। कोई जेवर आदि लेने होंगे तो महाराजा आयेगा – सिर्फ हाथ लगाया और गये फिर पोट्री आपेही बात करेंगे। तो उन्हों का कितना दबदबा रहता है।

- जिसके साथ बच्चों का अभी योग है उनकी बाहर मनुष्य महिमा गाते रहते हैं। तुम उनकी याद में बैठे हो। अपने को आत्मा समझ देह का अभिमान छोड़ एक की ही याद में रहना है। अभी तुम आत्म-अभिमानी बने हो। पहले थे देह-अभिमानी। सतयुग में तुम बाप को नहीं जानते क्योंकि सुख में होते हो तो बाप याद नहीं रहता। यहाँ दु:खों में हो तब पुकारते हो। गायन भी है दु:ख हर्ता – सुखकर्ता। वास्तव में सच्चा-सच्चा हरिद्वार यह है। मनुष्य हरी कहते हैं कृष्ण को, बैकुण्ठ को कृष्ण का हरी द्वार कहते हैं।

बाप जानते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कितने सपूत हैं, कितने कपूत हैं। बाबा मम्मा कहकर फिर भी छोड़ देते हैं। गीत भी कहता है ऐसे बाप को क्यों भूल जाते हो? ऐसे बाप को रोज़ चिट्ठी लिखनी चाहिए। बाप भी रोज़ खज़ाना देते हैं। रोज़ पढ़ाते भी हैं, प्यार भी देते हैं। बाप, टीचर, सतगुरू तीनों ही हैं। लौकिक बाप को तो बच्चे चिट्ठी लिखते हैं। गुरू को भी याद करते हैं। परन्तु जो सदा सुख देने वाला, सचखण्ड का मालिक बनाने वाला बाप है उनको भूल जाते हैं। चिट्ठी भी नहीं लिखते हैं। माया ने मार डाला वा विकार में ढकेल दिया। बाबा तो मुरली में ही बच्चों को सावधान करेंगे ना। बाबा राय देंगे कि ऐसे-ऐसे अपने को बचाते रहो क्योंकि यह है बाप का सबसे बड़ा बच्चा। सबसे आगे चल रहा है। इनके पास सब प्रकार के तूफान आदि आते हैं। महावीर, हनूमान इनको ही कहेंगे। आगे रूसतम होने के कारण माया भी रूसतम हो पहले इनसे ही लड़ेगी। बाबा कहते हैं तुमको जो तूफान आते हैं वह पहले मुझे आयेंगे। जो बाबा अनुभव भी बताते हैं। तुम कहेंगे बाबा आपको तूफान कैसे आयेंगे? आप तो बुज़ुर्ग हो। बाबा कहते हैं हमारे पास सब आते हैं। नहीं तो हम तुमको सावधान कैसे करें? परन्तु बच्चे बाबा को बताते ही नहीं हैं। तूफान में घुटका खाकर डूब मर जाते हैं। अपना पद भ्रष्ट कर देते हैं इसलिए बाप कहते हैं एक दो को याद दिलाते रहो – बाबा को पत्र तो लिखो। हर बात में एक दो को सावधान करो। माया बड़ी तीखी है। घूसा मार देती है।

बाबा कहते हैं सवेरे और रात को एक घण्टा रेग्युलर पढ़ो। सवेरे का समय तो सबको मिलता है। एक सेकेण्ड की बात है। सिर्फ बाबा और वर्से को याद करना है। फिर भी तुम भूल जाते हो। फिर कहते हो बाबा हम क्या करें – याद भी बड़ी सहज है। सृष्टि चक्र का ज्ञान भी बड़ा सहज है। यह है पाप आत्माओं की दुनिया, तुमको पुण्य की दुनिया में जाना है। शिवबाबा को याद करो। गृहस्थ व्यवहार में रहने वालों के लिए भी बहुत सहज है। तो बाप बच्चों को जरूर याद करते हैं। फलाने की कभी चिट्ठी नहीं आती है, क्या हो गया है? वा जब सामने आते हैं तो

पूछता हूँ – क्या बेहोश तो नहीं हो गये थे? बाप के साथ इतना लव नहीं, पाई पैसा कमाने वाले में लव चला जाता है। बाबा को समाचार देना चाहिए, बाबा हम जीते हैं, खुश हैं। औरों को भी परिचय देते रहते हैं। बाबा तो रोज़ मुरली में याद-प्यार भेजते हैं। बाकी एक-एक का नाम तो नहीं लिख सकते हैं, तो बच्चों को भी अपना समाचार देना चाहिए।

ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। तुम बाबा के बच्चे बने ही हो वर्सा लेने के लिए। बाबा कहते हैं याद रखना, भूलना नहीं। कहते हैं बाबा घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। अरे तुमको जो नर्कवासी बनाते हैं उनको याद करते हो और स्वर्गवासी बनाने वाले बाप को भूल जाते हो? बाप को नहीं भूलेंगे तो वर्से को भी नहीं भूलेंगे। इस समय तो बाबा हाज़िर नाज़िर है। कहते भी हैं हाजिराहजूर...वह भी गुप्त है। ऐसे नहीं कहेंगे कि हम उनको देखते हैं। आत्मा गुप्त तो बाप भी गुप्त।

8 पास विद आनर होते हैं। उनमें आना चाहिए। उनमें नहीं तो 108 में आओ। मार्जिन तो 16108 की भी है। 16108 की बहुत बड़ी माला होती है। उनको बैठ खींचते हैं। यहाँ माला जपने की बात नहीं है। बाप तो कहते हैं फालो करो। यह ब्रह्मा बूढ़ा पढ़कर पास हो नम्बरवन में जाता है। मम्मा जवान भी नम्बरवन में जाती है। तो तुम पुरुषार्थ क्यों नहीं करते हो। ग़फलत क्यों करते हो? बाप को पत्र भी नहीं लिखते, याद भी नहीं करते हैं। प्रण भी कर जाते हैं परन्तु बाहर गये खलास। हम कह भी देते हैं – तुम बाहर जाने से भूल जायेंगे। कहते हैं बाबा हम नहीं भूलेंगे। फिर भूल जाते हैं। वन्डर है ना। यह है बिल्कुल नई पढ़ाई जो कोई शास्त्र में नहीं है। कोई समझ नहीं सकते। अब बाबा ने दृष्टि दी है – इस अन्तिम जन्म में। बाबा सुनाते हैं – हम गीता भी पढ़ते थे। नारायण का भी पूजन करते थे। गद्दी पर भी नारायण का चित्र रखते थे (हिस्ट्री सुनाना) लक्ष्मी को कैसे मुक्त कर दिया। दुनिया वालों से बड़ा युक्ति से चलना पड़ता है। तुम भी

गुप्त रीति बाबा का परिचय देते रहो कि बाप और वर्से को याद करो। स्वर्ग के हैं देवी-देवता, इसलिए लक्ष्मी-नारायण का चित्र बनाया है। पहले त्रिमूर्ति नहीं डाला था क्योंकि ब्रह्मा को देख बिगड़ जाते हैं। परन्तु ब्रह्मा बिगर काम कैसे हो। बी.के. बाप को नहीं देखेंगे तो काम कैसे होगा? बाप कहते हैं गीता में लिखा हुआ है – मनमनाभव, मध्याजी भव। चाहे मुक्ति का वा जीवन मुक्ति का दोनों वर्सा मैं दे सकता हूँ और कोई नहीं। बहुत समझने की बातें हैं। अमृतवेले उठकर विचार सागर मंथन करना है जरूर। दिन में भल काम करो परन्तु अमृतवेले 4 बजे से 5 बजे तक बैठकर याद करो तो बहुत सुख फील होगा। बाबा स्वीट होम से हम बच्चों को पढ़ाने आते हैं, फिर चले जाते हैं। कहते हैं मुझे याद करो तो खाद निकलेगी। जब सच्चा सोना बन जायेंगे तब पास विद आनर होंगे। अगर ऊंच पद पाना है तो पुरुषार्थ से क्या नहीं हो सकता है? बाप फिर भी कहते हैं – इस ईश्वरीय बचपन को नहीं भूलना। ऐसे बाप को घड़ी-घड़ी याद करना चाहिए। याद से तुम कंचन बनते हो। अच्छा!

- तुम जानते हो बाबा यह जो नॉलेज देते हैं – यह सब धर्म वालों के लिए है। बाकी सबका बुद्धियोग उस बाप से टूटा हुआ है। घोस्ट बुद्धियोग लगाने नहीं देते हैं और ही बुद्धियोग तोड़ देते हैं। बाबा आकर घोस्ट पर जीत पहनाते हैं। आजकल दुनिया में रिद्धि सिद्धि वाले बहुत हैं। एक दो को दु:ख देते हैं। यह है ही घोस्टों की दुनिया। काम रूपी विकार है तो एक दो को आदि-मध्य-अन्त दु:ख देते हैं। एक दो को दु:ख देना घोस्ट का काम है। सतयुग में घोस्ट होता नहीं। घोस्ट नाम बाइबिल में चला आता है। रावण माना घोस्ट। रामराज्य में घोस्ट होता ही नहीं। जयजयकार हो जाती है।

- ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना की थी। अब कलियुग का अन्त है फिर से स्थापना कर रहे हैं। बुद्धि में धारण करना है, यह नॉलेज बड़ी सहज है। माया के तूफान योग में ठहरने नहीं देते

हैं। बुद्धि चक्रित हो जाती है। नहीं तो समझाना बहुत अच्छा है। पहले समझाना चाहिए रचयिता एक है, उनको सब फादर कहते हैं।

ब्रह्मा का दिन था फिर भक्ति मार्ग शुरू हुआ है। वह चला आ रहा है। यह राजयोग बाबा ही आकर सिखलाते हैं। यह स्मृति में रहना चाहिए। कहते हैं ना अपनी घोट तो नशा चढ़े। परन्तु बुद्धि का योग चाहिए – बाबा के साथ। यहाँ तो बहुतों का बुद्धियोग लटका हुआ है, पुरानी दुनिया के मित्र सम्बन्धी आदि की तरफ या देह-अभिमान में फँसे रहते हैं। थोड़ा बीमारी होती है तो मर पड़ते हैं। अरे योग में रहेंगे तो दर्द भी कम हो जायेगा। योग नहीं तो बीमारी कैसे छूटे, ख्याल करना चाहिए मात-पिता जो पावन बनते हैं, वही फिर सबसे पहले पतित भी बनते हैं, उनको बहुत भोगना भोगनी पड़ती है। परन्तु योग में रहने कारण बीमारी हट जाती है। नहीं तो उनकी भोगना सबसे जास्ती है। परन्तु योगबल से दु:ख दूर होते हैं और बहुत खुशी में रहते हैं। बाबा से हम स्वर्ग के सुख घनेरे लेते हैं। बहुत बच्चे हैं जो बीमारी में एकदम मूर्छित हो जाते हैं। सुरजीत नहीं होते, तो समझते हैं यह देह-अभिमान में लटकते रहते हैं। अपने को आत्मा समझते नहीं, सारा दिन देह में ध्यान है। जैसे मरे पड़े हैं। बाबा आकर कब्र से उठाए ज्ञान की टिकलू-टिकलू सिखाते हैं। तुम्हें ज्ञान की बुलबुल बनना है।

बच्चों की बुद्धि में यह सारा नॉलेज आ गया है। नॉलेज तो सहज है। सिर्फ योग की मेहनत करनी पड़ती है। कोई जास्ती याद करते हैं, कोई थोड़ा याद करते हैं। तो मात-पिता बच्चों को समझाते हैं – लौकिक सम्बन्धियों से भी तोड़ निभाना है। आज नहीं तो कल उन्हों की भी बुद्धि में बैठेगा। देखेंगे यह तो ठीक है। एक बाप को याद करना है। कोई भी साधू-सन्त गुरू आदि को याद नहीं करना है। याद चैतन्य को भी करते हैं तो जड़ को भी करते हैं। सतयुग में कोई में भी मोह नहीं रहता।

जो कल्प पहले पार्ट चला है, वही एक्ट रिपीट होती जायेगी। जब मेरे बनेंगे तब उनको पढ़ाऊंगा। बाप को और घर को याद करो। सुखधाम और शान्तिधाम को याद करना – बहुत सहज है। परन्तु बुद्धि बड़ी विशाल चाहिए। छोटे बच्चे समझ नहीं सकेंगे। वह सिर्फ बाबा, बाबा कहेंगे और कोई के पास जायेंगे नहीं। यहाँ तो सब हैं गुप्त बातें। समझ भी है – बुद्धि को ताकत मिलती है। ताकत मिलने से सोने के बन जाते हैं। कोई कमजोर होते हैं तो उनको सोने का सोल्युशन पिलाते हैं। सोने का पानी भी बनाते हैं। यहाँ तो तुमको रूहानी नॉलेज मिल रही है। यह नॉलेज ही इनकम है। नॉलेज तो सबको एक ही मिलती है, फिर जो पुरुषार्थ करे। इसमें मूँझने वा घबराने की कोई बात नहीं। सिर्फ बाबा का बनना है। बाप के वर्से को याद करना है। सारा दिन तो निरन्तर याद कर नहीं सकेंगे। धन्धा आदि भी करना है। कोई को तो धन्धा आदि भी नहीं है, फिर भी याद नहीं कर सकते। जब तक कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है, पुरुषार्थ करते रहना है। वह वायुमण्डल दिखाई पड़ेगा। समझेंगे अभी समय नजदीक आता जाता है। जब बहुत दु:ख आयेगा तो फिर भगवान को याद करते रहेंगे। मौत सामने दिखाई पड़ेगा। तुम्हारे में भी सबको अपनी अवस्था का मालूम पड़ जायेगा कि हमारी कमाई कम है। योग होगा तो आत्मा से खाद निकलती जायेगी। फिर बाबा भी बुद्धि का ताला ढीला करेंगे। मनुष्य बीमारी में ईश्वर को याद करते, डर रहता है। सब उनको याद कराते हैं – राम कहो, राम कहो। बाप भी कहते हैं बाप और वर्से को याद करते रहो। एक दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। ऐसे नहीं पुरुष चले, स्त्री को न चलाये। यह जोड़ा है हाफ पार्टनर का, परन्तु आजकल हाफ पार्टनर भी समझते नहीं हैं। कोई-कोई इज्जत रखते हैं। नहीं तो आजकल बच्चे ऐसे निकल पड़े हैं जो बाप की मिलकियत को उड़ा देते हैं, माँ को पूछते भी नहीं। वहाँ तो यह सब बातें होती नहीं, कभी दु:ख नहीं होता।

बच्चे बने हैं तब उनको पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं – मैं तुम्हारा बाप-टीचर-सतगुरू हूँ। सद्गति कर साथ ले जाता हूँ। पावन होने का बहुत सहज उपाय है, जो तुमको बतलाता हूँ। यहाँ बैठ तुम क्या करते हो? बच्चे कहते हैं – बाबा हम आपको याद करते हैं। आपका फरमान है कि निरन्तर मुझे याद करने का पुरुषार्थ करो तो इस योग अग्नि से तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। फिर तुम पवित्र सतोप्रधान बन जायेंगे। अब तुम तमोप्रधान हो, याद से ही खाद निकलेगी। कोई तकलीफ की बात नहीं। एवर निरोगी बनने के लिए कितनी सहज युक्ति है। देवतायें कभी बीमार नहीं होते। इस याद से ही तुम निरोगी बनेंगे। पाप भस्म होने से तुम पावन बन जायेंगे। बड़ी भारी कमाई है। घूमो, फिरो सिर्फ मुझे याद करो। पहले यह प्रैक्टिस करनी है। याद करने से हम 21 जन्म के लिए निरोगी बन जायेंगे। कोई तकलीफ की बात नहीं, सिर्फ मामेकम् याद करो। यह बाप ने आत्माओं को कहा, हे आत्मायें सुनती हो? बाप मुख से कहते हैं मुझे याद करो और घर को याद करो। अब यह नर्क खलास होना है। जाना है अपने घर। भोजन बनाते समय भी याद का पुरुषार्थ करो। भल तुम कर्मयोगी हो तो भी कम से कम 8 घण्टे तक जरूर पहुँचो। 5 मिनट, 10 मिनट, आधा घण्टा ऐसे चार्ट को बढ़ाते रहो। जाँच करते रहो हमने कितना समय बाप को याद किया? जिस बाप से वैकुण्ठ की बादशाही मिलती है, 21 जन्मों के लिए सदा निरोगी बनते हैं। कितनी सहज युक्ति है। चक्र का नॉलेज समझाया है कि चोटी ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह चक्र याद करना है। बीज और झाड़ को याद करो। अभी तुम जानते हो एक धर्म की स्थापना हो तो दूसरे धर्म विनाश हो जायेंगे। सतयुग में एक ही धर्म है। तुमको मेहनत ही इसमें है। बाप कहते हैं मुझ बीज को याद करो और झाड़ को याद करो। स्थापना, विनाश और पालना... यह है बहुत सहज। सहजयोग और सहज ज्ञान। बीज से झाड़ कैसे निकलता है, यह तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है। रहो भल गृहस्थ में परन्तु पवित्र रहना है।

सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। पक्के योगी, राजऋषि होंगे तो दूसरे को तीर लगेगा। खुद में ही कोई कमी होगी तो दूसरे को बोल नहीं सकेंगे। लज्जा आती रहेगी, अपना पाप अन्दर खाता रहेगा। हर बात के लिए बाबा समझाते बहुत अच्छा हैं। कल्प पहले भी ऐसे ही समझाया था। देवी-देवता धर्म तो जरूर स्थापन होगा कोई पढ़े न पढ़े। फिर भी बाप कहते हैं कुछ समझदार बनो। इस कमाई और उस कमाई को बुद्धि में रखो। सच्ची कमाई बाप ही कराते हैं। बाप और स्वर्ग को याद करना, यह भूलो मत। सिमरण करते-करते अन्त मती सो गति हो जायेगी। सवेरे उठ बाप की याद में बैठो। अगर सुस्ती आती है तो समझा जाता तकदीर में नहीं है। ऐसी प्रैक्टिस करनी है जो अन्त में देह भी याद न पड़े। हम आत्मा हैं।

भक्ति मार्ग में अक्सर करके कोई सन्यासी आदि जब बैठते हैं तो ऑखें बन्द करके बैठते हैं। यहाँ कायदा है देखते हुए भी चलायमान नहीं होना है। अपनी परीक्षा लेनी होती है कि देखने से मेरी वृत्ति खराब तो नहीं होती है? हम भल देखते हैं परन्तु बुद्धि का योग बाप के साथ है। मनुष्य भोजन बनायेंगे तो ऑखें बन्द करके तो नहीं बनायेंगे ना। इसको कहा जाता है हथ कार डे दिल यार डे। कर्मेन्द्रियों से काम लेते रहो परन्तु याद बाप को करो। जैसे स्त्री पति के लिए भोजन बनाती है। हाथ से काम करती रहेगी परन्तु बुद्धि में होगा कि मैं पति के लिए भोजन बनाती हूँ। तुम बच्चे बाप की सर्विस में हो। बाप कहते हैं – बच्चे मैं तुम्हारा ओबिडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। बच्चों को अर्थात् आत्माओं को समझायेंगे ना। आत्मा कहेगी – स्वीट फादर, आप जो हमको ज्ञान और योग सिखलाते हो, हम उस सर्विस में ही बिजी हैं। और आपने डायरेक्शन दिया है कि गृहस्थ व्यवहार में रहते, काम करते घड़ी-घड़ी मुझे याद करते रहो। तुम रेगुलर याद कर नहीं सकते। कोई कहे हम 12 घण्टा याद करते हैं, परन्तु नहीं। माया घड़ी-घड़ी बुद्धियोग जरूर हटायेगी। तुम्हारी लड़ाई है ही माया के साथ। माया याद करने नहीं देती है क्योंकि तुम माया पर जीत पाते हो। रावणजीत जगतजीत। राम भी जगतजीत थे। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी जगतजीत थे। तो इन ऑखों से देखते हुए बुद्धि बाप के साथ रहनी चाहिए। देखना है मेरे को कोई चलायमानी

तो नहीं आती है! बाप को पूरा याद करना है। ऐसे नहीं कि मैं तो शिवबाबा का हूँ ही, याद करने की क्या दरकार है। परन्तु नहीं, खास याद करना है और यह नोट रखना है कि सारे दिन में हमने कितना समय याद किया? ऐसे बहुत होते हैं जो सारे दिन की हिस्ट्री लिखते हैं कि हमने सारा दिन यह-यह किया। जरूर अच्छे मनुष्य ही लिखेंगे। अच्छी चाल लिखते हैं तो पिछाड़ी वाले देखकर सीखें। बुराई लिखें तो उनको देख और भी बुराई सीखेंगे। अब बाप बच्चों को राय देते हैं कि तुमको चार्ट रखना है। नॉलेज तो बहुत सहज है। भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के हठयोग आदि सिखलाते हैं। उन्हों को यह पता नहीं है कि बाप ने कौन सा योग सिखलाया था? भल कोई-कोई अक्षर भी हैं – मनमनाभव, देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो। अब उनके लिए सर्वव्यापी कहना, यह तो रांग हो जाता है। कोई याद कर ही नहीं सकते। पत्थरबुद्धि होने कारण कुछ भी अर्थ नहीं समझते। बाप समझाते हैं – मुझ बाप को याद करो। यह मेरी देह नहीं है। कृष्ण की आत्मा तो कह न सके। निराकार बाप ही कहते हैं अपने को आत्मा अशरीरी समझो। तुम अशरीरी (नंगे) आये थे। उन्होंने फिर नागा समझ लिया है। भक्तिमार्ग में अयथार्थ उठा लिया है। बाप ने कहा – अपने को देह से अलग समझो। देह अहंकार छोड़ो, देही-अभिमानी बनो। सारी आयु तुम अपने को देह समझते आये हो। अभी यह अन्तिम जन्म है। अभी तुमको देही-अभिमानी बनना है। सतयुग में देवतायें आत्म-अभिमानी थे।

मीठे-मीठे बच्चे बाप की याद में बैठे हैं। यह किसने कहा और किसको? सभी आत्माओं के बाप ने अपने बच्चों, आत्माओं से बोला। आत्माओं ने आरगन्स से सुना कि बाबा ने क्या कहा? बाप ने कहा, अपने बाप को याद करते हो? बाप को याद करने के लिए क्या आंखें बन्द करनी होती हैं? बच्चे जब बाप को याद करते हैं तो आंखे तो खुली हुई होती हैं। उठते-बैठते, चलते-फिरते बच्चों को बाप की याद रहती है। आंखे बन्द करने की दरकार नहीं। आत्मा

जानती है कि मेरा बाप इन आरगन्स से मेरे से बात करते हैं। परमधाम से आये हैं, इस पतित पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाने। यह बुद्धि में है, आंखे तो खुली हुई हैं। बाबा बात करते हैं, तुम सुनते भी हो और याद में भी हो। कौन सुनाते हैं? परमपिता परमात्मा। उनका नाम क्या है? जैसे तुम्हारे शरीर का नाम है। वह बदलता रहता है। एक शरीर लिया, छोड़ा फिर दूसरा लिया तो नाम भी दूसरा पड़ेगा। आत्मा का नाम बदलता नहीं है। बाप कहते हैं मैं भी आत्मा हूँ, तुम भी आत्मा हो। मैं परमधाम में रहने वाला परम आत्मा हूँ, इसलिए सुप्रीम आत्मा कहते हैं। सुप्रीम ऊंचे ते ऊंच को कहा जाता है। ऊंच आत्मायें भी हैं तो नीच आत्मायें भी हैं। कोई पुण्य आत्मा, कोई पाप आत्मा।

- वह है लौकिक पढ़ाई, यह है पारलौकिक पढ़ाई अर्थात् परलोक के लिए पढ़ाई। यह तो पुराना पतित लोक है। तुम जानते हो हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। यह घड़ी-घड़ी याद पड़ना चाहिए तब तुम्हारे दिमाग में खुशी चढ़ेगी। शादी आदि में जाने से बहुत बच्चे भूल जाते हैं। पढ़ाई कभी भूलना नहीं चाहिए और ही खुशी रहनी चाहिए। हम भविष्य 21 जन्मों के लिए स्वर्ग के मालिक बनते हैं।

- मन्दिर में जो कृष्ण का चित्र है वह चित्र घर में रख क्यों नहीं पूजते? खास मन्दिर में ही क्यों जाते हैं? मन्दिर में जायेंगे, पैसे रखेंगे, दान करेंगे। घर में दान किसको करेंगे? तो यह सब भक्ति मार्ग की रस्में हैं। बाप कहते हैं तुमको कोई भी चित्र रखने की दरकार नहीं। क्या तुम शिवबाबा को नहीं जानते हो जो चित्र रखते हो? क्या चित्र रखने से याद कर सकते हो? बाबा जीता है फिर बच्चे चित्र क्यों रखेंगे? बाप तुमको ज्ञान दे रहा है फिर चित्र क्या करेंगे? बूढ़े हैं याद भूल जाती है इसलिए चित्र दिया जाता है। बाकी और कोई भी देहधारी को याद करते रहेंगे तो अन्त

समय वही याद आयेगा। कुछ न कुछ रग है तो वह तुम्हारे पीछे पड़ेगा। फिर भल कितने भी शिवबाबा के चित्र रखो। अगर रग और तरफ होगी तो वह याद जरूर आयेगा इसलिए बाप कहते हैं बच्चे पूरा नष्टोमोहा हो जाओ। किसी भी चीज़ में मोह होगा, 2-4 जोड़ी जूते होंगे तो वह याद आयेंगे इसलिए कहा जाता है ज्यादा कोई भी वस्तुएं नहीं रखो। नहीं तो बुद्धि उसमें जायेगी। सिवाए बाप के और कोई को याद न करो। लोभ होता है ना – हम अच्छे-अच्छे वस्त्र रखें, 2-4 जूते रखें, घड़ी रखें। थोड़े पैसे रखें। रखेंगे तो वह याद आयेगा। बाबा को मालूम होना चाहिए – तुम्हारे पास क्या रखा है। वास्तव में तुमको कुछ भी रखना नहीं है, जो मिलता है वही रखना है। एक बाप के सिवाए और कुछ भी याद न रहे। इतनी प्रैक्टिस करनी है – तब ही विश्व के मालिक बनेंगे। यह कोई नहीं समझते कि राधे-कृष्ण विश्व के मालिक थे, सिर्फ कहते हैं भारत में राज्य करके गये हैं।

- बाबा का फरमान है – याद की यात्रा करते रहो। जैसे दौड़ाया जाता है फलाने स्थान को हाथ लगाकर आओ, फिर नम्बरवार होता है। यहाँ भी जितना बाबा को जास्ती याद करेंगे, जो पहले दौड़ी लगाकर जायेंगे वही फिर पहले स्वर्ग में लौट आकर राज्य करेंगे। तुम सब आत्मायें बुद्धि के योग से दौड़ रही हो। यहाँ बैठे हुए वहाँ दौड़ रही हो। हम शिवबाबा के बच्चे हैं। बाबा ईशारा करते हैं – मुझे याद करो, दूरादेशी बनो। तुम दूरदेश से आये हो। अब यह पराया देश विनाश हो जायेगा। इस समय तुम रावण के देश में हो, यह धरनी रावण की है। फिर तुम बेहद के बाप की धरनी पर आयेंगे। वहाँ है रामराज्य।

- बाबा समझाते हैं कभी भी किसी देहधारी को याद नहीं करना, 5 तत्वों के शरीर को बुत कहा जाता है। तो तुम्हें 5 तत्वों के शरीर को याद नहीं करना है। भल माया बहुत विघ्न डालती है परन्तु हारना नहीं है। बुद्धि में रहे मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। इस बाबा के शरीर के साथ

भी तुम्हारा लव नहीं होना चाहिए। कोई भी शरीर के साथ लव रखा तो अटक जायेंगे। बाबा जानते हैं बहुत मेल्स की भी आपस में ऐसी दोस्ती हो जाती है, जो एक दो के नाम रूप में फँस मरते हैं। इतनी प्रीत लग जाती है जो शिवबाबा को भूल जाते हैं। दो कन्याओं (फीमेल्स) का भी आपस में इतना लव हो जाता है जैसे आशिक होते हैं। उनको कितनी भी ज्ञान की समझानी दो परन्तु माया छोड़ती नहीं है क्योंकि ईश्वरीय मत के विरुद्ध चलते हैं। भल ज्ञान भी उठा लेवे परन्तु अवस्था डगमग रहती है। योग से जो विकर्म विनाश हों, वह होते नहीं। ऐसे-ऐसे बहुत हैं, बाबा नाम नहीं लेते।

बच्चों को फरमान है – हमेशा बाप को याद करते, उनकी ही महिमा करते रहो। शिवबाबा ही कलियुगी पतित दुनिया को पावन श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। बाबा को बच्चों का ख्याल रहता है कि माया कहाँ बच्चों को मार न डाले वा बीमार न कर दे। बच्चे अगर समाचार नहीं देते तो समझ जाता हूँ कि माया का जोर से थप्पड़ लगा है, इसलिए मुरली में समझाया जाता है। तकदीर में नहीं है तो अपने ही धन्धे में लग जाते हैं। कोई तो एक दो के नाम रूप में ऐसे फँसते हैं जैसे आशिक माशुक बने हैं। फिर मम्मा बाबा को भी याद नहीं करते। एक दो को याद करते रहते हैं। यह सब विघ्न माया डालती है। कोई की तकदीर में नहीं है तो कितना भी बाबा समझाये, वाह्यात बातें न करो फिर भी करते रहते हैं। कोई अज्ञान में जीवन कहानी लिखते हैं। हमको थोड़ेही जीवन कहानी आदि बनानी है। हमको बाबा के सिवाए किसको याद नहीं करना हैं। नेहरू मरा तो उनको कितना याद करते हैं। तुम भी ऐसे याद करो तो बाकी तुम्हारे और उनमें फ़र्क क्या रहा। ज्ञान मार्ग में बड़ी समझ चाहिए। जब तक शिवबाबा से योग नहीं तो बुद्धि का ताला नहीं खुलता। सर्विस नहीं कर सकते, पद भ्रष्ट कर लेते हैं इसलिए बाबा सावधान करते हैं कि कोई भी मतभेद हो तो बाबा को लिखो। सभी 16 कला सम्पूर्ण तो नहीं बने हैं। कोई कच्चे भी हैं, भूलें करते होंगे। सेन्सीबुल बच्चे जो हैं, फट से समाचार लिखेंगे। कोई देखते हैं

कि फलाने में अभी तक क्रोध है तो उनसे दिल हट जाती है फिर घर बैठ जाते हैं। कोई ब्राह्मणी भी कह देती है कि तुम इस सेन्टर पर मत आओ।

- जो कभी ध्यान का पार्ट चलता है फलानी में मम्मा आई, बाबा आया – यह भी माया है। बहुत खबरदारी से चलना है। बात कैसे करते हैं, उससे समझ जाना है। कोई-कोई में माया का भूत आ जाता है फिर कहते हैं शिवबाबा आया, मुरली चलाते हैं – यह सब माया विघ्न डालती है। बहुत ट्रेटर निकल जाते हैं। बहुत धोखा देते हैं। इन सब बातों से बहुत सम्भाल करनी है। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है। नहीं तो माया बहुत हैरान करेगी। तूफान बहुत आयेंगे। जैसे वैद्य लोग कहते हैं कि बीमारी बाहर निकलेगी, डरना नहीं। बाबा समझाते हैं माया चलते-चलते ऐसी अंगूरी लगायेगी जो बाबा को भुला देगी। हराने की बहुत कोशिश करेगी। युद्ध है ही 5 विकारों रूपी रावण से। जितना बाबा को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। माया जीते जगत जीत भी बनेंगे। बाकी स्थूल लड़ाई की कोई बात नहीं। योगबल से ही विश्व की राजाई मिल सकती है। इस समय योगबल भी है, बाहुबल भी है। यह क्रिश्चियन दोनों मिल जायें तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है, परन्तु लॉ नहीं है। एक कहानी भी है दो बिल्लों की। कृष्ण को भी देखो कैसे हाथ में गोला दिखाया है। तो तुम्हारी याद कायम रहनी चाहिए। कोई भी कारण से पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए। विघ्न तो जरूर पड़ेंगे। माया ऐसी है जो माथा मूड लेती है, हार्टफेल कर देती है इसलिए बाप कहते हैं और सब बातों को छोड़ मामेकम् याद करो। बीज को याद करने से झाड भी याद आ जायेगा।

- बाप समझाते हैं सेकेण्ड में जीवनमुक्ति गाई हुई है। फिर भी कहते हैं ज्ञान का सागर है। जंगल को कलम बनाओ, सागर को स्याही बनाओ.. तो भी खुटता नहीं, पिछाड़ी तक चलेगा। तो मेहनत की जाती है ना। सेकेण्ड की बात भी ठीक है। बाप को जाना तो बाप का वर्सा है

जीवनमुक्ति। साथ-साथ यह समझाया जाता है तो चक्र कैसे फिरता है, धर्म कैसे स्थापन होते हैं। कितनी बातें हैं समझाने की। साथ में बाबा को याद करो, वर्से को याद करो। तुम याद करते हो, निश्चय भी करते हो – हम विश्व की बादशाही ले रहे हैं। फिर क्यों भूल जाते हो? बाबा कहते हैं जितना याद करेंगे, उतने विकर्म विनाश होंगे, इसमें टाइम लगता है, जब तक कर्मातीत अवस्था हो जाये। कर्मातीत अवस्था हो गई फिर तो तुम यहाँ रह नहीं सकते हो। बच्चों को वर्षों से समझाते रहते हैं – बात है बिल्कुल सहज। अल्फ और बे, चक्र का राज़ भी बाबा समझाते हैं। बुद्धि में पूरा राज़ आता है तो फिर औरों को भी समझाना पड़ता है। सारा झाड़ बुद्धि में आ जाता है। बाप से सहज ते सहज वर्सा लेना है। कहते हैं बाबा योग नहीं लगता। माया विकर्म करा देती है। बाप समझाते हैं बच्चे अगर विकर्म कर लिया फिर तो बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा। माया देह-अभिमान में लाकर उल्टा काम करा लेती है। बाप कहते बच्चे मेरा बनकर कोई भी विकर्म नहीं करो। तुमने प्रतिज्ञा की है – मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। जैसे कन्या की जब सगाई होती है तो पति के साथ कितना लव हो जाता है। तो बेहद के बाप से कितना लव होना चाहिए। तुम्हारा कितना गुप्त लव है। वह है जिस्मानी, यह है रूहानी। उनकी प्रैक्टिस पड़ गई है। यह तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो क्योंकि नई बात है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। तुम हो खुदाई खिदमतगार। तुम हो रूहानी सेवाधारी। तुम लड़ाई के मैदान में खड़े हो। बाबा उस्ताद भी खड़ा है। कहते हैं माया के साथ पूरी युद्ध करो, जो यह 5 विकार प्रवेश ही न करें। लिखते हैं बाबा यह भूत आ गया। बाबा कहते हैं इन भूतों को भगाते रहो। यह तो अन्त तक आयेंगे और ही ज़ोर से तूफान आयेंगे। अज्ञान में भी कभी नहीं आये होंगे वह भी आयेंगे। तुम कहेंगे वानप्रस्थ में थे, कभी ख्याल भी नहीं आता था। ज्ञान में आने से काम का नशा आ गया। स्वप्न भी आते रहते हैं, यह क्या? यह वन्डरफुल ज्ञान है। कोई मूँझकर छोड़ भी जाते हैं। बाबा बता देता है – तूफान बहुत आयेंगे। जितना पहलवान बनेंगे माया खुद पछाड़ेगी, इसलिए महावीर बन स्थेरियम रहना है। बाबा की याद में रहना है। कर्म में नहीं आना है। कर्म में आने से विकर्म बन जाता है। बहुत पुरुषार्थ करना है, खराब आदतें निकालनी हैं। अविनाशी

सर्जन जानते हैं, यह बाबा भी जानते हैं। माया के अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं। यहाँ बहुत शुद्ध बनना है। चाहते हो हम सूर्यवंशी बनें तो लायक बनना पड़े। यह है राजयोग, प्रजा योग नहीं है। तो पुरुषार्थ कर राजाई लेनी चाहिए। हम कितना समय याद में रहते हैं – यह चार्ट रखना अच्छा है। प्रैक्टिस करते-करते फिर वह अवस्था पक्की हो जायेगी। यह युक्ति अच्छी है, सर्विस भी करते रहो। चार्ट भी रखो, फिर उन्नति को पाते रहेंगे। अच्छा!

तुम्हारी पढ़ाई होती है सवेरे। उस समय मनुष्य सोये रहते हैं। वास्तव में तुमको रिकार्ड बजाने की भी दरकार नहीं हैं। हम तो आवाज से परे जाते हैं। यह तो निमित्त सबको जगाने के लिए बजाने पड़ते हैं। मुरली पढ़ने अथवा सुनने में आवाज बाहर नहीं जाता है। पढ़ाई में आवाज होता ही नहीं है। बाप बैठ मंत्र देते हैं – बच्चे चुप रहकर मुझे याद करो। यहाँ कोई गुरू आदि तो है नहीं जो बैठ एक-एक को कान में मंत्र दे। फिर कह देते किसको नहीं सुनाना। यहाँ तो वह बात नहीं है। बाबा तो ज्ञान का सागर है।

इनमें प्रवेश करता हूँ फिर तुमको एडाप्ट करता हूँ। तुम कहते हो शिवबाबा मैं आपका हूँ। तुम्हारा बुद्धियोग ऊपर चला जाता है क्योंकि बाबा खुद कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। इस यात्रा पर रहो। समझो, यह बाबा कहाँ जाता है तो याद शिवबाबा को करना है। शिवबाबा इस रथ में देहली गया, कानपुर गया... बुद्धि में शिवबाबा की याद रहे। नीचे नहीं रहना है, बुद्धि ऊपर रहे। आत्मा, परमात्मा बाप को याद करे। बाप कहते मेरा रहने का स्थान तो वहाँ ऊपर है। हमारे पिछाड़ी यहाँ नहीं भटकना है। तुम मुझे भी वहाँ याद करो। तुम आत्मायें भी बाप के साथ रहने वाली हो। ऐसे नहीं बाबा का स्थान अलग, तुम्हारा अलग है, नहीं। यह बातें बुद्धि में बिठानी है। एक-एक को अलग जैसे तुम कराची में समझाते थे वैसे अच्छा रहता है। इकट्ठे एक दो के वायब्रेशन ठहरने नहीं देते हैं। भक्ति भी एकान्त में करते हैं। यह पढ़ाई भी

एकान्त में करनी है। पहले बाप का परिचय देना है। बाप पतित-पावन है, उन द्वारा हम पावन बन रहे हैं।

बाबा ने साक्षात्कार तो पहले ही कराये हैं कि यह इब्राहम, बौद्ध, क्राइस्ट भी आयेंगे। यह सब समझने की बातें बिल्कुल ही सहज हैं। सृष्टि चक्र को समझना बहुत सहज है। मुश्किल बात है – बाप की याद में रहना। पवित्र भी बन जायें। डिफीकल्ट है रूहानी यात्रा, जिसमें थक जाते हैं। अगर सारा दिन याद ठहर जाये फिर तो कर्मातीत अवस्था ही हो जाये। स्कूल में पास तो तब होंगे जब रिजल्ट निकलेगी। मुख्य है रूहानी यात्रा की बात। रूहानी यात्रा, यह अक्षर बहुत अच्छा है। योग में ही मेहनत है। हठयोग सिखलाने वाले तो बहुत हैं परन्तु यह है रूहानी योग। तुम्हारे सिवाए कोई समझा नहीं सकते। इस राजयोग से ही मनुष्य पतित से पावन हो सकते हैं। यह योग बाबा और तुम बच्चे ही सिखला सकते हो। बाहर में जब सभी सुनेंगे तो कहेंगे कि हमारा योग ठीक है और सभी झूठे योग हैं। बाहर में भी बच्चों को जाना तो है ना। इस योग को कोई जानते नहीं हैं। उसका नाम ही है हठयोग। यह है राजयोग। भगवानुवाच, मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, वह हठयोग मनुष्य सिखाते हैं। अब भगवान कौन? कृष्ण ने तो योग से इतना पद पाया। भगवान तो ऊंचे ते ऊंच निराकार है। तो बीज और झाड़ का ज्ञान बहुत सहज है। बाकी याद में नहीं रह सकते। झाड़ आदि का राज़ बहुत सहज है किसको समझाना। बच्चे बहुत अच्छी रीति समझाते भी हैं, बाकी योग में मेहनत है। घड़ी-घड़ी एक दो को सावधानी देते रहें तो भी अहो भाग्य। समझते हैं सहज भी है तो मुश्किल भी है। बहुत फेल होते हैं इसलिए कहते हैं हमको योग में बिठाओ, हमको शान्ति पसन्द आती है। शान्ति का नाम सुना है ना। कोई कहते हैं नेष्ठा में हमको शान्ति मिलती है। यह भी गपोड़ा है। आधा घण्टा योग में बैठकर चले गये वह कोई शान्ति नहीं, वह अल्पकाल की हो गई। शान्ति तब मिल सकती है जब गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बन रूहानी यात्रा पर रहें। ऑफिस में बैठे, घर में बैठे यात्रा करते रहे। जो

अवस्था तुम्हारी पिछाड़ी में आनी है। बैठे-बैठे साक्षात्कार करते रहेंगे। बाप और वर्सा याद आता रहेगा। वैकुण्ठ देखते रहेंगे। बस अभी हम यह प्रालब्ध पायेंगे। पिछाड़ी में बहुत साक्षात्कार होंगे, पछताना भी यहाँ होगा। जब देखेंगे फलाने-फलाने क्या बनते हैं, हम क्या बनते हैं। सजायें भी बहुत खायेंगे। बाप कहेंगे हम तो तुमको समझाते रहे। तुमने समझा नहीं। सिवाए प्रूफ किसको सज़ा नहीं मिल सकती। साक्षात्कार कराकर फिर सज़ा देते हैं। तो बच्चों को अच्छी रीति समझाया जाता है। अभी पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो कल्प-कल्प ऐसा ही ढीला पुरुषार्थ होगा।

तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे, पढ़ाई भी फाईनल हो जायेगी, फिर हम पास होकर बाबा के पास पहुँच जायेंगे। यह तो जानते हो जो कल्प पहले हुआ है अब वही होना है। पुरुषार्थ तो बच्चों को हर बात में करना ही है। तुम बच्चे योगबल से अपने को पवित्र बना रहे हो। योग से ही आत्मा की खाद निकलती है। हमको पूरा-पूरा योगी बनना है। हम आधाकल्प के आशिक हैं। अभी हमें माशूक मिला है। वह हमको नई दुनिया में जाने के लिए लायक बना रहे हैं। कर्म भी करना है। यह सब कुछ करते हुए याद एक ही बाप को करना है। तुम्हारी बुद्धि में है – योग से हम अपने को पवित्र बना रहे हैं। योग से आत्मा की खाद निकलती है, हमको पूरा योगी बनना है। इसमें ही बड़ी पहलवानी चाहिए। आशिक-माशूक अपना धन्धाधोरी भी करते हैं और माशूक को भी याद करते रहते हैं। वह आशिक माशूक विकार के लिए नहीं होते हैं। वह शरीर पर आशिक होते हैं तब उनका गायन है। यह है रूहानी आशिक माशूक। तुमने आधाकल्प मुझे पूरा याद किया है। अब तुमको आकर मिला हूँ। मनुष्य समझते हैं भगवान से मुक्ति मिलेगी। बाप कहते हैं तुम्हारे लिए मुक्ति से जीवनमुक्ति भी अटैच है। मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में जरूर आयेंगे। माया के बंधन से छूट जाते हैं, फिर आते हैं सतोप्रधान में। पहले सुख के पीछे दु:ख का कायदा है। सबको सतो रजो तमो में आना ही है। अभी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत अवस्था है झाड़ की। अब उनसे ही कलम लगानी है। दैवी झाड़ का कलम लग रहा है। वो लोग सैपलिंग बनाते हैं झाड़ों आदि की। उनकी सेरीमनी करते हैं। तुम्हारी क्या सेरीमनी होगी? उनकी

है जंगल की सेरीमनी। तुम्हारी है बहिश्त की सेरीमनी। तुम कांटों को फूल बनाते हो। यह सारी संगम की बात है। अब पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है। निरन्तर याद की ही कोशिश करनी है। तुमको फायदा बहुत होगा। अच्छा वर्सा मिलेगा। बाप के साथ योग अथवा पूरा लव चाहिए। उनसे ही विकर्म विनाश होते हैं। तुम्हारे में जो खाद पड़ी है वो योग से ही निकलती है। सारा मदार है याद करने पर। नहीं तो माया विकर्म करा देती है। बाप कहते हैं जो कुछ विकर्म किया है। वह बाप के आगे रख माफी मांगनी है। बाप सम्मुख आये हैं तो तोबा भर लो (माफी ले लो)। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो बाप को पूरा लव करते हैं। लव करने वाले ही बाप की राय पर चलते होंगे। तुम सब सीताओं का राम एक ही बाप है। तुम तो समझ गये हो अब औरों को समझाना है। बाकी भक्ति तो एक प्रकार की दुकानदारी है। यह करते-करते ही मर जायेंगे। लड़ाईयाँ लगेंगी, विनाश होगा। फिर तो कुछ कर भी नहीं सकेंगे। भक्तिमार्ग भी ऐसे ही खत्म हो जायेगा। अभी तुम बच्चे बाप से वर्सा ले रहे हो। बाप कहते हैं बच्चे भूलो नहीं। तुम सबसे जास्ती लवली (प्यारे) हो। तुमको ही सबसे ऊंच पद मिलता है। नहीं पढ़ेंगे तो पद भी नहीं पायेंगे।

YAD KI YATRA POINTS – OTHER

- तुम सारी पुरानी दुनिया को बुद्धि से भूल जाते हो। पवित्र बनते हो, पवित्र दुनिया में जाने के लिए। तुम्हारी यात्रा है बुद्धि की। कर्मेन्द्रियों से कहाँ जाना नहीं है, तुम्हारा शारीरिक कुछ भी नहीं चलता। अभी हम रूहानी बाप के पास जाते हैं, वह जिस्मानी यात्रायें तो अनेक हैं। कब कहाँ जायेंगे, कब कहाँ। तुम्हारी बुद्धि एक तरफ ही है। इसको अव्यभिचारी भक्ति कहें तो भी हो सकता है। तुम एक को याद करते हो। उन सबकी भक्ति है व्यभिचारी। अनेकों को याद करते हैं। तुम्हारी है अव्यभिचारी रूहानी यात्रा, जिसमें हम जा रहे हैं वापिस अपने घर। वो लोग निर्वाणधाम को घर भी नहीं समझेंगे। कहते हैं पार निर्वाण गया। तुम जानते हो वहाँ हम आत्मायें बाबा के साथ रहती हैं। अभी बाबा हमको लेने के लिए आये हैं।

- रास्ता ठीक न पकड़ने के कारण नीचे-ऊपर होते रहते हैं। ड्रामा अनुसार कल्प पहले जिन्होंने पूरा इम्तहान पास किया है वही करेंगे। त्रेता में जाने वालों को नापास ही कहेंगे। जो स्वर्गवासी बनते हैं वही पूरे पास होते हैं। कल्प कल्पान्तर, जन्म-जन्मान्तर संगम पर वही इम्तहान पास करते हैं। जैसे अब कर रहे हैं। जो फूल बनने का नहीं होगा, उनको कितना भी जोर से खींचेंगे लेकिन वह नहीं बनेंगे। अक तो फिर भी फूल है ना। कांटे तो चुभते रहते हैं। सारा मदार पढ़ाई पर है।

○ कहते तो सब हैं हम नारायण बनेंगे। तो पुरूषार्थ भी इतना करना है, परन्तु है सारा ड्रामा का खेल। कोई चढ़ते हैं, कोई गिरते हैं। नीचे ऊपर होता ही रहता है। सारा मदार याद की यात्रा पर है।

○ बाबा कहते हैं कुछ भी हो परन्तु पढ़ाई कभी भी बन्द नहीं करो। जो जैसा करेगा, वैसा पायेगा। कब पायेगा? भविष्य में, क्योंकि अब दुनिया में चेंज होने वाली है। यह कोई नहीं जानते, सिवाए तुम्हारे। तुम्हारे में भी बहुत बच्चे भूल जाते हैं। अगर याद में रहें तो खुशी भी रहे, परन्तु माया एकदम भुला देती है। यह माया से लड़ाई अन्त तक चलती रहेगी। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात है क्या? बेहद का बाप पढ़ाते हैं बाकी क्या चाहिए। बाबा तुमको प्रैक्टिकल दिखाते हैं कि फलाने-फलाने में यह खूबी है, इनमें यह है– तब नम्बरवार यादप्यार देते हैं। यहाँ बैठे-बैठे भी बाबा की बुद्धि सर्विसएबुल बच्चों तरफ रहती है। अज्ञान काल में भी आज्ञाकारी बच्चों पर प्यार रहता है। बाबा जानते हैं मेरे कौन से बच्चे अच्छी सर्विस करते हैं। मैं आया हूँ तुम बच्चों को आप समान अशरीरी बनाए वापिस ले चलने के लिए। अब तुम्हारी ज्योति जगा रहे हैं– ज्ञान और योग से। अगर ज्ञान और योग में ठीक रीति न रहे तो धर्मराज के मोचरे खाने पड़ेंगे, इसलिए पहले अपने विकर्मों को भस्म करो।

○ तुम मेरे से योग लगाओ तो पवित्र बन जायेंगे। तुम जानते हो अब साजन लेने आया है और तुमको पढ़ाते भी हैं। कितना वन्डर है। तुम कितने सौभाग्यशाली हो तो एक की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। कहते हैं तुम सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हो। मैं श्री श्री हूँ। तुमको श्री-श्री श्रेष्ठ बनाता हूँ। श्रेष्ठ दुनिया बनाता हूँ। यहाँ कितने पतित हैं और अपने ऊपर श्री का टाइटिल रखाते हैं। तुम

रावण पर विजय प्राप्त करते जाते हो। तुम्हारी आत्मा रूपी सुई पर कट लग गई है। अब चुम्बक आकर साफ करते हैं। साफ होंगे तो साथ चलेंगे कट उतारने के लिए बाप को याद करो।

○ अभी तुम बच्चों को बाप और वर्से को याद करना है। वर्से के लिए माँ के पेट से जन्म ले फिर बाप को याद करते हैं। जन्म तो लिया परन्तु थ्रू किसके? माँ से जन्म लेते हैं। यह भी ऐसे है– थ्रू माँ के तुम बच्चे बने हो। याद करते हो शिवबाबा को वर्सा लेने के लिए वाया माँ। परन्तु कोई को निश्चय है, कोई को नहीं है। ऐसे नहीं कि सभी को निश्चय है, माया घुटका दिलाती रहती है। कहाँ न कहाँ फँस पड़ते हैं। श्रीमत पर न चलने वाले अपनी ही भूलों के भ्रम में फँसते हैं, निश्चय है तो फिर और सब बातें छोड़ देते हैं। सुनना है और सुनाना है। कोई कहते हैं हम सर्विस नहीं कर सकते। प्रजा नहीं बनायेंगे तो राजा भी नहीं बनेंगे। अच्छा और कुछ नहीं करते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद करो। स्वर्ग में आ जायेंगे। अच्छा विकारों को जीतने की मेहनत नहीं पहुँचती फिर भी बाप को याद करो तो स्वर्ग में आ जायेंगे, परन्तु पद कम मिलेगा।

○ ज्ञान और योग से तुम बच्चों को श्रृंगारते हैं। सिर्फ तुम नहीं हो, यह आवाज तो सब सेन्टर्स पर सुनते हैं। हजारों सुनते रहेंगे। सभी का श्रृंगार होता रहता है। कितने श्रृंगार करते-करते फिर मैले हो जाते हैं। बाबा गधे का मिसाल देते हैं ना। तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण .... बनना है। घड़ी-घड़ी माया से हार नहीं खानी है। कहते हैं बाबा आज माया ने थप्पड़ मार दिया। बाबा कहते हैं तुम कुल को कलंक लगाने वाले हो।

○ अब सद्गति में जाना है तो बाप का बनना पड़ता है, प्रतिज्ञा करनी पड़ती है– बाबा हम आपको सदैव याद करते रहेंगे। देह का अभिमान छोड़ हम देही हो रहेंगे। गृहस्थ व्यवहार में रहते हम पवित्र रहेंगे। मनुष्य कहते हैं यह कैसे होगा। अरे बाप कहते हैं इस अन्तिम जन्म में पवित्र बन

मेरे साथ योग लगाओ तो जरूर तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और चक्र को याद करेंगे तो तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। बाप से जरूर स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। बाबा शर्राफ भी है, मट्टा-सट्टा करते हैं। मनुष्य मरते हैं तो सारी किचड़-पट्टी करनीघोर को दे देते हैं ना। तुम्हारी भी यह किचड़-पट्टी सब कब्रदाखिल होनी है इसलिए पुरानी चीजों से ममत्व मिटा दो, एकदम बेगर बनो। बेगर टू प्रिन्स बाप और वर्से को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे, जो जन्म सिद्ध अधिकार है।

○ पत्र भी लिखते हैं, बाबा रावण का भूत सताता है। कभी काम का, कभी क्रोध का हल्का नशा आ जाता है। बाप कहते हैं इन पर विजय पानी है। यह तुम्हारी लड़ाई है ही योगबल की। तुम याद करेंगे, माया तुम्हारा बुद्धियोग तोड़ देगी। तो बाबा ने समझाया है, जीवनमुक्ति सबको मिलनी है। इसका मतलब यह नहीं कि सब स्वर्ग में आयेंगे।

○ मनुष्य समझते हैं कि साइन्स बड़ी तीखी है, हम कहते हैं हमारी साइलेन्स सबसे तीखी है। बाबा की याद से ही ताकत मिलती है। वह साइंस की ताकत से ऊपर चन्द्रमा में जाने का पुरुषार्थ करते हैं, तुम तो एक सेकेण्ड में सूर्य चांद से भी ऊपर चले जाते हो।

○ एक बाप ही सबको दु:ख से छुड़ाने वाला हेविनली गॉड फादर है। लिबरेटर भी है, गाइड भी है, उनको सब याद करते हैं। बाप कहते हैं बच्चे टाइम बहुत थोड़ा है, अभी देह सहित सबसे बुद्धियोग हटाओ। अब हम अपने बाप के पास ही जाते हैं फिर आकर राज्य करेंगे। मुख्य हीरो एण्ड हीरोइन का पार्ट तुम्हारा है। यथा माँ बाप तथा बच्चे सब पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थ कराने वाला एक ही परमपिता परमात्मा अति प्यारा है।

- अगर कोई ठहर नहीं सकते तो बाबा क्या करे। निश्चयबुद्धि हो श्रीमत पर चले तो बस। जैसे उस कमाई में दशा बैठती है, वैसे यहाँ भी दशायें बैठती हैं। ग्रहचारी भी बैठ जाती है क्योंकि श्रीमत पर नहीं चलते, बाकी है बिल्कुल सहज बात। बाबा मम्मा का बच्चा बना तो सुख घनेरे का वर्सा मिलता है। एक की मत पर चलने से ही कल्याण है। जिसको तुमने आधाकल्प याद किया, अभी वह तुमको मिला है तो उनको पकड़ लेना चाहिए, इसमें मूँझते क्यों हो। बाबा कहते हैं फिर से ड्रामा अनुसार राज्य-भाग्य देने आया हूँ। मेरी मत पर चलना होगा। बुद्धि से मुझे याद करो और कोई तुमको तकलीफ नहीं देता हूँ। स्वर्ग का वर्सा भी तुम पाते हो।

- तुम पुरुषार्थ करते हो 21 जन्म बाप से स्वर्ग का वर्सा लेने। तुम समझा सकते हो हम ब्राह्मण हैं। मित्र सम्बन्धी आदि को तुम बाप की याद में रह भोजन बनाकर खिलाओ तो उनका हृदय भी शुद्ध हो जायेगा। पिछाड़ी में जो बचेंगे वह बहुत मजे देखेंगे। बाबा घड़ी-घड़ी अपना घर आदि सब कुछ दिखाते रहेंगे। शुरू-शुरू में तुमने बहुत कुछ देखा है फिर अन्त में बहुत कुछ देखना है। जो चले जायेंगे वह कुछ भी नहीं देखेंगे। इन विकारों को पूरी रीति तजना है तब ही हीरे जवाहरों से सजना है। तजेंगे नहीं तो इतना सजेंगे भी नहीं। अभी तुम ज्ञान रत्नों से सज रहे हो।

- अपने को देखना है, मैं धारणा करता हूँ? क्या-क्या विघ्न आते हैं? युक्ति से उन विघ्नों को उड़ाना है। बाप की याद से ही कर्मातीत अवस्था को पाना है। कांटा जो आवे उनको हटाते आगे- आगे जाना है। देह-अभिमान छोड़ देही-अभिमानी बन बाप को याद करना है। जितना याद करेंगे उतना रास्ता साफ होता जायेगा। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बनना है। विकार में कभी नहीं जाना है। मूल बात है ही विकार की। विकार में जाना बंद करना है। भल

कितने भी विघ्न आयें परन्तु पवित्र जरूर बनना है। जास्ती विघ्न स्त्रीयों पर आते हैं। वह चाहती हैं हम पवित्र रहें। कृष्णपुरी में जाने चाहती हैं।

○ गाया भी जाता है चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस... क्योंकि विकार में गिर पड़ते हैं। देह-अभिमान में आने के बाद ही विकार में गिरते हैं, फिर चढ़ न सकें। चढ़ते हैं फिर गिरते हैं, टाइम तो लगता है ना। ऐसा हो नहीं सकता जो सीधा चलता जाए। थोड़ी भी अवस्था अच्छी होती है फिर देह-अभिमान आ जाता है। महसूसता आती है कोई ग्रहचारी है। मन्सा में तूफान बहुत आते हैं। चढ़ने में तो टाइम लगता है। बाबा रोज समझाते रहते हैं कि बच्चे पढ़ाई रोज पढ़ो। प्वाइंट्स दिन-प्रतिदिन बहुत मिलती रहती हैं। बाप और वर्से को याद करो। यह नाटक पूरा होता आत्मा कहती है मुझे पुरूषार्थ करके सूर्यवंशी राजाई पानी है। हम तो पूरा पढ़कर बाप को पूरा याद करेंगे। तुमको अभी सारे ज्ञान की रोशनी मिलती है। हियर नो ईविल... उल्टी-सुल्टी बातें करने वालों के संग में कभी नहीं फँसना। बहुत नुकसान कर देते हैं। बेहद के बाप से बुद्धियोग तुड़ा देते हैं। पूरा योग नहीं तो फेल हो चन्द्रवंशी में चले जाते हैं। बाकी ऐसे नहीं कि रामराज्य में कोई रावण सीता को चुरा ले गया। नहीं, यह सब गिरावट की बातें हैं। द्वापर से लेकर पुकारते आते हैं क्योंकि गिरते हैं तबा तो भगवान को आना पड़ता है। अगर सद्गति होती तो भगवान को आने की दरकार नहीं होती। बाप कहते हैं पतित से पावन बन फिर गोल्डन एज में जाना है। याद के बल से एवरहेल्दी, ज्ञान के बल से एवरवेल्दी बनना है। पवित्रता का आर्डीनेंस निकाला है। बाबा सबको खबरदार भी करते हैं। पढ़ना जरूर है, इसमें कोई कारण दे नहीं सकते हैं। टाइम तो बच्चों को बहुत है। 8 घण्टा भी गवर्मेन्ट की नौकरी करो, बाकी टाइम में मेहनत करनी है। ख्याल करना है - सारे दिन में हम बाबा की सर्विस में कितना समय रहा? बाबा की याद में कितना समय रहा? कोई कोई बच्चों का चार्ट आता है परन्तु वह चार्ट जब सदैव के लिए रहे। ऐसे भी नहीं बाबा एक-एक का बैठ देखेंगे। यह फिर सेन्टर की ब्राह्मणियों का काम है। ब्राह्मणियों में भी नम्बरवार हैं। गोल्डन एज में कोई पहुँची नहीं हैं। उसमें अजुन समय पड़ा है।

कोई तो और ही श्रीमत पर न चलने के कारण खिसक पड़ते हैं फिर उनको कोई मान भी नहीं देते हैं। कोई भी उनको पसन्द नहीं करते हैं। तुम बच्चों को दुनियावी बातें बिल्कुल नहीं करनी है। कोई झरमुई झगमुई करते हैं तो समझो हमारा दुश्मन है। यह हमको गिराने वाला है। फालतू बातें नहीं करनी हैं। अपने को देखना है - कहाँ तक पहुँचे हैं। सतगुरू एक बाप है, उसमें यह ज्ञान भरा हुआ है। तुमको तो ऊपर गुरूशिखर (परमधाम) में जाना है। यह सब ज्ञान की बातें हैं। पहाड़ आदि की कोई बात नहीं है। सबसे पार चले जाना है। इन बातों को कोई जानते नहीं हैं। बाप कहते हैं - तुम पहले तमोप्रधान थे। अब तुमको सतोप्रधान बनना है। बहुत हैं जिनको यह भी निश्चय नहीं है, पूरा योग नहीं है। दूसरों को समझाते हैं, उन्हों का कल्याण हो जाता है। ऐसे नहीं वह कल्याण करते हैं। नहीं, वह तो अपने भाग्य अनुसार राज को समझ जाते हैं। ऐसे बहुत हैं जो ब्राह्मणी से भी तीखे चले जाते हैं। कई बच्चों में अभी तक देह-अभिमान बहुत है, पिछाड़ी में देह भी याद न रहे। सन्यासियों में भी कोई विरले ऐसे होते हैं जो बैठे-बैठे शरीर छोड़ देते हैं और सन्नाटा हो जाता है। फिर भी गृहस्थियों के पास जाकर जन्म लेते हैं। फिर श्रेष्ठाचारी बनने के लिए जंगल में चले जाते हैं। माया का राज्य है ना। यह चक्र कैसे फिरता है उनको भी समझना है। बहुत बच्चियां हैं जिन्होंने बाबा को कब देखा भी नहीं है तो भी याद करती रहती हैं, तो जरूर ऊंच पद पायेंगे। सारा पुरूषार्थ का खेल है ना। कोई तो रात-दिन बहुत मेहनत करते हैं। तुम जानते हो इस पतित दुनिया में इस ही शरीर में तुमको सतोप्रधन बनना है। टाइम लगता है पावन बनने में।

○ अचल-अडोल रहना है। नहीं रहते हैं तो बाबा समझते हैं अजुन सिल्वर एज तक भी नहीं पहुँचे हैं। वन्डर लगता है। ज्ञान पूरा न होने कारण, शिवबाबा से योग न होने कारण गिर पड़ते हैं। तूफान तो क्या-क्या लगते हैं। चढ़ना और गिरना - यह तो होता ही है। गिर गया तो फिर उठ खड़ा होना चाहिए ना। हमारा काम शिवबाबा से है। कुछ भी है हमको वर्सा शिवबाबा से लेना है। मम्मा बाबा भी उनसे ही लेते हैं, उनको ही याद करना है। उनकी मुरली सुननी है। नहीं तो

कहाँ जायेंगे। हट्टी तो एक ही है ना। यहाँ आये बिगर मुक्ति जीवनमुक्ति मिल न सके। बाप के सामने तो आना है ना। हाँ, कोई बांधेली है, बाबा की याद में मर पड़ती है तो वह भी अच्छा पद पा लेती है। यहाँ जो देह-अभिमान में आकर अवज्ञा कर लेते हैं, उससे उसका पद अच्छा क्योंकि बाबा की याद में मरी ना। अच्छा सौभाग्य है ना। इस ज्ञान मार्ग में कोई और तकलीफ नहीं है। बड़ा सहज है। यहाँ देही-अभिमानी बहुत बनना है। बहुत देह-अभिमान में रहते हैं। बाबा तो और कुछ कहते नहीं सिर्फ दिल से अन्दर तरस पड़ता है। शिवबाबा के भण्डारे से शरीर निर्वाह करते हैं।

○ जितना प्यार से काम निकल सकता है, उतना क्रोध से नहीं। बहुत मीठे बनो। बाप की याद में सदैव मुस्कराते रहो। देवताओं के चित्र देखो कितने हर्षित रहते हैं। अभी तुम जानते हो वह तो हम ही थे। हम सो देवता थे फिर सो क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनें।

○ तुम जानते हो चक्र पूरा होता है, अब घर वापिस जाना है। पढ़ाई को दोहराना है। चित्र रखा होगा तो देखकर चक्र याद आयेगा। गीत भी कोई-कोई बहुत अच्छे हैं, सुनने से नशा चढ़ता है। तुम अब शिवबाबा के बने हो, वर्सा तुमको अब निराकार से मिल रहा है, साकार द्वारा। निराकार कैसे दे जब तक साकार में न आये। तो कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ। प्रजापिता भी यहाँ चाहिए ना।

○ पतियों के पति को कितना टाइम याद किया! अव्यभिचारी सगाई चाहिए ना। मित्र-सम्बन्धी आदि सब भूल जायें। एक से ही प्रीत रखनी है। इस विषय सागर से क्षीरसागर में जाना है। आत्माओं की बैठक तो ब्रह्म तत्व में है। क्षीरसागर में विष्णु को दिखाते हैं। विष्णु और ब्रह्मा। ब्रह्मा द्वारा तुमको समझाते हैं फिर तुम विष्णुपुरी क्षीरसागर में चले जाते हो। अब बाप कहते हैं

मामेकम् याद करो और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं - हे आत्मायें मुझे याद करो। मैंने तुमको पार्ट बजाने भेजा था। तुमको याद दिलाते हैं - नंगे (अशरीरी) आये थे। सतयुग में सच्चा जेवर थे, अब सब झूठे हैं। अब फिर तुम ज्ञान चिता पर बैठे हो, गोरा बनते हो। श्वॉसों श्वॉस याद करेंगे तो वह अवस्था अन्त में होगी।

○ उनका फरमान है बच्चे मामेकम् याद करो तो मैं सत्य कहता हूँ तुम नारी से लक्ष्मी बन जायेंगी। इसमें कोई व्रत नेम करना, भूखा रहना नहीं है। लक्ष्मी-नारायण का चित्र बहुत अच्छा है। इसमें सारा सेट है। त्रिमूर्ति, लक्ष्मी-नारायण, राधे कृष्ण भी हैं, यह चित्र भी अगर कोई रोज देखता रहे तो याद रहे कि शिवबाबा हमको ब्रह्मा द्वारा यह बना रहे हैं। घर में भी छोटे-छोटे बोर्ड बनाकर लिख दो। बेहद के बाप को जानने से तुम 21 जन्मों के लिए स्वराज्य पद पा सकते हो। धीरे-धीरे बहुत मनुष्य बोर्ड देखकर तुम्हारे पास आयेंगे। तुम रूहानी अविनाशी सर्जन हो। रूहानी सर्जरी का कोर्स पास कर रहे हो, बोर्ड लगाना पड़ेगा। बोलो, इस बाप को याद करने से तुमको बेहद की बादशाही मिलेगी। बाबा ने प्रश्न बहुत अच्छे लिखे हैं। बाबा के कितने रूहानी बच्चे हैं? बालब चड़े वाला है ना। इसमें भाई-बहन दोनों आ जाते हैं। बाबा के पास आते हैं तो समझाता हूँ - कितने बी.के. हैं। कितना बचड़े वाला हूँ। बच्चे वृद्धि को पाते जाते हैं। तुम समझा सकते हो हम भाई-बहन हैं - विकार की दृष्टि जा नहीं सकती है। बाप कहते हैं देह सहित देह का झूठा सम्बन्ध छोड़ मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। तुम अंजाम भी करते आये हो मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। बुढ़ियाँ भी यह दो अक्षर याद कर लें तो बहुत कल्याण हो सकता है। हमने 84 जन्म लिये हैं। अभी हम ब्राह्मण बने हैं फिर देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। ब्राह्मण जरूर बनना है और बनेंगे भी जरूर कल्प पहले मुआिफक। ढेर के ढेर बनेंगे। अभी ब्राह्मण बच्चे जो विलायत आदि तरफ हैं, वह भी निकल आयेंगे। याद तो करते रहते हैं। बाबा कहते हैं - अपने कुटुम्ब परिवार में रहते अपने को आत्मा समझो। शिवबाबा का पोत्रा अपने को समझो। हम ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। कलियुग में मनुष्य हैं, सतयुग में बनेंगे देवतायें।

कलियुग में सब आसुरी मनुष्य हैं। अभी तुम दैवी सम्प्रदाय के बन रहे हो। यह बाप ही बतलाते हैं, दूसरा कोई बतला न सके।

○ कहाँ भी जाओ मित्र-सम्बन्धी के पास जाओ, शादी-मुरादी में जाओ - हर एक के कर्मों अनुसार राय दी जाती है। मुख्य है पवित्र रहने की बात। कहाँ बाहर खाना भी पड़ता है। अच्छा बच्चे, शिवबाबा की याद में रहेंगे तो माया का असर नहीं होगा। बाबा सबको छुटटी नहीं देते हैं। लाचारी हालत में देखा जाता है। नहीं तो नौकरी छूट जायेगी। हर एक को अलग-अलग राय दी जाती है। दुनिया बहुत खराब है। कइयों के साथ रहना होता है। एक कहानी भी है। गुरू ने चेले को कहा शेर की गुफा में रहो। वेश्या के पास रहो... परीक्षा लेने भेजा। वास्तव में वह कोई परीक्षा नहीं। यह तुम बच्चों के लिए है। तुमको शेर के पास तो नहीं भेजेंगे। बाप तो समझाते हैं कोई भी हो उन्हों को बाप का परिचय दो। दिन-प्रतिदिन बुद्धि का ताला खुलता जायेगा। झाड़ बढ़ना तो है ना, तब तो विनाश भी शुरू हो इनसे पहले विनाश तो हो न सके। यहाँ तो राजधानी स्थापना हो रही है। बाप तो कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो।

○ बच्चे मिलने आते हैं तो भी बाबा कहते हैं शिवबाबा को याद करके मिलने आना। आत्मा कहती है हम शिवबाबा की गोद लेता हूँ। मनुष्य इन बातों में मूँझते हैं। शिवबाबा इस ब्रह्मा द्वारा बच्चों को एडाप्ट करते हैं। तो यह माँ हो गई ना। तुम समझते हो हम माँ बाप से मिलने आये हैं। याद शिवबाबा को करना है। तो यह फर्स्ट माँ हो गई। वर्सा तुमको शिवबाबा से मिलता है। यह भी उनकी याद में रहता है। बाप जो समझाते हैं उसको धारण करना है। रूप बसन्त बनना है। योग में रहेंगे, ज्ञान धारण करेंगे और करायेंगे तो मेरे समान रूप बसन्त बन जायेंगे। फिर मेरे साथ चल पड़ेंगे। अभी तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है फिर जब स्वर्ग में आयेंगे तो ज्ञान पूरा हो जायेगा। फिर प्रालब्ध शुरू हो जायेगी। फिर नॉलेज का पार्ट पूरा हो जायेगा। यह है बड़ी गुप्त बातें, कोई

मुश्किल समझते हैं। बुढ़ियों को भी बाप समझाते हैं कि एक को ही याद करो। दूसरा न कोई। तो बाप के पास जाकर फिर कृष्णपुरी में चली जायेंगी। यह है कंसपुरी।

○ शिव के दर पर मरना पसन्द करते हैं। अभी तो तुम प्रैक्टिकल में दर पर हो। कहाँ भी हो परन्तु शिवबाबा को याद करते रहो। जानते हो शिवबाबा हमारा बाप है, हम उनको याद करते-करते उनके पास चले जायेंगे। तो शिवबाबा पर इतना लव होना चाहिए ना। उनको कोई अपना बाप नहीं, टीचर नहीं और सबको है ही। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी रचयिता वह बाप ही है ना। रचना से रचना को (भल फिर कोई भी हो) वर्सा मिल नहीं सकता। वर्सा हमेशा बच्चों को बाप से मिलता है। तुम बच्चे जानते हो हम ज्ञान सागर बाप के पास आये हैं। बाप अभी ज्ञान की वर्षा बरसाते हैं। तुम अभी पावन बन रहे हो।

○ तुम बादल सागर के पास आते हो भरने लिए। भरकर फिर जाकर बरसना है। भरेंगे नहीं तो राजाई पद नहीं पायेंगे, प्रजा में चले जायेंगे। कोशिश कर जितना हो सके बाप को याद करना है। यहाँ तो कोई किसको, कोई किसको याद करते रहते हैं, अथाह नाम हैं। बाप आकर कहते हैं वन्दे मातरम्। दिखाते भी हैं - द्रोपदी के चरण दबाये। बाबा के पास बुढ़ियाँ आती हैं तो बाबा उन्हों को कहते हैं बच्ची थक गई हो? अब बाकी थोड़े रोज़ हैं। तुम घर बैठे शिवबाबा को और वर्से को याद करो। जितना याद करेंगे उतना विकर्माजीत बनेंगे। आप समान औरों को नहीं बनायेंगे तो प्रजा कैसे बनेगी। बहुत मेहनत करनी है। धारण कर फिर औरों को भी आप समान बनाना है। अच्छा!

○ (गीत) बाबा से मुहब्बत रखने से हमारी सब आशायें पूरी होती हैं। मुहब्बत बड़ी अच्छी चाहिए। तुम सब आत्मायें आशिक बनी हो बाप की। छोटेपन में भी बच्चे बाप के आशिक बनते हैं।

बाबा को याद करेंगे तो वर्सा मिलेगा। बच्चा बड़ा होता जायेगा, समझ में आता जायेगा। तुम भी बेहद के बाप के बच्चे आत्मायें हो। बाप से वर्सा ले रहे हो। अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करना पड़े। बाप के आशिक बनेंगे तो तुम्हारी सब आशायें पूरी हो जायेंगी। आशिक माशूक को याद करते हैं - कोई दिल में आश रखकर। बच्चा बाप पर आशिक बनता है वर्से के लिए। बाप और प्रापर्टी याद रहती है। अभी वह है हद की बात। यहाँ तो आत्मा को आशिक बनना है - पारलौकिक माशूक का, जो सभी का माशूक है। तुम जानते हो कि बाबा से हम विश्व की बादशाही लेते हैं, उसमें सब कुछ आ जाता है। पार्टीशन की कोई बात नहीं। सतयुग, त्रेता में कोई उपद्रव नहीं होते। दु:ख का नाम ही नहीं रहता। यह तो है ही दु:खधाम इसलिए मनुष्य पुरूषार्थ करते हैं - हम राजा रानी बनें। प्रेजीडेंट, प्राइम मिनिस्टर बनें।

○ तुम बच्चे जानते हो शान्तिधाम से बाप आया हुआ है और बच्चों से पूछते हैं - किस विचार में बैठे हो? तुम जानते हो बाप स्वीट होम, शान्तिधाम से आये हुए हैं - सुखधाम ले जाने के लिए। बाप कहते हैं अब तुम अपने स्वीट होम को ही याद कर रहे हो या और कुछ भी याद आता रहता है। यह दुनिया कोई स्वीट नहीं है, बहुत कड़ुवी है। कड़ुवी चीज़ दु:ख देने वाली होती है। बच्चे जानते हैं अब हम स्वीट होम जाने वाले हैं। हमारा बेहद का बाप बड़ा स्वीट है। बाकी और जो भी बाप हैं इस समय वह बहुत कड़ुवे पतित छी-छी हैं। यह तो है सभी का बेहद का बाप। अब किसकी मत पर चलना है। बेहद का बाप कहते हैं - बच्चे अब अपने शान्तिधाम को याद करो फिर साथ में सुखधाम को भी याद करो। इस दु:खधाम को भूल जाओ। इनको तो बहुत कड़ा नाम दिया गया है - कुम्भी पाक नर्क, जिसमें विषय वैतरणी नदी बहती है। बाप समझाते हैं यह सारी दुनिया ही विषय वैतरणी नदी है। सब इस समय दु:ख पा रहे हैं, इसलिए इनसे ऩफरत होती है। बहुत गन्दी दुनिया है, इससे तो वैराग्य आना चाहिए। जैसे सन्यासियों को

वैराग्य आता है, घरबार से। समझते हैं स्त्री नागिन है, घर में रहना गोया नर्क में रहना, गोता खाना है।

○ बाप बच्चों को दु:ख देते हैं क्या! बाप सृष्टि रचते हैं बच्चों के लिए। क्या दु:ख के लिए? यह तो हो नहीं सकता। अभी तुम बच्चे श्रीमत पर चलने वाले हो। भल कहाँ भी दफ्तर वा धन्धे आदि में बैठे हो परन्तु बुद्धि में तो यह है ना कि हमको पढ़ाने वाला भगवान बाप है। हमको रोज़ सवेरे क्लास में जाना होता है। क्लास में जाने वालों को ही याद पड़ता होगा। बाकी जो क्लास में ही नहीं आते तो वह पढ़ाई को और पढ़ाने वाले को समझ कैसे सकते हैं। यह नई बातें हैं, जिसको तुम ही जानते हो।

○ तुम जानते हो कि इस समय सब पतित भ्रष्टाचारी हैं, जो भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। वह कर्तव्य भी ऐसा करेंगे। यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं, तुम यहाँ सन्मुख बैठकर सुनते हो तो तुम्हारी बुद्धि का योग बाप के साथ रहता है। फिर कुसंग तरफ जाते हैं, बहुतों से मिलते करते हैं, वातावरण सुनते हैं तो जो सन्मुख की अवस्था रहती है - वह अवस्था बदल जाती है। यहाँ तो सन्मुख बैठे हैं। स्वयं ज्ञान का सागर परमपिता परमात्मा बैठ ज्ञान का बाण मारते हैं, इसलिए मधुबन की महिमा है। गाते भी हैं ना - मधुबन में मुरली बाजे। मुरली तो बहुत स्थानों पर बजती है। परन्तु यहाँ सन्मुख बैठकर समझाते हैं और बच्चों को सावधानी भी देते हैं, बच्चे खबरदार रहना। कोई उल्टा सुल्टा संग नहीं करना। लोग तुमको उल्टी बातें सुनाकर डराए इस पढ़ाई से ही छुड़ा देंगे। संग तारे कुसंग बोरे। यहाँ है सत बाप का संग।

- अभी बाप को याद करना है। बाप कहते हैं पवित्र बनो और मामेकम् याद करो। कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। बाप ही बैठ बच्चों को सुख घनेरे देते हैं। अभी कितना दु:ख है। दु:ख में ही भगवान को याद किया जाता है। बाप स्वर्ग में ले जाते फिर वहाँ क्यों याद करेंगे। कहते हैं हे प्रभू, अन्धों की लाठी। परन्तु जानते तो कुछ भी नहीं। तुम हो सच्चे ब्राह्मण। तुम पवित्रता की प्रतिज्ञा कराते हो। बेहद का बाप कहते हैं पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। घर बैठे भी याद कर सकते हो। बाबा कहते हैं तुम सबको मेरे पास आना है। मरना तो सबको है।

- बाप को याद करने से हमारी आत्मा पवित्र बन जायेगी, फिर चोला भी पवित्र मिलेगा। बाप को याद करते-करते हम गोल्डन एज में चले जायेंगे। अपना टैम्प्रेचर देखना होता है, जितना ऊंच जायेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। नीचे उतरने से खुशी का पारा भी नीचे उतर जाता है। सतोप्रधान से नीचे उतरते-उतरते अब बिल्कुल ही तमोप्रधान बन पड़े हो। अब बाप समझा रहे हैं फिर भी माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। यह है माया से युद्ध। माया के वश बहुत हो जाते हैं। बाप कहते हैं सच्ची दिल पर साहेब राजी होगा। कितनी अबलायें बाप की याद में सच्ची दिल से रहती हैं। प्रतिज्ञा की हुई है कि हम विकार में कभी नहीं जायेंगे। विघ्न तो बहुत पड़ते हैं। प्रदर्शनी आदि में कितना विघ्न डालते हैं। बड़े फखुर से आते हैं, इसलिए सम्भाल भी बहुत करनी है।

- बाप को और चक्र को याद करने से तुम रूहानी विलायत में चले जायेंगे। वह फॉरेन तो दूरदेश है ना। हम आत्मायें सब दूरदेश में रहने वाली हैं। हमारा घर देखो कहाँ है, सूर्य चांद से भी पार। जहाँ कोई गम नहीं है। अभी तुम आत्माओं को घर की याद आई है। हम वहाँ अशरीरी रहते थे, शरीर नहीं था। यह खुशी होनी चाहिए। अभी हम अपने घर जाते हैं। बाप का घर सो अपना घर। बाबा ने कहा है - मुझे याद करो और अपने मुक्तिधाम को याद करो। साइंस घमण्डी तो परमात्मा

को बिल्कुल नहीं जानते हैं। बाप को तरस पड़ता है कि उन्हों के कानों में भी कुछ पड़ता रहे तो शिवबाबा को याद करें। देह-अभिमान टूट जाए, नर से नारायण बनने की यह सत्य कथा है। सच्चे बाप को याद करो तो सचखण्ड के मालिक बन जायेंगे। सच्चा बाबा ही स्वर्ग स्थापना करते हैं। कहते हैं और संग बुद्धियोग तोड़ो। सरकारी नौकरी 8 घण्टा करते हो उनसे भी यह बहुत ऊंची कमाई है। कहाँ भी जाओ, बुद्धि से यह याद करते रहना है। तुम कर्मयोगी हो। कितना सहज समझाते हैं। बुढ़ियों को देखकर मैं बहुत खुश होता हूँ क्योंकि फिर भी हमारी हमजिन्स हैं। मैं मालिक बनूँ, हमजिन्स न बनें तो यह भी ठीक नहीं। बाप है अविनाशी ज्ञान सर्जन। ज्ञान इन्जेक्शन सतगुरू दिया अज्ञान अन्धेर विनाश। तुम्हारा अज्ञान दूर हो गया है। बुद्धि में ज्ञान आ गया है। सब कुछ जान गये हो। अच्छा!

- बाप समझाते हैं अब तुम्हें पवित्र बन वापिस जाना है। जितना-जितना ज्ञान योग की धारणा होती जायेगी, उतना बुद्धि पवित्र होती जायेगी क्योंकि अब बुद्धि में है कि हमको वापिस लौटना है। आइरन एज से कॉपर एज में आना है, फिर सिल्वर एज में, फिर गोल्डन एज में आना है। यह पढ़ाई ऐसी है जो चलते-चलते फिर माया का वार हो जाता है। सब तो पवित्र रह नहीं सकते। माया बड़े तूफान में लाती है। आइरन एज से कॉपर एज में आने से फिर माया के तूफान घेर लेते हैं तो बुद्धि फिर आइरन एजेड बन जाती है और गिर पड़ते हैं। गिरना और चढ़ना यह तो है जरूर। चढ़कर फिर कॉपर एज, सिल्वर एज, गोल्डन एजेड में आना है। पढ़ते-पढ़ते ज्ञान सुनतेसुनते पिछाड़ी में हमारी वह गोल्डन एज बुद्धि बनेगी तब हम शरीर छोड़ देंगे। इस समय गिरना चढ़ना बहुत होता है। टाइम लगता है। जब बुद्धि गोल्डन एजेड बन जाती है फिर राज्य अधिकारी बनते हैं। गाया भी हुआ है - पवित्रता की राखी बांधने से राजतिलक मिलेगा। सो तुम बच्चे जानते हो - हमको राजाई प्राप्त करने के लिए पवित्रता की प्रतिज्ञा करनी है। ज्ञान और योग की धारणा करने में कितना समय लगता है। गोल्डन एज से आइरन एज तक आने में तो 5 हजार वर्ष लगते हैं। अब तो पढ़ना है - सो तो इस एक जन्म में ही होना है। जितना ऊंच पढ़ते

जायेंगे, खुशी बढ़ती जायेगी। हम राजधानी स्थापना कर रहे हैं। बुद्धि योगबल और ज्ञानबल से। हर बात में बल होता है। थोड़ा पढ़ने में थोड़ा बल, जास्ती पढ़ने में जास्ती बल मिलता है। बड़ा पद मिलता है। यह भी ऐसे है। कम पढ़ने से पद भी कम मिलता है। बाप ने समझाया है - यह ब्राह्मण धर्म बहुत छोटा है। ब्राह्मण ही देवता सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बनते हैं। अभी पुरूषार्थ कर रहे हैं। तुम ऐसे समझो - अजुन हम कॉपर एज तक पहुँचे हैं। फिर सिल्वर, गोल्डन एज तक आना है। पिछाड़ी में बच्चे भी ढेर हो जाते हैं ना। सारा मदार है - पवित्रता पर। जितना याद में रहेंगे उतना बल मिलेगा। बाप से प्रतिज्ञा की है - हम पवित्र बन भारत को पवित्र बनायेंगे। बच्चे राखी बांधने जाते हो तो भी समझाना होता है। आज से 5 हजार वर्ष पहले भी पतित से पावन बनने के लिए हम यह राखी बांधने आये थे। तो राखी बंधन तो एक दिन की बात नहीं। पिछाड़ी तक चलता रहेगा। प्रतिज्ञा करते रहेंगे। पढ़ाई पर ध्यान देते रहेंगे। तुम जानते हो ज्ञान और योग से आइरन एज से हमें गोल्डन एज में जाना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान होना है। यह बातें और कोई नया समझ न सके इसलिए तुम्हारी 7 रोज की भट्ठी मशहूर है। पहले नब्ज देखनी पड़ती है। जब तक बाप का परिचय नहीं हुआ है, निश्चय नहीं बैठा है तब तक समझेंगे नहीं। तुम्हारे द्वारा परिचय पाते जायेंगे। झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा। स्वराज्य स्थापना होने में समय लगता है। जब तक तुम गोल्डन एज में न आओ तब तक सृष्टि का विनाश हो नहीं सकता।

- आखरीन पिछाड़ी में सब समझेंगे जरूर। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। यह शास्त्रों में है कि द्रोपदी के चीर उतारे थे। तो उस समय याद करने सिवाए और कर ही क्या सकेंगे। अन्दर में शिवबाबा को याद करेंगे तो वह पाप नहीं लगता है। परवश है। हाँ, बचने की कोशिश करनी है। हर एक का कर्म बन्धन अलग-अलग है। कोई तो एकदम स्त्री को मार भी देते हैं, तो समझा जाता है कि वह वहाँ अच्छा पद पा लेंगी। कर ही क्या सकते। पवित्र रहने की युक्ति बाप अच्छी रीति समझाते हैं। ब्रह्माकुमार कुमारी भाई बहन हो गये, विकार की दृष्टि जा नहीं सकती। बाप

कहते हैं अगर इस प्रतिज्ञा को तोड़ेंगे तो बड़ी चोट लगेगी। बुद्धि भी कहती है - बेहद के बाप का मानेंगे नहीं तो चोट खायेंगे, गिर पड़ेंगे।

○ पुरूषार्थ करना है राजा-रानी बनने के लिए। ड्रामा के राज को कोई समझते नहीं है। अभी तुम जानते हो कल्प-कल्प हम बाप से वर्सा लेते हैं। बाबा आते हैं। चित्र भी देखो कितने अच्छे बने हुए हैं। बड़े चित्रों के आगे ले आना है। तुम सब सर्जन हो - शिवबाबा अविनाशी गोल्डन सर्जन है। तुम भी नम्बरवार सर्जन हो। अभी कोई सम्पूर्ण गोल्डन एजेड बना नहीं है। तुमको सर्विस करनी है। समझाने समय हर एक की नब्ज देखनी है। महारथी जो हैं वह अच्छी नब्ज देखेंगे। तुमको पूरा गोल्डन एजेड बनना है। अभी बने नहीं हैं। बनने में टाइम लगता है। माया के तूफान बहुत तंग करते हैं। यह सब बातें समझ की होती हैं। बाप से पूरा वर्सा लेना है और बहुत सच्चाई से चलना है। अन्दर कोई खराबी नहीं होनी चाहिए। माया हैरान करती है क्योंकि योग नहीं है। अच्छा।

○ हमारे मन को शान्ति कैसे मिले? मन क्या है? वह भी समझते नहीं हैं। आत्मा को शान्ति मिलती है वा आत्मा के मन को? पहले तो आत्मा को जानना पड़े। आत्मा का स्वधर्म शान्त है। यह शरीर तुम्हारे आरगन्स हैं। इनसे चाहे काम लो, चाहे स्वधर्म में टिको। सन्यासी भी इस बात को नहीं जानते - वह तो कह देते, आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा। परन्तु ताकत कैसे मिले जो शान्ति में रह सकें। जब बाप को याद करें तब ही ताकत मिले। सिर्फ शान्ति से भी कोई फायदा नहीं। वह समझते हैं हम आत्मा सो परमात्मा, हम आत्मा परमात्मा के लोक में चली जायेंगी और कुछ भी नहीं जानते। पुनर्जन्म को ही भूल जाते हैं। 84 जन्मों को भी भूल जाते हैं। बाप सम्मुख समझाते हैं, तुम समझते हो कि अभी हमें बाप के गले का हार बनना है।

हम असुल उस बाप के गले का हार थे। अब नाटक पूरा होता है। नाटक में एक्टर खेलते भी रहते हैं और टाइम भी देखते रहते हैं।

- यह तुम बच्चों को पता है जो कुछ पिछाड़ी वाल रहे हुए होंगे वह आते जायेंगे, जैसे मच्छर देखो रात को आये और सुबह को देखो तो सब मरे हुए होंगे। परन्तु उनका कोई हिसाब-किताब थोड़ेही है। यह जो बड़े-बड़े साइंसदान हैं वह कितना माथा मारते रहते हैं - खोज करते रहते हैं। जैसे ज्ञान की ऊंचाई है तो माया भी कम नहीं है। देखो, आसुरी मत पर क्या-क्या बना रहे हैं। श्रीमत क्या कहती है और साइंस वाले क्या करते रहते हैं। सुख भी है तो इन चीजों से विनाश भी होना है। साइंस और साइलेन्स। तुम सदैव बाप को याद करते रहते हो साइलेन्स में। उनको फिर साइंस का कितना घमण्ड है। कितने एरोप्लेन, बारूद आदि हैं। साइन्स पर साइलेन्स की विजय होती है। कई कहते हैं मन जीते जगतजीत परन्तु माया जीते जगतजीत कह सकते हैं। आत्मा अशरीरी हो बाप के पास चली जायेगी। कहते हैं मन में संकल्प विकल्प न आयें। बाप कहते हैं यह तो जरूर आयेंगे। मामेकम् याद करो। हम आत्मा अपने साइलेन्स होम, मुक्तिधाम में जाती हैं। पियरघर जाती हैं। बुद्धि में यही रहता है - बाबा आया है हमको ले जायेंगे। गाइड बाबा ही है। कहते हैं मेरे लाडले बच्चे मैं तुमको साथ ले जाऊंगा। कोई ने भी घर का रास्ता नहीं देखा है। अगर एक ने देखा हो तो बहुत देख लें। वह जाना भी सिखलावें। यहाँ से मनुष्य तंग होकर कहते हैं जायें। सतयुग में ऐसे थोड़ेही कहेंगे। सुखधाम को ही सब याद करते हैं। बाप कहते हैं मैं सबको ले जाऊंगा - मच्छरों के सदृश्य। वह सिर्फ कह देते हैं बौद्ध की आत्मा निर्वाणधाम गई। अगर वह चला गया तो बाकी सब उनकी इतनी वंशावली कैसे जायेगी। कोई जा नहीं सकते हैं। मैं तो जा सकता हूँ ना। मैं आता ही हूँ ले जाने के लिए। सतयुग में तो कितने थोड़े होते हैं। इस समय तो आत्मायें कितनी अथाह हैं।

- शिवबाबा तो करनकरावनहार है। इस समय बाबा मीठे झाड़ का सैपलिंग लगा रहे हैं जो और धर्मों में कनवर्ट हो गये होंगे वह सब निकल आयेंगे। तो यह इतनी समझानी नया कोई समझ न सके। 7 रोज भट्ठी में पड़ने के सिवाए मुक्ति-जीवनमुक्ति कोई पा नहीं सकते। तुमने भी भूतों को निकालने के लिए कितनी मेहनत की है। बुद्धि जब पवित्र हो तब ज्ञान अमृत ठहर सके। तुम बच्चे समझ सकते हो तो बरोबर बाबा की याद भूल जाती है। बहुत देह-अभिमान आने से फिर मित्र-सम्बन्धियों आदि तरफ लव चला जाता है। कोई को भी मोह का भूत न आये। बाबा को कितने ढेर बच्चे हैं। मोह की बात ही नहीं। जानते हैं आत्मा कभी मरती नहीं। मरने का ही डर रहता है। आत्मा भी अविनाशी है, परमात्मा भी अविनाशी है, वह जन्म-मरण में नहीं आता। बाबा कहते हैं मैं इस शरीर का लोन लेता हूँ। मेरे रहने से इनको बहुत फायदा है। इनकी आयु बढ़ जाती है, गुल-गुल हो जाता है। इनकी सब खामियां खत्म कर बिल्कुल नया बना देता हूँ। बाबा तो है ही सुख दाता, मेरे कारण यह योग सीखते हैं, तब तो तन्दुरूस्त बन जाते हैं। किसको गाली देना, गुस्सा करना यह सब आसुरी स्वभाव है। सतयुग में यह गाली आदि होती ही नहीं। नाम ही कितना फर्स्टक्लास है हेविन, वैकुण्ठ, पैराडाइज, कहते हैं– क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत पैराडाइज था। इस हिसाब से बरोबर 5 हजार वर्ष ही हुआ। यह सत्य ज्ञान और सत्य नारायण की कथा कितनी सहज है। हम अभी नर से नारायण बनने की सत्य कथा सुनते हैं– राजयोग की।

- बाबा कहते हैं तुम मुझे याद करेंगे और पवित्र रहेंगे तो ऐसा पद पायेंगे। इकट्ठे रहकर पद पाना– यह है बड़ी मंजिल। और संग टूट जाए, एक संग जुट जाए... इसमें ही मेहनत है। सन्यासी तो सब कुछ छोड़कर चले जाते हैं। यहाँ तो इकट्ठे रहकर बुद्धि में रखना है कि यह पुरानी दुनिया खत्म हुई पड़ी है। हमको वापिस जाना है फिर हम स्वर्ग में जाकर राज्य करेंगे। अब पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। यह बुद्धि में रख पुरूषार्थ करना है। 8 घण्टा इस याद की सर्विस में रहो। कोई कहते हैं यह कैसे हो सकेगा। भक्ति मार्ग में जो कृष्ण के भगत हैं वह भी सब तरफ से

बुद्धि को हटाए एक कृष्ण को ही याद करते होंगे। कोई राम का भगत है, अच्छा राम को याद करो। राम की राजधानी को याद करो, सो भी जब निरन्तर याद करे तब अन्त मती सो गति होगी। राम को याद करके राम की राजधानी में जाये, यह भी मेहनत है। ऐसी मेहनत सिखलाने वाला कोई है नहीं। श्लोक भी है– अन्तकाल जो स्त्री सिमरे... अगर कोई सन्यासी है, गुरू है उनको भी याद करना पड़े तो अन्त मती सो गति हो। पहले पूछो कहाँ जाने चाहते हो? वापिस तो जाना है, परन्तु कहाँ? क्योंकि भक्ति से ताकत नहीं मिलती जो एक से बुद्धि लगा सके। सर्वशक्तिमान् तो एक परमपिता परमात्मा ही है ना। उनका ही पार्ट नूंधा हुआ है। ऊंचे ते ऊंचा बाप है उनको याद करो तो उनके देश में जायेंगे। सन्यासियों को तो देवता भी नहीं कह सकते। वह तो आते ही द्वापर में हैं। भगवान स्वयं आकर कहते हैं– बच्चे मुझे याद करो और सृष्टि चक्र पर भी समझाते हैं, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। यह नॉलेज बाप ही समझाते हैं। चित्रों पर तुम समझा सकते हो। ऊंचे ते ऊंचा है निराकार भगवान, वह रहते हैं मूलवतन में। वह भी ऊंचे ते ऊंचा है, हम देवतायें भी वहाँ ही रहते हैं। सूक्ष्मवतन में सूक्ष्म देवतायें रहते हैं। वहाँ सृष्टि का चक्र है नहीं।

○ बच्चे, आत्म-अभिमानी होकर बैठे हो? हर एक बात अपने आप से पूछनी होती है। बाबा युक्ति बताते हैं कि अपने आपसे पूछो कि हम आत्म-अभिमानी होकर बैठे हैं? बाप को याद कर रहे हैं? तुम्हारी यह सेना है। उस सेना में सिर्फ जवान होते हैं। तुम्हारी इस सेना में बूढ़े जवान बच्चे आदि सब हैं। 80-90 वर्ष के बूढ़े भी हैं। यह सेना है– माया पर जीत पाने के लिए। हर एक को माया पर जीत पाकर बाप से बेहद का वर्सा लेना है। माया बड़ी जबरदस्त है, बड़ी प्रबल है। बहुत तूफान लाती है। हर एक कर्मेन्द्रिय धोखा देती है। सबसे जास्ती धोखा देने वाली कौन सी कर्मेन्द्रिय है? आंखे सबसे जास्ती धोखा देती हैं। बच्चों को समझाया जाता है– भल स्त्री पुरूष हो तो भी बुद्धि से समझो हम बी.के. हैं। नहीं तो आंखे बहुत धोखा देंगी। यह भी चार्ट में लिखना

चाहिए– सारे दिन में हमको कौन सी कर्मेन्द्रिय ने धोखा दिया है! आंखें नम्बरवन धोखा देने वाली हैं। आंखें नुकसान बहुत करती हैं। सूरदास का मिसाल, देखा मुझे आंखे धोखा देती हैं तो आंखे निकाल दी। भल बच्चे सर्विस बहुत अच्छी करते हैं– परन्तु माया भी कम नहीं है। आंखें बहुत धोखा देती हैं और एकदम पद भ्रष्ट कर देती हैं। समझू सयाने बच्चे जो होंगे वह सारा दिन नोट करेंगे। हमने कोई भूल तो नहीं की! भक्तिमार्ग में भी अपने को चमाट मारते हैं कि याद रहे फिर यह काम कभी नहीं करेंगे। वैसे ही इसमें भी जांच रखो। अगर आंखें कहाँ धोखा दें तो अपने को सजा दो। किनारा कर चला जाना चाहिए। खड़ा होकर देखना नहीं चाहिए। सन्यासी लोग बहुत करके आंखे बन्द कर बैठते हैं। स्त्री को देखते ही नहीं हैं। वहाँ पुरूषों को आगे, स्त्रीयों को पिछाड़ी में बिठाते हैं। यहाँ भी तुम बच्चों को मेहनत करनी है।

○ तुम बच्चों में कुदृष्टि, क्रोध आदि कुछ नहीं होना चाहिए। अपना ही नुकसान करते हैं। कुदृष्टि होती है तो उनका भी वायब्रेशन आता है। दूसरे को भी कशिश होती है। बाबा घड़ी-घड़ी बच्चों को ध्यान खिचवाते हैं। बच्चे अपने को देखो कि कोई भी कर्मेन्द्रिय के वश हो विकर्म तो नहीं बनाया! यह है विक्रम संवत, पहले था विकर्माजीत संवत। फिर जब विकर्म करना शुरू करते हैं तो विक्रम संवत होता है। अब बाप बच्चों को कर्म-अकर्म-विकर्म की गति भी समझाते हैं। बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। फिर अगर कोई विकर्म किया तो सौ गुणा दण्ड हो जाता है इसलिए जहाँ तक हो सके विकर्म नहीं करो, जो नाम बदनाम हो। विकर्म करने से फिर वृद्धि हो जायेगी इसलिए अब बहुत खबरदारी रखना। भाई-बहन की दृष्टि बहुत पक्की चाहिए। यहाँ आते तो बहुत हैं फिर भी तकदीर में नहीं है तो कहते हमको संशय आता है, शिवबाबा इसमें कैसे आकर पढ़ाते हैं। मैं नही जानता हूँ। अरे शिवबाबा अगर न आये तो भला शिवबाबा को याद कैसे करेंगे, जो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। उनकी याद के बिना तो विकर्म विनाश हो न सकें। सजायें बहुत खानी पड़ेंगी। बाकी पाई पैसे का पद मिलेगा। कल्प-कल्प स्वर्ग की स्थापना होती है। सदैव बाबा, बाबा कहते रहो। बाबा कहने से ही आंखों से प्रेम के

ऑसू आ जायें। बाबा आपसे कब मिलेंगे! परन्तु जो सम्मुख बैठे हैं वह मानते नहीं और नहीं देखने वाले तड़फते हैं। वन्डर है। लिखते हैं बन्धन से छुड़ाओ। कोई-कोई तो बाबा के बनकर फिर माया के बन जाते हैं। फिर पिछाड़ी में याद आयेगा। मरने समय सबको कहते हैं– राम-राम कहो फिर अन्त में कशिश होगी। समझेंगे बाबा की याद से हम विकर्म तो विनाश करें। बाबा कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे अपना कल्याण करो। बाप की श्रीमत पर चलो। सबको सन्देश देते रहो। एरोप्लेन से कोई-कोई को पर्चा मिला तो वह जग गये (हिस्ट्री सुनाना)। सारे विश्व में खास भारत में सुख-शान्ति तो स्थापन होनी ही है। अच्छा।

○ रावण पर विजय पाई है? कहते हैं बाबा विजय पाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। हाथ तो सब उठाते हैं क्योंकि लज्जा आती है। बाबा कहते हैं अपनी शक्ल तो देखो, कितना समय बाप को याद करते है? ऐसी अवस्था चाहिए जो अन्त में कोई भी याद न आये, तब अन्त मति सो गति होगी। कर्मातीत अवस्था के समीप जा सकेंगे। सदा हर्षित भी तब रह सकेंगे जब दूसरों की सेवा करेंगे। तुम रूहानी सोशल वर्कर हो। तुम्हारे बिगर रूह को इन्जेक्शन कोई भी लगा न सके। गाया भी जाता है ज्ञान अंजन सतगुरू दिया... आत्मा को अब मालूम पड़ा है कि मुझे सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान मिल गया है। यह आत्मा ने कहा शरीर द्वारा– ज्ञान सागर को। अब हमको वापस जाना है– यह बहुत खुशी की बात है। पुराना चोला छोड़कर नया चोला लेना है। इस कारण नाम ही है श्याम सुन्दर। तुम जानते हो हम सुन्दर थे, अब श्याम बने हैं फिर सुन्दर बनेंगे। बाबा सुन्दर बनाते हैं, माया रावण श्याम बनाता है।

○ हिंसक लड़ाई की यहाँ बात नहीं। यह है गुप्त। सिर्फ मुझे याद करो। इसको कहा जाता है अजपाजाप। अभी सबकी वानप्रस्थ अवस्था है, सबको वापिस जाना है। वह है शान्तिधाम। वहाँ से फिर आटोमेटिकली तुम सुखधाम में आ जायेंगे। शान्ति तो तुम्हारा स्वधर्म है। यूँ तो इस

रावण राज्य में शान्ति मिल नहीं सकती। बाकी थोड़े समय के लिए चाहते हो तो अशरीरी होकर बैठ जाओ। शान्ति तो सबको चाहिए। अगर 101 करोड़ भी शान्ति में बैठ जाएं तो भी शान्ति हो न सके। यह है ही अशान्ति की दुनिया। शान्ति के लिए कोई राय नहीं निकल सकती है। मूलवतन में है अपार शान्ति। यहाँ हम पार्ट बजाने आये हैं। बाप कहते हैं– हे आत्मायें सुनती हो– अपने कान रूपी आरगन्स से? तुमको याद है– यह ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है। तुम इस समय त्रिकालदर्शी हो। तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई त्रिकालदर्शी नहीं है। ऋषि-मुनि कहते थे हम ईश्वर को नहीं जानते हैं, नास्तिक हैं। अब तुम आस्तिक बने हो।

○ इस गीत में एक लाइन आती है– चारों तरफ लगाये फेरे... तीर्थों पर मनुष्य चारों धामों का फेरा लगाते हैं। अब उनका फेरा क्यों लगाते हैं? (यह चक्र का फेरा है, सतयुग त्रेता आदि) यह फेरा है। जितना बाप को याद करेंगे, चक्र को फिरायेंगे उतना ही विकर्म विनाश होंगे। तो बाबा को बहुत याद करना पड़े क्योंकि विकर्मों का बोझा सिर पर बहुत है। शारीरिक बीमारियां तो अन्त तक चलनी हैं। कर्मभोग तो अन्त तक रहता है, यह निशानी है। जब तक कर्मातीत अवस्था को नहीं पहुँचते हैं तब तक कुछ न कुछ दु:ख लगता ही रहता है। पिछाड़ी में यह सब खत्म होंगे। अपना मुख्य है ज्ञान और योग। देहली में ज्ञान विज्ञान भवन है। सच्चा-सच्चा ज्ञान विज्ञान भवन तो यह है। ज्ञान माना नॉलेज, जीवनमुक्ति। विज्ञान माना मुक्ति। योग को विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान से मुक्ति, ज्ञान से जीवन मुक्ति। तो ज्ञान विज्ञान भवन, यह उनको समझानी भी देनी पड़े। तो ज्ञान विज्ञान की प्रदर्शनी होनी चाहिए– उस ज्ञान विज्ञान भवन में, तो सभी मनुष्य और फॉरेनर्स आदि आकरके भारत का यह सहज योग और ज्ञान समझें। मनुष्य तो परमात्मा को सर्वव्यापी कहते हैं। जैसे हम लिखते हैं रीयल गीता वैसे लिखना पड़े ज्ञान विज्ञान भवन। बाबा डायरेक्शन देते हैं कि रीयल ज्ञान विज्ञान भवन, पाण्डव भवन नाम लगा दो, तो क्लीयर हो जायेगा। फिर साथ में यह भी लिखो कि ज्ञान से जीवन मुक्ति, एवरवेल्दी और विज्ञान अथवा

योग से एवरहेल्दी कैसे बनते हैं सो आकर समझो। जब समझेंगे तब कहेंगे बरोबर प्रैक्टिकल में देवी-देवता पद सुख शान्ति का मिल रहा है। एक को समझाने की बात नहीं। इस पर प्रदर्शनी मेला करो तो हजारों आकर समझेंगे। बाबा युक्ति बताते हैं, झट कपड़े पर प्रिन्ट किया और लगा दिया। कुछ भी बनाने में देरी नहीं लगती है। चित्र हमारे बहुत अच्छे हैं। कोई भी देशी, चाहे विदेशी आकर समझे।

○ बाकी थोड़ा समय है। पेट को दो रोटी खिलानी हैं। अभी अपने को हॉबी है– बाबा से वर्सा लेने की। अनेक प्रकार की हॉबी (आदत) मनुष्यों को होती हैं। यहाँ कोई हॉबी नहीं। शरीर के साथ तैलुक रखने वाली बातों को भूल जाना है। हम ईश्वर के बन गये। अब वापिस बाबा के पास अथवा साजन के पास जाना है। यह साजन भी बड़ा विचित्र है। विचित्र होने के कारण उनको पूरा याद नहीं कर सकते। यह नई रसम है ना। आत्मा को परमात्मा को याद करना है। ऐसे तो कभी याद किया नहीं है आधाकल्प से, सतयुग में सिर्फ इतना समझते हैं– हम आत्मा हैं बस और कोई ज्ञान नहीं। हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। यहाँ तो आत्मा को परमात्मा बना दिया है। परमात्मा सर्वव्यापी कह देते हैं। अभी यह पुरानी दुनिया जैसेकि तुम्हारे लिए है नहीं। बुद्धि नई दुनिया से लगी हुई है। जैसे कोई नया घर बनता है तो बुद्धि पुराने घर से निकल नये में लग जाती है। अभी इतने धर्म वाले कन्फ्रेन्स आदि करते हैं परन्तु एक का भी बुद्धियोग परमपिता परमात्मा से नहीं है। अभी तुमको सिखलाने वाला बाप मिला है। वही ज्ञानेश्वर और योगेश्वर है। ईश्वर जो अपने साथ योग लगाना सिखलाते हैं, ज्ञानेश्वर माना ईश्वर में ही ज्ञान है। वही ज्ञान और योग सिखा सकते हैं। जिनको पक्का निश्चय है– वह तो समझते हैं इस दुनिया में हम थोड़े समय के लिए हैं। हमको तो अब वापिस जाना है। जैसे नाटक में एक्टर्स को मालूम पड़ जाता है कि बाकी थोड़ा समय है फिर हम घर जायेंगे। घड़ी को देखते रहते हैं। तुम्हारी है बेहद की घड़ी, तुम जानते हो यह अन्तिम जन्म है। तो तुमको तो बड़ी खुशी होनी चाहिए– हमको यह पुराना शरीर

छोड़ विश्व का प्रिन्स और प्रिन्सेज बनना है। हमारे मम्मा बाबा भी जाकर प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे। बच्चों को भी अच्छी दौड़ी लगाकर विजय माला में नजदीक नम्बर में आना चाहिए।

- पतित-पावन बेहद के बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। यात्रा की प्वाइंट भी तुम बच्चों को बार-बार समझाई जाती है। बाप को बार-बार याद करो। सिमर सिमर सुख पाओ, कलह क्लेष मिटे सब तन के अर्थात् तुम एवरहेल्दी बन जायेंगे। बाप ने मन्त्र दिया है कि मुझे सिमरो अर्थात् याद करो, ऐसे नहीं कि शिव-शिव बैठ सिमरो। शिव के भगत ऐसे शिव-शिव कह माला जपते हैं। वास्तव में है रूद्र माला। शिव और सालिग्राम। ऊपर में है शिव। बाकी हैं छोटे-छोटे दाने अर्थात् आत्माएं। आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है। काले दानों की भी माला होती है। तो शिव की माला भी बनी हुई है। आत्मा को अपने बाप को याद करना है। बाकी मुख से शिव, शिव बोलना नहीं है। शिव-शिव कहने से फिर बुद्धियोग माला तरफ चला जाता है। अर्थ तो कोई समझते नहीं हैं। शिवशिव जपने से विकर्म थोड़ेही विनाश होंगे। माला फेरने वालों के पास यह ज्ञान नहीं है कि विकर्म तब विनाश होते हैं जब संगम पर डायरेक्ट शिवबाबा आकर मंत्र देते हैं कि मामेकम् याद करो। बाकी तो कोई कितना भी बैठ शिव-शिव कहे, विकर्म विनाश नहीं होंगे। काशी में भी जाकर रहते हैं। तो शिव काशी, शिव काशी कहते रहते हैं। कहते हैं काशी में शिव का प्रभाव है। शिव के मन्दिर तो बहुत आलीशान बने हुए हैं। यह सब है भक्ति मार्ग की सामग्री। तुम समझा सकते हो कि बेहद का बाप कहते हैं– मेरे साथ योग लगाने से ही तुम पावन बनेंगे। बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिए। बाप कहते हैं मुझे पतितों को पावन बनाना है। तुम बच्चे भी पावन बनाने की सर्विस करो। पर्चे ले जाकर समझाओ।

- अब पुराना शरीर छोड़ नया लेना है, बहुत समझने की बातें हैं। बस एक बाबा को ही याद करना है और कोई के नाम रूप में धक्के नही खाने हैं, नहीं तो गिर पड़ेगे। बाबा को तो अनेक प्रकार

से उठाना पड़ता है। इसमें तो शिवबाबा की पधरामणी है, इनसे रीस नहीं करनी है। माया तूफान बहुत लाती है, हनुमान मिसल पक्का बनना है, जो माया रावण हिला न सके। आदि देव को महावीर हनुमान भी कहते हैं। नाम रख दिये हैं। बच्चों में कोई महारथी भी हैं। बात प्रैक्टिकल में यहाँ की है। जिसको ज्ञान की मालिस नहीं होती है वह जैसे मुरझाये हुए दिखाई देते हैं। ज्ञान की मालिस से लक्ष्मी-नारायण को देखो कितने रमणीक हैं।

- निर्बल से लड़ाई बलवान की... ओम् शान्ति। देखो कैसा गीत बनाया हुआ है परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। जैसे गीता भागवत आदि बनाये हुए हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं। अभी तुम बच्चे इन सबका अर्थ समझते हो। तूफान और दीवे की कहानी कैसे बनाई है। मनुष्य तो ऐसे ही सुन लेते हैं। तुम पूरे अर्थ को जानते हो। बात यहाँ की है। छोटा दीवा तो क्या, माया का तूफान ऐसा है जो बड़े-बड़े दीवे को बुझा देता है। कभी मुरझा जाते हैं, योग कम हो जाता है। योग को घृत कहेंगे। जितना योग लगायें, उतनी ज्योति जगी रहे। तो यह बात अभी की है। आत्माओं की ज्योति जगाने के लिए शमा को आना पड़ता है, जिसको ही परमात्मा कहा जाता है। परवाने भी मनुष्य के लिए कहेंगे।

- तुम बच्चों को अभी ऐसा कोई विकर्म नहीं करना चाहिए जो पतित कहा जाए। देह-अभिमान से ही विकर्म बनते हैं। तुम गैरन्टी करते हो कि और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे। अब तुम प्रतिज्ञा पूरी करो। नहीं तो दण्ड खायेंगे। ग्रंथ में भी है चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला। अक्षर अच्छे हैं परन्तु जो कुछ पढ़े हैं उनको तो भूलना पड़ता है। बाबा को तो बच्चों के नाम भी पूरे याद नहीं क्योंकि शिवबाबा को याद करना है इसलिए बाबा कह देते हैं, खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो, न याद रहो। परन्तु सर्विसएबुल बच्चों को बाबा याद जरूर करते हैं कि फलाना बहुत

अच्छा मददगार है। साहूकार तो घोर अंधकार में पड़े हैं। कोई को पता नहीं पड़ता कि मौत सामने खड़ा है।

- पतित-पावन एक बाप ही है। तुम उनको याद करते हो, यह ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान गंगायें हैं इनको शिव शक्तियां कहा जाता है। शिवबाबा से योग लगाने से शक्ति मिलती है। 5 विकारों की जंक निकलती है। चुम्बक सुई को तब खींचता है जब पवित्र (साफ) हो। तुम आत्माओं पर माया की कट चढ़ी हुई है। अब मेरे साथ योग लगाने से ही कट उतरेगी। अब यह रावण राज्य है, सबकी तमोप्रधान बुद्धि है। तब परमात्मा ने कहा है मैं आकर अजामिल जैसे पापी, गणिकाओं, साधुओं आदि का भी उद्धार करता हूँ। सबको श्रेष्ठाचारी बनाने वाला एक ही बाप है। पतित-पावन बाप ही आकर इन माताओं द्वारा भारत को पावन बनाते हैं इसलिए मातायें पुकारती हैं कि पतित होने से बचाओ। पुरूष पवित्र रहने नहीं देते हैं। तुमको गवर्मेन्ट को कहना चाहिए कि इसमें हमको मदद करो परन्तु स्त्री भी पक्की मस्त चाहिए। ऐसे न हो फिर पति को, बच्चों को याद करती रहे फिर और ही अधोगति हो जाए। बाप सब बातें समझाते रहते हैं। कैसे युक्ति रचो। अभी तुम बच्चों के सुख के दिन आने वाले हैं। मैं तुमको गोल्डन एजेड दुनिया बनाकर देता हूँ जिसको स्वर्ग कहा जाता है। अब श्रीमत कहती है मुझ बाप से योग लगाओ तो तुम्हारी कट उतरे। नहीं तो इतना पद पा नहीं सकेंगे। न धारणा होगी। कोई भी विकर्म नहीं करना चाहिए। देह-अभिमान आने से बुद्धियोग टूट पड़ता है। यह ब्रह्मा भी उस बाप को याद करता है। परमपिता परमात्मा इस ब्रह्मा तन में बैठ इनको कहते हैं हे ब्रह्मा की आत्मा, हे राधे की आत्मा मुझे याद करो तो तुम्हारी कट उतरे। याद तब पड़े जब अपने को आत्मा समझें और श्रीमत पर पूरा चले। लोभ भी कम नहीं है। कोई अच्छी चीज देखी तो दिल होती है खाने की, इसको लोभ कहा जाता है। बाबा कहते हैं माया चूहे मिसल फूंक भी देती है, काटती भी है। बाप पर कितना लव रहता है। कितना प्यार से बच्चे लिखते हैं कि हम शिवबाबा के रथ के लिए स्वेटर भेजते हैं। शिवबाबा हमारा बेहद का बाप है। हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं।

बुद्धि में वह बाबा याद आता है। शिवबाबा के रथ को हम टोली भेजते हैं। शिवबाबा के रथ को हम श्रृंगारते हैं। जैसे हुसैन के घोड़े को श्रृंगारते हैं। यह सच्चा-सच्चा घोड़ा है। पतित-पावन बाबा ही पावन बनाने वाला है। यह भी अपना श्रृंगार कर रहे हैं। बाबा को भी याद करते हैं और अपने पद को भी याद करते हैं। यह दोनों पक्के हैं– ज्ञान-ज्ञानेश्वरी फिर राज-राजेश्वरी बनती है तो जरूर उनके बच्चे भी बनने चाहिए। बरोबर मालिक बनते हैं नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। राजयोग से राजराजेश्वरी बनते हैं फिर जितना जो सर्विस करे, बाबा युक्तियाँ तो सब बतला रहे हैं।

○ बाप कहते हैं इन सब बातों को छोड़ मामेकम् याद करो। थोड़ा विस्तार से कभी समझाया जाता है तो मनुष्यों का संशय मिट जाए। बाकी बात तो थोड़ी है– मुझे याद करो। जैसे मन्त्र देते हैं ईश्वर को याद करो। परन्तु वह ऐसे नहीं कहेंगे कि ईश्वर को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और ईश्वर के पास जायेंगे। यह तो बाप ही समझाते हैं तो गंगा स्नान से विकर्म विनाश नहीं होंगे। इस समय हर एक पर विकर्मों का बोझा बहुत भारी है। सुकर्म थोड़े होते हैं बाकी विकर्म तो जन्म-जन्मान्तर के बहुत हैं। कितना ज्ञान और योग में रहते हैं तो भी इतने विकर्म हैं जो छूटते ही नही हैं। जब कर्मातीत बन जायेंगे फिर तो तुमको नया जन्म नई दुनिया में मिलेगा। अगर कुछ विकर्म रहे हुए होंगे तो पुरानी दुनिया में ही दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। ज्ञान तो बच्चों को बहुत अच्छा मिल रहा है। बाप कहते हैं और कुछ नहीं समझते हो तो बाप को याद करो इससे भी सेकेण्ड में स्वर्ग की बादशाही मिल जायेगी। एक कहानी भी है– खुदा-दोस्त की। एक रोज के लिए बादशाही देते थे। अब तुम जानते हो बाबा ही त्वमेव माताश्च पिता, बन्धू.... हो गया, तो खुदा दोस्त हुआ ना।

○ दुनिया में रिश्वतखोरी भी बहुत है। तुमको रिश्वत लेने की कोई दरकार ही नहीं। वह तो व्यापारियों का काम है। तुम इनसे छूटे हुए हो। फिर भी माया ऐसी है जो चोटी से पकड़ लेती है इसलिए फिर कुछ न कुछ हबच (लोभ-लालच) रहती है तो जिज्ञासुओं से मांगते रहते हैं। बाबा कहते हैं

बच्चे किसी से भी मांगो मत। तुम दाता के बच्चे हो ना। तुमको देना है न कि मांगना है। तुमको जो कुछ चाहिए शिवबाबा से मिल सकता है। और कोई से लेंगे तो उनकी याद रहेगी। हर एक चीज शिवबाबा से लेंगे तो शिवबाबा तुमको घड़ी-घड़ी याद पड़ेगा। शिवबाबा कहते हैं– तुम्हारे लेन-देन का हिसाब मेरे साथ है। यह ब्रह्मा तो बीच में दलाल है। देने वाला मैं हूँ। मेरे से तुम कनेक्शन रखो थ्रू ब्रह्मा। कोई भी चीज औरों से लेंगे तो तुमको उनकी याद आयेगी और तुम व्यभिचारी बन जायेंगे। शिवबाबा के भण्डारे से तुम चीज ले लो और किसी से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को नुकसान पड़ता है क्योंकि उसने शिवबाबा की भण्डारी में नहीं दिया। देना चाहिए शिवबाबा की भण्डारी में।

○ तुमको आत्म-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत लगती है। बाप राय देते हैं - अमृतवेले का समय मशहूर है। उसी समय अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो तुम्हारी आत्मा पर जो कट लगी हुई है वह साफ होगी। आत्मा में खाद पड़ती है। प्योर सोने का प्योर जेवर होता है। आत्मा पर कट लगी हुई है। फिर शरीर भी ऐसा मिलता है इसलिए तुमको कार्ब में डाला जाता है। परन्तु इसमें सारा बुद्धि का काम है। बाप की याद में बैठे हैं और कोई तकलीफ की बात नहीं। जैसे बच्चा बाप को याद करता है। यह है बेहद का बाप। वह आत्मा शरीर को याद करती है। अब तुम आत्मा अपने बाप को याद करती हो।

○ अभी तुम बच्चे आत्मा और परमात्मा के भेद को जान गये हो। बाप कहते हैं हे प्रीतमायें अपने प्रीतम को घड़ी-घड़ी याद करते रहो। प्रीतम भी जानते हैं कि इन पर माया का बहुत वार है। घड़ी-घड़ी माया भुला कर देह-अभिमान में ले आती है। आत्मा को पहचान मिलती है - हम शान्त स्वरूप हैं। आत्मा का स्वधर्म ही है शान्ति। स्वधर्म को भूल आत्मा दुःखी होकर पुकारती है - हमको शान्ति चाहिए, मुक्ति चाहिए। शान्ति के बाद फिर है सुख। सन्यासी तो ड्रामा के राज़ को जानते नहीं। शान्ति देश को भी नहीं जानते। तुमको पक्का-पक्का निश्चय है हम आत्मा

परमधाम की रहने वाली हैं। हमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया है। अब पार्ट पूरा हुआ है। यह आत्मा कहती है - प्रीतम हमको मिला है। भक्ति मार्ग में सब प्रीतम को याद करते हैं। सच्चा प्रीतम एक है। एक का ही नाम लेते हैं। तुम सब समझते हो, हमको प्रीतम मिला हुआ है। अभी इस साधारण तन में बैठे हैं ।

- सृष्टि का विनाश कैसे होगा? यह आपस में कैसे लड़ेंगे? रक्त की नदियां कैसे बहेंगी। फिर दूध घी की नदियां बहेंगी। यह बाप बैठ समझाते हैं। पाण्डव लड़ते हैं क्या? बाप कहते हैं - देह-अभिमान छोड़ मामेकम् याद करो। तो अन्त मती सो गति हो जायेगी, तत्व योगी समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। परन्तु ब्रह्म में लीन अथवा ज्योति में कोई समाते नहीं हैं। बाप कहते हैं मनमनाभव। सिर पर बोझा बहुत है, याद से ही विकर्म विनाश होंगे। नहीं तो धर्मराज द्वारा बहुत सजायें खानी पड़ेंगी। हमको तो बस शिवबाबा की याद में जाना चाहिए। अगर बहुत समय से याद नहीं करेंगे तो पिछाड़ी में वह अवस्था नहीं रहेगी। बहुत सन्यासी लोग भी ऐसे बैठे-बैठे जाते हैं। भक्तों की महिमा भी कोई कम नहीं है। फिर भी पुनर्जन्म उनको तो लेना ही है। अब बाप कहते हैं हम सब आत्माओं को साथ ले जाऊंगा। रात-दिन यही चिंता रहे कि कैसे बाप का परिचय दें।

- आधाकल्प तक फिर और कोई धर्म निकलते नहीं, एक ही धर्म रहेगा। आधाकल्प सूर्यवंशी चन्द्रवंशी स्वराज्य। यह है तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार, हेविनली गॉड फादरली बर्थ राइट है। हम अपने स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। राज्य करने के लिए लायक बन रहे हैं। वही हमको पढ़ाते हैं, लायक बनाते हैं। रोज़-रोज़ समझाते हैं, पक्का करने लिए। समझाते हैं - माया तुम्हें याद नहीं करने देगी, तुम कितनी भी कोशिश करो, बाबा को याद करने लिए तो युद्ध चलती है ना। बाप बैठ रास्ता बताते हैं कि क्या करो, तुम कर्मयोगी भी हो। हाँ बच्चे आदि तंग

करने लगते हैं, रौरव नर्क है ना। दु:ख देने वाली सन्तान हैं। वहाँ होते हैं सुखदायी सन्तान क्योंकि सुखधाम है ना। वहाँ कोई ऐसी चीज़ होती नहीं जिससे दु:ख हो वा मैलापन हो। यहाँ तो कितना दु:ख है। बीमारियाँ भी कैसी-कैसी गन्दी निकलती हैं। आगे थोड़ेही थी, कैंसर की बीमारी का नाम भी नहीं सुना था। स्वर्ग में कोई बीमारी होती ही नहीं। जब आसुरी राज्य शुरू होता है तब ये गन्दी बीमारियाँ शुरू होती हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। स्वर्ग में कितनी सुन्दर गायें होती हैं, कहते हैं कृष्ण के पास ऐसी-ऐसी अच्छी गायें थी, तो उनको भी ग्वाला बना दिया है। कृष्ण कोई ग्वाला थोड़ेही था। तुम कहेंगे शिवबाबा ने यह चैतन्य ह्युमन गायें चराई हैं। ज्ञान घास खिलाते हैं। ज्ञान का कलष माताओं पर रखा है। बाबा कहते हैं अब मैं जो सुनाता हूँ वह सुनो। पहली बात मनमनाभव। मुझे याद करो तो विकर्म भस्म होंगे। यह है बहुत सहज उपाय।

- शिवबाबा कहते हैं निरन्तर मुझे याद करो। ब्रह्मा की आत्मा को भी कहते हैं तुमको मेरे पास आना है। उठते बैठते मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो, इसमें कमाई बहुत है। हेल्थ भी बहुत अच्छी मिलेगी। कभी भी टाइम वेस्ट नहीं करो। हियर नो ईविल, टॉक नो ईविल..... सिवाए ज्ञान और योग के कोई भी वाह्यात बातें नहीं करनी है। जिसमें ज्ञान कम है तो जरूर अज्ञान ही होगा। झरमुई झगमुई करते रहेंगे। ऐसी बातें कभी नहीं सुनना। जब ऐसे देखो कि वह वाह्यात बातें सुनाते हैं तो समझो यह हमारा दुश्मन है। फालतू बातें सुनाकर टाइम वेस्ट करते हैं। बाप कहते हैं ऐसी फालतू बातें नहीं सुनो। कोई की ग्लानी करेंगे, कोई के लिए कुछ बोलेंगे। झरमुई झगमुई की तो पाप आत्मा बन जायेंगे। बाप कहते हैं बच्चे पाप आत्मा नहीं बनना। दुनिया का समाचार, फलानी ऐसी है, उसने यह किया, ऐसी बातें जो सुनते और सुनाते हैं वह मुफ्त समय बरबाद करते हैं। तुम तो बहुत आबाद हो रहे हो। विश्व के मालिक बन रहे हो। बरोबर भारत आबाद था। अब बरबाद है। बाप द्वारा आबाद हो रहे हो। बाप और सृष्टि चक्र को याद करना यह तो बड़ा ही सहज है। इस संगमयुग का कोई को पता नहीं है। कलियुग में सब पतित हैं,

सतयुग में सब पावन थे। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प के संगमयुग पर आता हूँ, पतितों को पावन बनाने। अजामिल जैसे पापी भी हैं।

- तुम श्रेष्ठ बन रहे हो। शरीर छोड़ेंगे तो भी ऊंच सर्विस ही जाकर करेंगे क्योंकि तुम्हारी चढ़ती कला है फिर जो जितना पुरूषार्थ करेगा। बाबा फिर भी कहते हैं यहाँ तुम सम्मुख बैठे हो। यहाँ सुनते हो, याद रहता है फिर बाहर जाने से झट भूल जाता है। ऐसे भी हैं फिर आपस में झरमुई झगमुई, उल्टी सुल्टी बातें सुनते सुनाते रहते हैं। ज्ञान नहीं है तो एक दो को वाह्यात बातें सुनाकर माथा खराब करते हैं। बाबा लेने के लिए आये हैं। बाबा कहते हैं बच्चे मुझे याद करो तो इतना ऊंच पद पायेंगे इसलिए सिवाए ज्ञान के और किसी की भी ग्लानि आदि उल्टी सुल्टी बातें सुनो नहीं। बाप को कहते हैं हेविनली गॉड फादर, स्वर्ग स्थापना करने वाला वर्ल्ड गॉड फादर। तुम पतित से पावन बन रहे हो। याद रखना तुम्हारी दुश्मन माया बड़ी दुश्तर है। सिवाए ज्ञान के कोई वाह्यात बातें सुनने से बेमुख हो शोक वाटिका में चले जायेंगे। बाबा बार-बार समझाते हैं।

- जब पतित बनते हैं तब वजीर आदि की दरकार रहती है। अभी तो एक-एक राजधानी को कितने वजीर (मन्त्री) हैं। एक की मत न मिले दूसरे से, कितना मतभेद में आते रहते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि बाबा हमको पढ़ा रहे हैं, मनुष्य से देवता बनाने। बाप कहते हैं सभी अपने को आत्मा समझो। देह के इन सब सम्बन्धों को भूल जाओ। एकदम बेगर बन गये, सब कुछ दे दिया। शरीर भी दे दिया बाकी क्या रहा। कुछ भी नहीं। परमपिता परमात्मा कहते हैं मैं आत्माओं से बात करता हूँ। आत्माओं को ले जाना है। इस शरीर के भान को भूलते जाओ, इसमें ही मेहनत है। बाप कहते हैं मीठे बच्चों, सारा कल्प तुम देह-अभिमानी रहे हो। लौकिक बाप को ही याद किया है, अब देही-अभिमानी बन मेरे को याद करो। मेरी याद से ही बल मिलेगा। हे बच्चे, हे आत्मायें मामेकम् याद करो, दूसरा न कोई। भूले चूके भी और कोई को याद नहीं

करना है। तुम यह प्रतिज्ञा करते हो। बाबा मेरे तो आप एक ही हो। हम आत्मा हैं, आप परमात्मा हो। आपने बतलाया है। आत्मा हमारे बच्चे हो। अब रावण के दु:ख से तुमको लिबरेट कर वापिस ले जाने आया हूँ। अब बच्चों को धीरज धरना है। जब राजधानी स्थापना हो जायेगी तो फिर यह महाभारी महाभारत की लड़ाई लगेगी।

○ बाप अच्छी रीति समझाते हैं– बच्चे जितना हो सके और झरमुई झगमुई छोड़ दो। शरीर निर्वाह अर्थ तो धन्धा आदि भी करना ही है। बाकी जो समय मिले मोस्ट बिलवेड बाप को याद करना है। वह भी बच्चों को इतना प्यार करते हैं। मित्र सम्बन्धी आदि ढेर थे। परन्तु उन सबसे बुद्धियोग हटाए नये सम्बन्ध में कितना लव रहता है। सर्विसएबुल बच्चों को छाती से लगा लें। बहुत बच्चे सपूत हैं, बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। अन्धों की लाठी बनते हैं। दु:खियों को सुखधाम का मालिक बना रहे हैं। तो बाप ऐसे बच्चों पर बलिहार जाते हैं।

○ बाप को देखने से बच्चों को स्थाई खुशी होनी चाहिए, इसको ही रूहरिहान कहा जाता है। जो सुप्रीम बाप है सबका, वह बैठ आत्माओं से बात करते हैं। आत्मा इस शरीर द्वारा सुनती है। यह एक ही बार ऐसा होता है कि बाप को याद करते-करते जब वह आते हैं और नजर मिलाते हैं तो 21 जन्मों के लिए वर्सा दे देते हैं। यह तुम बच्चों को याद रहना चाहिए। बच्चे जो हैं वह भूल जाते हैं, भूलना नहीं चाहिए। बाबा की नजर के सामने होने से ही समझते हैं हम बाबा के साथ बैठे हैं। बाबा को देखने से खुशी का पारा चढ़ता है और बाप बैठ नई-नई प्वाइंट्स समझाते हैं। बाप से बच्चों का पूरा लव हो जाए। आत्मा अपनी दिल पूरी कर दे क्योंकि बिछुड़ी हुई है। अनेक प्रकार के दु:ख देखे हैं। अब सम्मुख बैठे हैं तो देखकर हर्षित होने चाहिए।

○ मेहनत करनी है याद की। बेहद का वर्सा जो मिला था वह अब गँवाया है। अब फिर से पा रहे हैं। लौकिक बाप पारलौकिक बाप दोनों को याद करते हैं। सतयुग में एक लौकिक को याद करते, पारलौकिक को याद करने की जरूरत ही नहीं। वहाँ सुख ही सुख है। यह ज्ञान भी भारतवासियों के लिए है, और धर्म वालों के लिए नहीं है। परन्तु जो और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं वह निकल आयेंगे। आकर योग सीखेंगे। योग पर समझाने के लिए तुमको निमन्त्रण मिलता है तो तैयारी करनी चाहिए। समझाना है क्या तुम भारत का प्राचीन योग भूल गये हो? भगवान कहते हैं मनमनाभव। परमपिता परमात्मा कहते हैं निराकारी बच्चों को कि मुझे याद करो तो तुम मेरे पास आयेंगे। अभी तुम बच्चों को बाप की श्रीमत मिलती है बच्चे बाप को याद करो। अल्फ और बे। परमपिता परमात्मा स्वर्ग की स्थापना करते हैं। रावण फिर नर्क स्थापना करते हैं। तुमको तो स्वर्ग स्थापना करने वाले बाप को याद करना है। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, शादी आदि पर जाओ। जब फुर्सत मिले तो बाप को याद करो। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते हुए जिसके साथ तुम्हारी सगाई हुई है, उसे याद करना है। जब तक उनके घर जायें तब तक भल तुम सब कर्तव्य करते रहो, लेकिन बुद्धि से बाप को भूलो नहीं। अच्छा!

○ बाप को याद करना है। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल जाना है। बाबा ने बिगर शरीर भेजा था, फिर वैसे ही जाना है। यहाँ आये हैं पार्ट बजाने। यह है गुप्त मेहनत, बाप और वर्से को याद करना है। तुम घड़ी-घड़ी यह भूल जाते हो। बाबा को भूलने से माया की चमाट लग जाती है। यह भी खेल है, अल्लाह अवलदीन का... दिखाते हैं ना। अल्लाह ने अवल धर्म स्थापना किया। ठका किया और बहिस्त मिला। यह धर्म कौन स्थापना कर रहे हैं? अल्लाह ने पहला नम्बर धर्म स्थापना किया। हातमताई का भी खेल दिखाते हैं। मुख में मुहलरा न डालने से माया आ जाती है। तुम्हारा भी यह हाल है। बाप को भूलकर और सभी को याद करते रहते हो। अब तुम बच्चे जानते हो हम शान्तिधाम जा रहे हैं, फिर सुखधाम में आयेंगे। दु:खधाम को भूल जाने

का पुरूषार्थ करो। यह तो सब खत्म हो जाने का है। हम लखपति हैं, ऐसे हैं... यह बुद्धि में नहीं रखना है। हम तो हैं ही नंगे (अशरीरी) यह तो पुरानी चीज है। इस पुरानी जुत्ती ने बड़ा दु:ख दिया है। जितना बीमारी जास्ती हो खुशी होनी चाहिए। नाचना चाहिए। कर्मभोग है, हिसाब-किताब तो चुक्तु करना ही है, इससे डरना नहीं है। समझना चाहिए हम योगबल से विकर्म विनाश नहीं कर सकते हैं तो कर्म भोगना से चुक्तू करना पड़े, इसमें मूँझने की बात ही नहीं है। यह तो शरीर पुराना है। यह जल्दी खत्म हो तो अच्छा है।

○ ओम् शान्ति का अर्थ तो समझाया है ना - बाप कहते हैं आत्मा और परमात्मा शान्त स्वरूप हैं। जैसे बाप वैसे बच्चे। तो बाप बच्चों को समझाते हैं तुम शान्त स्वरूप तो हो ही। बाहर से कोई शान्ति नहीं मिलती है। यह रावण राज्य है ना। अब इस समय सिर्फ तुम अपने बाप को याद करो, मैं इसमें विराजमान हूँ। तुमको जो मत देता हूँ उस पर चलो। बाबा कोई भी नाम रूप में नहीं फँसाते। यह नाम रूप है बाहर का। इस रूप में तुमको फँसना नहीं है। दुनिया सारी नाम रूप में फँसाती है। बाबा कहते हैं इन सबके नाम रूप हैं, इनको याद नहीं करो। अपने बाप को याद करो तुम्हारी आयु भी याद से बढ़ेगी, निरोगी भी बनेंगे। लक्ष्मी-नारायण भी तुम्हारे जैसे थे, सिर्फ सजे सजाये हैं। ऐसे नहीं कोई छत जितने लम्बे चौड़े हैं। मनुष्य तो मनुष्य ही हैं। तो बाप कहते हैं कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। देह को भूलना है। अपने को आत्मा समझो - यह शरीर तो छोड़ना है। दूसरी बात गफलत नहीं करो, विकर्मों का बोझा सिर पर बहुत है। बहुत भारी बोझा है। सिवाए एक बाप की याद के कम नहीं हो सकता। बाप ने समझाया है जो सबसे ऊंच पावन बनते हैं, वही फिर सबसे पतित बनते हैं, इसमें वन्डर नहीं खाना है। अपने को देखना है। बाप को बहुत याद करना है। जितना हो सके बाप को याद करो, बहुत सहज है। जो इतना प्यारा बाप है उनको उठते बैठते याद करना है। जिसको पुकारते हैं पतित-पावन आओ, परन्तु हड्डी लव नहीं रहता। लव फिर भी अपने पति बच्चों आदि से रहता है। सिर्फ कहते थे पतित-

पावन आओ। बाप के बने हो तो एक को ही याद करना चाहिए। हद से तोड़ बेहद से जोड़ना है, बहुत बड़ा बाप है। तुम जानते हो बाप क्या आकर देते हैं। बेहद का बाप तुमको बेहद का वर्सा दे रहे हैं, जो कोई दे न सके। मनुष्य तो सब एक दो को मारते, काटते रहते हैं, आगे यह थोड़ेही होता था।

○ बाप एक महामन्त्र देते हैं मुझे याद करो। भल कोई देहधारी से सुनो, परन्तु याद मुझ विदेही को करो। सुनना तो जरूर देहधारी से ही पड़ेगा। ब्रह्माकुमार-कुमारियां भी मुख से ही सुनायेंगे कि पतित-पावन को याद करो। तुम्हारे सिर पर जो विकर्मों का बोझा है वह याद के बल से ही भस्म करना है। निरोगी बनना है। तुम बच्चे बाप के सम्मुख बैठे हो। जानते हो बाबा आये हैं तकदीर बनाने और बहुत सहज रास्ता बताते हैं। कहते हैं बाबा याद भूल जाती है। अरे शर्म नहीं आती है! लौकिक बाप जो तुमको पतित बनाते हैं, उनकी याद रहती है और यह जो परलौकिक बाप तुमको पावन बनाते हैं कहते हैं मामेकम् याद करो, तो विकर्म विनाश होंगे। उनके लिए कहते हो बाबा भूल जाता हूँ। बाप कहते हैं मैं तुमको मन्दिर लायक बनाने आया हूँ। विघ्न पड़ते हैं। भिन्न-भिन्न नाम रूप में फँस पड़ते हैं। बाप कहते हैं फंसो नहीं। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, बाप को याद करो और पवित्र रहो। बहुत बच्चे कहते हैं बाबा तूफान आते हैं। बाप कहते हैं तुम बाप को भूल जाते हो। बाप की मत पर नहीं चलते हो। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप की मत मिलती है– बच्चे, भ्रष्टाचारी मत बनो। तुमको पढ़ाने वाला एक है। वह कहते हैं मामेकम् याद करो। इनके रथ को भी याद नहीं करो। रथी और रथवान। घोड़े गाड़ी की तो बात नहीं। उसमें बैठ ज्ञान दिया जाता है क्या? आजकल तो एरोप्लेन की सवारी है। साइन्स बिल्कुल जोर पर है। माया का पाम्प बड़ा जोर है।

○ बाबा हमेशा कहते हैं देहधारी को याद नहीं करो। भल मैं भी देह द्वारा सुनाता हूँ। परन्तु याद तुम मुझ निराकार को ही करना। याद करते रहेंगे तो धारणा भी होगी, बुद्धि का ताला भी खुलेगा। 15 मिनट वा आधा घण्टा से शुरू करो फिर बढ़ते रहो। पिछाड़ी के समय सिवाए एक बाप के कोई की याद न रहे इसलिए सन्यासी सब कुछ छोड़ देते हैं। तपस्या में बैठते हैं, जब शरीर छोड़ते हैं उस समय आसपास का वायुमण्डल भी शान्ति का हो जाता है। जैसे कोई शहर में कोई महापुरूष ने शरीर छोड़ा है। तुमको तो अब ज्ञान है। आत्मा अविनाशी है, वह लीन हो न सके। उनमें तो यह ज्ञान नहीं है। बाबा समझाते हैं आत्मा कभी विनाश होती नहीं। उनमें जो ज्ञान है वह भी कभी विनाश नहीं होता। इम्प्रैसिबुल ड्रामा है। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग... यह चक्र फिरता रहता है। तुम फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हो फिर नम्बरवार और धर्म वाले भी आते हैं। गॉड फादर इज वन। सतयुग से कलियुग तक वृद्धि को पाते रहते हैं, दूसरे झाड़ बन न सकें। चक्र भी एक ही है। याद भी एक को ही करते हैं। गुरूनानक को याद करते हैं परन्तु उनको फिर अपने समय पर आना पड़े। जन्म-मरण में तो सबको आना है। अब बाप कहते हैं हे देहधारी आत्मायें अब वापिस चलना है, सिर्फ मुझे याद करो। कभी भी देहधारी में लटके तो रोना पड़ेगा। एक को याद करना है, वहाँ आना है। तुम्हारा रोना 21 जन्मों के लिए बन्द हो जाता है। कोई मरे और तुम रोने लग पड़ेंगे फिर रोने प्रूफ तो बनेंगे नहीं। किसकी याद में शाक आ जाए और मर जाएं तो दुर्गति हो जाये। तुमको याद तो शिवबाबा को करना है ना। हार्ट फेल भी हो जाते हैं। तुमको तो उठते-बैठते एक बाप को याद करना है। यह भी बुद्धि में बिठाया जाता है क्योंकि सारे दिन में याद नहीं करते हैं तो संगठन में बिठाया जाता है। सबका इकट्ठा फोर्स होता है। अगर और किसी की याद बुद्धि में रहेगी तो फिर जन्म लेना पड़ेगा। कुछ भी हो जाय, स्थेरियम रहना है। देह का भान न रहे। जितना बाप को याद करते हो, वह याद रिकार्ड में नूँध जाती है। तुमको खुशी भी बहुत होगी। हम जल्दी चले जायेंगे। जाकर तख्त पर बैठेंगे, बाप हमेशा कहते हैं- बच्चे तुम्हें कभी रोना नहीं है, रोती तो विधवायें हैं।

- इस पुरानी दुनिया से वैराग्य है। देह से भी वैराग्य। तो बाकी क्या रहा। बहुत पूछते हैं– बाबा आप कहते हो दोनों तरफ तोड़ निभाना है। सो तो जरूर करना है। अगर तोड़ नहीं निभायेंगे तो सन्यासियों के मिसल हो जायेंगे। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहो। देही-अभिमानी बनने का पुरूषार्थ करो तो बुद्धियोग बाप से लग जायेगा। मैं आत्मा हूँ, बाप के पास जाना है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बनो। ज्ञान और योग नहीं होगा तो लटक पड़ेंगे। हर एक की जन्म पत्री अलग अलग है। हर एक के लिए युक्ति भी अलग-अलग मिलती है। कोई तकलीफ हो तो पूछो। कोई भी हालत में खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। हम घर जाते हैं फिर आयेंगे नई राजधानी में। बाकी थोड़ा समय है। पार्ट बजाना है। ममत्व तोड़ते जाना है। हर एक का कर्मबन्धन अलग अलग है। कोई-का हल्का, कोई का भारी है। बाबा से युक्ति लेकर धैर्यता से कर्मबन्धन को काटते जाना है। इसमें गुप्त मेहनत चाहिए। बुद्धि को यात्रा में ले जाने की मेहनत है। घड़ी घड़ी बुद्धियोग टूट पड़ता है। अब परिपक्व बन जावें तो कर्मातीत अवस्था आ जाये। अभी तो अनेक प्रकारों के विकल्पों के ही तूफान लग पड़ते हैं। एकदम नींद ही फिट जाती है। विकल्पों को ही तूफान कहते हैं और सतसंगों में यह बातें नहीं होती। वहाँ तो है कनरस, फायदा कुछ भी नहीं। यहाँ तो यह पढ़ाई है, आमदनी के लिए। पढ़ाई को कनरस नहीं कहेंगे। तो बाप समझाते हैं यह अन्तिम जन्म है, पुरानी दुनिया खत्म हो जाने वाली है। क्यों न श्रीमत पर चल ऊंच पद पायें! जब तक इसमें होशियार हो जाओ तब तक शरीर निर्वाह अर्थ कर्म तो करना है फिर इस ईश्वरीय सर्विस में लग जाना।

- विलायत तक यह पढ़ाने के लिए बच्चे गये हैं। इन्टरप्रेटर भी साथ में होशियार चाहिए। मेहनत तो करनी है। तुम ईश्वरीय बच्चों की चलन बहुत ऊंची चाहिए। सतयुग में चलन होती ही ऊंची और रॉयल है। यहाँ तो तुमको बकरी से शेरनी, बन्दर से देवता बनाया जाता है। तो हर बात में निरहंकारीपना चाहिए। अपने अहंकार को तोड़ना चाहिए। याद रखना चाहिए “जैसा कर्म हम करेंगे हमको देख और करेंगे।” अपने हाथ से बर्तन साफ करेंगे तो सब कहेंगे कितने निरहंकारी

हैं। सब कुछ हाथ से करते हैं तो और ही जास्ती मान होगा। कहाँ अहंकार आने से दिल से उतर जाते हैं। जब तक ऊंची अवस्था नहीं बनी तो दिल पर नहीं चढ़ेंगे तो तख्त पर बैठेंगे कैसे! नम्बरवार मर्तबे तो होते हैं ना! जिनके पास बहुत धन है तो फर्स्टक्लास महल बनाते हैं। गरीब झोपड़ी बनायेंगे। इस कारण अच्छी तरह से पढ़कर फुल पास हो, अच्छा पद पाना चाहिए। ऐसे नहीं कि जो ड्रामा में होगा अथवा जो नसीब में होगा। यह ख्याल आने से ही नापास हो जायेंगे। नसीब को बढ़ाना है। रात दिन खूब मेहनत कर पढ़ना है। नींद को जीतने वाला बनना है। रात को विचार सागर मंथन करने से तुमको बहुत मजा आयेगा। बाबा को कोई बतलाते नहीं हैं कि बाबा हम ऐसे विचार सागर मंथन करते हैं। तो बाबा समझते हैं कि कोई उठता ही नहीं है। शायद इनका ही पार्ट है विचार सागर मंथन करने का। नम्बरवन बच्चा तो यही है ना! बाबा अनुभव बताते हैं, उठकर याद में बैठो। ऐसे ऐसे ख्याल किये जाते हैं– यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। ऊंचे ते ऊंचा बाबा है फिर सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। फिर ब्रह्मा क्या है! विष्णु क्या है! ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करना चाहिए। अच्छा!

○ योगी कभी भोग (विकार) नहीं करते। अगर भोगी बनें तो फिर योग सिद्ध न हो। अब तुम योग सीख रहे हो। भोगी बनने से अथवा विकार में जाने से योग लग न सके। तुम बच्चों को बाप टीचर सतगुरू तीनों का इकट्ठा वर्सा मिलता है। सतगुरू सबको साथ ले जाते हैं, ले तो सबको जायेंगे परन्तु तुम गले का हार बनते हो। साजन सब सजनियों को ले जायेंगे। पहले साजन चलेगा फिर सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर उनका सारा जो घराना है, इस्लामियों की बरात अथवा घराना, बौद्धियों का घराना। सभी आत्माओं को अपने-अपने सेक्शन में जाकर बैठ जाना है। आत्मा स्टार है। यह बड़ी समझने की बातें हैं। तकदीरवान ही धारण कर औरों को भी समझायेंगे। वह फिर महिमा भी लिखते हैं। फलाने ने हमको समझाया तो हमारे कपाट खुल गये, इसने हमको जीयदान दे दिया, फिर उनसे ही प्रीत हो जाती है। उनको ही याद करते रहते हैं, फिर उनसे ही छुड़ाया जाता है। दलाल को थोड़ेही याद किया जाता है। दलाल ने तो दलाली

की, खलास। फिर साजन को सजनी याद करती है। ब्रह्मा भी हो गया दलाल। याद उस शिवबाबा को ही करना है। यह दलाल भी उनको ही याद करते हैं, इनकी महिमा नहीं। यह तो पतित है। पहले इनमें प्रवेश कर इनको पावन बनाया। एक है पतित, एक है पावन। सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा है पावन। उनकी भी शक्ल दिखानी चाहिए। समझानी तो बार-बार दी जाती है, परन्तु जबकि आकर बाप का बनें। बाबा हम आपके हो गये। आप हमारे बाप, टीचर, सतगुरू हो। बाप कहेंगे मैं भी तुमको स्वीकार करता हूँ, परन्तु याद रखना मेरी पत (इज्जत) नहीं गँवाना। मेरा बनकर फिर विकार में नहीं जाना। वास्तव में इस समय सब नर्कवासी हैं। याद करते हैं स्वर्ग को। कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ। अरे स्वर्ग है कहाँ? अगर स्वर्ग गया तो फिर यहाँ बुलाकर खाना आदि क्यों खिलाते हो? पतित दुनिया में पतित ब्राह्मणों को ही खिलाते हैं। पावन तो कोई है नहीं। परन्तु इस छोटी बात को भी कोई समझ नहीं सकते। अच्छा!

○ बाप कहते हैं अभी यह रावणराज्य खलास होना है। समय बहुत थोड़ा है इसलिए बाप से योग लगाते रहो और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। वापिस चलने में थोड़े दिन हैं। सिर पर पापों का बोझा बहुत है, इसलिए जितना हो सके टाइम निकाल मुझे याद करो। धन्धा-धोरी आदि कर्म तो करना ही है क्योंकि तुम कर्मयोगी हो। 8 घण्टा इसमें लगाना है। वह भी होगा पिछाड़ी में। ऐसे मत समझो कि सिर्फ बुढ़ियों को ही याद करना है। नहीं, सबका मौत अब नजदीक है। यह शिक्षा सबके लिए है। छोटे बच्चों को भी समझाना है। हम आत्मा हैं, परमधाम से आये हैं। बिल्कुल सहज है। गृहस्थ का भी पालन करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी शिक्षा लेनी है। फिर सर्विसएबुल बनने से बन्धन आपेही छूट जायेंगे। घर वाले आपेही कहेंगे– तुम भल सर्विस करो। हम बच्चों को सम्भाल लेंगे या माई (नौकर) रखेंगे।तो उसमें उनको भी फायदा है। समझो घर में 5-6 बच्चे हैं, स्त्री चाहती है हम ईश्वरीय सेवा करें और अच्छी सर्विसएबुल है तो बच्चों के लिए माई रख सकते हैं क्योंकि उसमें अपना भी कल्याण और दूसरों का भी कल्याण होगा।

दोनों भी सर्विस में लग सकते हैं। सर्विस के तरीके तो बहुत हैं। सुबह और शाम सर्विस हो सकती है।

- शिवबाबा कहते हैं जैसे यह मम्मा बाबा अच्छी तरह पढ़ते हैं, तुम भी पढ़ो तो ऊंच पद पायेंगे। रात को जागो, विचार सागर मंथन करो तो खुशी में आ जायेंगे। उस समय ही खुशी का पारा चढ़ता है। दिन में धन्धे आदि का बन्धन है। रात को तो कोई बंधन नहीं। रात को बाबा की याद में सोयेंगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलायेंगे। ऐसा भी बहुत अनुभव लिखते हैं। हिम्मते बच्चे मददे बाप तो है ही। अपने ऊपर बहुत अटेन्शन रखो। सन्यासियों का धर्म अलग है। जिस धर्म का जितना सिजरा होगा उतना ही बनेगा।

- मम्मा बाबा को देखो कितने बच्चे हैं। वह है हद का गृहस्थ व्यवहार, यह बाबा तो बेहद का मालिक है। बेहद के भाई-बहिनों को समझाते हैं। यह सबका अन्तिम जन्म है। बाप हीरे जैसा बनाने आये हैं। फिर तुम कौड़ियों के पिछाड़ी क्यों पड़ते हो! सुबह और शाम हीरे जैसा बनने की सर्विस करो। दिन में कौड़ियों का धन्धा करो। जो सर्विस पर हिर जायेंगे उनको घड़ी-घड़ी बाबा बुद्धि में याद आता रहेगा, प्रैक्टिस पड़ जायेगी। जिनके पास काम करेंगे, उनको भी लक्ष्य देते रहेंगे। परन्तु निकलेंगे तो कोटों में कोई। आज नहीं तो कल याद करेंगे तो फलाने दोस्त ने हमको यह बात कही थी। अगर पद पाना है तो हिम्मत चाहिए। भारत का सहज योग और ज्ञान तो मशहूर है। परन्तु क्या था, कैसा था वह नहीं जानते। यह सर्विस बहुत विस्तार को पायेगी। बच्चे भी वृद्धि को पाते रहेंगे। फिर इन भक्ति मार्ग की वैल्यु नहीं रहेगी। यह ड्रामा में था। ऐसे नहीं कि यह क्यों हुआ! ऐसे न करते तो ऐसे होता था! यह भी नहीं कह सकते। पास्ट जो हुआ सो ठीक, आगे के लिए खबरदार। माया कोई विकर्म न कराये। मन्सा तूफान तो आयेंगे, परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना। फालतू संकल्प तो बहुत आयेंगे, फिर भी पुरूषार्थ कर

शिवबाबा को याद करते रहो। हार्टफेल नहीं होना है। कई बच्चे लिखते हैं– बाबा 15-20 वर्ष से बीमारी के कारण पवित्र रहते हैं फिर भी मन्सा बहुत खराब रहती है। बाबा लिखते हैं तूफान तो बहुत आयेंगे, माया हैरान करेगी, पर विकार में नहीं जाना। यह तुम्हारे ही विकर्मों का हिसाब-किताब है। योगबल से ही खत्म होगा, डरना नहीं है। माया बड़ी बलवान है। कोई को भी छोड़ती नहीं है। सर्विस तो अथाह है, जितना भी कोई करे।

○ पतित-पावन गॉड फादर हमको पढ़ाते हैं। वह हमारा बाप टीचर सतगुरू है, इसमें घुटका खाने की बात नहीं है। अपनी रचना को तो सम्भालना ही है। अगर यहाँ आकर बैठ जायें - यह तो सन्यासियों का ज्ञान हो गया। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए तुम एक घण्टा, आधा घण्टा निकाल सकते हो। पहले 7 रोज़ भट्ठी में पड़ना पड़े। 7 दिन कोई की याद न आये, कोई को चिट्ठी न लिखें। बिल्कुल सबको भूल जाना है। तुम बहुत वर्ष भट्ठी में रहे, फिर भी तकदीर... कोई को तो माया खींच लेती है। ऐसी माया प्रबल है।

○ बाप तो आकर पुजारी से पूज्य बनाते हैं। पूजा करना कैसे सिखलायेंगे! शिवबाबा कुछ भी करने नहीं देते। कहते हैं राम-राम भी मुख से नहीं कहो। केवल बाप को याद करना है। याद करना कोई जाप नहीं है। बच्चे बाप से वर्सा लेते हैं। बच्चा थोड़ेही बाप का जाप जपेगा! तुमको भी जाप नहीं जपना है। जाप और याद में रात दिन का फ़र्क है। प्वाइंट्स तो ढेर नई-नई मिलती रहती हैं समझाने के लिए। यह भी जरूरी बात है कि यह भी बाप है। इनसे मिलता है बेहद का वर्सा और लौकिक बाप से मिलता है हद का वर्सा। इस पारलौकिक बाप ने कल्प पहले भी वर्सा दिया था, अब फिर देने आये हैं। बुद्धि में सारा ज्ञान फिरना चाहिए, जिससे मनुष्य देवता बन जायें। देखो, ज्ञान मार्ग में समझाने की बड़ी मेहनत चाहिए। जिससे मनुष्य की जीवन हीरे जैसी बन जाये।

○ बाप कहते हैं - पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया का मालिक बन जायेंगे। ऐसी युक्ति से समझाना है, विष्टा के कीड़े हैं तो उन्हें भूँ भूँ कर आप समान बनाना है। शक्ति सेना में शक्ति भी चाहिए ना! बच्चों आदि को तो सम्भालना ही है। बाकी मोह नहीं लटकाना है। बुद्धि का योग एक से ही रहे। यह सब चाचा, मामा, काका आदि ड्रामा के एक्टर्स हैं। अब खेल पूरा होता है, वापिस जाना है। विकर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना है। इस पुरानी दुनिया से दिल हटाना है। एक बाप को याद करना है। बाप कहते हैं श्रीमत पर चलेंगे तो स्वर्ग की बादशाही पायेंगे। श्रीमत है भगवान की।

○ तुम बच्चों को योग में रहकर कर्मातीत बनना है। तुम ही सम्पूर्ण निर्विकारी थे फिर बनना है। बाकी जो इतने धर्म हैं, वह सतयुग में नहीं होंगे। जो सतयुग में थे वही बहुत समय से अलग हुए हैं। उनके लिए ही कहा जाता है सिकीलधे। आत्मा परमात्मा अलग रहे.... कौन सी आत्मायें पहले-पहले परमधाम से आई यहाँ पार्ट बजाने! इतना समय जो पतित देह-अभिमानी बन पड़े हैं, उनके लिए फिर देही-अभिमानी बनना - इसमें मेहनत लगती है। घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं, उठते बैठते मुझे याद करो। विकर्मों का बोझा तुम्हारे ऊपर बहुत है। सुख भी तुमने बहुत देखा है, दु:ख भी तुमने बहुत देखा है। अब फिर दु:ख से तुमको सुख में ले जा रहा हूँ। तो श्रीमत पर चलना पड़े और फिर औरों को भी याद दिलाते हैं। सृष्टि चक्र का राज़ समझाना बड़ा सहज है। उनको ही त्रिकालदर्शी कहा जाता है।

○ शास्त्रों में तो बहुत गपोड़े लगा दिये हैं इसलिए कोई विरला ही इन बातों को समझ कदम-कदम श्रीमत पर चलते हैं। श्रीमत पर चलना कितना डिफीकल्ट है। लक्ष्मी-नारायण जिन्हों को सारी दुनिया पूजती है - वह अब तुम बन रहे हो। यह तुम ही जानते हो सो भी नम्बरवार। अब बाप

कहते हैं मुझे याद करो और घर को याद करो। घर तो जल्दी याद आता है ना। मनुष्य 8-10 वर्ष की मुसाफिरी कर घर लौटते हैं तो खुशी होती है कि अब हम अपने बर्थप्लेस में जा रहे हैं। अब वह मुसाफिरी होती है थोड़े समय की, इसलिए घर को भूलते नहीं हैं। यहाँ तो 5 हजार वर्ष हो गये हैं इसलिए घर को तो बिल्कुल ही भूल गये हैं।

- पहली मुख्य बात समझाकर लिखाओ फिर और बात। एक ही त्रिमूर्ति के चित्र पर पूरा समझाना है। निश्चय करते हो तो तुम्हारे माँ बाप है, इनसे वर्सा मिलना है। कोई कितना भी बूढ़ा हो– यह दो अक्षर तो सबको समझा सकते हैं ना। अगर यह दो अक्षर भी धारण नहीं होते तो बाबा समझ जाते हैं कि इनकी बुद्धि कहाँ किचड़े में फँसी हुई है। मुख से ज्यादा नहीं बोलना है। सिर्फ बाबा और वर्से को याद करो। वर्सा है विष्णुपुरी, जिसके तुम मालिक बनते हो। बाबा अति सहज कर समझाते हैं। अहिल्यायें, कुब्जायें कैसे भी हों, वर्सा पा सकती हैं। सिर्फ श्रीमत पर चलें। देही-अभिमानी बनना तो सहज है। किसको गृहस्थ व्यवहार नहीं है, अकेला है तो बहुत सर्विस कर सकते हैं। कोई-कोई को देह-अभिमान रहता है। मोह की रग टूटती नहीं है। देही-अभिमानी शरीर में मोह नहीं रखेंगे! बाबा युक्ति बताते हैं तुम अपने को आत्मा समझो। यह पुरानी दुनिया है, इनसे ममत्व मिटाना है। एक बाप को याद करना है। वर्से को याद करने से रचता भी याद आ जाता है। कितनी कमाई है, खुद भी करो और औरों को भी कराओ। माँ बाप बच्चों को लायक बना देते हैं फिर बच्चे का काम है बाप की सम्भाल करना। फिर माँ बाप छूटे। यहाँ बहुत हैं जिनकी रग जाती है।

- अभी बहुत दु:ख है। अजुन बहुत आपदायें आने वाली हैं। इस समय सब भ्रष्टाचारी हैं। कोई का भी योग बाप के साथ नहीं है। आत्मा अपने को भूल गई है। अब बाप बैठ समझाते हैं जैसे आशिक माशूक होते हैं ना! जैसे देखो बच्ची और बच्चा है, एक दो को बिल्कुल जानते भी

नहीं हैं। दोनों की सगाई होने से फिर आशिक माशूक बन जाते हैं। वह सगाई होती है विकार के लिए। विकारी पतित आशिक माशूक कहेंगे। दूसरे आशिक माशूक होते हैं जो सिर्फ चेहरे पर आशिक होते हैं लैला मजनू आदि एक दो की शक्ल देखते रहते हैं। वह विकार में नहीं जाते। काम करते-करते माशूक सामने खड़ा हो जायेगा। जैसे मीरा के सामने कृष्ण खड़ा हो जाता था। अभी यह है परमपिता परमात्मा माशूक, जिसकी हम सब आत्मायें आशिक बनी हैं। सब उनको याद करते हैं। आशिक बहुत हैं– माशूक एक है सभी का। सभी मनुष्य मात्र उस एक के आशिक हैं। भक्ति करते हैं भगवान से मिलने के लिए। भगत होते हैं आशिक, भगवान हुआ माशूक। अब मिलन कैसे हो? तो सबका जो माशूक परमात्मा है वह आते हैं। अब आये हैं और कहते हैं अगर तुम बच्चों को मेरे से मिलना है तो निरन्तर मुझ एक को याद करो। मेरे साथ योग लगाकर मेरे ही आशिक बनो। इस रावणराज्य में दु:ख ही दु:ख है। अभी इनका विनाश होना है। मैं आया हूँ तुमको पावन बनाने। तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है, इसलिए याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। धर्मराज के डन्डों से भी छूट जायेंगे। वह निराकार बाप कहते हैं मेरे लाडले बच्चे, अभी कयामत का समय है, सिर पर पापों का बोझा है। अभी पुण्य आत्मा बनना है। योग से ही विकर्म विनाश होंगे और पुण्य आत्मा बन जायेंगे। बाप कहते हैं 63 जन्म तुम रावणराज्य में पाप आत्मा थे। अभी तुमको पापात्मा से पुण्यात्मा बनाते हैं। देवतायें पुण्य आत्मा हैं।

- तुम जानते हो हमको विश्व की बादशाही मिलती है, कितनी भारी कमाई है तो उसमें लग जाना चाहिए। बाप को याद करना है। जैसे गवर्मेन्ट की सर्विस में 8 घण्टा रहते हैं। बाबा भी कहते हैं मेरे खातिर 8 घण्टा दो। रात को सोकर अपना समय बरबाद मत करो। दिन रात कमाई करनी है। यह तो बड़ी सहज सिर्फ बुद्धि की बात है।

○ अधर कन्या से कुवांरी कन्या तीखी जा सकती है क्योंकि पवित्र है। मम्मा भी कुमारी थी ना। पैसे की तो बात ही नहीं। कितनी तीखी गई तो फालो करना चाहिए खास कन्याओं को। कांटो को फूल बनायें। ईश्वरीय पढ़ाई का चांस लें या उस पढ़ाई का? कन्याओं का सेमीनार करना चाहिए। माताओं को तो पति आदि याद पड़ता है। सन्यासियों को भी याद बहुत पड़ता रहता है। कन्याओं को तो सीढ़ी चढ़नी नहीं चाहिए। संग का रंग बहुत लग जाता है। कोई बड़े आदमी का बच्चा देखा दिल लग गई, शादी हो गई। खेल खत्म। सेन्टर से सुनकर बाहर जाते हैं तो खेल खत्म हो जाता है। यह है मधुबन। यहाँ ऐसे भी बहुत आते हैं, कहते हैं हम जाकर सेन्टर खोलेंगे। बाहर जाकर गुम हो जाते हैं। यहाँ ज्ञान का गर्भ धारण करते, बाहर जाने से नशा गुम हो जाता है। माया आपोजीशन बहुत करती है। माया भी कहती है वाह! इसने बाबा को भी पहचाना है फिर भी बाबा को याद नहीं करते तो हम भी घूंसा मारेंगी। ऐसे नहीं कहो कि बाबा आप माया से कहो हमको घूंसा न मारे। युद्ध का मैदान है ना। एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादुर बन राम की तरफ जाना चाहिए। आसुरी सप्रदाय को ही दैवी सप्रदाय बनाने का धन्धा करना है। जिस्मानी विद्या तुम जिनको पढ़ायेंगे, जब तक वह पढ़कर बड़े हो तब तक विनाश भी सामने आ जायेगा। आसार भी तुम देख रहे हो। बाबा ने समझाया है दोनों क्रिश्चियन भाई-भाई आपस में मिल जाएं तो लड़ाई हो न सके। परन्तु भावी ऐसी नहीं है। उन्हों को समझ में ही नहीं आता है। अब तुम बच्चे योगबल से राजधानी स्थापन कर रहे हो। यह है शिव शक्ति सेना। जो शिवबाबा से भारत का प्राचीन ज्ञान और योग सीख कर भारत को हीरे जैसा बनाते हो। बाप कल्प के बाद ही आकर पतितों को पावन बनाते हैं। तुम सब रावण की जेल में हो। शोक वाटिका में हो, सब दु:खी हो। फिर राम आकर सबको छुड़ाए अशोक वाटिका स्वर्ग में ले जाते हैं। श्रीमत कहती है - कांटों को फूल, मनुष्य को देवता बनाओ। तुम मास्टर दु:ख हर्ता सुख कर्ता हो। यही धन्धा करना चाहिए। श्रीमत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बनेंगे, बाप तो राय देते हैं। अब बाप कहते हैं अर्जी हमारी मर्जी आपकी।

○ वह जिस्मानी यात्रायें तो ढेर हैं। गुरू लोग भी ढेर हैं। सबको गुरू कह देते। अभी तुम बच्चे जानते हो हम मीठे शिवबाबा की मत पर चल उनसे वर्सा ले रहे हैं ब्रह्मा द्वारा। वर्सा शिवबाबा से लेते हैं। तुम यहाँ आते हो तो फट से पूछता हूँ– किसके पास आये हो? बुद्धि में है यह शिवबाबा का लोन लिया हुआ रथ है। हम उनके पास जाते हैं। सगाई ब्राह्मण लोग कराते हैं। परन्तु कनेक्शन सजनी साजन का आपस में होता है, न कि सगाई कराने वाले ब्राह्मण से। स्त्री पति को याद करती है या हथियाला बांधने वाले को याद करती है? तुम्हारा भी साजन है शिव। फिर किसी देहधारी को तुम क्यों याद करते हो? याद करना है शिव को। यह लॉकेट आदि भी बाबा ने बनवाये हैं समझाने के लिए। बाबा खुद ही दलाल बन सगाई कराते हैं। तो दलाल को याद नहीं करना है। सजनियों का योग साजन के साथ है। मम्मा बाबा आकर तुम बच्चों द्वारा मुरली सुनाते हैं, बाबा कहते हैं बहुत ऐसे बच्चे हैं जिनकी भ्रकुटी के बीच हम बैठ मुरली चलाता हूँ– कल्याण करने अर्थ। कोई को साक्षात्कार कराने, मुरली सुनाने, कोई का कल्याण करने आता हूँ। ब्राह्मणियों में इतनी ताकत नहीं, जानता हूँ इनको यह ब्राह्मणी उठा नहीं सकेगी तो मैं ऐसा तीर लगाता हूँ जो वह ब्राह्मणी से भी तीखा जाये। ब्राह्मणी समझती हैं इनको हमने समझ् या। देह-अभिमान में आ जाते हैं। वास्तव में यह अहंकार भी नहीं आना चाहिए। सब कुछ शिवबाबा करने वाला है। यहाँ तो तुमको कहते हैं बाबा को याद करो। कनेक्शन शिवबाबा से होना चाहिए। यह तो बीच में दलाल है, इनको उसका एवजा मिल जाता है। फिर भी यह वृद्ध अनुभवी तन है। यह बदल नहीं सकता। ड्रामा में नूंध है। ऐसे नहीं दूसरे कल्प में दूसरे के तन में आयेंगे। नहीं, जो लास्ट में है उनको ही फिर पहले जाना है। झाड़ में देखो पिछाड़ी में खड़े हैं ना। अभी तुम संगम पर बैठे हो। बाबा ने इस प्रजापिता ब्रह्मा में प्रवेश किया है। जगत अम्बा है कामधेनु और कपिलदेव भी कहते हैं। कपल अर्थात् जोड़ी, बाप-दादा मात-पिता, यह कपल जोड़ी हुई ना। माता से वर्सा नहीं मिलेगा। वर्सा फिर भी शिवबाबा से मिलता है। तो उनको याद करना पड़े। मैं आया हूँ तुमको ले जाने इनके द्वारा। ब्रह्मा भी शिवबाबा को याद करते हैं। शंकर के आगे भी शिव का चित्र रखते हैं। यह सब हैं महिमा के लिए। इस समय तो शिवबाबा आकर

अपना बच्चा बनाते हैं। फिर तुम बाप को बैठ थोड़ेही पूजेंगे। बाप आकर बच्चों को गुल-गुल बनाते हैं। गटर से निकालते हैं। फिर प्रतिज्ञा भी करते हैं हम कभी पतित नहीं बनेंगे। बाप कहते हैं गोद लेकर फिर काला मुंह नहीं करना।

○ तुम पवित्र भोजन बनाते हो तो याद में रह बनाना चाहिए, तो उससे बल मिलेगा। कृष्ण लोक में जाने के लिए व्रत नेम आदि रखते हैं। अभी तुम जानते हो हम कृष्णपुरी में जा रहे हैं इसलिए तुमको लायक बनाया जाता है। तुम बाप को याद करते तो फिर बाबा गैरन्टी करते हैं तुम कृष्णपुरी में जरूर जायेंगे। तुम जानते हो हम अपने लिए कृष्णपुरी स्थापना कर रहे हैं फिर हम ही राज्य करेंगे।

○ कहते हैं दु:ख सुख ईश्वर ही देते हैं। यह भी मेरे ऊपर कलंक लगाते हैं। अगर ऐसा है तो बुलाते ही क्यों हो। परमात्मा रहम करो, क्षमा करो। जानते हैं, धर्मराज के द्वारा बहुत दण्ड खिलायेंगे। बाप समझाते हैं बच्चे भक्ति मार्ग के इन शास्त्रों आदि में कोई सार नहीं है। अभी तुमको भक्ति अच्छी नहीं लगती। ऐसे भी नहीं कहते हो कि हे भगवान। आत्मा दिल अन्दर याद करती है। बस यह है अजपाजाप। आत्माओं से निराकार बाप बात करते हैं। आत्मा सुनती है। अगर कहे सर्वव्यापी है फिर तो सब परमात्मा हो गये। बाप कहते हैं कितने पत्थरबुद्धि बन गये हैं। मनुष्यों को तो बड़ा डर रहता है, कहाँ गुरू बद्दुआ न दे। बाप तो है सुखदाता। बद्दुआ अथवा अकृपा तो बाप बच्चों के ऊपर करते ही नहीं। बच्चे श्रीमत पर नहीं चलते, पढ़ते नहीं तो अकृपा अपने ऊपर करते हैं। बाप कहते हैं बच्चे मुझ एक बाप को याद करो। सतयुग त्रेता में भक्ति होती नहीं।

○ तुम यहाँ जब बेहोश हो जाते हो तो तुमको बाबा की याद दिलाई जाती है। मामेकम्, यह बच्चों को आदत पड़ जानी चाहिए। ऐसे नही कोई याद कराये। शरीर छोड़ने के समय आपेही याद

आवे, बिगर किसकी मदद के बाप को याद करना है। वे लोग तो मंत्र देते हैं। वह तो कॉमन बात है। उस समय बहुत मारामारी आदि होती है। तुम भिन्न-भिन्न स्थान पर रहते हो। उस समय ऐसे नहीं कहेंगे शिव-शिव कहो। उस समय पूरी याद चाहिए, लव चाहिए, तब ही नम्बरवन पद प्राप्त कर सकेंगे। तुम बच्चे जानते हो मैं तुम्हारा बाप हूँ, कल्प पहले भी तुम बच्चों को गुल-गुल बनाया था। सतयुग में योगबल से फूल बच्चे पैदा होंगे। दु:ख देने वाली चीज़ कोई वहाँ होती नहीं। नाम ही है स्वर्ग। परन्तु वहाँ कौन निवास करते हैं - यह भारतवासी जानते ही नहीं। शास्त्रों में ऐसी बहुत बातें लिख दी हैं कि वहाँ भी हिरण्यकश्यप आदि थे - यह सब है भक्ति की सामग्री। भक्ति भी पहले सतोप्रधान होती है, पीछे धीरे-धीरे तमोप्रधान होती

○ बाप कहते हैं बाप को याद करते रहो तो तुम्हारी आयु भी बढ़ेगी और भविष्य 21 जन्मों के लिए भी तुम अमर बनेंगे। अकाले मृत्यु कभी नहीं होगा। समय पर आपेही एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हो। चलते-फिरते बाप की याद में रहना है। इस याद से तुम सृष्टि को पवित्र बनाते हो। बाप आये ही हैं पावन बनाने।

○ मैं तुम सभी आत्माओं का परमधाम में रहने वाला पिता हूँ, इसलिए मुझे परम आत्मा कहते हैं। इकट्ठा करने से हो जाता है परमात्मा। कितना सहज है। यह कौन बैठा है? शिवबाबा, वह न होता तो यह ब्रह्मा भी नहीं होता। तुम बच्चों की दिल में हमेशा उनकी याद रहती है। है वह भी आत्मा, कोई फ़र्क नहीं है। जैसे आत्मा स्टार है, उस स्टार का साक्षात्कार होता है। अब तुम ईश्वरीय सन्तान बने हो, दैवी सन्तान बनने के लिए। तो बाप के साथ योग चाहिए जिससे विकर्म विनाश हों। एवरहेल्दी, एवरवेल्दी बनने के लिए स्वदर्शन चक्र फिराना पड़े। बाबा को याद करना है, इसमें ही मेहनत है। यह चार्ट रखो कि कितना समय बाबा को याद करते हैं? जितना याद में रहेंगे तो अतीन्द्रिय सुख की भासना आयेगी। तब कहा जाता है अतीन्द्रिय सुख पूछना

हो तो गोपी वल्लभ के गोप गोपियों से पूछो। वल्लभ कहा जाता है बाप को। बाप का रूप भी बेटे जैसा ही होता है। अब तुम ईश्वर के कुल के बने हो तो कितना प्यार से उनको याद करना चाहिए। बाबा आप कितने मीठे हो। हमको स्वर्ग में ले चलते हो, हेविनली गॉड फादर को जितना याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा। अब किसके सामने बैठे हो? बाप कहते हैं हे लाडले बच्चे मैं तेरा परमपिता, तुम आत्माओं से बात कर रहा हूँ। अब मेरी श्रीमत पर क्यों नहीं चलते। परन्तु काम रूपी भूत गिरा देता है। बाप कहते हैं कमजोर क्यों बनते हो? श्रीमत मिल रही है फिर आसुरी मत पर क्यों चलते हो? यह युद्ध तो करनी है। माया समझती है मेरे ग्राहक छिनते हैं तो लड़ती है। तुमको बाप शक्ति दे रहा है।

○ यह नॉलेजफुल बाप तुमको सारा राज़ आदि मध्य अन्त का समझा रहे हैं, जिससे तुमको स्वदर्शन चक्र फिराना सहज हो। स्वदर्शन चक्र फिराने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, नहीं तो सजायें खायेंगे। विजय माला में भी नहीं आयेंगे। कछुए मिसल जब फ्री हो तो चुप बैठकर चक्र को फिराओ। अब तुमको घर वापिस जाना है। यह अन्तिम जन्म पवित्र रहो। इसको कहा जाता है लोकलाज, पतित बनने की मर्यादायें तोड़ो और कोई को याद नहीं करो। आप मुये मर गई दुनिया। अशरीरी बन मेरा बनो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। सबको मरना तो है ही फिर कौन किसके लिए रोयेगा। हिरोशिमा में सब मर गये, कोई रोने वाला बचा ही नहीं इसलिए अब रोने वाली दुनिया से वापिस जाना है। इस गन्दी दुनिया में तो हर एक के अंग-अंग में कीड़े पड़े हैं, उसको याद क्यों करें। स्वर्ग में थोड़ेही ऐसे शरीर होंगे। वहाँ तो अंग-अंग में खुशबू होती है। बाबा कैसे गन्दे बांसी को गुल-गुल (फूल) बनाते हैं, तो उनको आना भी ऐसे पुराने लांग बूट में पड़ता है। बाबा कहते हैं कि भल घर में रहो परन्तु श्रीमत पर चलो। विकार में मत जाओ। तुम्हारे सामने शिवबाबा बैठा है, उनको भूलो मत।

- रावण जिसको वर्ष-वर्ष जलाते रहते हैं, वह हमारा दुश्मन है, यह नहीं जानते। बाबा कहते हैं मैं आया हूँ तुमको शोक वाटिका से निकाल अशोक वाटिका में ले जाने, जहाँ घुटका खाना नहीं होता। यहाँ तो अनेक प्रकार के घुटके हैं। माँ बाप पति बच्चों के घुटके खाते रहते हैं। पति विकार में फंसाते हैं। बाप आकर इन सब घुटकों से छुड़ाते हैं और नई दुनिया में ले जाते हैं। अभी आत्मा के पंख टूट गये हैं। आत्मा उड़ नहीं सकती। फिर याद की यात्रा नहीं कर सकते हैं। बरोबर यह बुद्धियोग की यात्रा है, लिखा है ना - मनमनाभव। इसका अर्थ कोई यात्रा थोड़ेही समझते हैं। कहते हैं राम ने बन्दरों की सेना ली और बन्दरों ने पुल बनाई। बन्दर पुल कैसे बनायेंगे। यह तुम्हारी याद के यात्रा की पुल बन रही है, जिस पुल से तुम विषय वैतरणी नदी पार हो जाते हो।

- अच्छा बाबा कहते हैं कितना समझाकर कितना समझायें, मनमनाभव। बस सिर्फ मुझे याद करो और मेरे वर्से को याद करो तो तुम स्वर्ग में चले जायेंगे। वहाँ भी तो नम्बरवार ही होंगे ना। सूर्यवंशी की रॉयल दास-दासियां भी तो हैं। तो प्रजा की भी दास-दासियां होंगी। चन्द्रवंशी राजा रानी की भी दास-दासियां तो हैं। वह सब यहाँ ही बन रही हैं। पूछो तो बता सकते हैं कि अगर अब तुम्हारा शरीर छूट जाए तो क्या जाकर बनेंगे? अच्छा कोई भी बात समझ में न आये तो पूछ सकते हो। याद रखना योग ठीक नहीं होगा तो वह सुख महसूस नहीं होगा। शोक वाटिका में बैठे होंगे, स्वर्ग है अशोक वाटिका। सीता अशोक वाटिका में नहीं, शोक वाटिका में थी। अब तो सब शोक वाटिका में बैठे हैं ना। मनुष्यों को चिंता रहती है कि पता नहीं लड़ाई होगी तो क्या होगा? हम तो कहते हैं कि लड़ाई लगे तो स्वर्ग के गेट्स खुलेंगे।

- तुम मम्मा बाबा से भी ऊंच जा सकते हो। परन्तु विवेक कहता है - मम्मा बाबा से ऊंच कोई जा नहीं सकता है। भल सूर्य, चांद को ग्रहण लगता है परन्तु टूट नहीं सकते। सितारे तो टूट पड़ते हैं। बाबा कहते हैं मेरे लाडले बच्चे, मैं तुम बच्चों को क्यों नहीं याद करूँगा। ऐसे सिकीलधे बच्चे

क्यों नहीं याद आयेंगे! परन्तु अनुभव कहता है बच्चे बाप को याद करना भूल जाते हैं। अपने को सजनी समझने से भी बच्चे समझेंगे तो जास्ती ताकत मिलेगी क्योंकि सजनी तो हाफ पार्टनर है - साजन के साथ। बच्चे तो बाप के फुल वारिस हो जाते हैं इसलिए बाबा कहते हैं कि हमको ज्ञानी तू आत्मा से प्यार है। ध्यानी को साक्षात्कार की इच्छा रहती है जो सारा दिन बाबा-बाबा करते रहेंगे उनको तो ज्ञानी कहेंगे। बाबा को ज्ञान का बहुत शौक है। अभी तुम्हें ज्ञान के गोले मिल रहे हैं, यह नई बात है ना। ध्यान में बहुत साक्षात्कार आदि करते हैं, परन्तु उनको ज्ञान कुछ नहीं मिलता है। बाबा ऐसे भी नहीं कहते ध्यान खराब है। भक्ति मार्ग में साक्षात्कार होता है तो खुश हो जाते हैं, परन्तु मुक्तिधाम में जा नहीं सकते। शिवबाबा को याद करने से ताकत मिलती है। हातमताई का खेल दिखाते हैं - मुहलरा डालते थे तो माया उड़ जाती थी। बाबा खुद कहते हैं हे लाडले बच्चे, भल सब कुछ काम काज करो सिर्फ बुद्धि से बाप को याद करना है। तुम्हारा है एक परमधाम। वो लोग यात्रा पर जाते हैं तो बहुत फिरते रहते हैं। चारों ही धाम बुद्धि में होंगे। तुम्हारी बुद्धि में सिर्फ एक परमधाम है।

○ लौकिक बाप, टीचर, गुरू को तो काल खा जाता है। मुझको तो काल खा न सके। बाप कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझाते हैं, जो इतनी सहज बातें नहीं समझ सकते तो बाबा उनको कहते अच्छा बाप को याद करो। चक्र को भी याद करना पड़े। बाप के साथ वर्से को भी याद करना पड़े। बाप को याद करो तो विकर्म भस्म हो। बाप तो सम्मुख आया हुआ है। बाप को अशरीरी कहा जाता है। ब्रह्मा विष्णु शंकर सबको अपना-अपना शरीर है। मुझे तो अपना शरीर है नहीं। तुम्हारे तो मामे, काके सब हैं। मेरा मामा, चाचा तो कोई है नहीं। आता भी हूँ। परन्तु तुम कैसे आते हो, मैं कैसे आता हूँ। बुलाते हैं गॉड फादर। परन्तु कहाँ से आता हूँ? परमधाम से। जहाँ से तुम आते हो, जिसको ब्रह्माण्ड कहा जाता है। इस समय तुम ब्रह्मा मुख वंशावली रूद्र यज्ञ के रक्षक हो। राजयोग की शिक्षा देने वाले, राजयोग सिखलाने वाले तुम टीचर हो गये ना। अच्छा!

- तुमको बाप समझाते हैं कि मुझ एक को याद करो। स्टूडेन्ट को भी बाप टीचर याद रहता है। तुमको तो बाप पढ़ाते हैं। यही तुम्हारा गुरू भी है। तीनों का ही फोर्स है। फिर भी ऐसे बाप को भूल जाते हो! ऐसे भी (फुलकास्ट कहलाने वाले) बच्चे हैं - जो 5 मिनट भी याद नहीं करते हैं। तब कहते हैं अहो मम माया मैं बच्चों का ताला खोलता हूँ, तुम बंद कर देती हो। जरा भी विकार में गया तो बुद्धि का ताला लाकप हो जाता है। फिर भी सच सुनाने से सज़ा कम हो जाती है। अगर आपेही जाकर जज को अपना दोष बताये तो कम सजा देंगे। बाबा भी ऐसे करते हैं, अगर कोई बुरा काम कर छिपाता है तो उसको कड़ी सजा मिलती है। तो धर्मराज से कुछ छिपाना नहीं चाहिए।

- हम भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी कैसे बनें - यह बाप समझाते हैं, बच्चे मुझे याद करो तो पवित्र श्रेष्ठचारी बन जायेंगे। इस याद में तुम सबकुछ कर सकते हो। ऐसे नहीं कि धन्धाधोरी नहीं कर सकते हो।

- बाबा कहते हैं बच्चे यह ख्याल रखो कि पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। जो अर्पण किया हुआ है वह भी याद नहीं आना चाहिए। बाप कहते हैं मैं ऐसी कोई चीज़ नहीं लेता हूँ जो रह जावे और उसका वहाँ भरकर देना पड़े, क्योंकि मैं गरीबनिवाज़ हूँ। कई हैं जो देकरके फिर जब कोई कारण से भागन्ती हो जाते हैं तो मांगने लग पड़ते हैं। माया उनको एकदम डस लेती है। नहीं तो कहते हैं चाहे मारो चाहे प्यार करो, यह मस्ताना तुम्हारा दर कभी नहीं छोड़ेगा। कभी नहीं भूलेगा। तुम बच्चे यहाँ नर से नारायण बनने के लिये आये हो, तुम्हें कितना बड़ा वर्सा मिलता है, फिर यह क्यों कहते हो कि हम देते हैं। तुम तो लेते हो ना। कौन कहता है तुम कुछ दो। बाकी कोई एक पैसा भी देंगे तो वहाँ उनके लिए महल बन जायेगा। जैसे सुदामा ने चावल

मुट्ठी दी। तो बच्चे सुदामा मिसल दाल चावल ले आते हैं, समझते हैं कि हमको महल मिल जायेंगे। ऐसे बच्चों पर बाप बहुत खुश होते हैं वाह! इनके नई दुनिया में महल बनने वाले हैं क्योंकि बहुत प्यार और सद्भावना से ले आते हैं। अहो भाग्य ऐसे बच्चों का, बहुत ऊंचा पद पायेंगे।

○ बाप कहते हैं कि सभी सम्बन्धों की सैक्रीन मैं हूँ, मैं कहता हूँ मुझे याद करो। कहते हैं त्वमेव माताश्च पिता... एक-एक बात में निश्चय बिठाना चाहिए। परन्तु कोई न कोई बात में संशय आ जाता है। फिर राजाई पद पा न सकें इसलिए बाप कहते हैं मनमनाभव। बाप को याद करो तो तुम आशिक ठहरे। यह है रूहानी आशिक माशूक। यह पक्का करना चाहिए कि हम आत्मा परमात्मा की आशिक हैं। कृष्ण सबका माशूक हो न सके। कृष्ण को सब नहीं याद करते हैं। यह बाप कहते हैं मनमनाभव। अब मेरे पास आना है, नाटक पूरा होना है, घर जाना है। तो घर जरूर याद आयेगा। हर एक बात की समझानी मुरली में मिलती रहती है। बच्चे मुरली नोट नहीं करते फिर वही बातें बाबा से पूछते रहते हैं। मुख्य बात है आशिक और माशूक की। सभी भगत आशिक हैं क्योंकि परमात्मा को याद करते हैं। कहते मेरा तो एक दूसरा न कोई। तुम बच्चे इस समय सब नई-नई बातें सुनते हो। परन्तु सुनते-सुनते माया थप्पड़ लगा देती है। रावण कम थोड़ेही है।

○ अभी तुम बच्चों को अपनी मंजिल को याद करना है क्योंकि तुम्हें अभी वापिस घर जाना है तो घर को याद करना पड़े। सिवाए याद के शान्तिधाम नहीं जा सकते। नहीं तो मोचरा (सज़ा) बहुत खाना पड़ेगा, पद भी अच्छा पा नहीं सकेंगे। इस समय जो सूक्ष्मवतन में जाते हैं, सर्विस अर्थ जाते हैं। पहले नम्बर में बाबा सर्विस करते हैं, सेकेण्ड नम्बर में मम्मा क्योंकि मम्मा को सेकेण्ड नम्बर में आना है। तो तुम बच्चों को भी मम्मा बाबा को फालो करना है।

○ जब बाप 21 जन्मों की बादशाही देते हैं। फिर रोने की क्या दरकार है, परन्तु यह भूल जाते हो। यह रोगी दुनिया है, भोगी दुनिया है। सतयुग निरोगी, योगी दुनिया है। यहाँ तो बाप को याद करना है। याद नहीं करते तो डिससर्विस करते हो क्योंकि वायुमण्डल खराब करेंगे। यहाँ तो सब हैं ही पतित। तो पतित को दान करने से तो पावन बन न सकें। पतित को दिया तो वह काम ही पतित करेंगे। यहाँ तो पतितों का पतितों के साथ व्यवहार है। वहाँ तो पावन का पावन के साथ व्यवहार होगा। व्यभिचारी अक्षर तो बुरा है ना।

○ बेहद का बाप कहते हैं जो मेरी श्रीमत पर चलता है वही मेरा सपूत बच्चा है। जैसे गवर्मेन्ट आर्डीनेन्स निकालती है, ऐसे यह पाण्डव गवर्मेन्ट भी आर्डीनेन्स निकालती है कि पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। तो बाप कहते हैं कि देह सहित देह के सब संबंध भूल मामेकम् याद करो, इस शरीर से बुद्धियोग तुड़वाते हैं और आत्मा की परमात्मा से सगाई कराते हैं। तो बाप को याद करना चाहिए और शरीर से भी ममत्व निकालना है। मोहजीत की एक कहानी है ना, तो तुमको भी मोहजीत बनना है। यह है युद्ध का मैदान, इस युद्ध में जरा भी गफलत की तो माया हप कर लेती है। कहते हैं कि गज को ग्राह (मगरमच्छ) ने पकड़ा। कोई ऐसी बात नहीं कि गज अर्थात् हाथी कोई पानी में गया, ग्राह ने पकड़ लिया। नहीं, यह यहाँ की बात है। अच्छे-अच्छे महारथी हैं, बहुतों को समझाते भी हैं, सेन्टर्स भी सम्भालते हैं। अगर उन्होंने भी जरा गफलत की तो माया हप कर लेती है। ऐसा हप करती है जो बाप के संग से ही भगा ले जाती है।

○ तुमको तो बिगर सजा खाये हिसाब-किताब चुक्तू करना है इसलिए ऐसा पुरूषार्थ करना चाहिए जो सजा न खानी पड़े। बाबा को याद करना अच्छा है। विनाश भी सामने खड़ा है। विनाश

काले पाण्डवों की प्रीत बुद्धि। बाप ने सम्मुख आकर प्रीत रखवाई है। बाकी औरों से प्रीत रख क्या करेंगे! वह सब खलास हो जाने हैं। एक बाप को याद करने का हड्डी पुरूषार्थ करना है। बाहर से करके मित्र सम्बन्धियों से खुश खैराफत पूछी जाती है, परन्तु दिल एक बाप से। जिस्मानी आशिक माशूक घर में रहते एक दो को याद करते हैं। तुम आशिक बने हो शिवबाबा के। वह तुम्हारे सम्मुख है। वह तुमको याद करते, तुम उनको याद करो। शिवबाबा इस शरीर में आकर आत्माओं की सगाई स्वयं से कराते हैं। इसको कहा जाता है आत्माओं का परमपिता परमात्मा के साथ कल्याणकारी मेला। तुम ज्ञान गंगायें हो, ज्ञान सागर बाप एक है। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बाप और कोई तकलीफ नहीं देते, सिर्फ पवित्र रहना है।

○ बाप कहते हैं इन 5 विकारों का दान दो और पवित्र बनो। याद भी करो और पवित्र भी बनो। बी होली, बी राजयोगी। गृहस्थ व्यवहार में रहते एक शिव बाबा को याद करो और कब किसको याद किया तो व्यभिचारी बनें। भक्ति मार्ग में गृहस्थ व्यवहार में रहते भी कब किसी को, कब किसी को याद करते हैं। तो वह व्यभिचारी याद हो जाती है और फिर वह पवित्र भी नहीं रहते हैं तो बाप कहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में याद मुझ एक बाप को करो। यह अन्तिम जन्म मेरे नाम पर कमल फूल समान पवित्र बन सिर्फ मुझे याद करते रहो। यह एक जन्म मेरे मददगार बनो, जो मदद करेंगे वही फल पायेंगे। तुम हो गये ईश्वरीय खुदाई खिदमतगार। सुखधाम जाना है वाया शान्तिधाम। पुरानी दुनिया को लात मार रहे हो, नई दुनिया में जा रहे हो इसलिए दु:खधाम को भूलना पड़ता है। सुखधाम और शान्तिधाम को याद करना है। दु:खधाम में भल तुम रहे पड़े हो, परन्तु याद उनको करो। अव्यभिचारी योग चाहिए, एक बाप दूसरा न कोई। समझानी तो बहुत सहज अच्छी मिलती है। अर्जुन बहुत शास्त्र पढ़ा हुआ था, तो उनको कहा यह सब भूल जाओ और पढ़ाने वालों को भी भूल जाओ। बाप भी ऐसे कहते हैं। अभी जो कुछ

सुना है सब भूलो। हम तुमको सभी शास्त्रों का सार समझाते हैं। सचखण्ड का मालिक बनाते हैं। वह तुमको झूठखण्ड का मालिक बनाते हैं।

○ बाबा कह देते हैं कि यह तूफान तो आयेंगे। यह सब तूफान पहले मेरे पास ही आते हैं क्योंकि जब तक इनको अनुभव न हो तो बच्चों को कैसे समझा सकें। अच्छा तुमको माया ने सारी रात हैरान किया, नींद भी नहीं करने दी, टाइम भी वेस्ट किया! यह भी उनका फर्ज है, टकरायेगी जरूर। बाकी तुम्हारा काम है बाप को इतना ही याद कर माया को भगाना। कई बच्चे हैं जो थोड़ी भी माया आती है तो चले जाते हैं, जैसे वैद्य लोग कह देते हैं यह दवाई लेने से बीमारी उथलेगी। परन्तु कई लोग ऐसे होते हैं जो जरा सी बीमारी ने उथल खाई तो उस वैद्य को छोड़ दूसरे के पास चले जाते हैं। यहाँ भी ऐसे हैं। ज्ञान को छोड़ साधू सन्तों के पास चले जाते हैं। फिर कहते हैं कि सब तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहो, शादी करो। आप कहते हो शादी करके पवित्र रहो। यह फिर कौन सी मुसीबत है! अरे तुम कहते हो हमको गृहस्थ व्यवहार में रह राजा जनक के मुआफिक जीवनमुक्ति चाहिए, तो फिर प्रवृत्ति में पवित्र रहना पड़े।

○ बाबा कहते हैं यहाँ आते हो तो शिवबाबा को याद करके आओ। हमने तो शिवबाबा को अपना बनाया है। ब्रह्मा ने भी उनको अपना बनाया है। तो हम उनको ही क्यों न याद करें। चित्र में भी दिखाया है - सभी शिव को मानते हैं। बाबा आत्माओं से बात करते हैं। आत्मा न कह जीवात्मा कहेंगे क्योंकि जब आत्मा अकेली है तो बोल नहीं सकती। शरीर बिगर आत्मा, आत्मा से बात नहीं करती।

○ बाबा खुद बैठ सिखाते हैं कि हे आत्मा देही-अभिमानी बनो। अपने को पारलौकिक बाप के बच्चे निश्चय करो। लौकिक बाप को तो जानते हो बाकी तुम इतने भोले हो जो पारलौकिक

बाप को नहीं जानते। अब तुम बच्चों की बुद्धि में बैठा है कि यह बातें परमपिता परमात्मा समझाते हैं। तुम छोटे बच्चे नहीं हो, तुम्हारे आरगन्स तो बड़े हैं। बाप समझाते हैं - अगर अपने को देह समझेंगे तो बाप को याद नहीं कर सकेंगे। अपने को देही-अभिमानी समझो। बच्चे-बच्चे बाप शरीर को नहीं, आत्मा को कहते हैं। और बच्चे, आत्मायें सब शिव को (परमात्मा को) बाबा कहते हैं, किसी आत्मा को वा ब्रह्मा को नहीं कहते। यह भी उनका बच्चा है। अब तुम जानते हो कि हमारा बेहद का बाप इनमें आया है। तो बाप को याद करना पड़े। 84 के चक्र को भी याद करना पड़े। यह बेहद का 5 हजार वर्ष का नाटक है। तुम एक्टर हो।

- बाप यह सब राज़ बताकर तुमको त्रिकालदर्शी बनाते हैं। अब जो जितना पुरूषार्थ करे। बीज और झाड़ को जानना है। बाप कहते हैं बच्चे अब टाइम थोड़ा है। गाया भी जाता है एक घड़ी आधी घड़ी.... तुम बाप को याद करने लग जाओ और फिर चार्ट को बढ़ाते जाओ। देखना है कि हम श्रीमत पर बाबा को कितना याद करते हैं। बाप तो है सिखलाने वाला। पुरूषार्थ हमको करना है। बाप तो है पुरूषार्थ कराने वाला। बाप का तो लव है ही। बच्चे-बच्चे कहते रहते हैं। उनके तो सब आत्मायें बच्चे ही ठहरे। फिर ब्रह्माकुमार-कुमारी भाई-बहन हो गये। वर्सा तो दादे से मिलता है।

- तुम मीठे-मीठे बच्चे कितने अडोल थे। कोई मतभेद नहीं था। किसकी निंदा आदि नहीं करते थे। अभी कुछ न कुछ है। वह सब भूल जाना चाहिए। हम सब भाई-भाई हैं। एक बाप को याद करना है। बस यही ओना लगा हुआ है हम जल्दी-जल्दी सतोप्रधान बन जायें। फलाना ऐसा है, इसने यह बोला, इन सब बातों को भूल जाओ। यह सब छोड़ो। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझो। सतोप्रधान बनने के लिए पुरूषार्थ करो। दूसरे का अवगुण नहीं देखो। देह-अभिमान में आने से ही अवगुण देखा जाता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। भाई-भाई को

देखो तो गुण ही देखेंगे। अवगुण को नहीं देखना चाहिए। सबको गुणवान बनाने की कोशिश करो, तो कभी भी दु:ख नहीं होगा। भल कोई उल्टा-सुल्टा कुछ भी करे, समझा जाता है रजो तमोप्रधान हैं, तो जरूर उन्हों की चाल भी ऐसी ही होगी। अपने को देखना चाहिए कि हम कहाँ तक सतोप्रधान बने हैं? सबसे जास्ती गुण हैं बाप में। तो बाप से ही गुण ग्रहण करो और सब बातों को छोड़ दो। अवगुण छोड़ गुण धारण करो।

○ बाप समझाते हैं सतयुग में तुम कितने सुखी थे। सदा सुखी तो कोई रहते नहीं। पुनर्जन्म लेने का भी कायदा है। पुनर्जन्म लेते-लेते उतरते-उतरते 84 जन्म पूरे हुए हैं। फिर नये सिर चक्र फिरना है। ज्ञान और भक्ति। आधाकल्प है दिन नई दुनिया फिर आधाकल्प है रात पुरानी दुनिया। यह पढ़ाई याद करनी होती है। शिवबाबा को भी याद करना होता है। टीचर को भी सारा याद है ना। तुम कहेंगे बाबा को इस सारे सृष्टि की नॉलेज है। तुम भी समझते हो कि हम जो पावन पूज्य देवता थे सो अब पुजारी पतित बने हैं। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो यह हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम ड्रामा की समझते हो। यह पूज्य और पुजारी का खेल बना हुआ है। ऐसी-ऐसी अपने साथ बातें करो। सतोप्रधान बनने के लिए मुख्य है - ज्ञान और योग। ज्ञान है सृष्टि चक्र का और योग से हम पावन बनते हैं। कितना सहज है। किसको भी समझा सकते हैं। जैसे बाबा भी समझाते हैं ना। सिर्फ बाबा बाहर नहीं जाते हैं, क्योंकि बाप इनके साथ है ना। कोई भी मनुष्य सद्गति को तो जानते ही नहीं। सद्गति की बातें तो तब समझें, जब सद्गति दाता को पहचानें। तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। तुम समझते हो और समझाते भी हो। मूल बात है ही पतित से पावन बनने की। याद से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते जायेंगे। यहाँ के बच्चे वा बाहर के बच्चे कहते हैं कि योग कैसे लगावें? पतित से पावन बनने की युक्ति क्या है? क्योंकि इसमें ही मूँझे हैं। तो समझाना चाहिए कि यह खेल ही हार और जीत का बना हुआ है। भारत ही पतित से पावन और पावन से पतित बनता है। आधाकल्प है ज्ञान अर्थात् पावन, आधाकल्प है भक्ति अर्थात् पतित। अब फिर से पतित से पावन बनना है। यह याद की यात्रा प्राचीन बहुत नामीग्रामी है।

वह तो जिस्मानी यात्रायें जन्म-जन्मान्तर करते, नीचे गिरते गये हैं। ऐसे नहीं कि उनसे पावन बने हैं। पावन बनाने वाला है ही एक बाप। वह एक ही बार आते हैं। शिवबाबा का पुनर्जन्म नहीं कहेंगे। मनुष्य को ही 84 जन्म के चक्र में आना है।

○ पुराना सब खलास हो जायेगा। इस ड्रामा को बड़ा युक्ति से समझना होता है। नई दुनिया में सब कुछ नया होता है। यह कितनी सहज बातें हैं। अच्छा यह भी समझ में न आये तो बाप को बड़े प्यार से याद करो इसलिए यह सब महीन बातें बाबा ने देर से समझाई हैं। शुरू में बहुत सहज तोतली बातें सुनाते थे। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि बाबा ने यह सब पहले क्यों नहीं सुनाया कि आत्मा इतनी छोटी है। ड्रामा अनुसार जो कुछ पास हुआ, कल्प पहले मुआिफक जैसे समझाया था-ऐसे समझा रहे हैं। मनुष्य इस ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ है। कल्प बाद ही फिर ऐसे समझा रहे हैं। फिर भी ऐसे ही समझायेंगे। बहुत बच्चे साधारण रूप देख मूँझते हैं, उल्टा बोलने लग पड़ते हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे उनको भी माया चमाट मार देती है। समझते हैं - बस जो कुछ है निराकार ही है। सो तो ठीक है ना। निराकार नहीं होता तो हम तुम कैसे होते। परन्तु निराकार को तो रथ जरूर चाहिए ना। रथ बिगर क्या करेंगे, शिवबाबा क्या करेगा? रथ में आये तब तो तुम उनसे मिलेंगे। तुम्हीं से सुनूँ, तुम्ही से बैठूँ। तो रथ जरूर चाहिए ना। अच्छा साकार बिगर निराकार को याद कर दिखाओ। क्या तुमको ज्ञान प्रेरणा से मिलेगा? फिर मेरे पास आये ही क्यों हो? यह बाबा भी कहता है कि वर्सा तो शिवबाबा से लेना है। शिवबाबा कहते हैं मैं इस साधारण तन में बैठ पढ़ाता हूँ। पढ़ाई तो जरूर चाहिए ना। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चों का माथा ही फिर जाता है। दो चार सेन्टर खोलते तो बस अहंकार आ जाता है। फिर उल्टा बोलते रहते हैं। फिर कभी बुद्धि में आ भी जाता है कि यह हमने ठीक नहीं कहा, फिर पश्चाताप करते हैं। बाबा कहते हैं मैं साकार बिगर कैसे समझाऊंगा। इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। मैं टीचर के रूप में बैठता हूँ।

○ आगे तो बहुतों को साक्षात्कार होता था, जो सुना हुआ था, वह साक्षात्कार हो जाता है। समझते हैं हमारी मनोकामना पूरी हुई। परन्तु इसमें तो कुछ भी फायदा नहीं है। बाप कहते हैं मैं राजयोग सिखाकर, पतित से पावन बनाने आया हूँ। ऐसे नहीं मुर्दे में श्वाँस डाल दूँगा। बीमारी है तो जाओ डॉक्टर के पास। हम तो आये हैं पावन बनाने। पावन बनो तो पावन दुनिया में चलेंगे। जरूर पतित दुनिया का विनाश होगा तब तो पावन दुनिया स्थापना होगी। महाभारत लड़ाई के बाद क्या हुआ, कुछ भी रिजल्ट दिखाते नही हैं। तुम बच्चों को अभी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज समझाते हैं। यह नॉलेज किसकी बुद्धि में है नहीं। आत्मा का ही ज्ञान नहीं है। बाबा से आकर पूछते हैं आत्मा क्या है! बाबा को याद कैसे करें? बाबा वन्डर खाते हैं-सर्विस करने वाले बच्चों में भी आत्मा, परमात्मा का ज्ञान नहीं है तो औरों को क्या सुनाते होंगे। हाँ, मुरली सुनाते रहते हैं। टीचर्स भी नम्बरवार होती हैं इसलिए मुख्य जो ब्राह्मणियाँ हैं, उनको मुकरर किया जाता है कि क्लास में चक्कर लगायें, एक-एक से पूछे कि आत्मा का रूप क्या है? परमात्मा का रूप क्या है? सुपरवाइज करनी चाहिए। जब तक अपने को आत्मा समझ बाप को याद न करें तो विकर्म विनाश भी हो न सकें। मनुष्य बिल्कुल पत्थरबुद्धि हैं, उन्हें पारसबुद्धि बनाने में मेहनत लगती है। देलवाड़ा मन्दिर में देखो आदि देव का काला चित्र है। फिर ऊपर में स्वर्ग की सीन बनाई है। बाप आकर सारे ड्रामा का राज तुमको समझाते हैं। अच्छा और कुछ नहीं समझते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद करते रहो। यह भी अच्छा। बाप को याद करते हैं ना। शिवबाबा है ही आत्माओं का बाप। मरने समय शिवबाबा के सिवाए और कुछ भी याद न आये तो भी स्वर्ग में जायेंगे। कोई कम बात थोड़ेही है।

○ अभी तुम बच्चे आत्म-अभिमानी बने हो। बाबा ने देही-अभिमानी बनाया है। जितना देही-अभिमानी बनेंगे, बाप को अच्छी रीति याद करेंगे तो विकर्माजीत बनेंगे। देह-अभिमानी बनने

से विकर्म भस्म नहीं होंगे और ही जास्ती विकर्म होते रहेंगे फिर नतीजा क्या होगा? एक तो सजा खानी पड़ेगी और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। बाबा से कोई भी पूछ सकते हैं कि बाबा अगर इस समय हमारा शरीर छूट जाए तो भविष्य में हम किस गति को पायेंगे? मौत तो सामने खड़ा है। ब्राह्मण कुल भूषण को तो बिल्कुल हुस (दु:ख) नहीं आना चाहिए। उनको कहा जाता है महावीर। शास्त्रों में तो स्थूल रूप में बातें ले गये हैं। यह तो ज्ञान की बातें हैं।

○ अगर मुरली नहीं पढ़ते हैं तो अबसेन्ट डाली जाती है। अगर मुरली जाती है, पढ़ते हैं तो अबसेन्ट नहीं कहेंगे। और कोई स्कूलों में ऐसे नहीं होता यह बड़ी भारी पढ़ाई है, इसमें बड़ा अटेन्शन चाहिए। ऐसे बहुत बच्चे हैं - जिनको माया एकदम नाक से पकड़ लेती है। फिर भी याद नहीं रहता कि मैं गॉड फादरली स्टूडेन्ट हूँ। गाया भी जाता है - गज को ग्राह ने खाया। यहाँ की बात है। कुसंग मिलने से खाना आबाद होने के बदले बरबाद हो जाता है। बहुत थोड़े हैं जो अटेन्शन से पढ़ते हैं। बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ, विरला कोई मुझे समझ सकते हैं। अनपढ़ बच्चों को कोई बात कहो तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल देते हैं। भगवान के हमको डायरेक्शन मिलते हैं वह बुद्धि में नहीं रहता है। पूरा योग न होने कारण माया बुद्धि को ताला लगा देती है। यह दण्ड पड़ जाता है क्योंकि फरमान पर नहीं चलते हैं। बाबा कहते हैं मैं इतनी दूर से आया हूँ तुमको पढ़ाने। तुम श्रीमत को मानते नहीं हो फिर तुम्हारी क्या गति होगी। भगवान खुद बैठ पढ़ाते हैं। आज्ञा करते हैं। ऐसे नहीं कि प्रेरणा करते हैं, इसमें प्रेरणा की बात नहीं। यह तो ड्रामा बना बनाया है।

○ तुम जब गीत सुनते हो तो जानते हो अभी हम शिवबाबा के गले का हार बने हैं। बाबा हमको पढ़ाते हैं। हमको पढ़ाने वाला कौन है, वह भी खुशी होनी चाहिए। पहले अल्फ बे पढ़ते हैं तो पट (जमीन) में बैठ पढ़ते हैं फिर बेंच पर बैठ पढ़ते हैं, फिर कुर्सी पर। प्रिन्स-प्रिन्सेज तो कॉलेज

में कोच पर बैठते हैं। उन्हों को पढ़ाने वाला कोई प्रिन्स-प्रिन्सेज नहीं होता है। वह फिर भी कोई टीचर होता है। परन्तु मर्तबा तो प्रिन्स प्रिन्सेज का ऊंच होता है ना। तुम तो सतयुगी प्रिन्स प्रिन्सेज से भी ऊंच हो ना। वह फिर भी देवताओं की सन्तान हैं। तुम हो ईश्वरीय सन्तान, जिससे वर्सा लेना है उनको याद भी करना है। उठते बैठते व्यवहार में रहते, उनको भूलना नहीं चाहिए। याद से ही हेल्दी-वेल्दी बनते हैं।

○ बाप बच्चों को विल कर वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर कुछ भी नहीं रहा। सब कुछ दे दिया। जैसे तुम विल करते हो कि बाबा यह सब आपका है। बाबा फिर कहते हैं अच्छा ट्रस्टी हो सम्भालो। तुम हमको ट्रस्टी बनाते हो, फिर हम तुमको ट्रस्टी बनाते हैं तो श्रीमत पर चलना, कोई उल्टा-सुल्टा धन्धा नहीं करना। मेरे से पूछते रहना, कोई तो यह भी नहीं जानते कि बच्चों को भोजन कैसे खाना चाहिए। ब्रह्मा भोजन की बड़ी महिमा है। देवतायें भी ब्रह्मा भोजन की आश रखते हैं तब तो तुम ब्रह्माभोजन ले जाते हो। इस ब्रह्मा भोजन में बहुत ताकत है। आगे चल भोजन योगी लोग बनायेंगे। अभी तो पुरूषार्थी हैं। जितना हो सकता है शिवबाबा की याद में रहने की कोशिश करते हैं। बच्चे तो हैं ना। खाने वाले बच्चे पक्के होते जायेंगे तो बनाने वाले भी पक्के निकलते रहेंगे। ब्रह्मा भोजन कह देते हैं। शिव भोजन नहीं कहते हैं। शिव का भण्डारा कहते हैं। जो भी भेज देते हैं वह शिवबाबा के भण्डारे में पवित्र हो जाता है। शिवबाबा का भण्डारा है।

○ ज्ञान और योग बल से तुम्हें सतोप्रधान बनना है। मुख से सदैव रत्न ही निकलते रहें तो तुम रूप-बसन्त बन जायेंगे। आत्मा पवित्र बनती जायेगी। तुम जितना नजदीक आते जायेंगे तो अन्दर में बहुत खुशी होगी। अपनी राजधानी का साक्षात्कार भी होता रहेगा। तुमको अपना पुरूषार्थ बहुत गुप्त रीति से करना चाहिए। रास्ता बताना चाहिए। तुम सब द्रोपदियां हो। बाबा कहते हैं यह अत्याचार सहन करने पड़ेंगे - बाबा के निमित्त। सतयुग में कितनी पवित्रता है। 100 परसेन्ट

वाइसलेस वर्ल्ड कहा जाता है। अभी है 100 परसेन्ट विशश वर्ल्ड। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हम शिवबाबा के गले का हार बनने के लिए रूहानी योग की दौड़ी पहन रहे हैं। फिर हम विष्णु के गले का हार बनेंगे। तुम्हारा पहले-पहले नसल है - ब्राह्मणों का। फिर तुम देवता क्षत्रिय बनते हो। उतरती कला में तुमको सारा कल्प लगता है और चढ़ती कला में सेकेण्ड लगता है। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। सिर्फ बाबा को याद करना है, यह अन्तिम जन्म है। गिरने में तुमको 84 जन्म लगते हैं। इस जन्म में तुम चढ़ते जाते हो। बाबा सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं। वह खुशी रहनी चाहिए। कान्ट्रास्ट किया जाता है - उस नॉलेज से हम क्या बनेंगे! इससे हम क्या बनेंगे! यह भी पढ़ना है, वह भी पढ़ना है।

○ कितने कुम्भ के मेले में जाते हैं। यहाँ जिस्मानी कोई बात नहीं। तुम उठते-बैठते, चलते यात्रा पर हो, याद से तुम पावन बनते हो। बाबा कहते हैं तुम कर्म करते समय भी शिवबाबा को याद करो। वह फिर कह देते सबमें परमात्मा है। फर्क हो गया ना! बाप कहते हैं जहाँ भी बैठो मुझे याद करो। फिर सर्विस भी करनी चाहिए। मन्दिरों में बहुत भक्त जाते हैं। बस यह चित्र पीठ पर लगा दो, बाप का परिचय देते रहो। युक्तियां तो बहुत बतलाते हैं। शमशान में जाकर समझाओ। निराकार बाप की महिमा और श्रीकृष्ण की महिमा। अब बताओ गीता का भगवान कौन? साथ में चित्र भी हो। सर्विस तुम बहुत कर सकते हो।

○ तुम जानते हो लक्ष्मी 84 जन्म भोग अभी वह संगम पर जगत अम्बा बनी है। एडाप्ट कर फिर उनका नाम बदला जाता है। बहुत बच्चे कहते हैं हमको बाबा ने एडाप्ट किया है। हमारा नाम क्यों नहीं बदला जाता है। बाबा कहते हैं क्या करूँ, नाम तो बदलूँ परन्तु नाम को बट्टा लगा देते हैं। (बदनाम कर देते हैं) नाम भी बहुत फर्स्टक्लास मिले थे। तुम प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां कहलाते हो ना। भल शरीर निर्वाह अर्थ धन्धे आदि में वह नाम चलाना पड़ता है। तुम तो कहेंगे

हमारा तो अब यह नाम है। फिर भी एड्रेस घर की देनी होती है। बुद्धि में है हम ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, यहाँ बैठे हैं। साथ में शिवबाबा ब्रह्मा बाबा है। वहाँ बाहर मित्र सम्बन्धियों को देखते हो तो वह नाम याद आ जाता है। वह नाम भी लिखना पड़ता है। नहीं तो समझ भी न सकें। तो गृहस्थ व्यवहार में जाने से फिर भूल जाते हैं। उसमें रहते अपने को शिववंशी निश्चय कर उस याद में रहना पड़े। मेहनत है इसलिए बाबा लिखते हैं कि चार्ट रखो। लौकिक सम्बन्धी होते हुए भी पारलौकिक को याद करते रहें, इसमें मेहनत है। यह नई बात है ना।

○ बाप भी कहते हैं रहा हुआ हिसाब-किताब चुक्तू करना है | या तो योग से या फिर सजाओं से चुक्तू करना पड़े | सजायें तो बहुत कड़ी हैं | उनसे बीमारी आदि में चुक्तू होता तो बहुत अच्छा |

○ यह सर्विसएबुल कितनी सर्विस करते हैं! इनको सर्विस बिगर आराम नहीं आता | कोई तो सर्विस करना जानते ही नहीं | योग में बैठते नहीं | ज्ञान की धारणा नहीं | बाबा समझते हैं – यह क्या पद पायेंगे | कोई भी छिप नहीं सकते | बच्चे जो सालिम (अच्छे) बुद्धिवान हैं, सेन्टर सम्भालते हैं, उनको एक-एक का पोतामेल भेजना चाहिए | तो बाबा समझें कि कहाँ तक पुरुषार्थी हैं |

○ ताक़त का मतलब यह नहीं कि कोई को घूंसा मारो जो गिर पड़े | नहीं, यह है रूहानी ताक़त जो रूहानी बाप द्वारा मिलती है | याद के बल से तुम शान्ति को पाते हो और पढ़ाई से तुमको सुख मिलता है | जैसे और टीचर्स तुमको पढ़ाते हैं, वैसे बाप भी पढ़ाते हैं | यह भी पढ़ते हैं, स्टूडेन्ट हैं | देहधारी जो भी हैं वे सभी स्टूडेन्ट हैं | बाप को तो देह है नहीं |

○ अब भगवान् श्रीमत देते हैं – बच्चे, मुझे याद करो | यह है बाप का बड़ा फ़रमान | निश्चय हो तब तो उस फ़रमान पर चलें ना | बाप कहते हैं – मेरे मीठे बच्चों तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | इनको याद नहीं करना है | मैं नहीं कहता, बाबा मेरे द्वारा तुमको कहते हैं | जैसे तुम बच्चे पढ़ते हो तो यह भी पढ़ता है | सब स्टूडेन्ट हैं | पढ़ाने वाला एक टीचर है | वह सब मनुष्य पढ़ाते हैं | यहाँ तुमको ईश्वर पढ़ाते हैं | तुम आत्मायें पढ़ती हो | तुम्हारी आत्मा फिर पढ़ाती है | इसमें बहुत आत्म-अभिमानी बनना है |

○ वास्तव में आत्मा शरीर से अलग है | परन्तु आधाकल्प देह-अभिमानी रहे हैं | बाप आकर अंतिम जन्म में देही-अभिमानी बनाते हैं तो मुश्किल भासता है | पुरुषार्थ करते-करते कितने थोड़े पास होते हैं | 8 रत्न निकलते हैं | अपने से पूछो – हमारी लाईन क्लीयर है? एक बाप के सिवाए और कुछ याद तो नहीं आता है? यह अवस्था पिछाड़ी में होगी | आत्म-अभिमानी बनने में बहुत मेहनत है |

○ सारा सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, बुद्धि में है – हम तपस्या कर रहे हैं फिर यह बनेंगे | इसको ही कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी हो बैठना क्योंकि बुद्धि में तो सारी नॉलेज है | हम क्या थे, अब फिर क्या बनते हैं | स्टूडेन्ट टीचर को तो ज़रूर याद करेंगे | तुमको भी बाप को याद करना है | याद की यात्रा से ही पाप कटते हैं | आत्मा पवित्र हो जाती है तो फिर शरीर भी पवित्र मिलता है |

○ रूहानी बाप कह रहे हैं कि आत्म-अभिमानी अथवा देही-अभिमानी होकर बैठना है | किसको याद करना है? बाप को | सिवाए बाप के और कोई को याद नहीं करना है | जब बाप से बेहद का वर्सा मिलता है तो उनको याद करना है | बेहद का बाप आकर समझाते हैं देही-अभिमानी भव, आत्म-अभिमानी भव | देह-अभिमान को छोड़ते जाओ | आधाकल्प तुम देह-अभिमानी होकर रहे हो, फिर आधाकल्प देही-अभिमानी होकर रहना है | सतयुग-त्रेता में तुम आत्म-अभिमानी थे | वहाँ मालूम रहता है कि हम आत्मा हैं, अब यह शरीर बूढ़ा हुआ, इसको अब छोड़ते हैं | यह चेन्ज करना है (सर्प का मिसाल) | तुम भी पुराना शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश करते हो इसलिए तुमको अभी आत्म-अभिमानी बनना है | कौन बनाते हैं? बाप | जो सदैव आत्म-अभिमानी है | वह कभी देह-अभिमानी बनते नहीं | भल एक बार आते हैं तो भी देह-अभिमानी नहीं बनते क्योंकि यह शरीर तो पराया लोन पर लिया हुआ है | इस शरीर से उनका लगाव नहीं रहता | लोन लेने वाले का लगाव नहीं रहता | जानते हैं यह तो शरीर छोड़ना है | बाप समझाते हैं मैं ही आकर तुम बच्चों को पावन बनाता हूँ | तुम सतोप्रधान थे सो फिर तमोप्रधान बने हो | अब फिर पावन बनने के लिए तुमको अपने साथ योग सिखलाता हूँ | योग अक्षर न कह याद अक्षर कहना ठीक है | याद सिखलाता हूँ | बच्चे बाप को याद करते हैं | अभी तुमको भी बाप को याद करना है | आत्मा ही याद करती है | जब रावण राज्य शुरू होता है तो तुम बच्चे देह-अभिमानी बन पड़ते हो | फिर बाप आकर आत्म-अभिमानी बनाते हैं |

○ बाप समझाते हैं इतना ऊँच पद पाने के लिए अपने को आत्मा समझना है और बाप को याद करना है | इसमें है मेहनत | अगर किसकी बुद्धि मोटी है तो मोटी बुद्धि से याद करें | परन्तु याद एक को ही करें |

○ अब बाप कहते हैं, तुम एक जन्म पवित्र बनो तो 21 जन्म तुम पावन बन जायेंगे | क्यों नहीं बनेंगे! परन्तु माया ऐसी है, भाई-बहन की भी दाल नहीं गलती, कच्चे रह जाते हैं | दाल गले तब, जब अपने को आत्मा समझ भाई-भाई समझो | देह का भान निकल जाए | यह है मेहनत | सहज भी बहुत है | कोई को कहेंगे बहुत डिफिकल्ट है तो उनकी दिल हट जायेगी इसलिए इसका नाम ही है सहज याद | ज्ञान भी सहज है | 84 के चक्र को जानना है, पहले-पहले बाप का परिचय देना है | बाप की याद से ही आत्मा की जंक उड़ जायेगी और पवित्र दुनिया का वर्सा पायेंगे | पहले बाप को याद करो | भारत का प्राचीन योग ही कहते हैं, जिससे भारत को विश्व की बादशाही मिलती है |

○ यह भी समझाया है योगबल से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट होते हैं | इस जन्म में भी जो पाप किये हैं, वह भी बताने पड़े | उसमें भी ख़ास है विकार की बात | याद में है बल | बाप है सर्वशक्तिमान्, तुम जानते हो जो सर्व का बाप है उनके साथ योग लगाने से पाप भस्म होते हैं |

○ तुम भी समझते हो हम यह शरीर छोड़ जाकर नई दुनिया में प्रिन्स-प्रिन्सेज़ बनेंगे | कोई समझेंगे हम प्रजा में चले जायेंगे, इसमें बिल्कुल लाइन क्लीयर हो | एक बाप की ही याद रहे, और कुछ भी याद न आये | इसको कहा जाता है पवित्र बेगर | शरीर भी याद न रहे | यह तो पुराना छी-छी शरीर है ना | यहाँ जीते जी मरना है, यह बुद्धि में रहना है | अभी हमको वापिस घर जाना है | अपने घर को भूल गये थे | अब फिर बाप ने याद दिलाया है | अभी यह नाटक

पूरा होता है | बाप समझाते हैं तुम सब वानप्रस्थी हो | सारे विश्व में जो भी मनुष्य मात्र हैं, सबकी इस समय वानप्रस्थ अवस्था है | मैं आया हूँ, सभी आत्माओं को वाणी से परे ले जाता हूँ | बाप कहते हैं अभी तुम छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है | वानप्रस्थ किसको कहा जाता है, यह भी तुम जानते नहीं थे | ऐसे ही जाकर गुरु करते थे | तुम लौकिक गुरुओं द्वारा आधाकल्प पुरुषार्थ करते आये हो, परन्तु ज्ञान कोई भी नहीं | अब बाप ख़ुद कहते हैं तुम छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है | मुक्ति तो सबको मिलनी है | छोटे-बड़े सब ख़त्म हो जायेंगे | बाप आया है सबको घर ले जाने | इसमें तो बच्चों को बहुत ख़ुशी होनी चाहिए | यहाँ दुःख भासता है, इसलिए अपने घर स्वीट होम को याद करते हैं | घर जाना चाहते हैं परन्तु अक्ल तो है नहीं | कहते हैं हम आत्माओं को अब शान्ति चाहिए | बाप कहते हैं कितने समय के लिए चाहिए? यहाँ तो हर एक को अपना-अपना पार्ट बजाना है | यहाँ कोई शान्त थोड़ेही रह सकते |

- विनाश आएगा तो समझेंगे भगवान् आया हुआ है | फिर जिन्हों को तुमने मैसेज दिया होगा, वे याद करेंगे कि यह सफेद पोश वाले फ़रिश्ते कौन थे? सूक्ष्मवतन में भी तुम फ़रिश्ते देखते हो ना! तुम जानते हो मम्मा-बाबा योगबल से ऐसा फ़रिश्ता बनते हैं, तो हम भी बनेंगे | यह सब बातें बाप इसमें प्रवेश कर तुमको समझाते हैं |

- बाप तो बेहद में ही बैठेंगे | मैं आया हूँ सारी दुनिया को पावन बनाने | सारी दुनिया को करेन्ट दे रहा हूँ तो पवित्र हो जाएँ | जिनका पूरा योगबल होगा वह समझेंगे बाबा अभी बैठकर याद की यात्रा सिखला रहे हैं, जिससे विश्व में शान्ति होती है | बच्चे भी याद में रहते हैं तो मदद

मिलती है | मददगार बच्चे भी चाहिए ना | ख़ुदाई खिदमतगार, निश्चयबुद्धि ही याद करेंगे | तुम्हारी पहली सब्जेक्ट है ही पावन बनने की | गोया तुम बच्चे निमित्त बनते हो बाप के साथ | बाप को बुलाते ही हैं – हे पतित-पावन आओ | अब वह अकेला क्या करेगा | ख़िदमतगार चाहिए ना | तुम जानते हो हम विश्व को पवित्र बनाकर फिर सारे विश्व पर राज्य करेंगे | बुद्धि में जब ऐसा निश्चय होगा तब नशा चढ़ेगा | तुम बच्चे जानते हो हम बाप की श्रीमत से, अपने योगबल से अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हैं | यह नशा चढ़ना चाहिए | यह है रूहानी बात | बच्चे समझते हैं हर कल्प बाबा इस रूहानी बल से हमको विश्व का मालिक बनाते हैं | यह भी समझते हो कि शिवबाबा आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं | अभी सिर पर इस याद की यात्रा का ही फुरना है | पुरुषार्थ करना है | धन्धा आदि करते भी याद की यात्रा रहे | एवरहेल्दी बनाने के लिए बाप कमाई बड़ी ज़बरदस्त कराते हैं | इस समय सब कुछ भुलाना पड़ता है | हम आत्मायें जा रही हैं, आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस कराई जाती है | खाते-पीते, चलते-फिरते यह क्या बाप को याद नहीं कर सकते, कपड़ा सिलाई करते, बुद्धियोग बाप की याद में रहे | बहुत सहज है | यह तो समझते हो 84 का चक्र पूरा हुआ है | अभी बाप हम आत्माओं को राजयोग सिखलाने आये हैं | यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है | कल्प पहले भी ऐसे हुआ था, जो अब रिपीट हो रहा है | यह रिपीटेशन का राज़ भी बाप ही समझाते हैं | हर एक को ड्रामा में पार्ट मिला हुआ है, वह बजाते रहते हैं | बच्चों को राय दी जाती है कि बाप को याद करो तो सतोप्रधान बनेंगे | फिर यह शरीर भी छूट जायेगा | तुम्हारी बुद्धि में अब यही है कि हम आत्मा सतोप्रधान बनें क्योंकि वापिस घर जाना है | सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे | वहाँ तो कहेंगे एक पुराना शरीर छोड़ दूसरा लेना है | वहाँ तो दुःख की बात नहीं | यहाँ यह दुःखधाम है | पुराने शरीर हैं तो समझते हैं इनको छोड़ अब वापिस अपने घर जायें | बाप को निरन्तर याद करना है | वह निराकार बाप ही ज्ञान का सागर है |

वही आकर सबकी सद्गति करते हैं | बाप कहते हैं साधुओं का भी उद्धार करता हूँ | तुम अब एक बाप से योग लगाओ | तुम सब आत्माओं को बाप से वर्सा लेने का हक़ है | अपने को आत्मा समझ देही-अभिमानी बनो और बाप को निरन्तर याद करो तो पाप कटते जायेंगे |

○ मनुष्य तो बहुत आवाज़ से भक्ति आदि के गीत गाते हैं | तुमको तो जाना है आवाज़ से परे | तुम तो अपने बाप की ही याद में मस्त रहते हो | आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है | आत्मा समझती है अब बाप को याद करना है | भक्ति मार्ग में शिवबाबा-शिवबाबा तो करते आये हैं | शिव के मन्दिर में शिव को बाबा ज़रूर कहते हैं | निराकार पर दूध आदि चढ़ायेंगे, वह क्या करेंगे! बाप कहते हैं दूध आदि जो चढ़ाते हो वह तुम ही पीते हो, भोग आदि भी तुम ही खाते हो | यहाँ तो मैं सम्मुख हूँ ना | आगे इनडायरेक्ट करते थे, अभी तो डायरेक्ट है, नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं | सर्चलाईट दे रहे हैं | बच्चे समझते हैं मधुबन में बाबा के पास ज़रूर आना चाहिए | वहाँ हमारी बैटरी अच्छी चार्ज होती है | घर में तो गोरख़धन्धे आदि में अशान्ति ही अशान्ति लगी हुई है | इस समय सारे विश्व में अशान्ति है | तुम जानते हो अभी हम शान्ति स्थापन कर रहे हैं योगबल से | बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से | कल्प पहले भी तुमने यह सुना था, अब भी सुनते हो | जो कुछ एक्ट होती है फिर भी होगी | बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये | मुझ माशूक को इतना याद करते थे | अब मैं आया हूँ तो फिर छोड़कर चले जाते हैं | माया कैसा थप्पड़ लगा देती है | बाबा अनुभवी तो है ना! बाबा को अपनी सारी हिस्ट्री याद है | सर पर टोपी, नंगे पाँव दौड़ता था.......मुसलमान लोग भी बहुत प्यार करते थे | बहुत खातिरी करते थे | मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरु का बच्चा आया

○ यह सारा झाड़ तमोप्रधान जड़जड़ीभूत हो गया है | अब फिर नया बनता है | तो बाप समझाते हैं यह है नई दुनिया की बातें | जैसे मनुष्य बीमारी में भी होपलेस हो जाते हैं ना | समझते हैं इनका बचना मुश्किल है | वैसे दुनिया भी अब होपलेस है | कब्रिस्तान बनना है फिर इनको याद क्यों करना चाहिए | यह है बेहद का सन्यास | वह हठयोगी सन्यासी सिर्फ़ घरबार छोड़ जाते हैं | तुम पुरानी दुनिया का ही सन्यास करते हो | पुरानी दुनिया से नई दुनिया हो जाती है |

○ बाप ने समझाया है यह रूप भी है, बसन्त भी है | बाबा का छोटा-सा रूप है | उनको ज्ञान सागर कहा जाता है | यह ज्ञान रत्न हैं जिससे तुम बहुत धनवान बनेंगे | बाकी कोई अमृत वा पानी की बरसात नहीं है | पढ़ाई में पानी की बात नहीं होती | पावन बनने में खर्चे की बात ही नहीं | तुमको अब विवेक मिला है | समझते हो पतित-पावन तो एक ही बाप है | तुम अपने योगबल से पावन बन रहे हो | जानते हो पावन बन पावन दुनिया में चले जायेंगे | अब राइट यह है या वह? इन सब बातों में बुद्धि चलनी चाहिए | ड्रामा में यह भक्ति का पार्ट भी होने का ही है | बाप कहते हैं अब तुमको पावन बन पावन दुनिया में चलना है | जो पावन बनेगा वह जायेगा | जो यहाँ की सैपलिंग होंगे वह निकल आयेंगे | बाकी थोड़ेही समझेंगे | वह तो दुबन में फँसे ही रहेंगे | जब सुनेंगे तब पिछाड़ी में कहेंगे – अहो प्रभू, तेरी लीला.......आप पुरानी दुनिया को नई कैसे बनाते हो | तुम्हारा यह ज्ञान अख़बारों में बहुत-बहुत पड़ जायेगा | खास यह चित्र अख़बार में रंगीन डाल दो | और लिख दो – शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक यह (लक्ष्मी-नारायण) बनाते हैं | कैसे? याद की यात्रा से | याद करते-करते तुम्हारी कट उतर जायेगी | तुम खड़े-खड़े सबको यह रास्ता बता सकते हो कि बाप कहते हैं मामेकम् याद करो, अपने को आत्मा समझो | घड़ी-घड़ी यह याद दिलाकर फिर देखो

उनका चेहरा कुछ बदलता है? नैन पानी से भीगते हैं? तब समझो कुछ बुद्धि में बैठता है | पहले-पहले यह एक बात ही समझानी है | 5 हज़ार वर्ष पहले भी बाप ने कहा है मामेकम् याद करो | शिवबाबा आया था तब तो शिव जयन्ती मनाते हैं ना | भारत को स्वर्ग बनाने के लिए यही समझाया था कि मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे | छोटी-छोटी बच्चियां भी ऐसे बैठ समझायें | बेहद का बाप शिवबाबा ऐसे समझाते हैं | 'बाबा' अक्षर बहुत मीठा है | बाबा और वर्सा | इतना निश्चय में बच्चों को रहना है | यह है ही मनुष्य से देवता बनने का विद्यालय | देवतायें होते ही हैं पावन | अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो, मनमनाभव | अक्षर सुने हैं, न सुने हो तो बाप सुनाते हैं | बाप कहते हैं मैं ही पतित-पावन हूँ, मुझे याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जाये और सतोप्रधान बन जायेंगे | मेहतन ही यह है | ज्ञान के लिए तो सब कह देते हैं, बहुत अच्छा है, फर्स्टक्लास ज्ञान है परन्तु प्राचीन योग की बात कोई जानते ही नहीं हैं | पावन होने की बात तुम सुनाते हो तो भी समझते नहीं | बाप कहते हैं तुम सब पतित तमोप्रधान बन गये हो | अब अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो | असुल तुम आत्मायें मेरे साथ थी ना | मुझे तुम बुलाते भी हो ओ गॉड फादर आओ | अब मैं आया हूँ, तुम मेरी मत पर चलो | यह है ही पतित से पावन होने की मत | मैं हूँ सर्वशक्तिमान्, एवर पावन | अब तुम मुझे याद करो | इनको ही प्राचीन राजयोग कहा जाता है | तुम धन्धे आदि में भी भल रहो, बाल बच्चे आदि भी भल सम्भालो, सिर्फ़ बुद्धियोग और सबसे हटाकर मेरे साथ लगाओ | यह है सबसे मुख्य बात | यह न समझा तो गोया कुछ भी नहीं समझा | ज्ञान के लिए तो कहते हैं बहुत अच्छा ज्ञान देते हो, पवित्रता भी अच्छी है, परन्तु हम पवित्र कैसे बनें? हमेशा के लिए यह बात समझते नहीं | देवतायें हमेशा पवित्र थे ना, वह कैसे बनें? यह बात पहले-पहले समझानी है | बाप कहते हैं मुझे याद करो | याद से ही पाप मिट जायेंगे और तुम देवता बन जायेंगे |

○ बाप कहते हैं आत्म-अभिमानी वा देही-अभिमानी हो बैठो क्योंकि आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार भरे जाते हैं | सबका असर आत्मा पर होता है | आत्मा को ही पतित कहा जाता है | पतित आत्मा कहा जाता है तो ज़रूर जीव आत्मा ही होगी | आत्मा शरीर के साथ ही होगी | पहली-पहली बात कहते हैं आत्मा होकर बैठो | अपने को शरीर नहीं, आत्मा समझ बैठो | आत्मा ही इन आरगन्स को चलाती है | घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझने से परमात्मा याद आएगा | अगर देह याद आई तो देह का बाप याद आएगा इसलिए बाप कहते हैं – आत्म-अभिमानी बनो | बाप पढ़ा रहे हैं, यह है पहला पाठ | तुम आत्मा अविनाशी हो, शरीर विनाशी है | 'हम आत्मा हैं' यह पहला शब्द याद नहीं करेंगे तो कच्चे पड़ जायेंगे | मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ – यह शब्द इस समय बाप पढ़ाते हैं | आगे कोई भी पढ़ाते नहीं थे | बाप आये ही हैं आत्म-अभिमानी बनाकर ज्ञान देने लिए |

○ बच्चों को यह तो मालूम है कि यह बाप है, इसमें डरने की कोई बात नहीं | यह कोई साधू, महात्मा नहीं है जो कोई बद-दुआ करेंगे या गुस्सा करेंगे | उन गुरुओं आदि में तो बहुत क्रोध होता है, तो उनसे मनुष्य डरते हैं, कहाँ श्राप न दे देवें | यहाँ तो ऐसी कोई बात नहीं | बच्चों को कभी डरने की बात नहीं | बाप से डरते वह हैं जो ख़ुद चंचल होते हैं | वह लौकिक बाप तो गुस्सा भी करते हैं | यहाँ तो बाप कभी गुस्सा आदि नहीं करते हैं | समझाते हैं, अगर बाप को याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे | अपना ही जन्म-जन्मान्तर के लिए नुकसान करेंगे | बाप तो समझानी देते हैं, आगे के लिए सुधर जाएँ | बाकी ऐसे नहीं कि बाप नाराज़ होते हैं | बाप तो समझाते रहते हैं, बच्चे अपने को सुधारने के लिए याद की यात्रा पर अटेन्शन दो | साथ-साथ चक्र को बुद्धि में रखो, दैवीगुण धारण करो | याद है मुख्य | बाकी सृष्टि

चक्र की नॉलेज तो बहुत सिम्पल है | वह है सोर्फ़ ऑफ़ इनकम | परन्तु उनके साथ दैवीगुण भी धारण करने हैं | इस समय हैं बिल्कुल आसुरी गुण |

○ नॉलेज तो बड़ी सिम्पल है | सिर्फ़ युक्ति से समझाना होता है | जबान में मिठाज़ भी चाहिए | तुमको यह ज्ञान मिलता है | वह भी कर्मों अनुसार ही कहेंगे | शुरू से लेकर भक्ति की है तो यह अच्छे कर्म किये हैं इसलिए शिवबाबा भी अच्छी तरह बैठ समझाते हैं | जितनी जास्ती भक्ति की होगी, शिवबाबा राज़ी हुआ होगा तो अभी भी ज्ञान जल्दी उठायेंगे | महारथियों की बुद्धि में प्वाइन्ट्स होंगी | लिखते रहें तो अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स अलग करते रहें | प्वाइन्ट्स का वज़न करें | परन्तु ऐसी मेहनत कोई करता ही नहीं | मुश्किल कोई नोट्स रखते होंगे और अच्छी प्वाइंट्स निकाल अलग रखते होंगे | बाबा हमेशा कहते हैं भाषण करने से पहले लिखो, फिर जांच करो | ऐसी मेहनत करते नहीं | सब प्वाइंट्स किसको याद नहीं रहती हैं | बैरिस्टर लोग भी प्वाइंट्स नोट करते हैं, डायरी में | तुमको तो बहुत जरूरी है | टापिक्स लिखकर फिर पढ़ना चाहिए, करेक्शन करना चाहिए | इतनी मेहनत नहीं करेंगे तो उछल नहीं खाएँगे | तुम्हारा बुद्धियोग और-और तरफ भटकता रहेगा | बहुत थोड़े हैं जो सरलता से चलते हैं | सर्विस बिगर और कुछ बुद्धि में रहता नहीं | माला में आना है तो मेहनत करनी चाहिए | बाप तो मत देते हैं फिर दिल से लगता है | याद नहीं तो वह खुद जाने | भल धंधाधोरी आदि करो परंतु डायरी तो सदा पाकेट में होनी चाहिए नोट करने लिए | सबसे जास्ती तुमको नोट करना चाहिए | अलबेले रहेंगे, अपने को मिया मिट्ठू समझेंगे तो माया भी कोई कम नहीं | घूँसा लगाती रहेगी | लक्ष्मी-नारायण बनना मासी का घर थोड़ेही है | बड़ी राजधानी स्थापन हो रही है, कोटों में कोई निकलेंगे | बाबा भी सवेरे दो बजे उठकर लिखते थे फिर पढ़ते थे | प्वाइंट भूल जाती थी फिर बैठ देखते थे – तुमको समझाने के लिए | तो समझा जाता है कि

अब तक याद की यात्रा कहाँ है | कहाँ है कर्मातीत अवस्था | मुफ़्त में किसकी बड़ाई नहीं करनी होती है | बड़ी मेहनत है, कर्मभोग होता है | याद करना पड़ता है | अच्छा, समझो मुरली ब्रह्मा नहीं, शिवबाबा चलाते हैं | बच्चों को सदैव समझाते हैं कि शिवबाबा ही तुम्हें सुनाते हैं, कभी बीच में यह बच्चा भी बोल देते हैं | बाप तो बिल्कुल एक्यूरेट ही कहेंगे | इनको तो सारा दिन बहुत ख्यालात करने होते हैं | कई बच्चों की रेसपॉन्सिबिलिटी है | बच्चे नाम-रूप में फँस चलायमान हो जाते हैं | ढेर बच्चों के ख्यालात रहते हैं – बच्चों के लिए मकान बनाने हैं, यह प्रबन्ध करना है | है तो यह सब ड्रामा | बाबा का भी ड्रामा, इनका भी ड्रामा, तुम्हारा भी ड्रामा | ड्रामा बिगर कोई चीज़ होती ही नहीं | सेकण्ड-सेकण्ड ड्रामा चलता रहता है | ड्रामा को याद करने से हिलेंगे नहीं | अडोल, अचल, स्थेरियम रहेंगे | तूफ़ान तो बहुत आयेंगे | कई बच्चे सच नहीं बताते हैं | स्वप्न भी ढेर आते हैं | माया है ना | जिन्हें पहले नहीं आते थे उन्हें भी आयेंगे | बाप समझ जाते हैं, बच्चों को वर्सा पाने के लिए याद में मेहनत करनी पडती है | कोई-कोई मेहनत करते-करते थक जाते हैं | मंज़िल बड़ी भारी है 21 पीढ़ी विश्व का मालिक बनाते हैं, तो मेहनत भी करनी पड़े ना | लवली बाप को याद करना पड़े | दिल में रहता है बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं | ऐसे बाप को तो घड़ी-घड़ी याद करना पड़े | सबसे प्यारा बाबा है | यह बाबा तो कमाल करते हैं, विश्व की नॉलेज देते हैं | बाबा, बाबा, बाबा कहकर अन्दर में महिमा गानी पड़े | जो याद करते होंगे, उनको बाप की कशिश होती होगी | यहाँ आते ही हैं बाप से रिफ्रेश होने | तो बाप समझाते हैं – मीठे बच्चे, गफ़लत नहीं करनी है | बाबा देखते भी हैं सभी सेन्टर्स से आते हैं | देखता हूँ, पूछता हूँ, किस प्रकार की ख़ुशी है? बाबा जाँच तो करते हैं ना | शक्ल से भी देखते हैं – बाप से कितना लव है? बाप के सामने आते हैं तो बाप कशिश भी करते हैं | यहाँ बैठे-बैठे सब भूल जाता है | बाबा बिगर कुछ भी नहीं, सारी दुनिया को भुलाना ही है | वह अवस्था बड़ी मीठी

अलौकिक होती है | बाप की याद में आकर बैठते हैं तो प्रेम के आंसू भी आते हैं | भक्ति मार्ग में भी आंसू आते हैं | परन्तु भक्ति मार्ग अलग है, ज्ञान मार्ग अलग है | यह है सच्चे बाप के साथ सच्चा प्रेम | यहाँ की बात ही न्यारी है | यहाँ तुम शिवबाबा के पास आते हो, ज़रूर रथ पर सवार होगा | बिगर शरीर आत्मायें तो वहाँ मिल सकती, यहाँ तो सब शरीरधारी हैं | जानते हैं यह बापदादा है | तो बाप को याद करना ही पड़े | बहुत प्यार से महिमा करनी पड़े | बाबा हमको क्या देते हैं! |

○ गाया भी जाता है ऊँच ते ऊँचा भगवान् | उनसे ऊँचा फिर क्या होगा! न बाप, न टीचर, न गुरु | इस बेहद के बाप का न कोई बाप है, न टीचर है, न गुरु है | यह स्वयं ही बाप, टीचर, गुरु है | यह तो अच्छी तरह समझ सकते हो | ऐसा कोई भी व्यक्ति हो नहीं सकता | यही वन्डर खाकर ऐसे बाप, टीचर, सतगुरु को याद करना चाहिए | मनुष्य कहते भी हैं ओ गॉड फादर......वह नॉलेजफुल टीचर भी है, सुप्रीम गुरु भी है | एक ही है, ऐसा कोई दूसरा मनुष्य मात्र नहीं होगा | उनको पढ़ाना भी मनुष्य तन में है | पढ़ाने के लिए मुख तो ज़रूर चाहिए | यह भी बच्चों को घड़ी-घड़ी स्मृति रहे तो भी बेडा पार हो जाए | बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे | सुप्रीम टीचर समझने से सारा ज्ञान बुद्धि में आ जायेगा | वह सतगुरु भी है | हमको योग सिखला रहे हैं | एक के साथ ही योग लगाना है | सभी आत्माओं का एक ही फादर है | सब आत्माओं को कहते हैं मामेकम् याद करो | आत्मा ही सब कुछ करती है | इस शरीर रूपी मोटर को चलाने वाली आत्मा है | उनको रथ कहो वा कुछ भी कहो |

○ बाप को तो मालूम है – क्या-क्या किसमें डिफेक्ट है? क्योंकि जिस तन में बाप ने प्रवेश किया है, वह भी अपनी जांच करते हैं | यह दोनों बापदादा इकट्ठे हैं ना | तो जितना-जितना जो औरों को सुख देते हैं, कोई को दुःख नहीं देते हैं, वह छिपे नहीं रह सकते हैं | गुलाब, मोतिया कब छिपे नहीं रह सकेंगे | बाप सब कुछ बच्चों को समझाए फिर बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जाये | याद करने समय सारे दिन में जो कुछ किया है, वह भी देखना है | मेरे में क्या अवगुण हैं, जो बाबा की दिल पर इतना नहीं चढ़ सकते? दिल पर सो तख़्त पर | तो बाप उठकर बच्चों को देखते हैं, हमारे तख़्त के वासी कौन-कौन बनने वाले हैं? जब समय नज़दीक आता है, तो बच्चों को झट मालूम पड़ जाता है – हम कहाँ तक पास होंगे? नापास होने वाले को पहले से ही मालूम पड़ जाता है कि हमारे मार्क्स कम होंगे तुम भी समझते हो हमको मार्क्स तो मिलने हैं | हम स्टूडेन्ट हैं, किसके? भगवान् के | जानते हैं वह इस दादा द्वारा पढ़ाते हैं | तो कितनी ख़ुशी होनी चाहिए | बाबा हमको कितना प्यार करते हैं, कितना मीठा है, तकलीफ़ तो कोई देते नहीं | सिर्फ़ कहते हैं इस चक्र को याद करो | पढ़ाई कोई जास्ती नहीं है | एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ा है | ऐसा हमें बनना चाहिए | दैवीगुणों की एम ऑब्जेक्ट है | तुम दैवीगुण धारण कर इन जैसा पवित्र बनते हो तब ही माला में पिरोये जाते हो | बेहद का बाबा हमको पढ़ाते हैं | ख़ुशी होती है ना | बाबा ज़रूर आपसमान प्योर नॉलेजफुल बनायेंगे | इसमें पवित्रता, सुख, शान्ति सब आ जाती है | अभी कोई भी परिपूर्ण नहीं बना है | अन्त में बनना है | उसके लिए पुरुषार्थ करना है | बाप को तो सभी प्यार करते हैं | 'बाबा' कहकर तो दिल ही खिल जाता है | बाप से वर्सा कितना भारी मिलता है | सिवाए बाप के और कहाँ भी दिल नहीं जायेगी | बाप की याद ही बहुत सतानी चाहिए | बाबा, बाबा, बाबा, बहुत प्यार से बाप को याद करना होता है | राजा का बच्चा होगा तो उनको राजाई का नशा होगा ना | अभी तो राजाओं का मान नहीं रहा है | जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट

थी तो उन्हों का बहुत मान था | सब उनको सलाम भरते थे सिवाए वाइसराय के | बाकी सब नमन करते थे राजाओं को | अभी उन्हों की गति क्या हो गई है | यह भी तुम जानते हो कि यह कोई आकर राजाई पद नहीं लेंगे |

○ बच्चे कहते हैं – बाबा, यह 5 भूत बड़े तीखे हैं, जो याद में रहने नहीं देते हैं | बाबा कहते हैं बच्चे शिवबाबा को याद कर भोजन बनाओ | एक शिवबाबा के सिवाए और कोई है नहीं | वही सहायता करते हैं | गायन भी है ना शरण पड़ी मैं तेरे...... | सतयुग में थोड़ेही ऐसे कहेंगे | अभी तुम शरण में आये हो | कोई को भूत लगते हैं, तो बहुत पीड़ित करते हैं | वह अशुद्ध सोल आती है | तुम्हारे को कितने भूत लगे हुए हैं | काम, क्रोध, लोभ, मोह.......यह भूत तुम्हारे को बहुत पीड़ित करते हैं | वह अशुद्ध सोल तो कोई-कोई को तंग करती है | तुमको पता है – यह 5 भूत तो 2500 वर्ष से चलते आ रहे हैं | तुम कितने तंग हो पड़े हो | इन 5 भूतों ने कंगाल बना दिया है | देह-अभिमान का भूत है नम्बरवन | काम का भी बड़ा भूत है | उन्होंने तुमको कितना सताया है, यह भी बाप ने बतलाया है | कल्प-कल्प तुमको यह भूत लगते हैं | यथा राजा-रानी तथा प्रजा, सबको भूत लगा हुआ है | तो इसे भूतों की दुनिया कहेंगे |

○ सब ख़त्म हो जायेंगे, इससे तो क्यों न बाप से बादशाही ले लो | कोई तकलीफ़ की बात नहीं | सिर्फ़ बाप को याद करना है और स्वदर्शन चक्र फिराना है | भूगरों से (चनों से) मुट्ठी खाली कर हीरे-जवाहरों से मुट्ठी भरकर जाना है | बाप समझाते हैं – मीठे बच्चे, इन चने मुट्ठी के पिछाड़ी तुम अपना समय क्यों बरबाद करते हो? हाँ, कोई बुजुर्ग हैं, बाल-बच्चे बहुत हैं तो

उनको सम्भालना होता है | कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है, कोई भी आये तो उनको समझाओ कि बाप हमको यह बादशाही देते हैं | तो बादशाही लेनी चाहिए ना | अभी तुम्हारी मुट्ठी हीरों से भर रही है | बाकी और तो सब विनाश हो जायेंगे | बाप समझाते हैं तुमने 63 जन्म पाप किये हैं | दूसरा पाप है बाप और देवताओं की ग्लानि करना | विकारी भी बने हैं और गाली भी दिया है | बाप की कितनी ग्लानि की है | बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं – बच्चे, टाइम नहीं गंवाना चाहिए | ऐसे नहीं, बाबा हम याद नहीं कर सकते | बोलो, बाबा हम अपने को आत्मा याद नहीं कर सकते | अपने को भूल जाते हैं | देह-अभिमान में आना गोया अपने को भूलना | अपने को आत्मा याद नहीं कर सकते तो बाप को फिर कैसे याद करेंगे | बहुत बड़ी मंज़िल है | सहज भी बहुत है | बाकी हाँ, माया का आपोजीशन होता है |

- जितना सर्विस करते हो, जितना बाप को याद करते हो वह याद जमती रहेगी | तुमको बहुत मज़ा आयेगा |

- बाप बच्चों को याद की यात्रा सिखलाते हैं | परन्तु बच्चे इसमें मूँझते बहुत हैं | समझते नहीं हैं क्योंकि भक्ति बहुत की है ना | भक्ति है देह-अभिमान | आधाकल्प देह-अभिमान रहा है | बाहरमुखता होने के कारण अपने को आत्मा समझ नहीं सकते | बाप ज़ोर बहुत लगाते हैं – अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | परन्तु आता ही नहीं | और सब बातें मानते भी हैं | फिर कह देते याद कैसे करें, कोई चीज़ तो दिखाई नहीं पड़ती | उनको समझाया जाता है – तुम अपने को आत्मा समझते हो | यह भी जानते हो वह बेहद का बाप है | मुख से शिव-

शिव बोलना नहीं है | अन्दर में जानते हो ना मैं आत्मा हूँ | मनुष्य शान्ति मांगते हैं, शान्ति का सागर वह परमात्मा ही है | ज़रूर वर्सा भी वही देंगे | अब बाप समझाते हैं, मेरे को याद करो तो शान्ति हो जायेगी | और जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भी विनाश होंगे | बाकी कोई चीज़ है नहीं | कोई इतना बड़ा लिंग नहीं | आत्मा छोटी है, बाप भी छोटा है | याद तो सभी करते हैं – हे भगवान्, हे गॉड | कौन कहता है? आत्मा कहती है – अपने बाप को याद करते हैं | तो बाप बच्चों को कहते हैं मनमनाभव | मीठे-मीठे बच्चों, अन्तर्मुख होकर रहो | यह जो कुछ देखते हो वह ख़त्म हो जाना है | बाकी आत्मा शान्ति में रहती है | आत्मा को शान्तिधाम ही जाना है | जब तक आत्मा पवित्र नहीं बनी है तब तक शान्तिधाम जा नहीं सकती | ऋषि मुनि आदि सब कहते हैं शान्ति कैसे मिले | बाप तो सहज युक्ति बताते हैं | परन्तु बच्चों में बहुत हैं जो शान्ति में नहीं रहते हैं | बाबा जानते हैं घरों में रहते हैं, बिल्कुल शान्त नहीं रहते | सेन्टर्स पर थोड़ा टाइम जाते हैं, अन्दर में शान्त हो बाप को याद करें, वह नहीं है | सारा दिन घर में हंगामा करते रहते हैं, तो सेन्टर पर आने से भी शान्ति में नहीं रह सकते हैं | कोई की देह से प्यार हो गया तो उनके मन को कभी शान्ति हो न सके | बस, उसकी ही याद आती रहेगी | बाप समझाते हैं - मनुष्यों में हैं 5 भूत | कहते हैं ना इनमें भूत की प्रवेशता है | इन भूतों ने ही तुमको कंगाल बनाया है | वह तो करके एक भूत होता, वह भी कभी प्रवेश कर लेता है | बाप कहते हैं यह 5 भूतों की हर एक में प्रवेशता है | इन भूतों को भगाने के लिए ही पुकारते हैं | बाबा, आकर हमको शान्ति दो, इन भूतों को भगाने की युक्ति बताओ | यह भूत तो सभी में हैं | यह रावण राज्य है ना | सबसे कड़ा भूत है काम-क्रोध | बाप आकर भूतों को भगाते हैं तो उनकी एवज़ में कुछ मिलना तो चाहिए ना | वह भूत-प्रेत भगाते हैं मिलता कुछ भी नहीं |

○ बाप की श्रीमत है – बच्चे, कहाँ भी रहते तुम मुझे याद करो | जैसे कन्या होती है तो वह जानती नहीं कि हमको कौन पति मिलेगा, चित्र देखती है तो उनकी याद ठहर जाती है | कहाँ भी रहते एक-दो को दोनों को याद करते हैं, इसको कहा जाता है जिस्मानी प्यार | यह है रूहानी प्यार | रूहानी प्यार किसके साथ? बच्चों का रूहानी बाप के साथ और बच्चों का बच्चों के साथ | तुम बच्चों का आपस में बहुत प्यार होना चाहिए यानी आत्माओं का आत्माओं के साथ भी प्यार चाहिए | यह शिक्षा भी अभी तुम बच्चों को मिलती है |

○ बाप को कहा जाता है करनकरावनहार | तुम साहेबजादे हो | तुम्हारा इस सृष्टि में ऊँचे ते ऊँचा पोजीशन है | तुम बच्चों को नशा रहना चाहिए कि हम साहेबजादे, साहेब की मत पर अब फिर से अपना राज्य-भाग्य स्थापन कर रहे हैं | यह भी किसकी बुद्धि में याद नहीं रहता है | बाबा सभी सेन्टर्स के बच्चों के लिए कहते हैं | अनेक सेन्टर्स हैं, अनेक बच्चे आते हैं | हर एक की बुद्धि में सदैव याद रहे कि हम बाबा की श्रीमत पर फिर से विश्व में शान्ति-सुख का राज्य स्थापन कर रहे हैं | सुख और शान्ति यह दो अक्षर ही याद करने हैं | तुम बच्चों को कितना ज्ञान मिलता है, तुम्हारी बुद्धि कितनी विशाल होनी चाहिए, इसमें जामड़ी बुद्धि नहीं चल सकती | अपने को साहेबजादे समझो तो पाप ख़त्म हो जाएँ | बहुत हैं जिनको सारा दिन बाप की याद नहीं रहती है | बाबा कहते तुम्हारी बुद्धि डल क्यों हो जाती है? सेन्टर्स पर ऐसे-ऐसे बच्चे आते हैं, जिनकी बुद्धि में है ही नहीं कि हम श्रीमत पर विश्व में अपना दैवी राज्य स्थापन कर रहे हैं | अन्दर में वह नशा, फलक होनी चाहिए | मुरली सुनने से रोमांच खड़े हो जाने चाहिए | यहाँ तो बाबा देखते हैं बच्चों के और ही रोमांच डेड रहते हैं, ढेर बच्चे हैं जिनकी बुद्धि में यह याद नहीं रहता है कि हम श्रीमत पर बाबा की याद से विकर्म विनाश कर अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं | रोज़ बाबा समझाते हैं – बच्चे, तुम वारियर्स हो, रावण पर जीत

पाने वाले हो | बाप तुम्हें मन्दिर लायक बनाते हैं परन्तु इतना नशा वा ख़ुशी बच्चों को रहती थोड़ेही है, कोई चीज़ नहीं मिली तो बस रूठ पड़ेंगे | बाबा को तो वन्डर लगता है बच्चों की अवस्था पर | माया की जंज़ीरों में फँस पड़ते हैं | तुम्हारा मान, तुम्हारी कारोबार, तुम्हारी ख़ुशी तो वन्डरफुल होनी चाहिए | जो मित्र सम्बन्धियों को नहीं भूलते हैं वह कभी बाप को याद कर नहीं सकेंगे | फिर क्या पद जायेंगे! वन्डर लगता है | तुम बच्चों में तो बड़ा नशा चाहिए | अपने को साहेबजादे समझो तो कुछ भी मांगने की परवाह न रहे | बाबा तो हमको इतना अथाह खज़ाना देते हैं जो 21 जन्म तक कुछ भी मांगने का ही नहीं है, इतना नशा रहना चाहिए | परन्तु बिल्कुल ही डल, जामड़ी बुद्धि है | तुम बच्चों की बुद्धि तो 7 फुट लम्बी होनी चाहिए | मनुष्य की लम्बाई अधिक से अधिक 6-7 फुट होती है | बाबा बच्चों को कितना हुल्लास में लाते हैं – तुम साहेबजादे हो, दुनिया के लोग तो कुछ भी समझते नहीं | उनको तुम समझाते हो कि सिर्फ़ तुम यह समझो हम बाप के सामने बैठे हैं, बाप को याद करते रहेंगे तो विकर्म विनाश होंगे | बाप समझाते हैं बच्चे, माया तुम्हारा बहुत कड़ा दुश्मन है, दूसरों का इतना दुश्मन नहीं है, जितना तुम्हारा | मनुष्य तो जानते ही नहीं, तुच्छ बुद्धि हैं | बाबा रोज़-रोज़ तुम बच्चों को कहते हैं तुम साहेबजादे हो, बाप को याद करो और दूसरों को आप-सामान बनाते रहो | तुम सबको यह भी समझा सकते हो कि भगवान् तो सच्चा साहेब है ना | तो हम उनके बच्चे साहेबजादे ठहरे, तुम बच्चों को चलते-फिरते बुद्धि में यही याद रखना है | सर्विस में दधीचि ऋषि मिसल हड्डियाँ भी दे देनी चाहिए | यहाँ हड्डी देना तो क्या और ही अथाह सुख वैभव चाहिए | तबियत कोई इन चीज़ों से थोड़ेही अच्छी होती है | तबियत के लिए चाहिए याद की यात्रा | वह ख़ुशी रहनी चाहिए | अरे, हम तो कल्प-कल्प माया से हारते आये, अभी माया पर जीत पाते हैं | बाप आकर जीत पहनाते हैं | अभी भारत में कितना दुःख है, अथाह दुःख देने वाला है रावण | वो लोग समझते हैं एरोप्लेन हैं, मोटरें महल हैं,

बस, यही स्वर्ग है | बाबा कहावत सुनाते हैं ना रीढ़ छा जाने.... (भेड़ क्या समझे) अभी तुम समझते हो – मनुष्य भी सब भेड़ बकरियों की तरह हैं, कुछ भी नहीं जानते हैं | क्या-क्या बैठ उपमा करते हैं | तुम्हारी बुद्धि में आदि-मध्य-अन्त का राज़ है | अच्छी रीति याद करो कि हम विश्व में सुख-शान्ति स्थापन कर रहे हैं | जो मददगार बनेंगे वही ऊँच पद पायेंगे | वह भी तुम देखते हो कि कौन-कौन मददगार बनते हैं | अपनी दिल से हर एक पूछे कि हम क्या कर रहे हैं? हम भेड़-बकरी तो नहीं हैं? मनुष्यों में अहंकार देखो कितना है, गुर्र-गुर्र करने लग पड़ते हैं | तुमको तो बाप की याद रहनी चाहिए | सर्विस में हड्डियाँ देनी है, किसी को नाराज़ नहीं करना है, न होना है | अहंकार भी नहीं आना चाहिए | हम यह करते, हम इतने होशियार हैं, यह ख्याल आना भी देह-अभिमान है | उसकी चलन ही ऐसी हो जाती, जो शर्म आ जायेगी | नहीं तो तुम्हारे जैसा सुख और कोई को हो न सके | यह बुद्धि में याद रहे तो तुम चमकते रहो | सेन्टर में कोई तो अच्छे महारथी हैं, कोई घोड़ेसवार, प्यादे भी हैं | इसमें बड़ी विशाल बुद्धि होनी चाहिए | सर्विस बिगर क्या पद पायेंगे | माँ-बाप को तो बच्चों के लिए रिगार्ड रहता है | परन्तु वह अपना ख़ुद रिगार्ड नहीं रखते तो बाबा क्या कहेंगे |

○ पवित्र बनना है, सतोप्रधान थे फिर से बनना है ज़रूर | बाप को याद करना है | उठते, बैठते, चलते बाप को याद कर सकते हो | जो बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको बहुत रूचि से याद करना है | परन्तु माया छोड़ती नहीं है | अनेक प्रकार की किस्म-किस्म की रिपोर्ट्स लिखते हैं – बाबा, हमको माया के विकल्प बहुत आते हैं | बाप कहते हैं युद्ध का मैदान है ना | 5 विकारों पर जीत पानी है | बाप को याद करने से तुम भी समझते हो हम सतोप्रधान बनते हैं |

○ बाप कहते हैं पवित्रता की प्रतिज्ञा कर फिर एक बार भी पतित बना तो की कमाई चट हो जायेगी | फिर वह अन्दर में खाता रहेगा | किसको भी कह नहीं सकेंगे कि बाप को याद करो | मूल बात तो विकार के लिए ही पूछते हैं | तुम बच्चों को यह पढ़ाई रेग्युलर पढ़नी है | बाप कहते हैं हम तुमको नई-नई बातें सुनाता हूँ | तुम हो स्टूडेन्ट, तुमको भगवान् पढ़ाते हैं! भगवान् के तुम स्टूडेन्ट हो | ऐसी ऊँच ते ऊँच पढ़ाई को तो एक दिन भी मिस नहीं करना चाहिए |

○ आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, कैसे पार्ट चलता है, इसे समझने में टाइम चाहिए | पिछाड़ी में सिर्फ़ यही याद रहेगा कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | परन्तु अभी समझाना पड़ता है | पिछाड़ी की यही अवस्था है, बाप को याद करते-करते चले जाना है | याद से ही तुम पवित्र बनते हो | कितना बने हो सो तो तुम समझ सकते हो | इम्प्योर को बल ज़रूर कम मिलेगा | मुख्य 8 रत्न ही हैं जो पास विद् ऑनर हो जाते हैं | वह कुछ भी सजा नहीं खाते हैं | यह बड़ी महीन बातें हैं | कितनी ऊँची पढ़ाई है | स्वप्न में भी नहीं होगा कि हम देवता बन सकते हैं | बाप को याद करने से ही तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो | इसके सामने तो वह धन्धा आदि कुछ भी काम का नहीं है | कोई भी चीज़ काम आने वाली नहीं है | फिर भी करना तो पड़ता ही है | यह कभी भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं | अरे, तुम तो पदमापदमपति बनते हो | देने का ख्याल आया तो ताक़त ख़त्म हो जाती है | मनुष्य ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं, लेने के लिए | वह देना थोड़ेही हुआ | भगवान् तो दाता है ना | दूसरे जन्म में कितना देते हैं | यह भी ड्रामा में नूँध है | भक्ति मार्ग में है अल्पकाल का सुख, तुम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा पाते हो |

○ बाप तो एक ही बात समझाते हैं – तुम जो आधाकल्प देह-अभिमानी बन पड़े हो, अब देही-अभिमानी बन बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों, इसको याद की यात्रा कहा जाता है | योग कहने से यात्रा नहीं सिद्ध होती | तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है | तुम अभी यात्रा कर रहे हो | उन्हों का जो योग है, उसमें यात्रा की बात नहीं | हठयोगी तो ढेर हैं | वह है हठयोग, यह है बाप को याद करना | बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा समझो | ऐसे और कोई कभी नहीं समझायेंगे | यह तो है पढ़ाई | बाप का बच्चा बना फिर बाप से पढ़ना और पढ़ाना है | बाबा कहते हैं तुम म्यूज़ियम खोलो, आपेही तुम्हारे पास आयेंगे | बुलाने की तकलीफ़ नहीं होगी | कहेंगे यह ज्ञान तो बड़ा अच्छा है, कभी सुना नहीं है | इसमें तो कैरेक्टर सुधरते हैं | मुख्य है ही पवित्रता, जिस पर ही हंगामे आदि होते हैं | बहुत फेल भी होते हैं | तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जाती है जो इस दुनिया में होते हुए उनको देखते नहीं हैं | खाते-पीते भी तुम्हारी बुद्धि उस तरफ हो | जैसे बाप नया मकान बनाते हैं तो सबकी बुद्धि नये मकान तरफ़ चली जाती है ना | अभी नई दुनिया बन रही है | बेहद का बाप बेहद का घर बना रहे हैं | तुम जानते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं | अब चक्र पूरा हुआ है | अब हमको घर और स्वर्ग में जाना है तो उसके लिए पावन भी जरुर बनना है | याद की यात्रा से पावन बनना है | याद में ही विघ्न पड़ते हैं, इसमें ही तुम्हारी लड़ाई है | पढ़ाई में लड़ाई की बात नहीं होती | पढ़ाई तो बिलकुल सिम्पल है | 84 के चक्र की नॉलेज तो बहुत सहज है | बाकी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसमें है मेहनत | बाप कहते हैं याद की यात्रा भूलो मत | कम से कम 8 घन्टा तो जरुर याद करो | शरीर निर्वाह के लिए कर्म भी करना है | नींद भी करनी है | सहज मार्ग है ना | अगर कहें नींद न करो, तो यह हठयोग हो गया | हठयोगी तो बहुत हैं | बाप कहते हैं उस तरफ़ कुछ भी नहीं देखो, उससे कुछ फ़ायदा नहीं | कितने हठयोग आदि सिखलाते हैं | यह सब है मनुष्य

मत | तुम आत्मायें हो, आत्मा ही शरीर ले पार्ट बजाती है, डॉक्टर आदि बनती है | परन्तु मनुष्य देह-अभिमानी बन पड़े हैं – मैं फलाना हूँ |

○ बाप कहते हैं यह 5 विकार तो घड़ी-घड़ी तुमको सतायेंगे | तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे बाप को याद करने का, उतना माया तुमको नीचे गिराने की कोशिश करती है | तुम्हारी अवस्था ऐसी मज़बूत होनी चाहिए जो कोई माया का तूफ़ान हिला न सके | रावण कोई और चीज़ नहीं है वा कोई मनुष्य नहीं है | 5 विकारों रूपी रावण को ही माया कहा जाता है | आसुरी रावण सम्प्रदाय तुमको पहचानते ही नहीं हैं कि आखरीन में यह हैं कौन? यह बी.के. क्या समझाते हैं? रियल्टी में कोई नहीं जानते | यह बी.के. क्यों कहलाते हैं? ब्रह्मा किसकी सन्तान है? अभी तुम बच्चे जानते हो हमको वापिस घर जाना है | यह बाप बैठ तुम बच्चों को शिक्षा देते हैं | आयुश्वान भव, धनवान भव......तुम्हारी सब कामनायें पूरी करते, वरदान देते हैं | परन्तु सिर्फ़ वरदान से कोई काम नहीं होता | मेहनत करनी है | हर एक बात समझने की है | अपने को राज-तिलक देने के अधिकारी बनना है | बाप अधिकारी बनाते हैं | तुम बच्चों को शिक्षा देते हैं ऐसे-ऐसे करो | पहले नम्बर की शिक्षा देते हैं मामेकम् याद करो | मनुष्य याद नहीं करते हैं क्योंकि वह जानते ही नहीं तो याद भी रांग है | कहते ईश्वर सर्वव्यापी है | फिर शिवबाबा को याद कैसे करेंगे! शिव के मन्दिर में जाकर पूजा करते, तुम पूछो इनका आक्यूपेशन बताओ? तो कहेंगे भगवान् सर्वव्यापी है |

○ बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है। टीचर को कब भूलेंगे क्या! टीचर द्वारा तो पढ़ाई पढ़ते रहते हैं। कोई-कोई बच्चों से माया बहुत गफलत कराती है। एकदम जैसे आँखों में धूल डाल

देती है। पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। भगवान् पढ़ाते हैं, ऐसी पढ़ाई को छोड देते हैं! पढ़ाई ही मुख्य है। सो भी कौन छोड़ते हैं? बाप के बच्चे। तो बच्चों को अन्दर में कितनी ख़ुशी रहनी चाहिए। बाप नॉलेज भी हर बात की देते हैं। जो कल्प-कल्प देते हैं। बाप कहते हैं कम से कम इस रीति मुझे याद करो। कल्प-कल्प तुम ही समझते हो और धारण करते हो। इनका बाबा तो कोई है नहीं, वही बेहद का बाप है। वन्डरफुल बाप हुआ ना। मेंरा कोई बाबा है बताओ? शिवबाबा किसका बच्चा है? यह पढ़ाई भी वन्डरफुल है जो इस समय के सिवाए कब पढ़ नहीं सकते और सिर्फ तुम ब्राह्मण ही पढ़ते हो। तुम यह भी जानते हो कि बाप को याद करते-करते हम पावन बन जायेंगे। नहीं तो फिर सजायें खानी पड़ेगी। 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए याद की मेंहनत करनी है। देखना है कि हम किसको दु :ख तो नहीं देते हैं? सुखदाता बाप के हम बच्चे हैं ना? बहुत गुल-गुल बनना है। यह अपना अनुभव भी सुनाते हैं। छोटेपन में ही वैरागी ख्यालात रहते थे। कहता था दुनिया में तो बहुत दु :ख है। अब हमारे पास सिर्फ 10 हजार हो जायें तो फिर 50 रूपया ब्याज मिलेगा, इतना बस है। स्वतन्त्र रहेंगे। घरबार सम्भालना तो मुसीबत है। अच्छा, फिर एक बाइसकोप देखा सौभाग्य सुन्दरी का.... बस वैराग्य की सब बातें टूट गई। ख्याल किया शादी करेंगे, यह करेंगे। एक ही थपड़ मारा माया ने, कला काया चट कर दी। तो अब बाप कहते हैं-बच्चे, यह तो दुनिया ही दोज़क है और उसमें फिर यह जो नाटक (सिनेमा) हैं, वह भी दोज़क है। यह देखने से ही सबकी वृत्तियाँ खराब हो जाती हैं। अखबारें पढ़ते हैं, उसमें अच्छी- अच्छी माइयों के चित्र देखते हैं तो वृत्ति उस तरफ चली जाती है। यह बड़ी अच्छी खूबसूरत है, बुद्धि में आया ना। वास्तव में यह ख्याल भी चलना नहीं चाहिए। बाबा कहते हैं-यह तो दुनिया ही खत्म हो जानी है इसलिए तुम और सब भूल मामेंकम् याद करो, ऐसे-ऐसे चित्र आदि क्यों देखते हो? यह सब बातें वृत्ति को नीचे ले आती हैं। यह जो कुछ देखते हो यह तो कब्रदाखिल होने हैं। जो कुछ इन आखों से देखते हो उनको याद न करो,

इनसे ममत्व मिटा दो। यह सब शरीर तो पुराने छी-छी हैं। भल आत्मा शुद्ध बनती है परन्तु शरीर तो छी-छी है ना। इस तरफ ध्यान क्या देना है। एक बाप को ही देखना है।

○ अब तुमको नॉलेज मिली है कि इन पाँच विकारों में फंसने कारण यह जो कर्मबन्धन बना हुआ है, उनको परमात्मा की याद अग्नि से भस्म करना है, यह है कर्मबन्धन से छूटने का सहज उपाय। इस सर्वशक्तिवान बाबा को चलते फिरते श्वासों श्वास याद करो। अब यह उपाय बताने की सहायता खुद परमात्मा आकर करता है, परन्तु इसमें पुरुषार्थ तो हर एक आत्मा को करना है। परमात्मा तो बाप, टीचर, गुरु रूप में आए हमें वर्सा देते है। तो पहले उस बाप का हो जाना है, फिर टीचर से पढ़ना है जिस पढ़ाई से भविष्य जन्म-जन्मान्तर सुख की प्रालब्ध बनेगी अर्थात् जीवनमुक्ति पद में पुरुषार्थ अनुसार मर्तबा मिलता है। और गुरु रूप में पवित्र बनाए मुक्ति देता है, तो इस राज को समझ ऐसा पुरुषार्थ करना है। यही टाइम है पुराना खाता खत्म कर नई जीवन बनाने का, इसी समय जितना पुरुषार्थ कर अपनी आत्मा को पवित्र बनायेंगे उतना ही शुद्ध रिकार्ड भरेंगे फिर सारा कल्प चलेगा, तो सारे कल्प का मदार इस समय की कमाई पर है।

○ पहले तो तुम काँटे थे, अब फूल बन रहे हो इसलिए बाबा भी गुलाब का फूल ले आते हैं – ऐसा फूल बनना है | ख़ुद आकर फूलों का बगीचा बनाते हैं | फिर रावण आता है काँटों का जंगल बनाने | कितना क्लीयर है | यह सब सिमरण करना है | एक को याद करने से उसमें सब आ जाता है | बाप से वर्सा मिलता है | यह बहुत भारी दौलत है, शान्ति का भी वर्सा मिलता है क्योंकि शान्ति का सागर वही है | लौकिक बाप की ऐसी महिमा कभी नहीं करेंगे | श्रीकृष्ण है सबसे प्यारा | पहले-पहले जन्म ही उनका होता है इसलिए उनको सबसे जास्ती

प्यार करते हैं | बाप बच्चों को ही सारे घर का समाचार देते हैं | बाप भी पक्का व्यापारी है, कोई विरला ऐसा व्यापार करे | होलसेल व्यापारी कोई मुश्किल बनता है | तुम होलसेल व्यापारी हो ना! बाप को याद करते ही रहते हो | कई रिटेल में सौदा कर फिर भूल जाते हैं | बाप कहते हैं निरन्तर याद करते रहो | वर्सा मिल गया फिर याद करने की दरकार नहीं रहेगी | लौकिक सम्बन्ध में बाप बूढ़ा हो जाता है तो कोई-कोई बच्चे पिछाड़ी तक भी सहायक बनते हैं | कोई तो मिलकियत मिली और उड़ाकर ख़लास कर देते हैं | बाबा सब बातों का अनुभवी है | तब तो बाप ने भी इनको अपना रथ बनाया है | गरीबी का, साहूकारी का सबमें अनुभवी है | ड्रामा अनुसार यह एक ही रथ है | यह कभी बदल नहीं सकता | ड्रामा बना हुआ है, इसमें कभी चेन्ज हो नहीं सकती है | सब बातें होलसेल और रिटेल में समझाकर फिर अन्त में कह देते हैं मन्मनाभव, मध्याजी भव | मन्मनाभव में सब आ जाता है | यह बहुत भारी ख़ज़ाना है, उनसे झोली भरते हैं | अविनाशी ज्ञान रत्न एक-एक लाख रूपये के हैं | तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो | बाप तो ख़ुशी, ना ख़ुशी दोनों से न्यारा है | साक्षी हो ड्रामा देख रहे हैं | तुम पार्ट बजाते हो | मैं पार्ट बजाते भी साक्षी हूँ | जन्म-मरण में नहीं आता हूँ | और तो कोई इनसे छूट नहीं सकता, मोक्ष मिल न सके | यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है | यह भी वन्डरफुल है | छोटी-सी आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है | यह अविनाशी ड्रामा कभी विनाश हो नहीं पाता |

○ बच्चे जानते हैं हमको पढ़ाने वाला है बाप | पहले तो यह पक्का निश्चय चाहिए | बच्चा बड़ा होता है तो बाप को याद करना पड़े | फिर टीचर को फिर गुरु को याद करना पड़े | भिन्न-भिन्न समय पर तीनों को याद करेंगे | यहाँ तो तुमको तीनों ही इकट्ठे एक ही टाइम मिले हैं | बाप, टीचर, गुरु एक ही है | वो लोग तो वानप्रस्थ का भी अर्थ नहीं समझते | वानप्रस्थ में

जाना है इसलिए समझते हैं गुरु करना चाहिए | 60 वर्ष के बाद गुरु करते हैं | यह कायदा अभी ही निकला है |

○ तुम बच्चों को भी अब घर जाना है। यह सारी दुनिया विनाश होनी है। अब इसमें क्या रहना है। इस दुनिया से दिल ही नहीं लगती। दिल लगानी है एक माशुक से, वह कहते हैं मुझ एक के साथ दिल लगाओ तो तुम पावन बनेंगे। अब बहुत गई थोड़ी रही, टाइम जाता रहता है। योग में नहीं रहे होंगे तो फिर अन्त में वह बहुत पक्षाताप करेंगे, सजा खायेंगे, पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। यह भी तुमको अभी मालूम पड़ा है कि अपना घर छोड़े हमको कितना समय हुआ है। घर जाने लिए ही तो माथा मारते हैं ना। बाप भी घर में ही मिलेगा। सतयुग में तो नहीं मिलेगा।

○ वहाँ विकारी बच्चे नहीं होते, रावण राज्य ही नहीं। योगबल से सब कुछ होता है, तुमको साक्षात्कार होता है- अब बच्चा बन गर्भ महल में जाना है। खुशी से जाते हैं। यहाँ तो मनुष्य कितना रोते चिल्लाते हैं। यहाँ तो गर्भ जेल में जाते हैं ना। वहाँ रोने पीटने की बात नहीं। शरीर तो बदलना जरूर है। जैसे सर्प का मिसाल है, इसमें मूँझने की बात ही नहीं। जास्ती पूछने का रहता नहीं है। एकदम पावन बनने के पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए। बाप को याद करना मुश्किल होता है क्या! बाप के सामने बैठे हो ना। मैं तुम्हारा बाप तुमको सुख का वर्सा देता हूँ। तुम यह एक अन्तिम जन्म याद में नहीं रह सकते हो! यहाँ अच्छी रीति समझते भी हैं फिर घर में जाकर स्त्री आदि का चेहरा देखते हैं तो माया खा जाती है। बाप कहते हैं कोई में भी ममत्व नहीं रखो। वह तो सब कुछ खत्म होना ही है। याद तो एक बाप को ही करना है। चलते फिरते बाप और अपनी राजधानी को याद करो। दैवीगुण भी धारण करने हैं। सतयुग में यह गन्दी चीज़ें मास आदि होता ही नहीं। बाप कहते हैं विकारों को भी छोड़ दो। हम तुमको विश्व की

बादशाही देता हूँ, कितनी आमदनी होती है। तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे। सिर्फ एक जन्म पवित्र रहने से कितनी भारी आमदनी हो जाती है।

- अभी तुम जानते हो- आत्मा शरीर ऐसे छोड़ेगी, बैठे-बैठे बाप की याद में देह का त्याग कर देंगे। बाप के पास तो खुशी से जाना है। पुराना शरीर खुशी से छोड़ना है। जैसे सर्प का मिसाल है।

- अब घर जाना है। वहाँ से फिर अपनी राजधानी में आना है। पिछाड़ी में यह दो बातें जाकर रहती हैं-जाना है फिर आना है। देखा जाता है इस याद में रहने से शरीर के रोग जो तंग करते हैं, वह भी ऑटोमेटिकली ठण्डे हो जाते हैं। वह खुशी रह जाती है। खुशी जैसी खुराक नहीं इसलिए बच्चों को भी यह समझाना पड़ता है। बच्चे, अब घर चलना है, स्वीट होम में चलना है, इस पुरानी दुनिया को भूल जाना है। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। अभी ही बच्चों को मालूम पड़ता है। बाप कल्प-कल्प आते हैं, यही सुनाते हैं कल्प बाद फिर मिलेंगे।

- बाप समझाते हैं बहन- भाई भी नहीं, भाई- भाई समझो और बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और कोई तकलीफ नहीं है। पिछाड़ी में और कोई बातों की दरकार नहीं पड़ेगी। सिर्फ बाप को याद करना है, आस्तिक बनना है। ऐसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है। लक्ष्मी-नारायण का चित्र बड़ा एक्यूरेट है। सिर्फ बाप को भूल जाने से दैवी गुण धारण करना भी भूल जाते हैं। बच्चे एकान्त में बैठ विचार करो-बाबा को याद करके हमको यह बनना है, यह गुण धारण करना है। बात तो बहुत छोटी है। बच्चों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कितना

देह- अभिमान आ जाता है। बाप कहते हैं "देही-अभिमानी भव"। बाप से ही वर्सा लेना है। बाप को याद करेंगे तब तो किचड़ा निकलेगा।

○ बच्चे जानते हैं अभी बाबा आया हुआ है। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना करते हैं। तुम बच्चे जानते हो स्थापना हो रही है। इतनी सहज बात भी तुमसे खिसक जाती है। एक अलफ है, बेहद के बाप से बादशाही मिलती है। बाप को याद करने से नई दुनिया याद आ जाती है। अबलायें-कुब्जायें भी बहुत अच्छा पद पा सकती हैं। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप ने तो रास्ता बताया है। कहते हैं- अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप की पहचान तो मिली। बुद्धि में बैठ जाता है अब 84 जन्म पूरे हुए, घर जायेंगे फिर आकर स्वर्ग में पार्ट बजायेंगे। यह प्रश्न नहीं उठता कि कहाँ याद करूँ, कैसे करुँ? बुद्धि में है कि बाप को याद करना है। बाप कहाँ भी जाये, तुम तो उनके ही बच्चे हो ना। बेहद के बाप को याद करना है। यहाँ बैठे हो तो तुमको आनन्द आता है। सम्मुख बाप से मिलते हो। मनुष्य मूँझ जाते हैं कि शिवबाबा की जयन्ती कैसे होगी! यह भी समझते नहीं कि शिवरात्रि क्यों कहा जाता है? कृष्ण के लिए समझते हैं ना रात को जयन्ती होती है परन्तु इस रात्रि की बात नहीं।

○ यहाँ हम जाते ही हैं देवता बनने के लिए। तो तुम अभी सृष्टि के आदि-मध्य- अन्त का पाठ पढ़ते हो। पाठ पढ़ाया जाता है याद के लिए। पाठ आत्मा पढ़ती है। देह का भान उतर जाता है। आत्मा ही सब कुछ करती है। अच्छे अथवा बुरे संस्कार आत्मा में ही होते हैं।

○ अब बाप ने सुखधाम में जाने का रास्ता बताया है। जितना बाप को याद करेंगे उतना सम्पूर्ण बन यथा योग्य शान्तिधाम में जायेंगे, उनको ही मुक्ति कहा जाता है, जिसके लिए ही मनुष्य गुरू करते हैं। परन्तु मनुष्यों को बिल्कुल पता नहीं कि मुक्ति-जीवनमुक्ति चीज क्या है क्योंकि

यह है नई बात। तुम बच्चे ही समझते हो अब हमको घर जाना है। बाप कहते हैं याद की यात्रा से पवित्र बनो। तुम पहले-पहले जब आये श्रेष्ठाचारी दुनिया में तो सतोप्रधान थे। आत्मा सतोप्रधान थी। कोई के साथ कनेक्शन भी पीछे होगा। जब गर्भ में जायेंगे तब सम्बन्ध में आयेंगे। तुम जानते हो अभी यह हमारा अन्तिम जन्म है। हमको वापिस घर जाना है। पवित्र बनने बिगर हम जा नहीं सकेंगे। ऐसे-ऐसे अन्दर में बातें करनी चाहिए क्योंकि बाप का फरमान है उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि में यही ख्यालात रहे कि हम सतोप्रधान आये थे, अब सतोप्रधान बनकर घर जाना है। सतोप्रधान बनना है बाप की याद से क्योंकि बाप ही पतित-पावन है। हम बच्चों को युक्ति बताते हैं कि तुम ऐसे पावन हो सकेंगे। सारे सृष्टि के आदि-मध्य- अन्त को तो बाप ही जानते हैं और कोई अथॉरिटी है नहीं। बाप ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है।

○ बाप देखते हैं यह पवित्र पौधे थे, जिसको राज्य- भाग्य दिया वह फिर मेरे आक्यूपेशन को ही भूल गये। अब फिर तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना चाहते हो तो मुझ बाप को याद करो तो सब पाप कट जायें। परन्तु याद भी नहीं कर सकते, घड़ी-घड़ी कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। अरे, तुम याद नहीं करेंगे तो पाप कैसे कटेंगे? एक तो तुम विकारों में गिर पतित बने और दूसरा फिर बाप को गाली देने लगे। माया के संग में तुम इतना गिर पड़े जो जिसने तुमको आसमान में चढ़ाया उनको ठिक्कर-भित्तर में ले गये। माया के संग में तुमने ऐसा काम किया है! बुद्धि में आना चाहिए ना। एकदम पत्थरबुद्धि तो नहीं बनना चाहिए। बाप रोज़-रोज़ कहते हैं मैं फर्स्टक्लास प्वाइंट तुमको सुनाता हूँ।

○ ज्ञान का सागर है ना। सुनाते-सुनाते फिर पिछाड़ी में दो अक्षर कह देते अल्फ को समझा तो भी काफी है। अल्फ को जानने से बे को जान ही लेंगे। इतना सिर्फ समझाओ तो भी ठीक है। जो जास्ती ज्ञान नहीं धारण कर सकते वह ऊंच पद भी पा नहीं सकते। पास विद् ऑनर हो न सके

। कर्मातीत अवस्था को पा न सके, इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। याद की भी मेहनत है। ज्ञान धारण करने की भी मेहनत है। दोनों में सब होशियार हो जाएं सो भी तो हो न सकें। राजधानी स्थापन हो रही है।

○ तुम्हारी बात है योगबल की। योगबल इतना चाहिए जो तुम कोई से भी काम करा सको। भूँ-भूँ करते रहना है। ज्ञान का बल तो तुम्हारे में भी है। इन चित्रों आदि में ज्ञान है, योग गुप्त है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, बेहद का वर्सा लेने के लिए। वह है ही गुप्त, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो, कहाँ भी बैठ तुम याद कर सकते हो। सिर्फ यहाँ बैठकर योग नहीं साधना है। ज्ञान और याद दोनों सहज हैं। सिर्फ 7 दिन का कोर्स लिया, बस। जास्ती दरकार नहीं। फिर तुम जाकर औरों को आपसमान बनाओ। बाप ज्ञान का, शान्ति का सागर है। यह दो बातें हैं मुख्य। इनसे तुम शान्ति का वर्सा ले रहे हो। याद भी बड़ी सूक्ष्म है। तुम बच्चे भल बाहर में चक्र लगाओ, बाप को याद करो। पवित्र बनना है, दैवीगुण भी धारण करना है। भल स्त्री सामने हो, तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। देखते हुए न देखो। हम तो अपने बाप को याद करते हैं, वह ज्ञान का सागर है। तुमको आपसमान बनाते हैं तो तुम भी ज्ञान सागर बनते हो।

○ अब बाप तुमको कहते हैं - स्वदर्शन चक्रधारी बच्चों, यह अलंकार तुम्हारे हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान तुम रहते हो। सिवाए तुम्हारे और कोई रह न सके। यह भी स्मृति आई है कि इस जन्म में हमने कितने पाप किये हैं इसलिए बाबा कहते हैं वह सब अविनाशी सर्जन के आगे रखो तो हल्के हो जायेंगे। बाकी जन्म-जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं, उसके लिए योग में रहना है। योग से ही पाप कटेंगे और खुशी भी रहेगी। बाप की याद से सतोप्रधान बन जायेंगे। मालूम है कि हम याद से यह बनेंगे तो कौन याद नहीं करेगा। परन्तु यह युद्ध का

मैदान है, मेहनत करनी पड़ती है इतना ऊंच पद पाने के लिए। यह भी बच्चों को स्मृति आई है कि बेहद के बाप से हम ऊंच ते ऊंच वर्सा लेते हैं, कल्प-कल्प लेते हैं। तुम्हारे पास बहुत आयेंगे, आकर महामन्त्र लेंगे मनमनाभव का। मनमनाभव का अर्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह है महान् मन्त्र, महान् आत्मा बनने के लिए। वह कोई महात्मा है नहीं। महात्मा तो वास्तव में श्रीकृष्ण को कहा जाता है क्योंकि वह पवित्र है। देवतायें सदैव पवित्र रहते हैं।

○ माया का आपोजीशन बहुत होता है, एकदम भुला देती है। यहाँ बैठते हैं तो सारा समय याद में थोड़ेही बैठते हैं, बहुत तरफ बुद्धि चली जाती है, इसलिए टाइम देना है, मेहनत कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। पढ़ाई तो बहुत सहज है। सेन्सीबुल बच्चा हो तो 7 रोज में सारा ज्ञान समझ ले कि यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। बाकी पवित्र बनने में है मेहनत। इस पर कितने हंगामे होते हैं। समझते हैं बात तो राइट है हम ग्लानि करते थे कि ये ब्रहमाकुमारियां भाई-बहिन बनाती हैं, परन्तु बात तो बराबर राइट है।

○ सृष्टि चक्र को तो समझ लिया है। सतयुग आदि से कलियुग अन्त तक। अभी है संगमयुग। बाप को भी जरूर आना पड़े पावन बनाने। पावन अर्थात् सतोप्रधान। फिर खाद पड़ती गई। अब वह खाद निकले कैसे? आत्मा सच्ची होती है तो जेवर भी सच्चा अर्थात् गोरा शरीर होता है। आत्मा झूठी बनती है तो शरीर भी पतित होता है। ज्ञान के पहले तो यह भी नमन- वन्दन करते थे। लक्ष्मी-नारायण का बड़ा चित्र आयल पेंट का गद्दी पर लगा रहता था। उनको ही बहुत प्यार से याद करते थे और कोई की याद नहीं। बाहर और तरफ ख्याल जाता था तो अपने को चमाट मारते थे। मन भागता क्यों है, दर्शन क्यों नहीं मिलता है। भक्ति में था ना। फिर जब विष्णु का दर्शन हुआ तो भी कोई नारायण थोड़े ही हो गया।

○ अब शिवबाबा तुम बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। जहाँ से आये हो वहाँ ही फिर जाना है, जब तक बाप को याद कर पवित्र नहीं बनेंगे तो वापिस भी जा नहीं सकेंगे। तुम्हारे में भी कोई विरले हैं जो अच्छी रीति बाप को याद करते हैं। मुख से तो कहने की बात नहीं। भक्ति में राम-राम मुख से कहते हैं। कोई नहीं कहेंगे तो समझेंगे यह नास्तिक है। कितना आवाज करके गाते हैं। जितना झाड़ बड़ा होता है, उतनी भक्ति की सामग्री बड़ी होती जाती है। बीज कितना छोटा होता है। तुम तो कोई चीज़ नहीं, कोई आवाज नहीं। सिर्फ कहते हैं- अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। मुख से कहना भी नहीं है। लौकिक बाप को भी बच्चे बुद्धि से याद करते हैं। बाबा-बाबा बैठकर कहते थोड़े ही हैं।

○ कामकाज करते हुए मुझे याद करो। भल नौकरी आदि करो, भोजन बनाओ तो भी याद में रहकर, तो भोजन भी शुद्ध होगा इसलिए गाया जाता है ब्रह्मा भोजन के लिए देवताओं को भी दिल होती है। यह बच्चियाँ भी भोग लेकर जाती हैं। तो वहाँ महफिल होती है। ब्राह्मणों और देवताओं का मेला लगता है। भोजन स्वीकार करने आते हैं। ब्राह्मण लोग जब भोजन पान करते हैं तो भी मंत्र जपते हैं। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। तुम्हारा है बेहद का संन्यास। तुम इस पुरानी दुनिया को ही भूल जाते हो। तुमको फिर जाना है नई दुनिया में। घर गृहस्थ में रहते बुद्धि में यह है कि अब हमको जाना है सुखधाम वाया शान्तिधाम। शान्तिधाम को भी याद करना पड़े। बाप को, शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते हैं। यह हमारा बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। 84 जन्म पूरे हुए। सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी फिर वैश्य, शूद्र वंशी बने...। यह बाजोली का भी ज्ञान है। आगे तीर्थों पर जाते थे तो भी ऐसे बाजोली करते निशान डालते जाते थे। अभी तुम्हारा तो सच्चा तीर्थ है - शान्तिधाम और सुखधाम। तुम हो रूहानी पण्डे। सबको राय देते हो - बाप को याद करो तो शान्तिधाम चले जायेंगे। साधू सन्त आदि सब शान्तिधाम

में जाने के लिए ही मेहनत करते हैं। परन्तु जा कोई भी नहीं सकते। जायेंगे फिर सारा होल लॉट इकट्ठा।

- माया का कितना पाम्प है। साहूकारों के लिए तो जैसे स्वर्ग है इसलिए वह तुम्हारी बात भी नहीं सुनते। आगे तुम भी नहीं जानते थे। यहाँ तो बाप आकर डायरेक्ट तुमको पढ़ाते है। बाहर में तो फिर भी बच्चे पढ़ाते हैं। मित्र सम्बन्धी आदि भी याद आते रहते हैं। यहाँ तो बाप बैठ समझाते हैं। दिन-प्रतिदिन तुम याद की यात्रा में पक्के होते जायेंगे। फिर तुमको कुछ भी याद नहीं आयेगा। सिर्फ घर और राजधानी याद आयेगी। फिर यह नौकरी आदि याद नहीं आयेगी। मरेंगे ऐसे जैसे बैठे-बैठे हार्टफेल होते हैं। दु:ख की बात नहीं। हॉस्पिटल आदि तो कुछ भी नहीं होंगे। बाप को जान लिया और स्वर्ग के मालिक बने। तुम्हारा तो हक है, सबका नहीं क्योंकि स्वर्ग में सब तो नहीं आयेंगे ना।

- तुम बच्चे जानते हो ना - तो तुमको यहाँ बैठे दिल अन्दर बड़ी खुशी होनी चाहिए। हम हेविन की स्थापना कर रहे हैं। अब बाप कहते हैं- अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। पढ़ाई भी बहुत सहज है। कुछ भी खर्चा नहीं लगता है। तुम्हारी मम्मा को एक पाई खर्चा लगा? बिगर कौड़ी खर्चा पढ़कर कितनी होशियार नम्बरवन बन गई। राजयोगिन बन गई ना। मम्मा जैसी कोई भी नहीं निकली है।

- घरबार छोड़ने की उन्होंने हिम्मत दिखाई। शास्त्रों में भी लिखा है- भट्ठी बनी थी क्योंकि उन्हों को एकान्त जरूर चाहिए। सिवाए बाप के और कोई याद न रहे। मित्र-सम्बन्धियों आदि की भी याद न रहे क्योंकि आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन जरूर बनाना है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनो। इस पर ही मुसीबत आती है। कहते थे यह स्त्री-पुरूष के

बीच में झगड़ा डालने वाला ज्ञान है क्योंकि एक पवित्र बने, दूसरा न बने तो मारामारी चल पड़े । इन सबने मारें खाई हैं क्योंकि अचानक नई बात हुई ना । सब आश्चर्य खाने लगे, यह क्या हुआ जो इतने सब भागते हैं । मनुष्यों में समझ तो नहीं है । इतना कहते थे-कोई ताकत है! ऐसा तो कभी हुआ नहीं जो अपना घरबार छोड़ भागे । ड्रामा में यह सब चरित्र शिवबाबा के हैं । कोई हाथ खाली भागे, यह भी खेल है । घरबार आदि सब छोड़ भागे, कुछ भी याद नहीं रहा । बाकी सिर्फ यह शरीर है, जिससे काम करना है । आत्मा को भी याद की यात्रा से पवित्र बनाना है, तब ही पवित्र आत्मायें वापिस जा सकती हैं । स्वर्ग में अपवित्र आत्मा तो जा न सकें । कायदा नहीं । मुक्तिधाम में पवित्र ही चाहिए । पवित्र बनने में ही कितने विघ्न पड़ते है । आगे कोई सतसंग आदि में जाने के लिए रूकावट थोड़ेही होती थी । कहाँ भी चले जाते थे । यहाँ पवित्रता के कारण विघ्न पड़ते हैं ।

○ सारी दुनिया को भी मैसेज मिलना है । बाप आये हैं, सिर्फ कहते हैं मामेकम याद करो । वह बाप ही लिबरेटर है, गाइड है । वहाँ तुम जायेंगे तो अखबार में भी बहुत नाम हो जायेगा । दूसरो को भी यह बहुत सहज बात लगेगी- आत्मा और शरीर दो चीज हैं । आत्मा में ही मन-बुद्धि है, शरीर तो जड़ है । पार्टधारी आत्मा बनती है । खूबी वाली चीज़ आत्मा है तो अब बाप को याद करना है । यहॉ रहने वाले इतना याद नहीं करते हैं, जितना बाहर वाले करते हैं । जो बहुत याद करते हैं और आप समान बनाते रहते हैं, कांटों को फूल बनाते रहते हैं, वह ऊंच पद पाते हैं । तुम समझते हो पहले हम भी कांटे थे । अब बाप ने आर्डनिन्स निकाला है - काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बन जायेंगे । परन्तु लिखत से कोई समझते थोड़ेही हैं । अभी बाप ने समझाया है ।

○ गायन भी है बाप से एक सेकण्ड में वर्सा अर्थात् जीवनमुक्ति । और तो सब है जीवनबंध में । यह एक ही त्रिमूर्ति और गोले वाला चित्र जो है, बस यही मुख्य है । यह बहुत बड़ा-बड़ा होना चाहिए । अन्धों के लिए तो बड़ा आइना चाहिए, जो अच्छी तरह देख सके क्योंकि अभी सबकी नजर कमजोर है, बुद्धि कम है । बुद्धि कहा जाता है तीसरे नेत्र को । तुम्हारी बुद्धि में अब खुशी हुई है । खुशी में जिनके रोमांच खड़े नहीं होते हैं, गोया शिवबाबा को याद नहीं करते हैं तो कहेंगे ज्ञान का तीसरा नेत्र थोड़ा खुला है, झुंझार है ।

○ बाप ने समझाया है-मैक्सीमम और मिनीमम कितने जन्म लेते हो? एक जन्म तक भी है । पिछाड़ी में सब चले जायेंगे वापिस । नाटक पूरा हुआ, खेल खलास । अब बाप समझाते हैं- मुझे याद करो, अन्त मती सो गति हो जायेगी । बाप के पास परमधाम में चले जायेंगे । उनको कहते हैं मुक्तिधाम, शान्तिधाम और फिर सुखधाम । यह है दु :खधाम । ऊपर से हर एक सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं । एक जन्म होगा तो उसमें भी इन 4 स्टेजेस को पायेंगे । कितना अच्छा बच्चों को बैठ समझाते हैं, फिर भी याद नहीं करते । बाप को भूल जाते हैं, नम्बरवार तो है ना । बच्चे जानते हैं नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार रूद्र माला बनती है । कितने करोड़ की रूद्र माला है । बेहद के विश्व की यह माला है । ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा, दोनों का सरनेम देखो, यह प्रजापिता ब्रह्मा का नाम है । आधाकल्प फिर आता है रावण । डिटीज्म, फिर इसलामिज्म.... । आदम-बीबी को भी याद करते हैं, पैराडाइज़ को भी याद करते हैं । भारत पैराडाइज़ स्वर्ग था, बच्चों को खुशी तो बहुत होनी चाहिए । बेहद का बाप, ऊंचे ते ऊँच भगवान्? ऊँच ते ऊंच पढ़ाते हैं । ऊंच ते ऊंच पद मिलता है । सबसे ऊंच ते ऊँच टीचर है बाप । वह टीचर भी है फिर साथ ले जायेंगे तो सतगुरू भी है । ऐसा बाप क्यों नहीं याद रहेगा ।

खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। परन्तु युद्ध का मैदान है, माया ठहरने नहीं देती है। घड़ी-घड़ी गिर पड़ते हैं। बाप तो कहते हैं-बच्चे, याद से ही तुम मायाजीत बनेंगे।

- यह है 5 विकारों की लड़ाई। पाँच विकारों को रावण कहा जाता है। रावण पर गधे का शीश दिखाते हैं। बाबा ने यह भी समझाया है - स्कूल में कब आँखें बन्द करके नहीं बैठना होता है। वह तो भक्तिमार्ग में भगवान को याद करने की शिक्षा देते हैं कि आँखें बन्द करके बैठो। यहाँ तो बाप कहते हैं यह स्कूल है। सुना भी है नजर से निहाल.....कहते हैं यह जादूगर है। अरे, वह तो गायन भी है। देवतायें भी नजर से निहाल होते हैं। नजर से मनुष्य को देवता बनाने वाला जादूगर हुआ ना। बाप बैठ बैटरी चार्ज करे और बच्चे आँखें बन्द कर बैठें तो क्या कहेंगे! स्कूल में आँखें बन्द कर नहीं बैठते। नहीं तो सुस्ती आती है। पढ़ाई तो है सोर्स ऑफ इनकम। लाखों पद्मों की कमाई है। कमाई में कभी उबासी नहीं लेंगे। यहाँ आत्माओं को सुधारना है। यह एम आब्जेक्ट खड़ी है।

- बाबा ने खुद हीरे का हार बनाया था लक्ष्मी-नारायण के लिए। वास्तव में तो उन्हों जैसी यहाँ पहरवाइस कोई बना न सके। अभी तुम बना रहे हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। तो बाप समझाते हैं-बच्चे, टाइम वेस्ट न अपना करो, न औरों का करो। बाप युक्ति बहुत सहज बताते हैं। मुझे याद करो तो पाप मिट जायें। याद बिगर इतना श्रृंगार हो न सके। तुम यह बनने वाले हो ना। दैवी स्वभाव धारण करना है। इसमें कहने की भी दरकार नहीं। परन्तु पत्थरबुद्धि होने कारण सब समझाना पड़ता है। एक सेकेण्ड की बात है। बाप कहते हैं-मीठे-मीठे बच्चों, तुमने अपने बाप को भूलने से कितना श्रृंगार बिगाड़ दिया है। बाप तो कहते हैं चलते-फिरते श्रृंगार करते रहो। परन्तु माया भी कम नहीं है। कोई-कोई लिखते हैं-बाबा, आपकी माया बहुत तंग करती है। अरे हमारी माया कहाँ है, यह तो खेल है ना! मैं तो तुमको माया से छुड़ाने आया हूँ।

मेरी माया फिर काहे की। इस समय पूरा ही इनका राज्य है। जैसे इस रात और दिन में फर्क नहीं हो सकता। यह फिर है बेहद की रात और दिन।

○ गर्भ जेल में सजायें खाते अपना साक्षात्कार करते रहते हैं। सजा क्यों मिली? साक्षात्कार तो करायेंगे ना-यह-यह बेकायदे काम किया है, इनको दुःख दिया है। वहाँ सब साक्षात्कार होते हैं फिर भी बाहर आकर पाप आत्मा बन जाते हैं। सभी पाप भस्म कैसे होंगे? सो तो बच्चों को समझाया है-इस याद की यात्रा से और स्वदर्शन चक्र फिराने से तुम्हारे पाप कटते हैं। बाप कहते भी हैं-मीठे-मीठे स्वदर्शन चक्रधारी बच्चों, तुम 84 का यह स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। चक्र को भी याद करना है, किसने यह ज्ञान दिया, उनको भी याद करना है। बाबा हमको स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं। बनाते तो हैं परन्तु फिर रोज़-रोज़ नये आते हैं तो उन्हों को रिफ्रेश करना होता है। तुमको सारा ज्ञान मिला है, अभी तुम जानते हो हम यहाँ आये हैं पार्ट बजाने। 84 का चक्र लगाया अब फिर वापिस जाना है।

○ बच्चे जानते हैं बाप का वर्सा हमारा है। उस ख़ुशी में रहते हैं। अपनी कमाई भी करते हैं और बाप का वर्सा भी मिलता है। तुमको तो वर्सा ही मिलता है। वहाँ तुमको पता नहीं पड़ेगा स्वर्ग का वर्सा हमको कैसे मिला। वहाँ तो तुम्हारी लाइफ बहुत सुखी रहती है क्योंकि तुम बाप को याद कर माइट लेते हो। पाप काटने वाला पतित-पावन एक ही बाप ह। बाप को याद करने और स्वदर्शन चक्र को फिराने से ही तुम्हारे पाप कटते हैं। यह अच्छी रीति नोट करो। यही समझाना बस है। आगे चल तुमको तीक-तीक नहीं करनी पड़ेगी। एक इशारा ही बस है। बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। तुम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने आते हो। यह तो याद है ना। और कोई की भी बुद्धि में यह बात नहीं आती। यहाँ तुम आते हो, बुद्धि में है हम जाते हैं बापदादा के पास। उनसे नई दुनिया स्वर्ग का वर्सा लेने।

○ यह 15 मिनट वा आधा घण्टा बच्चे बैठे हैं, बाबा भी 15 मिनट बिठाते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह शिक्षा एक ही बार मिलती है फिर कभी नहीं मिलेगी। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्म- अभिमानी हो बैठो। यह एक ही सतगुरू कहते हैं, उनके लिए कहा जाता है एक सतगुरू तारे, बाकी सब बोरे (डुबोये)। यहाँ बाप तुमको देही- अभिमानी बनाते हैं। खुद भी देही हैं ना। समझाने के लिए कहते हैं मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूँ? उनको तो देही बन बाप को याद नहीं करना है। याद भी वही करेंगे जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के भाती होंगे। भाती तो बहुत होते हैं ना, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। यह बात बड़ी समझने और समझाने की है।

○ स्कूल में भी नम्बरवार ट्रान्सफर होते हैं। टीचर समझ जाते हैं फलाने ने अच्छी मेहनत की है। इनको पढ़ाने का शौक है। फीलिंग आती है। उसमें तो एक क्लास से ट्रान्सफर हो दूसरे में फिर तीसरे में आ जाते हैं। यहाँ तो एक ही बार पढ़ना हैं। आगे चल जितना तुम नज़दीक आते जायेंगे उतना सब मालूम पड़ता जायेगा। यह बहुत मेहनत करनी है। जरूर ऊंच पद पायेंगे। यह तो जानते हैं, कोई राजा-रानी बनते हैं, कोई क्या बनते हैं, कोई क्या बनते हैं। प्रजा भी तो बहुत बनती है। सारा एक्टिविटी से मालूम पड़ता है। यह देह- अभिमान में कितना रहते हैं, इनका कितना लव है बाप से। बाप के साथ ही लव चाहिए ना, भाई-भाई का नहीं। भाइयों के लव से कुछ मिलता नहीं है। वर्सा सबको एक बाप से मिलना है। बाप कहते हैं-बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाएं। मूल बात ही यह है। याद से ताकत आयेगी। दिन-प्रतिदिन बैटरी भरती जायेगी क्योंकि ज्ञान की धारणा होती जाती है ना। तीर लगता जाता है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारी उन्नति नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार होती रहती है। यह एक ही बाप-टीचर-सतगुरू है जो देही-अभिमानी बनने की शिक्षा देते हैं, और कोई दे न सके

और तो सब हैं देह- अभिमानी, आत्म- अभिमानी की नॉलेज कोई को मिलती ही नहीं। कोई मनुष्य बाप, टीचर, गुरू हो न सके। हर एक अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं। तुम साक्षी हो देखते हो। सारा नाटक तुमको साक्षी हो देखना है। एक्ट भी करना है। बाप क्रियेटर, डायरेक्टर, एक्टर है। शिवबाबा आकर एक्ट करते हैं। सबका बाप है ना। बच्चे अथवा बच्चियाँ सबको आकर वर्सा देते हैं। एक बाप है, बाकी सब हैं आत्मायें भाई-भाई। वर्सा एक बाप से ही मिलता है। इस दुनिया की तो कोई चीज़ बुद्धि में याद नहीं आती है। बाप कहते हैं जो कुछ देखते हो यह सब विनाशी है। अभी तो तुमको घर जाना हैं। तुमको तो एक बाप की ही याद में रहना है, यह बड़ी मीठी फांसी है। आत्मा की बुद्धि का योग है बाप की तरफ। आत्मा को कहा जाता है बाप को याद करो। यह याद की फाँसी है। फादर तो ऊपर रहते हैं ना। तुम जानते हो हम आत्मा हैं, हमको बाप को ही याद करना है। यह शरीर तो यहाँ ही छोड़ देना है। तुमको यह सारा ज्ञान है। तुम यहाँ बैठ क्या करते हो? वाणी से परे जाने के लिए पुरूषार्थ करते हो। बाप कहते हैं सबको मेरे पास आना है। तो कालों का काल हो गया ना। वह काल तो एक को ले जाते हैं, वह भी काल कोई है नहीं जो ले जाता। यह तो ड्रामा में सब नूंध है। आत्मा आपेही समय पर चली जाती है। यह बाप तो सब आत्माओं को ले जाते हैं। तो अब तुम सबका बुद्धियोग है अपने घर जाने के लिए। शरीर छोड़ने को मरना कहा जाता है। शरीर खत्म हो गया, आत्मा चली गई। बाप को बुलाते भी इसलिए हैं कि बाबा आकर हमको इस सृष्टि से ले जाओ। यहाँ हमको रहना नहीं है। ड्रामा के प्लैन अनुसार अब वापिस जाना है। कहते हैं बाबा यहाँ अपार दुख हैं। अब यहाँ रहना नहीं है। यह बहुत छी-छी दुनिया है। मरना भी जरूर है। सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। अभी वाणी से परे जाना है। तुमको कोई काल नहीं खायेगा। तुम खुशी से जाते हो। शास्त्र आदि जो भी हैं वह सब भक्ति मार्ग के हैं, यह फिर भी होंगे। ड्रामा की यह बड़ी वन्हरफुल बात है। यह टेप, यह घड़ी जो कुछ इस समय देखते हो वह सब फिर होगा। इसमें मूंझने की कोई बात ही नहीं हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाँग्राफी रिपीट का अर्थ ही है हूबहू

रिपीट। अभी तुम जानते हो हम फिर से सो देवी-देवता बन रहे हैं, वही फिर बनेंगे। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता है। यह सब समझने की बातें हैं।

○ कोई लोभ में, कोई मोह में जल मरते हैं, इस अवस्था में ही जल-जलकर मर जाना है। अभी तुम बच्चों को तो शिवबाबा की याद में ही शरीर छोड़ना है जो शिवबाबा ऐसा बनाते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण को ऐसा बाप ने बनाया ना। तो अपने को कितनी खबरदारी रखनी चाहिए। तूफान तो बहुत आयेंगे। तूफान माया के ही आते हैं, और कोई तूफान नहीं है। जैसे शास्त्रों में कहानी लिख दी है हनुमान आदि की। कहते हैं भगवान ने शास्त्र बनाये हैं।

○ तुम बच्चों को ज्ञान तो मिला है कि अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। भल आत्मा शुद्ध बनती है, शरीर तो फिर भी यह पतित है ना। जिनकी आत्मा शुद्ध होती जाती है उनकी एक्टिविटी में रात-दिन का फर्क रहता है। चलन से भी मालूम पड़ता है। नाम कोई का नहीं लिया जाता है, अगर नाम लें तो कहीं और ही बदतर न हो जाएं।

○ अक भी तो बहुत हैं ना। यह बिचारे क्या पद पायेंगे। बाप को तो रहम पड़ता है। परन्तु दास-दासियां बनने की भी नूंध हैं, इसमें खुश नहीं होना चाहिए। विचार भी नहीं करते हैं - हमको ऐसा बनना है। दास-दासियां बनने से फिर साहूकार बनें तो अच्छा है, दास-दासियां रख सकेंगे। बाप तो कहते हैं निरन्तर मुझ एक को याद करो, सिमर-सिमर सुख पाओ। भक्तों ने फिर सिमरणी माला बैठ बनाई है। वह भक्तों का काम है। बाप तो सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझो, बाप को याद करो। बस। बाकी कोई जाप न करो। न माला फेरो। बाप को जानना है, उनको याद करना है। मुख से बाबा-बाबा भी कहना थोड़े ही है। तुम जानते हो वह हम

आत्माओं का बेहद का बाप है, उनको याद करने से हम सतोप्रधान बन जायेंगे अर्थात् आत्मा कंचन बन जायेगी। कितना सहज है। परन्तु युद्ध का मैदान है ना। तुम्हारी है ही माया से लड़ाई। वह घड़ी-घड़ी तुम्हारा बुद्धि का योग तोड़ती है। जितने-जितने विनाश काले प्रीत बुद्धि हैं उतना पद होता ह। सिवाए एक के और कोई भी याद न पड़े। कल्प पहले भी ऐसे निकले हैं जो विजय माला के दाने बने हैं। तुम जो ब्राह्मण कुल के हो, ब्राह्मणों की रुण्ड माला बनती है, जिन्होंने बहुत गुप्त मेहनत की है। ज्ञान भी गुप्त है ना। बाप तो हर एक को अच्छी रीति जानते हैं। अच्छे- अच्छे नम्बरवन जिनको महारथी समझते थे, वह आज हैं नहीं। देह- अभिमान बहुत है। बाप की याद रह नहीं सकती। माया बड़ा जोर से थप्पड़ मारती है। बहुत थोड़े हैं जिनकी माला बन सकेगी। तो बाप फिर भी बच्चों को समझाते हैं - अपने को देखते रहो हम कितने पवित्र देवता थे फिर हम क्या से क्या, किचड़ा बन गये हैं। अब शिवबाबा मिला है तो उनकी मत पर चलना चाहिए ना। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। कोई की भी याद न आये। चित्र भी कोई का नहीं रखना है। एक शिवबाबा की ही याद रहे। शिवबाबा को शरीर तो है नहीं। यह भी टेम्पररी लोन लेता हूँ। तुमको ऐसा देवी-देवता लक्ष्मी- नारायण बनाने के लिए कितनी मेहनत करते हैं। बाप कहते हैं तुम हमको पतित दुनिया में बुलाते हो। तुमको पावन बनाता हूँ फिर तुम पावन दुनिया में मुझे बुलाते ही नहीं हो। वहाँ आकर क्या करेंगे! उनकी सर्विस ही पावन बनाने की है। बाप जानते हैं कि एकदम जलकर काले कोयले बन गये हैं। बाप आये हैं तुम्हें गोरा बनाने।

○ योग अक्षर नहीं कहो, याद की यात्रा कहो। आत्मा को यह यात्रा करनी है। वह होती है जिस्मानी यात्रा, शरीर के साथ जाते हैं। इसमें तो शरीर का काम ही नहीं। आत्मा जानती है, हम आत्माओं का वह स्वीट घर है। बाप हमको शिक्षा दे रहे हैं जिससे हम पावन बनेंगे। याद करते-करते तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है यात्रा। हम बाप की याद में बैठते हैं क्योंकि बाबा के पास ही घर जाना है। बाप आते ही हैं पावन बनाने। सो तो पावन दुनिया में

जाना ही है। बाप पावन बनाते हैं फिर नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तुम पावन दुनिया में जायेंगे। यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। हम याद की यात्रा पर हैं। हम को इस मृत्युलोक में लौट कर नहीं आना है। बाबा का काम है हमको घर तक पहुँचाना। बाबा रास्ता बता देते हैं अभी तुम तो मृत्युलोक में हो फिर अमरलोक नई दुनिया में होंगे। बाप लायक बनाकर ही छोड़ते हैं। सुखधाम में बाप नहीं ले जायेंगे। इनकी लिमिट हो जाती है घर तक पहुँचाना। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। सिर्फ बाप को याद नहीं करना चाहिए, साथ में ज्ञान भी चाहिए। ज्ञान से तुम धन कमाते हो ना। इस सृष्टि चक्र की नॉलेज से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है, इसमें चक्र लगाया है। फिर हम घर जायेंगे फिर नये सिर चक्र शुरू होगा। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहे तब खुशी का पारा चढ़े। बाप को भी याद करना है, शान्तिधाम, सुखधाम को भी याद करना है। 84 का चक्र अगर याद नहीं करेंगे तो चक्रवर्ती राजा कैसे बनेंगे। सिर्फ एक को याद करना तो सन्यासियों का काम है क्योंकि वह इनको जानते नहीं है। ब्रह्म को ही याद करते हैं। बाप तो अच्छी रीति बच्चों को समझाते हैं। याद करते-करते ही तुम्हारे पाप कट जाने हैं।

- तुम अभी बाप को भी जान गये हो और सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, ड्यूरेशन आदि सबको जान गये हो। नई दुनिया से पुरानी, पुरानी से नई कैसे बनती हैं, यह कोई नहीं जानते। अभी तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठते हो। यह यात्रा तो तुम्हारी नित्य चलनी है। घूमो फिरो परन्तु इस याद की यात्रा में रहो। यह ह रूहानी यात्रा। तुम जानते हो भक्ति मार्ग में हम भी उन यात्राओं पर जाते थे। बहुत बार यात्रा की होगी जो पक्के भक्त होंगे। बाबा ने समझाया है एक शिव की भक्ति करना, यह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर देवताओं की होती है, फिर 5 तत्वों की भक्ति करते हैं।

○ अभी तो यह है बेहद का वैराग्य । कुछ भी याद न रहे । बाबा तो नाम सब भूल जाते हैं । बच्चे कहते हैं बाबा आप हमको याद करते हैं? बाबा कहते हमको तो सबको भूलना है । न विसरो, न याद रहो । बेहद का वैराग्य है ना । सबको भूलना है । हम यहाँ के रहने वाले थोड़ेही हैं । बाप आया हुआ है - अपना स्वर्ग का वर्सा देने । बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे । यह बैज बहुत अच्छा है समझाने के लिए । कोई मांगे तो बोलो समझकर लो । इस बैज को समझने से तुमको विश्व की बादशाही मिल सकती है । शिवबाबा इस ब्रह्मा द्वारा डायरेक्यान देते हैं मुझे याद करो तो तुम यह बनेंगे ।

○ रूहानी बच्चों अर्थात् आत्माओं प्रति बाप बैठ समझाते हैं । अपने को आत्मा तो समझना है ना । बाप ने बच्चों को समझाया है पहले-पहले यह प्रैक्टिस करो कि हम आत्मा है, न कि शरीर । जब अपने को आत्मा समझेंगे तब ही परमपिता को याद करेंगे | अपने को आत्मा नहीं समझेंगे तो फिर जरूर लौकिक सम्बन्धी, धन्धा आदि ही याद आता रहेगा इसलिए पहले-पहले तो यह प्रैक्टिस होनी चाहिए कि मैं आत्मा हूँ तो फिर रूहानी बाप की याद ठहरेगी । बाप यह शिक्षा देते हैं कि अपने को देह नहीं समझो । यह ज्ञान बाप एक ही बार सारे कल्प में देते हैं । फिर 5 हजार वर्ष बाद यह समझानी मिलेगी । अपने को आत्मा समझेंगे तो बाप भी याद आयेगा । आधाकल्प तुमने अपने को देह समझा है । अब अपने को आत्मा समझना है । जैसे तुम आत्मा हो, मैं भी आत्मा ही हूँ । परन्तु सुप्रीम हूँ । मैं हूँ ही आत्मा तो मेरे को कोई देह याद पड़ती ही नहीं । यह दादा तो शरीरधारी है ना । वह बाप है निराकार । यह प्रजापिता ब्रह्मा तो साकारी हो गया । शिवबाबा का असली नाम है ही शिव । वह है ही आत्मा सिर्फ वह ऊंच ते ऊंच अर्थात् सुप्रीम आत्मा है सिर्फ इस समय ही आकर इस शरीर में प्रवेश करता हूँ । वह कभी देह- अभिमानी हो न सके । देह- अभिमानी साकारी मनुष्य होते हैं, वह तो है ही निराकार । उनको आकर यह प्रैक्टिस करानी है । कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझो । मैं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ-यह पाठ बैठकर पढ़ो । मैं आत्मा शिवबाबा का बच्चा हूँ । हर बात की प्रैक्टिस चाहिए

ना। बाप कोई नई बात नहीं समझाते हैं। तुम जब अपने को आत्मा पक्का-पक्का समझेंगे तब बाप भी पक्का याद रहेगा। देह- अभिमान होगा तो बाप को याद कर नहीं सकेंगे | आधाकल्प तुमको देह का अहंकार रहता है। अभी तुमको सिखाता हूँ कि अपने को आत्मा समझो। सतयुग में ऐसे कोई सिखाता नहीं है कि अपने को आत्मा समझो। शरीर पर नाम तो पड़ता ही है। नहीं तो एक-दो को बुलावे कैसे। यहाँ तुमने बाप से जो वर्सा पाया है वही प्रालब्ध वहाँ पाते हो। बाकी बुलायेंगे तो नाम से ना। कृष्ण भी शरीर का नाम है ना। नाम बिगर तो कारोबार आदि चल न सके। ऐसे नहीं कि वहां यह कहेंगे कि अपने को आत्मा समझो। वहाँ तो आत्म-अभिमानी रहते ही हैं। यह प्रैक्टिस तुमको अभी कराई जाती है क्योंकि पाप बहुत चढ़े हुए हैं। आहिस्ते- आहिस्ते थोड़ा- थोड़ा पाप चढ़ते-चढ़ते अभी कुल पाप आत्मा बन पड़े हो। आधाकल्प के लिए जो कुछ किया वह खलास भी तो होगा ना। आहिस्ते- आहिस्ते कम हाता जाता है। सतयुग में तुम सतोप्रधान हो, त्रेता में सता बन जाते हो। वर्सा अभी मिलता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से ही वर्सा मिलता है। यह देही- अभिमानी बनने की शिक्षा बाप अभी देते हैं। सतयुग में यह शिक्षा नहीं मिलती। अपने- अपने नाम पर ही चलते हैं। यहाँ तुम हर एक को याद के बल से पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनना है। सतयुग में इस शिक्षा की दरकार ही नहीं। न तुम यह शिक्षा वहाँ ले जाते हो। वहाँ न यह ज्ञान, न योग ले जाते हो। तुमको पतित से पावन अभी ही बनना है। फिर आहिस्ते- आहिस्ते कला कम होती है। जैसे चन्द्रमा की कला कम होते-होते लीक जाकर रहती है। तो इसमें मूँझो नहीं। कुछ भी न समझो तो पूछो।

○ पहले तो यह पक्का निश्चय करो कि हम आत्मा हैं। तुम्हारी आत्मा ही अभी तमोप्रधान बनी है। पहले सतोप्रधान थी फिर दिन-प्रतिदिन कला कम होती जाती है। मैं आत्मा हूँ-यह पक्का न होने से ही तुम बाप को भूलते हो। पहले-पहले मूल बात ही यह है। आत्म- अभिमानी बनने से बाप याद आयेगा तो वर्सा भी याद आयेगा। वर्सा याद आयेगा तो पवित्र भी रहेंगे। दैवीगुण भी रहेंगे। एम ऑबजेक्ट तो सामने है ना। यह है गॉडली युनिवर्सिटी। भगवान् पढाते हैं। देही-

अभिमानी भी वही बना सकते हैं और कोई भी यह हुनर जानता ही नहीं है। एक बाप ही सिखाते हैं।

- बाप समझाते हैं तो यह भी समझाते होंगे ना इसलिए गुरू ब्रह्मा नम्बरवन में जाता है। शंकर के लिए तो कहते हैं आंख खोलने से भस्म कर देते हैं फिर उनका तो गुरू नहीं कहा जाए। फिर भी बाप कहते हैं बच्चों मामेकम याद करो। कई बच्चे कहते हैं-इतने धन्धेधोरी की फिकरात में रहते, हम अपने को आत्मा समझ बाप को कैसे याद करें? बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में भी तुम-हे ईश्वर, हे भगवान कह याद करते हो ना। याद तब करते हो जब कोई दुःख होता है। मरने समय भी कहते हैं राम-राम बोलो। बहुत संस्थाये हैं जो राम नाम का दान देती है। जैसे तुम ज्ञान का दान देते हो वह फिर कहते राम बोलो, राम बोलो। तुम भी कहते हो शिवबाबा को याद करो। वह तो शिव को जानते ही नहीं। ऐसे राम-राम कह देते हैं। अब यह भी क्यों कहते हैं कि राम कहो, जबकि परमात्मा सबमें है? बाप बैठ समझाते हैं राम वा कृष्ण को परमात्मा नहीं कहा जाता। कृष्ण को भी देवता कहते। राम के लिए भी समझाया है-वह है सेमी देवता। दो कला कम हो जाती है। हर एक चीज की कला कम तो होती ही है। कपड़ा भी पहले नया, फिर पुराना होता है।

- लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं हो सकती। यह तो बिल्कुल रांग है परन्तु मनुष्यों की बुद्धि कुछ काम नहीं करती। हर बात बाप समझाते हैं- मीठे-मीठे बच्चों, अच्छी रीति धारण करो। मुख्य बात है बाप की याद। यह याद की ही दौड़ी है। रेस होती है ना। कोई अकेले- अकेले दौड़ते हैं। कोई जोड़ी को इकट्ठा बांध फिर दौड़ते हैं। यहाँ जो जोड़ी है वह इकट्ठे दौड़ी लगाने की प्रैक्टिस करते हैं। सोचते हैं सतयुग में भी ऐसे इकट्ठे जोड़ी बन जाये।

○ हम आत्मा विचित्र हैं फिर यहाँ चित्र (शरीर) में आते हैं ।अभी बाप फिर कहते हैं विचित्र बनो । अपने स्वधर्म में टिको । चित्र के धर्म में नहीं टिको । विचित्रता के धर्म में टिको । देह-अभिमान में न आओ । बाप कितना समझाते हैं - इसमें याद की बहुत जरूरत है । बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान, प्योर बनेंगे । इमप्योरिटी में जाने से बहुत दण्ड मिल जाता है । बाप का बनने के बाद अगर कोई भूल होती है तो फिर गायन है सतगुरू के निदक ठौर न पाये । अगर तुम मेरी मत पर चल पवित्र नहीं बनेंगे तो सौ गुणा दण्ड भोगना पड़ेगा । विवेक चलाना है । अगर हम याद नहीं कर सकते तो इतना ऊंच पद भी नहीं पा सकेंगे । पुरूषार्थ के लिए टाइम भी देते हैं । तुमको कहते हैं क्या सबूत है? बोलो, जिस तन में आते हैं वह प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य है ना । मनुष्य का नाम शरीर पर पड़ता है । शिवबाबा तो न मनुष्य है, न देवता है । उनको सुप्रीम आत्मा कहा जाता है । वह तो पतित वा पावन नहीं होता, वह समझाते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे पाप कट जायेंगे । बाप ही बैठ समझाते हैं तुम सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान बने हो । फिर सतोप्रधान बनने के लिए मुझे याद करो । इन देवताओं की क्वालिफिकेशन देखो कैसी है और उन्हों से रहम मांगने वालों को भी देखो वन्डर लगता है - हम क्या थे! फिर 84 जन्मो में कितना गिरकर एकदम चट हो पड़े हैं ।

○ देवताओं के आगे अथवा शिवबाबा के आगे यह जाकर कहते हैं कि शान्ति दो क्योंकि शिवबाबा है शान्ति का सागर । अभी तुम शिवबाबा से शान्ति का वर्सा ले रहे हो । बाप को याद करते-करते तुमको शान्तिधाम में जाना है जरूर । नहीं याद करेंगे तो भी जायेंगे जरूर । याद इसलिए करते हो कि पापों का बोझा जो सिर पर है वह खत्म हो जाए । शान्ति और सुख मिलता है एक बाप से, क्योंकि वह सुख और शान्ति का सागर है । वह चीज ही मुख्य है । शान्ति को मुक्ति भी कहा जाता है और फिर जीवनमुक्ति और जीवन बन्ध भी है । सुखधाम, शान्तिधाम फिर यह है दु:खधाम । तुम यहाँ बैठे हो, बाप कहते हैं-बच्चे, शान्तिधाम घर को याद करो । आत्माओं को अपना घर भूला हुआ है । बाप आकर याद दिलाते हैं । समझाते हैं हे

रूहानी बच्चों तुम घर जा नहीं सकते हो जब तक मुझे याद नहीं करेंगे । याद से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे । आत्मा पवित्र बन फिर अपने घर जायेगी ।

- मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं तुम बच्चे सब क्या कर रहे हो? तुम्हारी है अव्यभिचारी याद । एक होती है व्यभिचारी याद , दूसरी होती है अव्यभिचारी याद । तुम सबकी है अव्यभिचारी याद । किसकी याद है? एक बाप की । बाप को याद करते-करते पाप कट जायेंगे और तुम वहां पहुँच जायेंगे । पावन बनकर फिर नई दुनिया में जाना है । आत्माओं को जाना है । आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा सब कर्म करती है ना । तो बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो । मनुष्य तो अनेकानेक को याद करते हैं । भक्ति मार्ग में तुमको याद करना है एक को । भक्ति भी पहले-पहले तुमने ऊंच ते ऊंच शिवबाबा की ही की थी । उनको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति । वही सर्व को सद्गति देने वाला रचता बाप है । उनसे बच्चों को बेहद का वर्सा मिलता है । भाई- भाई से वर्सा नहीं मिलता । वर्सा हमेशा बाप से बच्चों को मिलता है । थोड़ा बहुत कन्याओं को मिलता है ।

- बाप सिर्फ कहते हैं-मीठे-मीठे लाडले बच्चों, मुझे याद करो । तुम्हारी आत्मा जो सतोप्रधान से तमोप्रधान बनी है, खाद पड़ी है ना, वह योग अग्नि से ही निकलेगी । सोनार लोग जानते हैं, बाप को ही पतित-पावन कहते हैं । बाप सुप्रीम सोनार ठहरा । सबकी खाद निकाल सच्चा सोना बना देते हैं । सोना अग्नि में डाला जाता है । यह है योग अर्थात् याद की अग्नि क्योंकि याद से ही पाप भस्म होते हैं । तमोप्रधान से सतोप्रधान याद की यात्रा से ही बनना है । सब तो सतोप्रधान नहीं बनेंगे । कल्प पहले मिसल ही पुरूषार्थ करेंगे । परम आत्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है, जो नूंध है वह होता रहता है । बदल नहीं सकता । रील फिरता ही रहता है । बाप कहते हैं आगे चल तुमको गुह्य-गुह्य बातें सुनाएंगे । पहले-पहले तो यह निश्चय करना है वह है सब आत्माओं का बाप । उनको याद करना है । मनमनाभव का भी अर्थ यह है । बाकी कृष्ण

भगवानुवाच तो है ही नहीं। अगर कृष्ण हो फिर तो सब उनके पास चले आयें। सब पहचान लें। फिर ऐसे क्यों कहते कि मुझे कोटों में कोई जानते हैं। यह तो बाप समझाते हैं इसलिए मनुष्यों को समझने में तकलीफ होती है। आगे भी ऐसा हुआ था। प्रवृत्ति मार्ग वाले निवृत्ति मार्ग वालों को गुरू करेंगे तो क्या देंगे? हठयोग सीखना पड़े। वह तो अनेक प्रकार के हठयोग हैं, राजयोग है ही एक प्रकार का। याद की यात्रा है ही एक, जिसको राजयोग कहा जाता है। बाकी और सब हैं हठयोग, शरीर की तंदुरुस्ती के लिए। यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। आत्मा है फर्स्ट फिर पीछे है शरीर। तुम फिर अपने को आत्मा के बदले शरीर समझ उल्टे हो पड़े हो। अब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी।

○ तुमने ही भक्ति मार्ग का पार्ट बजाया। ऐसे-ऐसे दुःख भोगते- भोगते अब अन्त में आ गये हो। सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। अब वहाँ जाना है। अपने को हल्का कर दो। इसने भी हल्का कर दिया ना। तो सब बन्धन टूट जायें। नहीं तो बच्चे, धन, कारखाने, ग्राहक, राजे, रजवाड़े आदि याद आते रहेंगे। धन्धा ही छोड़ दिया तो फिर याद क्यों आयेंगे। यहाँ तो सब कुछ भूलना है। इनको भूल अपने घर और राजधानी को याद करना है। शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना है। शान्तिधाम से फिर हमको यहाँ आना पड़े। बाप कहते हैं मुझे याद करो, इनको ही योग अग्नि कहा जाता हैं।

○ अपने को आत्मा समझना है और एक बाप को याद करना है ताकि भूत सब भाग जाएं। बाप है पतित-पावन। 5 भूतों की तो सबमें प्रवेशता है। आत्मा में ही भूतों की प्रवेशता होती है फिर इन भूतों अथवा विकारों का नाम भी लगाया जाता है देह- अभिमान, काम, क्रोध आदि। ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी कोई ईश्वर है। कभी भी कोई कहे कि ईश्वर सर्वव्यापी है तो कहो सर्वव्यापी आत्मायें हैं और इन आत्माओं में 5 विकार सर्वव्यापी हैं।

○ आधाकल्प है सोझरा, आधाकल्प है अन्धियारा। भक्ति में तो बहुत तीक-तीक चलती है। यहाँ है सेकण्ड की बात। बिल्कुल इजी है, सहज योग। तुमको पहले जाना है मुक्तिधाम। फिर तुम जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध में कितना समय रहे हो, यह तो तुम बच्चों को याद है फिर भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। बाप समझाते हैं योग अक्षर है ठीक परन्तु उन्हों का है जिस्मानी योग। यह है आत्माओं का परमात्मा के साथ योग। सन्यासी लोग अनेक प्रकार के हठयोग आदि सिखाते हैं तो मनुष्य मूँझते हैं। तुम बच्चों का बाप भी है तो टीचर भी है, तो उनसे योग लगाना पड़े ना। टीचर से पढ़ना होता है। बच्चा जन्म लेता है तो पहले बाप से योग होता है फिर 5 वर्ष के बाद टीचर से योग लगाना पड़ता है फिर वानप्रस्थ अवस्था में गुरू से योग लगाना पड़ता है। तीन मुख्य याद रहते हैं। वह तो अलग- अलग होते हैं। यहाँ यह एक ही बार बाप आकर बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं। वन्डरफुल है ना। ऐसे बाप को तो जरूर याद करना चाहिए। जन्म-जन्मान्तर तीन को अलग- अलग याद करते आये हो। सतयुग में भी बाप से योग होता है फिर टीचर से होता है। पढ़ने तो जाते हैं ना। बाकी गुरू की वहाँ दरकार नहीं रहती क्योंकि सब सद्गति में हैं। यह सब बातें याद करने में क्या तकलीफ है! बिल्कुल सहज है। इनको कहा जाता है सहज योग। परन्तु यह है अनकॉमन। बाप कहते हैं मैं यह टैम्पेरी लोन लेता हूँ, सो भी कितना थोड़ा समय लेता हूँ। 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। कहते हैं साठ लगी लाठ। इस समय सबको लाठी लगी हुई है। सब वानप्रस्थ, निर्वाणधाम में जायेंगे। वह है स्वीट होम, स्वीटेस्ट होम।

○ जानते हो हम 21 जन्मों के लिए स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करने के लिए ही यहाँ आते हैं। बाप को भी जान लिया और बाप द्वारा सारे सृष्टि चक्र को भी समझ लिया है। हम पहले घनेरे सुख में थे फिर दु :ख में आये, यह भी नम्बरवार हर एक की बुद्धि में रहता है। स्टूडेंट को तो सदैव

याद रहना चाहिए परन्तु बाबा देखते हैं घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं इसलिए फिर मुरझा जाते हैं। छुई मुई अवस्था हो जाती है। माया वार कर लेती है। वह जो ख़ुशी होनी चाहिए, वह नहीं रहती। नम्बरवार पद तो है ना। स्वर्ग में तो जाते हैं परन्तु वहाँ भी राजा से लेकर रंक तक रहते हैं ना। वह गरीब प्रजा, वह साहूकार। स्वर्ग में भी ऐसे हैं तो नर्क में भी ऐसे हैं। ऊंच और नींच।

○ अब बाप कहते हैं पवित्र बनना है। मरना भी है सबको। इतने ढेर मनुष्य सतयुग में नहीं होते। अभी तो कितने ढेर हैं। वहाँ बच्चा भी योगबल से होता है। यहाँ तो देखो कितने बच्चे पैदा करते रहते हैं। बाप फिर भी कहते हैं बाप को याद करो। वह बाप ही पढ़ाते हैं, टीचर पढ़ाने वाला याद पड़ता है। तुम जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। क्या पढ़ाते हैं, वह भी तुमको मालूम है। तो बाप अथवा टीचर से योग लगाना है। नॉलेज बहुत ऊंची है। अभी तुम सबकी स्टूडेंट लाइफ है। ऐसी युनिवर्सिटी कभी देखी, जहाँ बच्चे बूढ़े, जवान सब इकट्ठे पढ़ते हो। एक ही स्कूल, एक ही पढ़ाने वाला टीचर हो और जिसमें ब्रह्मा स्वयं भी पढ़ता हो। वन्डर है ना। शिवबाबा तुमको पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी सुनते हैं। बच्चा चाहे बुढ़ा, कोई भी पढ़ सकते हैं।

○ बाप ने कहा है यहाँ स्वदर्शन चक्रधारी होकर बैठो। इसी याद में रहो कि हमने कितने बार चक्र लगाया है। अभी फिर से हम देवता बन रहे हैं। दुनिया में कोई भी इस राज़ को नहीं समझते हैं। यह ज्ञान देवताओं को है नहीं। वह तो हैं ही पवित्र। उनमें ज्ञान ही नहीं जो शंख बजावें। वह पवित्र हैं, उनको यह निशानी देने की दरकार नहीं। निशानी तब होती है जब दोनों इकट्ठे होते हैं। तुमको भी निशानी नहीं क्योंकि तुम आज देवता बनते-बनते कल असुर बन जाते हो। बाप देवता बनाते, माया असुर बना देती है। बाप जब समझाते हैं तब पता पड़ता है कि सचमुच हमारी अवस्था गिरी हुई है। कितने बिचारे शिवबाबा के खजाने में जमा कराते फिर मांगकर असुर बन जाते। इसमें योग की ही सारी कमी है। योग से ही पवित्र बनना है। बुलाते भी हो

बाबा आओ, हमें पतित से पावन बनाओ, जो हम स्वर्ग में जा सके। याद की यात्रा है ही पावन बन ऊँच पद पाने के लिए, परन्तु कई चलते-चलते मर जाते हैं, फिर भी जो कुछ सुना है तो शिवालय में आयेंगे जरूर। पद भल कैसा भी पायें। एक बार याद किया तो स्वर्ग में आयेंगे जरूर। बाकी ऊंच पद पा न सकें। स्वर्ग का नाम सुनकर खुश होना चाहिए। फेल हो पाई-पैसे का पद पा लिया, इसमें खुश नहीं हो जाना है। फीलिंग तो आती है ना-मैं नौकर हूँ। पिछाड़ी में तुम्हें सब साक्षात्कार होंगे कि हम क्या बनेंगे, हमसे क्या विकर्म हुआ है, जो ऐसी हालत हुई है। मैं महारानी क्यों नहीं बनूँ। कदम-कदम पर खबरदारी से चलने से तुम पद्मापद्मपति बन सकते हो। मन्दिरों में देवताओं को पद्म की निशानी दिखाते है। दर्जे में फर्क हो जाता है। आज की राजाई का कितना दबदबा रहता है! है तो अल्पकाल का। सदाकाल के राजा तो बन न सके। तो अभी बाप कहते हैं-तुम्हें लक्ष्मी-नारायण बनना है तो पुरुषार्थ भी ऐसा चाहिए। कितना हम औरों का कल्याण करते हैं? अन्तर्मुख हो कितना समय बाबा की याद में रहते हैं? अभी हम जा रहे हैं अपने स्वीट होम में। फिर आयेंगे सुखधाम में। यह सब ज्ञान का मन्थन अन्दर में चलता रहे। बाप में ज्ञान और योग दोनों हैं। तुम्हारे में भी होना चाहिए। जानते हो हमें शिवबाबा पढ़ाते हैं तो ज्ञान भी हुआ और याद भी हुई। ज्ञान और योग दोनों साथ-साथ चलता है। ऐसे नही, योग में बैठो, बाबा को याद करते रहो और नॉलेज भूल जाए। बाप योग सिखलाते हैं तो नॉलेज भूल जाते हैं क्या? सारी नॉलेज उनमें रहती है। तुम बच्चों में भी नॉलेज होनी चाहिए। पढ़ना चाहिए। जैसे कर्म मैं करुँगा मुझे देख और भी करेंगे। मैं मुरली नहीं पढूँगा तो और भी नहीं पढ़ेंगे। मिथ्या अहंकार आ जाता है तो माया झट वार कर देती है। कदम- कदम बाप से श्रीमत लेते रहना है। नहीं तो कुछ न कुछ विकर्म बन जाते है। बहुत बच्चे भूलें करते बाप को नहीं बताते तो अपनी सत्यानाश कर लेते हैं। गफलत होने से माया थप्पड़ लगा देती है। वर्थ नाट ए पेनी बना देती है। अहंकार में आने से माया बहुत विकर्म कराती है। बाबा ने ऐसे थोड़ेही कहा है, ऐसी-ऐसी पुरुषों की कमेटियाँ बनाओ। कमेटी में एक-दो समझू सयानी बच्चियाँ जरूर होनी चाहिए। जिनकी ही राय पर काम हो। कलष तो लक्ष्मी पर रखा जाता है

ना। गायन भी है, अमृत पिलाते थे फिर कहाँ यज्ञ में विघ्न डालते थे। अनेक प्रकार के विघ्न डालने वाले है। सारा दिन यही झरमुई-झगमुई की बातें करते रहते हैं। यह बहुत खराब है। कोई भी बात हो तो बाप को रिपोर्ट करनी चाहिए। सुधारने वाला तो एक ही बाप है। तुम अपने हाथ में लॉ नहीं उठाओ। तुम बाप की याद में रहो। सभी को बाप का परिचय देते रहो तब ऐसा बन सकेंगे। माया बहुत कड़ी है। किसको नहीं छोड़ती। सदैव बाप को समाचार लिखना चाहिए। डायरेक्शन लेते रहना चाहिए। यूँ तो डायरेक्शन सदैव मिलते रहते हैं। ऐसे तो बच्चे समझते हैं बाबा ने तो आपेही इस बात पर समझा दिया, बाबा तो अन्तर्यामी है। बाबा कहते नही, मैं तो नॉलेज पढ़ाता हूँ। इसमें अन्तर्यामी की बात ही नहीं। हाँ, यह जानता हूँ कि यह सब मेरे बच्चे हैं। हर एक शरीर के अन्दर मेरे बच्चे हैं। बाकी ऐसे नहीं कि बाप सभी के अन्दर विराजमान है। मनुष्य तो उल्टा ही समझ लेते है। बाप कहते हैं मैं जानता हूँ कि सभी तख्त पर आत्मा विराजमान हैं। यह तो कितनी सहज बात है। सभी चैतन्य आत्मायें अपने-अपने तख्त पर बैठी हैं फिर भी परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं, यह है एकज भूल। इस कारण ही भारत इतना गिरा हुआ है। बाप कहते हैं तुमने मेरी बहुत ग्लानि की है। विश्व के मालिक बनाने वाले को तुमने गाली दी है इसलिए बाप कहते हैं यदा यदाहि...। बाहर वाले यह सर्वव्यापी का ज्ञान भारतवासियों से सीखते हैं। जैसे भारतवासी उनसे हुनर सीखते हैं वह फिर उल्टा सीखते हैं। तुम्हें तो एक बाप को याद करना है और बाप का परिचय भी सबको देना है। तुम हो अन्धों की लाठी। लाठी से राह बतलाते है ना।

- यह तो रूहानी बच्चे जानते हैं कि बाप आये हैं हमको नई दुनिया का वर्सा देने। यह तो बच्चों को पक्का है ना कि जितना हम बाप को याद करेंगे उतना पवित्र बनेंगे। जितना हम अच्छा टीचर बनेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। बाप तुम्हें टीचर के रूप में पढ़ाना सिखाते हैं तुमको फिर औरों को सिखाना है। तुम पढ़ाने वाले टीचर जरूर बनते हो बाकी तुम कोई का गुरू नहीं बन सकते हो, सिर्फ टीचर बन सकते हो। गुरू तो एक सतगुरू ही है वह सिखलाते हैं। सर्व का

सतगुरू एक ही है। वह टीचर बनाते हैं। तुम सबको टीच करके रास्ता बताते रहते हो मनमनाभव का। बाप ने तुम्हारे पर यह ड्यूटी रखी है कि मुझे याद करो और फिर टीचर भी बनो। तुम कोई को बाप का परिचय देते हो तो उनका भी फर्ज है बाप को याद करना। टीचर रूप में सृष्टि चक्र की नॉलेज देनी पड़ती है। बाप को जरूर याद करना पड़े। बाप की याद से ही पाप मिट जाने हैं। बच्चे जानते हैं हम पाप आत्मा हैं, इसलिए बाप सबको कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप मिट जायेंगे। बाप ही पतित-पावन है। युक्ति बताते हैं-मीठे बच्चे, तुम्हारी आत्मा पतित बनी हैं, जिस कारण शरीर भी पतित बना है। पहले तुम पवित्र थे, अभी तुम अपवित्र बने हो। अब पतित से पावन होने की युक्ति तो बहुत सहज समझाते हैं। बाप को याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे। उठते, बैठते, चलते बाप को याद करो। वो लोग गंगा स्नान करते हैं तो गंगा को याद करते हैं। समझते हैं वह पतित-पावनी है। गंगा को याद करने से पावन बन जाना है। परन्तु बाप कहते हैं कोई भी पावन बन नहीं सकते हैं। पानी से कैसे पावन बनेंगे। बाप कहते हैं मैं पतित-पावन हूं। हे बच्चों, देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मुझे याद करने से तुम पावन बन फिर से अपने घर मुक्तिधाम पहुँच जायेंगे। सारा कल्प घर को भूले हो। बाप को सारा कल्प कोई जानता ही नहीं है। एक ही बार बाप खुद आकर अपना परिचय देते हैं-इस मुख द्वारा। इस मुख की कितनी महिमा है। गऊमुख कहते हैं ना। वह गऊ तो जानवर है, यह है मनुष्य की बात।

○ अब बाप तुम बच्चों को श्रीमत दे रहे हैं। कोई को दुःख आदि देने की बात ही नहीं। बाप तो हैं ही सुख का रास्ता बताने वाला। ड्रामा प्लैन अनुसार मकान पुराना होता ही जायेगा। बाप भी कहते हैं यह सारी दुनिया पुरानी हो गई है। यह खलास होनी चाहिए। आपस में लड़ते देखो कैसे हैं! आसुरी बुद्धि है ना। जब ईश्वरीय बुद्धि है तो कोई भी मारने आदि की बात नहीं। बाप कहते हैं मैं तो सबका बाप हूँ। हमारा सब पर प्यार है। बाबा देखते यहाँ हैं फिर अनन्य बच्चों तरफ ही नजर जाती है, जो बाप को बहुत प्रेम से याद करते हैं। सर्विस भी करते हैं। यहाँ बैठे

बाप की नजर सर्विसएबुल बच्चों तरफ चली जाती है। कभी देहरादून, कभी मेरठ, कभी देहली जो बच्चे मुझे याद करते हैं मैं भी उन्हों को याद करता हूँ। जो मुझे नहीं भी याद करते हैं तो भी मैं सबको याद करता हूँ क्योंकि मुझे तो सबको ले जाना है ना। हाँ, जो मेरे द्वारा सृष्टि चक्र की नॉलेज को समझते हैं नम्बरवार वह फिर ऊंच पद पायेंगे। यह बेहद की बातें हैं। वह टीचर आदि होते हैं हद के। यह है बेहद का। तो बच्चों के अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए।

○ वास्तव में नौकरी तो भल वहाँ भी होती है, दास-दासियां, नौकर आदि तो चाहिए ना। पढ़े के आगे अनपढ़े भरी ढोयेंगे। इसलिए बाप कहते हैं अच्छी रीति पढ़ो तो तुम यह बन सकते हो। कहते भी हैं हम यह बनेंगे। परन्तु पढ़ेंगे नहीं तो क्या बनेंगे। नहीं पढ़ते हैं तो फिर बाप को इतना रिगॉर्ड से याद नहीं करते हैं। बाप कहते हैं जितना तुम याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बच्चे कहते हैं बाबा जैसे आप चलाओ, बाप भी मत इन द्वारा ही देंगे ना। परन्तु इनकी मत भी लेते नहीं, फिर भी पुरानी सड़ी हुई मनुष्य मत पर ही चलते हैं। देखते भी हैं शिवबाबा इस रथ द्वारा मत देते हैं फिर भी अपनी मत पर चलते हैं। जिसको पाई-पैसे की कौड़ी जैसी मत कहें, उस पर चलते हैं।

○ देही- अभिमानी होकर बैठें, अपने को आत्मा समझ बाप से योग लगायें तब बैटरी भर सकती है। गरीब झट अपनी बैटरी भर सकते हैं क्योंकि बाप को बहुत याद करते हैं। ज्ञान भल अच्छा है योग कम है तो बैटरी भर न सके क्योंकि देह का अहंकार बहुत रहता है। योग कुछ भी है नहीं। इसलिए ज्ञान बाण में जौहर नहीं भरता। तलवार में भी जौहर होता है। वही तलवार 10 रूपया, वही तलवार 50 रूपया। गुरू गोविन्दसिंह की तलवार का गायन है, इसमें हिंसा की बात नहीं।

○ अवगुण तरफ देखना भी नहीं चाहिए। भल आवाज सुनते करते हो तो भी खुद शान्त रहना चाहिए क्योंकि बाप और दादा दोनों शान्त रहते हैं। कभी बिगड़ते नहीं हैं। रड़ी नहीं मारते। यह ब्रह्मा भी सीखा है ना। जितना शान्त में रहो, उतना अच्छा है। शान्ति से ही याद कर सकते हैं। अशान्ति वाले याद कर न सके। हर एक से गुण ग्रहण करना ही है। दतात्रय आदि के मिसाल भी यहाँ से लगते हैं।

○ सिर्फ बाप को ही याद करते हो या और भी कुछ याद आता है? बच्चों को स्थापना, विनाश और पालना-तीनों की याद होनी चाहिए क्योंकि साथ-साथ इकट्ठा चलता है ना। जैसे कोई बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो उनको मालूम है मैं बैरिस्टर बनूँगा, वकालत करूंगा। बैरिस्टरी की पालना भी करेंगे ना। जो भी पढ़ेगा उनकी एम तो आगे रहेगी। तुम जानते हो हम अभी कंस्ट्रक्शन कर रहे हैं। पवित्र नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं, इसमें योग बहुत जरूरी है। योग से ही हमारी आत्मा जो पतित बन गई है, वह पावन बनेगी। तो हम पवित्र बन फिर पवित्र दुनिया में जाकर राज्य करेंगे, यह बुद्धि में आना चाहिए। सब इम्तहानों में सबसे बड़ा इम्तहान वा सभी पढ़ाईयों से ऊंच पढ़ाई यह है। पढ़ाईयाँ तो अनेक प्रकार की हैं ना। वह तो सब मनुष्य, मनुष्य को पढ़ाते हैं और वह पढ़ाईयाँ इस दुनिया के लिए ही हैं। पढ़कर फिर उनका फल यहाँ ही पायेंगे। तुम बच्चे जानते हो इस बेहद की पढ़ाई का फल हमको नई दुनिया में मिलना है। वह नई दुनिया कोई दूर नहीं। अभी संगमयुग है। नई दुनिया में ही हमको राज्य करना है। यहाँ बैठे हो तो भी बुद्धि में यह याद करना है। बाप की याद से ही आत्मा पवित्र बनेगी। फिर यह भी याद रखना है कि हम पवित्र बनेंगे फिर इस इमप्योर दुनिया का विनाश भी जरूर होगा। सभी तो पवित्र नहीं बनेंगे। तुम बहुत थोड़े हो जिनमें ताकत है। तुम्हारे में भी नम्बरवार ताकत अनुसार ही सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनते हैं ना। ताकत तो हर बात में चाहिए। यह है ईश्वरीय माइट, इनको योगबल की माइट कहा जाता है। बाकी सब हैं जिस्मानी माइट। यह है रूहानी माइट। बाप कल्प-कल्प कहते हैं-हे बच्चों, मामेकम् याद करो। सर्वशक्तिमान् बाप को याद करो। वह तो एक ही बाप

है, उनको याद करने से आत्मा पवित्र बनेगी। यह बहुत अच्छी बाते हैं - धारण करने की, जिनको यह निश्चय ही नहीं है कि हमने 84 जन्म लिए हैं, उनकी बुद्धि में यह बातें बैठेगी नहीं। जो सतोप्रधान दुनिया में आये थे, वही अब तमोप्रधान में आये हैं। वही आकर जल्दी निश्चयबुद्धि बनेंगे। अगर कुछ भी नहीं समझते हैं तो पूछना चाहिए। पूरी रीति समझें तो बाप को भी याद करें। समझेंगे नहीं तो याद भी नहीं कर सकेंगे। यह तो सीधी बात है। हम आत्मायें जो सतोप्रधान थी वही फिर तमोप्रधान बनी हैं, जिनको यह संशय होगा कि कैसे समझें हम 84 जन्म लेते हैं वा बाप से कल्प पहले भी वर्सा लिया है, वह तो पढ़ाई में पूरा ध्यान ही नहीं देंगे। समझा जाता है इनकी तकदीर में नहीं है। कल्प पहले भी नहीं समझा था इसलिए याद कर नहीं सकेंगे। यह है ही भविष्य के लिए पढ़ाई। नहीं पढ़ते हैं तो समझा जाता है कल्प-कल्प नहीं पढ़ते थे अथवा थोड़ी मार्क्स से पास हुए थे। स्कूल में बहुत फेल भी होते हैं। पास भी नम्बरवार ही होते हैं। यह भी पढ़ाई है, इसमें नम्बरवार पास होंगे। जो होशियार हैं वह तो पढ़कर फिर पढ़ाते रहेंगे। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का सर्वेंट हूँ। बच्चे भी कहते हैं कि हम भी सर्वेंट हैं। हर एक भाई-बहन का कल्याण करना है। बाप हमारा कल्याण करता है, हमको फिर औरों का कल्याण करना है। सबको यह भी समझाना है, बाप को याद करो तो पाप कट जाएं। जितना-जितना जो बहुतों को पैगाम पहुँचाते हैं, उन्हें बड़ा पैगम्बर कहेंगे। उनको ही महारथी अथवा घोड़ेसवार कहा जाता है। प्यादे फिर प्रजा में चले जाते हैं। इसमें भी बच्चे समझते हैं कौन-कौन साहूकार बन सकेंगे। यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। तुम बच्चे जो सर्विस के लिए निमित्त बने हुए हो, सर्विस के लिए ही जीवन दी हुई है तो पद भी ऐसे पायेंगे। उनको किसी की परवाह नहीं रहती। मनुष्य अपने हाथ-पांव वाला है ना। बांधा तो नहीं जा सकता। अपने को स्वतन्त्र रख सकते हैं। ऐसे क्यों बंधन में फँसू? क्यों न बाप से अमृत लेकर अमृत का ही दान करूँ। मैं कोई रिढ़-बकरी थोड़ेही हूँ जो कोई हमको बांधे। शुरू में तुम बच्चों ने कैसे अपने को छुड़ाया, रड़ीया मारी, हाय-हाय कर बैठ गये। तुम कहेंगे हमको क्या परवाह है, हमको तो स्वर्ग की स्थापना करनी है या यह काम बैठ करने हैं। वह मस्ती चढ़ जाती है, जिसको मौलाई मस्ती

कहा जाता है। हम मौला के मस्ताने हैं। तुम जानते हो मौला से हमको क्या प्राप्त हो रहा है। मौला हमको पढ़ा रहे हैं ना। नाम तो उनके बहुत हैं परन्तु कोई-कोई नाम बहुत मीठे हैं। अभी हम मौलाई मस्त बने हैं। बाप डायरेक्शन तो बहुत सिम्पल देते हैं। बुद्धि भी समझती है-बरोबर हम बाप को याद करते-करते सतोप्रधान बन जायेंगे और विश्व के मालिक भी बनेंगे। यही तात लगी हुई है। बाप को हरदम याद करना चाहिए। सामने बैठे हो ना। यहाँ से बाहर निकले और भूल जायेंगे। यहाँ जितना नशा चढ़ता है उतना बाहर में नहीं रहता, भूल जाते हैं। तुमको भूलना नहीं चाहिए। परन्तु तकदीर में नहीं है तो यहाँ बैठे भी भूल जाते हैं।

○ सच्ची दिल वाले ही स्कॉलरशिप पाते हैं। शैतानी दिल चल न सके। शैतानी दिल से अपना ही बेड़ा गर्क करते हैं। सबका शिवबाबा से काम है। यह तो तुम साक्षात्कार करते हो। ब्रह्मा को भी बनाने वाला शिवबाबा है। शिवबाबा को याद करें तब ऐसा बनें | बाबा समझते हैं माया बड़ी जबरदस्त है। जैसे चूहा काटता है तो मालूम भी नहीं पडता है, माया भी ऐसी मस्त चूही है। महारथियों को ही खबरदार रहना है। वह खुद समझते नहीं हैं कि हमको माया ने गिरा दिया है। लूनपानी बना दिया है। समझना चाहिए लूनपानी होने से हम बाप की सर्विस कर नहीं सकेंगे। अन्दर ही जलते रहेंगे। देह- अभिमान है तब जलते हैं। वह अवस्था तो है नहीं। याद का जौहर भरता नहीं है, इसलिए बहुत खबरदार रहना चाहिए। माया बड़ी तीखी है, जबकि तुम युद्ध के मैदान पर हो तो माया भी छोड़ती नहीं। आधा-पौना तो खत्म कर देती है, किसको पता भी नहीं पड़ता है। कैसे अच्छे- अच्छे, नये-नये भी पढ़ाई बन्दकर घर में बैठ जाते हैं। अच्छे- अच्छे नामीग्रामी पर भी माया का वार होता है। समझते हुए भी बेपरवाह हो जाते हैं। थोड़ी बात में झट लून-पानी हो पड़ते हैं। बाप समझाते हैं देह- अभिमान के कारण ही लून-पानी होते हैं। स्वयं को धोखा देते हैं। बाप कहेंगे यह भी ड्रामा। जो कुछ देखते हैं कल्प पहले मिसल ड्रामा चलता रहता है। नीचे-ऊपर अवस्था होती रहती है। कभी ग्रहचारी बैठती है, कभी बहुत अच्छी सर्विस कर खुशखबरी लिखते हैं। नीचे-ऊपर होता रहता है। कभी हार,

कभी जीत। पाण्डवों की माया से कभी हार, कभी जीत होती है। अच्छे- अच्छे महारथी भी हिल जाते हैं, कई मर भी जाते हैं। इसलिए जहाँ भी रहो बाप को याद करते रहो और सर्विस करते रहो। तुम निमित्त बने हुए हो सर्विस के लिए। तुम लड़ाई के मैदान में हो ना। जो बाहर वाले घर गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं, यहाँ वालों से भी बहुत तीखे जा सकते हैं। माया के साथ पूरी युद्ध चलती रहती है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड तुम्हारा कल्प पहले मिसल पार्ट चलता आया है। तुम कहेंगे इतना समय पास हो गया, क्या-क्या हुआ है, वह भी बुद्धि में है। सारा ज्ञान बुद्धि में है। जैसे बाप में ज्ञान है, इस दादा में भी आना चाहिए। बाबा बोलते हैं तो जरूर दादा भी बोलते होंगे। तुम भी जानते हो कौन-कौन अच्छे दिल साफ हैं। दिल साफ वाले ही दिल पर चढ़ते हैं। उनमें लूनपानी का स्वभाव नहीं रहता है, सदैव हर्षित रहते हैं। उनका मूड कभी फिरेगा नहीं। यहाँ तो बहुतों की मूड फिर जाती है। बात मत पूछो। कहते भी हैं हम पतित हैं। अभी पतित-पावन बाप को बुलाया है कि आकर पावन बनाओ। बाप कहते हैं-बच्चों, मुझे याद करते रहो तो तुम्हारे कपड़े साफ हों। मेरी श्रीमत पर चलो। श्रीमत पर न चलने वाले का कपड़ा साफ नहीं होता। आत्मा शुद्ध होती ही नहीं। बाप तो दिन-रात इस पर ही जोर देते हैं- अपने को आत्मा समझो। देह- अभिमान में आने से ही तुम घुटका खाते हो। जितना-जितना ऊपर चढ़ते जाते हो, खुशनुम होते जाते हो और हर्षितमुख रहता है। बाबा जानते हैं अच्छे- अच्छे फर्स्टक्लास बच्चे हैं परन्तु अन्दरूनी हालत देखो तो गल रहे हैं। देह- अभिमान की आग जैसे गला रही है। समझते नहीं हैं, यह बीमारी फिर कहाँ से आई। बाप कहते हैं देह- अभिमान से यह बीमारी आती है। देही- अभिमानी को कभी बीमारी नहीं लगेगी। बहुत अन्दर में जलते रहते हैं। बाप तो कहते हैं-बच्चे, देही- अभिमानी भव। पूछते हैं यह रोग क्यों लगा है? बाप कहते हैं यह देह- अभिमान की बीमारी ऐसी है, बात मत पूछो। कोई को यह बीमारी लगती है तो एकदम चिचड़ होकर लगती है (चिपक जाती है), छोड़ती ही नहीं है। श्रीमत पर न चल अपने देह- अभिमान में चलते हैं तो चोट बड़े जोर से लगती है। बाबा के पास तो सब समाचार आते हैं। माया कैसे एकदम नाक से पकड़ गिरा देती ह। बुद्धि बिल्कुल मार डालती है। संशय

बुद्धि बन पडते हैं। भगवान को बुलाते हैं कि आकर हमको पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाओ और फिर उनके भी विरुद्ध हो जाते, तो क्या गति होगी। एकदम गिरकर पत्थरबुद्धि बन जाते हैं। बच्चों को यहाँ बैठे यह खुशी रहनी चाहिए, स्टूडेंट लाइफ इज दी बेस्ट यह है। बाप कहते हैं इनसे और कोई पढ़ाई ऊंच है क्या? दी बेस्ट तो यह है, 21 जन्मों का फल देती है, तो ऐसी पढ़ाई में कितना अटेंशन देना चाहिए। कोई तो बिल्कुल अटेंशन नहीं देते हैं। माया नाक-कान एकदम काट लेती है। बाप खुद कहते हैं आधाकल्प इनका राज्य चलता है तो ऐसा पकड़ लेती है जो बात मत पूछो, इसलिए बहुत खबरदार रहो। एक-दो को सावधान करते रहो। शिवबाबा को याद करो नहीं तो माया कान नाक काट लेगी। फिर कोई काम के नहीं रहेंगे। बहुत समझते भी हैं कि हम लक्ष्मी-नारायण का पद पायें, इम्पासिबुल है। थक कर फाँ हो जाते हैं। माया से हार खाकर एकदम कीचड़े में जाकर पड़ते हैं। देखो, हमारी बुद्धि बिगड़ती है तो समझना चाहिए माया ने नाक से पकड़ा है। याद की यात्रा में बहुत बल है। बहुत खुशी भरी हुई है। कहते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। दुकान में ग्राहक आते रहते हैं, कमाई होती रहती है तो कभी उनको थकावट नहीं होगी। भूख नहीं मरेंगे। बड़ी खुशी में रहते हैं। तुमको तो अथाह (बेशुमार) धन मिलता है। तुम्हें तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। देखना चाहिए-हमारी चलन दैवी है या आसुरी है? समय बहुत थोड़ा है। अकाले मृत्यु की भी जैसे रेस है। एक्सीडेंट आदि देखो कितने होते रहते हैं। तमोप्रधान बुद्धि होते जाते हैं। बरसात जोर से पड़ेगी, उनको भी कुदरती एक्सीडेंट कहेंगे। मौत सामने आया कि आया। समझते भी हैं एटॉमिक बाम्ब्स की लड़ाई छिड़ जायेगी। ऐसे-ऐसे खौफनाक काम करते हैं, तंग कर देंगे तो फिर लड़ाई भी छिड़ जायेगी।

- अब बाप समझाते हैं-बच्चे, सिर्फ मामेकम याद करो तो बेड़ा पार हो जाए। पवित्र बन पवित्र दुनिया में चले जायेंगे। अब जो जितना पुरूषार्थ करेंगे। सबको यही परिचय देते रहो। वह है हद का बाप, यह है बेहद का बाप। संगम पर ही बाप आते हैं स्वर्ग का वर्सा देने। तो ऐसे बाप

को याद करना पडे ना। टीचर को कब स्टूडेंट भूलते हैं क्या! परन्तु यहाँ माया भुलाती रहेगी। बड़ा खबरदार रहना है। युद्ध का मैदान है ना। बाप कहते हैं अब विकार में मत जाओ, गन्दे नहीं बनो। अब तो स्वर्ग में चलना है। पवित्र बनकर ही पवित्र नई दुनिया के मालिक बनेंगे। तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ | कम बात है क्या। सिर्फ यह एक जन्म पवित्र बनो। अब पवित्र नहीं बनेंगे तो नीचे गिर जायेंगे। टैम्पटेशन बहुत है। काम पर जीत पाने से तुम जगत के मालिक बनेगे। तुम साफ कह सकते हो परमपिता परमात्मा ही जगतगुरू है जो सारे जगत को सद्गति देते हैं।

○ जितना हम श्रीमत पर चलेंगे उतना वर्सा पायेंगे। पूरा चलने वाले ऊंच पद पायेंगे। नहीं चलने वाले ऊंच पद नहीं पायेंगे। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाएं। रावण राज्य में तुम्हारे पर पाप तो बहुत चढ़े हुए हैं। विकार में जाने से ही पाप आत्मा बनते हैं। समझाया तो बहुत जाता है, कई पूरा न समझकर उल्टा रास्ता ले जंगल में जाकर पड़ते हैं।बाप तो रास्ता बताते हैं स्वर्ग में जाने का। फिर भी जंगल तरफ चले जाते हैं। बाप समझाते हैं तुमको जंगल तरफ ले जाने वाला है-रावण। तुम माया से हार खाते हो। रास्ता भूल जाते हो तो फिर उस जंगल के कांटे बन जाते हो। वह फिर स्वर्ग में देरी से आयेंगे। यहाँ तुम आये ही हो स्वर्ग में जाने का पुरूषार्थ करने। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे। 25 परसेण्ट कम हुआ ना। वह फेल गिना जाता है। तुम यहाँ आये ही हो पुरानी दुनिया छोड़ नई दुनिया में जाने। त्रेता को नई दुनिया नहीं कहेंगे। नापास वहाँ चले जाते हैं क्योंकि रास्ता ठीक पकड़ते नहीं। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। तुम महसूस करते हो जो याद होनी चाहिए वह नहीं रहती। स्वर्गवासी जो बनते हैं उनको कहेंगे अच्छे पास। त्रेता वाले नापास गिने जाते हैं। तुम नर्कवासी से स्वर्गवासी बनते हो। नहीं तो फिर नापास कहा जाता है। उस पढ़ाई में तो फिर दुबारा पढ़ते हैं। इसमें दूसरा वर्ष पढ़ने की तो बात नहीं।

- आजकल तो पतित मनुष्यों की शक्ल भी नहीं देखनी चाहिए, न बच्चों को दिखानी चाहिए। बुद्धि में हमेशा समझो हम संगमयुग पर हैं। एक बाप को ही याद करते हैं और सबको देखते हुए नहीं देखते हैं। हम नई दुनिया को ही देखते हैं। हम देवता बनते हैं, उस नये सम्बन्धों को ही देखते हैं। पुराने सम्बन्ध को देखते हुए नहीं देखते हैं। यह सब भस्म होने वाला है। हम अकेले आये थे फिर अकेले ही जाते हैं। बाप एक ही बार आते हैं साथ ले जाने। इनको शिवबाबा की बरात कहा जाता है। शिवबाबा के बच्चे सब हैं। बाप विश्व की बादशाही देते हैं, मनुष्य से देवता बनाते हैं। आगे विष उगलते थे, अब अमृत उगलते हैं।

- बाप रोज बहुत समझाते हैं। वास्तव में इतनी समझाने की जरूरत ही नहीं दिखती। मन्त्र का अर्थ बाप समझा देते हैं। बाप तो एक ही है। बेहद के बाप को याद करना है और उनसे यह वर्सा पाकर हमको ऐसा बनना है। और स्कूलों में 5 विकारों को जीतने की बात ही नहीं होती। यह बात अभी ही होती हैं जो बाप आकर समझाते हैं। तुम्हारे में जो भूत हैं, जो दु :ख देते हैं, उनका वर्णन करेंगे तो उनको निकालने की बाप युक्ति बताको। बाबा यह-यह भूत हमको तंग करते हैं। भूत निकालने वाले के आगे वर्णन किया जाता है ना। तुम्हारे में कोई वह भूत नहीं। तुम जानते हो यह 5 विकारों रूपी भूत जन्म-जन्मान्तर के हैं। देखना चाहिए हमारे में क्या भूत हैं? उसको निकालने लिए फिर राय लेनी चाहिए। आँखें भी बहुत धोखा देने वाली हैं, इसलिए बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा समझने की प्रैक्टिस डालो। तुम अपने अवगुण बताते रहेंगे तो बाप भी राय देंगे। जैसे तुम आत्माएं बाप को याद करती हो - बाबा, आप कितने मीठे हो! हमको क्या से क्या बना देते हो! बाप को याद करते रहेंगे तो भूत भागते रहेंगे। कोई न कोई भूत है जरूर। बाप सर्जन को बताओ, बाबा हमको इनकी युक्ति बताओ। नहीं तो बहुत घाटा पड़ जायेगा, सुनाने से बाप को भी तरस पड़ेगा - यह माया के भूत इनको का करते हैं। भूतों को भगाने वाला तो एक ही बाप है। युक्ति से भगाते हैं। समझाया

जाता है - इन 5 भूतों को भगाओ। फिर भी सब भूत नहीं भागते हैं। कोई में विशेष रहता है, कोई में कम। परन्तु हैं जरूर। बाप देखते हैं इनमें यह भूत हैं। दृष्टि देते समय अन्दर चलता है ना। यह तो बहुत अच्छा बच्चा है और तो सब इनमें अच्छे- अच्छे गुण हैं परन्तु बोलते कुछ नहीं है, किसको समझा नहीं सकते हैं। माया ने जैसे गला बन्द कर दिया है, इनका गला खुल जाए तो औरों की भी सर्विस करने लग पड़े। दूसरे-दूसरे की सर्विस में अपनी सर्विस, शिवबाबा की सर्विस नहीं करते हैं। शिवबाबा खुद सर्विस करने आये हैं, कहते हैं इन जन्म-जन्मान्तर के भूतों को भगाना है।

○ तुम बच्चे सर्विस का अच्छी रीति शौक रखो तो बाप भी याद आवे। यहाँ भी मन्दिर आदि बहुत हैं। तुम योग में पूरा रहकर किसको कुछ भी कहेंगे, कोई बिचार नहीं आयेगा। योग वाले का तीर पूरा लगेगा। तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। कोशिश करके देखो, परन्तु पहले अपने अन्दर को देखना है - हमारे में कोई माया का भूत तो नहीं है? माया के भूत वाले थोड़ेही सक्सेस हो सकते हैं। सर्विस तो बहुत है।

○ पुरूषोत्तम संगमयुग का भी टाइम है ना, पूरा एक्यूरेट। ड्रामा बड़ा एक्यूरेट चलता है और बहुत वन्डरफुल है। बच्चों को समझ में बड़ा सहज आता है-बाप को याद करना है और वर्सा लेना है। बस। परन्तु पुरूषार्थ करते हैं तो कइयों को डिफीकल्ट भी लगता है। इतना ऊंच ते ऊंच पद पाना कोई सहज थोड़ेही हो सकता है। बहुत सहज बाप की याद और सहज वर्सा बाप का है। सेकण्ड की बात है। फिर पुरूषार्थ करने लगते हैं तो माया के विघ्न भी पड़ते हैं। रावण पर जीत पानी होती है। सारी सृष्टि पर इस रावण का राज्य है। अभी तुम समझते हो हम योगबल से रावण पर हर कल्प जीत पाते आये हैं। अब भी पा रहे हैं। सिखलाने वाला है बेहद का बाप। भक्ति मार्ग में भी तुम बाबा-बाबा कहते आये हो। परन्तु पहले बाप को नहीं जानते थे। आत्मा

को जानते थे। कहते थे चमकता है भ्रकुटी के बीच में अजब सितारा। आत्मा को जानते हुए भी बाप को नहीं जानते थे। कैसा विचित्र ड्रामा है। कहते भी थे-हे परमपिता परमात्मा, याद करते थे, फिर भी जानते नहीं थे। न आत्मा के आक्यूपेशन को, न परमात्मा के आक्यूपेशन को पूरा जानते थे। बाप ही खुद आकर समझाते हैं। बाप बिगर कब कोई रियलाइज करा न सके। कोई का पार्ट ही नहीं। गायन भी है ईश्वरीय सम्प्रदाय, आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय। है बहुत सहज। परन्तु यह बातें याद रहें-इसमें ही माया विघ्न डालती है। भुला देती है। बाप कहते हैं नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार याद करते-करते जब ड्रामा का अन्त होगा अर्थात् पुरानी दुनिया का अन्त होगा तब नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन हो ही जायेगी। शास्त्रों से यह बात कोई समझ न सके। गीता आदि तो इसने भी बहुत पढ़ी है ना। अब बाप कहते हैं इसकी कोई वैल्यू नहीं। परन्तु भक्ति में कनरस बहुत मिलता है इसलिए छोड़ते नहीं।

○ अभी तुम जो पुजारी थे सो फिर पूज्य बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। बुद्धि में धारणा रहे और तुम समझाते रहो। बाप को भी याद करो। बाप ही सारे झाड़ का राज समझाते हैं। बच्चों को मीठा भी ऐसा बनने का है। युद्ध है ना। माया के तूफान भी बहुत आते हैं। सब सहन करना पड़ता है। बाप की याद में रहने से तूफान सब चले जायेंगे। हातमताई का खेल बताते हैं ना। मुहलत डालते थे, माया चली जाती थी। मुहलरा निकालने से ही माया आ जाती थी। छुईमुई होती है ना। हाथ लगाओ तो मुरझा जाते हैं। माया बड़ी तीखी है, इतना ऊंच पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते बैठे-बैठे गिरा देती है इसलिए बाप समझाते रहते हैं अपने को भाई- भाई समझो तो फिर हद बेहद से पार चले जायेंगे। शरीर ही नहीं तो फिर दृष्टि कहाँ जायेगी। इतनी मेहनत करनी है, सुनकर फाँ नहीं हो जाना है। कल्प-कल्प तुम्हारा पुरुषार्थ चलता है और तुम अपना भाग्य पाते हो। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ सब भूलो। बाकी जो कभी नहीं पढ़े हो वह सुनो और याद करो।

○ पावन तो इस तमोप्रधान पतित सृष्टि में रह नहीं सकते। बाप तुमको पावन बनाकर गुम हो जाते हैं, उनका पार्ट ही ड्रामा में वन्डरफुल है। जैसे आत्मा देखने में नहीं आती है। भल साक्षात्कार होता है तो भी समझ न सके। और तो सबको समझ सकते हैं यह फलाना है, यह फलाना है। याद करते हैं। चाहते हैं, फलाने का चैतन्य में साक्षात्कार हो और तो कोई मतलब नहीं। अच्छा, चैतन्य में देखते हो फिर क्या? साक्षात्कार हुआ फिर तो गुम हो जायेगा। अल्पकाल क्षण भंगुर सुख की आश पूरी होगी। उसको कहा जायेगा अल्पकाल क्षण भगुर सुख। साक्षात्कार की चाहना थी वह मिला। बस यहाँ तो मूल बात है पतित से पावन बनने की। पावन बनेंगे तो देवता बन जायेंगे अर्थात् स्वर्ग में चले जायेंगे।

○ कोई-कोई बच्चे मुरली की भी डोंट केयर करते हैं। बस हमारा तो शिवबाबा से ही कनेक्शन है। परन्तु शिवबाबा जो सुनाते हैं वह भी सुनना है ना कि सिर्फ उनको याद करना है। बाप कैसे अच्छी- अच्छी मीठी-मीठी बातें सुनाते हैं। परन्तु माया बिल्कुल ही मगरूर कर देती है। कहावत है ना-चूहे को हल्दी की गांठ मिली, समझा मैं पंसारी हूए....। बहुत हैं जो मुरली पढ़ते ही नहीं। मुरली में तो नई-नई बातें निकलती हैं ना। तो यह सब बातें समझने की हैं। जब बाप की याद में बैठते हो तो यह भी याद करना है कि वह बाप टीचर भी है और सतगुरू भी है। नहीं तो पढ़ेंगे कहाँ से। बाप ने तो बच्चों को सब समझा दिया हैं। बच्चे ही बाप का शो करेंगे। सन शोज़ फादर। सन का फिर फादर शो करते हैं। आत्मा का शो करते हैं | फिर बच्चों का काम है बाप का शो करना।

○ तुम बच्चों को सदैव ज्ञान का सिमरण कर हर्षित रहना चाहिए। उसके लिए ही गायन है- अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। यह संगम की ही बातें हैं। संगमयुग को कोई भी जानते नहीं। विहंग मार्ग की सर्विस करने से शायद महिमा निकले। गायन भी है अहो प्रभू तेरी लीला

। यह कोई भी नहीं जानते थे कि भगवान बाप, टीचर, सतगुरू भी है। अब फादर तो बच्चों को सिखलाते रहते हैं। बच्चों को यह नशा स्थाई रहना चाहिए। अन्त तक नशा रहना चाहिए। अभी तो नशा झट सोडावाटर हो जाता है। सोडा भी ऐसे होता है ना। थोड़ा टाइम रखने से जैसे खारापानी हो जाता है। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। किसको ऐसा समझाओ जो वह भी वन्दर खाये। अच्छा- अच्छा कहते भी हैं परन्तु वह फिर टाइम निकाल समझें, जीवन बनावें वह बड़ा मुश्किल है। बाबा कोई मना नहीं करते हैं कि धन्धा आदि नहीं करो। पवित्र बनो और जो पढ़ाता हूँ वह याद करो। यह तो टीचर है ना। और यह है अनकॉमन पढ़ाई। कोई मनुष्य नहीं पढ़ा सकते। बाप ही भाग्यशाली रथ पर आकर पढ़ाते हैं। बाप ने समझाया है - यह तुम्हारा तख्त है जिस पर अकाल मूर्त आत्मा आकर बैठती है। उनको यह सारा पार्ट मिला हुआ है। अभी तुम समझते हो यह तो रीयल बात है। बाकी यह सब हैं आर्टीफिशल बातें। यह अच्छी रीति धारण कर गांठ बाँध लो। तो हाथ लगने से याद आयेगा। परन्तु गाँठ क्यों बाँधी है, वह भी भूल जाते हैं। तुमको तो यह पक्का याद करना है। बाप की याद के साथ नॉलेज भी चाहिए। मुक्ति भी है, तो जीवनमुक्ति भी है। बहुत मीठे-मीठे बच्चे बनो। बाबा अन्दर में समझते हैं कल्प-कल्प यह बच्चे पढ़ते रहते हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार ही वर्सा लेंगे। फिर भी पढ़ाने का टीचर पुरूषार्थ तो करायेंगे ना। तुम घड़ी-घडी भूल जाते हो इसलिए याद कराया जाता है। शिवबाबा को याद करो। वह बाप, टीचर, सतगुरू भी है। छोटे बच्चे ऐसे याद नहीं करेंगे।

- अब वह बाप कहते हैं दु :खधाम को भूलो, शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो। इसको ही मन्मनाभव कहा जाता है। बाप आकर बच्चों को सुखधाम का साक्षात्कार कराते हैं। दुःखधाम का विनाश कराए शान्तिधाम में ले जाते हैं। इस चक्र को समझना है। 84 जन्म लेने पड़ते हैं। जो पहले सुखधाम में आते हैं, उन्हों के हैं 84 जन्म सिर्फ इतनी बातें याद करने से भी बच्चे सुखधाम के मालिक बन सकते हैं।

○ बाप कहते हैं बच्चे, शान्तिधाम को याद करो और फिर वर्से को अर्थात् सुखधाम को याद करो । पहले-पहले तुम शान्तिधाम में जाते हो तो अपने को शान्तिधाम, ब्रह्माण्ड का मालिक समझो । चलते-फिरते अपने को वहाँ के वासी समझेंगे तो यह दुनिया भूलती जायेगी । सतयुग है सुखधाम परन्तु सभी तो सतयुग में आ नहीं सकते । यह बातें समझेंगे ही वह जो देवताओं के पुजारी हैं । यह है सच्ची कमाई, जो सच्चा बाप सिखलाते हैं । बाकी सभी है झूठी कमाईयॉ । अविनाशी ज्ञान रत्नों की कमाई ही सच्ची कमाई कही जाती है, बाकी विनाशी धन-दौलत वह है झूठी कमाई ।

○ बीज चैतन्य है तो जरूर नॉलेज उनमें ही होगी । वही आकर तुमको सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज देते हैं । यह भी बोर्ड लगा देना चाहिए कि इस चक्र को जानने से तुम सतयुग के चक्रवर्ती राजा अथवा स्वर्ग के राजा बन जायेंगे । कितनी सहज बात है । बाप कहते हैं जब तक जीना है, मुझे याद करना है । मैं खुद तुमको यह वशीकरण मन्त्र देता हूँ । अब तुमको याद करना है बाप को । याद से ही विकर्म विनाश होंगे । यह स्वदर्शन चक्र फिरता रहे तो माया का सिर कट जायेगा । हम तुम्हारी आत्मा को पवित्र बनाकर ले जायेंगे फिर तुम सतोप्रधान शरीर लेंगे ।

○ भारतवासी कहते हैं देवी-देवता धर्म लाखों वर्ष पहले था तो बुद्धू ठहरे ना । बाप भारत में ही आते हैं, जो महान बेसमझ हैं उन्हें ही महान ते महान समझदार बनाते हैं । परन्तु फिर भी याद रहे तब । बाबा तुम बच्चों को कितना सहज करके समझाते हैं, मुझे याद करो तो तुम सोने का बर्तन बन जायेंगे तो धारणा भी अच्छी होगी । याद की यात्रा से ही पाप कटेंगे । मुरली नहीं सुनते तो ज्ञान उड़ जाता है । बाप तो रहमदिल होने के नाते उठने की ही युक्ति बतलाते हैं । अन्त

तक भी सिखलाते ही रहेंगे। अच्छा, आज भोग है, भोग लगाकर जल्दी वापस आ जाना है। बाकी वैकुण्ठ में जाकर देवी-देवताओं आदि का साक्षात्कार करना यह सब फालतू है। इसमें बहुत महीन बुद्धि चाहिए। बाप इस रथ द्वारा कहते हैं मुझे याद करो, मैं ही पतित-पावन तुम्हारा बाप हूँ। तुम्हीं से खाऊं..... तुम्हीं से बैठूँ.... यह यहाँ के लिए है। ऊपर में कैसे होगा।

○ मीठे-मीठे बच्चे यहाँ बैठकर समझते हैं, इनमें जो शिवबाबा आये हैं, कैसे भी करके हमको साथ घर जरूर ले जायेंगे। वह आत्माओं का घर है ना। तो बच्चों को जरूर खुशी होती होगी, बेहद का बाप आकर के हमको गुल- गुल बनाते हैं। कोई कपड़ा आदि नहीं पहनाते हैं। इसको कहा जाता है योगबल, याद का बल। जितना टीचर का मर्तबा है उतना और बच्चों को भी मर्तबा दिलाते हैं। पढ़ाई से स्टूडेंट जानते हैं कि हम यह बनेंगे। तुम भी समझते हो हमारा बाबा टीचर भी है, सतगुरू भी है। यह है नई बात | हमारा बाबा टीचर है, उनको हम याद करते हैं। हमको टीच कर यह बना रहे हैं। हमारा बेहद का बाबा आया हुआ है - हमको वापिस घर ले जाने। तुम अब पढ़ाई पढ़ रहे हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो अच्छी रीति पढ़ते हैं। वही पहले-पहले मेरे से जुदा हुए हैं। वही फिर मुझे बहुत याद करेंगे तो फिर पहले-पहले आ जायेंगे।

○ बाबा कहते हैं 5 हजार वर्ष का यह चक्र है। यह ठीक है। लाखों वर्ष की बात तो याद भी न रह सके। अभी तुम्हारे में गुणों की धारणा होती है। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल जाता है। इन आँखों से तुम पुरानी दुनिया को देखते हो। तीसरा नेत्र जो मिलता है, उनसे नई दुनिया को देखना है। यह दुनिया तो कोई काम की नहीं है। पुरानी दुनिया है। नई और पुरानी दुनिया में फर्क देखो कितना है। तुम जानते हो हम ही नई दुनिया के मालिक थे फिर 84 जन्म लेते-लेते यह बने हैं। यह अच्छी रीति याद रखना चाहिए और फिर दूसरे को भी समझाना है-कैसे हम यह बनते हैं?

इनका भी गुरू शिवबाबा, तुम ब्राह्मणों का भी गुरू शिवबाबा है। उनको सद्गुरु कहा जाता है। तो बच्चों को शिवबाबा को ही याद करना है। कोई को भी यह समझाना तो बहुत सहज है- शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा स्वर्ग नई दुनिया रचते हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान् शिव है। वह हम आत्माओं का बाबा है। तो भगवान् बच्चों को कहते हैं मुझ बाप को याद करो। याद करना कितना सहज है। बच्चा पैदा होता है और झट माँ-माँ उनके मुख से आपेही निकलता है। माँ-बाप के सिवाए और कोई पास नहीं जायेगा। माँ मर जाती है, वह फिर और बात है। पहले हैं माँ और बाप फिर पीछे और मित्र-सम्बन्धी आदि होते हैं। उसमें भी जोड़ी-जोड़ी होगी। चाचा-चाची दो हैं ना। कुमारी होगी फिर बड़ी होते ही कोई चाची कहेंगे, कोई मामी कहेंगे।

○ जो विलायत में पढ़ते होंगे, उनमें भी कोई बड़ा एज्यूकेशन मिनिस्टर होगा तो जाँच करते होंगे। यहाँ तुम्हारे पेपर्स की कौन जाँच करेगा? तुम खुद ही करेंगे। खुद जो चाहिए सो बनो। पढ़कर जो पद बाप से चाहो वह ले लो। जितना बाप को याद करेंगे, दूसरों की सर्विस करेंगे, उतना ही फल मिलेगा। उन्हें सर्विस करने की फिक्र रहेगी कि राजधानी स्थापन हो रही है तो प्रजा भी तो चाहिए ना। कोई मनुष्य पूछे तो कह सकते हो कि हम ईश्वर के बच्चे हैं, हमसे क्या खुश खैराफत पूछते हो? परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले बाप की, अब वह मिल गया, अब क्या परवाह। यह हमेशा याद रहना चाहिए। हम किसके बच्चे हैं-यह भी बुद्धि में ज्ञान है। जब हम पावन बन जायेंगे फिर लड़ाई शुरू होगी। तुमसे पूछेंगे जरूर। तुम कहेंगे हम तो सदैव राजी हैं। बीमार भी हो तो भी राजी हो। बाबा की याद में हो तो स्वर्ग से भी यहाँ जास्ती राजी हो। जबकि स्वर्ग की बादशाही देने वाला बाप मिला है। हमको कितना लायक बनाते हैं, फिर हमको क्या परवाह है! ईश्वर के बच्चों को किस चीज की परवाह। वहाँ देवताओं को भी परवाह नहीं। देवताओं के ऊपर है ईश्वर। तो ईश्वर के बच्चों को क्या परवाह हो सकती है।

○ बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखलाने आया हूँ ना । तुम शरीरधारी, हम अशरीरी ऊपर में रहने वाले । कहते हो-बाबा, पावन बनाने आओ तो गोया तुम पतित हो ना? फिर मेरे को भाकी कैसे पहन सकते? प्रतिज्ञा कर फिर पतित बन जाते हैं । जब एकदम पावन बन जायेंगे, पिछाड़ी में फिर याद में भी रहेंगे, टीचर को, गुरू को याद करते रहेंगे । अभी तो छी-छी बन गिर पड़ते हैं, और ही सौ गुणा दण्ड पड़ जाता है । यह तो बीच में दलाल के रूप में मिला है, उनको याद करना है । बाबा कहते हैं मैं भी उनका मुरब्बी बच्चा हूँ । फिर मैं कहाँ भाकी पहन सकता हूँ! तुम फिर भी इस शरीर द्वारा मिलते हो । मैं उनको कैसे भाकी पहनूँ? बाप तो कहते हैं - बच्चे, तुम एक बाप को ही याद करो, प्यार करो । याद से पॉवर बहुत मिलती है । बाप सर्वशक्तिमान् है । बाप से ही तुमको इतनी पॉवर मिलती है । तुम कितने बलवान बनते हो । तुम्हारी राजधानी पर कोई जीत पहन न सके ।

○ तुम बच्चों को अब निश्चय है-भगवान निराकार है। बाप हमको पढ़ाते हैं। हम स्टूडेन्ट्स हैं। वह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। एक को याद करेंगे तो टीचर और गुरू दोनों की याद आयेगी। बुद्धि भटकनी नहीं चाहिए। सिर्फ शिव भी नहीं कहना है, शिव हमारा बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, हमको साथ ले जायेंगे। उस एक की कितनी महिमा है, उनको ही याद करना है।

○ बाप समझाते हैं अच्छी रीति याद करते रहेंगे तो अकाले मृत्यु नहीं होगी। तुमको अमर बना देते हैं। पहले तो बाप के साथ प्रीत बुद्धि चाहिए। कोई के भी शरीर के साथ प्रीत होगी तो गिर पड़ेंगे। फेल हो जायेंगे। चन्द्रवंशी में चले जायेंगे। स्वर्ग सतयुगी सूर्यवंशी राजाई को ही कहा जाता है। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे। जैसे द्वापर और कलियुग है तो कलियुग को रौरव नर्क, तमोप्रधान कहा जाता है। द्वापर को इतना नहीं कहेंगे फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए याद

चाहिए। खुद भी समझते हैं हमारी फलाने से बहुत प्रीत है, उसके आधार बिगर हमारा कल्याण नहीं होगा। अब ऐसी हालत में अगर मर जाएं तो क्या होगा। विनाश काले विपरीत बुद्धि विनशन्ती। धूलछांई पद पा लेंगे।

○ ज्ञान सागर से तुम बादल भरकर फिर जाए वर्षा बरसाते हो। ज्ञान गंगायें तुम हो, तुम्हारी ही महिमा है। बाप कहते हैं मैं तुमको अभी पावन बनाने आया हूँ, यह एक जन्म पवित्र बनो, मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। मैं ही पतित- पावन हूँ, जितना हो सके याद को बढ़ाओ। मुख से शिवबाबा कहना भी नहीं है। जैसे आशिक माशुक को याद करते हैं, एक बार देखा, बस फिर बुद्धि में उनकी ही याद रहेगी। भक्ति मार्ग में जो जिस देवता को याद करते, पूजा करते, उसका साक्षात्कार हो जाता है। वह है अल्पकाल के लिए। भक्ति करते नीचे उतरते आये हैं। अब तो मौत सामने खड़ा है। हाय- हाय के बाद फिर जय- जयकार होनी है। भारत में ही रक्त की नदी बहनी है। सिविलवार के आसार भी दिखाई दे रहे हैं। इस समय बाप कहते हैं याद करने की मेहनत करो तो तुम सच्चा सोना बन जायेंगे। सतयुग है गोल्डन एज, सच्चा सोना फिर त्रेता में चांदी की अलाए पड़ती है। कला कम होती जाती है। अभी तो कोई कला नहीं है, जब ऐसी हालत हो जाती है तब बाप आते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है।

○ स्टूडेन्ट क्लास में जान सकते हैं, कौन किस सब्जेक्ट में होशियार हैं। यहाँ भी ऐसे हैं। स्थूल सर्विस की भी सब्जेक्ट तो हैं ना। जैसे भण्डारी है, बहुतों को सुख मिलता है, कितना सब याद करते हैं। यह तो ठीक है, इस सब्जेक्ट से भी मार्क्स मिलती हैं। लेकिन पास विद् ऑनर होने के लिए सिर्फ एक सब्जेक्ट में नहीं, सब सब्जेक्ट में पूरा ध्यान देना है। ज्ञान भी चाहिए, चलन भी ऐसी चाहिए, दैवीगुण भी चाहिए। अटेन्शन रखना अच्छा है। भण्डारी के पास भी कोई आये

तो कहे मनमनाभव। शिवबाबा को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। बाप को याद करते औरों को भी परिचय देते रहें। ज्ञान और योग चाहिए। बहुत इज़ी है। मुख्य बात है ही यह। अन्धों की लाठी बनना है। प्रदर्शनी में भी किसको ले जाओ, चलो हम आपको स्वर्ग का गेट दिखायें। यह नर्क है, वह स्वर्ग है। बाप कहते हैं मुझे याद करो, पवित्र बनो तो तुम पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे। मनमनाभव। हूबहू तुमको गीता सुनाते हैं इसलिए बाबा ने चित्र बनाया है- गीता का भगवान कौन? स्वर्ग का गेट कौन खोलते हैं? खोलता है शिवबाबा। कृष्ण उससे पार करता है और फिर नाम रख दिया है कृष्ण का। मुख्य चित्र है ही दो। बाकी तो रेज़गारी है। बच्चों को बहुत मीठा बनना है। प्यार से बात करनी है। मन्सा, वाचा, कर्मणा सबको सुख देना है। देखो भण्डारी सबको खुश करती है तो उनके लिए सौगात भी ले आते हैं। यह भी सब्जेक्ट है ना। सौगात आकर देते हैं, वह कहती है हम तुमसे क्यों लूँ, फिर तुम्हारी याद रहेगी। शिवबाबा के भण्डारे से मिलेगा तो हमको शिवबाबा की याद रहेगी।

○ यह संगमयुग बहुत कल्याणकारी है। तुम्हारी हर बात में कल्याण भरा हुआ है। भण्डारे में भी योग में रह भोजन बनायें तो बहुतों का कल्याण भरा हुआ है। श्रीनाथ द्वारे में भोजन बनाते हैं बिल्कुल ही साइलेन्स में। श्रीनाथ ही याद रहता है। भक्त अपनी भक्ति में बहुत मस्त रहते हैं। तुमको फिर ज्ञान में मस्त रहना चाहिए। कृष्ण की ऐसी भक्ति होती है, बात मत पूछो। वृन्दावन में दो बच्चियाँ हैं, पूरी भक्तिन हैं, कहती हैं बस हम यहाँ ही रहेंगी। यहाँ ही शरीर छोड़ेंगी, कृष्ण की याद में। उनको बहुत कहते हैं अच्छे मकान में चलकर रहो, ज्ञान लो, बोलती हैं हम तो यहाँ ही रहेंगी। तो उसको कहेंगे भक्त शिरोमणी। कृष्ण पर कितना न्योछावर जाते हैं। अभी तुमको बाप पर न्योछावर होना है। पहले-पहले शुरू में शिवबाबा पर कितने न्योछावर हुए। ढेर के ढेर आये। जब इन्डिया में आये तो बहुतों को अपना घरबार याद पड़ने लगा। कितने चले गये।

ग्रहचारी तो बहुतों पर आती है ना। कभी कैसी दशा, कभी कैसी दशा बैठती है। बाबा ने समझाया है कोई भी आते हैं तो बोलो कहाँ आये हो? बाहर में बोर्ड देखा-ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। यह तो परिवार है ना। एक है निराकार परमपिता परमात्मा। दूसरा फिर प्रजापिता ब्रह्मा भी गाया हुआ है। यह सब उनके बच्चे हैं, दादा है शिवबाबा। वर्सा उनसे मिलता है। वह राय देते हैं मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे। कल्प पहले भी ऐसी राय दी थी। कितनी ऊंची पढ़ाई है। यह भी तुम्हारी बुद्धि में है हम बाप से वर्सा ले रहे हैं।

- मामेकम् याद करो। मैं तुम सभी आशिकों का माशुक हूँ। सभी एक माशुक को याद करते हैं। रचना का क्रियेटर एक ही बाप है। वह कहते हैं देही- अभिमानी बन मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे। यह योग बाप अभी ही सिखलाते हैं जबकि पुरानी दुनिया बदल रही है। विनाश सामने खड़ा है। अभी हम देवता बन रहे हैं। बाप कितना सहज बताते हैं। बाप के सामने भल सुनते हैं परन्तु एकरस हो नहीं सुनते। बुद्धि और और तरफ भागती रहती है। भक्ति में भी ऐसे होता है। सारा दिन तो वेस्ट जाता है बाकी जो टाइम मुकरर करते हैं, उसमें भी बुद्धि कहाँ- कहाँ चली जाती है। सबका ऐसा हाल होता होगा। माया है ना!

- बाप कहते हैं इतनी बातें याद न कर सको, अच्छा अपने को बाप का बच्चा तो समझो। अच्छे अच्छे बच्चे भी भूल जाते हैं। बाप को याद नहीं करते हैं। माया इसमें भुलाती है। तुम भी पहले माया के मुरीद थे ना। अब ईश्वर के बनते हो। वह ड्रामा में पार्ट है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। जब तुम आत्मा पहले पहले शरीर में आई थी तो पवित्र थी, फिर पुनर्जन्म लेते लेते पतित बनी हो। अब फिर बाप कहते हैं नष्टोमोहा बनो। इस शरीर में भी मोह न रखो।

- राजयोग सीख रहे हैं। दैवीगुण धारण करते हैं नई दुनिया के लिए। जो संगमयुग पर नहीं वह दिन प्रतिदिन तमोप्रधान बनते ही जाते हैं। उस तरफ तमोप्रधानता बढ़ती जाती है, इस तरफ तुम्हारा संगमयुग पूरा होता जा रहा है। यह समझने की बातें हैं ना। समझाने वाले भी नम्बरवार हैं। बाबा रोज़ पुरुषार्थ कराते हैं। निश्चयबुद्धि विजयन्ती। बच्चों में तिक तिक करने की आदत बहुत है। बाप को याद करते ही नहीं। याद करना बड़ा कठिन है। बाप को याद करना छोड़ अपनी ही तिक तिक सुनाते रहते हैं। बाप कहते हैं जब दुर्गति अर्थात् मेरी निंदा पूरी होने का समय होता है तब मैं आता हूँ। आधाकल्प उन्हों को निंदा करनी ही है, जिनकी भी पूजा करते, आक्यूपेशन का पता नहीं। तुम बच्चे बैठ समझाते हो परन्तु खुद का ही बाबा से योग नहीं तो औरों को क्या समझा सकेंगे। भल शिवबाबा कहते हैं परन्तु योग में बिल्कुल रहते नहीं तो विकर्म भी विनाश नहीं होते हैं, धारणा नहीं होती है। मुख्य बात है एक बाप को याद करना।

- जो पतित-पावन बाप है उनको ही याद करना है, उनकी याद से ही तुम पावन बनेंगे। नहीं तो बन नहीं सकते। ऊंच ते ऊंच एक ही बाप है। कई बच्चे समझते हैं हम सम्पूर्ण बन गये। हम कम्पलीट तैयार हो गये। ऐसे समझ अपनी दिल को खुश कर लेते हैं। यह भी मिया मिट्ठू बनना है। बाबा कहते मीठे बच्चे, अभी बहुत पुरूषार्थ करना है। पावन बन जायेंगे तो फिर दुनिया भी पावन चाहिए। एक तो जा न सके। कोई कितनी भी कोशिश करे कि हम जल्दी कर्मातीत बन जायें- परन्तु होगा नहीं।

- हम आत्मायें जो पावन थी वही पतित बनी हैं फिर हमको पावन बनना है। उसके लिए स्वीट फादर को याद करना है। उनसे स्वीट और कोई चीज़ होती नहीं। इस याद करने में ही माया के विघ्न पड़ते हैं। यह भी जानते हो बाबा हमको अमर बनाने आये हैं। पुरूषार्थ कर अमर बन, अमरपुरी का मालिक बनना है। अमर तो सब बनेंगे। सतयुग को कहा ही जाता है अमरलोक।

यह है मृत्युलोक। यह अमरकथा है, ऐसे नहीं कि सिर्फ शंकर ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। तुम बच्चे सिर्फ मुझ एक से ही सुनो। मामेकम् याद करो। ज्ञान मैं ही दे सकता हूँ। ड्रामा प्लेन अनुसार सारी दुनिया तमोप्रधान बनी है। अमरपुरी में राज्य करना-उसको ही अमर पद कहा जाता है। वहाँ इनश्योर कम्पनियाँ आदि होती नहीं। अभी तुम्हारी लाइफ इनश्योर कर रहे हैं। तुम कभी मरेंगे नहीं। यह बुद्धि में खुशी रहनी चाहिए। हम अमरपुरी के मालिक बनते हैं, तो अमरपुरी को याद करना पड़े। वाया मूलवतन ही जाना होता है। यह भी मनमनाभव हो जाता। मूलवतन है मनमनाभव, अमरपुरी है मध्याजीत भव। हर एक बात में दो अक्षर ही आते हैं। तुमको कितने प्रकार से अर्थ समझाते हैं। तो बुद्धि में बैठे। सबसे जास्ती मेहनत है ही इसमें। अपने को आत्मा निश्चय करना है। हम आत्मा ने यह जन्म लिया है। 84 जन्म में भिन्न-भिन्न नाम, रूप, देश, काल फिरते आये हैं। सतयुग में इतने जन्म, त्रेता में इतने....... यह भी बहुत बच्चे भूल जाते हैं। मुख्य बात है अपने को आत्मा समझ स्वीट बाप को याद करना। उठते-बैठते यह बुद्धि में रहने से खुशी रहेगी। फिर से बाबा आया हुआ है, जिसको हम आधाकल्प याद करते थे कि आओ आकर पावन बनाओ। पावन रहते हैं मूलवतन में और अमरपुरी सतयुग में। भक्ति में मनुष्य पुरूषार्थ करते हैं मुक्ति में वा कृष्णपुरी में जाने के लिए। मुक्ति कहो अथवा निर्वाणधाम कहो, वानप्रस्थ अक्षर करेक्ट है। वानप्रस्थी तो शहर में ही रहते हैं।

- जो अच्छी रीति धारणा करते हैं, बाप को याद करते हैं- उनके चेहरे से ही मालूम पड़ जाता है। बाबा हम तो आपसे पूरा वर्सा लेंगे तो उनके अन्दर खुशी के ढोल बजते रहेंगे, सर्विस का बहुत शौक होगा। रिफ्रेश हुए और यह भागे। सर्विस के लिए हर एक सेन्टर से बहुत तैयार होने चाहिए। तुम्हारी सर्विस तो बहुत फैलती जायेगी। तुम्हारे साथ मिलते जायेंगे। आखरीन एक दिन सन्यासी भी आयेंगे।

- तो बाप कहते हैं अन्दर में अपनी जांच करते रहो कि हम कितना ऊंच पद पायेंगे? हमारी चलन कैसी है? कोई खान-पान की लालच तो नहीं है? कोई आदत नहीं रहनी चाहिए। मूल बात है अव्यभिचारी याद में रहना। दिल से पूछो-हम किसको याद करता हूँ? कितना समय दूसरों को याद करता हूँ? नॉलेज भी धारण करनी है, पाप भी काटने हैं। कोई-कोई ने ऐसे पाप किये हैं जो बात मत पूछो। भगवान कहते हैं यह करो परन्तु कह देते हैं परवश हैं अर्थात् माया के वश हैं। अच्छा, माया के वश ही रहो। तुम्हें या तो श्रीमत पर चलना है या तो अपनी मत पर। देखना है इस हालत में हम कहाँ तक पास होंगे? क्या पद पायेंगे? 21 जन्म का घाटा पड़ जाता है। जब कर्मातीत अवस्था हो जायेगी तो फिर देह-अभिमान का नाम नहीं रहेगा इसलिए कहा जाता है देही-अभिमानी बनो। अच्छा!

- कोई भी साकार वा आकार को याद नहीं करो, सिवाए एक बाप के। यह तो बिल्कुल सहज है ना। मनुष्य कहते हैं हम बिजी रहते हैं, फुर्सत नहीं। परन्तु इसमें तो फुर्सत सदैव है। बाप युक्ति बतलाते हैं यह भी जानते हो बाप को याद करने से ही हमारे पाप भस्म होंगे। मुख्य बात है यह। धन्धे आदि की कोई मना नहीं है। वह सब करते हुए सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों।

- लक्ष्मी-नारायण की शक्ल देखो कैसी खुशनुमः है। तो पुरुषार्थ कर ऐसा ऊंच पद पाना चाहिए ना। बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं तो उनका निरादर क्यों करना चाहिए! रत्नों से झोली भरनी चाहिए। सुनते तो हैं परन्तु झोली नहीं भरते क्योंकि बाप को याद नहीं करते। आसुरी चलन चलते हैं। बाप बार-बार समझाते रहते हैं- अपने पर रहम करो, दैवीगुण धारण करो। वह है ही आसुरी सप्रदाय। उनको बाप आकर परिस्तानी बनाते हैं। परिस्तान स्वर्ग को कहा जाता है।

○ ऊंच ते ऊंच बाप की तरफ ही दृष्टि रहे - यह है बहुत ऊंच पुरुषार्थ। बाप कहते हैं-बच्चे, कुदृष्टि छोड़ दो। देह-अभिमान माना कुदृष्टि, देही-अभिमानी माना शुद्ध दृष्टि। तो बच्चों की दृष्टि बाप की तरफ रहनी चाहिए। वर्सा बहुत ऊंच है-विश्व की बादशाही, कम बात है! स्वप्न में भी किसको नहीं होगा कि पढ़ाई से, योग से विश्व की बादशाही मिल सकती है। पढ़कर ऊंच पद पायेंगे तो बाप भी खुश होगा, टीचर भी खुश होगा, सतगुरू भी खुश होगा। याद करते रहेंगे तो बाप भी पुचकार देते रहेंगे। बाप कहते हैं-बच्चे, यह खामियां निकाल दो। नहीं तो मुफ्त नाम बदनाम करेंगे। बाप तो विश्व का मालिक बनाते, सौभाग्य खोलते हैं। भारतवासी ही 100 प्रतिशत सौभाग्यशाली थे सो फिर 100 प्रतिशत दुर्भाग्यशाली बने हैं फिर तुमको सौभाग्यशाली बनाने के लिए पढ़ाया जाता है।

○ बाप को लिबरेटर कहा जाता है ना। लिबरेटर और गाइड कौन है, उनका परिचय देना है। सुप्रीम गॉड फादर आते हैं, सबको लिबरेट करते हैं। बाप कहते हैं तुम कितने पतित बन गये हो। प्योरिटी है नहीं। अब मुझे याद करो। बाप तो एवर प्योर है। बाकी सब पवित्र से अपवित्र जरूर बनते हैं। पुनर्जन्म लेते-लेते उतरते आते हैं। इस समय सब पतित हैं इसलिए बाप राय देते हैं-बच्चे, तुम मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे। अब मौत तो सामने खड़ा है। पुरानी दुनिया का अब अन्त है। माया का पॉम्प कितना है इसलिए मनुष्य समझते हैं यह तो स्वर्ग है। एरोप्लेन, बिजलियाँ आदि क्या-क्या हैं, यह है सब माया का पॉम्प। यह अब खत्म होना है। बाप को याद करो। तुमको भी योग में रहने का ही पुरूषार्थ बहुत करना है, इसमें ही माया के तूफान बहुत आते हैं। बाप सिर्फ कहते हैं मामेकम् याद करो। यह तो अच्छी बात है ना। क्राइस्ट भी उनकी रचना है,

रचयिता सुप्रीम सोल तो एक है। बाकी सब है रचना। वर्सा रचता से ही मिलता है। ऐसे-ऐसे अच्छी प्वाइंट जो हैं वह नोट करनी चाहिए।

- यहाँ तो तुमको कभी उबासी नहीं आनी चाहिए। कमाई के समय कभी उबासी नहीं आती है। ग्राहक नहीं होंगे, धंधा ठण्डा होगा तो उबासी आती रहेगी। यहाँ भी धारणा नहीं होती है। कोई तो बिल्कुल समझते नहीं हैं क्योंकि देह-अभिमान है। देही-अभिमानी हो बैठ नहीं सकेंगे। कोई न कोई बाहर की बातें याद आ जायेंगी। प्वाइंट्स आदि भी नोट नहीं कर सकेंगे। शुरूड बुद्धि झट नोट करेंगे-यह प्वाइंट्स बहुत अच्छी हैं। स्टूडेन्ट्स की चलन भी टीचर को देखने में आती है ना। सेन्सीबुल टीचर की नजर सब तरफ फिरती रहती है तब तो सर्टीफिकेट देते हैं पढ़ाई का। मैनर्स का सर्टीफिकेट निकालते हैं। कितना अबसेन्ट रहा, वह भी निकालते हैं।

- बाप समझाते हैं-मीठे बच्चे, विश्व का मालिक बनने के लिए बाप ने तुम्हें जो परहेज बताई है वह परहेज करो, याद में रहकर भोजन बनाओ, योग में रहकर खाओ। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो तो तुम विश्व के मालिक फिर से बन जायेंगे। बाप भी फिर से आया हुआ है। अब विश्व का मालिक पूरा बनना है। फालो फादर-मदर। सिर्फ फादर तो हो नहीं सकता। सन्यासी लोग कहते हैं हम सब फादर हैं। आत्मा सो परमात्मा है, वह तो रांग हो जाता है। यहाँ मदर फादर दोनों पुरूषार्थ करते हैं। फालो मदर फादर, यह अक्षर भी यहाँ के हैं। अभी तुम जानते हो जो विश्व के मालिक थे, पवित्र थे, अब वह अपवित्र हैं। फिर से पवित्र बन रहे हैं। हम भी उनकी श्रीमत पर चल यह पद प्राप्त करते हैं। वह इन द्वारा डायरेक्शन देते हैं उस पर चलना है, फालो नहीं करते तो सिर्फ बाबा-बाबा कह मुख मीठा करते हैं। फालो करने वाले को ही सपूत बच्चे कहेंगे ना। जानते हो मम्मा-बाबा को फालो करने से हम राजाई में जायेंगे। यह समझ की बात है। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हों। बस और कोई को भी यह समझाओ

- तुम कैसे 84 जन्म लेते-लेते अपवित्र बने हो। अब फिर पवित्र बनना है। जितना याद करेंगे तो पवित्र होते जायेंगे। बहुत याद करने वाले ही नई दुनिया में पहले-पहले आयेंगे। फिर औरों को भी आपसमान बनाना है। प्रदर्शनी में बाबा-मम्मा समझाने लिए जा नहीं सकते। बाहर से कोई बड़ा आदमी आता है तो कितने ढेर मनुष्य जाते हैं, उनको देखने के लिए कि यह कौन आया है। यह तो कितना गुप्त है। बाप कहते हैं मैं इस ब्रह्मा तन से बोलता हूँ, मैं ही इस बच्चे का रेसपॉन्सिबुल हूँ। तुम हमेशा समझो शिवबाबा बोलते हैं, वह पढ़ाते हैं। तुमको शिवबाबा को ही देखना है, इनको नहीं देखना है। अपने को आत्मा समझो और परमात्मा बाप को याद करो। हम आत्मा हैं। आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। यह नॉलेज बुद्धि में चक्र लगानी चाहिए। सिर्फ दुनियावी बातें ही बुद्धि में होंगी तो गोया कुछ नहीं जानते। बिल्कुल ही बदतर हैं। परन्तु ऐसे-ऐसे का भी कल्याण तो करना ही है। स्वर्ग में तो जायेंगे परन्तु ऊंच पद नहीं। सजायें खाकर जायेंगे। ऊंच पद कैसे पायेंगे, वह तो बाप ने समझाया है। एक तो स्वदर्शन चक्रधारी बनो और बनाओ। योगी भी पक्के बनो और बनाओ। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तुम फिर कहते बाबा हम भूल जाते हैं। लज्जा नहीं आती! बहुत हैं जो सच बताते नहीं हैं, भूलते बहुत हैं। बाप ने समझाया है कोई भी आये तो उनको बाप का परिचय दो। अब 84 का चक्र पूरा होता है, वापिस जाना है। राम गयो रावण गयो........ इसका भी अर्थ कितना सहज है। जरूर संगमयुग होगा जबकि राम का और रावण का परिवार है। यह भी जानते हो सब विनाश हो जायेंगे, बाकी थोड़े रहेंगे। कैसे तुमको राज्य मिलता है, वह भी थोड़ा आगे चल सब मालूम पड़ जायेगा। पहले से ही तो सब नहीं बतायेंगे ना। फिर वह तो खेल हो न सके। तुमको साक्षी हो देखना है। साक्षात्कार होते जायेंगे। इस 84 के चक्र को दुनिया में कोई नहीं जानते।

○ कहते हैं तुम विकार में जाते-जाते वेश्यालय में आकर पड़े हो। तुम सतयुग में पवित्र थे, यह राधे-कृष्ण पवित्र प्रिन्स-प्रिन्सेज हैं ना। रूद्र माला भी देखो, विष्णु की माला भी देखो। रूद्र

माला सो विष्णु की माला बनेगी। वैजयन्ती माला में आने के लिए बाप समझाते हैं - पहले तो निरन्तर बाप को याद करो, अपना टाइम वेस्ट मत करो। इन कौड़ियों पिछाड़ी बन्दर मत बनो। बन्दर चने खाते हैं। अभी तुमको बाप रत्न दे रहे हैं। फिर कौड़ियों अथवा चने पिछाड़ी जायेंगे तो क्या हाल होगा! रावण की कैद में चले जायेंगे। बाप आकर रावण की कैद से छुड़ाते हैं। कहते हैं देह सहित देह के सब सम्बन्धों से बुद्धि का त्याग करो। अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प भारत में ही आता हूँ। भारतवासी बच्चों को विश्व का क्राउन प्रिन्स-प्रिन्सेज बनाता हूँ। कितना सहज पढ़ाते हैं, ऐसे भी नहीं कहते कोई 4-8 घण्टा आकर बैठो। नहीं, गृहस्थ व्यवहार में रहते अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे। विकार में जाने वाले को पतित कहा जाता है। देवतायें पावन हैं इसलिए उन्हों की महिमा गाई जाती है। बाप समझाते हैं वह है अल्पकाल क्षण भंगुर का सुख। सन्यासी ठीक कहते हैं कि काग विष्टा समान सुख है। परन्तु उनको यह पता नहीं कि देवताओं को कितना सुख है। नाम ही सुखधाम है।

- भगवान पढ़ाते हैं तो उनका कितना रिगार्ड रखना चाहिए। कितना पढ़ना चाहिए। कई बच्चे हैं जिन्हें पढ़ाई का शौक नहीं है। तुम बच्चों को यह तो बुद्धि में रहना चाहिए ना-हम बाबा द्वारा क्राउन प्रिन्स-प्रिन्सेज बन रहे हैं। अब बाप कहते हैं मेरी मत पर चलो, बाप को याद करो। घड़ी-घड़ी कहते हैं हम भूल जाते हैं। स्टूडेन्ट कहें हम शब्क (पाठ) भूल जाते हैं, तो टीचर क्या करेंगे! याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। क्या टीचर सब पर कृपा वा आशीर्वाद करेंगे कि यह पास हो जाए। यहाँ यह आशीर्वाद कृपा की बात नहीं। बाप कहते हैं पढ़ो। भल धंधा आदि करो, परन्तु पढ़ना जरूरी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनो, औरों को भी रास्ता बताओ। दिल से पूछना चाहिए हम बाप की खिदमत में कितना हैं? कितनों को आप-समान बनाते हैं? त्रिमूर्ति चित्र तो सामने रखा है।

○ बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। सन्यासी लोग तो हठयोग आदि की कितनी मेहनत करते हैं। यहाँ तो यह कुछ नहीं है। सिर्फ याद करो तो पाप भस्म हो जायेंगे, इसमें कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ याद के यात्रा की बात है। उठो बैठो, कर्मेन्द्रियों से भल कर्म भी करो, सिर्फ बुद्धि का योग बाप से लगाओ। सच्चा-सच्चा आशिक बनना है उस माशूक का। खुद कहते हैं कि हे आशिकों, हे बच्चों! भक्ति मार्ग में तो बहुत याद किया। लेकिन अब मुझ माशूक को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म होंगे। मैं गैरन्टी करता हूँ। कोई-कोई बात शास्त्र में आ गई है।

○ बाबा सदैव कहते हैं– तुम्हारे पास ज्ञान तो है परन्तु योग का जौहर नहीं है। प्योरिटी और याद में रहने से ही जौहर आता है। याद की यात्रा से तुम पवित्र बनते हो। ताकत मिलती है। ज्ञान तो है धन की बात। जैसे स्कूल में पढ़कर एम.ए., बी.ए. आदि करते हैं तो इतना फिर पैसा मिलता है। यहाँ की दूसरी बात है। भारत का प्राचीन योग तो मशहूर है। यह है याद । बाप सर्वशक्तिमान् है तो बच्चों को बाप से शक्ति मिलती है। बच्चों को अन्दर में रहना चाहिए– हम आत्मायें बाबा की सन्तान हैं, परन्तु बाबा जितने हम पवित्र नहीं हैं। अब बनना है। अभी है एम-ऑबजेक्ट। योग से ही तुम पवित्र बनते हो। जो अनन्य बच्चे हैं वह सारा दिन यही ख्यालात करते रहेंगे। कोई भी आये तो उनको हम रास्ता बतायें, तरस आना चाहिए, बिचारे अन्धे हैं। अन्धे को लाठी पकड़ाकर ले जाते हैं ना। यह सब अन्धे हैं, ज्ञान चक्षु हैं नहीं।

○ बाबा जरूर सत्य ही बोलते हैं, संशयबुद्धि विनश्यन्ती। वह पूरा वर्सा नहीं पायेंगे। आत्म-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। खाना पकाते बुद्धि बाप की तरफ लगी रहे। हर बात में यह प्रैक्टिस करनी चाहिए। रोटी बेलते, अपने माशूक को याद करते रहना– यह अभ्यास हर बात में चाहिए। जितना समय फुर्सत मिले याद करना है। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। 8 घण्टा कर्म के लिए छुट्टी है। बीच में भी एकान्त में जाकर बैठना चाहिए, तुम्हें सबको बाप का परिचय

भी सुनाना है। आज नहीं सुनेंगे तो कल सुनेंगे। बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं, हम स्वर्ग में थे अभी फिर नर्कवासी हुए हैं। अब फिर बाप से वर्सा मिलना चाहिए।

○ रूहानी बाप मीठे-मीठे बच्चों को बैठ समझाते हैं, बच्चे अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे सब दु:ख सदा के लिए मिट जायेंगे। अपने को आत्मा समझ सबको भाई-भाई की दृष्टि से देखो तो फिर देह की दृष्टि वृत्ति बदल जायेगी। बाप भी अशरीरी है, तुम आत्मा भी अशरीरी हो। बाप आत्माओं को ही देखते हैं, सब अकालतख्त पर विराजमान आत्मायें हैं। तुम भी आत्मा भाई-भाई की दृष्टि से देखो, इसमें बड़ी मेहनत है। देह के भान में आने से ही माया के तूफान आते हैं। यह देह-अभिमान का द्वार बन्द कर दो तो माया के तूफान आना बन्द हो जायेंगे। यह देही-अभिमानी बनने की शिक्षा सारे कल्प में इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर बाप ही तुम बच्चों को देते हैं।

○ मीठे बच्चे तुम्हारा यह बहुत लवली परिवार है, तो तुम हर एक को बहुत-बहुत लवली होना चाहिए। बाप भी मीठा है तो बच्चों को भी ऐसा मीठा बनाते हैं। कभी किसी पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। मन्सा वाचा कर्मणा किसी को दु:ख नहीं देना है। बाप कभी किसको दु:ख नहीं देते। जितना बाप को याद करेंगे उतना मीठा बनते जायेंगे। बस इस याद से ही बेड़ा पार है– यह है याद की यात्रा। याद करते-करते वाया शान्तिधाम सुखधाम जाना है। बाप आये ही हैं बच्चों को सदा सुखी बनाने। भूतों को भगाने की युक्ति बाप बतलाते हैं मुझे याद करो तो यह भूत निकलते जायेंगे। कोई भी भूत को साथ में नहीं ले जाओ। कोई में भूत हो तो यहाँ ही मेरे पास छोड़ जाओ। तुम कहते ही हो बाबा आकर हमारे भूतों को निकाल पतित से पावन बनाओ। तो बाप कितना गुल-गुल बनाते हैं। बाप और दादा दोनों मिलकर तुम बच्चों का श्रृंगार करते हैं। मात-पिता ही बच्चों का श्रृंगार करते हैं ना। वह हैं हद के बाप– यह है बेहद का बाप। तो बच्चों को बहुत प्यार से चलना और चलाना है।

○ मूल बात मीठे बच्चों को बाप समझाते हैं देही-अभिमानी बनो। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल मामेकम् याद करो, पावन भी जरूर बनना है। कुमारी जब पवित्र है तो सब उनको माथा टेकते हैं। शादी करने से फिर पुजारी बन पड़ती है। सबके आगे माथा झुकाना पड़ता है। कन्या पहले पियरघर में होती है तो इतने जास्ती सम्बन्ध याद नहीं आते। शादी के बाद देह के सम्बन्ध भी बढ़ते जाते फिर पति बच्चों में मोह बढ़ता जाता। सासू-ससुर आदि सब याद आते रहेंगे। पहले तो सिर्फ माँ-बाप में ही मोह होता है। यहाँ तो फिर उन सब सम्बन्धों को भुलाना पड़ता है क्योंकि यह एक ही तुम्हारा सच्चा-सच्चा मात-पिता है ना। यह है ईश्वरीय सम्बन्ध। गाते भी हैं त्वमेव माता च पिता त्वमेव.. यह मात पिता तो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं इसलिए बाप कहते हैं मुझ बेहद के बाप को निरन्तर याद करो और कोई भी देहधारी से ममत्व न रखो। स्त्री को कलियुगी पति की कितनी याद रहती है, वह तो गटर में गिराते हैं। यह बेहद का बाप तो तुमको स्वर्ग में ले जाते हैं। ऐसे मीठे बाप को बहुत प्यार से याद करते और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। इसी याद के बल से ही तुम्हारी आत्मा कंचन बन स्वर्ग की मालिक बन जायेगी। स्वर्ग का नाम सुनकर ही दिल खुश हो जाती है। जो निरन्तर याद करते और औरों को भी याद कराते रहेंगे वही ऊंच पद पायेंगे। यह पुरूषार्थ करते-करते अन्त में तुम्हारी वह अवस्था जम जायेगी। यह तो दुनिया भी पुरानी है, देह भी पुरानी है, देह सहित देह के सब सम्बन्ध भी पुराने हैं। उन सबसे बुद्धियोग हटाए एक बाप संग जोड़ना है, जो अन्तकाल भी उस एक बाप की ही याद रहे और कोई का सम्बन्ध याद होगा तो फिर अन्त में भी वह याद आ जायेगा और पद भ्रष्ट हो जायेगा। अन्तकाल जो बेहद बाप की याद में रहेंगे वही नर से नारायण बनेंगे। बाप की याद है तो फिर शिवालय दूर नहीं।

○ तुम जानते हो कि बाबा हमको फिर से स्वर्ग की बादशाही दे रहे हैं और कहते हैं, हे बच्चे मुझे याद करो तो तुम्हारे ऊपर जो कट है, वह निकल जाये। बच्चे कहते, बाबा हम भूल जाते हैं।

यह क्या? कन्या जब शादी करती है तो पति को कभी भूलती है क्या! बच्चे कभी बाप को भूलते हैं क्या? बाप तो दाता है। वर्सा बच्चों को लेना है तो जरूर याद करना पड़े।

- कल हमने ही पार्ट बजाया था। 5 हजार वर्ष का पार्ट सारा नूँधा हुआ है। हम चक्र लगाकर आये हैं। अब फिर बाबा से योग लगाते हैं, इससे ही खाद निकलती है। बाप याद आयेगा तो वर्सा भी जरूर याद आयेगा। पहले-पहले अल्फ को जानना है। बाप कहते हैं, तुम मेरे को जानने से मेरे द्वारा सब कुछ जान जायेंगे। ज्ञान तो बड़ा सहज है, एक सेकण्ड का। फिर भी समझाते रहते हैं। प्वाइंट्स देते रहते हैं। मुख्य प्वाइंट है मनमनाभव, इसमें ही विघ्न पड़ते हैं। देह-अभिमान आ जाने से फिर अनेक प्रकार के घुटके आ जाते हैं, फिर योग में रहने नहीं देते हैं। जैसे भक्ति मार्ग में कृष्ण की याद में बैठते हैं तो बुद्धि कहाँ-कहाँ भाग जाती है। भक्ति का अनुभव तो सबको है। इस जन्म की बात है। इस जन्म को जानने से कुछ न कुछ पास्ट जन्म को भी समझ सकते हैं। बच्चों को हॉबी हो गई है - बाप को याद करने की। जितना याद करते हो उतना खुशी बढ़ती है। साथ-साथ दिव्य अलौकिक कर्म भी करना है। तुम हो ब्राह्मण। तुम सत्य नारायण की कथा, अमरकथा सुनाते हो। मूल बात एक है - जिसमें सब कुछ आ जाता है। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। यह एक ही हॉबी, रूहानी है। आत्मा कहती है कि हमने तो 84 जन्म पूरे किये हैं। अब फिर हम बाप से पूरा वर्सा लेंगे। हिम्मत रखते हैं, फिर भी माया से लड़ाई तो है। आगे तो यह बाबा है। माया के तूफान जास्ती इनके पास आते हैं। बहुत आकर पूछते हैं कि बाबा हमको यह होता है। बाबा बताते हैं कि बच्चे - हाँ, यह तूफान तो जरूर आयेंगे। पहले तो मेरे पास आते हैं। अन्त में सब कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे।

- तुम हो बहुत थोड़े। यह तो 100 परसेंट सरटेन है कि यह रूहानी नॉलेज बच्चों ने रूहानी बाप से ली है। नॉलेज सोर्स ऑफ इनकम है। बहुत धन मिलता है। योग से सोर्स ऑफ हेल्थ अर्थात् निरोगी काया मिलती है। ज्ञान से वेल्थ। यह हैं दो मुख्य सब्जेक्ट। फिर कोई अच्छी तरह धारण करते हैं, कोई कम धारण करते हैं। तो वेल्थ भी कम नम्बरवार मिलती है। सजायें आदि खाकर जाए पद पाते हैं। पूरा याद नहीं करते तो विकर्म विनाश नहीं होते हैं। फिर सज़ायें खानी पड़ें। पद भी भ्रष्ट हो पड़ता है। जैसे स्कूल में होता है। यह है बेहद की नॉलेज, इससे बेड़ा पार हो जाता है। उस नॉलेज में बैरिस्टरी, डॉक्टरी, इन्जीनियरी पढ़ना पड़ता है। यह तो एक ही पढ़ाई है। योग और ज्ञान से एवरहेल्दी, वेल्दी बनते हैं। प्रिन्स बन जाते हैं। वहाँ स्वर्ग में कोई बैरिस्टर, जज आदि नहीं होते हैं।

- अब बच्चे कहते हैं - बाबा हम पुरानी दुनिया, पुराने शरीर को भूलते हैं। अब आपके साथ अशरीरी बन घर चलेंगे। सबकी बुद्धि में है परमपिता परमात्मा परमधाम से आये हैं, हमको ले जाने के लिए। सिर्फ कहते हैं तुम पवित्र बन हमको याद करो। जीते जी मरना है। तुम जानते हो वहाँ घर में आत्मायें रहती हैं। सो भी आत्मा तो बिन्दी है। बाप आकर मरना सिखलाते हैं। कहते हैं अपने बाप को, अपने घर को याद करो। खूब पुरूषार्थ करो। योग में रहने से पाप नाश होंगे। फिर आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेगी इसलिए बाप राय देते हैं - कल्प पहले भी कहा था कि देह के सब सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो।

- हमेशा समझो कि शिवबाबा ही कहते हैं, यह कुछ नहीं जानते। ऐसे ही समझो। एक तरफ तो निश्चय रखना चाहिए, शिवबाबा कहते मेरा मानते रहो तो तुम्हारा कल्याण होता रहेगा। यह ब्रह्मा भी अगर कुछ कहते हैं, तो उनका भी रेसपान्सिबुल मैं हूँ। तुम बच्चे फिकर नहीं करो। शिवबाबा को याद करने से अवस्था और ही पक्की हो जायेगी। निश्चय में विकर्म भी विनाश

होंगे, बल भी मिलेगा। जितना बाबा को याद करेंगे उतना बल जास्ती मिलेगा। जो श्रीमत पर चल सर्विस करते हैं वही ऊंच पद पायेंगे। बहुतों में देह-अभिमान बहुत रहता है। बाबा देखो सब बच्चों से कैसे प्यार से चलता है। सबसे बात करते रहते हैं। बच्चों से पूछते हैं कि ठीक बैठे हो! कोई तकलीफ तो नहीं है! लव होता है बच्चों के लिए। बेहद के बाप को बच्चों के लिए बहुत-बहुत लव है। जो जितनी श्रीमत पर सर्विस करते हैं उस अनुसार लव रहता है। सर्विस में ही फायदा है। सर्विस में हडिड्याँ देनी हैं। कोई भी काम करते रहेंगे तो वह फिर दिल पर भी रहते हैं कि यह बच्चा फर्स्टक्लास है। परन्तु चलते-चलते किसी पर ग्रहचारी भी बैठती है। माया का सामना होता है ना। ग्रहचारी के कारण फिर ज्ञान उठा नहीं सकते। कई तो फिर कर्मणा सेवा अथक होकर करते हैं।

- हम 84 जन्म लेते हैं, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी ... बनते हैं। यह चक्र तो बहुत सहज है। समझ जाते हैं। परन्तु सिर्फ चक्र को जानने से इतना फायदा नहीं है, जितना अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करने में फायदा है। मैं आत्मा स्टार हूँ। फिर बाप भी स्टार अति सूक्ष्म है। वही सद्गति दाता है। उनको याद करने से ही विकर्म विनाश होने हैं। इस तरीके से कोई भी निरन्तर याद नहीं करते। देही-अभिमानी नहीं बनते हैं। घड़ी- घड़ी यह याद रहे मैं आत्मा हूँ। बाप का फरमान है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। मैं बिन्दी हूँ। यहाँ पार्टधारी आकर बना हूँ। मेरे में 5 विकारों की कट चढ़ी हुई है। आइरन एज़ में हैं। अब गोल्डन एज़ में जाना है इसलिए बाप को बहुत प्यार से याद करना है। इस रीति बाप को याद करेंगे तब कट निकल जायेगी। यह है मेहनत। सार्विस की लबार तो बहुत मारते हैं। आज यह सार्विस की, बहुत प्रभावित हुए परन्तु शिवबाबा समझते हैं आत्मा और परमात्मा के ज्ञान पर कुछ भी प्रभावित नहीं हुआ। भारत हेविन और हेल कैसे बनता है। 84 जन्म कैसे लेते हैं, सतो रजो तमो में कैसे आते हैं। सिर्फ यह सुनकर प्रभावित होते हैं। परमात्मा निराकार है, यह भी समझ जाते हैं। बाकी मैं आत्मा हूँ, मेरे में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। बाप भी बिन्दी है, उनमें सारा ज्ञान है। उनको याद करना है।

यह बातें कोई भी समझते नहीं। मुख्य बात समझते नहीं हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी की नॉलेज बाप ही देते हैं। गवर्मेन्ट भी चाहती है कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी होनी चाहिए। यह तो उनसे भी सूक्ष्म बातें हैं। आत्मा क्या है, उनमें कैसे 84 जन्मों का पार्ट है। वह भी अविनाशी है। यह याद करना, अपने को बिन्दी समझना और बाप को याद करना जिससे विकर्म विनाश हों - इस योग में कोई भी तत्पर नहीं रहते हैं। इस याद में रहें तो बहुत लवली हो जाएं। यह लक्ष्मी-नारायण देखो कितने लवली हैं। यहाँ के मनुष्य तो देखो कैसे हैं। खुद भी कहते हैं हमारे में कोई गुण नाहीं। हम जैसे मलेच्छ हैं, आप स्वच्छ हैं। जब अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करें तब सफलता मिले। नहीं तो सफलता बहुत थोड़ी मिलती है। समझते हैं हमारे में बहुत अच्छा ज्ञान है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हम जानते हैं। परन्तु योग का चार्ट नहीं बताते हैं। मुश्किल कोई हैं जो इस अवस्था में रहते हैं अर्थात् अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं। बहुतों को अभ्यास नहीं है। बाबा समझते हैं कि बच्चे सिर्फ ज्ञान का चक्र बुद्धि में फिराते हैं। बाकी मैं आत्मा हूँ, बाबा से हमको योग लगाना है, जिससे आइरन एज़ से निकल गोल्डन एज़ में जायेंगे। मुझ आत्मा को बाप को जानना है, उसकी याद में ही रहना है, यह बहुतों का अभ्यास कम है। बहुत आते भी हैं। अच्छा- अच्छा भी कहते हैं। बाकी उनको यह पता नहीं पड़ता कि अन्दर कितनी कट लगी हुई है। सुन्दर से श्याम बन गये हैं। फिर सुन्दर कैसे बने? यह कोई भी नहीं जानते हैं। सिर्फ हिस्ट्री-जॉग्राफी जानने का काम नहीं है। पावन कैसे बनें? सजा न खाने का उपाय है - सिर्फ याद में रहना। योग ठीक नहीं होगा तो धर्मराज की सज़ायें खायेंगे। यह बहुत बड़ी सब्जेक्ट है, जिसको कोई उठा नहीं सकते। ज्ञान में अपने को मियाँ मिट्ठू समझ बैठते हैं, इसमें कोई शक नहीं। मूल बात है योग की। योग में बहुत कच्चे हैं इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहो, सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। मैं आत्मा हूँ, मुझे बाप को याद करना है। बाप ने फरमान दिया है -मनमनाभव। यह है महामन्त्र। अपने को स्टार समझ बाप को भी स्टार समझो फिर बाप को याद करो। बाप का कोई बड़ा रूप नहीं सामने आता है। तो देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। विश्व के महाराजा महारानी एक बनते हैं, जिनकी लाखों प्रजा बनती है। प्रजा

तो बहुत है ना। हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना तो सहज है परन्तु जब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तब पावन बनेंगे। यह अभ्यास बड़ा डिफीकल्ट है। याद करने बैठेंगे तो बहुत तूफान विघ्न डालेंगे। कोई आधा घण्टा भी एकरस हो बैठे, बड़ा मुश्किल है। घड़ी-घड़ी भूल जायेंगे। इसमें सच्ची- सच्ची गुप्त मेहनत है। चक्र का राज़ जानना सहज है। बाकी देही-अभिमानी हो बाप को याद करना, यह मुश्किल कोई समझते हैं और उस एक्ट में आते हैं। बाप की याद से ही तुम पावन बनेंगे। निरोगी काया, बड़ी आयु मिलेगी। सिर्फ वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाने से माला का दाना नहीं बन सकते। दाना बनेंगे याद से। यह मेहनत कोई से पहुँचती नहीं है। खुद भी समझते हैं कि हम याद में नहीं रहते। अच्छे-अच्छे महारथी इस बात में ढीले हैं। मुख्य बात समझाना आता ही नहीं है। यह बात है भी मुश्किल। कल्प की आयु इन्होंने बड़ी कर दी है। तुम 5 हजार वर्ष सिद्ध करते हो। परन्तु आत्मा- परमात्मा का राज़ कुछ भी नहीं जानते हैं, याद ही नहीं करते हैं इसलिए अवस्था डगमगाती रहती है। देह-अभिमान बहुत है। देही-अभिमानी बनें तब माला का दाना बन सकें। ऐसे नहीं वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं इसलिए हम माला में नजदीक आ जायेंगे, नहीं। आत्मा इतनी छोटी है, इसमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। इस बात को पहले-पहले बुद्धि में लाना है, फिर चक्र को याद करना है। मूल बात है योग की। योगी अवस्था चाहिए। पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनना है। आत्मा पवित्र होगी योग से। योगबल वाले ही धर्मराज के डन्डों से बच सकते हैं। यह मेहनत बड़ी मुश्किल कोई से होती है। माया के तूफान भी बहुत आयेंगे। यह बहुत हड्डी गुप्त मेहनत है। लक्ष्मी-नारायण बनना मासी का घर नहीं है। यह अभ्यास हो जाए तो चलते फिरते बाप की याद आती रहे, इसको ही योग कहा जाता है। बाकी यह ज्ञान की बातें तो छोटे- छोटे बच्चे भी समझ जायेंगे। चित्रों में सब युग आदि लगे हुए हैं। यह तो कॉमन है। जब कोई भी कार्य शुरू करते हैं तो स्वास्तिका लगाते हैं। यह निशानी है सतयुग, त्रेता...की बाकी ऊपर में है छोटा-सा संगमयुग। तो पहले अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहेंगे तब ही वह शान्ति फैल सकती। योग से विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो कट निकल जायेगी। यह मेहनत है। एक

तो आधाकल्प देह-अभिमानी हो रहे हो। सतयुग में देही-अभिमानी रहते भी बाप को नहीं जानते। ज्ञान को नहीं जानते। इस समय जो तुमको नॉलेज मिलती है वह नॉलेज गुम हो जाती है। वहाँ सिर्फ इतना जानते हैं कि हम आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेते हैं। पार्ट बजाते हैं। इसमें फिकर की क्या बात है। हर एक को अपना-अपना पार्ट बजाना है। रोने से क्या होगा? यह समझाया जाता है अगर कुछ समझें तो शान्ति आ जाए। खुद समझेंगे तो औरों को भी समझायेंगे। बुजुर्ग लोग समझाते भी हैं, रोने से क्या वापिस थोड़ेही आयेंगे। शरीर छोड़ आत्मा निकल गई, इसमें रोने की क्या बात है। अज्ञानकाल में भी ऐसे समझते हैं। परन्तु वह यह थोड़ेही जानते हैं कि आत्मा और परमात्मा क्या चीज़ है। आत्मा में खाद पड़ी है, वह तो समझते आत्मा निर्लेप है। तो यह बहुत महीन बातें हैं। बाबा जानते हैं बहुत बच्चे याद में रहते नहीं हैं। सिर्फ समझाने से क्या होगा। बहुत प्रभावित हुआ, परन्तु इससे उसका कोई कल्याण थोड़ेही हुआ। आत्मा- परमात्मा की पहचान मिले तब समझें बरोबर हम उनके बच्चे हैं। बाप ही पतित-पावन है। हमको आकर दु:ख से छुड़ाता है। वह भी बिन्दी है। तो बाप को निरन्तर याद करना पड़े। बाकी हिस्ट्री-जॉग्राफी जानना कोई बड़ी बात नहीं है। भल समझने लिए आते हैं परन्तु इस अवस्था में तत्पर रहे कि मैं आत्मा हूँ, इसमें ही मेहनत है। आत्मा परमात्मा की बात तो तुमको भी बाप ही आकर समझाते हैं। सृष्टि का चक्र तो सहज है। जितना हो सके उठते बैठते देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है। देही-अभिमानी बहुत शान्त रहते हैं। समझते हैं मुझे साइलेन्स में जाना है। निराकारी दुनिया में जाकर विराजमान होना है। हमारा पार्ट अभी पूरा हुआ। बाप का रूप छोटा बिन्दी समझेंगे। वह कोई बड़ा लिंग नहीं है। बाबा बहुत छोटा है। वही नॉलेजफुल, सर्व के सद्गति दाता हैं। मैं आत्मा भी नॉलेजफुल बन रहा हूँ। ऐसा चिंतन जब चले तब ऊंच पद पा सकें। दुनिया भर में कोई आत्मा और परमात्मा को नहीं जानते।

○ रूहानी बच्चों ने गीत सुना। बच्चे जानते हैं अब घर चलना है। बाप आये हैं लेने के लिए। यह याद भी तब रहेगी जब आत्म-अभिमानी होंगे। देह-अभिमान में होंगे तो याद भी नहीं रहेगी।

बच्चे जानते हैं बाबा मुसाफ़िर होकर आया है। तुम भी मुसाफिर होकर आये थे। अब अपने घर को भूल गये हो। फिर बाप ने घर याद दिलाया है और रोज़-रोज़ समझाते हैं। जब तक सतोप्रधान नहीं बने हो तो चल नहीं सकेंगे। बच्चे समझते हैं बाबा तो ठीक कहते हैं। बाप भी बच्चों को जो श्रीमत देते हैं तो सपूत बच्चे उस पर चल पड़ते हैं। इस समय और तो कोई ऐसा बाप नहीं जो अच्छी मत देवे इसलिए दरबदर हो पड़े हैं। अब ईश्वरीय मत पर चलने से तुम सुखधाम में चले जायेंगे। वह है बेहद का वर्सा। रोज़ समझाते हैं। तो बच्चों को कितना हर्षित रहना चाहिए। सबको यहाँ तो नहीं बिठा सकते। घर में रहकर भी याद करना है। अभी पार्ट पूरा होने का है, अब वापिस घर चलना है। मनुष्य कितना भूले हुए हैं। कहा जाता है ना - यह तो अपना घर घाट ही भूल गये हैं। अब बाप कहते हैं घर को भी याद करो। अपनी राजधानी भी याद करो। अभी पार्ट पूरा होने का है, अब वापिस घर चलना है। क्या तुम भूल गये हो?

○ तुम सभी बी.के. शिवबाबा की मत पर चलते हो। ब्रह्मा भी उनकी मत पर चलते हैं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और सर्व संबंधों को हल्का करते जाओ। 8 घण्टा याद रखनी है बाकी 16 घण्टे में आराम वा धंधा आदि जो करना है सो करो। मैं बाप का बच्चा हूँ, यह नहीं भूलो। ऐसे भी नहीं यहाँ आकर हॉस्टल में रहना है। नहीं, गृहस्थ व्यवहार में बाल बच्चों के साथ रहना है। बाबा पास आते ही हैं रिफ्रेश होने। मथुरा, वृन्दावन में जाते हैं मधुबन का दीदार करने। छोटा मॉडल रूप में बना रखा है। अब तो यह बेहद की बात समझने की है।

○ तुम बच्चों को ही स्वदर्शन चक्रधारी बनाया है, फिर तुमने 84 जन्म भोगे। अब फिर मैं आया हूँ, कितना सहज समझाते रहते हैं। बाप को याद करो और मीठे बनो। एम ऑबजेक्ट सामने खड़ी है। बाप वकीलों का वकील है, सब झगड़ों से छुड़ा देते हैं। तुम बच्चों को आन्तरिक खुशी बहुत होनी चाहिए। हम बाबा के बच्चे बने हैं। बाप ने हमको एडाप्ट किया है वर्सा देने। यहाँ तुम

आते ही हो वर्सा लेने। बाप कहते हैं बाल-बच्चे आदि देखते हुए बुद्धि बाप और राजधानी की तरफ रहे। पढ़ाई कितनी सहज है। बाप जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको तुम भूल जाते हो। पहले अपने को आत्मा जरूर समझो। यह ज्ञान बाप संगम पर ही देते हैं क्योंकि संगम पर ही तुमको पतित से पावन होना है।

- योग को भी बाप की याद कही जाती है, जिसको अंग्रेजी में कम्यूनियन कहा जाता है। बाप से कम्यूनियन, टीचर से कम्यूनियन, गुरू से कम्यूनियन। यह है गॉड फादर से कम्यूनियन। खुद बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। मनुष्य गुरू आदि करते हैं, शास्त्र पढ़ते हैं। एम ऑब्जेक्ट कुछ भी नहीं। सद्गति तो होती नहीं। बाप तो कहते हैं हम आये हैं सबको वापिस ले जाने। अभी तुमको बाप के साथ बुद्धि का योग रखना है, तो तुम वहाँ जाए पहुँचेंगे। अच्छी रीति याद करने से विश्व के मालिक बनेंगे। यह लक्ष्मी-नारायण पैराडाइज़ के मालिक थे ना। यह कौन समझाने वाला है। बाप को कहा जाता है नॉलेजफुल। मनुष्य फिर कह देते अन्तर्यामी। वास्तव में अन्तर्यामी का अक्षर है नहीं। अन्दर रहने वाली, निवास करने वाली तो आत्मा है। आत्मा जो काम करती है, वह तो सब जानते हैं।

- यह बाबा भी धन्धे में जैसे नवाब था। कोई बात की परवाह नहीं रहती थी। जब देखा यह तो बाप पढ़ाते हैं, विनाश सामने खड़ा है तो फट से छोड़ दिया। यह जरूर समझा हमको बादशाही मिलती है तो फिर गदाई क्या करेंगे। तो तुम भी समझते हो भगवान पढ़ाते हैं, यह तो पूरी रीति पढ़ना चाहिए ना। उनकी मत पर चलना चाहिए। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप को तुम भूल जाते हो, लज्जा नहीं आती है, वह नशा नहीं चढ़ता है। यहाँ से बहुत अच्छा रिफ्रेश हो जाते हैं फिर वहाँ सोडावाटर हो जाते हैं। अब तुम बच्चे पुरूषार्थ करते

हो - गांव-गांव में सर्विस करने का। बाबा कहते हैं पहले-पहले तो यह बताओ कि आत्माओं का बाप कौन है। भगवान तो निराकार ही है। वही इस पतित दुनिया को पावन बनायेंगे। अच्छा।

○ अभी तुम जानते हो हमें पूरा पुण्य आत्मा बनना है - याद की यात्रा से। इसमें ही बहुत धोखा खाते हैं गफलत करने से। बाप कहते हैं इस समय गफ़लत अच्छी नहीं है। श्रीमत पर चलना है। उसमें भी मुख्य बात कहते हैं एक तो याद की यात्रा में रहो, दूसरा काम महाशत्रु पर जीत पानी है। बाप को सब पुकारते हैं क्योंकि उनसे शान्ति और सुख का वर्सा मिलता है आत्माओं को। आगे देह-अभिमानी थे तो कुछ पता नहीं पड़ता था। अभी बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाया जाता है। नये को पहले-पहले एक हद के, दूसरा बेहद के बाप का परिचय देना है। बेहद के बाप से स्वर्ग (बहिश्त) नसीब होता है। हद के बाप से दोज़क (नर्क) नसीब होता है।

○ तुम बच्चों को भी ख्याल रखना है-हम देवता बनते हैं। अब हम अपने घर जायेंगे। घर को याद कर खुश होना चाहिए। मनुष्य मुसाफ़िरी कर घर लौटते हैं तो खुशी होती है। हमारे अब 84 जन्म पूरे होते हैं। अब वापिस जाना है और फिर राजधानी में आयेंगे। बस घर और राजधानी याद है। यहाँ बैठे भी कोई- कोई को अपने कारखाने आदि याद रहते हैं। जैसे देखो बिड़ला है, कितने उनके कारखाने आदि हैं। सारा दिन उनको ख्यालात रहती होगी। उनको कहें बाबा को याद करो तो कितनी उनको अटक पड़ेगी। घड़ी-घड़ी धन्धा याद आता रहेगा। सबसे सहज है माताओं को, उनसे भी कन्याओं को। जीते जी मरना है, सारी दुनिया को भूल जाना है। तुम अपने को आत्मा समझ शिवबाबा के बनते हो, इसको जीते जी मरना कहा जाता है। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझ शिवबाबा का बन जाना है। शिवबाबा को ही याद करते रहना है क्योंकि पापों का बोझा सिर पर बहुत है। दिल तो सबकी होती है, हम जीते जी मरकर शिवबाबा का बन जायें। शरीर का भान न रहे। हम अशरीरी आये थे फिर

अशरीरी बनकर जाना है। बाप के बने हैं तो बाप के सिवाए दूसरा कोई याद न रहे। ऐसा जल्दी हो जाए तो फिर लड़ाई भी जल्दी लगे। बाबा कितना समझाते हैं हम तो शिवबाबा के हैं ना। हम वहाँ के रहने वाले हैं। यहाँ तो कितना दु:ख है। अभी यह अन्तिम जन्म है। बाप ने बताया है तुम सतोप्रधान थे तो और कोई नहीं था। तुम कितने साहूकार थे। भल इस समय पैसे कौड़ी हैं परन्तु यह तो कुछ है नहीं। कौड़ियां हैं। यह सब अल्पकाल सुख के लिए है।

○ यहाँ कदम-कदम पर अनेक प्रकार के दु:ख होते हैं। वहाँ यह सब दु:ख दूर हो जाते हैं। बाप को पुकारते हैं कि हमारे दु:ख दूर करो। तुम समझते हो दु:ख दूर सब होने हैं। सिर्फ बाप को याद करते रहें। सिवाए एक बाप के और कोई से वर्सा मिल नहीं सकता। बाप सारे विश्व का दु:ख दूर करते हैं। बाबा हमको पुरूषोत्तम बना रहे हैं। यह याद रहे तो भी खुशी रहे। भगवान पढ़ाते हैं, विश्व का मालिक बनाते हैं। यह भला याद करो। विनाश सामने खड़ा है। हम हैं संगमयुगी ब्राह्मण चोटी। प्रजापिता ब्रह्मा है तो जरूर ब्राह्मण भी होने चाहिए। तुमको भी समझाया है तब तो निश्चय किया है। बाकी मुख्य बात है याद की यात्रा, इसमें ही विघ्न पड़ते हैं। अपना चार्ट देखते रहो-कहाँ तक बाबा को याद करते हैं, कहाँ तक खुशी का पारा चढ़ता है? यह आन्तरिक खुशी रहनी चाहिए कि हमको बागवान-पतित पावन का हाथ मिला है, हम शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा हैण्ड-शेक करते हैं।

○ तुम तो विश्व के मालिक बनते हो। अब मामेकम् याद करो, पवित्र बनो तो झट पवित्र होने लग पड़े। पवित्र बनने बिगर तो ज्ञान की धारणा हो न सके। शेरणी के दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यह ज्ञान तो है - परमपिता परमात्मा का। इसको धारण करने के लिए भी सोने का बर्तन चाहिए। पवित्र चाहिए, तब धारणा हो। पवित्रता की प्रतिज्ञा करके फिर गिर पड़ते हैं तो योग की यात्रा ही खत्म हो जाती है। ज्ञान भी खत्म हो जाता है।

○ अब तुम बच्चों को बाप के साथ पूरा बुद्धियोग लगाना है, इसमें मूँझना नहीं है। भल विलायत में कहाँ भी जाओ सिर्फ एक बात पक्की रखो, कि बाबा को याद करना है। बाबा प्यार का सागर है। यह महिमा कोई मनुष्य की नहीं। आत्मा अपने बाप की महिमा करती है। विचार करो हम क्या बनते हैं। स्वर्ग के मालिक बनते हैं। वह है हीरे जैसा जन्म। अभी तो कौड़ी जैसा जन्म है। अब बाप इशारा देते हैं याद में रहने का। तुम बुलाते ही हो कि हमको आकर पतित से पावन बनाओ। सतयुग में हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। राम-सीता को भी सम्पूर्ण नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड ग्रेड में चले गये। याद की यात्रा में पास नहीं हुए। नॉलेज में भल कितना भी तीखा हो, कभी भी बाप को मीठा नहीं लगेंगे। याद में रहेंगे तब ही मीठे बनेंगे। फिर बाप भी तुमको मीठा लगेगा। पढ़ाई तो बिल्कुल कॉमन है, पवित्र बनना है, याद में रहना है। यह अच्छी रीति नोट कर दो फिर यह जो कहाँ-कहाँ खिट-खिट होती है, अहंकार आ जाता है, वह कभी नहीं होगा - याद की यात्रा में रहने से। मूल बात अपने को अत्मा समझ बाप को याद करो। दुनिया में मनुष्य कितना लड़ते झगड़ते हैं।

○ ड्रामा के प्लैन अनुसार मैं तुम बच्चों को वापिस ले जाता हूँ। अब कहता हूँ मनमनाभव। परन्तु इनका भी अर्थ कोई नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ मामेकम याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। बच्चे मेहनत करते रहते हैं बाप को याद करने की। भक्ति मार्ग में तो बहुत शो है, यहाँ तो शान्त में याद करना है। वह अनेक प्रकार के हठयोग आदि करते हैं। उनका तो निवृत्ति मार्ग ही अलग है। वह ब्रह्म को मानते हैं। ब्रह्म योगी तत्व योगी हैं।

○ विश्व का मालिक तुम बनते हो। मुख्य बात है याद की। ज्ञान तो बहुत सहज है। भल है तो सिर्फ अल्फ को याद करना। परन्तु विचार किया जाता है याद ही झट खिसक जाती है। बहुत करके

कहते हैं बाबा याद भूल जाती है। तुम किसको भी समझाओ तो हमेशा याद अक्षर बोलो। योग अक्षर रांग है। टीचर को स्टूडेन्ट की याद रहती है। फादर है सुप्रीम सोल। तुम आत्मा सुप्रीम नहीं हो। तुम हो पतित। अब बाप को याद करो। टीचर को, बाप को, गुरू को याद किया जाता है। गुरू लोग बैठ शास्त्र सुनायेंगे, मन्त्र देंगे। बाबा का मन्त्र एक ही है-मनमनाभव। फिर क्या होगा? मध्याजी भव। तुम विष्णुपुरी में चले जायेंगे। तुम सब तो राजा-रानी नहीं बनेंगे। राजा-रानी और प्रजा होती है। तो मुख्य है त्रिमूर्ति। शिवबाबा के बाद है ब्रह्मा जो फिर मनुष्य सृष्टि अर्थात् ब्राह्मण रचते हैं।

○ बहुत मन्दिर होंगे। पूजा के लिए बैठ मन्दिर बनाये हैं। अभी तुम जानते हो बाप को याद करते-करते हम गोल्डन एज में चले जायेंगे। आत्मा पवित्र बन जायेगी। मेहनत करनी पड़ती है। मेहनत बिगर काम नहीं चलेगा। गाया भी जाता है-सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। परन्तु ऐसे थोड़ेही मिल जाती है, यह समझा जाता है-बच्चे बनेंगे तो मिलेगी जरूर। तुम अभी मेहनत कर रहे हो मुक्तिधाम में जाने के लिए। बाप की याद में रहना पड़ता है। दिन-प्रतिदिन बाप तुम बच्चों को रिफाइन बुद्धि बनाते हैं। बाप कहते हैं तुमको बहुत-बहुत गुह्य बातें सुनाता हूँ। आगे थोड़ेही यह सुनाया था कि आत्मा भी बिन्दी है, परमात्मा भी बिन्दी है। कहेंगे पहले क्यों नहीं यह बताया। ड्रामा में नहीं था। पहले ही तुमको यह सुनायें तो तुम समझ न सको। धीरे-धीरे समझाते रहते हैं। यह है रावण राज्य।

○ बाप कहते हैं-मीठे बच्चे, अभी तुमको पतित से पावन बनना है। युक्ति बहुत सहज बताते हैं, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा में ही खाद पड़ने से मुलम्मे की बन गई है। जो पारसबुद्धि थे वही अब पत्थरबुद्धि बने हैं। तुम मातायें सारे विश्व का उद्धार करती हो। तुम्हारे लिए जरूर नई दुनिया चाहिए। पुरानी दुनिया का विनाश चाहिए। कितनी समझने की बातें हैं। शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि भी करना है। छोड़ना कुछ भी नहीं है। बाबा कहते हैं सब कुछ

करते हुए मुझे याद करते रहो। भक्ति मार्ग में भी तुम मुझ माशूक को याद करते आये हो कि हमको आकर सांवरे से गोरा बनाओ। उनको मुसाफिर कहा जाता है। तुम सब मुसाफिर हो ना। तुम्हारा घर वह है, जहाँ सब आत्मायें रहती हैं।

○ मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो जानते हैं कि अभी हम विश्व के मालिक बनने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। भल माया भी भुला देती है। कोई-कोई को तो सारा दिन भुला देती है। कभी याद ही नहीं करते जो खुशी भी हो। हमको भगवान पढ़ाते हैं यह भी भूल जाते हैं। भूल जाने के कारण फिर कोई सर्विस नहीं कर सकते।

○ बाप बैठ समझाते हैं इस शरीर का मालिक है आत्मा। यह पहले समझना चाहिए क्योंकि अभी बच्चों को ज्ञान मिला है। पहले-पहले तो समझना है हम आत्मा हैं। शरीर से आत्मा काम लेती है, पार्ट बजाती है। ऐसे-ऐसे ख्यालात और कोई मनुष्य को आते नहीं क्योंकि देह-अभिमान में हैं। यहाँ इस ख्याल में बिठाया जाता है - मैं आत्मा हूँ। यह मेरा शरीर है। मैं आत्मा परमपिता परमात्मा की सन्तान हूँ। यह याद ही घड़ी-घड़ी भूल जाती है। यह पहले पूरी याद करनी चाहिए। यात्रा पर जब जाते हैं तो कहते हैं चलते रहो। तुमको भी याद की यात्रा पर चलते रहना है, यानी याद करना है। याद नहीं करते, गोया यात्रा पर नहीं चलते। देह-अभिमान आता है। देह-अभिमान से कुछ न कुछ विकर्म बन जाता है। ऐसे भी नहीं मनुष्य सदैव विकर्म करते हैं। फिर भी कमाई तो बन्द हो जाती है ना इसलिए जितना हो सके याद की यात्रा में ढीला नहीं पड़ना चाहिए। एकान्त में बैठ अपने साथ विचार सागर मंथन कर प्वाइंट्स निकालनी होती हैं। कितना समय बाबा की याद में रहते हैं, मीठी चीज़ की याद पड़ती है ना। तुम्हारी बुद्धि में है, हम सतोप्रधान थे फिर बनना है। यह भी तुम अभी जानते हो, तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं - स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट हैं ना। बाबा से भी स्वीट होने वाले हैं। वही ऊंच पद पायेंगे। स्वीटेस्ट वह हैं जो बहुतों का

कल्याण करते हैं। बाप भी स्वीटेस्ट है ना, तब तो सब उनको याद करते हैं। कोई शहद या चीनी को ही स्वीटेस्ट नहीं कहा जाता। यह मनुष्य की चलन पर कहा जाता है। कहते हैं ना यह स्वीट चाइल्ड (मीठा बच्चा) है। सतयुग में कोई भी शैतानी बात नहीं होती। इतना ऊंच पद जो पाते हैं, जरूर यहाँ पुरूषार्थ किया है।

- तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। यह 84 का चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। तुम्हारा नाम है स्वदर्शन चक्रधारी। एक बाप को ही याद करना है। दूसरे कोई की याद न रहे। पिछाड़ी में यह अवस्था रहे। जैसे स्त्री का पुरूष से लव रहता है। उनका है जिस्मानी लव, यहाँ तुम्हारा है रूहानी लव। तुम्हें उठते-बैठते, पतियों के पति, बापों के बाप को याद करना है। दुनिया में ऐसे बहुत घर हैं जहाँ स्त्री-पुरूष तथा परिवार आपस में बहुत प्यार से रहते हैं। घर में जैसे स्वर्ग लगा रहता है। 5-6 बच्चे इकट्ठे रहते, सुबह को जल्दी उठ पूजा में बैठते, कोई झगड़ा आदि घर में नहीं। एकरस रहते हैं। कहाँ तो फिर एक ही घर में कोई राधास्वामी के शिष्य होंगे तो कोई फिर धर्म को ही नहीं मानते। थोड़ी बात पर नाराज़ हो पड़ते। तो बाप कहते हैं-इस अन्तिम जन्म में पूरा पुरूषार्थ करना है। अपना पैसा भी सफल कर अपना कल्याण करो। तो भारत का भी कल्याण होगा। तुम जानते हो-हम अपनी राजधानी श्रीमत पर फिर से स्थापन करते हैं। याद की यात्रा से और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानने से ही हम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे फिर उतरना शुरू होगा। फिर अन्त में बाबा के पास आ जायेंगे। श्रीमत पर चलने से ही ऊंच पद पायेंगे। बाप कोई फाँसी पर नहीं चढ़ाते हैं। एक तो कहते हैं पवित्र बनो और बाप को याद करो। सतयुग में पतित कोई होता नहीं। देवी-देवतायें भी बहुत थोड़े ही रहते हैं। फिर आहिस्ते-आहिस्ते वृद्धि होती है। देवताओं का है छोटा झाड़। फिर कितनी वृद्धि हो जाती है। आत्मायें सब आती रहती हैं, यह बना-बनाया खेल है।

- अब तक पाप करते रहते हैं। यह तो नाम बदनाम करते हैं। सब क्या कहेंगे! कहते हैं हमको भगवान पढ़ाते हैं! हम मनुष्य से देवता विश्व के मालिक बनते हैं! वह फिर ऐसे काम करते हैं क्या! इसलिए बाबा कहते हैं रोज़ रात में अपने को देखो। अगर सपूत बच्चे हैं तो चार्ट भेजें। भल कोई चार्ट लिखते हैं, परन्तु साथ में यह लिखते नहीं कि हमने किसको दु:ख दिया वा यह भूल की। याद करते रहे और कर्म उल्टे करते रहे, यह भी ठीक नहीं। उल्टे कर्म करते तब हैं जब देह-अभिमानी बन पड़ते हैं।

- यह चक्र कैसे फिरता है - यह तो बहुत सहज है। एक दिन में भी टीचर बन सकते हैं। बाप तुमको 84 का राज़ समझाते हैं, टीच करते हैं। फिर जाकर उस पर मनन करना है। हमने 84 जन्म कैसे लिये? उस सिखलाने वाले टीचर से दैवीगुण भी जास्ती धारण कर लेते हैं। बाबा सिद्ध कर बतला सकते हैं। दिखाते हैं बाबा हमारा चार्ट देखो। हमने ज़रा भी किसको दु:ख नहीं दिया है। बाबा कहेंगे यह बच्चा तो बड़ा मीठा है। अच्छी खुशबू निकाल रहे हैं। टीचर बनना तो सेकण्ड का काम है। टीचर से भी स्टूडेन्ट याद की यात्रा में तीखे निकल जाते हैं। तो टीचर से भी ऊंच पद पायेंगे। बाबा तो पूछते हैं, किसको टीच करते हो? रोज़ शिव के मन्दिर में जाकर टीच करो। शिवबाबा कैसे आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं? स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। समझाना बहुत ही सहज है। बाबा को चार्ट भेज देते हैं-बाबा हमारी अवस्था ऐसी है।

- बाप की याद के साथ-साथ घर की भी याद जरूर चाहिए क्योंकि अब वापिस घर जाना है। घर में ही बाप को याद करना है। भल तुम जानते हो बाबा इस तन में आकर हमको सुना रहे हैं परन्तु बुद्धि परमधाम स्वीट होम से टूटनी नहीं चाहिए। टीचर घर छोड़कर आते हैं, तुमको पढ़ाने। पढ़ाकर फिर बहुत दूर चले जाते हैं। सेकण्ड में कहाँ भी जा सकते हैं। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। वन्डर खाना चाहिए। बाप ने आत्मा का भी ज्ञान दिया है।

- सृष्टि चक्र कैसे फिरता है– वह नॉलेज बुद्धि में है। इसमें कोई तकलीफ नहीं है। हाँ, याद में मेहनत लगती है। बच्चे कई फेल हो पड़ते हैं, कहाँ न कहाँ गिर पड़ते हैं। सबसे मुख्य बात है– नाम-रूप में नहीं फँसना है। स्त्री-पुरूष काम वश नाम रूप में फँसते हैं ना। क्रोध नाम-रूप में नहीं फँसाता है। पहले-पहले है यह जिसकी बड़ी सम्भाल करनी है, कोई के भी नाम रूप में नहीं फँसना है। ब्रह्म समाजियों का मन्दिर होता है, जहाँ रात दिन ज्योति जगती है। कितना खर्चा होता है। फालतू घृत जाता है। यहाँ वह कुछ भी डालने का है नहीं। याद घृत का काम करती है। याद रूपी घृत है।

- कर्मभोग का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। खुशी में यह सब मर्ज करते जाओ। बस बाप और वर्से को याद करते रहो। उल्टा-सुल्टा कोई भी काम मत करो। नहीं तो और ही दण्ड पड़ जाता है, पद भ्रष्ट हो जाता है। बच्चों का काम है एक बाप को याद करना। बाप कहते हैं– मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा। बाकी थोड़ा समय है, हिसाबकिताब चुक्तू करते जाओ क्योंकि तुम हो अन्धों की लाठी। तुम भी याद करो, दूसरों को भी रास्ता बताओ। विघ्न तो बहुत पड़ेंगे। जितना हो सके, सबको यह समझाते रहो कि बाप को याद करो। अक्षर भी नामीग्रामी हैं। मनमनाभव अर्थात् हे आत्मायें मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पास्ट के विकर्म भस्म होंगे। इसमें मूँझने की तो बात ही नहीं। सिर्फ बाप को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। तुम जानते हो हमने 84 का चक्र लगाया है। चक्र लगाते आये हैं, लगाते रहेंगे। यह है पुरानी दुनिया, पुराना चोला.... इनको भूल जाना है। यह है आत्माओं का बेहद का सन्यास। उन्हों का है हद का सन्यास, घरबार छोड़ जाते हैं।

○ अब बच्चे जानते हैं हमारे ऊपर अभी ब्रहस्पति की दशा बैठी है। ऐसे नहीं एक ही दिन बैठती है। नहीं, तुम्हारी ब्रहस्पति की दशा चल रही है। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। जितना याद करेंगे उतना चढ़ती कला होगी। याद भूलने से माया के विघ्न आते हैं। याद से दशा अच्छी बैठती है। अच्छी रीति याद नहीं करेंगे तो जरूर गिरेंगे ही। फिर उनसे कुछ न कुछ भूलें होगी। बाबा ने समझाया है ड्रामा अनुसार सब धर्म वाले जो भी हैं एक दो के पिछाड़ी पार्ट बजाने के लिए आते हैं। बच्चे जानते हैं स्वर्ग की दशा अर्थात् जीवनमुक्ति की दशा अब हमारे ऊपर बैठी है। यह ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है इसको भी डिटेल में समझना है।

○ जब कोई आता है तो उनको समझाना है कि यह नई दुनिया रचने वाला ब्रह्मा नहीं है लेकिन निराकार बाप है। जो ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं। पारलौकिक परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा रचते हैं गोया सुप्रीम सोल की रचना हुई। तुम पत्र के ऊपर लिखते हो शिवबाबा केअर आफ ब्रह्मा। तो यह भी याद करने की युक्ति है। शिवबाबा सिखलाते हैं ब्रह्मा द्वारा। बस सिर्फ कहते हैं मनमनाभव और कोई तकलीफ नहीं दी जाती सिर्फ कहा जाता है कि तुम अपनी उन्नति चाहते हो और सचखण्ड का मालिक बनने चाहते हो तो सचखण्ड स्थापन करने वाला तो एक ही सत्य बाप है, उसे याद करो। बेहद का बाप ही आकर बच्चों को कहते हैं कि मुझे याद करो तो पापों से मुक्त होंगे। कृष्ण को पतितपावन नहीं कहा जाता है सिवाए परमपिता परमात्मा के। और कोई नाम नहीं लेंगे। गॉड फादर ही कहेंगे। सब उनको फादर कहते हैं फिर उनको सर्वव्यापी कैसे कह सकते। कहते हैं वह आते हैं लिबरेट करने के लिए। यह मनुष्य नहीं जानते। तो कल्प की आयु ही उल्टी लिख दी है। अब बच्चों को यह ड्रिल करनी है। ज्ञान तो मिला हुआ है। जब बैठते हो तो अपने को देही समझकर बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। टीचर सामने बैठता है गद्दी पर, तो शोभता है। कायदा है कि ड्रिल कराने के लिए टीचर जरूर चाहिए। कोई बड़ा टीचर तो कोई छोटा टीचर होता है। अब तुम्हारा इम्तहान लेने की कोई दरकार नहीं क्योंकि तुम खुद जानते हो कि हम कितना समय मोस्ट बिलवेड बाप को याद करते हैं। ब्रह्मा कोई मोस्ट

बिलवेड नहीं है। बिलवेड मोस्ट वह है जो सदा पावन है। सच बोलने वाला, सच्चा रास्ता बताने वाला तो एक ही परमपिता परमात्मा शिव है। बहुत गुप्त मेहनत करनी है बच्चों को। अभी तुम जानते हो कि हमको यह देह भूलकर एक बाप को याद करना है। शरीर छूटा तो सारी दुनिया छूट जाती है। आत्मा अकेली बन जाती है। बाप कहते हैं- देही-अभिमानी बनो तो फिर कोई भी मित्र-सम्बन्धी याद नहीं पड़ेंगे। हम आत्मा हैं, हम चले जायेंगे बाप के पास। बाप राय देते हैं कि तुम मेरे पास कैसे आ सकते हो। बाप कहते हैं- अब मेरे को याद करो औरों को भी पैगाम दो कि देह सहित देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। अशरीरी बनो तो पावन बन जायेंगे क्योंकि अब वापिस घर चलना है। मौत सामने खड़ा है। यहाँ भी बच्चे बाप के पास सम्मुख रिफ्रेश होने आते हैं। बाप सम्मुख बच्चों को समझाते हैं कि बच्चे देह-अभिमान छोड़ मामेकम् याद करो। यह पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। तुम एक बाप को याद कर पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। अगर मेहनत नहीं करेंगे तो फल भी नहीं मिलेगा। फिर सजा खानी पड़ेगी। बाप कहते हैं कि अपनी कमाई जमा करते रहो और दूसरों को भी निमन्त्रण दो। बाप का रास्ता भी बताओ। तुम बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है। अपने मित्र-सम्बन्धियों का भी कल्याण करना है। यहाँ तुमको देही-अभिमानी बनाया जाता है। महामन्त्र देते हैं। प्राचीन योग बाप ने ही आकर सिखाया है, जिसके लिए ही गाया जाता है– योग अग्नि से पाप दग्ध हो जायेंगे, कल्प पहले भी यही इशारा मिला था। बाप इशारा देते हैं कि अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। रहो भल अपने गृहस्थ व्यवहार में।

- आत्मा को यह ज्ञान है कि हम एक शरीर छोड़ दूसरे में जायेंगे। हम गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बन यात्रा पर रहते हैं। बुद्धि में याद रहे कि यह तो कब्रिस्तान है, फिर हम सुखधाम में जायेंगे। हमको बाबा वर्सा देने की युक्ति बता रहे हैं। पावन बनने के लिए हम योग में रहते हैं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे तब आत्मा शरीर छोड़ेगी। यात्रा कितनी वन्डरफुल है। सिर्फ बाप को याद करो, अपनी राजधानी को याद करो। इतनी सहज बात भी याद नहीं

पड़ती है। अल्फ को याद करो, बस। परन्तु माया वह भी याद करने नहीं देती, मेहनत लगती है। आत्मा को ज्ञान मिला है, हमारा बाबा आया हुआ है। आत्मा पढ़ती है ना। आत्मा शरीर द्वारा जन्म लेती है। आत्मा भाई-भाई है। देह-अभिमान में आने से फिर अनेक सम्बन्ध हो जाते हैं। यहाँ तुम भाई-बहिन हो गये। आपस में भाई-भाई भी हो, बहन भाई भी हो। प्रवृत्ति मार्ग है ना। दोनों को वर्सा चाहिए। आत्मा ही पुरूषार्थ करती है। अपने को आत्मा समझना– यही मेहनत है।

○ अधरकुमारी बनने का ख्याल भी क्यों करना चाहिए। कुमारियों का नाम बाला है। बाल ब्रह्मचारी हैं। बाल ब्रह्मचारी रहना अच्छा है, ताकत रहती है। दूसरे कोई की याद नहीं आयेगी। बाकी हिम्मत है तो करके दिखाओ, परन्तु मेहनत है। दो हो पड़ते हैं ना। कुमारी है तो अकेली है। दो से द्वेत आ जाता है। जहाँ तक हो सके कुमारी हो रहना अच्छा है। कुमारी सेवा पर निकल सकती है। बंधन में पड़ने से फिर बन्धन वृद्धि को पाते हैं। ऐसा जाल बिछाना ही क्यों चाहिए जो बुद्धि फँस पड़े। ऐसे जाल में फँसना ठीक नहीं है। कुमारियों के लिए तो बहुत अच्छा है। कुमारियों ने नाम भी निकाला है। कन्हैया नाम गाया जाता है ना। कुमारी हो रहना बड़ा अच्छा है। इन्हों के लिए बहुत सहज है। स्टूडेन्ट लाइफ पवित्र लाइफ भी है। बुद्धि भी फ्रेश रहती है। कुमारों को भीष्म पितामह जैसा बनना है। कल्प पहले भी रहे हैं तब तो देलवाड़ा मन्दिर में यादगार बना हुआ है। अब बाप बच्चों को फरमान करते हैं, मुझे याद करो। और सब बातों को छोड़ तुम अपना कल्याण करो। बाप को याद करने में ही कल्याण है।

○ मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना। रूहानी बच्चों अर्थात् शिवबाबा जो सुप्रीम रूह है, उनके बच्चों आत्माओं ने शरीर रूपी कर्मेन्द्रियों द्वारा गीत सुना। अब तो बच्चों को आत्म-अभिमानी बनना है। बहुत मेहनत भी है। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यह है

गुप्त मेहनत। बाप भी गुप्त, तो मेहनत भी गुप्त कराते हैं। बाप स्वयं आकर कहते हैं बच्चों, मुझे याद करो तो कल्प 5 हजार वर्ष पहले मुआफिक फिर से सतोप्रधान बनेंगे। बच्चे समझते हैं हम ही सतोप्रधान थे फिर हम ही अब तमोप्रधान बने हैं। सतोप्रधान बनना है जरूर। गीत में भी कहते हैं तकदीर जो गँवाई हुई है वह फिर पाने के लिए तदबीर कराने वाला एक ही सर्वशक्तिमान् बाप है, क्योंकि सबको पावन बनाते हैं ना।

○ यह बहुत-बहुत लवली परिवार है, तुम हर एक को बहुत-बहुत लवली होना चाहिए। बाप भी मीठा है तो बच्चों को भी ऐसा मीठा बनाते हैं। कभी किसी पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। मन्सा, वाचा, कर्मणा किसको दु:ख नहीं देना है। बाप कभी किसको दु:ख नहीं देते, जितना बाप को याद करेंगे उतना मीठे बनते रहेंगे। बस, इस याद से ही बेड़ा पार है– यह है याद की यात्रा। याद करते-करते वाया शान्तिधाम, सुखधाम जाना है। बाप आये ही हैं बच्चों को सदा सुखी बनाने। भूतों को भगाने की युक्ति बाप बतलाते हैं मुझे याद करो तो यह भूत निकलते जायेंगे। कोई में भूत हो तो यहाँ ही मेरे पास छोड़कर जाओ। तुम कहते भी हो बाबा आकर हमारे भूतों को निकाल पतित से पावन बनाओ। तो बाप कितना गुल-गुल बनाते हैं।

○ अभी अगर समझ जायें तो बाप के पास भागें। एक ने बच्ची को कहा था कि जिसने तुमको यह सिखाया हम डायरेक्ट क्यों न उनके पास जायें। परन्तु सुई पर कट लगी हुई है तो चुम्बक की कशिश कैसे हो? कट जब पूरी निकले तब चुम्बक को पकड़ सके। सुई का एक कोना भी कट चढ़ी हुई होगी तो उतना खीचेंगी नहीं। सारी कट उतर जाये वह तो पिछाड़ी में जब ऐसे बनेंगे फिर तो बाप के साथ वापिस जायेंगे। अभी तो फुरना (फिक्र) है कि हम तमोप्रधान हैं, कट चढ़ी हुई है। जितना याद करेंगे उतना कट साफ होती जायेगी। आहिस्ते-आहिस्ते कट निकलती जायेगी। कट चढ़ी भी आहिस्ते-आहिस्ते है ना, फिर उतरेगी भी ऐसे। जैसे कट चढ़ी

है वैसे साफ होनी है तो उसके लिए बाप को याद भी करना है। याद से कोई की जास्ती कट उतरी है, कोई की कम। जितना जास्ती कट उतरी हुई होगी उतना वह दूसरे को समझाने में खीचेंगे। यह बड़ी महीन बातें हैं। मोटी बुद्धि वाले समझ न सकें।

○ पूज्य थे अब पुजारी बन गये हो फिर पूज्य बनने के लिए पुरूषार्थ चाहिए। बाप कितना अच्छा पुरूषार्थ कराते हैं। यह बाबा समझते हैं ना हम प्रिन्स बनूँगा। नम्बरवन में है यह, फिर भी हर वक्त याद नहीं ठहरती है। भूल जाते हैं। कितना भी कोई मेहनत करे परन्तु अभी वह अवस्था होगी नहीं। वर्मातीत अवस्था तब होगी जब लड़ाई का समय होगा। पुरूषार्थ तो सबको करना है ना।

○ अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो। यह कई बच्चों के लिए बहुत मुश्किल लगता है। है बहुत सहज परन्तु बुद्धि में ठीक रीति बैठता नहीं है। तो घड़ी-घड़ी समझाते रहते हैं। समझाते हुए भी नहीं समझते हैं। स्कूल में टीचर 12 मास पढ़ाते हैं फिर भी कोई नापास हो पड़ते हैं। यह बेहद का बाप भी रोज़ बच्चों को पढ़ाते हैं। फिर भी कोई को धारणा होती है, कोई भूल जाते हैं। मुख्य बात तो यही समझाई जाती है कि अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। बाप ही कहते हैं मामेकम् याद करो, और कोई मनुष्य मात्र कभी कह नहीं सकेंगे। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आता हूँ। कल्प के बाद फिर संगम पर एक ही बार तुम बच्चों को ही समझाता हूँ।

○ बाप भी चलन से समझ जाते हैं - यह क्या बनेंगे? भाग्य में ऊंच पद होगा तो चलन बड़ी रॉयल्टी से चलेंगे। सिर्फ याद रहे कि हमको पढ़ाते कौन हैं तो भी कापारी खुशी रहे। हम गॉड फादरली

स्टूडेण्ट हैं तो कितना रिगार्ड रहे। अभी अजुन सीख रहे हैं। बाप तो समझते हैं अभी टाइम लगेगा। नम्बरवार तो हर बात में होते ही हैं।

○ ऐसे-ऐसे सीधे अक्षर लिखने चाहिए जो मनुष्यों की दृष्टि पड़े। तुम ऐसा समझाओ जो कोई प्रश्न पूछने की दरकार ही न पड़े। बोलो, बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो सब दु:ख दूर हो जायेंगे। जो अच्छी रीति याद में रहेंगे वही ऊंच पद पायेंगे। यह तो सेकेण्ड की बात है। बाप कहते हैं याद की यात्रा पर रहो। दैवीगुण धारण करने हैं। सर्वगुण सम्पन्न यहाँ बनना है इसलिए बाबा कहते हैं चार्ट रखो। याद की यात्रा का भी चार्ट रखो तो पता पड़ेगा कि हम फायदे में हैं या घाटे में? परन्तु बच्चे रखते नहीं हैं। बाबा कहते हैं लेकिन बच्चे करते नहीं। बहुत थोड़े करते हैं इसलिए माला भी कितनी थोड़ों की ही है। 8 बड़ी स्कालरशिप लेंगे फिर 108 प्लस में रहते हैं ना। प्लस में कौन जायेंगे? बादशाह और रानी। बहुत ज़रा सा फ़र्क रहता है।

○ बाप समझाते हैं तुमने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं। तुमको अब ऊपर जाना है। है बहुत इजी। तुम कल्प-कल्प समझते हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। बाप याद -प्यार भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार देते हैं, बहुत याद -प्यार उनको देंगे जो सर्विस में हैं। तो अपनी जांच करनी है कि मैं दिल पर चढ़ा हुआ हूँ? माला का दाना बन सकता हूँ? अनपढ़े जरूर पढ़े हुए के आगे भरी ढोयेंगे। बाप तो समझाते हैं बच्चे पुरूषार्थ करें, परन्तु ड्रामा में पार्ट नहीं है तो फिर कितना भी माथा मारो, चढ़ते ही नहीं। कोई न कोई ग्रहचारी लग जाती है। देह-अभिमान से ही फिर और विकार आते हैं। मुख्य कड़ी बीमारी देह-अभिमान की है। सतयुग में देह-अभिमान का नाम ही नहीं होगा। वहाँ तो है ही तुम्हारी प्रालब्ध। यह यहाँ ही बाप समझाते हैं। और कोई ऐसी श्रीमत देते नहीं कि अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। यह मुख्य बात है। लिखना चाहिए-

निराकार भगवान कहते हैं मुझ एक को याद करो। अपने को आत्मा समझो। अपनी देह को भी याद नहीं करो।

- बच्चे कहते हैं बाबा हम कभी-कभी बहुत खुशी में रहते हैं, कभी-कभी खुशी कम हो जाती है। तो बाबा अभी समझाते रहते हैं कि अगर खुशी में रहना चाहते हो तो मनमनाभव, अपने को आत्मा समझो और बाप को भी याद करो। सामने परमात्मा को देखो तो वो अकाल तख्त पर बैठा हुआ है। ऐसे भाइयों की तरफ भी देखो, अपने को आत्मा समझ करके फिर भाई से बात करो। भाई को हम ज्ञान देते हैं। बहन नहीं, भाई-भाई। आत्माओं को ज्ञान देते हैं अगर यह आदत तुम्हारी पड़ जायेगी तो तुम्हारी जो क्रिमिनल आई है, जो तुमको धोखा देती है वह आहिस्ते-आहिस्ते बन्द हो जायेगी। आत्मा-आत्मा में क्या करेगी? जब देह-अभिमान आता है तब गिरते हैं।

- एम ऑब्जेक्ट नर से नारायण बनने की है। वह सब हैं भक्ति मार्ग की कथायें। गीता से भी कोई प्राप्ति नहीं होती। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को सम्मुख आकर पढ़ाता हूँ, जिससे तुम यह पद पाते हो। इसमें मुख्य है पवित्र बनने की बात। बाप की याद में रहना है। इसी में ही माया विघ्न डालती है। तुम बाप को याद करते हो अपना वर्सा पाने के लिए। योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। वह दोनों आपस में लड़ते हैं, माखन बीच में तुमको मिलता है। तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। सभी को यही पैगाम देना है। छोटे बच्चों का भी हक है। शिवबाबा के बच्चे हैं ना। तो सबका हक है। सबको कहना है अपने को आत्मा समझो। माँ-बाप में ज्ञान होगा तो बच्चों को भी सिखायेंगे-शिवबाबा को याद करो। सिवाए शिवबाबा के दूसरा न कोई। एक की याद से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। इसमें पढ़ाई बहुत अच्छी चाहिए। विलायत में रहते भी तुम पढ़ सकते हो। इसमें किताब आदि कुछ भी नहीं चाहिए। कहाँ भी बैठे

तुम पढ़ सकते हो। बुद्धि से याद कर सकते हो। यह पढ़ाई इतनी सहज है। योग अथवा याद से बल मिलता है। तुम अभी विश्व का मालिक बन रहे हो। बाप राजयोग सिखाकर पावन बनाते हैं। वह है हठयोग, यह है राजयोग। इसमें परहेज बहुत अच्छी रीति चाहिए। इन लक्ष्मी-नारायण जैसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है ना। खान पान की भी परहेज चाहिए, और दूसरी बात बाप को याद करना है तो जन्म जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। इसको कहा जाता है सहज राजयोग, राजाई प्राप्त करने के लिए। अगर राजाई न ली तो गरीब बन जायेंगे। श्रीमत पर पूरा चलने से श्रेष्ठ बनेंगे। भ्रष्ट से श्रेष्ठ बनना है। उसके लिए बाप को याद करना है। कल्प पहले भी तुमने ही यह ज्ञान लिया था, जो फिर अब लेते हो। सतयुग में और कोई राज्य नहीं था। उसको कहा जाता है सुखधाम। अभी यह है दु:खधाम और जहाँ से हम आत्मायें आई हैं वह है शान्तिधाम। शिवबाबा को वन्डर लगता है-दुनिया में मनुष्य क्या-क्या करते हैं! बच्चे कम पैदा हों उसके लिए भी कितना माथा मारते रहते हैं। समझते नहीं यह तो बाप का ही काम है।

○ यह बापदादा दोनों ही कम्बाइन्ड हैं ना। शिवबाबा ज्ञान देते हैं फिर चले जाते हैं वा क्या होता है, कौन बताये। बाबा से पूछें क्या आप सदैव हो या चले जाते हो? बाप से तो यह नहीं पूछ सकते हैं ना। बाप कहते हैं मैं तुमको रास्ता बताता हूँ पतित से पावन होने का। आऊं, जाऊं, मुझे तो बहुत काम करने पड़ते हैं। बच्चों के पास भी जाता हूँ, उनसे कार्य कराता हूँ। इसमें संशय की कोई बात न लाए। अपना काम है - बाप को याद करना। संशय में आने से गिर पड़ते हैं। माया थप्पड़ ज़ोर से मार देती है। बाप ने कहा है बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में मैं इनमें आता हूँ। बच्चों को निश्चय है बरोबर बाप ही हमें यह ज्ञान दे रहे हैं, और कोई दे न सके। फिर भी इस निश्चय से कितने गिर पड़ते हैं, यह बाप जानते हैं। तुमको पावन बनना है तो बाप कहते हैं मामेकम् याद करो, और कोई बातों में नहीं पड़ो। तुम यह ऐसी बातें करते हो तो समझ में आता है - पक्का निश्चय नहीं है। पहले एक बात को समझो जिससे तुम्हारे पाप नाश होते हैं,

बाकी फालतू बातें करने की दरकार नहीं। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे फिर और बातों में क्यों आते हो! देखो कोई प्रश्न-उत्तर में मूंझता है तो उसे बोलो कि तुम इन बातों को छोड़ एक बाप की याद में रहने का पुरूषार्थ करो। संशय में आया तो पढ़ाई ही छोड़ देंगे फिर कल्याण ही नहीं होगा। नब्ज देखकर समझाना है। संशय में है तो एक प्वाइंट पर खड़ा कर देना है। बहुत युक्ति से समझाना पड़ता है। बच्चों को पहले यह निश्चय हो - बाबा आया हुआ है, हमको पावन बना रहे हैं। यह तो खुशी रहती है। नहीं पढ़ेंगे तो नापास हो जायेंगे, उनको खुशी भी क्यों आयेगी। स्कूल में पढ़ाई तो एक ही होती है। फिर कोई पढ़कर लाखों की कमाई करते हैं, कोई 5-10 रूपया कमाते हैं। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है नर से नारायण बनना। राजाई स्थापन होती है। तुम मनुष्य से देवता बनेंगे। देवताओं की तो बड़ी राजधानी है, उसमें ऊंच पद पाना वह फिर पढ़ाई और एक्टिविटी पर है। तुम्हारी एक्टिविटी बड़ी अच्छी होनी चाहिए। बाबा अपने लिए भी कहते हैं - अभी कर्मातीत अवस्था नहीं बनी है। हमको भी सम्पूर्ण बनना है, अभी बने नहीं हैं। ज्ञान तो बड़ा सहज है। बाप को याद करना भी सहज है परन्तु जब करें ना।

○ तो दुनिया में जो भी मनुष्य मात्र हैं, उनमें जो आत्मायें हैं उनका तख्त यह भ्रकुटी है। शरीर भिन्न-भिन्न हैं। किसका अकाल तख्त पुरूष का, किसका स्त्री का, किसका बच्चे का। तो जब भी किससे बात करो तो यही समझो कि हम आत्मा हैं, अपने भाई से बात करते हैं। बाप का पैगाम देते हैं कि शिवबाबा को याद करो तो यह जो जंक लगी हुई है वह निकल जाये। जैसे सोने में अलाए पड़ती है तो वैल्यु कम होती है तो तुम्हारी भी वैल्यु कम हो गई है। अभी बिल्कुल ही वैल्यु लेस हो गये हैं। इसको देवाला भी कहा जाता है। भारत कितना धनवान था, अभी कर्जा उठाते रहते हैं। विनाश में तो सबका पैसा खत्म हो जायेगा। देने वाले, लेने वाले सभी खत्म हो जायेंगे बाकी जो अविनाशी ज्ञान रत्न लेने वाले हैं वह फिर आकर अपना भाग्य लेंगे।

○ मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों को बाप रोज़-रोज़ पहले समझाते हैं कि अपने को आत्मा समझ बैठो और बाप को याद करो। कहते हैं ना अटेन्शन प्लीज़! तो बाप कहते हैं एक तो अटेन्शन दो बाप की तरफ। बाप कितना मीठा है, उनको कहा जाता है प्यार का सागर, ज्ञान का सागर। तो तुमको भी प्यारा बनना चाहिए। मन्सा-वाचा-कर्मणा हर बात में तुमको खुशी रहनी चाहिए। कोई को भी दुःख नहीं देना है। बाप भी किसी को दुःखी नहीं करते हैं। बाप आये ही हैं सुखी करने। तुमको भी कोई प्रकार का किसको दुःख नहीं देना है। कोई भी ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए। मन्सा में भी नहीं आना चाहिए। परन्तु यह अवस्था पिछाड़ी में होगी। कुछ न कुछ कर्मेन्द्रियों से भूल होती है।

○ तुमको वर्सा लौकिक और पारलौकिक बाप से मिलता है। अलौकिक बाप से वर्सा नहीं मिलता है। यह तो दलाल है, इनका वर्सा नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा को याद नहीं करना है। मेरे से तो तुमको कुछ भी नहीं मिलता है। मैं भी पढ़ता हूँ, वर्सा है ही एक हद का, दूसरा बेहद के बाप का। प्रजापिता ब्रह्मा क्या वर्सा देंगे। बाप कहते हैं– मामेकम् याद करो, यह तो रथ है ना। रथ को तो याद नहीं करना है ना। ऊंच ते ऊंच भगवान कहा जाता है। बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है ना। एक खाल छोड़ दूसरी लेती है। जैसे सर्प का मिसाल है। भ्रमरियाँ भी तुम हो। ज्ञान की भूं-भूं करो। ज्ञान सुनाते-सुनाते तुम किसी को भी विश्व का मालिक बना सकते हो। बाप जो तुम्हें विश्व का मालिक बनाते हैं ऐसे बाप को क्यों नहीं याद करेंगे। अब बाप आया हुआ है तो वर्सा क्यों नहीं लेना चाहिए। ऐसे क्यों कहते कि फुर्सत नहीं मिलती है। अच्छे-अच्छे बच्चे तो सेकेण्ड में समझ जाते हैं।

○ बाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह योग अग्नि है। भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है ना। आर्टीफीशियल योग तो बहुत हो गये हैं इसलिए बाबा कहते हैं याद की यात्रा कहना ठीक है। शिवबाबा को याद करते-करते तुम शिवपुरी में चले जायेंगे। वह है

शिवपुरी। वह विष्णुपुरी। यह रावण पुरी। विष्णुपुरी के पीछे है राम पुरी। सूर्यवंशी के बाद चन्द्रवंशी हैं। यह तो कॉमन बात है। आधाकल्प सतयुग-त्रेता, आधाकल्प द्वापर-कलियुग। अभी तुम संगम पर हो। यह भी सिर्फ तुम जानते हो। जो अच्छी रीति धारणा करते हैं, वह दूसरे को भी समझाते हैं। हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। यह किसकी बुद्धि में याद रहे तो भी सारा ड्रामा बुद्धि में आ जाए। परन्तु कलियुगी देह के सम्बन्धी आदि याद आते रहते हैं। बाप कहते हैं– तुमको याद करना है एक बाप को। सर्व का सद्गति दाता राजयोग सिखलाने वाला एक ही है इसलिए बाबा ने समझाया है शिवबाबा की ही जयन्ती है जो सारी दुनिया को पलटाते हैं। तुम ब्राह्मण ही जानते हो, अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। जो ब्राह्मण हैं उनको ही रचयिता और रचना का ज्ञान बुद्धि में है।

- अभी बच्चों की बुद्धि पारसबुद्धि बनने की है। इस समय अजुन तमोप्रधान से रजो तक गये हैं। अभी सतो, सतोप्रधान तक जाना है। वह ताकत अभी नहीं है। याद में रहते नहीं हैं। योगबल की बहुत कमी है। फट से सतोप्रधान नहीं बन सकते हैं। यह जो गायन है सेकण्ड में जीवनमुक्ति, वह तो ठीक है। तुम ब्राह्मण बने हो तो जीवनमुक्त बन ही गये, फिर जीवनमुक्ति में भी सर्वोत्तम, मध्यम, कनिष्ट होते हैं। जो बाप का बनते हैं तो जीवनमुक्ति मिलती जरूर है। भल बाप का बन फिर बाप को छोड़ देते हैं तो भी जीवनमुक्ति जरूर मिलेगी। स्वर्ग में झाड़ू लगाने वाला बन जायेंगे। स्वर्ग में तो जायेंगे।

- अब हमको बाप को ही याद करना है और दैवीगुण धारण करने हैं। अपना पोतामेल देखना है। जमा होता है या ना (घाटा) होता रहता है। हमारे में कोई खामी तो नहीं है? अगर खामी है, जिससे हमारी तकदीर में घाटा पड़ जायेगा तो उसको निकाल देना चाहिए। इस समय हर एक को अपनी तकदीर ऊंच बनानी है। तुम समझाते हो हम यह लक्ष्मी-नारायण बन सकते हैं। अगर

सिवाए एक बाप के और कोई को याद नहीं करेंगे तो। कोई से बात करते, देखते हुए बुद्धि का योग वहाँ एक के साथ लगा रहे। हम आत्माओं को बाप को ही याद करना है। बाप का फरमान मिला हुआ है। सिवाए मेरे और कोई से दिल नहीं लगाओ और दैवीगुण धारण करो। बाप समझाते हैं, तुम्हारे अभी 84 जन्म पूरे हुए हैं। अब फिर तुम जाकर पहला नम्बर लो राजाई में। ऐसा न हो राजाई से गिरकर प्रजा में चले जाओ, प्रजा में भी नीचे चले जाओ। नहीं, अपनी जांच करते रहो। यह समझानी बाप बिगर तो और कोई दे न सके। बाप को, टीचर को याद करने से डर रहेगा। ऐसा न हो हमको कोई सजा मिल जाए। भक्ति में भी समझते हैं पाप कर्म करने से हम सजा के भागी बन जायेंगे। बड़े बाबा के डायरेक्शन तो अभी ही मिलते हैं, जिसको श्रीमत कहते हैं।

- अभी तुम जानते हो हम ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण बनने के बाद फिर देवता बन सकते हैं। ब्राह्मणों ने ही नई दुनिया स्थापन की है। योगबल से सतोप्रधान बन रहे हैं। अपनी जाँच रखनी है। कोई भी आसुरी गुण न हो। लूनपानी नहीं बनना है। यह तो यज्ञ है ना। यज्ञ से सबकी सम्भाल होती रहती है। यज्ञ में सम्भालने वाले ट्रस्टी भी रहते हैं। यज्ञ का मालिक तो है शिवबाबा। यह ब्रह्मा भी ट्रस्टी है। यज्ञ की सम्भाल करनी पड़ती है। तुम बच्चों को जो चाहिए यज्ञ से लेना है। और कोई से लेकर पहनेंगे तो वह याद आता रहेगा। इसमें बुद्धि की लाइन बड़ी क्लीयर चाहिए। अब तो वापिस जाना है। समय बहुत थोड़ा है इसलिए याद की यात्रा पक्की रहे। यही पुरूषार्थ करना है।

- पुरूषार्थ से इतना ऊंच बन सकते हो तो इतना पुरूषार्थ करना चाहिए। चलन से ही मालूम पड़ जाता है। किसको सर्विस का शौक है। रात-दिन अपनी कमाई का चिंतन रखना पड़े। बहुत भारी कमाई है। बाबा को भी कब-कब ख्याल आता है, जाकर बच्चों को रिफ्रेश करें। बहुत खुशी

होगी। बाबा को तो सर्विसएबुल बच्चे ही याद पड़ते हैं। अमृतवेले विचार सागर मंथन का डांस अच्छा चलता है, जिसका जो धन्धा उसी में लगे रहते हैं। सवेरे में विचार सागर मंथन चलता है। बच्चों को भी पहले तो मुरली अच्छी रीति धारण करनी पड़े। रिवाइज करें तब फिर आकर मुरली चलायें। आगे बाबा रात को दो बजे उठकर लिखते थे फिर सवेरे मम्मा मुरली पढ़कर फिर चलाती थी। भल मुरली हाथ में न भी लेवें, तो भी अच्छी चला सकते हैं। जिन-जिन बच्चों को मुरली पढ़ने और उस पर चिंतन करने का शौक है, वह सर्विस करते रहेंगे। मुरली पढ़ने से जाग पड़ेंगे। यह मुरली छपने का काम तो बहुत जोर से चलेगा। टेप का भी काम बहुत बढ़ जायेगा। मुरली विलायत तक भी जायेगी। कोई की बुद्धि में बैठ जाए तो एकदम नशा चढ़ जायेगा। उठते-बैठते 84 का चक्र बुद्धि में फिरता रहेगा। कोई की बुद्धि में तो कुछ भी नहीं बैठता है। खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। तुम्हारा तो सारा दिन धन्धा ही यह रहना चाहिए। यह है ऊंचे ते ऊंचा धन्धा। बाबा को व्यापारी भी कहा जाता है ना। यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का व्यापार कोई विरला करे। सारा दिन बुद्धि में यही फिरता रहना चाहिए और खुशी में मस्त रहना चाहिए। यह खुशी है सारी अन्दर की। आत्मा को खुशी होती है– ओहो! हमको बाबा मिल गया है।

○ भगवानुवाच– गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बन मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हों, और कोई उपाय ही नहीं है– पावन बनने का। थोड़ी बात करनी चाहिए। मूँझना नहीं चाहिए। बाबा ने समझाया है रात को बैठ विचार करो आज के सारे दिन में जो पास्ट हुआ, जो सर्विस होनी थी, ड्रामा प्लैन अनुसार हुआ। पुरूषार्थ तो चलना है ना। प्रदर्शनी में बच्चे कितनी मेहनत करते हैं। यह भी जानते हो– माया के तूफान बहुत कड़े हैं, कई बच्चे कहते हैं बाबा इनको बन्द करो। हमको कोई विकल्प न आयें। बाबा कहते हैं– इसमें डरते क्यों हो? हम तो माया को कहेंगे और जोर से तूफान लाओ। बाक्सिंग में एक दो को कहते हैं क्या कि हमको जोर से उल्टा-सुल्टा नहीं लगाना जो हम गिर पड़ें। तुम भी युद्ध के मैदान में हो ना। बाप को भूलेंगे तो माया थप्पड़

लगायेगी। माया के तूफान तो अन्त तक आते रहेंगे। जब कर्मातीत अवस्था होगी तब यह खलास होंगे। तूफान बहुत आयेंगे, डरने की कोई बात नहीं। बाबा से सच्चा होकर चलना है। सच्चा चार्ट भेजना चाहिए। कई बच्चे सवेरे उठकर याद में बैठते नहीं हैं, सोये रहते हैं। यह नहीं समझते अगर हम श्रीमत पर नहीं चलते तो हम अपनी कल्प-कल्पान्तर के लिए सत्यानाश करते हैं। बड़ी भारी चोट खा रहे हैं। ऐसे भी बच्चे हैं जो कभी सच नहीं बोलते हैं फिर उनकी क्या गति होगी। गिर पड़ेंगे। माया थप्पड़ बड़ा जोर से लगाती है। पता नहीं पड़ता है। सारा दिन झरमुई झगमुई करते रहते हैं। सच न बतलाने से फिर वृद्धि होती जाती है। नहीं तो सच बताना चाहिए। आज यह भूल की, झूठ बोला। अगर सच नहीं बतायेंगे तो वृद्धि होती जायेगी फिर कब सच्चे बनेंगे नहीं। बतलाना चाहिए हमने यह-यह डिस-सर्विस की। हमको क्षमा करना। सच न बतलाने से फिर दिल पर चढ़ते नहीं। सच्चाई खींचती है। बच्चे खुद भी जानते हैं– कौन-कौन अच्छी सर्विस करते हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे बहुत थोड़े हैं। चाहता हूँ गांवडों में भी अच्छी-अच्छी बच्चियों को भेज दूँ तो सब खुश होंगे, बाबा ने हमारे पास बम्बई की हेड, कलकत्ते की हेड भेजी है। कोई भी मिले तो उनको सीधी बात सुनानी है कि पतित-पावन परमपिता परमात्मा संगम पर आकर यह महामन्त्र देते हैं कि मामेकम् याद करो।

○ धारणा ही नहीं होगी तो विचार सागर मंथन हो न सके। सुना और धन्धे में लग जाते हैं। विचार सागर मंथन करने का टाइम नहीं। नहीं तो तुम बच्चों को रोज पढ़ना है और उस पर विचार सागर मंथन करना है। मुरली तो कहाँ भी मिल सकती है। विशाल बुद्धि होने से प्वाइंट को समझ लेते हैं। बाबा रोज समझाते हैं। किसको समझाने के लिए प्वाइंट्स तो बहुत हैं। गंगा पर भी तुम जाकर समझा सकते हो। सर्व का सद्गति दाता बाबा है या पानी की गंगा। तुम क्यों मुफ्त में पैसा बरबाद करते हो। अगर गंगा स्नान से पावन बन सकते हैं तो गंगा पर बैठ जाओ। बाहर निकलते ही क्यों हो। बाप तो कहते हैं श्वाँसों श्वाँस मुझे याद करो। यही योग अग्नि है। योग अर्थात् याद । समझानी तो बहुत है। परन्तु कोई सतोप्रधान बुद्धि हैं तो झट समझ जाते हैं। कोई रजो कोई

तमो बुद्धि भी हैं। यहाँ क्लास में नम्बरवार नहीं बिठाया जाता है। नहीं तो हार्टफेल हो जायें। ड्रामा प्लैन अनुसार किंगडम पूरी स्थापन हो रही है। फिर सतयुग में थोड़ेही बाप पढ़ायेगा। बाप की पढ़ाई का एक ही समय है फिर भक्ति मार्ग में झूठी बातें बनाते हैं। वन्डर तो यह है जो पूरे 84 जन्म लेते हैं, उनका नाम गीता पर डाल दिया है और जो पुनर्जन्म रहित है उनका नाम गुम कर दिया है। तो 100 प्रतिशत झूठ हो गया ना।

○ यह किसने कहा? आत्मा ने कहा क्योंकि तुम बच्चे अब आत्म-अभिमानी बन रहे हो ड्रामा प्लैन अनुसार। आधाकल्प देह-अभिमानी बनें, आधाकल्प तुम फिर आत्म-अभिमानी बनते हो। अभी तुमको आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी पड़े। बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं बच्चे अशरीरी भव, आत्म-अभिमानी भव। तुम बच्चे सामने बैठे हो और वह दूर बैठे हैं। यह जानते हैं कि हमको आत्म-अभिमानी बन बाप को याद करना है। बाबा की ही श्रीमत पर चलना है। इसको कहा जाता है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। बाप के साथ बहुत लव होना चाहिए। अभी बाप कहते हैं देह सहित देह के सब सम्बन्धों को छोड़ो। आत्म-अभिमानी बनने की बहुत-बहुत प्रैक्टिस करनी है। शरीर तो विनाश होना है। आत्मा है अविनाशी। विनाशी शरीर को याद करने के कारण आत्मा को भूल बैठे हैं। यह भी बच्चों को समझाया जाता है कि आत्मा क्या चीज है। कहते भी हैं कि आत्मा छोटी स्टार मिसल है। इन आखों से देखने में नहीं आती है, उनको दिव्य दृष्टि बिगर देखा नहीं जा सकता है। आत्मा को देखने की कोशिश बहुत करते हैं परन्तु देख नहीं सकते। कोई दिव्य दृष्टि से देखते भी हैं तो भी समझ नहीं सकते कि यह क्या चीज है। बड़ी चीज तो है नहीं।

○ जैसे बाप तुमको समझाते हैं तुम भी औरों को युक्ति बताते रहो कि अपने को आत्मा समझो। अब तुम्हारा 84 का चक्र पूरा हुआ, अब वापिस चलना है। हम आत्मा घर से यहाँ आकर शरीर

धारण कर पार्ट बजा रहे हैं। यहाँ कितने जन्म लिए, वह भी बुद्धि में नॉलेज है। देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। घड़ी-घड़ी माया देह-अभिमानी बना देती है। अभी तुमको माया पर जीत पाकर देही-अभिमानी बनना है। एकान्त में बैठ विचार करो हम आत्मा हैं। बाप ने कहा है मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इस देह में मोह नहीं रखो। हम आत्मा अविनाशी हैं, हमको भाईयों में भी बुद्धियोग नहीं लगाना है। भाई को भाई से वर्सा थड़ेही मिलेगा। न कोई की आत्मा को, न भाई के शरीर को याद करना है। याद एक बाप को करना है। वर्सा भी बाप से ही मिलेगा। हम आत्मा अब अपने घर जाती हैं फिर सतयुग में आकर अपना राज्य भाग्य लेंगी। वहाँ आत्म-अभिमानी होंगे। यहाँ माया रावण देह-अभिमानी बना देती है। अभी तुम फिर आत्म-अभिमानी बनने का पुरूषार्थ कर रहे हो। अपना कल्याण करते रहो। यहाँ चित्रों के सामने आकर बैठो। जैसे मिलेट्री को फील्ड में प्रैक्टिस कराई जाती है ना। अभी तुमको आत्म-अभिमानी बन बाबा को याद करने की प्रैक्टिस करनी है। बाप कहते हैं– तुम तो मेरे बच्चे हो ना। देह-अभिमानी बनने से तुम माया के बन गये हो। बुलाते भी हो कि हे पतित-पावन, हे ज्ञान के सागर... बाकी तो सब हैं भक्ति के सागर। भक्ति मार्ग का कितना विस्तार है।

○ तकदीर में नहीं है या ग्रहचारी है। सर्विस तो बहुत है। मेहनत भी लगती है। थक भी जाते हैं। समझाते-समझाते गले भी घुट जाते हैं। ऐसे तो थर्डक्लास वालों का भी गला घुट जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने बहुत अच्छी सर्विस की। बाबा जानते हैं– अच्छी रॉयल सर्विस करने वाले कौन हैं। परन्तु कइयों में खामियाँ भी रहती हैं। नाम-रूप में फँसते रहते हैं। फिर शिक्षा देकर सुधारा जाता है। नाम-रूप में कभी नहीं फँसना चाहिए। देही-अभिमानी बनना है। आत्मा छोटी बिन्दी है। बाप भी बिन्दी है। अपने को छोटी बिन्दी समझ और बाबा को याद करना बहुत मेहनत है। मोटे हिसाब में तो कह देते– शिवबाबा हम आपको बहुत याद करते हैं। परन्तु एक्यूरेट बुद्धि में याद रहनी चाहिए। बड़ा धैर्य व गम्भीरता से याद करना होता है। इस रीति कोई मुश्किल याद करते हैं। इसमें बहुत मेहनत है। अच्छा।

- तुम्हारी बुद्धि में है कि शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम यह लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। यह पैगाम सबको सुनाना है। तुम पैगम्बर के बच्चे हो और जो भी आते हैं, वह धर्म स्थापक हैं। तुम सबको यह मैसेज सुनाओ कि बाबा स्वर्ग नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। बाबा कहते हैं अगर तुम मुझे याद करेंगे और पवित्र रहेंगे तो तुम भी स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। घड़ी-घड़ी यह ख्यालात चलने चाहिए। कच्ची अवस्था होने के कारण धन्धे-धोरी में जाते हैं तो सब कुछ भूल जाता है। फिर जो कुछ महावाक्य सुनते हैं, वह भी व्यर्थ नहीं जाते हैं। एक-एक रत्न कम नहीं है। एक रत्न भी स्वर्ग का मालिक बना सकता है। गाते भी हैं भारत हमारा बहुत ऊंच देश है। तुम जानते हो हमारा भारत जो स्वर्ग था, वह अब नर्क बना है। अब फिर बाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। प्रजा तो ढेर बनती जाती है। वृद्धि भी होती रहती है। सेन्टर्स खुलते ही रहते हैं। बाप भी कहते हैं गांव में जाकर सर्विस करो। ऐसे बहुत गांव हैं जहाँ मिलकर क्लास करते हैं।

- सेन्टर पर जो आते हैं उनको समझाना है अगर पवित्र नहीं बनेंगे तो नॉलेज बुद्धि में ठहरेगी नहीं। 5-7 रोज आकर फिर पतित बने तो नॉलेज खत्म। योग सीखते-सीखते अगर पतित बने तो सब कुछ मिट्टी में मिल जायेगा। अगर कोई पवित्र नहीं बन सकता है तो भले न आओ। परवाह थोड़ेही रखनी चाहिए। जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा सिर पर है। सो बिगर याद के कैसे उतरेगा! गाया भी हुआ है– सेकेण्ड में जीवन मुक्ति। जो बाप कहे सो करना है। एक बाबा का ही गायन है जो आकर मनुष्य से देवता बनाते हैं। तो ऐसे बनाने वाले बाप को कितना अच्छी रीति याद करना चाहिए। यह भी जानते हैं ड्रामा अनुसार भक्ति मार्ग को भी चलना ही है। वास्तव में सर्व का सद्गतिदाता एक है, तो पूजा भी एक की करनी चाहिए। देवी-देवता जो सतोप्रधान थे वह 84 जन्म भोगकर तमोप्रधान बने हैं। अब फिर सतोप्रधान बनना है। सो सिवाए बाबा की याद के बन न सकें। न किसी में बनाने की ताकत है सिवाए बाप के। याद भी एक को ही

करना है। यह है अव्यभिचारी याद । अनेकों को याद करना– यह है व्यभिचारीपना। सबकी आत्मा जानती है कि शिव हमारा बाबा है इसलिए सब तरफ जहाँ भी देखो शिव को पूजते हैं। देही-अभिमानी बनना है। आत्मा कहती है मेरा सिवाए एक बाप के और किसी में ममत्व नहीं है। हम यहाँ रहते भी शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते हैं। अभी दु:खधाम को छोड़ना है। परन्तु जब तक हमारा नया घर तैयार हो जाए तब तक पुराने घर में रहना है। नये घर में जाने लायक बनना है। आत्मा पवित्र बन जायेगी तो फिर घर चली जायेगी। कितना सहज है। मूल बात है ही यह समझने की कि परमात्मा कौन है और यह दादा कौन है? बाप इन द्वारा वर्सा देते हैं। बाबा कहते हैं बच्चे मनमनाभव। मुझे याद करो तो तुम पावन देवता बन जायेंगे सतयुग में। बाकी सब उस समय मुक्तिधाम में रहते हैं।

○ यह याद बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। हरदम याद की यात्रा में रहना, इसमें तो बड़ी मेहनत चाहिए। परन्तु रचता और रचना का ज्ञान तो बुद्धि में होना चाहिए ना। हम सतयुग में देवी-देवता थे, उसको स्वर्ग कहा जाता है। देवी-देवतायें विश्व के मालिक थे। एक ही धर्म था। अक्षरों को भी पूरा समझना चाहिए। तुम बच्चे जानते हो सतयुग आदि में ही हम सूर्यवंशी घराने में थे। रचता बाबा ने जो आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाया है वह तो हर एक की बुद्धि में रहना चाहिए। यह कभी भूलना नहीं चाहिए। यह भी तुम जानते हो। हम पुनर्जन्म लेते-लेते फिर त्रेता में आये हैं तो दो कला कम हो गई। सृष्टि भी पुरानी होती जाती है। यह अच्छी रीति बुद्धि में रखना है। जितना तुम याद करते रहेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ा रहेगा ।

○ बाप रूहानी यात्रा सिखलाते हैं। हे आत्मा तुम अपने बाप को याद करो और घर को याद करो। बाबा को याद करने से घर पहुँच जायेंगे। याद नहीं करेंगे तो पाप कटेंगे नहीं। भल ले तो सबको जायेंगे परन्तु सजा खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करेंगे अथवा योगबल से, चुक्तू तो जरूर करना है। तुम जानते हो अभी हम जमा कर रहे हैं। जितना पवित्र बन जास्ती कमाई करेंगे उतना जमा

होता है। पुरूषार्थ नहीं करेंगे तो कुछ भी जमा नहीं होगा। घाटा पड़ जायेगा। तुम जानते हो आधाकल्प हम घाटा पाते ही आये हैं। अभी बिल्कुल देवाला हो गया है। हर बात में देवाला। अभी बच्चों को 21 जन्मों के लिए जमा करना है, उसके लिए मुख्य है याद की यात्रा। यह तो सदैव स्मृति में रखो। जब भी फुर्सत मिले तो इस स्मृति में रहो।

○ कोई-कोई तो एक जन्म में दो चार यात्रायें भी करते हैं। वह कहेंगे जीव आत्माओं की यात्रा और यह है आत्माओं की यात्रा। यह बड़ी समझने की बातें हैं। चलते फिरते बुद्धि में बाबा को याद रखना है तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। बाबा की याद में हम बाबा के पास चले जायेंगे। अब तुम रूहानी बच्चों को रूहानी बाप यह यात्रा सिखलाते हैं। गीता में मनमनाभव अक्षर है परन्तु उनका अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं– मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म होंगे। फिर क्या होगा? तुम बच्चे जानते हो हम याद से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। इस समय सब तमोप्रधान हैं। सारा झाड़ जड़जड़ीभूत हो गया है। युगों पर भी समझाया है कि मुख्य 4 युग हैं। बाकी यह ब्राह्मणों का संगमयुग है गुप्त। परमपिता परमात्मा ही आकर ब्राह्मण देवता क्षत्रिय धर्म स्थापन करते हैं। यह सब बातें बच्चों को याद रखनी है और अपना बुद्धियोग बाप के साथ रखना है। मूल बात ही है विकर्माजीत बनने की। बरोबर हम सतोप्रधान पवित्र थे। असुल में 24 कैरेट सोना थे। फिर सतो में आये 22 कैरेट बने। फिर रजो में 18 कैरेट, तमो में 9 कैरेट बनें। सोने की डिग्री होती है। यह आत्मा की ही बात है। जैसे भ्रमरी छी-छी कीड़ों को ले आती है, उनको बैठ आप समान बनाती है। तुम भी भूँ-भूँ कर मनुष्य से देवता बनाते हो। भ्रमरी कीड़े को ले आकर घर में एकान्त में बिठाती है, उनमें भी कितना अक्ल है।

○ एक ने मुख की ताली बजाई, दूसरा चुप कर दे तो वह आपेही चुप हो जायेंगे। ताली से ताली बजने से आवाज हो जाता है। बच्चों को एक दो का कल्याण करना है। बाप समझाते हैं बच्चे

सदैव खुशी में रहने चाहते हो तो मनमनाभव। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। भाईयों (आत्माओं) तरफ देखो। भाईयों को भी यह नॉलेज दो। यह टेव (आदत) पड़ जाने से फिर कभी क्रिमिनल आई धोखा नहीं देगी। ज्ञान के तीसरे नेत्र से तीसरे नेत्र को देखो। बाबा भी तुम्हारी आत्मा को ही देखते हैं। कोशिश यह करनी है सदैव आत्मा को ही देखें। शरीर को देखें ही नहीं। योग कराते हो तो भी अपने को आत्मा समझ भाईयों को देखते रहेंगे तो सर्विस अच्छी होगी। बाबा ने कहा है भाईयों को समझाओ। भाई सभी बाप से वर्सा लेते हैं। यह रूहानी नॉलेज एक ही बार तुम ब्राह्मण बच्चों को मिलती है। तुम ब्राह्मण ही फिर देवता बनने वाले हो। इस संगमयुग को थोड़ेही छोड़ेंगे, नहीं तो पार कैसे जायेंगे, कूदेंगे थोड़ेही।

○ बाप कहते हैं प्रैक्टिस करके देखो तीर लगता है या नहीं। यह नई टेव (आदत) डालनी है तो फिर शरीर का भान निकल जायेगा। माया के तूफान कम आयेंगे। बुरे संकल्प नहीं आयेंगे। क्रिमिनल आई भी नहीं रहेगी। हम आत्मा ने 84 का चक्र लगाया। अब नाटक पूरा होता है। अब बाबा की याद में रहना है। याद से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन, सतोप्रधान दुनिया के मालिक बन जायेंगे। कितना सहज है। बाप जानते हैं बच्चों को यह शिक्षा देना भी मेरा पार्ट है। कोई नई बात नहीं। हर 5000 वर्ष बाद हमको आना होता है। मैं बंधायमान हूँ, बच्चों को बैठ समझाता हूँ– मीठे बच्चे रूहानी याद की यात्रा में रहो तो अन्त मते सो गति हो जायेगी। यह अन्तकाल है ना। मामेकम् याद करो तो तुम्हारी सद्गति हो जायेगी। याद की यात्रा से पाया मजबूत हो जायेगा। यह देही-अभिमानी बनने की शिक्षा एक ही बार तुम बच्चों को मिलती है। कितना वन्डरफुल ज्ञान है। बाबा वन्डरफुल है तो बाबा का ज्ञान भी वन्डरफुल है। कब कोई बता न सके। अभी वापस चलना है इसलिए बाप कहते हैं मीठे बच्चों यह प्रैक्टिस करो। अपने को आत्मा समझ आत्मा को ज्ञान दो। तीसरे नेत्र से भाई-भाई को देखना है। यही बड़ी मेहनत है।

○ तुम जानते हो यह लक्ष्मी-नारायण कितना पुरूषोत्तम हैं। उन्हों के जेवर वस्त्र आदि कितने शोभनिक होते हैं तो ऐसे चित्र बनाने चाहिए। बाबा तो डायरेक्शन ही देंगे। बच्चे तो शहरों में घूमते फिरते हैं। उन्हों को ही ध्यान में आना चाहिए कि कैसे-कैसे शोभनिक आकर्षण वाले चित्र बनायें, जिससे भभका अच्छा हो। बुद्धि में सारा दिन यह याद रहना चाहिए कि हम उत्तम ते उत्तम पुरूष बन रहे हैं।

○ समय थोड़ा है, विनाश सामने खड़ा है। कर्मातीत अवस्था को पाना है जरूर। पतित से पावन होने के लिए याद बहुत जरूरी है। अपनी सम्भाल करनी है। मुझे सतोप्रधान बनना है– यह चिंता लगी रहे क्योंकि सिर पर जन्म-जन्मान्तर का बोझा है। रावण राज्य होने से सीढ़ी उतरते ही आये हो। अब योगबल से चढ़ना है। रात दिन यही फिकरात रहे कि मुझे सतोप्रधान बनना है और सृष्टि चक्र की नॉलेज भी बुद्धि में चाहिए। स्कूल में भी यह रहता है कि हम फलानी-फलानी सबजेक्ट में पास हो जायें, इसमें मुख्य सब्जेक्ट है याद की। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का भी ज्ञान चाहिए। तुम्हारी बुद्धि में सारा सीढ़ी का ज्ञान है कि अब हम बाबा की याद से सतयुगी सूर्यवंशी घराने की सीढ़ी चढ़ते हैं। 84 जन्म लेते सीढ़ी उतरते आये, अब फट से चढ़ जाना है। गायन है ना– सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। इस जन्म में ही बाप से जीवनमुक्ति का वर्सा लेकर सो देवता बन जायेंगे। बाबा कहते हैं बच्चे तुम ही सूर्यवंशी थे, फिर चन्द्रवंशी, वैश्य वंशी बने। अभी तुमको ब्राह्मण बनाता हूँ।

○ ब्रह्मा बनने में 5 हजार वर्ष लगते हैं। 84 जन्म लेते हैं ना। तुम कहेंगे हम सो देवता बनते हैं। यह तो बुद्धि में अच्छी रीति याद करना चाहिए। सृष्टि चक्र बुद्धि में रहना चाहिए। इन लक्ष्मी-नारायण के चित्र को देख बहुत खुश होना चाहिए। यह है एम आब्जेक्ट। राजयोग सीख रहे हैं– नर से नारायण बनने के लिए। कृष्ण सतयुग का प्रिन्स था। वहाँ थोड़ेही बैठ गीता सुनायेंगे। कितनी

भूल है। यह भूल बाप के बिगर कोई बता न सके। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो और तो सब विषय सागर में गोते खाते रहते हैं। बहुतों को तो माया एकदम गले से पकड़ गटर में डाल देती है। बाप कहते हैं– गटर में मत गिरो। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। पछताना न पड़े इसलिए बाप समझाते हैं। कईयों को तो बहुत जोश आता है, झट मान लेते हैं।

- अभी तुमको तो मित्र-सम्बन्धियों आदि सबको भूलना ही है क्योंकि यह पुरानी दुनिया ही खत्म होने वाली है । इस शरीर को भी भूल जाना है । अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना है । पवित्र बनना है । 84 जन्मों का पार्ट तो बजाना ही है । बीच में तो कोई वापस जा न सके । अभी नाटक पूरा होता है । तुम बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए । अभी हमको जाना है अपने घर । पार्ट पूरा हुआ, उत्कण्ठा होनी चाहिए-बाबा को बहुत याद करें । याद से विकर्म विनाश होंगे । इस पुरानी दुनिया को आग लग रही है । सामने एम ऑब्जेक्ट देखने से बड़ी खुशी रहती है-हमको यह बनना है । सारा दिन बुद्धि में यही याद रहे तो कभी भी कोई शैतानी काम न हो । हम यह बन रहे हैं फिर ऐसा उल्टा काम कैसे कर सकते हैं? परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो ऐसी-ऐसी युक्तियाँ भी रचते नहीं, अपनी कमाई नहीं करते । कमाई कितनी अच्छी है । घर बैठे सभी को अपनी कमाई करनी है और फिर औरों को करानी है । घर बैठे यह स्वदर्शन चक्र फिराओ, औरों को भी स्वदर्शन चक्रधारी बनाना है । जितना बहुतों को बनायेंगे उतना तुम्हारा मर्तबा ऊंचा होगा ।

- अब मुख्य बात है-पावन जरूर बनना है । यही फिकरात है । कर्म करते हुए बाप की याद में रहना है । तुम एक माशूक के आशिक हो ना । एक माशूक को सब आशिक याद करते हैं । वह माशूक कहते हैं अभी मुझे याद करो । मैं तुमको पावन बनाने आया हूँ । सब भक्तों को फल देने वाला एक भगवान् । उनको कोई भी जान नहीं सकते । आत्मा कहती है ओ गॉड फादर । वो

लौकिक फादर तो यहाँ हैं फिर भी उस बाप को याद करते हैं, तो आत्मा के दो फादर हो जाते हैं। भक्ति मार्ग में उस फादर को याद करते रहते हैं। आत्मा तो है ही। इतनी सब आत्माओं को अपना- अपना पार्ट मिला हुआ है। एक शरीर छोड़ फिर दूसरा ले पार्ट बजाना होता है। यह सब बातें बाप ही समझाते हैं। कहते भी हैं हम यहाँ पार्ट बजाने आये हैं। यह एक माण्डवा है।

- अभी तुम बच्चों को तो बाप से पूरा वर्सा लेने का पुरूषार्थ करना है। यह है रूहानी नेचर क्योर। बिल्कुल सिम्पुल बात सिर्फ मुख से कहते हैं मन्मनाभव। आत्मा को क्योर करते हैं इसलिए बाप को अविनाशी सर्जन भी कहते हैं। कैसा अच्छा ऑपरेशन सिखलाते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायेंगे। चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। इन कांटों के जंगल में रहते हुए ऐसे समझो कि हम फूलों के बगीचे में जा रहे हैं। घर जा रहे हैं। एक-दो को याद दिलाते रहो। अल्लाह को याद करो तो बे बादशाही मिल जायेगी।

- तुम आत्मायें अब परमात्मा बाप जो सत्य है, उनके साथ बैठी हो। वह सत बाप, सत टीचर, सतगुरू है। तो गोया तुम सतसंग में बैठे हो। फिर भल यहाँ वा घर में बैठे हो परन्तु अपने को आत्मा समझ याद बाप को करते हो। हम आत्मा अब सत बाप को याद कर रहे हैं अर्थात् सत के संग में हैं। बाप मधुबन में बैठे हैं। बाप को याद करने की युक्तियाँ भी अनेक प्रकार की मिलती हैं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। यह भी बच्चे जानते हैं - हम 16 कला सम्पूर्ण बनते हैं फिर उतरते-उतरते कला कम होती जाती है। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी है फिर गिरते-गिरते व्यभिचारी भक्ति होने से तमोप्रधान बन जाते हैं फिर उनको सत का संग जरूर चाहिए। नहीं तो पवित्र कैसे बनें? तो अब तुम आत्माओं को सत बाप का संग मिला है। आत्मा जानती है हमको बाबा को याद करना है, उनका ही संग है। याद को भी संग कहेंगे। यह है सत का संग। यह देह होते हुए भी तुम आत्मा मुझे याद करो, यह है सत का संग। जैसे कहते हैं ना

इनको बड़े आदमी का संग लगा हुआ है, इसलिए देह- अभिमानी बन पड़ा है। अभी तुम्हारा संग हुआ है सत बाप के साथ, जिससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हो। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आता हूँ। अभी आत्मा का परमात्मा से संग होने से तुम 21 जन्म के लिए पार हो जाते हो। फिर तुमको संग लगता है देह का। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बाप कहते हैं मेरे साथ तुम बच्चों का संग होने से तुम सतोप्रधान बन जाते हो, जिसको गोल्डन एजड कहा जाता है।

○ मैं तो सदैव परमधाम में रहता हूँ क्योंकि मुझे तो जन्म-मरण में आना नहीं है। यह तुम बच्चे जानते हो, तुम्हारे में भी कोई का संग जास्ती है, कोई का कम है। कोई तो अच्छी रीति पुरूषार्थ कर योग में रहते हैं, जितना समय आत्मा बाप का संग करेगी उतना फायदा है। विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं-हे आत्मायें, मुझ बाप को याद करो, मेरा संग करो। मुझे यह शरीर का आधार तो लेना पड़ता है। नहीं तो परमात्मा बोले कैसे? आत्मा सुने कैसे? अभी तुम बच्चों का संग है सत के साथ। सत बाप को निरन्तर याद करना है। आत्मा को सत का संग करना है। आत्मा भी वन्डरफुल है, परमात्मा भी वन्डरफुल है, दुनिया भी वन्डरफुल है। यह दुनिया कैसे चक्र लगाती है, वंडर है। तुम सारे ड्रामा में आलराउन्ड पार्ट बजाते हो। तुम्हारी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है-वंडर है।

○ तुम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हो, दादे पोत्रे हो। तो इतनी खुशी होनी चाहिए ना कि हम दाद पोत्रे हैं। वर्सा भी दादे से मिलता है, यही याद की यात्रा है। बुद्धि में यही सिमरण रहना चाहिए। उन सतसंगों में तो एक जगह जाकर बैठते हैं, यहाँ वह बात नहीं। ऐसे नहीं कि एक जगह बैठने से ही सत का संग होगा। नहीं, उठते-बैठते, चलते-फिरते हम सत के संग में हैं। अगर उनको

याद करते हैं तो। याद नहीं करते हैं तो देह- अभिमान में हैं, देह तो असत चीज है ना। देह को सत नहीं कहेंगे। शरीर तो जड़ है, 5 तत्वों का बना हुआ, उनमें आत्मा नहीं होती तो चुरपुर न हो। मनुष्य के शरीर की तो वैल्यु है नहीं, और सबके शरीर की वैल्यु है। सौभाग्य तो आत्मा को मिलना है, मैं फलाना हूँ, आत्मा कहती है ना।

- बाप आते भी वानप्रस्थ में ही हैं। बच्चों को खुशी होती है तो बाप भी खुश होते हैं। बाप कहते हैं हम जाते हैं बच्चों को नॉलेज दे रावण से छुड़ाने। पार्ट तो खुशी से बजाया जाता है ना। बाप बहुत खुशी से पार्ट बजाते हैं। बाप को कल्प-कल्प आना पड़ता है। यह पार्ट कभी बन्द नहीं होता है। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। जितना सत का संग करेंगे उतना खुशी होगी, याद कम करते हैं इसलिए इतनी खुशी नहीं रहती है। बाप बच्चों को मिलकियत देते हैं। जो बच्चे सच्ची दिल वाले हैं, उन पर बाप का बहुत प्यार रहता है। सच्ची दिल पर साहेब राजी रहते हैं। अन्दर बाहर जो सच्चे रहते हैं, बाप के मददगार बनते हैं, सर्विस पर तत्पर रहते हैं वही बाप को प्रिय लगते हैं। अपनी दिल से पूछना है-हम सच्ची-सच्ची सर्विस करते हैं? सच्चे बाबा के साथ संग रखते हैं? अगर सत बाबा के साथ संग नहीं रखेंगे तो क्या गति होगी? बहुतों को रास्ता बताते रहेंगे तो ऊँच पद भी पायेंगे। सत बाप से हमने क्या वर्सा पाया है, अपने अन्दर देखना है। यह तो जानते हैं नम्बरवार हैं। कोई कितना वर्सा पाते हैं, कोई कितना पाते हैं। रात-दिन का फर्क रहता है।

- इन लक्ष्मी-नारायण ने भी याद के बल से यह पद पाया है फिर पा रहे हैं। हम ही देवी-देवता थे, हमने कल्प पहले ऐसे राज्य पाया था, जो गँवाया, फिर हम पा रहे हैं। यही चिंतन बुद्धि में रहे तो भी खुशी रहेगी। परन्तु माया यह स्मृति भुला देती है। बाबा जानते हैं तुम स्थाई याद में रह

नहीं सकेंगे। तुम बच्चे अडोल बन याद करते रहो तो जल्दी कर्मातीत अवस्था हो जाए और आत्मा वापिस चली जाए। परन्तु नहीं। पहले नम्बर में तो यह जाने वाला है। फिर है शिवबाबा की बरात। शादी में मातायें मिट्टी के मटके में ज्योति जगाकर ले जाती हैं ना, यह निशानी है। शिवबाबा साजन तो सदा जागती ज्योत है।

○ तुम पूज्य ही पुजारी बनते हो, कला कम हो जाती है। आयु भी कम होती जाती है क्योंकि भोगी बन जाते हो। वहाँ हैं योगी। ऐसे नहीं कि किसकी याद में योग लगाते हो। वहाँ हैं ही पवित्र। कृष्ण को भी योगेश्वर कहते हैं। इस समय कृष्ण की आत्मा बाप के साथ योग लगा रही है। कृष्ण की आत्मा इस समय योगेश्वर हैं, सतयुग में योगेश्वर नहीं कहेंगे। वहाँ तो प्रिन्स बनती है। तो तुम्हारी पिछाड़ी में ऐसी अवस्था रहनी चाहिए जो सिवाए बाप के और कोई शरीर की याद न रहे। शरीर से और पुरानी दुनिया से ममत्व मिट जाए। सन्यासी रहते तो पुरानी दुनिया में हैं परन्तु घरबार से ममत्व मिटा देते हैं। ब्रह्म को ईश्वर समझ उनसे योग लगाते हैं। अपने को ब्रह्म ज्ञानी, तत्व ज्ञानी कहते हैं। समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। बाप कहते हैं यह सब रांग है।

○ तुम जानते हो हमारी एम ऑब्जेक्ट है ही लक्ष्मी-नारायण बनने की परन्तु पढ़ने बिगर थोड़ेही बनेंगे। पढ़कर होशियार बनो, प्रजा भी बनाओ तब लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। मेहनत है। पास विद् ऑनर होना चाहिए जो धर्मराज की सजा न मिले। यह मुरब्बी बच्चा भी साथ है, यह भी कहते हैं तुम तीखे जा सकते हो। बाबा के ऊपर तो कितना बोझा है। सारा दिन कितने ख्यालात करने पड़ते हैं। हम इतना याद नहीं कर सकते हैं। भोजन पर थोड़ी याद रहती फिर भूल जाते हैं। समझता हूँ बाबा और हम दोनों सैर करते हैं। सैर करते-करते बाबा को भूल जाता हूँ। खिसकनी वस्तु है ना। घड़ी-घडी याद खिसक जाती है। इसमें बहुत मेहनत है। याद से ही

आत्मा पवित्र होनी है। बहुतों को पढायेंगे तो ऊँच पद पायेंगे। जो अच्छा समझते हैं वह अच्छा पद पायेंगे।

- हिंसा काम कटारी को कहा जाता है। सन्यासी भी समझते हैं यह हिंसा हैं इसलिए पवित्र बनते हैं। परन्तु तुम्हारे सिवाए बाप के साथ प्रीत कोई की है नहीं। आशिक माशूक की प्रीत होती है ना। वह आशिक माशूक तो एक जन्म के गाये जाते हैं। तुम सभी हो मुझ माशूक के आशिक। भक्तिमार्ग में मुझ एक माशूक को याद करते आये हो। अब मैं कहता हूँ यह अन्तिम जन्म सिर्फ पवित्र बनो और यथार्थ रीति याद करो तो फिर याद करने से ही तुम छूट जायेंगे। सतयुग में याद करने की दरकार ही नहीं रहेगी।

- वहाँ आकाश- धरती सारी तुम्हारी रहती है। तो इतनी खुशी बच्चों को रहनी चाहिए ना। हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं क्योंकि वह कभी हॉली डे नहीं लेते, कभी बीमार नहीं होते। याद शिवबाबा की ही रहनी चाहिए। इनको कहा जाता है निरहंकारी। मैं यह करता हूँ, मैं यह करता हूँ, यह अहंकार नहीं आना चाहिए। सर्विस करना तो फर्ज है, इसमें अहंकार नहीं आना चाहिए। अहंकार आया और गिरा। सर्विस करते रहो, यह है रूहानी सेवा। बाकी सब है जिस्मानी। अच्छा!

- विचार करना है, उनको भोलानाथ भगवान क्यों कहा जाता है? भोलानाथ भगवान कहने से बुद्धि ऊपर चली जाती है। साधू- सन्त आदि अंगुली से इशारा भी ऐसे देते हैं ना कि उनको याद करो। यथार्थ रीति तो कोई जान नहीं सकते। अभी पतित-पावन बाप सम्मुख में आकर कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाएं। गैरंटी है। अल्फ और बे। अल्फ अल्लाह, बे बादशाही-इतनी तो सिम्पुल बात है। बाप को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे।

बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक, सम्पूर्ण निर्विकारी थे। तो बाप को याद करने से ही तुम ऐसा सम्पूर्ण बनेंगे। जितना जो याद करते हैं और सर्विस करते हैं उतना वह ऊंच पद पाते हैं। वह समझ में भी आता है, स्कूल में स्टूडेंट समझते नहीं हैं क्या कि हम कम पढ़ते हैं! जो पूरा अटेंशन नहीं देते हैं तो पिछाड़ी में बैठे रहते हैं, तो जरूर फेल हो जायेंगे |

○ बाप के बने, फिर बाप के लिए कोई संशय बुद्धि नहीं हो सकता। परन्तु यह बाप हैं वंडरफुल। गायन भी है आश्चर्यवत् बाबा को जानन्ती, बाबा कहन्ती, ज्ञान सुनन्ती, सुनावन्ती, अहो माया फिर भी संशयबुद्धि बनावन्ती। बाप समझाते हैं इन भक्ति मार्ग के शास्त्रों में कोई सार नहीं है। बाप कहते हैं मुझे कोई भी जानते नहीं। तुम बच्चों में भी मुश्किल कोई ठहर सकते हैं। तुम भी फील करते हो कि वह याद स्थाई ठहरती नहीं है।

○ तुम बच्चों को आत्म- अभिमानी हो रहना है, इसमें ही मेहनत है। बाप को याद नहीं करते, देही- अभिमानी नहीं रहते, तो देह के सम्बन्धी आदि याद आ जाते हैं। बाप कहते हैं तुम नंगे आये थे फिर नंगे जाना है। यह देह के सम्बन्ध आदि भूल जाओ। इस शरीर में रहते मुझे याद करो तो सतोप्रधान बनेंगे। बाप कितनी बड़ी अथॉरिटी है। बच्चों के सिवाए कोई जानते ही नहीं। बाप कहते हैं मैं हूँ गरीब निवाज, सभी साधारण हैं। पतित-पावन बाप आया है, यह जान लें तो पता नहीं कितनी भीड़ हो जाए। बड़े-बड़े आदमी आते हैं तो कितनी भीड़ हो जाती है। तो ड्रामा में इनका पार्ट ही गुप्त रहने का है। आगे चल आहिस्ते- आहिस्ते प्रभाव निकलेगा और विनाश हो जायेगा। सब थोड़ेही मिल सकते हैं। याद करते हैं ना तो उनको बाप का परिचय मिल जायेगा।

○ मनुष्य तो न रचयिता को, न रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। अभी तुम जानते हो बाप है ज्ञान का सागर। तुम मास्टर सागर हो। तुम (मातायें) हो नदियां और यह गोप हैं ज्ञान मानसरोवर। यह ज्ञान नदियां हैं। तुम हो सरोवर। प्रवृत्ति मार्ग चाहिए ना। तुम्हारा पवित्र गृहस्थ आश्रम था। अभी पतित है। बाप कहते हैं यह सदैव याद रखो कि हम आत्मा हैं। एक बाप को याद करना है। बाबा ने फरमान दिया है कोई भी देहधारी को याद न करो। इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सब खत्म हो जाना है इसलिए बाप कहते हैं मनमनाभव, मध्याजीभव। इस कब्रिस्तान को भूलते जाओ। माया के तूफान तो बहुत आयेंगे, इनसे डरना नहीं है। बहुत तूफान आयेंगे परन्तु कर्मेन्द्रियों से कर्म नहीं करना है। तूफान आते हैं तब जब तुम बाप को भूल जाते हो। यह याद की यात्रा एक ही बार होती है। वह है मृत्युलोक की यात्रायें, अमरलोक की यात्रा यह है। तो अब बाप कहते हैं कोई भी देहधारी को याद न करो।

○ बाबा कहते हैं माया ने तुमको फूल (मूर्ख) बना दिया है, अप्रैल फूल कहते हैं ना। अभी मैं तुमको लक्ष्मी-नारायण जैसा बनाने आया हूँ। चित्र तो बहुत अच्छे हैं– आज हम क्या हैं, कल हम क्या होंगे? परन्तु माया कम नहीं। माया डोर बांधने नहीं देती। खींचातान होती है। हम बाबा को याद करते हैं फिर पता नहीं क्या होता है? भूल जाते हैं। इसमें मेहनत है इसलिए भारत का प्राचीन योग मशहूर है। उन्हों को वर्सा किसने दिया, यह कोई समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं बच्चों, मैं तुमको फिर से वर्सा देने आया हूँ। यह तो बाप का काम है। इस समय सब नर्कवासी हैं। तुम खुश हो रहे हो। यहाँ कोई आते हैं समझते हैं तो खुशी होती है, बरोबर ठीक है। 84 जन्मों का हिसाब है। बाप से वर्सा लेना है।

○ सतोप्रधान जरूर बनना है। सिर्फ तुम ब्राह्मण ही हो जिनको बाप बैठ पढाते हैं। ब्राह्मणों का झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा। ब्राह्मण जो पक्के बन जायेंगे वह फिर जाकर देवता बनेंगे। यह नया

झाड़ है। माया के तूफान भी लगते हैं। सतयुग में कोई तूफान नहीं लगता। यहाँ माया बाबा की याद में रहने नहीं देती। हम चाहते हैं बाबा की याद में रहें। तमो से सतोप्रधान बनें। सारा मदार है याद पर। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। विलायत वाले भी चाहते हैं प्राचीन योग कोई आकर सिखलाये। अब योग भी दो प्रकार के हैं– एक हैं हठयोगी, दूसरे हैं राजयोगी। तुम हो राजयोगी। यह भारत का प्राचीन राजयोग है जो बाप ही सिखलाते हैं। सिर्फ गीता में मेरे बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। कितना फर्क हो गया है। शिवजयन्ती होती है तो तुम्हारी वैकुण्ठ की भी जयन्ती होती है, जिसमें श्रीकृष्ण का राज्य है। तुम जानते हो शिवबाबा की जयन्ती है तो गीता की भी जयन्ती है। बैकुण्ठ की भी जयन्ती होती है जिसमें तुम पवित्र बन जायेंगे। कल्प पहले मुआफिक स्थापना करते हैं। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो। याद न करने से माया कुछ न कुछ विकर्म करा देती है। याद नहीं किया और लगी चमाट। याद में रहने से चमाट नहीं खायेंगे। यह बॉक्सिंग होती है। तुम जानते हो– हमारा दुश्मन कोई मनुष्य नहीं है। रावण है दुश्मन।

○ तुम जानते हो हम स्वर्गवासी तो बनने वाले हैं। अब हम संगमवासी हैं। तुम अब न नर्क में हो, न स्वर्ग में हो। जो-जो ब्राह्मण बनते हैं उनका लंगर इस छी-छी दुनिया से उठ चुका है। तुमने कलियुगी दुनिया का किनारा छोड़ दिया है। कोई ब्राह्मण तीखा जा रहा है याद की यात्रा में, कोई कम। कोई हाथ छोड़ देते हैं अर्थात् फिर कलियुग में चले जाते हैं। तुम जानते हो खिवैया हमको अब ले जा रहा है। वह यात्रा तो अनेक प्रकार की है। तुम्हारी एक ही यात्रा है। यह बिल्कुल न्यारी यात्रा है। हाँ तूफान आते हैं जो याद को तोड़ देते हैं। इस याद की यात्रा को अच्छी रीति पक्का करो। मेहनत करो। तुम कर्मयोगी हो। जितना हो सके हथ कार डे दिल यार डे... आधाकल्प तुम आशिक माशूक को याद करते आये हो। बाबा यहाँ बहुत दुःख है, अब हमको सुखधाम का मालिक बनाओ। याद की यात्रा में रहेंगे तो तुम्हारे पाप खलास हो जायेंगे। तुमने ही स्वर्ग का वर्सा पाया था, अब गँवाया है। भारत स्वर्ग था तब कहते हैं प्राचीन भारत। भारत को ही बहुत मान देते हैं। सबसे बड़ा भी है, सबसे पुराना भी है। अब तो भारत कितना

गरीब है इसलिए सब उनको मदद करते हैं। वो लोग समझते हैं, हमारे पास बहुत अनाज हो जायेगा। कहाँ से मंगाना नहीं पड़ेगा परन्तु यह तो तुम जानते हो– विनाश सामने खड़ा है जो अच्छी तरह से समझते हैं उन्हों को अन्दर बहुत खुशी रहती है।

○ बाप कहते– सब कुछ करते निरन्तर मुझे याद करो। जैसे आशिक-माशूक होते हैं, उन्हों का जिस्मानी लव रहता है। तुम बच्चे इस समय आशिक हो। तुम्हारा माशूक आया हुआ है। तुमको पढा रहा है। पढते-पढते तुम देवता बन जायेंगे। याद से विकर्म विनाश होंगे और तुम सदैव निरोगी भी बनेंगे। फिर 84 के चक्र को भी याद रखना है। सतयुग में इतने जन्म, त्रेता में इतने जन्म। हम देवी देवता धर्म वालों ने पूरे 84 का चक्र लगाया है। आगे चलकर तुम बहुत वृद्धि को पायेंगे। तुम्हारे सेन्टर्स हजारों की अन्दाज में हो जायेंगे। गली-गली में समझाते रहेंगे कि सिर्फ बाप को और वर्से को याद करो। अब चलो घर वापिस। यह तो छी-छी चोला है। यह है बेहद का वैराग्य। सन्यासी तो सिर्फ हद का घरबार छोड़ देते हैं। वह हैं हठयोगी। वह राजयोग सिखला नहीं सकते। कहते हैं– यह भक्ति भी अनादि है। बाप कहते हैं यह भक्ति तो द्वापर से शुरू होती है।

○ बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट बन आया हूँ। तुमने बुलाया ही है हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। अच्छा बच्चे आया हूँ तो सर्वेन्ट हुआ ना। जब तुम बहुत पतित बने हो तब ही जोर से चिल्लाते हो। अब मैं आया हूँ। मैं कल्प-कल्प आकर तुम बच्चों को यह मत्र देता हूँ। मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। मनमनाभव का अर्थ भी है - मनमनाभव, मध्याजी भव अर्थात् बाप को याद करो तो विष्णुपुरी के मालिक बनेंगे। तुम आये ही हो विष्णुपुरी का राज्य लेने। रावणपुरी के बाद है विष्णुपुरी। कंसपुरी के बाद कृष्णपुरी कितना सहज समझाया जाता है। बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया से ममत्व मिटा दो। अभी हमने 84

जन्म पूरे किये हैं। यह पुराना चोला छोड़कर हम जायेंगे नई दुनिया में। याद से ही तुम्हारे पाप कटते जायेंगे। इतनी हिम्मत करनी चाहिए। वह तो ब्रह्म को याद करते हैं। समझते हैं ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। परन्तु ब्रह्म तो है रहने का स्थान। वो लोग तपस्या में बैठ जाते हैं। बस हम ब्रह्म में जाकर लीन हो जायेंगे। परन्तु वापिस तो कोई जा नहीं सकते। ब्रह्म से योग लगाने से पावन तो बनेंगे नहीं। एक भी जा न सके। पुनर्जन्म तो लेना ही है। बाप आकर सच बतलाते हैं, सचखण्ड सच्चा बाबा स्थापन करते हैं। रावण आकर झूठ खण्ड बनाते हैं। अभी यह है संगमयुग। इसमें तुम उत्तम से उत्तम बनते हो इसलिए इनको पुरुषोत्तम कहा जाता है। तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो। यह है बेहद की बात। उत्तम से उत्तम मनुष्य हैं देवतायें। तो अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर तुम बैठे हो। तुमको पुरुषोत्तम बनाने वाला है ऊंच ते ऊंच बाप। ऊंच ते ऊंच स्वर्ग का वर्सा तुमको देते हैं फिर यह तुम भूलते क्यों हो? बाप कहते हैं मुझे याद करो। बच्चे कहते हैं– बाबा कृपा करो तो हम भूलें नहीं। यह कैसे हो सकता। बाबा के डायरेक्शन पर चलना है ना। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे। राय पर चलो ना। बाकी आशीर्वाद क्या करूँ। अच्छा!

- गाया हुआ है चढ़े तो चाखे बैकुण्ठ रस.. काम की चमाट लगती है तो एकदम चकनाचूर हो जाते हैं। हड्डी-हड्डी टूट जाती है। कोई मनुष्य अपना जीवघात करते हैं, आत्मघात नहीं, जीवघात कहा जाता है। यहाँ तो बाप से वर्सा पाना है। बाप को याद करना है क्योंकि बाप से बादशाही मिलती है। अपने से पूछना है हमने बाप को याद कर भविष्य के लिए कितनी कमाई की? कितने अन्धों की लाठी बना? घर-घर में पैगाम देना है कि यह पुरानी दुनिया बदल रही है। बाप नई दुनिया के लिए राजयोग सिखा रहे हैं। सीढ़ी में सब दिखाया है। यह बनाने में मेहनत लगती है। सारा दिन ख्यालात चलता रहता है, ऐसा सहज बनावें जो कोई भी समझ जाए। सारी दुनिया तो नहीं आयेगी।

○ तुम बच्चे समझते हो कभी भी लड़ाई लग सकती है, थोड़ी चिनगारी लगी तो भंभट मच जाने में देरी नहीं लगेगी। बच्चे जानते हैं यह पुरानी दुनिया खत्म हुई कि हुई इसलिए अब जल्दी ही बाप से वर्सा लेना है। बाप को सदैव याद करते रहेंगे तो बहुत हर्षित रहेंगे। देह-अभिमान में आने से बाप को भूल दुःख उठाते हो। जितना बाप को याद करेंगे उतना बेहद के बाप से सुख उठायेंगे। यहाँ तुम आये ही हो ऐसा लक्ष्मी-नारायण बनने। राजा-रानी का और प्रजा का नौकर चाकर बनना– इसमें बहुत फ़र्क है ना। अभी का पुरुषार्थ फिर कल्प-कल्पान्तर के लिए कायम हो जाता है। पिछाड़ी में सबको साक्षात्कार होगा– हमने कितना पुरुषार्थ किया है? अब भी बाप कहते हैं अपनी अवस्था को देखते रहो। मीठे ते मीठा बाबा जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है, उनको हम कितना याद करते हैं। तुम्हारा सारा मदार ही याद पर है। जितना याद करेंगे उतना खुशी भी रहेगी। समझेंगे अब नज़दीक आकर पहुँचे हैं। कोई थक भी जाते हैं, पता नहीं मंजिल कितना दूर है। पहुँचे तो मेहनत भी सफल हो। अभी जिस मंजिल पर तुम जा रहे हो, दुनिया नहीं जानती है। दुनिया को यह भी पता नहीं कि भगवान किसको कहा जाता है। कहते भी हैं भगवान। फिर कह देते ठिक्कर-भित्तर में है।

○ अभी ही अगर बड़े-बड़े राजायें आ जाएं फिर तो देरी न लगे। झट आवाज़ निकल जाए इसलिए युक्ति से धीरे-धीरे चलता रहता है। यह है ही गुप्त ज्ञान। किसको पता नहीं है कि यह क्या कर रहे हैं। रावण के साथ तुम्हारी युद्ध कैसे है। यह तो तुम ही जानो और कोई जान न सके। भगवानुवाच– तुम सतोप्रधान बनने के लिए मुझे याद करो तो पाप नाश हो जायेंगे। पवित्र बनो तब तो साथ ले जाऊं। जीवनमुक्ति सबको मिलनी है। रावण राज्य से मुक्ति हो जायेगी। तुम लिखते भी हो हम शिव शक्ति ब्रह्माकुमार-कुमारियां, श्रेष्ठाचारी दुनिया स्थापन करेंगे। परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर, 5 हज़ार वर्ष पहले मुआफिक। 5 हज़ार वर्ष पहले श्रेष्ठाचारी दुनिया थी। यह बुद्धि में बिठाना चाहिए। मुख्य-मुख्य प्वाइंटस बुद्धि में धारण होंगी तब याद की यात्रा में रहेंगे। पत्थरबुद्धि हैं ना। कोई समझते हैं अभी टाइम पड़ा है पीछे पुरूषार्थ कर लेंगे। परन्तु

मौत का नियम थोड़ेही है। कल मर जाएं तो कल-कल करते मर जायेंगे। पुरूषार्थ तो किया नहीं इसलिए ऐसे मत समझो बहुत वर्ष पड़े हैं। पिछाड़ी में गैलप कर लेंगे। यह ख्याल और ही गिरा देंगे। जितना हो सके पुरूषार्थ करते रहो। श्रीमत पर हर एक को अपना कल्याण करना है। अपनी जांच करनी है। कितना बाप को याद करता हूँ और कितना बाप की सर्विस करता हूँ! रूहानी खुदाई खिदमतगार तुम हो ना। तुम रूहों को सैलवेज करते हो। रूह पतित से पावन कैसे बने, उसकी युक्तियां बतलाते हैं। दुनिया में अच्छे और बुरे मनुष्य तो होते ही हैं, हर एक का पार्ट अपना-अपना है। यह है बेहद की बात। मुख्य टाल टालियां ही गिनी जाती हैं। बाकी तो पत्ते अनेक हैं। बाप समझाते रहते हैं– बच्चे मेहनत करो। सबको बाप का परिचय दो तो बाप से बुद्धियोग जुट जाए। बाप सब बच्चों को कहते हैं, पवित्र बनो तो मुक्तिधाम में चले जायेंगे। दुनिया को थोड़ेही पता है कि महाभारत लड़ाई से क्या होगा। यह ज्ञान यज्ञ रचा गया है क्योंकि नई दुनिया चाहिए। हमारा यज्ञ पूरा होगा तो सब इस यज्ञ में स्वाहा हो जायेंगे। अच्छा!

○ इस समय तुम सब रूहानी क्षत्रिय (योद्धे) हो। लड़ाई के मैदान में आने वाले को क्षत्रिय कहा जाता है। तुम हो रूहानी क्षत्रिय। बाकी वह हैं जिस्मानी क्षत्रिय। उनको कहा जाता है बाहुबल से लड़ना-झगड़ना। शुरू में मल्ल युद्ध होती थी बांहों आदि से। आपस में लड़ते थे फिर विजय को पाते थे। अभी तो देखो बॉम्ब्स आदि बने हुए हैं। तुम भी क्षत्रिय हो, वह भी क्षत्रिय हैं। तुम माया पर जीत पाते हो, श्रीमत पर चल। तुम हो रूहानी क्षत्रिय। रूहें ही सब कुछ कर रही हैं इन शरीर की कर्मेन्द्रियों द्वारा। रूह को बाप आकर सिखलाते हैं– बच्चे, मुझे याद करने से फिर माया खायेगी नहीं। तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुमको उल्टा-सुल्टा संकल्प नहीं आयेगा। बाप को याद करने से खुशी भी रहेगी इसलिए बाप समझाते हैं कि सवेरे उठकर अभ्यास करो। बाबा आप कितने मीठे हो। आत्मा कहती है– बाबा। बाप ने पहचान दी है– मैं तुम्हारा बाप हूँ, तुमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज सुनाने आया हूँ। यह मनुष्य सृष्टि का उल्टा झाड़ है। यह वैराइटी धर्मों की मनुष्य सृष्टि है, इसको कहा जाता है विराट लीला। बाप ने समझाया

है कि इस मनुष्य झाड़ का मैं बीज रूप हूँ। मुझे याद करते हैं। कोई किस झाड़ का है, कोई किस झाड़ का है। फिर नम्बरवार निकलते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। कहावत है कि फलाने ने धर्म स्थापक पैगम्बर को भेजा। परन्तु वहाँ से भेजते नहीं हैं। यह ड्रामा अनुसार रिपीट होता है। यह एक ही है जो धर्म और राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह दुनिया में कोई भी नहीं जानते। अभी है संगम। विनाश की ज्वाला प्रज्जवलित होनी है।

○ अब बाप कहते हैं पवित्र बनो और मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। फिर जो सर्विस कर आप समान बनायेंगे, वह ऊंच पद पायेंगे। डबल सिरताज बनेंगे। सतयुग में राजा-रानी और प्रजा सब पवित्र रहते हैं। अभी तो है ही प्रजा का राज्य। दोनों ताज नहीं हैं। बाप कहते हैं जब ऐसी हालत होती है तब मैं आता हूँ। अभी मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखा रहा हूँ। मैं ही पतित-पावन हूँ। अब तुम मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा से खाद निकल जाए। फिर सतोप्रधान बन जायेंगे। अभी श्याम से सुन्दर बनना है। सोने में खाद पड़ने से काला हो जाता है तो अब खाद को निकालना है। बेहद का बाप कहते हैं तुम काम चिता पर बैठ काले बन गये हो, अब ज्ञान चिता पर बैठो और सबसे ममत्व मिटा दो। तुम आशिक हो मुझ एक माशूक के। भगत सब भगवान को याद करते हैं। सतयुग-त्रेता में भक्ति होती नहीं। वहाँ तो है ज्ञान की प्रालब्ध। बाप आकर ज्ञान से रात को दिन बनाते हैं। ऐसे नहीं कि शास्त्र पढ़ने से दिन हो जायेगा। वह है भक्ति की सामग्री। ज्ञान सागर पतित-पावन एक ही बाप है, वह आकर सृष्टि चक्र का ज्ञान बच्चों को समझाते हैं और योग सिखाते हैं। ईश्वर के साथ योग लगाने वाले योग योगेश्वर और फिर बनते हैं राज राजेश्वर, राज राजेश्वरी। तुम ईश्वर द्वारा राजाओं का राजा बनते हो। जो पावन राजायें थे फिर वही पतित बनते हैं। आपेही पूज्य फिर आपेही पुजारी बन जाते हैं। अब जितना हो सके याद की यात्रा में रहना है। जैसे आशिक माशूक को याद करते हैं ना। जैसे कन्या की सगाई होने से फिर एक-दो को याद करते रहते हैं। अभी यह जो माशूक है, उनके तो बहुत

आशिक हैं भक्ति मार्ग में। सब दु:ख में बाप को याद करते हैं-हे भगवान दु:ख हरो, सुख दो। यहाँ तो न शान्ति है, न सुख है। सतयुग में दोनों हैं।

○ अभी तुम जानते हो हम आत्मायें कैसे 84 का पार्ट बजाते हैं। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनते हैं। 84 की सीढ़ी बुद्धि में है ना। अब जितना हो सके बाप को याद करना है तो पाप कट जाएं। कर्म करते हुए भी बुद्धि में बाप की याद रहे। बाबा से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बाप और वर्से को याद करना है। याद से ही पाप कटते जायेंगे। जितना याद करेंगे तो पवित्रता की लाइट आती जायेगी। खाद निकलती जायेगी। बच्चों को जितना हो सके टाइम निकाल याद का उपाय करना है। सवेरे-सवेरे टाइम अच्छा मिलता है। यह पुरूषार्थ करना है। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, बच्चों की सम्भाल आदि करो परन्तु यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। काम चिता पर नहीं चढ़ो। अभी तुम ज्ञान चिता पर बैठे हो। यह पढ़ाई बहुत ऊंची है, इसमें सोने का बर्तन चाहिए। तुम बाप को याद करने से सोने का बर्तन बनते हो। याद भूलने से फिर लोहे का बर्तन बन जाते हो। बाप को याद करने से स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह तो बहुत सहज है। इसमें पवित्रता मुख्य है। याद से ही पवित्र बनेंगे और सृष्टि चक्र को याद करने से स्वर्ग का मालिक बनेंगे। तुम्हें घरबार नहीं छोड़ना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। बाप कहते हैं 63 जन्म तुम पतित दुनिया में रहे हो। अब शिवालय अमरलोक में चलने के लिए तुम यह एक जन्म पवित्र रहे तो क्या हुआ। बहुत कमाई हो जायेगी। 5 विकारों पर जीत पानी है तब ही जगतजीत बनेंगे। नहीं तो पद पा नहीं सकेंगे। बाप कहते हैं मरना तो सबको है। यह अन्तिम जन्म है फिर तुम जाए नई दुनिया में राज्य करेंगे। हीरे-जवाहरातों की खानियां भरपूर हो जायेंगी। वहाँ तुम हीरे-जवाहरातों से खेलते रहेंगे। तो ऐसे बाप के बनकर उनकी मत पर भी चलना चाहिए ना। श्रीमत से ही तुम श्रेष्ठ बनेंगे। रावण की मत से तुम भ्रष्टाचारी बने हो। अब बाप की श्रीमत पर चल तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप को याद करना है और कोई तकलीफ बाप नहीं देते हैं। भक्ति मार्ग में तो तुमने बहुत धक्के खाये हैं। अब सिर्फ बाप को याद करो और सृष्टि चक्र को याद करो।

स्वदर्शन चक्रधारी बनो तो तुम 21 जन्मों के लिए चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। अनेक बार तुमने राज्य लिया है और गँवाया है। आधाकल्प है सुख, आधाकल्प है दु:ख। बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प संगम पर आता हूँ। तुमको सुखधाम का मालिक बनाता हूँ। अभी तुमको स्मृति आई है, हम कैसे चक्र लगाते हैं। यह चक्र बुद्धि में रखना है। बाप है ज्ञान का सागर। तुम यहाँ बेहद के बाप के सामने बैठे हो। ऊंच ते ऊंच भगवान प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा तुमको वर्सा देते हैं। तो अब विनाश होने के पहले बाप को याद करो, पवित्र बनो। अच्छा!

○ पतित-पावन है तो जरूर आकर पावन बनाता होगा। ज्ञान सागर है तो जरूर ज्ञान देंगे ना। योग में बैठो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, यह ज्ञान हुआ ना। वह तो हैं हठयोगी। टांग-टांग पर चढ़ाकर बैठते हैं। क्या-क्या करते हैं। तुम मातायें तो ऐसे कर न सको। बैठ भी न सको। बाप कहते हैं मीठे बच्चे, यह कुछ करने की तुमको दरकार नहीं है। स्कूल में स्टूडेन्ट कायदेसिर तो बैठते हैं ना। बाप तो वह भी नहीं कहते हैं। जैसे चाहे वैसे बैठो। बैठकर थक जाओ तो अच्छा सो जाओ। बाबा कोई बात में मना नहीं करते हैं। यह तो बिल्कुल सहज समझने की बात है, इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं। भल कितना भी बीमार हो। पता नहीं सुनते-सुनते शिवबाबा की याद में रहते-रहते और प्राण तन से निकल जाएं। गाया जाता है ना– गंगा का तट हो, गंगा जल मुख में हो तब प्राण तन से निकलें।

○ तुम बच्चे अच्छी रीति जानते हो– अभी हमको जाना है घर। यह शरीर तो छोड़ना है। आप मुये मर गई दुनिया। अपने को सिर्फ आत्मा समझ बाप को याद करना है। यह पुराना चोला तो छोड़ना है। यह दुनिया भी पुरानी है। जैसे पुराने घर में बैठे हुए नया घर सामने तैयार होता रहता तो समझेंगे हमारे लिए बन रहा है। बुद्धि चली जायेगी नये घर तरफ। इसमें यह बनाओ, यह करो। ममत्व सारा पुराने से मिटकर नये में जुट जाता है। वह हुई हद की बात। यह है बेहद के

दुनिया की बात। पुरानी दुनिया से ममत्व मिटाना है और नई दुनिया में लगाना है। जानते हैं यह पुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी है। नई दुनिया है स्वर्ग। उसमें हम राजाई पद पाते हैं। जितना योग में रहेंगे, ज्ञान की धारणा करेंगे, औरों को समझायेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। बडा भारी इम्तहान है। हम स्वर्ग का 21 जन्म के लिए वर्सा पा रहे हैं। साहूकार बनना तो अच्छा है ना। बड़ी आयु मिली तो अच्छा है ना। सृष्टि चक्र को याद करेंगे, जितना जो आपसमान बनायेंगे उतना फायदा है। राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी है।

○ गायन भी है माया की नींद में सोये पड़े हैं। तुमको बाबा ने आकर जगाया है। सिर्फ एक बात पर समझाते हैं-मीठे बच्चे, याद की यात्रा के बल से तुम सारे विश्व पर राज्य करो। जैसे कल्प पहले किया था। यह स्मृति बाप दिलाते हैं। बच्चे भी समझते हैं हमें स्मृति आई-कल्प-कल्प हम इस योगबल से विश्व का मालिक बनते हैं और फिर दैवीगुण भी धारण किये हैं। योग पर ही पूरा ध्यान देना है। इस योगबल से तुम बच्चों में ऑटोमेटिकली दैवीगुण आ जाते हैं। बरोबर यह इम्तहान है ही मनुष्य से देवता बनने का। तुम यहाँ आये हो योगबल से मनुष्य से देवता बनने के लिए।

○ राजधानी स्थापन होनी है । अब जितना जो पढ़ेंगे, बच्चे जान सकते हैं हम क्या पद पायेंगे? ढेर के ढेर हैं, सब वारिस तो नहीं बनेंगे । पवित्र बनना बड़ा मुश्किल है । बाप कितना सहज समझाते हैं, अब नाटक पूरा होता है । बाप की याद से सतोप्रधान बन, सतोप्रधान दुनिया का मालिक बनना है । जितना हो सके याद में रहना है । परन्तु तकदीर में नहीं है तो फिर बाप के बदले और-और को याद करते हैं । दिल लगाने से फिर रोना भी बहुत पड़ता है । बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया से दिल नहीं लगानी है । यह तो खत्म होनी है । यह और कोई को पता नहीं है । वह तो समझते हैं कलियुग अभी बहुत समय चलना है । घोर नींद में सोये पड़े हैं ।

- बाप कहते हैं देह सहित जो कुछ भी है यह सब भूल जाओ, अपने को आत्मा समझो। बाप को और शान्तिधाम स्वीट होम को याद करो। यह तो है ही दु :खधाम। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझा सकते हैं। अभी तुम ज्ञान से तो भरपूर हो ' बाकी सारी मेहनत है याद में। जन्म-जन्मान्तर का देह- अभिमान मिटाकर देही- अभिमानी बने, इसमें बडी मेहनत है। कहना तो बड़ा सहज है परन्तु अपने को आत्मा समझें और बाप को भी बिन्दु रूप में याद करें, इसमें मेहनत है। बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा कोई मुश्किल याद कर सकते हैं। जैसे बाप वैसे बच्चे होते हैं ना। अपने को जाना तो बाप को भी जान जायेंगे। तुम जानते हो पढ़ाने वाला तो एक ही बाप है, पढ़ने वाले बहुत है।

- तुम बच्चे जानते हो जो पूज्य थे वही फिर पुजारी बन जाते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। यह भी याद रहे तो अवस्था बड़ी अच्छी रहे। परन्तु माया सिमरण करने नहीं देती है, भुला देती है। सदैव हर्षितमुख अवस्था रहे तो तुमको देवता कहा जाए। लक्ष्मी-नारायण का चित्र देख कितना खुश होते हैं। यह एम ऑबजेक्ट है ना। यह भी सिर्फ तुम जानते हो। खुशी में कितना गदगद होना चाहिए। जितना पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे, पढ़ेंगे नहीं तो क्या पद मिलेगा? कहाँ विश्व के महाराजा-महारानी, कहाँ साहूकार, प्रजा में नौकर-चाकर। सब्जेक्ट तो एक ही है। सिर्फ मन्मनाभव, मध्याजी भव, अल्फ और बे, याद और ज्ञान। इनको कितनी खुशी हुई- अल्फ को अल्लाह मिला, बाकी सब दे दिया। कितनी बड़ी लॉटरी मिल गई। बाकी क्या चाहिए! तो क्यों न बच्चों के अन्दर में खुशी रहनी चाहिए इसलिए बाबा कहते हैं ऐसा ट्रांसलाइट का चित्र सबके लिए बनवायें जो बच्चे देखकर खुश होते रहें।

○ जो अच्छी सर्विस करते हैं, वह बहुत साहूकार बनेंगे। बच्चों को तो सारा दिन बाबा- बाबा ही याद रहना चाहिए। परन्तु माया करने नहीं देती। बाप कहते हैं सतोप्रधान बनना है तो चलते, फिरते, खाते मुझे याद करो। मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ, तुम याद नहीं करेंगे! बहुतों को माया के तूफान बहुत आते हैं। बाप समझाते हैं-यह तो होगा। ड्रामा में नूंध है। स्वर्ग की स्थापना तो होनी ही है। सदैव नई दुनिया तो रह नहीं सकती। चक्र फिरेगा तो नीचे जरूर उतरेंगे। हर चीज नई से फिर पुरानी जरूर होती है। इस समय माया ने सबको अप्रैल फूल बनाया है, बाप आकर गुल-गुल बनाते हैं।

○ ब्राह्मणों को अपना कुल नहीं भूलता है। तुमको भी यह जरूर याद रहना चाहिए कि हम ब्राह्मण हैं। एक बात याद रहे तो भी बेड़ा पार है। संगम पर तुम नई-नई बातें सुनते हो तो उसका चिन्तन चलना चाहिए, जिसको विचार सागर मंथन कहा जाता है। तुम हो रूप-बसन्त। तुम्हारी आत्मा में सारा ज्ञान भरा जाता है तो रत्न निकलने चाहिए। अपने को समझना है हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। यह एक ही पढाई है नर से नारायण, नर्कवासी से स्वर्गवासी बनने की। यह याद रहने से भी खुशी रहेगी-हम सो देवता स्वर्गवासी बन रहे हैं। संगमयुगवासी होंगे तब तो स्वर्गवासी बनेंगे।

○ शिवबाबा बच्चों को कहते हैं-मामेकम याद करो। कितना सहज है। फिर भी माया का चक्र आ जाता है। यह तुम्हारी युद्ध सबसे जास्ती टाइम चलती है। बाहुबल की युद्ध इतना समय नहीं चलती है। तुम तो जब से आये हो, युद्ध शुरू है। पुरानों से कितनी युद्ध चलती है, नये जो आयेंगे उनसे भी चलेगी। उस लड़ाई में भी मरते रहते हैं, दूसरे शामिल होते रहते हैं। यहाँ भी मरते हैं, वृद्धि को भी पाते हैं। झाड़ बड़ा तो होना ही है। बाप मीठे-मीठे बच्चों को समझाते हैं-यह याद रहना चाहिए, वह बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सतगुरू भी है। कृष्ण को तो सतगुरू, बाप, टीचर नहीं कहेंगे।

○ बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप मिट जायेंगे, तुम मेरे घर में आ जायेंगे। वाया शान्तिधाम सुखधाम में आ जायेंगे। पहले-पहले जाना है घर, बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पवित्र बनेंगे, मैं पतित-पावन तुमको पवित्र बना रहा हूँ - घर आने लिए। ऐसे-ऐसे अपने से बातें करनी होती है। बरोबर अभी चक्र पूरा होता है, हमने इतने जन्म लिए हैं। अब बाप आया है पतित से पावन बनाने। योगबल से ही पावन बनेंगे। यह योगबल बहुत नामीग्रामी है, जो बाप ही सिखला सकते हैं। इसमें शरीर से कुछ भी करने की दरकार नहीं। तो सारा दिन इन बातों का मंथन चलना चाहिए। एकान्त में कहाँ भी बैठो अथवा जाओ, बुद्धि में यही चलता रहे। एकान्त तो बहुत है, ऊपर छत पर तो डरने की बात नहीं। आगे तुम सवेरे में मुरली सुनने के बाद चलते थे पहाड़ों पर। जो सुना उसका चिंतन करने के लिए पहाड़ियों पर जाकर बैठते थे। जो ज्ञान के शौकीन होंगे, वह तो आपस में ज्ञान की बातें ही करेंगे। ज्ञान नहीं है तो फिर परचिंतन करते रहेंगे। पवित्र बन और बाप को याद करने से तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। समझाया जाता है-माया से हारे फिर उठकर खड़े हो जाओ। जितना खड़े होंगे उतनी प्राप्ति होगी। ना (घाटा) और जमा तो होता है ना। आधाकल्प जमा फिर रावण राज्य में ना हो जाता है। हिसाब है ना। जीत जमा, हार ना। तो अपनी पूरी जांच करनी चाहिए। बाप को याद करने से तुम बच्चों को खुशी होगी। वह तो सिर्फ गायन करते हैं, समझ कुछ नहीं। बेसमझी से सब-कुछ करते हैं। तुम तो पूजा आदि करते नहीं हो। बाकी गायन तो करेंगे ना। उस एक बाप का गायन है अव्यभिचारी। बाप आकर तुम बच्चों को आपेही पढ़ाते हैं। तुम्हे कुछ प्रश्न पूछने की दरकार नहीं है। चक्र स्मृति में रहना चाहिए।

○ बाप तुम बच्चों को कितना सहज रास्ता बताते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहो। धन्धा- धोरी आदि करते भी मुझे याद करते रहो। जैसे आशिक और माशुक होते हैं, वह

तो एक दो को याद करते रहते हैं। वह उनका आशिक, वह उनका माशुक होता है। यहाँ यह बात नहीं है, यहाँ तो तुम सभी एक माशुक के जन्म-जन्मान्तर से आशिक रहे हो। बाप तुम्हारा कभी आशिक नहीं बनता। तुम उस माशुक को आने लिए याद करते आये हो। जब दु :ख जास्ती होता है तो जास्ती सुमिरण करते हैं, तब तो गायन भी है दु :ख में सुमिरण सब करें, सुख में करे न कोय। इस समय जैसे बाप सर्वशक्तिमान है। दिन-प्रतिदिन माया भी सर्वशक्तिमान, तमोप्रधान होती जाती है इसलिए अब बाप कहते हैं मीठे बच्चे देही- अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो और साथ-साथ दैवीगुण भी धारण करो तुम ऐसे (लक्ष्मी-नारायण) बन जायेंगे। इस पढ़ाई में मुख्य बात है ही याद की। ऊँच ते ऊंच बाप को बहुत प्यार, स्नेह से याद करना चाहिए। वह ऊंच ते ऊँच बाप ही नई दुनिया स्थापन करने वाला है। बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाने इसलिए अब मुझे याद करो तो तुम्हारे अनेक जन्मों के पाप कट जायेंगे। पतित-पावन बाप कहते हैं तुम बहुत पतित बन गये हो इसलिए अब तुम मुझे याद करो तो तुम पावन बन और पावन दुनिया का मालिक बन जायेंगे। पतित-पावन बाप को ही बुलाते हैं ना। अब बाप आये हैं तो जरूर पावन बनना पड़े। बाप दु:खहर्ता, सुखकर्ता है। बरोबर सतयुग में पावन दुनिया थी तो सभी सुखी ही थे। अब बाप फिर से कहते हैं बच्चे शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते रहो। अभी है संगमयुग। खिवैया तुमको इस पार से उस पार ले जाते हैं। नईया कोई एक नहीं, सारी दुनिया जैसे एक बड़ा जहाज है। उनको पार ले जाते हैं।

- बाप समझाते हैं बच्चे सदैव खुशी में रहने चाहते हो तो मन्मनाभव। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। भाईयों (आत्माओं) तरफ देखो। तो बच्चों को रूहानी यात्रा पर रहने की आदत डालनी है। तुम्हारे ही फायदे की बात है। बाप की शिक्षा भाईयों को देनी है। बाप कहते हैं मैं तुम आत्माओं को ज्ञान दे रहा हूँ। आत्मा को ही देखता हूँ। मनुष्य-मनुष्य से बात करेंगे तो उनके मुँह को देखेंगे ना।

- हम आत्मा ने 84 का चक्र लगाया। अब नाटक पूरा होता है। अब बाबा की याद में रहना है। याद से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन, सतोप्रधान दुनिया के मालिक बन जायेंगे। कितना सहज है। बाप जानते हैं बच्चों को यह शिक्षा देना भी मेरा पार्ट ही है। कोई नई बात नहीं। हर 5000 वर्ष बाद हमको आना होता है। मैं बंधायमान हूँ। बच्चों को बैठ समझाता हूँ मीठे बच्चे रूहानी याद की यात्रा में रहो तो अन्त मते सो गति हो जायेगी। यह अन्तकाल है ना! मामेकम् याद करो तो तुम्हारी सद्गति हो जायेगी। याद की यात्रा से पाया मजबूत हो जायेगा। यह देही-अभिमानी बनने की शिक्षा एक ही बार तुम बच्चों को मिलती हैं। कितना वंडरफुल ज्ञान है। बाबा वन्डरफुल है तो बाबा का ज्ञान भी वन्डरफुल है। कब कोई बता न सके। अभी वापस चलना है इसलिए बाप कहते हैं मीठे बच्चों यह प्रैक्टिस करो। अपने को आत्मा समझ आत्मा को ज्ञान दो। तीसरे नेत्र से भाई- भाई को देखना है। यही बड़ी मेहनत है।

- मीठे बच्चे, इस अपनी लाइफ से तुम्हें कभी भी तंग नहीं होना चाहिए। यह जीवन अमूल्य गाई हुई है, इनकी सम्भाल भी करनी है। साथ-साथ कमाई भी करनी है। यहाँ जितने दिन रहेंगे, बाप को याद कर अथाह कमाई जमा करते रहेंगे। हिसाब-किताब चुक्तू होता रहेगा इसलिए कभी भी तंग नहीं होना है। बच्चे कहते हैं बाबा। सतयुग कब आयेगा? बाबा कहते बच्चे पहले तुम कर्मातीत अवस्था तो बनाओ। जितना समय मिले पुरुषार्थ करो कर्मातीत बनने का। बच्चों में नष्टोमोहा बनने की भी बड़ी हिम्मत चाहिए। बेहद के बाप से पूरा वर्सा लेना है तो नष्टोमोहा बनना पड़े। अपनी अवस्था को बहुत ऊँच बनाना है। बाप के बने हो तो बाप की ही अलौकिक सेवा में लग जाना है। स्वभाव बहुत मीठा चाहिए।

○ बाप समझाते हैं-बच्चे, देही- अभिमानी बनना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसमें है मेहनत, जास्ती पार्ट तुम्हारा है। बाबा का इतना पार्ट नहीं, जितना तुम्हारा।

○ तुम बच्चे जानते हो बाबा हमारा बहुत कल्याण करते हैं। कल्प-कल्प हमारी चढ़ती कला होती है। यहाँ रहते शरीर निर्वाह अर्थ भी सब-कुछ करना पड़ता है। वुद्धि में रहे हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं, शिवबाबा को याद करते रहेंगे तो काल कंटक सब दूर हो जायेंगे। फिर यह पुराना शरीर छोड़ चले जायेंगे।

○ तुम बच्चे जानते हो कलियुग के बाद सतयुग जरूर आना है इसलिए कलियुग और सतयुग के संगम पर बाप को आना पड़ता है। यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है-स्थापना, विनाश, पालना। यह तो कॉमन बात है। परन्तु यह बातें तुम बच्चे भूल जाते हो। नहीं तो तुमको खुशी बहुत रहे | निरन्तर याद रहनी चाहिए। बाबा हमको अब नई दुनिया के लिए लायक बना रहे हैं। तुम भारतवासी ही लायक बनते हो, और कोई नहीं।

○ पतित-पावन आयेगा तो जरूर शरीर खत्म होंगे ना, तब तो आत्माओं को ले जायेंगे। तो ऐसे बाप के साथ प्रीत बुद्धि होनी चाहिए। एक से ही लव रखना है, उनको ही याद करना है। माया के तूफान तो आयेंगे। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना चाहिए। वह बेकायदे हो जाता है। बाप कहते हैं मैं आकर इस शरीर का आधार लेता हूँ। यह इनका शरीर है ना। तुमको याद बाप को करना है। तुम जानते हो ब्रह्मा भी बाबा, शिव भी बाबा है। विष्णु और शंकर को बाबा नहीं कहेंगे। शिव है निराकार बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। अब तुम साकार

द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो। दादा इनमें प्रवेश करते हैं तब कहते हैं दादे का वर्सा बाप द्वारा हम लेते हैं। दादा (ग्रैन्ड फादर) है निराकार, बाप है साकार।

○ आश्चर्यवत् सुनन्ती, कथन्ती, फारकती देवन्ती फिर वापिस भी आ जाते हैं। जो बच्चे अपनी कुछ न कुछ उन्नति करते हैं तो चढ़ पड़ते हैं। सरेन्डर होते ही हैं गरीब। देह सहित और कोई भी याद न रहे, बड़ी मंजिल है। अगर सम्बन्ध जुटा हुआ होगा तो वह याद जरूर पड़ेंगे। बाप को क्या याद पड़ेगा? सारा दिन बेहद में ही बुद्धि रहती है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप कहते हैं मेरे बच्चों में भी उत्तम, मध्यम, कनिष्ट हैं। दूसरे कोई आते हैं तो भी समझते हैं यह पतित दुनिया के हैं। फिर भी यज्ञ की सर्विस करते हैं तो रिगार्ड देना पड़ता है। बाप युक्तिबाज तो है ना। नहीं तो यह टॉवर ऑफ साइलेन्स होलीएस्ट ऑफ होली टॉवर है, जहाँ होलीएस्ट ऑफ होली बाप सारे विश्व को बैठ होली बनाते हैं। यहाँ कोई पतित आ न सके। परन्तु बाप कहते हैं मैं आया ही हूँ सभी पतितों को पावन बनाने, इस खेल में मेरा भी पार्ट है।

○ देही- अभिमानी बनने में ही बड़ी मेहनत लगती है। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो विकर्म विनाश हो जायें। तुम मोस्ट ओबीडियंट सर्वेंट हो। कर्तव्य करते हो गुप्त रीति से। तो नशा भी गुप्त चाहिए। हम गवर्मेंट के रूहानी सर्वेंट हैं।

○ अब तुम भी स्टूडेंट, यह भी स्टूडेंट है। सब भाइयों (आत्माओं) को याद करना है-एक बाप को। छोटे बच्चों को भी सिखलाया जाता है-बाबा-बाबा कहो। यह भी तुम जानते हो आगे चलकर बाप को फट से जान जायेंगे। देखेंगे इतने ढेर सब वर्सा ले रहे हैं तो बहुत आयेंगे। जितना देरी होगी उतना तुम्हारे में कशिश होती जायेगी। पवित्र बनने से कशिश होती है, जितना योग में

रहेंगे उतना कशिश होगी, औरों को भी खींचेंगे। बाप भी खींचते हैं ना। बहुत वृद्धि को पाते रहेंगे। उसके लिए युक्तियाँ भी रची जा रही है। गीता का भगवान कौन? कृष्ण को याद करना तो बहुत सहज है। वह तो साकार रूप है ना। निराकार बाप कहते हैं मामेकम याद करो-इस बात पर ही सारा मदार है इसलिए बाबा ने कहा था इस बात पर सबसे लिखाते रहो। बड़ी-बड़ी लिस्ट बनायेंगे तो मनुष्यों को पता पड़ेगा।

○ तुम ब्राह्मण जब पक्के निश्चयबुद्धि होंगे, झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा। माया के तूफान भी पिछाड़ी तक चलेंगे। विजय पा ली फिर न पुरूषार्थ रहेगा, न माया रहेगी। याद में ही बहुत करके हारते हैं। जितना तुम योग में मजबूत रहेंगे, उतना हारेंगे नहीं। यह राजधानी स्थापन हो रही है। बच्चों को निश्चय है हमारी राजाई होगी फिर हम हीरे-जवाहर कहाँ से लायेंगे। खानियाँ सब कहाँ से आयेंगी! यह सब थे तो सही ना। इसमें मूंझने की तो बात ही नहीं। जो होना है सो प्रैक्टिकल में देखेंगे। स्वर्ग बनना तो जरूर है।

○ शिवबाबा को याद करते रहेंगे तो तुमको कोई भी चमाट आदि मार नहीं सकेंगे। योगबल ही ढाल है। कोई कुछ कर भी नहीं सकेंगे। अगर कोई चोट खाते हैं तो जरूर देह- अभिमान है। देही- अभिमानी को चोट कोई मार न सके। भूल अपनी ही होती है। विवेक ऐसा कहता है- देही- अभिमानी को कोई कुछ भी कर नहीं सकेंगे इसलिए कोशिश करनी है देही- अभिमानी बनने की। सबको पैगाम भी देना है। भगवानुवाच, मन्मनाभव। कौन-सा भगवान? यह भी तुम बच्चों को समझाना है।

○ पहला नम्बर तो श्रीकृष्ण ही आते हैं ना। बाकी सागर की बात नहीं है, अभी तुम बच्चों को समझ बड़ी अच्छी आई है। खुशी भी उनको होगी जो रूहानी पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ते होंगे।

जो अच्छी रीति पढ़ते हैं वही पास विद् ऑनर होते हैं। अगर कोई से दिल लगी हुई होगी तो पढ़ाई के समय भी वह याद आता रहेगा। बुद्धि वहाँ चली जायेगी इसलिए पढ़ाई हमेशा ब्रह्मचर्य में होती है। यहाँ तुम बच्चों को समझाया जाता है एक बाप के सिवाए और कहाँ भी बुद्धि नहीं जानी चाहिए। परन्तु जानते हैं बहुतों को पुरानी दुनिया याद आ जाती है। फिर यहाँ बैठे भी सुनते ही नहीं। भक्ति मार्ग में भी ऐसे होते हैं। सतसंग में बैठे भी बुद्धि कहाँ-कहाँ भागती रहेगी। यह तो बहुत बड़ा जबरदस्त इम्तहान है। कोई तो जैसे बैठे हुए भी सुनते नहीं हैं। कई बच्चों को तो खुशी होती है। सामने खुशी में झूलते रहेंगे। बुद्धि बाप के साथ होगी तो फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। इसके लिए बहुत अच्छा पुरुषार्थ करना है। यहाँ तो तुमको बहुत धन मिलता है।

○ कोई कहे बाबा हम योग में बहुत मस्त रहते हैं, बाबा मानेगा नहीं। बाबा हर एक की एक्ट को देखते हैं। बाप को याद करने वाला तो मोस्ट लवली होगा। याद नहीं करते इसलिए ही उल्टा-सुल्टा काम होता है। बहुत रात- दिन का फर्क है।

○ तुम्हारे पास भी शुरू में बैठे-बैठे एक-दो को देखते ध्यान में चले जाते थे ना। बड़ा वन्डर लगता था। बाप था ना इनमें, तो वह चमत्कार दिखाते थे। सबकी रस्सी खींच लेते थे। बापदादा इकट्ठे हो गये ना। कब्रिस्तान बनाते थे। सब बाप की याद में सो जाओ। सब ध्यान में चले जाते थे। यह सब शिवबाबा की चतुराई थी। इसको फिर कई जादू समझने लगे। यह था शिवबाबा का खेल। बाप जादूगर, सौदागर, रत्नागर है ना। धोबी भी है, सोनार भी है, वकील भी है। सबको रावण की जेल से छुड़ाते हैं। उनको ही सब बुलाते हैं-हे पतित-पावन, हे दूरदेश के रहने वाले....... हमको आकर पावन बनाओ। आओ भी पतित दुनिया में, पतित शरीर में आकर हमको पावन बनाओ।

- पहले तुम सतोप्रधान थे फिर सतो-रजो-तमो में आये। अभी तुम समझते हो हम नीचे गिरे हुए हैं। भल तुम संगमयुग पर हो परन्तु ज्ञान से तुम यह जानते हो-हमने किनारा कर लिया है। फिर अगर हम शिवबाबा की याद में रहते हैं तो शिवालय दूर नहीं। शिवबाबा को याद ही नहीं करते तो शिवालय बहुत दूर है। सज़ायें खानी पड़ती हैं ना तो बहुत दूर हो जाता है। तो बाप बच्चों को कोई जास्ती तकलीफ नहीं देते हैं। एक तो बार-बार कहते हैं-मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र बनना है। यह आंखें भी बड़ा धोखा देती हैं। बहुत सम्भाल कर चलना होता है।

- मीठे-मीठे रूहानी बच्चे आते हैं बाप से रिफ्रेश होने क्योंकि बच्चे जानते हैं-बेहद के बाप से बेहद विश्व की बादशाही लेनी है। यह कभी भूलना नहीं चाहिए परन्तु भूल जाते हैं। माया भुला देती है। अगर न भुलावे तो बहुत खुशी रहे। बाप समझाते हैं-बच्चों, इस बैज को घड़ी-घड़ी देखते रहो। चित्रों को भी देखते रहो। घूमते-फिरते बैज को देखते रहो तो पता पड़े, बाप द्वारा बाप की याद से हम यह बन रहे हैं। दैवीगुण भी धारण करने हैं। यही समय है नॉलेज मिलने का। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों.. रात-दिन मीठे-मीठे कहते रहते हैं। बच्चे नहीं कह सकते-मीठे-मीठे बाबा। कहना तो दोनों को चाहिए। दोनों ही मीठे हैं ना। बेहद के बापदादा। परन्तु कई देह-अभिमानी सिर्फ बाबा को मीठा-मीठा कहते हैं। कई बच्चे तो गुस्से में आकर फिर कभी बापदादा को भी कुछ कह देते। कभी बाप को कहा तो दादा को भी कहा, बात एक ही हो जाती। कभी ब्राह्मणी पर, कभी आपस में नाराज़ हो पड़ते हैं। तो बेहद का बाप बैठ बच्चों को शिक्षा देते हैं। गांव-गांव में बच्चे तो बहुत हैं, सबको लिखते रहते हैं। तुम्हारी रिपोर्ट आती है, तुम गुस्सा करते हो। बेहद का बाप इसको देह- अभिमान कहेंगे। बाप सबको कहते हैं-बच्चों, देही-अभिमानी भव। सब बच्चे नीचे-ऊपर होते रहते हैं। इसमें भी माया जिसको समर्थ पहलवान देखती है, उनसे ही लड़ाई करती है। महावीर, हनुमान के लिए दिखाया है कि उनको

भी हिलाने की कोशिश की। इस समय ही सबकी परीक्षा लेती है। माया से हार-जीत सबकी होती रहती है। लड़ाई में स्मृति-विस्मृति सब होता है। जो जितना स्मृति में रहते हैं, निरन्तर बाप को याद करने की कोशिश करते हैं वह अच्छा पद पा सकते हैं। बाप आये हैं बच्चों को पढ़ाने, सो तो पढ़ाते रहते हैं। श्रीमत पर चलते रहना है। श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ बनेंगे। इसमें कोई से बिगड़ने की बात ही नहीं। बिगड़ना माना क्रोध करना। भूल आदि करते हैं तो बाबा के पास रिपोर्ट करनी है। खुद किसको नहीं कहना चाहिए फिर जैसेकि लॉ हाथ में ले लिया। गवर्मेन्ट लॉ हाथ में उठाने नहीं देती। कोई ने घूँसा मारा तो उनको घूँसा नहीं मारेंगे। रिपोर्ट करेंगे फिर उनका केस होगा। यहाँ भी बच्चों को कभी सामने कुछ नहीं कहना चाहिए, बाबा को बोलो। सबको सावधानी देने वाला एक बाबा है। बाबा युक्ति बहुत मीठी बतायेंगे। मीठेपन से शिक्षा देंगे। देह-अभिमानी बनने से अपना ही पद कम कर देते हैं। घाटा क्यों डालना चाहिए। जितना हो सके बाबा को बहुत प्यार से याद करते रहो। बेहद के बाप को बहुत प्यार से याद करो, जो बाप विश्व की बादशाही देते हैं। सिर्फ दैवीगुण धारण करने हैं। किसकी भी निंदा नहीं करनी है। देवतायें किसकी निंदा करते हैं क्या? कई बच्चे तो निंदा करने के बिगर रहते नहीं। तुम बाप को बोलो, तो बाप बहुत प्यार से समझायेंगे! नहीं तो टाइम वेस्ट होता है। निंदा करने से तो बाप को याद करो तो बहुतबहुत फ़ायदा होगा। कोई से भी वाद-विवाद न करना बहुत अच्छा है।

○ यह मनुष्य तन बहुत वैल्युबुल है जबकि बाप के बच्चे बने हैं। तुम बच्चों को इस समय अपना एक भी श्वास व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। कैसे सफल करना है सो तो बाप समझाते हैं - श्वाँसो श्वाँस बाप को याद करो। हमारा स्वधर्म ही है आवाज से परे रहना। इस शरीर द्वारा हम पार्ट बजाते हैं। आत्मा असल शान्तिधाम की रहने वाली है। बाप कितनी अच्छी मीठी बातें सुनाते हैं। मीठे लाडले बच्चे मुझ मोस्ट बिलवेड बाप को और सुखधाम को याद करो।

○ जब ओम् शान्ति कहा जाता है तो अपना स्वधर्म याद पड़ता है। घर की भी याद आती है। परन्तु घर में बैठ तो नहीं जाना है। बाप के बच्चे हैं तो जरूर अपना स्वर्ग भी याद करना पड़े। तो ओम् शान्ति कहने से यह सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ, शान्ति के सागर बाप का बच्चा हूँ। जो बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं वह बाप ही हमको पवित्र शान्त स्वरूप बनाते हैं। मुख्य बात है पवित्रता की।

○ अब तुम बच्चों को ज्ञान है, जितना याद करेंगे उतना पावन बनेंगे। कम याद करेंगे तो कम पावन बनेंगे। यह तुम बच्चों के पुरुषार्थ पर है। बेहद के बाप को याद करने से हमको यह (लक्ष्मी-नारायण) बनना है। उन्हों की महिमा तो हर एक जानते हैं। कहते भी हैं आप पुण्य आत्मा हो, हम पाप आत्मा हैं। ढेर मन्दिर बने हुए हैं। वहाँ सब क्या करने जाते हैं? दर्शन से फ़ायदा तो कुछ भी नहीं। एक-दो को देख चले जाते हैं। बस दर्शन करने जाते हैं। फलाना यात्रा पर जाता है, हम भी जावें। इससे क्या होगा? कुछ भी नहीं। तुम बच्चों ने भी यात्राएं की हैं। जैसे और त्योहार मनाते हैं, वैसे यात्रा भी एक त्योहार समझते हैं। अभी तुम याद की यात्रा भी एक त्योहार समझते हो। तुम याद की यात्रा में रहते हो। अक्षर ही एक है मनमनाभव। यह तुम्हारी यात्रा अनादि है। वह भी कहते हैं– वह यात्रा हम अनादि करते आए हैं। परन्तु तुम अभी ज्ञान सहित कहते हो हम कल्प-कल्प यह यात्रा करते हैं। बाप ही आकर यह यात्रा सिखलाते हैं। वह चारों धाम जन्म बाय जन्म यात्रा करते हैं। यह तो बेहद का बाप कहते हैं– मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। ऐसे तो और कोई कभी नहीं कहते कि यात्रा से तुम पावन बनेंगे। मनुष्य यात्रा पर जाते हैं तो वह उस समय पावन रहते हैं, आजकल तो वहाँ भी गन्द लगा पड़ा है, पावन नहीं रहते। इस रूहानी यात्रा का तो किसको पता नहीं है। तुमको अभी बाप ने बताया है– यह याद की यात्रा है सच्ची। वह यात्रा का चक्र लगाने जाते हैं फिर भी वैसे का वैसा बन जाते हैं। चक्र लगाते रहते हैं। जैसे वास्कोडिगामा ने सृष्टि का चक्र लगाया। यह भी चक्र लगाते हैं ना। गीत

भी है ना - चारों तरफ लगाये फेरे..... फिर भी हरदम दूर रहे। भक्तिमार्ग में तो कोई मिला नहीं सकते। भगवान कोई को मिला नहीं।

○ जितना बाप को याद करेंगे, सर्विस करेंगे उतना फल मिलेगा। जो अच्छी रीति बाप को याद करते हैं वह समझते हैं हमको सर्विस भी करनी है। प्रजा बनानी है ना! यह राजधानी स्थापन हो रही है। तो उसमें सब चाहिए। वहाँ वजीर होते नहीं। वजीर की दरकार उनको रहती जिसको अक्ल कम होता है। यह है ही दुःख की दुनिया। वास्तव में तुमसे कोई पूछ नहीं सकता। भल माया गिराने वाली है तो भी बाप मिला है ना। तुम कहेंगे– क्या तुम खुश-खैराफत पूछते हो! हम ईश्वर के बच्चे हैं, हमसे क्या खुश-खैराफत पूछते हो। परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले बाप की, वह मिल गया, फिर किसकी परवाह! यह हमेशा याद करना चाहिए– हम किसके बच्चे हैं! यह भी बुद्धि में ज्ञान है– कि जब हम पावन बन जायेंगे तो फिर लड़ाई शुरू हो जायेगी। तो जब भी तुमसे कोई पूछे कि तुम खुश राज़ी हो? तो बोलो हम तो सदैव खुशराज़ी हैं। बीमार भी हो तो भी बाप की याद में हो। तुम स्वर्ग से भी जास्ती यहाँ खुश-राज़ी हो। जबकि स्वर्ग की बादशाही देने वाला बाप मिला है, जो हमको इतना लायक बनाते हैं तो हमको क्या परवाह रखी है! ईश्वर के बच्चों को क्या परवाह! वहाँ देवताओं को भी परवाह नहीं। देवताओं के ऊपर तो है ईश्वर। तो ईश्वर के बच्चों को क्या परवाह हो सकती है। बाबा हमको पढाते हैं। बाबा हमारा टीचर, सतगुरू है। बाबा हमारे ऊपर ताज रख रहे हैं, हम ताजधारी बन रहे हैं। तुम जानते हो हमको विश्व का ताज कैसे मिलता है।

○ अब बाप समझाते हैं– बच्चे, और सब बातें छोड़ मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। ऐसे नहीं कोई सामने बैठ निष्ठा (योग) कराये, दृष्टि दे। बाप तो कहते हैं चलते-फिरते बाप को याद करना है। अपना चार्ट रखो– सारे दिन में कितना याद किया? सवेरे उठ कितना समय बाप

से बातें की? आज बाबा की याद में बैठे? ऐसे-ऐसे अपने से मेहनत करनी है। नॉलेज तो बुद्धि में है फिर औरों को भी समझाना है। यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है कि काम महाशत्रु है। 2-4 वर्ष रहकर फिर माया का थप्पड़ जोर से लगने से गिर पड़ते हैं। फिर लिखते हैं बाबा हमने काला मुँह कर दिया। बाबा लिख देते काला मुँह करने वाले को 12 मास यहाँ आने की दरकार नहीं है। तुम बाप से प्रतिज्ञा कर फिर भी विकार में गिरे, मेरे पास कभी नहीं आना। बड़ी मंजिल है। बाप आये ही हैं पतित से पावन बनाने।

○ बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं– विनाश काले विपरीत बुद्धि का अर्थ क्या है– बच्चे ही पूरा नहीं समझ सकते तो फिर और क्या समझेंगे! जो बच्चे समझते हैं हम शिवबाबा के बच्चे हैं वही पूरा अर्थ को नहीं समझते। बाप को याद करना– यह तो है गुप्त बात। पढाई तो गुप्त नहीं है ना। पढाई में नम्बरवार हैं। सब एक जैसा थोड़ेही पढ़ेंगे। बाप तो समझते हैं यह अभी बेबीज़ हैं। ऐसे बेहद के बाप को तीन-तीन, चार-चार मास याद भी नहीं करते हैं। मालूम कैसे पड़े कि याद करते हैं? जबकि उनकी चिट्ठी आये। फिर उस चिट्ठी में सर्विस समाचार भी हो कि यह-यह रूहानी सर्विस करता हूँ। सबूत चाहिए ना। ऐसे तो देह-अभिमानी होते हैं जो न तो कभी याद करते हैं, न सर्विस का सबूत दिखाते हैं। कोई तो समाचार लिखते हैं बाबा फलाने-फलाने आये उनको यह समझाया, तो बाप भी समझते हैं बच्चा जिन्दा है। सर्विस समाचार ठीक देते हैं। कोई तो 3-4 मास पत्र नहीं लिखते। कोई समाचार नहीं तो समझेंगे मर गया या बीमार है! बीमार मनुष्य लिख नहीं सकते हैं। यह भी कोई लिखते हैं हमारी तबियत ठीक नहीं थी इसलिए पत्र नहीं लिखा। कोई तो समाचार ही नहीं देते, न बीमार हैं। देह- अभिमान है। फिर बाप भी याद किसको करे। याद से याद मिलती है, परन्तु देह-अभिमान है। .

○ ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा पार्ट में आते-जाते हैं। एन्ड हो न सके। यह चित्र फिर भी आकर सब देखेंगे और समझेंगे। बहुत सहज समझ की बात है। बुद्धि में आना चाहिए हम सो ब्राह्मण हैं फिर हम सो क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। फिर बाप आयेंगे तो हम सो ब्राह्मण बन जायेंगे। यह याद करो तो भी स्वदर्शन चक्रधारी ठहरे। बहुत हैं जिनको याद ठहरती नहीं। तुम ब्राह्मण ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। देवतायें नहीं बनते हैं।

○ शास्त्रों में तो दिखाया है पाण्डव गल मरे फिर क्या हुआ, कुछ भी पता नहीं। कथायें तो बहुत बनाई हैं, ऐसी कोई बात है नहीं। अभी तुम बच्चे कितने स्वच्छ बुद्धि बनते हो। बाबा तुमको बहुत प्रकार से समझाते रहते हैं। कितना सहज है। सिर्फ बाप को और वर्से को याद करना है। बाप कहते हैं मैं ही पतित-पावन हूँ। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों पतित हैं। अब पावन बनना है। आत्मा पवित्र बनती है तो शरीर भी पवित्र बनता है। अभी तुमको बहुत मेहनत करनी है। बाप कहते हैं-बच्चे बहुत कमज़ोर हैं। याद भूल जाती है। बाबा खुद अपना अनुभव बताते हैं। भोजन पर याद करता हूँ-शिवबाबा हमको खिलाते हैं फिर भूल जाते हैं। फिर स्मृति में आता है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार हैं। कोई तो बन्धनमुक्त होते हुए भी फिर फँस मरते हैं। धर्म के भी बच्चे बना देते हैं।

○ आत्माओं की भी पूजा होती है। देवता वर्ण में भी पूजा होती है। मेरी तो सिंगल सिर्फ शिवालिंग के रूप की पूजा होती है। मैं राजा तो बनता नहीं हूँ। तुम्हारी कितनी सेवा करता हूँ। ऐसे बाप को फिर तुम भूलते क्यों हो! हे आत्मा अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम किसके पास आये हो? पहले बाप फिर दादा। अभी फादर फिर ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर आदि देव एडम क्योंकि बहुत बिरादियाँ बनती हैं ना। शिवबाबा को कोई ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहेंगे क्या? हर बात में तुमको बहुत ऊंच बनाते हैं। ऐसा बाबा मिलता है फिर उनको तुम

भूलते क्यों हो? भूलेंगे तो पावन कैसे बनेंगे! बाप पावन बनने की युक्ति बतलाते हैं। इस याद से ही खाद निकलेगी। बाप कहते हैं-मीठे-मीठे लाडले बच्चे, देह-अभिमान छोड़ आत्म-अभिमानी बनना है, पवित्र भी बनना है। काम महाशत्रु है। यह एक जन्म मेरे खातिर पवित्र बनो।

- बाप कहते हैं-बच्चे, अब जल्दी तैयारी करो। गफ़लत में टाइम वेस्ट नहीं करो। याद नहीं करते हैं तो मोस्ट वैल्युबुल टाइम नुकसान होता है। शरीर निर्वाह अर्थ धंधा आदि भल करो फिर भी हथ कार डे दिल यार डे। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो राजाई तुमको मिल जायेगी। खुदा दोस्त की कहानी भी सुनी है ना। अल्लाह अवलदीन का भी नाटक दिखाते हैं। ठका करने से खजाना निकल आया। अभी तुम बच्चे जानते हो-अल्लाह तुमको ठका करने से क्या से क्या बनाते हैं। झट दिव्य दृष्टि से वैकुण्ठ चले जाते हो। आगे बच्चियां आपस में मिलकर बैठती थी, फिर आपेही चली जाती थी ध्यान में। फिर जादू कह देते थे। तो वह बंद कर दिया।

- बाप कहते रहते, जितना याद में रहेंगे उतना तमोप्रधान से तमो रजो में आते जायेंगे और खुशी भी होगी। पहले तुम सतोप्रधान थे तो बहुत खुशी में थे फिर कला कम होती जाती है। तुम जितना याद करते रहेंगे तो सुख भी इतना फील होगा और तुम ट्रांसफर होते जायेंगे। तमो से रजो सतो में आते जायेंगे तो ताकत, खुशी, धारणा बढ़ती जायेगी। इस समय तुम्हारी चढ़ती कला है। सिक्ख लोग गाते भी हैं तेरे भाने सर्व का भला। तुम जानते हो अभी हमारी चढ़ती कला होती है याद से। जितना याद करेंगे उतना ऊंच चढ़ती कला होगी। सम्पूर्ण बनना है ना। चन्द्रमा की भी लकीर रह जाती है फिर कला बढ़ते- बढ़ते सम्पूर्ण बन जाता है। तुम्हारा भी ऐसे है।

○ तुम जानते हो हम पढ़ते ही हैं नई दुनिया के लिए। बाबा हमको भविष्य 21 जन्मों के लिए पढ़ाते हैं। हम स्वर्गवासी बनने के लिए पवित्र बन रहे हैं। पहले नर्कवासी थे। मनुष्य कहते भी हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ। परन्तु हम नर्क में हैं यह नहीं समझते। बुद्धि का ताला नहीं खुलता। तुम बच्चों का अब धीरे-धीरे ताला खुलता जाता है, नम्बरवार। ताला उनका खुलेगा जो श्रीमत पर चलने लग पड़ेंगे और पतित-पावन बाप को याद करेंगे। बाप ज्ञान भी देते हैं और याद भी सिखलाते हैं। टीचर है ना। तो टीचर जरूर पढ़ायेंगे। जितना टीचर और पढ़ाई से योग होगा उतना ऊंच पद पायेंगे। उस पढ़ाई में तो योग रहता ही है। जानते हैं बैरिस्टर पढ़ाते हैं। यहाँ बाप पढ़ाते हैं। यह भी भूल जाते हैं क्योंकि नई बात है ना। देह को याद करना तो बहुत सहज है। घड़ी-घड़ी देह याद आ जाती है। हम आत्मा हैं यह भूल जाते हैं। हम आत्माओं को बाप समझाते हैं। हम आत्मायें भाई-भाई हैं। बाप तो जानते हैं हम परमात्मा हैं, आत्माओं को सिखलाते हैं कि अपने को आत्मा समझ और आत्माओं को बैठ सिखलाओ। यह आत्मा कानों से सुनती है, सुनाने वाला है परमपिता परमात्मा। उनको सुप्रीम आत्मा कहेंगे। तुम जब किसको समझाते हो तो यह बुद्धि में आना चाहिए कि हमारी आत्मा में ज्ञान है, आत्मा को यह सुनाता हूँ। हमने बाबा से जो सुना है वह आत्माओं को सुनाता हूँ। यह है बिल्कुल नई बात। तुम दूसरे को जब पढ़ाते हो तो देही- अभिमानी होकर नहीं पढ़ाते हो, भूल जाते हो। मंजिल है ना। बुद्धि में यह याद रहना चाहिए - मैं आत्मा अविनाशी हूँ। मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों द्वारा पार्ट बजा रही हूँ। तुम आत्मा शूद्र कुल में थी, अभी ब्राह्मण कुल में हो। फिर देवता कुल में जायेंगे। वहाँ शरीर भी पवित्र मिलेगा। हम आत्मायें भाई-भाई हैं।

○ उनका अपना शरीर है नहीं। शरीर बिगर पढ़ायेंगे कैसे! प्रेरणा की तो कोई बात ही नहीं। प्रेरणा का अर्थ है विचार। ऐसे नहीं, ऊपर से प्रेरणा करेंगे और पहुँच जायेंगे, इसमें प्रेरणा की कोई बात नहीं। जिन बच्चों को बाप की पूरी पहचान नहीं, पूरा निश्चय नहीं उनकी बुद्धि में याद भी ठहरेगी

नहीं। हमको कौन सिखला रहे हैं, वह जानते नहीं तो याद किसको करेंगे? बाप की याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। जो जन्म-जन्मान्तर लिंग को ही याद करते हैं, समझते हैं यह परमात्मा है, उनका यह चिन्ह है, वह है निराकार, साकार नहीं है। बाप कहते हैं मुझे भी प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। नहीं तो तुमको सृष्टि चक्र का राज़ कैसे समझाऊं।

○ तुमको इतना ऊंच पद पाने के लिए भगवान बैठ पढ़ाते हैं। बाबा याद नहीं पड़ता है, अच्छा पढ़ाने वाला टीचर तो याद पड़े। अच्छा भला यह याद करो कि हमारा एक ही बाबा सतगुरू है। मनुष्यों ने आसुरी मत पर बाप का कितना तिरस्कार किया है। बाप अब सब पर उपकार करते हैं। तुम बच्चों को भी उपकार करना चाहिए। किसी पर भी अपकार नहीं, कुदृष्टि भी नहीं। अपना ही नुकसान करते हैं। वह वायब्रेशन फिर दूसरों पर भी असर करता है। बाप कहते हैं बहुत बड़ी मंजिल है। रोज़ अपना पोतामेल देखो-कोई विकर्म तो नहीं बनाया? यह है ही विकर्मी दुनिया, विकर्मी संवत। विकर्माजीत देवताओं के संवत का कोई को पता नहीं।

○ बाप द्वारा सृष्टि चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जानकर चक्रवर्ती राजा बन रहे हो। बाबा कितना प्यार और रूचि से पढ़ाते हैं तो इतना पढ़ना चाहिए ना। सवेरे का टाइम तो सब फ्री होते हैं। सुबह का क्लास होता है - आधा पौना घण्टा, मुरली सुनकर फिर चले जाओ। याद तो कहाँ भी रहते कर सकते हो। इतवार का दिन तो छुट्टी है। सवेरे 2-3 घण्टा बैठ जाओ। दिन की कमाई को मेकप कर लो। पूरी झोली भर दो। टाइम तो मिलता है ना। माया के तूफान आने से याद नहीं कर सकते हैं। बाबा बिल्कुल सहज समझाते हैं। मुख्य है ही अल्फ। बाप को याद करना है। यहाँ भी तुम आते हो शिवबाबा के पास। शिवबाबा इनमें प्रवेश कर तुमको कितना प्यार से पढ़ाते हैं। कोई भी बड़ाई नहीं है। बाप कहते हैं मैं आता हूँ पुराने शरीर में। कैसे साधारण रीति

शिवबाबा आकर पढ़ाते हैं। कोई अहंकार नहीं। बाप कहते हैं तुम मुझे कहते ही हो बाबा पतित दुनिया, पतित शरीर में आओ, आकर हमको शिक्षा दो।

○ तुम्हारी याद की यात्रा पूरी तब होगी जब तुम्हारी कोई भी कर्मेन्द्रियां धोखा न दें। कर्मातीत अवस्था हो जाए तब याद की यात्रा पूरी होगी। अभी पूरी नहीं हुई है। अभी तुमको पूरा पुरूषार्थ करना है। नाउम्मीद नहीं बनना है। सर्विस और सर्विस। बाप भी आकर बूढ़े तन से सर्विस कर रहे हैं ना। बाप करनकरावनहार है। बच्चों के लिए कितना फ़िकर रहता है-यह बनाना है, मकान बनाना है।

○ बाप कहते हैं-बच्चे, अपने बच्चों आदि की सम्भाल भी करनी है। परन्तु बुद्धि वहाँ लगी रहे। याद न करने से फिर पवित्र भी नहीं बन सकते। याद से पवित्र, ज्ञान से कमाई। यहाँ तो सब हैं पतित। दो किनारे हैं। बाबा को खिवैया कहते हैं, परन्तु अर्थ नहीं समझते। तुम जानते हो बाप उस किनारे ले जाते हैं। आत्मा जानती है हम अब बाप को याद कर बहुत नजदीक जा रहे हैं। खिवैया नाम भी अर्थ सहित रखा है ना। यह सब महिमा करते हैं-नईया मेरी पार लगाओ। सतयुग में ऐसे कहेंगे क्या? कलियुग में ही पुकारते हैं। तुम बच्चे समझते हो बेसमझ को तो यहाँ आना नहीं है। बाप की सख्त मना है। निश्चय नहीं तो कभी नहीं ले आना चाहिए। कुछ भी समझेंगे नहीं।

○ कोई को भी समझा सकते हो-आत्मा का बाप कौन है? फॉर्म जो तुम भराते हो उसमें बड़ा अर्थ है। बाप तो जरूर है ना, जिसको याद भी करते हैं, आत्मा अपने बाप को याद करती है। आत्मायें स्वीट होम में पवित्र ही रहती हैं तो अब बाप समझाते हैं, बाप की याद से ही विकर्म विनाश

होंगे। कोई भी देहधारी को याद न करो। बाप को जितना याद करेंगे उतना पावन बनेंगे और फिर ऊंच पद पायेंगे नम्बरवार। लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर कोई को भी समझाना सहज है। भारत में इनका राज्य था। यह जब राज्य करते थे तो विश्व में शान्ति थी। विश्व में शान्ति बाप ही कर सकते हैं और कोई की ताकत नहीं। अभी बाप हमको राजयोग सिखला रहे हैं, नई दुनिया के लिए राजाओं का राजा कैसे बन सकते हैं वह बतलाते हैं। बाप ही नॉलेजफुल है। यह तो बहुत ऊंची पढ़ाई है। फी आदि की कोई बात नहीं सिर्फ हिम्मत की बात है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना हैं, जिसमें ही माया विघ्न डालती है। बाप कहते हैं पवित्र बनो। बाप से प्रतिज्ञा कर फिर काला मुँह कर देते हैं, बहुत जबरदस्त माया है, फेल हो जाते हैं तो फिर उनका नाम नहीं गाया जा सकता है। फलाने-फलाने शुरू से लेकर बहुत अच्छे चल रहे हैं। महिमा गाई जाती है। बाप कहते हैं अपने लिए आपेही पुरूषार्थ कर राजधानी प्राप्त करनी है। पढ़ाई से ऊंच पद पाना है। यह है ही राजयोग। प्रजा योग नहीं है। परन्तु प्रजा भी तो बनेंगे ना। शक्ल और सर्विस से मालूम पड़ जाता है कि यह क्या बनने लायक हैं। घर में स्टूडेन्ट की चाल-चलन से समझ जाते हैं, यह फर्स्ट नम्बर में, यह थर्ड नम्बर में आयेंगे। यहाँ भी ऐसे हैं। जब पिछाड़ी में इम्तहान पूरा होगा तब तुमको सब साक्षात्कार होंगे। साक्षात्कार होने में कोई देरी नहीं लगती है फिर लज्जा आयेगी, हम नापास हो गये। नापास होने वाले को प्यार कौन करेंगे?

○ बाप कहते हैं- कुछ नहीं पढ़ी हो तो बहुत अच्छा है। शास्त्र आदि जो भी पढ़े हो वह सब भूल जाओ। मैं कुछ जास्ती पढ़ाता नहीं हूँ। सिर्फ कहता हूँ– मुझको याद करो तो फिर बादशाही तुम्हारी है। बस तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। बच्चा पैदा हुआ और कहेंगे बाबा। बस वर्से का हकदार बन जाते हैं। यहाँ भी तुम हकदार बन जाते हो। बापदादा को याद किया और राजधानी तुम्हारी इसलिए गाया हुआ है– सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। साहूकार लोगों का है पिछाड़ी का पार्ट। पहले गरीबों की बारी है। तुम्हारे पास आपेही आयेंगे। मेहतरों का भी उद्धार होना है। भीलनी

का भी गायन है। कहते हैं राम ने भीलनी के बेर खाये। वास्तव में राम भी नहीं है, शिवबाबा भी नहीं है। हाँ हो सकता है इस ब्रह्मा को खाना पड़े। भीलनी आदि आयेंगी।

○ बाप कहते हैं पुराने सम्बन्धों में तुम कितना दु:ख उठाते हो! बाबा ऐसे नहीं कहते कि इनको छोड़ दो। सिर्फ बुद्धियोग एक बाप से लगाओ तो तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। मनमनाभव का अर्थ ही है– मुझे याद करो और विष्णु चतुर्भुज को अर्थात् विष्णुपुरी को याद करो। मूल है ही एक अक्षर। भक्ति मार्ग में तो ढेर पंचायत है। अभी तुम सब आत्मायें आशिक हो एक माशूक परमपिता परमात्मा के। वह तुमको सुखधाम का मालिक बनाते हैं। सब आत्मायें उनको याद करते हैं। तुम रूहानी आशिक, रूहानी माशूक के एक ही बार बनते हो। बाकी तो सब मनुष्य हैं जिस्मानी आशिक माशूक। अभी बेहद के आशिकों को बेहद का माशूक आकर मिला है। उनको कहते भी हैं– आओ आकर हमको पतित से पावन बनाओ। एक को ही पुकारते हैं। तुम जानते हो हमारी आत्मा पतित बनी है इसलिए पुकारते हैं पतित-पावन आओ। कुम्भ का मेला लगता है, कितने जाकर गंगा स्नान करते हैं। फायदा कुछ भी नहीं। पावन कोई भी बनता नहीं। अभी बाप आकर ज्ञान वर्षा करते हैं। तुम्हारे ऊपर ज्ञान की वर्षा हो रही है, जिससे फिर कांटों का जंगल फूलों का बगीचा बन जायेगा। तुम जानते हो– हमारा जब राज्य होगा तो वहाँ कोई पतित होगा ही नहीं। सारे विश्व पर ज्ञान वर्षा हो जाती है। सब कुछ हरा भरा हो जाता है। खानियां भी हीरे जवाहरों की नई बन जाती हैं। अब तुम बच्चों को कितना खुशी में रहना चाहिए। सम्मुख देखते हो, बेहद का बाप बैठ समझाते हैं कि तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। भल तुम कहाँ भी बैठो– स्नान करो, बुद्धि में बाप की याद रहे। वहाँ तो याद करने की फुर्सत है। बाप को जितना याद करेंगे उतनी कमाई है। याद से ही कमाई है। ऐसा कभी सुना कि याद से कमाई होती है! कितनी बड़ी कमाई है, तुम विष्णुपुरी के मालिक बन जायेंगे।

- अब बाप तुमको 21 जन्मों के लिए दान देते हैं। अब तुम बाबा पर बलिहार जाते हो। तन-मन-धन सब कुछ दे दिया। अब बाप कहते हैं ट्रस्टी होकर रहो। अपना घरबार सम्भालो। सब शिवबाबा का है। मैं आपका हूँ, आपको ही याद करता हूँ। दिल से सरेन्डर करते हैं। बाप कहते हैं भल महल में रहो, घूमो फिरो मौज मनाओ, सिर्फ मुझे याद करो तो तुम बहुत खुशी में रहेंगे। तुम विश्व के मालिक थे। अब फिर तुम पुरूषार्थ कर वह बनते हो। बाप समझाते हैं– मीठे-मीठे बच्चों इस योगबल से ही तुम विकर्माजीत बनेंगे। बाप की याद से तुम विश्व के मालिक बनते हो। अच्छा।

- कोई अच्छी रीति पुरूषार्थ करते हैं तो समझाया जाता है ड्रामा अनुसार इनका पुरूषार्थ अच्छा चलता है। पद भी अच्छा पायेंगे। उनका पुरूषार्थ बहुत तीव्र चलता है। फिर चलते-चलते कोई का कम पद भी हो जाता है। ब्राह्मणियां जानती हैं, ब्राह्मणियों के पास आने वाले भी जानते हैं। फलाना बहुत अच्छा चलता था। आजकल आते नहीं हैं। कहते हैं हमारी बुद्धि में पता नहीं क्यों नहीं बैठता है, बाबा को हम याद ही नहीं कर सकते हैं। बस हम नहीं चल सकेंगे। बड़ी मंजिल है। ऐसे- ऐसे लिख देते हैं। मूल बात है ही निर्विकारी बनना। विकारों को छोड़ना बड़ा मुश्किल है, तुम जानते हो ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिसल इनकी ऐसी अवस्था चली आ रही है। अच्छा।

- तुम चाहते हो हम मम्मा बाबा को फालो कर सूर्यवंशी महाराजा महारानी बनें, इसमें तकलीफ वा खर्चे आदि की तो बात ही नहीं है, इसमें मुख से कुछ बोलना भी नहीं है। सिर्फ याद करना है, इसको ही सहज योग कहा जाता है, इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। बाबा के आगे तो सब महारथी हैं। इसमें योग पूरा चाहिए तब कुछ तीर लगे। योगबल है ना। योग की बहुत कमी है। विघ्न भी योग में बहुत पड़ते हैं। बेहद का बाप मीठे-मीठे बच्चों को बैठ समझाते हैं। बाप से वा

पढ़ाई से कभी रूठना नहीं है। रूठेंगे तो 21 जन्म तकदीर से रूठेंगे। बड़े अच्छे-अच्छे बच्चे भी रूठ पड़ते हैं। नशा चढ़ जाता है देह-अभिमान का। मैंने इतनों को समझाया है। देह-अहंकार आने से ही फिर गिर पड़ते हैं। इसमें अहंकार नहीं आना चाहिए।

○ ऊपर में थोड़ी आत्मायें जो हैं– वह भी आती रहती हैं। मनुष्य बढ़ते ही रहते हैं। जब वहाँ से भी आत्मायें आना पूरी हो जायेंगी, तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे फिर आत्माओं को शरीर छोड़कर जाना है। उनका आना तुम्हारा जाना होगा। थोड़े-थोड़े आते रहते हैं। समझ की बात है ना। हम पहले-पहले जाकर वहाँ रहेंगे। हमारे होते कोई रहना नहीं चाहिए। यह विस्तार की बातें हैं। बच्चों को फिर भी बाप कहते हैं- अच्छा अपने प्यारे बाबुल को याद करो। तुमको फायदा है बाप को याद करने में।

○ अन्दर डर रहना चाहिए, हम विकारों का दान देकर फिर लेंगे तो बड़ा पाप हो जायेगा। जैसे राजा हरिश्चन्द्र का मिसाल है। बाप जानते हैं ऐसे नहीं कि 5 विकार झट से छूट जाते हैं। नहीं, टाइम लगता है। तुम्हारी कर्मातीत अवस्था होगी तब लड़ाई लगेगी। यह 5 विकार हैं बड़े दुश्मन। उसमें भी मुख्य एक है देह-अभिमान। उसका दान देना कितना मुश्किल है। घड़ी-घड़ी बाप कहते हैं- अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। परन्तु यह होता नहीं है। देह-अभिमानी बनने से फिर काम की चोट लगती है। देह-अभिमान सबसे तीखा है। देही-अभिमानी बनने की मेहनत है। मुख्य देह-अभिमान आने से ही पाप हुए हैं। 5 विकार दान में देना पड़े, इसमें समय लगता है। साजन बिगर सजनियां तो जा न सकें। पहले साजन को जाना है फिर सजनियां। साजन को आकर सब आत्माओं को ले जाना है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो तब तक पुरूषार्थ करना है। देह-अभिमान आने से ही फिर भूलें होती हैं। कहते हैं बाबा देह-अभिमान में आकर विकार में गिरे। तूफान तो बहुत आयेंगे। विकार का संकल्प आये परन्तु कर्मेन्द्रियों से

कभी कोई पाप नहीं करना। माया को जीतने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप कहते हैं- अगर शादी की हुई है तो पवित्र रहकर दिखाओ तो सन्यासी भी देखेंगे। तुमको आमदनी देखो कितनी भारी है। पवित्र रह दिखाया तो बहुत ऊंच पद पायेंगे। तुम पर तो सब कुर्बान जायेंगे। बाबा भी महिमा करते हैं। भल पवित्र भी रहे परन्तु फिर योग भी चाहिए। योग में ही घड़ी-घड़ी विघ्न पड़ते हैं। देह-अभिमान आ जाता है। पवित्र रहते हैं सो तो ठीक, पवित्रता से ही पवित्र दुनिया में वर्सा पायेंगे। परन्तु फिर माया भी जोर रखेगी, माया बहुत वार करती है। बाप समझाते हैं यह सब होगा। बहादुरी दिखलाते हैं परन्तु साथ-साथ निरन्तर याद भी रहे तब ही विकर्म विनाश होंगे। रूसतम जो बनते हैं उनको माया भी बहुत सताती है। याद में मुश्किल रह सकते हैं। जो रह सकते हैं उनसे अनुभव पूछना चाहिए। क्या समझते हैं, कैसे रहते हैं। याद में रहने से विकर्म विनाश होंगे। यह बात ही बिल्कुल न्यारी नई है। यहाँ बैठे हो तो नशा चढ़ा हुआ है। यह भी समझते हैं भगवान एक ही निराकार है, न कि कृष्ण।

- यह वेद शास्त्र जो भी भक्ति मार्ग की सामग्री है, यह सब खत्म होनी है। वहाँ भक्ति मार्ग का चिन्ह भी नहीं रहता। वहाँ तो भक्ति का फल मिल जाता है। भक्तों को बाप आकर फल देते हैं। बच्चों ने जाना बाप कैसे आकर भक्ति का फल देते हैं, जिसने सबसे जास्ती भक्ति की है, उनको जरूर जास्ती फल मिलेगा। ज्ञान का पुरूषार्थ भी वह जास्ती करेगा। तुम जानते हो हम आत्माओं ने जास्ती भक्ति की है। जरूर ज्ञान में भी वह तीखे जायेंगे तब इन लक्ष्मी-नारायण जैसा ऊंच पद पायेंगे। अब ज्ञान और योग के लिए तुम्हारा पुरूषार्थ है। देही-अभिमानी हो रहना है फिर देहधारी भी होना है। कर्म करते हुए बाप को याद करना है। देह बिगर तो हम कर्म कर न सकें। यह तो ठीक है– बाबा को याद करना है, परन्तु अपने को आत्मा समझें, देह को भुला देने से काम नहीं होगा, कर्म तो करना ही है। बाप की याद में बहुत मजा है। उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप को याद करो परन्तु फिर भी पेट को भोजन तो चाहिए। देही-अभिमानी हो रहना है। देही-अभिमानी इस समय तुम बच्चों के सिवाए कोई भी नहीं। भल अपने को आत्मा भी समझें

परन्तु परमात्मा का परिचय नहीं। भल समझें हम आत्मा अविनाशी हैं, यह शरीर विनाशी है परन्तु यह समझने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। कहते भी हैं पुण्य आत्मा, पतित आत्मा। मैं आत्मा हूँ, मेरा यह शरीर है। यह तो कॉमन बात है। मूल बात बाप समझाते हैं कि मुझे याद करो। शरीर निर्वाह अर्थ देह-अभिमान में तो आना है। देह को खिलाना भी है, देह बिगर तो कुछ कर नहीं सकते। हर जन्म में अपना शरीर निर्वाह करते आते हो, कर्म करते हुए भी अपने माशुक को याद रखना है। उस माशूक का किसी को पूरा पता नहीं है। उस माशूक अथवा बाप से हमको वर्सा मिलना है और उनकी याद से विकर्म विनाश होंगे, यह कोई नहीं समझाते हैं। तुम बच्चे नई बातें सुनते हो। तुम जानते हो घर जाने का हमको रास्ता मिला है। अपने घर जाकर फिर राजधानी में आयेंगे। बाबा नया मकान बनाते हैं तो जरूर दिल होगी ना कि उसमें जाकर बैठें।

○ तीर्थों पर छोटे बच्चों को कैसे ले जायेंगे। बच्चों आदि को कोई न कोई को सम्भालने लिए दे जाते हैं। साथ में नहीं ले जाते हैं। दो तीन मास यात्रा करते हैं। यहाँ तुम आते हो, तुमको बैठकर सुनना है, पढ़ना है। छोटे बच्चे तो नहीं सुनेंगे। यहाँ तुम आये ही हो– योग और ज्ञान सीखने। बाप बैठ ज्ञान सुनाते हैं तो कोई आवाज आदि नहीं होना चाहिए। नहीं तो अटेन्शन जाता है। शान्ति से बैठकर अटेन्शन देकर सुनना है। योग तो बहुत सहज है। कुछ भी काम करते रहो, बुद्धि का योग वहाँ लगा रहे। बाबा की याद रहने से कमाई बहुत जबरदस्त होती है। तुम जानते हो हम एवरहेल्दी बनेंगे। अपने साथ बातें करनी होती है। बाबा की याद में रहकर भोजन भी अपने हाथ से बनाना है। हाथों से काम भी करो, बाकी याद करो अपने बाप को। तुम्हारा भी कल्याण होगा और याद में रहने से चीज भी अच्छी बनेगी। तुमको विश्व की बादशाही मिलती है। तुम यहाँ आते ही हो– लक्ष्मी-नारायण बनने।

- मीठे-मीठे बच्चे यह जानते हैं कि मीठा बाबा हमको स्वर्गवासी बनाने यहाँ आये हैं। यह बच्चों की बुद्धि में है। हर एक को यह समझाना है कि हम आत्मा इस याद की यात्रा से पवित्र बनती हैं। कितना सहज उपाय है, सिर्फ बाप को याद करना है। बच्चे जानते हैं कि बाप एक सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं। अब सब जीवनबन्ध में हैं, रावणराज्य के बन्धन में हैं। यह बात बाप जानते और बच्चे जानते और न जाने कोई। तुम बच्चों को निश्चय है कि बेहद के बाप को हम याद करते हैं तो अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए, आत्मा को। जिस बाप को आधाकल्प याद किया करते थे– वह बाप मिला। दु:ख में बाप को सिमरण करते रहते हैं। तुम भी सिमरण करते थे, अभी तुम दु:खी होकर सिमरण नहीं करते हो। जिसको सारी दुनिया सिमरण करती है– वह बाप आया है, यह तुम जानते हो। बाबा ने बार-बार समझाया है– यहाँ जब तुम बैठते हो तो ऐसा समझो कि हम आत्मा हैं। बाबा परमधाम से आया हुआ है। कल्प-कल्प अपने वायदे अनुसार आता है।

- विनाश तो होना ही है। तुम बच्चों को बड़ा अच्छा नशा रहना चाहिए। बाप जो हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनको हम बच्चे याद न करें, कितना वन्डर है। माया याद करने नहीं देती। तुम बच्चे अभी ऐसे कहते हो– बाबा माया हमको याद करने नहीं देती है। अरे बाबा, जो तुमको 21 जन्मों के लिए स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनको तुम याद नहीं कर सकते हो? प्रजा भी तो स्वर्ग का मालिक बनती है ना। सब सुखी रहते हैं। अभी तो सब दु:खी हैं। पवित्र बनो और बाप को याद करो। बहुत बच्चियों के ऊपर अत्याचार होते हैं। तुम माताओं का संगठन होना चाहिए एक दो को बचाने के लिए। परन्तु देही- अभिमानी जरूर बनना पड़े। हमको पावन तो जरूर बनना है -यह पक्का नशा चाहिए। ऐसे नशे में रहने वाले ही समझा सकेंगे। हमें बाप को याद करना है, पवित्र बनना है। हम स्वदर्शन चक्रधारी हैं– यह नशा तो रहना चाहिए। हम रचयिता बाप और रचना के चक्र को जानते हैं। अभी हमको बाप से नई दुनिया सतयुग का वर्सा लेना

है। हम 84 जन्म कैसे लेते हैं, यह समझाते रहो। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप नष्ट हो जायेंगे। पावन तो जरूर बनना है। पावन अर्थात् पवित्र। काम महाशत्रु है। हमने 84 जन्म का चक्र पूरा किया, अब बाप से वर्सा लेना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यहाँ तो आते ही हो रिफ्रेश होने। मुझ बाप को याद करो– 21 जन्मों का वर्सा लेना है। कोई में भी मोह की रग नहीं रहनी चाहिए। नष्टोमोहा बनना है। इस शरीर में भी मोह न रहे। यह तो पुरानी चमड़ी है। परन्तु इसकी सम्भाल रखनी होती है, जो पढ़ाई पढ़ सकें। तकलीफ होती है तो चत्ती लगानी पड़ती है। तुम जानते हो यह पुराना सड़ा हुआ शरीर है। इनको कुछ न कुछ होता रहता है। दु:ख आत्मा को होता है। जानते हो अब तो यह शरीर छोड़ना है। योगबल से इनको थमाना है। बाप को याद करते रहना है। अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करना है, बस। और कोई लौकिक सम्बन्ध भी याद नहीं आने चाहिए। मैं देह नहीं आत्मा हूँ। बाप कहते हैं मैं तुम आत्माओं को वर्सा देने आया हूँ। आत्मा पवित्र होगी तब फिर शरीर भी अच्छा मिलेगा। तुम जानते हो अभी हमारी आत्मा पावन बननी है। हम पावन थे तो इन लक्ष्मी-नारायण जैसे थे। इन लक्ष्मी-नारायण ने 84 जन्म लिए हैं। सारी सूर्यवंशी डिनायस्टी ने 84 जन्म लिए हैं। चन्द्रवंशी के लिए 84 जन्म नहीं कहेंगे। हाँ जो सूर्यवंशी में पहले-पहले दास दासी बनते होंगे वह फिर त्रेता में कुछ मर्तबा पाते हैं, उनके 84 जन्म कहेंगे। राजा रानी, प्रजा जो भी दास दासियां आदि सूर्यवंशी में आते हैं वही 84 जन्म लेते हैं। ऐसे-ऐसे अपने से बातें करनी है। हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। विचार सागर मंथन करना चाहिए। जितना हो सके बाप को और वर्से को याद करते रहो। चलते फिरते समझो कि हम बाबा के बच्चे हैं। कोई भी मिले तो उनको बाबा का परिचय देना है। गवर्मेन्ट को भी समझाया जाता है– हमारी यह फैमली है। दादा और बाबा है। दादा द्वारा हम वर्सा ले रहे हैं। यह याद रखने से खुशी रहनी चाहिए, मिलकियत् तो दादे की है। पौत्रों को हक है, पूरा हिस्सा बांटकर लेते हैं। तुम भी जानते हो– शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा हम वर्सा लेते हैं। यह याद रखना चाहिए। पढ़ना है और फिर पढ़ाना है।

○ मनुष्य शास्त्र तो बहुत पढ़ते हैं। पिछाड़ी में फिर भी एक अक्षर कह देते हैं कि राम-राम कहो। ऐसे नहीं कहते शास्त्र सुनाओ, वेद सुनाओ। पिछाड़ी में कहेंगे राम को याद करो। जो जास्ती समय जिस चिंतन में रहते हैं, अन्त में भी वह याद आ जाता है। अभी विनाश तो सबका होना है। तुम जानते हो सब किसको याद करेंगे? कोई कृष्ण को, कोई अपने गुरू को याद करेंगे। कोई अपने देह के सम्बन्धियों को याद करेंगे। देह को याद किया, खेल खलास। यहाँ तुमको एक ही बात समझाई जाती है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। चार्ट रखो कि हम कितना याद करते हैं। जितना याद करेंगे, पावन होते जायेंगे।

○ तुम जानते हो यह मम्मा बाबा भविष्य में लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। अभी पुरूषार्थ कर रहे हैं, इसलिए कहा जाता है फालो मदर-फादर। जैसे यह पुरूषार्थ करते हैं, तुम भी करो। यह भी याद में रहते हैं, स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं। तुम बाप को याद करो और वर्से को याद करो। त्रिकालदर्शी बनो। तुमको इस सारे चक्र का ज्ञान है, इसमें तत्पर रहो, औरों को समझाते रहो। इस सर्विस में ही लगे रहेंगे तो और कोई धन्धा आदि याद नहीं पड़ेगा। अच्छा।

○ एक द्रोपदी तो नहीं हैं, हजारों हो जायेंगी। अभी तुम पतित दुनिया से पावन दुनिया में ट्रांसफर हो रहे हो। जो कल्प पहले फूल बने होंगे वही निकलेंगे। गॉर्डन ऑफ अल्लाह की यहाँ स्थापना होगी। कोई-कोई तो ऐसे अच्छे-अच्छे फूल होते हैं जो देखने से ही आराम आ जाता है। नाम ही है किंग ऑफ फ्लावर्स। 5 रोज से रखा हो तो भी खिला रहेगा। खुशबू फैलती रहेगी। यहाँ भी जो बाप को याद करते और याद दिलाते हैं उनकी खुशबू फैलती है। सदैव खुश रहते हैं। ऐसे

मीठे-मीठे बच्चों को देख बाप हर्षित होते हैं। उन्हों के आगे बाबा की ज्ञान डांस अच्छी होती है। अच्छा।

○ बाप कहते हैं मीठे बच्चों– हम बेहद के बाप के बच्चे हैं, यह भूलो मत। यह भूले तो अपने को रूला देंगे। छी-छी दुनिया में बुद्धि चली जायेगी। बाप की याद रहने से अतीन्द्रिय सुख भासता है। वह सुख, बाप को भूल जाने से गुम हो जायेगा। हरदम याद रहना चाहिये कि हम बाबा के बच्चे हैं, नहीं तो अपने को रूला देंगे। सब भगवान के बच्चे हैं, सब कहते हैं हे बाबा, हे परम पिता परमात्मा रक्षा करो। परन्तु बाप से रक्षा कब होती है– यह किसको भी पता नहीं है। साधूसन्त आदि कोई भी नहीं जानते कि बाप से हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति कब मिलनी है क्योंकि भगवान को ही कण-कण में कह दिया है। अब तुम बच्चे बेहद के बाप को जान गये हो।

○ ब्रह्मा भी पावन बन रहे हैं। इनका भी मेरे साथ हिसाब-किताब है। इनके साथ कोई का हिसाब-किताब नहीं। तुम चिठ्ठी लिखते हो– शिवबाबा केअर आफ ब्रह्मा। परन्तु माया ऐसी है जो निरन्तर याद करने नहीं देती है। बुद्धियोग घड़ी-घड़ी तोड़ देती है। अगर यही पक्का पुरूषार्थ करेंगे तो फिर दूसरा सब कुछ भूल जायेगा। शरीर भी भूल जायेगा। यह शरीर होगा परन्तु आत्मा को इन सब चीजों से नफरत होगी। यह अवस्था जमाने की प्रैक्टिस करनी होती है। अन्त में हमको अपना शरीर भी याद न पड़े। बाप कहते हैं-अपने को अशरीरी समझ मुझ बाप को याद करो। मैं सदैव अशरीरी हूँ, तुम भी अशरीरी थे। फिर तुमने पार्ट बजाया। अभी फिर तुमको पार्ट बजाना है, यह मेहनत है। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात है क्या। मनुष्य ही विश्व का मालिक बन सकता है। यह देवतायें भी मनुष्य हैं परन्तु इनको दैवीगुण वाले देवता कहा जाता है। लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे, इन्हों को अपने बच्चे होंगे। वही उनको माँ-बाप मानेंगे।

परन्तु आजकल मनुष्य अन्धश्रद्धा से इन लक्ष्मी-नारायण को त्वमेव माताश्च पिता...कहते हैं। वास्तव में यह महिमा है शिवबाबा की।

○ तुम जानते हो शिवबाबा वह निराकार परमपिता परमात्मा है। उनसे ही सुख घनेरे मिलते हैं। बाकी जो भी सम्बन्धी आदि हैं उनसे दु:ख ही मिलता है। यह तो एक सैक्रीन है, जिससे सर्व सम्बन्ध की रसना मिलती है इसलिए बाप कहते हैं मामा, काका, चाचा आदि सबसे बुद्धियोग हटाए मामेकम् याद करो। तुम गाते भी हो दु:ख हर्ता सुख कर्ता... सर्व का सद्गति दाता एक ही है, वही हमारा सब कुछ है। लौकिक बाप से भी दु:ख मिलता है। बाकी टीचर है जो किसको दु:ख नहीं देते। टीचर पास जाकर पढ़ने से तुम शरीर निर्वाह करते हो। हुनर सिखाने वाले भी होते हैं। वह सब अल्पकाल के लिए टीचिंग करते हैं। भक्ति में भी महिमा एक राम अथवा परमपिता परमात्मा की ही करते हैं, उनको ही याद करते हैं। वास्तव में भक्ति भी एक की ही करनी है। वह एक ही तुमको पूज्य बनाते हैं। तुम पहले-पहले एक शिवबाबा की पूजा करते हो। उनको सतोप्रधान भक्ति कहा जाता है। फिर आत्मा भी सतोप्रधान से सतो रजो तमो बनती है। तुम समझते हो हम पुजारी बनते हैं। तुम पहले एक शिव की ही पूजा करते हो फिर कलायें कमती होती जाती हैं। भक्ति भी सतोप्रधान से, सतो रजो तमो बन जाती है।

○ बाप कहते हैं- अब मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। बाप को याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा। हमारे जैसा धनवान सृष्टि में कोई नहीं है। बाप ही याद नहीं होगा तो धन कहाँ से आयेगा। स्वर्ग में तो तुम बच्चों को अपार सुख मिलता है। शास्त्रों में तो कितनी दन्त कथायें लिख दी हैं। गाते भी हैं– राम राजा, राम प्रजा...धर्म का उपकार है। फिर कहते राम की सीता चुराई गई, बन्दरों की सेना ली... आगे खुद भी पढ़ते थे, कुछ भी समझते नहीं थे। अब कितना समझ में आता है। कितनी वन्डरफुल बातें लिखी हैं।

- बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। और कोई रास्ता नहीं है– पतित से पावन बनने का। याद से ही खाद भस्म होगी। सोनार लोग जानते हैं– सच्चा सोना, झूठा सोना कैसे बनता है। उसमें चांदी-तांबा-लोहा डालते हैं। तुम भी पहले सतोप्रधान थे फिर तुम्हारे में खाद पड़ती है, तमोप्रधान बन पड़े हो। अभी फिर सतोप्रधान बनना पड़े तब सतयुग में जा सकेंगे। बाप कहते हैं-कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। गृहस्थ व्यवहार में रहते एक बाप के सिवाए और कोई को याद नहीं करो तो तुम स्वर्गपुरी के मालिक बन जायेंगे। स्वर्ग अथवा विष्णुपुरी थी, अब रावणपुरी है।

- सतयुग में एक धर्म था, अभी तो अनेक धर्म हैं। एक धर्म वाले देवी-देवताओं की निशानी चक्र आदि है। इन लक्ष्मी-नारायण को कहते ही हैं विश्व का मालिक। स्वर्ग का मालिक सो विश्व का मालिक हो गया। यह बातें अभी तुम बच्चों की बुद्धि में बैठी हैं। बाप कहते हैं- बच्चे, मनमनाभव। यह बच्चों को घड़ी-घड़ी सावधानी मिलती है। बाप को और वर्से को याद करो। यह भूलो मत और प्वाइंट्स भूल जाती हैं, यह तो मुख्य हैं ना। बाप ही पतित-पावन है। यह युक्ति बताते हैं पावन होने की। बाप कहते हैं, तुम सतोप्रधान थे। अब तमोप्रधान पतित बन गये हो। 84 जन्म पूरे लिए हैं।

- तुम बच्चों को यह ख्याल में रखना है कि अभी हमको कर्मातीत अवस्था में जाना है, सतोप्रधान बनना है। याद से ही पावन बनेंगे। बाबा बात तो बहुत सहज बताते हैं। अति सहज है सिर्फ बाबा को याद करना है। देखो गाय के बच्चे को जब माँ याद आती है तो चिल्लाता है ना। वह तो है जानवर। तुम बच्चों ने भी रड़ियाँ मारी ना। आगे चल बहुत चिल्लायेंगे, बहुत याद करेंगे। तुम

बच्चे तो अब जानते हो कि बाबा आया हुआ है, विनाश तो होना ही है। नेचुरल कैलेमिटीज आनी है। सब आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। कितना खर्चा कर बाम्ब्स बनाते हैं, बहुत पैसा जाता है। खर्चा तो होता है ना। इतना खर्चा कहाँ से लायें। डरते भी हैं– मौत से। फिर भी बाम्ब्स बनाना तो बन्द नहीं करते। बाम्ब्स की लड़ाई चलेगी।

○ कहते हैं हमको फलानी टीचर मिले तो अच्छा है। तो जरूर खुद कमजोर है तब तो कहते हैं फलानी को 2-4 मास के लिए भेज दो। बाबा कहते हैं यह भी भूल है। तुम ब्राह्मणी को क्यों याद करते हो जबकि बाप सहज बात बताते हैं– सिर्फ बाप को याद करो और स्वदर्शन चक्र फिराओ, औरों को भी समझाओ। बस। इसमें ब्राह्मणी आकर क्या करेगी? यह तो सेकण्ड की बात है। तुम धन्धे- धोरी में यह भूल जाते हो फिर भी ब्राह्मणी यही कहेगी मनमनाभव। कई बुद्धू लोग समझते नहीं हैं सिर्फ कहते हैं ब्राह्मणी अच्छी चाहिए। ज्ञान तो तुमको मिला है ना। बाप और वर्से को याद करो। देह-अभिमान को छोड़ो। यह हमारा सेन्टर है, यह इनका सेन्टर है। यह जिज्ञासू यहाँ क्यों जाते हैं... यह सब देह-अभिमान है। सब शिवबाबा के सेन्टर्स हैं, हमारा थोड़ेही सेन्टर है। तुमको यह क्यों होता है कि फलाना हमारे सेन्टर पर क्यों नहीं आता। कहाँ भी जाये।

○ तुम बेहद के सन्यासी, राजयोगी हो। इस पुराने शरीर का भी बुद्धि से सन्यास करना है। आत्मा समझती है-इनसे बुद्धि नहीं लगानी है। बुद्धि से इस पुरानी दुनिया, पुराने शरीर का सन्यास किया है। अभी हम आत्मायें जाती हैं, जाकर बाप से मिलेंगी। सो भी तब होगा जब एक बाप को याद करेंगे। और किसको याद किया तो स्मृति जरूर आयेगी। फिर सजा भी खानी पड़ेगी और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। जो अच्छे-अच्छे स्टूडेन्ट होते हैं वह अपने साथ प्रतिज्ञा कर लेते हैं कि हम स्कॉलरशिप लेकर ही छोड़ेंगे। तो यहाँ भी हर एक को यह ख्याल में रखना है कि हम बाप से पूरा राज्य-भाग्य लेकर ही छोड़ेंगे। उनकी फिर चलन भी ऐसे ही रहेगी। आगे चल पुरूषार्थ करते-

करते गैलप करना है। वह तब होगा जब रोज़ शाम को अपनी अवस्था को देखेंगे। बाबा के पास समाचार तो हर एक का आता है ना। बाबा हर एक को समझ सकते हैं, किसको तो कह देते कि तुम्हारे में वह नहीं दिखाई पड़ता है। यह लक्ष्मी-नारायण बनने जैसी शक्ल दिखाई नहीं पड़ती।

- बागवान भी बैठा है, माली भी है, फूल भी हैं। यह नई बात है ना। कोई नया अगर सुने तो कहेंगे यह क्या कहते हैं। बागवान फूल आदि यह क्या है? ऐसी बातें तो कभी शास्त्रों में सुनी नहीं। तुम बच्चे जानते हो, याद भी करते हैं बागवान-खिवैया को। अब यहाँ आये हैं, यहाँ से पार ले जाने। बाप कहते हैं याद की यात्रा पर रहना है। अपने को आपेही देखो हम कितना दूर जा रहे हैं? कितना अपनी सतोप्रधान अवस्था तक पहुँचे हैं? जितना सतोप्रधान अवस्था होती जायेगी तो समझेंगे अभी हम लौट रहे हैं। कहाँ तक हम पहुँचे हैं, सारा मदार याद की यात्रा पर है। खुशी भी चढ़ी रहेगी। जो जितनी-जितनी मेहनत करते हैं उतना उनमें खुशी आयेगी। जैसे इम्तहान के दिन होते हैं तो स्टूडेन्ट समझ जाते हैं ना-हम कहाँ तक पास होंगे। यहाँ भी ऐसे है-हर एक बच्चा अपने को जानते हैं कि कहाँ तक हम खुशबूदार फूल बने हैं? कितना खुशबूदार फिर औरों को बनाते हैं?

- प्रदर्शनी में कितने ढेर आते हैं, कोई मुश्किल निकलते हैं, कोई तो सिर्फ महिमा करते हैं बहुत अच्छा है, हम आयेंगे। कोई विरले 7 रोज़ का कोर्स उठाते हैं, 7 रोज़ की भी बात अब क्या है। गीता का पाठ भी 7 दिन रखते हैं। सात दिन तुमको भी भट्टी में पड़ना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से सारा किचड़ा निकल जायेगा। आधाकल्प की गन्दी बीमारी देह-अभिमान की है, वह निकालनी है। देही-अभिमानी बनना है। अभी तुम बच्चों को मेहनत करनी

है, याद की। और कोई संशय में नहीं आना चाहिए। विकर्माजीत बन ऊंच पद पाना है तो यह चिंतन खत्म करना है कि यह क्यों होता है, यह ऐसे क्यों करता है। इन सब बातों को छोड़ एक ही चिंतन रहे कि हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। जितना बाप को याद करेंगे उतना विकर्माजीत बन ऊंच पद पायेंगे। बाकी फालतू बातें सुन अपना माथा खराब नहीं करना है। सब बातों से एक बात मुख्य है - उनको नहीं भूलो। कोई साथ टाइम वेस्ट न करो। तुम्हारा टाइम बहुत वैल्युबुल है। तूफानों से डरना नहीं है। बहुत तकलीफ आयेगी, घाटा पड़ेगा। परन्तु बाप की याद कभी नहीं भूलनी है। याद से ही पावन बनना है, पुरूषार्थ कर ऊंच पद पाना है। यह बाबा बूढ़ा इतना ऊंच पद पाते हैं, हम क्यों नहीं बनेंगे। यह भी पढ़ाई है ना। तुमको इसमें कुछ भी किताब आदि उठाने की दरकार नहीं है। बुद्धि में सारी कहानी है। कितनी छोटी कहानी है। सेकेण्ड की बात है, जीवनमुक्ति सेकेण्ड में मिलती है। मूल बात है बाप को याद करो। बाप जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं उनको तुम भूल जाते हो! कहते हैं सब थोड़ेही राजा बनेंगे। अरे तुम सबका चिंतन क्यों करते हो! स्कूल में यह ओना (फिकर) रखते हैं क्या कि सब थोड़ेही स्कॉलरशिप पायेंगे? पढ़ने लग पड़ेंगे ना। हर एक के पुरूषार्थ से समझा जाता है कि यह क्या पद पाने वाले हैं।

○ तुम नई खाल सतयुग में लेंगे। श्रीकृष्ण कितना खूबसूरत है, कितनी उसमें कशिश है। फर्स्टक्लास शरीर है। ऐसे हम लेंगे। कहते हैं ना-हम तो नारायण बनेंगे। यह तो सड़ी हुई छी-छी खल है। यह हम छोड़कर जायेंगे नई दुनिया में। यह याद करते खुशी क्यों नहीं होती, जब कहते हो हम नर से नारायण बनते हैं! इस सत्य नारायण की कथा को अच्छी रीति समझो। जो कहते हो वह करके दिखाओ। कहनी, करनी एक चाहिए। धंधा आदि भी भल करो। बाप कहते हैं हाथों से काम करो, दिल बाप की याद में रहे। जितनी-जितनी धारणा करेंगे उतना तुम्हारे पास नॉलेज की वैल्यु होती जायेगी, नॉलेज की धारणा से तुम कितना धनवान बनते हो। यह है

रूहानी नॉलेज। तुम आत्मा हो, आत्मा ही शरीर से बोलती है। आत्मा ही ज्ञान देती है। आत्मा ही धारण करती है।

○ यह भी तुम जानते हो अल्फ को याद करने से खुशी रहती है। अगर बच्चों का याद की यात्रा में अटेन्शन कम है, अल्फ को याद नहीं करते हैं तो नुकसान जरूर होता है। सारा मदार याद पर है। याद करने से एकदम हेविन में चले जाते हैं। याद भूलने से ही गिर पड़ते हैं। इन बातों को और कोई समझ न सके। शिवबाबा को तो जानते ही नहीं। भल कितना भी कोई भभके से पूजा करते हो, याद करते हो फिर भी समझते नहीं। तुमको बाप से बहुत बड़ी जागीर मिलती है। भक्ति मार्ग में कृष्ण का दीदार करने लिए कितना माथा मारते हैं, अच्छा दर्शन हुआ फिर क्या? फायदा तो कुछ भी हुआ नहीं। दुनिया देखो किन बातों पर चल रही है। तुम जैसे कि गन्ने का रस सुगर पीते हो, बाकी सब मनुष्य छिलका चूसते हैं। तुम अभी सुगर पीकर पूरा पेट भर आधाकल्प सुख पाते हो, बाकी सब भक्ति मार्ग के छिलके चूसते नीचे उतरते आते हैं। अब बाप कितना प्यार से पुरूषार्थ कराते हैं। परन्तु तकदीर में नहीं है तो अटेन्शन नहीं देते। न खुद अटेन्शन देते हैं, न औरों को देने देते हैं। न खुद अमृत पीते हैं, न पीने देते हैं। बहुतों की ऐसी एक्टिविटी चलती है। अगर पूरी रीति पढ़ते नहीं, रहमदिल नहीं बनते, किसका कल्याण नहीं करते तो वह क्या पद पायेंगे! पढ़ने और पढ़ाने वाले कितना ऊंच पद पाते हैं। पढ़ते नहीं हैं तो क्या पद होगा-वह भी आगे चल रिजल्ट का पता पड़ जायेगा। फिर समझेंगे-बरोबर बाबा हमको कितना वारनिंग देते थे। यहाँ बैठे हो, बुद्धि में रहना चाहिए-हम बेहद के बाप पास बैठे हैं। वह हमको ऊपर से आकर इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं कल्प पहले मुआफ़िक। अब हम फिर से बाप के सामने बैठे हैं। उनके साथ ही हमको चलना है। छोड़कर नहीं जाना है। बाप हमको साथ ले जायेंगे। यह पुरानी दुनिया विनाश हो जायेगी। यह बातें और कोई नहीं जानते। आगे चलकर जानेंगे, बरोबर पुरानी दुनिया खत्म होनी है। मिल तो कुछ भी नहीं सकेगा। यह बातें और कोई

नहीं जानते। टू लेट हो जायेंगे। हिसाब-किताब चुक्तू कर सबको वापिस जाना है। यह भी जो सेन्सीबुल बच्चे हैं वही जानते हैं। बच्चे वह जो सर्विस पर उपस्थित हैं। माँ-बाप को फालो करते हैं। जैसे बाप रूहानी सेवा करते हैं वैसे तुमको करनी है। कई बच्चे हैं जिनको यह धुन लगी रहती है, जिनकी बाबा महिमा करते हैं, उन जैसा बनना है। टीचर मिलती तो सबको है। यहाँ भी सब आते हैं। यहाँ तो बड़ा टीचर बैठा है। बाप को याद ही नहीं करते तो सुधरेंगे कैसे। नॉलेज तो बहुत सहज है। 84 जन्मों का चक्र है कितना सहज। परन्तु कितना माथा मारना पड़ता है। बाप कितनी सहज बात समझाते हैं। बाप को और 84 के चक्र को याद करो तो बेड़ा पार हो जायेगा। यह मैसेज सबको देना है। अपनी दिल से पूछो-कहाँ तक मैसेन्जर बना हूँ?

○ तुम बच्चों के लिए अभी है संगमयुग। बाकी सब हैं कलियुग में। तुम पुरूषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो। जो-जो बाप को याद करते हैं, बाप की श्रीमत पर चलते हैं, वह संगमयुग पर हैं। बाकी कलियुग में हैं। अपनी ही दैवी फैमिली है। अभी यह है तुम्हारा ईश्वरीय परिवार। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप की याद में रहते हो तो तुम ईश्वरीय परिवार के हो। अगर देह-अभिमान में आकर भूल जाते हो तो आसुरी परिवार के हो। एक सेकण्ड में ईश्वरीय सम्प्रदाय के और फिर एक सेकण्ड में आसुरी सम्प्रदाय के बन जाते हो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना कितना सहज है। परन्तु बच्चों को मुश्किल लगता है।

○ आत्मायें और परमात्मा अभी ही मिलते हैं, यह भूलो मत। परन्तु माया ऐसी है जो भुला देती है। नहीं तो वह नशा रहना चाहिए ना - भगवान हमको पढ़ाते हैं! उनको याद करते रहना चाहिए। परन्तु यहाँ तो ऐसे-ऐसे हैं जो बिल्कुल ही भूल जाते हैं। कुछ भी नहीं जानते। भगवान खुद कहते हैं कि बहुत बच्चे यह भूल जाते हैं, नहीं तो वह खुशी रहनी चाहिए ना। हम भगवान के बच्चे हैं, वह हमको पढ़ा रहे हैं। माया ऐसी प्रबल है जो बिल्कुल ही भुला देती है। इन आंखों से यह

जो पुरानी दुनिया, मित्र-सम्बन्धी आदि देखते हो उनमें बुद्धि चली जाती है। अभी तुम बच्चों को बाप तीसरा नेत्र देते हैं। तुम शान्तिधाम-सुखधाम को याद करो। यह है दु:खधाम, छी-छी दुनिया। तुम जानते हो भारत स्वर्ग था, अभी नर्क है। बाप आकर फिर फूल बनाते हैं। वहाँ तुमको 21 जन्मों के लिए सुख मिलता है। इसके लिए ही तुम पढ़ रहे हो। परन्तु पूरा नहीं पढ़ने कारण यहाँ के धन-दौलत आदि में ही बुद्धि लटक पड़ती है। उनसे बुद्धि निकलती नहीं है।

○ बच्चों को मार्ग भी बताना है, मुख्य बात है पवित्रता की। बाप को बुलाते ही हैं कि आओ पवित्र बनाकर हमको इस छी-छी दुनिया से ले जाओ। बाप आये ही हैं घर ले जाने के लिए। बच्चों को प्वाइंट्स तो बहुत दी जाती हैं। मुख्य बात फिर भी बाप कहते हैं मनमनाभव। पावन बनने के लिए बाप को याद करते हैं, यह भूलना नहीं चाहिए। जितना याद करेंगे उतना फायदा होगा, चार्ट रखना चाहिए। नहीं तो फिर पिछाड़ी में फेल हो जायेंगे। बच्चे समझते हैं, हम ही सतोप्रधान थे, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जो ऊंच बनते हैं, उनको मेहनत भी जास्ती करनी पड़ेगी। याद में रहना पड़ेगा। यह तो समझते हो बाकी थोड़ा समय है, फिर सुख के दिन आने हैं। बरोबर हमारे अथाह सुख के दिन आने हैं। वास्तव में तुम सब द्रोपदियाँ, सीतायें, पार्वतियाँ हो। याद में रहने से अबलायें, कुब्जायें भी बाप से वर्सा पा लेती हैं। याद में तो रह सकती हैं ना। भगवान ने आकर यज्ञ रचा है, इसमें कितने विघ्न पड़ते हैं। अभी भी विघ्न पड़ते रहते हैं, कन्याओं को जबरदस्ती शादी कराते हैं, नहीं तो मारकर निकाल देते हैं इसलिए पुकारती हैं हे पतित-पावन आओ तो जरूर उनको रथ चाहिए, जिसमें आकर पावन बनाये। गंगा के पानी से पावन नहीं बनेंगे। बाप ही आकर पावन बनाए पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं।

○ बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, अक्सर करके मनुष्य शान्ति को पसन्द करते हैं। घर में अगर बच्चों की खिट-खिट है, तो अशान्ति रहती है। अशान्ति से दु:ख भासता है। शान्ति से सुख भासता है। यहाँ तुम बच्चे बैठे हो, तुमको सच्ची शान्ति है। तुमको कहा गया है बाप को याद करो। अपने को आत्मा समझो। आत्मा में जो आधाकल्प से अशान्ति है, वह निकलनी है शान्ति के सागर बाप को याद करने से। तुमको शान्ति का वर्सा मिल रहा है। यह भी तुम जानते हो शान्ति की दुनिया और अशान्ति की दुनिया बिल्कुल अलग है। आसुरी दुनिया, ईश्वरीय दुनिया, सतयुग, कलियुग किसको कहा जाता है, यह कोई मनुष्य मात्र नहीं जानते। तुम कहेंगे हम भी नहीं जानते थे।

○ हम ईश्वर बाप से पढ़ रहे हैं दैवी औलाद बनने के लिए, तो कितनी खुशी होनी चाहिए। बाबा सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएं। बाप आये ही हैं सबको ले जाने। जितना-जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। अज्ञान में जैसे कन्या की सगाई होती है तो याद बिल्कुल छप जाती है। बच्चा पैदा हुआ और याद छप जाती है। यह याद तो स्वर्ग में भी छप जाती, नर्क में भी छप जाती। बच्चा कहेगा यह हमारा बाप है, अब यह तो है बेहद का बाप। जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है तो उनकी याद छप जानी चाहिए। बाप से हम भविष्य 21 जन्मों का फिर से वर्सा ले रहे हैं। बुद्धि में वर्सा ही याद है।

○ रामकृष्ण परमहंस का चेला विवेकानंद कहता था मैं गुरू के सामने बैठा था, गुरू का भी ध्यान तो करते हैं ना। अभी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। ध्यान की तो बात ही नहीं, गुरू तो याद है ही। खास बैठ करवे याद करने से याद आयेगा क्या। उनकी गुरू में भावना थी कि यह भगवान है तो देखा कि उनकी आत्मा निकल मेरे में लीन हो गई। उनकी आत्मा कहाँ जाकर बैठी फिर

क्या हुआ, कुछ भी वर्णन नहीं, बस। खुश हुआ हमको भगवान का साक्षात्कार हुआ। भगवान क्या है, वह नहीं जानते। बाप समझाते हैं सीढ़ी के चित्र पर तुम समझाओ।

○ जितना याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। कितनी सहज दवाई है, और कोई साधू सन्त आदि इस दवाई को नहीं जानते हैं। कहाँ भी लिखा हुआ नहीं है। बाप है ही सुख देने वाला, इसलिए उनको याद करते हैं। दु:ख देने वाला रावण है। सबसे पहले आता है देह-अभिमान। अभी बाप समझाते हैं तुमको आत्म– अभिमानी बनना है, इसमें बड़ी मेहनत है। बाबा जानते हैं सच्ची दिल से जिस युक्ति से याद करना चाहिए, कोई मुश्किल याद करता है। यहाँ रहते भी बहुत भूल जाते हैं। अगर देही-अभिमानी होते तो कोई पाप नहीं करते। बाप का फरमान है हियर नो ईविल...बन्दर के लिए तो नहीं है। यह तो मनुष्य के लिए है। मनुष्य बन्दर मिसल हैं तो बन्दर का चित्र बनाया है। बहुत हैं जो सारा दिन झरमुई झगमुई करते हैं। तो बाप को समझानी देनी होती है। सब सेन्टर्स पर कोई न कोई ऐसे रहते हैं जो एक दो को दु:ख ही देते रहते हैं। कोई अच्छे भी हैं जो बाप की याद में रहते हैं। समझते हैं मन्सा, वाचा, कर्मणा कोई को दु:ख नहीं देना है। वाचा भी कोई को दु:ख देंगे तो दु:खी होकर मरेंगे। बाप कहते हैं तुम बच्चों को सबको सुख देना है। सबको कहना है कि देही-अभिमानी बनो। बाप को याद करो और कोई पैसे के लेन देन की बात नहीं। सिर्फ लवली बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म भस्म हो जायेंगे। तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। भगवानुवाच – मनमनाभव एक बाप को और वर्से को याद करो। और कुछ भी आपस में न बोलो सिर्फ बाप को याद करो। दूसरे का कल्याण करो। तुम्हारी अवस्था ऐसी मीठी हो जो कोई भी आकर देखे, बोले बाबा के बच्चे तो ब्लॉटिंग पेपर्स हैं। अभी वह अवस्था नहीं है। बाबा से कोई पूछे तो ब्लॉटिंग पेपर तो क्या अभी कागज भी नहीं हैं। बाबा सभी सेन्टर्स के बच्चों को समझाते हैं। बम्बई, कलकत्ता, देहली...सब जगह बच्चे तो हैं ना। रिपोर्ट आती है बाबा फलाने बहुत तंग करते हैं। पुण्य आत्मा बनाने बदले और ही पाप आत्मा बना देते हैं। बाबा से कोई पूछे तो झट बता देंगे। शिवबाबा तो सब कुछ जानते हैं। उनके पास

सारा हिसाब-किताब है। यह बाबा भी बता सकते हैं। शक्ल से ही सब मालूम पड़ जाता है। यह बाबा की याद में मस्त हैं, इनका चेहरा ही खुशनुम: देवताओं जैसा है। आत्मा खुश होगी तो शरीर भी खुश देखने में आयेगा। शरीर को दु:ख होने से आत्मा को दु:ख फील होता है। एक बात सबको सुनाते रहो कि शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप विनाश होंगे। उन्होंने लिख दिया है कृष्ण भगवानुवाच, कृष्ण को तो ढेर याद करते हैं परन्तु पाप तो मिटते ही नहीं और ही पतित बन गये हैं। यह पता ही नहीं कि याद किसको करना है, परमात्मा का रूप क्या है। अगर सर्वव्यापी कहें तो भी जैसे आत्मा स्टार है वैसे परमात्मा भी स्टार है क्योंकि आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं तो इस हिसाब से भी बिन्दी ठहरी। छोटी सी बिन्दी प्रवेश करती है। सब बिन्दियों को कहते हैं बच्चों मामेकम् याद करो। आरगन्स द्वारा बोलते हैं। आरगन्स बिगर तो आत्मा आवाज कर न सके। तुम कह सकते हो आत्मा परमात्मा का रूप तो एक है ना। परमात्मा को बड़ा लिंग वा कुछ कह न सकें। बाप कहते हैं मैं भी ऐसा बिन्दी हूँ परन्तु मैं पतित-पावन हूँ और तुम सबकी आत्मायें पतित हैं। कितनी सीधी बात है। अब देही-अभिमानी बन मुझ बाप को याद करो, औरों को भी रास्ता बताओ। मैं अक्षर ही दो कहता हूँ – मनमनाभव। फिर थोड़ा डिटेल में बताता हूँ कि यह टाल टालियाँ हैं। पहले सतोप्रधान सतो, रजो, तमो..... में आते हैं। पाप आत्मा बनने से कितने दाग लग जाते हैं। वह दाग मिटें कैसे? वह समझते हैं गंगा स्नान से पाप मिटेंगे। परन्तु वह तो शरीर का स्नान है। आत्मा बाप को याद करने से ही पावन बन सकती है। इसको याद की यात्रा कहा जाता है। कितनी सहज बात है, जो रोजरो ज बाप समझाते रहते हैं। गीता में भी जोर इस पर है – मनमनाभव। वर्सा तो मिलेगा ही सिर्फ मुझे याद करो तो पाप मिटें। बाप अविनाशी ब्लॉटिंग पेपर है ना। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम पावन बन जाते हो फिर रावण पतित बनाते हैं तो ऐसे बाप को याद करना चाहिए ना। ऐसा भी होता है जो याद नहीं करते हैं, उनका क्या हाल होगा। बाप समझाते हैं बच्चों और सब बातें छोड़ दो। सिर्फ एक बात कि देही-अभिमानी बनो, मामेकम् याद करो। बस। यह तो जानते हो आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्मा ही दु:ख सुख भोगती है। कभी भी एक दो के

दिल को नहीं दु:खाना चाहिए। एक दो को सुख पहुँचाना चाहिए। तुम्हारा धन्धा यही है। बहुत हैं जो एक दो को दु:ख देते रहते हैं। एक दो की देह में फँसे रहते हैं। सारा दिन एक दो को याद करते रहते हैं। माया भी तीखी है। बाबा नाम नहीं लेते हैं, इसलिए बाबा कहते हैं बच्चे देही-अभिमानी भव। ज्ञान तो बड़ा सहज है। याद ही मुश्किल है। वह नॉलेज तो फिर भी 15-20 वर्ष पढ़ते हैं। कितनी सबजेक्ट्स होती हैं। यह नॉलेज तो बड़ी सहज है। ड्रामा को जानना एक कहानी है। मुरली चलाना बड़ी बात नहीं। याद की ही बहुत मुश्किलात है। बाबा फिर कह देते हैं – ड्रामा। फिर भी पुरूषार्थ करते रहो। बाप को याद करो तो योग अग्नि से तुम्हारे पाप भस्म होंगे। अच्छे-अच्छे बच्चे इसमें फेल हो जाते हैं।

- बाप साफ समझाते हैं थोड़ा भी पाप करने से बहुत वृद्धि हो जाती है। फिर बाप के आगे सिर भी नहीं उठा सकेंगे। झूठ बोलने से तो तोबां-तोबां करनी चाहिए। ऐसे नहीं समझो कि शिवबाबा हमको देखते थोड़ेही हैं। अरे अज्ञान काल में भी वह सब जानते हैं तब तो पाप और पुण्य का एवजा देते हैं। साफ कहते हैं कि तुम पाप करेंगे तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ी कड़ी सजा है। बाप से वर्सा लेने आये हो, तो उसके बदले दोनों कान तो नहीं कटाना चाहिए ना। कहते एक हैं और याद करते हैं दूसरों को। बाप को याद नहीं करते तो बताओ उनकी गति क्या होगी? सच खाना, सच बोलना, सच पहनना..... यह भी अभी की बात है। जबकि बाप आकर सिखाते हैं तो उनसे हर बात में सच्चा रहना चाहिए।

- तुमको सिर्फ कहते हैं मनमनाभव। बस यहाँ बैठने की दरकार नहीं है, चलते फिरते बाप को और वर्से को याद करो। खुशी में रहो। खान-पान भी शुद्ध रखना है। तुम जानते हो हमारी आत्मा कहाँ तक पवित्र बनी है, जो फिर जाकर प्रिन्स का जन्म लेंगे। आगे चल दुनिया की हालत बिल्कुल खराब होनी है। खाने लिए अनाज नहीं मिलेगा तो घास खाने लगेंगे। फिर ऐसे थोड़ेही

कहेंगे माखन बिगर हम रह नहीं सकते हैं। कुछ भी नहीं मिलेगा। अभी भी कितनी जगह पर मनुष्य घास खाकर गुजर कर रहे हैं। तुम तो बहुत मौज में बाबा के घर में बैठे हो। घर में बाप पहले बच्चों को खिलाते हैं ना। जमाना बहुत खराब है। यहाँ तुम बहुत सुखी बैठे हो। सिर्फ बाप को और वर्से को याद करते रहो। अपना और औरों का भी कल्याण करना है। आगे चल आपेही आयेंगे, तकदीर जागेगी। जगनी तो है ना। बेहद की राजधानी स्थापन होनी है। हर एक कल्प पहले मिसल पुरूषार्थ करते हैं। बच्चों को तो बहुत खुशी में रहना चाहिए। बापदादा का चित्र देखते ही खुशी में रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। वह खुशी का पारा स्थाई रहना चाहिए।

○ बाप समझाते हैं हमारे बच्चे जो शूद्र से बदल ब्राह्मण बनते हैं वह भी पूरा देही-अभिमानी नहीं बनते हैं। घड़ी-घड़ी देह- अभिमान में आ जाते हैं। यह है सबसे पुराना रोग, जिससे यह हाल हुआ है। देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत है। जितना देही-अभिमानी बनेंगे उतना बाप को याद करेंगे। फिर अथाह खुशी रहनी चाहिए। गाया जाता है – परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमेश्वर की वह मिल गया, उससे 21 जन्म का वर्सा मिलता है। बाकी क्या चाहिए। तुम सिर्फ देही- अभिमानी बनो, मामेकम् याद करो। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो। सारी दुनिया देह-अभिमान में है। भारत जो इतना ऊंच था उसका डाउन फाल हुआ है। हिस्ट्री-जॉग्राफी क्या है, यह कोई बता न सके। यह बातें कोई भी शास्त्रों में नहीं हैं। देवतायें आत्म-अभिमानी थे। जानते थे एक देह को छोड़ दूसरी लेनी है। परमात्म-अभिमानी नहीं थे। तुम जितना बाप को याद करेंगे, देही-अभिमानी रहेंगे उतना बहुत मीठा बनेंगे। देह-अभिमान में आने से ही लड़ना, झगड़ना, बन्दरपना आ जाता है, यह बाप समझाते हैं। यह बाबा भी समझ रहे हैं। बच्चे देह-अभिमान में आकर शिवबाबा को भूल जाते हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे देह-अभिमान में रहते हैं। देही-अभिमानी बनते ही नहीं हैं। तुम कोई को भी यह बेहद की हिस्ट्री जॉग्राफी समझा सकते हो। बरोबर सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजधानी थी। ड्रामा का किसको भी पता नहीं है। भारत जो इतना गिरा, डाउन फाल की जड़ है देह-अभिमान। बच्चों में भी देह-अभिमान आ जाता है। यह नहीं समझते

कि हमको डायरेक्शन कौन देते हैं। हमेशा समझो – शिवबाबा कहते हैं। शिवबाबा को याद न करने से ही देह-अभिमान में आ जाते हैं। सारी दुनिया देह-अभिमानी बन गई है तब बाप कहते हैं मामेकम् याद करो, अपने को आत्मा समझो। आत्मा इस देह द्वारा सुनती है, पार्ट बजाती है। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। भल भाषण तो बहुत अच्छा कर लेते हैं परन्तु चलन भी तो अच्छी चाहिए ना। देह-अभिमान होने कारण फेल हो जाते हैं। वह खुशी व नशा नहीं रहता है। फिर बड़े विकर्म भी उनसे होते हैं, जिस कारण बड़े दण्ड के भागी बन पड़ते हैं। देह-अभिमानी बनने से बहुत नुकसान पाते हैं। बहुत सजा खानी पड़ती है। बाप कहते हैं यह गाडली वर्ल्ड गवर्मेन्ट है ना।

○ बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो। नहीं तो पुराने संबंधी याद पड़ते रहते हैं। छोड़ा भी है फिर भी बुद्धि जाती रहती है। नष्टोमोहा हैं नहीं, इसको व्यभिचारी याद कहा जाता है। सद्गति को पा न सकें क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते रहते हैं।

○ बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूँ तो अब पुरानी दुनिया से ममत्व मिटा दो। सिर्फ मामेकम याद करो। यह मेहनत करनी है। सच्चे आशिक को घड़ी-घड़ी माशूक की याद ही आती रहती है। तो अब बाप की याद भी ऐसी पक्की रहनी चाहिए। पारलौकिक बाप कहते हैं - बच्चे, मुझे याद करो और स्वर्ग के वर्से को याद करो। इसमें और कुछ भी आवाज करने, झांझ आदि बजाने की कोई दरकार नहीं। गीत भी कोई अच्छे-अच्छे आते हैं तो बजाये जाते हैं, जिनका अर्थ भी तुमको समझाते हैं। गीत बनाने वाले खुद कुछ भी नहीं जानते। मीरा भक्तिन थी, तुम तो अभी ज्ञानी हो। बच्चों से जब कोई काम ठीक नहीं होता है तो बाबा कहते तुम तो जैसे भक्त हो। तो वह समझ जाते हैं कि बाबा ने हमको ऐसा क्यों कहा? बाप समझाते हैं- बच्चे, अब बाप को याद करो, पैगम्बर बनो, मैसेन्जर बनो, सबको यही पैगाम दो कि बाप और वर्से

को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे। अब वापिस घर जाने का समय है। भगवान एक ही निराकार है, उनको अपनी देह है नहीं। बाप ही अपना परिचय बैठ देते हैं। मनमनाभव का मन्त्र देते हैं। साधू सन्यासी आदि ऐसा कभी नहीं कहेंगे कि अब विनाश होना है, बाप को याद करो। बाप ही ब्राह्मण बच्चों को याद दिलाते हैं। याद से हेल्थ, पढ़ाई से वेल्थ मिलेगी। तुम काल पर जीत पाते हो। वहाँ कभी अकाले मृत्यु नहीं होता। देवताओं ने काल पर विजय पाई हुई है।

- 5 विकारों में फँसने से दु:ख ही दु:ख है। अब बच्चे जानते हैं-हम बाबा के पास आये हैं। वह बाप भी है, शिक्षक भी है परन्तु है निराकार। हम निराकारी आत्माओं को पढ़ाने वाला भी निराकार है। वह है आत्माओं का बाप। यह सदैव बुद्धि में सिमरण होता रहे तो भी खुशी का पारा चढ़े। यह भूलने से ही माया तंग करती है। अभी तुम बाप के पास बैठे हो तो बाप और वर्सा याद आता है। एम ऑबजेक्ट तो बुद्धि में है ना। याद शिवबाबा को करना है। कृष्ण को याद करना तो बहुत सहज है, शिवबाबा को याद करने में ही मेहनत है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।

- अभी तुम बच्चों के दिल अन्दर यह आना चाहिए कि हम बाप से दादा द्वारा वर्सा पा रहे हैं। बाप कहते हैं-मामेकम याद करो, ऐसे नहीं कहते कि जिसमें प्रवेश किया है उनको भी याद करो। नहीं, कहते हैं मामेकम् याद करो। वो सन्यासी लोग अपना फोटो नाम सहित देते हैं। शिवबाबा का फोटो क्या निकालेंगे? बिन्दी के ऊपर नाम कैसे लिखेंगे! बिन्दी पर शिवबाबा नाम लिखेंगे तो बिन्दी से भी नाम बड़ा हो जायेगा।

○ सदा उल्लास रहे कि ज्ञान सागर बाप हमें रोज ज्ञान रत्नों, जवाहरातों की थालियां भरकर देते हैं। बाकी वह तो पानी का सागर है। बाप तुम बच्चों को ज्ञान रत्न देते हैं, जो तुम बुद्धि में भरते हो। जितना योग में रहेंगे उतना बुद्धि कंचन होती जायेगी। यह अविनाशी ज्ञान रत्न ही तुम साथ ले जाते हो। बाप की याद और यह नॉलेज है मुख्य।

○ भक्त जिसकी महिमा करते हैं, तुम उनके सम्मुख बैठे हो, तो कितनी खुशी होनी चाहिए। उनको कहते हैं शिवाए नमः। तुमको तो नमः नहीं करना है। बाप को बच्चे याद करते हैं, नमः कभी नहीं करते। यह भी बाप है, इनसे तुमको वर्सा मिलता है। तुम नमः नहीं करते हो, याद करते हो। जीव की आत्मा याद करती है। बाप ने इस तन का लोन लिया है। वह हमको रास्ता बता रहे हैं- बाप से बेहद का वर्सा कैसे लिया जाता है। तुम भी अच्छी रीति जानते हो। सतयुग है सुखधाम और जहाँ आत्मायें रहती हैं उसको कहा जाता है शान्तिधाम।

○ बाप को और पढ़ाई को छोड़ना-यह तो बड़े ते बड़ा आपघात है। बाप का बनकर और फिर फारकती देना-इस जैसा महान पाप कोई होता नहीं। उन जैसा कमबख्त कोई होता नहीं। बच्चों को श्रीमत पर चलना चाहिए ना। तुमको बुद्धि में है हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं, कम बात थोड़ेही है। याद करेंगे तो खुशी भी रहेगी। याद न रहने से पाप भस्म नहीं होंगे। एडाप्ट हुए तो खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। परन्तु माया बहुत विघ्न डालती है। कच्चों को गिरा देती है। जो बाप की श्रीमत ही नहीं लेते तो वह क्या पद पायेंगे। थोड़ी मत ली तो फिर ऐसा ही हल्का पद पायेंगे। अच्छी रीति मत लेंगे तो ऊंच पद पायेंगे।

○ तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हो फिर कभी कुदृष्टि जायेगी नहीं। सतयुग में कुदृष्टि होती नहीं। कुदृष्टि रावण राज्य में होती है। तुम बच्चों को सिवाए एक बाप के और कोई की याद नहीं रहनी

चाहिए। सबसे जास्ती एक बाप से लव हो जाए। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। बाप कहते हैं-बच्चे, अभी तुमको शिवालय में चलना है।

○ बाप की याद में शान्ति में रहो। परन्तु बाबा जानते हैं सम्मुख रहने वालों से भी दूर रहने वाले बहुत याद में रहते हैं और अच्छा पद पा लेते हैं। भक्ति मार्ग में भी ऐसा होता है। कोई भक्त अच्छे फर्स्टक्लास होते हैं जो गुरू से भी जास्ती याद में रहते हैं। जो बहुत अच्छी भक्ति करते होंगे वही यहाँ आते हैं। सभी भक्त हैं ना। सन्यासी आदि नहीं आयेंगे, सभी भक्त भक्ति करते- करते आ जायेंगे। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। तुम ज्ञान उठा रहे हो, सिद्ध होता है तुमने बहुत भक्ति की है। जास्ती भक्ति करने वाले जास्ती पढ़ेंगे। कम भक्ति करने वाले कम पढ़ेंगे। मुख्य मेहनत है याद की। याद से ही विकर्म विनाश होंगे और बहुत मीठा भी बनना है।

○ तुम उस बाप को याद करो तो सुखधाम चले जायेंगे। यह है हेल, इनको हेविन नहीं कहेंगे। हेविन में है ही एक धर्म। भारत स्वर्ग था, दूसरा कोई धर्म नहीं था। यह सिर्फ याद करें, यह भी मनमनाभव है। हम स्वर्ग में सारे विश्व के मालिक थे-इतना भी याद नहीं पड़ता है! बुद्धि में है हमको बाप मिला है तो वह खुशी रहनी चाहिए। परन्तु माया भी कम नहीं है। ऐसे बाप का बनकर फिर भी इतनी खुशी में नहीं रहते हैं। घुटके खाते रहते हैं। माया घड़ी-घड़ी बहुत घुटके खिलाती है। शिवबाबा की याद भुला देती है। खुद भी कहते हैं याद ठहरती नहीं है। बाप घुटका खिलाते हैं ज्ञान सागर में, माया फिर घुटका खिलाती है विषय सागर में। बड़ा खुशी से घुटका खाने लग पड़ते हैं। बाप कहते हैं शिवबाबा को याद करो। माया फिर भुला देती है। बाप को याद ही नहीं करते। बाप को जानते ही नहीं। दु:ख हर्ता सुख कर्ता तो परमपिता परमात्मा है ना। वह है ही दु:ख हरने वाला।

○ बाप ने तुम बच्चों को बहुत सहज पुरूषार्थ सिखाया है। सबसे सहज पुरूषार्थ है - तुम बिल्कुल चुप रहो। चुप रहने से ही बाप का वर्सा ले लेंगे। बाप को याद करना है। सृष्टि चक्र को याद करना है। बाप की याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम निरोगी बनेंगे। आयु बड़ी होगी। चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बनेंगे। अभी हो नर्क के मालिक फिर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। स्वर्ग के मालिक तो सब बनते हैं फिर उसमें है पद। जितना आपसमान बनायेंगे उतना ऊंच पद मिलेगा। अविनाशी मिलेगा।

○ खुद भल याद न भी करे, दूसरों को याद दिलावें। वह भी अच्छा है। दूसरे को कहेंगे देही-अभिमानी बनो और खुद देह- अभिमानी होंगे तो कुछ न कुछ विकर्म होता रहेगा। पहले-पहले तूफान आते हैं मन्सा में, फिर कर्मणा में आते हैं। मन्सा में बहुत आयेंगे, उस पर फिर बुद्धि से काम लेना है, बुरा काम कभी करना नहीं है। अच्छा कर्म करना है। संकल्प अच्छे भी होते हैं, बुरे भी आते हैं। बुरे को रोकना चाहिए। यह बुद्धि बाप ने दी है। दूसरा कोई समझ न सके। वह तो रांग काम ही करते रहते हैं। तुमको अभी राइट काम ही करना है। अच्छे पुरूषार्थ से राइट काम होता है। बाप तो हर बात बहुत अच्छी रीति समझाते रहते हैं।

○ सारे विश्व पर राज्य करने लायक, इतना समझदार बनाते हैं। यह स्टूडेन्ट लाइफ भी एक ही बार होती है, जबकि भगवान आकर पढ़ाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में यह है, बाकी जो अपने धन्धे धोरी आदि में फँसे हुए बहुत रहते हैं, उनको कभी यह बुद्धि में आ न सके कि भगवान पढ़ाते हैं। उन्हें तो अपना धन्धा आदि ही याद रहता है। तो तुम बच्चे जबकि जानते हो भगवान हमको पढ़ाते हैं तो कितना हार्षित रहना चाहिए और तो सब हैं पाई- पैसे वालों के बच्चे, तुम तो भगवान के बच्चे बने हो, तो तुम बच्चों को अथाह खुशी रहनी चाहिए। कोई तो बहुत हार्षित रहते हैं। कोई कहते हैं बाबा हमारी मुरली नहीं चलती, यह होता......। अरे, मुरली कोई मुश्किल थोड़ेही है।

जैसे भक्ति मार्ग में साधू-सन्त आदि से कोई पूछते हैं-हम ईश्वर से कैसे मिलें? परन्तु वह जानते नहीं। सिर्फ अंगुली से इशारा करेंगे कि भगवान को याद करो। बस, खुश हो जाते हैं। वह कौन है-दुनिया में कोई भी नहीं जानते। अपने बाप को कोई भी नहीं जानते। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है, फिर भी भूल जायेंगे। ऐसे नहीं कि तुम्हारे में सभी बाप और रचना को जानते हैं।

○ नम्बरवार मर्तबे होते हैं ना। सारा मदार याद पर है, जिस बाप से विश्व का राज्य मिलता है, उनको याद नहीं कर सकते। तकदीर में ही नहीं है तो फिर तदबीर भी क्या करेंगे। बाप तो कहते हैं याद की यात्रा से ही पाप भस्म होंगे, तो पुरूषार्थ करना चाहिए ना। बाबा कोई ऐसे भी नहीं कहते कि खाना पीना नहीं खाओ। यह कोई हठयोग नहीं है। चलते-फिरते सब काम करते, जैसे आशिक माशूक को याद करते हैं, ऐसे याद में रहो।

○ धंधा आदि करते स्टडी तो याद आनी चाहिए ना। कैसे हम विश्व के मालिक थे फिर हम नीचे उतरते आये, बहुत सहज है परन्तु यह याद भी कोई को रहती नहीं है। आत्मा पवित्र न होने कारण याद खिसक जाती है। हमको भगवान पढ़ाते हैं यह याद खिसक जाती है। हम बाबा के स्टूडेन्ट हैं। बाबा कहते रहते हैं-याद की यात्रा पर रहो। बाप हमको पढ़ाकर यह बना रहे हैं। सारा दिन यह स्मृति आती रहे। बाप ही स्मृति दिलाते हैं, यही भारत था ना। हम सो देवी-देवता थे, सो अब असुर बने हैं। पहले तुम्हारी भी बुद्धि आसुरी थी। अब बाप ने ईश्वरीय बुद्धि दी है। परन्तु फिर भी कोई-कोई की बुद्धि में बैठता नहीं है। भूल जाते हैं। बाप कितना नशा चढ़ाते हैं। तुम फिर से देवता बनते हो तो वह नशा रहना चाहिए ना।

○ बहुतों का योग बिल्कुल है नहीं। देह-अभिमान के कारण फिर मिस्टेक्स भी बहुत होती हैं। मूल बात है ही देही- अभिमानी बनना। यह फुरना रहना चाहिए हमको सतोप्रधान बनना है। जिन बच्चों को सतोप्रधान बनने की तात (लगन) है, उनके मुख से कभी पत्थर नहीं निकलेंगे। कोई भूल हुई तो झट बाप को रिपोर्ट करेंगे।

○ स्कूल में स्टूडेन्ट की बुद्धि में रहता है ना - हम स्टूडेन्ट हैं। वह तो है कॉमन टीचर, पढ़ाने वाला। यहाँ तो तुमको भगवान पढ़ाते हैं। जब पढ़ाई से इतना ऊंच पद मिलता है तो कितना अच्छा पढ़ना चाहिए। है बहुत इजी सिर्फ सवेरे आधा-पौना घण्टा पढ़ना है। सारा दिन धन्धे आदि में याद भूल जाती है इसलिए यहाँ सवेरे आकर याद में बैठते हैं। कहा जाता है बाबा को बहुत प्रेम से याद करो-बाबा, आप हमको पढ़ाने आये हैं, अभी हमको पता पड़ा है कि आप 5 हजार वर्ष बाद आकर पढ़ाते हैं। बाबा के पास बच्चे आते हैं तो बाबा पूछते हैं आगे कब मिले हो?

○ बाप कहते हैं दिन-रात जितना हो सके याद में रहो। वह भक्ति मार्ग की यात्रा टांगों की होती है। बहुत धक्के खाने पड़ते हैं। यहाँ तुम बैठे हुए भी याद की यात्रा पर हो। यह भी बाप ने समझाया है-दैवीगुण धारण करने हैं। शैतानी अवगुणों को खत्म करते जाओ। कोई भी शैतानी काम नहीं करो, इससे विकर्म बन जाता है।

○ यह पुरानी दु:ख की दुनिया है, सो भी तुम जानते हो। मनुष्यों को पता ही नहीं। कलियुग की आयु हजारों वर्ष कह देते हैं तो बिचारे अंधकार में हैं ना। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो जानते हैं बरोबर हमारा बाबा हमको राजयोग सिखला रहे हैं। जैसे बैरिस्टरी योग, इन्जीनियरी योग होता है ना। पढ़ने वाले को टीचर की ही याद रहती है। बैरिस्टरी के ज्ञान से मनुष्य बैरिस्टर बन जायेगा। यह है राजयोग। हमारी बुद्धि का योग है परमपिता परमात्मा के साथ। इसमें तो खुशी का एकदम

पारा चढ़ जाना चाहिए। बहुत मीठा बनना है। स्वभाव बड़ा फर्स्टक्लास होना चाहिए। कोई को भी दु:ख न मिले।

- तुम्हारी सर्विस वृद्धि को तब पायेगी जब कुमारियाँ मैदान में आयेंगी। बाप कहते हैं आपस में एक तो लूनपानी मत बनो। जबकि जानते हो हम ऐसी दुनिया में जाते हैं जहाँ शेर-बकरी इकट्ठे जल पीते हैं, वहाँ तो हर एक चीज देखने से ही दिल खुश हो जाती है। नाम ही है स्वर्ग। तो कुमारियाँ लौकिक माँ-बाप को बोलें-अभी हम वहाँ जाने की तैयारी कर रहे हैं, पवित्र तो जरूर बनना है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। अब मैं योगिन बनी हूँ इसलिए पतित नहीं बन सकती। बात करने की खड़ाई चाहिए। ऐसी कुमारियाँ जब निकलेंगी फिर देखना कितना जल्दी सर्विस होती है। परन्तु चाहिए नष्टोमोहा। एक बार मर गई तो फिर याद क्यों आनी चाहिए। परन्तु बहुतों को घर की, बच्चों आदि की याद आती रहती है। फिर बाप के साथ योग कैसे लगेगा। इसमें तो यही बुद्धि में रहे कि हम बाबा के हैं। यह पुरानी दुनिया खत्म हुई पड़ी है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। अच्छा।

- अभी यह हैं बेहद की बातें। हद की बातें सब निकल जाती। दुनिया में तो अनेकों को याद किया जाता है, अनेक देहधारियों साथ प्रीत है। विदेही एक ही है, जिसको परमपिता परमात्मा शिव कहा जाता है। तुम्हें अब उनके साथ ही बुद्धि का योग जोड़ना है। कोई देहधारी को याद नहीं करना है। ब्राह्मण आदि खिलाना, यह सब हुई कलियुग की रसम-रिवाज। वहाँ की रसम-रिवाज और यहाँ की रसम-रिवाज बिल्कुल अलग है। यहाँ कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। जब तक वह अवस्था आये तब तक पुरूषार्थ चलता रहता है। बाप कहते हैं जितना हो सके पुरानी दुनिया के जो होकर गये हैं या जो हैं उन सबको भूल जाना है। सारा दिन बुद्धि में यही चले, किसको क्या समझाना है।

○ अभी तुम्हारी है ईश्वरीय रेस, इसमें कोई दौड़ी आदि नहीं लगानी है सिर्फ बुद्धि से प्यारे बाबा को याद करना है। कुछ भी भूल हो तो झट सुनाना चाहिए। बाबा हमसे यह भूल हुई। कर्मेन्द्रियों से यह भूल की। बाप कहते हैं रांग राइट तो सोचने की बुद्धि मिली है तो अब रांग काम नहीं करना है। रांग काम कर दिया - तो बाबा तोबां-तोबां, क्षमा करना क्योंकि बाप अभी यहाँ बैठे हैं सुनने के लिए। जो भी बुरा काम हो जाए तो फौरन बताओ वा लिखो - बाबा यह बुरा काम हुआ तो तुम्हारा आधा माफ हो जायेगा। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा। क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने को सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। पास्ट का भी योगबल से कटता जायेगा। बाप का बनकर फिर बाप की निंदा नहीं कराओ। सतगुरू के निंदक ठौर न पायें। ठौर तुमको मिलती है - बहुत ऊंची। दूसरे गुरूओं के पास कोई राजाई की ठौर थोड़ेही है।

○ रोज पोतामेल निकालो। आज क्या पाप किया? इस बात में फेल हुआ। बाप राय देंगे तो ऐसा काम नहीं करना चाहिए। तुम जानते हो हम तो अब स्वर्ग में जाते हैं। बच्चों को खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। बाबा को कितनी खुशी है। मैं बूढ़ा हूँ, यह शरीर छोड़कर हम प्रिन्स बनने वाला हूँ। तुम भी पढ़ते हो तो खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। परन्तु बाप को याद ही नहीं करते हैं। बाप कितना सहज समझाते हैं, वह अंग्रेजी आदि पढ़ने में माथा कितना खराब होता है। बहुत डिफीकल्टी होती है। यह तो बहुत सहज है। इस रूहानी पढ़ाई से तुम शीतल बन जाते हो। इसमें तो सिर्फ बाप को याद करते रहो तो एकदम शीतल अंग हो जायेंगे। शरीर तो तुमको है ना। शिवबाबा को तो शरीर नहीं है। अंग हैं श्रीकृष्ण को। उनके अंग तो शीतल हैं ही इसलिए उनका नाम रख दिया है। अब उनका संग कैसे हो। वह तो होता ही है सतयुग में। उसके भी ऐसे शीतल अंग किसने बनाये? यह तुम अभी समझते हो। तो अब तुम बच्चों को भी इतनी धारणा करनी चाहिए। लड़ना झगड़ना बिल्कुल नहीं है। सच बोलना है। झूठ बोलने से सत्यानाश हो जाती है।

- ऐसे बहुत हैं जो याद में बिल्कुल नहीं रहते, सुनते कुछ नहीं। बुद्धि में चोरी आदि के ही ख्यालात चलते रहते हैं। ऐसे बहुत सतसंग में जाते हैं। चप्पल चोरी कर लेते, उनका धन्धा ही यह रहता है। जहाँ सतसंग होता वहाँ जाकर चप्पल चोरी कर आयेंगे। दुनिया बिल्कुल ही डर्टी है। यह है ईश्वर का घर। चोरी की आदत तो बहुत खराब है। कहा जाता है-कख का चोर सो लख का चोर। अपने अन्दर से पूछना चाहिए-हम कितना पुण्य आत्मा बने हैं? कितना बाप को याद करते हैं? कितना हम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं? कितना समय ईश्वरीय सर्विस में रहते हैं? कितने पाप कटते जा रहे हैं? अपना पोतामेल रोज देखो। कितना पुण्य किया, कितना योग में रहा? कितने को रास्ता बताया? धंधा आदि तो भल करो। तुम कर्मयोगी हो। कर्म तो भल करो।

- बाप मुख्य बात समझाते हैं कि ऐसे अपने अन्दर जांच करो, मैं कितना बाप को याद करता हूँ। बाबा, आप तो बड़े मीठे हो, कमाल है आपकी। आपका फरमान है मुझे याद करो तो जन्म के लिए कभी रोगी नहीं बनेंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो मैं गैरन्टी करता हूँ, सम्मुख बाप तुमको कहते हैं तुम फिर औरों को सुनाते हो। बाप कहते हैं मुझ बाप को याद करो, बहुत प्यार करो। तुमको कितना सहज रास्ता बताता हूँ-पतित से पावन होने का। कोई कहते हैं हम तो बहुत पाप आत्मा हैं। अच्छा फिर ऐसे पाप नहीं करो, मुझे याद करते रहो तो जन्म-जन्मान्तर के जो पाप हैं, वह इस याद से भस्म होते जायेंगे। याद की ही मुख्य बात है। इनको कहा जाता है सहज याद , योग अक्षर भी निकाल दो। सन्यासियों के हठयोग तो किस्म-किस्म के हैं। अनेक प्रकार से सिखलाते हैं। इस बाबा ने गुरू तो बहुत किये हैं ना। अभी बेहद का बाप कहते हैं-इन सबको छोड़ो। इन सबका भी मुझे उद्धार करना है। और कोई की ताकत नहीं जो ऐसे कह सके। बाप ने ही कहा है-मैं इन साधुओं का भी उद्धार करता हूँ। फिर यह गुरू

कैसे बन सकते। तो मूल एक बात बाप समझाते हैं-अपनी दिल से पूछो, हम कोई पाप तो नहीं करते हैं। किसको दु:ख तो नहीं देते हैं? इसमें कोई तकलीफ नहीं है। अन्दर जांच करनी चाहिए, सारे दिन में कितना पाप किया? कितना याद किया? याद से ही पाप भस्म होंगे। कोशिश करनी चाहिए। यह बहुत मेहनत का काम है। ज्ञान देने वाला एक ही बाप है। बाप ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बतलाते हैं। अच्छा।

- 84 जन्म लेते-लेते फिर तुम भ्रष्ट बन जाते हो। बाप कहते मैं तो जन्म-मरण में नहीं आता हूँ। मैं अभी भाग्यशाली रथ में ही प्रवेश करता हूँ, जिसको तुम बच्चों ने पहचाना है। तुम्हारा अभी छोटा झाड़ है। झाड़ को तूफान भी लगते हैं ना। पत्ते झड़ते रहते हैं। ढेर फूल निकलते हैं फिर तूफान लगने से गिर पड़ते हैं। कोई-कोई अच्छी रीति फल लग जाते हैं फिर भी माया के तूफान से गिर पड़ते हैं। माया का तूफान बहुत तेज है। उस तरफ है बाहुबल, इस तरफ योगबल अथवा याद का बल। तुम याद अक्षर पक्का कर लो। वो लोग योग-योग अक्षर कहते रहते हैं। तुम्हारी है याद । चलते-फिरते बाप को याद करते हो, इसको योग नहीं कहेंगे। योग अक्षर सन्यासियों का नामीग्रामी है। अनेक प्रकार के योग सिखाते हैं। बाप कितना सहज बतलाते हैं-उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप को याद करो। तुम आधाकल्प के आशिक हो। मुझे याद करते आये हो। अब मैं आया हूँ। आत्मा को कोई भी नहीं जानते इसलिए बाप आकर रियलाइज कराते हैं। यह भी समझने की बड़ी महीन बातें हैं। आत्मा अति सूक्ष्म और अविनाशी है। न आत्मा विनाश होने वाली है, न उनका पार्ट विनाश हो सकता है। यह बातें मोटी बुद्धि वाले मुश्किल समझ सकते हैं। शास्त्रों में भी यह बातें नहीं हैं।

- तुम समझते हो-हम पाप आत्मा थे, अब फिर पुण्य आत्मा बन रहे हैं। बाबा तुमको युक्ति से पुण्य आत्मा बना रहे हैं। बाप बतावे तब तो बच्चों को अनुभव हो और समझें कि हम बाप द्वारा

बाप की याद से पवित्र पुण्य आत्मा बन रहे हैं। योगबल से हमारे पाप भस्म हो रहे हैं। बाकी गंगा आदि में कोई पाप धोये नहीं जाते। मनुष्य गंगा स्नान करते हैं, शरीर को मिट्टी मलते हैं परन्तु उससे कोई पाप धुलते नहीं हैं। आत्मा के पाप योगबल से ही निकलते हैं। खाद निकलती है, यह तो बच्चों को ही मालूम है और निश्चय है हम बाबा को याद करेंगे तो हमारे पाप भस्म होंगे। निश्चय है तो फिर पुरूषार्थ करना चाहिए ना। इस पुरूषार्थ में ही माया विघ्न डालती है। रूसतम से माया भी अच्छी रीति रूसतम होकर लड़ती है। कच्चे से क्या लड़ेगी! बच्चों को हमेशा यह ख्याल रखना है, हमको मायाजीत जगतजीत बनना है। माया जीते जगत जीत का अर्थ भी कोई समझते नहीं। अभी तुम बच्चों को समझाया जाता है-तुम कैसे माया पर जीत पा सकते हो। माया भी समर्थ है ना। तुम बच्चों को उस्ताद मिला हुआ है। उस उस्ताद को भी नम्बरवार कोई विरला जानता है। जो जानता है उनको खुशी भी रहती है। पुरूषार्थ भी खुद करते हैं। सर्विस भी खूब करते हैं।

○ तुम्हें गृहस्थ व्यवहार में रहते यही ओना लगा रहे कि हमको पावन बनना है। बाप समझाते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते भी इस पुरानी दुनिया से ममत्व मिटा दो। बच्चों आदि को भल सम्भालो। परन्तु बुद्धि बाप के तरफ हो। कहते हैं ना - हाथों से काम करते बुद्धि बाप तरफ रहे। बच्चों को खिलाओ, पिलाओ, स्नान कराओ, बुद्धि में बाप की याद हो क्योंकि जानते हो शरीर पर पापों का बोझ बहुत है इसलिए बुद्धि बाप की तरफ लगी रहे। उस माशूक को बहुत-बहुत याद करना है। माशूक बाप तुम सब आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो, यह पार्ट भी अब चल रहा है फिर 5 ह०जार वर्ष बाद चलेगा। बाप कितनी सहज युक्ति बताते हैं। कोई तकलीफ नहीं। कोई कहे हम तो यह कर नहीं सकते, हमको बहुत तकलीफ भासती है, याद की यात्रा बहुत मुश्किल है। अरे, तुम बाबा को याद नहीं कर सकते हो! बाप को थोड़ेही भूलना चाहिए। बाप को तो अच्छी रीति याद करना है तब विकर्म विनाश होंगे और तुम एवर हेल्दी बनेंगे। नहीं तो बनेंगे नहीं। तुमको राय बहुत अच्छी एक टिक मिलती है। एक टिक दवाई होती

है ना। हम गैरन्टी करते हैं इस योगबल से तुम 21 जन्मों के लिए कभी रोगी नहीं बनेंगे। सिर्फ बाप को याद करो-कितनी सहज युक्ति है। भक्तिमार्ग में याद करते थे अनजाने से। अब बाप बैठ समझाते हैं, तुम समझते हो हम कल्प पहले भी बाबा आपके पास आये थे, पुरूषार्थ करते थे। पक्का निश्चय हो गया है। हम ही राज्य करते थे फिर हमने गँवाया अब फिर बाबा आया हुआ है, उनसे राज्य-भाग्य लेना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो और राजाई को याद करो। मन्मनाभव। अन्त मती सो गति हो जायेगी। अभी नाटक पूरा होता है, वापिस जायेंगे। बाबा आये हैं सबको ले जाने लिए। जैसे वर, वधू को लेने लिए आते हैं। ब्राइड्स को बहुत खुशी होती है, हम अपने ससुराल जाते हैं। तुम सब सीतायें हो एक राम की। राम ही तुमको रावण की जेल से छुड़ाकर ले जाते हैं। लिबरेटर एक ही है, रावणराज्य से लिबरेट करते हैं।

○ कई बच्चे कहते हैं हमें याद नहीं रहती। क्यों नहीं रहती? क्योंकि सवेरे-सवेरे उठकर याद में बैठकर धारणा नहीं करते। समझते भी हैं फिर किसको समझा नहीं सकते। यह तो जरूर होगा। सब एकरस तो समझदार बन न सकें। समझदार भी चाहिए, बेसमझ भी चाहिए। बहुत समझदार तो जाकर राजा-रानी बनेंगे। जितना जितना जो जास्ती समझते और समझाते हैं उनका नाम बाला होता है।

○ पहली-पहली मुख्य बात है बाप को याद करना। बाप ही कहते हैं मनमनाभव, मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। अब करो न करो तुम्हारी मर्जी। बाप का फरमान तो मिला हुआ है। पावन दुनिया में चलना है तो फिर पतित दुनिया में बुद्धि का योग नहीं जाना चाहिए। विकार में नहीं जाना है। समझानी तो बहुत मिलती रहती है। अच्छा।

○ परन्तु मनुष्य देह-अभिमानी होने के कारण समझते हैं, फलाना पढ़ाता है। वास्तव में करती सब कुछ आत्मा है। आत्मा ही पार्ट बजाती है। देही-अभिमानी बनना है। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझना है। जब तक अपने को आत्मा नहीं समझेंगे तो बाप को भी याद नहीं कर सकेंगे। भूल जाते हैं। तुमसे पूछा जाता है– तुम किसके बच्चे हो? तो कहते हो हम शिवबाबा के बच्चे हैं। विजीटर बुक में भी लिखा हुआ है– तुम्हारा बाप कौन है? तो झट देह के बाप का नाम बतायेंगे। अच्छा– अब देही के बाप का नाम बताओ। तो कोई कृष्ण का, कोई हनूमान का नाम लिखेंगे या तो लिखेंगे– हम नहीं जानते। अरे, तुम लौकिक बाप को जानते हो और पारलौकिक बाप जिनको तुम हमेशा दुःख में याद करते हो, उनको नहीं जानते हो! कहते भी हैं, हे भगवान रहम करो। हे भगवान एक बच्चा दो। माँगते हो ना। अब बाप बिल्कुल सहज बात बताते हैं। तुम देह-अभिमान में बहुत रहते हो इसलिए बाप के वर्से का नशा नहीं चढ़ता है। तुमको तो बहुत नशा चढ़ना चाहिए। भक्ति करते ही हैं– भगवान से मिलने के लिए। यज्ञ, तप, दान-पुण्य आदि करना यह सब भक्ति है। सब एक भगवान को याद करते हैं। बाप कहते हैं- मैं तुम्हारा पतियों का पति हूँ, बापों का बाप हूँ। सब बाप भगवान को याद जरूर करते हैं। आत्मायें ही याद करती हैं। भल कहते भी हैं, भ्रकुटी के बीच में चमकता है अजब सितारा... परन्तु यह बिगर समझ के ऐसे ही कह देते हैं। रहस्य का कुछ भी पता नहीं। तुम आत्मा को ही नहीं जानते हो तो आत्मा के बाप को कैसे जान सकेंगे। दीदार तो होता है भक्ति मार्ग वाला। भक्ति मार्ग में पूजा के लिए बड़ा-बड़ा लिंग रख देते हैं क्योंकि अगर बिन्दी का रूप दिखायें तो कोई समझ न सके। यह है महीन बात। परमात्मा जिसको अखण्ड ज्योति स्वरूप कहते हैं, मनुष्य कहते हैं उनका कोई बहुत बड़ा रूप है। ब्रह्म समाजी मठ वाले ज्योति को परमात्मा कहते हैं। दुनिया में यह किसको पता नहीं है कि परमपिता परमात्मा बिन्दी है, तो मूँझ पड़े हैं।

○ अभी तुमको देही-अभिमानी बनना है। देही- अभिमानी बनने में ही मेहनत है। तुमको बाबा से वर्सा लेना है तो बाप को याद करना है। कम कार डे, दिल यार डे...। तुम आशिक हो, एक माशूक के। सबका सद्गति दाता एक माशूक है। वह आते ही तब हैं, जब सबको सद्गति मिलती है, स्वर्ग की स्थापना होती है, दु:ख का नाम निशान गुम हो जाता है।

○ तुम जानते हो हमारे राज्य में क्या-क्या होगा। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए कि हम इस पढ़ाई से राज्य लेते हैं। पढ़ने वाले को मर्तबा याद रहता है। हम पढ़ते हैं भविष्य के लिए। अच्छा पढ़ेंगे तो राजगद्दी पर बैठेंगे।

○ बाप कहते हैं-याद नहीं करेंगे तो अन्दर जो कट चढ़ी है, वह कैसे निकलेगी। मुख्य बात है ही याद की। अपना कोई दूसरे धर्म से तैलुक नहीं है। स्कूल में तो हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हो। कोई तो बिल्कुल समझते नहीं। बाप पढ़ाते हैं, यह बुद्धि में बैठता नहीं है। अच्छा बाप और वर्सा तो याद करो कि यह भी भूल जाते हो! जिसके लिए आधाकल्प से भक्ति करते आये, उस बाबा को याद नहीं करते। तुम बच्चों की बुद्धि में है, अब हम यह शरीर छोड़ राजाई में जायेंगे, यह अन्तिम जन्म है। सूक्ष्मवतन में उनके फीचर्स तो वही देखते हो, वैकुण्ठ में भी देखते हो।

○ बाबा कहते-अगर छुट्टी नहीं मिलती हैं तो घर बैठे याद करो। यह तो जानते हो हम शिवबाबा की सन्तान हैं। मुरली तो मिल जाती है। ऐसे नहीं कि यहाँ आने से याद की यात्रा अच्छी होगी, घर में बैठने से याद की यात्रा कम हो जायेगी। बादल आते हैं रिफ्रेश होने। तुम भी आते हो, रिफ्रेश होने। बाबा पास सम्मुख जायें। आत्मा को ज्ञान है, सम्मुख सुनने से अच्छा लगता है। बात तो वही है, देखते हो-शिवबाबा, कैसे बैठ बच्चों को समझाते हैं। “बच्चे तुम मेरे हो”,

तुमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया है। तुम जन्म-मरण में आते हो, मैं नहीं आता हूँ, मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ। अजन्मा भी नहीं हूँ। आता हूँ परन्तु बूढ़े तन में प्रवेश करता हूँ। हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाबा आया हुआ है, एक दो को यह युक्ति– बाप को याद करने की बताते रहो। भोजन पर भी एक दो को ईशारा देते रहो कि बाप को याद करो। बहुत बड़ा संगठन है ना। वहाँ तो विकारी साथ में रहते हैं, तो उनकी कशिश होती है। यहाँ तो किसकी कशिश नहीं होती। वारियर्स, वारियर्स के साथ रहते हैं। तुम्हारा कुटुम्ब यह है। बुद्धि में यही रहता है, जो कोई मिले उनको बाप का परिचय दें कि भगवान को याद करते रहो। दो बाप हैं ना। लौकिक बाप होते भी भगवान को याद करते हो ना। वो लौकिक फादर है। लौकिक फादर को गॉड-फादर नहीं कहेंगे। यह है पारलौकिक बाप, जरूर गॉड-फादर से वर्सा मिलता होगा। ऐसे-ऐसे भूँ-भूँ करते रहो। अभी बाप कहते हैं-मैं फलाना हूँ, यह हूँ, यह सब देह-अभिमान की बातें छोड़ दो। अपने को अशरीरी आत्मा समझो और बाप को याद करो। इस शरीर को देखते हुए भी नहीं देखो। देह सहित देह के जो सम्बन्ध आदि हैं, सबको छोड़ो। अपने को आत्मा निश्चय करो, परमात्मा को याद करो। इसमें टाइम बहुत लगता है। माया याद करने नहीं देती है। नहीं तो वानप्रस्थी के लिए बहुत सहज है। बाप खुद कहते हैं अभी तुम छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। एक तरफ विनाश भी होता रहेगा दूसरे तरफ जन्म भी लेते रहेंगे। पुनर्जन्म लेना होगा तो आ जायेंगे। बच्चे भी पैदा होंगे। फिर विनाश भी हो जायेगा। यह तो तुम जानते हो– कोई गर्भ में होंगे, कोई कहाँ, सब खत्म हो जायेंगे। सब अपना हिसाब चुक्तू कर वापिस जायेंगे। हिसाब-किताब रहा हुआ होगा तो अच्छी रीति सजायें खानी पड़ेंगी। फिर वह भी हल्का हो जायेगा। ऐसे नहीं कि योग में भी रहो और पाप भी करते रहो। कई बच्चे एक तरफ चार्ट भी लिखते रहते और फिर कहते माया ने मुँह काला कर दिया। माया ने हरा दिया तो कच्चा कहेंगे ना। तो बाप समझाते हैं कि तुम ऐसे समझो कि हम थोड़े दिन यहाँ हैं फिर चले जायेंगे। इन सबका विनाश हो रहा है। बाप कहते हैं-मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, अपना चार्ट देखते रहो– हम कितनों को रास्ता बताते हैं और पुरूषार्थ कराते हैं। तन-मन-धन से रूहानी सेवा में मददगार बनना पड़े। कहते हैं

मन को अमन नहीं कर सकते। आत्मा तो है ही शान्त। हम आत्मा अपने परमधाम में जाकर बैठेंगी। कोई दुनिया का संकल्प नहीं आयेगा। ऐसे नहीं कि ऑखे बन्द कर अनकानसेस होना है। ऐसे बहुत सीखते भी हैं। 10-15 दिन अनकानसेस भी हो जाते हैं। यह अभ्यास करते हैं फिर इतने समय बाद जाग जायेंगे। जैसे टाइम बाम्बस होते हैं तो उनका भी टाइम होता है, यह इतने घण्टे बाद फटेंगे।

○ तुम बच्चों को पता है- हम योग लगा रहे हैं। जब तमोप्रधान किचड़ा निकलेगा हम सतोप्रधान बन जायेंगे तो फिर इस शरीर को छोड़ देंगे। हम अभी योग की यात्रा पर हैं। टाइम मिला हुआ है फिर यह शरीर छोड़ना ही है फिर सब खत्म हो जायेगा। टाइम नूँधा हुआ है फिर पिछाड़ी में मच्छरों सदृश्य शरीर छोड़ेंगे। विनाश होगा, तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे फिर विनाश शुरू हो जायेगा। विनाश का बड़ा भारी सीन है। यह ड्रामा में भारी नूँध है। तुम जानते हो-हमारी अवस्था एकरस रहेगी। खुशी में सदैव हार्षित रहेंगे। यह दुनिया तो खलास होनी ही है। जानते हैं, कल्प-कल्प संगमयुग होता है, तब विनाश होता है। सिर्फ बाम्बस नहीं, नेचुरल कैलेमिटीज भी मदद करती हैं। तो बच्चों को यह बुद्धि में रहना चाहिए-अभी हमको जाना है। जितना बाबा को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे, ऊंच पद पायेंगे। चैरिटी बिगन्स एट होम। कोशिश करना चाहिए। कन्या वह जो पियर घर और ससुरघर का उद्धार करे। तो चैरिटी बिगन्स एट होम हुआ ना। सर्विस में लगा रहना चाहिए बोलो, शिवबाबा कहते हैं-मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा। सीधी बात है। मुझ अल्फ को याद करोगे तो स्वर्ग का वर्सा तुम्हारा है। विश्व के मालिक तुम बन जायेंगे। अब वर्सा पाना है तो मुझे याद करो। बच्चों का फर्ज है, यह पैगाम देना। आगे भी दिया था। बताना है विनाश सामने खड़ा है। कलियुग के बाद सतयुग आयेगा। बाप ही आकर वर्सा देते हैं। रावण नर्कवासी बनाते हैं। बाप आकर स्वर्गवासी बनाते हैं। कहानी भारत की है। भारतवासियों को खड़ा करना है। पहले शिव के मन्दिर में जाकर समझाना है। यह बाप नई सृष्टि रचने वाला है। कहते हैं-मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। यह निराकार बाबा आये

हुए हैं। ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। अब बाप और वर्से को याद करो। 84 जन्म पूरे हुए हैं। अब हम आपको बताते हैं। अब मानो न मानो, तुम्हारी मर्जी। बातें तो बड़ी अच्छी हैं। बाप ही दु:ख-हर्ता, सुखकर्ता है। थोड़ा ही समझाया– यह चला। यह है तुम्हारा धन्धा। मेहनत तो कुछ है नहीं। सिर्फ मुख से बोलना है-बाप कहते हैं मुझे याद करो। देही-अभिमानी बनो। शिव के पुजारियों पास जाओ फिर लक्ष्मी-नारायण के पुजारियों के पास जाओ। उन्हें उनकी जीवन कहानी सुनाओ। अच्छा।

○ बाप कहते हैं-तुम मामेकम् याद करो। ब्रह्मा द्वारा ही मैं समझाता हूँ, ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना हुई है। त्रिमूर्ति भी जरूर चाहिए। कोई तो ब्रह्मा का चित्र देख बिगड़ते हैं। कई फिर कृष्ण के 84 जन्म देख बिगड़ते हैं। चित्र फाड़ भी डालते हैं। अरे यह तो बाप ने चित्र बनाये हैं। तो बाप बच्चों को समझाते हैं- भूलो मत, सिर्फ बाप को याद करते रहो। बांधेलियों को भी रड़ियाँ नहीं मारनी हैं। घर में बैठे बाप को याद करती रहो। बांधेलियों को तो और ही ऊंच पद मिल सकता है। तुम बच्चों को ज्ञान देने वाला है ही एक ज्ञान सागर। स्प्रीचुअल नॉलेज एक बाप के सिवाए और कोई में है नहीं। ज्ञान का सागर एक परमपिता परमात्मा ही है, उसको ही लिबरेटर कहा जाता है, इसमें डरने की क्या बात है। बाप बच्चों को समझाते हैं, बच्चों को फिर औरों को समझाना है। बाप कहते हैं- मुझे याद करो तो सद्गति को पायेंगे।

○ जो सर्विस करेंगे, लिखेंगे-पढ़ेंगे होंगे नवाब...। राजा बनना अच्छा वा नौकर बनना अच्छा। पिछाड़ी के समय तुमको सब मालूम पड़ जायेगा। हम क्या बनेंगे? फिर पछतायेंगे। हम श्रीमत पर क्यों नहीं चले! बाप कहते हैं-फालो करो। ऐसे भी नहीं कोई एक कमरा दे देते हैं, सेन्टर के लिए, खुद मीट आदि खाते रहते हैं। वह पुण्य आत्मा, वह पाप आत्मा, फिर आश्रम नहीं रहेगा।

घर में स्वर्ग बनाते हैं तो खुद भी स्वर्ग में होने चाहिए ना। सिर्फ आशीर्वाद पर नहीं ठहरना है। बाप को याद करना है। पवित्र बनाकर ही साथ ले जायेंगे। तुमको तो बहुत खुशी रहनी चाहिए, कितनी भारी लाटरी मिलती है। बाप को जितना याद करेंगे, उतना विकर्म विनाश होंगे। बाप जितना प्यार, दुनिया में कोई कर नहीं सकता। उनको कहा ही जाता है-प्यार का सागर। तुम भी ऐसे बनो। अगर किसको दु:ख दिया, रंज (नाराज) किया तो रंज होकर मरेंगे। यह कोई बाबा श्राप नहीं देते हैं, समझाते हैं। सुख दो तो सुखी होंगे, सबको प्यार करो। बाबा भी प्यार का सागर है। अच्छा।

- तुम बच्चे भी जानते हो कि परिस्तान स्थापन करने वाला हमारा बाबा फिर से आया हुआ है। बच्चे यह भी समझते हैं, अगर इस कब्रिस्तान से दिल लगाई तो घाटा पड़ जायेगा। अभी तुम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हो, सो भी कल्प पहले मुआफ़िक। यह तुम बच्चों की बुद्धि में हर कदम रहना चाहिए तो यही मनमनाभव है। बाप की याद में रहने से ही परिस्तानी बनेंगे। भारत परिस्तान था और खण्ड परिस्तान नहीं बनते हैं। यह है माया रावण का पाम्प। यह थोड़ा समय चलने वाला है। यह है झूठा शो। झूठी माया, झूठी काया है ना। यह पिछाड़ी का भभका है।

- तुम जानते हो हम आत्माओं का रूहानी बाप एक है। उनको आत्मा ही याद करती है। तुमको भक्ति मार्ग में दो बाप हैं। सतयुग में है एक बाप। संगम पर हैं 3 बाप। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो बाप ठहरा ना। शिव भी बाबा है। वह है सर्व आत्माओं का बाप, उनसे ही वर्सा लेना है। उनको याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे, इसलिए शिवबाबा को ही याद करना है। हम उनके बने हैं, यह है सच्चा-सच्चा रीयल ज्ञान, रूहानी बाप

का रूहानी बच्चों प्रति। बाकी सब हैं देह-अभिमानी। देह-अभिमानी पतित मनुष्य जो कर्तव्य करते हैं वह पतित ही करते हैं। दान पुण्य आदि जो भी करते हैं, वह सब पतित ही बनाते हैं। रावण राज्य में यह होता ही है। अब बाप आकर आर्डीनेन्स निकालते हैं। कहते हैं– बच्चे खबरदार, विकार में नहीं जाना, काम पर विजय पानी है। तूफान आदि तो बहुत आयेंगे। इसमें फॉं नहीं होना चाहिए। माया के इतने विकल्प आयेंगे जो अज्ञान काल में भी नहीं आये होंगे, ऐसे भी विकल्प आते हैं। कहते हैं– भक्ति मार्ग में तो बड़ी खुशी रहती है। अभी आपको याद करने चाहते हैं तो कर नहीं सकते। बिन्दी याद नहीं पड़ती है। बड़ी चीज हो तो याद करें।

○ बाप की याद बिगर विकर्म विनाश हो न सकें। पूरी सजा खानी पड़ेगी। यह राजाई स्थापन हो रही है। राजाओं को कितनी दासियाँ होती हैं। बाबा तो राजाओं के कनेक्शन में आया हुआ है। दासियाँ दहेज में देते हैं। यहाँ ही इतनी दासियाँ हैं तो सतयुग में कितनी होंगी। यह भी राजधानी स्थापन हो रही है। बाबा जानते हैं क्या-क्या कर रहे हैं। हर एक के पोतामेल से बाबा बता सकते हैं। इस समय मर जाएं तो क्या बनेंगे! कर्मातीत अवस्था को पिछाड़ी में सब नम्बरवार पाते हैं। तो यह कमाई है। कमाई में मनुष्य कितना बिजी रहते हैं। खाना खाते रहेंगे, टेलीफोन कान पर होगा। ऐसे आदमी तो ज्ञान उठा न सकें। यहाँ गरीब साधारण ही आते हैं। साहूकार लोग तो कहेंगे, फुर्सत कहाँ। अरे, सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएं। तो बाबा मीठे-मीठे बच्चों को बार-बार समझाते हैं। हर एक को यह पैगाम देना है जो ऐसा कोई न कहे कि हमको क्या पता शिवबाबा आया हुआ है। बस सारा दिन बाबा-बाबा ही कहते रहो। कई बच्चियाँ बहुत याद करती हैं। शिवबाबा कहने से ही कई बच्चों को प्रेम के ऑसू आ जाते हैं। कब जाकर मिलेंगे! देखा नहीं है तो भी तड़फती रहती हैं और देखे हुए फिर मानते नहीं। वह दूर बैठे ऑसू बहाती रहती हैं। वन्डर है ना। ब्रह्मा का भी बहुतों को साक्षात्कार होता है। आगे चल बहुतों को साक्षात्कार होगा। मनुष्य को मरने समय सब आकर कहते हैं भगवान को याद करो। तुम भी शिवबाबा को याद करो। बाप कहते हैं– बच्चे, पुरूषार्थ में मेकप करते रहो। मौका

मिलता है तो मेकप करो। कमाई कितनी भारी है। कोई-कोई तो ऐसे हैं जो कितना भी समझाओ, तो भी बुद्धि में नहीं बैठता। बाप कहते हैं ऐसे नहीं बनना है। अपना कल्याण करो। बाप की श्रीमत पर चलो। तुमको बाप पुरूषों में उत्तम बनाते हैं। यह है एम आब्जेक्ट। बाबा सर्विस के लिए कितनी युक्तियाँ बताते रहते हैं। सन्देश तो सबको देना है, जो समझें यह तो बरोबर सच कहते हैं। इस लड़ाई से ही खास भारत में, आम सारे विश्व में सुख-शान्ति होती है। ऐसे-ऐसे पर्चे सभी भाषाओं में छपाने पड़े। भारत कितना बड़ा है। हर एक को पता होना चाहिए– जो ऐसे कोई न कहे कि हमको पता ही नहीं पड़ा। तुम कहेंगे अरे, एरोप्लेन से पर्चे गिराये, अखबार में डाला, तुम जागे नहीं। यह भी दिखाया हुआ है। अच्छा।

○ यह भी तुम जानते हो ड्रामा प्लैन अनुसार पतित से पावन, पावन से पतित बनते आये हैं। चक्र फिरता ही रहता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में बैठा है, हमारे 84 जन्म कैसे हुए हैं। अभी यह बात भूलो मत। स्वदर्शन चक्रधारी हो रहो। उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि में हमको सारी नॉलेज है। तुम समझते हो बेहद के बाप से हम बेहद का वर्सा ले रहे हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं कि तुमको एक बाप को ही याद करना है। बाप को याद करना, रोटी टुकड़ खाना है। बस। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों को बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं– बच्चे पेट के लिए सिर्फ रोटी टुकड़ खाना है। पेट कोई जास्ती खाता नहीं है। एक पाव आटे का खाता है। दाल रोटी बस, 10 रूपये में भी मनुष्य पेट भरता है तो 10 हजार में भी पेट पालते हैं। गरीब लोग खाते भी क्या हैं। फिर भी हट्टे कट्टे रहते हैं। भिन्न-भिन्न चीजें मनुष्य खाते हैं तो और ही बीमार पड़ जाते हैं। डॉक्टर लोग भी कहते हैं– एक प्रकार का खाना खाओ तो बीमार नहीं होंगे। तो बाप भी समझाते हैं– रोटी टुकड़ खाओ। जो मिले उसमें खुश रहो। दाल-रोटी जैसी और कोई चीज होती नहीं। जास्ती लालच भी नहीं रहनी चाहिए।

○ देह-अभिमान में आने से माया चमाट लगाती है। हातमताई का खेल भी दिखाते हैं। मुहलरा डालने से गुम हो जाते हैं। तुमको भी माया तंग नहीं करेगी, अगर बाप की याद में रहेंगे तो। इस पर ही युद्ध चलती है। तुम पुरूषार्थ करते हो याद करने का लेकिन माया ऐसा नाक से पकड़ेगी जो याद करने नहीं देगी, तुम तंग हो सो जायेंगे। इतना माया से युद्ध चलेगी। बाकी वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो मोस्ट सिम्पल है। तुमको घड़ी-घड़ी कहा जाता है हमेशा समझो अब हमारे 84 जन्म पूरे हुए, अब हम जाते हैं बाबा से मिलने। यह याद रहना ही मुश्किल है। बाकी किसको समझाना कोई मुश्किल नहीं है। ऐसे नहीं हम तो बहुत अच्छा समझाते हैं। नहीं, पहली-पहली बात ही है याद की। प्रदर्शनी में ढेर आते हैं। पहले-पहले यह सबक (पाठ) सिखाना है कि अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। पहले लेसन ही यह देना है। भारत का प्राचीन योग कोई सिखा नहीं सकते। बाप जब आकर सिखाये तब सीख सकते। मनुष्य, मनुष्य को राजयोग सिखा नहीं सकते, इम्पॉसिबुल है।

○ बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं - यहाँ जब याद की यात्रा में बैठते हो तो भाई-बहिनों को कहो कि तुम आत्म-अभिमानी हो बैठो और बाप को याद करो। यह स्मृति दिलानी चाहिए। तुमको अभी यह स्मृति मिल रही है। हम आत्मा हैं, हमारा बाप हमको पढ़ाने आते हैं। हम भी कर्मेन्द्रियों द्वारा पढ़ते हैं। बाप भी कर्मेन्द्रियों का आधार ले इन द्वारा पहले-पहले यह कहते हैं - बाप को याद करो। बच्चों को समझाया गया है कि यह है ज्ञान मार्ग। भक्ति मार्ग नहीं कहेंगे। ज्ञान सिर्फ एक ही ज्ञान सागर पतित-पावन देते हैं। तुमको पहले नम्बर का पाठ यही मिलता है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह बहुत जरूरी है। और कोई भी सतसंग में किसी को कहने आयेगा नहीं। भल आजकल आर्टिफिशल संस्थायें बहुत निकली हैं। तुमसे सुनकर कोई कहे भी परन्तु अर्थ समझ न सके। समझाने का अक्ल नहीं आयेगा। यह तुमको ही बाप कहते हैं कि बेहद के बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएं। विवेक भी कहता है यह पुरानी दुनिया है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में बहुत फ़र्क है। वह है पावन दुनिया, यह

है पतित दुनिया। बुलाते भी हैं हे पतित-पावन आओ, आकर पावन बनाओ। गीता में भी अक्षर है मामेकम् याद करो। देह के सर्व सम्बन्ध त्याग अपने को आत्मा समझो। यह देह के सम्बन्ध पहले नहीं थे। तुम आत्मा यहाँ आती हो पार्ट बजाने। गायन भी है - अकेले आये, अकेला जाना है। इनका अर्थ मनुष्य नहीं समझते। अब तुम प्रैक्टिकल में जानते हो। हम अभी पावन बन रहे हैं याद की यात्रा से वा याद के बल से। यह है ही राजयोग बल। वह है हठयोग जिससे मनुष्य थोड़े समय के लिए तन्दुरूस्त रहते हैं। सतयुग में तुम कितना तन्दुरूस्त रहते हो। हठयोग की दरकार नहीं। यह सब यहाँ इस छी-छी दुनिया में करते हैं। यह है ही पुरानी दुनिया।

- अगर सार्विस नहीं करते तो समझना चाहिए - हम प्रजा में चले जायेंगे। अपनी दिल से पूछना है अगर अभी हमारा शरीर छूट जाए तो क्या पद पायेंगे? बहुत बड़ी मंजिल है तो खबरदार रहना चाहिए। कई बच्चे समझते हैं बरोबर हम तो याद ही नहीं करते तो फिर पोतामेल रखकर क्या करेंगे। उसको फिर हार्टफेल कहा जाता है। वह पढ़ते भी ऐसा ही हैं। ध्यान नहीं देते। मिया मिट्ठू बन बैठ नहीं जाना है जो पिछाड़ी में फेल हो जाएं। अपना कल्याण करना है। एम ऑब्जेक्ट तो सामने है। हमको पढ़कर यह बनना है। यह भी वन्डर है ना। कलियुग में तो राजाई है नहीं। सतयुग में फिर इन्हों की राजाई कहाँ से आई। सारा मदार पढ़ाई पर है। ऐसे नहीं कि देवताओं और असुरों की लड़ाई लगी, देवताओं ने जीत कर राज्य पाया। अब असुरों और देवताओं की लड़ाई लग कैसे सकती।

- मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना, अर्थ तो अच्छी रीति समझा। हम आत्मा हैं और बेहद बाप के बच्चे हैं - यह भुला न दो। अभी-अभी बाप की याद में हर्षित होते हैं, अभी-अभी फिर याद भूल जाने से गम में पड़ जाते हैं। अभी-अभी जीते हो, अभी-अभी मर पड़ते हो अर्थात् अभी-अभी

बेहद के बाप के बनते हो, अभी-अभी फिर जिस्मानी परिवार तरफ चले जाते हो। तो बाप कहते हैं आज हंसे कल रो न देना। यह हुआ गीत का अर्थ।

○ बाप कहते हैं नॉलेज तो बहुत सहज है। यह है पवित्र बनने की नॉलेज, मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाने की नॉलेज, जो बाप ही दे सकते हैं। जब किसको फाँसी दी जाती है तो अन्दर में यही रहता है हम भगवान पास जाते हैं। फाँसी देने वाले भी कहते हैं गॉड को याद करो। गॉड को जानते दोनों नहीं हैं। उनको तो उस समय मित्र-सम्बन्धी आदि जाकर याद पड़ते हैं। गायन भी है अन्तकाल जो स्त्री सिमरे...... कोई न कोई याद जरूर रहता है। सतयुग में ही मोहजीत रहते हैं। वहाँ जानते हैं एक खाल छोड़ दूसरी ले लेंगे। वहाँ याद करने की दरकार नहीं इसलिए कहते हैं दु:ख में सिमरण सब करें....... यहाँ दु:ख है इसलिए याद करते हैं भगवान से कुछ मिले। वहाँ तो सब कुछ मिला ही हुआ है। तुम कह सकते हो हमारा उद्देश्य है मनुष्य को आस्तिक बनाना, धणी का बनाना। अभी सब निधन के हैं। हम धणका बनते हैं। सुख, शान्ति, सम्पत्ति का वर्सा देने वाला बाप ही है। इन लक्ष्मी-नारायण की कितनी बड़ी आयु थी। यह भी जानते हैं भारतवासियों की पहले-पहले आयु बहुत बड़ी रहती थी। अब छोटी है। क्यों छोटी हुई है-यह कोई भी नहीं जानते। तुम्हारे लिए तो बहुत सहज हो गया है समझना और समझाना। सो भी नम्बरवार हैं। समझानी हर एक की अपनी-अपनी है, जो जैसी धारण करते हैं ऐसे समझाते हैं। अच्छा!

○ बाप ने समझाया है - ज्ञान का तीसरा नेत्र खुलना चाहिए तो घर-घर में सोझरा हो। अभी तो घर-घर में अन्धियारा ही है। यह सब बाहर का प्रकाश है। तुम अपनी ज्योति जगाने बिल्कुल शान्त में बैठते हो। बच्चे जानते हैं स्वधर्म में रहने से पाप कट जाते हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप इस याद

की यात्रा से ही कटते हैं। आत्मा की ज्योत बुझ गई है ना। शक्ति का पेट्रोल सारा खत्म हो गया है। वह फिर भर जायेगा क्योंकि आत्मा पवित्र बन जाती है। कितना रात-दिन का फ़र्क है।

- यह 5 हजार वर्ष का चक्र, जूँ मिसल फिरता रहता है। टिक-टिक होती रहती है, अभी तुम मीठे-मीठे बच्चों को सिर्फ बाप को ही याद करना है। चलते-फिरते काम करते बाप को याद करने में ही कल्याण है। फिर माया चमाट लगा देगी। तुम हो ब्राह्मण, भ्रमरी मिसल कीड़े को आपसमान ब्राह्मण बनाना है। वह भ्रमरी का तो एक दृष्टान्त है। तुम हो सच्चे-सच्चे ब्राह्मण। ब्राह्मणों को ही फिर देवता बनना है इसलिए तुम्हारा यह है पुरूषोत्तम बनने के लिए संगमयुग। यहाँ तुम आते ही हो पुरूषोत्तम बनने के लिए। पहले ब्राह्मण जरूर बनना पड़े। ब्राह्मणों की चोटी है ना। तुम ब्राह्मणों को समझा सकते हो। बोलो, तुम ब्राह्मणों का तो कुल है, ब्राह्मणों की राजधानी नहीं है।

- यह पुरूषोत्तम संगमयुग है ना। अभी हम किनारे पर हैं। बहुत थोड़ा समय है। अब इस पुरानी दुनिया से ममत्व निकालना है। अब तो नई दुनिया में जाना है। समझानी तो बड़ी सहज मिलती है। यह बुद्धि में रखना चाहिए। चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। अभी तुम कलियुग में नहीं हो। तुमने इस हद को छोड़ दिया है फिर उस तरफ वालों को याद क्यों करना चाहिए? जबकि छोड़ दिया है, पुरानी दुनिया को। हम पुरूषोत्तम संगमयुग पर हैं फिर पिछाड़ी में देखें भी क्यों? बुद्धियोग विकारी दुनिया से क्यों लगायें? यह बड़ी सूक्ष्म बातें हैं। बाबा जानते हैं कोई-कोई तो रूपये से एक आना भी समझते नहीं हैं। सुना और भूल जाते हैं। तुमको पिछाड़ी तरफ नहीं देखना है।

- हर एक को अपना पार्ट बजाना है। कोई भी हालत में रोना नहीं चाहिए। बेहद का बाप-टीचर-गुरू मिला है, जिसके लिए तुम इतना धक्का खाते रहते हो। पार ब्रह्म में रहने वाला परमपिता

परमात्मा मिल गया तो बाकी क्या चाहिए। बाप देते ही हैं सुख का वर्सा। तुम बाप को भूल जाते हो तब रोना पड़ता है। बाप को याद करेंगे तब खुशी होगी। ओहो! हम तो विश्व के मालिक बनते हैं। फिर 21 पीढ़ी कभी रोयेंगे नहीं। 21 पीढ़ी अर्थात् पूरा बुढ़ापे तक अकाले मृत्यु नहीं होती है, तो अन्दर में कितनी गुप्त खुशी रहनी चाहिए।

○ अभी तुमको कितनी समझ आई है। तुम हो गुप्त वारियर्स। वारियर्स नाम सुनकर देवियों को फिर तलवार बाण आदि दे दिये हैं। तुम वारियर्स हो योगबल के। योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। बाहुबल से भल कोई कितनी भी कोशिश करे परन्तु जीत पा नहीं सकते। भारत का योग मशहूर है। यह बाप ही आकर सिखलाते हैं। यह भी किसको पता नहीं है। उठते-बैठते बाप को ही याद करते रहो। कहते हैं योग नहीं लगता है। योग अक्षर उड़ा दो। बच्चे तो बाप को याद करते हैं ना। शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं ही सर्वशक्तिमान् हूँ, मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। जब सतोप्रधान बन जायेंगे तब फिर आत्माओं की बरात निकलेगी। जैसे मक्खियों की बरात होती है ना। यह है शिवबाबा की बारात। शिवबाबा के पिछाड़ी सब आत्मायें मच्छरों सदृश्य भागेंगी। बाकी शरीर सब खत्म हो जायेंगे। अच्छा!

○ यह कोई भी नहीं समझते हैं, हम आत्मायें भी वहाँ की रहने वाली हैं। यहाँ आते हैं सिर्फ पार्ट बजाने। यह कोई के ख्याल में नहीं रहता। अपने ही धन्धे धोरी में लगे रहते हैं। अब बाप समझाते हैं ऊंच ते ऊंच तब बनेंगे जब याद की यात्रा में मस्त रहेंगे। याद से ही ऊंच पद पाना है। नॉलेज जो तुमको सिखलाई जाती है, वह भूलने की नहीं है। छोटे बच्चे भी वर्णन करेंगे। बाकी योग की बात को बच्चे नहीं समझेंगे। बहुत बच्चे हैं जो याद की यात्रा पूरी रीति समझते नहीं हैं। हम कितना ऊंच ते ऊंच जाते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन.... 5 तत्व यहाँ हैं। सूक्ष्मवतन,

मूलवतन में यह नहीं होते। यह नॉलेज बाप ही देते हैं इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है।

- अब कैरेक्टर्स सुधारने की भी जरूर डिपार्टमेंट होगी। स्कूलों में भी स्टूडेण्ट्स का रजिस्टर रखा जाता है। उनके कैरेक्टर्स का पता चलता है इसलिए बाबा ने भी रजिस्टर रखवाया था। हर एक अपना रजिस्टर रखो। कैरेक्टर देखना है कि हम कोई भूल तो नहीं करते हैं। पहली बात तो बाप को याद करना है। उनसे ही तुम्हारा कैरेक्टर्स सुधरता है। आयु भी बड़ी होती है एक की याद से। यह तो हैं ज्ञान रत्न। याद को रत्न नहीं कहा जाता। याद से ही तुम्हारे कैरेक्टर सुधरते हैं। यह 84 जन्मों का चक्र तुम्हारे सिवाए और कोई समझा न सके। इस पर ही समझाना है - विष्णु और ब्रह्मा। शंकर के तो कैरेक्टर नहीं कहेंगे। तुम बच्चे जानते हो ब्रह्मा और विष्णु का आपस में क्या कनेक्शन है। विष्णु के दो रूप हैं यह लक्ष्मी-नारायण। वही फिर 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्मों में आपेही पूज्य और आपेही पुजारी बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ ही चाहिए ना। साधारण तन चाहिए।

- बाप है गरीब निवाज़। गरीबों की ही बच्चियां मिलेंगी। साहूकारों को तो अपना नशा रहता है। कल्प पहले जो आये होंगे वही आयेंगे। फिकरात की कोई बात नहीं। शिवबाबा को कभी कोई फिकरात नहीं होती, दादा को होगी। इनको अपना भी फिकर है, हमको नम्बरवन पावन बनना है। इसमें है गुप्त पुरूषार्थ। चार्ट रखने से समझ में आता है, इनका पुरूषार्थ जास्ती है। बाप हमेशा समझाते रहते हैं डायरी रखो। बहुत बच्चे लिखते भी हैं, चार्ट लिखने से सुधार बहुत हुआ है। यह युक्ति बहुत अच्छी है, तो सबको करना चाहिए। डायरी रखने से तुमको बहुत फायदा होगा। डायरी रखना माना बाप को याद करना। उसमें बाप की याद लिखनी है। डायरी भी मददगार बनेगी, पुरूषार्थ होगा। डायरियां कितनी लाखों, करोड़ों बनती हैं, नोट आदि करने लिए। सबसे

मुख्य बात तो यह है नोट करने की। यह कभी भूलना नहीं चाहिए। उसी समय डायरी में लिखना चाहिए। रात को हिसाब-किताब लिखना चाहिए। फिर मालूम पड़ेगा यह तो हमको घाटा पड़ रहा है क्योंकि जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भस्म करने हैं।

○ बाप समझाते हैं - मूल बात है ही आत्मा की। कहते भी हैं पाप आत्मा, पुण्य आत्मा। यह अक्षर अच्छी रीति याद करो। समझना और समझाना है। तुमको ही भाषण आदि करना है। बाप तो गांव-गांव में, गली-गली में नहीं जायेंगे। तुम घर-घर में यह चित्र रख दो। 84 का चक्र कैसे फिरता है। सीढ़ी में बड़ा क्लीयर है। अब बाप कहते हैं - सतोप्रधान बनो। अपने घर जाना है, पवित्र बनने बिगर तो घर जायेंगे नहीं। यही फुरना लगा रहे। बहुत बच्चे लिखते हैं, बाबा हमको बहुत तूफान आते हैं। मन्सा में बहुत खराब ख्यालात आते हैं। आगे नहीं आते थे। बाप कहते हैं तुम यह ख्याल नहीं करो। आगे कोई तुम युद्ध के मैदान में थोड़ेही थे। अभी तुमको बाप की याद में रह माया पर जीत पानी है। यह घड़ी-घड़ी याद करते रहो। गांठ बांध लो। जैसे मातायें गांठ बांध लेती हैं, पुरूष लोग फिर नोट बुक में लिखते हैं। तुम्हारा तो यह बैज अच्छी निशानी है। हम प्रिन्स बनते हैं, यह है ही बेगर टू प्रिन्स बनने की गॉडली युनिवर्सिटी।

○ वास्तव में घरबार छोड़ा तो फिर पैसे रखने की दरकार नहीं रहती। तो अब बाप तुम बच्चों को समझा रहे हैं। हर एक की बुद्धि में आना चाहिए - हमको बाप का परिचय देना है। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते, बेसमझ हैं। तुम बच्चों के लिए बाप का फरमान है-मीठे-मीठे बच्चों, तुम अपने को आत्मा समझो, सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। अपना भी कल्याण करना है। याद से सतोप्रधान बनना है। बहुत पुरूषार्थ करना है। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। कहते हैं बाबा हम घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। संकल्प आ जाते हैं। बाबा कहते हैं वह तो आयेंगे ही। तुमको बाप की याद में रह सतोप्रधान बनना है। आत्मा जो अपवित्र है, उनको परमपिता परमात्मा को ही याद

कर पवित्र बनना है। बाप ही बच्चों को डायरेक्शन देते हैं - हे फरमानबरदार बच्चों - तुमको फरमान करता हूँ, मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कटेंगे। पहली-पहली बात ही यह सुनाओ कि निराकार शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो - मैं पतित-पावन हूँ। मेरी याद से ही विकर्म विनाश होंगे और कोई उपाय नहीं। न कोई बता सकते हैं। ढेर के ढेर सन्यासी आदि हैं, निमन्त्रण देते हैं- योग कान्फ्रेन्स में आकर शामिल हो। अब उनके हठयोग से किसका कल्याण तो होना नहीं है। ढेर योग आश्रम हैं जिनको इस राजयोग का बिल्कुल पता ही नहीं है। बाप को ही नहीं जानते।बेहद का बाप ही आकर सच्चा- सच्चा योग सिखलाते हैं। बाप तुम बच्चों को आपसमान बनाते हैं। जैसे मैं निराकार हूँ। टेम्प्रेरी इस तन में आया हूँ। भाग्यशाली रथ तो जरूर मनुष्य का होगा। बैल को तो नहीं कहेंगे। बाकी कोई घोड़ेगाड़ी आदि की बात नहीं है। न लड़ाई की कोई बात है। तुम जानते हो हमको माया से ही लड़ाई करनी है। गाया भी जाता है माया ते हारे हार........ तुम बहुत अच्छी रीति समझा सकते हो - परन्तु अब सीख रहे हो। कोई सीखते-सीखते भी एकदम धरनी पर गिर जाते हैं। कोई खिटखिट हो पड़ती है। दो बहनों की भी आपस में नहीं बनती, लूनपानी हो जाते हैं। तुम्हारी आपस में कोई भी खिट-खिट नहीं होनी चाहिए। खिट-खिट होगी तो बाप कहेंगे यह क्या सर्विस करेंगे। बहुत अच्छे-अच्छे का भी ऐसा हाल हो जाता है।

○ अपने को आत्मा समझो, शिवबाबा को याद करो। शौक बहुत होना चाहिए, किसको भी रास्ता बताने का। जो खुद याद करते होंगे वही दूसरों को याद कराने का पुरूषार्थ करेंगे। बाप तो नहीं जाकर बात करेंगे। यह तो तुम बच्चों का काम है। गरीबों का भी कल्याण करना है। बिचारे बहुत सुखी हो जायेंगे। थोड़ा याद करने से प्रजा में भी आ जाएं, वह भी अच्छा है। यह धर्म तो बहुत सुख देने वाला है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारा आवाज़ जोर से निकलेगा। सबको यही पैगाम देते रहो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम मीठे-मीठे बच्चे पदमापदम भाग्यशाली हो। जबकि महिमा सुनते हो तो समझते हो, फिर भी कोई बात की फिकरात आदि

क्यों रखनी चाहिए। यह है गुप्त ज्ञान, गुप्त खुशी। तुम हो इनकागनीटो वारियर्स। तुमको अननोन वारियर्स कहेंगे और कोई अननोन वारियर्स हो नहीं सकता। तुम्हारा देलवाड़ा मन्दिर पूरा यादगार है। दिल लेने वाले का परिवार है ना। महावीर, महावीरनी और उनकी औलाद यह पूरा-पूरा तीर्थ है। काशी से भी ऊंची जगह हुई। अच्छा।

○ बाप कहते हैं यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अब तुम्हारे लिए नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। तुम पढ़ते ही हो - नई दुनिया के लिए। अनेक धर्मों का विनाश, एक धर्म की स्थापना संगम पर ही होती है। लड़ाई लगेगी, नेचुरल कैलेमिटीज भी आयेंगी। सतयुग में जब इनका राज्य था तो और कोई धर्म थे नहीं। बाकी सब कहाँ थे? यह नॉलेज बुद्धि में रखनी है। ऐसे नहीं यह नॉलेज बुद्धि में रखते दूसरा काम नहीं करते हैं, कितने ख्यालात रखते हैं। चिठ्ठियां लिखना, पढ़ना, मकान का ख्याल करना, तो भी बाप को याद करता रहता हूँ। बाबा को याद न करें तो विकर्म कैसे विनाश होंगे।

○ यहाँ तुम बच्चे बैठे हो। तुम जानते हो अभी बेहद का बापदादा आया कि आया। यह अवस्था जो तुम्हारी यहाँ रहती है, बाहर सेन्टर पर हो न सके। यहाँ तुम समझेंगे बापदादा आया कि आया। बाहर सेन्टर पर समझेंगे बाबा की बजाई हुई मुरली आई कि आई। यहाँ और वहाँ में बहुत फर्क रहता है क्योंकि यहाँ बेहद के बापदादा के सम्मुख तुम बैठे हो। वहाँ तुम सम्मुख नहीं हो। चाहते हो सम्मुख जाकर मुरली सुनें। यहाँ बच्चों की बुद्धि में आया कि बाबा आया कि आया। जैसे और सतसंग होते हैं। वहाँ समझेंगे फलाना स्वामी आयेगा। परन्तु यह ख्यालात भी सबकी एकरस नहीं रहती। कोई को सम्बन्धी याद आयेगा। बुद्धि एक गुरू के साथ भी ठहरती नहीं है। कोई बिरला ही होगा जो स्वामी की याद में बैठा होगा। यहाँ भी ऐसे है। ऐसे नहीं कि सब शिवबाबा की याद में रहते हैं। बुद्धि दौड़ती रहती है। मित्र सम्बन्धी याद आयेंगे। सारा समय

एक ही शिवबाबा के सम्मुख रहने में तो अहो सौभाग्य। स्थाई याद में कोई विरला ही रहते हैं। यहाँ शिवबाबा के सम्मुख रहने में तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के गोप गोपियों से पूछो। यह यहाँ का गाया हुआ है। यहाँ तुम बाबा की याद में बैठे हो। जानते हो अभी हम ईश्वर के बने हैं फिर दैवी गोद में होंगे। भल कोई की बुद्धि में सर्विस के ख्यालात चलते हैं। इस चित्र में यह करेक्शन करें, यह लिखें। परन्तु अच्छे बच्चे होंगे तो समझेंगे कि अभी तो बाप से ही सुनना है, और कोई संकल्प आने नहीं देंगे। बाप ज्ञान रत्नों से झोली भरने आये हैं। तो बाप से ही बुद्धियोग लगाना है। नम्बरवार धारणा करने वाले तो होते ही हैं। कोई अच्छी रीति धारण करते हैं, कोई कम धारण करते हैं। बुद्धियोग और तरफ दौड़ता रहेगा तो धारणा नहीं होगी। कच्चे हो जायेंगे। एक दो बार मुरली सुनी, धारणा नहीं हुई तो आदत पक्की हो जाती है। फिर कितना भी सुनता रहेगा, धारणा होगी नहीं। किसको सुना नहीं सकेंगे। जिसको धारणा होगी उसको सर्विस का शौक होगा, उछलता रहेगा। जाकर धन दान करूँ, क्योंकि यह धन एक बाप के सिवाए और कोई के पास है नहीं। बाप यह भी जानते हैं सबको धारणा हो न सके। सब एकरस ऊंच पद पा नहीं सकते इसलिए बुद्धि और तरफ भटकती रहती है। भविष्य तकदीर इतनी ऊंच बन नहीं सकती है। फिर कोई स्थूल सर्विस में अपनी हड्डी देते हैं, सबको राजी करते हैं। जैसे भोजन पकाते हैं, खिलाते हैं यह भी सब्जेक्ट है ना। सर्विस का जिनको शौक होगा वह मुख से कहने बिना रहेंगे नहीं। फिर बाबा देखते भी हैं कि कहाँ देह-अभिमान तो नहीं है। बड़े का रिगॉर्ड रखते हैं वा नहीं। बड़े महारथियों का रिगॉर्ड तो रखना होता है। हाँ, कोई छोटा भी होशियार हो जाता है, तो हो सकता है बड़े को उनका रिगॉर्ड रखना पड़े क्योंकि बुद्धि उनकी गैलप कर लेती है। सर्विस का शौक देख बाप तो खुश होगा ना। यह अच्छी सर्विस करेंगे। सारा दिन प्रदर्शनी समझाने की भी प्रैक्टिस करनी चाहिए। प्रजा भी तो ढेर बननी है ना। लाखों प्रजा चाहिए। और तो कोई उपाय है नहीं। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजा रानी प्रजा सब यहाँ बनने हैं। कितनी सर्विस करनी चाहिए। बच्चों की बुद्धि में है अभी हम ब्राह्मण बने हैं। घर गृहस्थ में रहने से हर एक की अवस्था अपनी रहती है ना। घरबार तो छोड़ना नहीं है। बाबा कहते हैं घर

में भल रहो। परन्तु बुद्धि में यह निश्चय रखना है कि यह पुरानी दुनिया खत्म हुई पड़ी है। हमारा अब बाप से काम है। यह भी जानते हैं कल्प पहले जिन्होंने यह ज्ञान लिया था, वही लेंगे। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड हूबहू रिपीट हो रहा है। आत्मा में ज्ञान है ना। बाप के पास भी ज्ञान है। तुम बच्चों को भी बाप जैसा बनना है, प्वाइंट धारण करनी है। सब प्वाइंट एक साथ नहीं समझाई जाती हैं। लक्ष्य पक्का रखा जाता है। विनाश भी सामने खड़ा है।

○ ब्राह्मणों की माला नहीं बनती है। कोशिश की थी बनाने की परन्तु बनी नहीं इसलिए माला बनाना, अव्यक्त नाम देना छोड़ दिया। नाम जो यहाँ के थे वह नाम यहाँ ही छोड़ फिर वही अपना पुराना नाम ले भाग जाते हैं। उनको उस नये नाम से कोई बुलायेंगे नहीं। तो बाप हमारा बाप टीचर गुरू है, ऐसे बाप को तो बहुत लव से याद करना है परन्तु माया ऐसी है जो भुला देती है इसलिए अवस्था डगमग होती है। मुरझाये-पने की फीलिंग आती है। शिवबाबा की याद से फिर खड़े हो जाते हैं। अच्छा।

○ बाप की याद में तो बच्चे आपेही रहते हैं। घड़ी-घड़ी कहने की भी दरकार नहीं रहती। बाप का डायरेक्शन है कि चलते-फिरते, उठते-बैठते बाप को याद करो तो रावण जिसने तुमको पतित बना दिया है, उन पर जीत पा लेंगे। तुमको कोई हथियार आदि नहीं देते, सिर्फ योगबल से तुम रावण पर जीत पाते हो। जीत पानी है जरूर और संगम पर ही पाते हो, जबकि रावण राज्य खत्म हो रामराज्य की स्थापना होनी है।

○ जितने-जितने पाप किये होंगे तो सजा खानी पड़ेगी। कोई बहुत सजायें खाते हैं, कोई कम। उनमें भी नम्बरवार हैं, जितना हो सके योगबल से विकर्मों को काटते रहना है। यह बड़े ते बड़ा

फुरना बच्चों को रखना है कि हम सम्पूर्ण पक्का सोना कैसे बनें? उठते बैठते यही बुद्धि में रहे, जितना याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेगे। माया के तूफानों की परवाह नहीं करनी है, जितना समय मिले बाप को याद करना है। मुझे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप को याद करेंगे तो पाप कट जायेंगे। कोई पाप भी नहीं करना चाहिए। नहीं तो सौगुणा बन जायेगा। माफी नहीं ली तो फिर वृद्धि को पाते-पाते सत्यानाश हो जाती है। पाप पिछाड़ी पाप माया कराती रहेगी। बेहद के बाप से बे-अदबी हो जाती है। यह भी बहुतों को पता नहीं पड़ता है। बाबा हमेशा समझाते हैं ऐसे समझो कि शिवबाबा मुरली चलाते हैं। शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं तो याद भी रहे, डर भी रहे। बहुत पाप करते रहते हैं। साफ बोलना चाहिए कि बाबा हमसे यह भूल हुई। बाप समझाते हैं पापों का बोझा सिर पर बहुत है। जो कुछ किया है वह बताओ। सच बताने से आधा कम हो जायेगा। बाबा ने समझाया है जो नम्बरवन पुण्य आत्मा बनते हैं, वही फिर पाप आत्मा भी नम्बरवन बनते हैं।बाबा खुद कहते हैं– तुम्हारा बहुत जन्मों के भी अन्त का जन्म है। तुम पुण्य आत्मा थे, सो अब पाप आत्मा बने हो फिर पुण्य आत्मा बनना है। अपना कल्याण तो करना है। यहाँ तुम्हें माथा आदि टेकने की भी दरकार नहीं है, सिर्फ बाप को याद करना है। भल यह भी बुजुर्ग है, नमस्ते करते हैं। बच्चे घर में घड़ी-घड़ी थोड़ेही नमस्ते करते हैं। एक बार नमस्ते किया फिर रेसपान्ड में भी किया जाता है। बाप कहते हैं– तुम मुझे बड़ा समझकर नमस्ते करते हो, मैं फिर तुमको विश्व का मालिक समझ नमस्ते करता हूँ। अर्थ है ना। मनुष्य तो राम-राम कह देते हैं परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते।

- सुख में मुझे कोई याद नहीं करते, दु:ख में मुझे याद करते हैं। जरूर सुख मिला हुआ था। बाप कहते हैं मैं आया हूँ पढ़ाने। अब पढ़ना तुम्हारा काम है। मनुष्य तो घोर अन्धियारे में हैं, तुम भी कुछ नहीं जानते थे। इस समय सारी दुनिया का बेड़ा डूबा हुआ है, कितने दु:खी हैं। तुम सबका बेड़ा पार करते हो, सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। यह बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं, सो भी नम्बरवार।

जो लाइट हाउस बने होंगे, वह दूसरों को भी रास्ता बताते रहेंगे। उनका काम ही है रास्ता बताना। बच्चों को बाप कैसे पढ़ाते हैं, यह तो स्थाई खुशी रहनी चाहिए। यहाँ आकर बहुत रिफ्रेश हो जाते हैं, बाहर जाने से नशा ही गुम हो जाता है। बाप से पूरा-पूरा वर्सा लेने की तमन्ना रखनी चाहिए। कदम-कदम पर बाप से राय लेते रहना है। आगे तीर्थों पर पैदल जाते थे, बहुत खबरदारी से जाते थे। इस समय तो बस ट्रेन में जाते हैं। माया का इस समय भभका बहुत है। सतयुग में भभका था फिर द्वापर से गिरता गया। अब फिर पिछाड़ी में शुरू हुआ है, इनको माया का पाम्प कहा जाता है। किसको कहो चलो स्वर्ग में, तो कहते हमें यहाँ ही सब सुख हैं। मोटरें, एरोप्लेन आदि सब हैं। हमारे लिए स्वर्ग यहाँ ही है। धन, माल, जेवर आदि सब हैं। लक्ष्मी-नारायण को भी जेवर हैं ना। हम भी पहन सकते हैं। कितना भी समझाओ फिर भी विष ही याद रहता है। विष (विकार) बिगर रह नहीं सकते। बाप कहते हैं– तुम मेरी बात मानते नहीं हो। पावन नहीं बनते हो तो मुझे बुलाते ही क्यों हो कि हे पतित-पावन आओ। याद रखना अभी नहीं मानेंगे तो धर्मराज द्वारा सजा दिलायेंगे। डराते भी हैं। बहुत बच्चे विकार में जाते ही रहते हैं, डर ही नहीं। वह कितने हन्टर खायेंगे। बात मत पूछो। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। पुरूषार्थ कर ऊंच पद पाना चाहिए ना। संगदोष में ऐसा गिर पड़ते हैं जो एकदम अपना पद गंवा देते हैं। तुम जानते हो अभी हीरों आदि की खानियाँ खाली होती जा रही हैं फिर भर जायेंगी। सोने, हीरों के पहाड़ होते हैं। हीरे जब खोद कर निकालते हैं तो पहले पत्थर होते हैं फिर उनको साफ कर हीरा बनाते हैं। तुमको भी ज्ञान सीरान पर चढ़ाते हैं तो तुम कितने अच्छे हो जाते हैं। अच्छा।

○ बाप तो तदबीर बताते हैं तकदीर बनाने के लिए। फिर ऐसे बाप का कहना न माने तो क्या गति होगी! बाप को तरस पड़ता है, बाप कहते हैं– अपने को करेक्ट करते जाओ। ऐसे न हो चलते-चलते मर जाओ। डर रहना चाहिए, हम बाप को याद कर पापों का बोझा उतारें। अच्छा–

सबकी सद्गति करने वाला एक ही शिवबाबा है, उनका तो फोटो निकाल नहीं सकते उनको दिव्य दृष्टि से ही देख सकते हैं। बाकी जाना जा सकता है। अच्छा।

○ तो गीत सुना - बचपन के दिन भुला न देना। आत्मा कहती है - बाबा हमको अब स्मृति आई है। सवेरे-सवेरे उठकर बाप से बातें करनी चाहिए। अमृतवेले बाप को याद करना अच्छा है ना। शाम के टाइम एकान्त में जाकर बैठो। भल आपस में स्त्री-पुरूष इकट्ठे हो तो भी यह बातें करते रहो। शिवबाबा ब्रह्मा के तन से क्या कहते हैं। हम जब पूज्य बनते हैं तो बाबा को याद नहीं करते थे। जब पुजारी बनते हैं तो बाप को याद करते हैं। ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए, जो कोई सुने तो वन्डर खाये। आधाकल्प हम काम चिता पर बैठ जलकर भस्म हो गये थे, कब्रदाखिल हो गये थे। अब हमको ज्ञान चिता पर बैठना है, स्वर्ग में जाना है। यह पुरानी दुनिया है।

○ हम परमात्मा की सन्तान हैं, उनसे स्वर्ग का वर्सा पा रहे हैं। आपस में बात करने की रॉयल्टी चाहिए। यहाँ से सब कुछ सीखना है। बाद में वही संस्कार ले जायेंगे। अति मीठा बनना है, बड़ा नशा रहना चाहिए। शिवबाबा के हम बच्चे हैं। देवता पद पाने वाले हैं, तो एक दो में कितना प्यार से बोलना चाहिए। परन्तु बच्चों के मुख से अजुन फूल निकलते नहीं हैं। तुम कितने ऊंच हो। तुमको यह याद रहे कि हम शिवबाबा की सन्तान हैं फिर सतयुग में महाराजा बनेंगे। गोया हम विश्व के क्राउन प्रिन्स बनेंगे। तुम बच्चों को आन्तरिक खुशी होनी चाहिए कि हम परमात्मा के सम्मुख बैठे हैं, जिससे स्वर्ग का वर्सा मिलता है उनकी श्रीमत पर चलना है। बच्चों को बाबा की याद सदा रहनी चाहिए इससे खुशी का पारा सदा चढ़ा रहेगा। वो लोग (साइंस वाले) भी मंथन करते हैं। तुम बच्चों को वाणी का मंथन करना है। वाणी का प्रवाह कभी-कभी बहुत अच्छा रहता है, कभी कम, इनको कहा जाता है मंथन करना। बच्चे बाप की अवस्था को देख

रहे हैं और बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं। तो कब बहुत उछल का प्रवाह रहता है, कभी कम। कभी बहुत अच्छी प्वाइंट्स निकलती हैं। बाबा भी मददगार बन जाते हैं।

- बाप के बिना कोई मनुष्य से देवता बना नहीं सकता। तो बच्चों को याद रहना चाहिए कि अब हमको घर जाना है, परन्तु माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। यहाँ से अब बाबा को याद कर सतोप्रधान बनना है। कोई भी समय लड़ाई बड़ी हो जाए, नियम थोड़ेही है। कहते भी हैं शायद बड़ी लड़ाई हो भी जाये, जो बन्द भी न हो सके। सभी एक दो में लड़ने लग पड़ेंगे। तो विनाश होने के पहले क्यों न हम याद में रह तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरूषार्थ करें। याद की यात्रा में ही माया विघ्न डालती है इसलिए बाबा रोज-रोज कहते हैं– चार्ट लिखो। मुश्किल कोई 2-4 लिखते हैं। बाकी तो अपने धन्धे-धोरी में ही सारा दिन पड़े हैं। अनेक प्रकार के विघ्नों में पड़े रहते हैं। बच्चों को यह तो मालूम है कि हमको सतोप्रधान जरूर बनना है। तो कहाँ भी रहते पुरूषार्थ करना है। मनुष्यों को समझाने के लिए चित्र आदि भी बनाते रहते हैं क्योंकि इस समय मनुष्य हैं 100 परसेन्ट तमोप्रधान। पहले जब मुक्तिधाम से आते हैं तो सतोप्रधान होते हैं। फिर सतो रजो तमो में आते-आते इस समय सब तमोप्रधान बन गये हैं। सबको बाबा का पैगाम देना है तो बाप को याद करने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। विनाश भी सामने खड़ा है।

- आपस में लून-पानी होकर सर्विस को छोड़ देना, इस जैसा बुरा काम कोई नहीं। बाबा को याद करो तो कमाई भी होगी। अब ज्ञान मिला है होली बनो और बाप को याद करो। धुरिया कहा जाता है ज्ञान की रिमझिम को। ज्ञान और विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान है योग, ज्ञान है सृष्टि चक्र का। होली-धुरिया, मनुष्य कुछ समझते नहीं हैं। बाप को याद करना और ज्ञान सबको सुनाना। बाबा बार-बार समझाते हैं कि ऊंचे ते ऊंच बाप को सर्वव्यापी कह नहीं सकते। नहीं

तो खुद किसको याद करते हैं? बाप कहते हैं– निरन्तर मुझे याद करो। सृष्टि यहाँ है, पीछे सूक्ष्मवतन में जाते हैं। वहाँ ट्रिब्यूनल बैठती है, सजायें मिलती हैं। सजायें खाकर पवित्र बन चले जाते हैं ऊपर। बाप सब बच्चों को ले जाते हैं। अब है संगम। इसको 100 वर्ष देने चाहिए। बच्चे पूछते हैं बाबा स्वर्ग में क्या-क्या होगा? बाबा कहते बच्चे वह आगे चलकर देखना। पहले तुम बाप को जानो, पतित से पावन बनने की धुन में रहो। स्वर्ग में जो होना होगा सो होता रहेगा। तुम पावन ऐसा बनो जो बाप का पूरा वर्सा मिल जाए नई दुनिया का। बाकी बीच में क्या होता है, यह भी आगे चलकर देखना है। तो यह बातें सब याद रखनी चाहिए। न याद रहने के कारण समय पर समझते नहीं, भूल जाते हैं। बच्चों को कर्म भी अच्छे करने हैं। बाप की याद में रहने से बुरा काम होगा ही नहीं। बहुत बुरे कर्म भी करते हैं। ऐसे थोड़ेही सिर्फ इसी ब्राह्मणी का अच्छा लगता है। वह ब्राह्मणी गई तो खुद भी खलास। ब्राह्मणी के कारण मर जाते हैं। गोया बाप से वर्सा लेने से मरे। यह भी बदकिस्मती कही जाती है। कई बच्चे एक दो के नाम रूप में फँस मरते हैं। यहाँ तुम्हारा जिस्मानी प्यार नहीं होना चाहिए। निरन्तर शिवबाबा को याद करना है। कोई से भी लेना-देना नहीं है। बोलो, हमको क्यों देते हो? तुम्हारा योग तो शिवबाबा से है ना। जो डायरेक्ट नहीं देते, उनका शिवबाबा के पास जमा नहीं होता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है तो उनके द्वारा सब कुछ करना है। बीच में कोई खा गया तो शिवबाबा के पास तो जमा नहीं हुआ। शिवबाबा को देना है तो थ्रू ब्रह्मा। सेन्टर भी थ्रू ब्रह्मा ही खोलो। आपेही सेन्टर खोलते हैं तो वह थोड़ेही सेन्टर हुआ। बापदादा दोनों इकट्ठे हैं। इनके हाथ आया गोया शिवबाबा के हाथ आया। कितने सेन्टर्स हैं जिनका कोई समाचार ही नहीं। लिखना चाहिए शिवबाबा आपके सेन्टर का यह पोतामेल है। सेठ के पास पोतामेल आना चाहिए ना। बहुतों का शिवबाबा के पास जमा नहीं होता है। यह भी अक्ल नहीं है, भल ज्ञान बहुत है परन्तु युक्ति नहीं आती है। बस हमने सेन्टर खोला। तुमने जिसको दिया, उसने सेन्टर खोला। वह शिवबाबा ने थोड़ेही खोला। वह सेन्टर फिर जोर भी नहीं भरता है। सेन्टर खोलना हो तो शिवबाबा के थ्रू। शिवबाबा हम यह देते हैं, इसमें लगा देना। बच्चे भूलें बहुत करते हैं। योग में बहुत कच्चे हैं। अच्छा।

○ कहते हैं और कोई भी बात मत करो, इसमें बहुत टाइम वेस्ट करते हो। फलाना ऐसे है, वह ऐसा करता है... उसे ईविल कहा जाता है। दुनिया की बात अलग है, तुम्हारा तो एक-एक सेकेण्ड का टाइम बहुत वैल्युबुल है। तुम कभी भी ऐसी बातें नहीं सुनो, नहीं करो। इससे तो तुम बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारी बहुत कमाई है। जहाँ तहाँ बाप का परिचय जाकर दो। यही रूहानी सर्विस करते रहो। सच्चे-सच्चे महावीर तुम हो। बस सारा दिन यही तात रहे– कोई हो जिसे यह रास्ता बतायें। बाप कहते हैं-मुझ अल्फ को याद करो तो बे बादशाही मिल जायेगी। कितना सहज है।

○ आत्मा कहती है इस पुरानी दुनिया में बाकी थोड़ा टाइम है। काम उतार देना है। ख्यालात कोई भी उतार देने चाहिए। बाबा जानते हैं अनेक प्रकार के ख्यालात आयेंगे। धन्धे के ख्यालात आयेंगे। भक्ति मार्ग में भक्ति करते समय ग्राहक, धंधाधोरी याद पड़ता है तो फिर अपने को चुटकी से काटते हैं। हम नारायण की याद में बैठा हूँ फिर यह बातें याद क्यों आई! तो यहाँ भी ऐसे होता है। जब इस रूहानी सर्विस में अच्छी रीति लग जाते हैं तो फिर समझाया जाता है– अच्छा छोड़ो धन्धेधोरी को। बाबा की सर्विस में लग जाओ। कहते हैं छोड़ो तो छूटे । देह-अभिमान छोड़ते जाओ। सिर्फ बाप को याद करो तो बन्दर से मन्दिर लायक बन जायेंगे। भ्रमरी का, कछुओं का भी सब मिसाल बाप देते हैं जो फिर भक्ति मार्ग में वो लोग दृष्टान्त देते हैं। अभी तुम जानते हो कीड़े कौन हैं। तुम हो ब्राह्मणियाँ। तुम भूँ-भूँ करती हो। यह दृष्टान्त अभी का है। वह बता न सकें। त्योहार आदि सब इस समय के हैं। सतयुग त्रेता में कोई त्योहार होता नहीं। यह सब है भक्ति मार्ग के। अब देखो कृष्ण जयन्ती थी। कृष्ण मिट्टी का बनाया, उनकी पूजा की फिर जाकर लेक में डुबो दिया।

- बाप कहते हैं– और सभी बातें छोड़ मुझे याद करो और वर्से को याद करो। चलते-फिरते यह याद रहने से खुशी भी रहेगी। परन्तु यह याद ठहरती क्यों नहीं हैं। तुम्हारी तो गैरन्टी है– बाबा हम आपके बनेंगे तो हमारा और कोई से ममत्व नहीं रहेगा। हम आपकी मत पर ही चलूँगा। बाप भी कहते हैं श्रीमत पर न चलने से भूलें होती रहेंगी। श्रीमत पर चलने से खुशी का पारा चढ़ेगा। आत्मा को अतीन्द्रिय सुख मिलता है तो कितनी खुशी होती है। आत्मा जानती है परमपिता परमात्मा ने हमको राज्य भाग्य दिया था, जो 84 जन्म लेते-लेते गँवा दिया है फिर बाप दे रहे हैं। तो अपार खुशी होनी चाहिए ना। अन्दर की खुशी भी दिखाई पड़ती है ना।

- अब हमने समझा तो सब है फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की मेहनत भी करनी है। उसके लिए तीव्र पुरूषार्थ करने लग पड़ेंगे क्योंकि समझते हैं टाइम थोड़ा है। जितना हो सके पुरूषार्थ में लग जायें। मौत से पहले हम पुरूषार्थ कर लेवें। वह अपना चार्ट रखते होंगे। पढ़ाई तो सहज है। बाकी है याद की बात। गाया भी हुआ है– राम सुमिर प्रभात मोरे मन....आत्मा कहती है हे मेरे मन, राम का सिमरण करो। भक्ति मार्ग में तो यह भी किसको पता नहीं है कि राम कौन है। वह रघुपति राघौ राजाराम कह देते हैं। कितनी गड़बड़ कर दी है।

- यह तो सच्चा ड्रामा है। सच-सच करते हैं। परन्तु तुमको कोई दु:ख के आंसू नहीं आने चाहिए। साक्षी होकर तुमको देखना है। जानते हो यह ड्रामा है, इसमें रोने की क्या दरकार है। पास्ट इज पास्ट। कब विचार भी नहीं करना चाहिए। तुम आगे बढ़ते बाप को याद करते रहो और सबको रास्ता बताते रहो। बाबा तो राय देते रहते हैं। त्रिमूर्ति के चित्र तुम्हारे पास बहुत हैं। क्लीयर लिखा हुआ है वह शिवबाबा यह वर्सा। तुम बच्चों को यह चित्र देखने से बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा से हमको विष्णुपुरी का वर्सा मिलता है। पुरानी दुनिया तो खत्म होनी है। बस यह चित्र सामने रख दो, इसमें खर्च तो कुछ भी नहीं है। झाड़ भी बहुत अच्छा है। रोज सवेरे उठकर विचार सागर मंथन करो। अपना टीचर आपेही बनकर पढ़ो। बुद्धि तो सबको है। चित्र अपने घर में रख

दो। हर एक चित्र में फर्स्टक्लास ज्ञान है। कहते हैं विनाश होगा तो तुम्हारी बाप के साथ प्रीत है ना। शिवबाबा दलाल बन हमारी सगाई कराते हैं। जब सतगुरू मिला दलाल के रूप में तो कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझने-समझाने की मिली हैं। फिर भी माया का पाम्प बहुत है। 100 वर्ष पहले यह बिजली, गैस आदि थोड़ेही थी। आगे वाइसराय आदि 4 घोड़े की, 8 घोड़े की गाड़ी में आते थे। आगे साहूकार लोग गाड़ी में चढ़ते थे। अब तो विमान आदि निकल पड़े हैं। आगे यह कुछ नहीं था। 100 वर्ष के अन्दर यह क्या हो गया है। मनुष्य समझते हैं कि यही स्वर्ग है। अब तुम बच्चे जानते हो स्वर्ग तो स्वर्ग है। यह सब पाई पैसे की चीजें हैं, इनको आर्टीफिशल पाम्प कहा जाता है। अब तुम बच्चों को यही एक फुरना चाहिए कि हम बाप को याद करें, जिसमें ही माया विघ्न डालती है। बाबा अपना मिसाल भी बतलाते हैं। भोजन खाता हूँ, बहुत कोशिश करता हूँ– याद में रह खाऊं फिर भी भूल जाता हूँ। तो समझता हूँ बच्चों को तो मेहनत बहुत होती होगी। अच्छा बच्चे तुम ट्राई करके देखो। बाबा की याद में रहकर दिखाओ। देखो सारा समय याद ठहर सकती है। अनुभव सुनाना चाहिए। बाबा सारा समय याद ठहर नहीं सकती है। बहुत किसम-किसम की बातें याद आ जाती हैं। बाबा खुद अपना अनुभव बताते हैं। बाबा ने जिसमें प्रवेश किया यह भी पुरूषार्थी है, इन पर तो बड़े झंझट हैं। बड़ा कहलाना, बड़ा दु:ख पाना। कितने समाचार आते हैं। विकारों के कारण कितना मारते हैं। घर से निकाल देते हैं।

○ सारी मेहनत याद और आप समान बनाने पर है इसलिए बाप कहते हैं जितना हो सके सर्विस करना सीखो। है बहुत सहज। पिछाड़ी में भी तुम बहुत साक्षात्कार करेंगे। यह भी तुमने साक्षात्कार किया है। चोर लूटने आते हैं, फिर तुम्हारी शक्ति का रूप देख भाग जाते हैं। वह सब बातें पिछाड़ी की हैं। चोर लूटने तो आयेंगे, तुम बाप की याद में खड़े होंगे तो वह एकदम भाग जायेंगे। अब बाप कहते हैं बच्चे खूब पुरूषार्थ करो। मुख्य बात है पवित्रता की। एक जन्म पवित्र

बनना है। मौत तो सामने खड़ा है। कुदरती आपदायें बहुत कड़ी आयेंगी, जिसमें सब खत्म हो जाएं। शिवबाबा इन द्वारा समझाते हैं, इनकी आत्मा भी सुनती है। यह बाबा सब बतलाते हैं। शिवबाबा को तो अनुभव नहीं है। बच्चों को अनुभव होता है। माया के तूफान कैसे आते हैं। पहले नम्बर में यह है, तो इनको सब अनुभव होगा। तो इसमें डरना नहीं है, अडोल रहना है। बाप की याद में रहने से ही शक्ति मिलती है। कोई बच्चे चार्ट लिखते हैं फिर चलते-चलते बन्द कर देते हैं। बाबा समझ जाते है थक गया है। पारलौकिक बाप जिससे इतना बड़ा वर्सा मिलता है ऐसे बाप को कभी पत्र भी नहीं लिखते हैं। याद ही नहीं करते! ऐसे बाप को तो कितना याद करना चाहिए। शिवबाबा हम आपको बहुत याद करते हैं। बाबा आपकी याद बिगर हम भला कैसे रह सकते हैं! जिस बाप से विश्व की बादशाही मिलती है, ऐसे बाप को कैसे भूलेंगे। एक कार्ड लिखा वह भी तो याद किया ना। लौकिक बाप भी बच्चों को चिठ्ठी लिखते हैं– नूरे रत्न.... स्त्री, पति को कैसे चिठ्ठी लिखती है! यहाँ तो दोनों सम्बन्ध हैं। यह भी याद करने की युक्ति है। कितना मीठा बाबा है! हमसे क्या मांगते हैं? कुछ भी नहीं। वह तो दाता है, देने वाला है ना। यह लेने वाला नहीं। कहते हैं स्वीट चिल्ड्रेन मैं आया हूँ, भारत को खुशबूदार बगीचा बनाकर जाता हूँ।

○ वह निराकार है ना। देवताओं को भी मनुष्य कहा जाता है। परन्तु वह दैवीगुणों वाले मनुष्य हैं इसलिए उनको देवता कहा जाता है। तुमको अभी ज्ञान मिला है। ज्ञान मार्ग में अवस्था बड़ी मजबूत रखनी है। जितना हो सके बाप को याद करना है। विदेही बनना है। फिर देह से प्यार ही क्यों करें! बाबा तुमको कहते हैं शिवबाबा को याद करो फिर इनके पास आओ। मनुष्य तो समझते हैं यह दादा से मिलने जाते हैं। यह तो तुम जानते हो शिवबाबा को याद कर हम उनसे मिलते हैं। वहाँ तो हैं ही निराकारी आत्मायें, बिन्दी। बिन्दी से तो मिल न सकें। तो शिवबाबा से कैसे मिलेंगे इसलिए यहाँ समझाया जाता है, हे आत्मायें अपने को आत्मा समझ बुद्धि में यह रखो कि हम शिवबाबा से मिलते हैं। यह तो बड़ा गुह्य राज है ना। कइयों को शिवबाबा की

याद नहीं रहती है। बाबा समझाते हैं हमेशा शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा आपसे मिलने आते हैं। बस आपके बने हैं। शिवबाबा इसमें आकर ज्ञान सुनाते हैं। वह भी निराकार आत्मा है, तुम भी आत्मा हो। एक बाप ही है जो बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। सो तो बुद्धि से याद करना है। हम बाप के पास आये हैं। बाबा इस पतित शरीर में आये हैं। हम सामने आने से ही निश्चय कर देते हैं, शिवबाबा हम आपके बने हैं। मुरलियों में भी यही सुनते हो– मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम जानते हो यह वही पतित-पावन बाप है। सच्चा-सच्चा सतगुरू वह है। अब तुम पाण्डवों की है परमपिता परमात्मा से प्रीत बुद्धि। बाकी सभी की तो कोई न कोई के साथ विपरीत बुद्धि है। शिवबाबा के जो बनते हैं उन्हों को तो खुशी का पारा बड़ा जोर से चढ़ा रहना चाहिए। जितना समय नजदीक आता है, उतनी खुशी होती है। हमारे अब 84 जन्म पूरे हुए। अब यह अन्तिम जन्म है। हम जाते हैं अपने घर। यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी है, इसमें क्लीयर है। तो बच्चों को सारा दिन बुद्धि चलानी चाहिए। चित्र बनाने वालों को तो बहुत विचार सागर मंथन करना है, जो हेड्स हैं उन्हों का ख्याल चलना चाहिए। तुम तो चैलेन्ज देते हो– सतयुगी श्रेष्ठाचारी दैवी राज्य में 9 लाख होंगे।

○ शिव और शंकर दिखाते हैं। क्या शिव ने शंकर में बैठ कथा सुनाई? कुछ भी समझते नहीं हैं, भक्ति मार्ग वाले अभी तक तीर्थ करने जाते रहते हैं। कथा भी वास्तव में बड़ी नहीं है। असुल है मनमनाभव। बस, बीज को याद करो। ड्रामा के चक्र को याद करो। जो ज्ञान बाबा के पास है वह ज्ञान हमारी आत्मा में भी है। वह भी ज्ञान सागर, हम आत्मा भी मास्टर ज्ञान सागर बनते हैं। नशा चढ़ना चाहिए ना। वह हम भाइयों (आत्माओं) को सुनाते हैं। सुनायेंगे तो शरीर द्वारा ही। इसमें संशय नहीं लाना चाहिए। बाप को याद करते-करते सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे, ममत्व मिटता जायेगा। कोई का नाम-मात्र प्यार होता है। हमारा भी ऐसा है। अभी तो हम जाते हैं सुखधाम। यह तो जैसे सब मरे पड़े हैं, इनसे दिल क्या

लगानी है। शान्तिधाम में जाकर फिर सुखधाम में आकर राज्य करेंगे। इसको कहा जाता है पुरानी दुनिया से वैराग्य। बाप कहते हैं– इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सब खत्म हो जाने का है। विनाश के बाद स्वर्ग को देखेंगे। अब तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना चाहिए। योग में रह कोई बात करेंगे तो उनको बड़ी कशिश होगी। यह ज्ञान ऐसा है जो बाकी सब भूल जाता है।

○ नर्कवासी मनुष्य नर्क में ही रहने के लिए प्लैन बनाते हैं। बाबा का प्लैन स्वर्ग बनाने का चल रहा है। तो तुमको कितनी न खुशी होनी चाहिए। गाते भी हो तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। वह तो पुरूषार्थ कर लेना है ना। बाप कहते हैं जो चाहिए सो लो। चाहे विश्व के मालिक राजा रानी बनो, चाहे फिर दास-दासी बनो। जितना पुरूषार्थ करेंगे। बाप सिर्फ कहते हैं एक तो पवित्र बनो और हर एक को बाप का परिचय देते रहो। अल्फ को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी। बाप को याद करने में ही माया बहुत विघ्न डालती है। बुद्धियोग तोड़ देती है। बाप कहते हैं, जितना मुझे याद करेंगे तो पाप भी भस्म होंगे और ऊंच पद भी पायेंगे इसलिए भारत का प्राचीन योग मशहूर है। बाप को लिबरेटर भी कहते हैं। 21 जन्म के लिए बाप तुम्हें दु:ख से लिबरेट करते हैं।

○ बच्चे अब मौत सामने खड़ा है, अब जल्दी-जल्दी करो। याद की रफ्तार बढ़ाओ। मोस्ट स्वीट बाबा को जितना याद करेंगे उतना वर्सा मिलेगा। तुम बहुत धनवान बनेंगे। बाप तुमको ऐसा नहीं कहते हैं कि माथा टेको। मेले मलाखड़े में जाओ। नहीं। घर में बैठे बाप और वर्से को याद करो। बस। बाप है बिन्दी। उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। सुप्रीम सोल, सबसे ऊंच ते ऊंच है।

○ आगे चल पूरा पहचानेंगे तब श्रीमत पर चलेंगे। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वह आगे चल समझेंगे। अभी समझते जाते हैं। पूरा समझ लें तो बाकी क्या चाहिए! रहना भी अपने गृहस्थ में है परन्तु दुश्मन

माया ऐसी है जो श्रीमत पर चलने से रोक लेती है। कहते हैं बाबा माया के तूफान बहुत आते हैं। माया आपकी याद भुला देती है। हाँ पुरूषार्थ जोर से करते-करते फिर आखरीन माया भी थक जायेगी। माला भी 8 की है। मुख्य 8 रत्न हैं। 8 तो हैं– जोड़ी। नवाँ रत्न बीच में शिवबाबा को रखते हैं। कोई लाल बनाते हैं, कोई सफेद। अब शिवबाबा तो है बिन्दी। बिन्दी लाल नहीं होती। बिन्दी तो सफेद ही होती है।

○ बच्चे बैठे हैं बाप की याद में। ऐसा तो कोई सतसंग नहीं, जहाँ कोई बैठे और कहे कि सब बच्चे बैठे हैं बाप की याद में। यह एक ही स्थान है। बच्चे जानते हैं बाबा ने डायरेक्शन दिया है कि जब तक जीते रहो तब तक बाप को याद करते रहो। यह पारलौकिक बाप ही कहते हैं– हे बच्चों। सब बच्चे सुन रहे हैं। न सिर्फ तुम बच्चे परन्तु सभी को कहते हैं। बच्चे बाप की याद में रहो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप हैं, जिसके कारण कट चढ़ी हुई है, वह सब निकल जायेगी और तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। तुम्हारी आत्मा असुल थी ही सतोप्रधान फिर पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बन गई है। यह महावाक्य सिवाए बाप के कोई कह न सके। लौकिक बाप के करके दो-चार बच्चे होंगे। उन्हों को कहेंगे राम-राम कहो या पतित-पावन सीताराम कहो अथवा कहेंगे श्रीकृष्ण को याद करो। ऐसे नहीं कहेंगे हे बच्चों, अब मुझ बाप को याद करो। बाप तो घर में है। याद करने की बात ही नहीं। यह बेहद का बाप कहते हैं जीव की आत्माओं को। आत्मायें ही बाप के सामने बैठी हुई हैं। आत्माओं का बाप एक ही बार आते हैं, 5 हजार वर्ष के बाद आत्मायें और परमात्मा मिलते हैं। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प आकर यह पाठ पढ़ाता हूँ। हे बच्चों, तुम मुझे याद करते आये हो– हे पतित-पावन आओ। मैं आता हूँ जरूर। नहीं तो याद कहाँ तक करते रहेंगे! लिमिट तो जरूर होगी ना! मनुष्यों को यह पता नहीं है कि कलियुग की लिमिट कब पूरी होती है। यह भी बाप को ही बताना पड़े। बाप बिगर तो कोई कहेंगे नहीं कि हे बच्चे, मुझे याद करो। मुख्य है ही याद की बात। रचना के चक्र को भी याद करना बड़ी बात नहीं है। सिर्फ बाप को याद करने में मेहनत लगती है।

○ बाबा ने समझाया है अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो, बस, और कुछ बात ही नहीं करना चाहिए। जिनका अभ्यास नहीं, उनको तो बात करनी भी नहीं चाहिए। नहीं तो बी.के. का नाम बदनाम कर देते हैं। अगर दूसरे धर्म वाले हैं तो समझाना चाहिए कि यदि तुम मुक्तिधाम में जाना चाहते हो तो अपने को आत्मा समझो, बाप को याद करो। अपने को परमात्मा नहीं समझो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे और मुक्तिधाम में चले जायेंगे। तुम्हारे लिए यह मनमनाभव का मंत्र ही बस है। परन्तु बात करने की हिम्मत चाहिए। शेरनी शक्तियां ही सर्विस कर सकती हैं। सन्यासी लोग बाहर में जाकर विलायत वालों को ले आते हैं कि चलो तुमको स्प्रीचुअल नॉलेज देवें। अब वह बाप को तो जानते ही नहीं। ब्रह्म को भगवान समझ कह देते, इसको याद करो। बस यह मंत्र दे देते हैं, जैसे किसी चिड़िया को अपने पिंजड़े में डाल देते हैं। तो ऐसे-ऐसे समझाने में भी टाइम लगता है। बाबा ने कहा था-हर एक चित्र के ऊपर लिखा हुआ हो शिव भगवानुवाच।

○ यह है विषय सागर | तुम अभी न रावण राज्य में हो, न राम राज्य में | तुम बीच में हो तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है | देखना है कहाँ तक हमारी वह भाई-भाई के दृष्टि की अवस्था रही? हम सब आत्मायें आपस में भाई-भाई हैं, हम इस शरीर से पार्ट बजाते हैं | आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है, हमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया है | अब बाप आये हैं, कहते हैं मामेकम् याद करो, अपने को आत्मा समझो | आत्मा समझने से भाई-भाई हो जाते हैं | यह बाप ही समझाते हैं | बाप के सिवाए और कोई का पार्ट ही नहीं | प्रेरणा आदि की बात नहीं | जैसे टीचर बैठ समझाते हैं, वैसे बाप बच्चों को समझाते हैं | यह विचार करने की बात है, इसमें समय भी देना पड़ता है | बाप ने धन्धा आदि करने के लिए तो कह दिया है

लेकिन याद की यात्रा भी जरुरी है | उसके लिए भी टाइम निकलना चाहिए | सर्विस भी सबकी भिन्न-भिन्न है | कोई बहुत टाइम निकाल सकते हैं | मैगजीन में भी युक्ति से लिखना है कि यहाँ ऐसे बाप को याद करना होता है | एक-दो को भाई-भाई समझना होता है |

○ बाप कहते हैं देही-अभिमानी बनो | देही-अभिमानी बनने से जो बाप समझाते हैं वही औरों को समझायेंगे | अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | बाप ही शिक्षा देंगे कि बच्चे बाहरमुखी नहीं होना चाहिए | अन्तर्मुखी होना है | भल कहाँ बाहरमुखी होना भी पड़े, फिर भी जितनी फ़ुर्सत मिले कोशिश कर अन्तर्मुखी होना चाहिए, तब ही पाप कटेंगे | नहीं तो न पाप कटेंगे, न ऊँच पद पायेंगे | जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं | सबसे जास्ती पाप ब्राह्मणों के हैं, उनमें भी नम्बरवार हैं | जो बहुत ऊँच बनते हैं, वही बिल्कुल नीच भी बनते हैं | जो प्रिन्स बनते हैं उनको ही फिर बेगर भी बनना है | ड्रामा को अच्छी रीति समझना है, जो पहले आये हैं वह पिछाड़ी में आयेंगे | जो पहले पावन बनते हैं वही पहले पतित बनते हैं | बाप कहते हैं मैं भी आता ही हूँ इनके बहुत जन्मों के अन्त में, सो भी जब वानप्रस्थ अवस्था है | इस समय छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है | बाप के लिए गायन भी है सर्व की सद्गति करने वाले | वह होती ही है पुरुषोत्तम संगमयुग पर | यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी याद रखना चाहिए | जैसे मनुष्यों को कलियुग याद है, संगमयुग सिर्फ़ तुमको याद है | तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं | बहुतों को तो अपना गोरख़धन्धा ही याद रहता है | बाहर से मुँह हटा हुआ हो तो धारणा भी हो जाए | एक कहावत है – अन्तकाल जो स्त्री सिमरे.....जो गीत वा श्लोक अच्छे-अच्छे हैं, जिनका हमारे ज्ञान से कनेक्शन है, वह रखने चाहिए | जैसे छी-छी दुनिया से जाना ही होगा | दूसरा, नैनहीन को राह दिखाओ......ऐसे-ऐसे गीत अपने पास रखने चाहिए |

○ तुम जानते हो ऐसे बेहद के बाप को हम घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं | बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे | फिर भी भूल जाते हैं | अरे, ऐसा बाप, जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, उनको तुम भूलते क्यों हो? माया के तूफ़ान आयेंगे फिर भी तुम कोशिश करते रहो | बाप को याद किया तो वर्सा मिल जायेगा | स्वर्गवासी देवतायें तो सब बन जाते हैं | बाकी सजायें खाकर फिर बनते हैं | फिर पद भी बहुत कम हो जाता है | यह सब नई बातें हैं | ध्यान में तब आयेंगी जब बाप को, टीचर को याद करते रहेंगे | तुम टीचर को भी भूल जाते हो | बाप कहते हैं जब तक मैं हूँ, विनाश का समय आये और सब कुछ इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जाए तब तक पढ़ाई चलती रहेगी | तुम कहेंगे पढ़ाया तो सब कुछ है और फिर क्या पढ़ायेंगे? बाबा कहते हैं नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती रहती हैं | तुम सुनकर खुश होते हो ना | तो अच्छी रीति पढ़ो और सुदामा मिसल जो ट्रान्सफर करना है वह भी करते रहो | यह भी बहुत बड़ा व्यापार है | बाबा व्यापार में बहुत फ्राकदिल थे | रूपये से एक आना धर्माऊ निकालते थे | भल घाटा पड़ता था क्योंकि सबसे पहले हमको डालना पड़ता था | कहते थे आप जितना जास्ती भरेंगे आपको देख सब भरेंगे | तुमको कुम्भकरण की नींद से जगाने का कितना पुरुषार्थ करा रहे हैं, तो भी तुम जगते नहीं हो | तो बच्चों को एक बाप को ही याद करना है | सब-कुछ बाप को दे दिया तो ज़रूर एक बाप ही याद आयेगा | तुम बच्चे जास्ती याद कर सकते हो, जिनके माथे मामला......कितनी बान्धेलियों के समाचार आते हैं | बाबा को ख्याल होता है – बिचारियां मार खाती हैं | पति कितना सताते हैं | भल समझते हैं ड्रामा में है, हम कर ही क्या सकते हैं | कल्प पहले भी अबलाओं पर अत्याचार हुए थे | नई दुनिया तो स्थापन होनी ही है |

○ बाप समझाते हैं 5 हज़ार वर्ष के बाद जब संगमयुग आता है तब मैं आता हूँ | अब तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | जितना याद करेंगे उतना खामियाँ निकलती जायेंगी | तुम जब सतोप्रधान थे तो तुम्हारे में कोई भी खामी नहीं थी | तुम अपने को देवी-देवता कहलाते थे | अब वह खामियाँ कैसे निकलें? आत्मा को ही अशान्ति होती है | अब अपनी जांच करनी है कि हम अशान्त क्यों बने? जब हम भाई-भाई थे तो हमारा बहुत प्रेम था | अब फिर वही बाप आया है | कहते हैं अपने को आत्मा भाई-भाई समझो | एक-दो से प्रेम रखो | देह-अभिमान में आने से एक-दो की खामियाँ निकालते हो | बाप कहते हैं तुम अपना पुरुषार्थ करो ऊँच पद पाने का | तुम जानते हो हमको बाप ने ऐसा वर्सा दिया था जो हमको भरपूर कर दिया | अब फिर बाप आया हुआ है तो क्यों न हम उनकी मत पर चलकर फिर से पूरा वर्सा लेवें | हम ही देवता थे फिर 84 जन्म लिए | तुम मीठे-मीठे बच्चे कितने अडोल थे | कोई मतभेद नहीं था | किसकी निन्दा आदि नहीं करते थे | अभी कुछ न कुछ कमियां हैं, वह सब निकाल देनी हैं | हम सब भाई-भाई हैं | एक बाप को ही याद करना है | यह ओना लगा हुआ है कि हम सतोप्रधान बन जायें | फलाना ऐसा है, इसने ऐसा किया – इन सब बातों को भूल जाना है | बाप कहते हैं यह सब छोड़ो, अपने को आत्मा समझो | अब सतोप्रधान बनने के लिए पुरुषार्थ करो | देह-अभिमान में आने से ही अवगुण देखा जाता है | अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो | भाई-भाई देखो तो गुण ही गुण दिखाई पड़ेगा | सबको गुणवान बनाने की कोशिश करो | कोई उल्टा-सुल्टा कुछ भी करे |

○ जो सर्विसएबुल बच्चे हैं वह बहुत मीठे हैं | उनका रजिस्टर अच्छा है | अगर रजिस्टर अच्छा नहीं है तो वह उछलते नहीं हैं | सारा मदार है पढ़ाई, योग और दैवी गुणों पर | बच्चे जानते हैं बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं | पहले हम शुद्र वर्ण के थे, अब ब्राह्मण वर्ण के हैं | प्रजापिता

ब्रह्मा के बच्चे हम ब्राह्मण हैं, यह तो बहुतों को भूल जाता है | जबकि तुम बाप को याद करते हो तो ब्रह्मा को भी याद करना पड़े | हम ब्राह्मण कुल के हैं – यह भी नशा चढ़े | भूल जाते तो यह नशा नहीं चढ़ता है कि हम ब्राह्मण कुल के हैं फिर देवता कुल के बनेंगे | ब्राह्मण कुल किसने बनाया? ब्रह्मा द्वारा मैं तुमको ब्राह्मण कुल में ले आता हूँ | ब्राह्मणों की यह डिनायस्टी नहीं है | छोटा-सा कुल है | अपने को अब ब्राह्मण समझेंगे तो देवता भी बनेंगे | अपने धन्धे में लग जाने से सब-कुछ भूल जाते हैं | ब्राह्मणपन भी भूल जाता है | धन्धे से फ़ारिग हुए फिर पुरुषार्थ करना चाहिये | कोई-कोई को धन्धे में जास्ती ध्यान देना पड़ता है | काम पूरा हुआ फिर अपनी बात | याद में बैठ जाओ | तुम्हारे पास बैज बहुत अच्छा है, इसमें लक्ष्मी-नारायण का चित्र भी है, त्रिमूर्ती भी है | बाबा हमें ऐसा बनाते हैं! बस, यही मन्मनाभव है | कोई को आदत पड़ जाती है, कोई को नहीं पड़ती है | भक्ति तो अब पूरी हुई | अब बाप को याद करना है | अब बेहद का बाप तुमको बेहद का वर्सा देते हैं, तो ख़ुशी होती है | किसको अच्छी लगन लग जाती है, किसको बहुत कम | है बहुत सहज |

○ बच्चे अपने को आत्मा समझकर बैठो और बाप को याद करो | बाबा पूछते हैं जब भी कहाँ सभा में भाषण करते हो, तो घड़ी-घड़ी यह पूछते हो कि तुम अपने को आत्मा समझते हो या देह? अपने को आत्मा समझकर यहाँ बैठो | आत्मा ही पुनर्जन्म में आती है | अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो | बाप को याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, इसको योग-अग्नि कहा जाता है | निराकार बाप निराकारी बच्चों को कहते हैं – मुझे याद करने से तुम्हारे पाप कट जायेंगे और तुम पावन बन जायेंगे | फिर तुम मुक्ति-जीवनमुक्ति को पायेंगे | सभी को मुक्ति के बाद जीवनमुक्ति में आना है ज़रूर | तो घड़ी-घड़ी यह कहना पड़े कि अपने को आत्मा निश्चय करके बैठो | भाइयों और बहनों, अपने को आत्मा समझ

बैठो और बाप को याद करो | यह फ़रमान बाप ने ही दिया है | यह है याद की यात्रा | बाप कहते हैं मेरे साथ बुद्धि का योग लगाओ तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे | यह घड़ी-घड़ी तुम याद करायेंगे, समझायेंगे, तब समझेंगे कि आत्मा अविनाशी है, देह विनाशी है | अविनाशी आत्मा ही विनाशी देह धारण कर पार्ट बजा एक शरीर छोड़ फिर दूसरा लेती है | आत्मा का स्वधर्म तो शान्ति है | वह अपने स्वधर्म को भी नहीं जानते हैं | अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे | मूल बात यह है | पहले-पहले तुम बच्चों को यही मेहतन करनी है | बेहद का बाप आत्माओं को कहते हैं, इसमें कोई शास्त्र उठाने की दरकार नहीं | तुम गीता का मिसाल देते हो तो भी कहते हैं तुम सिर्फ़ गीता उठाते हो, वेदों का नाम क्यों नहीं लेते हो | बाबा ने कहा – उनसे पूछो वेद किस धर्म का शास्त्र है?

○ भक्ति और ज्ञान में बहुत फ़र्क है | भक्ति के कितने अच्छे-अच्छे गीत गाते हैं | परन्तु किसका कल्याण नहीं करते हैं | कल्याण तो है ही अपने स्वधर्म में टिकने में और बाप को याद करने में | तुम्हारा याद करना ऐसा ही है जैसे लाइट हाउस फिरता है | स्वदर्शन को ही लाइट हाउस कहते हैं | तुम बच्चे दिल अन्दर समझते हो बापदादा से हमें स्वर्ग का वर्सा मिलना है | यह है ही सत्य नारायण की कथा, नर से नारायण बनने की | बाप समझाते हैं तुम्हारी आत्मा जो तमोप्रधान बनी है, उनको सतोप्रधान बनना है | सतयुग में सतोप्रधान थे अब फिर सतोप्रधान बनाने बाप आया है | बाप कहते हैं मुझे याद करने से ही तुम सतोप्रधान बन जायेंगे | बाप ने ही गीता सुनाई थी | अब तो मनुष्य सुनाते हैं, कितना फ़र्क हो गया है | भगवान् तो भगवान् है, वही मनुष्य से देवता बनाते हैं | नई दुनिया में हैं ही पवित्र देवतायें | बेहद का बाप है ही नई दुनिया का वर्सा देने वाला | बाप को याद करते रहो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी | तुम जानते हो – बाप आते हैं संगमयुग पर, पुरुषोत्तम बनाने के लिए | अब यह 84 का चक्र

पूरा होता है, फिर शुरू होगा | यह भी ख़ुशी होनी चाहिए | प्रदर्शनी में जो लोग आते हैं, उनको भी पहले शिवबाबा के चित्र के सामने लाकर खड़ा करो | बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम यह बन जायेंगे | फादर से वर्सा ही सतयुग का मिलता है | भारत सतयुग था, अब नहीं है फिर बनना है इसलिए बाप और बादशाही को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी | यह है सच्चा बाप, इनके बच्चे बनने से तुम सचखण्ड के मालिक बन जायेंगे | पहले-पहले अल्फ को पक्का कराओ | अल्फ बाबा, बे बादशाही | बाप को याद करो तो याद से ही विकर्म विनाश होंगे और तुम स्वर्ग में चले जायेंगे | कितना सहज है | जन्म-जन्मान्तर भक्ति की बातें सुनते-सुनते बुद्धि को माया का ताला लग गया है | बाप आकर चाबी से ताला खोलते हैं | इस समय सभी के कान जैसे बन्द हैं | पत्थरबुद्धि हैं | तुम लिखते भी हो – शिवबाबा याद है? स्वर्ग का वर्सा याद है? बादशाही याद करने से मुख मीठा तो होगा ना | बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का कितना उपकार करता हूँ | तुम तो अपकार ही करते आये हो | वह भी ड्रामा में नूँध है, किसका दोष नहीं है |

○ बाबा कहते हैं देहली में सेवा का घेराव डालो, विस्तार करो | परन्तु अभी तक किसी को घायल किया नहीं है, घायल करने में योगबल चाहिए | योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो | साथ-साथ ज्ञान भी है | योग से ही तुम किसको कशिश कर सकेंगे | अभी बच्चे भाषण भल अच्छा करते हैं परन्तु योग की कशिश कम है | मुख्य बात है योग की | तुम बच्चे योग से अपने को पवित्र बनाते हो | तो योगबल बहुत चाहिए | उसकी बहुत कमी है | अन्दर ख़ुशी में नाचना चाहिए, यह ख़ुशी का डांस है | इस ज्ञान-योग से तुम्हारे अन्दर डांस होती है | बाप की याद में रहते-रहते तुम अशरीरी बन जाते हो | ज्ञान से अशरीरी होना है, इसमें गुम होने की बात नहीं, बुद्धि में ज्ञान चाहिए | अब घर जाना है फिर राजाई में आयेंगे | बाप ने विनाश और

स्थापना का साक्षात्कार भी कराया है | यह दुनिया सारी जली पड़ी है, हम नई दुनिया के लायक बन रहे हैं | अब घर जाना है इसलिए शरीर में भी कोई ममत्व नहीं रहना चाहिए | इस शरीर से, इस दुनिया से उपराम रहना चाहिए | सिर्फ़ अपने घर को और राजधानी को याद करना है | कोई भी चीज़ में आसक्ति नहीं हो | विनाश भी कड़ा होने वाला है | जब विनाश होने लगेगा तो तुमको ख़ुशी होगी – बस, हम ट्रान्सफर हुए कि हुए | पुरानी दुनिया की कोई भी चीज़ याद आई तो फेल | बच्चों के पास कुछ है नहीं तो याद क्या आयेगा? बेहद की सारी दुनिया से ममत्व मिट जाए, इसमें मेहनत है | भाई-भाई की पक्की अवस्था भी तब रह सकती है जब देह-अभिमान टूट जाए | देह-अभिमान में आने से कुछ न कुछ घाटा पड़ता है | देही-अभिमानी होने से घाटा नहीं पड़ेगा | हम भाई को पढ़ाते हैं | भाई से बातें करते हैं, यह पक्की टेव (आदत) पड़ जाये | अगर स्कालरशिप लेनी है तो इतना पुरुषार्थ करना है | जब समझाते हो तब भी याद रहे कि हम सब भाई-भाई हैं | सब आत्मायें एक बाप के बच्चे हैं | सब भाईओं का बाप के वर्से पर हक है | बहन का भी भान न आये | इसको कहा जाता है आत्म-अभिमानी | आत्मा को यह शरीर मिला है, उसमें किसका नाम मेल का, किसका फ़ीमेल का पड़ा है | इनसे परे बाकी आत्मा है | तुम सबको चढ़ती कला का रास्ता बताते हो | एक बाप को याद करते रहो तो भी बहुत ख़ुशी होगी और विकर्म भी विनाश होंगे | बाप से वर्सा लेना बहुत सहज है | परन्तु बहुत बच्चे गफ़लत करते हैं |

- यह मुरली तो सब बच्चों के पास जायेगी। टेप में भी सुनेंगे। कहेंगे शिवबाबा ब्रह्मा तन से मुरली सुना रहे हैं अथवा बच्चियां सुनायेंगी तो कहेंगी शिवबाबा की मुरली सुनाते हैं तो बुद्धि एकदम वहाँ जानी चाहिए। वह सुख अन्दर में भासना चाहिए। मोस्ट बिलवेड बाबा हमको सदा सुखी मनुष्य से देवता बनाते हैं, तो उनकी याद बहुत रहनी चाहिए। परन्तु माया याद को

ठहरने नहीं देती। त्याग भी पूरा चाहिए। यह सब कुछ बाबा का है, यह अवस्था फर्स्टक्लास रहनी चाहिए। बहुत बच्चे हैं जो? श्रीमत लेते रहते हैं।

○ अभी पुरुषार्थ अच्छी तरह करना है। ऊंच पद अथवा अच्छा नम्बर लेना है तो मेहनत भी करनी है। भल धन्धा आदि भी करो वह टाइम छूट है। फिर भी टाइम बहुत मिलता है। अपना योग का चार्ट देखना चाहिए क्योंकि माया बहुत विघ्न डालती है। बाबा बच्चों को बार-बार समझाते हैं मीठे बच्चे, भूले-चूके भी ऐसे मोस्ट बिलवेड बाप वा साजन को फारकती कोई न देवे, इतना महामूर्ख कोई न बने। परन्तु माया बना देती है। अब आगे चलकर तुम देखेंगे जो कुर्बान जाते थे, बहुत अच्छी सर्विस करते थे उन्हों का भी माया क्या-क्या हाल कर देती है क्योंकि श्रीमत छोड़ देते हैं इसलिए बाबा कहते हैं ऐसा बड़े ते बड़ा महामूर्ख नहीं बनना।

○ बड़े-बड़े राजाओं के पास अन्दर महलों में मन्दिर रहते हैं। पूजा करते हैं। ऐसा कोई राजा नहीं होगा जिसके पास मन्दिर न हो। अब बच्चे जानते हैं शिवबाबा की श्रीमत पर चलना है। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है तब ही सो देवी-देवता बनेंगे। परन्तु श्रीमत पर भी चलते नहीं। बाबा कहते हैं कोई भी बात में कुछ मूँझो तो चिट्ठी लिखकर पूछो। बाप को याद करो। माया ऐसी है जो स्वर्ग स्थापन करने वाले परमपिता परमात्मा को याद करने नहीं देती। बाबा जानते हैं तूफान बहुत आयेंगे। परन्तु चिट्ठी लिख पूछना चाहिए - इस हालत ने क्या करें? बच्चे की शादी है-इस हालत में क्या करे? कोई मरा है-क्या करें? मत लेनी चाहिए। श्रेष्ठ बनना है तो श्रीमत पर चलना है। कृष्ण की मत तो हो न सके। कृष्ण पतित दुनिया में कैसे आ सकता है! कृष्ण की आत्मा खुद अन्तिम जन्म में राजयोग सीख रही है। सिर्फ कृष्ण की आत्मा है क्या? जो भी देवी-देवता घराने वाले हैं वह ब्राह्मण बने हैं। कदम-कदम श्रीमत पर चलना है। बाप कहते हैं जितना हो सके बाप को याद करते रहो। तुम्हारे पापों का बोझा बहुत है। भल कोई

गवर्मेंट सर्विस में हैं। आठ घण्टे गवर्मेंट की नौकरी है, बाकी जो समय है उसमें याद करो। कम से कम आठ घण्टा तुम मेरी सर्विस करो। बाप को याद करो, स्पदर्शन चक्र फिराओ, शंखध्वनि करो। कौन सी? सबको कहो-गहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रह करके बाप से वर्सा लो। बाप स्वर्ग रचते हैं तो स्वर्ग का वर्मा मिलना चाहिए। भारत ही स्वर्ग का मालिक बनता है। अभी तो नर्क का मालिक है। नर्क में दु :खी होते हैं तब बाप को याद करते हैं परन्तु जानते नहीं कि बाप क्या देगा। बाप के लिए कहते हैं सर्वव्यापी है, भित्तर-ठिक्कर में है। बाप कहते हैं-तुमने कितनी भूल की है। परन्तु यह भी ड़ामा में नूँथ है।

- अब पारलौकिक बाप से 21 जन्मों के लिए वर्सा मिलता है। कितनी कमाई जबरदस्त है! कितनी अच्छी बातें समझने की हैं! दिल भी होती है पुरुषार्थ करें परन्तु माया फिर तूफान में ला देती है। माया का तूफान लगने से दीवे बुझ जाते हैं। बात बिलकुल सहज है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है-यह है बुद्धि की बात। हमको बाप को याद करना है, शरीर का भान छोड़ देना है। तुम गुरू लोगों को याद करते हो। बहुत गुरू अपना चित्र बनाए शिष्यों को दे देते हैं-गले में डाल दो। ऐसे बहुत हैं। पति का भी चित्र निकाल गुरू का डाल देते हैं। बाबा कहते हैं यहाँ कोई चित्र डालने की बात नहीं। सिर्फ बाप को याद करना है। छोटे- बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। अब स्वीट होम जाना है जरूर। तो क्यों न हम प्रतिज्ञा करें पवित्र रहने की और याद में रहे तो विकर्म विनाश हों। कोई को भी दु :ख नहीं देना चाहिए। सबसे बड़ा दु :ख है काम कटारी चलाना। यह है ही कंसपुरी।

- जितना बाप को याद करेंगे उतना बुद्धिका ताला खुलता जायेगा। अगर विकार में गया तो एकदम ताला बन्द हो जायेगा। स्कूल छोड़ दिया तो फिर ज्ञान बुद्धि से एकदम निकल जायेगा

। पतित बना फिर धारणा हो न सके। मेहनत है। यह कॉलेज है - विश्व का मालिक बनने लिए।

○ जितना हो सके याद की यात्रा को बढ़ाओ। मुख से शिवबाबा, शिवबाबा कहना नहीं है। जैसे आशिक माशुक को याद करते हैं। एक बार देखा बस, बुद्धि में उनकी याद रहेगी। भक्ति में जो जिसको याद करते, जिसकी पूजा करते हैं उनका साक्षात्कार हो जाता है। परन्तु वह सब है अल्पकाल के लिए। भक्ति से नीचे ही उतरते आये हैं। अब तो मौत सामने खड़ा है। हाय-हाय के बाद ही जयजयकार होनी है। भारत मे ही रक्त की नदियाँ बहनी हैं। अब सब तमोप्रधान बन गये हैं फिर सबको सतोंप्रधान बनना है।

○ बच्चों को अन्तर्मुख बहुत रहना है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो - यह शिक्षा बाप बैठ देते हैं। यही शिक्षा तुम बच्चों को भी देनी है और कुछ भी बोलना नहीं है। समझानी देनी है घर गृहस्थ में ऐसे रहना है, यही है मन्मनाभव। यह है पहली-पहली प्याइंट। घर में क्रोध भी नहीं करना है। बाप ने समझाया है क्रोध के लिए कहा जाता है पानी का मटका भी सुखा देता है। क्रोध बहुत अशान्ति फैलाता है, दुश्मन है ना इसलिए तुम्हें शान्ति में रहना है। भोजन मिला, खाकर अपने धन्धे वा ऑफिस आदि में चले गये। सब कहते हैं शान्ति चाहिए। बच्चों को बताया गया है कि शान्ति का सागर तो एक ही बाप है, वह देने कैसे? बच्चों को डायरेक्शन देते हैं कि मुझे याद करो। मुख से कुछ भी बोलना नहीं है, अन्तर्मुख रहना है। बहुत मीठा बनना है। कडुवा नहीं बोलना है। कोई को दु :ख नहीं दो। क्रोध वाले शान्ति में, योग में रह नहीं सकते। तो देखना है हमारे में कोई भूत तो नहीं हैं? मोह का भूत, लोभ का भूत.... यह सब भूत हैं क्योंकि रावण की सेना है ना। देही- अभिमानी बनने के लिए बाप कितनी याद की यात्रा सिखलाते हैं। बहुत हैं जो पूरी रीति समझते नहीं। मूँझते हैं क्योंकि भक्ति की है ना, भक्ति है

देह- अभिमान की। उसमें चित्रों को ही याद करते हैं। आधाकल्प देह का अभियान रहता है। देह की पूजा करते आये हैं। बाहरमुखता होने के कारण अपने को आत्मा समझ नहीं सकते। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। कई कहते हैं सामने कोई चीज तो है नहीं, कैसे याद करें? तो समझाया जाता है कि बाप तो निराकार है ना। वह बेहद का बाप है, उनको याद नहीं करेंगे तो शान्ति कैसे मिलेगी। मुख से कुछ भी बोलना नहीं है। अन्दर में जानते हो ना, मैं आत्मा हूँ और परमपिता परमात्मा की सब आत्मायें औलाद हैं। बाप ही शान्ति का सागर है, वर्सा भी वहीं देंगे। बाप कहते हैं मुझे याद करने से एक तो शान्ति मिलेगी और याद से जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भी विनाश होंगे। बाप कोई इतना बड़ा लिंग नहीं है। जैसे तुम आत्मा छोटी हो वैसे बाप भी बिन्दी है। कहते हैं ओं गॉड फादर, हे परमपिता परमात्मा। यह कौन कहता है? शरीर तो नहीं कहता। आत्मा स्टार मिसल है। वह अपने बाप को याद करते हैं। वहाँ बड़ी चीज होती नहीं। जैसे आत्मा स्टार मिसल है, वैसे बाप भी स्टार मिसल है। आत्मा बड़ी छोटी होती नहीं। परमात्मा भी बड़ा छोटा नहीं होता। तो बाप कहते हैं मुझे याद करो और कहाँ भी बुद्धि को धक्का मत खिलाओ। कहते हैं ना बाहर में धक्का क्यों खाते हो? बाप भी कहते हैं अन्तर्मुख क्यों नहीं होते हो? भटकते क्यों हो? एक बाप की याद में रहो। यह जो कुछ देखते हो वह खत्म होना है। बाकी आत्मा अविनाशी है। आत्मा को शान्तिधाम में जाना है। अब बाप को याद करेंगे तब ही विकर्म विनाश होंगे और शान्तिधाम में जा सकेंगे। नहीं तो शान्तिधाम में जा नहीं सकेंगे। सभी कहते रहते हैं कि शान्ति कैसे मिले? यहाँ भी थोड़ी बहुत शान्ति के लिए आकर बैठते हैं। घरों में शान्ति नहीं रहती तो आश्रम पर जाते हैं। घर में सारा दिन बखेरा लगाते रहते तो शान्ति कैसे रहेगी? कुमारी है, कोई कुमार को याद किया तो कभी मन शान्त नहीं होगा। बुद्धि चलती रहेगी। उनकी याद आती रहेगी। बाप समझाते हैं 5 भूत कम नहीं है। कहा जाता है इनमें भूतों की प्रवेशता है। एक भूत नहीं है, पांचों भूतों की प्रवेशता है। भूतों ने ही कंगाल बनाया है। भूत निकल जाते हैं तो तुम विश्व के मालिक बन जाते हो।

इन 5 भूतों को भगाने के लिए बाप को पुकारते हैं कि बाबा आकर हमको शान्ति दो। भूतों की प्रवेशता है। पहला नम्बर काम, फिर क्रोध। वह भूत को भगाने वाले होते हैं ना। उनको कुछ मिलता नहीं है। अच्छा एक भूत को करके भगाते हैं। यह तो 5 भूत सबमें हैं। अपनी दिल से पूछो - कहाँ तक अपने को आत्मा समझते हैं और मोस्ट बिलवेड बाप को याद करते हैं? आधाकल्प के भूतों पर बाप ही जीत पहनाते हैं। इसमें अन्तर्मुखता, याद का बल चाहिए। सर्वशक्तिमान् बाप तुमको राज्य दिलाते हैं, जो आधाकल्प कोई छीन न सके। तुमको कितना सुख मिलता है! तो ऐसे बाप को बहुत प्यार से याद करना है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। दुनिया में यह कोई भी नहीं जानते कि स्वदर्शन चक्र क्या है अब तुम बच्चों को तो एकदम सम्पूर्ण पावन बनना है। शरीर भी याद न रहे तब पद पा सकेंगे। अभी तुम पत्थर से रत्न बनते हो।

○ तुम बच्चे ही यह जानते हो और ऐसे वैकुण्ठ में जाने लिए पुरुषार्थ करते हो। परन्तु तुम्हारा पुरुषार्थ बड़ा ठण्डा चींटी मार्ग का देखते हैं। माया किसको कान से, नाक से पकड़ती रहती है। किसको भी छोड़ती नहीं है। सोचते भी हैं ऐसे शिवबाबा को निरन्तर याद करें। जैसे पत्नि पति को कितनायाद करती है, यह तो पतियों का पति है, बाबा है। ऐसे बाबा को कितना याद करना चाहिए, ऐसे बाबा की हम कितनी महिमा गायें, गीत आदि में भी शिवबाबा की कितनी महिमा करते हैं। तेरी महिमा अपरमअपार है। इतनी महिमा क्यों गाई जाती, कोई कारण तो होगा ना। तुम जानते हो बाप ही भारत को स्वर्ग बनाते हैं। भारत को कितना ऊंच बनाते हैं। रावण फिर नीच बना देते हैं।

○ हमारे ही यादगार का पूरा यह मन्दिर है। तो यह शिवाए नम: गीत तो जरूर रखना चाहिए। दो-चार गीत फर्स्ट क्लास रख लेने चाहिए। यह बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं - दिल होती है

बाबा की याद में रहकर खायें परन्तु भूल जाते हैं। वो तो कहते हैं मैं अभोक्ता हूँ। उनको यह नहीं आता है कि यह अच्छा है वा बुरा है। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ तुम बच्चों को पतित से पावन बनाने क्योंकि रावण ने तुम्हारे ऊपर जीत पहन ली है।

○ यह भी अल्पकाल का स्वराज्य है। आपस में ही लड़-झाडू खत्म हो जायेंगे। तुमको बाबा आकर अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। बाप आत्माओ से बात करते हैं। बच्चे, तुमको देही-अभिमानी बनना है। जितना बाप के साथ योग लगायेंगे तो विकर्मों का बोझा उतरेगा और तुम विकर्माजीत बनेंगे। जो बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं उनको फारकती दी, बुद्धि का योग और कोई संग जोड़ा तो भस्मासुर बन पड़ेंगे। अब तुम बैठे हो अपने कर्मों का खाता साफ करने। पापों का बोझा बहुत है। बाप कहते हैं-मैं आकर अजामिल जैसे पापियो का उद्धार करता हूँ। बाप ज्ञान- अमृत से कितना शुद्ध बनाते हैं! फिर भी श्रीमत पर चलते- चलते आश्चर्यवत भागन्ती हो जाते हैं।

○ मेरे जो बच्चे सालिग्राम हैं वह भी यह नहीं जानते कि हम कहाँ के रहने वाले हैं। आत्माओं और परमात्मा का घर एक ही है स्वीट होम। अभी तुम जानते हो निर्वाणधाम हमारा भी घर है। वहाँ हमारा फादर है। सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म के साथ योग हो गया, उनसे विकर्म विनाश हो नहीं सकते। भल ब्रह्म योगी, तत्व योगी हैं परन्तु उनके विकर्म विनाश नहीं हो सकते। हाँ भावना से करके अल्पकाल के लिए सुख मिलता है। जितना याद करेंगे उतना शान्ति मिलेगी। तो बाप कहते हैं उनका योग रांग है। तुमको याद करना है एक बाप को। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। कृष्ण ऐसे कह नहीं सकते, वह तो वैकुण्ठ का मालिक है। वह थोड़ेही कहेगा अशरीरी बन शिवबाबा को याद करो या मुझे याद करो।

○ जो ऊँच पद पाते हैं, माला भी उन्हों की बनी है। रूद्र माला है ना। यह सभी है जड चित्र। जरूर कुछ करके गये हैं तब तो रूद्र माला कहते हैं ना। तुम चैतन्य में शिवबाबा की माला नम्बरवार बन रहे हो। जितना योग लगायेगै उतना नजदीक जाकर रूद्र के गले का हार बनेंगे। अभी हम संगम पर है। ऐसे-ऐसे अपने से बाते करनी चाहिए। तुमको तो ज्ञान है। तुम्हारे अन्दर यह चलता रहता है हम असुल शिवबाबा के बच्चे हैं। हम विथ के मालिक बनेंगे, फिर चक्र में आयेंगे। इसको स्वदर्शन चक्र कहा जाता है।

○ पण्डे तब बन सकेंगे जब देखकर आये हो। ऐसा तो कोई है नहीं जो स्वीट होम देखकर आया हो और वहाँ ले जाये। स्वीट होम को वह जानते ही नहीं। आत्मा के पंख टूटे हुए हैं। जब तक बाप न आये तब तक पंख मिल न सकें। मलहम पट्टी कोई कर न सके। योग से ही पंख मिलेंगे। भागना सबको है। कोई योगबल से विकर्माजीत बनते हैं, कोई फिर सजायें खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करते हैं। दुःख का सारा हिसाब-किताब चुक्तू होता है। यह सब ड़ामा में नूँध है, अपने विकर्मों का साक्षात्कार गर्भ में होता है फिर सजायें भोग बाहर निकलते हैं। अभी तो बेशुमार मनुष्य मरते हैं। सबको अपना हिसाब-किताब चुक्यू करना है। पुरानी दुनिया के कर्मों की लेन-देन का हिसाब-किताब खलास कर अभी तुम नई दुनिया के लिए हिसाब-किताब जमा करते हो। बाप कहते हैं तुम याद में रहो तो विकर्म विनाश होंगे। फिर स्वदर्शन चक्र फिराने से तुम्हारी बहुत मिलकियत जमा होगी। योग से हेल्थ, ज्ञान से वेल्थ मिलती है। जितना बाप को याद करेंगे उतना निरोगी काया मिलेगी। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। वह तो विष्णु को स्वदर्शन चक्रधारी समझते हैं। शंख, चक्र, गदा, पदम आदि उनको देते हैं। अब उनको शंख थोड़ेही बजाना है। यह तो है तुम्हारे पास। तुम शंख बजाते हो। कहते हो मनमनाभव, मध्याजी भव। कितना सहज है। तुम लाइट हाउस हो। सबको रास्ता बताते हो मुक्तिधाम का, फिर आयेंगे जीवनमुक्तिधाम में। योग लगाते हो। नर्क, खारी चैनल से पार ले जाने लिए

सर्चलाइट देते हो। मुक्तिधाम जाना है। फिर सर्चलाईट देते हो, यहाँ जीवनमुक्ति में आना है। यह बेहद का ड्राना है जो जूँ मिसल चलता रहता है। हम एक्टर हैं, हमारा इस ड्रामा में 84 जन्मों का पार्ट है।

○ तुमको तो वैकुण्ठ में जाकर अथाह सुख भोगना है। वहाँ रोने की बात नहीं। बाप कहते हैं तुम परमपिता परमात्मा की सजनी क्यों रोती हो। शायद साजन को भूल जाती हो। साजन को भूल जाना माना उनसे विदाई लेना। सदैव उनको याद करते रहो तो रोने की बात नहीं। बाकी किसका सम्बन्धी आदि मरता है तो रोते हैं। अब तुम जीते जी छुट्टी लेते हो। सबसे छुट्टी ले, रो-रोकर फिर सदा के लिए हँस पड़ते हो क्योंकि वैकुण्ठ में जाते हो। यहाँ तो रोने की दरकार नहीं। बाबा ने कहा है अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना, कौन सा हलुआ? यह ज्ञान का।

○ गाँधी जी को भी जिन्होंने मदद की, मेहनत की आज बहुत सुखी हैं। वहाँ सुखी तो सब बनेंगे। बाकी पद में फर्क पड़ जाता है। जो बाप की याद में रहते हैं और वर्से को याद करते हैं वह सूर्यवंशी बनेंगे। कम याद करेंगे तो चन्द्रवंशी, नहीं तो फिर प्रजा, दास-दासियाँ आदि तो बहुत चाहिए ना। बाप ने समझाया है योगबल से ही कोई भी विश्व का मालिक बन सकता है। तुम हो योगबल की अहिंसक सेना। क्रिश्चियन को भी इतना बल मिल जाए तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। परन्तु लॉ नहीं कहता है। वह बन्दर की कहानी है ना।

○ अपने को आत्मा निशय कर मुझ परमपिता परमात्मा को याद करो। एक जगह नेष्ठा में नहीं बैठना है। बच्चे तो चलते-फिरते, उठते-बैठते बाप को याद करते हैं ना। बेहद का बाप कहते हैं- और सभी से बुद्धि निकाल मामेकम् याद करो। इसी में मेहनत है।

○ जिसका जो धन्धा है वह बोर्ड लगाना चाहिए। एक-दो से सीखना चाहिए। परन्तु बच्चों पर माया का वार बहुत होता है, निखय नहीं कि हम बाबा के पास जाते हैं। 84 जन्मों का पार्ट पूरा हुआ फिर नई दुनिया, स्वर्ग में आकर वर्सा लेंगे। यह याद नहीं रहता है। बाबा कहते हैं कि भल कर्म करो फिर जितना समय मिले तो बाबा को याद करो। तुम यह ढिंढोरा पीटते रहो कि यह सबका अन्तिम जन्म है। पुनर्जन्म मृत्युलोक में फिर नहीं लेना है। तुम भी जानते हो कि मृत्युलोक अभी खत्म होना है। पहले निर्वाणधाम जाना है। ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करनी चाहिए, इसको विचार सागर मंथन कहा जाता है। बाप कहते हैं तुम कर्मयोगी हो। क्या तुमको कछुए जानवर जैसा भी अक्ल नहीं है! वो भी शरीर निर्वाह अर्थ घास आदि खाकर फिर कर्मेन्द्रियों को समेट शान्त में बैठ जाते हैं। तुम बच्चों को तो बाप की याद में रहना है,, स्वदर्शन चक्र फिराना है, अपने को मास्टर बीजरूप समझना है।

○ तुम प्रतिज्ञा करते हो - बाबा, हम आपसे सुनकर और सुनायेंगे। अच्छा, औरों को सुनाओ। पहले यहाँ तो रिपीट करो। घड़ी-घड़ी रिपीट करो जो फिर कहाँ समझा सको। फर्स्टक्लास पॉइंट्स है। उस यज्ञ में तो जौ-तिल आदि डालते हैं, मेरे रूद्र ज्ञान यह में तो सारी पुरानी दुनिया की सामग्री स्वाहा हुई थी। परन्तु यह सब बातें कोई की बुद्धि में अच्छी रीति धारण नहीं होती। बाप को याद नहीं करते हैं तो बुद्धि का ताला नहीं खुलता। बाबा कहते हैं - हम भी क्या करें? इस समय सबकी बुद्धि पतित है, उनको पावन बनाता हूँ। जो मेरे को याद नहीं करते, उनमें धारणा नहीं हो सकती। बुद्धि का ताला कैसे खुले? याद से ही खुलेगा। मोस्ट बिलवेड बाप है, उनकी बड़ी महिमा करते हैं। शिवबाबा की कितनी महिमा है! शिव की पूजा भी होती है, तो जरूर आता होगा ना। बिगर आरगन्स क्या आकर करेंगे? तो अब ब्रह्मा में आया हुआ हूँ।

○ तुम अन्दर में समझते हो बाबा टीचर भी है। अच्छा अगर बाप याद नहीं पड़ता तो टीचर को याद करो। टीचर कब भूलेगा क्या? टीचर से तो पढ़ते रहते हो। हाँ माया गफलत कराती है वह तुमको पता नहीं पड़ता है। माया आखों में एकदम धूल डाल देती है। जो हमको भगवान पढ़ाते हैं, यह एकदम भूल जाते हैं। बाप हर बात की समझानी देते हैं। यह है बेहद की समझानी। वह है हद की। यह बेहद की नॉलेज बाबा कल्प-कल्प तुम बच्चों को देते हैं। अच्छा जास्ती पढ़ नहीं सकते हो तो भल बाबा के रूप से याद करो। उनका तो कोई बाप है नहीं, वह सबका बाप है। परन्तु उनके बच्चे सब हैं। कोई बता सकेगा कि शिवबाबा किसका बच्चा है? वह है बेहद का बाप। बच्चे समझते हैं हम बेहद के बाप के बने हैं। यह हमारी पढ़ाई भी वण्डरफुल है और हम ब्राह्मण ही पढ़ते हैं। देवता वा क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह पढ़ाई नहीं पढ़ सकते। बाप की यह नॉलेज ही बिकुल न्यारी है। तुम्हारे सिवाए कोई समझ न सके। तुम बच्चों को खुशी का पारा चढ़ता है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बने। अब ऊंच पद पाने लिए खूब पुरुषार्थ करना है। ऐसे नहीं स्वर्ग में तो सब जायेंगे। अगर ज्ञान और योग की धारणा नहीं होगी तो ऊंच पद नहीं मिलेगा। बाबा कहते हैं 16 कला सम्पूर्ण बनने में याद की बहुत मेहनत है। देखना है किसको दु :ख तो नहीं देते हैं? हम सुखदाता के बच्चे हैं। बुद्धि से समझते हैं यह सारी दुनिया ही खत्म हो जाने वाली है। तुम सिर्फ मुझे ही याद करो। यह तो पुरानी दुनिया के छी-छी (गन्दे) शरीर हैं, इनके तरफ क्या देखना है। एक बाप को ही देखना है। बाबा कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे मंजिल बहुत ऊंची है। माया कोई कम नहीं है। माया का देखो कितना भभका है। उस तरफ है साइन्स और यहाँ है तुम्हारी साइलेन्स। वो लोग चाहते हैं मुक्ति को पायें। यहाँ तुम्हारी एम आबजेक्ट है जीवनमुक्ति को पाने की। जीवनमुक्ति पाने का कोई रास्ता बता न सके। सन्यासी आदि कोई भी यह नॉलेज दे न सके। वो किसको समझा नहीं सकते कि गहस्थ व्यवहार में रहकर पवित्र बनना है। यह एक ही बाप समझाते हैं।

○ राम भी गोरा था। परन्तु कृष्ण से दो कला कम। वह भी अब काला हो गया है। कृष्ण के लिए तो कहते हैं सर्प ने डसा। लेकिन ऐसी कोई बातें हैं नहीं। यह तो काम चिता पर बढ़ने से काले बन जाते हैं। श्याम और सुन्दर बनते हैं। अब फिर सतोप्रधान बनने लिए बाप को याद करना है। एक मुसाफिर कितने को हसीन बनाते हैं, विश्व का मालिक बनाते हैं! सिर्फ कहते हैं-मुझ बाप को याद करो। नहीं तो वर्सा कैसे मिलेगा? विकर्म विनाश के लिए योग अग्नि चाहिए। घड़ी-घड़ी याद करना है। कई समझते हैं-हम बच्चे तो हैं ना। परन्तु सारा दिन याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे, खुशी का पारा नहीं बढ़ेगा। 20 - 25 वर्ष वालों को भी यह बात बुद्धि में नहीं बैठती। भूल जाते हैं। फिर पुरानी दुनिया में जाकर तकदीर को लकीर लगा देते हैं। माँ-बाप की गोद में आने से ही तकदीर शुरू होती है। मम्मा-बाबा कहने से स्वर्ग के हकदार तो बने ना। प्रजा भी कहती है ना-हमारा हिन्दुस्तान सबसे ऊंचा। अरे, सबसे ऊंच होता तो फिर कर्जा क्यों उठाते, कंगाल क्यों बनते? यहाँ: से बहुत धन ले गये हैं। कारखानों से पैदाइस होती है।

○ यह तो बाप कहते हैं मुझ निराकार बाप को याद करो। हे लाडले बच्चे, हे आत्मायें, मैं परम आत्मा इस ब्रह्मा तन से तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ। नहीं तो कैसे पढ़ा। पावन बनाने लिए जरूर शरीर चाहिए। अब तुम बच्चे जानते हो बाबा है ज्ञान-सागर। पानी कें सागर की कोई बात नहीं। मनुष्य तो देह- अभिमान में आते- आते कितने काले बन गये हैं। अब फिर तुम देही- अभिमानी बन गोरे बनते हो। आत्मा प्योर बनती जाती है। जितना तुम बाबा को याद करेंगे तो इस योग से तुम्हारे विकर्म दग्ध होंगे। पाप नाश होंगे। तुम जानते हो मम्मा बाबा कितनी मेहनत करते होंगे तो भी कर्मभोग तो चुक्तू करना पड़ता है। जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर रहा हुआ है। वह अन्त में हिसाब-किताब चुक्तु होना है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप कहते हैं बच्चे देही- अभिमानी बनकर बाप को पूरा याद करना है। तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म दग्ध होंगे। नहीं तो बहुत सजा खाने पड़ेंगे। बाप बार-बार कहते हैं बच्चे

भूलो मत, परन्तु फिर भी माया भुला देती है । बाप कहते हैं बच्चे अपने पास चार्ट रखो - कितना समय हम शिवबाबा को याद करते हैं । एक घड़ी याद करना शुरू करो फिर प्रैक्टिस पड़ती जायेगी । ऐसी अवस्था जमाओ जो अन्त में बाबा की याद रहे । ऐसी याद में रहने वाले ही विजय माला के 8 रत्न बनते हैं । मेहनत चाहिए । जितना जो करेंगे सो पायेंगे । सन्यासी लोग तो घरबार छोड़ जाते हैं फिर महलों में आकर बैठते है । वास्तव में यह लॉ नहीं है ।

○ आत्मा- परमात्मा अलग रहे बहुकाल... अब जबकि वह सतगुरू मिला है दलाल के रूप में । कहते हैं मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारा बेडा पार हो सकता है । हाथ छोड़ा तो खत्म । महान पाप- आत्मा बन जाते हैं । ऐसे महान पापात्मा भी देखने हो तो यहाँ देखो । बाप कहते हैं तुम बच्चे ऐसे पतित नहीं बनना । पुण्य आत्मा बनना । पापों से बचेंगे तब जब योग में रहेंगे । बॉक्सिंग में खबरदारी चाहिए । नहीं तो माया कभी पीठ पर ऐसा मार देगी । माया पर जीत पाना मासी का घर नहीं है । यह है सतोप्रधान सन्यास ।

○ आदि सनातन देवी-देवतायें मालिक थे, यह बाप बच्चों को समझा रहे हैं । बाप कहते हैं अब निरन्तर यही याद करो । बाप परमधाम से हमको पड़ाने, राजयोग सिखाने आया हुआ है । हरेक का पार्ट अपना- अपना है । बाप बार-बार कहते हैं देह- अभिमान छोड़ देही- अभिमानी बनो और याद शिवबाबा को करो । ऐसे ही समझो-शिववाया ही सब कुछ करते हैं । ब्रह्मा है ही नहीं । भल इनका रूप इन ऑखों से दिखाई पड़ता है परन्तु तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा के तरफ जानी चाहिए । शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा इनका शरीर कोई काम का नहीं है । हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है जो इस द्वारा पढ़ाते हैं । तुम्हारा यह टीचर नहीं है । सुप्रीम टीचर वह है, याद उनको करना है । कभी भी इस जिस्म को याद नहीं करना है । बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है । तो सर्वव्यापी का ज्ञान ठहर भी न सके । बच्चे याद करते हैं फिर से आकर ज्ञान योग सिखाओ । परमपिता परमात्मा के सिवाए तो कोई राजयोग सिखला न सके । तुम बच्चों की

बुद्धि में है कि यह गीता का ज्ञान स्वयं बाप सुनाते हैं, फिर यह ज्ञान प्राय-लोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं है।

○ शिवबाबा की याद में फिर बहुत मजा आता रहेगा। ऐसा गॉड फादर कौन कहलाये। फादर भी है, टीचर भी है। परन्तु वह फादर गुरू भी हो-ऐसा हो नहीं सकता। टीचर हो सकता है, फादर को गुरू कभी नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर भी टीचर था, पढ़ाते थे। हम भी पढ़ते थे। वह है हद का फादर टीचर। यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपने को गॉडली त्डेर समझो तो भी अहो सौभाग्य। गॉड फादर पढ़ाते हैं। कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाप है! मीठी चीज को याद किया जाता है। जैसे आशिक-माशुक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस, एक दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा के साथ। आत्मा कहती है-बाबा कितना ज्ञान का, प्रेम का सागर है! इस पतित शरीर में आकर कितना हमको ऊंच बनाते हैं! गायन भी है-मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। सेकण्ड में वैकुण्ठ में चले जाते हैं। बाबा कहते हैं मैं कितना बड़ा धोबी हूँ। तुम्हारे वस (आत्मा और शरीर) कितना शुद्ध बनाता हूँ! ऐसा धोबी कभी देखा? आत्मा जो बिलकुल काली हो गई है उनको योगबल से कितना स्वच्छ बनाता हूँ! तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह काम सारा शिवबाबा का है, उनको ही याद करो। इन ब्रह्मा से मीठा वह है। आत्माओं को कहते हैं तुमको इन ऑखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा तुमको इनके द्वारा कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं।

○ अब तुम बच्चों को पता पड़ा है कि यह है रूहानी सर्जन। रूह को ही बीमारी लगी है, इसलिए रूह को ज्ञान का इन्वेक्वान लगा रहे हैं। आत्मा को ही ज्ञान इन्तेक्टान लगता है, न कि शरीर को। कोई सुई वा दवाई आदि नहीं है। यह एक ही इन्तेक्वान काफी है। कौन सा इन्केक्वान?

मन्मनाभव, अशरीरी भव-यह इन्नेक्टान है। देही- अभिमानी हो रहने से पवित्रता-सुख-शान्ति का वर्सा जमा होता है। जितना-जितना देही- अभिमानी बन बाप को याद करते रहेंगे, उतना वर्सा जमा होता रहेगा। बच्चे जानते हैं आधा-कल्प के दुःख दूर करने वाला आया हुआ है। हर-हर महादेव कहते हैं। अब वह महादेव नहीं है, दुःख तो बाप ही हरेंगे। दुःख हर कर सुख देने वाला बाप है।

○ अब तुम बच्चों को पता पड़ा है कि यह है रूहानी सर्जन। रूह को ही बीमारी लगी है, इसलिए रूह को ज्ञान का इन्वेक्वान लगा रहे हैं। आत्मा को ही ज्ञान इन्तेक्टान लगता है, न कि शरीर को। कोई सुई वा दवाई आदि नहीं है। यह एक ही इन्तेक्वान काफी है। कौन सा इन्केक्वान? मन्मनाभव, अशरीरी भव-यह इन्नेक्टान है। देही- अभिमानी हो रहने से पवित्रता-सुख-शान्ति का वर्सा जमा होता है। जितना-जितना देही- अभिमानी बन बाप को याद करते रहेंगे, उतना वर्सा जमा होता रहेगा। बच्चे जानते हैं आधा-कल्प के दुःख दूर करने वाला आया हुआ है। हर-हर महादेव कहते हैं। अब वह महादेव नहीं है, दुःख तो बाप ही हरेंगे। दुःख हर कर सुख देने वाला बाप है।

○ गरीब निवाज बाप को कहते हैं क्योंकि सबसे गरीब भारतवासी ही बने हैं। अभी तो तुमको बिकुल बेगर बनना है। यह देह भी अपनी न समझो। एक कहानी है ना-कहा, लाठी भी न उठाओ। बाप कहते हैं मुख्य है देह अहंकार। उसको भूलो। एक बाप को याद करो। यह तुम सब जानते हो-मैं आत्मा हूँ, यह शरीर है। तीसरा नेत्र भी तुमको मिला है। जितना-जितना बाप को याद करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। जीवनमुक्ति तो सभी को मिलती है। अब बाप आशीर्वाद करते हैं-मीठे-मीठे बच्चों, सदा शान्ति भव। चिरंजीवी भव अर्थात् बहुत जन्म जिओ।

आशीर्वाद तो बाप से मिलती है। परन्तु फिर हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है कि हम चिरंजीवी कैसे बनें। बाप को याद करने से ही तुम चिरंजीवी बन रहे हो। यह आशीर्वाद बाप करते हैं। बाप कहते हैं-सदा जीते रहो बच्चे। तुम भी समझते हो हम चिरंजीवी बन रहे हैं। आधा-कल्प के लिए कभी काल नहीं खायेगा। तुम जानते हो हम बाबा को याद करते-करते बस शरीर छोड़ देंगे। कोई कहते हैं-बाबा, हम जल्दी जावें। कब विनाश होगा? हम कब जायेंगे? तुम ऐसे मत कहो-हम कब जायेंगे! यह कहना माना बाबा आप वापिस कब जायेंगे यह हिसाब हुआ। तुम शिवबाबा पास बैठे हो। तुम ईश्वरीय सन्तान हो।

○ राम लीला करते हैं परन्तु यह जानते नहीं कि रावण क्या चीज है। कई बच्चे कहते हैं नेष्ठा में बिठाओ। वास्तव में याद तो चलते-फिरते करना है। परन्तु जो सारे दिन में याद नहीं करते उनको बिठाया जाता है कि यहाँ बैठने से कुछ न कुछ याद करें। बहुत हैं जो सेंटर्स में जब आते हैं तो याद में रहते हैं, घर गये तो खुलास। याद करने की प्रैक्टिस नहीं है। बुद्धि और- और तरफ भटकती रहती है। बच्चों को समझाया गया है कि आत्मा स्टॉर है जिसको बिन्दी भी कहते हैं समझते हैं गणेश से साक्षात्कार हुआ तो गणेश में भी परमात्मा है। इससे ही सर्वव्यापी का ज्ञान उठा लिया है। और तुम सब बच्चे कहते हो हम सब बाबा को याद करते हैं अर्थात् सबमें बाबा की याद है। तो इससे भी सर्वव्यापी समझ लेते हैं। बाप कहते हैं मेरी याद में भी सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रहते हैं। जितना जो याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। बाकी आत्मा तो हर एक में अपनी- अपनी व्यापक है। मैं कोई बच्चे में भी प्रवेश कर किसका भी कल्याण कर सकता हूँ। परन्तु उन्होंने फिर उल्टा अर्थ कर दिया है।

○ यह बाप अपनी अवस्था को जमाने के लिए भिन्न-भिन्न युक्तियां बताते रहते हैं। रात को जागो। बाबा को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। अगर पूरा पुरुषार्थ होगा तो याद ठहरेगी। पास विद आनर हो जाना है। 8 को ही स्कालरशिप मिलती है। सब कहते हैं - हम लक्ष्मी-

नारायण को वरें, तो पास होकर दिखाना है। अपने को देखना है कि मेरे में कोई बन्दरपना तो नहीं है? उसको निकालते जाओ। देखो, सारे दिन में किसको दु :ख तो नहीं दिया? बाप है सबको सुख देने वाला। बच्चों को भी ऐसा बनना है।

○ अपना चार्ट बनाओ। सारे दिन में कितना समय बाप को याद किया! सवेरे उठकर बाप को, वर्से को याद करो। हम बेहद के बाप के साथ आये हैं। गुप्तवेष में भारत को स्वर्ग बनाने। अब हमको वापिस जाना है। जाने से पहले अपनी राजधानी जरूर स्थापन करनी है। अब तुम हो संगम पर। बाकी सारी दुनिया है कलियुग में। तुम संगमयुगी ब्राह्मण हो। बाप बच्चों के लिए सौगात ले आते हैं - मुक्ति और जीवनमुक्ति की। सतयुग में भारत जीवनमुक्त था, बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में थी।

○ बाबा तो बहुत मीठा है। सबको पवित्र बनाए वापिस ले जाने आये हैं। ऐसे बाप में तो बहुत लव होना चाहिए। मीठी चीज है ना। सतयुग में अपार सुख हैं इसलिए स्वर्ग को सब याद करते हैं। कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। कितना मीठा नाम है! जो पास्ट हो जाता है उसका फिर भक्ति मार्ग में नाम वाला रहता है। तो बाबा ने जिन का काम दे दिया है - अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो, नहीं तो माया रूपी जिन तुमको खा जायेगा। याद करना पड़े। हाँ, शरीर निर्वाह अर्थ कर्म तो करना ही है। 8 घण्टा तो शरीर निर्वाह के लिए चाहिए क्योंकि तुम कर्मयोगी हो। फिर तुम पुरुषार्थ करो। 8 घाटा अपने पुरुषार्थ के लिए भी निकालो। अपने को ऐसे समझो - बस, हम बाबा के बन गये। यह शरीर तो पुराना है, इससे ममत्व मिट जाना है। मिटते-मिटते, याद करते-करते अगर किसका ममत्व रह गया तो राज्य भाग्य पा नहीं सकेंगे। विश्व का मालिक बनने में मेहनत चाहिए। बाबा आया है दुःखधान से लिबरेट कर ले जाने इसलिए उनको लिबरेटर और गाइड, पतित-पावन कहते हैं।

○ बाप को याद करेंगे या कोई मित्र सम्बन्धी को याद करेंगे। अब तुमको और सबकी याद भूल एक बाप को ही याद करना है। वही सत्य बाप, सत्य टीचर, सतगुरू है। सच खण्ड की स्थापना करने वाला है। सारे सृष्टि के आदि मध्य अन्त के चक्र की हिणी-झोंग्राफी बताते हैं। हम स्वदर्शन चक्रधारी बने हैं तो जरूर चक्र याद करना पड़े। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, शुरू से अन्त तक चक्र को जानते हो और यह कल्प के संगमयुग पर ही जान सकते हो। बीच में तो कोई जान न सके। सन्यासी तो चक्र को मानते ही नहीं। झाड को देख कहते हैं यह तो कल्पना है। तो तुम बच्चों को भी धारणा करनी है। योग पूरा नहीं होगा तो धारणा होगी नहीं। बुद्धि प्योर बन न सके। कहते हैं ना शेरणी का दूध सोने के बर्तन में ही ठहर सकता है। तो यह भी ज्ञान अमृत बच्चों को मिलता है। बर्तन लोहे से बदलकर सोने का होगा तब ही धारणा होगी, इसमें अच्छा पुरुषार्थ किया जाता है। बहुत सहज है, वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना है। शिवबाबा को याद करने की प्रैक्टिस करनी है। अभी बेहद का बाप समझाते हैं मुझे याद करो। उस गुरू के बदले एक शिवबाबा को याद करना पड़े। मेहनत है। वह बाप सभी का एक ही है। उस द्वारा ही स्वर्ग का वर्मा मिल सकता है। शान्ति सुख का वर्सा उनसे मिलता है। जितना-जितना ज्ञान और योग में रहेंगे तो पुराना खाता भस्म हो नया जमा होता जायेगा। योगबल से तुम्हारी आयु बढ़ेगी। तुम एवरहेल्दी, वेल्दी बनते जायेंगे। ज्ञान और योग से दोनों मिलते हैं।

○ पांच हजार वर्ष की बात है। देखो, बाप-टीचर जब समझाते हैं तो चारों तरफ देखते हैं कि बच्चे अच्छी तरह सुनते धारण करते हैं या बुद्धियोग और कहाँ भटकता है? जैसे भक्ति मार्ग में भल कृष्ण की मूर्ति के आगे बैठे होंगे परन्तु बुद्धि धन्धे आदि तरफ धक्का खाती रहेगी। एकाग्रचित उस चित्र में भी नहीं रहेंगे। यहाँ भी पूरी पहचान नहीं है तो फिर धारणा भी नहीं होती है। शिवबाबा यह माया को वश करने का वशीकरण मन्त्र देते हैं। कहते हैं तुम अपने परमपिता

परमात्मा शिव को याद करो । बुद्धि का योग उनके साथ लगाओ । अभी तुम्हारा बुद्धियोग पुराने घर की तरफ नहीं जाना चाहिए । बुद्धियोग बाप के साथ लटका रहना चाहिए क्योंकि तुम सबको मेरे पास आना है । मैं पण्डा बन आया हूँ तुमको ले चलने लिए । यह शिव शक्ति पाण्डव सेना है । तुम हो शिव से शक्ति लेने वाले ।

○ पुरुषार्थ अनुसार ही ट्रान्सफर होंगे । जैसे स्कूलों में ट्रान्सफर होते हैं ना । तुम भी नम्बरवार जाकर राजाई करते हो । सिर्फ बाप का बन बाप को याद करो । बाप को तो घड़ी-घड़ी याद करो । नहीं तो विकर्म विनाश कैसे होंगे । घड़ी-घड़ी अपने से बातें करनी है । हम आत्मा तो इमार्टल हैं । बाबा ने फरमान किया है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे । याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे । पद भी ऊंच नहीं मिलेगा ।

○ विनाश की तैयारियां भी होती रहती हैं । अभी है ही कलियुग । यह बातें तुम बच्चे ही जानते हो । तुम्हारी बातें ही निराली हैं । तुम जानते हो मनुष्य, मनुष्यको गति-सद्गति देन सके । गाते भी हैं पतित-पावन, तो अपने को पतित क्यों नहीं समझते? यह है पतितदुनिया, विषय सागर । सब थोड़ेही खिवैया बन सकते हैं । अभी तुम बच्चों में वह ताकत आई नहीं है जो पूरा समझा सको । अभी तुम इतना होशियार नहीं बने हो । योग भी नहीं है । अब तक छोटे बच्चों मुआफिक रोते रहते हैं । माया के तूफान में ठहर नहीं सकते हैं । देह- अभिमान बहुत है । देही- अभिमानी बनते नहीं । बाबा तो बार-बार कहते हैं - अपने को आत्मा समझो । अभी हमको वापिस जाना है । सभी एक्टर्स जो अपना-अपना पार्ट बजाते हैं । सब शरीर छोड़कर वापिस घर जायेंगे । तुम साक्षी हो कर देखो । देहधारी सम्बन्धोंमें, देह मे मोह क्यों रखते हो? विदेही बनते नहीं । फिर विकर्म विनाश नहीं होते । बाप को याद करते रहें तो खुशी का पारा चढ़े । हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं फिर हम देवी-देवता बनेंगे तो अपार खुशी होनी चाहिए ना ।

- पहले- पहले जब भट्टी बनी तो बहुत हिम्मत रख भागे । देखा मार मिलती है, हंगामा करते हैं तो झट त्याग कर लिया । सन्यासी भी भागते हैं । पहले तो उन्हों को याद सताती है । नष्टोमोहा होने में मेहनत लगती है क्योंकि उन्हों के पास प्राप्ति की एम आबजेक्ट कुछ भी नहीं है । कुछ भी ताकत मिलती नहीं । तुमको तो ताकत मिलती है । उनको पवित्रता की ताकत कहाँ से मिले? पवित्रता का सागर तो एक परमपिता परमात्मा है, उनसे ही वर्सा मिलता है । वह बाप से तो योग लगाते नहीं । ब्रह्म से योग लगाते हैं तो पूरा पवित्र बन नहीं सकते । ब्रह्म अथवा तत्व से योग लगाना मिथ्या हो जाता है । जितना-जितना योग होगा उतना धारणा अच्छी होगी । कहाँ भी ममत्व नहीं होना चाहिए । अपने को ट्रस्टी समझ पालना करो । बाप की अमानत है । देह सहित देह के सब सम्बन्धों के हम ट्रस्टी हैं । परीक्षायें भी आती हैं । कोई बीमार हुआ, दुःख हुआ तो सम्भालना पड़े । यह है ही दुःख की दुनिया । शिवबाबा को तो कोई दु :ख नहीं होगा । वह तो ट्रस्टी है कोई को कुछ हुआ कहेंगे अपना हिसाब- किताब चुका कर जाकर दूसरा शरीर लिया, इसमें हमारा क्या जाता है । इतने सब मनुष्य शरीर छोड़ेने, शिवबाबा को दु :ख होगा क्या! और ही खुशी होती है । यह पुराना छी-छी शरीर छुड़ाए बच्चों को वापिस ले जाऊंगा । दुःख की बात ही नहीं । अफसोस की कोई बात ही नहीं । हम उठते-बैठते मीठे-मीठे बाप को याद करते हैं । परमधाम में जाने के लिए हम तैयारी कर रहे हैं । बाबा को याद करते-करते शरीर छूट जायेगा । ऐसे बहुत सन्यासियों का होता है । बैठे-बैठे अपने को समझते हैं बस हम ब्रह्म में चले जाते हैं, जाकर लीन होंगे । ऐसे बैठे-बैठे शरीर छोड़ देते हैं । बाबा अपने अनुभव से बताते हैं । प्राणायाम चढ़ाते-चढाते गुम हो जाते हैं । ऐसे नहीं कि वह आत्मा ब्रह्म में चली जायेगी ।

- हीरे जैसा जन्म तुमकी मिलता है इसलिए अब देही- अभिमानी बनो । जितना शिवबाबा को याद करेंगे उतना देही- अभिमानी बनेंगे तो माया वार नहीं करेगी । बापदादा की हमेशा बच्चों पर नजर रहती है । अगर बच्चे कुछ भी बेकायदे चलते हैं तो बापदादा का नाम बदनाम करते हैं । तो शिक्षा देनी पड़ती है-ऐसे काम नहीं करना । नाम बदनाम करने वाले के लिए कहा जाता है

सतगुरू का निंदक ठौर न पाये। ऐसा कोई उल्टा कर्तव्य नहीं करना है। तुम बच्चे जानते हो- जितना बाबा को याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। याद में रहने वाले को ही देही-अभिमानी कहा जाता है। देह- अभिमान होने से माया का वार जोर से होगा। बड़ी मंजिल है। स्कॉलरशिप लेते हैं। कितने ब्राह्मण बनने वाले हैं। गाया जाता है 33 करोड़ देवी-देवतायें। विजय माला में वह आते हैं जो देही- अभिमानी बनते हैं। देह- अभिमानी बनना माना माया का वार होना। देही- अभिमानी बनना माना बाप का बनना। यह बात बड़ी सूक्ष्म है। पुरुषार्थ कर बाप को याद करना है। वह बाप भी है, साजन भी है। अपार सुख देने वाला है। कहते हैं तुम बच्चों के लिए हथेली पर बहिश्त ले आया हूँ। सिर्फ तुम श्रीमत पर चलो।

○ हम आत्मा हैं-यह पक्का निश्चय करो। यह जो आत्मा सो परमात्मा का भूसा बुद्धि में भरा हुआ है, वह निकाल दो। अभी देही- अभिमानी बनो। बाप को याद करो तो तुम्हारा बेड़ा पार होगा। श्रीमत पर चलो। देही- अभिमानी नहीं बनेंगे तो माया बेड़ा गर्क कर देगी। ऐसे बहुतों का बेड़ा माया ने गर्क किया है क्योंकि श्रीमत पर नहीं चलते हैं। युद्ध का मैदान है। तुम्हें किसी भी बात में हार नहीं खानी है। काम का भूत तो एकदम पुर्जा-पुर्जा टुकड़ा-टुकड़ा कर देता है। सेकेण्ड नम्बर है क्रोध का भूत। क्रोध से एक दो को मारकर खलास करते हैं। यादवों का क्रोध बढेगा। एकदम जैसे डेविल बन जायेंगे। क्रोध भी बड़ा भारी दुश्मन है। काम को नहीं जीता तो पवित्र दुनिया का मालिक बन नहीं सकेंगे। क्रोध दुश्मन भी ऐसा है जो खुद को भी और औरों को भी दु :ख देते हैं। यह भी है भावी। अब यादव, कौरव, पाण्डव क्या करते हैं? यह तुम ही जानते हो। यह है पाण्डव गवर्मेंट। अब तुम देखते हो पाण्डवों का राज्य तो है नहीं। तीन पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते हैं। तुम बच्चों में बहुत थोड़े हैं जो नारायणी नशे में रहते हैं। नशे सभी में है नुकसान। देह- अभिमान में आने से बड़ा नुकसान है। तो बाप समझाते हैं तुम सदैव शिवबाबा को याद करो। ऐसे मत समझो यह ब्रह्मा ज्ञान देते हैं। समझाते हैं शिव बाबा को याद करो। शिवबाबा कहते हैं मेरे साथ योग लगाओ। यह ब्रह्मा भी मेरे साथ योग लगाते

हैं। मुझे याद करेंगे तो मैं मदद करता रहूँगा। देह- अभिमानी बनने से माया वार करती रहेगी। और फिर एक दो को दु :ख देते रहेंगे। इसमें भी दो हैं बड़े दुश्मन। नम्बरवार तो होते हैं ना। काम-क्रोध है प्रत्यक्ष विकार। मोह-लोभ आदि तो गुप्त हैं। तो इन भूतों पर विजय पानी है। बाप कहते हैं अभी तुमको तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते हैं, मैं फिर तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ।

- बाप आप समान बनाते हैं, तुम बच्चे भी आप समान बनाते रहते हो। एक बाप की ही याद रहे ऐसा पुरुषार्थ करना है। अभी टाइम पड़ा है। यह रिहर्सल तीखी करनी पड़े प्रेक्टिस न होगी तो खड़े हो जावेंगे। टांगे थिरकने लग पड़ेगी और हार्ट फेल अचानक होता रहेगा। तमोप्रधान शरीर को हार्टफेल होने से देरी थोड़े ही लगती है। जितना अशरीरी होते जावेने, बाप को याद करते रहेगे इतना नजदीक आते जावेंगे। योग वाले ही निडर रहेंगे। योग से शक्ति मिलती है। ज्ञान से धन मिलता है। बच्चों को चाहिए शक्ति। तो शक्ति पाने लिये बाप को याद करते रही। बाबा है अविनाशी सर्जन। वह कब पेशेन्ट बन न सके। अभी बाप कहते है तुम अपनी अविनाशी दवाई करते रहो। हम ऐसी संजीवनी बूटी देते है जो कब कोई बीमार न पड़े। सिर्फ पतित-पावन बाप को याद करते रहो तो पावन बन जावेंगे। देवतायें सदैव निरोगी पावन हैं ना। बच्चो को यह तो निश्चय हो गया है हम कल्प कल्प वर्मा लेते हैं। इम्मेमोरियल टाइम बाप आया है जैसे अभी आया है। बाबा जो सिखलाते, समझाते है यही राजयोग है। वह गीता आदि सभी भक्ति मार्ग के हैं।

- तुम हो गये स्वदर्शन चक्रधारी। यह अलंकार हैं तुम्हारे। परन्तु विष्णु को दे दिये हैं क्योंकि तुम्हारा स्थाई तो यह पार्ट रहता नहीं इसलिए देवताओं को यह निशानी दे दी है। बाप तो बच्चों पर तरस खाते हैं। कहाँ माया का असर न लग जाये। बाप को याद नहीं करेंगे तो माया जरूर खा जायेगी। बाबा जास्ती मेहनत नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं मुझ बाप को याद करो। अपने

को आत्मा निश्चय करो। यह है रूहानी यात्रा। तुम भी यात्रा करो। बाप को थोडे-ही भूलना चाहिए। योग अक्षर निकाल दो। बाप को याद करना है। क्या बाप को तुम भूल जाते हो? बाप कहते हैं अशरीरी बन जाओ। तुम अशरीरी हो। यहाँ आकर यह शरीर धारण किया है। अब फिर शरीर का भान छोड़ो। मैं वापिस ले चलूँगा। मैं कालों का काल हूँ। इस पुरानी देह को भूल मुझे याद करो। यह पुरानी जूती है। फिर तुमको नया शरीर देंगे। पुराने से ममत्व मिटाओ। मैं तुमको साथ ले जाऊंगा। तो खुश होना चाहिए कि हम जाते हैं पियर घर। पाँच हजार वर्ष हुए हैं, हमने शान्तिधाम को छोड़ा है। अब फिर हम जाते हैं। यह है दु :खधाम।

○ तुम माताओं के लिए कहा जाता है वन्दे मातरम्। तुम माताओं द्वारा ही भारत स्वर्ग बनता है। पवित्रता बिगर सुख मिल नहीं सकता। जो बाप का बनेंगे, बाप को याद करेंगे, और संग तोड़ एक संग जोड़ेगे-वही शिवबाबा के पास चले जायेंगे। भारत में ही बाप अवतार लेते हैं। तुम बच्चों को पुरानी दुनिया को भूल एक बाप को .याद करना है। योग अग्नि से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे और कोई पावन बनने का उपाय नहीं है।

○ बाप कहते हैं मैं तो सीधा-सादा रास्ता बताता हूँ। वह तो बहुत सहज है। बाकी जो विपदायें झंझट आते हैं, दु :ख आता है, बीमारी आदि होती है, देवाला मारते हैं.. यह सब है तुम्हारे कर्मो का हिसाब। सो हर एक को भोगना ही है, इनसे हमारा कोई तैलुक नहीं है। इस समय भी कोई ऐसा पाप करते हैं तो दु:ख भोगना पड़ता है। मैं तो तुमको रास्ता बताने आया हूँ। मेरा फरमान है मुझ बाप को याद करो क्योंकि वापस जाना है। बाकी लड़ाई-झगड़े में तो सारी आयु गँवाई। मैं तो सीधा रास्ता बताता हूँ कि मुझे याद करो और पवित्र रहो। कैसे रहो, यह भी युक्तियां बताते हैं। बाकी माथा मारना पुरुषार्थ करना तो तुम्हारा काम है। यह सब कर्मबन्धन तुम बच्चों का है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रह पवित्र रहना है। बाप जानते हैं स्त्री का पति में, बच्चों

में मोह बहुत रहता है, उनसे छुटकारा पाना, नष्टोमोहा बनना... यह तो बच्चों का काम है। बाप तो सिर्फ दो बातें कहते हैं - अगर पूरा वर्सा लेना है तो एक पवित्र जरूर बनना है और दूसरा योग में रहना है। कोई बात में तुमसे अगर कोई लड़ते हैं तो यह हुआ तुम्हारा कर्मों का हिसाब-किताब। बाकी तुम पवित्र रहो उसके लिए गवर्मेंट भी रोक नहीं सकती। बाप तो रास्ता बताते हैं कि तुमको घरबार नहीं छोड़ना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है और योग में रहना है। मनुष्य समझते हैं पवित्र रहना बड़ा मुश्किल है क्योंकि ऐसी शिक्षा किसी ने कभी नहीं दी है।

○ बुद्धि भी कहती है ऐसा बाबा जो विश्व का मालिक बनाने वाला है उनको तो निरन्तर याद करना चाहिए। परन्तु बच्चे मास-मास भी याद नहीं करते, पत्र नहीं लिखते। माया कोई- कोई को तो बिकुल ही मुर्दा बना देती है। जीते जी भी चिट्ठी नहीं लिखते, मरने के बाद तो बात ही नहीं। बाबा भी चिट्ठी तब लिखेंगे जब वह खुद लिखेंगे। जो बाबा को याद करेंगे वही कर्मातीत एवरहेल्दी बनेंगे। बाबा का वर्सा तो जरूर याद आना चाहिए। स्थाई नशा भी चढ़ना चाहिए। इस समय तुम बच्चों का याद से मुख मीठा होता है। जानते हो सृष्टि का राज्य रूपी मक्खन हमको मिलता है।

○ बाबा भी कहते हैं बच्चे अगर योग में नहीं रहेंगे तो माया की धूल में खत्म हो जायेंगे। बाबा बार-बार समझाते हैं श्रीमत पर चलते रहो। आसुरी कर्तव्य नहीं करो। बोलना, चलना बड़ा मीठा रखना है। देवतायें कितने मीठे स्वभाव के हैं! भारत में राज्य करते थे, यथा राजा रानी तथा प्रजा दैवी स्वभाव के थे। बाप आता है स्वर्ग का मालिक बनाने तो बाप के साथ कितना मददगार बनना चाहिए। सर्विस में आपेही काम में लग जाना चाहिए।

○ परन्तु माया देह- अभिमान में ले आती है। मेहनत सारी अशरीरी बन बाप को याद करने में है। नहीं तो माया बड़ी दुश्मन है। याद के बल से ही तुम राज्य लेते हो। याद द्वारा ही तुम बाप से वर्मा लेते हो। याद का ही बल है। बाप कहते हैं देह सहित सभी सम्बन्धों को भूल मेरे को याद करो क्योंकि मेरे पास वापिस आना है। सतयुग है जीवन्मुक्त, कलियुग है जीवन बन्ध। पाँच विकारों रूपी रावण का बन्धन है।

○ मुख्य बात है पहले- पहले बच्चों को देही- अभिमानी बनना है। नहीं तो किसको तीर लगा नहीं सकेंगे। देही- अभिमानी हो बाप को याद करने से ही बल मिलेगा। जब तुम अच्छी रीति पहलवान हो जायेंगे तो भीष्म पितामह आदि को बाण लगेंगे। धीरे- धीरे होना है। अभी तुम्हारे में बल आता जाता है। अन्त तक 100 परसेंट बनना है। दौड़ी लगानी है। अभी तुम पढ रहे हो। बहुत पहलवान हो जायेगे।

○ माया बड़ी जबरदस्त है, याद नहीं करेंगे तो भूसा मारती रहेगी। दस- बारह वर्ष वाले को भी माया घूंसा मार देती है। मुंह फिरा देती है। भूल जाते है। फिर कहते हैं तकदीर में नहीं था। गीत है ना- आये हैं तकदीर बना करके.. कौनसी तकदीर बनाकर आये हो? लक्ष्मी को वरने की। बापदादा कहते हैं दिल दर्पण में देखो-तुम लायक हो? बाप मिसल मीठे बने हो? बाप कहते है देही- अभिमानी बनो। जितना मुझ बाप को याद करेंगे, उतना जमा होगा। याद नही करेंगे तो जमा नहीं होगा। याद से ही पुराना खाता भस्म होता जायेगा। योग अग्नि माना याद। अहम् आत्मा परमात्मा को याद करती हैं। बाप भी कहते है अपने को आत्मा निखय कर मुझे याद करो। आत्मा सो परमात्मा कहना भूल है।

○ राजायें महाराजाओं के आगे सिर झुकायेंगे। महाराजा पहले हैं। राजा पीछे हैं। तो अब श्रीमत पर चलना है। श्री श्री जगत गुरू। रूद्र माला है ना। जगत का मालिक भी वह है। टीचर भी वह है तो गुरू भी वह है। ऐसे बाबा को याद करना पड़े। कहते हैं-बंधन है कोई छुडावे। (तोते का मिसाल) अरे, भगवान् कहते हैं अब मैं तुमको लेने आया हूँ, तुम सिर्फ अंगुली पकड़ो। वह जो कहे सो करो, पवित्र तो जरूर बनना पड़े। इस कब्रिस्तान को क्या याद करना है। रहना भल यहाँ है परन्तु सिर्फ बुद्धियोग वहाँ लगाना है। इसको कहा जाता है शान्तिधाम, सुखधाम को याद करना। नष्टोमोहा भी बनना है। वह है पतियों का पति, बापों का बाप, गुरूओं का गुरू। तो ऐसा (श्रीकृष्ण) बनने लिए मेहनत करनी पड़े। कल्प पहले भी पुरुषार्थ किया था और सतयुग की राजधानी स्थापन हुई थी। फिर हो रही है। इसमें पवित्र रहना है।

○ अब बाप बच्चों को धीरज देते हैं कि घबराओ मत। माया पर जीत पानी है। माया के तूफान आयेंगे जरूर, विघ्न पड़ेंगे। इसका इलाज है योग में रहो। माया योग भी तोड़ेगी। परन्तु पुरुषार्थ कर योग में रहना है। जो योग में रहेगे तो उनकी आयु भी बढेगी। जितनी आयु बड़ी होगी उतना अन्त तक बाप से योग लगाए वर्सा लेंगे। योग से तन्दरुस्ती को भी ठीक करना है, इसलिए बाप कहते हैं योगी भव। मेरे को निरन्तर याद करो। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना स्वर्ग में पालब्ध पायेंगे। तो बाप कहते हैं बच्चे योग में रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाकी थोड़ा समय है।

○ जन्म-जन्म के पाप हैं इसलिए योग बहुत अच्छा चाहिए तब ही विकर्म विनाश होंगे। सिर से बोझा कैसे उतारें-इसके लिए जितना हो सके उतना बाप को याद करना चाहिए। बाबा, आप कितने मीठे हो! बाप कहते हैं-लाडले बच्चे, गफलत नहीं करना। माया पूरा पहरा दे रही है इसलिए देही- अभिमानी भव। यह है बुद्धियोग की रेस, इसमें ही सब कुछ है। बाबा बार-बार

कहते हैं अपना कल्याण चाहते हो तो योग बहुत अच्छा चाहिए। फिर बहुत हर्षित रहेंगे। हम ईश्वर की सन्तान हैं। हमको भविष्य के लिए बाप से वर्सा मिलता है। कलियुग में तो नहीं राज्य करेंगे। राज्य करना है सतयुग में। देही- अभिमानी बनना बहुत बड़ी मंजिल है। ऐसे थोड़ेही विश्व का मालिक बनेंगे। सितम भी बहुत सहन करने पड़ेंगे। कितनी बाँधेली बच्चियाँ मार खाती हैं। आखरीन विजय तुम बच्चों की है ही। तुम सिर्फ बाप की याद में रहो। यह है योगबल, जो बाप तुम्हें एक ही बार सिखलाते हैं जिससे तुम सारे विश्व का मालिक बनते हो और तो कोई बन न सके।

- राम है बाप, रावण है दुश्मन माया। माया भी जबरदस्त है। यह खेल है एक- दो को फारकती दिलाना। राम तुमको माया रावण से त्याग दिला रहे हैं। माया फिर तुमको बाप राम से त्याग दिलाती है। बाप कहते हैं देह सहित जो भी सम्बन्धी आदि देह के हैं, सबका बुद्धि से त्याग करो। मैं फलाना हूँ, फलाने धर्म का हूँ - यह भूल अपने स्वधर्म में टिको। देह के सब धर्म छोड़ अपने को अकेला समझो। इस दुनिया की हर एक चीज से त्याग दिलाते हैं। अशरीरी बन जाओ। मेरा बनकर और मेरे को याद करो। बाप को भूले तो माया का गोला लग जायेगा। बाप को याद करने का खूब पुरुषार्थ करते रही। माया भी बड़ी जबरदस्त है। बाप का बनकर भी फिर माया त्याग दिलाकर बाप से छुड़ा देती है। बाप आकर माया से त्याग दिलाते हैं। कहते हैं अपने को आत्मा समझो। इस कपड़े को देह को, भूलते जाओ। बस, अभी हमको जाना है। उस नाटक में भी एक्टर्स होते हैं।

- यह है तुम्हारा मरजीवा जन्म। जो जीते जी मरते नहीं उनका मरजीवा जन्म नहीं कहेंगे। उन्हों को तो खुशी का पारा भी चढ़ नहीं सकता। जब तक मरजीवा नहीं बने हैं अर्थात् बाप को अपना नहीं बनाया है, तब तक पूरा वर्सा भी मिल नहीं सकता। जो बाप के बनते हैं, जो बाप

को याद करते है उनको बाप भी याद करते हैं। तुम हो ईश्वरीय सन्तान। तुम्हें नशा है कि हम ईश्वर बाप से वर्सा अथवा वर ले रहे है।

○ जब बाबा बच्चों को कहते हैं तब याद करते हैं, फिर भूल जाते हैं। जो बात याद रहती है वह फिर औरों को समझाने के लिए दिल टपकती है। याद नहीं होगी तो दिल टपकेगी नहीं। फिर वह खुशी की उछल नहीं आयेगी। मुरझाई हुई शक्ल दिखाई देगी। अभी तुम जानते हो हम फिर से गँवाया हुआ सतयुग का राज्य- भाग्य ले रहे हैं।

○ माँ बाप ऐसे तो नहीं कहते दिन-रात सर्विस करो। भल 8 घण्टे आराम करो, 8 घण्टे सर्विस करो, बाकी 8 घण्टे बाप को याद करो।

○ तुम ही पूज्य थे फिर तुम ही पुजारी बने हो। अब फिर पूज्य बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। जितना बाबा की याद में रहेंगे तो माया के तूफान खत्म होते जायेंगे। हातमताई का खेल दिखाते हैं। मुहलरा डालते थे तो माया भाग जाती थी। मुहलरा निकाला तो माया आ गई। बाप समझाते हैं बच्चे अपने को आत्मा भाई- भाई समझो। शरीर ही नहीं तो फिर दृष्टि कहाँ जायेगी। इतनी मेहनत करनी है। कल्प-कल्प तुम्हारा ही पुरुषार्थ चलता है। पुरुषार्थ से तुम अपना भाग्य बनाते हो। बाप बच्चों को मुख्य बात कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। यह बात तुम ही जान सकते हो। अब नई दुनिया में जाने के लिए दैवी गुण भी जरूर धारण करना पड़े, पावन बनना पड़े। बाप को भी जरूर याद करना पड़े और पूरा-पूरा याद करना है ताकि पाप कट जाएं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बनेंगे, इनको कहा जाता है योग अग्नि।

○ तुम बच्चों को बेहद के बाप से बुद्धियोग जोड़ने लिए मेहनत करनी पड़ती है। योग न होने के कारण ही फिर मनुष्य से पाप होते हैं या धारणा नहीं हो सकती है। बाप को याद नहीं करते। भगवान तो एक ही है। वह है मोस्ट बिलवेड स्वर्ग का रचयिता। वहाँ बहुत सुख है। यहाँ दु:ख होने के कारण ही भगवान को याद करते हैं। बाप बच्चों को सुख के लिए ही जन्म देते हैं। सतयुग त्रेता को कहा ही जाता है सुखधाम। अभी है कलियुग। इनके बाद फिर सतयुग आना है। तो जरूर बाप को भी आना चाहिए। ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन कर फिर कोई को बैठ समझाना चाहिए।

○ बाबा तो कहेंगे अच्छी रीति पढ़ो तो टीचर का भी नाम बाला होगा। बाप है इजाफा देने वाला। अच्छी रीति पढ़ने वाले को और पड़ाने वाले को इजाफा मिलता है। वाह-वाह निकलती है। पद भी ऊंच पाना है तो पहले-पहले अपने दर्पण में देखो-हमारा बाप के साथ लँव है? कितना मैं देही- अभिमानी हूँ? कितना मैं रात दिन पुरुषार्थ करता हूँ? देह- अभिमान आने से यात्रा में खडे हो जाते हैं। बाप को याद करना भूल जाता है तो और ही दो कदम पीछे हट जाते हैं। एक तरफ फायदा होता है तो दूसरे तरफ नुकसान भी हो जाता है। देही- अभिमानी बनते तो खाता भरता जाता है। माया कहाँ न कहाँ घाटा डाल देती है। रेसपान्सिबुल बच्चें अपने खाते का विचार रखते हैं। नहीं तो कोई देवाला मारते हैं। यह व्यापार ही ऐसा है, जो जमा भी होता, तो ना भी होता। माया भुला देती है ना। तो देखना है कितना बाप को याद करते हैं और कितना औरों को आप समान बनाते हैं? व्यापारी तो सब हिसाब रखते हैं, नहीं तो व्यापारी नहीं अनाड़ी हैं। कोई तो बहुतों को सुख देते हैं, बच्चे बाबा को लिखते भी हैं कि फलाने ने ऐसा तीर मारा जो मैं पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बन गया। उन पर बलिहार जाते हैं। साथ मे शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप से व्यापार भी करना है। योगबल से पापों को भस्म करना है। औरों को पुण्य आत्मा बनाना है। यह है सारा बुद्धि का काम। बुद्धि सालिम तब बनती है जब बाप को याद करते हैं। नहीं तो देह- अभिमान में मित्र सम्बन्धी याद आयेंगे।

माया छोड़ती नहीं है। शिवबाबा की मत पर चलते-चलते श्रीमत को भी लात मार देते हैं फिर पद भ्रष्ट बन जाते हैं। अन्त में बहुत पछतायेंगे, त्राहि शहि करेंगे। अच्छे- अच्छे बच्चे तो सबकी दिल पर चडते हैं। नाम भी बाला करते हैं। भक्तिमार्ग में सब सजनियां है फिर बाप के रूप में अभी तुम बच्चे बने हो। फिर सजनी भी हो, तो सजनी को साजन की कितनी याद रहनी चाहिए!

○ यह है पाठशाला। इसमें अंद-श्रद्धा की कोई बात नहीं है। अपना धन्धाधोरी सब करते रहो। सिर्फ अपने बाप को और स्वर्ग को याद करो तो तुम्हारे ऊपर राजाई का तिलक आ जायेगा। आत्मा ही याद करती है। संस्कार आत्मा में है। आत्मा से ही बात करते हैं। मैं तुम्हारा बाप हूँ। कल्प पहले भी तुमने वर्सा लिया था। सूर्यवंशी राज्य किया था। फिर चन्द्रवंशी में गये। कलायें कमती होती जाती है। फिर वैश्य, शूद्र बने। अब स्मृति आई है कि नाटक पूरा हुआ है। मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत पर न चले, देह अभियान आया तो लगी चोट। फिर ब्रहस्पति की दशा बदलकर राहू का ग्रहण बैठ जाता है। फारकती दी तो रौरव नर्कवासी बन जाते हैं। बाप कहते हैं ऊंच पद पाना है तो रेस करो। अभी ऊंच पद पायेंगे तो कल्प- कल्प पाते रहेंगे। सिर्फ एक जन्म के लिए पवित्रता की प्रतिज्ञा करो तो 21 जन्म स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अब नर्क से दिल को हटा दो।

○ जैसे लक्ष्मी-नारायण एक गाया जाता है, राम सीता एक गाया जाता है। प्रिन्स प्रिन्सेज तो और भी होंगे। मुख्य तो एक होगा ना। तो ऐसा राजा रानी बनने के लिए बहुत मेहनत करनी है। साक्षी हो देखने से पता पड़ता है - यह साहूकार राजाई कुल का है या गरीब कुल का है। कोई माया से कैसे हारते है, जो भागन्ती भी हो जाते हैं। माया एकदम कच्चा खा जाती है। इसलिए बाबा पूछते हैं राजी-खुशी हो? माया के थप्पड़ से बेहोश वा बीमार तो नहीं पड़ते हो! ऐसे कोई

बीमार हो पड़ते हैं फिर बच्चे उनके पास जाते हैं ज्ञान-योग की संजीवनी बूटी देकर सुरजीत कर देते हैं। ज्ञान और योग में न रहने कारण माया एकदम कला-काया चट कर देती है। श्रीमत छोड़ मनमत पर चल पड़ते है। माया एकदम बेहोश कर देती है। वास्तव में संजीवनी बूटी यह ज्ञान की है, इससे माया की बेहोशी उतर जाती है। यह बातें सभी इस समय की हैं। सीतायें भी तुम हो।

○ छोटा बच्चा कितना मीठा प्रिय लगता है। सब उनको चूमते हैं। गोद में बिठाते हैं। पुराना जड़-जड़ी भूत हो जाता है तो कहते हैं कहाँ शरीर छूटे तो अच्छा। ज्यादा दुःख क्यों सहन करें। आत्मा एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेती है। बीमारी में जब ज्यादा पीड़ा होती है तो सब भूल जाता है। बाकी जिसका किसमें भाव होता है वह सामने आ जाता है। तुम्हारा तो मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। फिर दूसरे किसको याद क्यों करते हो। बाप कहते हैं - मेरे बिगर किसकी स्मृति भी न आये। गाया हुआ है अन्तकाल जो स्त्री सिमरे...। है सारी संगम की बात जो भक्ति में गाते हैं, इस समय सिर्फ तुमको बाप और वर्से को याद करना है। श्री नारायण तुम्हारी पालब्ध है तो अर्थ पूरा बुद्धि में होना चाहिए। बिगर अर्थ तो बहुत याद करते रहते हैं। पिछाड़ी में जिसके साथ जास्ती प्रीत होती है, वही याद आते हैं। बड़ा खबरदार रहना चाहिए। तुमको याद करना है एक बाप को। बाप कहते हैं - मनमनाभव। तुम बच्चे कहते हो बाबा हम कल्प-कल्प आपसे मिलते हैं। यह ज्ञान आपसे मधुबन में आकर लेते हैं। यह है वशीकरण मन्त्र। सतगुरू है तो तुम्हे मन्त्र भी ऐसा देता है, जो तुम अमर बन जाओ। यह है माया पर जीत पाने का मन्त्र। इस पर गाते हैं तुलसीदास चन्दन घिसे.... यह भी अब की बात है जो बाद में गाई जाती है। तुम बच्चों को राजतिलक मिल रहा है - बाप और वर्से को याद करने से। बाप और बादशाही को याद कर शरीर छोडेंगे तो राजाई तिलक मिल जायेगा। एक को तो नहीं मिलेगा। माला 108 की भी है। 16108 की भी है अब तो सिर्फ तुमको एक्यूरेट बाबा को याद करना है। अब तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। यह तो पक्का याद रखना

है। नहीं तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। यह योग की भट्ठी मोस्ट वैल्युबुल है। मुक्ति भी मिलती है ना। कोई कहते हैं हमको मन की शान्ति चाहिए, परन्तु पहले यह बताओ तुमको अशान्त किसने किया? जरूर पहले शान्ति थी। अभी अशान्त बने हो, तब तो शान्ति मांगते हो। शान्ति तो सारी दुनिया में चाहिए। एक को शान्ति मिलने से कुछ हो न सके। एक को शान्ति मिलने से सारी दुनिया मे थोड़ेही शान्ति हो सकेगी। अशान्त किसने किया है? मूँझ पड़े हैं। समझाया जाता है शान्तिधाम, सुखधाम और यह है दु :खधाम। बाप और वर्से को याद करो। परन्तु माया ऐसी है जो पवित्र बनने नहीं देती है। अबलाओं पर देखो कितने अत्याचार होते हैं। विष बिगर रह न सकें। बाबा के पास अनेक प्रकार के समाचार आते हैं। सबसे बड़ी हिंसा काम महाशत्रु की है। बाप कहते हैं - बच्चे विष छोड़ो, काला मुँह नहीं करो। तो कहते है कोशिश करेंगे। यह जहर है, आदि-मध्य- अन्त दु:ख देने वाला है।

○ बेहद का बाप जब आते हैं तब पुरानी सृष्टि का विनाश और नई सृष्टि की स्थापना हो जाती है। यह ज्ञान हमको मिलता ही है नई दुनिया के लिए। बाप कहते हैं देह सहित जो भी तुम्हारे संबंध आदि हैं, सबको भूल अपने को देही समझ मुझे याद करो। यह हमारा राजयोग है सतोप्रधान। अब तो है तमोप्रधान, फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान सृष्टि जरूर बननी है। सतोप्रधान बनाने वाला रचयिता बाप ही ठहरा। हम उस बेहद के बाप से यह सीख रहे हैं। कृष्ण से नहीं। भगवान एक है। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी देवता कहा जाता है। उनसे नीचे तबके वालों को मनुष्य कहा जाता है। भगवान रहते ही हैं परमधाम में। हम आत्मायें भी वहाँ रहती हैं। ऐसे रिफाइननेस से समझाना है। परन्तु योग पूरा नहीं है तो धारणा नहीं होती है। बाबा जो समझाते हैं वह किसको याद थोड़ेही पड़ता है। भल कोई बच्चे कहे हम याद करते हैं परन्तु बाबा मानते नहीं। अगर तुम याद करते हो तो बुद्धि शुद्ध होनी चाहिए और धारणा अच्छी होनी चाहिए। धारणा है तो फिर करानी भी है। उपकार करना है। तुम जानते हो बाप आकर सब पर उपकार करते हैं। माया रावण अपकार करते हैं।

- वह तो आत्मा सो परमात्मा समझ लेते हैं। वह है रांग। तुम बच्चे जानते हो कि शिवबाबा इस शरीर द्वारा हमें समझा रहे हैं। शरीर बिगर तो एक्ट हो न सके। पहले-पहले तो यह निश्चय चाहिए। निश्चय बिगर तो कुछ भी बुद्धि में नहीं बैठेगा। पहले निश्चय चाहिए कि हम आत्माओं का बाप वह निराकार परमपिता परमात्मा है और साकार में है प्रजापिता ब्रह्मा, हम हैं ब्रह्माकुमार-कुमारियां। शिव के तो सब आत्मायें बच्चे हैं इसलिए शिवकुमार कहेंगे, कुमारी नहीं। यह सब बातें धारण करनी है। धारणा तब होगी जब निरन्तर याद करते रहेंगे। याद करने से ही बुद्धि रूपी बर्तन शुद्ध होगा। वाहूयात बातें सुनते-सुनते बर्तन अशुद्ध बन गया है, उसको शुद्ध बनाना है। बाप का फरमान है मुझे याद करो तो तुम्हारी बुद्धि पवित्र होगी। तुम्हारी आत्मा में खाद पड गई है, अब पवित्र बनना है। सन्यासी कहते हैं आत्मा निर्लेप है। बाप कहते हैं आत्मा में ही खाद पड़ी है। बाप आकर सभी आत्माओं को फरमान करते हैं कि मुझे याद करो, अपने को अशरीरी समझो, देही- अभिमानी बनो। मूल यह बात बाप बिगर कोई समझा नहीं सकते। पहले यह पूरा निश्चय होगा तो विजय पायेंगे, निश्चय नहीं होगा तो विजय नहीं पायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ती, संशय बुद्धि विनशयन्ती।

- बाप कहते हैं उठते बैठते मुझ बाप को याद करो। जैसे कुमार कुमारी की सगाई हो जाती है तो एक दो की याद रहती है ना। यहाँ तो साजन को और ही छोड़ भागन्ती हो जाते हैं। जो साजन स्वर्ग का मालिक बनाते उनको याद ही नहीं करते। ऐसे और कोई कह न सके। मैं कल्प पहले मुआफिक अजामिल जैसी पाप आत्माओं का उद्धार करने आया हूँ। कोई का कपड़ा अच्छा है, कोई का मैला है। सी कहती है-बाबा हमको पवित्र शुद्ध बनाओ।

○ सर्वव्यापी के ज्ञान ने बहुत नुकसान किया है। अब तुम बच्चों को बाप को याद करना है। ऐसे नहीं, कोई योग में बिठाये। मुरली सुनकर फिर चलते- फिरते योग में रहना है। यात्रा है, जा रहे हैं। आठ घाटा भल सर्विस करो, वह भी छूट है बाकी टाइम देना है। मुख्य बात है पवित्रता की। एक दो को पतित बनाते आदि-मध्य- अन्त दु देखी किया है।

○ अब तो बाप सम्मुख है, कहते हैं भक्तों के पास भगवान को आना पड़ता है - माया की जंजीरों से लिबरेट करने। बाबा कहते हैं-मैं जानता हूँ, यह माया की युद्ध है, कभी चढ़ेंगे, कभी गिरेंगे। योग टूटता है तो मन्सा, वाचा, कर्मणा में भी भूलें होती हैं। परीक्षा सब पर आती है। कुछ भी माया का वार न हो, फिर तो शरीर ही छूट जाए। सम्पूर्ण कोई बना नहीं है। यह घुड़ दौड़ है। राजस्व अथमेध यज्ञ कहते हैं। राजाई के लिए अथ यानी रथ को शिवबाबा पर बलि चढ़ाना है अर्थात् बच्चा बन पूरी सेवा करनी है।

○ अभी तुम पुरुषार्थ करते हो रुद्र माला में नजदीक पिरो जायें। सिर्फ बाप को याद करना है। बहुत सहज है। बच्चे के लिए बाप को याद करना बहुत सहज है, जन्मते ही बाबा-मम्मा कहना सीख जाते हैं। तो तुम भी बाबा-मम्मा के बच्चे बने हो। कहते भी हो तुम मात-पिता??.... । अभी तुम जानते हो हम मात- पिता के सम्मुख बैठे है। वह मात-पिता हमको राजाई प्राप्त करने के लिए शिक्षा देते हैं।

○ बड़े घर वालों के लिए तो आना ही बड़ा मुश्किल है। गरीबों पर फिर मार खाने की मुसीबत है। पवित्र रहने नहीं देते हैं। उनके साथ फिर युक्ति से चलना पड़ता है लेकिन पूरा नष्टोमोहा जरूर चाहिए। अधूरे नष्टोमोहा होगे तो एक टांग उस तरफ, एक टांग इस तरफ, लटक पडेने। फिर

ऐसे बहुत लटक दु :खी हो पड़ते हैं। बाप को भूलने से छी-छी हो जाते हैं। बाप बच्चों को निरन्तर याद करने के लिए कितनी युक्तियाँ बतलाते हैं। याद से ही विकार्मजीत बनेंगे। कल्प-कल्प श्रीमत देते आये है।

○ यह है करेक्ट चित्र। लिखत भी उनकी अच्छी हो। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र याद है। साथ में चक्र को समझाने वाला भी याद है। बाकी निरन्तर याद के अभ्यास में मेहनत बहुत है। निरन्तर याद ऐसी पक्की हो जो अन्त में कोई किचड़पट्टी याद न आये। बाप को कभी भूलना नहीं है। छोटे बच्चे बाप को बहुत याद करते हैं फिर बच्चा बड़ा होता है तो धन को याद करते हैं। तुमको भी धन मिलता है। जो अच्छी रीति धारण कर फिर दान करना चाहिए।

○ तुम सो देवता थे, सो क्षत्रिय बनें। 84 जन्मों की जन्मपत्री तुम ही बता सकते हो। तो यह बातें जब बुद्धि में टपकती रहेंगी तब किसको समझा सकेंगे। चिन्तन चलना चाहिए - हम बच्चे बाबा के साथ मददगार हैं। तो बुद्धि में आना चाहिए कि हम किसको ड़ामा का राज कैसे समझायें? उन्हों का योग बाप के साथ कैसे जुटायें? मनुष्य से देवता बनाने का पुरुषार्थ करायें अर्थात् बाप से बेहद का वर्सा लेने का मार्ग बतायें। जिनको बाप द्वारा मार्ग मिला होगा वही बतायेंगे। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं अथवा मुक्ति-जीवनमुक्ति के गेदस खोलते हैं। ऐसे सारा दिन विचार सागर मंथन करना चाहिए और स्वभाव भी बहुत मीठा धारण करना है। किसके भाव-स्वभाव में जलना वा मरना नहीं है। सहन करना है।

○ अभी तो नर्क है, अब जाना है स्वर्ग में। बाप को याद करने से सब विकर्म विनाश होंगे। परन्तु बाप से पूरा योग -नहीं है तो धारणा नहीं होती फिर कोई को समझा नहीं सकते। तुम ब्रह्मा मुख

वंशावली ब्रह्माकुमार कुमारियां हो। जो पवित्र रहते हैं वही बी .के. हैं। जो पवित्र नहीं रह सकते हैं वह ब्रह्मा मुख वंशावली शिवबाबा का पोश कहला नहीं सकते।

- अ बाप कहते हैं इस देह का भान छोड़ो। मुझ बाप को याद करने से ही तुम्हारे पाप भस्म होंगे। निरन्तर मुझे याद करो और कोई उपाय नहीं। अन्त तक याद करना है। माया जीते जगत जीत बनना है। माया पर जीत एक शिवबाबा ही पहना सकते हैं। शिवबाबा को याद करतै रहा तो विकर्म विनाश होंगे। योग अग्नि बिगर कोई पावन बन नहीं सकते। तुमने प्रतिज्ञा की है-बाबा, हम पवित्र बन भारत को पावन बनाए फिर राज्य करने। शिवबाबा को याद नहीं करते तो गोया अपने को पतित बनाते है इसलिए फिर धर्मराज की बहुत कड़ी सजा खानी पड़ेगी। तुम्हारे पर बड़ी रेसपान्सिबिलिटी है। बाप को याद करते रहना यह है रूहानी यात्रा।

- अशान्त यह 5 विकार ही करते हैं। परन्तु यह समझते नहीं, यह भूल गये हैं। आत्मा शान्त स्वरूप है। हे आत्मा, तुम आई हो शान्ति देश से फिर यह आरगन्स लिए हैं। अभी तुम उनसे अलग हो जाओ, डिटैच हो जाओ। इसमें और कुछ प्राणायाम आदि करने की बात नहीं। कहाँ तक गुफा में बैठेंगे। आत्मा कहती है मैं इन आरगन्स से डिटैच हो जाती हूँ क्योंकि मैं थक गई हूँ। अभी इस शरीर को भूल जाती हूँ। अभी बाप कहते हैं तुम अपने स्वधर्म और स्वदेश को याद करो। तुम असुल वहाँ के रहने वाले हो। अपने घर को याद करो। कर्म तो करना ही है। कर्म बिना रह नहीं सकते। वह समझते हैं हम भोजन अपने हाथ से नहीं पकाते हैं इसलिए कर्म सन्यासी नाम है। परन्तु कर्म का सन्यास तो हो नहीं सकता। उनका तो धर्म ही ऐसा है। गृहस्थियों के पास उनको खाना पड़ता है इसलिए फिर गृहस्थियों के पास जन्म ले निवृत्ति मार्ग में जाना है क्योंकि भारत को पवित्र बनाना है। भारत में ही प्योरिटी थी। सब प्योर थे। अब सब पतित हैं। बाप बैठ यह राज समझाते हैं। फिर कहते हैं - बच्चे, और कुछ न करो, सिर्फ

बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे और तुम मेरे पास चले आयेंगे। ड़ामा पूरा होना है। सतो, रजो, तमो से पास होकर अभी सबको वापिस जाना है।

○ बाप का बच्चा बनकर और बाप को याद नहीं करेंगे तो वर्सा कैसे पायेंगे। वह तो है लौकिक बाप। इस पारलौकिक बाप को तो बहुत याद करना पड़े। बहुत याद करने से ही ऊंच पद पायेंगे। जितना मेहनत करेंगे उतना पावन बन पावन दुनिया का राज्य पायेंगे। वापिस मेरे पास आकर फिर सतयुग में जाए राजाई करनी है। सब भगवान को याद करते हैं कि फिर से हम बाप के पास जायें। कहते हैं अमरनाथ ने पार्वती को कथा सुनाई सो तो तुम सब पार्वतियां हो। शिवबाबा ने सिर्फ एक पार्वती को थोड़ेही कथा सुनाई होगी। तुम तो बहुत सुनते हो ना। सब याद करते हैं कि हमको पतित से पावन बनाओ। पावन बनाने वाला है एक। कैसे पावन बनाते हैं? पहले-पहले जगत अम्बा पावन बनती है। फिर उनकी शक्तियां हैं। स्वर्ग का रचयिता एक ही बाप है और कोई हो न सके। अभी तुम अनुभवी बन गये हो। तुम बच्चों को कितना नशा रहना चाहिए। शिवबाबा तुमको गोद में ले स्वर्ग का मालिक बनाने लायक बनाते हैं। तुम समझते हो हम ईश्वर की गोद में आये हैं। जरूर ईश्वर हमको वापिस अपने साथ ले जायेंगे। खास तुम बच्चों को वारिस बनाया है।

○ तुम बच्चों को इस दुनिया में ममत्व नहीं रखना है। ज्यादा लोभ में नहीं जाना है। उसमें भी बुद्धि-योग भागता है। फिर अविनाशी कमाई से वंचित हो जाते हैं। नहीं तो इस कमाई का बहुत ख्याल रखना है। तुम्हारी कमाई सेकेण्ड बाई सेकेण्ड है। फिर अगर चलते-फिरते बाप को याद करो तो बहुत भारी कमाई है। और कमाईयाँ ऐसे चलते- फिरते होती है क्या? यह तो वन्डरफुल कमाई है। लौकिक बाप को बच्चों का ख्याल रहता है-बच्चे सुखी रहें, खाते रहें। इसमें बाल-बच्चों का ख्याल नहीं रहता। अपने लिए 21 जन्मों की कमाई करें। कैसा मजे का

ज्ञान है! हरेक बच्चे को अपने लिए कमाई करनी है। बाल-बच्चे, मित्र-सम्बन्धियों को भी याद नहीं करना है। अपनी देह को भी याद नहीं करना है। बाबा को भले इस देह में आना पड़ता है परन्तु है तो देही- अभिमानी। इस समय देह में आते हैं, आकर तुम आत्माओं को नॉलेज देते हैं अथवा सहज कमाई का रास्ता बताते हैं। अगर तुम प्रैक्टिस करते रहो तो बहुत कमाई कर सकते हो। बाबा भी प्रैक्टिस करते हैं बाप को याद करें तो आदत पड़ जाती है। अपने को भूल शिवबाबा याद रहता है क्योंकि शिवबाबा की इसमें प्रवेशता है। यह बाबा समझता है मैं ब्रह्माण्ड का मालिक हूँ। लौकिक बाप के बच्चे को रहता है ना कि हम बाप की मिलकियत के हकदार हैं। तो इस ब्रह्मा बाबा को भी रहता है कि हम ब्रह्माण्ड के मालिक हैं। बाबा की प्रवेशता है ना। तो वह नशा रहता है-हम ब्रह्माण्ड के मालिक हैं, प्रापर्टी का भी मालिक हूँ। शिवबाबा खुद तो विश्व का मालिक नहीं बनते है।

○ विश्व पर अर्थात् नई दुनिया पर विजय पाई क्योंकि तुम पाण्डव ईश्वर को जानते हो। उससे प्रीत रखते हो। जितना जो प्रीत रखते है, जितना जो याद करते हैं उतनी वह कमाई करते हैं-ऐसा कभी सुना? भारत का प्राचीन योग बहुत नामीग्रामी है। यह बाबा भी नहीं जानते थे, अब सब बातें बुद्धि में आ गई हैं। बाबा कहते हैं-सृष्टि के आदि- मध्य- अन्त का ज्ञान जो तुमको सुनाता हूँ वह सतयुग में नहीं रहेगा। वहाँ तो तुम्हारी प्रालब्ध के सुख का पार्ट जो कल्प पहले चला था वही चलेगा। यह ज्ञान बाप एक ही बार आकर देते हैं और अन्त तक देते ही रहेंगे। तुम भल कहाँ भी हो, शरीर छूटे तो शिवबाबा की याद हो, त्रिकालदर्शीपने का ज्ञान हो। ज्ञान- अमृत मुख में हो, स्वदर्शन-चक्र याद हो तब प्राण तन से निकले। कहाँ वह भक्तिमार्ग की कहावत, कहाँ यह ज्ञान की बातें। मनुष्य जब मरने पर होते हैं तो हाथ मे माला देते हैं। कहते हैं राम-राम कहो तो सद्गति हो जायेगी। परन्तु राम कौन है, कहाँ है-कोई जानते नही। कोई राम को, कोई हनूमान को याद करते हैं। अनेकों को याद करना-इसको भक्ति कहा जाता है। अब तुम एक को ही याद करते हो-जो तुमको ज्ञान दे, तुम्हारी सद्गति करते हैं।

○ अन्त तक यह नॉलेज धारण करनी है। पिछाड़ी में जाकर कर्मातीत अवस्था होगी। 8 पास विद ऑनर होते हैं। मिलेट्री में मरते हैं तो उनको पूरा सम्मान देते हैं। यह सब पुरुषार्थ कर रहे है, कर्मातीत बनने की रेस है। कौन अच्छी रीति योग लगाते और रूद्र माला में जाते हैं। मम्मा-बाबा तो प्रसिद्ध हैं फिर हैं नम्बरवार। पास विद आनर्स को फुल मार्क्स मिलते हैं। वह सजा आदि कुछ नहीं खाते हैं। उन्हों का मान बहुत है। हमेशा 9 रत्न गाये जाते हैं, 8 नही। 4 की जोड़ी हो जाती। बाकी है एक बीच में बाप। वह लोग तो अर्थ को नहीं समझते। जिसने जो राय दी वह बना देते हैं। जैनी लोग कितना हठयोग करते हैं, बाल निकालते हैं। यह तो हिंसा हो गई। यह सन्यास तो दु -ख देने वाला है। तुमको तो कुछ भी नहीं करना पड़ता है। तुमको तो टैम्पटेशन देकर तुमसे विकारों का सन्यास कराते हैं। यह नॉलेज भी तुम्हारे सिवाए और कोई में नहीं है। बरोबर 84 जन्मों का चक्र लगाया। अभी हम वापिस जाते हैं। जितना योग में रहेंगे तो पवित्र बन सकेंगे। याद में रहते और सर्विस करते रहें तो उनको जास्ती फल मिलेगा। मोस्ट बिलवेड बाप है जिससे 2। जन्मों के लिए सुख का वर्सा मिलता है।

○ अब तुम बच्चों की बुद्धि का योग बेहद के बाप तरफ है। बुद्धि का योग अभी हद के बाप से तोड़ना है। सारी दुनिया के जो भी मित्र संबंधी हैं, बल्कि इस देह को, दुनिया को सबको भूलना है। यह बाप के डायरेक्शन मिलते है। बाप बच्चों को कभी नहीं भूलते हैं। बाप तो कहते हैं भक्ति मार्ग में भी तुम भक्तों की हम सम्भाल करते आये हैं। परन्तु ड्रामा अनुसार तुम बच्चों को भूलना ही है। भूलवाती है माया। हम आत्मा हैं - यह भी रावण भुला देते हैं। देह- अभिमानी बना देते हैं। यह तुम बच्चों का पार्ट है। ऐसे नहीं कि तुम वहाँ सिर्फ बाप को भूल जाते हो, परन्तु वह जो है जैसा है उस बाप की याद और सुख देने का ज्ञान भूल जाते हो। अभी तुम जानते हो बाबा कल्प-कल्प आते है। बाबा कैसा है - यह भी बुद्धि मे धारण करना है। मनुष्यों

ने तो शिवलिंग का बड़ा चित्र बना दिया है। और सभी के चित्र तो ठीक हैं। जैसे ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का चित्र भी ठीक है, मन्दिरों में पूजे जाते हैं।

○ बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते अपने को आत्मा निश्चय करो। निरन्तर मुझे याद करने का पुरुषार्थ करो, फिर है त्याग की बात। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य कहते हैं ना। वैराग्य से त्याग होता है। सन्यासी पहले वैराग्य दिलाते हैं कि यह काग विष्टा समान सुख है इसलिए हम घरबार छोड़ते हैं। बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं किसके साथ चल रहे हो? शिवबाबा से ही वर्सा मिलना है। बुद्धि में शिवबाबा ही याद रहे। उनसे स्वर्ग में अथाह सुख मिलेगे। तुम कहेंगे हम शिवबाबा के साथ चल रहे हैं। कोई नया होगा तो वह कहेगा कि शिवबाबा तो निराकार है।

○ मृत्युलोक में आदि-मध्य- अन्त दु :ख है। ऐसे दु :खधाम को भूलना पडे। सुखधाम और शान्तिधाम को याद करना है। हम सुखधाम जा रहे हैं वाया शान्तिधाम। जहाँ के हम रहवासी हैं। यह भी स्वदर्शन चक्र हुआ ना। अपने बाप और स्वीट होम को याद करना है। कन्या बाप का घर छोड़ ससुरघर जाती है तो गाते हैं ना पियरघर से चले ससुरघर तो तुम्हारा यह है ब्रह्मा का पियरघर। अब तुम स्वर्ग ससुरघर जायेंगे। वहाँ सुख ही सुख है। यहाँ है दु :ख। कन्या भी घर छोड़ती है सुख के लिए। परन्तु वहाँ उनको पतित बनाए दु :खी बनाया जाता है। अभी बाप समझाते हैं मैं तुमको एकदम नयनों पर बिठाकर स्वर्ग ले जाने लिए आया हुआ हूँ। सिर्फ मुझे याद करो। वहाँ तुमको कोई दु :ख नहीं होगा।

○ मनुष्य कहते हैं- भगवान कालों का काल है जो सभी को मार डालते हैं। परन्तु मैं मारता नहीं हूँ। मैं तो तुम्हें शरीर से मुक्त कर, आत्मा को गुल-गुल बनाए वापस ले जाता हूँ। इसमें डरने की तो बात ही नहीं है। बहुत बच्चे मरने से डरते है। डरते वह हैं जिनका पूरा योग नहीं। अरे, हम

तो तैयारी कर रहे हैं वापस जाने की। अभी तुम बच्चे जानते हो सच-सच तुमको निर्वाणधान जाने लिए बाबा शिक्षा देते हैं। खुशी से जाना चाहिए। पुराने काँटों से सम्बन्ध तोड़ना चाहिए। बाप कितना सहज कर बतलाते हैं। सिर्फ मुझे याद करो इसमें तो बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो मेरे बच्चों से पूछो। अभी के पुरुषार्थ से 2। जन्मों की प्रालब्ध बनाते है।

○ बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। सिर्फ बाप को याद करते हैं। गृहस्थ व्यवहार मे रहते हैं, इसमें कोई छोड़ने की बात नहीं। अपनी दिल से पूछना है-हम बाबा को याद करते है? रात को हमेशा पोतामेल देखो। सारे दिन में अथवा सवेरे उठकर कितना समय बाप को याद किया? बाप को याद कर श्रीमत पर चलना है। एक दो को काँटा नहीं लगाना है। काम-क्रोध है मुख्य। इनको जीतो तो दूसरे छोटे-छोटे विकार ठण्डे हो जायेंगे। काम महाशत्रु है। काम के कारण लड़ाई-झगड़े मारामारी कितना करते हैं। कहते हैं-बाबा, बच्चे बहुत अशान्त करते है। स्वर्ग में तो कभी कोई किसी को तंग नहीं करते। वहाँ बच्चे भी तंग नहीं करेंगे इसलिए अब बाप और स्वर्ग के सुख को याद करो। बस, अब हम चले सुखधाम।

○ मनुष्यों को नष्टोमोहा बनने में मेहनत लगती है क्योंकि उनके पास कोई एम ऑब्जेक्ट नहीं है। यहाँ तो तुमको प्राप्ति बहुत है तो बहुत नष्टोमोहा होना चाहिए ना। एक बाबा के साथ योग लगाना है - बाबा, ओ मीठे-मीठे बाबा, आपको हमने पूरा जान लिया है, आगे तो सिर्फ कहने मात्र गॉड फादर कहते थे, अभी तो आप आये हो फिर से स्वर्ग की राजाई देने, यह कलियुग तो कब्रिस्तान होने वाला है इसलिए हम इसको क्यों याद करें। बाप कहते हैं इस कब्रिस्तान में, गृहस्थ व्यवहार में रहते मुझे याद करो। यह तो बहुत सहज है। जैसे भक्ति मार्ग में मनुष्य कृष्ण की पूजा करते रहते हैं, बुद्धि धन्धे धोरी में भागती रहती है। मन का घोड़ा कहाँ न कहाँ भागता

रहेगा, तवाई के मुआफिक । बाप कहते हैं कि शरीर निर्वाह करते बुद्धि का योग मेरे साथ लगाओ । मेरी याद से तुम्हें बहुत प्राप्ति होगी । और सबसे तो अल्पकाल की प्राप्ति होती है ।

- यह रचता और रचना की नॉलेज बाप खुद ही आकर देते हैं। सब प्वाइंट्स कोई समझ भी नहीं सकेंगे। यहाँ से बाहर गये – कोई का संग मिला और खत्म। कहा भी जाता है संग तारे कुसंग बोरे... भल यहाँ भी बैठे हैं परन्तु पूरा बुद्धियोग नहीं है। ज्ञान नहीं है तो संगदोष में गिर पड़ते हैं। कोई भी किसी में आदत है तो उनका संग करने से वह असर झट पड़ जाता है। यहाँ है बाबा का संग। फिर जो बाप को फालो कर औरों का भी उद्धार करते हैं, वही ऊंच पद पाते हैं। कई नये-नये बच्चे कहते हैं बाबा हम नौकरी आदि छोड़ इस सर्विस में लग जायें? बाबा कहते हैं – आगे चल माया नाक से ऐसे पकड़ेगी जो बात मत पूछो। अनुभव कहता है – ऐसे बहुतों ने छोड़ा फिर चले गये। ईश्वरीय जन्म तो लिया फिर माया ने घसीट लिया। बड़े अच्छे-अच्छे बच्चों को माया एक घूसा लगाए बेहोश कर देती है, जिनका बुद्धियोग बाहर भटकता रहता है, पुराने सम्बन्धियों आदि में इसलिए बाबा कहते हैं देहधारियों से बुद्धियोग जास्ती मत रखो। इस बाबा से भी भल तुम्हारा कितना भी प्यार है तो भी इनसे बुद्धियोग मत लगाओ। बाप को याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। कोई भी शरीरधारी में प्यार मत रखो। सतसंगों में सब शरीरधारी ही सुनाते हैं।

- तुम ब्राह्मण हो सच्ची-सच्ची गीता सुनाने वाले। सच्ची-सच्ची यात्रा का राज़ तुम समझाते हो। यहाँ बैठे तुम याद की यात्रा में रहो तो पाप भस्म हो जायेंगे। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का और कोई उपाय नहीं। योग की बहुत महिमा है। मेहनत भी इसमें है। बहुत तूफान आते हैं। सहज भी है तो मुश्किल भी है। तुम्हारी योग तपस्या के भी चित्र हैं।

○ बीच में बेगरी पार्ट चला, यह भी परीक्षा हुई थी। बहुत चले गये। यह सब शिवबाबा का क्या राज़ था वह भी गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। कितने डरकर भाग गये। नहीं तो दो रोटी खाने पर खर्चा बहुत कम लगता है। दो रोटी खाना, प्रभु के गुण गाना अर्थात् बाप और वर्से को याद करना। बाप को बहुत प्यार से याद करना है। बाप कहते हैं मैं सेकेण्ड में तुमको जीवनमुक्ति का राज़ समझाता हूँ। कलियुग में है जीवनबंध, जरूर मुक्ति-जीवनमुक्ति दूसरे जन्म में मिली होगी।

○ ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण। तुम कर्मयोगी तो हो ही। धन्धाधोरी आदि यह भी कर्म है। नींद भी कर्म है। कर्म तो करना ही है। तुम जब इस यात्रा पर बाप की याद में रहेंगे तो तुम देवता जैसा बन जायेंगे। मनमनाभव का अर्थ भी यह है, मामेकम् याद करो तो तुम मनुष्य से देवता बन जायेंगे।

○ बाप कहते हैं अपना चार्ट लिखो – कितना समय याद करते हैं? आगे चार्ट रखते थे। अच्छा बाबा को न भेजो अपने पास तो रखो। अपनी शक्ल देखनी है। हम लक्ष्मी को वरने लायक बने हैं? व्यापारी लोग अपना पोतामेल रखते हैं। कोई-कोई सारे दिन की दिनचर्या रखते हैं। हॉबी होती है लिखने की। यह बाबा बहुत अच्छी राय देते हैं कि अपना हिसाब-किताब रखो। कितना समय याद किया? कितना समय किसको समझाया? ऐसा चार्ट रखें तो बहुत उन्नति हो जाये। बाबा मम्मा को तो नहीं लिखना है। माला के दाने जो बनते हैं उन्हों को पुरुषार्थ बहुत करना है, बाबा ने कहा ब्राह्मणों की माला अभी नहीं बन सकती, अन्त में बनेंगी, जब रुद्र की माला बनेंगी। ब्राह्मणों की माला तो बदलती रहती है। आज 3-4 नम्बर में हैं, कल लास्ट 16108 में चले जाते हैं। कोई गिरते हैं तो बिल्कुल दुर्गति को पा लेते हैं। माला से तो गये, प्रजा में भी चण्डाल जाकर बनते हैं। अगर माला में पिरोना है तो मेहनत करो। बाबा सबके लिए बहुत

अच्छी राय देते हैं। भल गूँगा हो, कोई को भी ईशारे से बाबा की याद दिला सकते हैं। अन्धे, लूले कैसे भी हों – तन्दरूस्त से भी ज्यादा ऊंच पद पा सकते हैं। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गाई हुई है। बाबा का बना और वर्सा मिल गया। उनमें नम्बरवार पद हैं। बच्चा पैदा हुआ, वर्से के हकदार बन गया। यहाँ तुम हो मेल्स बच्चे। बाप से वर्से का हक लेना है। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। फिर कहते हैं कल्प पहले भी हार खाई होगी। बॉक्सिंग है ना। पाण्डवों की थी माया रावण के साथ लड़ाई। कोई तो पुरूषार्थ कर विश्व के मालिक डबल सिरताज बनते हैं। कोई फिर प्रजा में भी नौकर चाकर बनते हैं। सभी यहाँ पढ़ रहे हैं। राजधानी स्थापन हो रही है। अटेन्शन आगे वाले दानों तऱफ जायेगा। 8 दाने कैसे चल रहे हैं। पुरूषार्थ से मालूम पड़ जाता है। ऐसे नहीं अन्तर्यामी है, सबकी दिल को जानते हैं। नहीं, जानी-जाननहार अर्थात् नॉलेजफुल है। .

○ अन्त में सब साक्षात्कार होंगे। फिर अपने किये हुए करतूत सब याद आयेंगे। बाप साक्षात्कार कराते रहेंगे। बाप का बनकर फिर क्या-क्या डिससर्विस की, फिर पछताना होता है इसलिए बाप समझाते रहते हैं कि सर्विस पर अच्छी रीति लगना है। बाबा को अच्छी-अच्छी बच्चियां चाहिए – सर्विस करने वाली। विचार करना चाहिए कि बाबा की सर्विस में क्या मदद करें जो हमारे स्वराज्य की जल्दी स्थापना हो जाए। सर्विस का शौक होना चाहिए। सर्विसएबुल बच्चों को पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाने में कितना माथा मारना पड़ता है। कम बात नहीं है फिर बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए कि हम स्वर्ग का वर्सा बाबा से ले रहे हैं। परन्तु है गुप्त। कर्मबन्धन का भी हिसाब-किताब कितना कड़ा है, जो पुरानी दुनिया को भूलते नहीं। धूलछांई में जाकर बुद्धियोग लटकता है। नई दुनिया में लगता नहीं, इसको कहा जाता है कर्म खोटे। अच्छा !

- गृहस्थ व्यवहार में तो रहना ही है इसलिए रिपोर्ट आती है भाई झगड़ा करता, फलाना झगड़ा करता, दुनिया में झगड़ा ही झगड़ा है। पवित्रता पर भी झगड़ा चलता है। खान-पान की परहेज रखनी होती है। तो बहुतों के लिए मुशीबत हो जाती है। बाप कितना समझाते हैं, याद में रहकर भोजन खाओ। डायरेक्शन अमल में नहीं लाते हैं। प्रैक्टिस करनी चाहिए। तुम हो पतित दुनिया को पावन बनाने वाली शक्तियाँ। याद से पाप भस्म हो जाते हैं। मेहनत है बहुत इसलिए कोटों में कोई निकलता है। पुरुषार्थ करते भी फेल हो जाते हैं। आश्चर्यवत बाबा का बनन्ती, बाबा बाबा कहन्ती। फिर भी श्रीमत पर नहीं चलते, तो गिरन्ती, भागन्ती। माया खींचती है तो बाप को फारकती दे देते हैं। कल्प पहले जो हुआ है वही रिपीट होना है, इसमें मेहनत चाहिए। जो श्रीमत पर चलते वही धारणा कर सकते हैं। मम्मा बाबा कहकर फालो नहीं करेंगे तो दुर्गति को पायेंगे अर्थात् कम पद पायेंगे। अनपढ़े, पढ़े के आगे भरी ढोयेंगे।

- भल युगल इकट्ठे रहो, देखो आग तो नहीं लगती है? आग लगी तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। एक बार आग लगी तो फिर लगती ही रहेगी, इसलिए अपने को सम्भालना भी है। योग में रहने की बड़ी प्रैक्टिस चाहिए। योग में भल कितना भी आवाज हो, अर्थक्वेक हो, बाम्ब गिरें, देखें क्या होता है। इन बातों से डरना नहीं है। यह तो जानते ही हैं कि रक्त की नदियाँ भारत में ही बहनी है। पार्टीशन में रक्त की नदियाँ बही ना। अजुन तो बहुत आफतें आनी हैं, तुमको देखना है, मिरूआ मौत मलूका शिकार। तुम फरिश्ते बन रहे हो। जो अच्छे सर्विसएबुल होंगे वही उस समय ठहर सकेंगे, इसमें बहुत मज़बूती चाहिए। शिवबाबा को याद करना है। शिवबाबा जैसा मीठा बाप फिर कभी नहीं मिल सकता। उनकी ही मत पर चलना है। मुख्य बात ही है पवित्र बनने की।

○ आधाकल्प तुम्हारा मन बुद्धि भटकते-भटकते हैरान हो गया। अब श्रीमत पर मन बुद्धि को भटकाना बन्द करो। एक तरफ बुद्धि का योग लगाओ, देह-अभिमान में आकर बहुत भटके हो। अनेक प्रकार के मित्र सम्बन्धियों आदि का बंधन रहता है। बाप कहते हैं – उन सबको छोड़ो, एक के साथ सम्बन्ध जोड़ो। कहते हैं हमारा मन बहुत भटकता है। एक के सम्बन्ध में जुट नहीं सकता। हम चाहते भी हैं ऐसे मीठे-मीठे बेहद का सुख देने वाले बाप के साथ योग पक्का रखें, कहाँ भी बुद्धि भटके नहीं। बाप कहते हैं आधाकल्प से आसुरी मत पर भटकते-भटकते तुम हैरान हो गये हो। अब यह भटकना छोड़ दो। मैं आत्मा हूँ – यह भूलने से समझते हैं मैं देह हूँ। तो देहों के साथ सम्बन्ध हो जाता है। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि तोड़ दो लेकिन तुम इस मृत्युलोक के बंधन में रहते हुए ईश्वरीय सम्बन्ध को याद करो। यह है बंधन, वह है सम्बन्ध। बंधन होता है दु:ख का। सम्बन्ध होता है सुख का। बंधन और सम्बन्ध दोनों अलग-अलग हैं। बंधन अक्षर पुरानी दुनिया से, सम्बन्ध अक्षर नई दुनिया से लगता है। अब तुम नई दुनिया के मालिक बनने वाले हो तो नई दुनिया के साथ सम्बन्ध जोड़ो। इस बंधन में रहते हुए सम्बन्ध के लिए पुरुषार्थ करना है। सम्बन्ध किसके साथ रखना है? ऐसा तो कोई है नहीं जो कहे मनमनाभव, मध्याजी भव और कहे कि बेहद के बाप से और बेहद सुख के वर्से से सम्बन्ध रखो। बाप ही यह सम्बन्ध जुड़ाते हैं। जब तुम बंधन में हो तो तुमको पुरुषार्थ कराने वाला कोई मनुष्य नहीं है। एक ही बाप है जो बंधन से छुड़ाकर सम्बन्ध में ले जाते हैं। बंधन है मायावी राज्य में, सम्बन्ध है रामराज्य में वा ईश्वरीय राज्य में, उनको ईश्वरीय राज्य और इनको आसुरी राज्य कहा जाता है क्योंकि सतयुग ईश्वर स्थापन करते हैं। उसमें ऊंच पद पाने के लिए तुम बच्चों को पुरुषार्थ कराते रहते हैं। अब तुम संगमयुग पर हो। सिर्फ संगम पर ही सम्बन्ध का पुरुषार्थ होता है और कोई युग में यह पुरुषार्थ नहीं होता।

○ बाप कहते हैं तुम बच्चे इस ड्रामा के राज़ को जान गये हो कि सारा झाड़ पुराना हो गया है। कलियुग के बाद सतयुग को आना है जरूर, चक्र को फिरना है जरूर। बुद्धि में रखना है कि

अब नाटक पूरा हुआ है, हम जा रहे हैं। चलते-फिरते यह याद रहे कि अब हमको वापिस जाना है। मनमनाभव, मध्याजी भव का भी यही अर्थ है। कोई भी बड़ी सभा में भाषण आदि करना है, तो यही समझाना है कि परमपिता परमात्मा फिर से कहते हैं हे बच्चे, देह सहित देह के सब धर्म त्याग अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो पाप दग्ध होंगे। मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बन मुझे याद करो। पवित्र रहो, नॉलेज को भी धारण करो। अभी सब दुर्गति में हैं।

○ अब तुम्हारी बुद्धि का ताला खुल गया है। बाप समझाते हैं चलते फिरते अपने को एक्टर समझो। अब हमको वापिस जाना है, यह सदैव याद रहे – इसको ही मनमनाभव, मध्याजी भव कहा जाता है। बाप घड़ी-घड़ी याद दिलाते हैं, बच्चे तुमको वापिस ले जाने आया हूँ। यह है रूहानी यात्रा।

○ तुमको याद करना है एक बाबा को, दूसरा नॉलेज को। ज्ञान तो सेकेण्ड का बहुत सिम्पल है। परन्तु ज्ञान शुरू कब से हुआ, विस्तार करना पड़ता है क्योंकि भूल जाता है। माया के विघ्न भी पड़ते हैं। शारीरिक बीमारी आ जाती है। आगे कभी बुखार नहीं हुआ होगा, ज्ञान में आने के बाद बुखार हो जाता है तो सशंय पड़ जाता है कि ज्ञान में तो बंधन खलास होने चाहिए। परन्तु बाबा तो कह देते यह बीमारी और आयेंगी, हिसाब-किताब भी चुक्तू करना है।

○ तुम जानते हो मम्मा बाबा और हम ब्राह्मण सबसे जास्ती पुजारी बने हैं। अभी फिर आकर ब्राह्मण बने हैं, उनमें भी नम्बरवार हैं। कर्म का भोग होता है, उनको योग से हटाना है। देह-अभिमान को तोड़ना है। बाबा को याद कर बहुत खुशी में रहना है। मात-पिता से हमको सुख

घनेरे मिलते हैं। बाबा से वर्सा मिलता है। बाबा ने हमारा रथ लोन पर लिया है। बाबा तो इस रथ की खातिरी करेंगे।

○ वेद-शास्त्र आदि अध्ययन करना, जप-तप आदि करना, यह जो कुछ भक्ति आधाकल्प से करते आये हो उसको ज्ञान नहीं कहेंगे। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। वह तुमको बिल्कुल सही रास्ता बताते हैं कि बच्चे अब मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। बुद्धियोग ऊपर में लटका हुआ होना चाहिए। ऐसे नहीं कि बाबा यहाँ है तो बुद्धि भी यहाँ रहे। भल बाबा यहाँ है तो भी तुमको बुद्धियोग वहाँ शान्तिधाम में लगाना है। ज्ञान है ही एक सेकण्ड का।

○ तुम अब समझ सकते हो कि हमको कौन पढ़ाते हैं। फिर भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, जिस कारण उन्हों की अवस्था भी ऐसी ही रहती है। देवता बनने के जैसे लायक ही नहीं बनते हैं। काम का भूत वा देह-अभिमान का भूत होने से बाप को याद नहीं कर सकते। देही-अभिमानी जब बनें तब बाप को याद करें। बाप के साथ लॅव भी रहे और पढ़ाई में भी एक्यूरेट रहें। यह बहुत वैल्युबुल ज्ञान रत्न हैं, जिसका बहुत नशा रहना चाहिए। जिस्मानी पढ़ाई में भी रजिस्टर रहता है। उसमें मैनर्स भी दिखाते हैं। गुड, बेटर और बेस्ट... यहाँ भी ऐसे है। कोई तो बिल्कुल कुछ भी जानते नहीं हैं।

○ यह है राजयोग, राजाई प्राप्त करने का। पढ़ाई वा योग में सुस्ती करने से राजाई नहीं प्राप्त कर सकेंगे। लिमिट है – इतने राजायें बनने हैं। जास्ती बन न सकें। जो अच्छी ख्यालात वाले होंगे उनका झट पता लग जायेगा कि यह राजाई कुल में आ सकता है वा नहीं। तो अब सेन्टर्स पर राय निकालते हैं। बड़े-बड़े दुकान बाबा के बहुत हैं। सब सेन्टर्स (दुकान) एक जैसे तो चल न

सकें। कोई मैनेजर अच्छा होता है तो दुकान को अच्छा चलाते हैं। कोई पर ग्रहचारी बैठ जाती है तो अच्छे-अच्छे भी फेल हो पड़ते हैं। बाप कहते हैं अब दिन नजदीक आते जाते हैं। लड़ाई की तैयारियाँ भी होती जाती हैं। आपदायें भी आनी हैं। बहुत थोड़ा समय है, योग लगाने में बड़ी मेहनत है। योग से ही विकर्म विनाश करने हैं। अगर योग में रह गोल्डन एज तक नहीं पहुँचे तो रॉयल घराने में आ न सके। प्रजा में चले जायेंगे। अच्छे पुरुषार्थी जो होंगे वह कभी नहीं कहेंगे कि जो तकदीर में होगा। ड्रामा अनुसार ऐसे-ऐसे ख्यालात वाले प्रजा में जाए नौकर बनेंगे।

○ बाप को याद करना तो सहज है ना। तुम बाप को कैसे भूलते हो। जिस बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। जबरदस्त आमदनी है। फिर भी माया बुद्धि का योग हटा देती है। साजन जो श्रृंगार कराए महारानी बनाते हैं, ऐसे साजन को भूल जाते हैं। आधाकल्प माया का राज्य चलता है। अभी तुम माया पर जीत पाकर जगतजीत बनते हो।

○ बाप को ही स्वर्ग की स्थापना करनी है ना। वही मालिक है। जैसे इनको दादे के वर्से का हक है, वैसे पोत्रे-पोत्रियों को भी हक है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। ऐसे नहीं कहते कि इस देहधारी को भी याद करो। बाप सम्मुख बात कर रहे हैं। कल्प पहले भी ऐसे समझाया था। परन्तु बच्चों को देह-अभिमान बहुत आ जाता है। देहधारियों से लॅव हो जाता है। बाप कहते हैं हे आत्मायें तुम तो अशरीरी आई थी फिर पार्ट बजाते अब 84 जन्म पूरे किये हैं। अभी मैं कहता हूँ तुमको वापिस चलना है। मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। देहधारी को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। तुम वायदा करते हो बाबा हम आपको ही याद करेंगे। तुमको इस पुरानी दुनिया में अब रहना ही नहीं है, इसमें कोई चैन नहीं इसलिए कहते हो ऐसी जगह ले चलो जहाँ सुख चैन हो। तुम बच्चे जानते हो हम पहले जायेंगे शान्तिधाम में।

○ तुम जानते हो हम इस मृत्युलोक से अमरलोक चले जायेंगे वाया शान्तिधाम। यह बुद्धि में याद रखना है जब तक तुम ट्रांसफर हो जाओ। अपनी पढ़ाई की रिजल्ट तक पढ़ना पड़े। जब तक मृत्यु नहीं हुआ है, पढ़ना ही है। यह तो याद कर सकते हो ना कि अब हमको जाना है घर। यह दुनिया, यह सब कुछ छोड़ना है। खुशी होनी चाहिए। बेहद नाटक का राज़ भी समझ गये हो। हद का नाटक पूरा होता है तो कपड़े बदली कर घर चले जाते हैं। वैसे हमको भी जाना है। 84 जन्मों का चक्र पूरा होता है। याद भी करते हैं हे पतित-पावन आओ। शिवबाबा को ही याद करेंगे। एक तरफ कहते पतित-पावन आओ दूसरे तरफ फिर सर्वव्यापी कह देते। कोई अर्थ ही नहीं निकलता। बच्चों को कितना सहज रीति समझाते हैं – शान्तिधाम को याद करो। यह दु:खधाम है, इसका विनाश भी सामने खड़ा है। यह वही महाभारत लड़ाई है। यूरोपवासी यादव भी हैं और कौरव पाण्डव भाई-भाई हैं। हम एक ही घर के हैं ना। भाई-भाई में युद्ध हो नहीं सकती। यहाँ तो युद्ध की बात ही नहीं। परन्तु मनुष्यों का भी धन्धा है एक दो को लड़ाना। यह तो एक रसम है।

○ मीठे-मीठे बच्चे जानते हैं कि हम बाप और दादा के सामने बैठे हैं। हर एक बात नई है और याद करना है श्रीमत पर एक ही बाप को। बाप श्रीमत देते हैं दादा के तन द्वारा। घड़ी-घड़ी बच्चों को सावधानी मिलती है कि मनमनाभव अर्थात् बाप को याद करो। इस दादा को याद नहीं करना है। दादा की आत्मा भी बाप को याद करती है तो तुमको भी याद करना है। तुम आत्मा अशरीरी हो, मैं भी अशरीरी हूँ सिर्फ तुमको इस तन द्वारा पढ़ा रहा हूँ। यह कोई सर्वशक्तिमान नहीं है। सर्वशक्तिमान एक ही बाप है। भल तुम विश्व के मालिक बनते हो परन्तु तुमको सर्वशक्तिमान नहीं कहेंगे। सर्वशक्तिमान द्वारा तुम रावण पर जीत पाकर फिर से अपना राज्य पद लेते हो। बाप का फरमान है कि मुझ अपने बाप को याद करो। तुम झाड़ के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझ गये हो। अभी तुम कितने समझदार बने हो अर्थात् बुद्धि में नॉलेज है।

○ हम आत्मा अशरीरी हैं। शान्तिधाम में रहते हैं। वहाँ मन की शान्ति आदि नहीं कहेंगे, मन की शान्ति, वास्तव में यह अक्षर कहना भी रांग है। मन तो घोड़ा है। जब तक शरीर है आत्मा के साथ, तो मन शान्त हो नहीं हो सकता। कर्म तो करना ही है। अल्पकाल की शान्ति तो रात्रि को नींद में होती है। आत्मा कर्मेन्द्रियों से काम करते-करते थक जाती है तो अशरीरी हो जाती है। आत्मा कहती है मुझे नींद आती है। मैं थक गया हूँ। तो आत्मा अशरीरी हो जाती है। अभी बाप को याद करना है तो विकर्म विनाश होंगे। सो जाने से कोई विकर्म विनाश नहीं होंगे। यह तो बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना है, जो पुरुषार्थ बहुत जरूरी है। घड़ी-घड़ी बाप कहते हैं मुझे याद करो। जितना जो सर्विस करेंगे, अपनी ही प्रजा बनायेंगे। ढेर की ढेर प्रजा बनानी है, बहुतों का कल्याणकारी बनना है। तुम मनुष्य मात्र के कल्याणकारी हो।

○ बच्चों को सतोप्रधान बनना है। योग से खाद भस्म हो जायेगी इसलिए इसको योग अग्नि कहा जाता है। याद अग्नि यह अक्षर शोभता नहीं है। योग अग्नि कहा जाता है, जिससे विकर्म भस्म होंगे। है बहुत सहज बात। परन्तु घड़ी-घड़ी कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। बाप कहते हैं – बच्चे देही-अभिमानी बनो। सतयुग से त्रेता तक तुम सोल कान्सेस रहते हो। तुम आधाकल्प सोल कान्सेस, आधाकल्प बॉडी कान्सेस बने हो। तो अब सोलकान्सेस बनने में मेहनत लगती है। सतयुग में समझते हैं हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। सर्प का मिसाल.... यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए है। सन्यासी ज्योति ज्योत में समाने चाहते हैं। वह यह नहीं जानते हैं कि हमको फिर आकर नया चोला लेना है। तुम जानते हो यह बूढ़ा शरीर छोड़ जाकर नया लेंगे। पुराने कपड़े को छोड़ने का दिल होता है। कछुए का मिसाल भी तुम्हारे लिए है। कर्म करते बाप को याद करते रहो।

○ बाप सभी बच्चों को पतित से पावन बनाने का रास्ता बताते हैं। ऐसे नहीं कहते कि आंखे बन्द कर मुझे याद करो। खाते-पीते चलते मुझे याद करना है। आंखे बन्द कर खाना खायेंगे क्या?

मक्खी अन्दर चली जाए। तुम बच्चों की आत्मा जानती है कि बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। कृष्ण तो मनुष्य था उनको भगवान कैसे कहेंगे। बाप कहते हैं – अब मुझे याद करो तो तुम पावन बनेंगे। जितना समय यात्रा में रहते हैं तो मनुष्य पवित्र रहते हैं। लौटकर आते हैं तो घर में फिर पतित बन जाते हैं। तुम्हारी है रूहानी यात्रा जो बाप कराते हैं। बाप कहते हैं – तुमको अमरलोक में चलना है तो मुझे याद करो। आत्मा पवित्र होने से ही तुम उड़ सकेंगे। अन्त मती से गती होगी। बाप की श्रीमत से ही सद्गति मिलती है। श्रीमत कहती है हे आत्मायें मामेकम् याद करो तो खाद निकल जाए और तुम मुक्तिधाम में चले जायेंगे, फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे। इस चक्र को समझने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे।

○ देवता धर्म वाले हैं सूर्यवंशी। राम को फिर क्षत्रिय की निशानी दे दी है। अभी तुम रूहानी क्षत्रिय हो। माया पर जीत पाते हो, इसमें समझने की बड़ी बुद्धि चाहिए। योग भी बड़ा सहज है। आत्माओं का योग लगता है परमपिता परमात्मा के साथ। योग आश्रम तो बहुत हैं परन्तु वह सब हठयोग कराते हैं। यह थोड़ेही कहते हैं परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाओ। तुम बच्चे जानते हो – बाबा हमको दलाल के रूप में मिले हैं। कहते हैं – मामेकम् याद करो तो खाद निकल जायेगी। याद करते-करते तुम मुक्तिधाम में चले जायेंगे।

○ बाप स्वर्ग रचता है तो तुम बच्चे भी स्वर्ग के मालिक तो बनेंगे। परन्तु सिर पर जो पापों का बोझा है उनको उतारने में टाइम लगता है। योग लगाना पड़ता है। अपने को आत्मा जरूर समझना है। आगे जब बाबा कहते थे तो जिस्मानी बाप याद आता था। अभी बाबा कहने से बुद्धि ऊपर चली जाती है। दुनिया में और किसकी बुद्धि में यह नहीं होगा कि हम आत्मा रूहानी बाप की सन्तान हैं। हमारा बाप टीचर गुरू तीनों ही रूहानी हैं। याद भी उनको करते हैं। यह है पुराना शरीर, इनको क्या श्रृंगार करना है। परन्तु अन्दर में समझते हैं अभी हम वनवाह में हैं। ससुरघर नई दुनिया में जाने वाले हैं।

○ हम तो विकारी गृहस्थ में रहने वाले हैं। तुम हमको यह ज्ञान कैसे दे सकते हो? हम हैं युगल, हमको बैचलर कैसे समझा सकेगा? हमको तो युगल समझाये, जो अनुभवी हो? विकार में गया हुआ हो, वही हमको समझा सकते हैं कि हमने ऐसे जीत पाई। ऐसे-ऐसे बाबा के पास पत्र आते हैं। बात तो ठीक है अब ऐसे अनुभवी से पत्र लिखाना चाहिए, जिसने भल शादी की हो परन्तु पवित्र हो। कोई को बाल-बच्चे थे, फिर पवित्र बने हैं। ऐसे-ऐसे हमको समझायें। ज्ञान तो बहुत अच्छा है। परन्तु कोई तीखा समझाने वाला नहीं है तो मैं मूँझ जाता हूँ। बहुत बातें सामने आती हैं। तो अनुभवी समझाने वाला हो। अब पत्रों द्वारा तो किसको इतना समझा नहीं सकते। सम्मुख आकर मिलें तो बाबा भी समझाये। ऐसे-ऐसे बहुत युगल हैं जो अपना अनुभव सुना सकते हैं कि हम ऐसे प्रवृत्ति में रह श्रीमत का पूरा-पूरा पालन कर रहे हैं। खान-पान की भी पूरी परहेज रखते हैं। कोई समझाने वाला ठीक नहीं है तो मूँझ पड़ते हैं। सर्विस के लिए बुद्धि चलनी चाहिए। देही-अभिमानी भी बनना है। कोई भी फैमिलियरटी में नहीं आना चाहिए। मेहनत लगती है। माया घड़ी-घड़ी फँसा लेती है। कर्मातीत अवस्था अभी हो नहीं सकती। बहुत एक दो के नाम-रूप में फँस पड़ते हैं। फिर बाबा को लिखते भी नहीं कि बाबा यह-यह तूफान आते हैं। सच नहीं बताते हैं। बाबा को लिखें तो बाबा युक्ति भी बतायें। कोई-कोई सच लिखते हैं। शिवबाबा तो सब कुछ जानते हैं। समझाते हैं अगर ऐसी कोई चलन चली तो धर्मराज द्वारा बहुत दण्ड भोगना पड़ेगा। सारा दिन ख्यालात चलते रहते हैं। सेन्टर पर आते हैं। कहते हैं फलानी बहुत अच्छा समझाती है। परन्तु अन्दर शैतानी भरी पड़ी होगी। यहाँ तो एक के साथ योग चाहिए। बाप के सिवाए दूसरा न कोई। क्यों दूसरे के पीछे पड़े। धारणा नहीं होती है तो जरूर कहाँ बुद्धि भटकती है फिर राय भी नहीं पूछते हैं। डरते हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। इस याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। दु:ख से तुम लिबरेट हो जायेंगे। मुक्ति तो सब माँगते हैं। मुक्त होते हैं दु:ख से फिर सुख में आयेंगे। जीवनमुक्ति सबके लिए है। परन्तु पहले मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आना है। अच्छा!

- रूहानी फादर होने के कारण वह रूहों को ही ज्ञान देते हैं, जिस्मानी फादर होने से बच्चे जिस्मानी नॉलेज उठाते हैं इसलिए बाप कहते हैं – आत्म-अभिमानी बनो और बाप को याद करो। कोई भी जिस्मानी याद नहीं रहनी चाहिए। तुम आत्मा हो, मनुष्य भल कितना भी अच्छा हो, धनवान हो, मीठा हो तो भी देहधारी को याद नहीं करना। एक परमपिता परमात्मा को ही याद करना। कोई साहूकार का बच्चा होगा तो बाप को ही याद करेगा। गाँधी को वा शास्त्री आदि को थोड़ेही याद करेगा। सबसे जास्ती याद परमपिता परमात्मा को करते हैं फिर कोई लक्ष्मी-नारायण को, कोई राधे-कृष्ण को भी करते हैं। समझते हैं यह होकर गये हैं। उन्हों की हिस्ट्री-जॉग्राफी भी है।

- निराकार से वर्सा कैसे मिला – यह प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण सो देवता बन रहे हैं। फिर वही देवतायें 84 जन्मों के बाद ब्राह्मण बनते हैं। यह चक्र बुद्धि में रहना चाहिए। हम सो ब्राह्मण, ब्रह्मा के बच्चे सो रूद्र (शिव) के बच्चे। हम आत्मायें निराकारी बच्चे हैं। बाप को याद करते हैं। इन चित्रों पर समझाना बहुत सहज है। तपस्या कर रहे हैं फिर सतयुग में आयेंगे। तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए – हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। फिर देवता धर्म का बादशाह बन राज्य करेंगे। योग से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अगर अभी भी पाप करते रहेंगे तो क्या बनेंगे।

- अरे महात्मा श्री श्री 108 जगतगुरू को फिर यह बीमारी क्यों? कहेंगे कर्मभोग। देवताओं के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। गुरू मरेगा तो फालोअर्स को जरूर अफसोस होगा। बाप पर भी जास्ती लव होता है तो रोते हैं। स्त्री का पति से जास्ती लव होगा तो रोयेगी। पति दु:खी करने वाला होगा तो नहीं रोयेगी। मोह नहीं होगा तो समझेगी भावी। तुम्हारा भी बाप के साथ बहुत लव है। पिछाड़ी में बाबा चला जायेगा – तुम कहेंगे ओहो! बाबा चला गया, जिसने इतना सुख दिया!

पिछाड़ी में बहुत रहते हैं। बाप से बहुत लव रहता है। तुम कहेंगे बाबा हमको राजाई देकर चला गया। प्रेम के ऑसू आयेंगे, दु:ख के नहीं। यहाँ भी बच्चे बहुत समय के बाद आकर बाप से मिलते हैं तो प्रेम के ऑसू आते हैं। यह प्रेम के ऑसू फिर माला का दाना बन जायेंगे। हमारा पुरुषार्थ ही है कि हम बाबा के गले का हार बनें, इसलिए बाबा को याद करते रहते हैं।

○ श्रीमत पर दैवीगुण धारण करने हैं। लौकिक बाप का बच्चों में मोह होता है तो कहते हैं बच्चों को ऊंच पढ़ाऊं। यह बाप भी कहते हैं इन्हों को एकदम स्वर्ग की परी बना दूँ। श्रीमत पर जितना चलेंगे उतना श्रेष्ठ बनेंगे। कोई भी तकलीफ नहीं है। साहूकारों को सुनने की फुर्सत नहीं मिलती, सिर्फ गरीबों को फुर्सत मिलती है। तुम्हारे जितनी फुर्सत किसको नहीं है, जिनको लफड़े ज्यादा हैं, उनका योग लग नहीं सकता। आज बाबा बच्ची से पूछ रहा था कि तुम जानती हो कि हम किसके रथ की सेवा कर रहे हैं। घोड़े की सम्भाल करने वाला समझेगा कि हम फलाने साहेब के घोड़े की सम्भाल कर रहे हैं। तुम भी जानते हो यह किसका रथ है। अगर शिवबाबा को याद कर तुम इस रथ की सेवा करो तो तुम बहुतों से अच्छा पद पा सकती हो। यह हुआ रथ, याद तो शिवबाबा को करना है। यह भी याद रहे तो बेड़ा पार हो सकता है। बाबा कहाँ के लिए राजयोग सिखलाते हैं? भविष्य नई दुनिया के लिए, और सिखाते हैं संगम पर। कृष्ण कैसे राजयोग सिखायेंगे? वह तो सतयुगी राजाई में था, परन्तु वह राजाई किसने स्थापन की? बाप ने। प्राचीन देवी-देवताओं को ऐसा किसने बनाया? किसने राजयोग सिखाया? वह कृष्ण का नाम लेते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को अभी सिखला रहा हूँ। तुम तकदीर जगाकर आये हो, भविष्य नई दुनिया में ऊंच पद पाने के लिए। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पवित्र दुनिया का मालिक बनो और कोई उपाय नहीं।

○ तुम बच्चों को समझाया जाता है – जितना बाप के साथ बुद्धियोग रखेंगे तो खाद निकल जायेगी। नहीं तो सजा खाकर फिर सिलवर एज़ में आ जायेंगे। कृष्ण को सब प्यार करते हैं, झूला झुलाते हैं। राम को इतना नहीं झुलायेंगे।

○ भारत गोल्डन एजेड था, अभी आइरन एजेड है। आत्मा में खाद पड़ गई है – वह निकलेगी योग अग्नि से। आगे मनमनाभव अक्षर पढ़ते थे। अर्थ कुछ भी नहीं समझते थे। परमपिता परमात्मा के साथ बुद्धियोग लगाना है, परन्तु उनके रूप का ही किसको पता नहीं है तो योग कैसे लग सकता है। कहते हैं परमात्मा नाम रूप से न्यारा है तो योग किससे लगायें? भगवानुवाच – मनमनाभव। देह का अभिमान छोड़ो, अपने को आत्मा समझो। आत्मा का रूप क्या है? कहते हैं आत्मा स्टार है, भ्रकुटी के बीच में रहती है। तो आत्माओं का बाप भी ऐसा ही होगा।

○ बाप कहते हैं – बच्चे यह अन्तिम जन्म पावन बनेंगे तो विश्व के मालिक बनेंगे। कितनी बड़ी कमाई है। बाप कहते हैं – धन्धा आदि भल करो सिर्फ मुझे याद करो, पावन बनो तो योगबल से तुम्हारी खाद निकल जायेगी। तुम सतोप्रधान बन जायेंगे, एकरस कर्मातीत अवस्था बन जायेगी। बुद्धि में ज्ञान का सिमरण करते रहो। मित्र-सम्बन्धियों को भी यह समझाते रहो। कल्प पहले भी तुमको ऐसे समझाया था। कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बाबा आकर हमको समझाते हैं हम फिर दुनिया वालों को समझाते हैं। भारत बरोबर स्वर्ग था फिर बनेगा। यह चक्र फिरता रहता है। सतयुग को लाखों वर्ष कैसे हो सकते हैं। इतनी आदमशुमारी कहाँ है फिर तो अनगिनत हो जायें। 4 युग हैं, हर एक युग की आयु 1250 वर्ष है। जैसे तुमने समझा है वैसे समझाते रहेंगे। झाड़ की वृद्धि होती रहेगी। कभी ग्रहचारी बैठती है फिर उतरती जाती है। बाप कहते हैं – समझाना बहुत सहज है। अल्फ बे। मूल बात है याद की यात्रा। मेहनत भी है। कल्प के बाद यह याद का धन्धा मिलता है, परन्तु है गुप्त। यह मुश्किल सबजेक्ट है। अल्फ को याद

करना, अल्फ को ही भूले हो। भगवान को कोई जानते नहीं। गाया भी जाता है सतगुरू बिगर घोर अन्धियारा। सोझरे में एक ही सतगुरू ले जाते हैं। अच्छा!

○ खुद मालिक है, भगवान तो कभी पतित होता नहीं। वह तो जब चाहे तो वापिस चला जाए। यहाँ तो पतित हैं इसलिए वापिस कोई जा न सके। पतित बनने से सारा ज्ञान उड़ जाता है, बुद्धि मलीन हो जाती है। योग नहीं लगता, याद में विघ्न पड़ जाते हैं इसलिए कोई भी पाप कर्म नहीं करना चाहिए। याद भी जरूर करना है। बाप के बिगर पुराने पाप कट नहीं सकते। ऐसे नहीं हरिद्वार में रहने से कोई पाप कट सकते हैं, नहीं। पाप तो करते रहते हैं। साधू-सन्तों को अगर पता होता कि हमारा घर शान्तिधाम है तो वहाँ से होकर आते। बाबा तुमको सब साक्षात्कार कराते हैं। गोया तुम होकर आये हो। भक्ति मार्ग में भी साक्षात्कार होता है – दिव्य दृष्टि से।

○ यह सब ड्रामा बना हुआ है। ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता। बना बनाया ड्रामा है, जो कुछ होता है साक्षी होकर देखते चलो। विनाश होना है, स्थापना होनी है, साक्षी होकर देखना है। समझो कल अर्थक्वेक होती है तो ऐसे नहीं मैं बताऊंगा कि यह होना है। फिर तो सब प्रबन्ध कर लें। साक्षी होकर देखते चलो। मूल बात है मुझे याद करो। नहीं तो मुझे भी भूल जायेंगे। तुम बच्चों को महावीर बनना है। महावीर-महावीरनी को गॉड आफ नॉलेज, गॉडेज ऑफ नॉलेज कहा जाता है। गॉड ही योग सिखलाए महावीर बनाते हैं। पिछाड़ी में जब अर्थक्वेक आदि होंगी उस समय महावीरपना चाहिए। अभी तो तुम पुरुषार्थी हो। अचल-अडोल रहना पड़े और साथ-साथ बाबा की याद में मरें तो बहुत अच्छा। जो ज्ञान में अचल-अडोल होंगे वह बैठे-बैठे शरीर छोड़ेंगे। फिर कर्मातीत अवस्था में जाकर सर्विस करेंगे। बच्चों को परिपक्व अवस्था में शरीर छोड़ सूक्ष्मवतन में जाकर फिर नई दुनिया में आना है।